टेलीफोन 74250 | रजि न पो जे.एल 55

(कृण्वन्तो) ओ३म (विश्वमार्यम्)

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 18 अंक 1. 24 चैत्र सम्वत् 2042 तदनुसार 6 अप्रैल 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

चैत्र सुदी प्रतिपदा से नव सम्वत् 2043 (नव वर्ष) का शुभारम्भ

10 अप्रैल को आर्य समाज स्थापना दिवस मनाएं

चैत्र सुदी प्रतिपदा सम्वत 1932 तदानुसार 7 अप्रैल 1875 ई को प्रथम आय समाज की गिर गाव बम्बई मे डा मानिक चन्द जी की वाटिका मे स्थापना की थी। उस समय आर्य समाज के 28 नियम बनाए थे। आगे चल कर लाहौर आर्य समाज की स्थापना के समय आर्य समाज के इन 28 नियमो पर विचार करके दस नियमो का प्रारूप बनाया गया जो उस समय से आर्य समाज के नियम माने जाते है। इन दस नियमो का अपना एक विशेष महत्व है।

श्री डा एन्ड्यू जैक्सन डेविस जो अमरीका के एक प्रसिद्ध दार्शनिक थे ने लिखा था कि—

कि मै एक ऐसी अग्नि देखता हू जो सर्वव्यापक है वह अप्रमेय प्र म की अग्नि है। जो सब विद्व ष को भस्मसात करने के लिए प्रज्जवलित हो रही है और सब वस्त ज्ञान का पवित्र बनाने के लिए पिघला रही है।

इस प्रकार आय समाज की स्थापना के पश्चात देश विदेश के अनेको विद्वानो ने यह देखा कि यह सस्था ससार के कल्याण के लिए महान कार्य कर रही है और आगे भी करती रहेगी। आर्य समाज की स्थापना के पश्चात सारे देश मे सभी क्षत्र मे एक नई जागृति आ गई थी।

10 अप्रैल को फिर आर्य समाज का स्थापना दिवस आ रहा है हम इसे मनाते हुए यह व्रत ल कि महर्षि ने जिन उद्देश्यो और कामनाओ व भ वनाओ को लेकर आय समाज की स्थापना की थी उ हे हम पूण करग। देश जाति समाज के कल्याण के लिए अपना सवस्व निछावर करने के लिए सदा तैयार रहेगे।

10 अप्रैल से हमारा नव सम्वत 2043 आरम्भ हो रहा है यही हमारा नव वष है। इस दिन को नव वर्ष के रूप मे मनाते हुए नव कामनाओ नव भावनाओ को लेकर काय क्षेत्र मे आगे बढ।

...है तुम को ऐ ऋषि
तूने हमे बचा दिया।
...सो के लूट रहे थे हम
तूने हमे जगा दिया।
...ो को आंख मिल गई,
...ों मुर्दों मे जान आ गई।
...सा क्या चला दिया
अमृत सा क्या पिला दिया।

...9 वी शताब्दी मे भारत म वैदिक ...र भारतीय सभ्यता का प्राय ...ा हो गया था। जिस प्रकार ...ी से चल कर गगा की पुण्य धारा ... से होती हुई सागर तट की ...दती हुई गदली और गर्हित हो ...ै। इसी प्रकार सनातन वैदिक ...े ज्ञान, कर्म, उपासना तीनों काण्डो का स्थान मिथ्या विश्वास तान्त्रिक जादू टोने और पूजा पाठ न ले लिया था। लोग पञ्च महा यज्ञो को छोड कर मा ण मोहन, उच्चाटन वशीकरण की सिद्धि मे अपना अमूल्य समय व्यय म बिताने लगे थ। सत्र यापक परमा मा की उपासना से विमुख होकर कपोल कल्पित अ धुनिक देवी देवताओ की पूजा म लगे हुए थ। धम स्थ नो मे अफीम च स गाजा भग आदि का सेवन करने वालो ने अपना अडडा जमा लिया था।

दूसरी ओर योरुप से उठी हुई प्रबल पाश्चात्य आंधी भारत की ओर बढती आ रही थी। इस प्रकार आय जाति दिन प्रतिदिन मृत्यु के मुख मे आ रही थी। प्राचीन सभ्यता का पग पग पर ह्रास होता जा रहा था। जो आय जाति 800 वष के मुसलमानो अत्याचारी शासन और उनका तलवार से नष्ट न हो सकी थी वह अब अंग्रेजो के सम्मोहनास्त्र मे महानिद्रा मे निमग्न होने को जा रही थी। ऐसे समय मे प्रभु की असीम दया से धम की रक्षा के लिए दया मूर्ति और आनन्द राशि ऋषि दयानन्द का भारत मे प्रादुर्भाव हुआ।

इसमे आगे महर्षि दयानन्द के जीवन की एक पुण्य गाथा है उन्होने अपना सभी कुछ त्याग कर सत्य सन्यासी बन कर भारत के कोने 2 मे भ्रमण करके वेद का प्रचार और प्रसार किया और इस कार्य का गति देने के लिए

अध्यात्म चर्चा—

ईश्वर सर्वव्यापक है

लेखक—श्री प रविदत्त जो शर्मा एम ए पी एच डी. अबोहर

(गताक से आगे)

मनुष्य यह समझता है कि वह कर्म करने मे सर्वथा स्वतन्त्र है परन्तु यह भी ध्यान रहे कि यह स्वतन्त्रता एक सीमा तक ही है। फिर न चाहते हुए भी कर्म करना पडता है जिस का फल उसे भोगना ही होता है। एक तस्कर लालच में पड कर हेरा फेरी करता है। देश का माल विदेश मे और विदेश का स्वदेश में बेचता है। जब उसे लाभ होता है तो कारोबार को बढ़ाना चाहता है। पोल खुलने पर कानून उस के पीछे पड जाता है परन्तु धन के स्वाद मे अन्धा होकर वह प्रतिकार करने वाले की हत्या तक कर देता है। यद्यपि उस का उद्देश्य हत्या करना नही था परन्तु यह कर्मों का जाल है। एक कुकर्म दूसरे को अचानक पैदा कर देता है। जब मनुष्य घोर कुकर्मी हो जाता है तो उस का दण्ड भी उसी गति से मिलता है। अब यह विचार करना है कि कर्म की स्वतन्त्रता किस स्थिति में छिन गयी। एक नागरिक ने अपने देश की कानून व्यवस्था को भग किया। कानून को तोड कर ही वह पराधीन हो गया। पुलिस उसको कहीं न कही पकड ही लेगी। ऐसी स्थिति मे जब वह अपने को असुरक्षित पाता है तो दुष्कर्म की परम्परा मे घिर जाता है। यही नही कभी कभी वह अपनी जान भी दे देता है। इस प्रकार यदा कदा फल भोग भी कर्म को कराने मे कारण बन जाता है। कीचड मे फस कर जितना भी अधिक हाथ पैर पटको उतना ही कीचड लगती बचाव के आसार नजर नही आते।

पञ्चतन्त्र मे एक कथा आती है एक बूढा शेर झील के किनारे हाथ मे सोने का कगन लिए बैठा है। मार्ग मे चलने वालो को लालच देता है कि जो भी इस सरोवर मे स्नान करे वह मुझ से यह सोने का कगन ले लेवे। यह देख कर एक राही का मन लुभा गया और वह स्नान करने के लिए झील मे उतर पडा। झील मे भारी दलदल थी, उस मे फस गया और निकल न सका। मौका पाकर शेर ने उसे पकड कर मार डाला लोभ का यह परिणाम निकला कि मृत्यु का ग्रास बना। अत भून कर कर्म मे लिप्त न होवे, कर्म लिप्सा स्वतन्त्रता को समाप्त कर देती है।

असुर्यानाम ते लोका अन्धेन
तमसावृता।
तास्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के
चात्महनो जना॥

शास्त्रीय व्यवस्था को भग कर स्वेच्छाचारी हो कर अमर्यादित ढग से रहने वाला का क्या परिणाम होता है? उक्त मन्त्र मे बताया गया है। केवल विषयो की प्राप्ति एव उपभोग मे लगे रहना कामोपभोग को ही सच्चा सुख मानना दुर्व्यसनो म जीवन को नष्ट करना, आत्मा की आवाज की उपेक्षा करना तथा शरीर के पोषण पर्यन्त ही प्रयत्नशील रहना इत्यादि आत्म हनन कहलाते हैं। जीवन के चरम लक्ष्य अर्थात आत्मोद्धार से विमुख होकर कामाचार करने वाले व्यक्ति ही उपनिषद अथवा वेद की भाषा मे आत्महनो जना कहलाते हैं। वास्तव मे आत्मा की हत्या नही की जा सकती क्योकि आत्म तत्व जन्म मृत्यु से परे हैं, जन्म लेना, और मर जाना शरीर के गुण धर्म हैं आत्मा के नही। कुत्सित योनियो मे बार बार कष्ट पाना ही आत्मा की दुर्गति है। जो आत्म हनन करने वाले जन है वे मृत्यु के उपरान्त आसुरी योनियो में भटकते है। दूसरो के लोक घोर अन्धकार मे आच्छादित दुःख एव अज्ञान से भरपूर होते हैं जिन मे कष्ट ही कष्ट हैं कर्म बन्धन मे जकड कर यदि एक बार ऐसे लोक मिल जाए तो पुनः उन से छुटकारा पाना आसान नहीं। मानव शरीर के अतिरिक्त अन्य सभी भोग योनियां है। यदि मानव जन्म पा कर भी मनुष्य अपना उद्धार न कर के पतन के गर्त मे गिर गया तो फिर इतना अच्छा अवसर पुनः दुर्लभ है। मनुष्य को शरीर छोडने के उपरान्त आसुरी योनियो मे जन्म लेना पडा तो मानव जन्म ही व्यर्थ हो गया—

खान पान सुख भोग मे पशु भी
परम सुजान।
वहा अधिकता मनुज की जो न
लखे भगवान॥

जीवन मे से आत्मचिन्तन को यदि अलग कर दिया जाए तो शेष व्यवस्था पशुओ के समान ही रह जाती है जो एक प्रकार से मानव शरीर का दुरुपयोग ही है। ईश्वर के द्वारा प्राप्त वस्तु का उचित उपयोग न करने का मतलब है उस से हमेशा के लिए वञ्चित हो जाना अर्थात मनुष्यजन्म प्राप्ति का अधिकार खो देना।

उक्त मन्त्र से प्रेरणा मिलती है कि मनुष्य को ईश्वर चिन्तन अवश्य करना चाहिए आत्म तत्व के मर्म को अच्छी तरह से पहचान कर उस पर मनन करना चाहिए तथा नित्य प्रति आत्मकल्याण के प्रयास करने चाहिए। विषयों से प्राप्त सुख अनित्य है, क्षणभगुर है आत्मानन्द ही चिर स्थायी है जिस का जन्म जन्मान्तर का सम्बन्ध है। जीव क्या है? सुख-दुःख का हेतु क्या है? सच्चा सुख कैसे मिल सकता है? दुःखो का परिहार कैसे किया जाए? पुनः उत्तम जन्म कैसे मिले? अज्ञान एव अन्धकार को कैसे नष्ट किया जाए इत्यादि प्रश्न विचारणीय हैं। मनुष्य सदैव याद रखे कि परमेश्वर ही सुख का मूल है उसे ही जानने का प्रयत्न करते रहना चाहिए।

अनेजदेक मनसो जवीयो नैनद् देवा
आप्नुवन् पूर्वमर्षत्।
तद् धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्
तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति॥
तदेजति तन्नैजति तद् दूरे
तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य
बाह्यत॥4 5

ईश्वर अचल है एक है मन से भी अधिक वेगवाला है, देवता भी उसे प्राप्त न कर सके, वह सब से पहले ज्ञानवान है, स्थिर रहते हुए भी दूसरे दौडने वालो का अतिक्रमण कर जाता है अर्थात् सब से आगे निकल जाता है। उस की सत्ता मे ही सब कार्यों का विधि पूर्वक सचालन होता है। अन्तरिक्ष मे वायु उसी के सामर्थ्य से जल को धारण करता है। वर्षा का कार्य उस के द्वारा ही सम्पन्न होता है। सूर्य चन्द्रमा तथा अन्य नक्षत्रगण उसके द्वारा ही नियन्त्रित होकर नियमपूर्वक अपने कार्य को कर रहे है। सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ मे प्रभु शक्ति ही काम कर रही है। निरन्तर खोजने पर भी कही उस का पता न लग सका। वह शक्ति बडी विचित्र है स्वय स्थिर है परन्तु दौडने वालो को पराजित कर देती है, कोई भी उस के बराबर नही दौड सकता अधिक की तो बात ही क्या है। 'तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति' मे सृष्टि चक्र का रहस्य छिपा है। कारण रूप प्रकृति परमात्मा से प्रेरणा पाकर ही सृजन करती है। यद्यपि उपादान कारण प्रकृति ही है परन्तु उसे प्रेरणा की आवश्यकता होती है। जैसे मिट्टी रखी हुई हो और चाक भी हो परन्तु कुम्हार के बनाने से ही घट आदि बनते हैं वैसे ही यदि परमात्मा प्रेरक न बने तो सृष्टि का कार्य ही बन्द हो जाएगा। इससे पता चला कि प्रभु की प्रेरणा शक्ति ही ससार की व्यवस्था को चला रही है, इस प्रकार चाक मे से कुम्हार चाक को घुमा कर छोड देता है फिर वह बहुत देर तक घूमता रहता है, वैसे ही ईश्वर से प्रेरित प्रकृति कार्यरत रहती है। परमात्मा स्थिर रहते हुए भी दौडने वालों से आगे कैसे रहता है? इस का समाधान यह है कि दौड प्रतियोगिता में भाग लेने वाले दौडते हैं, परन्तु निर्णायक नही दौडता फिर भी सब से आगे रहता है वैसे ही ईश्वर बिना दौडे ही सब से आगे रहता है। ईश्वर को अग्रणी इसीलिए कहा है कि मनुष्य कही भी जाए परन्तु ईश्वर उस के समक्ष रहता है। 'मनसो जवीयो' का भाव है मन से भी बढ़ कर शीघ्रगामी। मन की गति ससार के सभी पदार्थों से अधिक मानी गई है। मन कल्पना के साथ चलता है, अत कल्पना करने मे देर लगती है, मन के पहुचने मे नहीं। फिर भी कुछ विषय अत्यन्त गूढ तथा कुछ पदार्थ इतने सूक्ष्म होते हैं कि जिन मे मन का प्रवेश सम्भव नहीं। केवल परमात्मा ही सम्पूर्ण रहस्यो का ज्ञाता है क्यों कि वह सर्वज्ञ है और जीव अल्पज्ञ है।

तदेजति आदि द्वारा बताया गया है कि ईश्वर चलता है और स्थिर भी है। ये परस्पर विरुद्ध कैसे हो सकते हैं? ईश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं क्योकि वह सर्वव्यापक है। मिट्टी पाषाण आदि जड पदार्थों मे व्याप्त है है अत स्थिर है, सभी चेतन प्राणियो मे रमा हुआ है अत गतिमान है। चल और अचल दोनो प्रकार के पदार्थों मे उस की सत्ता है, अत दोनों गुणो के एकत्र होने मे विरोध नहीं है। दूसरी बात कही है कि वह दूर भी है और निकट भी ईश्वर दूर उन से है जो ईश्वर से दूर हैं अर्थात अविश्वासी जन। वास्तव मे वह सब के निकट हैं, परन्तु नास्तिकों की समझ से दूर हैं। दूसरी प्रकार से यह भी है कि हमारे पास मे भी है और दूर भी हैं तीसरी बात है कि वह सब के अन्दर भी है और बाहर भी है। प्रभु का एक विशेषण अन्तर्यामी है, सूक्ष्मातिसूक्ष्म पदार्थ के भी अन्दर व्याप्त है और प्रत्येक पदार्थ को टिकाये हुए है इसलिए बाहर से सबका व्यवस्थापक है। कुम्भकार जब पात्र बनाता है तो अन्दर से भी हाथ का सहारा देता है और बाहर से भी वैसे ही परमात्मा अपनी शक्ति के द्वारा सर्वत्र विद्यमान है। ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक सर्वनियन्ता, सर्वज्ञ तथा सर्वदृष्टा है उस से कोई पदार्थ ओझल नही उसकी गति सर्वत्र है, अणु-परमाणु कुछ भी उससे अछूता नहीं अत सम्पूर्ण जगत् प्रभु से परिपूर्ण है।

(क्रमश)

सम्पादकीय—

भारत जोड़ो

आज आजाद भारत में बढ़ती हुई अराजकता को देख कर कई देश भक्त व्यक्ति अत्याधिक चिन्तित हो उठे हैं। अंग्रेजों की कूटनीति थी कि फूट डालो और राज करो। वह भारत में विघटन के बीज बोते रहे और भारतीयों को आपस में लड़ा कर यहां हकूमत करते रहे। परन्तु एक समय आया जब देश में महर्षि दयानन्द जैसे एक महान् देश भक्त दूरदर्शी महान् क्रान्तिकारी का जन्म हुआ जिन्होंने देखा चारों ओर विघटन की आग लगाई जा रही है। अनेको जातियो अनेकों सम्प्रदायो अनेकों छोटे-2 राज्यों में विभक्त भारत देश इस आग में शीघ्र ही भस्मसात हो जाएगा। जातिवाद के विरुद्ध अपनी प्रबल आवाज उठाते हुए उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को झकझोरा और बताया कि सभी मानव एक ही जाति के हैं। केवल किसी विशेष जाति में पैदा होने से कोई पवित्र कोई अपवित्र नहीं बन जाता। सभी मानवों का संसार में आने का और संसार से जाने का एक ही प्रकार है फिर यह छुआ छूत क्यों ?

उन्होंने प्रत्येक सम्प्रदाय के कर्णधारों को ललकारते हुए उन्हें सावधान किया कि वह अपने स्वार्थ के लिए विघटन के बीज न बोए। धर्म के नाम पर अत्याचार ढाने वालों को धर्म का स्वरूप बताते हुए कहा कि सभी मानवो का एक ही धर्म है और वह है वैदिक धर्म। सभी का एक ही पूज्य इष्ट देव है और वह है सर्व शक्तिमान् सर्वज्ञ परमेश्वर जिसका मुख्य नाम ओ३म् है।

इसी प्रकार महर्षि ने भारत के उस समय के राजे, महाराजों को भी प्रेम का पाठ पढ़ाते हुए उन्हे संगठित होकर अंग्रेजी सत्ता विरुद्ध खड़ा किया। महर्षि ने चारो तरफ एकता का शंख नाद गुंजा दिया। इस प्रकार विघटित भारत फिर से एक सूत्र में बन्ध कर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने लगा। एक दिन विवश होकर अंग्रेजो को भारत छोड़ना पड़ा परन्तु वह फूट डालने की अपनी प्रवृत्ति से बाज न आये और जाते-2 भी मुसलमानो को उकसा कर भारत का एक टुकड़ा अलग कर गए जो पाकिस्तान के रूप में आज भी भारत के लिए एक सिर दर्द बना हुआ है।

आजादी के बाद भारत प्रगति की राह पर बड़ी तेजी से बढ़ा। अंग्रेज लोग समझते थे कि भारत के लोग उन्नति नहीं कर सकेंगे परन्तु उनका यह विचार भारत की जनता और भारत के नेताओ ने गलत सिद्ध कर दिया। भारत में अनेको कल-कारखाने लग गए। जरूरत का सभी सामान भारत मे ही पैदा किया जाने लगा। अंग्रेज समझते थे भारत हम पर निर्भर रहेगा परन्तु उनका सोचना निर्मूल रहा। भारत फिर धीरे-धीरे समृद्ध हो गया और दूसरे देशों के मुकाबले मे भारत ने अपना विशेष स्थान बना लिया। परन्तु कुछ ईर्षालु विदेशियो से यह देखा नहीं गया। भारत के पड़ोसी देश पाकिस्तान और कुछ स्वार्थी साम्प्रदायी लोगो के माध्यम से भारत मे फिर से विघटन पैदा करने मे लगे हुए हैं। आज कुछ यह स्वार्थी लोग भारत को फिर विभाजित करने के स्वप्न ले रहे हैं। फिर पाकिस्तान की तरह इसके और टुकड़े करना चाहते हैं। परन्तु इन स्वार्थी तत्वों की यह विघटनकारी योजनाए कभी सफल नहीं हो सकेंगी। भले ही आज ऋषि दयानन्द महाराज नहीं हैं परन्तु उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज और देश की दूसरी कई ऐसी संस्थाए हैं जो भारत को कभी भी विघटित नहीं होने देंगी।

जब बाबा आम्टे "भारत जोड़ो अभियान को लेकर सारे भारत की यात्रा पर निकल पड़े हैं। उनके साथ 16 युवतियां और 110 युवक हैं जो कन्या कुमारी से चल कर जम्मू-काश्मीर की तरफ बढ़ रहे हैं। प्रत्येक नगर में जहां भी वह पहुंचते हैं उनका भव्य स्वागत किया जाता है। इन्होंने "भारत जोड़ो के नारों से छपे कपड़े पहने हुए हैं। 24 दिसम्बर 1985 को कन्या कुमारी से इन्होंने अपनी यात्रा आरम्भ की है और अब तक 13 राज्यो की यह यात्रा कर चुके हैं।

जालन्धर पहुंचने पर 2-4-86 को उनका भव्य स्वागत किया गया। होशियारपुर रोड के जालन्धर में प्रवेश द्वार पर नगर के प्रतिष्ठित लोग नेता जन की प्रतिक्षा में खड़े थे ज्यों ही 72 वर्षीय श्री आम्टे जी अपने साथियो के साथ होशियारपुर से पहुंचे सभी ने उनका भव्य स्वागत किया। वहां से उन्हे डावा कालेज जालन्धर में लाया गया, वह डी ए वी कालेज जालन्धर मे भी गए वहां उन्होंने छात्रों और बुद्धिजीवियों को सम्बोधित किया तथा बाद मे जालन्धर के रैडक्रास भवन में सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी की अध्यक्षता मे सभा हुई।

उन्होंने एक प्रैस कान्फ्रैंस मे पंजाब की वर्तमान स्थिति पर चिन्ता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि—'मुझे पंजाब में आ कर निराशा हुई। पंजाब की धरती जो कभी गेहूं की खेती से हरी भरी रहती थी आज खून से भरी है। लगभग प्रत्येक शहर में कर्फ्यू लगा हुआ है। सड़कें सुनसान पड़ी हैं यह देख कर महसूस कर रहे हैं कि मानो सारा शहर किसी शव यात्रा मे शामिल होकर श्मशान चला गया है और वह अकेले रह गए हैं।'

श्री आम्टे जी का अभियान है "भारत जोड़ो अर्थात सारे भारत को एक एकता के सूत्र मे बान्धे रखो। किसी चीज को तोड़ना आसान है परन्तु जोड़ना बहुत कठिन होता है। आज अपने निजी स्वार्थों के लिए कुछ लोग भारत के फिर और टुकड़े करना चाहते हैं। जातियता के नाम पर विद्वेष का बीज बोया जा रहा है। सदियों इकट्ठे रहने वाले हिन्दू-सिख जो भाई भाई की तरह रह रहे हैं उन्हें भड़काया जा रहा है। उन्हें आपस में लड़ाया जा रहा है। गत कई वर्षों से पंजाब में यह आग सुलग रही है परन्तु इसे बुझाने की बजाए राजनीतिक लोग इस पर और तेल डाल कर इसे भड़का रहे हैं। उग्रवादियो को कुछ राजनीतिज्ञो का संरक्षण भी प्राप्त है जिससे वह पंजाब मे मासूम बे-कसूर लोगो की हत्याए करके इस प्रदेश मे अराजकता फैला रहे हैं।

आज फिर इन विघटनकारी शक्तियो के विरुद्ध संघर्ष करने की आवश्यकता है। देश भक्त लोगो को आगे आकर इस उग्रवाद पर काबू पाना चाहिए। तभी भारत को बचाया जा सकेगा। श्री आम्टे जी ने एक नारा दिया 'भारत जोड़ो' यह नारा तो तभी सार्थक होगा जब पूरा भारत आपस मे जोड़ दिया जाएगा। भारत के नक्शे से जो क्षेत्र बाहिर चले गए हैं उन्हे भारत मे जोड़ा जाए और भारत मे उठने वाली उग्रवाद की आन्धी को दबा दिया जाए। चाहे वह भारत के किसी भी कोने मे क्यो न उठ रही हो चाहे वह पंजाब मे या उत्तर प्रदेश व अन्य प्रदेशों मे हो।

हैदराबाद सत्याग्रह स्वतन्त्रता सेनानी पैन्शन

जैसा कि पहले भी सूचित किया गया था कि भारत सरकार ने हैदराबाद सत्याग्रह मे भाग लेने वाले और जेल यात्रा करने वाले सभी सत्याग्रहियो को स्वतन्त्रता सेनानी पैन्शन देना स्वीकार कर लिया है। अब साथ ही सरकार ने यह भी निश्चय किया है क्योंकि कई लोगो के पास से जेल के प्रमाण पत्र आदि प्राप्त नही हो रहे और कुछ के विभाजन के पश्चात् वह पत्र पाकिस्तान मे रह गए हैं ऐसी स्थिति में सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रमाणित सत्याग्रहियो को ही पैन्शन दी जाएगी। सार्वदेशिक सभा को ही अब आवश्यक कागजात भेजने होंगे। इसलिए यदि अब तक किसी बन्धु ने सार्वदेशिक सभा को इस विषय में अपना पत्र न भेजा हो वह पूर्ण विवरण के साथ 20 मई 1986 से पूर्व सार्वदेशिक सभा दिल्ली को भेज दें। भारत सरकार द्वारा यह अन्तिम तिथि निश्चित की गई है। इसके पश्चात् कोई भी प्रार्थना पत्र स्वीकार नही हो सकेगा। जो व्यक्ति प्रार्थना पत्र इससे पूर्व सार्वदेशिक सभा को भेज चुके हैं उन्हे भेजने की आवश्यकता नही वह सब नाम सार्वदेशिक सभा ने भारत सरकार को भेज दिए हैं। यदि आवश्यक विवरण सार्वदेशिक सभा मांगे वह उन्हे जरूर भेजें ताकि उनका पक्ष ठीक से सरकार के सामने रखा जा सके।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान की ओर से ऐसी सूचना 'सार्वदेशिक साप्ताहिक में छप चुकी है। आशा है हैदराबाद सत्याग्रही इस अवसर का लाभ उठाएंगे।

—सह-सम्पादक

स्वामी दयानन्द को विष किसने दिया ?

लेखक—डा श्री भवानीलाल जी भारतीय

स्वामी दयानन्द की मृत्य का कारण क्या था ? क्या उन्हें विष दिया गया अथवा वे किसी बीमारी के शिकार होकर स्वाभाविक मृत्यु से मरे ? लगभग 13 वर्ष पूर्व हमीदिया कालेज भोपाल के इतिहास के तत्कालीन प्राध्यापक डा बी के सिंह ने इलस्ट्रेटेड वीकली आफ इण्डिया के 19 अक्तूबर 1972 के अक मे एक लेख लिख कर यह धारणा व्यक्त की थी कि स्वामी जी की मृत्यु विष से नही हुई। इसी बीच हरियाणा सरकार ने स्वप्रदत्त 50 हजार रुपये के अनुदान से प्रसिद्ध इतिहासविद प्रो श्रीराम शर्मा से स्वामी दयानन्द के जीवन एव कार्यों पर एक ग्रन्थ लिखवाया। प्रो शर्मा का यह ग्रन्थ प्रकाशित होने से पूर्व ही विवादो के घेरे मे घिर गया क्योकि उन्होने भी स्वामी दयानन्द को विष दिये जाने का प्रतिवाद किया था तथा उनकी मृत्यु को रोग जन्य स्वाभाविक मृत्यु ही माना था। किन्तु स्वामी दयानन्द के प्रामाणिक जीवनी लेखको की धारणा कुछ भिन्न ही है। स्वामी जी के प्रथम उर्दू जीवन चरित्र लेखक प. लेखराम ने विभिन्न साक्षियो के आधार पर स्वामी जी को विष दिये जाने की पुष्टि की तथा उनके प्राण हरण करने वालो मे नन्ही वेश्या, चक्राकित वैष्णव तथा मिया फैजुल्ला खा का सम्मिलित षडयन्त्र होने की आशका व्यक्त की है। सुप्रसिद्ध बगाली लेखक देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने स्वामी दयानन्द के जीवन विषयक तथ्यो एव घटनाओ का सग्रह करने मे अत्यन्त पुरुषार्थ किया था।

मुखोपाध्याय जी द्वारा एकत्रित स्वामी जी की जीवनी विषयक सामग्री के आधार पर मेरठ के वकील बाबू घासीराम ने स्वामी दयानन्द का एक बृहद जीवन चरित्र लिखा है जो तथ्यो की प्रामाणिकता की दृष्टि से सर्वाधिक विश्वसनीय माना जाता है। इस जीवन चरित्र के द्वितीय खण्ड मे लेखक ने यह स्पष्ट सकेत दिया है कि स्वामी जी को विष दिया गया था। (चतुर्थ सस्करण पृ 341) स्वामी जी के अन्य जीवन चरित्र लेखको यथा लाला लाजपतराय स्वामी सत्यानन्द तथा हरविलास शारदा ने भी इसी धारणा की पुष्टि की है।

इस सम्बन्ध मे कुछ अन्य साक्षियो भी प्रस्तुत की जा सकती हैं। स्वामी दयानन्द के समकालीन फर्रुखाबाद निवासी एक महाराष्ट्रीय लेखक प गोपाल राव हरि ने दयानन्द दिग्विजयार्क शीर्षक स्वामी जी का जो जीवन चरित लिखा है वह सर्वाधिक प्राचीन माना जाता है। लीथो से प्रकाशित दयानन्द दिग्विजयार्क शीर्षक इस जीवन चरित के तृतीय खण्ड मे शाहजहापुर से प्रकाशित होने वाले एक पत्र शुभचिन्तक की कुछ पक्तिया उद्धृत की गई है जिन से स्वामी को विष दिये जाने की पुष्टि होती है। यह भी स्मरणीय है कि प्रसिद्ध सस्कृत विद्वान प्रो मैक्समूलर ने लन्दन मे प्रकाशित होने वाले पालमाल गजट के जनवरी 1884 के अक मे स्वामी दयानन्द की जीवनी गाथा का सक्षिप्त उल्लेख करने के पश्चात यह स्पष्ट लिखा था कि उनकी मृत्यु का कारण विष ही था जो महाराजा जोधपुर की प्रेयसी वेश्या तथा ब्राह्मण पुरोहितो के सम्मिलित षडयन्त्र के परिणाम स्वरूप उन्हे रसोइये के द्वारा दिया गया।

स्वामी दयानन्द को विष दिये जाने की पुष्टि मे राजस्थान के प्रामाणिक इतिहास लेखको, यथा महामहोपाध्याय प गौरीशकर हीराचन्द ओझा मुन्शी देवी प्रसाद मुसिफ, प नेनूराम ब्रह्म भट्ट तथा ठा जगदीशसिंह गहलोत के मत को इन पक्तियो के लेखक ने स्वरचित ग्रन्थ नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती मे विस्तारपूर्वक उद्धृत किया है।

स्वामी दयानन्द को दूध मे मिला कर जो विष दिया गया, वह क्या था इस सम्बन्ध मे दो प्रकार की धारणाए व्यक्त की गई है। प लेखराम को जोधपुर मे बताया गया था कि पीसा हुआ काच दूध मे मिला दिया गया था, परन्तु अजमेर निवासी हकीम पीर इमाम अली ने स्वामी दयानन्द की रुग्णावस्था को देख कर यह स्पष्ट कह दिया था कि इन्हे सखिया दिया गया है। षड्यन्त्रकारियो को स्वामी जी को विष दिला कर ही सन्तोष नही हुआ। उन्होने स्वामी जी की चिकित्सा को बिगाड़ने का भी यत्न किया और इसमे उन्हे सफलता भी मिली। डा, सूरजमल की प्रारम्भिक चिकित्सा से स्वामी जी का आराम मिलने लगा तो तुरन्त हटा दिया गया और चिकित्सा कार्य एक तृतीय श्रेणी के डाक्टर अलीमर्दान खा के सुपुर्द कर दिया गया। स्वामी दयानन्द की जीवनी विषयक महत्वपूर्ण तथ्यो के एक अन्य अन्वेषणा मौलवी महेश प्रसाद काशी विश्वविद्यालय मे अरबी एव फारसी के भूतपूर्व प्राध्यापक ने वेद वाणी (काशी से प्रकाशित) के कार्तिक 2006 वि, के अक मे प्रकाशित अपने एक लेख मे कतिपय महत्वपूर्ण प्रमाण प्रस्तुत कर यह सिद्ध किया था कि औषधि मे धीरे-धीरे विष देकर स्वामी दयानन्द को मृत्यु के मुख मे धकेलने के लिए उक्त डाक्टर को वेश्या ने एक बडी धनराशि प्रदान कर दी थी।

प, घासीराम रचित जीवन चरित से यह स्पष्ट होता है कि डा अलीमर्दान ने जो औषधि दी उसमे कैलोमल की मात्रा आवश्यकता से अधिक थी। यह कैलोमल का अत्यधिक प्रयोग उनके लिये और भी घातक सिद्ध हुआ। डा सम्पूर्णानन्द आयुर्विज्ञान महाविद्यालय जोधपुर के प्राध्यापक डा तेजप्रकाश भारद्वाज ने बताया है कि कैलोमल पारे का क्लोरीन लवण होता है। साधारणतया इस महान घातक पदार्थ को ग्रेन की मात्राओ मे बड़ी सावधानी से रोगी को दिया जाता है जब कि उक्त डाक्टर ने ड्राम की मात्राओ मे इसे स्वामी जी को दिया। पोद्दार मैडिकल कालेज बम्बई के निवर्तमान प्रिंसिपल स्व डा, महेन्द्रकुमार शास्त्री ने चिकित्सा विज्ञान के विभिन्न पहलुओ को ध्यान मे रख कर यह निष्कर्ष निकाला था कि स्वामी जी को सखिया तो दिया ही गया था उसमे पीस हुए काच के कण तथा एक विषैले पौधे (क्रोटोन) के बीज भी पर्याप्त मात्रा मे मिला दिये गये थे। कैलोमल को धीमी गति से दिए जाने वाले मारक विष के रूप प्रयुक्त किये जाने के और भी दृष्टान्त मिलते हैं। रीडर्स डाइजेस्ट के हिन्दी सस्करण सर्वोत्तम के अप्रैल 1983 के अक मे बेन वीडर तथा डेविड हौगुड द्वारा लिखित एक पुस्तक "नेपोलियन की हत्या किसने की ? का साराश प्रकाशित किया गया है, जिसमे यह बताया गया है कि चिकित्सको ने फ्रास के इस निष्कासित सम्राट के शरीर में कैलोमल नामक मारक तत्व शराब के माध्यम से प्रविष्ट कराया, जो अन्तत उनकी मृत्यु का कारण बना। अलीमर्दान खा ने यही कैलोमल औषधि मे डाल कर स्वामी जी को दिया, जिससे उनका शरीर क्षीण से क्षीणतर होता गया और अन्तत 30 अक्तूबर 1883 को, जोधपुर छोडने के दो सप्ताह पश्चात, अजमेर मे उनका निधन हो गया।

जिस रसोइये ने इस षड्यन्त्र में भाग लेकर स्वामी जी को दूध मे विष पिलाया था उसके नाम तथा निवास स्थान आदि को लेकर स्वामी दयानन्द के जीवनी लेखकों ने भिन्न-भिन्न कहीं-कहीं परस्पर विरोधी, विचार व्यक्त किये हैं। किन्तु प लेखराम तथा पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय के साक्ष्य मे यह प्रमाणित हो चुका है कि विषदाता रसोइया शाहपुरा निवासी धूड़ जी (राजस्थान) में इस शब्द का उच्चारण धूड़ जी या धूल जी के रूप मे होता है। नामक ब्राह्मण था। रसोइया होने के कारण उसे जीवनीकारों ने उसे धूर्त जी मिश्र भी कहा है। यद्यपि शाहपुर के स्वर्गीय नरेश राजाधिराज नाहर सिंह ने स्वामी दयानन्द की जन्मशताब्दी के अवसर पर मथुरा में आयोजित एक सभा मे इस बात की घोषणा की थी कि न तो स्वामी जी को विष ही दिया गया और न विष देने वाला तथाकथित रसोइया शाहपुरा का रहने वाला था। उक्त सभा के सभापति स्वामी श्रद्धानन्द ने कुछ समय पश्चात् जोधपुर के रावराजा तेजसिंह को पत्र लिख कर इस सम्बन्ध मे उनसे पूरी जानकारी प्राप्त की तो रावराजा साहब ने अपने पत्र के द्वारा न केवल स्वामी जी को विष दिये जाने की पुष्टि ही की, अपितु यह भी कहा कि वे तो शाहपुराधीश के वक्तव्य का मथुरा मे ही प्रतिवाद करना चाहते थे, किन्तु सभापति (स्वामी श्रद्धानन्द) का ही सकेत पाकर उन्होंने उस समय कुछ भी कहना उचित नही समझा। स्वामी श्रद्धानन्द का रावराजा के नाम लिखा गया मूल पत्र तथा उसके उत्तर की रावराजा के हस्ताक्षरों से युक्त प्रतिलिपि तेजसिंह जी के पोत्र रावराजा। वीरभद्रसिंह (निवास हाईकोर्ट कालोनी जोधपुर) के पास आज भी मौजूद हैं।

उपर्युक्त साक्षियो के आधार पर निर्विवाद रूप से यह प्रमाणित होता है कि स्वामी दयानन्द की मृत्य एक षड्यत्र का परिणाम और इस षड्यत्र मे नन्हीं वेश्या (वैष्णव मतावलम्बी, भगतन (कलारी) जाति मे उत्पन्न का बड़ा भारी हाथ था। मेड़ता के निकट वर्ती डागावास ग्राम के श्री हरिसिंह ने इन पक्तियो के लेखक को बताया कि उक्त नन्ही की ननिहाल का ग्राम राम निवास (ग्राम पचायत कुरडाया) नागौर जिले मे अवस्थित है और इस ग्राम मे यह अनुश्रुति प्रचलित है कि नन्हीं अपने

(शेष पृष्ठ 5 पर)

संचार माध्यम और सांस्कृतिक प्रदूषण

लेखक—डा श्री विजय द्विवेदी जी

मानव जाति ने अनादि काल से जीवन के विविध क्षेत्रो मे बहुमुखी साधनाए की हैं। इन साधनाओ की सर्वोत्तम उपलब्धि को सस्कृति कहा जाता है। संस्कृति धर्म की तरह मानव जीवन मे विरोध नही समन्वय लाती है अथवा बाहर से भिन्न प्रतीत होते हुए भी अपने भीतर एकत्व भावना संजोकर किए रहती है। दूसरे रूप मे सस्कृति काल कृत समस्याओ का मानवीय प्रयास विनियक्त समाधान है। जब सामाजिक जीवन अपने अन्तर विरोधो के कारण जीवन के महत सत्य को महान उपलब्धियो को नकार कर चलने लगता है तब महान व्यक्तियों की महत साधनाए अपनी जटिलताओ और काल कृत दूरियो के कारण जन सामान्य के लिए समस्या बन जाती हैं। इन्हे सास्कृतिक समस्याओ के रूप में माना जा सकता है।

भारत एक अति प्राचीन देश है। सस्कृति की दृष्टि से इसका ज्ञात इतिहास जितना महत्व मय है, अज्ञात इतिहास उससे भी अधिक समृद्ध किन्तु उपेक्षित है। इस देश ने नाना अनुकूल प्रतिकूल स्थितियो परिस्थितियो के बीच न केवल अपने को सजाया सुधारा है अपितु विविधता भरे देश की निजी विशेषताओ और विश्वासो को बनाए बचाए रखा है। यद्यपि समय समय पर आती रहने के कारण विभिन्न विजातीय सस्कृतियो ने इस विशाल देश के जन समूह के ऐतिहासिक विकास को बहुत अशो तक प्रभावित किया है तथापि भारत का जन मानस किसी के प्रति भी असहिष्णु नही रहा और सबको आत्मसात करके चलता आ रहा है। भारत की जनता ने सभी सस्कृतियो की जीवनोपयोगी नीतियो रीतियो को अपने विश्वास का अग बना लिया है। वस्तुत भारतीय जन समूह विश्व मानवता को एकता प्रदान करने वाली वैदिक सस्कृति का ही विभिन्न रूपो म अनुसरण करता आ रहा है, जिसका मूल मन्त्र कर्म फल का सिद्धान्त है। यह सिद्धान्त त्याग से गौरव की अनुभूति कराना है और त्यागमय भोग का हामी है (तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा)। भारतीय वैदिक सस्कृति का मूलाधार समता है। यह सस्कृति हमे बताती है कि नागरिक जीवन मे सुख शान्ति और सुव्यवस्था तभी स्थापित हो सकती है जब समाज मे प्रत्येक स्तर पर समता तथा समन्वय हो (समान मन्त्र समिति समानी, समान मन सह चित्तमेषाम्)। भारतीय धर्म और सस्कृति का मुख्य स्वर मानवता को सब तरह के बुरे कामो से विरत करना, क्षुद्र एव सकुचित भावो से बचाना, सत्य न्याय नैतिकता-उदारता की स्थापना करना तथा परस्पर के सहयोग के आधार पर मनुष्य को मनुष्यता के पवित्र बन्धन मे बाधना है।

आज हम इतिहास के गहरे भ्रम-जाल मे उलझ कर आत्म विस्मृत हो गए हैं। हमारी सस्कृति जो अपनी अति प्राचीनता तथा मौलिकता के कारण पूरे मानव जाति की सस्कृति हो सकती थी ऐतिहासिक तथा राजनीतिक परिस्थितियो के चलते प्रदूषित हो कर अधकचरी सस्कृतियो की दास बन गयी है। इस सस्कृति मे भिन्न भिन्न देशो जातियो तथा धर्मों की धारा समाहित हो गई है। इसलिए इसका स्वरूप आम आदमी के लिए अपरिचित हो गया है। इसके कारणो की खोज इतिहास के उन पन्नो मे की जा सकती है जो पराधीनता के कलक से कलुषित है।

स्वाधीनता भारत मे सचार माध्यमो का वैज्ञानिकीकरण हो गया है। इसके परिणामस्वरूप भारतीय सस्कृति को एक नई व्यापक किन्तु प्रदूषित दृष्टि मिल गई है। आज हम पुराने सास्कृतिक मूल्यो मान्यताओ को अनुपयोगी मान कर अपने को विश्व सस्कृति का अग बनाने मे जुटे हुए है। हमारी आज की मिश्रित अथवा अपसस्कृति की व्यथा कथा जितनी अद्भुत है उतनी ही दुखद भी है। अपने देश की पत्र पत्रिकाओ पर एक नजर डालिए तो सत्य पता चल जाता है कि भारत का शिक्षित अथवा मध्यवित्त वर्ग अभिजात्य वर्ग विदेशो की अपसस्कृति से कितना प्रभावित और मुग्ध है। हमारी सस्कृति के साधन अपना भोजन विदेशी स्रोतो से प्राप्त करने मे इतने मशगूल हैं कि वहा की ओछी से ओछी खबरो को भी प्रमुखता से उछालते हैं। उदाहरण के लिए अमेरिका या ब्रिटेन मे कही कोई आठ दस साल की बालिका ने शिशु को जन्म दिया अथवा किसी विक्षिप्त ने यौन विकार ग्रस्त हो कर दस बीस युवतियो की हत्या कर दी तो भारतीय समाचार पत्रो के लिए यह एक जोरदार समाचार बन जाता है। कहने का मतलब यह है कि हम अपनी मौलिक सस्कृति को खो चुके हैं। हमारे पुस्तकालय कालिदास भवभूति, भास शकर, रामानुज वराह मिहिर आर्यभट्ट से कट कर शेक्सपियर गामो, बायरन चासर मिल्टन टालस्टाय आदि की रचनाओ से भरे होते तब भी गनीमत थी। मगर ऐसा भी नही हुआ। जो हुआ वह बहुत लज्जाजनक है। भारतीय सस्कृति के पृष्टपोषको के घरो की आलमारिया किताबो की जगह इलक्टानिक के उपकरणो से सज गई। हमारे लोक नायको ने केवल वैचारिक स्तर पर ही अपना निजत्व नही गवाया अपितु रहन सहन, भेष भूषा बोल चाल तथा जीवन पद्धति को भी अभारतीय बना डाला। आज हमारे मनो मे अपनी कला, साहित्य, नृत्य गीत सगीत किसी के प्रति कोई रूझान नही वेद उपनिषद शास्त्र स्मृति सूत्र—जिन मे मानवीय ज्ञान विज्ञान का अनन्त भण्डार भरा है के प्रति कोई जिज्ञासा नही विवेचना मक चिन्तन वस्तु को सही रूप मे देखने की प्रतिभा नही रही है। मनोरजन के लिए हम सिनेमाघरो की ओर भागते हैं घर के भीतर वी डी ओ और वी सी आर पर बच्चो के साथ बैठ कर मार धाड वाली अथवा ब्लू फिल्मे देखते हैं। हमारे बच्चे मा को मम्मी और पिता को पापा कह कर प्रगतिशीलता का परिचय देते हैं। कहा तक कहे भारतीय जीवन और सस्कृति का ऐसा कोई भी क्षेत्र नही बचा है जिसे विदेशी सस्कृतियो ने प्रदूषित न किया हो यहा तक कि हमारी शिक्षा दीक्षा राजनीति और सभ्यता भी शालीनता सुरूचिर-सम्पन्नता एव विवेकशीलता से शून्य हो गयी है।

चरित्र निर्माण भारतीय सस्कृति की मौलिक विशेषता थी। आज इसीका सबसे अधिक हनन किया जा रहा है। कभी भारतीय मनीषी अपने आचरण से सारे ससार को मुग्ध किए थे 'स्व स्व चरित्रम शिक्षेरन पृथिव्या सव मानवा' चरित्र बल से ही भारत जगत गुरु बना था आत्म बल से विश्व को आलोकित किए हुए था। सामाजिक जीवन मे चरित्रहीनता अभिशाप मानी जाती थी।

(क्रमश)

(4 पृष्ठ का शेष)

बाल्य और कैशोय काल मे यहा रही थी और यहा उन महाराज जसवन्तसिंह ने प्रथम बार देखा था। इस गाव के निवासियो मे यह भी धारणा प्रचलित है कि नदी से सम्बन्धित होने के कारण ही कोई धार्मिक वृत्ति का आगन्तुक व्यक्ति इस ग्राम का अन्न जल ग्रहण नही करता है। इसी प्रकार शाहपुरा निवासी श्री सोहनलाल शारदा से इस लेखक को यह जानकारी मिली है कि वर्षों तक धड जी मिश्र तथा उस के परिवार के लोगो के साथ कस्बे के अन्य ब्राह्मण परिवार बहिष्कृत व्यक्तियो का सा व्यवहार करते रहे और कोई भी व्यक्ति उनके यहा विवाह तथा अन्य सामाजिक समारोहो मे सम्मिलित नही होता था और न उनसे रोटी बेटी का व्यवहार ही होता था।

गुरुकुल करतारपुर मे प्रवेश आरम्भ

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जिला जालन्धर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से स्थाई मान्यता प्राप्त मे नये छात्रो का प्रवेश एक अप्रैल 1986 से आरम्भ हो रहा है। सरकारी स्कूलो मे पढाये जाने वाले हिन्दी गणित अग्रेजी विज्ञान समाज शास्त्र आदि सभी विषयो के साथ सस्कृत तथा धर्म शिक्षा भी अनिवार्य रूप मे पढाई जाती है।

निशुल्क शिक्षा हिन्दी माध्यम योग्य परिश्रमी अध्यापक स्वच्छ वातावरण सात्विक भोजन दूध व आवास की मात्र 0 रुपये मासिक पर समुचित व्यवस्था शुद्ध घृत व दूध की उपलब्धि के लिए गुरुकुल की अपनी गऊशाला इस गुरुकुल की अपनी विशेषताए है

प्रवेश के लिए छात्र का हिन्दी माध्यम से कक्षा पाच पास होना जरूरी है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आस्था रखने वाले सज्जन मिले अथवा पत्राचार करे।

—नरेश कुमार शास्त्री आचार्य
श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत
महाविद्यालय करतारपुर जिला जालन्धर

जापान की उन्नति का आधार कुछ वैदिक सिद्धान्त

लेखक—आचार्य श्री ब्र आर्य नरेश वैदिक प्रवक्ता
ज्ञानभवन, माडल बस्ती दिल्ली

(गताक से आगे)

उपरोक्त सब गुणो का मूल है आदर्श गुरु एव आदर्श शिक्षा प्रणाली वैदिक सिद्धान्त 'कस्मैत्वायुनक्ति तस्मैत्वायुनक्ति' इस यजुर्वेद की सूक्ति के अनुसार गुरुजन विद्यार्थियों को ठीक वैसे ही पालते हैं, जैसे कि मा गर्भ में अपनी सन्तान को। जापान के विद्यार्थी भी भारत के प्राचीन विद्यार्थियो के तुल्य अपने गुरु का श्रद्धा भक्ति से आदर करते हैं। कोई छात्र गुरु से ऊचे आसन पर नहीं बैठता, गुरु चल रहा हो तो उसके आगे नही चलता, गुरु आ जाये तो अपने स्थान से उठकर उन्हे ऊचा आसन देना है। विद्या ग्रहण मे बहुत तप करता है। जापान मे किसी छात्र अथवा छात्रा का विवाह महर्षि दयानन्द के द्वारा चतुर्थ समुल्लास मे बताये गये वैदिक सिद्धान्त के अनुसार आचार्य अथवा गुरु की आज्ञा एव उपस्थिति के बिना नही हो सकता। भारत की युवा पीढी गुरु जन एव माता-पिता इस बात को गम्भीरता से विचारें।

इस आदर्श पूर्ण गुरु शिष्य व्यवस्था की शुरुआत माता पिता मे होती है। वैदिक सिद्धान्त 'मातमान् पितमान आचार्यवान पुरुषो वेद' के ऊपर चलते हुए जहा माता पिता एव गुरु जन राष्ट्र की सबसे बडी सम्पत्ति सन्तानो के बनाने मे सम्पूर्ण शक्ति लगाते हैं, वहा बच्चे भी अपने कर्त्तव्य का पालन करते हैं। प्रतिवर्ष जापान मे एक दिन पर्व के रूप मे ऐसा मनाया जाता है, जिसमें प्रत्येक छोटा बडा बालक अपने माता पिता को कोई न कोई वस्तु भेंट करके विधिवत पूजा करता है।

जापान का प्रत्येक व्यक्ति वेदों मे बताये 'गावो मे अग्रतो' इस सूक्ति के अनुसार सब प्रकार को ऐश्वर्य देने वाले अमृत के तुल्य गाय का दूध पीता है। केवल दूध ही नही पीता अपितु गौओ को बहुत श्रद्धा से पालता है। वहा की गौशालायें अत्यन्त स्वच्छ विभिन्न प्रकार के फूलो से सुसज्जित एव मधुर ध्वनि से युक्त होती है। जोकि प्रत्येक व्यक्ति का मन मोह लेती हैं। जापान का एक नगर ही गौशाला बना हुआ है। जहा से प्रात काल होते ही विमान के द्वारा पूरे देश में ताजा दूध पहुच जाता है। गौ माता का नारा लगाने वाले भारतीयो कुछ विचारो।

जापान में उन्नति का छठा कारण वहा की जनता तथा नेताओं का अपने राष्ट्र भाषा जापानी के प्रति प्यार है। जापान में सब की शिक्षा अर्थात् सामाजिक, आर्थिक एव तकनीकी आदि इगलिश भाषा के स्थान जापानी भाषा मे ही दी जाती है। इसी के कारण वहा के लोग अधिक विद्वान् अधिक सगठित अधिक देश भक्त हैं। एक बार कार्यालय मे छुट्टी होने पर एक जापानी सज्जन का हाथ मे पकडा हुआ थैला अपने साथ वाले दूसरे जापानी मित्र को लग गया। तो उस पहले सज्जन के मुह से इगलिश का एक शब्द 'सोरी' अचानक निकल गया। बस क्या था, उसके सारे जापानी मित्र उसे घूर-घूर कर हीन दृष्टि से देखने लगे। 'सारी' कहने वाले सज्जन को अपनी गलती का पता चला और उसने अनेको बार अपने हाथो को घुटनो पर रख कर सिर झुका कर सब से क्षमा मागी।

स्वतन्त्रता के 38 वर्ष व्यतीत हो जाने पर गुलामी की निशानी अग्रेजी का भार ढो रही भारत सरकार कुछ विचार करें।

जापान की उन्नति का एक प्रमुख कारण है वेदानुसार—'कुर्वन्नेवेह कर्माणि' जापान के प्रत्येक छोटे बडे का अपने राष्ट्र के कल्याण के लिए सदामस्त रहने का स्वभाव। वहा का प्रत्येक व्यक्ति चाहे बालक हो, युवा हो चाहे वृद्ध हो या स्त्री हो अथवा पुरुष हर समय अपने कार्य मे लगा रहता है। आपको आश्चर्य है कि लगभग सिनेमाहाल खाली रहते हैं। वहा के परिवार सयुक्त होते हुए भी कोई सदस्य किसी पर भार नहीं बनता। यहा तक कि विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थी हमारे देश की तरह अपना कीमती समय सिनेमा, नोवल, नालों व्यसनो में न नष्ट करके कोई न कोई कार्य करते हैं। और अपना खर्चा आप निकालते हैं। इसका फल यह होता है कि वहा के लोग जहा एक ओर कई प्रकार की बुराइयो से बचते हैं वहा दूसरी ओर जापान के सामान की अधिक उपज होती है। और तीसरा लाभ यह होता है कि वहा लोग कम से कम रोगी होते हैं। भारत की तरह जापान के जवान या बूढे रविवार आदि की छुट्टी के दिन सडको पर ताश या चौपर खेलते हुए नही दिखाई देंगे। हमारे देश मे तो आजकल प्रात छ सात बजे आख खुलते ही लोग परिवार सहित वीडियो देखते मिलेंगे।

योगासन से निकला जिमनास्टिक खेल आदि भी जापान मे भारत से ही गये हैं। योग-आसनों की चर्चा पातञ्जल योग दर्शन के व्यास भाष्य मे मिलती है। जो कि इस विषय का दुनिया का सबसे पुराना ग्रन्थ है। जूडों कराटे के विषय मे भी यही कहा जाता है कि भारत के बौद्धभिक्षु आत्म रक्षा के लिए इसका प्रयोग किया करते थे। यह उन भिक्षुओ के साथ जापान मे गया जापान के लोगो ने इसका आदर किया। जापान के हर बालक को छोटी अवस्था से ही इसकी शिक्षा दी जाती है वही अनेको जिमनास्टिक सिखाने के विद्यालय चलाये जाते हैं। अभ्यास के बल पर जापान ने खेलो में दुनिया मे सबसे ऊचा नाम पाया। पर इधर हम लोग उस विद्या को केवल ग्रन्थों मे धर्म निरपेक्षता के नाम पर अलमारियो में बन्द करके बैठे रहे, और हमारे बच्चे उल्टे काम करने वाले शराब क्लबो तथा कैबरे होटलों मे बर्बाद होने के लिए समय काटते रहे।

जापान की एकता और अखण्डता एव शान्तिपूर्ण वातावरण का रहस्य वैदिक सूत्र है सब से एक समान व्यवहार 'अज्येष्ठासोऽकनिष्ठास' इस वैदिक सूक्ति के अनुसार सम्पूर्ण जापान वासियो के लिए चाहे वो जापानी हो मुस्लिम अथवा ईसाई। एक समान राज नियम अथवा (कामनसिविल कोट) जापान में भारत की तरह किसी खास वर्ग के लिए व्यक्तिगत राजनियम अर्थात(पर्सनल ला) नहीं है। किसी भी खास वर्ग, जाति या मजहब का व्यक्ति किसी भी स्थान के लिए अलग आरक्षण नहीं करवा सकता।

कोई मुसलमान व ईसाई एक से अधिक विवाह नहीं कर सकता कोई भी व्यक्ति अपने मुर्दों के लिए कब्र नहीं खोद सकता। सब महिलाओं के लिए एक समान सुविधाए हैं। चाहे वह जापान मूल की हों, चाहे ईसाई। जापान में रहने वाला प्रत्येक नागरिक पहले जापानी है। पीछे कुछ और वहा कोई मुस्लिम अथवा ईसाई अलग मुस्लिम स्थान अथवा ईसाई स्थान का नारा नहीं लगा सकता। जापान के प्रत्येक नागरिक को वहा के रीति-रिवाजो का पूर्ण सम्मान करना होता है। जो ऐसा करता है उसे ही वहा रहने का अधिकार मिलता है।

अत इन सामाजिक नियमों के एक समान एव कठोर होने के कारण ही जापान मे सदा एकता, अखण्डता एव शान्ति बनी रहती है।

जापान की उन्नति के इन सब वैदिक रहस्यो पर प्रकाश डालने के पश्चात् जापान की घडियाँ, ट्रान्जिस्टर, टेप, वीडियो, कार एव कपडे आदि को चाहने वाली भारत की सरकार तथा जनता से मैं यह पूछना चाहता हू, क्या कभी इन वस्तुओ को अपनाने के साथ-साथ जापान के इन वैदिक सिद्धान्तों को भी अपनाने का कष्ट करेंगे ? मेरा यह दृढ निश्चय है कि यदि नेता गण अपने मनमाने स्वच्छन्द ऐशो आराम के व्यवहार तथा लोभ को छोड कर जापान के नेताओं की तरह ही इस देश के कानून बनायें, तो तथा कथित राम राज्य का नारा, नारा मात्र न रहकर क्रियात्मक राम राज्य को प्राप्त हो सके।

तपोवन में बृहद् यज्ञ २१ अप्रैल से

देहरादून—वैदिक साधन आश्रम, तपोवन में बृहद् यज्ञ एव साधना शिविर 21 अप्रैल से 27 अप्रैल तक चलेगा। यज्ञ के ब्रह्मा महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थ होंगे। अन्य विद्वानों के अतिरिक्त प. शिवाकान्त जी उपाध्याय (नई दिल्ली) के प्रवचन सप्ताह भर चलेंगे।

उल्लेखनीय है कि तपोवन के अप्रैल तथा अक्तूबर मे प्रति वर्ष होने वाले बृहद् यज्ञो के अवसरों पर दूरस्थ स्थानों से भी नर-नारी बडी संख्या में आते हैं।

- देवदत्त शास्त्री, मन्त्री
वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

व्याख्यान माला—

वर्णव्यवस्था और उसका महत्व

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर पजाब

(गताक से आगे)

ततो ब्राह्मणता यातो विश्वमित्रो महातपा ।
क्षत्रिय सोऽप्यथ तथा ब्रह्मवशस्य कारक ।55।

इसी कारण क्षत्रिय होते हुए भी महा तपस्वी विश्वामित्र ब्राह्मण बन गया और फिर वह ब्राह्मण वश का निर्माता बन गया।

तेऽस्य पुत्रा महात्मानो ब्रह्मवश विवर्धना ।
तपस्विनो ब्रह्मविदो गोत्रकर्तार एव च ।56।

उस तपस्वी विश्वामित्र के महात्मा पुत्र ब्राह्मण वश को बढाने वाले तपस्वी वेद ज्ञाता और गोत्र निर्माता बने।

विप्राणा ज्ञानतो ज्यैष्ठ्य क्षत्रियाणा तु वीर्यत ।
वैश्याना धान्यधनत शूद्राणामेव जन्मत ।57।

ब्राह्मणो का बडप्पन ज्ञान से होता है क्षत्रियों का बडप्पन बल से होता है, वैश्यो का बडप्पन धन धान्य से होता है और शूद्रो का बडप्पन जन्म से होता है अर्थात जन्म—आयु मात्र से शूद्र ही महत्व पाता है अन्य जनो का महत्व तो उनके गुण-कर्म स्वभाव वशिष्टय मे ही है।

क्रियाहीनश्च मूर्खश्च सर्व धर्म विवर्जित ।
निर्दय सर्वभूतेषु विप्रश्चाण्डाल उच्यते ।58।

कार्य व्यवहार से हीन मूर्ख सब प्रकार के धर्म से रहित, सब प्राणियों मे दयाभाव न रखने वाला ब्राह्मण चाण्डाल कहलाता है।

पश्य लक्ष्मण पम्पाया बक परमधार्मिक ।
शनै शनै पद धत्ते प्राणिना वधशङ्कया ।59।
बक कि श्लाघ्यते राम येनाह निष्कुलीकृता ।
सहवासी विजानाति चरित सहवासिन ।60।

हे लक्ष्मण ! देख पम्पा सरोवर मे बगला बडा धर्मात्मा है कोई प्राणी न मर जाए इस आशका से धीरे धीरे कदम रख रहा है। यह बात सुन कर मछली ने कहा हे राजा इस बगुले की क्या प्रशसा करते हो जिसने मुझे कुलहीन कर दिया सच ही है कि सहचर ही सहचर के चरित्र को जानता है।

———

तीन बातों से मानवता है

१. अज्ञानी को ज्ञान देना मानवता है
२. भूखे-प्यासे को सन्तुष्ट करना, मानवता है
३. भूले हुए को मार्ग बताना मानवता है

विश्व योग सम्मेलन का निश्चय

आज यहा देश भर के प्रसिद्ध योग विशेषज्ञो की बैठक हुई जिसमे आगामी 8 9 नवम्बर 1986 को दिल्ली मे विश्व योग सम्मेलन करने का निश्चय किया गया।

सम्मेलन के सयोजक भतपूर्व सासद आचार्य भगवान देव जो कि योग मन्दिर के सम्पादक एव योग पर अनेक पुस्तको के लेखक हैं—ने बताया।

1—सम्मेलन से पूर्व एक योग साधना शिविर लगाया जाएगा।

2—योग विशेषज्ञो एव सस्थाओ का एक सचित्र ग्रन्थ प्रकाशित किया जाएगा।

3—योग पर प्रकाशित तीन सर्वश्रेष्ठ पुस्तको को पुरस्कृत किया जाएगा।

4—योग सम्बन्धी पाठय पुस्तक तयार करवाई जाएगी।

5—योग के क्षेत्र मे सराहनीय कार्य करने वालो का सम्मान किया जाएगा।

6—योग विश्वविद्यालय स्थापित करने हेतु योजना तयार की जाएगी।

7—योग के विभिन्न पक्षो पर सुन्दर चित्रो एव पुस्तको की प्रदर्शनी लगाई जाएगी।

8—देश भर के प्रसिद्ध योगियो द्वारा योग क्रियाओ का शारीरिक प्रदर्शन आयोजित किया जाएगा।

इस बैठक मे स्वामी गीतानन्द (पाण्डीचेरी) स्वामी सच्चिदानन्द योगी (हरिद्वार) स्वामी हरिभक्त जी (जम्मू) स्वामी ऋतज्ञानन्द (पन्ना) डा वेदव्रत (दिल्ली) योगिनी रेणुका (देहरादून) मेजर कृष्ण कुमार अवतार श्री जगदीश जी राजीव लोचन स्वामी सूर्यानन्द डा वेदव्रत आदि विशिष्ट महानुभावो ने भाग लिया।

—इ क ना गुप्ता
महामन्त्री

वेद प्रचार शिविर—कुम्भ मेला हरिद्वार

कुम्भ मेला हरिद्वार के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की ओर से (कार्यालय आर्य समाज मन्दिर श्रवण नाथ नगर हरिद्वार) 1 अप्रैल से 14 अप्रैल 1986 तक एक विशाल वेद प्रचार शिविर लगाया जा रहा है। इस हेतु आवश्यक व व्यापक तैयारी प्रारम्भ हो चुकी है सरकार से भूमि आबन्टन हो गया है। उसी के साथ आवश्यक सभा मडप यज्ञ स्थल एव अन्य आयोजनों को सुव्यवस्थित रूप दिया जा रहा है। वेद प्रचार को गति देने के लिए जो कार्य यहा आयोजित किए जा रहे हैं उसकी रूप रेखा सभा मे भेजी जा रही है। आप महानुभावो से प्रार्थना है कि शिविर को पूर्ण सफल करने हेतु आप लोग भागीरथ प्रयत्न करें। सनातन धर्म के गढ मे यह आर्य समाज की प्रतिष्ठा का प्रश्न है। सभी आयोजनो का एक उत्तम स्तर पर किया जाना आवश्यक है इस हेतु जहा हम यहा पूर्ण प्रयत्नशील हैं वहा आप लोग कृपया धन अन्न एव जन से हमे सहयोग प्रदान करेंगे ऐसी पूर्ण आशा है। इस अवसर पर आवास एव भोजन आदि का सुव्यवस्थित आयोजन किया जा रहा है रसीद बुक छप गई है। जो जिला सभाओ के माध्यम से वितरित की गई है व की जा रही है जहा न पहुचे उपरोक्त पते पर सम्पर्क करें।

जैसा आपको विदित ही है कि आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने यहा हरिद्वार कुम्भ पर पाखण्ड खण्डनी पताका फहरा कर अपना शखनाद किया था आज हिन्दू समाज की दुर्दशा अति गम्भीर है और भारत की अधिकाश जनता की आख केवल आर्य समाज की ओर लगी हैं। हमें इस अवसर को खोना नही है विश्वास है कि आर्य बन्धु अपने पूर्व इतिहास को ध्यान मे रखते हुए इस चलेंज के लिए पूर्ण कटिबद्ध होकर जुट जाएगे।

हरिद्वार के प्रबन्ध को सचालन के लिए आपसे प्रार्थना है कि—

★जो अन्न एकत्रित होता जाए अग्रिम भेजते रहें रसोई का सामान दिल्ली व कुम्भ मेले पर कर लिया जाएगा।

★अन्न सग्रह जितना जमा भी हो वे जिले में एक स्थान पर एकत्रित कर हमे पता दें हम उसे उठवा लेंगे।

★जो सज्जन इस अवसर पर कार्य सचालन मे समय देना चाहते हैं वे अविलम्ब अपने पते सहित कब से कब तक समय देंगे लिख दें जिससे उनकी सेवाओ का लाभ उठाया जा सके।

★साहित्य वितरण भी व्यापक रूप से किया जाना है अत जो सज्जन अपनी ओर से इस मद मे सहयोग देना चाहते हैं उनके नाम पते दें हम उनकी ओर से, जो साहित्य छप रहा है उस मे उनके नाम दे देंगे। —धर्मेन्द्रसिंह आर्य सयोजक

शिवरात्रि विशेषांक वाह ! वाह !

आदरणीय वीरेन्द्र जी !

सादर नमस्ते !

आशा है आप स्वस्थ एव प्रसन्न होंगे। आगे समाचार यह है कि सभा के मुख पत्र आर्य मर्यादा का शिवरात्रि विशेषांक प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव मे सुन्दर एव आकर्षक था। सभी लेख शिक्षा प्रद एव प्रेरणा दायक थे। सम्पादकीय लेख का तो अनुपम ही महत्व रहा। बाकी लेख भी काफी पठनीय थे। इस अंक को पढ़ कर जीवन मे एक नई शिक्षा मिली। इस पत्र के विशेषांक की बड़ी भूख रहती है।

यह विशेषांक भी अपनी ही शान के अनुरूप निकला है। आर्य जगत का यही एक मात्र पत्र है जो वैदिक धर्म एव महर्षि दयानन्द सरस्वती के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए कृतसंकल्प है। इस विशेषांक के कुशल सम्पादन हेतु बधाई।

—रामकुमार आर्य
आर्य समाज दुल्लागढ़
गोहाना (सोनीपत) हरि

आर्य समाज बंगा में समारोह

आर्य समाज बगा (जालन्धर) मे 16 3 86 को ऋषिबोधोत्सव के उपलक्ष मे विशेष समारोह मनाया गया। हवन यज्ञ के उपरान्त महर्षि दयानन्द सिलाई स्कूल की छात्राओं ने प्रभु भक्ति के गीत गाए। इसके पश्चात श्री प. रामनाथ जी सि वि महोपदेशक सभा तथा श्री केवल कृष्ण जी सहगल के प्रभावशाली व्याख्यान हुए। इस समारोह मे भारी सख्या मे आर्य बन्धुओं व महिलाओ ने भाग लिया।

आर्य समाज महर्षि दयानन्द सिलाई स्कूल गत दिनो से चल रहा है जिसमें भारी सख्या मे लड़किया सिलाई सीखने आती है। इन सभी लड़कियो ने भी इस समारोह में भाग लिया।

—शादीलाल महेन्द्र,
मन्त्री

पोप के भारत आगमन के बाद

पोप की भारत यात्रा की समाप्ति पर सब से पहले याद आती है, वे कुछ पीड़ा दायक घटनाए, जो उनके आगमन से पूर्व सारे देश में घटी थीं। त्रिवेन्द्रम (केरल) के शंकुमुखम समुद्र तट पर पोप के स्वागत के लिए जिस चौकी का निर्माण किया गया था, उसके कारण काफी बावेला मचा कारण यह स्थल हिन्दुओ के सुप्रसिद्ध त्योहार अराट्टि का समारोह स्थल है, और उन्हे यह डर हुआ कि कही यह स्थल पोप के जाने के बाद स्थायी रूप से उनके हाथों से छिन ती नहीं जायेगा। उधर मद्रास के समुद्र तट पर अपना धधा करने वाले मछुए पिछले अक्तूबर में हुए पुलिस के उस निमम लाठी प्रहार को कभी नहीं भूल सकेंगे जो पोप के स्वागत के लिए चौकी बनाने के स्थान की खोज हेतु किया गया था, और जिस में छ मछुओ की जानें गयी थीं।

मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल मे रहने वाले आधे लाख के करीब रोमन कैथलिक ईसाईयों को भी पोप के भारत आगमन पर विशेष प्रसन्नता नहीं हुई थी कारण प्रेम और [illegible] की बातें करने वाले [illegible] ने भोपाल आकर [illegible] दुर्घटना में दिसम्बर 1984 में मरे अथवा अपाहिज लोगों के परवालों के प्रति संवेदना व्यक्त करने से साफ इन्कार कर दिया था। पोप महोदय के इस निर्णय से अप्रसन्न भोपाल के आधे लाख के करीब कैथलिकों ने [illegible] का बहिष्कार किया।

—[illegible]
महामन्त्री आर्य स्वातन्त्र्य सम्पूर्ति समिति मन्त्री

आर्य मर्यादा में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस नेहरू गार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 रजि. न. पी जे एल 55

वर्ष 18 अक 2 1 वैसाख सम्वत् 2043 तदानुसार 13 अप्रैल 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अक 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

१८ अप्रैल को राम नवमी (राम जन्म दिवस) का पर्व मनाएं

दृढ़व्रती मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम

18 अप्रैल को सर्वत्र भारत और भारत से बाहिर जहा भी भारत के लोग रहते हैं मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म दिवस मनाया जाएगा। भारत के दो देदीप्यमान नक्षत्र हैं जो चान्द, सूर्य की भान्ति सदा भारतीय आकाश पर चमकते रहेंगे। एक मर्यादा पुरुषोत्तम राम और दूसरे हैं योगीराज श्री कृष्ण जी। भारत की सारी संस्कृति इन दोनो महापुरुषो के चारो ओर घूमती हुई दृष्टिगोचर होती है। रामायण और महाभारत महा काव्यो को जिनमे इन दोनो का इतिहास है यदि भारतीय इतिहास से निकाल दिया जाए तो सारा इतिहास अधूरा ही रह जाएगा।

रामायण का आरम्भ तप और स्वाध्याय मे लगे हुए स्थान स्थान पर घूमने वाले विद्वान नारद मुनि से महर्षि बाल्मीकि के सम्वाद से आरम्भ होता है। बाल्मीकि ने प्रश्न किया कि मुनिवर आप स्थान पर घूमते हैं किसी महान् गुणी के गुणो का वर्णन करो ताकि मैं उस पर एक काव्य रचना कर सकू। बाल्मीकि ने पूछा—

"हे मुनिवर जो महान गुणवान शक्तिमान, पराक्रमी धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्य वक्ता, अपने व्रत पर दृढ सदाचार युक्त, सर्व प्राणियो के कल्याण मे रत, विद्वान् सामर्थ्यशाली अद्वितीय देखने मे सुन्दर सब को प्यारा लगने वाला जो तपस्वी हो, परन्तु क्रोधी न हो, तेजस्वी हो परन्तु ईर्ष्यालु न हो, जो दयालु और अक्रोधी होते हुए भी जब रोष मे आ जाए तो जिसके रौब को देख कर देवता भी कांप उठें। तुम ऐसे पुरुष को जानने मे समर्थ हो ऐसे पुरुष का वर्णन करो। मुनिवर नारद ने वर्णन किया कि—

इक्ष्वाकु वश मे उत्पन्न [illegible] राम नाम से लोगो में प्रसिद्ध हैं [illegible] स्थिर मन वाला, अपने आपको वश में रखने वाला, बुद्धिमान, नीतिमनान मधुर बोलने वाला, शोभा वाला, शत्रुओ का नाश करने वाला, मोटे कन्धो वाला, बडी भुजाओ वाला शख की तरह गर्दन वाला, बडी छाती वाला बडे धनुषवाला, सुन्दर गति वाला, विशाल नेत्रो वाला, धर्मज्ञ, यशस्वी विद्वान और जिन गुणो का आपने वर्णन किया उन सब से सम्पन्न तथा वेद वेदाङ्ग के तत्व को जानने वाला, सारे शास्त्रो के गूढ आशय को जानने वाला, सभी विद्याओ मे निपुण महान तेजस्वी सभी मर्यादाओ का पालन करने वाला 'कौशल्यानन्द वर्धन प्रिय दशरथ सुतम माता कौशल्या को आनन्द देने वाला वह दशरथ पुत्र राम है।

यहा से रामायण का आरम्भ हुआ है सचमुच जब हम राम के जीवन को पढते है तो यह सब गुण उनमे विद्यमान पाते हैं। वह गुणवान भी है और शक्तिशाली भी है। कई व्यक्ति पराक्रमी तो होते हैं परन्तु गुणवान नही होते, बहुत से गुणवान तो होते है परन्तु पराक्रमी नही होते। राम का जीवन उस गुड के डले के समान है जिसे जिधर से भी चखो वह मीठा ही लगेगा।

जब हम राम को एक पुत्र के रूप मे देखते हैं तो वह एक सुपुत्र के रूप मे उभर कर हमारे सामने आते है। वह अपनी माता कौशल्या के समान ही कैकेयी और सुमित्रा से भी प्यार करते है और वह भी उसे अपने पुत्रवत ही मानती हैं। "अनुव्रत पितु पुत्रो माता भवतु समना।" वेद के इस मन्त्र के अनुसार राम माताओ का आदर मान करने वाले और पिता के आज्ञाकारी पुत्र थे कैकेयी के द्वारा महाराज दशरथ से अपने दोनो वर मांग लेने पर जब राम को बुलवाया गया तो महाराज दशरथ होश में नहीं थे। कैकेयी ने ही अपने वरो की बात और पिता की आज्ञा सुनाई। उसे ही शिरो धार्य करके राम वन को चले गए। क्या आज के पुत्र भी राम से कुछ शिक्षा ले सकेगे जो थोडे से जमीन आदि के लालच के कारण अपने पिता तक की हत्या कर देते हैं। कहा राम ने इतने बडे राज्य को ठोकर मार दी।

राम एक सच्चे भाई थे वेद के इस मन्त्र के अनुसार 'मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन भाई भाई मे द्वेष न करे अर्थात प्यार करे के अनुसार राम सब भाईया को प्यार करते थे और सब भाई उन्हे प्यार करते थे। लक्ष्मण से तो उनका इतना स्नेह था जब लका मे मेघनाद के साथ लडते हुए लक्ष्मण मूर्छित हो जाते हैं तो राम स्पष्ट कर देता है कि यदि लक्ष्मण जीवित नही हुआ तो वह भी जीवित नही रहेगा और अयोध्या मे अकेला वापिस नही जाएगा। भरत मे भी उनका पूर्ण स्नेह था तभी तो उन्होने अयोध्या के राज्य का सचालन उनके हाथ मे दे दिया था। नही तो उनको वापिस ले जाने के लिए किसी ने भी कोई कसर उठा न रखी थी।

वह एक सच्चे मित्र थे। जब वह किसी को अपना मित्र बना लेते थे तो उसका पूरा साथ निभाते थे, वह कृतज्ञ भी थे। किए हुए अहसान को भूलने वाले नही थे तभी तो उन्होने सुग्रीव और विभिषण के किए हुए अहसान को मानते हुए दोनो मित्रो को किष्किन्धा और लका का, राज्य बाली और रावण को समाप्त करके उन्हे दे दिया था।

वह एक सच्चे पति भी थे। घर मे एक से अधिक विवाहो की प्रथा होते हुए भी सीता के हरी जाने पर उसे प्राप्त करने के लिए उन्होने प्राणो की बाजी लगा दी। नही तो उनको क्या पडा था सीता हरी गई तो वह दूसरा विवाह कर लेते उन्हे और भी कई राज कुमारियां मिल सकती थी। जैसे उनके पिता दशरथ ने तीन विवाह किए हुए थे। परन्तु राम एक पत्निव्रती थे।

वह दृढव्रती भी थे। जब वह कोई कदम उठा लेते थे फिर उसे पीछे नही हटाते थे वह जीवन मे अपनी डगर पर आगे ही बढते रहे। पिता को वचन दिया उसे प्राणो की भी चिन्ता न करते हुए पूर्ण किया। चित्रकुट मे वही कैकेयी जिसने 14 वर्ष के वनवास की बात कही थी अब उन्हे वापिस ले जाने के लिए बड़े 2 यत्न करती है परन्तु राम अपने व्रत से टस से मस नही होते।

वह महान चरित्रवान थे। रावण की बहन स्वरूपनखा जो अति सुन्दरी थी जब पतिपन की भावना लेकर उनके सामने आती है तो वह उसकी ओर निहारते भी नही। सुलोचना अपने पति मेघनाद का शव लेने के लिए जब युद्ध भूमि मे जाती है तो रावण की धर्म पत्नी दामोदरी भी उनके चरित्र का बखान करती हुई कहती है कि तू निसकोच होकर चली जा राम बहुत चरित्रवान है वहां तुम्हारी तरफ कोई आख उठा कर भी नही देख सकता और हुआ भी ऐसा ही। जिससे सुलोचना को भी दोनो भाईयो को देख कर कहना पडा तुम्हारी शक्ति नही तुम्हारे चरित्र ने मेरे पति को मारा है। शक्ति मे तो मेरा पति भी कम नही था परन्तु उसके पास वह चरित्र नही था जो तुम्हारे पास है।

वह महान नीतिज्ञ भी थे। सीता हरण पर वह जब यह जान गए कि सीता रावण की कैद मे लका मे है तो वह अयोध्या से समाचार भेज कर सेना बुला लेते। क्योंकि रावण जैसे शक्तिशाली राजा से उनका युद्ध होने वाला था। उन्होने ऐसा इसलिए नही किया कि यदि मैं अयोध्या से सैनिक बुलाऊगा तो उसका रावणको पता चल जाएगा और वह भी अपने मित्र राजाओ को और उन की सेनाओं को इकट्ठा कर लेगा। साथ ही युद्ध की भी पूर्ण तैयारी करेगा।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सोमरस पान से मैं महान् हो गया हूं

लेखक—स्वामी श्री जगदीश्वरानन्द सरस्वती

※

नहि मे अक्षिपन्चनाच्छान्त्सु पञ्च कृष्टय ।
कुवित्सोमस्यापामिति ॥—ऋ. 10।119।6

शब्दार्थ—अब (पञ्च) पाच (कृष्टय) मार्गों (शब्द, स्पर्श रूप, रस और गन्ध) से अपनी अपनी ओर खींचने वाली पाचो ज्ञानेन्द्रिया (मे) मुझे (अक्षिपत चन) निमेषमात्र, क्षणभर भी (नहि) नही (अच्छान्त्सु) लुभा या भ्रमा सकती (इति) क्योकि मैंने (सोमस्य) सोमरस का (कुवित् अपाम्) प्रभूत, डटकर पान किया है।

जब तक मैंने सोमपान नही किया था, ब्रह्मरस का रसास्वादन नही किया था तब तक मेरी इन्द्रिया मुझे लुभा और भ्रमा रही थी। मेरे कान अश्लील एव गन्दे तरानो की ओर भाग रहे थे। मेरी आखें सुन्दर रूपो को कुदृष्टि से देखने के लिए चचल रही थी। मेरी नासिका विषय-वासनाओ की गन्ध लेने मे मस्त थी। मेरी जिह्वा नाना प्रकार के खट्टे-मीठे, चटपटे पदार्थों का सेवन कर रही थी। मेरी त्वचा नरम नरम स्पर्शों के अनुभव मे लगी थी। परन्तु जब मैंने सोमपान किया, सोम-सरोवर—प्रभु के आनन्दरस मे डुबकी लगाई तो मेरा काया पलट हो गया। मेरी आखो पर जो परदा पड़ा था, वह हट गया। अब मुझे समझ मे आया—

कुरङ्गमातङ्गपतङ्गभृङ्गा मीना हता पञ्चभिरेव पञ्च।
एक प्रमादी स कथ न घात्यो य सेवते पञ्चभिरेव पञ्च ॥
—गरुड़पु 115।21

हिरण हाथी, पतगा भौंरा और मछली—ये सब एक एक इन्द्रिय के स्वाद के कारण नष्ट हो जाते हैं। हिरण तार वाले वाद्य (इकतारा, तम्बूरा आदि) की तान पर मस्त होकर अपने प्राण गवा देता है। हाथी स्पर्श सुख के वशीभूत हो कर मारा जाता है। पतगा दीपकादि की रूप-ज्वाला पर अपने को भस्म कर देता है। मछली स्वाद के कारण जीवन से हाथ धो बैठती है और भौंरा गन्ध पर मस्त होकर प्राणो से वियुक्त हो जाता है। ये सब तो एक एक इन्द्रिय के स्वाद के कारण मारे जाते हैं फिर जो पाचो इन्द्रियो के द्वारा पाचो विषयो का सेवन करता है वह मायारूपी सोम मे मदहोश क्यो नही मारा जाएगा।

मैं अब सावधान हो गया हू। एक-एक इन्द्रिय की तो बात ही क्या, अब तो सारी इन्द्रिया इन्द्रियो के विषय मिलकर भी मुझे क्षणभर के लिए भी न लुभा सकेंगे। मेरी तो अब यह स्थिति है—

वि मे कर्णा पतयतो वि चक्षुर्वीद ज्योतिर्हृदय आहित यत्।
वि मे मनश्चरति दूर आधी कि स्वद् वक्ष्यामि किमु नु मनिष्ये ॥
—ऋ 6।9।6

अब मेरे कान विश्वनायक परमेश्वर के गुणवचन और स्तुतिगीत श्रवण मे लग गये। मेरी आखें परमेश्वर की छवि और उसकी विभूतियो को निहारने मे लग गई हैं। मेरे हृदय मे विराजमान अह ज्योति उस परमेश्वर मे समाविष्ट हो गई उसी को अपना सर्वस्व मान लिया। दूर-दूर की उडाने भरने वाला मेरा मन अब प्रभु के चिन्तन मनन और स्मरण मे तल्लीन हो गया। मैं अपनी स्थिति को क्या कहू और क्या मानू। इसे शब्दो मे व्यक्त नही किया जा सकता।

नहि मे रोदसी उभे अन्य पक्ष चन प्रति।
कुवित्सोमस्यापामिति ॥
—ऋ 10।119।7

शब्दार्थ—मुझ मे ऐसी शक्ति और बल आ गया है कि (रोदसी) द्युलोक और पृथिवीलोक (उभे) दोनो मिलकर भी (मे) मेरे (अन्यम् एक (पक्षम् चन) पक्ष बाजू के भी (प्रति) बराबर (नहि) नही है (इति) क्योकि मैंने (सोमस्य) सोमरस का प्रभु भक्ति के आनन्द का (कुवित अपाम्) बहुत-बहुत डटकर पान किया है।

व्याख्या—द्युलोक कितना विशाल है। इसमे अरबो और खरबो सूर्य हैं। इस मे अरबो सौरमण्डल हैं अरबो आकाशगगायें हैं। लाखो धूमकेतु—पुच्छल तारे हैं।

एक-एक सूर्य कितना बड़ा है इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि प्रकाश की गति एक सैकिण्ड में एक लाख छियासी हजार मील अथवा तीन लाख किलोमीटर है। एक वर्ष मे प्रकाश अट्ठावन खरब, पैंसठ अरब, उनहत्तर करोड़, साठ लाख मील (58 65,69,60,00 000) चलता है। कुछ सूर्य हमारी पृथिवी से इतनी दूर हैं कि उनका प्रकाश इतनी तीव्र गति से चलता हुआ भी आज तक अर्थात् एक अरब, छियानवे करोड़, आठ लाख तिरेपन हजार तिरासी (1,96,08,53, 083) वर्ष मे भी हमारी पृथिवी पर नहीं पहुचा है। है कोई ठिकाना इसकी विशालता का! इसकी विशालता का चिन्तन करते हुए बुद्धि चकरा जाती है।

हमारी पृथिवी भी बहुत विशाल है। इसकी परिधि पच्चीस हजार मील है। और इसका व्यास लगभग आठ सहस्र मील। इसमे हिमालय जैसे ऊचे-ऊचे पर्वत हैं और प्रशान्त महासागर जैसे गहरे समुद्र। साधारण मनुष्यो के लिए न हिमालय की चोटी पर पहुचना सम्भव है और न ही प्रशान्त महासागर की थाह पाना सम्भव है। भारत में ही इतने ग्राम हैं कि मनुष्य एक एक दिन में एक-एक ग्राम का भ्रमण करे और उसकी आयु सौ वर्ष की हो तो उसे सारे ग्रामो का भ्रमण करने के लिए अट्ठारह जन्म लेने पड़ेंगे। सारा विश्व कितना विस्तृत है इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

सचमुच द्युलोक और पृथिवीलोक महान् हैं परन्तु सोम का पान कर के मैं इतना महान हो गया हू कि द्युलोक और पृथिवीलोक तो मेरे एक बाजू के बराबर भी नही है। मेरा द्युलोक (ग्रीवा से ऊपर का भाग) ज्ञान-ज्योति से चमक गया है। मैं धैर्य मे हिमालय की भाति अडिग और गाम्भीर्य मे समुद्र की भाति हो गया हू। मैं चेतन हू और द्युलोक तथा पृथिवीलोक जड़ है अत ये दोनों मेरी एक भुजा के बराबर भी नहीं हैं।

अभि द्या महिना भुवमभीमा पृथिवी महीम्।
कुवित्सोमस्यापामिति ॥
—ऋ 10।119।8

शब्दार्थ—नि सन्देह यह द्युलोक बड़ा महिमाशाली है परन्तु मैंने (महिना) अपनी महिमा अपने गौरव से (द्याम्) इस द्युलोक को (अभि भुवम्) परास्त कर दिया है, पीछे छोड़ दिया है। सचमुच यह पृथिवी बहुत विस्तृत है परन्तु मैंने अपनी विशालता से (इमाम्) इस (महीम्) विशाल (पृथिवीम्) पृथिवी को भी (अभि) परास्त कर दिया है (इति) क्योंकि मैंने (सोमस्य) सोमरस का, ब्रह्मानन्द अमृत का (कुवित् अपाम्) डट कर पान किया है।

व्याख्या—सचमुच द्युलोक महान् है और पृथिवी विशाल है परन्तु मैंने अपनी महत्ता से इन दोनों को पराजित कर दिया है, क्योंकि—

अर्श को समा, कब तेरी वसूअत को पा सके।
मेरा ही है वो दिल कि जहा तू समा सके ॥

परमात्मा पृथिवी और आकाश की सीमाओ से परे है। परमात्मा हृदय मन्दिर में ही समा सकता है। मानव का शरीर ही वह देवालय है, जहा प्रभु का दर्शन हो सकता है। मैंने अपने हृदय की उदारता और गाम्भीर्य से, मन की उड़ान और मस्तिष्क की ज्योति से द्युलोक और पृथिवीलोक को पीछे छोड़ दिया है। सोमरस का पान कर मुझ मे मानवता, प्रेम मधुरता, विशालता, दिव्यता, कोमलता, परदुःख कातरता, सहानुभूति सेवा, सयम, सदाचार, सत्य, अहिंसा पवित्रता, सन्तोष समता, निर्भयता नम्रता आदि गुणो का सञ्चार हो गया है। जीवन मे इन गुणो के विकास के कारण मे द्युलोक और पृथिवीलोक से ऊचा उठ गया हू। अब तो मेरी स्थिति ऐसी है—

शिरो मे श्रीर्यशो मुख त्विषि केशाश्च श्मश्रूणि।
राजा मे प्राणो अमृत सम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम् ॥
जिह्वा मे भद्र वाङ् महो मनो मन्यु स्वराड् भाम।
मोदा प्रमोदा अङ्गुलीरङ्गानि मित्र मे सह ॥
बाहू मे बलमिन्द्रिय हस्तौ मे कर्म वीर्यम्।
आत्मा क्षत्रमुरो मम ॥
—यजु 20।5-7

मेरा सिर मेरी शोभा और ऐश्वर्य है मेरा मुख यश सौरभ से सुवासित है, मेरे केश और दाढी-मूछ कान्तियुक्त हैं, मेरा तेजस्वी प्राण अमृतमय है, मेरे नेत्र दिव्य एव मैत्री दृष्टि से युक्त है, मेरे कान प्रजापति के अनन्त सन्देश को सुनने में सक्षम है।

मेरी जिह्वा कल्याणकारी है, मेरी वाणी—बोलने की शक्ति महान् है मेरा मन मननशील है, आत्म ज्योति प्रचण्ड तेज मे युक्त है। मेरी अगुलिया और सब अङ्ग मोद और प्रमोद से युक्त हैं और साहस मेरा मित्र है।

मेरी भुजाएं और इन्द्रिया बलशाली और बल-वीर्य सम्पन्न हैं। मेरा अन्तरात्मा और हृदय दुखियों को सकटों से उबारने में सक्षम है।

———

सम्पादकीय—

आर्य समाज और रामकृष्ण मिशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती और श्री रामकृष्ण परमहंस समकालीन थे। 19 वीं शताब्दी में जिन दो संस्थाओं ने इस देश की जनता और विशेष कर बुद्धिजीवियों को प्रभावित किया था, उन में एक आर्य समाज था और एक रामकृष्ण मिशन। आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने की थी और रामकृष्ण मिशन की स्थापना श्री रामकृष्ण परमहंस ही ने की थी। दोनों का आधार देश की उस समय की हिन्दू जनता में एक नई जागृति पैदा करना था परन्तु दोनों के रास्ते भिन्न-2 थे। महर्षि दयानन्द की विचारधारा का आधार वेद थे। श्रीरामकृष्ण परमहंस इसकी विचारधारा का कोई भी निश्चित आधार न था, फिर भी उनके जो अनुयायी थे विशेषकर स्वामी विवेकानन्द जी वह उपनिषदों को अधिक महत्व देते थे जहां भी रामकृष्ण मिशन स्थापित किए गए थे वहां जो सन्यासी रहते थे वह अधिकतर उपनिषदों के आधार पर ही अपने विचार जनता के सामने रखते थे। आर्य समाज और रामकृष्ण मिशन में एक और भेद भी था। आर्य समाज यद्यपि एक प्रमुख धार्मिक संस्था थी फिर भी उसने देश की सामाजिक और राजनैतिक समस्याओ की ओर से अपना ध्यान नहीं हटाया था। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने दो विख्यात ग्रन्थ लिखे थे। सत्यार्थ प्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका दोनों में धर्म और राजनीति के अतिरिक्त देश की सामाजिक समस्याओं के विषय में भी बहुत कुछ लिखा गया था। श्री रामकृष्ण परमहंस स्वयं पढ़े लिखे न थे इसलिए उनकी कोई निश्चित विचारधारा न बन सकी। श्री रामकृष्ण परमहंस जी अधिकतर साधना में विश्वास रखते थे। इस लिए स्वयं भी साधक थे और दूसरों को भी यही कहते थे कि साधना करो और अपने आप को शुद्ध करो परन्तु उन्हें यह पता न था कि किसकी साधना करें, इस लिए कई बार वह वैष्णव बन जाते थे, कई बार शैव और तान्त्रिक बन जाते थे और कई बार मुसलमान और इसाई का रूप भी धारण कर लेते थे। उनका यह कहना था कि सब धर्म समान हैं। इस लिए किसी भी धर्म के द्वारा साधना की जा सकती है। परन्तु उनके परम शिष्य स्वामी विवेकानन्द अधिकतर हिन्दुत्व की ओर ध्यान देते थे और जब वह एक बार 1893 ई. में अमेरिका में अखिल विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने के लिए गए तो वहां उन्होंने जो कुछ कहा वह हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति के पक्ष में ही कहा था।

इस प्रकार यह तीन महा पुरुष, तीन भिन्न-2 रूपों में हमारे सामने आते हैं। महर्षि दयानन्द का एक निश्चित दृष्टिकोण था। वह जो कुछ कहते थे स्पष्ट और निश्चित कहते थे। एक बार जब महर्षि कलकत्ता गए तो श्री रामकृष्ण परम हंस उनसे मिलने आये दोनों में जो बातचीत हुई उसके पश्चात् श्री रामकृष्ण परमहंस ने कहा :—

"दयानन्द से भेन्ट करने गया मुझे ऐसा दिखा कि उन्हें थोड़ी बहुत शक्ति प्राप्त हो चुकी है। उनका वक्ष स्थल सदैव आरक्त दिखाई पड़ता था रात-दिन लगातार शास्त्रों की चर्चा किया करते थे।"

इस प्रकार श्री राम कृष्ण परमहंस पर भी महर्षि का प्रभाव तो हुआ था परन्तु जो कुछ महर्षि कहते थे उसे समझना भी श्री रामकृष्ण जी परमहंस के लिए कठिन था। महर्षि दयानन्द जी की गणना 19 वीं शताब्दी के उच्चकोटि के विद्वानों में हुई है। इस प्रकार महर्षि दयानन्द और श्रीराम कृष्ण परमहंस में आपस में कोई तुलना नहीं हो सकती। आज आर्य समाज को जो महत्व मिला वह महर्षि दयानन्द के कारण और रामकृष्ण मिशन को जो महत्व मिला वह स्वामी विवेकानन्द के कारण और स्वामी विवेकानन्द यदि इस देश में इतने लोकप्रिय हुए तो इस कारण कि वह हिन्दू और हिन्दुत्व के एक प्रकार से प्रतीक बन गए थे। आज भी हम देखते हैं कि वह सब संस्थाएं जो हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति और हिन्दुत्व का प्रचार करना चाहती हैं वह स्वामी विवेकानन्द जी को अपना आदर्श समझती है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और विश्व हिन्दू परिषद् जैसी संस्थाएं महर्षि दयानन्द सरस्वती का तो नाम लेना भी पसन्द नहीं करती वह सारा महत्व स्वामी विवेकानन्द को देती है और वह केवल इस लिए कि स्वामी विवेकानन्द जी हिन्दू, हिन्दुत्व और हिन्दू संस्कृति के प्रवक्ता समझे जाते हैं।

यह तो स्पष्ट है कि इस विषय में आर्य समाज और रामकृष्ण मिशन में मतभेद है। रामकृष्ण मिशन उपनिषदो और गीता को अधिक महत्व देता है आर्य समाज उपनिषदो और गीता के महत्व से इन्कार नहीं करता परन्तु वह यह भी कहता है कि वेद इनसे भी ऊपर हैं। वेदों में से ही उपनिषद निकले और उपनिषदों में से गीता निकली। इसलिए वेद हमारे धर्म के वास्तविक स्रोत है। यदि हमने उपनिषदो को और गीता को समझना है तो उसके लिए भी आवश्यक है कि वेदो को समझें वही हमारे धर्म की जिसे हम वैदिक धर्म कहें सनातन धर्म कहें या हिन्दू धर्म कहें, की गंगोत्री है। जिस प्रकार गंगा, गंगोत्री से चल कर जब नीचे मैदानों में आती है तो फैलती जाती है इस प्रकार वेद गंगोत्री से निकल कर हमारा धर्म आगे चल कर उपनिषद्, गीता और दूसरे ग्रन्थों के रूप में जनता के सामने आया है।

महर्षि दयानन्द, श्री रामकृष्ण परमहस और स्वामी विवेकानन्द इन तीनों में क्या अन्तर है यह मैने संक्षिप्त रूप से पाठको के सामने देखा है। यह इस लिए भी आवश्यक हो गया है कि इस समय तक कुछ व्यक्ति आर्य समाज के विरुद्ध भ्रांति फैलाने का प्रयास करते रहे हैं कि यह हिन्दू धर्म के विरुद्ध है और साथ ही यह भी कहते रहे है कि हिन्दू धर्म के वास्तविक व्याख्याता स्वामी विवेकानन्द जी है। इस प्रकार आज तक हिन्दुओ मे और आर्य समाज में एक अन्तर डालने का प्रयास होता रहा है।

परन्तु वास्तविक स्थिति क्या है इसे अब समझने का समय आ गया क्योंकि एक तरह तो कुछ लोग विशेष कर वह जिनका सम्बन्ध राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ या हिन्दू विश्व परिषद् से रहा है यह कहते रहे है कि आर्य समाज हिन्दू संस्था नहीं है। हिन्दुओं का प्रतिनिधित्व करने का अधिकार केवल श्री रामकृष्ण मिशन या स्वामी विवेकानन्द जी को ही है। अब स्थिति यह है कि श्री रामकृष्ण मिशन ने देश के उच्चतम न्यायालय में यह आवेदन पत्र दिया है कि हम हिन्दू नहीं है। हमारा हिन्दू समाज या हिन्दू धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है हम हिन्दुओ से बिलकुल ही एक अलग वर्ग है। आर्य समाज ने अपने आपको कहीं हिन्दुओं से अलग नहीं कहा। उसने केवल यही कहा है कि हिन्दू धर्म की जो व्याख्या हमारे सनातन धर्मी भाई करते है हम उससे सहमत नहीं है। हम पहले आर्य हैं फिर हिन्दू है। देश की राजनैतिक परिस्थितियों के कारण हम अपने आपको हिन्दुओ से अलग करना नही चाहते हमारी विचारधारा का आधार वेद हैं सब हिन्दू वेदों को अपना सर्वोत्तम ग्रन्थ समझते हैं परन्तु कुछ हिन्दू वह भी है जो वेदों के अतिरिक्त पुराणों आदि दूसरे ग्रन्थों का सहारा भी लेते है। आर्य समाज केवल वेद के सहारे चलता है क्योंकि वेद से ही उपनिषद् निकले है इसलिए वह उपनिषदों को भी उतना ही महत्व देता है।

श्री रामकृष्ण मिशन ने सुप्रीम कोर्ट में जो कुछ कहा है उसे समझने की आवश्यकता है। मैं चाहता हूं कि प्रत्येक आर्य समाजी को इसका पता है ताकि हमारे विरुद्ध जो प्रचार किया जाता है उसकी वास्तविक स्थिति हम जनता के सामने रख सकें। रामकृष्ण मिशन ने सुप्रीम कोर्ट में क्या कुछ कहा है, उसका क्या परिणाम निकला है, इस विषय में आगामी अंक में कुछ लिखूंगा।

—वीरेन्द्र

नव वर्ष की बधाई

10 अप्रैल से नव वर्ष सम्वत् 2043 आरम्भ हुआ है हम अपने सभी पाठकों को नव वर्ष की बधाई देते हैं और शुभ कामना करते हैं कि आपके तथा आपके परिवार के लिए यह वर्ष स्वास्थ्य समृद्धि यश कीर्ति प्रद, मंगलमय और शुभ हो।

—सह-सम्पादक

दूध गाय का ही क्यों

लेखक—श्री नलिन जी मेहरा, भारतीय विद्या भवन बम्बई,

✻

मानव देह रचना मे मुख्यतया पन्द्रह तत्वो का समावेश है। जैसे आक्सीजन कार्बन हाइड्रोजन कैलशियम फास्फोरस सल्फर पोटाशियम सोडियम क्लोरीन मैगनीशियम आइरन क्वापर मैंगनीज आयोडीन और कम मात्रा मे लीड टिन सिलवर निकल जिन्क अल्यूमीनियम सिल्कान आरमेनिक सलेनियम इत्यादि। ये मूल रासायनिक धातु खण्ड है और इनकी योजनाबद्ध व्यवस्था मे विभिन्न प्रकार के अनेक सेल्स बने हुए हैं।

ये ही सेल्स विशेष प्रकार से मानव शरीर के शिशुओ और शरीरागो को आगे बढाते है। जैसे पेट, मासपेशिया, हडिडया (मैरोज या बिना मैरोज के) चर्बी खून, गैसटाइनटेस्टाइनल ढाचा, फेफडे, गुर्दे, किडनी, स्पीन, पैंक्रियाज, थिराइड, म्फाइडटिस्सू, दिमाग चमडी इत्यादि।

जन्म के समय बच्चे का वजन 3-4 किलोग्राम रहता है। और उनका जीवित रहना तथा बढना मा के दूध पर निर्भर करता है। किन्तु इसके अतिरिक्त पशु के दूध का स्थान है। उसमे गाय बच्चे के जीवन का बचाने की दृष्टि मे सबसे सुरक्षित प्राणी के रूप मे हमारे सामने आती है। गाय के दूध मे आवश्यक सैकडा रासायनिक पदार्थ उपलब्ध होते है जो बच्चे की जिन्दगी को बचाने मे सक्षम होते है। गाय बच्चे को कैलशियम, मैगनीजियम, सिलीकान और दाता तथा हडिडयो के ढाचे के लिए क्लोराइन देती है। भीतर हडिडयो के खोखले भाग को लाल रक्त उत्पन्न करने तथा अन्य तन्तुओ का पोषण के लिए शक्ति प्रदान करती है। फिर ये सब मिलकर नसो तथा जोडने वाले तन्तुओ का निर्माण करते है। तत्पश्चात चर्बी मास नाड रक्त, मज्जा त्वचा इत्यादि का निर्माण करते है जो शरीर मे अम्ल का जन्म देते हैं। इसके साथ ही सल्फर और फास-फोरस के मूल तत्व भी जुड जाते हैं। इन तत्वो का अन्तिम परिणाम प्रोटीन उत्पन्न करना है। मा और गाय, बच्चे के लिए अपने दूध व मा रूप मे सभी आवश्यक अमाइनो एसिड ... सम्पूर्ण आवश्यक किस्मो की प्रोटीन पदार्थ जुटाती है।

मानव मा अपने शरीर मे अमीनो एसिड के कई प्रकारो का एक साथ घुला मिला सकता है किन्तु यह आवश्यक नही कि वे तत्व जो पौधो के भोजन से मिलते हैं जैसे ... डिस्टीडाइन' ल्यूकराइन, आइसा-ल्यूसाइन मेथी योनाइन आदि ... मा अपनी नई तैयार नही कर सकती। और वह मा को गाय के दूध से ही प्राप्त करना होगा तथा अपने बच्चे को देना पडेगा। इस प्रकार गाय केवल बच्चो की पोषक और बचाने वाली ही नही है वरन वह दूसरे शब्दो मे, बच्चे की मा की मा है।

मानव की ही भाति अन्य अमानवीय माताए जैसे मुर्गी, घोडी, गधी, कुतिया, हिरनी आदि अनेक पक्षी भी उपरोक्त एमिनो एसिड मे स दसो को एक मे मिलाकर निर्माण नही कर सकती हैं। विकास के लिए महत्वपूर्ण विटामिन बी 12 का निर्माण तो कर ही नही सकती मुर्गी के बच्चो को सभी एमीनो एसिड चर्बी, कार्बोहाइड्रेटस विटामिन्स एव धातुए खिलानी पडेगी क्योकि उन मे इन तत्वो मे किसी एक का उत्पन्न करने की शक्ति नही है। ये गायो और मनुष्यो की खुराक खाते है।

भेड-बकरिया गोबर दार पशु होने के नाते उपयुक्त अधिकाश विटामिन तथा प्रोटीन की पचा सकती हैं किन्तु वे उन मिली जुली वस्तुओ का उत्पादन नही कर सकती क्योकि वे डठल एव पुआल आदि नही खाती। इसलिए उनकी सन्तान गाय बैल की भाति आवश्यक शक्ति जुटाने और ऊर्जा उत्पन्न करने मे असमर्थ होता है।

भारत के गायो ... खाद्यान्न उत्पन्न करना है। और इसके डठल-पुआल आदि मे ... नाइट्रोजन, पोटासियम, और फासफोरस के अतिरिक्त लाखो टन रासायनिक ... भी मिलते है। ... इतनी बडी और उच्च कोटि की मात्रा मे भूमि की पूजी बढाते है। केवल गाय ही यह शक्ति रखता है कि डठल पुआल की गाठ चबा कर उसके टुकडे टुकडे कर डालता है। व उनमे मिलने वाले सारे तत्वो को पचाकर तीनो भागो मे बाहर निकालती हैं। अर्थात वे सभी पचे हुए पदार्थ दूध, गोबर और मल के रूप मे ... शरीर से बाहर निकलते है। इसमे से मूत्र के भीतर पर्याप्त मात्रा मे आर्गानिक पदार्थ मिलते है। ऊपर लिखी गई अधिकाश धातुए गर्म तरल पदार्थ के रूप मे निकलती है जिनमे 8 प्रतिशत सर्वोत्तम नाईट्रोजन होता है। जो भोज्य पदार्थ और पेय पदार्थ द्वारा मनुष्यो का पोषकतत्व प्राप्त होते है वह गाय के गोबर और मूत्र के द्वारा जमीन मे बोये जाने वाले बीजो को बढने मे मदद करते है।

बच्चा देने वाले जानवरो मे केवल गाय ही एक ऐसा जानवर है जिसकी पोटी (आत) 180 फीट लम्बी होती है, जो पर्याप्त मात्रा मे डठल पुआल आदि मोटे पौधो को अपनी आतो मे रख सकती है। वे चार भागो मे विभाजित किये जाते है। उनमे से एक को 'ओमायुम' कहते हैं जो माइक्रोबस अथवा बैक्टीरिया से भरे रहते है। ये डठल और पुआल को टुकडे-टुकडे करने, उन का घोल बनाने और एसिड के निर्माण मे मदद करते है। यह एसिटिक एसिड को आगे अन्य तीन भागो मे ले जाकर मलाईयुक्त दूध मे से परिवर्तित करने मे सहायक होते है। गाय का दूध मनुष्य के लिए शक्ति, सौंदर्य और उसके शरीर को कोमल बनाने मे सहायक होता है। और सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि यह मनुष्य के दिमाग के तन्तुओ को बनाने मे सहायक होता है। इस प्रकार यदि गर्भवती स्त्री को गाय का मलाई युक्त दूध नियमित रूप से मिलता रहे तो वह अपने साथ ही साथ अपने पेट मे पलने वाले बच्चे को भी सम्पूर्ण भोजन और आवश्यक तत्व देती रहेगी।

भैंस की मलाई छाछ अथवा घी आदि चिकनाई इतने उपयोगी नही होंगे, क्योकि वे अलग प्रकार से होते है। भैंस की चर्बी मे विद्यमान कण गाय की अपेक्षा आकार मे इतने बडे बडे होते है कि वे मनुष्य के शरीर मे पूरे के पूरे पच नही पाते। इसलिए या तो वे बाहर निकल आते है अथवा ईधन की भाति भीतर ही भीतर जल जाते है। इस प्रकार या तो आवश्यकता से अधिक गर्मीयुक्त कैलरीज देते है अथवा शरीर को अन्य कार्बोहाइड्रेटस या अन्य प्रोटीन दे सकते है। भैंस के दूध की चिकनाई कभी भी गाय के दूध की मलाई का पा नही सकती। सचमुच विश्लेषणात्मक नक्शे मे देखने पर ऐसा लगता है कि चिकनाइयो और ठोस पदार्थो की दृष्टि मे गाय की अपेक्षा भैंस के दूध मे ये तत्व अधिक मात्रा मे पाये जाते हैं किन्तु वे कच्चे दूध मे दिखावा मात्र होते हैं। जब भैंस का दूध गर्म किया जाता है तब उसके भीतर विद्यमान विटामिन तत्व गायब हो जाते है और उसी प्रकार उसकी सारी चिकनाई और प्रोटीन तथा खनिज पदार्थ भाप के साथ उड जाते है। लेकिन गाय के दूध को गर्म करने पर भी न उडते हैं और न नष्ट होते हैं बल्कि वे सदैव विद्यमान रहते हैं।

ऊपर गाय के दूध के प्रयोग के सम्बन्ध मे जो कुछ कहा गया है उसके अतिरिक्त अनेक कारण और परीक्षण है जो गाय और भैंस के दूध के अन्तर को स्पष्ट करते हैं।

यह भली-भाति देखा जा सकता है कि गाय का बच्चा पैदा होते ही रबर के गेद की भाति उछलने लगता है जबकि प्रयत्न के बावजूद भैंस का पाडा उछलना तो दूर रहा अपनी शक्ति पर खडा होने मे असमर्थ होता है।

बीस गायो और बीस भैंसो को अलग-अलग कतारो मे खडा किया गया और उनके एक-एक बच्चो को छोडा गया तो गाय के बछडे सीधे दौड कर अपनी मा का थन चूसने लगे तब भैंस के पाडे किसी भी भैंस के थन मे अपना मुह मारने लगे, यानि वे अपनी मा को पहचानने मे असफल रहे।

ग्रामीण क्षेत्रो मे मोटरकार अथवा ट्रक ड्राइवरो को अवसर हार्न बजाकर गाय और भैंसो को रास्ते से हटाना पडता है। उनके अनुभव से यह सिद्ध है कि गायें भोपू की आवाज सुनते ही रास्ते से हट जाती हैं जबकि भैंस बार-बार हार्न देने पर भी रास्ते से नही हटती।

हृदयरोग विशेषज्ञो की एक अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी मे बम्बई के सुप्रसिद्ध सर्जन डा शान्तिलाल शाह ने अनुभव किया, "भैंसो से प्राप्त दूध के भीतर विभिन्न प्रकार की चिकनाई पाई गयी जिसे 'लागचेन फैट' कहते हैं। जब वह दूध रोगियो को पिलाया गया तो उसके भीतर की चिकनाई नसो मे जम गई और उनका मार्ग अवरुद्ध कर दिया जिस के फलस्वरूप रोगी को दिल का दौरा पड गया।"

भैंस पानी और कीचड मे बैठने मे आनन्द अनुभव करती है जबकि गाय ऐसा नही करती।

अस्तु भारतीयो को यह भली-भाति समझ लेना चाहिए कि यदि वे स्वय को और अपने बच्चो को बुद्धिमान, शक्तिशाली, बलवान और क्रियाशील बनाना चाहते है तो उन्हे गाय का दूध पीने पर ही जोर देना चाहिए। मनुष्य के लिए प्रकृति का एक पवित्र वरदान है जो विभिन्न रूपो मे अपने गुणो का ... करता रहता है।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली की एक बैठक 22 मार्च को डी ए वी कालेज मैनेजिंग कमेटी, चित्रगुप्ता रोड, नई दिल्ली मे हुई। जिसमे यह निश्चय हुआ कि प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन रविवार 1-6 86 को प्रात 11 से 1-30 बजे तक एव 2-30 बजे से 5 बजे तक आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली मे होगा।

—रामनाथ सहगल
सभा मन्त्री

महर्षि दयानन्द गौरव-गाथा

लेखक—श्री मांगेराम आर्य, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

(तर्ज—आओ बच्चो ! तुम्हें दिखायें झाकी हिन्दुस्तान की)

टेक—आओ वीरो तुम्हे सुनाए, गाथा ऋषि महान की।
जिस से सुरभित हो गई भूमि, भारत वर्ष महान् की ॥
आनन्द कन्द, लंगोट बन्द, दयानन्द की जय ! आओ वीरो .

कर्षन के घर टंकारा मे, मूलशंकर का जन्म हुआ।
शिव पूजा के महान पर्व पर, शिवरात्रि का व्रत हुआ ॥
चूहे की असली घटना से, नकली शिव का ज्ञान हुआ।
चाचा, बहिन की मृत्यु देखी, मुक्ति पथ का ध्यान हुआ ॥
छोड़ चले फिर घर अपने को, ली शरणी ईश महान् की। आओ वीरो———

सच्चा योगी मिला नही तब, काशी जाना ठान लिया।
विरजानन्द की सुन वहा चर्चा, मथुरा को प्रस्थान किया ॥
मथुरा नगरी मे आकर के, गुरु पद मे प्रणाम किया।
चरणो मे फिर बैठ गुरु के, वेद ज्ञान का पान किया ॥
हरिद्वार के कुम्भ मेले पर, की वर्षा वैदिक ज्ञान की। आओ वीरो——

ब्रह्मचर्य के बल से उसने, दो घोड़े की बग्घी को रोक दिया।
खड्ग छीन कर कर्णसिंह से, दो टुकड़े करके फैंक दिया ॥
पकड़ के पहुचा कर्णसिंह का, योग शक्ति से दबा दिया।
राजा ने फिर लज्जित होकर सिर अपने को झुका दिया ॥
जहर पिया पर करी न चिन्ता, जीवन के बलिदान की ! आओ वीरो———

अखण्ड ब्रह्मचर्य धारण करके, आदित्य पद को पाया था।
तेज घना था मुख मण्डल पर देख चाद शर्माया था ॥
मोहनी आखें देख ऋषि की सिर सब का झुक जाता था।
विशाल काया देख देव की, मानुष दंग रह जाता था ॥
दया, शीलता सूक्ष्म बुद्धि, थी शकर वेद व्यास की ! आओ वीरो——

अमीचन्द हो तुम तो हीरे, ऐसा उसको ज्ञान दिया।
सच्चा बोध ऋषि से पाकर, मद्य, मांस को छोड़ दिया ॥
लेखराम और श्रद्धानन्द पर, अपना जादू चला दिया।
सत्य ज्ञान दोनो को दे कर, वैदिक धर्मी बना दिया ॥
शुद्धि खातिर बली चढा दी, दोनो ने अपनी जान की ! आओ वीरो———

धर्म एक हो, उद्देश्य एक हो, एक भाषा हिन्दी प्यारी।
मर्यादा की करे पालना भारत के सब नर-नारी ॥
मद्य, मास और भाग धतूरा, बुद्धि नष्ट करें सारी।
सन्ध्या हवन करे नियम से पाठ वेद का हो जारी ॥
उत्तम शिक्षा ऋषि दे गये, जीवन के उत्थान की ! आओ वीरो———

लाश पुत्र की लेकर के एक माता गंगा पर आई।
कफन उतार लिया बेटे का, नग्न लाश उसने बहाई ॥
इस घटना को देख ऋषि के मन मे वेदना थी छाई।
आखो मे आसू भर आये जब हालत देखी दुखदाई ॥
हाय ! भारत था सोने की चिड़िया, ये लीला भगवान की ! आओ वीरो——

हाय ! ह्रास हुआ जाति का पहुच गई वह रसातल को।
किरानी कुरानी, बुद्ध और जैनी, लगे थे इसे मिटाने को ॥
वेद ज्ञान का दीपक लेकर आये ऋषि बचाने को।
तर्क के तीर चढ़ा कर मारे, उन सब के समझाने को ॥
नये सिरे से जोत जगाई, वेद पवित्र ज्ञान की। आओ वीरो——

अवतारवाद, प्रतिमा-पूजन जादू का खण्डन खूब किया।
फलित-ज्योतिष, जन्म-पत्र, मक्षत का बड़ा विरोध किया।
भूत, प्रेत, शीतला, डाकिनी, भैरव के भय को दूर किया।
श्राद्ध, तर्पण, मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र, के ढोंग को दूर किया ॥
भ्रम-भ्रान्ति सारे मिटाये, देकर ज्योति ज्ञान की ! आओ वीरो———

छुआ-छूत और जात-पात के, सब झूठे झगड़े दूर करो।
वर्ण व्यवस्था कायम करके, सबका ही उद्धार करो ॥
स्त्री शूद्र को वेद पढ़ा कर, न्याय संगत व्यवहार करो।
ऊच-नीच का भेद मिटा कर, सब का उपकार करो।
दयानिधि ने बात बताई, भारत के कल्याण की ! आओ वीरो———

गोरक्षा के लिए ऋषि ने, हद से ज्यादा जोर दिया।
गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की, तरफ ध्यान को मोड़ दिया ॥
देश की भाषा होवे हिन्दी, सुन्दर ये सन्देश दिया।
ब्रह्मचर्य का पालन होवे, अनुपम ये उपदेश दिया ॥
सच्ची बातें हमे बता गये, भारत के निर्माण की ! आओ वीरो———

ऋषि ने कहा नहीं हम हिन्दू आर्य नाम हमारा है।
हिन्दू धर्म नही है कोई वैदिक धर्म हमारा है ॥
आर्यावर्त्त देश है अपना, हिन्दुस्तान बिसारा है।
प्यारी भाषा हिन्दी हमारी, इंगलिश को दुतकारा है ॥
भारतवासी इन्हे अपनाओ ये शिक्षा ऋषि महान की ! आओ वीरो——

वेद व्यास के बाद ऋषि ही, वेदो के विद्वान हुए।
युक्ति और प्रमाण तर्क मे, शकर से भी महान हुए ॥
रामलखन भाईयो के सदृश योद्धा यति प्रधान हुए।
योग सिद्धि मे कृष्ण जैसे योगीराज भी आप हुए ॥
राजधर्म का पाठ पढा कर, काटी जड़ शैतान की ! आओ वीरो——

भीष्म भीम, हनुमान बली से, ब्रह्मचर्य बल मे आप हुए।
विरजानन्द गुरु के शिष्य, एक तुम्ही धनवान हुए ॥
वेद प्रकाश किया धरती पर, अन्धकार फिर दूर हुए।
भारत मा के इस कलयुग मे, तुम ही सच्चे सुपूत हुए ॥
याद दिलाई फिर से ऋषि ने, भूले हुए भगवान की। आओ वीरो——

स्वराज्य का मन्त्र देकर स्वप्न ब्रिटिश का तोड़ दिया।
आर्यावर्त्त है देश हमारा ये सच्चा भडा फोड़ दिया ॥
भारत सब का गुरु है जग मे ऐसा निर्भय नाद किया।
सृष्टि के आदि से लेकर, हम ने सब पर राज किया ॥
चक्रवर्ती था राज हमारा बात यह इतिहास की। आओ वीरो———

नया धर्म यह कोई नही है वेद धर्म मुझ को प्यारा।
ऋषि ब्रह्मा से जैमिनि, पर्यंत, जिस को सब ने है धारा ॥
इच्छा मेरी एक यही है, आर्य जगत बने सारा।
प्रकाश वेद का जग मे फैले, हर घर मे हो उजियारा ॥
घर-घर मे फिर सब के होवे कथा वेद भगवान की। आओ वीरो——

'भाष्य भूमिका' बना ऋषि ने पक वेद का छुड़ा दिया।
'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना करके, वेद का डंका बजा दिया ॥
जोधपुर मे जगन्नाथ ने पिला ऋषि को जहर दिया।
देव दयालु दयानन्द ने हत्यारे को बचा दिया।
दो सौ रुपये की थैली देकर बतलाई राह नेपाल की। आओ वीरो———

दीवाली के शुभ अवसर पर शरीर अपना त्याग दिया।
क्षौर मुण्डन करा देव ने गायत्री का जाप किया ॥
दरवाजे खिड़की खुला दिये, सब भक्तजनो को दूर किया।
"इच्छा हो पूर्ण तेरी प्रभु" कह प्राण ऋषि ने छोड़ दिया ॥
अन्त समय पर गुरुदत्त ने, सत्ता मानी भगवान की। आओ वीरो——

वेद सूर्य छुपा दुनिया से, हाहाकार मचा भारी।
श्रद्धालु सारे मौन खड़े थे, आखो मे आसू थे जारी ॥
भारत के सभी नेताओ ने, शोक श्रद्धांजलि ऋषि पर वारी।
इस भारत के भाग्य हैं उल्टे, आएगी अब महामारी ॥
सारी दुनिया शोक मे डूबे, सुन मृत्यु ऋषि महान् की। आओ वीरो———

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सभी आर्य बहनों व भाईयों को नव वर्ष की बधाई

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

की ओर से

नव सम्वत्सर तथा आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष मे सभी आर्य बहनों तथा भाईयों, आर्य मर्यादा के सभी पाठकों सभी आर्य समाजों के सदस्यो व अधिकारियों, सभी शिक्षण संस्थाओं के अध्यापको व अधिकारियों को

शुभ कामनाएं

दयानन्दाब्द १६१ सम्वत् २०४३ (विक्रमी सम्वत्) नव वर्ष आप तथा आपके परिवार के लिए स्वस्थ समृद्धि और यश कीर्ति प्रद हो।

—कमला आर्या
सभा महामन्त्री

आर्य समाज हमारा है

लेखक—श्री राधेश्याम जी आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ. प्र.)

नव जागृति का रहा प्रणेता,
पाखण्डो के गढ का जेता,
वेदो का पावन प्रकाश जो,
जगती के जन-जन को देता,

वही क्रान्ति दर्शी इस युग का,
प्राणो से भी प्यारा है ।
आर्य समाज हमारा है ॥

अन्यायो मे जो लडता है,
वेदो का प्रचार करता है,
प्रेम दया की, मानवता की,
शिक्षा जगती को देता है,

वही धरा पर खुशहाली का-
लगा रहा अब नारा है ।
आर्य समाज हमारा है ॥

जगती मे जन श्रेष्ठ बने,
सौम्य-समृद्धि बितान तने,
घनीभूत हो इस धरती पर-
सत्य-धर्म के मेघ घने,

दलितो तथा अछूतो को दे,
रहा सतत सहारा है ।
आर्य समाज हमारा है ॥

स्वतन्त्रता का कर उद्घोष,
मिटा गुलामी का सब दोष,
'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का-
किया धरित्री पर है घोष,

नया समाज बनाएगे हम-
कण-कण ने ललकारा है ।
आर्य समाज हमारा है ॥

आर्य समाज नवांशहर में होली पर विशेष यज्ञ

आर्य समाज मन्दिर नवांशहर म दिनाक 26 मार्च को होली के पवित्र त्योहार पर हवन यज्ञ किया गया और इस पवित्र दिन पर प्रात: हवन यज्ञ के पश्चात् आर्य समाज के कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी ने यज्ञ-शाला के दोना ओर बनाये गये दो शैड (एक श्री धर्म प्रकाश जी दत्त, रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद् पजाब द्वारा बनवाया गया और दूसरा श्री रामप्रकाश जी चोपडा नवाशहर द्वारा बनवाया गया को विधिवत आर्य समाज नवाशहर को समर्पित करवाये । आर्य समाज नवाशहर के प्रधान श्री वेद प्रकाश जी सरीन ने हवन यज्ञ के बाद दानी परिवारो को आशीर्वाद दिया और बाद मे आर्य समाज के सर्वेसर्वा प देवेन्द्र कुमार जी ने दानी परिवारो का धन्यवाद किया और उपस्थित श्रोताओ से प्रार्थना की कि वो इन दानी परिवारो से शिक्षा लेते हुये अपने विचारो को भी उनके विचारो जैसा बनायें और समाज के लिए काम करें। इस प्रोग्राम को सफल बनाने का श्रेय श्री सुरेन्द्र मोहन जी तेजपाल और प्रिंसीपल हरवसलाल जी तनेजा को है जो आर्य समाज नवाशहर को हमेशा ही अपना सहयोग देते है और अधिकारियो के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर चलते हैं।

—मन्त्री

महाशय हकीम उजागर राम का निधन

आर्य समाज आदमपुर (जालन्धर) के प्रधान श्री महाशय हकीम उजागर राम का गत दिनो चिर रुग्णता के पश्चात् निधन हो गया। हकीम जी आर्य समाज के एक अच्छे कार्यकर्त्ता थे वह दो वर्ष मे समाज के प्रधान चले आ रहे थे। उनके चले जाने से आर्य समाज की बहुत बडी क्षति हुई है। उनकी [illegible] शायद पूरी न की जा सके। वह अपने पीछे भरा परिवार छोड गए हैं उनका सुपुत्र गुरमुख सन्धू जाम नगर मे इन्कम टैक्स का उप-कमीशनर लगा है उ[illegible] यह एक ही बेटा है। अपने पिता की इच्छा अनुसार उन्होने वैदिक रीति से अंतिम सस्कार किया और आर्य समाज को 501 रुपये दान दिया। आर्य समाज की ओर से श्री महाशय जी को श्रद्धाञ्जलि भेन्ट की गई तथा परमात्मा से उनकी सद्गति के लिए प्रार्थना की गई।

--गुरदासराम जी शर्मा, उपप्रधान

महात्मा हंसराज दिवस समारोह २० अप्रैल १९८६ को

हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी 20 4-86 रविवार को महात्मा हसराज दिवस तालकटोरा गार्डन, इण्डोर स्टेडियम नई दिल्ली मे प्रात: 9 से दोपहर 1बजे तक स्वामी सत्य प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता मे मनाया जा रहा है।

समारोह मे आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् एव भारत सरकार के मन्त्री महोदय महात्मा हसराज जी को अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करेंगे।

हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी कुलाची हसराज माडल स्कूल, अशोक विहार एव हसराज माडल स्कूल, पजाबी बाग के छात्र-छात्राओ द्वारा महात्मा हसराज जी के जीवन पर सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाएगा।

--रामनाथ सहगल, सभा मन्त्री

आर्य समाज स्थापना दिवस

ले —श्री रणवीर जी भाटिया लुधियाना

जब चारो दिशाओ मे अधेरा था आडम्बरो ने डाला घेरा था।
दब गयी थी हिन्दू सस्कृति—मानव सभ्यता का न कोई बसेरा था।
पोप लीला थी जारो पर बुद्धिजीवो पर लगा हुआ पहरा था।
त्राहि-त्राहि मची थी चारो ओर आवाज न कोई सुनने वाला था।
इज्जत लुटती थी मन्दिरो के बीच-पूछता न था कोई तेरा मेरा था।
देव दासी बन के लुटती कन्याए कन्या होना अभिशाप हुआ था।
वेद बने थे अलमारियो की शोभा पुजारियो का लगा ताला था।
सुन लिया यदि मन्त्र स्त्री ने जालिमो ने कान मे सिक्का गेरा था।
ऐसे मे महर्षि दयानन्द आये जिन्होने भारत मे किया सवेरा था।

अन्धेरा भागा उज्जवल हुआ दीप मानव आत्मा मे हुआ सवेरा था।
शास्त्रार्थ किये घमन्डी पण्डितो ने आ गया उनको खूब पसीना था।
आर्य भागे पडिताई छोड कर आर्यो ने डाला शरण मे डेरा था।
महिलाओ को दिया उच्च अधिकार-अक्षर बोध का सामान किया।
दलितो का फिर किया उद्धार-महाराजा को खूब जगाया था।
अन्ध विश्वास को फिर दूर भगा कर, वर्ण को कर्म से बतलाया था।
पाखडियो का पोल खोलने फिर हरिद्वार मे झडा लहराया था।
कार्य क्षेत्र बढ गया इतना चलाने के लिए सगठन का विचार किया।
आर्य समाज रखा नाम उसका, बूटा मानकचन्द वाटिका मे लगाया था।
चैत्र सुदि प्रतिपदा स 1932 को बम्बे मे इसे स्थापित कराया था।
मेरे नाम को न बनाना गुरु मन्त्र महर्षि ने फिर स्वय फरमाया था।
सगठन बना है यह आर्य समाज जो निभायेगा सारा कार्य भार।
यही है मेरा उत्तराधिकारी प्रसन्नता से सबको यह समझाया था।
बतलाने हर वर्ष आता है यह दिन पर भूल जाते है हम इसको हमेशा।
इसकी उन्नति का नया मार्ग ढूढो इसीलिए आर्य मर्यादा मे छपवाया था,
यह पर्व खुशी का है लेकिन जिम्मदारिया भी है इसके साथ बन्धी।
शुभ वचन करो इसकी उन्नति का महर्षि ने खून मे जिसे सिचाया था।
धरती सूर्य का चक्कर काट कर आरम्भ कर रही है नये चक्कर को।
नये सम्वत मे विचार करो स्थापना पर महर्षि ने जो बतलाया था।
दस नियम बनाये आर्य समाज के, घर घर जा कर इसका प्रचार करो।
निष्काम सेवा करो आप लोगो की धर्म हित उस बतलाया था।
उन्नति चाहते हो यदि तुम अपना वैदिक धर्म तुम स्वीकार करो।
अन्यथा हाथ कुछ भी न आयेगा सत्यार्थ प्रकाश मे यह बतलाया था।
प्रतिज्ञा करो आज सभी मिल कर तन मन धन से करेगे समाज सेवा।
मिल कर बैठो इसकी छाया मे जिस वृक्ष को महर्षि ने लगाया था।
भाई हो स्थापना दिवस की फलो फलो बढाओ इसको भी।
मान निर्माण मे जुट जाओ भाटिया महर्षि ने यही समझाया था।

आर्य समाज सिरकी बाजार भठिण्डा मे प्रचार

इस आर्य समाज के तत्वावधान मे आर्य समाज मन्दिर मे दिनाक 10 मार्च 86 से 16 मार्च 86 तक प्रात 6 से 7 30 बजे व रात्री 8 30 से 10 बजे तक वेद प्रचार हुआ जिसमे आर्य जगत के उदीयमान विद्वान वक्ता श्री हरिश्चन्द्र जी विद्यावाचस्पति प्रिसपल दयानन्द ब्रह्म कालेज कालावाली का प्रात यज्ञ पर रात्री का गृहस्थाश्रम पर बडा ही हृदयस्पर्शी विद्वतापूर्ण प्रभावोत्पादक तथा रोचक वेदोपदेश हुआ। प्रिंसिपल महोदय रात्री को लगातार सात दिन तक गृहस्थ पर ही बोलते रहे।

विषय को सरस व सरलता से प्रस्तुत करने की शैली की तथा मधुरता की किशोर वृद्ध, स्त्री पुरुष, शिक्षित अशिक्षित सभी जन मुक्तकण्ठ से प्रशसा करते रहे इस अवसर पर आर्य समाज व आर्य सज्जनो की तरफ से चित्तौड गढ जिले के आदिवासी क्षेत्र मे चलने वाले विद्यालय के लिए 1200 रुपये की राशि प्रिंसिपल महोदय को भेंट की गई।

—मन्त्री

'ओ३म इच्छन्ति देवा सुन्वन्त न स्वप्नाय स्पृहयन्ति यन्ति प्रमादमतन्द्रा ।
ऋग्वेद —8 2 18 सामवेद 721 वा अथर्ववेद 20 18 3

देवता यज्ञ कर्ता (कर्मठ) को चाहते है आलसी को नही पुरुषार्थी ही आनन्द को प्राप्त करते है।

घोर अन्धियारे दूर का राही चलने को ठान ले फिर नाकाम ना सकता है।
सत्य के दीपक को रख लो मैदान मे अन्धेरा उजाला भी बदनाम ना सकता है॥

चतुर्थ वेद प्रचार समारोह एव यज्ञ

16 से 18 मई 1986 (4 से 6 ज्येष्ठ 2043)

सैक्टर 13 2167 अर्बन एस्टेट करनाल (हरियाणा) मे

वेद प्रचार समारोह एव यज्ञ हो रहा है जिसमे उच्चकोटि के विद्वान स्वामी धर्मानन्द जी श्री सुभाष जी योगी श्री नारायण जी प्रेमी सिद्धान्त शास्त्री प्रो जयदेव जी प चन्द्र सेन जी श्री यशपाल जी श्री अमर मागर जी शास्त्री दहेज इत्यादि सामाजिक कुरीतिया कैसे दूर हो तथा पाश्चात्य सभ्यता मे ग्रस्त भारत फिर से जगत गुरु कैसे बने ? इन सब पर प्रकाश डालेगे। सब धर्म प्रेमी बहन भाई पधार कर धर्म लाभ उठाये।

—प्रबन्धक स्वामी सच्चिदानन्द

(5 पृष्ठ का शेष)

निर्वाण समय ऋषि यू बोले यह आर्य समाज तुम्हारा है।
वेदो की तुम रक्षा करना जो ज्ञान प्रभु का प्यारा है॥
नही मूर्ति नही समाधि नही मन्दिर मेरा कोई बनवाना है।
वेदानुसार अन्त्येष्टि कर के मेरी राख खेत मे डलवाना है।
आदर करेगी सारी दुनिया ऋषि तेरे फरमान का। आओ वीरो———

ऋषि गये अब इस दुनिया से हम वैदिक धर्म फैलाएगे।
धरती से अन्धकार मिटा कर सब को आर्य बनाएगे॥
श्रद्धानन्द और लेखराम बन शुद्ध बिगुल बजाएगे।
सुख सन्तोष का शीतल धारा फिर से जग मे बहाएगे॥
ऋषि गाथा अब पूरी हो गई दयानन्द भगवान की आओ वीरो—

चौदह समुल्लास मे सत्यार्थ मे जो ऋषि बुद्धि का निचोड कर।
बाईस कलिया इस गाथा मे जो ऋषि जीवन का सार कर।
अलौकिक जीवन ऋषि राज का कर्म इस को पार कर।
मागे राम तेरी रचना थोडी इस पर कवि विचार कर।
ऋषि चरणो मे शीश झुकाया ये लीला ईश महान का आओ वीरो———

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इसलिए उन्होने ऐसा न करके वानर जाति के साधारण लोगो सुग्रीव आदि को इकट्ठा करके रावण पर चढाई की। रावण की समझता था राम उस पर विजय नही पा सकता क्योकि उसके साथ कोई विशाल सेना नही है। इसलिए उसने युद्ध की भी तैयारी नही की। इस मे भी उनकी नीतिज्ञता झलकती है कि उन्होने भारत की भूमि पर रावण की शक्ति कम न करके सीधे युद्ध भी शत्रु के घर के अन्दर जाकर किया।

इस प्रकार ऋषि मुनियो और प्राणियो पर उपकार करते हुए जगल से कदमूल फल खाकर निर्वाह करते हुए राम ने उन सब विदेशियो को बडी बुद्धिमत्ता से सफाया कर दिया जो भारत की सीमा मे उस समय घुस आए थे।

राम मे एक शासक के भी सभी गुण थे। प्रजा का पूरा पूरा ध्यान रखना उनका स्वभाव था और किसी को भी कोई कष्ट न होने देना यह उनके राज्य की विशेषता थी। आज भी राम राज्य का नाम लिया जाता है जिसमे किसी भी चीज का अभाव नही था जिसमे कोई चोर डाकू आदि कोई न था सब उदार वृत्ति के लोग रहते थे।

हम 18 अप्रैल को राम का जन्म दिन मनाते है उनके गुणो का वर्णन कर के उनके जीवन से प्रेरणा लेकर न्याय मार्ग पर चलने का भी इस दिन व्रत ले। आज घर घर मे रामायण का पाठ भी होता है। कथाए भी होती हैं रामलीलाए भी होती है। परन्तु यह सब कुछ होते हुए भी हम उनके किसी भी गुण को अपनाने का यत्न नही करते यह दिन मनाना तभी सार्थक होगा यदि हम उनके जीवन से कोई प्रेरणा लेगे।

—सह सम्पादक

आर्य समाज आर्य नगर जालन्धर का वार्षिक उत्सव बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया

आय समाज आय नगर का वार्षिक उत्सव 25 माच स 30 माच तक बड उत्साह स मनाया गया। हर रोज प्रात पाच बज प्रभात फेरी मारे नगर का चक्कर लगाकर 6 30 बज आर्य समाज मन्दिर म आती थी। जिस म बहुत स नव युवक शामिल हो कर प्रभात फरी को कामयाब बनात रह। देवियां भी बहुत सख्या म शामिल होती थी। नगरवासी प्रभातफेरी म लोगो का स्वागत करत रहे और हर रोज रात म 7 बजे स 9 बजे तक स्वामी सच्चिदानन्द जी की कथा और पण्डित रत्नचन्द जी क भजन होते रह। लोगो स आय समाज मन्दिर भरा रहता था। 30 माच प्रात 8 बज यज्ञ का आरम्भ पण्डित मनोहर लाल जी आय मुसाफिर ने किया। 9 नवयुवक यज्ञ पर मौजूद रहते थे। यज्ञ आरम्भ होते ही आय भाई अपन 2 परिवारो को लेकर समाज मन्दिर म पहुच जाते। उस समय पण्डाल की रौनक देख कर बहुत आनन्द आता था। यज्ञ के बाद उत्सव का आरम्भ श्री रामचन्द्र ठकेदार की प्रधानता मे हुआ। जिसमे स्वामी सच्चिदानन्द जी, आय रत्न श्री सरदारी लाल जी, पण्डित मनोहर लाल जी आय मुसाफिर, पण्डित रत्नचन्द जी बाबू बूटा राम जी, आर्य नगर की मशहूर मण्डली और भागव नगर की स्त्री भजन मण्डली और बहिन पुष्पावती के भजन हुए। उपस्थिति मे हाल खचाखच भरा हुआ था लोगो ने दिल खोल कर दान दिया। दो बजे ध्वजारोहण, आय रत्न सरदारी लाल जी के करकमलो द्वारा लहराया गया, वैदिक धम की जय, ऋषि दयानन्द व स्वामी श्रद्धानन्द की जय के नारा से उत्साह बढ रहा था बाद मे ऋषिलगर हुआ। जिसका प्रबन्ध बहुत अच्छा था। बहुत बडी सख्या म लोगो ने भोजन किया। आय नवयुवको ने जो लगर मे सवा की उसकी जितनी प्रशसा की जाए कम है। इस समाज म सब नवयुवक 30 वष स कम उम्र के है और पुरुषार्थी हैं। इस उत्सव मे अनेको आय समाजो ने हिस्सा लिया। उत्सव बहुत ही कामयाब रहा। पण्डित किशन चन्द जी आय न सबको आशीर्वाद दिया। उनके गले मे फूलो के हार डाले गये। इस उत्सव को कामयाब बनान के लिए श्री सतपाल जी, तिलक राज जी, वेद प्रकाश जी सभी बधाई के पात्र है।

—वेद प्रकाश
मन्त्री आय समाज
आय नगर

आर्य समाज पंजोड़ जिला होशियारपुर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज पजोड जिला होशियारपुर) का वार्षिकोत्सव 21, 22, 23 मार्च को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। आय प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से उत्सव को सफल बनाने के लिए श्री प रामनाथ जी "सिद्धान्त विशारद" आय महोपदेशक तथा श्री श्रीराम जी भजनोपदेशक पधारे तथा सभा के प्रबन्धक के अतिरिक्त श्री प बलराज जी आर्य भजनोपदेशक तथा श्री प वेद प्रकाश जी आर्योपदेश पधारे। दैनिक प्रातःकाल हवन, उपदेश तथा भजन मध्यान्होत्तर उपदेश तथा भजन होते रहे यह कार्यक्रम स्वर्गीय श्री स्वामी ध्यानानन्द जी के आश्रम मे होता रहा। तीनो तिथियो मे रात्रि को ग्राम मे वैदिक धर्म प्रचार होता रहा। सैकडो स्त्री पुरुष वेदामृत पान करते रहे। जनता पर उत्तम प्रभाव पडा। ऋषिलगर का भी प्रबन्ध था। 200 रुपये सभा को वेद प्रचार के लिए दिए गए।

—निशानसिंह
मन्त्री

गोविन्दगढ़ में प्रचार

स्त्री आर्य समाज गोविन्दगढ जालन्धर की ओर मे गत दिनो शिवरात्रि पर्व बडे उत्साह से मनाया गया जिसमे प धर्मदेव जी, बहन कमला शर्मा, श्री नरेश जी के उपदेश तथा भजन हुए। बहनो ने भारी सख्या मे भाग लिया।

—कृष्णाकोछड

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जगहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि. नं. पी.जे.एस. 55

वर्ष 18 अंक 3. 8 वैसाख सम्वत् 2043 तदानुसार 20 अप्रैल 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अक 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

जिनका जन्म दिन २० अप्रैल को सभी आर्य समाजों में मनाया जा रहा है

महान् तपस्वी त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज जी

होशियारपुर जिला के साधारण से ग्राम बजवाडा मे एक निर्धन परिवार मे 19 अप्रैल 1864 को एक शिशु ने जन्म लिया जिसका नाम हसराज रखा गया। प्रारम्भिक पाठशाला के बाद होशियार पुर मे शिक्षा अध्ययन के लिए यह बालक मिशन स्कूल म दाखिल हुआ एक दिन इसके मुख्याध्यापक ने वैदिक धम और वैदिक सभ्यता का उपाहास उडाया जिसे राष्ट्र का यह भावी कर्ण-धार बालक सहन न कर सका और मुख्याध्यापक की बातो का तीव प्रतिवाद और खण्डन करने धारण इन्हे स्कूल मे बाहिर निकाल दिया। बालक के हृदय मे पराधीन भारत की दयनीय दशा का चित्र खिचा गया। इस घटना से बालक की अपने धर्म और सस्कृति के प्रति और भी आस्था अधिक हो गई। उच्च शिक्षा प्राप्त करना उन्होने पहले अपना उद्देश्य बनाय, बजवाडा से होशियारपुर नगे पाव तपती रेत पर चलकर वह गर्मी की मौसम मे स्कूल आते रहे और इसके पश्चात उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए लाहौर के गवंनमैंट स्कूल और उसके बाद कालेज मे दाखिल हो गए। यहा इनकी मित्रता अपने सहपाठी लाला लाजपतराय और मुनिवर प गुरुदत्त विद्यार्थी से हो गई तीनो के विचार एक समान थे और तीनो विदेशी विचारधारा के कट्टर विरोधी थे। उस समय का आर्य समाज भी एक जीवन्त समाज था लाहौर मे आर्य समाज के प्राण ला साईदास जी माने जाते थे सचमुच ही वह एक महान् कार्यकर्ता थे। उनमे युवको को अपने प्रभाव मे लाने का एक अद्भुत गुण था। वह ऐसे प्रभावशाली व्यक्तित्व के व्यक्ति थे कि जब कोई युवक उनसे मिलता था तो वह उनसे प्रभावित हुए बिना नही रहता था। उनके सम्पर्क मे आने पर युवक उनके बन जाते थे यह तीनो युवक भी उनके सम्पर्क में आये, फिर क्या था बस आर्य समाज की विचारधारा मे तीनों का मन मोह लिया उन्होंने एक साप्ताहिक पत्र अंग्रेजी मे "आर्य मैसेंजर" निकालना भी आरम्भ कर दिया। श्री गुरुदत्त जी और श्री हसराज जी इसका सम्पादन करने लगे।

महात्मा हसराज जी

आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द जी को 1883 मे विष दे दिया गया। इस प्राण घातक विष ने उनकी जीवन लीला समाप्त कर दी श्री गुरुदत्त जी महर्षि की मृत्यु के समय अजमेर मे उपस्थित थे। महर्षि के मृत्यु के दृश्य को देख कर नास्तिक गुरुदत्त आस्तिक बन गए और जब लाहौर वापिस आए तो उनके ऊपर आय समाज का रग और अधिक चढा हुआ था। लाहौर मे सभी ने महर्षि की (याद मे) स्मृति मे स्कूल खोलने का निश्चय किया। जब अध्यापन का सवाल आया तो युवक हसराज जी जो उस समय बी ए कर चुके थे। वह चाहते तो किसी अच्छे पद पर लग सकते थे। उन्हे सरकारी नौकरी मिल सकती थी। ससारिक दृष्टि से सुखी जीवन व्यतीत कर सकते थे परन्तु उन्होने तो अपने आचार्य के अधूरे कार्य को पूर्ण करने का ध्येय प्राप्त करना था। वह भला ससार के धन वैभव के लालच मे कहा आने वाले थे। उन्होंने अपने बडे भाई मुलखराज जी से आशर्वाद प्राप्त करके जब स्कूल के सम्बन्ध म विचार विमर्श हो रहा था तो यह घोषणा कर दी कि वह आजीवन डी ए वी स्कूल की निशुल्क सेवा करेंगे। करतल ध्वनि से सभी ने उनकी इस घोषणा का स्वागत किया। लाला हसराज जी ने 23 वर्ष तक डी ए स्कूल और कालज की सेवा की और 28 वर्ष प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की सेवा म अर्पित कर दिए। उन्हे जो उनके भाई मुलखराज जी से 40 रु मासिक मिलता था उसी पर अपने परिवार का निर्वाह करते रहे न डी ए वी स्कूल म न कालज से और न सभा से उन्होने कभी एक पाई भी ली।

इस कार्य मे जहा महात्मा हसराज जी का महान त्याग है वहा उनके भाई श्री मुलखराज जी का भी महान त्याग है कि वह आजीवन अपने भाई को 40 रुपया मासिक अर्थात अपनी वेतन का आधा भाग देते रहे।

महात्मा हसराज अब इतने प्रभावशाली व्यक्ति बन गये थे कि जो भी युवक उनके सम्पर्क मे आता वह उनसे प्रभावित हुए बिना नही रहता था। उनके हृदय मे हर छोटे बडे के लिए सात्विक स्नेह और सन्मान का भाव रहता था दुखियो के दुख दूर करना वह अपना कर्त्तव्य समझते थे। सन 1895 से 1923 तक वह बीकानेर छत्तीसगढ गढवाल, (दुर्ग) उडिसा कोहटा, बिहार और कागडा आदि मे जहा कही अकाल पडा भूकम्प आया था और कोई कष्ट आया वह वहा-2 सेवा के लिए गए और दुखियो के दुख दूर करते रहे। महात्मा जी स्वय अपने स्वयसेवको द्वारा सभी स्थानो पर पहुचकर अकाल पीडित आदि की सहायता करते रहे।

इस प्रकार उनका जीवन महान् प्रेरणाओं से भरा हुआ है। उन्होंने अपना सारा जीवन आर्य समाज की सेवा मे लगा दिया और रात दिन आर्य समाज की सेवा के लिए तत्पर रहे। 19 अप्रैल को उनका जन्म दिवस है। जो सभी आर्य समाजो मे प्रतिवर्ष मनाया जाता है। इस बार भी 19 अप्रैल के स्थान पर रविवार 20 अप्रैल को मनाया जा रहा है। परन्तु केवल भाषण देकर और सभाय करके या महात्मा हसराज जी के जीवन पर कुछ व्याख्यान आदि देकर समझ लिया जाए कि हमने यह दिन मना लिया है तो यह हमारी भूल होगी। यह दिन मनाना तो तभी सफल हो सकता है यदि अन्य आर्य बन्धु भी महात्मा हसराज जी की तरह आर्य समाज की सेवा इस दिन नि शुल्क और त्याग भाव से करने का व्रत लें।

महात्मा हसराज जी के प्रति—

भरी जवानी मे जब दुनिया
लालायित होती है।
कनक, कामिनी पर मद से अन्धी
हो सब कुछ खोती है।
नही सूझता है सत्पथ भी,
कहा जा रहा जीवन-रथ भी।
हसराज, तुम हस समान विचरते
आये।
इस भूतल पर।
दिव्य-रश्मिया कर विकीर्ण निज
सरस—सुधा सरसाते आए
त्याग आडम्बर।।
त्याग दिया सर्वस्व,
कर दिया निज जीवन
सेवा मे अर्पित।
दयानन्द के शुभ चरणो मे
चढा दिया सब।।
कुछ भी तो रखा न हाथ,
धन-मान वृत्ति ठुकरा कर
पहुचे वीतराग बन।
सचमुच सच्चा सन्यासी बन।।
शिक्षा के उस रिक्त क्षेत्र मैं
नई जगा दी ज्योति एक,
अपनाया साधु-वेष

(शेष पृष्ठ 6 पर)

विदेशों में आर्य धर्म के प्रचारक—

पण्डित अयोध्याप्रसाद वैदिक मिश्नरी

लेखक—डा. श्री भवानी लाल जी भारतीय चण्डीगढ़

ओ३म्

अद्भुत वाग्मी, अपूर्व दार्शनिक तथा विश्व प्रचारक प अयोध्या प्रसाद का जन्म 16 मार्च 1888 ई को बिहार प्रान्तान्तर्गत गया जिले की नवादा तहसील के आमुण नामक ग्राम मे हुआ। इन के पिता का नाम बाबू बशीधर लाल तथा माता का नाम श्रीमती गणेश कुमारी था। पिता राची के डिप्टी कमिश्नर के कार्यालय मे बेच क्लर्क थे। वे अरबी, फारसी क अच्छे विद्वान् थे। कहते है कि उन्हे अग्रेजी का वेब्स्टर शब्दकोश कण्ठस्थ था। बाल्यकाल मे अयोध्या प्रसाद की तान्त्रिक साधनाओ मे दिलचस्पी पैदा हुई और वे श्मशान मे रह कर विभिन्न प्रकार की साधनाए करने लगे। तान्त्रिका के वीभत्स क्रिया कलापो म रुचि लेने के कारण इन के माता पिता को बडी निराशा हुई।

कुल गत प्रथा के अनुसार पिता ने पुत्र की शिक्षा के लिए एक मौलवी की नियुक्ति की, जिनसे अयोध्या प्रसाद न उर्दू, फारसी और अरबी का अध्ययन प्रारम्भ किया। इन भाषाओ पर शीघ्र ही उनका असाधारण अधिकार हो गया। अब वे धारा प्रवाह रूप से अरबी फारसी मे भाषण करने लगे। इन्ही भाषाओ न अयोध्या प्रसाद को हिन्दू धम से विरक्त कर दिया। अब उन्हे इस्लाम की श्रेष्ठता म विश्वास हो गया। इन दिनो वे गनी-मत उपनाम से उर्दू, फारसी और अरबी मे काव्य रचना भी करते थे। प्रचलित प्रथा के अनुसार 16 वष की आयु मे ही उनका विवाह समीपवर्ती ग्राम लोहरदग्गा के श्री गिरिवरधारी लाल की पुत्री किशोरी देवी के साथ 1904 मे सम्पन्न हुआ। जो उस समय मात्र साढे नौ वर्ष की थी।

आर्य समाज में प्रवेश

प अयोध्या प्रसाद आर्य समाज क सम्पर्क मे किस प्रकार आये। इस सम्बन्ध मे अपने सस्करण सुनाते हुए उन्होने प रमाकान्त शास्त्री को बताया था—

"मैं जिस कुल मे पैदा हुआ था, उस पर इस्लाम और ईसाइयत की बडी छाप थी, फलस्वरूप मेरे पिता जी ने मुझे एक आलिम फाजिल मौलवी साहब के मकतब मे उर्दू और फारसी पढने के लिए भर्ती कर दिया था। एक दिन मेरे मामू साहब ने कहा—"अजुध्या, आजकल तुम क्या पढ रहे हो? अजुध्या बालक ने मौलवी साहब की बडाई करते हुए इस्लाम की खूबिया बतलाई और साथ ही हिन्दू धर्म की खराबिया भी। मामू कट्टर आर्य समाजी थे। उन्होने कहा- अजुध्या एक बार तुम सत्यार्थ प्रकाश पढ लेते तो तुम्हारी आखे खुल जाती और तुम आर्य धर्म मे कोई खराबी नही पाते।" अपने मामा की प्रेरणा से अयोध्या प्रसाद ने सत्यार्थ प्रकाश पढना आरम्भ किया। पहले चौदहवा समुल्लास पढा। तत्पश्चात तेरहवा पढा। इस प्रकार इस्लाम और ईसाइयत की त्रुटिया जानकर अपने मौलवी साहब म ही नाना प्रकार के प्रश्न करने लगे। मौलवी बडे चकराए। इस प्रकार सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से अयोध्या प्रसाद को आय समाज तथा उसके प्रवर्तक के सिद्धान्तो का परिचय मिला। प, लेखराम लिखित 'हुज्जतुल इस्लाम' ग्रन्थ पढ कर उन्हे कुरान पढने की प्रेरणा मिली और वे तुलनात्मक दृष्टि से विभिन्न धर्मों के अध्ययन म तत्पर हुए।

1908 म उन्होने प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् इण्टरमीजियेट की शिक्षा के लिए उन्होने हजारी बाग के सेंट कोलम्बस कालेज म प्रवेश लिया। यहा उनका क्रान्तिकारियो से सम्पर्क हुआ और वे शीघ्र ही सशस्त्र क्रान्तिकारी आन्दोलन मे प्रविष्ट हो गए। इस पर पिता ने उन्हे हजारी बाग से हटा कर भागलपुर भेज दिया। जहा रह कर उन्होने 1911 मे इन्टर मीजियेट परीक्षा उत्तीर्ण की। क्रान्तिकारी कार्यों मे भाग लेते समय अयोध्या प्रसाद ने उत्तर भारत के अनेक नगरो का भ्रमण किया और 'मिसिरजी' के छाया नाम से क्रान्तिकारी मण्डल मे प्रसिद्ध हुए। क्रान्तिकारी चेष्टाओ मे भाग लेने के कारण पिता का नाराज होना स्वाभाविक ही था। पिता ने पुत्र की पढाई का व्यय देना बन्द कर दिया। इस पर राची के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री बालकृष्ण सहाय ने पिता पुत्र के बीच समझौता कराने का प्रयास किया। इन्ही की प्रेरणा से अयोध्या प्रसाद ने पटना के धुरन्धर सस्कृत विद्वान् महामहोपाध्याय प रामावतार शर्मा से सस्कृत भाषा और हिन्दू धर्म ग्रन्थो का विस्तृत अध्ययन किया। वे अपने सस्कृत ज्ञान एव शास्त्र नैपुण्य के लिए महामहोपाध्याय जी का श्रद्धापूर्वक स्मरण करते थे।

पटना स सस्कृत पढ कर प अयोध्या प्रसाद 1911 मे कलकत्ता आए। यहा वे हिन्दू होस्टल मे रहने लगे, जहा पजाब के प्रसिद्ध नेता डा गोकुल चन्द नारग तथा बाबू राजेन्द्र प्रसाद आदि, कालन्तर मे प्रसिद्धि प्राप्त करने वाले व्यक्ति, छात्रावस्था मे रहते थे। अयोध्या प्रसाद पहले तो प्रेसीडेन्सी कालेज मे भर्ती हुए, पश्चात् सिटी कालेज मे प्रवेश लिया। यहा पढते हुए उन्होने इतिहास, दर्शन, तुलनात्मक धर्म तत्व जैसे विषयो का विस्तृत अध्ययन किया। वे स्वाध्याय की क्षुधा को शान्त करने के लिए विभिन्न धर्म सस्थानो के पुस्तकालयो मे जाते तथा स्वय भी महत्वपूर्ण ग्रन्थ क्रय करते। कलकत्ता मे बिहार के छात्रो की परिषद् 'बिहार छात्र सघ' की स्थापना हुई। राजेन्द्र बाबू इस सस्था के प्रधान थे तथा अयोध्या प्रसाद जी मन्त्री। 1915 मे उन्होने बी ए पास किया। एम ए और बी एल परीक्षाओ का पूर्वार्द्ध भी पास किया। कलकत्ता मे रहते समय वे आर्य समाज के निकट सम्पर्क मे आये। आय समाज कलकत्ता मे नियमित रूप से उन क भाषण होने लगे। अब वे इस आर्य समाज के पुरोहित तथा उपदेशक के रूप म कार्य करने लगे। उनकी अपूर्व वाग्मिता, तर्क कौशल, व्यापक स्वाध्याय एव शास्त्रार्थ कौशल से सभी लोग प्रभावित होने लगे। आर्य धर्म के अतिरिक्त उन्हाने बौद्ध, जैन, इस्लाम तथा ईसाइयत का भी विस्तृत अध्ययन किया था। 1920 मे असहयोग आन्दोलन मे उन्होंने अपनी सक्रिय रूचि प्रदर्शित की। इसी वर्ष कालेज स्क्वायर म सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ठ समुल्लास मे प्रतिपादित राजधर्म पर भाषण करते हुए वे पुलिस द्वारा पकडे गए और अदालत ने उन्हे डेढ वर्ष का कारावास दण्ड दिया। राजनीतिक बन्दी के रूप मे उन्ह अलीपुर के केन्द्रीय कारागार मे रखा गया। कारागार से मुक्त हो कर वे एक विद्यालय के मुख्याध्यापक बन गये।

विश्व धर्म सम्मेलन में

प अयोध्या प्रसाद की बडी इच्छा थी कि वे विदेशो मे जा कर वैदिक धर्म का प्रचार करें। इस्लामी मुल्को मे जा कर आर्य समाज के विचारो का प्रचार करने की भी उन्हे तीव्र इच्छा थी। विदेश यात्रा का अवसर उन्हें तब मिला जब 1933 मे अमेरिका के शिकागो नगर मे विश्व धर्म सम्मेलन का अधिवेशन सम्पन्न हुआ। आर्य समाज कलकत्ता और बम्बई के प्रयत्नो से। अयोध्या प्रसाद को उस अन्तर्राष्ट्रीय धर्म सम्मेलन मे वैदिक धर्म के प्रतिनिधि के रूप मे भेजा गया। सेठ युगल किशोर बिडला ने पण्डित जी को विदेश यात्रा हेतु आर्थिक सहायता प्रदान की। जुलाई 1933 मे उन्होने अमेरिका के लिये प्रस्थान किया। धर्म सम्मेलन मे "वैदिक धर्म का गौरव और विश्व शांति" विषय पर उनका प्रभावशाली भाषण हुआ विश्व शान्ति वैदिक मान्यताओ को स्वीकार करने से ही सम्भव है। इस धारणा का प्रबल युक्तियो से प्रतिपादन करते हुए उन्होंने सम्मेलन के प्रतिनिधियो के समक्ष वेदो की उदात्त शिक्षाओं को उपस्थित किया। प अयोध्या प्रसाद के भाषण का प्रभाव धर्म सम्मेलन पर इस रूप मे भी लक्षित हुआ कि सम्मेलन के पूरे काल मे उसकी दैनिक कार्यवाही का प्रारम्भ वेद के प्रार्थना मन्त्र से तथा समाप्ति वैदिक शान्ति पाठ से होती।

इसी सम्मेलन मे पण्डित जी ने भारतीय अभिवादन 'नमस्ते' की बडी सुन्दर व्याख्या की थी। उन्होने कहा कि आर्य लोग दोनो हाथ जोड कर तथा उन्हे हृदय के निकट लाकर नतमस्तक हो 'नमस्ते' का उच्चारण करते है। इन क्रियाओ का अभिप्राय यह हैं कि नमस्ते के द्वारा हम अपने हृदय हाथ तथा मस्तिष्क तीनो की प्रवृत्तियो का सयोजन करते हैं। हृदय आत्म शक्ति का प्रतीक हैं, भुजाए शारीरिक बल की द्योतक हैं तथा मस्तिष्क मानसिक शक्ति का केन्द्र हैं। इस प्रकार नमस्त क उच्चारण तथा उसके साथ थोडा मस्तिष्क झुका कर दोनो हाथो को जोडते हुए हम इन भावो को व्यक्त करते हैं।

नमस्ते की इस व्याख्या का सम्मेलन के पाश्चात्य श्रोताओ पर अद्भुत प्रभाव पडा।

उत्तर तथा दक्षिण अमेरिका मे वैदिक धर्म का प्रचार करने के पश्चात् पण्डित जी ने उत्त गायना, ट्रिनिडाड आदि देशो मे भी प्रचारार्थ भ्रमण किया ट्रिनिडाड मे एक कट्टरपथी सनातनी विचारधारा के व्यक्ति ने पण्डित जी को भोजन के लिए आमन्त्रित किया परन्तु उन्हे आर्य समाज का प्रसिद्ध उपदेशक, प्रखर वाग्मी तथा सनातन धर्म विरोधी समझ कर द्वेष वश भोजन मे विष दे दिया। यद्यपि भोजन के इस विष मिश्रित ग्रास को जिह्वा पर रखने मात्र से ही पण्डित जी को उसके विष सयुक्त होने का ज्ञान हो गया तथा उन्होंने अवशिष्ट भोजन को त्याग भी दिया किन्तु तीव्र विष का घातक प्रभाव उनके शरीर पर पडे बिना नही रहा। लदन मे आकर वे रुग्ण हुए और इसी नगर के अस्पताल मे 6 मास तक उनकी चिकित्सा होती रही। उनके हृदय पर इस विषाक्त भोजन का आजीवन असर रहा।

स्वदेश यात्रा से लौट कर पण्डित जी ने कलकत्ता को ही अपनी गतिविधियो का केन्द्र बनाया। उनके जीवन के अवशिष्ट दिन धर्म प्रचार स्वाध्याय, चिन्तन एव मनन मे ही व्यतीत हुए।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

सम्पादकीय—

आर्य समाज और रामकृष्ण मिशन—2

इस लेखमाला के पिछले लेख में मैंने एक गलती कर दी थी, मैंने लिखा था कि उच्चतम न्यायालय ने यह निर्णय दिया है कि रामकृष्ण मिशन हिन्दू संस्था नहीं है। मेरी जानकारी ठीक न थी यह निर्णय उच्चतम न्यायालय का नहीं कलकत्ता हाईकोर्ट का है। बंगाल की सरकार और कुछ दूसरे व्यक्तियों ने कलकत्ता हाईकोर्ट के इस फैसले विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट में अपील कर रखी है। मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं कि कलकत्ता हाईकोर्ट ने कहा है और कल को सुप्रीम कोर्ट क्या कहता है। मेरे लिए तो आश्चर्यजनक बात यह है कि जो संस्था कल तक हिन्दुओं की सबसे बड़ी संस्था समझी जाती थी और जिसका ढिंढोरा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिन्दू परिषद् सारे संसार में पीट रहा था आज वही संस्था यह कहती है कि हम हिन्दू नहीं हैं। न हम किसी हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने भी, विश्व हिन्दू परिषद् ने भी रामकृष्ण मिशन को आर्य समाज के मुकाबला में खड़ा करने का प्रयास किया था वह यह भी प्रचार करते रहे हैं कि स्वामी विवेकानन्द का स्थान महर्षि दयानन्द से ऊंचा था। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और विश्व हिन्दू परिषद् के प्रत्येक समारोह में स्वामी विवेकानन्द के चित्र तो दिखाई देते थे, महर्षि दयानन्द दिखाई नहीं देते थे। आइये जरा देखें कि आर्य समाज और रामकृष्ण मिशन या महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द इन दोनों में हिन्दुओं के हितैषी और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए कौन संघर्ष करता रहा है। महर्षि दयानन्द की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वह किसी को धोखा नहीं देते। उनकी स्पष्ट वादिता के कारण कई व्यक्ति उनसे नाराज भी हो जाते थे परन्तु वह किसी की आंखों में धूल न झोंकते थे, जो कुछ कहना होता था साफ-2 कह देते थे और फिर उस पर कायम रहते थे, उन्होंने कभी भी यह न कहा था कि वह हिन्दू हैं। वह हिन्दू शब्द के ही विरोधी थे वह अपने आपको आर्य कहते थे और वेदों में उनकी श्रद्धा थी वेदों से इधर-उधर वह किसी बात को स्वीकार नहीं करते थे। अपने जीवन में उन्होंने जितने भी शास्त्रार्थ किए थे इसी ध्येय को सामने रख कर कि वेद अपौरुषेय हैं और जो कुछ उन में लिखा वह मनुष्य मात्र के लिए परमात्मा का अन्तिम आदेश है। वेदों में उनकी जो आस्था थी उसमें जीवन भर किसी प्रकार की शिथिलता न आई थी। यह भी एक तथ्य है कि विदेशी विद्वान् भी यही कहते थे कि वेदों के विषय में जो कुछ महर्षि दयानन्द ने कहा है उसे काटना कठिन है जिन लोगों को उनसे मतभेद भी होता था वह भी यह मानते थे कि ऐसा विद्वान् बहुत कम मिलेगा और तो और श्री रामकृष्ण परमहंस ने भी स्वीकार किया था कि महर्षि दयानन्द संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे और उन जैसा विद्वान् मिलना कठिन है।

यह एक पक्ष है अब जरा दूसरा पक्ष भी देखिए। रामकृष्ण मिशन के अधिकारी आज कहते हैं कि वह न हिन्दू हैं न हिन्दू धर्म से उनका कोई सम्बन्ध है परन्तु हर कोई जानता है कि रामकृष्ण मिशन के सारे प्रचार का आधार उपनिषदें हैं। यह वेदों को इतना महत्व नहीं देते थे न अब देते हैं जितना उपनिषदों को। जब स्वामी विवेकानन्द जी विश्व धर्म-सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए अमेरिका गए थे तो वहां उन्होंने जितने भाषण दिए थे उनमें अधिकतर उपनिषदों की व्याख्या की गई थी या भारत की प्राचीन संस्कृति पर प्रकाश डाला गया था। यही कारण था कि अमेरिका में उनका प्रभाव बहुत अच्छा रहा। परन्तु यह प्रश्न भी साथ ही उठेगा कि यदि वह हिन्दू न थे और रामकृष्ण मिशन का हिन्दू धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है तो फिर उपनिषदों का या गीता का सहारा क्यों लिया गया। एक तुच्छ बुद्धि का व्यक्ति भी जानता है कि वेदों का सारांश उपनिषदों में है और उपनिषदों का सारांश गीता में है। जो व्यक्ति उपनिषद् और गीता को अधिक महत्व देते हैं वह वेदों की अवहेलना कैसे कर सकते हैं परन्तु रामकृष्ण मिशन करता है। इस पर वह यह नहीं कह सकते कि हिन्दू धर्म से उनका कोई सम्बन्ध नहीं। क्योंकि उपनिषदों और गीता में जो कुछ लिखा है वह भी तो हिन्दू धर्म का ही एक रूप है।

रामकृष्ण मिशन ने हिन्दू जाति और हिन्दू धर्म से अपना सम्बन्ध इसीलिए तोड़ा है कि कलकत्ता में उसके एक कालेज को सरकार की तरफ से वह अनुदान नहीं मिल रहा था जो अल्पसंख्यक शिक्षा संस्थाओं को मिलता है। बंगाल में बहु संख्या हिन्दुओं की है वह अनुदान लेने के लिए रामकृष्ण मिशन यह बताना चाहता था कि वह हिन्दू नहीं है इस लिए बंगाल की अल्पसंख्यक संस्थाओं को जो अनुदान मिलता है वह उन्हें भी मिलना चाहिए।

अपने इस स्वार्थ के लिए यह लोग किस अधोपतन तक पहुंचे हैं इस का अनुमान हम इसी से लगा सकते हैं कि उन्होंने कलकत्ता हाई कोर्ट में अपने विषय में वह कुछ कहा है जिसे सुन कर प्रत्येक हिन्दू का सिर शर्म से झुक जाएगा। विशेष कर श्रीरामकृष्ण परमहंस के विषय में जो कुछ कहा गया है वह घृणित भी है और निन्दनीय भी है। कहते हैं कि वह कई प्रकार के स्वप्न देखा करते थे कभी वह अपने स्वप्न में हजरत मोहम्मद को देखते थे कभी ईसामसीह को देख लेते थे कभी किसी दूसरे धर्म के प्रवर्तक को देख लेते थे फिर उनकी इच्छा होती थी कि वही बन जाए। वह कभी मोहम्मद बनने की कामना करते रहे और कभी ईसामसीह बनने की कामना करते रहे जब उनकी नींद खुलती थी तो उन्हें पता चलता था कि वह जो कुछ देख रहे थे वह केवल एक स्वप्न था। फिर भी कभी वह चाहते कि वह मोहम्मद बन जाए कभी चाहते थे ईसामसीह बन जाए। राम या कृष्ण बनने की इच्छा कभी न हुई थी। वह यह बताना चाहते थे कि संसार में जो भिन्न-भिन्न धर्म हैं उनके वह अकेले ही प्रतीक है। इस लिए कभी वह मुसलमानों की बातें करने लग जाते थे और कभी इसाईयों की और इसी चक्कर में वह यह भूल जाते थे कि वह स्वयं क्या हैं।

यदि वह केवल यहीं तक रहते तो इस पर भी अधिक आपत्ति न होती यद्यपि यह समझना मुश्किल हो जाता कि एक ही व्यक्ति किस प्रकार एक ही समय में दो या तीन नौकाओं में सवार कैसे हो सकता है। लेकिन श्री रामकृष्ण ने इससे भी कुछ भयानक बातें की थी जिनके विषय में आगामी अंक में कुछ लिखूंगा।

—वीरेन्द्र

पंजाब में हिन्दी को बचाओ

जिसकी आशंका थी वही होने लगा है। हमें डर था कि पंजाब में अकाली सरकार आएगी तो सबसे पहला हमला हिन्दी पर होगा। जब तक कांग्रेस सत्तारूढ़ रही उसने भी हिन्दी के साथ कोई कम अन्याय नहीं किया था। इस दृष्टिकोण से कांग्रेस तथा अकाली दल में कोई अधिक अन्तर नहीं। लेकिन कांग्रेस के राज में हिन्दी के विरुद्ध एक विधिवत अभियान शुरू नहीं किया गया था जो अब शुरू हो रहा है। अकाली नेता बिना किसी औपचारिकता के आम तौर पर हिन्दी के विरुद्ध अपने विचार व्यक्त करते हैं। उनमें से कुछ वे भी हैं जो यह समझते हैं कि यदि हिन्दी इस राज्य में समाप्त हो जाए तो देश शेष भारत के साथ पंजाब का सम्पर्क भी समाप्त हो जाएगा। जो लोग पंजाब को एक विशेष दर्जा दिलाना चाहते हैं और जिनके दिमाग में 'खालसा जी के बोलबाला' की कल्पना है उनकी आकांक्षा है जितनी जल्दी हिन्दी पंजाब में खत्म हो सके बेहतर है। वह इसे समाप्त नहीं कर सकते क्योंकि हिन्दी श्री गुरु गोबिन्दसिंह महाराज की मातृ-भाषा थी। उन्होंने अपना बहुत-सा साहित्य भी हिन्दी में लिखा था। जो वह पढ़ना चाहते हैं उन्हें पहले हिन्दी पढ़नी पड़ेगी। इसलिए पंजाब में हिन्दी को मिटाने का जो प्रयास हो रहा है वह अधिक सफल तो नहीं हो सकता, फिर भी कोशिश करने वाले तो करते रहेंगे।

हाल ही में गुरु नानकदेव विश्वविद्यालय ने यह निर्णय किया है कि बी ए तक पंजाबी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाए। हमें इस पर कोई आपत्ति नहीं है। हमें पंजाबी से वह घृणा नहीं है जो पंजाबी के कुछ ठेकेदारों को हिन्दी से है। हम पंजाबी पढ़ने के विरोधी नहीं हैं हम तो इस विचारधारा के हैं कि एक व्यक्ति अधिक से अधिक जितनी भाषाएं पढ़ सकता है पढ़े। पंजाबी हमारी राष्ट्रीय

(शेष पृष्ठ 5 पर)

अध्यात्म चर्चा—

ईश्वर सर्वव्यापक है-2

लेखक— श्री पं. रविदत्त जी शर्मा एम.ए.पी.एच.डी अबोहर

(गताक से आगे)

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति ।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ॥
यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद् विजानत· ।
तत्र को मोह क शोक एकत्वमनुपश्यत ॥

जो मनुष्य सब प्राणियो को परमात्मा मे और परमात्मा को सब प्राणियो मे देखता है वह कभी घृणा नही करता। ऐसी स्थिति मे तत्वज्ञानी के लिए सभी प्राणी परमात्मस्वरूप प्रतीत होते है। अभिन्नता करने वाले के लिये क्या मोह और क्या शोक ?

उक्त मन्त्र मे ऐसे व्यक्ति की स्थिति का वर्णन किया गया है जो आत्म साक्षात्कार कर चुका है। सभी प्राणियो का ईश्वर के साथ व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध है। विश्व का आधार परमात्मा है। बिना आधार के आधेय की कल्पना भी निर्मूल है, अत' आधार-आधेय सम्बन्ध भी हुआ। तत्व दर्शी साधक को प्रत्येक आत्मा मे वही झलक दिखायी देती है। किसी भी वस्तु को देख कर उसे वही आनन्द मिलता है जो परमात्मा के साक्षात्कार से होता है, यह साधक की आत्मानुभूति की अन्तिम सीमा है। जिसने प्रभुसत्ता को भलीभाति जान लिया उसे कभी किसी से ईर्ष्या-द्वेष आदि नही हो सकता क्योकि यदि वह ऐसा करता है तो उसे समझना है कि ईश्वर से ही द्वेष कर रहा है। वेदान्त वाले इस स्थिति को भगवद्दर्शन कहते हैं, जिस मे द्रष्टा सर्वत्र अपने प्रभु को ही देखता है उसे कही भी भिन्नता नही प्रतीत होती । वास्तव मे ईश्वर जगत् से भिन्न नही है। यह चित्त के विकारो के कारण अनुभव होता है। साधना एव तपस्या से चित्त विकार रहित हो जाता है तो शुद्ध स्वरूप परमात्मा की ही प्रतीति सर्वत्र होती है।

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविर
शुद्धमपापविद्धम् ।
कविर्मनीषी परिभू. स्वयम्भूर्याथा
तथ्यतोऽर्थान् ।
व्यदधाच्छाश्वतीभ्य समाभ्य: ॥

वह परमात्मा दिव्यतेजयुक्त, शरीर रहित, जरामन्न आदि दोषो से रहित, नसनाडियो से रहित, शुद्ध स्वरूप, पाप शून्य, सर्वत्र गतिमान, सर्वद्रष्टा, मननशील, सर्वोपरिसत्ता वाला एव सर्वनियन्ता, अपने आप प्रगट होने वाला, अनादिकाल से यथायोग्य पदार्थों की रचना करता रहा है।

इस मन्त्र मे ईश्वर की विशेषता पर प्रकाश डाला गया है। यहा ईश्वर को सर्व व्यापक, अनादि तथा निराकार बताया गया है सभी विशेषण परस्पर पूरक हैं। सर्वव्यापक और अनादि वही हो सकता है जो निराकार हो, जन्मबन्धन से पृथक् हो। कोई उसका निर्माता या माता पिता नही हो सकता क्योकि वह स्वयम्भू है, सासारिक प्राणी नही। ससार उसकी कलाकृति है। वह ससार को यथोचित रूप देता है और ठीक ठीक व्यवस्था करता है इसीलिए उसे 'अव्रणम्' दोष रहित है, इसका भाव है कि परमात्मा मे किसी प्रकार की कमी नही, वह प्रत्येक दृष्टि से पूर्ण है। उस के किसी भी कार्य मे अपूर्णता नही है। आवश्यकतानुसार सभी पदार्थ बनाये। मनुष्य के लिए सर्व प्रथम श्वास के लिए हवा चाहिए। अत एव विस्तृत वायुमण्डल बना दिया, जिस मे कभी भी हवा की कमी नही आती। हवा के बाद जीवित रहने के लिए पानी चाहिए तो पृथ्वी से तीन गुणा जल से पूर्ण सागर बनाया। इस के अतिरिक्त पृथ्वी के अन्दर भी जल है। मनुष्य अपनी आवश्यकता को पूरी करने के लिए कही भी कुआ या नल द्वारा पानी प्राप्त कर लेता है। विविध प्रकार की औषधिया एव वनस्पतिया बनायी जिन से सभी प्राणी उपकृत हैं। मनुष्य के लिए पृथ्वी मे सोने, चादी आदि के भण्डार बना दिये, समुद्र के द्वारा भी असख्य रत्नो की प्राप्ति होती है। भीनी-भीनी ऋतुए बनाई जिन से मनुष्य को नवीनतम मादकता का अनुभव होता है। याथातथ्य का दूसरा अर्थ है—कर्मानुसार व्यवस्था करना, परमात्मा की उचित व्यवस्था के कारण ही विधाता कहा गया है 'स नो बन्धुर्जनिता स विधाता'—वह सृष्टि के विधान को ठीक रखता है। सृष्टि का निर्माण कर पूरी तरह देखभाल करता है इसलिए कवि और मनीषी है। दुनिया के जर्रे-जर्रे से वह वाकिफ है तभी तो पूरी तरह नियन्त्रण करता है।

अन्ध तम: प्रविशन्ति येऽसम्भूति-
मुपासते ।
ततो भूय इव ते तमो य उ
सम्भूत्या रता: ।
अन्यदेवाहु. सम्भवादन्यदाहुर-
सम्भवात ।
इति शुश्रुम धीराणा ये नस्तद्
विचचक्षिरे ।
सम्भूति च विनाश च यस्तद्
वेदोभय सह ।
विनाशेन मृत्यु तीर्त्वा सम्भूत्यामृत-
मश्नुते ॥

प्रस्तुत मन्त्रो में सम्भूति तथा असम्भूति के तत्व को समझाया गया है। सम्भूति का अर्थ है अविनाशी तथा असम्भूति का अर्थ है विनाशशील। एक है कार्य रूप प्रकृति दूसरा है सत् रज-तम इन तीनो गुणो से युक्त मूलप्रकृति।

कुछ व्यक्ति केवल लोकाराधन मे ही जीवन व्यतीत कर देते हैं, लोकैषणा पर्यन्त ही उनका उद्योग होता है और दूसरे प्रकार के मनुष्य ऐसे होते हैं जो ससार की उपेक्षा करते हैं और शास्त्रीय ज्ञान के मद मे तर्क वितर्क द्वारा इधर उधर भ्रमण करते रहते हैं, वे परम तत्व को नही पहचान पाते। उपासक होने का अभिमान उनको ध्येय से वञ्चित रखता है।

विद्वानो ने दोनो के अलग-अलग फल जो स्पष्ट किया है जो लोग केवल सासारिक सत्ता को ही स्वीकार करते है, ससार के अतिरिक्त दूसरा कुछ नही मानते, केवल भोग सामग्री जुटाने उसके सवन तथा सरक्षण मे ही आयु बिता देते हैं, ऐश्वर्य बढाने के लिये विविध प्रपञ्चो का सहारा लेते हैं, जीवन यापन के साधन को ही साध्य मान कर इति कर्त्तव्य हो जाते हैं। उन्हे इस जीवन को पार कर कर के अगले जन्म मे नारकीय योनिया प्राप्त होती हैं क्योकि उन मे भोग के सस्कार ही बस जाते हैं, अत: भोग वाली योनियो मे बार जन्मते तथा मरते रहते हैं। पुन. मानव जन्म असम्भव हो जाता है तथा निरन्तर कष्ट ही पाते हैं।

दूसरे लोग ससार को तुच्छ मान कर घृणा करते हैं और उद्देश्य प्राप्ति मे ससार को बाधक मानते हैं। न तो उन को शास्त्रो का तात्पर्य ही समझ में आता है और न ही ईश्वर मे मन को टिका पाते हैं। मिथ्याभिमान ही उन को आत्म कल्याण तक नहीं पहुचने देता, ध्यान-धारणा आदि को व्यर्थ समझते हैं। उन में श्रद्धा एव विश्वास का अभाव रहता है। अध्यात्म से दूर होने के कारण विषयासक्ति मे भी लिप्त हो जाते हैं। दुर्व्यसनो का सेवन करते हुए भी वे अपने को बहुत बड़ा उपासक बता कर जनता को धोखा देते हैं, महापुरुषो का भी सम्मान नहीं करते, अपने वाणीचातुर्य से जनसाधारण को भी भ्रम मे डाल देते हैं। पूजा पूज्य [illegible] अर्थात् विपरीत स्थिति को प्रस्तुत करते हैं। ऐसे जन लोक तथा परलोक दोनों को [illegible] हैं और उद्देश्य विहीन होकर दुराचार का शिकार बन जाते हैं, अपने आप को महान् बताते और अपनी ही पूजा करवाते हैं। ऐसे भटके हुए मनुष्यो को भी घोर नरक भोगना पडता है।

उपनिषद् की चेतावनी है कि नित्य-अनित्य को विचार कर तदनुकूल व्यवहार करना चाहिए। अनित्य से ही नित्य जाना जाता है। सृष्टि को देख कर इस के निर्माता तथा व्यवस्थापक का अनुमान हो जाता है। सृष्टि एक कार्य है तो कारण का स्वत आभास हो जाता है। मूल प्रकृति कारण है, जगत् उसका कार्य रूप है। मूल प्रकृति अनादि है। परमात्म तत्व भी नित्य है, अनादि है। ईश्वर-जीव प्रकृति ये तीन तत्व ही अनादि हैं। इस त्रैतवाद की व्यवस्था को समझ कर ही तदनुकूल आचरण किया जाए। प्रकृति त्रिगुणात्मिका है, हमारा शरीर भी उन्ही तत्वो से बना है, जो प्रकृति से समता रखता है। वास्तव मे सत्-रज-तम को ही प्रकृति नाम दिया गया है। इन गुणो के आधार पर ही मनुष्य की प्रकृति का निर्धारण किया जाता है कि अमुक व्यक्ति किस प्रकृति का है ? जीव का प्रकृति के साथ इतना ही सम्बन्ध है कि वह उस के अनुकूल वर्त कर अपने जीवन को सुखी एव समुन्नत बनावे। सदैव याद रहे कि प्रकृति जड है अत. उपासना का विषय नही। उपासना तो परमेश्वर की ही की जानी चाहिए। जीव का ईश्वर के साथ उपास्य-उपासक भाव सम्बन्ध है। जीव उपासक है, ईश्वर उपास्य देव है। प्रकृति का केवल उपभोग किया जा सकता है, उपासना नहीं की जा सकती, परन्तु ईश्वर की केवल उपासना ही की जाती है, भोक्ता-भोग्य भाव से सर्वथा अछूता है। जीव यदि प्रकृति अर्थात् जड वस्तु की उपासना-प्रार्थना में लग जाता है तो शरीर यात्रा भी ठीक से नही चल पाती है और आराधना भी नही हो पाती।

अत. भौतिक तथा आध्यात्मिक पहलुओं को सफल बनाने के लिए प्रकृति तथा परमेश्वर के रहस्य को भलीभाति जानना आवश्यक है। प्रकृति साधन है, ईश्वर साध्य है और जीव साधक है। साधना शरीर से होती है, बिना शरीर के मन बुद्धि आत्मा का कोई अस्तित्व नही, कर्तृत्व नहीं, भोक्तृत्व नही। 'शरीरमाद्य' खलु धर्मसाधनम्, के आधार पर शरीर को भी स्वस्थ एव शक्तिसम्पन्न होना आवश्यक है। शारीरिक उन्नति में प्रकृति मुख्य घटक है। जब तक शरीर

(शेष पृष्ठ 8 पर)

देश में एक समान नागरिक संहिता लागू की जाए पंजाब को सेना के हवाले कर दिया जाए

धर्म भाषा और क्षेत्रीय आधार पर उठाई गई पृथक् राज्य की मांग को दण्डनीय घोषित किया जाए भारत सरकार से पंजाब तथा अन्य राज्यों की आर्य समाजों की मांग

आर्य समाज जालन्धर छावनी, शहीद भगतसिंह नगर, धूरी, नवांशहर, शक्तिनगर अमृतसर, गौशाला रोड़ फगवाड़ा, गोबिन्द गढ़ जालन्धर, बंगा, मण्डी बाग खजान्चियां लुधियाना, मोगा, सैक्टर 22 चण्डीगढ़, पंजौड़ (होशियारपुर) स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना पक्का बाग जालन्धर आर्य नगर जालन्धर, भठिण्डा बंगा रोड़ फगवाड़ा इत्यादि और आर्य समाज अजमेर वेद मन्दिर बेहट रोड़ सहारनपुर (उ.प्र) आर्य समाज चम्बा (हि. प्र) और इनके अतिरिक्त और भी आर्य समाजो की ओर से जो उन्होंने 30-3-86 को अपनी सभा में पारित किए थे सभा को निम्न प्रस्ताव भेजे।

आज आर्य समाज जालन्धर छावनी का बृहद् अधिवेशन श्री मधु सूदन लाल सेठी जी की अध्यक्षता मे हुआ। जिसमे देश की वर्तमान परिस्थितियो पर विचार किया गया। तथा यह अनुभव किया गया कि दुर्भाग्य से हमारे देश के अन्दर कुछ धार्मिक कट्टर पन्थी धर्म के आधार पर अपने आपको एक पृथक् जाति घोषित करते हुए अपने लिए एक अलग राज्य की माग कर रहे है। एवम कुछ ऐसे तत्व भी हैं जो क्षेत्रीयता के आधार पर स्वयं को अपनी मातृ भूमि से अलग करने की आवाज उठाने लगे हैं। इन सभी प्रकार के तत्वो से हमारे देश की सुरक्षा और अखडता को खतरा पैदा हो गया है। जिसको हम बहुत गहरी चिन्ता की दृष्टि से देखते हैं। और आपसे अनुरोध करते हैं कि इस प्रकार के विघटनवादी तत्वो से सावधान रहे। जोकि विदेशी ताकतो के इशारो पर नाच रहे हैं। जिन का एक मात्र उद्देश्य देश मे अस्थिरता पैदा करना और उसका विभाजन करना है। अत हम देश-वासी आपकी सेवा मे निम्नलिखित मागे सर्वसम्मति से प्रस्तुत करते हैं।

1 भारत सरकार धर्म, भाषा और क्षेत्रीय आधार पर उठाई गई पृथक् राज्य की माग को दण्डनीय अपराध घोषित करें। इस विषय मे यह सभा सरकार से अनुरोध करती है कि इस दिशा मे उठाए गए प्रभावी कदम के रूप मे सविधान की उन धाराओ को निरस्त कर दिया जाए जिनके द्वारा देश की जनता को धर्म, भाषा और सस्कृति के आधार पर बहु-सख्यक मानकर विभाजित किया जाता है।

2 यह सभा यह भी अनुरोध करती है कि पजाब मे हिंसा और तोड़-फोड़ की कार्यवाही को रोकने के लिए उसे तुरन्त सेना के सुपुर्द कर दिया जाए जब तक वहा पूर्ण शान्ति स्थापित न हो जाए और वहा से पाक मार्गियो का सफाया न हो जाए। सभा का सुझाव है कि देश की उत्तर-पश्चिम की सीमा से लगने वाले जम्मू-काश्मीर, पजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश को मिलाकर एक बृहद् राज्य बनाया जाए। इस प्रकार सगठित राज्य वर्तमान परिस्थितियो म देश की आतरिक और बाह्या सुरक्षा के लिए प्रभावी सिद्ध होगा।

3 सविधान की धारा के अन्तर्गत दिए गए निर्देशो के अनुसार अब यह आवश्यक हो गया है कि देश मे एक समान नागरिक न्याय-सहिता लागू की जाए, इस समय ससद मे मुस्लिम कट्टर-पथियो के तुष्टिकरण के लिए जो विधेयक पेश किया गया है, वह तुरन्त वापिस लिया जाए, क्योकि इसके पारित होने पर भारतीय दण्ड विधान की धारा 125 के अन्तर्गत मुस्लिम महिलाओ को अपने अधिकारा की लड़ाई से वचित कर दिया जाएगा।

4 भारतीय सविधान की धारा 1 मे परिवर्तन करके देश को राज्यो का सघ न मान कर प्राशसनिक इकाईयो का सघ माना जाए।

5 सभा की धारणा है कि जम्मू-काश्मीर मे शाह सरकार को बर्खास्त करके भारत सरकार ने एक अभिनन्दनीय कार्य किया है। सभा की यह माग है कि सविधान की धारा 370 को समाप्त कर दिया जाए जिसके अन्तर्गत जम्मू-काश्मीर को एक विशिष्ट राज्य का दर्जा प्राप्त है।

—काशीराम अग्रवाल

आर्य समाज भगतसिंह कालोनी, जालन्धर की एक बैठक दिनाक 30-3 86 को हुई, जिसमे निम्न प्रस्ताव स्वीकृत किया गया :—

आज की बैठक भारत सरकार से यह माग करती है कि जम्मू काश्मीर, हिमाचल और हरियाणा, पजाब को मिला कर एक बृहद् राज्य बनाया जाए क्योकि यह सरहदी इलाके हैं, राष्ट्र की अखण्डता को मजबूत बनाने का यह एक बेहतरीन सुझाव है।

दूसरी प्रार्थना यह है कि पजाब के अन्दर जो इस समय अस्थिरता चल रही है—जातिवाद, भाषावाद, प्रान्त वाद आदि इसको रोकने के लिए तुरन्त पजाब को सेना के हवाले कर दिया जाए ताकि रोज रोज जो खून की होलिया खेली जा रही है वह बन्द हो जाए। और शान्ति स्थापित हो सके।

—मुलखराज आर्य प्रधान

(3 पृष्ठ का शेष)

भाषाओ मे से एक है। इसलिए वह भी पढ़नी चाहिए। कोशिश यह भी होनी चाहिए कि हम कोई दक्षिण भारतीय भाषा भी पढ़ें। ताकि उन्हें यह शिकायत न रहे कि उत्तर भारत वाले उनकी उपेक्षा कर रहे है।

पजाब म जो नया सिलसिला शुरू हुआ है उसम सबसे बड़ा प्रश्न यह आता है कि हिन्दी का कौन सा स्थान होगा। पजाबी पढ़ना अनिवार्य हो गया है और उसके साथ अग्र जी पढ़ना भी लगभग अनिवार्य है ऐसी स्थिति मे हिन्दी की पढ़ाई की क्या व्यवस्था होगी और एक विद्यार्थी किस चरण म हिन्दी पढ़ेगा ?

हम अच्छी तरह जानते हैं कि पजाब मे सरकारी काम-काज के लिए दूसरी जगह हिन्दी की नही अंग्रेजी की है। हिन्दी मे लिखे दस्तावेज मजूर नही होते। अग्र जी मे लिखे मजूर हो जाते हैं। हालाकि अग्रजी हमारी राष्ट्र भाषा नही है। हमारे सविधान मे जिन राष्ट्र भाषाओ का उल्लेख किया गया है उनम अग्र जी का नाम नही है। फिर भी वह चलती है। हमे उस पर भी आपत्ति नही यदि हमारे सरकारी काम-काज मे हिन्दी का स्थान भी सुरक्षित कर दिया जाए। लेकिन हम जानते हैं कि हमारे अकाली शासक हिन्दी पर अग्र जी को अधिमान देंगे। अभी तो पजाब के विश्वविद्यालयो मे हिन्दी को तीसरा स्थान दिया गया है अगला फैसला यह होगा कि हिन्दी पढ़ना आवश्यक नही, अग्र जी पढ़ना आवश्यक है और फिर वह भी समय आएगा जब पजाब म हिन्दी पढ़ने वाला कोई दिखाई नही देगा और इसी के साथ पजाब से जो लड़के अखिल भारतीय सेवाओ मे भाग लेते हैं उनके लिए भी कोई स्थान नही रहेगा।

गुरु नानकदेव विश्वविद्यालय ने जो निर्णय किया है उसके दूरगामी परिणाम निकल सकते हैं। जब तक यह निर्णय न हो जाए कि पजाबी के साथ हिन्दी पढ़ना भी अनिवार्य है तब तक हिन्दी इस राज्य म सुरक्षित नही रह सकती। हमे किसी धोखे मे नही रहना चाहिए। पजाब मे अलगाववाद की जो लहर चल रही है उस का पहला वार हिन्दी पर हुआ है। धीरे-धीरे इस सब जगह समाप्त करने का प्रयास किया जाए। एक बार एक बहुत बड़े अकाली नेता ने कहा था कि हिन्दी को समाप्त कर दिया जाए तो हिन्दू समाप्त हो सकते हैं। जब कोई हिन्दी न पढ़ सकेगा तो अपने धार्मिक ग्रन्थ कौन पढ़ेगा। इसलिए हिन्दी को दबाने का जो प्रयास हो रहा है उसके इस पहलू को हमे अनदेखा नही करना चाहिए।

लेकिन अब इस विवाद मे पड़ने का कोई लाभ लाभ नही कि जो निर्णय गुरुनानक देव विश्वविद्यालय ने किया है उसकी प्रतिक्रिया कल को क्या हो सकती है। अब तो यह सोचने वाली बात है कि पजाब के हिन्दी प्रेमियो को क्या करना है। उनके सामने अब एक ही रास्ता है कि वे अपने दैनिक कारोबार मे हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। अपने बच्चो को उन स्कूलो मे दाखिल कराए जहा शिक्षा माध्यम हिन्दी है और उसके बाद उन कालेजो म जहा हिन्दी को अधिमान दिया जाता है। अभिप्राय यह कि एक नई चुनौती हमारे सामने आ रही है। पजाब मे आगे ही हमारे लिए कई कठिनाइया पैदा हो गई है। यह एक नई पैदा हो रही है। यदि हम अभी से अपने कर्त्तव्य को समझते हुए हिन्दी के अधिक से अधिक प्रचार और प्रसार के लिए प्रयत्न नही करेंगे तो जो लोग हिन्दी को पजाब मे मिटाना चाहते हैं उनका रास्ता सहज हो जाएगा।

—वीरेन्द्र

संचार माध्यम और सांस्कृतिक प्रदूषण

लेखक—डा श्री विजय द्विवेदी जी

(6 अप्रैल से आगे)

कहने की जरूरत नही है कि आज हमारे सचार माध्यम भोग वाद को बढावा दे रहे हैं, थोडे समय मे ससार का सारा सुख भोग लेने का लोभ भारतीय लोक जीवन मे अनैतिकता, अनाचार, शोषण एव स्वच्छेचार तथा अनुशासन हीनता को प्रोत्साहन दे रहा है। इससे भारत की समतावादी सस्कृति मरणासन्न हो रही है, जन जीवन मे निराशा और दुराशा विष बलि की तरह फलती फलती जा रही है। दसगी ओर हमारी समाजवादी वैज्ञानिक चिन्तन पर आधारित लोकतन्त्री शासन पद्धति, किम्भूत-किमाकार सविधान तथा धर्महीन धनवान नेता और अधिकारीगण, अतिचारी-अविचारी सचार-साधन बचने कि दरिद्रता' की उदारता दिखा कर जन जीवन की यातना मे दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि करते जा रहे हैं। यह स्थिति किसी भी देश क लिए भयावह सिद्ध हो सकती है। इससे बचन का उपाय यही है कि हम अपन अतीत से प्रेरणा ग्रहण कर वतमान की रचना करे। हमारा अतीत इतना निकृष्ट और अनुपयोगी नही है जितना हमे बताया जाता है। वस्तुत जरूरत इस बात की है कि हम एक ऐसी दृढ सस्कृति की रचना करे जो भौतिक वातावरण के उतार चढाव, परिवेश के बदलते मूल्यो एव अतीत के जीवनोपयोगी उद्देश्या के बीच समन्वय ला सके तथा वैज्ञानिक उपलब्धिया और यान्त्रिक आविष्कारा की नवीनतम प्रणालियो से मानवीय भावनाओ का विकास कर सके। हमारे सचार माध्यम सस्कृति के उन गुणो को विकसित करने मे सहयोग दे जिन्हे सामाजिक स्तर पर प्राप्त किया गया है और जो नाना नामभादात्मक रूप मे निरपेक्ष भारत से मानवीय विशिष्टता के अग बन कर आए हैं।

यह सच है कि सास्कृतिक पुनर्जागरण का क्रम समूह स नही व्यक्ति स आरम्भ होता है। सुसस्कृत व्यक्ति सीधा और सरल होता है। आज वह अधी भीड मे खो गया है। उसकी एक पहचान यह है कि वह सत्य, अहिसा तथा मैत्री का मौखिक उपदेश न दे कर इन पर स्वय आचरण करता और दूसरो को करने की प्रेरणा प्रदान करता है। ऐसा व्यक्ति दुनियावी विवादा से परे रह कर व्यापक आध्यात्मिक अनुभूतियो को ग्रहण करता है और अपने परिवेश को स्वस्थ एव सुखद बनाए रखने के लिए निजी तौर पर काम करता है। हमारे सचार माध्यम और सास्कृतिक पुनर्जागरण के काम मे लगे लोग ऐसे लोगो की खोज और पहिचान कर सकते हैं जो सादा जीवन उच्च विचार रखते हैं, शहरो मे रह कर ग्रामीण की तरह सोचते है, गाव म शहरो की तरह रहत है, प्राचीन ज्ञान परम्परा की रक्षा और उसे समयानुकूल आगे बढाने, प्राकृतिक सम्पदा तथा शक्ति क मुक्त वितरण के हामी, अपने ग्राम, विज्ञान, कला साहित्य शिल्प सगीत, शास्त्रादि गत चिन्तन के क्षेत्र मे व्यापकता एव पूर्णता के पक्षधर, स्थल से सूक्ष्म की ओर गतिशील व्यक्तियो के निजी जीवन और चरित्र को फोकस करके सचार साधन सास्कृतिक पुनर्जागरण ला सकत है। स्वीकृत और सम्मानित नामो को निजी हित के लिए उछालने अथवा पैसा पद प्रभुता के लिए अपनो की चमचागिरी करके न तो भारतीय सस्कृति की रक्षा की जा सकती है और न ही सास्कृतिक चेतना को जगाया जा सकता है। अत हमारे सचार माध्यमो का कर्त्तव्य होना चाहिए कि भारतीय सस्कृति की मानवीयता को व्यापक बनाए, उसकी महती साधनाओ तथा साधका के आचरण को उजागर करे और इस काम को लोक जीवन के सबसे निचले तबके म आरम्भ करे। याद रखें भारतीय सस्कृति माटी का दिया है जो शक्ति भर अधेरे से लडता है, बिजली की आखो को चुधियाने वाली रोशनी नही।

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज सगरूर (पजाब) के लिए एक अनुभवी, कुशल एव प्रभावशाली पुरोहित की आवश्यकता है।

जो लाजपतराय आर्य कन्या विद्यालय सगरूर मे छात्राओ को सस्कृत तथा धर्म शिक्षा भी पढा सके।

स्वीकार वेतन सहित सम्पर्क करे, आर्य समाज मे ठहरने की सुविधा उपलब्ध है।

—सुरेश कुमार प्रधान
आर्य समाज सगरूर (पजाब)

आर्य समाज विनय नगर (सरोजिनी नगर) नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज विनय नगर, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव शनिवार 10 मई शनिवार और रविवार 11 मई 1986 को सरोजिनी नगर मार्कीट पार्क मे बडे समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। इस अवसर पर महत्वपूर्ण सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है अनेक विद्वान् पधारेंगे। 5 मई से 10 मई तक 6-30 बजे से 7-30 बजे ऋग्वेद महायज्ञ और रात्रि को 9 बजे से 10 बजे तक वेद कथा श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती करेंगे। कथा से पूर्व 8 से 9 बजे तक श्री सत्यदेव जी स्नातक भजनोपदेशक के मनोहर भजन हुआ करेंगे।

रविवार 11 मई 86 को प्रात 10 से 1 बजे तक दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान मे आर्य समाज स्थापना दिवस, उत्सव स्थल पर मनाया जाएगा जिसमे दक्षिण दिल्ली की सभी समाजें भाग लेंगी। दोपहर को 2 बजे ऋषिलंगर भी होगा।

—रोशनलाल गुप्ता
प्रचार मन्त्री

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना का वार्षिकोत्सव स्थगित

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना की अन्तरग सभा की एक विशेष बैठक दिनाक रविवार 6 4-86 को सम्पन्न हुई जिस मे लुधियाना नगर मे चल रहे कर्फ्यू तथा बिगडती हुई परिस्थितियो पर विचार किया गया। सर्व सम्मति स निर्णय लिया गया कि ऐसी परिस्थितियो मे वार्षिकोत्सव करना ठीक नही कोई भी नही जानता कि हालात कब ठीक होंगे। इस लिये 25 26 27 अप्रैल का वार्षिकोत्सव स्थगित किया जाता है नई तिथियो की घोषणा अन्तरग सभा द्वारा फिर की जाएगी। हमारा प्रयास होगा कि हम सभी आमन्त्रित विद्वानो तथा धर्म प्रेमियो को इस की सूचना लिख कर भेजे ताकि किसी को डाक देर से मिल तो वह इस सूचना स ही हमारी विवशता जान ले।

—मन्त्री
आर्य समाज

(2 पृष्ठ का शेष)

देहान्त स पूर्व उन्होने अपना ग्रन्थ सग्रह जिसमे लगभग 25 हजार बहुमूल्य दुर्लभ ग्रन्थो का सग्रह था। महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा (गुजरात) को भेंट कर दिया। उनके इस पुस्तकालय का आनुमानिक रूप से 2 लाख रुपया था। प अयोध्या प्रसाद के जीवन के अन्तिम दिन सुखद नही रहे। दुर्बल स्वास्थ्य लेकर वे वर्षों तक हृदय रोग मे ग्रस्त अपने 85 बड़ा बाजार स्थित निवास स्थान पर भोगते रहे। अन्तत 11 मार्च 1968 को 77 वर्ष की आयु मे उनका निधन हुआ। उनकी पत्नी का स्वर्गवास कुछ वर्ष पूर्व ही हो गया था।

व्याख्यान और प्रवचन कार्य मे ही जीवन भर लगे रहने के कारण प अयोध्या प्रसाद का लिखित साहित्य अधिक नही है। यदि उन्हे व्याख्यानादि क कार्य से कुछ अधिक समय तक मुक्त रख कर लेखन कार्य मे लगाया जाता तो सम्भवत वे अन्य अनेक उत्कृष्ट ग्रन्थ लिख सकते थे। उनके द्वारा लिखित ग्रन्थो का विवरण इस प्रकार है—

1 इस्लाम कैसे फैला' प्रकाशक गोविन्दराम हासानन्द।

2 ओम् माहात्म्य-प्रकाशक—आर्य समाज कलकत्ता।

3 बुद्ध भगवान् वैदिक सिद्धान्तो के विरोधी नही थे। प्रकाशक—आर्य समाज कलकत्ता।

4 जिम्स और वैदिक विजडम सीलैक्टड टैस्ट फार्म दि वेद विथ इग्लिश ट्रांस्लेशन-प्रकाशक—कनकलाल साहा गुरु प्रसाद घोष लेन, कलकत्ता-1933ई

5 वैदिक कौट-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

दीन दु खियो के शत शत
अबलाओ के कष्ट
कर दिये दूर तुम्ही ने ॥
निज मुस्काती मधुर दृष्टि से,
वरद हस्त रख।
जीवन-दान दिया था,
सबको पहले, तुमने ही तो।
पर सेवा का, सहिष्णुता का,
पाठ पढाया-तुमने ही तो।
आज नहीं तुम,
किन्तु अमर हो गये धरा पर
कोटि-कोटि जन, गान,
तुम्हारा गाते आते।
ओ हु प्रराण।
महात्मा हु सदाब!
हम कैसे तुम्हें,
भुला सकते हैं।

आर्य समाज का कार्य

लेखक—श्री कवि कस्तूर चन्द 'घनसार'
कवि कुटीर पीपाड़ शहर (राजस्थान)

कौन ? कहता है किया नही, कार्य जगत् म आर्य समाज।

आर्य समाज मे छुप कर बैठे, भावनार्य बगुला वेष।
क्या ? हंस बन कर न्याय दिखावे, दम्भी सही बतावे द्वेष ॥
छाया जिसके मोतिया बिन्दु है, दिख रहा नही आर्य काम।
खोल हृदय की आख देख ले, भोर हुआ कि है अभिराम ॥
अवश्य आना चाहिए जिसको, आर्य जगत मे उसको लाज।
कौन ? कहता है किया नही है, कार्य जगत् मे आर्य समाज ॥

लालालाजपतराय 'गुरुदत्त' हंसराज और श्रद्धानन्द।
कितने आर्य सुकाम किया था, न जाने कैसे ? मतिमन्द ॥
बुद्धदेव जी मीरपुरी ओ-पंडित विद्वत् मनसा राम।
तपो भूमि मे तपे-वेद ले, सुना नही क्या ? उसका नाम ॥
गुरुकुल आश्रम खोल गये हैं, सजा चले हैं आय समाज।
कौन ? कहता है किया नही है, कार्य जगत् मे आय ममाज।

पंडित लेखराम जी, देखो, किया बराबर आर्य प्रचार।
रामचन्द्र देहलवी पंडित मिया मौलवी मानी हार ॥
सप्रमाण वह चुनौती दे कर, भगवदत्त जी रहे पुकार।
मुगलो और अंग्रेजो द्वारा, लिखवाये इतिहास असार ॥
सारी पोल दिखा कर खोली, आर्य समाज की सत्यावाज।
कौन ? कहता है किया नही है, कार्य जगत् म आय समाज ॥

बिस्मिल वीर भक्तसिंह आर्य चले राष्ट्र हित देकर प्राण।
फासी चढ़े मरे कई 'योद्धा' करने कोटी-जन कल्याण ॥
आवाज बुलन्द की थी ऋषिवर ने' होवे स्वतन्त्र आर्य देश।
राष्ट्र हितैषी लाखो आर्य नर, सही तितिक्षा महान् क्लेश ॥
उसी बदौलत आज देश मे, आया है ये जनगण राज।
कौन ? कहता है किया नही है कार्य जगत् मे आर्य ममाज।

महिलाओ का मान नही था, बता रहे थे नरक समान।
आज वही इस आर्य देश म, मानी जाती लक्ष्मी महान ॥
सधवा, धर्म विधवा की इज्जत, रहे बढाते आर्य लोग।
हटा दिया है ऊंच-नीच का, लगा हुआ था जन-मन रोग ॥
मानव को मानवता दे कर' गले लगाया उसको आज।
कौन ? कहता है किया नही है, कार्य जगत् मे आर्य समाज ॥

ईसायत की कूटनीति से, लाखो बने ईसाई लोग।
पुन उसी को आर्य समाजी, रहे बनाते अपने योग ॥
प्रहरी रहे सचेत समाजी, आर्यवर्त मे आर्य वीर।
कर्म-वीर है धर्म वीर है, करते चलते कार्य सुधीर ॥
अनुचित करते जो भारत मे, आते उनसे शीघ्र बाज।
कौन ? कहता है किया नही है, कार्य जगत् मे आर्य समाज।

शास्त्रार्थ करते हैं आगे, जगत् गुरु को माने पूज।
सत्यार्थ प्रकाश हुआ है, पथ न आया अपना सूज ॥
करते हैं अन्याय अनीति, स्वार्थ हित जग मे पाखण्ड।
उनको ठीक बना कर छोडा, कई रचाया था वह काण्ड ॥
सत्य वैदिक कर्म-धर्म की, गूञ्ज रही है भारत मे गूंज।
कौन ? कहता है किया नही है, कार्य जगत् मे आर्य समाज ॥

बाल विवाह निरर्थक अब पूजा, पाहन को माने भगवान्।
अज्ञान जन्य अकर्मण्यता से, भूल गये हैं वैदिक ज्ञान।
बचे पतन की ओर देश मे, बचा लिया ऋषिवर कुछ देश।
सार्वभौम सद नियम बता कर, किया सकल को ज्ञात्र सुदेश ॥
नि स्वार्थ से सेवा करते, अपना निजी छोड [illegible]।
कौन ? कहता है किया नही है, कार्य जगत् मे आर्य समाज ॥

भाषा, विद्या-वेष सनातन, जिसका सही दिखाया रूप।
समता कौन ? करे विश्व मे, आर्य संस्कृति विशद अनूप ॥
सृष्टि के आदि से ले कर, आर्य सुपथ बताये नेक।
ठहर न सकती है कृत्रिमता, मानव धर्म वेदो मे एक ॥
चमक रहा है वसुधा भर म, देश का ये दिव्य रिवाज।
कौन ? कहता है किया नही है, कार्य जगत् म आर्य समाज ॥

सन्ध्या मन्त्र, गायत्री मन्त्र-जप, वेद ऋचाए रहे सुबोल।
घर-घर वेद पाठ है करते, आध्यात्म विद्या अनमोल ॥
मानव धर्म 'घनसार' सिखाये, मानव का सम्मान।
यज्ञोपवीत संस्कार करावे, नर-नारी पहिने धर्म जाम ॥
सब को राज अधिकार दिलाया, क्या सभी का था प्रभभाव
कौन ? कहता है किया नही है, कार्य जगत् मे आर्य समाज ॥

अनुकरणीय विचार......

(1) सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

(2) हर आदमी अपनी भूलो को ही अनुभव का महान् नाम देता है।

(3) आनन्द और सुख ऐसा इत्र है जिन्हें जितना अधिक दूसरों पर छिड़केंगे उतनी ही सुगन्ध आपके भीतर समायेगी।

(4) गुणी अपने कर्त्तव्यो और गुणहीन अपने अधिकारो पर ध्यान देते हैं।

(5) सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते है उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

(6) सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

(7) प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

(8) दूसरो का उत्साह और स्वतन्त्रता छीनकर आप चरित्र निर्माण नहीं कर सकते।

(9) अधूरा काम और अपराजित शत्रु-ये दोनो बिना बुझी आग की चिनगारियां है। मौका पाते ही ये दानवीय बन जायेंगे और लापरवाह व्यक्ति को दबा देंगे।

(10) परामर्श लीजिए, दीजिए मत। परामर्श देने वाले संसार मे भरे पड़े है। कमी सिर्फ लेने वालो की है।

(11) मनुष्य का मूल्य उसके काम या उसके कथन से नहीं बल्कि वह स्वयं जीवन मे क्या बन रहा है इसे देखकर आंकना चाहिए।

—लाहोटी ग्रुप कलकत्ता

आर्य सभा जिला रोपड़ की एक विशेष बैठक

गत दिनो रोपड मे जिला सभा प्रधान श्री ओमप्रकाश महेन्द्र की अध्यक्षता मे हुई। सभा ने प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार से प्राथना की कि वह बरनाला सरकार को आदेश दे कि वह पजाब मे अल्पसख्यक समुदाय को समान दृष्टि से देखें और प्रशासनिक निणय लेन समय उन के हितो का पूरा ध्यान रख। एक अन्य प्रस्ताव म सभा ने प्रा त मे हो रही निर्दोष व्यक्तियो की ह याओ पर चिन्ता और दुख प्रकट किया और भारत सरकार से अनुरोध किया कि वह तुरन्त हस्ताक्षप कर और पजाब को सना के नियन्त्रण म लाय। ताकि पजाब मे सामान्य स्थिति पुन स्थापित का जा सके। इसक अतिरिक्त सभा ने जिला रोपड म आय समाज की गतिविधियो मे गति लाने के लिए अनक उपायो पर विचार किया और निणय किया कि एक योग्य पुरोहित सम्मिलित रूप स नियुक्त किया जाए जो सस्कारो के अतिरिक्त प्रचार का काय भी कर सके।

ओमप्रकाश महेन्द्र (मोरिण्डा)

चण्डीगढ़ में होली का पर्व

दिनाक 26 3 86 को होली का पव सारे नगर की समाजो और सस्थाओ की ओर से स्त्री समाज सैक्टर 18 चण्डीगढ के तत्वावधान मे प्रिंसिपल शकुन्तला राय की अध्यक्षता मे मनाया गया जिस मे आरम्भ मे सम्पूण विश्व के प्राणी प्रजाओ और मनुष्य मात्र की शाति और कल्याण के लिए प आशु राम आय वैदिक शन की अध्यक्षता मे स्वस्ति और शाति यज्ञ किया गया।

मनीमाजरा और दूसरे स्कूलो कालेजो के लडके लडकिया के मनोहर सगीत हुए जिस की सराहना करते हुए और उनको पुरस्कार देते हुए प्रिंसिपल राय ने नई पीढी के बच्चो को उत्तम आचार विचार की प्रेरणा दी और होली के इस मन मिलाप उत्सव पर सब को भ्रात भाव से रह कर देश की एकता को सुदृढ बनाने की अपील की।

प आशुराम आय ने होली की महिमा को बतलाते हुए गहरा दुख प्रगट किया कि ऐसे हष उल्लास के होली पव पर भी पजाब म चारो तरफ मासूम लोगो की मारकाट जारी है। आपने पजाब और केन्द्रीय सरकार पर फलती जा रही खून की होली को बन्द कराने की अपील करते हुए इन हत्याओ मे बेदर्दी से मारे गये शहीदो को धार्मिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित की और उनके परिवारो से गहरी सहानुभूति प्रगट करते हुए सब लोगो ने खडे होकर मौन धारण कर शान्ति की प्रार्थना की। इस अवसर पर श्रीमती सत्यवती जी ने भी हिंसा की निन्दा करते हुए सब को प्रेम प्यार और और ईश्वर भक्ति से रहने का उपदेश किया माता देवकी रानी ने आय स्त्री समाज को भूमि मिल जाने पर बधाई दी। मन्त्राणी दयारानी सन्तोष कपूर और प्रधान राजकुमारी ने सब दानी महानुभावो का धन्यवाद किया।

हेमचन्द्र मन्त्री

(4 पष्ठ का शेष)

है तब तक तब तक प्रकृति का तादात्म्य है। प्रकृति के पारायण से शरीर पूरा करके ईश्वरपरायण होकर अमत की प्राप्ति सम्भव है। इस प्रकार दोनो तत्वो को पूणत जान कर मनुष्य आत्म कल्याण कर सकता है। शरीर की तुष्टि के साथ साथ ईश्वराराधन परमावश्यक है। ईश्वर को छोड अन्य की उपासना निषिद्ध है। (क्रमश)

गुरुकुल बठिण्डा में धर्मार्थ औषधालय

6 4-86 रविवार को गुरुकुल बठिण्डा में धर्मार्थ औषधालय का उद्घाटन गुरुकुल के प्रधान श्री [illegible] की [illegible] द्वारा [illegible] के पश्चात् [illegible]-15 [illegible] किया गया जिसमें [illegible] एम एड [illegible] को प्रात 10 बजे से दोपहर एक बजे तक रोगियों को मुफ्त दवाई दिया करेंगे।

आर्य [illegible] बठिण्डा में 10 अप्रैल 86 दिन वीरवार को प्रात 8 बजे आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया।

ओमप्रकाश आर्य
वानप्रस्थी

—

आर्य मर्यादा में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जगद्विजय प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि. नं. पी जे एल 55

वर्ष 18 अंक 7, 5 ज्येष्ठ सम्वत् 2043 तदानुसार 18 मई 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

श्री वीरेन्द्र जी सर्वसम्मति से छटी बार सभा के प्रधान निर्वाचित

राष्ट्रीय एकता के लिए आर्य समाज हर बलिदान देने को तैयार

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का साधारण अधिवेशन आर्य हायर सैकण्डरी स्कूल लुधियाना में 11 मई 1986 को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री वीरेन्द्र जी छटी बार पुनः सर्वसम्मति से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान निर्वाचित किए गए और सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी को अन्य अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों आदि को मनोनीत करने का अधिकार दिया गया।

इस अधिवेशन में निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किए गए। 'पंजाब पिछले पाँच वर्ष से जल रहा है। जब कभी इस आग को बुझाने का प्रयास किया गया है, उसका परिणाम विपरीत निकला है और स्थिति पहले से भी अधिक गम्भीर हो गई है। जो कुछ आज कल पंजाब में हो रहा है, वह किसी सभ्य, शान्तिप्रिय और प्रगतिशील देश में नहीं हो सकता। नित्य प्रति निर्दोष व्यक्तियों की हत्यायें की जा रही हैं। लोगों को लूटा जा रहा है। प्रदेश की सारी व्यवस्था को अस्तव्यस्त किया जा रहा है और पंजाब को जंगली राज बनाया जा रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का यह निश्चित मत है कि स्थिति कभी भी यह गम्भीर रूप धारण न करती, यदि अकाली दल अपनी राजनीति को एक धार्मिक रूप न देता। धर्म युद्ध प्रारम्भ करके धर्म के नाम पर सिखों की भावनाओं को भड़काया गया है और उसका परिणाम हमारे सामने है।

इस अन्धकार में प्रकाश की केवल एक छोटी सी किरण दिखाई दे रही है, जो बरनाला सरकार ने पुलिस को उग्र वादियों और आतंकवादियों से कड़ाई से निपटने का निश्चय कर लिया है। इस दिशा में इस समय तक जो कार्यवाही की गई है, यह सभा उसका स्वागत करती है। और पंजाब के मुख्यमन्त्री स. सुरजीतसिंह बरनाला को विश्वास दिलाती है कि पंजाब को उग्रवाद और आतंकवाद से मुक्ति दिलवाने के लिये वे जो भी कार्यवाही करेंगे, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का पूरा सहयोग और समर्थन उन्हें मिलता रहेगा। पंजाब एक सीमान्त प्रदेश होने के नाते हमारे देश का रक्षक है। इसकी एकता, संगठन और स्वाधीनता की रक्षा करना हम सब का कर्त्तव्य है। आर्य समाज देश की एकता व स्वाधीनता की रक्षा को सब से बड़ा धर्म युद्ध समझता है और उसके लिए बड़े से बड़ा बलिदान देने को पहले भी सदा तैयार रहा है और भविष्य में भी रहेगा।

इसी के साथ सभा का यह अधिवेशन बरनाला सरकार का ध्यान पंजाब की इस स्थिति की ओर भी दिलाना चाहता है कि पंजाब के अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा नहीं की जा रही व उनके साथ वह न्यायोचित व्यवहार किया जा रहा है, जो हमारे देश के विधान के अनुसार होना चाहिए। पंजाब के मुख्यमन्त्री श्री सुरजीतसिंह बरनाला की वर्तमान कठिनाईयों को ध्यान में रखते हुए भी यह सभा अपना यह दृढ़ मत घोषित करना चाहती है कि जब तक पंजाब के अल्पसंख्यक हिन्दुओं के अधिकारों की पूरी तरह रक्षा न होगी, उस समय तक पंजाब में शान्ति स्थापित नहीं हो सकती।

प्रस्ताव संख्या—2

"हिन्दी केवल एक भाषा ही नहीं यह देश की एकता व संगठन की प्रतीक भी है। यही कारण है कि इसे देश की राष्ट्रभाषा घोषित किया गया था। आज भी यह ऐसी भाषा है जो देश के सब से अधिक लोगों द्वारा बोली लिखी और पढ़ी जाती है। इसीलिए यह देश की एकता की प्रतीक समझी जाती है।

यह खेद का विषय है कि पंजाब में हिन्दी के साथ अपमानजनक व्यवहार किया जा रहा है। इस प्रान्त की राज-व्यवस्था में इसे पूर्णतया समाप्त करने का सुनियोजित षड़यन्त्र रचा गया है। अंग्रेजी को हिन्दी से अधिक महत्व दिया जाता है। यद्यपि इस प्रान्त की बहुसंख्या जनता न अंग्रेजी बोलती है, न पढ़ती है और न लिखती है। यह स्थिति उन सब व्यक्तियों के लिए एक चुनौती है, जो देश की स्वाधीनता, एकता और अखण्डता में अटल विश्वास रखते हैं। यदि हिन्दी का महत्व कम होता है, तो देश की एकता को धक्का लगता है। इसलिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब इस प्रान्त के देशभक्त हिन्दी प्रेमियों को यह चेतावनी देती है कि यदि पंजाब सरकार हिन्दी को इस प्रान्त में समाप्त करने की अपनी योजना में सफल हो गई तो न केवल हमारे धर्म और संस्कृति के लिए एक बहुत बड़ा संकट पैदा हो जाएगा, अपितु इस सीमान्त देश की स्वाधीनता व एकता के लिए भी एक बहुत बड़ा खतरा पैदा हो जायेगा। यह सभा पंजाब के हिन्दी प्रेमियों से सानुरोध प्रार्थना करती है कि धर्म और संस्कृति की रक्षा व देश की स्वाधीनता व संगठन को शक्तिशाली व प्रभावशाली बनाने के लिए हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। इस दिशा में निम्नलिखित पग उठाने आवश्यक हैं।

1 अपना पत्र-व्यवहार केवल हिन्दी में किया करें।

2 विवाह आदि सब संस्कारों के निमन्त्रण पत्र केवल हिन्दी में प्रकाशित किये जाएं।

3 प्रत्येक दुकान व कार्यालय के नामपट्ट हिन्दी में अवश्य लिखे जाएं।

4 जहां तक सम्भव हो बैंक, तार, डाक आदि सरकारी कामकाज में हिन्दी द्वारा ही सारा काम किया जाये।

5 अपने बच्चों को उन्हीं स्कूलों में प्रविष्ट करवाया जाए, जहां शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो।

6 आपस की बोलचाल में भी हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाये।

7 हिन्दी का अधिक से अधिक प्रचार किया जाये।

देश की स्वाधीनता के आन्दोलन में पंजाब का विशेष योगदान रहा है। अब जबकि देश की स्वाधीनता व एकता के लिए एक गम्भीर संकट पैदा हो रहा है, पंजाब की देश भक्त और राष्ट्रवादी जनता का यह कर्त्तव्य है कि वह राष्ट्र भाषा हिन्दी की रक्षा के लिए कटिबद्ध हो जाए और इस प्रकार देश की स्वाधीनता व एकता की भी रक्षा करें।

व्याख्यान माला–६

सन्ध्योपासना

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स. अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर पंजाब

(27 अप्रैल से आगे)

अग्निकार्यात्परिभ्रष्टाः सन्ध्योपासनवर्जिताः ।
वेदं चैवानधीयानाः सर्वे ते वृषलाः स्मृताः ।21।

जो लोग सन्ध्योपासना नही करते और अग्नि (यज्ञ) आदि कार्य से भी भ्रष्ट हैं, वेदो का अध्ययन भी नही करते वह शूद्र समझे जाते हैं।

सन्ध्या नोपास्ते यस्तुब्राह्मणो हि विशेषतः ।
स जीवन्नेव शूद्रः स्यात्मृतः श्वा चैव जायते ।22।

जो मनुष्य विशेष कर ब्राह्मण सन्ध्योपासना नही करते वह जीते हुये तो शूद्र होते हैं और मरने पर कुत्ते की योनि को प्राप्त होते हैं।

सन्ध्या हीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु ।
यदन्यत्कुरुते कर्म न तस्य फलभाग्भवेत् ।23।

सन्ध्या हीन ब्राह्मण, अपवित्र तथा शूद्र सभी कर्मों के अयोग्य होता है यदि वह अन्य कोई कर्म करता भी है तो वह उसके फल का भागी नही होता।

गायत्र्याः परमं नास्ति दिवि चेह च पावनम् ।
हस्तत्राणप्रदा देवी पततां नरकार्णवे ।24।

द्युलोक तथा इस लोक मे गायत्री से श्रेष्ठ एव पवित्र और कोई वस्तु नही यह गायत्री नरक रूपी समुद्र मे गिरते हुये लोगो को हाथ का सहारा देकर बचाने वाली है।

गायत्रीरहितो विप्रः शूद्रादप्यशुचिर्भवेत् ।
गायत्री ब्रह्मतत्वज्ञाः संपूज्यन्ते जनैर्द्विजाः ।25।

गायत्री से रहित ब्राह्मण शूद्र से भी अधिक अपवित्र होता है इस के विपरीत गायत्री रूपी ब्रह्मतत्वज्ञ को जानने वाले ब्राह्मण लोगो द्वारा आदर के पात्र होते हैं।

सावित्री मात्रसारोऽपि वरं विप्रः सुयन्त्रितः ।
नायन्त्रितस्त्रिवेदोऽपि सर्वाशी सर्वविक्रयी ।26।

नियम मे रहने वाला केवल गायत्री मन्त्र का सार धारण करने वाला ब्राह्मण श्रेष्ठ है न कि सर्वभक्षी, सब कुछ बेचने वाला, अनियमित आचरण वाला वेदज्ञ विद्वान् श्रेष्ठ है।

पूर्वां सन्ध्यां सनक्षत्रामुपासीत यथाविधि ।
गायत्रीमभ्यसेत्तावद्यावदादित्यदर्शनम् ।27।

ब्राह्म काल मे जब कि नक्षत्र भी दिखाई पड रहे हो उस समय पूर्वकाल की सन्ध्या उपासना यथा विधि करनी चाहिये तदनन्तर जब तक सूर्य दर्शन नही होते तब तक गायत्री का जप करना चाहिए।

उपास्य पश्चिमां सन्ध्यां सादित्यां च यथाविधि ।
गायत्रीमभ्यसेत्तावद्यावत्ताराणि पश्यति ।28।

सूर्य की लालिमा अभी दिख रही हो कि सायकालीन सन्ध्योपासना विधि पूर्वक करके तब तक गायत्री का अभ्यास (जप) करना चाहिये जब तक नक्षत्र नहीं दिखा पड़ते।

सन्ध्याहीना वृतभ्रष्टाः पिशुना विषयात्मकाः ।
तेभ्यो दत्तं निष्फलं स्यान्नात्र कार्या विचारणा ।29।

सन्ध्या से हीन, चुगल खोर, और विषयो का सेवन करने वाले जो भी ब्राह्मण हैं, उन को दिया हुआ दान निष्फल होता है इस मे तनिक भी सोच-विचार की बात नही है।

सन्ध्यालोपाच्च चकितः स्नानशीलश्च यः सदा ।
तं दोषा नोपसर्पन्ति गरुत्मन्तमिवोरगाः ।30।

सन्ध्या न करने से प्रायश्चित के लिये स्नान करने वाला जो ब्राह्मण है उसके निकट पाप (दोष) नहीं आते जैसे गरुड़ के निकट सर्प नहीं आता।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम

लेखक—श्री रणबीर जी भाटिया
बी. 12।316, शाहपुर रोड लुधियाना

गुणवान्-दृढव्रती वीर थे, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम
महान् योद्धा यज्ञ रक्षक, आज्ञाकारी बुद्धिमान् राम ।
सूर्य चमकता था जिन के मुख पर, कन्धे पर थी कमान ।
कभी तीर उनका खाली न जाता, ऐसे थे बलवान् राम ।
सीता स्वयवर मे योद्धाओ ने, कर ली नीची नजरे ।
इतिहासिक धनुष तोडा उन्होने, कहलवाये श्री राम ।
पिता की आज्ञा पाकर चले बन को वीर रघुराई ।
सीता चली साथ पति के, साथ न छोडा लक्ष्मन भाई ।
प्रजा को हुआ दुःख जान कर, हो रहा है यह अन्याय ।
पिता की आज्ञा हो नही सकती, छल इसमे है अपनाये ।
सभी ने रोका और समझाया, इस मे है कोई बडी चाल ।
पिता की आज्ञा सर्वप्रिय मुझ को, अन्य न करो ख्याल ।
चौदह साल की बात क्या, मैं जीवन बिता सकता हू ।
यह तो है केवल बन जाना, मैं प्राण निछावर कर सकता हू ।
रोता बिलखता छोड प्रजा को, चल पडे बन को राम ।
नगर सूना गलिया सूनी, अयोध्या पड गई विरान ।
ऋषि मुनियो ने खुशी मनाई, जगल मे जब पहुचे राम ।
यज्ञ तपस्या निर्विघन हो गयी, राक्षस छोड गये धाम ।
भीलनी की कुटिया महक उठी, पधारे जब वहा राम ।
चख कर दिये मीठे बेर, प्रसन्न होकर खा गये राम ।
छोटा बडा कोई नहीं हैं, ससार मे है सब एक समान ।
श्रद्धा से जब दे कोई कुछ, अपनालो खुशी से कहते राम ।
स्वरूपनखा का काटा नाक, उस की बेहयायी देख कर ।
मोहिनी सूरतो पर रीझ न जाना, कह गये भाई राम ।
रावण ने उठा कर सीता को, किया घोर महा पाप ।
स्त्री की आह पर जला दी लका, धन्य हो नीतिज्ञ राम ।
राम के इस पुण्य जीवन पर, सभी मिल कर करो विचार ।
धर्मज्ञ श्री राम के जीवन को, बनाओ तुम अपना आधार ।
राम नाम खाली जपने से, होगा न किसी का कल्याण ।
कहता भाटिया आज सबसे, आदर्श बनाओ तुम राम ।

सम्पादकीय—

आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब का वार्षिक अधिवेशन

देश की कई और धार्मिक सस्थाओ की तरह आर्य समाज भी एक धार्मिक सस्था है। इस अन्तर के साथ कि वह अपने आपको किसी एक विशेष घेरे मे सीमित नहीं करती। उसके दरवाजे सबके लिए खुले रहते हैं। चू कि उसका आधार कुछ सिद्धान्त है और कोई व्यक्ति विशेष नहीं, इसलिए जो लोग इसमे शामिल होते है, वे हर समय अपनी आखें औरकान खोल कर रखते है ताकि उन्हे पता रहे कि उनके चारो ओर क्या हो रहा है। इसलिए एक धार्मिक सस्था होते हुए भी वह समाज सुधार के लिए भी काम करती रही है और देश की सामाजिक समस्याओ को भी सुलझाने मे उसने हमेशा एक प्रमुख भूमिका निभाई है। उसमे एक विशेषता यह भी है कि वह सौदेबाजी की राजनीति मे नहीं पडती। चू कि देश के प्रति उसे जो प्यार है इसकी उसने कभी कोई कीमत नहीं मागी इसलिए जब आवश्यकता होती है वह देश के लिए बडे से बडा त्याग करने को भी तैयार हो जाती है। उसने कभी किसी विधान सभा या ससद के चुनाव मे अपने उम्मीदवार खडे नहीं किए। न कभी किसी मन्त्रिमण्डल मे अपना हिस्सा मागा है। इसलिए आर्य समाजी प्राय बिकाऊ माल नहीं बनते जो कुछ ठीक और उचित समझते हैं उस पर डट जाते हैं और उसका उन्हे चाहे कितना बडा मूल्य चुकाना पडे वह चुकाते हैं। स्वाधीनता सघर्ष मे जितना सक्रिय भाग आर्य समाज ने लिया या किसी अन्य धार्मिक सस्था ने नहीं लिया। हजारो आर्य समाजी जेलो मे गए। कुछ फासी के तख्ते पर चढ गए और कुछ काला पानी भेज दिए गए। अग्रेज भी कहा करता था कि आर्य समाज उसके विरुद्ध विद्रोह का सब से बडा केन्द्र है। अग्रेज ने उसे यह जो प्रमाण पत्र दिया था उस पर आर्य समाज को गर्व रहा है और आज भी है। गाधी जी ने एक बार कहा था कि जहा आर्य समाज है वहा जीवन है। यह केवल इस लिये कि आर्य समाज जो काम अपने हाथ मे लेता है उसे पूरा करके दिखाता है।

पजाब मे आर्य समाज को शुरू हुए एक सौ वर्ष से भी अधिक हो गया है। उसकी प्रतिनिधि सस्था आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने इसी वर्ष अपने एक सौ वर्ष पूरे कर लिये है। इसलिए समय-2 पर उस के सेवक कहीं न कहीं इकट्ठे होकर अपनी विगत कारगुजारी को देखते हैं और आगे के लिए अपनी कार्यप्रणाली का निर्णय करते हैं। इसी तरह का उसका एक अधिवेशन 11 मई को लुधियाना मे हुआ जिस मे पजाब के विभिन्न शहरो से आए लगभग 200 प्रतिनिधियो ने भाग लिया। इस मे वार्षिक चुनाव भी होना था और भविष्य के लिए अपने कार्यक्रम का भी निर्णय करना था। चुनाव भी हुआ और आगामी कुछ समय के लिए यह दायित्व फिर मेरे ऊपर डाल दिया गया। जब अपने ही साथी जिम्मेदारी डालते हैं तो उसे देख कर खुशी होती है। यह उनके प्यार और सौहार्द की अभिव्यक्ति है लेकिन जिम्मेदारी के साथ कुछ बोझ भी आ पडता है जिसे आज के हालात मे उठाना कोई आसान काम नहीं। फिर भी मेरे भाइयो और बहनो ने मेरे प्रति जो विश्वास व्यक्त किया है उसके लिए मैं उनका आभारी हू।

लेकिन इसके साथ जिम्मेदारी भी बहुत बढ गई है। आर्य समाज जैसी सस्था नहीं जो खामोश बैठी रहे। उसे कुछ न कुछ तो करना पड़ेगा। विशेष रूप से अब जब कि देश की एकता और अखडता के लिए एक खतरा पैदा हो रहा है। वास्तविकता तो यह है कि कोई भी देशभक्त अब खामोश नहीं रह सकता। कोई हमारी आवाज सुने या नहीं, हमे बोलते रहना चाहिए और आने वाले खतरे का मुकाबला करने के लिए अपने आप को पूर्णतया सगठित करना चाहिए। उसका क्या ढग हो इस पर विचार करके शीघ्र ही पजाब की जनता के सामने रख दिया जाएगा। पूर्ण विश्वास है कि आर्य समाज जो भी अपना कार्यक्रम यथाकदा अपने देशवासियो के सामने रखता रहेगा उसे पूरा करने मे हमे उनका पूरा सहयोग मिलता रहेगा।

—वीरेन्द्र

श्री ओम प्रकाश त्यागी भी चले गए

जब अपना कोई साथी जाता है तो दुख अवश्य होता है। यद्यपि फिर हम अपने आप को यह धीरज देने की कोशिश करते है कि सबने जाना है। अब उनका समय आ गया था वे चले गए। बात तो ठीक है लेकिन कुछ लोग वे भी होते हैं जो चले जाते है लेकिन अपनी एक ऐसी याद पीछे छोड जाते हैं जो वर्षो उनकी याद दिलाती रहती है। श्री ओम प्रकाश त्यागी भी उन मे से एक है। उन्होने लगभग 50 वर्ष अपने देश और धर्म की सेवा की है। अभी जवानी मे कदम रखा ही था कि वह आर्य समाज मे शामिल हो गए। सारे देश मे उन्होने आर्य वीर दल की शाखाए कायम की और फिर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री भी बन गए। इसी दौरान लगभग पन्द्रह वर्ष लोकसभा के सदस्य भी रहे। वहा उन्होने वह ऐतिहासिक विधेयक भी पेश किया था जिस मे बलात धर्म परिवर्तन रोकने की व्यवस्था थी। उनकी गति विधियों का एक बडा केन्द्र उत्तर पूर्वी भारत का वह क्षेत्र था जहा दूसरे देशो से आए ईसाई पादरी गरीब हिन्दुओ को लालच देकर ईसाई बनाने का प्रयास करते रहते हैं। त्यागी जी ने वहा जाकर कई आश्रम भी खोले थे। उन्होने दुनिया के कई बडे-बडे देशो का दौरा भी किया था। गत दिसम्बर मे वह दक्षिणी अफ्रीका भी गए थे। वहा की आर्य समाज ने एक बहुत बडा सम्मेलन किया था जिस मे शामिल होने के लिए त्यागी जी को आमन्त्रित किया गया था चू कि वे उच्चकोटि के वक्ता थे। इसलिए जब वे बोलते थे तो लोगो पर इसका बहुत अच्छा प्रभाव पडता था। यही कारण था कि उन्हे जगह जगह पर आमन्त्रित किया जाता था।

आज वह कहानी समाप्त हो गई। त्यागी जी अपने जीवन का अन्तिम अध्याय लिख कर चले गए। विगत कई वर्षों से उन्हे हृदय रोग था। फिर भी वह काम करते रहते थे। जब उनसे कहा जाता था कि कुछ आराम कर ले तो वह कहा करते थे कि एक दिन तो जाना ही है। आराम करने से वह दिन टल नही सकता। इसलिए वह काम करते रहे और करते ही चले गए। एक बहुत बड़ी रिक्तता पैदा हुई है हमारे समाज मे। बहुत कम लोग ऐसे मिलते हैं जो उस लग्न से काम करते है जिस तरह त्यागी जी करते थे। लेकिन हमे यह सब सहन करना ही पडता है। परमात्मा का अपना विधान है उसी के अनुसार दुनिया चलती है। इसी विचार से जो कुछ हुआ है उसे हमे स्वीकार करना पडेगा और अपने जाने वाले भाई को हम केवल यही श्रद्धाजलि भेन्ट कर सकते है कि जो काम वह अधूरा छोड गए हैं उसे जहा तक सम्भव हो उसे पूरा करने का प्रयास किया जाए।

—वीरेन्द्र

जन्म-मरण की उलझन–६

आत्मा की सत्ता

लेखक—प्रा श्री भद्रसेन जी होशियारपुर

पहले की तरह आज भी आश्रम मे पर्याप्त जनता है। सगीत प्रिय जी माधुर्य भरी सगीत लहरी आरम्भ करते हैं। प्रथम गीत मे ससार के अदभुत रूप का चित्र प्रस्तुत करते है और दूसरे गीत मे आत्मा की चर्चा करते हैं। सर्व प्रिय जी मच पर बैठते हुए श्रोताओ का ध्यान पिछली चर्चा की ओर ले जा कर बताते है, कि आप सबको स्मरण होगा कि चौथी बैठक मे सुधीर ने अपनी जिज्ञासा को सामने रख कर पूछा था, कि जब आत्मा अमर है, तो उस की मृत्यु सिद्ध नही होती और फिर न ही उस के लिए शोक का सवाल सामने आता है ? अत इस जिज्ञासा को ध्यान मे रखकर चौथी बैठक मे पहले हमने शोक की स्थिति पर और फिर पाचवी बैठक मे पारस्परिक सम्बन्धो के आधार पर विचार किया था। आज आत्मा की सत्ता पर विचार करते है।

आत्म महिमा—

हम प्रतिदिन अपने व्यवहार की सिद्धि के लिये शरीर, मन, और आत्मा का उपयोग करते हैं। शरीर विशेष रूप से ज्ञान और कर्म इन्द्रियो का समुच्चय है। बाह्य व्यवहार की सिद्धि के लिए हम रसना, चक्षु, श्रोत्र, त्वक् और घ्राण (नासिका) रूपी ज्ञान इन्द्रियो और हाथ पैर, वाणी, पायु, उपस्थ सदृश कर्म इन्द्रियों को साधन बनाते हैं। जिस प्रकार हमारे देखने-सुनने बाह्य व्यवहार किसी न किसी बाह्य इन्द्रिय की सहायता से ही होते हैं। उसी प्रकार हमारे सोचने, याद करने आदि के आन्तरिक व्यवहारो की सिद्धि के भी कुछ साधन हैं, जिन को अन्त करण (अन्दर की इन्द्रिय) चतुष्टय के नाम से स्मरण करते हैं और वे हैं—मन, बुद्धि चित्त तथा अहकार। किसी विषय के विविध पहलुओ पर ऊहा पोह करना, सोचना मन का काम है। किसी समस्या या बात का निर्णय बुद्धि करती है। पहली याद की हुई बातें चित्त में रहती हैं और मैं, मेरेपन की भावना, अहकार को जताने वाला अहकार कहलाता है। कई बार सारा अन्त करण केवल मन के नाम से भी पुकारा जाता है। शरीर और मन जिस की चेतना से कार्य करते हैं, वही आत्मा है और वह ही हमारे शरीर एव मन का अधिष्ठाता नेता, सचालक है।

१ बृहदारण्यक उपनिषद १,1,2,4 और बृह. 4,5 मे महर्षि याज्ञवल्क्य और उनकी पत्नी मैत्रेयी का सवाद आता है जिस में आत्मा की महत्ता अमृत शब्द से दर्शाई गई है। यह वर्णन आत्मा की महिमा को समझने के लिये बहुत उपयोगी है। उपनिषद मे आता है, कि एक बार महर्षि याज्ञवल्क्य ने अपनी पत्नी मैत्रेयी से कहा देखो ! मैं इसी गृहस्थाश्रम मे पडे नही रहना चाहता, मैं उन्नत होना चाहता हू। आओ ! तुम्हारा कात्यायनी से निपटारा करा दू।

मैत्रेयी ने कहा—भगवान् ! अगर धन से भरी हुई सारी पृथिवी मेरी हो जाए, तो क्या मैं उससे अमर हो जाऊगी। कथ तेन अमृता स्याम ? याज्ञवल्क्य ने कहा नही, उस अवस्था में धन वालो का जैसा सुखी जीवन होता है, वैसा ही तेरा भी होगा। पर धन, धान्य से अमरता की आशा नही की जा सकती अमृतस्य तु नाशास्ति वित्तेन। तब मैत्रयी ने पुन पूछा—

जिस से मैं अमर न हो सकू, उसे लेकर मैं क्या करू। येनाह नामृता स्या किमह तेन कुर्याम्। भगवान अमर होने का जो रहस्य आप जानते हो, मुझे तो उसी का उपदेश दीजिए। याज्ञवल्क्य ने कहा तू मेरी प्रिय है और प्रिय बातें कर रही है। आ बैठ, मैं तुझे सब स्पष्ट समझाता हू, तू ध्यान से सुन।

प्रिय ! पति-पत्नी, पुत्र, वित्त आदि अपनी चाहना के लिए प्रिय होते है, उन को अपनी-अपनी दृष्टि से नही। अपने आत्मा की कामना के लिए ये सब प्रिय होते हैं। जिस आत्मा के लिए यह सब प्रिय होता है। प्रिय ! वह आत्मा ही तो द्रष्टव्य है, श्रोतव्य है और वही मनन के योग्य है तथा निदिध्यासन भी उसी का ही करना चाहिए। उसको देख, सुन, उसी को जान, उसी का ध्यान कर, प्रिय मैत्रेयी ! आत्मा के देखने, सुनने, समझने और जानने से अध्यात्म सम्बन्धी गाठें खुल जाती हैं।

आत्म सत्ता—

भारतीय दर्शनो मे से न्याय (गौतम) वैशेषिक (कणाद) और साख्य (कपिल) दर्शनकारो ने प्रसगवश विविध युक्तियो से प्रत्येक शरीर मे रहने वाले आत्मा की सत्ता पर विचार किया है और सप्रमाण प्रतिपादित किया है, कि चेतन, नित्य, ज्ञानवान आत्मा शरीर, इन्द्रिय और मन से बिल्कुल भिन्न है। वैशेषिक दर्शन के प्राचीन व्याख्याता प्रशस्त देव के प्रशस्तपाद मे अनेक उदाहरणो के साथ इस का काफी रोचक विवेचन मिलता है, जिस से सिद्ध होता है, कि आत्मा की स्वतन्त्र सत्ता है और वह ही शरीर, इन्द्रिय तथा मन की नियामक, अधिष्ठाता है। जैसे कि ससार मे सर्वत्र देखा जाता है, कि एक कारीगर अपने औजारो की सहायता से अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करता है। औजार अपने आप कोई कार्य नही करते, औजार तो कार्य करने मे केवल सहायक ही बनते है। जिन से कर्ता अपने कार्य को करता है। ऐसे ही हमारे शरीर मे इन्द्रियो की औजारो के समान ही स्थिति है। शरीर मे रहने वाला चेतन आत्मा इन इन्द्रियो को औजारो की तरह बरत कर अपने इच्छित कार्य को साधता है।

जैसे किसी यान का चालक अपनी इच्छानुसार इच्छित दिशा मे प्रिय की प्राप्ति और अप्रिय की निवृत्ति के लिए यान को चलाता है। ऐसे ही अपनी इच्छा के अनुसार अनुकूल की प्राप्ति और प्रतिकूल को दूर करने के लिए प्रत्येक देह मे रहने वाला उसका चेतन चालक (आत्मा) विविध कार्य सिद्ध करने के लिए शरीर रूपी यान को चलाता हुआ प्रतीत होता है। जैसे कि एक लुहार अपनी इच्छा के अनुसार अपनी धौकनी से वायु लेता और छोडता है, ठीक ऐसे ही शरीर मे रहने वाला नित्य आत्मा अपनी नासिका रूपी भस्त्रा से बाहर की स्वच्छ वायु को लेता और अस्वच्छ को बाहर निकालता है, जैसे कोई अपने यन्त्र का प्रयोग करते हुए कभी किसी पुर्जे का प्रयोग करता है तो कभी किसी। ऐसे ही शरीर मे रहने वाला उस का मालिक अपने शरीर यन्त्र का प्रयोग करते हुए अपनी आवश्यकता के अनुसार कभी आख को खोलता है और कभी बन्द करता है। जैसे एक घर का स्वामी अपने गृह की अपेक्षित मुरम्मत एव बढोतरी करता है। ठीक ऐसे ही शरीर मे रहने वाला शरीररूपी भवन का स्वामी अपने शरीर टूट-फूट (क्षत-विक्षत) की पूर्ति और वृद्धि के लिए सदा प्रयत्न करता है।

जैसे एक बालक एक स्थान पर बैठा हुआ अपने खिलौनो का इधर-उधर खेलता है। ऐसे ही शरीर का प्रेरक आत्मा अपने मन द्वारा इन्द्रियो को इच्छित दिशा और कार्य मे लगाता है।

जैसे कोई चौबारे मे बैठा हुआ कभी किसी खिडकी से देखता है, कभी किसी से, फिर एक खिडकी से देखे हुए हो व्यक्ति को दूसरी खिडकी से पुकारता है। ऐसे ही अपने देह का अधिष्ठाता ज्ञानी आत्मा पहले आख से किसी फल या मिठाई को देखता है और फिर साथ ही उसकी जीभ में पानी भर आता है। इस से सिद्ध होता है, कि इन दोनो इन्द्रियो से अलग कोई एक अलग आत्मा है, तभी तो वह इस समय एक वस्तु को देखकर उस जैसी पहले देखी हुई वस्तु को याद करता है और उससे उसकी जीभ मे पानी भर आता है। अन्यथा एक के देखे हुए का दूसरे को स्मरण नही होना चाहिए। अर्थात यदि आख और जीभ अलग-अलग स्वतन्त्र हो, तो एक के आधार पर दूसरे पर प्रभाव नही पडना चाहिए। अत यह एक सर्व सिद्ध बात है कि हम सब के शरीर इन्द्रिय और मन का नेता एक आत्मा ही है, जो कि नित्य है और सब का अलग-अलग है।

इस विवेचन के पश्चात सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हुए महात्मा जी ने कहा यदि प्रत्येक अपने प्रतिदिन के अनुभव पर विचार करे, तो वह कह सकता है कि प्रत्येक व्यक्ति का शरीर पहले बाल्य अवस्था मे होता है और फिर युवा अवस्था मे फिर अपनी-अपनी स्थिति के अनुसार एक न एक दिन वृद्ध अवस्था आती है। इस प्रकार देह मे अनेक तरह के परिवर्तन आते हैं। पर इन परिवर्तनो के बीच मे एक सत्ता ऐसी भी अनुभव मे आती है, जो अपरिवर्तनशील है। जिस के कारण इन भिन्न भिन्न अवस्थाओ मे भी यह वही है, की पहचान होती है। इसी प्रकार प्रत्येक अपने मानसिक परिवर्तनो के मध्य मे अपनी सत्ता को अपरिवर्तित रूप मे अनुभव करता है। अपनी तरह दूसरे व्यक्तियो मे भी वैसी ही अपरिवर्तनशील सत्ता नि सन्दिग्ध रूप मे सिद्ध होती है, क्योकि अपनी जैसी स्थिति अनुभूति वहा भी प्रतीत होती है। एक विचारशील स्वाभाविक रूप से ऐसी स्थिति मे सोचने पर विवश होता है, कि ऐसी सत्ता है, जो स्वय निर्विकार रहते हुये भी इन शारीरिक और मानसिक विकारो, परिवर्तनो को अनुभव करती है। इन अस्थिर अवस्थाओं के मध्य में एक स्थिर आत्मा को स्वीकार किए बिना हमारा अनुभव अधूरा ही रहता है। स्थिर आत्मा ही अपने से सम्बद्ध परिवर्तनशील पदार्थों की पृथकता, परिवर्तनशीलता को अनुभव करते हुये भी अपनी स्थिरता एव एकता बनाए रखता है। चाहे उसके स्वरूप और धाम के सम्बन्ध मे विचारशीलों मे कुछ मतभेद हो, पर उसकी सत्ता को सभी स्वीकार करते हैं। चाहे यह सारी चर्चा हमारे प्रतिदिन के जीवन से जुडी हुई है, फिर भी कुछ गहराई से विचारणीय है। अत' आज की बैठक को सगीत प्रिय जी के एक मधुर गीत के साथ सम्पन्न करते हैं। हा, अगली बैठक मे आत्मा के स्वरूप पर विचार करेंगे।

देश में एक समान नागरिक संहिता लागू की जाए पंजाब को सेना के हवाले कर दिया जाए

—आर्य समाजों के प्रस्ताव

(27 अप्रैल से आगे)

आर्य समाज मण्डी बाग बुआचिरा लुधियाना मे निम्न प्रस्ताव पारित किये गये।

(1) एक प्राप्त सूचनानुसार अमेरिका का छटा जगी बेडा अपने 4500 सैनिको के साथ कराची (पाकिस्तान) बन्दरगाह पर पहुचने का उद्देश्य यद्यपि नौ सैनिको को मन बहलाव तथा विश्राम बताता है परन्तु इन के साथ-साथ पाकिस्तानी सेना का भारत की सीमा पर विशेष जम्मू काश्मीर के पूछ और राजौरी क्षेत्रो से लगती हुई सीमा पर भारी जमाव भारत के लिए चिन्ता का कारण बन गया है।

(2) यह देश का दुर्भाग्य है कि इस के कुछ धार्मिक कटटर पथी धर्म के आधार पर अपने आपको एक पृथक जाति मान कर अपने लिये एक अलग राज्य की माग कर रहे हैं। यही नही कुछ तत्व तो क्षत्रीयता के आधार पर स्वय को अपनी मातृ भूमि से अलग करने की आवाज बुलन्द कर रहे हैं। ऐसे दोनो प्रकार के तत्व हमारे देश की सुरक्षा और अखण्डता के लिये भयकर खतरा बन गये हैं। आज की सभा सरकार और जनता से अनुरोध करती है कि इस प्रकार के विघटनकारी तत्वो से सावधान रहे क्योकि ऐसे तत्व उन विदेशी ताकतो के इशारो पर नाच रहे हैं जिनका एक मात्र उद्देश्य देश मे अस्थिरता पैदा करके उसकी प्रगति को अवरुद्ध करना है ताकि वह अन्तर्राष्ट्रीय मामलो मे कोई प्रमुख एव प्रशसनीय भूमिका न निभा सके।

इस सभा की मान्यता है कि देश की सुरक्षा के लिए देशवासियो की एकता नितान्त आवश्यक है। एतदर्थ यह सभा निम्न माग प्रस्तुत करती है।

(क) भारत सरकार धर्म, भाषा और क्षेत्रीय आधार पर उठाई गई पृथक राज्य की माग को दण्डनीय अपराध घोषित करें। इस विषय में यह सभा सरकार से अनुरोध करती है कि इस दिशा मे उठाए गये प्रभावी कदम के रूप मे संविधान की उन धाराओ को निरस्त कर दिया जाए जिनके द्वारा देश की जनता को धर्म, भाषा और संस्कृति के आधार पर बहुसख्यक अथवा अल्पसंख्यक मान कर विभाजित किया जाता है।

(ख) सविधान की धारा के अन्तर्गत दिये गये निर्देशानुसार अब यह आवश्यक हो गया है कि देश मे एक समान नागरिक न्यायसहिता लागू की जाये। इस समय मुस्लिम कटटरपथीय धारणा की तुष्टी हेतु ससद मे जो विधयक पेश किया गया है वह तुरन्त वापिस लिया जाये क्योकि इसके पारितोपरान्त भारतीय दण्ड विधान की धारा 125 के अन्तर्गत मुस्लिम महिलाए अपने अधिकारो की लडाई से वचित रह जाएगी।

(ग) भारतीय सविधान की धारा मे परिवर्तन करके देश को राज्य का संघ न मानकर प्रशासनिक इकाइयो का सघ माना जाए।

(3) यह सभा यह भी अनरोध करती है कि पजाब मे हिंसा और तोड-फोड की कार्यवाही रोकने के लिये इसे उस समय तक सेना के सुपुर्द कर दिया जाए जब तक यहा पूर्णरूपेण शान्ति स्थापित न हो जाए और वहा से अवाछनीय राष्ट्र विरोधियो का सफाया न हो जाता सभा का सुझाव है कि देश की उत्तर पश्चिम की सीमा से लगने वाले जम्मू-काश्मीर, पजाब, हरियाणा तथा हिमाचल प्रदेश को मिला कर एक वृहद् राज्य बनाया जाये। इस प्रकार सगठित राज्य वर्तमान विकट परिस्थितियो मे देश की आन्तरिक तथा बाह्या सुरक्षा के लिये प्रभावी सिद्ध होगा।

(4) पजाब-काश्मीर दिवस मनाने के उपरान्त आज की सभा मे सर्वसम्मति से यह धारणा भी व्यक्त की गई कि जम्मू-काश्मीर मे शाह सरकार को बरखास्त करके जहा भारत सरकार ने उचित समय पर एक साहसीय, सराहनीय एवम् अभिनन्दनीय महान् कार्य किया है वहा सविधान की धारा 370 को भी समाप्त करके राष्ट्रहित के लिए जम्मू काश्मीर को प्राप्त एक विशिष्ट राज्य का दर्जा भी समाप्त कर दिया जाये।

—राजेश कुमार
मन्त्री

आर्य समाज मोगा की साधारण सत्सग सभा ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली का पत्र तारीख 18-3-1986।

श्री प्रस्ताव सर्वहोंने 15, 16 3-86 को पास किये। उनको पढ कर सुनाया गया इन प्रस्तावो की धाराओ पर विचार-विमर्श हुआ तथा सर्व सम्मति से पास किया गया।

इस साधारण सभा मे केन्द्रीय सरकार से अनुरोध किया किया कि आर्य समाज चाहे एक राजनैतिक सस्था नहीं है परन्तु फिर भी देश की अखण्डता का धर्म मे सर्वोप्रिय मानती है। तथा देश की एकता को कायम रखने के लिय जो भाषीय आधार पर राज्य बनाय है उन को तोड कर तथा उनके स्थान पर बड जोन बनाने चाहिय ताकि देश की एकता कायम रह सके।

जापान की भान्ति भारतवासियो को भी चरित्र निर्माण देश भक्ति की उचित शिक्षा दी जानी चाहिये ताकि वे देश की एकता अखण्डता तथा स्वतन्त्रता को कायम रख सके।

—आर्य समाज मोगा

आर्य समाज सैक्टर 22-ए चण्डीगढ के बृहद अधिवेशन मे दिनाक 30-3 86 को निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये गये —

1, एक प्राप्त सूचना के अनुसार अमेरिका का छटा जगी बेडा अपने 4500 नौ सैनिका के साथ कराची (पाकिस्तान) बन्दरगाह पर पहुच गया है। कहने के लिए उसका उद्देश्य नौ सैनिको को विश्राम और मन बहलाव का अवसर देना है, किन्तु इसी जगी बेडे के कराची पहुचने के साथ-साथ पाकिस्तानी सेना का भारत की सीमा पर विशेष कर जम्मू-काश्मीर के पुछ और राजौरी क्षेत्रो से लगती हुई सीमा पर भारी जमाव हमारे देश के लिये चिन्ता का विषय है।

2 दुर्भाग्य से हमारे देश के अन्दर कुछ धार्मिक कट्टरपथी धर्म के आधार पर अपने आपको एक पृथक जाति घोषित करते हुए अपने लिए अलग राज्य की माग कर रहे हैं। हमारे अन्दर ही कुछ ऐसे तत्व भी है जो क्षेत्रीयता के आधार पर स्वय को अपनी मातृभूमि से अलग करने की आवाज उठाने लगे हैं। दोनो ही प्रकार के तत्वो से हमारे देश सुरक्षा और अखण्डता को खतरा पैदा हो गया है। आर्य समाज देश की सरकार और जनता से अनुरोध करती है कि वे इस प्रकार के विघटनकारी तत्वो से सावधान रहे क्योकि वे कुछ विदेशी ताकतो के इशारो पर नाच रहे हैं जिनका एकमात्र उद्देश्य देश मे अस्थिरता पैदा करना तथा उसे इस प्रकार विभाजित करना है कि उसकी प्रगति अवरुद्ध हो जाए और वह अन्तर्राष्ट्रीय मामलो मे कोई प्रमुख भूमिका निभाने के योग्य न रहे।

इस सभा की यह मान्यता है कि देश की सुरक्षा के लिए देशवासियो मे एकता का होना एक प्रमुख आवश्यकता है। इसके लिए यह सभा निम्न माग करती है —

(क) भारत सरकार धर्म भाषा और क्षत्रीय भाषा पर उठाई गई पथक राज्य की माग को दण्डनीय अपराध घोषित करे। इस विषय म यह सभा सरकार से अनुरोध करती है कि इस दिशा मे उठाए गए प्रभावी कदम के रूप मे सविधान की उन धाराओ को निरस्त कर दिया जाये जिनके द्वारा देश की जनता को धर्म भाषा और सस्कृति के आधार पर बहुसख्यक अथवा अल्पसख्यक मानकर विभाजित किया जाता है।

(ख) सविधान की धारा के अन्तर्गत दिए गए निर्देशा के अनुसार अब यह आवश्यक हो गया है कि देश मे एक समान नागरिक न्याय सहिता लागू की जाये। इस समय ससद मे मुस्लिम कट्टरपथियो के तुष्टीकरण के लिए जो विधेयक पेश किया गया है, वह तुरन्त वापिस लिया जाए, क्योकि इसके पारित होने पर भारतीय दण्ड विधान की धारा 125 के अन्तगत मुस्लिम महिलाओ को अपने अधिकारो की लडाई से वचित कर दिया जाएगा।

(ग) भारतीय सविधान की धारा 1, म परिवर्तन करके देश को राज्यो का सघ न मानकर प्रशासनिक इकाइयो का सघ माना जाए।

3 यह सभा यह भी अनुरोध करती है कि पजाब मे हिंसा और तोड-फोड की कार्यवाही रोकने के लिए उसे उस समय तक सेना के सुपुर्द कर दिया जाए जब तक वहा पूर्ण शाति स्थापित न हो जाये और वहा से पथ मार्गियो का सफाया न हो जावे। सभा का सुझाव है कि देश की उत्तर पश्चिम की सीमा से लगने वाले जम्मू-काश्मीर, पजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश को मिलाकर एक बृहद् राज्य बनाया जाए। इस प्रकार सगठित राज्य वर्तमान परिस्थितियो मे देश की आतरिक तथा बाह्य सुरक्षा के लिये प्रभावी सिद्ध होगा।

4 सभा की धारणा है कि जम्मू-काश्मीर मे शाह सरकार को बर्खास्त करके भारत सरकार ने एक अभिनन्दनीय कार्य किया है। सभा की यह माग है कि सविधान की धारा 370 को समाप्त कर दिया जाए जिसके अन्तर्गत जम्मू-काश्मीर को विशिष्ट राज्य का दर्जा प्राप्त है।

—[illegible]
प्रधान

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का दीक्षान्त-भाषण

—डा सत्यव्रत सिद्धान्तालकार (पूर्व ससद-सदस्य द्वारा)

गुरुकुल को सरकारी मान्यता प्राप्त हुई है परन्तु यह मान्यता उस गुरुकुल को नही दी गई जिसमे बी ए एम ए की डिग्री दी जाती है। बी ए एम ए पी एच डी की डिग्री दीजिए परन्तु यत्न कीजिए कि यहा से जो छात्र निकल वे इन डिग्रियों के साथ गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के आधारभूत सिद्धान्तो से ओत-प्रोत हो। यह आपका लक्ष्य होना चाहिए।

मेरे सामने भविष्य के गुरुकुल का यह सपना है कि गुरुकुल मे ऐसे स्नातक निकलें जिनका तपस्यामय जीवन हो जो हिन्दी मे प महावीर प्रसाद द्विवेदी की तरह शुद्ध हिन्दी लिख बोल सक, जो सस्कृत म उव्वट तथा ऋषि दयानन्द जैसा उच्चतम सस्कृत का ज्ञान रखते हो, जो अग्रजी मे शैक्सपीयर तथा मैकाले की कोटि के हो जो विज्ञान म श्री सतीश धवन तथा प्रो यशपाल सरीखे वैज्ञानिक हो जो इस क्षेत्र मे उच्च से उच्चतर शिखर को छू सक। उड़ान लीजिए तो ऊचा उड़ान लिजिए। सब कुछ सम्भव है। जो आज असम्भव तथा कठिन प्रतीत होता है वह प्रयत्न करने पर कालान्तर में सम्भव तथा सुगम हो जाता है। एक भव्य भवन को बनाने के लिए उसकी नीव को दृढ करना होता है। अगर हम मानव समाज के के भवन को सुदृढ नीव पर खड़ा करना चाहते हैं, तो उसकी नीव को सबसे पहले दृढ करना होगा। हमारी शिक्षा सस्था की नीव वह है जहा से बालक शिक्षा जगत मे बाल्य-काल मे प्रवेश करता है। आप अगर अपने विद्यालय विभाग को दृढ कर सकें तो सम्पूर्ण सस्था अपने आप उन्नति के माग पर चल पडेगी। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के आधारभूत सिद्धान्तो को आदम तक पहुचाने के लिये आप को विद्यालय विभाग को दृढ करना होगा। गुरुकुल का विश्व विद्यालयीय रूप तभी उभरेगा जब आपका विद्यालय विभाग इतना उन्नत हो जाएगा कि सब लोग अपने बच्चो को यहा भर्ती ही नही करेगे, भर्ती करने के लिये उत्सुक होंगे, तब हमे बाहर से एक छात्र भी नहीं लेना पडेगा, हमारे विश्वविद्यालय मे वही छात्र होंगे जो हमारे विद्यालय-विभाग की शिक्षा-दीक्षा में से गुजर कर आएग।

मेरा अनुरोध है कि आज के बदलते युग मे आप गुरुकुल के रूप को ऐसा बदलिये कि यहा के आदर्शों, यहा की भावनाओ, यहा क रग मे रगे हुए छात्र ही आप के महाविद्यालय विभाग मे प्रविष्ट हो, आपको बाहर से छात्र लेने की आवश्यकता न हो, और वे हो छात्र स्नातक बन कर समाज मे प्रविष्ट हो, जो हिन्दी सस्कृत के पण्डित हो अग्रजी क उच्चकोटि के विद्वान हो और इस योग्यता के साथ साथ व किसी जिले मे मैजिस्ट्रेट बनें किसी जगह इन्सपैक्टर जनरल आफ पुलिस हो किसी जगह कर्नल हो कमाण्डर हो और किसी जगह सरकारी उच्च पद पर आसीन हो। देश की माग है और आवश्यकता है कि ऐसी शिक्षा मे दीक्षित व्यक्ति ही देश के कोने-कोने मे व्याप्त हो जाए। जैसे किसी युग मे विदेशी सरकार से विद्रोह करने वाले स्वतन्त्रता सेनानियो की आवश्यकता थी जिसे गुरुकुल ने पूरा किया, वैसे ही आज देश को ऐसे सरकारी-सेनानियो की आवश्यकता है जो देश मे व्याप्त भ्रष्टाचार ईर्ष्या द्वेष, कलह, भेद भाव को अपने आदर्श क्रियात्मक-जीवन से दूर कर सक जिसे गुरुकुल जैसी प्राचीन आदर्शों से ओत प्रोत सस्था ही पूरा कर सकती है परन्तु इस स्थिति पर पहुचने के लिए हमे अपने आपको बदलना होगा। खड़ा पानी सड जाता है बहता पानी तरोताजा रहता है और गन्दगी को दूर कर देता है। इस बदलाहट के विषय मे किसी ने ठीक ही कहा है—

'तू भी बदल ए गाफिल
जमाना बदल गया।'

—★—

श्री प्रियव्रत और श्री सन्तराम बी. ए. को गोवर्धन पुरस्कार

जयपुर सबड विद्या सभा ट्रस्ट ने 1986 को गोवर्धन पुरस्कार ज्वालापुर सहारनपुर के आचार्य प्रियव्रत वेदवाच स्पति तथा समाजसेवी और लेखक श्री सन्तराम को देने की घोषणा की है।

ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री गोवर्धन बलभद्र कुमार हूजा ने यहा पुरस्कार समिति के निर्णय की जानकारी देते हुए बताया कि इससे पूर्व 1981 मे आचार्य राम प्रसाद वेदालकार, 1982 मे डा भवानी लाल भारतीय 1984 मे प विश्वनाथ 1984 मे विद्या मार्तण्ड प सत्यराम तथा 1985 मे वेद मार्तण्ड प भगवद्दत्त पुरस्कृत हुए।

उन्होंने बताया कि श्री प्रियव्रत को इसी माह होने वाले गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह मे पुरस्कार प्रदान किया गया। श्री सन्तराम को दिल्ली में समारोह आयोजित कर पुरस्कार दिया जाएगा।

श्री हूजा ने बताया कि सबड विद्या सभा ट्रस्ट प्रारम्भ मे डेरागाजीखान जिले के सबड तहसील के निवासियो की शिक्षा हेतु बना। 1947 मे देश विभाजन के समय ट्रस्ट ने गुड़गाव मे एक शिक्षण सस्थान की स्थापना की। अब जयपुर से सचालित इस ट्रस्ट द्वारा हर वर्ष शिक्षा समाज सुधार एव वैदिक साहित्य के क्षेत्र मे पुरस्कार दिये जाते हैं। समाज सेवा के कार्यों के अतिरिक्त ट्रस्ट तेरह पुस्तकें प्रकाशित कर चुका है।

पुरस्कार प्राप्त 85 वर्षीय श्री प्रियव्रत गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के कुलपति रह चुके हैं। उनकी पुस्तकें वेदोद्यान के चुने हुए फूल तथा वेद का राष्ट्रीय गीत पुरस्कृत हो चुकी हैं।

दूसरे पुरस्कार विजेता 99 वर्षीय श्री सन्तराम इस शताब्दी के प्रथम दशक से लेखन और सम्पादन के क्षेत्र मे सन्तराम बी ए के नाम से प्रसिद्ध हैं। आपकी करीब सौ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और इन पर अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं। 1922 मे कालेज छोड़ने के उपरान्त आपने जातपात तोड़क मण्डल बनाया। आपने अपना समस्त जीवन जातिप्रथा के विरोध में लगा दिया। आखें खोने के बावजूद आप समाज सेवा के कार्यों मे लगे हुए हैं।

—भूपेन्द्र हूजा

ग्रीष्मकालीन युवक निर्माण शिविर

हिमालय की सुरम्य घाटियों मे स्थित महर्षि कण्व की तप स्थली व वीर भरत की जन्म भूमि म बहुचर्चित, रोमाचकारी ग्रीष्मकालीन अवकाश में आर्य युवको के शारीरिक व बौद्धिक विकास हेतु महर्षि दयानन्द की विचारधारा से ओतप्रोत करने व राष्ट्र का सच्चा सिपाही बनाने के उद्देश्य से विशाल आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर आगामी 13 जून से 22 जून 1986 तक स्वामी जगदीश्वरानन्द जी महाराज के सरक्षण मे व युवा हृदय सम्राट ब्रह्मचारी आर्य नरेश की अध्यक्षता मे गुरुकुल कण्वाश्रम जिला पौडी गढवाल, उत्तर प्रदेश में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली कोटद्वार प्रदेश के तत्वावधान म आयोजित किया जा रहा है।

शिविर सचालक व परिषद महासचिव श्री अनिल कुमार आर्य ने बताया कि महात्मा आर्य भिक्षु (ज्वालापुर) भी दस दिन शिविर मे रहकर युवकों को मार्ग दर्शन देंगे। ब्रह्मचारी विश्वपाल जयन्त (आधुनिक भीम) व श्री धर्मवीर आदि योग्य व्यायाम शिक्षको द्वारा आसन प्राणायाम, दण्ड-बैठक, लाठी, जूडो-कराटे, बाक्सिंग का विशेष प्रशिक्षण दिया जायेगा।

शिविर प्रवेश शुल्क 50) रुपये होगा, शुद्ध भोजन व आवास की नि शुल्क व्यवस्था रहेगी। न्यूनतम आयु सीमा 15 वर्ष रखी गई है। इच्छुक युवक परिषद् मुख्य कार्यालय आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-7 अथवा प्रान्तीय कार्यालय गुरुकुल कण्वाश्रम, डाकखाना कलाल घाटी कोटद्वार जिला पौडी गढवाल पिन 246149 से सम्पर्क करें। वेशभूषा सफद सैन्डो बनियान, सफद कपड़े के जूते, सफद निक्कर, सफद जुर्राब, केसरिया जाघिया, लगोट, काली बल्ट, 6 इंच की कृपाण युवको के लिये अनिवार्य है।

योग साधना-शिविर—

इसके अतिरिक्त योग साधको के लिये योग साधना शिविर भी इस स्थान पर इन्हीं तिथियो मे लगेगा। सफेद कुर्ता, कटि वस्त्र, लगोट साधकों के लिए अनिवार्य वेशभूषा रहेगी। आयु सीमा 35 वर्ष रहेगी।

—[illegible]
कार्यालय [illegible]

आर्य समाज हबीबगंज अमरपुरा लुधियाना का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज का वार्षिक उत्सव 3-4 मई 1986 शनिवार रविवार को आर्य समाज मन्दिर मे बड़े समारोह से मनाया गया शनिवार यज्ञ, प्रात 7 30 बजे आरम्भ हुआ यज्ञ के ब्रह्मा प बालकृष्ण जी शास्त्री थे तथा यजमान श्रीमती वेअन्ती देवी, श्रीमती अमरजीत कौर सपरिवार थे। यज्ञ के पश्चात सभा के भजनीक श्रीरामनाथ यात्री के भजन हुए और प बालकृष्ण जी शास्त्री ने बहुत बड़ी हाजरी मे यज्ञ की महिमा पर उपदेश दिया। आर बी स्कूल तथा दयानन्द माडल स्कूल के बच्चो ने सुन्दर गीत गाए। यज्ञ शेष के पश्चात् प्रात काल की कार्यवाही समाप्त हुई, साय 3बजे से 6 बजे तक उत्सव का कार्यक्रम चला यज्ञ के यजमान श्री वेद प्रकाश जी महाजन सपरिवार थे। प सत्यपाल जी ने यज्ञ कराया और मनोहर उपदेश दिया, यात्री जी के सुरीले भजन हुये। 4-5-86 रविवार प्रात 8 बजे यज्ञ की कार्यवाही आरम्भ हुई यज्ञ के ब्रह्मा प धर्मदेव जी अधिष्ठाता वेद प्रचार आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, यजमान श्री आशानन्द आर्य सपरिवार, श्री तिलकराज भक्त सपरिवार तथा प्रेम नगर के सनातनधर्मी नेता श्री बहादुर चन्द सपरिवार थे 10 बजे प्रात यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् यजमानो को आशीर्वाद दिया गया, 10-30 प्रात श्री वेद भूषण जी मदान मालिक डी के सटील कम्पनी ने ओ३म् का झण्डा लहराया, उस के पश्चात् श्री सत्यानन्द मुञ्जाल उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, बहिन कमला जी आर्या सभा महामन्त्री, श्री ओ३म् प्रकाश गुप्ता एम एल ए का पुष्पहारो द्वारा स्वागत किया गया बहिन राजेश्वरी देवी, ओ३म् प्रकाश सूद, श्री ज्ञानचन्द वर्मा, ने सुन्दर गीत गाया। श्री सत्यानन्द मुञ्जाल, बहिन कमला आर्या, महेन्द्रपालस्याल ओम् प्रकाश गुप्ता एम एल ए ने आर्य समाज, और वैदिक धर्म की विशेष ताओ के सम्बन्ध मे अपने विचार रखे। प धर्मदेव जी अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग ने वेद मन्त्रो द्वारा ज्ञान की गगा बहाई—श्री महेन्द्रपाल वर्मा प्रधान जिला आर्य सभा ने स्कूल के बच्चो को पारितोषिक वितरण किए। इस उत्सव को सफल बनाने के लिये आर्य समाज फील्ड गज की प्रधान बहिन कौशल्या देवी तथा उनके सदस्य आर्य समाज जवाहर नगर के प्रधान ओम् प्रकाश महाजन तथा उन के सदस्य आर्य समाज किदवाई नगर के प्रधान मा चरणसिंह तथा उनके सदस्य स्त्री आर्य समाज साबुन बाजार की प्रधाना शकुन्तला मण्डल तथा उनके सदस्य, आर्य समाज माडल टाऊन के उपप्रधान श्री महेन्द्रपाल स्याल तथा उन के सदस्य आर्य समाज फोकल प्वाईन्ट के प्रधान श्री शिवलाल तथा श्री बलदेवराज दयानन्द माडल स्कूल के प्रबन्धक डा मूल चन्द भारद्वाज तथा उनका स्टाफ जिला आय सभा के अधिकारी दी राजेन्द्र कुमार, श्री खुशबख्त राय सूद, श्री श्रवण कुमार आर्य, श्री विजय कुमार सरीन, श्री अयोध्या प्रसाद, श्री रणवीर भाटिया, आर्य सभा के श्री महेन्द्र प्रताप, आत्म प्रकाश अरोड़ा, अजय कुमार बत्रा, श्री अनिलकुमार आर्य, श्री यशपाल भक्त आर, बी स्कूल का स्टाफ वेअन्ती देवी, अमरजीत कौर, राजरानी, उर्मलाकुमारी शामकौर ने पूरा सहयोग दिया। श्री आशानन्द आर्य की अपील पर श्री सत्यानन्द जी मुञ्जाल ने 1100 रुपये श्री वेद भूषण मदान ने 500 रुपये दान दिये बहुत से बहिन भाईयो ने दिल खोल कर दान दिया। शान्ति पाठ के पश्चात कार्यवाही समाप्त हुई।

—वेद प्रकाश
मन्त्री

कांगड़ा भूंचाल पीड़ितों की सहायता करें

पिछले दिनो हिमाचल जिला के कागड़ा में जो भूचाल आया है, उसके कारण कई व्यक्ति मारे गये हैं और कई करोड़ रुपया की हानि हुई है। कई लोगो के घर बिल्कुल टूट गये हैं। इस आपत्ति के समय सरकार का यह कर्तव्य है कि भू चाल पीड़ित जनता की अधिक से अधिक सहायता करें ताकि वे फिर से अपने पाव से खड़े हो सके। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब अपनी ओर से 10 हजार रुपया की एक छोटी सी राशि अपने इन भाईयो को सहायता के लिए भेज चुकी है। यह सहायता आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल की ओर से उन बहिनो या भाईयों को दी जाएगी, जिन्हें इनकी अत्यन्त आवश्यकता होगी। पजाब सभा यह भी प्रयास करेगी कि कुछ और राशि एकत्रित कर के वहा भेजी जाये। दानी महानुभावो से भी यह प्रार्थना है कि वे अपने इन भाईयो की सहायता के लिए जो दे सकते हैं, अवश्य दें।

—सभा महामन्त्री

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना का वार्षिकोत्सव 30,31 मई तथा प्रथम जून 1986 को होना निश्चित हुआ है। जिसमे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य राम प्रसाद जी वेदालकार उपकुलपति गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार डा जसवन्त कुमार अमेठी (उ प्र) श्री प निरञ्जन देव जी इतिहास केसरी महोपदेशक आय प्रतिनिधि सभा पजाब, श्री प ओमप्रकाश जी आर्य (जालन्धर) वेद प्रचार भजन मण्डली लुधियाना, श्री विजयानन्द जी प्रसिद्ध गायक (फिरोजपुर) श्रीराम जी भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

इस अवसर पर युवक सम्मेलन, वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन तथा विशेष आकर्षण शका समाधान युवक गोष्ठी जिसमे सारे पजाब से युवक भाग लेंगे। सभी युवको से प्रार्थना है कि वह शनिवार 31 मई को लुधियाना मे समय पर अवश्य पहुचे। वहा सभी के ठहरने और भोजन का प्रबन्ध आर्य समाज की ओर से होगा।

—रणवीर भाटिया

आर्य युवक तथा युवती दल हरियाणा की बैठक

गत दिना डी ए वी महिला, कालेज, करनाल मे सम्पन्न हुई। जिसमे हरियाणा के विभिन्न स्थानो से लगभग 65 की सख्या मे प्रतिनिधि उपस्थित हुए। सर्व सम्मति से आर्य युवक दल हरियाणा का प्रथम महा सम्मेलन 3 4-5 अक्तूबर 1986 की तिथियो मे पानीपत ऐतिहासिक नगरी मे करने का निश्चित किया गया है। सभी प्रतिनिधिया ने करतल ध्वनि मे स्थान एव तिथिया का स्वागत किया इसके साथ ही मई जून 1986 म हरियाणा के विविभिन्न नगरो एव देहातो मे आर्य युवक दल हरियाणा की ओर से दस विशेष प्रशिक्षण शिविर भी निश्चित किये गये, दो शिक्षको की नियुक्ति भी कर ली गई है। आर्य युवक दल हरियाणा के अध्यक्ष श्री राम स्नेही जी आर्य ने प्रान्तीय अध्यक्षा बहिन प्रो रूप रेखा जी को मनोनीत किया तथा हरियाणा स्तर पर कार्यकारिणी के चयन का अधिकार अध्यक्षा को दे दिया गया। इसी प्रकार से आर्या युवति दल के शिविर भी निश्चित कर दिये गए है। प्रथम महा सम्मेलन को हर प्रकार से सफल बनाने के लिए सभी प्रतिनिधियो ने तन, मन, धन, से सराहनीय सहयोग देने का आश्वासन दिया। बैठक मे ही विभिन्न प्रतिनिधियो ने धनराशि भी प्रदान की। जिससे बैठक मे लगभग 2000 रुपए सग्रह हो गये। बहुत ही उत्साह पूर्वक वातावरण मे बैठक शान्ति पाठ के साथ सम्पन्न हुई।

—प्रा वेद सुमन वेदालकार
कार्यकर्ता अध्यक्ष आर्य युवक दल

चण्डीगढ़ में आर्य समाज स्थापना दिवस

चण्डीगढ की सभी आर्य समाजो की ओर से आय समाज स्थापना दिवस सम्मिलित रूप मे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मुख्य समारोह जो सैक्टर 27 मे आयोजित किया की अध्यक्षता स्वामी नित्यानन्द ने की। साधु आश्रम रोपड के स्वामी वेदानन्द, प्रि बालकृष्ण दीवान और आर्य सभा जिला रोपड के प्रधान श्री ओम्प्रकाश महेन्द्र वैदिक मिशनरी मोरिण्डा ने अपन भाषणो मे पजाब की हिंसक घटनाओ पर चिन्ता प्रगट करते हुए राष्ट्रीय एकता, अखडता शान्ति और अनुशासन बनाये रखने पर बल दिया। आर्य समाज सैक्टर 27 क प्रधान श्री कर्मवीर शर्मा ने घोषणा की कि आर्य समाज सैक्टर 27 क भवन का निर्माण शीघ्र ही 6 लाख रुपये की लागत से किया जायेगा। ब्रह्मचारी राम प्रकाश और श्री पी डी शास्त्री ने भी इस अवसर पर भाषण दिये। नव बाल निकेतन माडल स्कूल सैक्टर 20 के बच्चो ने एक रगारग धार्मिक प्रोग्राम प्रस्तुत किया। ऋषिलगर का प्रबन्ध भी किया गया था। —ओम्प्रकाश महेन्द्र

वैदिक मिशनरी

वैदिक साधु आश्रम रोपड़ का वार्षिक महोत्सव

वैदिक साधु आश्रम कुराली रोड रोपड (पजाब) के पवित्र प्रागण मे 18 मई रविवार को विशाल आर्य महा-सम्मेलन का आयोजन हो रहा है। सम्मेलन मे पजाब की आर्य जनता एकत्रित होकर इस विषय पर ठोस निर्णय लगी कि वर्तमान परिस्थितियो मे पजाब मे महर्षि दयानन्द एव आय समाज के कार्यो को कैसे आगे बढाया जाये। सम्मेलन की अध्यक्षता श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज करेंगे। कार्यक्रम 8 30 बजे यज्ञ से प्रारम्भ होकर दोपहर 1 30 बजे तक चलेगा और पश्चात् ऋषिलगर के साथ समाप्त होगा। अत. 18 मई को आर्य जन सपरिवार इष्ट मित्रो सहित दल बल से रोपड पहुचे।

—वेदानन्द सरस्वती

अध्यक्ष-वैदिक साधु आश्रम

कुराली रोड रोपड (पजाब)

संगरिया मण्डी में वेद प्रचार

गत दिनो श्रीराम देव के मन्दिर मे व्याख्या सहित हवन यज्ञ किया और स्थानीय आर्य युवक सभा सगरिया ने इस समारोह का आयोजन किया गया। फाजिल्का से आये सर्व श्री मूलचन्द वर्मा (प्रधान जिला आर्य सभा फिरोजपुर) हरबस लाल आर्य, वीरेन्द्र देव बरे, विनोद आर्य ने अपने-2 प्रवचनो और भजनो से उपस्थित जनता को प्रभावित किया। इसके साथ स्थानीय युवको सर्व श्री सोमाराम आर्य, अनिल कुमार, प्रेमचन्द आर्य ने भी भजन गाय और आर्य समाज के कार्य करने के लिये योजनाए बनाई।

मन्दिर मे आये सज्जनो ने युवको को उत्साहित करने हेतु अपना पूरा सहयोग देने का वचन दिया। उपस्थित जनता की सख्या बहुत काफी थी। सगरिया मे एक रिकार्ड उपस्थिति कही जा सकती है। लैफ्टीनेंट प्रताप सिंह और उनके सुपुत्र श्री रविन्द्र आर्य ने पूरा सहयोग देकर नवयुवको को आशीर्वाद दिया।

—सोमाराम आर्य, प्रधान

आर्य युवक सभा (सगरिया)

आर्य समाज पंचपुरी गढ़वाल का वार्षिक चुनाव

दिनाक 23-3-86 को आर्य समाज पचपुरी का वार्षिक चुनाव इस प्रकार हुआ —

प्रधान—स्वतन्त्रता सग्राम सैनानी श्री शान्ति प्रकाश प्रम प्रभाकर ग्राम कुणजोली। उप-प्रधान—श्री पातीराम आर्य, बगार, उप-प्रधान—श्री चन्द्रलाल श्री नाकुरी। मन्त्री—श्री वासुदेव विमल सेरामल्ला, उप-मन्त्री—श्री गगा प्रसाद एम ए कफलसार, उप-मन्त्री—श्री विश्वबन्धु 'भास्कर' कुणजोली। कोषाध्यक्ष—श्री बलवन्तसिंह 'रावत' मुडिमल्ला। स कोषाध्यक्ष—श्री कुलहर्मसिंह सेरामल्ला, पुस्तकाध्यक्ष—श्री कालूराम 'पथिक' कुणजोली। लेखा-निरीक्षक—श्री योगेश्वर प्रसाद एम ए कफलसार।

—वासुदेव 'विमल'

मन्त्री

जन्म-मरण की उलझन—७

आत्मा का स्वरूप

लेखक—श्री भारतेन्द्र जी होशियारपुर

संगीत प्रिय जी ने आज जब सस्वर संगीत प्रस्तुत किया तो सभी आत्म विभोर हो गए। उस के बाद महात्मा जी ने कथा को प्रारम्भ करते हुए कहा-जिस भी वस्तु की सत्ता होती है, उस का अपना कुछ न कुछ स्वरूप भी अवश्य होता है। यहां प्रकरण के अनुसार आत्मा शब्द से केवल जीव का ही ग्रहण किया जाएगा। वैसे संस्कृत भाषा की यह एक बहुत बड़ी विशेषता है कि उसके शब्द अपना परिचय बहुत कुछ स्वयं भी करा देते हैं। आत्मा शब्द सदा गतिशील रहना अर्थ वाली अत (सातत्य गमने) धातु से बनता है। अतः आत्मा शब्द का अर्थ है, सदा गतिशील रहने वाली सत्ता इस मे कभी विकार नहीं आता। इसलिए यह अपने कर्मों के अनुरूप एक के बाद एक शरीर को धारण करती रहती है। अतः हमारी आत्मा अजर-अमर और नित्य है।

भारतीय शास्त्रों मे जहां परमात्मा और प्रकृति से बने संसार का वर्णन मिलता है, वहां इस संसार मे विचरण करने वाले, संसार की वस्तुओं को अपनाकर मे लाने वाली आत्मा का भी विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है। वेद के एक मन्त्र मे बताया है, कि यह अमर आत्मा अपने कर्मों के अनुसार नष्ट होने वाले अच्छे हल्के अनेक तरह के शरीरो को धारण करता है 1 (अपाङ् प्राङेति स्वधया गृभीतोऽमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः ऋ 1) जीवात्मा वायु की तरह गतिशील और भौतिक विकारो सड़ना गलना, कटना, सूखना आदि से रहित एक नित्य है। इसी बात को और स्पष्ट करते हुए कठ उपनिषद मे कहा है—इस सब की नित्य आत्मा न कभी पैदा होती है और न ही मरती है अर्थात सदा एक रस रहती है। न ही कभी किसी से यह बनती है और न ही कोई कार्य इस से प्रकट होता है अर्थात यह किसी कार्य का उपादान कारण नहीं है। यह न जाने कितने अनन्त समय से चली आ रही है। यह अमर आत्मा शरीर के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होती 1।

(1 न जायते म्रियते वा विपश्चिन्नायं
कुतश्चिन्न बभूव कश्चित्।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न
हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ 1,2,24)

इसी का समर्थन गीताकार ने भी किया है 2,

(2 न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं
भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न
हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ 2,20)

इस बात को और आगे बढ़ाते हुए कहा है, कि इस नित्य आत्मा के शरीर अनेक तरह से नष्ट होते है 3।

(3 अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः
शरीरिणः ॥2, 18)

पर इस आत्मा को कोई हथियार काट नहीं सकता है, न ही कोई आग जला सकती है न जल गला सकता है और न ही वायु सुखा सकता है।4

(4 नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति
पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति
मारुतः ॥ 2,23॥)
(अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य
एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं
सनातनः ।24।)

अतः यह अजर-अमर आत्मा हर तरह से कटने जलने गलने और सूखने योग्य नहीं हैं और यह नित्य एक रूप तथा सदा रहने वाली सत्ता है।

शरीर इन्द्रियो के अधिष्ठाता आत्मा के स्वरूप को समझने के लिए छान्दोग्योपनिषद (8 8,12) मे इन्द्र-विरोचन और प्रजापति सम्बन्धी एक बड़ा रोचक आख्यान आता है कि हृदय आकाश मे जिस आत्मा का वास है वह पाप बुढ़ापा मृत्यु भूख-प्यास से रहित और सत्यकाम, सत्यसंकल्प रूप है। उसी की खोज करनी चाहिए उसी को जानना चाहिए क्योंकि उसको जानने से सब लोको तथा सब कामनाओं की प्राप्ति हो जाती है। प्रजापति की इस घोषणा को सुन कर देवो मे से इन्द्र और असुरो मे से विरोचन प्रजापति के पास आए। प्रजापति ने पूछा किस इच्छा से तुम यहां आए हो? उन्होंने कहा, कि हम आप की घोषणा के अनुरूप अमृत-अभय आत्मा को जानना चाहते हैं।

प्रजापति ने कहा, यह जो आंख में पुरुष (चित्र) दीखता है, यह आत्मा है, जो कि अमृत और अभय है। जो जल, दर्पण मे दीखता है वह भी वही आत्मा है जो कि सामने वाले की आंख मे दिखाई देता है। प्रजापति ने दोनो को आदेश देते हुए कहा—पानी के बर्तन (या शीशे) मे देखो यदि आत्मा के विषय मे कुछ स्पष्ट समझ न आए तो मुझ से आकर पूछ लेना। प्रजापति के कथन के अनुसार इन्द्र और विरोचन ने पानी के बर्तन (शीशे) मे देखा और नख से लेकर शिख तक अपने प्रतिरूप (छाया) को देखा। तदनन्तर प्रजापति के कथनानुसार सुन्दर वस्त्र, अलंकार धारण कर के अपनी छाया को पुनः देखा, तब वहां सुन्दर अलंकार, वस्त्रयुक्त अपना प्रतिबिम्ब दिखाई दिया। इस प्रकार जाग्रत अवस्था मे दिखाई देने वाले अपने बाह्य रूप को ही आत्मा अनुभव करके वहां से चले गये। विरोचन ने असुरो को जा कर यही कहा, कि देह ही आत्मा है, इसी देह [illegible]

[illegible]

इन्द्र ने [illegible] विचार किया, तो उसकी सन्तोष न हुआ और यह सोचने लगा, कि यह प्रतिबिम्ब शरीर के अलंकृत होने पर शीशे मे अलंकृत, अच्छे वस्त्रो से अच्छे वस्त्रों वाला, शरीर के अन्धे, काने, लंगड़ा होने पर प्रतिबिम्ब भी वैसा ही दिखाई देता है। अतः आत्मा का यह रूप तो घोषणा के अनुकूल न होने से अकल्याण कारक ही है।

पुनः प्रजापति के चरणो मे पधार कर प्रार्थना की, कि जल या दर्पण वाले प्रतिबिम्ब को आत्मा मानने पर तो उपर्युक्त दोष आते हैं। तब प्रजापति ने समझाते हुए कहा कि तूने ठीक ही विचार किया है। हां, स्वप्नावस्था मे महिमाशाली होकर जो विचरता है, वही आत्मा हैं।

इन्द्र ने जब स्वप्न अवस्था पर पूरी तरह से विचार किया, तो यह निष्कर्ष सामने आया, कि यहां पहले वाले शारीरिक दोष तो दिखाई नहीं देते पर स्वप्न मे ऐसा प्रतीत होता कि कोई इस को मार रहा है कोई इस का पीछा कर रहा है। स्वप्न मे अप्रिय अनुभव भी होते हैं। कभी कभी रोने भी लगता है। अतः यह रूप भी घोषणा के अनुरूप न होने से कल्याणकारक नहीं है। यह सोच कर प्रजापति के पास पहुंचा और पुनः के कारण उनके सामने रखी। प्रजापति ने इन्द्र की प्रशंसा की और कृपा करते हुए अनुग्रह करके कहा—सुषुप्त अवस्था में जिस रूप की झांकी दीखती है, वही आत्मा है जो कि अमृत और अभय है।

इन्द्र ने प्रजापति के उत्तर को ध्यान मे रख कर सुषुप्ति (गाढ़ी नींद की) दशा पर अच्छी तरह से विचार किया, तो यह परिणाम सामने आया, कि पहले वाले मानसिक दोष तो नहीं है, पर इस सुषुप्त अवस्था में यह अपने आपको ही नहीं जानता, कि मेरा यह रूप है और न ही पंचभूतो के विषय में उस समय कुछ जानता है। इस अवस्था मे तो यह नाश (अभाव, अज्ञान) को ही प्राप्त हो जाता है। अतः घोषणा के अनुकूल आत्मा का यह रूप भी नहीं है। अतः इस प्रश्न को प्रजापति के सम्मुख रखा, कि इस रूप मे पूर्वोक्त दोनो प्रकार के दोष तो नहीं हैं, पर यहां और प्रकार के दोष हैं। तब प्रजापति ने आत्मा के स्वरूप को समझाते हुए कहा, कि यह शरीर मरणधर्मा है, अमृतरूप अशरीरी आत्मा का यह शरीर अधिष्ठान है। आत्मा [illegible] से अशरीरी होता हुआ [illegible]

[illegible]

है, वैसे ही यह [illegible] रथ के साथ जुता हुआ [illegible] शरीर नहीं है। यह [illegible] नासिका वाणी आदि साधनों [illegible] व्यवहारो को साधता है जो इन से [illegible] के साधन हैं जो इन से देखने आदि के व्यवहार करता है, वही आत्मा है।

इस सारे प्रकरण का भाव यह है कि कुछ व्यक्ति स्थूल दृष्टि से सोचने के कारण शरीर को ही आत्मा मानते हैं। पर यह शरीर तो प्रिय-अप्रिय से जुड़ता बिछुड़ता है रोग शोक तथा मृत्यु ग्रस्त होता है। यह देह तो केवल अशरीरी आत्मा का अधिष्ठान मात्र है, क्योंकि आत्मा नित्य अभय, शुद्ध, पवित्र तथा ज्ञान स्वरूप है। शरीर द्वारा सम्पन्न होने वाली विविध क्रियाओ, इच्छाओ सुख दुःख आदि का निमित्त आत्मा है और शरीर इन का अधिष्ठान मात्र है। ऐसे ही कुछ व्यक्ति स्वप्न अवस्था (मनोमय) के कर्त्ता-धर्त्ता मन को आत्मा मानते हैं। तो कुछ सुषुप्ति दशा की स्थिति को आत्मा समझते हैं। परन्तु जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति इन तीनो अवस्थाओ से भिन्न (तुरीय) अवस्था वाला ही आत्मा है और उसी मे आत्मा की पहचान चरितार्थ होती है। अतः उपनिषद के ऋषि की धारणा के अनुसार आत्मा पाप से निर्लिप्त, जरा से मुक्त मृत्यु से निर्मुक्त, भूख-प्यास से रहित, नित्य, अमृत, अभय और ज्ञानस्वरूप है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय—

आर्य समाज की मान्यताओं को चुनौती

मुसलमानो मे एक वर्ग वह है जिन्हें अहमदी या कादियानी कहते हैं। वे अपने आपको मुसलमान कहते हैं। परन्तु इस्लाम की मौलिक मान्यताओ को स्वीकार नहीं करते हैं। इस्लाम के अनुसार हजरत मुहम्मद अन्तिम पैगम्बर है, उनके बाद कोई पैगम्बर नहीं हो सकता। अहमदी इसे स्वीकार नहीं करते। वे हजरत मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी को हजरत मुहम्मद के बाद पैगम्बर समझते हैं। इस प्रकार जो कुछ इस्लाम के विषय मे दूसरे मुसलमान कहते हैं, उससे सर्वथा विपरीत उन की मान्यता है। इसका एक परिणाम यह भी है कि मुसलमान अहमदियो को वास्तविक मुसलमान नहीं समझते। पाकिस्तान मे उनके विषय मे यह फतवा भी दिया गया है, ये मुसलमान नहीं हैं, इसलिए इन्हे वे अधिकार न दिये जाए जो मुसलमानो को उनकी धार्मिक मान्यताओ के अनुसार प्राप्त है। पाकिस्तान मे विशेष कर अहमदियो का सामाजिक बहिष्कार भी किया गया है।

कुछ ऐसी ही स्थिति आर्य समाज मे भी पैदा हो रही है। आर्य समाज की अपनी कुछ मौलिक मान्यतायें हैं, जिन्हें पिछले एक सौ वर्ष से तक [illegible] आये हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने [illegible] कुछ वैदिक सिद्धान्तों और वैदिक मान्यताओ के [illegible] के लिये की थी। जितने भी व्यक्ति आज तक आर्य समाज मे सम्मिलित होते रहे हैं, वे सब उन मान्यताओ मे विश्वास रखते थे और यथा सम्भव उनका प्रचार भी करते थे। आर्य समाज के जीवन का बहुत सा काल अपने विरोधियो से शास्त्रार्थ मे व्यतीत हुआ है। आर्य समाज के बड़े-बड़े विद्वान् सार्वजनिक रूप से शास्त्रार्थ किया करते थे और अपनी मान्यताओ के पक्ष मे जो कुछ वे कह सकते थे, कहा करते थे। कई बार मुसलमानो से शास्त्रार्थ करते थे, कई बार ईसाईयो से और कई बार पौराणिक पण्डितो से। आर्य समाज का एक वह युग भी था जिसमे आर्य समाज की मान्यताओ की सम्पुष्टि के लिए कई व्यक्तियो ने अपना बलिदान भी दिया। और यही वह उद्देश्य था जिसको सामने रखते हुए श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने जो कि पहले महात्मा मुन्शीराम थे, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की सहायता से और उसके तत्वाधान मे गुरुकुल कागड़ी की स्थापना की थी। स्वामी जी महाराज के समक्ष भी एक ही लक्ष्य था वैदिक मान्यताओ की रक्षा की जाए और उनका अधिक से अधिक प्रचार किया जाए। गुरुकुल इस पर गर्व कर सकता है कि [illegible] जो स्नातक तैयार किये उनमे अधिकतर वे ही थे, जिन्होंने आर्य समाज द्वारा प्रतिपादित वैदिक मान्यताओ का न केवल समर्थन किया उनका प्रचार भी किया। आदरणीय प. सत्यव्रत जी सिद्धान्तालकार, आचार्य प्रियव्रत जी, स्वर्गीय प. धर्मदेव जी, (जो बाद मे स्वामी धर्मानन्द जी बने) श्री प. विश्वनाथ जी, स्वर्गीय प. बुद्ध देव जी, आचार्य रामप्रसाद जी और दूसरे कई ऐसे विद्वान् गुरुकुल ने पैदा किये हैं, जिन पर केवल गुरुकुल ही नहीं सारा आर्य जगत् गर्व कर सकता है, उन सब मे एक विशेषता थी, वह यह कि वे अपने आप को महर्षि दयानन्द सरस्वती और स्वामी श्रद्धानन्द जी के अनुयायी समझते थे। इसलिए उनकी विचारधारा का अधिक से अधिक प्रचार करते थे। इन सब के लिखे हुए जितने भी ग्रन्थ मिलते हैं, उनमे आर्य समाज की मान्यताओ के प्रतिकूल कुछ भी पढ़ने को नहीं मिलता। इनका लिखा हुआ साहित्य आर्य समाज की एक मूल्यवान निधि है।

परन्तु ऐसा दिखाई देता है कि आर्य समाज मे भी एक मिर्जाई वर्ग पैदा हो रहा है, जो अपने आप को कहते तो आर्य समाजी हैं परन्तु आर्य समाज की मान्यताओं के विपरीत अपने विचारो का प्रचार करते हैं और आर्य समाज की संस्थाओ के द्वारा अधिक से अधिक लाभ उठाने का प्रयास करते हैं। धार्मिक सस्थाओ के अस्तित्व को सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक समझा जाता है कि उनके जो मौलिक सिद्धान्त हैं, उनके विषय मे कोई समझौता न किया जाए। प्राय: सब ऐसी सस्थाओ को जिनका किसी धर्म या मत से सम्बन्ध हो, यह निश्चित धारणा रहती है कि वे अपने सिद्धान्तो पर कोई समझौता नहीं कर सकते आर्य समाज ने भी अपने जीवन के 110 वर्षों मे अपने सिद्धान्तो पर कभी कोई समझौता नहीं किया। अब कुछ ऐसे व्यक्ति भी सामने आ रहे हैं जो आर्य समाजी बन कर आर्य समाज की मान्यताओ की जड़ो को काटना चाहते हैं। अधिक शोचनीय स्थिति यह है कि उनमे कुछ वे भी हैं, जिन्होंने गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त की और उसके कारण अपने देश मे ख्याति भी प्राप्त की। मै पाठको का ध्यान गुरुकुल के एक प्रसिद्ध स्नातक श्री डा सत्यकेतु विद्यालकार की लिखित मान्यताओ की ओर दिलाना चाहता हू, वे इस देश के एक प्रसिद्ध इतिहासकार हैं। उन्होने देश के प्राचीन इतिहास पर कई पुस्तकें भी लिखी है। इनमे कई स्थानो पर उन्होने कुछ ऐसे विचार भी प्रकट किए हैं, जो आर्य समाज की मान्यताओ के सर्वथा विपरीत हैं। सामान्य स्थिति मे यदि डा. सत्यकेतु अपने ऐसे विचार प्रकट करते, तो उस पर किसी को आपत्ति न हो सकती थी। हमने देखा है कि कई पाश्चात्य इतिहासकार वेदो और वैदिक सस्कृति के विषय में ऐसी अनर्गल बातें लिखते रहते हैं, जिन पर हम कभी ध्यान नहीं देते। क्योकि हम समझते हैं कि ये उन व्यक्तियो ने लिखी हैं, जो हमारे विरोधी हैं। और जो नहीं चाहते कि वैदिक विचारधारा का प्रचार हो। परन्तु जब एक व्यक्ति जो कुलमाता का सुपुत्र होने पर गर्व करता हो और अपने आप को ससार के सामने गुरुकुल के स्नातक के रूप मे पेश करता हो, वह यदि आर्य समाज और वैदिक सिद्धान्तो के विपरीत कुछ कहता है, तो उसके विषय मे मौन रहना कठिन हो जाता है। यह इसलिए भी आवश्यक हो गया है कि क्योकि आजकल डा. सत्यकेतु गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति भी हैं। हम गुरुकुल मे विद्यार्थियो को वेद पढ़ाते है। जब वे वेदो का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे तो उनके सामने वेदो के विषय मे और भारत की प्राचीन सस्कृति के विषय मे दो प्रकार के विचार आएगे, एक वे जो महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने पेश किये है और जिनका समर्थन उनके बाद आर्य समाज के विद्वानो और गुरुकुल के स्नातको ने किया है और दूसरा वह जो गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पेश कर रहे हैं। यह प्रतिवाद एक अत्यन्त गम्भीर स्थिति पैदा कर सकता है और यदि विश्वविद्यालय मे पढने वाले विद्यार्थियो के दिमाग मे यह चीज बैठ जाए कि जो कुछ हमारे कुलाधिपति कहते हैं वही ठीक है, तो आर्य समाज के किए कराए पर पानी फिर सकता है। कोई साधारण व्यक्ति वेदो के विषय मे वही कुछ कहे जो डा. सत्यकेतु कहते हैं तो उसकी अवहेलना की जा सकती है और लोग प्राय: उसे अधिक महत्व भी न देंगे, परन्तु गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय का कुलाधिपति तो वैदिक विचार धारा का प्रवक्ता समझा जाता है। यदि वही उल्टी बातें करना शुरू कर दें तो आर्य समाज का क्या बनेगा। यह है स्थिति की गम्भीरता जिसे मै आर्य जगत् के सामने रखना चाहता हू।

डा. सत्यकेतु वेदो के विषय मे और भारत की प्राचीन सस्कृति के विषय मे और हमारी मान्यताओ के विषय मे क्या कहते हैं ये आगामी अक मे पाठको के सामने रखूगा।

—वीरेन्द्र

आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब की नई अन्तरंग सभा

आर्य मर्यादा के इसी अक मे पाठक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की नई अन्तरग के सदस्यो के नामो की सूची पढेंगे। मैं जब भी अन्तरग सभा बनाने लगता हू, तो मेरे लिए एक बहुत बडी कठिनाई यह पैदा होती है कि किस को कहा रखू। आर्य समाज मे कई ऐसे कर्मठ सदस्य हैं जिन्हे एक विशेष स्थान मिलना चाहिए, परन्तु सभा के विधान के अनुसार जो विशेष स्थान

(शेष पृष्ठ 5 पर)

ओम् का स्मरण कर

लेखक— श्री प रविदत्त जी शर्मा एम ए पी एच. डी. अबोहर

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।
तत् त्व पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ।15।

पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन् समूह ।
तेजो यत्ते रूपं कल्याणतम तत् ते पश्यामि ।
योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि ।।16।।

हे पोषणकर्ता परमेश्वर ! आप का वास्तविक स्वरूप दिव्य तेज से ढका हुआ है। मैं सत्यधर्म का अनुष्ठान करता हू, अत मेरे दर्शन के लिये उस दिव्य तेज को हटा लीजिये। हे प्रभो ! एक मात्र आप ही सर्वज्ञ हैं, नियन्ता हैं, सर्व-प्रकाशक हैं, ससार का पालन-पोषण अच्छी तरह करने वाले हैं, अत प्रजापति के गुणो से सम्पन्न हैं। कृपा कर के अपने तेज की किरणों को हटा लीजिये। तेज पुंज का आवरण हट जाने पर ही आप का कल्याणमय रूप देखना चाहता हू अर्थात दिव्य दर्शन का साक्षात्कार करना चाहता हू, आप का तत्व मुझ में भी है अर्थात आप मेरे मे व्याप्त हैं, मैं आप से भिन्न नही हू।

उपासक चाहता है कि ईश्वर के साक्षात्कार मे जितनी बाधाए हैं, उनको अलग कर के स्पष्ट रूप से परमात्मानन्द का अनुभव हो जाए। सूर्य मण्डल को स्पष्ट देखने मे उस की किरणें ही बाधक हैं। वैसे ही परमात्मसाक्षात्कार मे दिव्य तेज ही बाधक है, वही आवरण है। साथ ही ससार की चमचमाहट भी बाधा डालती है। यदि परमात्मा का साक्षात्कार करना है तो उन सब विरोधी वृत्तियो का प्रतिकार करना होगा। ऐसा न हो कि भक्त कही उस चमक-दमक को ही परमात्मदर्शन मान बैठे। साधना के मार्ग मे बहुत सी अप्रत्याशित कठिनाईया आती हैं, जिन को साधक सहन करता है और उस अलौकिक शक्ति को प्राप्त करके ही विराम लेता है। यही जीवन का मुख्य लक्ष्य है और इसकी पूर्ति प्रत्येक मनुष्य को करनी है।

वायुरनिलममृतमथेद भस्मान्त शरीरम् ।
ओ३म क्रतो स्मर कृत स्मर क्रतो स्मर
कृत स्मर ।17।

प्राण वायु उस कारण रूप वायु तत्व मे लीन हो जाती है। शरीर की सत्ता भस्म होने तक है। हे जीव ! ओ३म को स्मरण करो साथ ही अपने द्वारा किए हुए कर्मों को याद करो।

मरणासन्न स्थिति मे जो कृत्य करना अपेक्षित है वही यहा बताया गया है। मरते समय जैसी वृत्ति रहती है वैसी ही पुनर्जन्म के सस्कारो के साथ जुड़ जाती है। अत सभी माया-मोह को छोड कर प्राणी ईश्वर का ध्यान करे अपने जीवन भर के कर्मों को भी याद करे। परमेश्वर का आधार लेना ही उस के लिए कल्याणकारी है। अच्छे बुरे कर्म ही उस का साथ देंगे। जीवन भर जैसे कर्म किये हैं, अन्त मे वैसी ही वृत्ति रहती है और तदनुसार ही जन्म प्राप्त होता है। अन्य सभी तत्व अपने-अपने मूल कारणो में विलीन हो जाते हैं। पार्थिव शरीर तभी तक दिखायी देता है, जब तक उसका दाह-सस्कार न हो। जलाने पर पञ्चमहाभूत अपने-अपने अश को धारण कर लेते हैं, फिर कुछ नही बचता इस से ही उसके उपरान्त कोई सस्कार नही होता। अत मृतक सस्कार के उपरान्त परिवार वालो के लिये मृतक सम्बन्धी कोई क्रिया शेष नही रहती जो कुछ भी वे करते हैं अपने धैर्य, सन्तोष एव गृह शुद्धि के लिए ही करते हैं। उन कृत्यो से मृतक का कोई सम्बन्ध नही होता। इसके साथ साथ यह भी एक प्रमाण मिलता है कि मरने के बाद शरीर का दाहसस्कार करना वेदविहित है।

मरते समय परिवार जनो का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वे उसे सासारिक उलझन मे न डालें और ईश्वर की ओर प्रेरित करें ताकि मृत्यु पद विजय प्राप्त करने का सामर्थ्य उपलब्ध हो सके। ओ३म् के स्मरण से यह शक्ति प्राप्त होती है जिस से सर्वत्र विजय प्राप्त होती है। मृत्यु के कष्ट को जीतने का एकमात्र यही उपाय है। इस विषय मे बहुत से साधक जन प्रमाण है जिन्हे प्राण त्यागते समय कोई कष्ट नही होता। वे प्रसन्नतापूर्वक अपने प्राणो को छोड देते हैं। ईश्वर का स्मरण सच्ची शान्ति प्रदान करता है और प्राणी की सद्गति की भी सम्भावना हो जाती है। अन्तिम समय मे ओ३म् का उच्चारण यथा शक्ति करना परलोक मार्ग को सुगम बनाना है, योनि तो कर्मानुसार ही मिलती है।

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् ।
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो ।
भूयिष्ठा ते नम उक्ति विधेम ।

उपासक प्रभु से प्रार्थना करता है कि हे प्रकाश स्वरूप प्रभो ! दिव्यगुण सम्पन्न, समग्र, ऐश्वर्य युक्त परमेश्वर आप सृष्टि के समस्त कर्मों एव पदार्थों के ज्ञाता हैं, सर्वज्ञ एव सर्वान्तर्यामी हैं। हमे ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये उत्तम मार्ग से ले जायें। हमारे कुटिल पापो को दूर करें, बार-बार श्रद्धापूर्वक आप को नमस्कार करते हैं, प्रणाम करते हैं।

मन्त्र मे जो मुख्य बातें हैं, उनमे से पहली यह है कि परमेश्वर स्वप्रकाश एवं पूर्ण ज्ञान सम्पन्न है। दूसरी बात है कि परमात्मा से प्रार्थना की गई है कि अपने उपासकों को उत्तम मार्ग सुझाए, जिस पर चलने से कोई अनिष्ट भी न हो और किसी प्रकार ऐश्वर्य की भी कमी न रहे। मानव जीवन की यही एक विशेषता है कि वह ऐश्वर्य जुटाने के फेर मे पथभ्रष्ट न हो जाये। यदि पथ भ्रष्ट होगा तो ऐश्वर्य अनिष्ट बन जाते हैं। वास्तव मे प्रभु का मार्ग ही उत्तम मार्ग है, उस के द्वारा प्रदत्त ऐश्वर्य ही सच्चा ऐश्वर्य है। तीसरी बात पापो की प्रवृत्ति को समाप्त करने की है। परमेश्वर की कृपा पापो को नष्ट करती है। इस विषय मे कुछ भ्रान्ति हो जाती है कि क्या ईश्वर, प्रार्थना से पाप समूल नष्ट हो जाते हैं इस का समाधान यह है कि पूर्व सञ्चित पाप नही होते, उन का तो यथा समय परिणाम भोगना ही होता है, परन्तु जब से ईश्वर की कृपा हो जाती है तो पाप की प्रवृत्ति का उदय नहीं होता। आगे के लिए मनुष्य पाप करना छोड देता है। चौथी बात है परमात्मा को प्रणाम करने की, जिस का भाव है कि ईश्वर के लिये सदैव नतमस्तक रहो, अभिमान न करो।

ईशावास्योपनिषद् का सार यही है कि ईश्वर सर्व व्यापक है। सृष्टि को त्यागपूर्वक भोगो। शुभ कर्म करते हुए सौ वर्ष जीने की कामना करो। केवल भौतिक समृद्धि से प्रभावित होकर आत्मा की आवाज को मत ठुकराओ। सब जगत ईश्वर मय है किसी से घृणा न करो। शास्त्रीय ज्ञान के साथ-साथ व्यवहार का ज्ञान भी सीखो। ससार मे इतने लिप्त मत हो जाओ कि ईश्वर की याद ही भूल जाए। ओ३म् परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ नाम है अत इसे छोड कर अन्य जाप न करो। जीवन भर उत्तम कर्म करो और अध्यात्म जगत् में भी अपना सामर्थ्य बनाये रखो। शरीर को उतना ही महत्व दो जितना देना चाहिए। सदा याद रखो कि परमेश्वर को जानने और प्राप्त करने के लिये ही मानवतन मिला है इसे व्यर्थ मत गवाओ।

सुखी जीवन के लिए 6 प्रश्नों का उत्तर

ले —श्री आशुराम जी आर्य यजुर्वेद उर्दू भाष्यकार चण्डीगढ़

यजुर्वेद के प्रथम अध्याय के छटे मन्त्र के भावार्थ मे महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि इस मन्त्र मे प्रश्न और उत्तर से ईश्वर जीवो के लिये उपदेश करता है।

1 जब कोई पूछे कि मुझे सत्कर्मो मे कौन लगाता है ? तो इसका उत्तर दे कि [illegible]पति परमेश्वर ही पुरुषार्थ और उत्तम कर्मो के करने को तुम्हारे लिए वेद के द्वारा उपदेश की प्रेरणा करता है।

2 जब कोई विद्यार्थी किसी विद्वान् से पूछे कि मेरे आत्मा मे अर्न्तयामी रूप से सत्य का प्रकाश कौन करता ? तो वह उत्तर देवे कि सर्व व्यापक [illegible]मेश्वर।

3 फिर वह पूछे कि वह हम को किस-किस प्रयोजन के लिए उपदेश करता और आज्ञा देता है ? उसका उत्तर देवे कि सुख स्वरूप परमेश्वर की प्राप्ति के लिए।

4 यदि फिर पूछे कि किस प्रयोजन के लिए नियुक्त करता है ? इसका उत्तर सत्य विद्या और धर्म प्रचार के लिए।

- 5 हम दोनो को किस-किस काम के करने के लिए वह ईश्वर उपदेश करता है। इस के उत्तर मे कहे कि यज्ञ कर्म करने के लिये।

6 फिर कौन-कौन पदार्थ को प्राप्ति और उनके प्रचार के लिए।

मनुष्य के 2 प्रयोजन

आगे लिखा है कि—

मनुष्यों को दो प्रयोजनों (उद्देश्यो) की पूर्ति मे सदा सलग्न रहना चाहिए।

(1) एक तो अत्यन्त पुरुषार्थ और शरीर को आरोग्यता से चक्रवर्ती राज्य [illegible] को प्राप्त करना और दूसरे (2) सब विद्याओ को अच्छी प्रकार पढ़ के उनका [illegible]वंत्र प्रचार करना किसी मनुष्य को पुरुषार्थ छोड़ के आलस्य मे कभी नही रहना चाहिए।

यज्ञ क्या है —श्रेष्ठतम कर्मो का नाम ही यज्ञ है। उनमे भी सत्य ही सब से मुख्य है। यही जीवन का लक्ष्य है। वही परम पिता परमात्मा मनुष्यो को सत्याचरण रूप व्रत के परिपालन करने की आज्ञा देता है। इसलिए मन्त्र का शीर्षक भी महाराज ने यही दिया है। यह टिपणी यजुर्वेद भाष्य विवरण मे प ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी ने दी है।

अमृत का मुख्य द्वार—

निसदेह उपरोक्त मन्त्र आख्यान मनुष्य समाज के लिए अमृत रूप सुख आनन्द का मुख्य द्वार है। पर तब ही तो जब हम यह समझें कि विश्व मे बसने वाले सभी मनुष्य मात्र का केवल प्रमुख धर्म ग्रन्थ है। जिस से कि सम्पूर्ण विश्व मे फैले हुए धर्म ग्रन्थ, उनकी परिभाषाए व व्याख्याये गद्य हो अथवा पद्य उन सब का मूल आधार सृष्टि आदि अनादि ज्ञान जगत पिता परमेश्वर प्रदत्त वेद है। जिस के सम्बन्ध मे हरियाणा के राज्यपाल डा सैयद मुजफर हुसैन बर्नी ने हमारे यजुर्वेद उर्दू भाष्य को पढ कर यह कहाकि इस ग्रन्थ के पढने से जहा एक तरफ कदीम (प्राचीन) भारत वर्ष मे तर्जे जिंदगी की तस्वीर जहन मे आती है। (यानी पुराने लोगो का रहन सहन आचार विहार सामने आता है) वहा पुराने वक्तो में रायज धार्मिक हवनो, यज्ञो और उनसे मुताबिक तहजीब व तमद्दुन के बारे मे भी बेश कीमत मालूमात हासल होती है। (यानी हवन यज्ञो के रिवाजो की सभ्यता के सम्बन्ध मे अमूल्य जानकारी होती है) मेरी दुआ है (ईश्वर से प्रार्थना) कि जनाब आशुराम आर्य यह कारेअजीम तकमील तक पहुचायें (इस महान् कार्य को पूरा कर सके। ताकि उर्दू दान और उर्दू का तबका इस इलहामी सहीफा से वाकफ हो सकें जिससे उर्दू जानने या पढने वाले लोग इस ईश्वरीय ज्ञान को जान पायें।)

पाठक जान गये होगे अगर वेद को नई भाषा उर्दू का लिबास न पहनाया जाता जोकि लगभग मेरे चालीस वर्षो के परीश्रम का परिणाम है तो भारत के एक सच्चे मुसलमान नेक नाम विद्वान् की वैदिक धर्म के सम्बन्ध मे ऐसी महत्वपूर्ण सम्मति दुनिया के सामने कैसे आगे आती

—अपील—

जैसा कि हमारे प्राचीनतम धर्म शास्त्र वेता महर्षि मनु ने लिखा है वेदो ? धर्म मूलन। वेदभ्यश्च सनातनम् वेदात् सर्वम् प्रसिद्धयति अर्थात् वेद ही सम्पूर्ण धर्म का मूल है। (2) वेद ही सब से पुरानी ज्ञान की आख है और (3) वेद से ही जगत में सब कुछ प्रगट हुआ है। गुरुओ की पवित्र वाणी में लिखा "असंख्य ग्रन्थ मुख वेद पाठ" अर्थात् संसार मे बिखरे हुये असख्य ग्रन्थ वेद के मुख से ही निकले हैं।

इस लिए मेरा यह निवेदन है कि उर्दू पढने वाले उर्दू मे हिन्दी अंग्रेजी जानने वाले हिन्दी, अंग्रेजी भाषा मे अपने धर्म ग्रन्थ वेदो को लेकर घर-घर मे सभी परिवार के साथ वेद पाठ नित्य प्रति किया करे सभी कामनायें पूर्ण होगी। दु ख दूर होंगे और सब सुखो की वर्षा होगी।

महर्षि मनु का आदेश और उस पर महर्षि दयानन्द जी का उद्धृत लेख सत्यार्थ प्रकाश में पढें।

योऽनधीत्यद्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
सजीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वय
11।2।168

जो वेद को न पढ के अन्यत्र श्रम करता है वह अपने पुत्र पौत्र सहित शूद्र भाव को शीघ्र ही प्राप्त हो जाता है।

धियो यो न प्रचोदयात्।

कहते हैं तेरा ध्यान हम और मांगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धियो को धन मार्ग पर चला।

———

(3 पृष्ठ का शेष)

निश्चित हैं, उनकी संख्या अधिक नही है। मैं स्वय कई बार यह अनुभव करता हू कि मैं सब के साथ न्याय नही कर रहा। परन्त मैं भी विवश हो जाता हू क्याकि जो कुछ करना होता है, विधान के अनुसार ही कर सकता हू। उससे बाहर जाना उचित नही होता।

जो अन्तरग सभा इस बार बनाई गई है, उसमे मैंने कुछ परिवर्तन किए हैं सबसे बडा परिवर्तन यह कि आदरणीय बहिन कमला जी पर इस बार मैंने कुछ और दायित्व डाला है। मैं बडे गर्व से कह सकता हू कि उन्होने सभा के महामन्त्री के भार को जिस योग्यता और लग्नशील से निभाया है, वह सराहनीय है। पहली बार किसी मन्त्री ने इतना समय दिया है, जितना कि वह देती रही हैं। लुधियाना मे रहते हुए सप्ताह मे दो बार जालन्धर आना और कार्यालय मे बैठकर सभा का काम करना, यह हमने पहली बार देखा है। वे पजाब के आर्य जगत् के धन्यवाद की पात्र हैं कि उन्होंने अपने कर्त्तव्य को पूरी तरह निभा कर एक नया उदाहरण पेश किया। मैं अनुभव कर रहा था, कि यह उन पर बहुत अधिक बोझ है और उसका उनके स्वास्थ्य पर भी प्रभाव पड सकता है। इसलिए इस बार उन्हे उपप्रधान बनाकर महिला विभाग उनके सुपुर्द कर दिया गया है, ताकि वे महिलाओ का अधिक से अधिक सगठन कर सकें। उनके स्थान पर श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा महामन्त्री बनाए गए हैं। उनका आर्य समाज के साथ बहुत पुराना सम्बन्ध है। चू कि वे अवकाश प्राप्त कर चुके हैं, इसलिए अपना समय भी दे सकते हैं। जब तक वे कोषाध्यक्ष रहे, उस समय भी कार्यालय मे आते रहते थे और काम करते रहते थे। उनकी सबसे बडी विशेषता यह है कि वे कर्म-काण्डी और निष्ठावान आर्य समाजी हैं। स्वाध्याय भी करते हैं और अपने अन्दर वे सब विशेषताए पैदा करने का प्रयास करते हैं, जो एक आर्य समाजी म होनी चाहिए। आशा है उनके कार्यकाल मे सभा का कार्य तेजी से आगे बढेगा। श्री प हरबसलाल जी शर्मा से अच्छा कोषाध्यक्ष मिलना हमारे लिए कठिन है। आर्य समाज मे वे दानवीर और कर्मठ कार्यकर्त्ता है। सभा का कोष उनके पास पूर्णतया सुरक्षित है। इसलिए इस बार यह दायित्व उन पर डाला गया है। उनका भी आर्य समाज के साथ पुराना सम्बन्ध है और वे आर्य समाज के काम मे बहुत अधिक रुचि लेते है। श्री योगेन्द्रपाल जी सेठ श्री सन्तराम जी अग्रवाल और प्रिंसिपल अश्विनी कुमार जी उपप्रधान बनाए गए हैं। मैं आशा करता हू कि वे भी अपने-अपने क्षत्र मे सक्रिय रूप से काम करते हुए सभा के सगठन को शक्तिशाली बनाएगे। श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न, श्री प अश्विनी कुमार जी, श्री ओम प्रकाश जी पासी और श्री राम नाथ जी शर्मा मन्त्री बनाए गए हैं। इन सबका उत्तरदायित्व सबसे अधिक है, क्योकि उन्होने अपने क्षेत्र मे आर्य समाज को सुदृढ बनाने के लिए काम करना है। श्री ऋषिपालसिंह जी वेद प्रचाराधिष्ठाता, कुमारी बिमला छाबडा साहित्य विभाग की अधिष्ठाता और श्री आशानन्द जी आर्य वीर दल के अधिष्ठाता बनाए गए हैं। कुछ महानुभाव अपने-अपने जिला के प्रतिनिधि बनाए हैं। उनका कर्त्तव्य है कि वे अपने-अपने जिला मे आर्य समाज के सगठन को शक्तिशाली बनाने का प्रयास करे। वैसे तो अन्तरग सभा के सब सदस्यो का यही कर्त्तव्य है कि वे आर्य समाज के सन्देश का अधिक से अधिक प्रचार करे, परन्तु अधिकारी वर्ग का दायित्व कुछ अधिक है, आशा है कि वे सब मिलकर इसे पूरा करेंगे। पजाब की वर्तमान परिस्थितियो मे यह और भी आवश्यक है कि इस प्रदेश मे आर्य समाज के सगठन को जितना शक्तिशाली बना सकते हैं, बनाये। आशा है पजाब के सब आर्य समाजियो का सहयोग हमे मिलता रहेगा।

—वीरेन्द्र

हिन्दू जाग सावधान क्या भारत गुलाम है

लेखक—श्र आर्य नरेश जी

विश्व शान्ति के लिए ससार को ज्ञान, विज्ञान, चरित्र, सगठन तथा शान्ति का सदेश देने वाले भारत को बचाया जाए।

1 क्योकि—इसकी हजारो वगमील भूमि अब भी चीन तथा पाकिस्तान ने दबा रखी है।

2 यह अपनी बगला देश की सीमा पर तार नही लगा सकता। यदि भूमि हमारी होती तो चाहे हम जो चाहते कर सकते थे।

3 कश्मीर, नागालैंड, मिजोरम और अब पजाब सब अपनी-अपनी आजादी का राग अलाप रहे हैं ?

4 खालिस्तान ईसाई स्थान या मुस्लिम स्थान बनाने वाले इन सभी लोगो के इकट्ठा होकर आन्दोलन छेडने पर सरकार इनके सामने झुक कर इनकी बात तो मान लेनी है।

5(क)परन्तु हिन्दुओ की उचित मागे भी नही मानी जाती। धर्म परिवर्तन बिल को हटाना गोहत्या पर पाबदी न लगाना, अल्पसख्यक कानून शाहबानो के फैसले को गिराना, एक समान राज नियम न बनने देना आदि। खालिस्तान ईसाई स्थान या मुस्लिम स्थान बनाने के नारे, चीन, जापान, इगलैंड, रूस, अमेरिका मे कभी नही लगते केवल भारत मे ही लगते हैं। जबकि मुसलमान नवीन सिख, ईसाई उपरोक्त सभी स्थानो मे रहते हैं ?

5 भारत सरकार के व्यवधान 38 वर्ष के पश्चात भी हिन्दी राष्ट्र भाषा के गौरव को प्राप्त नही कर सकी आज भी बडे प्रशासकीय अधिकारी कावेट आदि इगलिश माध्यम के स्कूलो से ही लिये जाते हैं। बडा राज्य अधिकारी नही बन सकता, न ही इसकी हिन्दी देवनागरी लिपी मे पाकिस्तान या अन्य देशो की तरह ज्ञान-विज्ञान की पुस्तके अनुवाद हो सकी और न ही अन्य सब भाषाए देवनागरी लिपी म लिखी जा सकी हैं।

6 इसके सिक्के पर अकित 'सत्य-मेव जयते' की सस्कृत भाषा को कोई स्थान नही अब कि चन्द लोगो की उर्दू भाषा उत्तर प्रदेश, बिहार व हिमाचल मे दूसरी भाषा है तथा हरियाणा मे इस के दूसरी भाषा होन की चर्चा है। पूरे भारत म उर्दू तथा अंग्रेजी माध्यम के तो अनेको विद्यालय हैं पर सस्कृत माध्यम का एक भी विद्यालय नही ?

7 इसका प्रधानमन्त्री बाहर आकर राष्ट्र भाषा हिन्दी मे नही अपितु गुलामी को भाष अंग्रेजी मे बोलता हे।

8 इसकी सभ्यता का महान् चिन्ह 'गौ' आज भी लाखो की सख्या मे कटती है। इसकी चर्बी डालडा मे टैलो के रूप मे मिलाकर लाखो को खिलाई जाती है तथा अनेका दूसरी चीजो मे भी डाली जाती है।

9 इसकी सस्कृति के मूल श्रीराम चन्द्र के मन्दिर का ताला खोलने पर पूरे देश मे मुसलमान पूर्व नियोजित ढग से सामूहिक हडताल पत्थराव झाड फूक करते है।

10 आज भी इसके मन निवासी बहुसख्यक आर्य हिन्दु जाति के मन्दिर तथा यज्ञ शालाये, विदशियो के राज की तरह ही तोडी जाती हैं लूटी जाती हैं व आग स जलाई जाती है। प्रधानमन्त्री लाल बहादुर शास्त्री का जहर देकर मरवा दिया जाता है और श्रीमती इन्दिरा जी को एक गोली पीठ की ओर से भी लगती है।

11 इसकी बहुसख्यक अबादी के हिन्दू लोगो का गुलामी के दिनो की तरह ही आज भी कश्मीर, पजाब, मुरादाबाद, मेरठ, अहमदाबाद, हैदरा-बाद तथा भिवण्डी मे खुलम-खुला कतले आम होता है।

12 यहा राज करने वाले मुगलो तथा अंग्रेजो की सन्तानो को जुमे, सण्डे, गुडफाईड, क्रिस्मसड, ईद आदि की छुट्टी होती है पर अमावस्या पूर्णिमा या इसकी सभ्यता के सस्थापक श्री रामचन्द्र श्री कृष्णचन्द्र और ऋषि दयानन्द के जन्मदिन की छुट्टी नही होती है ?

13 इसके इतिहास के ग्रन्थो मे आज अंग्रेजा द्वारा दिया गलत इतिहास आर्य लोग बाहर से आये है, वे मास खाते थ, शराब पीते थे आदि पढाया जाता है।

14 तथाकथित आजादी के वर्षों बाद भी आज-पञ्चम का सिक्का भारत की राजधानी दिल्ली मे आज भी चलता है। और जो अपना कहलाने वाला सिक्का चलता है वह भी गुलाम अंग्रेजी की लिपी के बिना नही चल सकता है। अंग्रजी के स्थान पर गुज-राती, मराठी व मद्रासी अनिवार्य नही अपितु अंग्रजी लिखना ही अनिवार्य है।

15 इसके न्यायाधीश आज भी अंग्रेजो द्वारा गुलामी के समय दिये गये वही काले कपडे पहनते हैं। और भारत सरकार का सारा काम-काज मुख्य रूप से अंग्रेजी मे होता है। हर गाडियो पर नम्बर अंग्रेजी का नम्बर अकित है।

16 इसकी अस्सी प्रतिशत मूल-निवासियो हिन्दुओ का राजा नेपाल से बुलाने पर पाबन्दी है पर इस पर पूर्व शासन करने वाले अंग्रेजो के गुरु पोप पाल को सरकारी मेहमान बनाकर लग-भग एक अरब रुपये का खर्च करके धूम-धाम से बुलाया जाता है। और उन्ही दिनो इसके धर्म के प्रचारको को लेखक सहित गोआ मे प्रचार करने पर जेल मे दिया जाता है।

17 यहा खुले हुए हजारो इसाई स्कूलो मे आज भी हिन्दू बच्चो को जबरन हिन्दू धर्म की निन्दा सुननी पडती है तथा ईसामसीह की पूजा करनी पडती है और ऐसा न करने वाले को स्कूल निकालने की धमकी दी जाती है।

18 कथित आजादी के 38 वर्ष व्यतीत हो जाने पर आज भी जार्ज पचम की स्तुति म लिखा गया गाया गया गीत जन गण मन अधिनायक जय हो आज भी गाया जा रहा है ?

19 देश के प्रसिद्ध इतिहासज्ञो यथा पी एन. ओक आदि के द्वारा ताजमहल, लालकिला, कुतुब मीनार, फतेहपुर सीकरी आदि को हिन्दू मन्दिर या स्थान सिद्ध कर देने पर भी आखिर सरकार क्यो डर रही है ?

20 भारत सरकार की मोहर पर छपे हुए वैदिक उद्घोष वाक्य 'सत्यमेव जयते' का कोई मूल्य क्यो नही ? क्या यह केवल दिखावा मात्र है ? यदि भारत आजाद होता यहा की सरकार इसे इस वाक्य से युक्त मानव धर्म 'वैदिक सस्कृति' का शिक्षा नीति से तथा सर-कारी काम-काज मे प्रचार प्रसार कर के इसे अपने देशवासियो के आचरण मे लाती। अत्यन्त खेद है कि भारत के विद्यालयो मे कुरान बाईबल की तो शिक्षा दी जाती है पर वेद की नही। रेडियो पर गाय की हत्या, पृथ्वी चपटी है, और काफिरो को मार दो आदि का उपदेश करने वाले ग्रन्थो को तो समय दिया जाता है पर वेद को नही।

21 मस्जिद के सामने हिन्दुओ का बाजा बजना तो बन्द हो सकता है पर गाय का कत्ल नही।

विशाल शुद्धि समारोह और आपका कर्त्तव्य

भारत सरकार की धर्म निरपेक्षता तथा तुष्टीकरण परक नीति का लाभ उठाकर हमारे देश मे धर्म के नाम पर विदेशी शक्तिया बहुत पहले से ही षड्यन्त्र करती आ रही हैं। इसी धर्म की आड मे इन शक्तियो ने 1947 देश के टुकडे किये। आज भी जहा-जहा ईसाई मुसलमानो को अधिकता है, वहा विदेशी शक्तिया तोड-फोड एव लडाई-झगडे कराती रहती हैं। इसका एक ही उपाय है कि इस देश के सभी निवासी वैदिक सस्कृति को अपनी सस्कृति तथा यहा के पूर्वजो को अपने पूर्वज माने।

इसी भावना को लेकर वैदिक यतिमण्डल एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के सरक्षण मे यतिमण्डल के कर्मठ सदस्य गुरुकुल आमसेना (उडीसा) के आचार्य एव उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी ने जोरदार ढग से शुद्धि का कार्य शुरू कर रखा है। स्वामी जी ने गत फरवरी 86 मे पोपपाल के भारत आगमन पर भी एक विशाल शुद्धि समारोह गुरुकुल आमसेना मे आयोजित किया था। अब पुन जून के प्रथम सप्ताह मे 5 हजार ईसाइयो को वैदिक धर्म मे दीक्षित करने का कार्यक्रम है। यह कार्य अति परिश्रम एव व्यय साध्य है। सभी वैदिक सस्कृति प्रेमी देश भक्त सज्जनो से अनुरोध है कि इस महत कार्य मे अधिक से अधिक सहायता देकर पुण्य के भागी बनें। और विदेशी शक्तियो के षड्यन्त्रो के चगुल से देश और अखण्डता की रक्षा करने मे योगदान कर अपनी देश-भक्ति का परिचय दें।

सहायता श्री स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, गुरुकुल आमसेना जिला काला-हाण्डी (उडीसा) 766104 के पते पर भेजें।

निवेदक :—

स्वामी ओमानन्द सरस्वती	स्वामी सर्वानन्द सरस्वती
प्रधान	अध्यक्ष
परोपकारिणी सभा (अजमेर)	वैदिक यतिमण्डल दयानन्द मठ दीनानगर

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लाल जी आर्यरत्न, मार्डल टाउन, जालन्धर, श्री ओमप्रकाश जी पाली लुधियाना। श्री रामनाथ जी शर्मा कश्मीरनगर अमृतसर।

कोषाध्यक्ष—श्री प हरवंसलाल जी शर्मा।

वेद प्रचाराधिष्ठाता—श्री चौधरी सुखदियाल जी एडवोकेट।

अधिष्ठाता आर्य शिक्षा परिषद् प्रजाब श्री प धर्म प्रकाश जी दत्त नवांशहर।

अधिष्ठाता साहित्य विभाग—प्रिंसीपल कु विमला जावड़ा बरनाला।

अधिष्ठाता आर्य वीर दल—श्री आशानन्द जी आर्य लुधियाना।

अन्तरंग के लिए जिला प्रतिनिधि

1 जिला रोपड श्री ओमप्रकाश जी महेन्द्र
2 भठिण्डा श्रीमती कमला जी भाटिया मुख्याध्यापिका
3 पटियाला श्री वेद प्रकाश जी महता।
4 जालन्धर श्री मनोहरलाल जी।
5 लुधियाना श्री अयोध्याप्रसाद जी मल्होत्रा।
6 संगरूर श्री विजयकुमार हिन्द समाज मलेरकोटला प्रबन्धक
7 फरीदकोट श्रीमती इन्दुपुरी जी मोगा।
8 गुरदासपुर श्री सतीश कुमार जी पठानकोट।
9 अमृतसर श्री सुभाष भाटिया जी प्रधान आर्य समाज लक्ष्मणसर बाजार अमृतसर
10 कपूरथला श्री रोशनलाल जी (राजकीय हायर सै. स्कूल कपूरथला)
11 फिरोजपुर श्री हंसराज महता

अन्तरंग के लिए प्रतिष्ठित सदस्य

1 श्री प देवेन्द्र कुमार जी नवांशहर
2 श्री अमृतलाल जी बजाज एडवोकेट
3 श्री रामलुभायानन्दा जी।
4 श्री कर्मचन्द जी भाटी जालन्धर।
5 श्री वैद्य देवी प्रसाद जी शर्मा लुधियाना।
6 श्री महेन्द्रपाल जी वर्मा लुधियाना।
7 श्रीमती शान्ता नन्दा जी सुल्तानपुर
8 श्री वैद्य ओमप्रकाश जी इन्दु फगवाड़ा।
9 श्री मुनि चेतन देव जी राजपुरा टाउनशिप।
10 श्री जगदीशराय जी बांसल मोगा।
11 श्री दीवान राजेन्द्र कुमार जी लुधियाना।
12, श्री रणवीर जी भाटिया लुधियाना
13, श्री बशीरचन्द जी भठिण्डा।

विशेष आमंत्रित सदस्य

1 श्री डा ज्ञानचन्द जी जालन्धर।
2 श्रीमती शान्ता मौड लुधियाना।
3 श्री बलभद्र कुमार जी मल्होत्रा, पटियाला।
4 श्रीमती सुशीला भगत जालन्धर।
5 श्री केवल कृष्ण जी पुरी मोगा।
6 श्री विजय कुमार जी अग्रवाल बटाला।
7 डा कैलाशनाथ जी भारद्वाज फगवाड़ा।
8 श्री ब्रह्मदत्त जी कौड़ा बटाला।
9 श्री डा मूलचन्द जी भारद्वाज लुधियाना।
10 श्री रोशनलाल जी शर्मा (युवक सभा लुधियाना)
11 श्री अमृतलाल जी गुलाटी फगवाड़ा
12 श्री वेद प्रकाश जी सरीन, नवांशहर।
13 श्री डा के के पसरीचा, जालन्धर
14 श्री रामकृष्ण जी महाजन दीनानगर।

न्याय सभा अध्यक्ष

1 श्री चौ रूपचन्द जी एडवोकेट चण्डीगढ़।

(2 पृष्ठ का शेष)

आज के प्रवचन को पूर्ण करते हुए महात्मा जी ने कहा है, वस्तुत यह चर्चा बहुत ही सूक्ष्म और गम्भीर है। शास्त्रो मे इस का विशद वर्णन मिलता है। पर यह चर्चा की अपेक्षा अनुभव का विषय है। अत., इस की अधिक चर्चा न करते हुए प्रत्येक विचारशील को इस का मनन करना चाहिए। इस की केवल चर्चा एव अध्ययन में व्यस्त रहना अधिक आवश्यक नहीं है। तभी तो उपनिषद कार ने कहा है—

नानुध्यायाद बहून, शब्दान वाचो विग्लापन हि तत बृहदारण्यक 4,4,21 बहुत अधिक शब्दो के चक्र मे नही पड़ना चाहिए, ऐसा करना तो केवल वाणी का व्यायाम ही है। हा, आत्मा का स्वरूप अपना आप है, अत इस का ग्रन्थो और उपनिषदो की शिक्षाओं के आधार पर अनुभव करना चाहिए।

★

आर्य समाज दीनानगर का वार्षिक चुनाव

27-4 86 रविवार को आर्य समाज दीनानगर का वार्षिक चुनाव हुआ जिस मे डा हरिदास जी को सर्व सम्मति से प्रधान चुना गया और शेष अधिकारियो को चुनाव का अधिकार भी उनको दिया गया। बाकी अधिकारियो का चुनाव उन्होंने इस प्रकार किया।

1 सरक्षक—स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, तथा स्वामी सुबोधानन्द जी महाराज।

2 प्रधान—डाक्टर हरिदास जी।

3 उप प्रधान—श्री बलराज जी गुप्त तथा डा बलदेव राज जो विज।

4 मन्त्री—रघुनाथ सिंह जी

5 सहायक मन्त्री—श्री पृथ्वीराज जी जिज्ञासु।

6 उपमन्त्री—श्री सतीशचन्द्र जी शास्त्री।

7 प्रचारमन्त्री—श्री वेद प्रकाश जी

8 कोषाध्यक्ष—प्रिंसीपल गन्धर्व राज जी।

9 लेखानिरीक्षक-लाला साईंराम जी

10 पुस्तकाध्यक्ष—श्री वीरेन्द्र कुमार जी

अन्तरंग सभा के सदस्य

1 श्री कर्मचन्द जी भारद्वाज।
2 श्री जयचन्द जी।
3 श्री धर्म दत्त जी।
4 श्री पृथ्वी राज जी।
5 श्री योगराज जी।
6 श्री रामकिशन जी वानप्रस्थ।
7 श्री भद्र सैन जी बजाज।
8 श्री किशनचन्द जी।
9 पण्डित हंसराज जी।
10 मास्टर हंसराज जी।

—रघुनाथसिंह शास्त्री
मन्त्री

आर्य समाज सोहनगन्ज दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज सोहन गन्ज दिल्ली का 48 वा वार्षिकोत्सव 31 मई से 1 जून तक मनाया जा रहा है। वेद कथा स्वामी रामेश्वरानन्द जी सरस्वती करेंगे। भजन प वेद व्यास जी के और यज्ञ के ब्रह्म प द्विजराज शास्त्री होंगे। महिला सम्मेलन श्रीमती प्रेमशील की अध्यक्षता मे होगा। —प्रेमसागर गुप्त
मन्त्री

आर्य समाज कपूरथला का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज कपूरथला का नव वर्ष का चुनाव 6-4 86 को निम्न रूप से सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री रोशनलाल जी, उपप्रधान—श्री दरबारी लाल जी, श्रीमती प्रकाशवती प्रभाकर, श्रीमती कमलेश कुमारी, मन्त्री—श्री हरिसिंह, उपमन्त्री—श्री हरिचन्द, श्रीमती कविता देवी, कोषाध्यक्ष—श्री जोगिन्द्र पाल, पुस्तकाध्यक्ष—श्री त्रिलोक चन्द, लेखानिरीक्षक—श्री बंसीलाल।

इसके अतिरिक्त 6 अन्तरग सदस्य चुने गए। —हरिसिंह, मन्त्री

आर्य समाज नगल टाऊनशिप उत्सव

आय समाज का 58 वा वार्षिक महोत्सव आय समाज मन्दिर नगल टाउनशिप मे 19 से 25 मई 1986 तक मनाया जा रहा है इस पावन अवसर पर आय जगत के प्रसिद्ध वदिक विद्वान उपदेशक स यासी महात्मा एव भजनो पदेशक पधार रहे है। वार्षिक महोत्सव वेद प्रचार की एक कडी है।

आपसे सविनय निवेदन है कि पावन वेद ज्ञान रूपी गगा घर घर पहुचाने हेतु अपने परिवार तथा इष्ट मित्रो सहित इस धार्मिक पव मे पधार कर यज्ञ तथा वेद प्रचार से मानव जाति को लाभान्वित कर इस मानव धम विश्व कल्याण यज्ञ मे यथा शक्ति सहयोग देकर अपने कर्त्त य का पालन कर तथा उत्सव की शोभा बढाए।

● आमन्त्रित विद्वान ●

1 श्री स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती अध्यक्ष वदिक साध आश्रम रोपड।
2 श्री डा वेद प्रकाश जी शास्त्री प्रवक्ता गुरुकल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार
3 श्रीमती कमला जी आर्या पप्रधान आय प्रतिनिधि सभा पजाब, जालधर
4 श्री प दीनानाथ जी वेदज्ञ चन्नगढ ऊना (ह प्र)
5 श्री डा सुरेन्द्र कुमार जी डी ए वी कालेज कागडा (हि प्र)
6 श्री आचाय भद्रसेन जी वदिक अनुसधान सस्थान होशियारपुर।
7 भजनोपदेश आय प्रतिनिधि सभा पजाब जालधर

—सत्यपाल भाटिया
मन्त्री

आर्य समाज की आजन्म सेवा करने वालो का सम्मान

जिन भजनोपदेशको और उपदेशको ने अपने जीवन का अधिकाश भाग वदिक धम के प्रचार मे और आय समाज की सेवा मे बिताया है ऐसे वद्ध महानुभावो का सम्मान करने की योजना है। सगीत और व्याख्यानो के द्वारा आय समाज की सेवा करने वाले महानुभावो को यथोचित नकद राशि और एक शाल देकर सम्मानित किया जाएगा।

यह समारोह नवम्बर के दूसरे सप्ताह मे नई दिल्ली मे होगा। मेरी समस्त आय जनता से प्राथना है कि वह ऐसे महानुभावो के नाम और उनके पते से सूचित करने की कृपा कर ताकि इस सम्बन्ध मे उनसे पत्र व्यवहार किया जा सके। जो उपदेशक और भजनोपदेशक सेवा निवत्त होकर वृद्धावस्था प्राप्त कर चुके है वे स्वय भी अपने नाम और पते तथा अपना काय विवरण भेज सकते हैं। सम्मान के लिये बुलाये जाने वाले महानुभावो को आने जाने का माग व्यय दिया जाएगा तथा उनके आवास एव भोजन की नि शुल्क व्यवस्था होगी।

आय समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री आशानन्द जी जिनकी आयु इस समय 83 वष हो चुकी है और जिन्होंने लगभग 65 वष तक अपने भजनों से आय समाज की सेवा की है इस सम्मान के लिए अपनी ओर से काफी बडी राशि एकत्रित करके देने को सहमत है।

रामनाथ सहगल
मन्त्री

आर्य मर्यादा में विज्ञापन देकर लाभ उठाए

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रस जालधर स मुद्रित होकर आय मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालधर स इसकी स्वामिनी आय प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74260 रजि. नं. पी..जे.एल 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 18 अंक 12. 8 आषाढ़ सम्वत् 2043 तदानुसार 22 जून 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अक 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

मानव जीवन में अन्न का महत्व

लेखक—श्री महेन्द्र जी शास्त्री

पितुं नु स्तोषं महो धर्माणं तविषीम् ॥
यस्य त्रितो व्योजसा वृत्र विपर्वमर्दयत् ॥

ऋ 1।187।1॥

पदार्थान्वयभाष्य—(पितु नु) पिता के समान प्राणीमात्र के रक्षक अन्न का मैं निश्चयपूर्वक (स्तोषम) आदर करता हू, उसे पूज्य समझता हू, उसकी स्तुति करता है, क्योकि वह (मह तविषी धर्माणम) प्राणिमात्र मे अपार बल का धारक है। (यस्य ओजसा) उसके द्वारा प्रदत्त शक्ति से ही (त्रित) शरीर आत्मा और मन इन तीनो मे बल मेधा ना ज्ञान मे प्रवृन मानव (वृत्रम) आन्तरिक और बाह्या शत्रुओ को (विपर्वम) उनकी हड्डी पसली तोड कर वा उन्हे निस्तेज करने (व्यर्दयत्) समाप्त कर देता है।

सक्षिप्त व्याख्या—यह मन्त्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के एक सौ सत्तासीवे सूक्त का प्रथम मन्त्र है। इस सम्पूर्ण सूक्त का देवता 'अन्न' है। सूक्त मे कुल 11 मन्त्र हैं। सब मन्त्रो मे अन्न के महत्त्व पर ही प्रकाश डाला गया है। पितु" शब्द निघण्टु अध्याय 2 के खण्ड 7 मे अन्न' के पर्यायवाची 28 शब्दो मे नम्बर 6 पर पढा गया है। निरुक्तकार यास्क ने इस मन्त्र की अध्याय 9 के 24-25 वें खण्ड मे सुन्दर सक्षिप्त व्याख्या की है। यास्क लिखते है कि—

पितुरित्यन्ननाम। पातेर्वा पिबतेर्वा प्यायतेर्वा। तस्यैषा भवति—"पितु नु स्तोष महो धर्माणं तविषीम्"। हमने ऊपर जो मन्त्र का अर्थ दिया है, उस का आधार यास्क कृत संक्षिप्त व्याख्या ही है।

यास्क ने 'पितु' शब्द की रचना "पा रक्षणे" पा पाने' वा 'प्यायी वृद्धौ' से मानी है। 'अन्न' हमारे शरीरो का रक्षक है, वह उत्तम खाद्य पदार्थ है, और हमारे शरीर मन और आत्मा की वृद्धि का आधार भूत है। शरीर में बल का स्रोत एक मात्र अन्न ही है। इसी लिए उपनिषदकार कहते हैं कि "अन्न वै प्राणिना प्राण'—अन्न प्राणियो का जीवन है। हिन्दी मे भी कहावत प्रसिद्ध है कि "जैसा खाये अन्न वैसा बने मन" सात्विक अन्न का भोजन मनुष्य के मन को पवित्र करता है। शुद्ध अन्न के सेवन से शुद्ध मेधा—बुद्धि की प्राप्ति होती है। त्रित का अर्थ करते हुए निरुक्तकार कहते हैं—त्रितस्तीर्णतमो मेधया बभूव (निरु, 4।)—जो मेधा—द्वारा बहुत बडा हुआ हो, पैनी बुद्धि वाला हो।

प्रत्येक मानव की जो मूलभूत तीन आवश्यकताए हैं—भोजन, वस्त्र और मकान, उसमे भोजन का नम्बर सबसे पहला है। यह मानव की वह आवश्यकता है, जिसकी पूर्ति के लिए सारा ससार दिन-रात लगा हुआ है। रहीम एक दोहे मे लिखते हैं—"रहिमन अपने पेट सो, बहुरि कहयो समुझाय। जो तू अनखाये रहत, तोसो को अनखाय॥" रहीम कहते है कि मैंने अपने पेट से बहुत समझा बुझा कर कहा कि अरे पेट! जो तू बिना खाये रह आया करता तो ससार का यह सारा झगडा ही समाप्त हो गया होता। इसी पापी पेट की भूख को शान्त करन के लिये विविध प्रकार के धन्धो मे दुनिया लगी हुई है। यदमत्य वदेन्मर्त्यो यद्वाऽसेव्य च सेवत, यद गच्छति विदेश च, तत्सर्व मुदरार्थंत॥ उपर्युक्त मन्त्र मे अन्न के सम्बन्ध मे निम्न बातो की विशेष रूप से चर्चा की गई है—

1 अन्न आदर के योग्य वस्तु है—प्रत्येक मनुष्य को अन्न का सदा आदर करना चाहिए। अन्न के प्रति कभी भी निरादर की भावना प्रगट नही करनी चाहिए। अनुक्रमणीकार कहन हैं कि –पितु नु इत्युपतिष्ठेत नित्यमन्न मुपस्थितम। पूजयेदशन भुञ्जीयाद-विकुत्सयन॥ अथात जब अपने सामन थाल मे रखा भोजन उपस्थित होवे, तो नित्य प्रति उसका उपस्थान व पूजन करे और उस भोजन को प्रेमपूवक बिना उस का किसी भाति भी निरादर किय, ग्रहण करे। इसके आगे अनुक्रमणीकार कहते है कि नावाग्यतस्तु भुञ्जीत नाशुचिन जुगुप्सितम्। दद्याच्च पूजयेच्च जुहुयाच्च हवि सदा॥ एक स्थान पर लिखा है कि 'अन्न न निन्द्यात तद व्रतम्" (तैत्तरीयोपनिषद) अथात अन्न की कभी निन्दा न करे, क्याकि वह वरण करने की प्रिय वस्तु है। जो लोग अन्न का निरादर करते है, अन्न उनका निरादर कर दता है। कई बार देखा गया है कि कुछ लोग घर मे पत्नी से कभी किसी बात पर कहा-सुनी हो जान पर अन्न से रूठ जाते है, और भोजन त्याग देते है। भोजन क्यो नही कर रहे, यह पूछने पर उनका उत्तर होता है कि—'भूख नही'। कुछ लोग तो इतने मूख होते हैं कि भोजन की थाली जैसे ही उनके सामने रखी जाती है, तो वे क्रोधावेश मे उसे उठा कर दूर फैंक देते हैं। ऐसा करना बहुत ही निन्दित कृत्य है। बुजुर्ग लोग गावो मे जब कभी अन्न को घर मे वा उस के बाहर बिखरा हुआ पाते थे, तो बड़े आदर के साथ उसे चुन कर चक्की के ऊपर रख देते थे।

2. अन्न का महत्व—यजुर्वेद (18-33) मे लिखा है—'वाजो नो अद्य प्रसुवाति दान वाजो देवान् ऋतुभि कल्पयाति। वाजो हि मा सर्ववीर जजान विश्वा आशा वाजपतिर्जयेयम' अर्थात अन्न ही हमारी दान शक्ति को उत्पन्न करता है, अन्न ही विद्वानो को ऋत्वनुकूल आचरण से समर्थ बनाता है। अन्न ने ही हमे सब वीर पुत्रो वाला बनाया है। अन्न क स्वामी होकर हम दिग-दिगन्त को जीतने मे समर्थ हो सकते हैं। इसी ने पारस्कर (1 5-8) मे लिखा है "अन्न सामाज्यामधियति स मावत्वस्मिन ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्या पुरोधायामस्मिन कर्मण्यस्या देवहूत्याम। अर्थात अन्न ही सामाज्यो का वास्तविक स्वामी है। अन्न की समस्या जिस देश का हल हो गई, उसकी प्रजा सुख म जीवन व्यतीत करती है। अन्न की कमी के कारण सारा देश त्राहि त्राहि करने लग जाता है। यह अन्न ब्रह्मकर्म मे—विद्या सम्बन्धी व्यवहार मे, क्षत्रकर्म अर्थात रक्षण सम्बन्धी व्यवहार मे, मगल कार्यों मे, यज्ञ-सस्कारदि कर्मो मे विद्वद्-गोष्ठी मे सदा सब की रक्षा करता है। विद्याध्ययन के स्थानो, पुलिस व फौज आदि सगठनो सस्कारादि शुभ अवसरो यज्ञ कर्मों व विद्वदगोष्ठियो मे सर्वत्र अन्न का महत्व स्वीकार किया गया है। प्राचीन काल मे चावल, जौ, उडद और तिल इन चार धान्यो का खाद्यान्नो मे विशेष महत्व था—"व्रीहिमत्त यवमत्तमथो माषमथो तिलम्' (अथर्व 6-140-2)। यजुर्वेद (11 83) मे प्रभु से प्राथना की गई है कि—"अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिण। प्र प्रदातार तारिष ऊर्ज नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे' हे अन्न के स्वामी प्रभो! हमे कृमि कीटादि-रहित बलदायक अन्न के भण्डार दीजिए, अन्न का दान करने वाले को खूब बढाइए। हमारे परिवार के सदस्यो और पशुओ के लिए बलदायक अन्न दीजिए।' तैत्तिरीयोपनिषद् में ईश्वर को स्वय अन्न रूप कहा है—'अहमन्नमहमन्नमहमन्नम् ॥

(क्रमश)

कठोपनिषद् कथा माला—२

अभिमानी परमात्मा को नहीं जान सकता

लेखक— श्री पं. रविदत्त जी शर्मा एम ए पी एच. डी. अबोहर

(8 जून से आगे)

गुरु ने स्पष्ट किया कि हे शिष्य ससार को, अपने को तथा इन्द्रियो को देख कर यदि तुम्हे यह भ्रान्ति हो गयी कि मैंने ब्रह्म को जान लिया तो यह भूल है। जो महिमा इन्द्रियो मे प्रभु की' दिखाई देती है और जो कुछ स्वरूप आत्मा मे अनुभव होता है तथा इस ससार को देख कर ब्रह्म का जो कुछ भान होता है वह सब मिला कर ब्रह्म का एक अश मात्र है। ब्रह्म तो कही हम सब से अलग है, जिस का अनुमान लगाना भी कठिन है। अत एव ब्रह्म सम्बन्धी तेरा यह ज्ञान भी आशिक है, पूर्ण नही। अभी तो तुम इस विषय मे बहुत मीमासा करनी है। तेरे लिये यह विषय मनन योग्य है, अभी बहुत कुछ विचार करना शेष है। अपने ब्रह्मज्ञान सम्बन्धी विचार को विराम लगा, अभी अपूर्ण है।

नाहं मन्ये सुवेदेति नो न वेदेति वेद च।
यो नस्तद् वेद तद्वेद नो न वेदेति वेद च ॥

मैं ऐसा नही मानता कि ब्रह्म को भली-भाति जान गया हू और न यह ही मानता हू कि मै नही जानता। हम मे से जो भी उस ब्रह्म को जानता है वही इस अभिप्राय को समझ सकता है कि मैं जानता भी हू और नही जानता।

शिष्य कितना विषय समझ पाया है इस आशय को स्पष्ट कर रहा है। वह अपना अनुभव बताता है कि ब्रह्म के विषय मे कुछ भी निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता, न तो यह कि मैं पूरी तरह जान गया हू और न यह कि बिल्कुल नही जान पाया हू। अत इसके बीच वाली स्थिति मे हू अर्थात् कुछ तो जान लिया है और कुछ जानना शेष है। यहा एक विलक्षण बात यह है कि शिष्य जानता भी है और नही भी जानता। इस से प्रतीत होता है कि उसका ज्ञान अधूरा है, कुछ जानना शेष रह गया है। परन्तु यहा यह सन्देह रह जाता है कि वह कितना जान गया और कितना जानना शेष है। वास्तव मे यह अनुभव अलौकिक है जिस की व्याख्या करना आसान नही। वह केवल अनुभूति का विषय है व्याख्यान का नही।

यस्यामत तस्य मत मत यस्य न वेद स।
अविज्ञात विजानता विज्ञातम-विजानताम् ॥

जो समझता है कि मैंने ब्रह्म को नही जाना तो समझो कि उस ने जान लिया और जो यह समझता है कि मैंने ब्रह्म को जान लिया तो समझो कि उसने नही जाना क्योकि जो जानने का अभिमान करते है वह उन का जाना हुआ नहीं है तथा जिन मे ज्ञानीपन का अभिमान नही है उनका वह जाना हुआ है।

इस मन्त्र मे उपनिषद् का अभिप्राय यह है कि जो लोग ब्रह्म ज्ञान का मिथ्या आडम्बर रचते है, अभिमान मे फूले-2 फिरते है और अपने थोथे ज्ञान से जन-साधारण को धोखा देने की कोशिश करते हैं, वह केवल उनका ढोंग मात्र है। ब्रह्म ज्ञानी को अभिमान नही होता ज्ञान जितना अधिक होता जाता है, उतनी ही विनम्रता आती रहती है। इस के विपरीत जिन को अपने ज्ञान की पूर्णता प्रतीत नही होती अपितु निरन्तर खोज मे लगे रहते है तो अभिमान रहित जिज्ञासु जनो को परमात्म बोध हो चुका होता है। अत ब्रह्म प्राप्ति के मार्ग मे अभिमान सब से बडी बाधा है। सदैव निरभिमान होकर परमात्म साक्षात्कार का प्रयत्न करते रहना चाहिये तथा कभी भी मिथ्याभिमान का प्रदर्शन न करे।

प्रतिबोध विदित मतममृतत्व हि विन्दते।
आत्मना विन्दते वीर्यं विद्या विन्दतेऽमृतम् ॥

शास्त्रोक्त सकेत द्वारा उत्पन्न ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान होता है और इसी से अमृतत्व की प्राप्ति होती है। आत्मिक शक्ति अथवा अन्तर्ज्ञान से परमात्मा को जानने अथवा प्राप्त करने का सामर्थ्य प्राप्त होता है तथा विद्या के द्वारा अमृत प्राप्त होता है।

शास्त्रो की व्यवस्था के अनुसार ब्रह्म का साक्षात्कार करने का उद्योग करते रहना चाहिए। यह प्रदर्शन का विषय नही है, मन्थन का विषय है। इस मन्थन का फल है परमात्मानन्द। आत्मा से ही परमात्मा का साक्षात्कार किया जाता है और ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति होती है। आत्म साक्षात्कार के साथ-साथ ज्ञान की भी आवश्यकता है अत. वेदशास्त्रो का स्वाध्याय भी करते रहना चाहिए।

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति।
न चेदिहावेदीन्महती विनष्टि.।
भूतेषु भूतेषु विचित्य धीराः।
प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति ॥

यदि इस शरीर के रहते-रहते ईश्वर को जान लिया तो ठीक है और यदि पूरे जन्म मे नही जाना तो बहुत बडा विनाश है। धीर पुरुष प्रत्येक प्राणी मे परमात्मा को ही जान लेते हैं और इस लोक से प्रयाण करने पर अमर हो जाते हैं।

मानव-जन्म का लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति है यदि जन्म भर मनुष्य ईश्वर को न जान सका तो मृत्यु के पश्चात् फिर दोबारा मानव जन्म दुर्लभ है। ईश्वर स दूर रहना आयु का नाश करना है। यदि मनुष्य कुशलता चाहता है तो पर-मात्मा को जानने का साधन करता रहे और ऐसा प्रयत्न करे कि यह जन्म व्यर्थ न हो। मानव शरीर पाकर ही ईश्वर की साधना सम्भव है, अन्य शरीरो मे तो केवल भोग की ही योग्यता होती है। उस मे जीव को लोक-परलोक, आत्मा-परमात्मा, जन्म-मृत्यु, बन्ध-मोक्ष तथा सुख-दु ख के विवेचन की क्षमता नही होती अत पुन मानव जन्म प्राप्त करने के लिए उत्तम कर्म किस से करेगा। मनुष्य प्रमाद को छोड कर ईश्वर प्रणि-धान आदि मे सलग्न रहे। इस मन्त्र मे मानव जन्म को सार्थक करने के लिए सावधान किया गया है।

ब्रह ह देवेभ्यो विजिग्ये तस्य ह ब्रह्मणो विजये देवा अमहीयन्त।
त ऐक्षन्तास्माकमेवाय विजयो-ऽस्माकमेवाय महिमेति ॥

ब्रह्म ने देवताओ के लिए असुरो पर विजय प्राप्त की किन्तु उसकी विजय में देवताओ को अभिमान हो गया और ऐसी कुचेष्टा करने लगे यह उनकी विजय है तथा उन की ही महिमा है।

देवासुर सग्राम में देवताओ की रक्षा के लिए ब्रह्म ने अपनी शक्ति से असुरो को पराजित किया, फलस्वरूप देवताओ की विजय हुई। इस पर देवताओ को अहकार हो गया और वे उसे अपनी विजय समझने लगे। यहा एक स्वा-भाविकता का वर्णन किया गया है कि मनुष्य यदि अपनी दुष्प्रवृत्तियो पर विजय प्राप्त कर लेता है तो उसे किञ्चित् अहकार का आभास होने लगता है और सर्वश्रेष्ठ होने का दावा भी करने लगता है, परन्तु उसे यह नही मालूम कि यह सामर्थ्य भी परमात्मा की कृपा से मिला है। मनुष्य मे अपना कुछ भी नहीं। जो कुछ है परमात्मा के द्वारा प्रदान किया हुआ है। यह शरीर भी उसी की धरोहर है। मनुष्य तो इस से अपना काम चलाता है, परन्तु पूर्ण अधिकार प्राप्त नहीं है। मनुष्य मे जो अच्छाई आती है परमात्मा की कृपा से ही आती है। अत' इस मे अभिमान की कोई बात नही है।

तद्धैषा विजज्ञौ तेभ्यो ह प्रादुर्बभूव।
तन्न व्यजानत किमिद यक्षमिति ॥

परब्रह्म परमात्मा ने देवताओ के मिथ्याभिमान को नष्ट करने के लिए एक यक्ष को प्रकट किया। उसे देख कर देवता आश्चर्य चकित हो गए। वे न समझ पाये कि वह क्या है?

देवताओ के बढते अभिमान को देख कर दयालु परमात्मा ने उनके कल्याण के लिए एक विचित्र रूप को उन के समक्ष प्रकट किया जो उन्होने कभी नहीं देखा था। उसे देख कर सभी अस-मजस मे पड गये, और एक दूसरे से परामर्श करने लगे कि वह दिव्य रूप क्या है?

तेऽग्निमब्रुवञ्जातवेद एतद् विजा-नीहि किमिद यक्षमिति, तथेति ॥

देवताओ ने अग्नि देव से कहा—"वहा जाकर पता लगाओ कि यह दिव्य यक्ष क्या है? कौन है?" अग्नि ने कहा—"बहुत अच्छा"। अग्नि को सब से अधिक ज्ञानवाला समझा गया, अत: देवताओ ने अग्नि से प्रार्थना की। अग्नि ने स्वीकार कर लिया।

तदभ्यद्रवत् तमभ्यवदत् कोऽसीत्यग्निर्वा।
अहमस्मीत्यब्रवीज्जातवेदा वा अहमस्मीति ॥

अग्नि दौड कर यक्ष के पास गया तो यक्ष ने अग्नि से पूछा—"तुम कौन हो?" अग्नि ने उत्तर दिया—मैं प्रसिद्ध अग्नि देव हू और मैं ही जातवेदा के नाम से भी प्रसिद्ध हू। यहा अग्नि का जात-वेदा विशेषण अभिप्राय है जो प्रत्येक पदार्थ को जाने वही जातवेदा है। इसी लिए यह ईश्वर का विशेषण प्रयोग किया जाता है।

तस्मिंस्त्वयि कि वीर्यमिति।
अपीद सर्वं दहेयम्, यदिद पृथिव्यामिति ॥

अग्नि ने बडे गर्व से परिचय दिया तो यक्ष ने पुन. पूछा कि तुम मे क्या पराक्रम है? अग्नि ने उत्तर दिया कि पृथ्वी पर जो कुछ भी है, उस सब को जला कर भस्म करने में समर्थ हू।

(क्रमश:)

सम्पादकीय—

आर्य समाज की मान्यताओं को चुनौती (5)

एक साहित्यकार विशेष कर जबकि वह बहुत विद्वान् हो अर्थ का अनर्थ कर सकता है। अपने निश्चित विचारों को जनता के सामने रखने के लिए वह कई प्रकार के खेल, खेल लेता है और आज ऐसे इतिहासकारो की कमी नहीं है जो विशेष रूप से हमारे प्राचीन इतिहास को तोड़ मरोड़ कर पेश करते हैं। मैं पाश्चात्य इतिहासकारों की बात नहीं करता हमारे अपने देश मे भी ऐसे इतिहासकार पाये जाते हैं जो वैदिक मान्यताओ के सर्वथा विपरीत जाते हैं। हम उनके विचारो को अधिक महत्व नहीं देते क्योंकि हमारे अपने घर मे महर्षि दयानन्द सरस्वती की विचार-धारा के रूप मे एक ऐसा भण्डार भरा पड़ा है जिसके होते हुए किसी और की तरफ जाने की आवश्यकता नहीं रहती यही कारण है कि आर्य समाज ने इतनी प्रगति की थी और यदि हम इसके पिछले एक सौ वर्ष के इतिहास को देखें तो इस परिणाम पर पहुचेंगे कि जो प्रगति आर्य समाज की उसके जीवन के पहले पच्चास वर्षों में हुई थी वह अगले 50 वर्षों मे कुछ कम होती गई। आर्य समाज ने पाखण्ड गुरुडम और धर्म का जो विकृत रूप हमारे देश मे चल रहा था उसके विरुद्ध बड़ी दृढ़ता से प्रचार किया और लोगों पर उसका प्रभाव इतना अच्छा पड़ा कि आर्य समाज की विचारधारा का सारे देश मे प्रचार होने लगा। दूसरे मत मतान्तरो के समर्थक भी आर्य समाज के विचारो से बहुत कुछ सहमत होने और कम से कम वह यह तो मानने लगे थे कि आर्य समाज एक ऐसी शक्ति है जिसने इस देश को एक नई दिशा दिखाई है।

आर्य समाज की इस शक्ति का आधार वेद रहे है। महर्षि दयानन्द ने भी अपने जीवन मे बार-2 अपने देशवासियो से कहा था "चलो वापिस वेद की तरफ" और जब वह वेद की बात करते थे तो उनसे यह प्रश्न भी किया जाता था कि वह वेद को इतना महत्व क्यों देते हैं। इसका उत्तर वह दो शब्दो मे दिया करते थे एक यह कि वेद अपौरुषेय हैं और दूसरा यह कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। उनका सारा दर्शन इन दोनो शब्दों की व्याख्या मे ही लग गया था। कोई भी व्यक्ति जो उनके दो अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका को पढ़ ले उसके लिए यह स्पष्ट हो जाता है कि वह वेद को अपौरुषेय और ईश्वरीय ज्ञान क्यों मानते हैं? महर्षि के पश्चात् आर्य समाज ने भी इसी प्रकार वेदो के विषय मे अपने विचार जनता के सामने रखे और यही कारण है कि आर्य समाज के विषय मे यह धारणा बन गई है कि वेदो का सबसे बड़ा सरक्षक यदि कोई है तो आर्य समाज।

आज आर्य समाज के इस महत्व को मिटाने की कोशिश हो रही है। हमारे देश मे जो आर्य समाज के विरोधी हैं वह जब इस प्रकार की बात लिखें तो हमको कष्ट नहीं होता क्योंकि हम जानते हैं कि वह किस भावना से यह सब कुछ लिख रहे हैं। परन्तु जब वह व्यक्ति जो अपने आपको आर्य समाजी कहते हैं और आर्य समाज की सस्थाओ मे शिक्षा प्राप्त करके बाहिर निकलते हैं वह अपनी उन सस्थाओ की मान्यताओ को चुनौती देने लग जाए तो फिर हमारी बात कौन मानेगा और कौन यह स्वीकार करेगा कि वेद अपौरुषेय और ईश्वरीय ज्ञान है। जो इतिहास डा. सत्यकेतु जी विद्यालकार ने लिखा है उन्होंने उसमे वेदों के विषय मे वह भी लिखा है जिसका जिकर मैं पहले कर चुका हू। उसे दोहराने की आवश्यकता नहीं। परन्तु जब एक ही सस्था के दो प्रमुख अधिकारी एक ही विषय पर अपने भिन्न-भिन्न विचार प्रकट करें तो जनता एक ऐसी उलझन में पड़ जाती है जिसमे से निकलना उसके लिये कठिन हो जाता है। वेदों के विषय मे आचार्य प्रियव्रत जी के क्या विचार हैं इस का जिकर मैं पिछले एक लेख मे कर चुका हू। आचार्य रामप्रसाद जी ने भी इस विषय में बहुत कुछ लिखा है वास्तविक स्थिति तो यह कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रायः सब स्नातकों ने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के इस विचार का समर्थन किया है कि वेद अपौरुषेय हैं और ईश्वरीय ज्ञान है।

कहा जाएगा कि मैंने जिन महानुभावो के विचार अपने लेखो मे दिए हैं वह इतिहासकार नहीं हैं। एक इतिहासकार तो एक विषय के सब पक्षों पर गम्भीरता पूर्वक विचार करके अपनी सम्मति जनता के सामने रखता है। यदि इस आधार पर हमने चलना हो तो भी मै आज एक और प्रसिद्ध आर्य समाजी इतिहासकार के विचार पाठको के सामने रखना चाहता हू। स्वर्गीय आचार्य रामदेव जी जैसे प्रकाण्ड पण्डित इतिहासज्ञ और विद्वान् आर्य समाज ने बहुत कम पैदा किये है। उन्होने लगभग 85 वर्ष पहले भारत वर्ष का इतिहास नाम की एक पुस्तक लिखी थी उस समय वह गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य थे। इस पुस्तक मे उन्होने एक अध्याय केवल वेद पर ही लिखा था। वह उन्होने इन शब्दो से प्रारम्भ किया था :—

"वर्तमान सृष्ट्यारम्भ के पूर्व भी वेद विद्यमान था क्योंकि यह सनातन ईश्वर का सनातन ज्ञान है अत यह ससार मात्र के लिए है ऋषि सन्तानो का ऐसा ही विश्वास है। आर्य लोग मानते है कि वेद को किसी मनुष्य या मनुष्यो ने नहीं बनाया। इसी कारण इसमे किसी प्रकार का इतिहास नहीं है। प्रश्न यह उपस्थित होता है कि जब ग्रन्थ कर्ता का ऐसा विश्वास है तो फिर एक देश विशेष क इतिहास मे वेद विषय पर लिखने की क्या आवश्यकता है। इसका उत्तर यह है कि यूरोपियन इतिहास वेत्ता वेद को प्राचीन आर्यों का प्रारम्भिक इतिहास मानते हैं और उससे ऐतिहासिक घटनाए निकालते हैं। इसलिए आवश्यक है कि भारत वर्ष के ऐतिहासिक प्रश्न को हल करते समय इन दोनो पक्षो पर भी विचार किया जाए। वास्तव मे इन दोनो पक्षो मे इतना विरोध है कि एक को स्वीकार करने वाले का प्राचीन आर्यावर्त क विषय मे ऐतिहासिक दृष्टि बिन्दु दूसरे पक्ष के मानने वाले के दृष्टि बिन्दु से सर्वथा विपरीत हुए बिना नहीं रह सकता। आर्य जाति का विश्वास है कि वेद सम्पूर्ण मानसिक आध्यात्मिक तथा प्राकृतिक विद्याओ का भण्डार है प्राचीन साहित्य, दर्शन शास्त्र, ज्योतिष, आयुर्वेद धनुर्वेद विविध विज्ञान यह सब के सब वेद का ही आश्रय लेते है। इतिहास का विद्यार्थी जब वैदिक समय की सभ्यता का पता लगाने लगता है तो उसके सम्मुख दो प्रकार की सम्मतिया उपस्थित होती हैं और वह सन्देह मे पड़ जाता है कि इन दो परस्पर विरुद्ध सम्मतियो मे से किस को उचित और किस को अनुचित मानें। अत आवश्यकता है कि हम उक्त दोनो प्रकार के विचारो की पूरी परीक्षा करें।"

जो कुछ आचार्य रामदेव जी ने अपने इतिहास मे लिखा है वह उससे बिलकुल ही विरुद्ध है जो डा सत्यकेतु ने लिखा है। आचार्य रामदेव जी का मत स्पष्ट और निश्चित है। दूसरी ओर डा सत्यकेतु ने जो कुछ लिख दिया है उसे पढ़ने के पश्चात एक साधारण व्यक्ति इस उलझन मे पड़ जाता है कि वेद वास्तव मे हैं क्या?

इस प्रश्न के कुछ और पक्ष भी हैं जिन पर आगामी अक मे अपने विचार पाठको के सामने रखूंगा।

—वीरेन्द्र

छः जुलाई को याद रखना

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरग सभा ने यह निर्णय लिया था कि 13 जुलाई को पजाब की सब आर्य समाजो के अधिकारियो और प्रमुख कार्यकर्ताओ को जालन्धर बुलाकर पजाब की वर्तमान स्थिति पर विचार किया जाए। इस पर पुन विचार करने के पश्चात अब यह निर्णय लिया गया है कि यह सम्मेलन 7 जुलाई को जालन्धर मे किया जाए और इसे केवल आर्य समाज तक ही सीमित न रखकर हिन्दुओ की दूसरी धार्मिक और सामाजिक सस्थाओ के नेताओ को भी इसमे बुलाया जाए और यह एक प्रकार से सर्वदलीय हिन्दू सम्मेलन बन जाए। इसकी सफलता के लिए यह आवश्यक है कि आर्य समाजी अधिक से अधिक सख्या मे यहा आए। यह सम्मेलन 6 जुलाई को प्रात 10 बजे आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर मे होगा और तीन बजे तक चलेगा, बाहिर से आने वाले भाईयो के भोजन का प्रबन्ध भी वही पर होगा। इसलिए मेरी पजाब की सभी आर्य समाजो के अधिकारी महानुभावों से प्रार्थना है कि 6 जुलाई को इस सम्मेलन मे अवश्य सम्मिलित हो।

—वीरेन्द्र

लुधियाना में विशेष समारोह

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार का वार्षिकोत्सव 30 31 मई तथा 1 जून को मनाया गया। जिस मे स्वामी निगमानन्द जी एम ए यमुनानगर वाले, स्वामी वेदानन्द जी महाराज रोपड वाले, स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज अमृतसर वाले, प निरञ्जन देव जी इतिहास केसरी महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, डा बालकृष्ण जी पी एच डी, बहिन बिमला जी छाबडा, प्रिंसीपल लाल बहादुर शास्त्री महिला कालेज बरनाला, बहिन इन्दूपुरी मोगा, नौजवानों के हृदय समाट युवा भजन गायक श्री विजय आनन्द जी फिरोजपुर, श्री रामनाथ जी यात्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, वेद प्रचार भजन-मण्डली लुधियाना तथा अन्य उपदेशको के प्रवचन तथा भजन हुए।

शुक्रवार 30 5-86 को प्रात विश्व शान्त्यार्थ गायत्री महायज्ञ की अग्नि लुधियाना नगर के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री राजेन्द्र जी दीवान ने अपने कर-कमलो से प्रज्ज्वलित की। स्वामी सच्चिदानन्द जी तथा निगमानन्द जी के मनोहर प्रवचन हुए। वेद प्रचार भजन-मण्डली ने अपने मधुर भजनो से उपस्थित धर्म प्रेमियो का आनन्दित किया। नगर मे इस शान्त्यार्थ गायत्री महायज्ञ का इतना प्रभाव पडा कि दूसरे दिन यजमानो की सख्या तीन गुणा बढ गई। बडे हवनकुण्ड के साथ एक और हवन कुण्ड लगाकर कठिनता से यजमानो को स्थान दिया गया। सब मे बडी प्रसन्नता इस बात की थी कि अधिकतर यजमान युवा वर्ग मे से थे तथा नए परिवारों मे आर्य समाज की वेदी पर आये थे। उन्होने बडी श्रद्धा तथा पवित्र भावना से यज्ञ सम्पन्न कराया और दिल खोल कर आर्य समाज को दान दिया। स्वामी निगमानन्द जी महाराज तथा स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज के लाभदायक एव जीवन उपयोगी प्रवचना के पश्चात युवा गायक श्री विजयानन्द तथा रामनाथ यात्री जी ने अपने भजन गाकर ज्ञान की वर्षा की। हालाकि वर्षा प्रात से ही हो रही थी फिर भी धर्म प्रेमियो की सख्या प्रथम दिन से दुगनी से भी अधिक थी। दोपहर को महिला सम्मेलन हुआ जिस की अध्यक्षता श्रीमती यशवन्ती जी भल्ला प्रिंसीपल शास्त्री माडल स्कूल ने की। मच सचालन बहिन शान्ता जी गौड प्रधाना स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार ने किया। पजाब भर से बहिनो ने इस सम्मेलन मे सम्मिलित होकर उत्सव की गरिमा को बढा दिया। प निरञ्जन देव इतिहास केसरी जी ने इतिहास के झरोको को बतलाते हुए चरित्र निर्माण मे महिलाओ की भूमिका दर्शाई तथा मानव की उन्नति तथा निर्माण मे उनके कर्त्तव्य को ही मुख्य बतलाया। स्वामी सच्चिदानन्द जी ने भी महिलाओ के दायित्व को बड सुन्दर तथा सरल भाषा मे वर्णन किया।

वेद प्रचार भजन मण्डली तथा श्री विजयानन्द जी के भजनो ने महिला सम्मेलन मे अपनी अनूठी धाक बिठाई। लुधियाना की सभी स्त्री आर्य समाजो ने इस सम्मेलन मे बढ चढ कर भाग लिया। रात को युवा सम्मेलन की अपनी ही शान थी पजाब भर से युवक इस सम्मेलन मे भाग लेने के लिय आये हुए थे। युवा सम्मेलन की अध्यक्षता लुधियाना नगर के विख्यात युवा व्यापारी श्री बोधराज भाटिया जी (सुपुत्र पजाब के गणमान्य कवि स्वर्गीय राम शरणदास प्रेमी) मालिक भाटिया आटो ट्रेडज वाला ने की। मानसा मण्डी, बरनाला तथा फिरोजपुर के युवको ने सम्मलन मे पजाब की परिस्थितियो का वर्णन करते हुए निर्दोष लोगो की हत्याओ की भर्त्सना की तथा पजाब तथा केन्द्र सरकार को इस स्थिति को सुधारने के लिये ठोस तथा शीघ्र पग उठाने के लिये कहा। युवको को उनका कर्त्तव्य बतलाते हुए आगे आने को कहा। ऐसे सम्मलन पजाब के अन्य नगरो मे करने की योजना बनाई गई। बरनाला के युवको ने अपने नगर मे सम्मेलन करने की घोषणा की। श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने कहा कि पजाब की जो यह परिस्थितिया हैं वह कोई सन्तोषजनक नही हैं। गाव से हिन्दू लोग दूसरे प्रातो को जा रहे है, गावो मे उनका रहना दूभर कर दिया गया है यह सारा प्लान एक सोची समझी स्कीम के अनुसार हो रहा है, हमे ऐसे लोगो को अपने आर्य समाजो मे स्थान देना चाहिए। नौजवानो के कर्त्तव्य की चर्चा करते हुए उन्हे आगे आने का आह्वान किया और घोषणा की कि युवको को आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब उनके सगठन को शक्तिशाली बनाने के लिये हर प्रकार की सहायता देगी। युवक आगे आए, उन्हे सभा मे पूरा मान दिया जावेगा। तथा प्रान्तीय सम्मेलन करने पर आर्थिक सहायता भी दी जाएगी। सम्मेलन रात 11 बजे तक चलता रहा। उसके पश्चात युवको ने विचार गोष्ठी की। युवक सभा के प्रसार के लिए कई प्रकार की योजनाए बनाई गई। जिला स्तर पर सयोजक नियुक्त किए गए। श्री रोशन लाल जी शर्मा को आर्य युवक सभा पजाब का सयोजक बनाया गया श्री चड्ढा को लुधियाना जिला मे आर्य युवक सभा की शाखाए खोलने के लिए सयोजक नियुक्त किया गया। और भी कई योजनाए बनाई गई। युवक सभा के कार्य के प्रसार के लिये शीघ्र से शीघ्र पजाब भर मे नई शाखाए खोलने का निश्चय किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरग सभा मे और आर्य युवक सभा के सदस्यो को लेने के लिए प्रस्ताव पास किया गया। यह गोष्ठी रात 1-30 बजे तक चलती रही।

सभी युवक बड उत्साह तथा श्रद्धा स सारे सम्मेलन मे उत्सुकता से बैठ रहे।

रविवार 1 जून प्रात का यज्ञ बाकी दिनो की अपेक्षा अधिक उत्साह-वर्द्धक था। यजमान इतने बढ गये थे कि उनके लिए पृथक हवन कुण्ड का प्रबन्ध करना पडा। पूर्णाहुति के समय लगभग पच्चास यजमानो ने अपने परिवारो सहित पूर्णाहुति डाली। इस के पश्चात श्री नागराज भाटिया जी ने ओ३म का झण्डा लहराया। यज्ञ शेष तथा अल्पाहार के पश्चात वेद सम्मेलन का आरम्भ हुआ। जिस की अध्यक्षता श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने की। वेद के ज्ञान को ईश्वरीय ज्ञान बतलाते हुए सभी विद्वानो ने जीवन सुधार के लिए इसे उपयोगी तथा उसके ज्ञान पर आचरण करने के लिए कहा। युवा गायक श्री विजयानन्द जी ने अपने भजनो से सभी को अपनी ओर आकर्षित किया।

प हरबस लाल जी शर्मा कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने दिल खोल कर गायको को प्रोत्साहित किया तथा धन दिया। एक छोटी सी बच्ची गीताजलि ने महर्षि के गुणगान गाकर लोगो का दिल मोह लिया। सारा उत्सव बड उत्साह तथा हर्षों उल्लास से मनाया गया उपस्थिति की दृष्टि से भी पिछले अनुमान गलत हो गए। लगर पहली ही पक्ति मे अधिक लोगो के आ जाने के कारण समाप्त होता देख कर अधिकारियो ने शीघ्र ही प्रबन्ध करके अपनी दूरदर्शता तथा योग्यता का प्रमाण दिखलाया। तथा अपनी आशाओ से बढ कर आ जाने वाली सख्या को खिलाकर बाटा। पजाब से आए हुए सभी युवको तथा अन्तरग सदस्यो के रात ठहरने व भोजन का उचित प्रबन्ध किया गया। ज्ञानी गुरदियाल सिह आर्य वरिष्ठ उप-प्रधान, श्री रणबीर जी भाटिया ने आये हुये विद्वानो, धर्म प्रमियो, अन्तरग सदस्या, युवको तथा उत्सव को सफल बनाने वाले प्रत्येक सदस्य व कार्यकर्ता का धन्यवाद किया। उत्सव प्रत्येक दृष्टि से सफल रहा। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को वेद प्रचार के लिए 5100 रु दिए। यह कहना कोई अतिश्योक्ति न होगी कि लुधियाना वासियो को काफी समय के बाद ऐसा धर्म सम्मेलन सुनने को मिला। जिस मे उच्चकोटि के विद्वान सन्यासी तथा सगीतज्ञ आए हो तथा लोगो म इतना उत्साह हो। इस की सफलता का सारा सेहरा उन चन्द महानुभावो के कारण है यदि यहा पर उन के नाम न लिखू तो अपने कर्त्तव्य से दूर हटना समझूगा। वे हैं श्री नवनीत लाल जी आर्य प्रधान, ज्ञानी गुरदियाल सिह वरिष्ठ उपप्रधान ला रामजी दास सरक्षक, श्री बलदेव राज सेठी महा-मन्त्री, श्री श्रवण कुमार आर्य कोषाध्यक्ष श्री रणवीर जी भाटिया, श्री नरेन्द्र सिह भल्ला, श्री ज्ञान प्रकाश वर्मा, श्री मदन मोहन चड्ढा, श्री रोशनलाल शर्मा, श्री महिन्द्र प्रताप आर्य, श्री रामलाल जी सूद, श्री खुशबख्त राय सूद, मास्टर लक्षमण दास डा मुलखराज, पुरोहित सुरेन्द्र कुमार शास्त्री, आर्य युवक सभा एव स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार, श्री वेद प्रकाश दुआ, श्री विलायती राम जी महत्ता, श्री जगजीवन पाल जी, सेवक प्रेम कुमार आदि। अन्त मे मैं उन सभी महानुभावो का धन्यवाद करता हू जिन्होने इस सम्मेलन को सफल बनाने मे मुझे सहयोग दिया।

—बलदेव राज सेठी

अध्यापक प्रशिक्षण शिविर !

दिनाक 21 जून स 27 जून तक, वैदिक मिशनरी निर्माण केन्द्र, वेद मन्दिर, (चमेली देवी गर्ल्ज कालेज के सामने) मथुरा पर प्रथम बार सुदिव्य आयोजन।

मानव निर्माण एव राष्ट्र निर्माण मे एक अध्यापक या आचार्य का कितना महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है, यह 'मातृ मान पितृमान-आचार्यवान पुरुषो वेद' शतपथ के इस वचन से भली-भाँति प्रकट है। अध्यापक राष्ट्र के जागरूक पुरोहित हैं।

भारतीय (वैदिक) सस्कृति के उन्नयन के लिए नैतिक अथवा धार्मिक शिक्षा के महत्व को भी आज सभी राष्ट्र-प्रेमी अनुभव करते हैं। कुछ राज्यो मे नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम मे रखा भी गया है, किन्तु छात्रो को 'नैतिक शिक्षा (धार्मिक-शिक्षा) के रूप मे क्या कुछ दिया जावे, इससे अध्यापक प्राय परिचित न होने के कारण छात्रो को कोई सुव्यवस्थित रचनात्मक चिन्तन दे नही पा रहे। और परिणामत हमारी नई पीढी का निरन्तर नैतिक ह्रास हो रहा है। प्रशिक्षित अध्यापको के अभाव मे आर्य विद्यालयो मे भी धर्म शिक्षा या नैतिक शिक्षा मे, कमी आ रही है। इसी अभाव की पूर्त्यर्थ यह महत्वपूर्ण शिविर प्रथम बार आयोजित हो रहा है।

—सुरेशचन्द्र आर्य मन्त्री

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर का वेद प्रचार सप्ताह और वेद प्रचार कार्य

वेद के पवित्र आदेश व महर्षि दयानन्द जी महाराज के उद्देश्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' की पूर्ति हेतु आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर पिछले लगभग 24 25 वर्ष से इस क्षेत्र तथा बाहर भी कई साधनो द्वारा वेद का पावन सन्देश जनता तक पहुचाने का भरसक प्रयत्न करता आ रहा है। इसके लिए यह संस्था अपने प्रति वर्ष के वार्षिकोत्सवो के अतिरिक्त घर-घर मे पारिवारिक सत्सगो के माध्यम से वेद प्रचार का पुनीत कार्य करती आई है। इसी कडी मे इस बार भी वेद प्रचार सप्ताह का 4-6 86 से 9-6 86 तक आयोजन किया गया। यह सत्सग प्रतिदिन लोगो के घरो मे ही किये गये।

पूज्यपाद पडित बलराज जी सगीताचार्य (भजनोपदेशक) के द्वारा प्रतिदिन इन सत्सगो मे वेद प्रचार का कार्य होता रहा। इन पारिवारिक सत्सगो का विवरण आगे इस प्रकार दिया जा रहा है।4-6 86 बुधवार को साय 8 बजे से 10 बजे तक श्री चुनीलाल जी के घर पर पारिवारिक सत्सग किया गया। उपस्थिति भी काफी थी। वेद प्रचार के लिये 150 रुपये धन प्राप्त हुआ।

5-6 86 को आर्य समाज वेद मन्दिर के प्रधान श्री अमीचन्द जी आय के निवास स्थान पर पारिवारिक सत्सग किया गया। पडित बलराज जी ने अपनी पवित्र वाणी द्वारा वेद की अमृत वर्षा की। इस सत्सग मे भी उपस्थिति काफी थी और आर्य समाज वेद मन्दिर को वेद प्रचार के लिए125रु धन प्राप्त हुआ।

6-6 86 को श्री अशोक कुमार के निवास स्थान पर पारिवारिक सत्सग का आयोजन किया गया। यज्ञ का काय प मनोहर लाल जी आय ने पूर्ण करवाया। प सन्तराम जी आर्य ने प्रभु भक्ति के भजन गाये। उसके पश्चात प बलराज जी ने लोगा को अपनी पवित्र वाणी द्वारा मन्त्र मुग्ध किया और 105 रु, धन एकत्र हुआ।

7-6-86 को पडित श्री सन्तराम जी आर्य (उप मन्त्री आर्य समाज वेद मन्दिर) के निवास स्थान पर पारिवारिक सत्सग का आयोजन किया गया। आर्य नगर के अश्विनी कुमार व बस्ती दानिशमन्दा से श्री यशपाल ने अपन मधुर भजन जनता के सामने रखे। उसके बाद प बलराज जी ने वेद की पवित्र कथा की। उसके बाद प मनोहर लाल जी ने आय समाज के किये गये कार्यो पर प्रकाश डाला। शान्ति पाठ द्वारा यज्ञ शेष वितरण के साथ सत्सग समाप्त किया गया और धन राशि 275 रु प्राप्त हुई।

8-6-86 को पारिवारिक सत्सग एक जलसे तथा समारोह के रूप मे मनाया गया। यह सत्सग आर्य समाज वेद मन्दिर के पुरोहित पडित मनोहर लाल आर्य के निवास स्थान पर किया गया। इस अवसर पर पडित मनोहर लाल के दोनो लडको श्रुतिकान्त तथा शशिकान्त का प सत्यदेव जी विद्यालकार द्वारा यज्ञोपवीत सस्कार करवाया गया। यज्ञ के बाद यज्ञशेष वितरण हुआ। उस के बाद प बलराज जी ने अपने मधुर भजनो व प्रवचनो द्वारा वेद की कथा कर लोगो को निहाल कर दिया। इस अवसर पर श्री ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट श्री प हरवसलाल व प किशन चन्द जी, श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब) डाक्टर ज्ञानचन्द जी व दूसरे कई महानुभावो ने अपने-अपने विचार आर्य जनता के सामने रखे। इस अवसर पर पडित हरवसलाल जी शर्मा द्वारा दो जरूरतमन्द महिलाओ को सिलाई मशीने प्रदान की गई। तथा एक लडकी को शादी के लिये आर्थिक सहायता भी प्रदान की गई। इसके बाद पडित मनोहर लाल व श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न ने आर्य समाज के द्वारा किये कार्य तथा आर्य समाज के वर्तमान किए जा रहे कार्यो पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर उपस्थिति बहुत ज्यादा थी। वेद प्रचार हेतु आय समाज वेद मन्दिर को 174 रुपये प्राप्त हुए। बाद मे शान्ति पाठ के द्वारा समाप्ति हुई। इस अवसर पर प मनोहर लाल जी द्वारा एक भारी ऋषिलगर का भी आयोजन किया गया जिसमे सैकडो ही नर-नारियो व बच्चा ने भोजन किया।

9 6 86 को साय8 बजे से 10 बजे तक पारिवारिक सत्सग का आयोजन श्री सरदारी लाल जी के घर पर किया गया। इसमे भी उपस्थिति काफी ज्यादा थी। वेद प्रचार हेतु काफी धन प्राप्त हुआ। बाद मे शान्ति पाठ व प्रचार वितरण द्वारा सत्सग की समाप्ति की गई।

इसी सत्सग के साथ वेद प्रचार सप्ताह का समापन किया गया। यह वेद प्रचार सप्ताह काफी प्रभावशाली रहा।

—कमल किशोर-मन्त्री

दु:खद और आश्चर्यजनक है

'आर्य मर्यादा' के 1 जून 1986 के अक मे सम्पादकीय के अन्तर्गत डा सत्यकेतु विद्यालकार जी की पुस्तक 'भारतीय सस्कृति और उसका इतिहास' स उद्धृत कुछ अश पढ। निश्चय ही वह सब यर्थाथ के विपरीत है।

डा सत्यकेतु के यदि ये अपने विचार होते तो इतने आपत्तिजनक न होते। परन्तु इसका स्पष्टीकरण करते हुए उन्होने श्री वीरेन्द्र के नाम लिखे अपने पत्र मे जो कुछ लिखा है, निश्चय ही वह दु खद और आश्चर्यजनक है। उन्होने लिखा है कि विद्यार्थी किसी पुस्तक से तभी लाभ उठा सकते है जब उस मे यूनिवर्सिटी द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार लिखा जाए। उनका यह भी कहना है कि ऐसी अनेक पुस्तकें पहले स मौजूद थी। तब फिर उन्हे वैसी ही पुस्तक लिखने की आवश्यकता क्या पडी? इसका एक ही उत्तर बनता है—'पैसा कमाने के लिये।

मुझ कोई शिकायत न होती यदि डा सत्यकेतु अपनी पुस्तक के मुख पृष्ठ पर छाप देते—'मैने इस पुस्तक मे वदो के विषय मे जो कुछ लिखा ह, वह वदा म कही नही लिखा है मैने जो कुछ लिखा है वह सब झूठ है। यह सब तो मैंने कुछ पैसे कमाने के लिये लिखा है, क्योकि अर्थस्य पुरुषो दास।"

परन्तु उन्होने ऐसा नही किया। परिणाम क्या होगा। आगे आने वाले लेखक अपनी पुस्तका मे यही बातें लिखेंगे। डा सत्यकेतु क कथन को उद्धृत करने स पहले वह लिखते—

"इस विषय मे वेदा के प्रसिद्ध विद्वान और वदो के यथार्थ स्वरूप के अध्ययन अध्यापन क लिए आय समाज द्वारा सस्थापित गुरुकुल कागडी विश्व विद्यालय के स्नातक, प्राध्यापक, कुलपति एव कुलाधिपति डा सत्यकेतु की मान्यता ह ।" "आर्य समाज के एक अप्रितम विद्वान के विचारो के वेदानुकूल होने और आय समाज द्वारा मान्य होने मे सन्देह नही किया जा सकता।

आय समाज की वही स्थिति होगी जो कभी शास्त्रार्थो मे मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ के दौरान होती थी, जब पौराणिक पण्डितो द्वारा अथर्ववेद मे प्रमाण प्रस्तुत करते हुए यह कहा जाता था कि आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान और डी ए वी कालिज लाहौर के सस्कृत विभाग अध्यक्ष प राजाराम शास्त्री ने अथर्ववेद के इस मन्त्र मे मृतक श्राद्ध का वेदानुकूल होना सिद्ध किया है।

यह भी बहुत हद तक ठीक है कि मैक्समूलर, सायण, महीधर आदि ने भी वेदो का जो अर्थ (अनर्थ) किया है, वह उनका निजी विचार नही था। निहित स्वार्थो के कारण ही उन्होंने वैसा किया था। —विद्यानन्द सरस्वती

री 14।16 माडल टाऊन दिल्ली

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित समाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की 1-6-86 की अन्तरग सभा मे आशानन्द जी आर्य (लुधियाना) को आर्य समाजो का निरीक्षक नियुक्त किया गया है। वह आर्य वीर दल के अधिष्ठाता भी हैं और अब निरीक्षक भी नियुक्त किए गए हैं। इसलिए सभी आर्य समाजो के अधिकारी महानुभावो से प्रार्थना है कि श्री आशानन्द जी आर्य जिस भी आर्य समाज मे पधारें वह समाज का जो भी निरीक्षण करना चाहे उन्हे सब आवश्यक कागजात दिखा दिए जाए तथा अवश्यक सहयोग दें, और इस सम्बन्ध मे वह जब तक समाज मे रहना चाहे उनके रहने की समुचित व्यवस्था भी कर दें।

महाव्रत शर्मा
सभा महामन्त्री

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज प्रीतनगर सोढल रोड जालन्धर की 27-5-86 की साधारण सभा की बैठक मे चुनाव निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान—श्री चौ सुखदेव सिंह जी, उपप्रधान—श्री धर्मपाल जी, मन्त्री—श्री विजय कुमार जी, उपमन्त्री—श्री ठाकुर कर्मसिंह जी, कोषाध्यक्ष—श्री मा. फकीरचन्द जी।

—कर्मसिंह
उपमन्त्री

आर्य समाज के वर्तमान संदर्भ में आर्य युवक

लेखक—श्री रामशरण दास गोयल
प्रधान आय युवक समाज बरनाला

मा`यवर प्रधान श्री वीर`द्र जी ! धारावाहिक लेख लिखने से पहले प्रधान पद पर फिर से नियुक्ति के लिए युवको की ओर स बधाई।

प लेखराम एव स्वामी श्रद्धान`द की बलिदान के बाद एक बार आय समाज को यह सोचने के लिए बाध्य होना पडा था कि आय समाज म आय युवको का सगठन अवश्य होना चाहिए। यदि एमा न हुआ नो आय समाज को नुकसान उठाना पड गा। य ी कारण है कि युवका को आय वीर दल के रूप में प्रशिक्षित किया जाने लगा था। यह काय आज भी हरियाणा एव देहला मे प्रशसनीय है। मैं सभा का ध्यान इसलिए आकर्षित करना चाहता हू क्योकि पजाब मे आय समाजा म थोड गिने चुन पुराने लोग हवन करके अपने कत्त व्य की इति श्री समझते हैं। युवका को न ता कोई बलाता है और न ही उ`हे काय करने की प्ररणा दी जाती ह। ग`नि अपवाद म क`ी युवक समाज हैं भी उनम सही काय नही लिया जाता।

मैं स्वय ग्क अनुशासन प्रिय व्यक्ति हू और अनुशासन मे रहना पस`द करता हू परन्त खेद है कि कोई माग दशक नजर नही आ रहा।

मैने प्रधान जी का जनाने के लिए यह लेखमाला प्रारम्भ की है कि केवल बढा म आप सारा काय नहीं ल सकन आय यवक चाहन हैं कि आपका सरक्षण हम प्राप्त हो। आप हम माग दशन द ताकि वनमान हालाता पर युवक कुछ कर सक। एक समय था जब आय यवका न स्वामी स्वतन्त्रान`द के निदश पर हदराबाद के निजाम को हिला क रख दिया था वीर`द्र जी हमे आपके कुशल नेतृत्व म पूरा विश्वास है। पजाब क वनमान हालातो को नजर म रखते हुए मैं चाहता हू कि युवा सगठन मजबूत हो। आपका निर्देशक आय युवको को आगे बढने मे एक आलम्बन सिद्ध हो सकता है। काश कि आप मेरी भावनाओ को नजर रखते हुए इस काय को आग बढाए। मैंने आय युवको का विश्वास इस लिए प्रदर्शित किया है कि आप एक निर्भीक कुशल लेखक एक निर्देशक हैं। बरनाला का युवा वग अभी नवजात अवश्य है परन्तु समय पडने पर शहीदो की भाषा मे कहेंगे—

'समय आने पर तुझे बता देंगे ऐ आसमा
अभी स हम क्या बताए क्या हमारे दिल मे है।"

(क्रमश)

देश संभालो !

लेखक—श्री कवि कस्तूर चन्द जी 'घनसार'
कवि कुटीर पीपाड शहर (राजस्थान)

देश सभालो ! ओ नर नेता, दुश्मन ऊपर मडराए।
देश विभाजन करने के, षडयन्त्र है बडे रचाए ॥

उग्रवादी छोड भर पौरुष घर का बैरी बन गये।
घर वाले घर रहे विनाशक दुश्मन उनको उकसाए ॥
भारत मे भारत का टुकडा पास पडोसी चाह रहा।
अमरीकन आगे कर उनको फ़सला कर उकसाह रहा है ॥
भारत मे हत्याए होती हिन्दू जनो को मरवाए।
देश सभालो ओ नर नेता दुश्मन ऊपर मडराए ॥

साधु लाखो बैठ फोकट अन्न-वतन का हैं खाते।
देश ज्ञान जिन दिल मे नाही केवल स्वाङ्ग बनाते ॥
बैठ रजत के रम्य सिंहासन चाहते अपनी प्रतिष्ठा।
देख सके नही बैठ बैठ भरा दिला मे कनिष्ठा ॥
देश उजाड रहा है दुश्मन ध्यान उसी का बिसराए।
देश सभालो ओ नर नता दुश्मन ऊपर मडराए ॥

काशी की शिवकी गति देखो कश भवन था मथुरा क।
अवधपुरी के राम सदन को देखो शासन असुराके ॥
केवल नङ्ग रहने से शिव कभी न प्रसन्न होता है।
सयासी बन बैठ रहते पढते रहते पोथा है ॥
करे वतन की रखवाली है, वही सन्यासी कहलाये।
देश सभालो ! ओ नर नेता दुश्मन ऊपर मडराए ॥

कैसे ! रहे हमारा सत्य धम सनातन आदी का।
चारो ओर देश के ऊपर। आतङ्क उग्रवादी का ॥
सबका है कत्त व्य देश में, सगठित हो कर ध्यान रख।
देश बचाओ शक्ति बचाओ, भारत का अभिमान रख।
आ गई जटिल परीक्षा जागो, युद्ध के बादल उमडाए।
देश सभालो ! ओ नर नेता दुश्मन ऊपर मडराए ॥

रही पोपता पोपाकी है। पाहन आसरे बैठ हैं।
पाहन जड कुछ कर नही पाते अकडाई मे ऐंठे हैं ॥
सोमनाथ का मन्दिर देखो, कहा ? चला शिव शङ्कर था।
धनका कोष लुटाया सारा, पोपो का हुं बवण्डर था ॥
सोचो करो बढो फिर आगे, महर्षि तुम्हें बचाये।
देश सभालो ओ नर-नेता, दुश्मन ऊपर मडराये।

अभी न आख खोल नही पाते भिन्न-भिन्न हो भावों के।
रहे भरोसे राम कृष्ण को मिथ्या रख प्रस्तावो के ॥
बनो राम तुम कृष्ण मुरारी, भीम, अर्जुन हो धनुधारी।
जीतोगे तब रावण युद्ध को, बन जाओ सब धनुर्धारी।
'घनसार' उदास होत कब आवे समय सन्देशा दे पाये।
देश सभ लो ! ओ नर नेता—दुश्मन ऊपर मडराये ॥

———

बालिकाओ तथा बालको के हितार्थ आर्य विद्वानो से नम्र निवेदन

एक करीब 32 पष्ठो तथा दूसरी करीब 16 पष्ठो की पुस्तक जो विशेष कर कक्षा 4 से 8 तक के हिताथ तथा 9 से 12 कक्षा के युवको व युवतियो के लिए सरल मनोरजन शिक्षाप्रद प्ररक हो परन्तु इस मे खण्डन न हो बस पूण मण्डनात्मक हो कविता दोहे उदाहरण कहानिया सभी प्रकार का रूप लिए हो तो बहुत अच्छा। विषय (1) शिक्षा का उद्दश्य, (2) माता पिता, गुरु के प्रति हमारा कत्त व्य (3) समाज के प्रति हमारा कत्त व्य यह लिख कर भेज।

यह छपवा कर लागत से भी कम प्रचाराथ प्रकाशित की जाएगी। पुस्तक लेखको मे से जिनकी पुस्तक पसन्द होगी। दो को इनाम 100 रुपए तथा 150 रुपए दिया जाएगा। अ`तिम फसला आश्रम कमेटी ही करेगी। छपने पर 25 प्रतिया भी भेजी जाएगी।

—श्रीराम पथिक मानव सवाश्रम
रुडकी रोड छुटमलपुर सहारनपुर

पंजाब बचाओ दिवस

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर में पंजाब बचाओ दिवस मनाया गया

1-6-86 रविवार को प्रातः काल बृहद् यज्ञ हुआ। उस के पश्चात् "पजाब दिवस" मनाने हेतु ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा, राष्ट्रीय सुरक्षा समिति, बाल्मीकि सभा, सनातन धर्म सभा व अन्य व्यापारिक सस्थाओ के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओम् प्रकाश जी कालिया ने कहा कि सभी हिन्दुओ को सगठित होकर उग्रवाद का मुकाबला करना होगा। श्री जुगलकिशोर जी गोयन्को ने कहा कि आर्य समाज को अग्रसर होना चाहिए। राष्ट्रीय सुरक्षा समिति पजाब के कन्वीनर श्री जय कृष्ण जी शर्मा ने बड़े ही ओजस्वी विचार दिए। उन्होने कहा कि उग्रवादी आतकवादी, पृथकतावादी शक्तियो का डट कर मुकाबला करना होगा। हिन्दुओ की सहनशीलता को कायरता नही समझना चाहिए। पजाब व केन्द्र की सरकार पजाब मे हिन्दुओ के अपने ही देश मे शरणार्थी बनाने के लिए जिम्मेवार है। उग्रवाद को सरकारी उग्रवाद ही समाप्त कर सकता है। श्री निहालचन्द जी बीवा, सम्पादक बाल्मीकि सवेश ने बोलते हुए कहा कि सरकार कुम्भकरण की नींद सोई है। एक तरफ तो उग्रवादी हिन्दुओ को कत्ल कर रहे हैं और दूसरी ओर एक सोची समझी चाल के अधीन ऐसी फिल्मो का निर्माण हो रहा है जिससे हिन्दुओ की धार्मिक भावनाओ को आहत किया जा रहा है। फिल्म "कलयुगी रामायण" इसका स्पष्ट प्रमाण है।

एक प्रस्ताव पारित करके राजीव गाधी व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह से माग की गई कि पजाब को सेना के हवाले किया जाए। अन्तर्राष्ट्रीय सीमाए सील की जाए।

एक अन्य प्रस्ताव द्वारा माग की गई कि फिल्म "कलयुगी रामायण" का प्रदर्शन रोका जाए और इस पर प्रतिबन्ध लगाया जावे।

अन्त मे प्रधान जी ने घोषणा की कि आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर के द्वार सभी हिन्दुओ के लिए खुले हैं। जिन हिन्दुओ का मनोबल देहातो मे टूट गया है वह पजाब न छोड़े बल्कि सुरक्षित स्थानो पर पहुचे हमारी समाज उनके रहने, खाने, पीने का प्रबन्ध करेगी। उनके लिय नौकरिया व धन्धे का प्रबन्ध करने का समुचित प्रयास करेगी।

अन्त मे शान्ति पाठ के साथ सभा विसर्जित हुई।

—वीरेन्द्र देवगण
महामन्त्री

आर्य समाज ओहरी चौक बटाला में पंजाब बचाओ दिवस

आर्य समाज बटाला ओहरी चौक के साप्ताहिक सत्सग के उपरान्त श्री विजय कुमार अग्रवाल की अध्यक्षता मे एक सभा आयोजित हुई। जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के आदेश अनुसार पजाब बचाओ दिवस मनाया गया इस सभा को सम्बोधित करते हुए श्री बलदेव मित्र कालरा भूतपूर्व पालिका सदस्य ने कहा कि पजाब मे लगातार हिन्दुओ पर हो रहे अत्याचार को रोकने के लिए केन्द्र सरकार को तुरन्त पजाब को सेना के सपुर्द कर दिया जाना चाहिए।

—विजय कुमार अग्रवाल
मन्त्री

आर्य समाज खरड में पंजाब बचाओ दिवस

रविवार 1-6-86 को आर्य समाज खरड मे पजाब की स्थिति पर विचार किया गया सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया कि पजाब को सेना के हवाले कर दिया जाए और पंजाब में बढ़ते हुए उग्रवाद को रोका जाए और जो लोग उग्रवाद की कार्यवाहियों का शिकार हुए हैं और पजाब छोड कर जा रहे हैं उनकी सहायता की जाए ताकि वह पजाब न छोडें। भारत सरकार से प्रार्थना है कि पजाब में सेना तैनात कर के हिन्दुओ का मनोबल ऊचा करें। गृहमन्त्री भारत सरकार को ऐसा पत्र भी लिखा गया और तार भी दी गई है—

आर्य समाज दीनानगर में पंजाब बचाओ दिवस

1-6-86 रविवार को आर्य समाज दीनानगर मे एक सभा हुई जिस मे पजाब की वर्तमान स्थिति पर विचार हुआ और श्री भगत विशन वाली, श्री धर्मदत्त जी ओहरी स्वामी सुबोधानन्द जी महाराज जैसे वक्ताओ ने जोरदार शब्दो से आतकवाद की निन्दा की और केन्द्रीय सरकार स माग की कि जितनी शीघ्रता हो सके उतनी शीघ्रता स पजाब को सेना के हवाले किया जाए अन्त मे स्वामी सर्वानन्द जी महाराज न लोगो से कहा कि वह सब मिल कर आतकवाद का डट कर सामना कर और पजाब के सासद जो जनता के वोटो से केन्द्र मे गये हैं उनको इस बात का एहसास करवाये कि पजाब जल रहा है और आप आराम से वहा बैठ है। इतना कुछ होने पर भी आप मूकदर्शक बने हुए हो। सभा के अन्त मे आतकवादियो की गोली के शिकार पजाब म मरने वाल सब व्यक्तियो की आत्माओ की सदगति के लिए ईश्वर स प्रार्थना की गई कि ईश्वर उनके परिवारो तथा सम्बन्धियो का इस दु ख को सहन करन की शक्ति प्रदान कर।

—रघुनाथ सिंह
मन्त्री

भार्गवनगर जालन्धर मे पजाब बचाओ दिवस

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर मे 1-6 86 को पजाब बचाओ दिवस मनाया गया। जिसमे एक प्रस्ताव पास कर भारत सरकार से माग की गई कि पजाब के सीमावर्ती क्षत्र तुरन्त सेना के हवाले कर दिए जाए। पजाब के हिन्दुओ मे जो भय और आतक फैला हुआ है सेना को पजाब मे तैनात करके उसे तुरन्त दूर किया जाए। यदि भारत सरकार इस ओर ध्यान न दिया तो यह देश के लिए बहुत हानिकारक सिद्ध होगा।

इस विषय की तारे भी प्रधानमन्त्री गृहमन्त्री और राष्ट्रपति को दी गई।

—कमलकिशोर-मन्त्री

पंजाब को सेना के अधीन किया जाए

आर्य समाज सगरूर की साप्ताहिक विशेष बैठक मे सर्व सम्मति स यह फैसला किया गया कि पजाब की वर्तमान परिस्थिति मे एक सम्प्रदाय द्वारा निर्दोष लोगो की हत्या व बेमतलब तग किये जाने के कारण आज पजाब की हिन्दू जनता विकट परिस्थिति मे है अत अब जलते हुए पजाब को शीघ्रातिशीघ्र सेना के अधीन किया जाए।

उक्त प्रस्ताव की कापी तार द्वारा भारत के प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति व गृह मन्त्री को भेजी गई।

—प्रधान

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज जीरा का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ। जिस मे निम्नलिखित अधिकारी सर्व सम्मति से चुने गये।

प्रधान—श्री सोमनाथ जी,
मन्त्री—श्री मेहरचन्द जी,
उपमन्त्री—श्री हरबसलाल जी
कोषाध्यक्ष—श्री सुभाषचन्द्र जी।
उपप्रधान—श्री बलविन्द्र कुमार जी
लायब्रेरियन—श्री हरबस लाल जी
लेखानिरीक्षक—श्री प्रमोदकुमार जी

—मेहरचन्द
मन्त्री

आर्य समाज धूरी मे पजाब बचाओ दिवस

दिनाक 1-6-86 को आर्य समाज मन्दिर, धूरी मे सभा प्रधान जी के आदेशानुसार 'पजाब बचाओ दिवस' मनाया गया। जिसमे आर्य समाज धूरी के सदस्यो के अतिरिक्त सनातन धर्म सभा, ब्राह्मण सभा, जैन सभा, गौशाला कमेटी, व्यापार मण्डल, खतरी सभा के प्रतिनिधियो ने भाग लिया।

31 मई व 1 जून को आर्य कुमार सभा, धूरी के संयोजक श्री राधेश्याम मोहिन्द्र जी ने नवयुवको के एक शिविर का आयोजन किया। इस शिविर की सरक्षता महात्मा प्रेम प्रकाश जी वानप्रस्थी ने की। इस शिविर मे 55 नवयुवको ने भाग लिया।

—सतीश आर्य
कोषाध्यक्ष

आर्य विवाह सम्पन्न

अखिल भारतीय आय परिवार सघ कोटा (राज) ने तथा कथित जन्मना जात पात तोड कर गुण कर्मानसार आय परिवारो क निर्माण योजना अर्थात आर्यो के विवाह सम्बन्ध आर्यों मे ही हो योजना के अनुसार आय जगत के मूधन्य विद्वान डा सुमेधामित्र वेदालकार एम ए पी एच डी (प्रवक्ता स्वामी विवेकानन्द इण्टर कालेज गोडा) एव सु श्री विद्यावती आर्या बी ए का विवाह सस्कार ग्राम रसूलाबाद (अफजलगढ) जिला बिजनौर (उ प्र) मे दिनाक 15 मई 1986 को आय परिवार सघ के पुरोहित श्री वेद प्रिय शास्त्री एव मन्त्री रामकृष्ण आय एम ए के पौरोहित्य एव सयोजन मे सम्पन्न हुआ।

दोनो पक्षो के परिवारो के अतिरिक्त वर वधु को आशीर्वाद देने वालो मे डा ज्वलन्त कुमार जी शास्त्री श्री सत्यकाम जी आय (प्रवक्ता रणञ्जयसिंह कालेज अमेठी) प अच्युतानन्द जी त्रिपाठी (गोडा) श्री धर्मवीर जी शास्त्री (हरियाणा) एव शिवमुनि सिंह जी (भतपूव अध्यक्ष गुरुकुल पीलीभीत) आदि के नाम उल्लेखनीय रहे। इस अवसर पर वैदिक धम का प्रचार भी हुआ। जिसमे डा ज्वलन्त कुमार जी शास्त्री श्री वेदप्रिय जी शास्त्री एव प त्रियुगी नारायण जी पाठक के ओजस्वी प्रवचन एव भजन हुए।

—रामकृष्ण आय एम ए
मन्त्री

आर्य समाज नैरोबी का वार्षिक चुनाव

आय समाज नैरोबी (कीनिया) पूर्वी अफ्रीका का वार्षिक निर्वाचन 1986 87 के लिए सब सम्मति से निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान—श्री डी डी सूद
उपप्रधान—श्री नवल भल्ला,
श्री धम अहलूवालिया
महामन्त्री—श्री रजनी कुमार ओबेराय
सहायक मन्त्री—श्री रामदेव जारी,
कोषाध्यक्ष—श्री अनिल कपिल,
सह कोषाध्यक्ष—श्री विजय धई,
पुस्तकाध्यक्ष—श्री देवेन्द कुमार भल्ला।

प्रबन्ध समिति

श्री डी आई कपिला, श्री महेन्द्र कुमार भल्ला, श्री स्वण भूषण वर्मा, श्री सी आर शर्मा श्री यश सभ्गर, श्री रोशनलाल खन्ना श्री सुधीर भण्डारी, श्री श्रुतिकान्त वर्मा, श्री प्रकाश बहल, श्री चन्द्र प्रकाश माथी, श्री सुशील कोछड, श्री प्रकाश वर्मा, श्री विजय बहल, श्री रमेश वेदी, श्री आर एस भल्ला, श्री डी बी धूपा, जे आर एस वर्मा, श्री श्रावण कुमार आय, श्री अमरनाथ फक्के।— रामदेव जारी

वार्षिक चुनाव

दिनाक 8 6 86 रविवार को आर्य समाज ग्रीन पाक कालोनी, जालन्धर का वार्षिक निर्वाचन श्री अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट की अध्यक्षता मे हुआ। जिसमे आगामी वर्ष 1986 87 के लिये निम्नलिखित अधिकारी चुने गये हैं —

प्रधान—श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट, वरिष्ठ उपप्रधान—श्री नवतेज कवर एडवोकेट, उपप्रधान श्रीमती शारदा शर्मा, उपप्रधान श्री नरेन्द्र कुमार शर्मा, महामन्त्री-श्रीरामकुमार जी शर्मा हैडमास्टर, उपमन्त्री श्री जगदीशराज जी कोषाध्यक्ष श्रीमती उषा शर्मा।

अन्तरग सदस्य—श्री दिलबागराय, श्री राजेश शर्मा एडवोकेट, श्रीमती प्रमोदरानी, श्री वेद प्रकाश भारद्वाज, श्री आर,डी शर्मा,

सभा प्रतिनिधि—श्री अश्विनीकुमार शर्मा एडवोकेट जालन्धर, श्री रामकुमार जी शर्मा, हैडमास्टर जालन्धर।

—अश्विनी कुमार शर्मा

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर में मुद्रित होकर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।
जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

दूरभाष 74250 हरिद्वार 1/3/11/86 रजि. नं. पी..जे.एल 55

वर्ष 1 अंक 14. 22आषाढ़ सम्वत् 2043 तदानुसार 6 जुलाई 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

परमात्मा की भक्ति में ही कल्याण है

लेखक—श्री पं सुरेन्द्र जी शास्त्री लुधियाना

या उद्‌चीन्द्र देव गोपा· सखायस्ते शिवतमा असाम् ।
त्वां स्तोषाम त्वया सुवीरां द्राघीय आयु प्रतरं दधाना ॥

ऋग्वेद 1-53-11

अर्थ (इन्द्र) हे सर्वशक्तिमान् परमात्मन (ये) जो हम लोग (उद्‌चि) ऋचा अर्थात् वेदानुकूल आचरण करने में (देवगोपा) विद्वान् पुरुषो द्वारा किए गये हैं अर्थात् सब प्रकार से सुरक्षित है हम लोग (ते) आपके (सखाय) मित्र और अधिक से कल्याणकारी (असाम्) होवें (त्वा) आपकी (स्तोषाम्) स्तुति किया करें (त्वा) आपकी सहायता से (सुवीरा.) उत्तम वीरता युक्त हो(प्रतर) उत्तमरीत्या (द्राघीय) बड़ी (आयु) अवस्था को (दधाना) धारण करे ?

इस मन्त्र मे चार बातें कही गई हैं यदि मनुष्य इन चारो पर मनन गम्भीरता से करें तो वह ऐश्वर्य मिलेगा, वह मिलेगा, उस सुखत्व को प्राप्त होवे, जो भौतिक सुख से अलग ही होगा। पहली बात यह कही गई कि (उद्‌चि) अर्थात् वेदो के अनुकूल आचरण करने मे देवगोपा—विद्वानो द्वारा सुरक्षित हों। धर्म के अनुकूल आचरण करने के लिए एक विशेष प्रकार के सामाजिक वायु-मण्डल की आवश्यकता होती है। समाज के नियम, समाज की प्रथाए और समाज के विचार सभी मनुष्य जीवन पर प्रभाव डालते हैं एक प्रकार का वातावरण यह भी होता है कि मनुष्य को साधारण सदाचार से रहने के लिए भी कई बार बडी-2 कठिनाईया सहन करनी पडती है। वह सच बोलना चाहता है पर वातावरण के प्रवाह से बोल नही सकता वह ब्रह्मचारी रहना चाहता है परन्तु या तो समाज की कुप्रथाए समाज का विषैला-वायु-मण्डल उसको व्यभिचारी बनाए बिना नही छोडता ? एक दूसरा वातावरण वह है जो सर्वथा इसके विरुद्ध है उस वातावरण मे आकर झूठे से झूठा व्यक्ति भी सत्य का व्यवहार करने लगता है।

हमारी सदाचारी सम्बन्धी अवस्था अधिकतर शारीरिक अवस्था के समान् है—किसी किसी प्रदेश का जलवायु ऐसा दूषित होता है कि वहा आते ही हम बीमार पड जाते है चाहे हम कितने ही शक्तिशाली क्यो न हो—कई स्थान ऐसे थे। स्वस्थकर होते हैं कि महीनो से बीमार चला आ रहा रोगी वह कुछ ही समय मे ठीक एव स्वस्थ हो जाता है। कई बार हम देखते हैं कि डाक्टर, वैद्य लोग भिन्न-2 रोगो के रोगियो को अलग-अलग स्थानो की जलवायु का सेवन करने को कहते हैं।

परन्तु सदाचार सम्बन्धी बातो मे इतना विचार नही किया जाता यह एक बडी सामाजिक त्रुटि है। हम स्वय बडे सदाचारी बनाना चाहते हैं और दूसरो को भी उसी प्रकार का अनुकरण करने को कहते हैं। परन्तु यह विचार नही किया जाता कि किस प्रकार की सङ्गति से सदाचारी बनने की या रहने की सहायता मिलती है।

आप कल्पना करे कि एक बच्चा बहुत झूठ बोलता है अब प्रश्न यह है कि यह इतना झूठ क्यो बोलना सीख गया। सम्भव है कि उसके पुराने जन्म के सस्कार हो—कि वह झूठ बोलने का अभ्यासी बन गया है। यदि ऐसा है तो हमारी वर्तमान सामाजिक अवस्था ऐसी होनी चाहिए थी कि वह आसानी से झूठ बोलने के स्वभाव को कम या दूर कर सकता। आग ही चिनगारी यदि पत्थर पर गिरे तो बुझ जाती है यदि वही चिनगारी रुई के ढेर पर पडे तो जलने लगती है। इसी प्रकार एक कुसस्कार के घटने या बढने के लिए भी सामाजिक वातावरण बहुत जरूरी है। साथ ही यह भी सम्भव है कि उस बालक के पिछले सस्कार बुरे न हो केवल वर्तमान सामाजिक अवस्था ही उसके झूठ बोलने का कारण हो यह भी कई प्रकार से होता है यदि एक घर या परिवार की प्रथाओ पर विचार कर लिया जाये तो भली भाति समझ मे आ जायेगा कि वही नियम किस प्रकार समाज व देश पर भी लागू होते हैं। कई बार बच्चे इस लिए ही झूठ बोलते है कि उनके माता पिता, भाई-बहिन झूठ बोलना साधारण सी बात मानते है बहुत से इसलिए झूठ बोलते हैं कि उस घर मे छोटे से छोटे अपराध के लिए अधिक दण्ड मिलता है इस लिये दोषो से बचने लिये बच्चा बहाने बनाने पर बाधित होता है। बहुत से घरो मे झूठ बोलने पर कोई ताडना नही होती न ही उसे दूर करने का प्रयत्न किया जाता है। यही हाल समाजो का है बहुत से समाज ऐसे है जहा बिना झूठ बोले काम नही चलता। जो धनाढ्य है उसको चुराने या बलात्धन छिन जाने का भय है इसलिये वह छिपा कर रखता है धनाढ्य होते हुये भी दरिद्रो की तरह रखता है। बहुत से समाजो मे धर्मात्मा निर्धन के लिये कोई स्थान नही। इसीलिए जिसके पास कौडी भी नही वह भी आडम्बर बनाये और शान दिखाने के लिये बाधित होता है। बहुत से देशो मे चोरी का अपराध इसलिए होता है कि उनके पास न तो खाने को है न धर्म युक्त धन कमाने के साधन हैं भूखा क्या न करता जब जान पर आ बनी है तब चुरा कर ही पेट पालने लगते हैं।

इस लिए प्रस्तुत वेद मन्त्र मे कहा (उद्‌च) अर्थात् वेदो के अनुकूल या धर्मानुसार आचरण करने से देवगोपा—विद्वानो द्वारा सुरक्षित होने की आवश्यकता है इन्ही देवो को अन्य स्थान पर ब्रह्म और क्षत्र शक्ति के नाम से पुकारा गया है। ब्राह्मण तथा क्षत्रिय विद्वान् ही मिलकर देश या जाति समाज को सुधार सकते है। हमारी समाजिक व्यवस्था इस प्रकार की होनी चाहिये कि धार्मिक जीवन के लिये इतनी कठिनाईया न हो लोग धर्म अवलम्बन ही छोड दे।

दूसरी बात वेद मन्त्र मे यह कही गई है कि हम ईश्वर के सखा हो। अर्थात हम ईश्वर के जैसे गुण कर्म और स्वभाव को धारण करने के लिये प्रेरित हो, मनुष्य उसी का मित्र होना है जिस के गुण उस प्रिय हो और जैसो के साथ मैत्री रखता है वैसे गुण उसमे भी आते-जाते है। अत सबमे उत्तम सखा तो परमात्मा ही हो सकता है प्रभु के प्रेम और मैत्री से हम उत्तम हो सकते हैं। और ईश्वर से मैत्री करने से ही हम "शिवतमा" अर्थात् अधिक से अधिक कल्याणकारी हो सकते है ईश्वर से अधिक जीव का हित करने वाला और कौन है। उसका प्रत्येक कार्य जीव के लिए ही है। उसका कोई कार्य अपने लिये नही है। वह सृष्टि इसलिये नही बनाता कि उसकी शक्ति का प्रकाश हो किन्तु इस लिये कि सृष्टि के जीवो के लिए आवश्यकता है इसलिए जो लोग ईश्वर के सखा होगे उनका भी मुख्य उद्देश्य परार्थ परमार्थ है दूसरे की भलाई करना इससे अधिक धर्म और नही हो सकता। ईश्वर के प्यारो की क्या पहचान है यही कि वह कितना स्वार्थ का त्याग कर सकते हैं दूसरो के हित के लिए दु ख सहना ही परोपकारी होना है।

तीसरी बात यह है कि "त्वास्तोम" अर्थात् प्रभु की स्तुति भी किया करें। उसका गुणगान भी किया करे प्रात साय दोनो समय प्रभु के गुण। कीर्तन करने से मन के मल विक्षेप और आवरण दूर हो जाते है बडे शुद्ध भावो से प्रभु की भक्ति करनी चाहिये भक्ति से श्रेष्ठ शक्ति आत्मिक बल प्राप्त होता है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

एक सार गर्भित लेख

कचरे के ढेर पर अगरबत्ती

ले—श्री पण्डित सत्यदेव जी विद्यालंकार
शान्ति सदन सेंट्रल टाऊन जालन्धर

यह शीर्षक कुछ अटपटा सा लगता है। मेरा अभिप्राय इस से यह है कि जैसे कचरे या कूड़े के ढेर से एक सड़ान्ध या बदबू आती रहती है—उस पर कोई अगरबत्ती लगा दे तो बदबू तो नही हटेगी पर अगरबत्ती की सुगन्ध भी उसमे ही मिल जाएगी। परिणाम कुछ न होगा। ऐसा ही परिणाम कुछ उन अच्छे विचारो का होता है जो निकम्मे विचारो के ढेर के साथ प्रकाशित होते हैं।

एक उदाहरण देखिए! एक समाचार पत्र मे एक ही पृष्ठ पर भक्तो की कथाए हैं जिनमे बेसिर पैर के चमत्कारो की कहानी है। साथ ही किसी सिद्ध पीठ का बड़ा सा चित्र है जिस की भभूति से मनुष्य की सब इच्छाओ की पूर्ति तथा सब रोगो के नाश का अद्भुत वर्णन है। इन के बीच मे ही एक वेद मन्त्र भी सुसज्जित है। वेद मन्त्र का भाव भी बहुत सुन्दर है। इस ही समाचार पत्र मे नियमित रूप से सिनेमा जगत् के हीरो और हीरोइनो के जुड़ते और टूटते रोमान्सो की रंगीली कहानियां भी आ रही है।

मुझे न तो समाचार पत्र को कुछ बुरा भला कहना है। उनका तो काम ही है सब का मन प्रसन्न करना और प्रकाशन बढ़ाना! वेद मन्त्र के लेखक को भी कुछ नहीं कहना। वे एक उभय कार्य बहुत उत्तम भावना से कर रहे हैं। मेरा निवेदन यह है कि परिणाम क्या हुआ? सुगन्ध आई या दुर्गन्ध? वेद मन्त्र के पवित्र विचार का प्रभाव हुआ या बाबा जी की चमत्कारी भभूत का अथवा हीरो और हीरोइन का रोमास अधिक प्रभावी रहा? यह मिला-जुला प्रभाव क्या कचरे के ढेर और अगरबत्ती दोनो की दुर्गन्ध-सुगन्ध के मिले-जुले प्रभाव जैसा नही?

एक और उदाहरण देखिए! बम्बई से अंग्रेजी का प्रसिद्ध साप्ताहिक 'बिलट्ज' प्रकाशित होता है। उसके अन्तिम पृष्ठ पर नियमित रूप से एक लगभग निर्वसना युवती का चित्र होता है। नीचे एक आकर्षक कविता की पंक्ति होती है। साथ ही लगभग पूरे पृष्ठ पर प्रसिद्ध समाजवादी लेखक के ए अब्बास का नए विचारो से पूर्ण लेख होता है। यह पढ़ने वाले पर निर्भर है कि वह समाजवादी विचारधारा का लेख पढ़ता है अथवा युवती का चित्र देखता है। प्रकाशक करन्जिया ने तो दोनो प्रकार के ग्राहको को प्रसन्न करना है।

मैं जो बात कहना चाहता हू वह यह है कि आर्य समाज का अथवा ऋषि दयानन्द का कार्य अगरबत्ती बन कर नही पूरा हो सकता। उसे तो कचरे के ढेर को जलाने वाली प्रचण्ड ज्वाला बनना चाहिए।

मुझे यह देख कर बहुत दु ख होता है कि आर्य समाज का सारा प्रयत्न ही उस छोटी सी अगरबत्ती की तरह प्रभावहीन हो रहा है। हिन्दू समाज मे—हिन्दुस्तान मे समाज की कुरीतियो की अन्धविश्वासो की—कचरे के ढेर की दुर्गन्ध बढ़ती ही जाती है। आर्य समाज के आन्दोलन के होते हुए भी बीसियो नए भगवानो की सृष्टि हो गई। वैष्णो देवी की यात्रा, ज्वालामुखी की यात्रा, केदारनाथ बद्रीनाथ की यात्रा, बारह वर्ष बाद होने वाले कुम्भो के समारोह बीसिया गुणा बढ़ गए हैं। हिन्दुओ के ही क्या, प्राय सब धर्मों के पाखण्ड बीसियो गुणा बढ़ गए हैं। तीर्थों, अवतारो की ही वृद्धि नही हुई, अपितु यात्रियो और भक्तो की संख्या मे अपार बढ़ती हुई है और आर्य समाज के अनुयायी लगातार घटते आ रहे हैं। कुछ प्रभावी नही हो रहे।

मैं गत दिनो इलाहाबाद मे बैठा था। होली का दिन था। कोई भला आदमी बाहर निकलने का हौंसला नही कर पाता। घर मे भी सरसा नही। झण्ड के झुण्ड घूम रहे थे। क्षण भर मे ही विष्णु को भी हनुमान बना देते हैं और सीता को ताड़का। लाऊड-स्पीकर लज्जा को भी लज्जाने वाले गीतो की चीत्कारी सुरो से कानो के पर्दे फाड़ रहे थे। यह ठीक है कि नौजवान लड़के-लड़कियो के उत्साह और खुशी का ठिकाना नहीं पर पकी उमर के गम्भीर सज्जन तो घरो मे दुबके बैठे थे।

उधर संगम पर-जहा पर जाकर सीधे या टेढे ढग से जेब कटवानी ही पड़ती है, दो ढाई लाख की भीड थी। दक्षिणी शैली मे एक अनेक मंजिल का भव्य मंदिर बनाया गया। उद्घाटन के लिए शकराचार्य आ रहे थे। साथ लाखो ही भक्त मडलिया चली आ रही थी। संगम पर बैठा नाव वाले से लेकर पण्डा तक सब ठग ही ठग थे। उन सबकी तो चादी थी। "जस-जस सुरसा बदन बढ़ावा-तासु दुगुन कपि रूप दिखावा" जितना-2 आर्य समाज का कार्य बढ़ रहा है उससे कई गुणा अधिक पाखण्ड-प्रपञ्च, आडम्बर, चमत्कार बढ़ रहा है।

उधर पंजाब मे जहा ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व और विचारो ने सब से अधिक प्रभाव दिखाया था खून की होली खेली जा रही है। आर्य समाज की बड़ी-2 संस्थाओ मे 6-6, 7-7 केसरी पगड़ी वाले नौजवान किरपाने लेकर आते हैं और संस्थाओ के कार्य ठप्प कर देते हैं। पंजाब मात्र के हिन्दू डर से दुबके से पड़े हैं। भेडिया जैसे भेडो के झुण्ड से अपनी इच्छा से जिस भेड को चाहे उठा ले जाता है। ठीक वैसा ही हो रहा है। पता ही नही लग रहा कि आर्य समाज के नाम अथवा कार्य का प्रभाव कहा गया।

मैं समझता हू आर्य समाज ने अपना कार्य छोड दिया है। आर्य समाज को कचरे के ढेर पर "अगरबत्ती" का काम नही करना। कचरे को जलाने वाली ज्वाला बनना है। आर्य समाज हिन्दू धर्म का मात्र एक सुधरा रूप बन गया है। जातिवाद भी वही है, वही खोसले, टडन, कपूर, शर्मा, वर्मा हम हैं। विवाह का ढाचा भी वही है। लेन-देन की अति है। संस्कार विधि निरर्थक हो गई—केवल नामकरण, विवाह और अन्त्येष्टि तीन ही संस्कार रह गए और वे भी परम्परा मात्र। शेष अनावश्यक हो गए। यज्ञ केवल आस्था का आधार बन गए। अमीरो को प्रसन्न कर दक्षिणा प्राप्त करने के साधन।

सनातन धर्म का मूल रूप यही है। ब्राह्मण सर्वत्र भिक्षुक है। जन्म, मरण, श्राद्ध, विवाह, तीर्थ, पूजा-पाठ, ब्राह्मण सर्वत्र धनी-मानी को प्रसन्न करने का प्रयत्न करने वाला दीन भिखारी है। श्री मालवीय जी जैसे तपस्वी ब्राह्मण ने भी दान की अपेक्षा से अलवर के महाराज को राजर्षि की उपाधि दी। इस ही महाराज को आचरण हीनता के कारण ब्रिटिश गवर्नमैंट ने राज्याधिकार से अलग कर दिया और फ्रास मे जाकर इन्होंने आत्म हत्या कर ली।

आर्य समाज के ब्राह्मण कर्मी विद्वानो मे भी तेजस्विता का क्षय हो रहा है। नेतृत्व ब्राह्मण के हाथ मे नही अर्थ- अर्थ के हाथ में है। अर्थ-समर्थ ने कभी भी दयानन्द अथवा गान्धी जैसी प्रचण्ड ज्वाला अपनी तपस्या से प्रगट नहीं की है। इस ज्वाला मे धर्म की मैल को जला कर कुन्दन बनाने की शक्ति होती है। आर्य समाज के इसी प्रारम्भिक रूप को देख कर एण्ड्रयू नैल्सन ने इसे एक सर्वभक्षी ज्वाला का नाम दिया था। जिससे विश्व के सब धर्मों के मल भस्म हो जाएगे।

आर्य समाज अपने मार्ग से थोड़ा परे हट गया है। ऋषि दयानन्द का आदर्श या विचार था कि वर्तमान अन्ध-विश्वास पूर्ण रूप मे हिन्दू धर्म की रक्षा सम्भव नही। वे इसे वैदिक धर्म का मूल तथा विज्ञान-सम्मत रूप देना चाहते थे। जीवन भर उन्होंने यही प्रयत्न किया। देश की परिस्थितियो के कारण जहा तक मैं समझ पाया हू—आर्य समाज का मुख्य कार्य अन्य धर्मों से, विशेष कर इस्लाम तथा ईसाइयत के आक्रमण से रक्षा करना हो गया। आर्य स[illegible]के नेताओ मे हिन्दू धर्म के नेता का रूप धारण करने की महत्वाकाक्षा क्रमश बढ़ने लगी। यह कार्य न तो बुरा था और न ही अनावश्यक पर इसके दो परिणाम हुए।

एक तो आर्य समाज का वैदिक धर्म संस्थापक रूप मन्द्धम पड गया। हिन्दू धर्म अथवा समस्त धर्मों मे प्रचलित अन्धश्रद्धा, जड पूजा, भगवान वाद, अवतारवाद, गुरुवाद, दु ख वाद, मायावाद, आदि को निरस्त करने के लिए जो प्रबल आन्दोलन चाहिए था उसकी गतिविधि मन्द पड़ गई। उसका स्थान समझौतावाद तथा सम्प्रदायवाद ने ले लिया।

(क्रमश:)

श्री पण्डित सत्यदेव जी विद्यालकार ने अपने इस लेख मे जिस समस्या की ओर आर्य समाज का ध्यान दिलाया है। वह अत्यन्त आवश्यक है। आर्य समाज का भविष्य इस समय धूमिल दिखाई दे रहा है। पण्डित जी ने समस्या के जिस पक्ष की ओर ध्यान दिलाया है आर्य जगत् को उस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए।

—सम्पादक

सम्पादकीय—

आर्य समाज की मान्यताओं को चुनौती (7)

इस लेख के साथ मैं इस लेख माला को समाप्त करता हूं। यह मुझे लिखने की आवश्यकता क्यो पड़ी ? वह इसलिए कि स्वर्गीय श्री पं. धर्मदेव विद्या वाचस्पति विद्यामार्तण्ड ने वेदो का "यथार्थ स्वरूप" नाम की एक पुस्तक लिखी थी इसकी भूमिका मे उन्होने बताया था कि यह पुस्तक लिखने की आवश्यकता क्यो पड़ी। 1952 के लगभग बम्बई की एक संस्था भारतीय विद्या भवन ने "वैदिक एज" नाम की एक पुस्तक प्रकाशित की थी उसमे वेदो के विषय मे जो कुछ लिखा गया था वह महर्षि दयानन्द के विचारों और आर्य समाज की मान्यताओ के सर्वथा विपरीत था। इस पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उस समय के प्रधान श्री दीवान बद्रीदास जी ने "वैदिक एज" का उत्तर लिखने के लिए एक अनुसन्धान समिति बनाई थी। उसमे सब ही महानुभाव गुरुकुल विश्वविद्यालय के स्नातक थे। श्री प. धर्मदेव विद्यावाचस्पति को उस समिति का संयोजक बनाया गया था। उनके अतिरिक्त इस समिति मे श्री प. विश्वनाथ जी विद्यालंकार, श्री आचार्य प्रियव्रत जी वेद वाचस्पति श्री प बुद्धदेव जी विद्यालंकार, श्री प. रामनाथ जी वेदालंकार और श्री प. भगवद्दत्त जी वेदालंकार भी सम्मलित थे। इन सब विद्वान् स्नातको ने मिल कर वेदो का यथार्थ स्वरूप नाम की पुस्तक तैयार की थी। यदि मेरा अनुमान गलत नहीं है तो डा. सत्यकेतु ने भी अपनी पुस्तक उसके कुछ समय पश्चात् ही लिखी थी। इस प्रकार वेदो के विषय मे गुरुकुल के स्नातको के दो प्रकार के भिन्न-2 विचार जनता के सामने रखे गए। यदि आज कोई व्यक्ति हम से यह पूछ ले कि जो कुछ प. धर्मदेव जी ने लिखा था उसे ठीक समझें या जो कुछ डा. सत्यकेतु ने लिखा है उसे ठीक समझें ? डा. सत्यकेतु ने वही बोली बोली है जो मैक्समूलर जैसे पाश्चात्य विद्वान् बोलते थे। क्योंकि हम अपनी विचारधारा का प्रचार नहीं करते। इसलिए पाश्चात्य विचारो का हमारे ही युवको पर प्रभाव हो जाता है और फिर अब गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के एक स्नातक भी वही बोली बोलने लग जाए जो मैक्समूलर ने बोली थी तो इससे बड़ा अन्धेर और कोई नहीं हो सकता। मैंने इन लेखो के द्वारा आर्य जनता विशेष कर विद्वानो का ध्यान डा. सत्यकेतु की पुस्तक की तरफ इस लिए दिलाया है कि कल को कोई यह न कहे क्योंकि डा. सत्यकेतु इस समय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति हैं इसलिए वह जो कुछ लिख रहे हैं यह वेदो के विषय में गुरुकुल विश्वविद्यालय का दृष्टिकोण है। आवश्यकता तो यह थी कि जिस प्रकार 1952 मे "वैदिक एज" का उत्तर देने के लिए एक अनुसन्धान समिति बनाई गई थी। डा. सत्यकेतु की पुस्तक का उत्तर देने के लिए भी एक अनुसन्धान समिति बनाई जाती। परन्तु किसी का ध्यान इस तरफ नहीं गया। यह हमारी शिथिलता का एक प्रमाण है। क्या कोई व्यक्ति एक क्षण के लिये भी सोच सकता है कि कोई मुसलमान विद्वान् या कोई इसाई पण्डित कुरान या बाईबल के विषय मे इस प्रकार के विचार पेश कर सकता है जैसे कि डा. सत्यकेतु ने वेदो के विषय में किये हैं। मुझे इस बात का सन्तोष है कि एक महा विद्वान् तो अवश्य ऐसे हैं जो यह समझते हैं कि डा. सत्यकेतु ने पूर्व पक्ष प्रस्तुत किया है अब उत्तर पक्ष भी स्थापित होकर सर्वत्र प्रसारित होना चाहिए। यह विचार वेदों के प्रकाण्ड पण्डित श्री वीरसेन वेदश्रमी ने अपने एक पत्र में मुझे लिखे हैं। इस प्रकार गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के एक और स्नातक और आर्य समाज के परम योग्य विद्वान् श्री प. सत्यदेव जी विद्यालंकार ने एक लेख आर्य मर्यादा में प्रकाशित करने के लिये हमें भेजा है। इसमें उन्होंने लिखा है कि यह एक अत्यन्त खेद जनक स्थिति है कि वेद मन्त्रों के अर्थ के विषय में भी हमारे अपने विद्वानो में एक मत नहीं है। भिन्न-2 अर्थ करते हैं। इस प्रकार साधारण व्यक्तियों के लिए कई बार यह समझना भी कठिन हो जाता है कि वेदों मे वास्तव मे लिखा क्या है ? पं. सत्यदेव जी का यह सार गर्भित लेख और श्री वीरसेन जी वेदश्रमी का पत्र आर्य मर्यादा के आगामी अंक मे प्रकाशित किए जाएंगे।

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि वेदो के विषय मे आर्य समाज मे एक नया चिन्तन प्रारम्भ हो रहा है हम लोग बहुत कुछ अपने रास्ता से भटक गए थे। जब तक हम वेद का सहारा लेकर प्रचार करते रहे आर्य समाज का प्रभाव भी बढ़ता रहा। वह इस लिए कि हमारे विरोधियो के पास वेदों का कोई उत्तर नहीं है। जब से हमने वेदो को छोड़ा है हमारे अन्दर कुछ कमजोरी पैदा हो गई है और डा. सत्यकेतु जैसे व्यक्ति वेदो का एक विकृत रूप जनता के सामने रखने लगे है। आर्य समाज गर्व कर सकता है कि उसने वेदो के बड़े-बड़े विद्वान् तैयार किए हैं। प. धर्मदेव जी, आचार्य प्रियव्रत जी, श्री प. विश्वनाथ जी, श्री प बुद्धदेव जी, श्री प. भगवद्दत्त जी, श्री प. सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार, श्री प. रामनाथ जी विद्यालंकार, श्री आचार्य रामप्रसाद जी। इन सबने अपनी योग्यता और परिश्रम से वेदो का जो रूप जनता के सामने रखा है वह सराहनीय है। उस पर हम जितना भी गर्व करें थोड़ा है आज आवश्यकता इस बात की है कि वेदो का और भी अधिक प्रचार किया जाए। वेद ही एक ऐसे ग्रन्थ हैं जिनके गिर्द सारा हिन्दू समाज उसी प्रकार से संगठित हो सकता है जिस प्रकार मुसलमान कुरान के, इसाई, बाईबल के और सिख गुरु ग्रन्थ साहब के गिर्द इकट्ठे होते हैं। यह प्रचार होना चाहिए कि हर हिन्दू घराने मे वेदो का उसी प्रकार से सम्मान होना चाहिए, जिस प्रकार दूसरे धर्मावलम्बी अपने धर्म ग्रन्थो का सम्मान और आदर करते हैं। वेद भारतीय संस्कृति की महानता और भारत की एकता के प्रतीक हैं। उनका हम जितना अधिक से अधिक प्रचार कर सकें उतना ही अच्छा होगा परन्तु यह प्रचार उन्हीं विचारो का होना चाहिए। जिन विचारो को प.धर्मदेव जी ने,आचार्य प्रियव्रत जी ने, प.बुद्धदेव जी ने,श्री प. रामनाथ जी ने और आचार्य राम प्रसाद जी ने हमारे सामने रखा है न कि उन विचारो का जो कि डा. सत्यकेतु ने कुछ रुपया कमाने के लिए वेदो का विपरीत रूप हमारे सामने रखा।

—वीरेन्द्र

छः जुलाई को जालन्धर पहुंचो

जैसा कि मैं पहले भी लिख चुका हूं, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान से छ जुलाई को जालन्धर मे 'पंजाब बचाओ सम्मेलन किया जा रहा है इसमे हमने हिन्दुओ की धार्मिक व सामाजिक संस्थाओ के प्रतिनिधियो को भी बुलाया है। यह समय है जबकि पंजाब के हिन्दू एक स्थान पर बैठ कर अपने भविष्य के विषय मे विचार करगे। राजनैतिक पार्टिया अपने-2 ढंग से समय-2 पर अपने 2 विचार देती रहती है। कई बार वह विचार ऐसे भी होते है जो हमारे लिए ठीक नही होते। इसलिए यह आवश्यक है कि हम भी बैठ कर अपने निश्चित विचार पंजाब की स्थिति के विषय मे जनता के सामने और सरकार के सामने रखें। हमे यह मालूम है कि सरकार हमारे विचारो पर ध्यान नही देती, उसका एक कारण यह भी है कि सरकार उसी की बात सुनती है जिसमे सुनाने की शक्ति होती है। हमारे अन्दर अभी वह शक्ति नही है। परन्तु कोई हमे अपनी बात कहने से तो नही रोक सकता। आज अधिक आवश्यकता इस बात की है कि पंजाब के हिन्दुओ मे यह धारणा पैदा की जाए कि वह कमजोर नही हैं। सारा देश उनके साथ है कुछ भाई जो विवश होकर अपने घर-बार छोड़ कर दूसरे प्रान्तो मे जा रहे हैं,उन्हे भी ढाढस देने की आवश्यकता है। आर्य समाज एक शक्ति शाली संस्था है। केवल उसके संगठन में कुछ कमजोरी है। यदि हम वह किसी प्रकार दूर कर सकें तो फिर आर्य समाज सारे देश का नेतृत्व कर सकता है।

जो सम्मेलन हम 6 जुलाई को कर रहे हैं उसका भी यही उद्देश्य है। आज यदि हम एक दूसरे के कन्धे से कन्धा और कदम मे कदम मिला कर चलें तो हमारे अन्दर एक ऐसी शक्ति पैदा हो सकती है कि कोई हमारा कुछ बिगाड़ न सकेगा। इसी उद्देश्य से यह सम्मेलन किया जा रहा है। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि पंजाब के आर्य समाजी भाई और बहनें अधिक से अधिक संख्या मे इसमे सम्मलित हों।

—वीरेन्द्र

संगठन में ही शक्ति है

ले—श्री अमित प्रताप नारायण सिंह, ग्रा हाटा,
पो मझौली, जिला देवरिया

सं गच्छध्वं सं वदध्वं, सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे, संजानाना उपासते ॥

ऋग् 10-191-2

(हे मनुष्यो) मिलकर चलो। मिलकर बोलो। तुम्हारे मन एक प्रकार के विचार करें। जिस प्रकार प्राचीन विद्वान् एकमत होकर अपना-अपना भाग ग्रहण करते थे, उसी प्रकार तुम भी एकमत होकर आपना भाग ग्रहण करो।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसका सम्बन्ध समाज से है। वह समाज का एक अंग है। व्यक्ति व्यष्टि है और समाज समष्टि। सगठन से समष्टि सुदृढ होती है। सगठन निर्बल को भी बलवान्, शक्तिहीन को शक्तिशाली बना देता है। अत कहा गया है कि—'संघे शक्ति कलौ युगे' कलियुग मे सगठन मे ही शक्ति है। नीति का श्लोक है कि—

संहति· श्रेयसी पुसां सुगुणैरल्पकैरपि ।
तृणैर्गुत्वमापन्नैः बध्यन्ते मत्तदन्तिन· ॥

सद्‌गुणयुक्त थोडे व्यक्ति भी हो तो उनका सगठन व एकता होना कल्याणकारी है। तिनके मिलकर रस्सा बनते हैं और उनसे मत्त हाथी भी बाधे जा सकते है। सगठन व एकता की महिमा अपार और अमित होती है। समाज मे प्रतिष्ठित रूप से जीवित रहने के लिए सगठन व एकता अनिवार्य है। अतएव मन्त्र मे कहा गया है कि प्राचीन ऋषि-मुनि एवं आर्यजन एकत्व के महत्व को समझकर सुसगठित थे, उसी प्रकार हम भी सुसगठित हो। इसके लिए आवश्यकता है कि सभी व्यक्ति साथ उठे, बैठे। मिलकर विचार-विनिमय करे और सामूहिक निर्णय का पालन करे। जो साथ चलेंगे, मिल कर बोलेंगे और जिन मे सज्ञान (एकत्व) होगा, वे सदा उन्नति करेंगे। उन का समाज देश तथा ससार मे उत्थान होगा।

एकता तथा सगठन के लिए विचारो की एकता तथा हृदय की एकता नितान्त आवश्यक है, जब विचार और हृदय मे एकता होगी तब इस एकता को हम सच्ची, शुद्ध तथा निर्मल, पवित्र एकता कहेंगे। वेद का कथन है कि परमात्मा ने सभी को समान सुविधाए दी हैं और समान उपकरण दिये हैं। मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह उन सुविधाओ का ठीक उपयोग करके अपनी और समाज की उन्नति करे। व्यक्तिगत और सामूहिक उन्नति का साधन है—विचारो की एकता, भावनाओ का समन्वय और क्रियाकलाप मे एक रूपता। इनके लिए ही सभा और समिति का गठन किया गया था। इनमे विचार-विनिमय के द्वारा समाज के लिए एक निश्चित प्रक्रिया निर्धारित की जाती थी। इसका पालन करने से समाज सुसगठित होता था। इसको ही कहा गया है कि मन्त्राणा या विचार समान समाज के सभी सदस्यो के विचारो मे एक रूपता हो। सभी एक निर्णय करके पालन करें। यह सगठन या एकता की भावना समाज को उन्नत करती है, समाज के सभी सदस्यो के विचार तथा हृदय मे एक रूपता हो। अत इसका दृढतापूर्वक पालन करना चाहिए।

हृदय की एकता तथा मन व विचार की एकता के अतिरिक्त द्वेष का अभाव तथा प्रेम और सद्‌भाव भी आवश्यक है—द्वेष का अभाव, द्वेष का परित्याग लक्ष्य एक होने पर भी यदि सगठित होने वाले समाज मे पारस्परिक द्वेष है, कलह है, ईर्ष्या है ? और मनोमालिन्य है, तो वह समाज या राष्ट्र सुसगठित नही हो सकता है। अत आवश्यक है सगठन को सुदृढ करने के लिए पारस्परिक द्वेष, मनोमालिन्य और ईर्ष्या को तिलाजलि दी जाए। इसके अतिरिक्त अन्य आवश्यकता है—पारस्परिक प्रेम और सहानुभूति की। जैसे गाय अपने नए बछडे से धनिष्ठ प्रेम करती है। इसी प्रकार यदि राष्ट्र या समाज मे घनिष्ठ प्रेम का प्रवाह होगा एक दूसरे के लिए प्राण देने को उद्यत रहेंगे और सदा एक दूसरे का हित-चिन्तन करेंगे, तो वह राष्ट्र अवश्यमेव सुसगठित होगा।

एक होने का भाव 'एकता' कहलाता है। यदि मानव परस्पर पृथक हो कर कार्य तथा विचार करें तो समाज की प्रगति सम्भव नही है। इस लिए उनका मन, वचन तथा विचार व कर्म से यथासम्भव एक होना है। यदि हम एक जुट हो कर काम करते हैं तो हमारी उन्नति निश्चित है। यदि हम बटकर बिखर कर काम करते हैं तो हमारी अवनति ध्रुव समझिए। अग्रेजी की यह उक्ति ठीक है। 'यूनाईटिड वी स्टैंड, डीवाईडिड वी फाल' (हम सगठित रहे तो टिके रहेंगे, असगठित हुए तो गिरेंगे।)

इतिहास के पृष्ठ साक्षी है कि एकता के अभाव का दुष्परिणाम कितना भयानक होता रहा है। कौरव और पाडव की आपसी फूट के कारण कितना बडा महाभारत हुआ जिसे सारा ससार जानता है। अनाचारी रावण भी शायद ही पराजित होता, यदि अपने ही छोटे भाई विभीषण को लात मार कर वह अपने से विलग नही करता। पृथ्वीराज और जयचन्द की फूट ने हमे विदेशी आक्रमणकारियो का गुलाम बनाया तथा मीरजाफर का हमसे छिटक जाना हमारी दासता का कारण बना। हम जब हिन्दू-मुसलमान एक रहे तो हमने अग्रेज—जैसे राजनीतिक-धुरन्धरो के छक्के छुडाये और जब आपस मे लडने लगे तो हमने भारत माता की छाती के दो टुकडे किये। मुट्ठी-भर जापानियो और जर्मनो के सामने बडी-बडी शक्तिया झुक रही हैं। इसका एक मात्र कारण है, उन देशो के लोगो की दृढ एकता।

परन्तु बहुत दु ख से कहना पडता है कि आज हमारे राष्ट्र के सम्मुख सबसे बडी समस्या उसकी एकता की है। राष्ट्र की एकता भग करने की अनेक कुचेष्टाए हो रही हैं। राष्ट्र टुकडे-2 होना चाहता है। पजाब मे आतकवादी सिख पजाबी सूबे के नाम पर सस्ती लीडरी रखने के लिए राष्ट्रीय एकता की पीठ मे छुरा घोपना चाहते हैं तो बिहार मे भी झार खण्ड पार्टी अपना असम राष्ट्र बनाने का सपना देखी रही है तो असम, नागालैंड, केरल मे साम्प्रदायिकता फैला रहे है। एक ओर पाकिस्तान, कश्मीर को हडपने की धूडकिया दे रहा है। तो दूसरी ओर चीन भी सीमातिक्रमण कर रहा है। अतएव आज राष्ट्र के सम्मुख प्रमुख समस्या उसकी एकता की है।

राष्ट्रीय एकता की रक्षा के उपाय के लिए सर्वप्रथम राष्ट्र के महत्व को सर्वोपरि स्वीकार करना होगा। हमें समझना पडेगा कि राष्ट्र का वर्ग जाति, धर्म भाषा, दल, प्रान्त, व्यक्तिगत स्वार्थ आदि के ऊपर है। राष्ट्र के कर्त्तव्य पालन का दृढ सकल्प करना होगा राष्ट्र के लिए तन, मन, धन से त्याग के लिए सदैव प्रस्तुत रहना पडेगा। राष्ट्र की सम्पत्ति को, राष्ट्र की मर्यादा को अपनी सम्पत्ति व मर्यादा समझ कर उसकी रक्षा के लिए उद्यत रहना पडेगा। साम्प्रदायिकता का उन्मूलन करना होगा। धर्म-निरपेक्ष राज्य मे साम्प्रदायिकता को राजनीति मे कोई स्थान नही मिलना चाहिए। जो धर्म और सम्प्रदाय के नाम पर झगडा या चुनाव प्रचार करे उसे कठोर दण्ड देना होगा। धर्मनिरपेक्षता के आधार पर ही शिक्षा का सगठन होना चाहिए। सरकार को कानून द्वारा किसी विद्यालय का नाम साम्प्रदायिक, जातिय या धार्मिक आधार पर न रखने देना चाहिये। हिन्दु विश्वविद्यालय, मुस्लिम विश्वविद्यालय, क्षत्रिय कालेज, खालसा कालेज आदि नामो पर प्रतिबन्ध लगा देना चाहिए। भाषा के आधार पर झगडना अपराध माना जाना चाहिए। भाषा का धर्म से कोई सम्बन्ध नही होता है। अत पजाबी को सिख की, उर्दू को मुसलमानो की, हिन्दी को हिन्दुओ की भाषा समझने की मूर्खता नही होनी चाहिए।

देवनागरी लिपि को ही देश की समस्त भाषाओ के लिए ग्रहण करना चाहिए। एक लिपि के कारण भाषा मे एकता बढेगी। जिससे राष्ट्रीय एकता को बल मिलेगा। परन्तु यह सहमति से होना चाहिए, दबावपूर्ण नही।

प्रान्तीयता का भेद-भाव सर्वथा समाप्त होना चाहिए। हम पहले भारतीय हैं, बाद मे कुछ और। इनके लिए मन, विचार, हृदय समान होना चाहिए तथा साथ ही सकल्प भी समान तथा दृढ होना चाहिए। ऋग्वेद के एक मन्त्र से—

समानी व आकूतिः,
समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो,
यथा वः सुसहासति ॥

ऋग 10-191-4

तुम्हारे सकल्प समान हो। तुम्हारे हृदय समान हो। तुम्हारे मन समान, हो, जिससे तुम्हारा सगठन हो।

आर्य समाज ने पंजाब विवाद को जन्म नहीं दिया

लेखक—श्री विजय भूषण जी आर्य

कई सिख विद्वानों की ओर से समय-2 पर आर्य समाज के विरुद्ध विषवमन होता रहता है। इसी प्रकार के एक लेखक साहित्यकार श्री महीपसिंह जी हैं उन्हें जब कभी कोई अवसर मिलता है वह आर्य समाज के विरुद्ध लिखने में सकोच अनुभव नहीं करते। पिछले दिनों उन्होंने दिल्ली के नव भारत टाईम्स में अपने एक लेख द्वारा पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों के लिए आर्य समाज को जिम्मेवार ठहराया था उसका उत्तर श्री विजय भूषण आर्य ने उसी पत्र में दिया है जो हम अपने पाठकों की जानकारी के लिए यहां प्रस्तुत कर रहे हैं।

—सम्पादक

पंजाब की वह भाषा समस्या क्या है, जिसका महीप सिंह बार-बार जिकर करते हैं? भाषा के आधार पर पंजाब का बटवारा हो चुका है। आज प्रदेश की राजभाषा पंजाबी है यदि भाषा समस्या कभी थी भी, तो उसका समाधान हो चुका है।

शिकायत यह है कि आर्य समाज के प्रभाव एवं प्रेरणा से पंजाबी हिन्दुओं ने पंजाबी भाषा-भाषी होते हुए भी अपनी भाषा हिन्दी लिखवाई है और उसी से समस्या का जन्म हुआ और विभेद की दीवारें खिंची। पर यहां एक बात तो यह जान लेना जरूरी है कि पंजाब में सवाल भाषा का नहीं, लिपि का है। पंजाबी हिन्दू को पंजाबी भाषा से गुरेज नहीं है। गुरुमुखी की अनिवार्यता से शिकायत है। इस तथ्य को झुठलाया नहीं जा सकता है कि पंजाबी भाषा भाषी होते हुए भी पंजाब का हिन्दू गुरुमुखी का प्रयोग कभी नहीं करता था। आजादी से पहले यह सिखों में भी बहुत प्रचलित लिपि नहीं थी। पंजाब के सभी पढ़े लिखे लोग अरबी लिपि में लिखते-पढ़ते थे और गुरु ग्रन्थ साहब के सभी हस्तलिखित पोथे अरबी लिपि में ही लिखे गये हैं।

पंजाब में हिन्दी के प्रचार-प्रसार का दोष नाहक ही आर्य समाज पर थोपा जाता है। यदि यह अपराध है तो इसका सबसे बड़ा दायित्व स्वयं सिख गुरुओं पर आता है जिन्होंने अपने अधिकांश शब्द पंजाबी भाषा भाषी होते हुए भी हिन्दी में रचे हैं। क्या पंजाबी का पक्षधर कोई सिख ऐसा है जो गुरुओं के हिन्दी प्रेम के विरुद्ध आवाज उठाए और ग्यारहवें गुरु,गुरु ग्रन्थ साहब से हिन्दी शब्दों को निकाल कर शुद्ध पंजाबी शब्दों के साथ नए गुरु [illegible]थ साहब की कल्पना करें?

पंजाब में आर्य समाज का हिन्दी प्रचार पंजाबी के मुद्दे को लेकर कभी नहीं था। वस्तुतः आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जन्म से गुजराती एवं ज्ञान से संस्कृतज्ञ थे। बंगाली विद्वान् केशवचन्द्र सेन के परामर्श पर हिन्दी भाषा का प्रयोग उन्होंने राष्ट्रीय मनोवृत्ति से किया था। सिख गुरुओं का हिन्दी प्रेम भी इसी भावना से अनुप्राणित रहा होगा। दूसरी ओर वे समूचे देश को एक भाषा के प्रयोग के माध्यम से एकता की माला में पिरो देना चाहते हैं।

आर्य समाज ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार का प्रयास मात्र पंजाब में नहीं किया, वरन् कश्मीर से कन्याकुमारी तक उनकी कोशिश एक जैसी है। आर्य समाज के प्रभाव से ही भारत के नागरिकों ने अंग्रेजी और फारसी जैसी भाषाओं को त्याग कर अपने बच्चों को हिन्दी माध्यम से तब पढ़ाना शुरू किया था जब उसका अर्थ था सरकारी नौकरियों के दरवाजों का बन्द हो जाना। और फिर हिन्दी की लड़ाई कोई आर्य समाज की बपौती नहीं है। कालान्तर में कांग्रेस भी उसकी सहभागी हो गई। हिन्दी प्रेम और राष्ट्रीयता परतन्त्र भारत में एक दूसरे के पर्याय थे। आज भी हिन्दी का मुख्य विरोध केवल या तो उनके द्वारा होता है जिनकी क्षेत्रीयता राष्ट्रीयता से ऊपर उठ गई है अथवा उनके द्वारा होता है जो अपने अंग्रेजी ज्ञान के आधार पर जनसाधारण का शोषण कर सर्वदा शीर्षस्थ स्थान पर बैठे रहना चाहते हैं। क्षेत्रीय भाषाओं एवं हिन्दी में कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है। हिन्दी की प्रतिस्पर्धा अंग्रेजी के साथ है। पंजाब में भी लड़ाई हिन्दी और पंजाबी के मध्य नहीं है, देवनागरी और गुरुमुखी के बीच में हैं। यदि बेलगाव में मराठी और कन्नड़ अपने भाषागत विवादों को उठा सकते हैं तो पंजाब के हिन्दू पंजाबियों को भी अपनी लिपि की लड़ाई लड़ने का हक है, उतना ही हक जितना सिखों को पंजाबी सूबे की लड़ाई लड़ने का हक हासिल था। अल्पसंख्यकों की अस्मिता का प्रश्न सिखों का एकाधिकार नहीं है।

जहां तक सिखों की अलग पहचान का प्रश्न है, इस विवाद के मूल में जाना उपयोगी होगा। पंजाब में 1930 से पहले तक हिन्दू और सिख नहीं रहते थे, केशधारी और सहजधारी रहते थे। उनके रीतिरिवाज, रहन सहन, तीज-त्योहार, सभ्यता-संस्कृति इतिहास सब साझा थे। धर्म में भी कोई विभाजक रेखा नहीं थी। एक ही घर में एक ही पिता की सन्तानें केशधारी और सहजधारी होती थी। उनके ब्याह शादी में धार्मिक विश्वासों का कोई भेद नहीं था। सहजधारी सिख गुरुओं में उतना ही आदर विश्वास रखते थे जितने स्वयं सिख। दूसरी ओर स्वयं सिख निराकारवादी होते हुए भी हिन्दू देवी-देवताओं में उतना ही आदर विश्वास रखते थे जितना कोई भी अन्य सनातनी। आज भी ऐसे लोग जीवित हैं जिन्होंने हरमन्दर साहब की ताखों में हिन्दू प्रतिमाएं रखी देखी हैं। अन्यों की तो बात क्या स्वयं गुरु गोबिन्द सिंह ने 'चण्डी दी वार' में अपने निर्गुणिएपन के साथ-साथ विशुद्ध सनातनी के रूप में भवानी-दुर्गा की स्तुति की है।

1930 में पहली बार सिखों की अलग पहचान का स्वर मुखर हुआ। अलगाववाद की इस मानसिकता का जन्म अंग्रेजों की चाल का परिणाम था।

श्री महीप सिंह ने अपने एक लेख में हिन्दू एवं सिखों की भेद की रेखाओं के लिए आर्य समाज को उत्तरदायी माना है। किसी अंश में यह ठीक है। आर्य समाज शायद पहली या अकेली संस्था है जिसने सिखों के, उसकी दृष्टि में व्याप्त पाखंड पर चोट की। लेकिन आर्य समाज ने यह काम अकेले सिखों पर तो नहीं किया। उसने तो पौराणिक, बौद्ध, जैन, मुस्लिम, ईसाई सभी मतों की उन बातों का विरोध किया था जो उसकी दृष्टि में गलत थी। और फिर यह किसने नहीं किया। क्या भगवान बुद्ध एवं महावीर ने वैदिक मान्यताओं की खिल्ली नहीं उड़ाई? क्या ईसा-मसीह तथा मोहम्मद अपने समय के मत मतान्तरों पर चोट किए बगैर अपने मन्तव्य को प्रस्तुत कर सकते थे? यदि नानक और कबीर को हिन्दू एवं मुस्लिम धर्म के पाखंडों पर चोट करने का हक है तो सिख भी दूसरों को उनके इस अधिकार से कैसे वंचित कर सकते हैं? अन्य मत-मतान्तरों का विरोध एवं अपनी आस्थाओं का समर्थन प्रत्येक मत की प्रवृत्ति होती है।

यहां एक बात और भी है। आर्य समाज ने सिख धर्म के जिन तथ्यों पर प्रहार किया है वे तथ्य ऐसे हैं जिनकी स्वीकृति स्वयं सिख गुरुओं द्वारा कभी नहीं दी गई थी। बड़ी विचित्र बात है कि महीप सिंह को आर्य समाज के प्रहार पर तो आक्रोश है किन्तु सिख मत के मूल स्वरूप को समझने एवं प्रस्तुत करने की चिन्ता नहीं।

श्री महीप सिंह ने श्री लंका की तमिल समस्या एवं भारत की सिख समस्या के तुलनात्मक विश्लेषण में सिंहली नेता डी एस सेना नायके एवं महात्मा गांधी के आश्वासनों को उद्धृत किया है। ये उद्धरण कुछ इस प्रकार से दिए गए है। जैसे दोनों ही जगह वायदा खिलाफी हुई हो।

(क्रमशः)

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

चौथी बात मन्त्र में यह कही कि हम (त्वया सुवीरा) अर्थात प्रभु की मित्रता हमारे साथ होती है तो हम वीर होते है। माता की गोद में दुर्बल से दुर्बल बच्चा भी अपने को बड़ा बलवान समझता है क्योंकि माता का बल उसके साथ है, इसी प्रकार परमात्मा का साथ भी हमारा बल बढ़ा देता है, कोई भी स्थान ऐसा नहीं जहां प्रभु का साथ न हो।

यदि यह सभी बातें हमारे अन्दर आ जाएं अर्थात हम (देव गोपा) या देवों द्वारा सुरक्षित हों तथा वेदों के अनुसार हमारा आचरण हो जाए प्रभु के सखा हों अर्थात प्राणी मात्र के हितकारी हों तथा (त्वया सुवीरा) अर्थात ईश्वर के सामीप्य को अपनी शक्ति का कारण समझें तो अन्तिम बात (द्राघीय आयु) बड़ी अवस्था या दीर्घजीवी बन सकते हैं और हमारे चिरजीव होने का फल भी यही है कि अपने तथा मनुष्य मात्र के लिए हित कर सिद्ध हो सकें। आस्तिक्य और मनुष्य सेवा इन दोनों के करने के जो मुख्य नियम हैं उसी तत्व को इस वेद मन्त्र में बड़ी सुन्दरता से तथा सुगमता से बताया गया है—वेद का अनुकरण किये बिना मनुष्य जीवन की सफलता असम्भव ही है।

स्वामी इन्द्रवेश जी का पत्र प्रधानमन्त्री के नाम

स्वामी इन्द्रवेश को भूख हड़ताल शुरू किए 18 दिन हो गए हैं। अब इनकी हालत चिन्ताजनक हो रही है। यह भूख हड़ताल आम राजनीतिक भूख हड़तालियों की तरह नहीं है। स्वामी इन्द्रवेश न्याय के लिए संघर्ष कर रहे हैं, धर्म की लड़ाई लड़ रहे हैं इसके लिए उन्होंने अपनी जान की बाजी लगा दी है।

कई बार हालात का सही चित्र लोगों के सामने नहीं आता। इसलिए कई प्रकार के गलत प्रचार किए जाते हैं। स्वामी इन्द्रवेश ने भूख हड़ताल क्यों की है। इसके बारे में भी सही चित्र लोगों के सामने नहीं आ रहा। इसलिए मैं उनके उस पत्र के कुछ उद्धरण नीचे प्रस्तुत करना चाहता हूं जो उन्होंने प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी को लिखा है। उससे हमें पता चल जाता है कि उन्होंने यह अनशन क्यों शुरू किया है।

अपने पत्र में उन्होंने श्री राजीव गांधी को लिखा है—

"आपने उग्रवादियों से डर कर पंजाब समझौता कबूल किया। इससे हमारा यह अनुमान लगाना अनुचित न होगा कि आप उनकी भाषा समझते हैं तथा न्याय और अन्याय को अधिमान नहीं देते। अतः आप हरियाणा वासियों की शांति को कायरता न समझें और अपने एक तरफा निर्णय पर पुनर्विचार करें अन्यथा इसके गम्भीर परिणाम होंगे।

इन सब बातों को देखते हुए तथा हरियाणा की जनता की भावनाओं का आदर करते हुए मैं उग्रवादियों की कार्यवाइयों के मुकाबले आध्यात्मिक शक्ति जागृत करने और हरियाणा के हितों की सुरक्षा तथा पंजाब में हो रही निर्दोष लोगों की निर्मम हत्याए बन्द करवाने के लिए गत 13 जून 1986 से अनशन पर बैठा हूं। मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि आप न्याय तथा राष्ट्रहित में इन्दिरा जी द्वारा दिए गए निर्णयों को लागू करें और उन पर कोई अनैतिक तथा अन्यायपूर्ण समझौते थोंपने की कोशिश न करें। इसके बावजूद यदि आप अपनी हठ पर अड़े रहे तो हरियाणा के लोगों की वर्तमान मनोवृत्ति को देखते हुए मैं यह घोषणा पूर्वक कह सकता हूं कि हरियाणा में भी पंजाब जैसे हालात उत्पन्न होने अनिवार्य हैं।"

पाठकगण ! मैंने स्वामी इन्द्रवेश के विचार आपके सामने प्रस्तुत कर दिए हैं इसलिए अनुमान लगाया जा सकता है कि उन्होंने यह अनशन क्यों शुरू किया है। जहां वह एक ओर हरियाणा के लिए लड़ रहे हैं, वहां दूसरी ओर पंजाब के लिए भी लड़ रहे हैं। विशेष रूप से उन निर्दोष लोगों के लिए जिनका खून बहाया जा रहा है।

मेरा स्वामी इन्द्रवेश की राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है। मुझे यह भी मालूम नहीं कि वह आजकल किस पार्टी में हैं। मेरे लिए तो यही बहुत है कि आर्य समाज के एक संन्यासी ने अपने देशवासियों के लिए अपनी जान की बाजी लगा दी है। पाठकों को याद होगा कि मैंने गत दिनों एक लेख लिखा था कि हमारे सन्त महात्मा कहां हैं। पंजाब में बेगुनाहों का खून हो रहा है और हमारे सन्त महात्मा आराम से बैठे हैं। मुझे खुशी है और गर्व भी कि आर्य समाज के एक संन्यासी ने अपनी जान की बाजी लगा दी है। दूध पीने वाले तो कई मजनूं मिल जाएंगे। हरिद्वार, ऋषिकेश, वाराणसी, प्रयाग इन तीर्थों पर आपको बहुत मिल जाएंगे। खून देने वाला कोई विरला ही पैदा होता है और आर्य समाज ने एक पैदा कर दिया है। आर्य समाज का इतिहास शहीदों का इतिहास है। इसलिए जब देश और धर्म पर कोई मुसीबत आती है तो आर्य समाज कोई न कोई शहीद पैदा कर देता है। कभी उसने राम प्रसाद बिस्मिल को पैदा किया कभी भगतसिंह को। कभी लाला लाजपतराय को, कभी स्वामी श्रद्धानन्द को और भाई परमानन्द को। इसी कड़ी में स्वामी इन्द्रवेश ने भी अपनी जान की बाजी लगा दी है।

ऐसी स्थिति में हम उनके लिए परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि स्वामी इन्द्रवेश ने जो अनशन शुरू किया है उसमें वह सफल होकर निकलें। भारत सरकार और हरियाणा सरकार दोनों का यह कर्त्तव्य है कि वह स्वामी इन्द्रवेश को यह विश्वास दिलाएं कि हरियाणा के साथ अन्याय नहीं होगा। हम पंजाब सरकार से तो कोई आशा नहीं रखते लेकिन भारत सरकार तो कह सकती है कि पंजाब में बेगुनाहों का जो खून हो रहा है उसे बन्द कराने के लिए हर सम्भव पग उठाए जाएंगे। जिन लोगों के हाथ में आज शासन की बागडोर है वह इस भावना का सम्मान नहीं कर सकते जिससे प्रभावित होकर स्वामी इन्द्रवेश ने यह पग उठाया है। भूख हड़ताल ऐसा पग नहीं जो प्रत्येक व्यक्ति उठा सके। इसके लिए शारीरिक और मानसिक शक्ति की आवश्यकता होती है। स्वामी इन्द्रवेश ने अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया। अब सरकार का काम है कि वह ऐसे हालात पैदा करे कि इस अनशन का कोई अशुभ परिणाम न निकले।

—वीरेन्द्र

अधिसूचना विज्ञप्ति सं. ३

सभा से सम्बद्ध आर्य समाजों के लिए

मान्य प्रधान जी तथा मन्त्री महोदय की सेवा में, सादर नमस्ते !

निवेदन है कि आपकी समाज की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए जो प्रतिनिधि सम्वत् 2040, 2041 तथा 2042 के लिए निर्वाचित होकर स्वीकार हुए थे, सभा के नियम संख्या 7 के अनुसार इनकी अवधि 11 मई 1986 के वार्षिक अधिवेशन के साथ समाप्त हो चुकी है।

सभा की अन्तरंग के प्रस्ताव संख्या 5. 1-6-86 के निश्चयानुसार अब सम्वत् 2043,44,45 के लिए नियमानुसार निर्वाचन होना आवश्यक है। अतः आपसे निवेदन है कि आप नियमानुसार आर्य समाज की साधारण सभा की बैठक बुला कर अपनी समाज की ओर से प्रतिनिधियों का निर्वाचन करवा कर प्रतिनिधि फार्म यथाविधि भर कर वेद प्रचार, दशांश तथा आर्य मर्यादा के शुल्क सहित 15 अगस्त 1986 तक सभा कार्यालय में भिजवा देने की कृपा करें। प्रतिनिधि फार्म शीघ्र ही आर्य समाजों को भेजे जा रहे हैं। प्रतिनिधि फार्मों की पीठ पर छपे नियमों को भली प्रकार पढ़ लें। अपनी समाज का हिसाब-किताब देख कर सभा को गत वर्षों की देय राशियां भी अवश्य भेजने की कृपा करें।

आर्य समाज के उपनियम संख्या 8 (5) के अनुसार आर्य समाज की साधारण (प्रबन्धक) सभा का एजेण्डा 15 दिन पूर्व भेजना आवश्यक है। जो आर्य समाजें इस समय तक अपना वार्षिक निर्वाचन न कर सकी हों, वे अपना वार्षिक निर्वाचन का कार्य भी उक्त बैठक में सम्पन्न कर लें।

वीरेन्द्र	सत्यव्रत शर्मा
सभा प्रधान	सभा महामन्त्री

आर्य जगत् से ग्रन्थ प्रकाशनार्थ सहायता की प्रार्थना

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि विगत अनेक वर्षों से मैं स्वामी दयानन्द एवं आर्य समाज विषयक शोधपूर्ण साहित्य लिख कर यत् किंचित सेवा कर रहा हूं। इस समय मैंने दो नवीन ग्रन्थ लिखे हैं जो प्रकाशनार्थ तैयार हैं।

1. स्वामी दयानन्द की प्रशस्ति में लिखी हुई सुन्दर एवं काव्यपूर्ण संस्कृत पद्य रचनाओं का हिन्दी भाषानुवाद सहित संग्रह।

2. स्वामी दयानन्द के भक्त, अनुयायी, प्रशंसक तथा सहयोगी व्यक्तियों के जीवन वृत्त तथा स्वामी जी से उनके सम्बन्धों की विवेचना युक्त ग्रन्थ। इसमें उन पुरुषों के विवरण एकत्र किये गये हैं जो आर्य समाजी न होकर भी स्वामी जी के प्रेमी, भक्त, प्रशंसक तथा सत्संगी थे। इन पुरुषों के दुर्लभ चित्रों को भी पुस्तक में दिया जाएगा।

उपर्युक्त दोनों ग्रन्थों के मुद्रण हेतु कुछ आर्थिक सहायता की आवश्यकता है। यद्यपि धनीमानी आर्य पुरुष भवनों, दुकानों और कमरों के बनवाने में तो प्रचुर दान देते हैं किन्तु साहित्य के प्रकाशन में उनसे समुचित सहायता नहीं मिलती। मैंने अनेक धनीमानी आर्य पुरुषों से इस सम्बन्ध में निवेदन किया है किन्तु अकेले वीतराग स्वामी सर्वानन्द जी (जो स्वयं सन्यासी हैं) ने तो एतदर्थ सहायता करने का वचन दिया है, कुछ अन्य महानुभावों से भी मुझे सहायता का आश्वासन मिला है। तथापि यह अपर्याप्त है। अतः मेरा आर्य समाजों तथा आर्य पुरुषों से निवेदन है कि वह न्यूनातिन्यून 100 रु इन ग्रन्थों के प्रकाशन हेतु मुझे निम्न पते पर भेजें। ग्रन्थ छपने पर उतने ही मूल्य की पुस्तकें उन्हें भेन्ट की जाएगी। इस प्रकार उनकी यह सहायता दान न होकर सहयोग रूप में ही होगी और साहित्य के यज्ञ में उनकी समुचित आहुति भी पड सकेगी।

—डा भवानीलाल भारतीय

बी-3 सैक्टर 14, पंजाब विश्वविद्यालय,
चण्डीगढ। 160004

आर्य जगत् की समस्या एवं समाधान

लेखक—स्वामी जीवनानन्द सरस्वती रोहतक

चिरकाल से मैं यह अनुभव कर रहा था कि आर्य समाज एवं वैदिक धर्म का प्रचार करने वाले सन्यासी, वानप्रस्थी तथा नैष्ठिक ब्रह्मचारी शारीरिक शक्ति के साथ प्रचार करते हुए यथा समय भोजन आच्छादन प्राप्त करके जीवन यापन करते रहते हैं। किन्तु अब शारीरिक शक्ति क्षीण हो जाने पर चलने-फिरने में असमर्थ हो जाने से उनकी प्रचार यात्रा मन्द या समाप्त प्राय हो जाती है, तो आर्य जन सुध नहीं लेते हैं। अपितु रोग ग्रस्त हो जाने पर तो उनसे दूर ही भाग जाते हैं। परिणामत वही सन्यासी पूर्वत्यक्त परिवार का आश्रय लेते हैं। समाज द्वारा ध्यान न देने पर उनके पारिवारिक अथवा भक्त जन उन्हें अपने घर ले जाकर उनकी चिकित्सा तथा अन्य सब सुविधा की पूरी व्यवस्था करते हैं। क्या यह आर्य जगत् के लिए कलंक नहीं?

मैं ऐसे कई आश्रमों के स्वामियों (संस्थाओं) और प्रबन्धकों से पत्राचार तथा मौखिक वार्तालाप से इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि ऐसी व्यवस्था न कहीं है और न होने की सम्भावना है।

लगता है, आज तक किसी प्रान्तीय अथवा शिरोमणि (सार्वदेशिक) आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस विषय पर विचार ही नहीं किया है।

हाला कि इस योजना (विचार) से बहुत सारे आर्य जन सहमत तो हैं, किन्तु इसे क्रियात्मक रूप देने में हिचकिचाते हैं। इसीलिए मैं आर्य जगत का ध्यान इस ओर आकृष्ट करते हुए घोषणा करता हूं कि —

वैदिक धर्म का प्रचार करने वाले—समर्थ (चलते-फिरते) तथा असमर्थ (प्रचारकार्य से थके हुए)—सन्यासी, वानप्रस्थी तथा नैष्ठिक ब्रह्मचारी अपनी प्रचार यात्रा से निवृत्त होकर (खाली समय में) "वैदिक यति आश्रम" (केन्द्र) में आवास, भोजन तथा चिकित्सा की निःशुल्क व्यवस्था (सुख-सुविधा) प्राप्त कर सकेंगे।

उपरिलिखित लक्षणयुक्त वैदिक यतिगण पत्राचार या साक्षात्कार से सम्पर्क स्थापित करके अपनी समस्या का पूर्ण समाधान लेने का प्रयास करें।

पता—वैदिक भक्ति साधन आश्रम
आर्य नगर, रोहतक

आर्य समाज बरनाला द्वारा सन् १९८५-८६ के प्रचार कार्यक्रम

1 पूरे वर्ष में 6 विशेष यज्ञ किए गए —एक कालावाली में, एक भदलवड में, चार बरनाला में।

2 पूरे वर्ष में 5 विवाह संस्कार कराए गए -एक नाभा में, चार बरनाला में।

3 दस (10) जन्म दिन मनाए गए—यह सभी बरनाला में हवन के साथ सम्पन्न हुए।

4 4 नाम करण संस्कार कराए गए—एक बरनाला, एक धनौला, एक भदौड तथा एक धूरी में।

5 4 मुण्डन संस्कार कराए गए—एक नवाशहर, एक भदौड, दो बरनाला में।

6 2 यज्ञोपवीत संस्कार कराए गए—दोनों ही मण्डी डबवाली में।

7, 2 अन्त्येष्टि संस्कार कराए गए—एक भदलवड, एक बरनाला में।

8 प लेखराम भजन प्रतियोगिता कराई गई।

9 बरनाला के विभिन्न परिवारों में 60 साधारण यज्ञ किए गए।

10. वर्ष में एक बार सभा महोपदेशकों एवं भजनीकों की सहायता से वेद प्रचार सप्ताह धूम-धाम से मनाया गया।

11. गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी दयानन्द केन्द्रीय विद्या मन्दिर एवं गांधी आर्य हाई स्कूल बरनाला में 300 दैनिक यज्ञ किए गए एवं प्रवचन चलते रहे।

12. इस वर्ष का विशेष आकर्षक कार्यक्रम यह रहा कि उपर्युक्त दोनों स्कूलों के लगभग 300 बच्चों को यज्ञोपवीत दिए गए अध्यापकों ने भी यज्ञोपवीत धारण किए।

13. समय-2 पर आने वाले पर्व भी मनाए गए।

—यश भाटिया

आर्य समाज तीमारपुर दिल्ली का चुनाव

आर्य समाज तीमारपुर, दिल्ली का वार्षिक चुनाव दिनांक 15 6-86 को सम्पन्न हुआ, जिसमें निम्नलिखित कार्य कारिणी के सदस्य 1986-87 के लिए चुने गए —

प्रधान—श्री भीमसिंह जी।

उप-प्रधान—श्री जगदीशलाल जी डुगल।

मन्त्री—कृष्ण देव।

उप-मन्त्री—श्री विमलकान्त।

कोषाध्यक्ष—श्री आनन्द प्रकाश।

पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री वेद प्रकाश।

अन्तरंग सदस्य :—

श्री नारायण सिंह जी।
श्री देव ऋषि जी।
श्री डा एस के वर्मा।
श्रीमती लीला कृष्णा जी।
श्री रतनसिंह जी।
श्री जगदीश प्रसाद शर्मा।
श्री राजेन्द्र लाल जी वास्तव।
श्री चन्द्रपाल सिंह।
श्री आनन्दसिंह राठी।
श्रीमती भगवती सेठ।

—कृष्णा देव—मन्त्री

आर्य समाज भठिण्डा का वार्षिक अधिवेशन

आर्य समाज बठिण्डा का वार्षिक अधिवेशन 15 6-86 रविवार को प्रात 10 बजे आर्य समाज मन्दिर चौक बठिण्डा में श्री रोशनलाल जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिस में श्री बजीरचन्द जी को सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया। इनको अन्य अधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य मनोनीत करने का अधिकार दिया गया। तदनुसार प्रधान जी ने निम्नलिखित कार्यकारिणी मनोनीत की है।

उप-प्रधान—श्री रोशनलाल जी,
,, श्री निहाल चन्द जी वकील
मन्त्री—श्री जितेन्द्र कुमार जी। वकील
उप-मन्त्री—श्री राजेन्द्र कुमार जी।
कोषाध्यक्ष—श्री बाबू राम जी।
लेखा निरीक्षक—श्री निहाल चन्द वकील

—जितेन्द्र कुमार गुप्ता
मन्त्री

आर्य समाज महावीर नगर भोपाल का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज महावीर नगर भोपाल का वार्षिक चुनाव रविवार दिनांक 11 मई 1986 को समाज भवन मे श्री डी जी राघव जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। सब मम्मति से जिन पदाधिकारियो का चयन हुआ उनका विवरण निम्नलिखित है।

अध्यक्ष—श्री बी एस भण्डारी,

उपाध्यक्ष—श्री एस पी वधूरिया, श्रीमती सतीश, ओबेराय एव श्री केशव देव सेठी,

सचिव—श्री कैलाशचन्द्र गौड,

सह-सचिव—श्री राजकुमार सहगल,

कोषाध्यक्ष—श्री वेद राज शर्मा,

उप कोषाध्यक्ष—वेद पराशर,

पुस्तक काय,वाचनालय—श्री टी पी सिंह, एव शैक्षणिक सस्थाए।

अन्तरग सदस्य—श्रीमती मधुसिंह, सब श्री एस सी मुरली, सुखदेव चोपडा, जिते द्र कुमार, अखिलेश पाडय, कु माया शुक्ल।

उल्लेखनीय है कि गत वष समाज ने अनेक गतिविधिया जैसे निशुल्क स्वास्थ्य रक्षा, सगीत, सस्कृत एव प्रौढ शिक्षा, सावजनिक वाचनालय एव पुस्तकालय इत्यादि सफलता पूवक आयोजित की। आगामी वष मे इन क्रिया-कलापो का और अधिक विस्तार के किए जाने की योजना है।

—कैलाशचन्द्र गौड

मण्डी डबवाली में यजुर्वेद यज्ञ

7-6-86 से 15 6-86 तक श्री लाला दीवान चन्द जी सिंगला ने अपने निवास स्थान मण्डी डबवाली मे पूरे यजुर्वेद का यज्ञ कराया जिस के ब्रह्मा श्री ओम प्रकाश जी आर्य वानप्रस्थी (आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल) बठिण्डा थे रात्रि को हररोज धर्म प्रचार होता था। इस शुभ अवसर पर श्री-लाला दीवान चन्द जी ने नीचे लिखे अनुसार दान दिया।

गुरुकुल आश्रम बठिण्डा को भवन के लिए	5100-00
आर्य वानप्रस्थ आश्रम बठिण्डा को सुरेश चन्द्र जी एव श्री दीवान चन्द के मित्र सम्बन्धियों द्वारा	500-00
शहीदी परिवार सहायता हिन्द समाचार जालन्धर द्वारा।	125-00
आर्य समाज मण्डी डबवाली	101-00

यह यज्ञ एवं प्रचार बहुत सफल हुआ।

—ओम्प्रकाश आर्य वानप्रस्थी

नाम परिवर्तन

आर्यसमाज शक्तिनगर मे 28 5 86 को एक नौजवान मुसलमान मुहम्मद असलम को शुद्ध किया गया उस का नाम प्रवीण कुमार रखा गया वह नौजवान किसी कारण घर से अलग कर मुसलमान हो गया था।

—रामरक्षा मल्ल—मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250

रजि. नं. पी.जे.एल 55

वर्ष 18 अंक 15. 29आषाढ़ सम्वत् 2043 तदनुसार 13 जुलाई 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

खालिस्तान कदापि नहीं बनने दिया जाएगा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान--श्री वीरेन्द्र का वक्तव्य

'पंजाब बचाओ' सम्मेलन में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के लिए हर कुर्बानी का संकल्प

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से [illegible]-86को जालन्धर में'पजाब बचाओ' सम्मेलन में राज्य मे अल्पसख्यको की जान व माल की सुरक्षा के लिए एक मजबूत सगठन कायम करने का फैसला किया गया है। क्योकि पजाब और केन्द्र सरकारे आतकवादियो से एक ही समुदाय के लोगो की जान व माल की रक्षा करने मे असफल रही।

उक्त सम्मेलन मे पजाब भर के विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और व्यापारी नेताओ ने भाग लिया। इस अवसर पर सामूहिक रूप से उन्होंने विश्वास दिलाया कि वह प्रत्येक मूल्य पर पजाब को बचाने और खतरनाक हालात का मुकाबला करने के लिए तन, मन, धन से सहयोग देंगे और यदि कोई बलिदान भी देना पड़ा तो कदापि सकोच नही किया जाएगा।

इस सम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी सच्चिदानन्द जी अमृतसर वालो ने की तथा मच सचालन आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र ने किया।

इस अवसर पर तीन प्रस्ताव पास किए गए। पहला प्रस्ताव श्री योगेन्द्रपाल सेठ ने पेश किया, दूसरा प्रस्ताव श्री ऋषिपाल सिंह एडवोकेट व तीसरा श्रीमती कमला जी आर्या ने पेश किया जो सर्व सम्मति से पास हो गए।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र ने कहा कि आज का सम्मेलन जो हम कर रहे हैं वह गम्भीर परिस्थितियो मे हो रहा है इसलिए हमने बहुत बड़ा सम्मेलन नही बुलाया। इस सम्मेलन मे जैन धर्म, सनातन धर्म और अन्य धर्मों के प्रतिनिधियो को भी आमन्त्रित किया गया हे ताकि परस्पर इकट्ठे बैठ कर बातचीत कर सके और किसी निर्णायक परिणाम पर पहुच जाए।

श्री वीरेन्द्र ने कहा कि खालिस्तान कदापि नही बनने दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि एक-एक हिन्दू इस लड़ाई मे कट मरेगा परन्तु विदेशी शक्तियो के अपवित्र इरादे कदापि सफल नही होने दिए जाए गे।

श्री वीरेन्द्र ने कहा कि प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी से जो पजाब समस्या का समझौता हुआ है उस मे एक गलती रह गयी है वह यह कि समझौता केवल एक समुदाय के लोगो से हुआ है जिस कारण यह गलत समझौता हुआ है।

उन्होंने कहा कि 15 अगस्त को आजादी दिवस के मौका पर लुधियाना अथवा अमृतसर मे एक और सम्मेलन किया जाएगा। उन्होने कहा कि 12 13 जुलाई को दिल्ली मे हो रहे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्मेलन मे अपने प्रतिनिधि भी भेजे जाएगे। उन्होने कहा कि हमारा यह दृढ़ फैसला हे कि पजाब मे रहना है। इसलिए हम यह नही चाहते कि जो कुछ अत्याचार हो रह है वह चुपचाप देखत रह अपितु अब वह समय आ गया है कि हमे तैयारी करनी चाहिए ताकि उचित उत्तर दिया जा सके। उन्हान कहा कि यदि हमे अपनी रक्षा के लिए, हथियार उठाने पड़े तो हम हथियार उठाएगे।

इस अवसर पर श्री यश ने कहा कि श्री वीरेन्द्र ने यह सम्मेलन बुला कर एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। उन्होंने कहा कि जब से अकाली सरकार आई परिस्थितिया बिगड़ गई हैं। इन परिस्थितियो मे यह नही कहा जा सकता कि कब क्या हो जाए।

धार्मिक नेता श्री महाराज कृष्ण खन्ना ने सनसनी पूर्ण रहस्योद्घाटन करते हुए कहा कि सरकार अन्य राज्यो से आई, पी एस और आई. ए एस. के पजाबी अफसरो को पजाब मे बुलाने के प्रयास मे हैं। उन्होंने कहा कि जो सरकार लोगो की रक्षा नही कर सकती वह लोगो से कर वसूल करने का अधिकार भी नही रखती है। श्री खन्ना ने कहा कि देश की एकता और अखण्डता को बहाल करने के लिए हमे प्रत्येक बलिदान के लिए तैयार रहना चाहिए।

भाजपा विधायक वैद्य ओम् प्रकाश दत्त ने सरकार की आलोचना की और कहा कि पजाब मे पुलिस की भर्ती के मध्य आतकवादियो को भर्ती मे प्राथमिकता दी गई है। श्री तुलसीदास जेतवानी ने घोषणा की कि देश की अखण्डता एव एकता के लिए हमे हर समय तैयार रहना है।

इस अवसर पर कांग्रेस (इ) के श्री यश, भाजपा विधायक वैद्य ओम् प्रकाश दत्त, उद्योगपति श्री महाराज कृष्ण खन्ना, व्यापार मण्डल पजाब के प्रधान श्री तुलसीदास जेतावनी, श्रीबलदेव मित्र बिजली, स्वामी वेदानन्द जी रोपड़ वाले, चौधरी ऋषिपाल सिंह एडवोकेट अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग पजाब, श्री जोगिन्द्रपाल सेठ प्रधान आर्य समाज श्रीमती कमला आर्या, श्री सरदारी लाल आर्य रत्न, श्री अमृतलाल बजाज एडवोकेट, श्री बलदेवराज वर्मा भूतपूर्व प्रधान जालन्धर नगरपालिका, श्री हरबस लाल शर्मा, श्री अश्विनी कुमार एडवोकेट, श्री अमृत खोसला, श्री रामनाथ चड्ढा, श्री श्रीराम आहूजा, श्री सुभाष भाटिया अमृतसर, श्री नन्दकिशोर, दीवान जगदीश लुधियाना, श्री केवल कृष्ण पुरी मोगा, श्री बैजनाथ गुप्ता, प्रधान देवी तालाब मन्दिर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

———

केनोपनिषद् कथा माला—२

अभिमानी परमात्मा को नहीं जान सकता

लेखक— श्री पं. रविदत्त जी शर्मा एम.ए.पी.एच. डी. अबोहर

(15 जून से आगे)

तस्मै तृणं निदधावेतद्दहेति ।
तदुपप्रेयाय सर्वं जवेन तन्न शशाक दग्धुम् ॥
स तत एव निववृते ।
नैतदशकं विज्ञातुं यदेतद्यक्षमिति ॥

जातवेदा अग्नि के सामने यक्ष ने एक तिनका रख दिया और कहा कि इस तिनके को जलादो। अग्नि ने उसे जलाने मे अपनी सारी शक्ति लगा दी परन्तु तिनके को न जला सका। इस पर उसे बहुत लज्जित होना पडा। और वापस लौट गया। देवताओ से अग्नि देव ने बताया कि मैं उस को नही जान सका कि वह दिव्य यक्ष कौन है ?

अग्नि देव सब कुछ भस्म करने का अभिमान लेकर प्रस्तुत हुए, परन्तु सारा अभिमान चूर हो गया और बडी लज्जा का अनुभव हुआ, अभिमान का ऐसा ही परिणाम होता है।

अथ वायुमब्रुवन् वायवेतद् विजानीहि ।
किमेतद् यक्षमिति, तथेति ॥
तदभ्यद्रवत् तमभ्यवदत् कोऽसीति ।
वायुर्वा अहमस्मीत्यब्रवीन्मातरिश्वा वा अहमस्मीति ॥

इसके बाद देवताओ ने वायु देवता से कहा "हे वायु देव जाकर पता लगाओ यह दिव्य यक्ष कौन है ?" वायु ने भी स्वीकार कर लिया और दौड़ कर यक्ष के पास पहुंचा तो यक्ष ने पूछा "कौन हो ?" वायु ने उत्तर दिया—मैं वायु हू तथा मातरिश्वा के नाम से प्रसिद्ध हू। (मातरिश्वा—अन्तरिक्ष मे के रहने वाला) इस पर यक्ष ने फिर प्रश्न किया—

तस्मिंस्त्वयि किं वीर्यमिति ?
अपीदं सर्वमाददीय यदिदं पृथिव्यामिति ॥

"तुम्हारे में क्या पराक्रम है ?" वायु ने उत्तर दिया "मैं इस पृथ्वी पर जो कुछ है, सब को आकाश में उडा दू इतनी शक्ति मुझ में है।"

तस्मै तृणं निदधावेतदादत्स्वेति ।
तदुपप्रेयाय सर्वजवेन तन्न शशाकादातुं
स तत एव निववृते,
नैतदशकं विज्ञातुं यदेतद् यक्षमिति ॥

इतना सुन कर यक्ष ने वायु के समक्ष एक तिन का रख दिया और उसे उड़ाने का कहा। वायु ने अपनी सारी शक्ति लगादी, परन्तु तिनका न हिला। तब लज्जित होकर वहा से लौट गया और देवताओ से कहने लगा कि इस को जानने का सामर्थ्य मुझ में नही है। मै नही पता लगा सका कि यह कौन है ?

अथेन्द्रमब्रुवन् मघवन्नेतद् ।
विजानीहि किमेतद् यक्षमिति तथेति ।
तदभ्यद्रवत् । तस्मात् तिरोदधे ॥
स तस्मिन्नेवाकाशे स्त्रियमाजगाम बहुशोभमानामुमां ।
हैमवतीं तां होवाच किमेतद् यक्षमिति ॥

तब देवताओ ने इन्द्र से कहा कि हे इन्द्र देव आप जाओ और पता लगाओ यह कौन है ? इन्द्र ने स्वीकार किया और तेजी से गया। पास पहुंचने पर यक्ष देखते ही गायब हो गया। इन्द्र फिर वापिस न आकर वहीं डटे रहे। इन्द्र ने यक्ष के स्थान पर एक सुन्दर स्त्री को देखा। उसे देख कर इन्द्र निकट पहुंचे और स्त्री से यक्ष के सम्बन्ध में पूछा कि यह यक्ष कौन था ?

यहां स्त्री ब्रह्म की शक्ति का प्रतीक है। इन्द्र में इतना सामर्थ्य था कि उसने ब्रह्म की शक्ति का पता लगा लिया।

सा ब्रह्मेति होवाच। ब्रह्मणो वा एतद्विजये।
महीयध्वमिति, ततो हैव विदाञ्चकार ब्रह्मेति ॥

उस स्त्री ने इन्द्र से कहा कि वह ब्रह्म है। परमात्मा की विजय में तुम अपनी विजय मानने लगे थे। तब इन्द्र ने समझ लिया कि निश्चय ही वह ब्रह्म है। ब्रह्म की शक्ति से ही ब्रह्म पहचाना जाता है, उस शक्ति को समझने का सामर्थ्य इन्द्र में था अतः उस ने ब्रह्म का पता लगा लिया।

तस्माद् वा एते देवा अतितरामिवान्यान् देवान् ।
यदग्निर्वायुरिन्द्रस्ते ह्येनन्नेदिष्ठं पस्पर्शुस्ते ।
ह्येनत् प्रथमो विदाञ्चकार ब्रह्मेति ॥

इसीलिए अग्नि वायु इन्द्र ये तीनो देवता प्रसिद्ध हैं और अन्य देवताओ की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ हैं, क्यों कि इन्होंने ही सर्व प्रथम ब्रह्म का साक्षात्कार किया।

अग्नि तथा वायु ने तो ब्रह्म का दर्शन किया इसलिए ये श्रेष्ठ हैं, परन्तु इन्द्र ने वार्तालाप भी किया और उसके रहस्य को जाना इसलिए वही सर्वश्रेष्ठ है। ससार मे उन्ही महापुरुषों की महिमा सबसे बढ कर मानी जाती है जो कि परमात्मा का साक्षात्कार कर लें, ब्रह्म के रहस्य को भली-भाति समझ ले। ब्रह्म ज्ञान ही मनुष्य की महानता का प्रतीक है और मानव ज्ञान की पराकाष्ठा है।

तस्माद् वा इन्द्रोऽतितरामिवान्यान् देवान् ।
स ह्येनन्नेदिष्ठं पस्पर्श,
स ह्येनत् प्रथमो विदाञ्चकार ब्रह्मेति ॥

इसलिए इन्द्र अन्य देवताओं की अपेक्षा अतिशय श्रेष्ठ है। क्योंकि उसने ब्रह्म को बहुत निकट से जाना और दूसरों से पहले पता लगाया कि वह ब्रह्म है। ब्रह्म की शक्ति को पूरी तरह जान लिया और उसे ब्रह्म विषयक कोई उलझन नहीं रही। उसने सन्देह रहित ज्ञान प्राप्त किया। स्वयं का सन्देह भी मिटाया तथा दूसरों को भी लाभान्वित किया। केवल जानना ही पर्याप्त नही अपितु दूसरों को भी अन्धकार से प्रकाश मे ले जाने में मनुष्य की महानता है।

तस्यैष आदेशो यदेतद् विद्युतो व्यद्युतदा इतीन्यमीमिषदा इत्यधिदैवतम् ॥

उस ब्रह्म का संकेत रूप में यही उपदेश है, जो बिजली की चमक जैसा है और पलकों का झपकना जैसा आदि दैविक उपदेश है। जब साधक के हृदय मे वैराग्य की लहर उठती है तो उसे क्षणिक दैवी प्रेरणा समझना चाहिए जो एक अमिट छाप छोड़ जाती है। इस से एक विचित्र आनन्द की प्राप्ति होती है। यह एक प्रकार से ईश्वर की कृपा ही कही जा सकती है। किसी विरले को ही ऐसी अनुभूति होती है। पहले तो ऐसा कोई चिन्ह प्रगट होना आसान नहीं, फिर उस को ग्रहण करना भी सब के बस की बात नहीं है। यक्ष का प्रकट होना और अन्तर्हित होना ऐसा ही उदाहरण है जिसे अग्नि तथा वायु नहीं समझ सके, केवल इन्द्र में ही वह सामर्थ्य था।

अथाध्यात्मं यदेतद् गच्छतीव च मनोऽनेन !
चैतदुपस्मरत्यभीक्ष्णं संकल्पः ॥

अब आध्यात्मिक उदाहरण प्रस्तुत है जैसे कि हमारा मन ईश्वर की ओर जाता हुआ सा प्रतीत होता है, साथ ही से बार-बार स्मरण भी करता है और साक्षात्कार का सकल्प भी करता है। यहां पर मन की गति का वर्णन किया गया है। मन में जिस कार्य के प्रति लगन हो जाती है तो भुलाने से भी नही भूलता, बार-बार उसी की ओर भागता है एवं प्राप्त करने का पक्का इरादा बना लेता है। यदि किसी भी तरह मन पर ईश्वर भक्ति का प्रभाव पड जाए तो फिर कार्य आसान हो जाता है। जैसा सकल्प होता है, वैसा ही उद्योग भी होने लगता है। मनन चिन्तन आदि ध्येय का ही किया जाता है और कोई बात अच्छी नही लगती।

तद्ध तद्वनं नाम तद्वनमित्युपासितव्य स य एतदेवं वेदाभिहैनं सर्वाणि भूतानि सवाञ्छन्ति ॥

वह परमेश्वर 'तद्वन' नाम से प्रसिद्ध है क्योकि सबके द्वारा भेजने योग्य है। 'तद्वन' ऐसा जान कर ही उस की उपासना करनी चाहिए। जो भी उसे इस प्रकार जानता है उसे सभी प्राणी चाहने लगते हैं और वह सब का ही प्रिय बन जाता है।

इस स्थल में परमात्मा अथवा ब्रह्म का प्रसिद्ध नाम 'तद्वन' बताया है। यहां उपासना का प्रकरण है अतः सर्वथा उपयुक्त ही है। इस शब्द में एक तो उपासना का भाव भरा है, दूसरा समष्टिरूप से उपासना का विषय बताया गया है। वह किसी एक का नहीं किन्तु समस्त प्राणियों का प्रिय है। जो उसे रहस्य पूर्वक मान लेता है वह परमात्मा का प्रिय तो हो ही जाता है, साथ ही प्रजापति की सारी प्रजा भी उसे प्रेम करने लगती है।

उपनिषदं भो ब्रूहीत्युक्ता त उपनिषद् ब्राह्मीं ।
वाव त उपनिषदमब्रूमेति ॥

शिष्य कहता है कि हे गुरुदेव ! इस रहस्यमयी ब्रह्मविद्या का फिर से उपदेश कीजिये। इस प्रकार पूछने पर गुरु जी ने कहा कि वह विद्या तो तुम्हें बतलाती जो भी रहस्य बताया है, निश्चय ही वह ब्रह्मविद्या का उपनिषद् या रहस्य है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय—

आर्य समाज और राजनीति

देश में आजकल कई प्रकार की राजनैतिक गतिविधियां हो रही हैं। यह कहना भी अत्योक्ति न होगी की सारे देश मे ही एक उथल-पुथल मची हुई है और देश के सामने इस समय कोई निश्चित दिशा नहीं है। सब राजनैतिक दल धीरे-2 अपना महत्व खो रहे हैं। परन्तु जनता इस स्थिति से बहुत अधिक चिन्तित है। न तो उसे कोई ऐसा राजनैतिक नेता दिखाई देता है जो उसे ठीक मार्ग दिखा सके न ही कोई राजनैतिक दल ऐसा है जो वर्तमान परिस्थितियों मे सामने आकर अपने देशवासियो को बता सके कि वह क्या करें। इस लिए जनता इधर-उधर भटक रही है।

आर्य समाज कोई राजनैतिक सस्था नहीं है परन्तु यदि हम यह कहें कि इसका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है तो यह भी उचित न होगा। देश का वातावरण ही कुछ ऐसा बन गया है कि कोई भी व्यक्ति राजनीति से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता और आर्य समाज ने देश के स्वतन्त्रता सग्राम मे एक बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया था। आर्य समाज कोई अशिक्षित और गवार लोगो का टोला नहीं है। इसमे प्रायः सब व्यक्ति पढ़े लिखे होते हैं। इस लिए वह भी किसी न किसी रूप मे देश की राजनीति से प्रभावित होते रहते हैं, परन्तु उनकी भी मनः स्थिति अपने दूसरे देशवासियो से कुछ भिन्न नहीं है। वह इस लिए कि उन्हें भी यह नहीं पता चलता कि देश की राजनीति मे वह क्या करें। इस का एक कारण यह भी है कि आर्य समाज का नेतृत्व इस प्रश्न पर बटा रहा कि आर्य समाज को राजनीति में सक्रिय भाग लेना चाहिए या नहीं ? इसलिए आर्य समाज की ओर से लोगो को कोई निश्चित दिशा नहीं दिखाई गई। जो जहा अपना पाव फसा सकता है फसाने का प्रयास करता है। अधिक सोचनीय स्थिति यह है कि जिनके हाथ मे आर्य समाज का नेतृत्व है वह स्वय नहीं जानते कि आर्य समाज को क्या करना चाहिए कभी काग्रेस के पक्ष मे वक्तव्य दे दिए जाते हैं, कभी भारतीय जनता पार्टी के पक्ष मे। आर्य समाज के कुछ नेताओ की स्थिति तो अब यह हो गई है कि "गगा गए तो गगाराम जमुना गए तो जमना दास" जो भी राजनैतिक दल सत्तारूढ़ हो उसी के साथ चल पड़ते हैं। इसका यह परिणाम है कि आर्य समाज न किसी का बन सका है और न किसी को अपना बना सका है। यदि वह इतना शक्तिशाली और सगठित होता कि राजनैतिक दल उसके पीछे भागते तो उसे स्वयं किसी दूसरे के पीछे भागने की आवश्यकता न थी। परन्तु आर्य समाज के नेताओ को क्योंकि स्वय यह पता नहीं होता कि वह क्या करें ? इस लिए वह कभी किसी के पीछे और कभी किसी के पीछे चल पड़ते हैं।

आर्य समाज की वास्तविक स्थिति क्या है ? इसका कुछ अनुमान हम कुछ उन घटनाओ से लगा सकते हैं जो कि पिछले दो-तीन मास मे हुई हैं। मई मे सार्वदेशिक सभा का एक शिष्टमण्डल पजाब की स्थिति को देखने के लिए यहां आया था परन्तु उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के अधिकारियों को यह सूचित न किया कि वह आ रहे हैं। हमे पता उसी समय चला जब वह यहां पहुच गए। अपना सारा कार्यक्रम उन्होंने स्वय बनाया था। कोई निश्चित और सुनियोजित कार्यक्रम न था। आये और पजाब के भिन्न-2 शहरो मे भ्रमण करने के पश्चात् वापिस चले गए। आज तक यह पता नहीं चला कि वह क्यों आए थे और क्या कर गए हैं। समाचारपत्रों में यह प्रकाशित हो गया कि आर्य समाज का एक शिष्टमण्डल पजाब का भ्रमण कर रहा है। परन्तु आर्य समाज को उसका कुछ पता न था।

पिछले मास रोहतक मे श्री स्वामी इन्द्रवेश ने तीन सप्ताह का एक अनशन किया था। यद्यपि स्वामी इन्द्रवेश को भी सार्वदेशिक सभा ने आर्य समाज से निष्कासित कर रखा है फिर भी इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि आज भी आर्य समाज में उनका एक विशेष स्थान है। उन्होंने अनशन किया और आर्य जगत् को पता उस समय चला जब समाचारपत्रों मे उनके स्वास्थ्य के विषय में चिन्ताजनक समाचार प्रकाशित होने लगे और जब सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी ने रोहतक जाकर उनका अनशन तुड़वाया तो फिर स्थिति आर्य जनता के सामने आई।

6 जुलाई को जालन्धर मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की तरफ से "पजाब बचाओ" सम्मेलन किया गया। इसमे पजाब की आर्य समाजों के प्रतिनिधि सम्मलित हुए। यह पजाब के विषय मे पजाब सभा का सम्मेलन था। इस लिए सब आर्य समाजो को यह सूचित कर दिया गया था कि यह सम्मेलन हो रहा है।

अब 12 और 13 जुलाई को सार्वदेशिक सभा की ओर से दिल्ली मे इसी प्रकार का एक सम्मेलन हो रहा है। वहा क्या निर्णय लिये जाते हैं और उन्हे कैसे क्रियान्वित किया जा सकता है। यह तो 13 जुलाई के बाद ही पता चलेगा परन्तु जो कुछ मैंने ऊपर लिखा है उस से यह बात तो स्पष्ट हो जाती है कि जहा तक देश की राजनीति का सम्बन्ध है आर्य समाज का कोई निश्चित दृष्टिकोण नहीं है। न आर्य जनता को यह पता है कि इन परिस्थितियों मे उन्हे क्या करना चाहिए। राजनीतिक विषय मे आर्य समाज का कोई केन्द्रीय नेतृत्व नहीं है जो सारे आर्य जगत् को बता सके कि हमे क्या करना चाहिए। इसलिए जिसका जो बश चलता है वह कर लेना है। यह स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। आर्य समाज को गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए कि देश की राजनीति मे उसने कोई सक्रिय भाग लेना है या नहीं ? यदि नहीं लेना तो जो सम्मेलन अब किये जा रहे हैं वह बन्द होने चाहिए और यदि राजनीति मे भी हमने टाग अड़ानी है तो गम्भीरता पूर्वक विचार करके उसका एक कार्यक्रम बनाना चाहिए और फिर सारे आर्य जगत् को उस दिशा मे ले जाना चाहिए। जिस समाज की सारे देश मे चार हजार के लगभग शाखाए हैं वह यदि सक्रिय हो जाए तो देश की राजनीति को एक ऐसी दिशा दे सकती हैं जो इस देश का कायाकल्प कर दे। उसके लिए यह आवश्यक है कि आर्य समाज के नेता पहले अपना मन बनाए कि वह क्या चाहते है। कभी काग्रेस के पीछे भागना और कभी भारतीय जनता पार्टी के पीछे भागना सन्तोषजनक स्थिति नहीं है। या तो आर्य समाज स्वय आगे आकर जनता का नेतृत्व करे या बिलकुल ही पीछे हट कर चुपचाप बैठ जाए। यह आज की ढिल-मिल यकीनी स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। आर्य समाज को इस विषय मे कोई निश्चित मार्ग अपनाना चाहिए।

—वीरेन्द्र

पंजाब बचाओ सम्मेलन

6 जुलाई को जालन्धर मे जो पजाब बचाओ सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के तत्वाधान मे हुआ है वह अत्यन्त सफल रहा है पजाब के सब बड़े-2 नगरो से आर्य समाजी आए हुए थे। इन के अतिरिक्त सनातन धर्म सभा के प्रतिनिधि, कुछ काग्रेसी और भारतीय जनता पार्टी के समर्थक आर्य समाजी भी आए हुए थे। इस सम्मेलन की कार्यवाही आज के आर्य मर्यादा मे प्रकाशित की जा रही है। इस से कुछ अनुमान लगाया जा सकता है कि उस सम्मेलन मे पजाब की समस्याओ के विषय मे क्या विचार-विमर्श किया गया। यह पहला सम्मेलन है जो आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने किया है। इसके पश्चात् हम पजाब के दूसरे शहरो मे भी इसी प्रकार के सम्मेलन करने की योजना बना रहे हैं। इसका एक परिणाम यह भी हो सकता है कि निश्चित रूप से जनमत गठित हो और साथ ही आर्य समाज का दृष्टिकोण भी लोगो के सामने आता रहे। पजाब मे अकाली बहुत सक्रिय हैं परन्तु हिन्दुओ की कोई धार्मिक या सामाजिक सस्था आगे नही आ रही। इस क्षेत्र मे आर्य समाज ने पहल की है आशा है इसका परिणाम अच्छा रहेगा। पहले जनमत को सगठित करके उसके पश्चात् हम सोचेंगे कि अब हमे सक्रिय पग क्या उठाना चाहिए। इसलिए पजाब की आर्य समाजो को अब इस दिशा मे सक्रिय हो कर अपने जिला स्तर पर इस प्रकार के सम्मेलन करने की योजना बनानी चाहिए।

—वीरेन्द्र

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वाधान में "पंजाब बचाओ सम्मेलन" में ६ जुलाई को जालन्धर में सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव संख्या—1

पिछले 5 वर्षों से पंजाब मे जो परिस्थितिया पैदा हो रहीं हैं, उनके कारण आज स्थिति इतनी गम्भीर और भयानक हो गई है कि कई बार ऐसा प्रतीत होता है कि कहीं 1947 के इतिहास की पुनरावृत्ति तो नही हो रही। सब से अधिक दुखद और निराशा जनक स्थिति यह है कि सरकार परिस्थितियो पर नियन्त्रण करने में पूर्णतया विफल रही है। सितम्बर 1985 में जब पंजाब में अकाली मन्त्रिमण्डल की स्थापना हुई। उस समय से स्थिति और भी अधिक बिगड़ गई है और इस सम्मेलन को यह कहने में कोई संकोच नही कि पंजाब की अकाली सरकार ने इन परिस्थितियों को कई बार प्रोत्साहन दिया है। उससे अब पंजाब के अल्पसंख्यकों की यह निश्चित धारणा होती जा रही है कि यद्यपि कई अकाली नेता कहते हैं कि वे खालिस्तान के विरुद्ध हैं, परन्तु अपनी कार्य पद्धति के द्वारा वे खालिस्तान के लिए मार्ग प्रशस्त करते जा रहे हैं। पहले पंजाब में निरापराध और निःसहाय हिन्दुओ की हत्याएं की गई और अब उन्हे अपना घर बाहर छोड़ कर जाने पर विवश किया जा रहा है। इस समय तक न तो पजाब सरकार ने और न भारत सरकार ने कोई ऐसा सक्रिय पग उठाया है, जिसके द्वारा जो चले गये हैं, वे वापस आ सकें और जो जाना चाहते है उन्हें जाने से रोका जा सके। ऐसा प्रतीत होता है कि यह सब कुछ एक सुनियोजित और सुनिश्चित योजना के अनुसार किया जा रहा है।

जो कुछ हो रहा है उसके कारण पजाब के अल्पसख्यक हिन्दुओं को तो बहुत अधिक हानि पहुंचेगी ही और हो सकता है कि ऐसा समय भी आये कि 1947 की तरह वे सब अपना घर-बार छोड कर दूसरे प्रान्तो मे जाने पर विवश हो जाए। परन्तु इसका सबसे अधिक आघात देश की एकता, स्वाधीनता व अखण्डता को पहुंचेगा। यदि एक बार पजाब में पृथकतावादी वर्ग सफल हो गया तो देश के दूसरे कई प्रान्तों में भी देश के विभाजन की योजनायें बन जाएगी। इसलिए इस "पंजाब बचाओ सम्मेलन" की यह निश्चित धारणा है कि आज केवल पजाब को ही बचाने का प्रश्न नही, सारे देश की अखण्डता, एकता व स्वाधीनता को बचाने का प्रश्न है। पंजाब के अलगाववादी तत्व यदि सफल हो गए तो सारे देश में इस प्रकार के आन्दोलन चल पड़ेंगे। जिन्हे सम्भालना सरकार के लिए कठिन हो जाएगा। इसलिए इस सम्मेलन की यह निश्चित धारणा और निश्चित माग है कि 1966 मे भाषा के आधार पर पजाब का जो विभाजन किया था, उसे तुरन्त समाप्त कर के पजाब और हरियाणा को मिला कर महां पंजाब बनाया जाये। पंजाब एक सीमान्त प्रदेश है। इसकी सुरक्षा देश की सुरक्षा है। इसलिए भी यह आवश्यक है कि पजाब को एक सुदृढ और समृद्धिशाली प्रान्त बनाया जाये। यह उसी स्थिति में हो सकता है यदि पंजाब और हरियाणा के सारे क्षेत्र को फिर से उसी प्रकार का पंजाब बना दिया जाए, जो 31 अक्तूबर 1966 को था। पंजाब व हरियाणा प्रान्त मे इस समय एक प्रकार की प्रतिद्वन्दता पैदा हो रही है जो आगे चल कर देश के लिए अत्यन्त हानिकारक होगी। पंजाब में जो पृथकतावादी तत्व सिर उठा रहे है। उन्हे दबाने के लिए यह आवश्यक है कि फिर से महां पंजाब बनाया जाए। देश की स्वाधीनता और अखण्डता के लिए एक बहुत बड़ा खतरा पैदा कर दिया गया है। पाकिस्तान और कुछ दूसरे देश इस आग को हवा देने के लिए अपना बहुत अधिक योगदान दे रहे हैं। यदि महा-पंजाब बना दिया जाए तो न चण्डीगढ का झगडा रहेगा और न नहरी पानी का। इस महा पजाब की दो भाषाये होगी पजाबी और हिन्दी। इस प्रकार यह एक अत्यन्त शक्तिशाली और प्रभावशाली प्रदेश बन जाएगा। इसके बिना पंजाब समस्या का कोई समाधान नहीं है।

प्रस्ताव संख्या—2

पजाब मे आतकवाद और उग्रवाद पिछले 5 वर्षों से किसी न किसी रूप में सामने आता रहा है। यह अत्यन्त खेद का विषय है कि सरकार ने इसे दबाने के लिए कोई प्रभावशाली पग नहीं उठाया, बल्कि पजाब की अकाली सरकार की नीति उग्रवाद और आतकवाद दोनों को प्रोत्साहन देती है। इसलिए निकट भविष्य में इन दोनों के समाप्त होने की कोई आशा नही। पिछले एक वर्ष से 300 के लगभग व्यक्ति मारे जा चुके हैं और अब प्रान्त में भिन्न-2 नगरों व गांवों से कई लोग अपना घर-बार छोड़ कर सुरक्षा की तलाश में दूसरे प्रान्तो में जा रहे हैं। किसी भी सरकार के लिए इससे बढ़ कर लज्जाजनक स्थिति और कोई नहीं हो सकती कि वह अपनी प्रजा की रक्षा न कर सके और लोग उसके सरक्षण को स्वीकार करने को तैयार न हों और दूसरे प्रान्तों में चले जाएं। अभी यह कहना कठिन है कि यह स्थिति निकट भविष्य में सुधर सकेगी या नहीं। इसलिये यह सम्मेलन पंजाब सरकार और भारत सरकार इन दोनों से यह मांग करता है कि :-

1. 1981 से लेकर आज तक पंजाब में आतंकवाद और उग्रवाद के कारणों का पता लगाने के लिये भारत सरकार उसी तरह का एक उच्चस्तरीय आयोग नियुक्त करे, जिस प्रकार का दिल्ली और दूसरे नगरों में हुये उग्रवाद की जांच के लिए नियुक्त किया गया था।

2. पिछले 5 वर्षों में जितने व्यक्ति पंजाब में उग्रवादियों के हाथों मारे गये हैं। उन सब के परिवारों को उसी प्रकार आर्थिक सहायता दी जाये, जिस प्रकार दिल्ली और दूसरे प्रान्तों के दंगा पीड़ितों की सहायता की गई है।

3. जो परिवार पंजाब छोड़ कर दूसरे प्रदेशों में जा रहे हैं, उनके पुर्नवास की सारी जिम्मेदारी भारत सरकार अपने ऊपर ले और उनमे से जो वापस आने को तैयार हों उनके पुर्नवास की जिम्मेदारी पंजाब सरकार ले।

4. पंजाब में एक ऐसी समिति गठित की जाए जो पंजाब के अल्पसंख्यक जनता मे फिर से विश्वास पैदा कर के उन्हें पंजाब से बाहर न जाने की प्रेरणा करे।

5. भारत सरकार उच्चतम न्यायालय के किसी न्यायाधीश की अध्यक्षता में एक ऐसा आयोग नियुक्त करे जो पंजाब के मन्त्री-मण्डल की गतिविधियो के विषय मे जाच करें और यह पता करें कि पजाब के मन्त्रीमण्डल मे कितने ऐसे मन्त्री हैं, जिनका सम्बन्ध आतकवादियो और उग्रवादियों के साथ है। पिछले कुछ समय से समाचारपत्रो में ऐसे समाचार प्रकाशित हो रहे हैं जिनसे पता चलता है कि उग्रवादियों का सीधा सम्पर्क पजाब के कई मन्त्रियो से हैं और वे उन्हें संरक्षण देते हैं। जब तक इस प्रकार के तत्वों को मन्त्रिमण्डल से नही निकाला जाएगा, उस समय तक पंजाब में आतंकवाद और उग्रवाद समाप्त नही हो सकता इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि एक उच्चस्तरीय आयोग इस काम के लिए बनाया जाए। उसी स्थिति में पंजाब के अल्पसंख्यकों में यह विश्वास पैदा होगा कि सरकार वास्तव में आतकवाद और उग्रवाद को समाप्त करना चाहती है।

6. यह अब एक खुला रहस्य है कि पजाब की पुलिस मे भी ऐसे लोग बैठे है, जो उग्रवादियो की सहायता करते हैं। यही कारण है कि उनकी गतिविधियां दिन प्रतिदिन बढती जा रही हैं। इसीलिए यह सम्मेलन यह मांग करता है कि तुरन्त एक उच्चस्तरीय कमेटी बना कर पंजाब पुलिस में काम करने वाले अधिकारियो व सिपाहियों की छान-बीन की जाए और जिनका सम्बन्ध उग्रवादियों के साथ है, उन्हें तुरन्त पुलिस में से निकाला जाए।

प्रस्ताव संख्या—3

24 जुलाई, 1985 को जब प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी और अकाली दल के अध्यक्ष श्री सन्त हरचन्दसिंह लौंगोवाल के बीच समझौता हुआ था, तो पंजाब की जनता ने सुख का सांस लिया था। यद्यपि इस समझौता से साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन मिल सकता था और सिद्धान्त रूप से सरकार का किसी साम्प्रदायिक पार्टी के साथ समझौता करना भी अनुचित था। फिर भी इसका स्वागत किया गया था। इस आशा के साथ कि अब पंजाब की स्थिति सुधर जाएगी। परन्तु पिछले एक वर्ष में जो कुछ हुआ है, उसने जनता की उन आशंकाओं की सम्पुष्टि कर दी है कि साम्प्रदायिकता को बढावा देकर सरकार ने राष्ट्रवादी व्यक्तियों के लिए एक बहुत बडा संकट खड़ा कर दिया है। जब से पंजाब में अकाली दल सत्तारूढ हुआ है, उस समय से न केवल साम्प्रदायिकता की आग पहले से भी अधिक तेजी से फैल गई है साथ ही आतंकवाद और उग्रवाद ने भी एक भयंकर रूप धारण कर लिया है। कोई दिन ऐसा नहीं जाता, जिस दिन पंजाब में कहीं न कहीं हिन्दुओं की हत्या नही कर दी जाती और अब तो पजाब में रहने वाले हिन्दू अपने आपको असुरक्षित समझते हुए अपने घर-बार को छोड़ कर उसी प्रकार जाने लगे हैं, जैसे 1947 में पाकिस्तान को छोड़ कर आए थे। ऐसा प्रतीत होता है कि पाकिस्तान की पुनरावृत्ति हो रही है। पंजाब का हिन्दू अपने आपको निःसहाय समझता है। अधिक शोचनीय स्थिति यह है कि भारत सरकार भी उसके लिए कुछ नही कर रही। प्रधानमन्त्री ने अपने वक्तव्यों के द्वारा अकाली दल की साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन ही दिया है और आज वह आग इतनी भड़क उठी है कि वह दूसरे प्रान्तों में भी फैल रही है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

मानव जीवन में अन्न का महत्व

लेखक—श्री महेन्द्र जी शास्त्री

(22 जून से आगे)

3. अन्न को बरबाद न होने दीजिये—अन्न एक बहुत ही महत्वपूर्ण पदार्थ है। गीता 3।14 मे लिखा है कि—"अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्न-सम्भवः। यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञ कर्म-समुद्भव ॥" अन्न से समस्त प्राणी उत्पन्न होते हैं, अन्न मेघ से पैदा होता है, मेघ यज्ञ से बनता है, और यज्ञ कर्म से उत्पन्न होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि अन्न ही प्राणीमात्र का आधार है। मनुस्मृति (3।76) मे कहा है कि—"आदित्याज्जायते वृष्टि-र्वृष्टेरन्न तत. प्रजा: ॥" जो अन्न प्राणीमात्र का आधार है, उसे बरबाद करना महापाप है। देखा जाता है कि ब्याह-शादियो, पार्टियो, होटलो, ढाबो, विविध भोजो, बरसियो, श्राद्धो, पिकनिक आदि कृत्यो, और मन्दिरो मे चढावे के रूप मे भारी अन्न बरबाद हो जाता है।

इसी प्रकार सरकारी गोदामो और घरो मे चूहो, सुरसरी, पिडाई आदि कृमि कीटो द्वारा करोडो मन अन्न बरबाद हो जाता है। इससे देश की भारी हानि होनी है। जिस देश की आधी से अधिक आबादी भर पेट भोजन नही पा रही, वहा अन्न की इस प्रकार बरबादी एक जघन्य अपराध है। अन्न किसी राष्ट्र की रीढ की हड्डी के समान है, उसकी ओर से लापरवाही कभी नही बरती जानी चाहिए। अन्न के महत्व का पता तब चलता है, जब करोडो आदमी अकाल के कारण भुखमरी का शिकार बनकर पेडो की छालो को खाकर जीवन बिताने पर मजबूर हो जाते हैं। और "बुभुक्षित. किं न करोति पापम्, क्षीणा जना निष्करुणा भवन्ति।" नाना प्रकार के पाप कर्म करने पर उतारू हो जाते हैं, तथा नाना प्रकार के जघन्य अपराध करते हैं। ऋग्वेद(10।117।7) मे लिखा है कि—"कृषन्नित फाल आशित कृणोति" अर्थात् जोतने वाला फाल ही प्राणीमात्र का पेट भरता है, क्योंकि उसके द्वारा ही अन्न की उपज होती है, जिसे खाकर प्राणी जीवित रहते हैं।

4. शरीर मे शक्ति का स्रोत अन्न ही है—शरीर मे शक्ति तभी आती है, जब कि अन्न ग्रहण किया जाता है। अन्न महाशक्ति का भण्डार है। अन्न की शक्ति से ही शरीर मन और आत्मा बल से सम्पन्न होते हैं। जैसा कि मन्त्र कहता है—"पितु नु स्तोष महो धर्माण तविषीम् ॥" अन्न प्राणी मात्र का पितृवत् रक्षक, उनमे अपार बलो का धारक, अपनी शक्ति से शरीर आत्मा और मन को शक्ति सम्पन्न रखने वाला है, इसी से मैं उसका आदर करता हू। भूखा व्यक्ति बलहीन वा निष्प्राण हो जाता है, प्रभु की भक्ति भी अन्न के अभाव मे समाप्त हो जाती है। कहावत है कि—"भूखे भक्ति न होय गोपाला। ले लो अपनी कण्ठी अरु माला ॥" भूख से पीडित व्यक्ति का भगवत् भजन मे मन नही लगता। इसी से अन्न का दान सर्वोत्तम दान माना गया है—"सर्वेषामेव दानानामन्नदान विशिष्यते।" अन्न खाए बिना अन्य उपायो से शरीर मे वह शक्ति नही आती, जो आन्तरिक शत्रुओ और जाडा गर्मी बरसात आदि बाह्य शत्रुओ का मानव मुकाबला कर सके। खाली पेट रहने पर बाह्य शत्रु शरीर को शीघ्र विनष्ट वा रुग्ण कर डालते हैं। लू ह से बचने के लिए पेट को भरे रहना और पानी का सेवन करते रहना बहुत आवश्यक है। हमारा भोजन गर्म और चिकनाई से युक्त होना चाहिए—"उष्ण स्निग्ध च भुञ्जीत।" बासी, सडा गला भोजन सदा रोग कारक होता है।

5 स्वादिष्ट पदार्थ कभी अकेला न खावे—शास्त्रकार कहते है कि स्वादिष्ट पदार्थ कभी अकेला न खावे—'एक. स्वादु न भुञ्जीत।" इसके साथ यह सिद्धान्त भी ध्यान मे रखना चाहिए कि—"विभज्य अश्नीयात" अर्थात् स्वादिष्ट पदार्थ को सदा अन्यो मे भी बाट कर फिर खावे। ऋग्वेद (10।48।1) मे लिखा है कि "मा हवन्ते पितर न जन्तवो अह दाशुषे विभजामि भोजनम्" सब प्राणी मुझे पिता की भान्ति पुकारते हैं, मैं दानशील सबको सुख देने वाले मनुष्य को भोज्य सामग्री प्रदान करता हू, ताकि वह अन्यो को भी बाट कर खावे। प्रत्येक गृहस्थ का यह कर्त्तव्य है कि वह अन्य भूखे नगे लोगों का भी पूरा ध्यान रखे, उन्हे खिला कर और समागत अतिथियो को पहले भोजन कराके ही बाद मे स्वय भोजन करे। इसी से वेद कहता है कि-"केवलाघो भवति केवलादी" जो भूखे नगो का ध्यान न कर अकेला भोजन करता है, वह पाप का भोजन करता है और स्वय अकेला भोग कर पाप का भागी बनता है। गीता मे भी कहा है-"भुञ्जते त्वघ पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्" जो केवल अपने लिए ही भोजन पकाते हैं वे पापी पाप का भोजन करते हैं। कृषि के महत्व पर वेद ने इसी लिए विशेष बल दिया है, और उसे ही सर्वोत्तम धन्धा माना है। ऋग्वेद(17।34।13) मे कहा है कि—"अक्षैर्मा दीव्य कृषि मित्कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमान: ।' अरे मानव ! तू जुआ न खेल, खेती ही किया कर, उस धन्धे से जो पैसा मिले उसे ही बहुत समझकर सन्तोष कर और मौज मार। इसी से ही कहावत है कि-"उत्तम खेती मध्यम बाण। निखद चाकरी भीख निदान ॥" वेद मे कृषि पर बडा ओर दिया गया है। जुआ आदि निकृष्ट उपायो से कमाया पैसा स्थिर नही रहता ॥

एक सार गर्भित लेख

कचरे के ढेर पर अगरबत्ती

ले—श्री पण्डित सत्यदेव जी विद्यालंकार
शान्ति सदन सेंट्रल टाऊन जालन्धर

(गताक से आगे)

दूसरे आर्य समाज के प्रमुख सज्जनो द्वारा समस्त हिन्दू समाज के नेतृत्व की महत्वाकाक्षा पूरी न हो पाई। जितने भी धर्म हैं उनमे आचरण और नैतिकता के ऊचे सिद्धान्तो के साथ-2 अन्ध श्रद्धा, जड पूजा, गुरुवाद, चमत्कारो का पाखड और निरर्थक प्रक्रियाए भी मिली होती है। धर्म का नेतृत्व सदा कट्टरवादियो के हाथ मे होता है। उदार विचार वाले, सुधारवादी तथा बुद्धिजीवी प्राय पीछे छोड दिए जाते हैं। ईरान का अयातुल्लाह खोमैनी, पाकिस्तान का जनरल जिया, और पजाब का भिंडरावाला इसी कट्टरवाद के कारण आसमान मे चढ गए। आर्य समाजी नता न तो गगा मैया की जय बुलाएगे, न वैष्णो देवी की यात्रा करेंगे, न सन्तोषी माता की भेन्ट चढाएगे, न भगवान राम और कृष्ण के रूप सजा कर झूम झूम कर कीर्तन करेंगे और न ही शिव के ज्योतिर्लिङ्ग पर मनो दूध की धारा बहाएगे, तो हिन्दू जनता, धर्म परायण और द्विज उपासक जनसमूह उनके पीछे कैसे आएगा ?

मेरी तुच्छ बुद्धि मे तो आर्य नेताओं को इस मृगमरीचिका के पीछे नही भागना चाहिए। अपने क्षेत्र और सीमाओ को पहचानना चाहिए। ऋषि दयानन्द की जलाई उस ज्ञान ज्वाला को प्रचण्ड करना चाहिए जो हिन्दू धर्म के ही नही सब सम्प्रदायो के और तथा कथित धर्मों के मल की भस्म कर सके।

मैं यह भी समझता हू कि हिन्दू धर्म के नाश के साथ आर्य समाज का अपने आप म नाश हो जाएगा। भारत के या विश्व के जिस क्षेत्र मे हिन्दू धर्म नही रहगा, हिन्दू जनता नही रहेगी, आर्य समाज नही रह सकता। हम पाकिस्तान मे आर्य समाज की कल्पना भी नही कर सकते। यह यथार्थ है कि वेद, वेद के अग उपाग, समस्त सस्कृत साहित्य, समस्त भारतीय प्राचीन ज्ञान परम्पराए, नैतिक मल्य तथा जीवन के मूल्य हिन्दू समाज के आधार पर ही जीवित रह सकते है। सम्भवत भारत की एकता का एक मुख्य आधार भी हिन्दू धर्म ही है। अत हिन्दू धर्म के अस्तित्व की और हिन्दू समाज की रक्षा एक अत्यन्त आवश्यक कार्य है। हिन्दू समाज पर जो भी आक्रमण हो उसका निवारण होना ही चाहिए। पर इसका उपाय धर्म युद्ध नही। भारत के विभिन्न धर्मों मे परस्पर लडाई और सघर्ष नही। इस लडाई और सघर्ष के कारण तो भारत छिन्न-भिन्न हो जाएगा टुकड-टुकडे हो जाएगा।

यह एक राजनैतिक समस्या है इस का समाधान भी राजनीतिक होना चाहिए। भारत का एक ऐसा राजनीतिक ढाचा होना चाहिए। इस दिशा मे विकास होना चाहिए कि प्रत्येक धार्मिक विचारधारा के समूह समाञ्जस्य के साथ रह सकें, परस्पर आक्रमक रूप को लेकर नही। यह कोई बहुत कठिन कार्य नही। अनेक देशो मे ऐसी व्यवस्था है। यदि राजनीतिक नेतृत्व उदार तथा ज्ञानवान लोगो के हाथो मे हो तो यह व्यवस्था कराई जा सकती है। आर्य समाज स्वय एक उदार तथा ज्ञान प्रधान सस्था है। कट्टरताओ और सकीर्णताओ से मुक्त। उसके नेता इस दिशा मे बहुत अच्छा काम कर सकते हैं। भारत की इतनी अधिक सारी समस्याए हैं कि उनको लेकर उदार और जागरूक सब नेता मिलकर कार्य कर सकते है और इस साम्प्रदायिक सघर्ष के वातावरण को बदल सकते हैं।

(क्रमश:)

पंजाब के तीन आर्य साहित्यकार

लाला देवराज, देवीचन्द, पं. हंसराज

ले—डा भवानीलाल जी भारतीय चण्डीगढ

स्त्री शिक्षा के प्रबल पोषक तथा आर्य समाज मे बालोपयोगी साहित्य के रचयिता लाला देवराज का जन्म 3 माच 1860 तदनुसार चैत्र3,स 1917 को जालन्धर के मान्य रईस लाला शालिग्राम के यहा हुआ। इनकी माता का नाम काहन देवी था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा मदरसे मे हुई। कुछ दिन मिशन स्कूल मे अध्ययन किया। पुन होशियारपुर क सरकारी विद्यालय मे पढते रहे। आपकी बहिन शिवदेवी लाला मुन्शीराम को ब्याही थी। अपने बहनोई लाला मुन्शीराम के साथ आप भी आय समाज के सक्रिय कायकता बन गए और जालन्धर की सामाजिक प्रवत्तियो मे जोर-शोर से भाग लेने लगे। जालन्धर मे आय कन्या महाविद्यालय की स्थापना का श्रेय लाला देवराज तथा लाला मुन्शीराम को ही है। कन्या महाविद्यालय के रूप मे नारी शिक्षा के जिस पौध का बीजारोपण लाला देवराज ने किया, कालान्तर मे बढ कर वह एक विशाल सस्था रूपी वृक्ष के रूप म फला। अनेक राष्ट्रीय नेताओ ने समय समय पर महाविद्यालय का निरीक्षण किया तथा सस्थापको के पुरुषार्थ की सराहना की।

लाला देवराज ने महाविद्यालय के मख पत्र के रूप मे पाचाल पडिता, जल विद्यासखा आदि विभिन्न पत्रिकाए निकाली। पजाब जैसे अहिन्दी प्रात मे हिन्दी का प्रचार महाविद्यालय की छात्राओ द्वारा हुआ। लाला देवराज न बाल साहित्य का निर्माण किया है। सरल, सुबोध तथा शिक्षाप्रद ग्रन्थ लिख कर उन्होने छात्राओ को उद्बोधन दिया। उनका निधन 17 अप्रैल 1935 को 75 वष की आयु म हुआ।

लाला देवराज द्वारा रचित ग्रन्थो का विवरण इस प्रकार है—अक्षर दीपिका, शब्दावली, बाला विनय, बालोद्यान सगीत, कथा विधि, पाठावली (2 भाग) सुबोध कन्या पत्र कौमुदी, गणित भूषण, गृह प्रबन्ध, पाठशाला की कन्या।

सावित्री नाटक, पजाब इकोनोमिक प्रेस लाहौर से 1900 मे प्रकाशित। एक अनपढ स्त्री की यात्रा—1959 वि मे प्रकाशित।

लाला देवीचन्द एम ए

यजुर्वेद तथा सामवेद के अग्रेजी अनुवादक लाला देवीचन्द का जन्म 19 नवम्बर 1880 ई को गुरदासपुर जिले के बहरामपुर ग्राम मे हुआ। इन के पिता लाला प्रभु दयाल राजस्व विभाग मे नौकरी करते थे। देवीचन्द ने 1902 मे डी ए वी कालेज लाहौर से बी ए तथा गवर्नमेंट कालेज लाहौर से 1904 मे एम ए (अग्रेजी) की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1905 से 1915 तक वे डी ए वी हाई स्कूल होशियारपुर मे मुख्याध्यापक के पद रहे। इसी वर्ष वे डी ए वी कालेज होशियारपुर के प्रिसीपल पद पर नियुक्त हुए। 1933 मे उन्होने दयानन्द साल्वेशन मिशन की स्थापना की तथा 1963 तक इसके अध्यक्ष रहे। 4 जुलाई 1965 को लाला जी का निधन हुआ।

ग्रन्थ —

1 स्वामी दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य का अग्रेजी अनुवाद प्रकाशक एस पाल एण्ड कम्पनी दिल्ली 1965 ई (द्वितीय सस्करण)

2 सामवेद का अग्रेजी अनुवाद 1963 ई।

दयानन्द जन्म शताब्दी के अवसर पर 1925 ई मे आप ने आय शिक्षण सस्थाओ की एक विवरणिका प्रकाशित की थी।

पं हसराज

वेदो का विशद स्वाध्याय रखने वाले प हसराज का जन्म गुरदासपुर जिलान्तर्गत मोहलोवाली ग्राम मे 1888 ई मे हुआ। प्रारम्भिक अध्ययन उर्दू-फारसी तथा अग्रेजी का हुआ। कारणवश मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण नही कर सके। विभिन्न स्थानो पर नौकरी करते रहे। अन्तत सस्कृत अध्ययन की ओर प्रवृत्त हुए। प भगवद्दत्त की प्रेरणा से 1918 मे पजाब नेशनल बैंक की सेवा से मुक्ति लेकर डी ए वी कालेज लाहौर के प्रसिद्ध लालचन्द पुस्तकालय के पुस्तकाध्यक्ष बने। देश विभाजन तक इसी काय पर रहे। 1918 मे वैदिक स्वाध्याय का जो महाव्रत धारण किया, वह आयु पर्यन्त चलता रहा। प भगवद्दत्त तथा प ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जैसे मनीषी विद्वानो ने प हसराज के वैदुष्य की प्रशसा की थी। सुदीर्घ स्वाध्याय काल मे आपने विभिन्न विषयो से सम्बन्धित प्रमाणो का अपूर्व सग्रह किया जिसकी सहायता से भावी अनुसन्धान कार्यो को सहायता मिलेगी। जीवन के अन्तिम काल मे आप श्रीरामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ मे निवास करते थे, जहा आपका निधन हुआ।

रचित ग्रन्थो का विवरण —

वैदिक कोष—1925 ई तक जितने ब्राह्मण ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके थे, उन से वैदिक शब्दो के अर्थ बोधक वचनो का सग्रह किया गया है। यह ग्रन्थ 1926 ई मे डी ए वी कालेज लाहौर के अनुसधान विभाग द्वारा श्रीमद्दयानन्द महाविद्यालय सस्कृत ग्रन्थमाला-8 के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ। इसकी विद्वत्तापूर्ण भूमिका पडित भगवद्दत्त ने लिखी।

ब्राह्मणोद्धार कोष—पूर्वोल्लिखित ग्रन्थ के अप्राप्य हो जाने पर प विश्वबन्धु शास्त्री की प्रेरणा से ब्राह्मणोद्धार कोष पूर्वापेक्षा परिवर्द्धित रूप मे तैयार किया गया। इसमे नवीन प्रकाशित जैमिनीय ब्राह्मण के साथ ही आरण्यक तथा शाखा रूप सहिताओ मे जो ब्राह्मण पाठ है, उनसे भी अर्थ निदर्शक वाक्यो का सग्रह किया गया है।

उपनिषद्‌द्धारकोष—इस ग्रन्थ मे आर्ष अनार्ष सभी उपनिषदो से वै [illegible] कोष के समान वैदिक शब्दार्थ बोधक वाक्यो का सग्रह किया गया है।

अन्य ग्रन्थ —

दश अवतार, वेद मे मानुष इतिहास नही है, देवतावाद का भौतिक वैज्ञानिक रहस्य तथा साइस इन दि वेदाज।

विदेश यात्रा पर

मैं 28 6-86 को प्रात दिल्ली से बवत वायुयान से इग्लैंड, अमेरिका कैनेडा आदि देशो मे भ्रमणाथ जा रहा हू क्योकि मेरे सम्पूर्ण जीवन का आधार आदर्श और उद्देश्य वेद और यज्ञ रहा है। अत इन देशो के आर्य बहिन, भाई और आर्य समाजें यदि मेरी सेवाओ से लाभ उठाना चाहे तो मेरा सौभाग्य होगा। मेरा लन्दन का पता यह होगा।

श्रीमती सन्तोष अमृता अशोक सेहन
टैलीफोन—01 531-8101 69 गार्नर रोड अप वालथम स्टो लन्दन

—आशुराम आय उर्दू वेद भाष्यकार
1594।7 सी चण्डीगढ

पुरोहित की आवश्यकता

आय समाज सरहिन्दगेट पटियाला को एक योग्य पुरोहित की आवश्यकता है। समाज की ओर से लगभग 300 रुपए प्रतिमास दक्षिणा दी जाएगी। रहने का स्थान भी उपलब्ध किया जायेगा। इच्छुक विद्वान प्रधान आर्य समाज सरहिन्दी गेट पटियाला को अपना ब्यौरा भेजें।

—ओमप्रकाश गुलाटी
मन्त्री

मुख्याध्यापिका की आवश्यकता

आर्य पुत्री पाठशाला गिदड़बाहा जो कि एक प्राईमरी पाठशाला है और जल्दी ही मिडल होने वाली है, के लिए एक योग्य व अनुभवी मुख्याध्यापिका की आवश्यकता है। दृढ आर्य विचारों की महिला को प्राथमिकता दी जाएगी। शीघ्र पूर्ण योग्यता व स्वीकार्य वेतन सहित लिखें —

—मदनलाल आर्य
आर्य समाज गिदड़बाहा
जिला फरीदकोट (पजाब)

(4 पृष्ठ का शेष)

इन परिस्थितियो को देखते हुए पजाब बचाओ सम्मेलन भारत सरकार से यह माग करता है कि पजाब की वर्तमान अकाली सरकार को तुरन्त हटा कर पजाब मे राष्ट्रपति राज लागू किया जाए। भारत सरकार का भी पजाब के अल्पसख्यक हिन्दुओ के प्रति कोई कर्तव्य है। यह खेद का विषय है कि वह अपने उस कर्तव्य को पूरा नही कर रही पजाब मे जो आग फैल रही है, वह कल को एक भयकर रूप धारण कर सकती है। इसे बुझाने के लिए इस समय तक जो भी कायवाही की गई है, उसका कोई सन्तोषजनक परिणाम नही निकला। इसलिए यह 'पजाब बचाओ' सम्मेलन भारत सरकार से यह माग करता है कि पजाब को बचाने के लिए वरनाला मन्त्रिमण्डल को तुरन्त पदच्युत करके पंजाब के शासन को अपने हाथ मे ले और इस प्रदेश की अल्पसख्यक जनता के जान व माल की रक्षा के लिए तुरन्त सक्रिय व सार्थक पग उठाए। इसके अतिरिक्त पजाब समस्या का और कोई समाधान नही हो सकता।

पं. वीरसेन जी वेदश्रमी का पत्र सभा प्रधान जी के नाम

आदरणीय श्री वीरेन्द्र जी,

सादर नमस्ते !

आपका पत्र स 151 दिनाक 23-6-86 को प्राप्त हुआ। धन्यवाद ! श्री डा सत्यकेतु जी ने जैसा प्रतिपादन किया है वह तो पाश्चात्य मन की अनुकृति है। वह पक्ष अपने मान्य है ही नही, अपितु उसका जोरदार खण्डन अनेक प्रकार से करना चाहिए और उसे केवल आर्य समाज के क्षेत्र का ही नही अपितु प्रत्येक प्रत्येक विश्वविद्यालयो मे देश विदेश मे प्रचारित करना चाहिए। कालेजो मे भी हमारे उत्तम वक्ता, कालेजो और विश्वविद्यालयो मे जा कर वेद विषय पर व्याख्यान दें और उनकी शकाओ का समाधान करें। तब आर्य समाज का पक्ष अन्य क्षेत्रो मे मान्य होगा। अन्यथा नहीं।

महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है इतने कथन मात्र से आप आर्य जनो को मनवा सकते हैं परन्तु अन्य जनो को नही। वे तो युक्ति प्रमाण के आधार पर ही मान सकते हैं।

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् प हरिदत्त जी शास्त्री, एकादश तीर्थ थे। ज्वालापुर गुरुकुल के स्नातक थे। शायद वे वहा के कुलपति भी रहे। डी ए वी ालेज कानपुर मे सस्कृत के विभागाध्यक्ष भी थे। उन्होने भी एक पुस्तक कालेजो के लिए लिखी वेद विषयक। उस्मे वही सब लिखा जो डा. सत्यकेतु या इसी ्कार के लोग लिखते हैं। पुस्तक की भूमिका मे उन्होने एक लाईन यह लिख दी थी कि यहा हमे अपना अभिमत लिखना अभिप्रत नही है अपितु जो विचार-धारा कालेजो मे पठन-पाठन मे प्रचलित है उसी के आधार पर लिखना है।

लगभग 60-62 वर्ष पूर्व जब हम गुरुकुल वृदावन मे पढते थ उस समय हम शरीर विज्ञान पर वैदिक टिप्पणिया यह ग्रन्थ लिख रह थे तो इसकी भूमिका मे हमे वेद का ज्ञान ईश्वर से प्रकट हुआ इसकी स्थापना प्रथम करनी थी तभी वेद का सर्व विद्या सयत्व प्रतिपादित हो सकता था। उन दिनो मे गुरुकुल के पुस्तकालय मे एक अग्रेज विद्वान् जो क्रिश्चियन था उसकी पुस्तक देखने को मिली थी उसमे उसने बाईबिल के ईश्वरीय ज्ञान होने और उसका मानव पर अविर्भाव कैसे हुआ यह लिखा था बडी कुशलता से उसने परमात्मा का ज्ञान और मानव पर प्रकट होने का प्रतिपादन किया था।

कुछ वर्ष पूर्व श्री जगदेव सिद्धान्ती जी ने आर्य मर्यादा का एक विशेषाक वेद के प्रति जो आक्षेप है तथा ईश्वर से कैसे प्रकट हुए यह उसमे प्रतिपादन था। परन्तु वह आर्य समाज से बाह्य के तथा शिक्षा के क्षेत्र मे प्रचारित करता तो उसका प्रभाव वैदेशिक विचारधारा के मानने वालो पर कुछ तो होता ही। यह प्रयत्न बार-बार होना चाहिए तभी आर्य विचारो का प्रभाव क्षेत्र व्यापक हो सकेगा। डा सत्यकेतु जी ने पूर्व पक्ष प्रस्तुत किया। अब उत्तर पक्ष भी स्थापित होकर सर्वत्र प्रचरित होना चाहिए तो वेद विषयक महर्षि के विचारो का देश विदेश मे प्रचार होगा—अन्यथा नही।

– प. वीरसेन वेदश्रमी

१९३० ईसाई पुनः हिन्दू धर्म में आए

उडीसा के सम्बलपुर, बलावीर, सुन्दरगढ जिलो मे 5000 से अधिक ईसाई पुन. वैदिक धर्म मे आने को तैयार हैं। इसके लिये उन्होंने उत्कल आ प्र. सभा को विधिवत प्रार्थना पत्र भर कर भी दे दिया है। इन्ही लोगो में से प्रथम किस्त के रूप मे सम्बलपुर जिले के आमामना, सरिया थानो के 19 गावो के 360 ईसाई परिवारो के 1230 सदस्यो ने स्वेच्छा से पुन वैदिक धर्म ग्रहण किया। शुद्धि का यह कार्यक्रम 5 से 7 जून 1986 को पाच कैम्पो मे उत्कल आ. प्र. सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द जी गुरुकुल आम सेना की अध्यक्षता में तथा श्री पं. विशिकेसन जी शास्त्री के आचार्यत्व मे सम्पन्न हुआ। इन सभी अवसरों पर भूतपूर्व पादरी श्री. वी भारती तथा उडीसा के स्थानीय आर्यबन्धु उपस्थित रहे। आ. प्र. सभा के उपदेशक श्री भगवान देव व श्री सुभाष शास्त्री का इस आयोजन ~ विशेष प्रयास सराहनीय रहा।

—वामदेव आर्य

माता वेदवती जी भल्ला का निधन

जालन्धर की आर्य समाज की प्रसिद्ध कार्यकर्ता लग्नशील, श्रद्धालु तथा सेवा भाव रखने वाली यज्ञ प्रेमी माता वेदवती जी भल्ला का शुक्रवार 27 जून को साय लगभग साढे 7 बजे हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। उनका अन्तिम शोक दिवस 1 जुलाई सोमवार को साय साढे 5 बजे मनाया गया।

माता वेदवती जी महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की कितनी भक्त थी यह उनके सम्पर्क मे आने वाले स्त्री-पुरुष जानते हैं। वह जालन्धर तथा पजाब की आर्य समाजो के उत्सवो पर तो अवश्य जाती ही थी परन्तु पजाब म बाहिर भी वह कई स्थानो पर जाती रहती थी। वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर, तपोवन देहरादून और दूसरे धार्मिक स्थानो पर भी वह जाती रहती थी। महर्षि जी के जन्म स्थान टकारा और निर्वाण स्थान अजमेर भी वह गई थी।

जालन्धर मे दयानन्द मठ और गुरुकुल करतारपुर स तो उनका विशेष स्नेह था। वह गुरुकुल की सहायता भी जहा तक उनसे होती थी करती रहती थी। प्रतिदिन यज्ञ करने का उन्होंने व्रत लिया हुआ था। वह यज्ञ की बहुत प्रमी थी। आर्य समाज ऋषिकुञ्ज पक्का बाग जालन्धर मे वह प्रतिदिन सत्सग मे जाया करती थी। उनका स्वभाव बडा मृदु और शान्त था। वह सभी से स्नेह और प्यार करने वाली थी। उन्होने जालन्धर मे स्त्री होते हुए भी अपना विशेष स्थान बना लिया था।

माता जी अचानक कुछ रुग्ण हुई और फिर हस्पताल से ठीक होकर घर आ गई थी, दिन मे बैठी बाते करती रही परन्तु साय साढे 7 बजे के लगभग उन्होने अपना नश्वर शरीर छोड दिया।

उनके चले जाने से आर्य समाज मे जो स्थान एक महिला का खाली हो गया है उसकी पूर्ति असम्भव है। उनके चले जाने का सभी आर्य बन्धुओ तथा बहनो को बडा दुःख हुआ। उन के अन्तिम शोक दिवस पर कई आर्य बन्धुओ ने उन्हे अपनी श्रद्धाजलिया भेन्ट की।

—धर्मदेवार्य

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज शहीद भगतसिह नगर जालन्धर की यह सभा श्रीमती वेदवती जी भल्ला जिनकी मृत्यु अचानक 27-6 86 शुक्रवार को हो गई है पर गहरा दुःख प्रगट करती है बहन वेदवती जी का हमारी समाज के साथ बहुत सम्बन्ध रहा है और उन्होने आर्य समाज म बहुत बडा काम किया है अब इस रिक्त स्थान को पूरा करना बहुत ही कठिन है हमारी परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान कर और उनके परीवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे और उनके सारे परीवार मे सुख और शान्ति प्रदान करे और हम सब को भी परमात्मा शक्ति दे कि हम सब उनके बनाये हुए मार्ग पर चल सके।

—मुलखराज आर्य

(2 पृष्ठ का शेष)

तस्यै तपो दम कर्मेति प्रतिष्ठा।
वेदा सर्वाङ्गानि सत्यमायतनम् ॥

पुन ब्रह्मविद्या के साधनो का वर्णन करते हैं। उस ब्रह्मविद्या तप दम और कर्म ये तीनो प्रतिष्ठित है। वेद इस के सर्वाङ्ग हैं, सत्य आयतन है।

एक साधक के लिए ये साधन आवश्यक है। उस रहस्यमयी विद्या का आधार है तपस्या, दमन और कर्म। यदि अपने को परमेश्वर का कृपा पात्र बनाना है तो उसे तपस्या का जीवन बिताना है। सभी इन्द्रियो पर नियन्त्रण रखना होगा एव शास्त्र की दृष्टि से स्वकर्त्तव्यपालन करना होगा। चारो वेदो मे उस के अङ्गो का वर्णन है अत वेद स्वाध्याय को जीवन का अग बनाना होगा। वेदाध्ययन के बिना कुछ भी पता नहीं चलेगा। उस का अधिष्ठान अथवा प्राप्ति स्थान केवल सत्य स्वरूप परमेश्वर है। ईश्वर की नित्य स्तुति प्रार्थना-उपासना करने से रहस्य समझ मे आने लगेगा। अत. स्तुति आदि को नित्य कर्म मे सम्मिलित कर लेना चाहिये। जो भी साधक उक्त साधनो का सेवन करता है उस को ब्रह्मविद्या का रहस्य बुद्धिगत हो जाता है।

यो वा एतामेव वेदापहत्य पाप्मान-
मनन्ते।
स्वर्गे लोके ज्येये प्रतितिष्ठति
प्रतितिष्ठति ॥

जो भी इस रहस्यमयी ब्रह्मविद्या को इस प्रकार से जान लेता है, वह पाप समूह को नष्ट कर अनन्त अविनाशी उत्तम स्वर्ग लोक मे प्रतिष्ठित होता है।

परमात्मा का साक्षात्कार करने वाले मनुष्य के सब पाप नष्ट हो जाते हैं और अक्षय स्वर्ग लोक मे परमात्मा के मोक्ष लोक अथवा तृतीय धाम मे सदैव रमण करता है, जहा से पुन. जन्म मृत्यु के बन्धन मे बधने का भय नहीं है। यही मनुष्य जीवन का अन्तिम लक्ष्य है। धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष मे से अन्तिम पुरुषार्थ मोक्ष है जो चतुर्थ अवस्था मे अवश्य प्राप्त करना चाहिए। जीवन का सम्पूर्ण सार यही है।

आर्य समाज संगरूर का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज सगरूर का चुनाव वर्ष 1986-87 के लिए 15-6-86 को सम्पन्न हुआ जिसमे महाशय मोतीराम जी सर्वसम्मति से प्रधान चुने गए तथा उन्हे अपने सहयोगी सदस्य मनोनीत करने का अधिकार दिया गया जो निम्न है।

सरक्षक—श्री निरञ्जन दास जी गुप्ता।

प्रधान—श्री मोतीराम जी।

उप-प्रधान—श्री सुरेश कुमार जी, श्री भीम सेन जी।

मन्त्री—अशोक कुमार आर्य

उपमन्त्री—श्री मेहरचन्द जी

कोषाध्यक्ष—श्री शिवराम जी महाजन।

पुस्तकाध्यक्ष—श्री राजेन्द्र जी आर्य

आडीटर—श्री आर आर बत्ता।

अन्तरंग सभा के सदस्य—

श्री धर्मवीर जी, श्री सुरेन्द्रपाल जी

आर्य समाज गुरुकुल विभाग फिरोजपुर का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज गुरुकुल विभाग रानी तालाब फिरोजपुर शहर का वार्षिक चुनाव 5 6-86 को हुआ जिसमे सब पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये।

सरक्षक—श्री जगदीशचन्द्र आर्य।

प्रधान—श्री हवनलाल महता।

उप-प्रधान—श्री ओ३म् प्रकाश जी, श्री बलदेव राज जी।

मन्त्री—श्री मोहन लाल जी।

उप मन्त्री श्री वेद प्रकाश श्री विनोद सागर महता।

कोषाध्यक्ष—श्री ओ३म् प्रकाश भाटिया।

आर्य, श्री निरञ्जन देव जी आर्य, श्री योगीराम जी, श्री सुरेन्द्र कुमार जी गुप्ता, प्रधान आर्य युवक समाज, प्रधाना आर्य स्त्री समाज, मुख्याध्यापिका आर्य कन्या विद्यालय।

मन्त्री

पुस्तकाध्यक्ष—श्री ललित बजाज।

लेखा निरीक्षक—श्री किशन चन्द गुप्ता,

वस्तु भण्डारी—श्री सुरेन्द्र कुमार धवन।

अन्तरंग सदस्य :—

सर्वश्री दर्शन लाल, जसवन्त राय, विजय कुमार, दिलसुखराय गोयल, श्रीमती कान्ता बजाज, श्रीमती पुष्पा नैय्यर, श्रीमती जनक रानी।

प्रतिनिधि—आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब

श्री हवन लाल महता, श्री मोहन लाल, श्री ओ३म् प्रकाश भाटिया, श्री ललित बजाज।

—हवनलाल महता
प्रधान

आर्य समाज कठुआ का वार्षिक चुनाव

8-6-86 को आर्य समाज कठुआ का चुनाव श्री रूपलाल जी की अध्यक्षता मे हुआ जिस मे निम्नलिखित अधिकारी चुने गए।

संरक्षक—लाला रामरत्न जी, श्री भारत भूषण जी।

प्रधान—डा. कुलदीप कुमार जी,

उप-प्रधान—श्रीमती किरण डोगरा जी

मन्त्री—श्री अम्बलसिंह जी, (रिटायर्ड प्रिंसीपल)

उप-मन्त्री—श्री अमरनाथ मगलूरिया जी।

कोषाध्यक्ष—श्री बुई लाल।

बिल्डिंग इन्चार्ज—श्री सोमदत्त दुब्बे

पुस्तकाध्यक्ष—श्री ब. रा. शास्त्री

प्रचार-मन्त्री—मा प्रेमनाथ।

अम्बल सिंह
मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250

रजि. नं पी जे एल 55

वर्ष 18 अंक 16. 5 श्रावण सम्वत् 2043 तदानुसार 20 जुलाई 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

सत्संगति क्या नहीं कर देती

सत्सग की जितनी स्तुति करे थोडी है। इसके लाभ अनन्त हैं। इसके चमत्कार निराले है। भर्तृहरि महाराज नीतिशतक मे लिखते हैं—

जाड्य धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्य,
मानोन्नति दिशति पापमपाकरोति ।
चेत प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्त्ति ।
सत्सगति कथय कि न करोति पसाम ॥

'कहो ! पुरुषो की सत्सगति क्या कुछ नही कर देती ! बुद्धि की जडता को हर लेती है, वाणी मे सत्य का सिञ्चन करती है, पापो को दूर करती है, चित्त को प्रसन्न करती है चारो दिशाओं मे कीर्ति को विस्तृत करती है।'

सत्सगति की कृपा से मनुष्य का क्या कुछ हो जाता है। यह मत पूछो बल्कि यह पूछो कि सत्सगति से मनुष्य का क्या कुछ नही हो जाता। दुनिया की कौन सी चीज है जो इससे प्राप्त नही हो जाती, कौन-सा गुण है जो इससे नही मिल जाता।

1 सबसे पहले इससे बुद्धि की मूढता समाप्त हो जाती है। बुद्धि सात्विक और निर्मल हो जाती है। जब मनुष्य की बुद्धि निर्मल हो गई तो और क्या शेष रह गया। प्रज्ञालोक के लिए मनुष्य को कितने तप तपने पडते हैं, क्योकि विवेक ज्ञान के बिना ससार मे ही गोते लगाने पडते हैं। विवेक ख्याति ही मोक्ष का उपाय है और क्लेश कर्मों को समाप्त करने मे समर्थ हैं।

2 वाणी मे सत्य का सचार हो जाता है। झूठ के परित्याग और सत्य के ग्रहण करने से मनुष्य की वाणी अमोघ हो जाती है अर्थात् सब कुछ प्राप्त कराने वाली हो जाती है। तब तक ही मनुष्य के कार्य असफल होते हैं जब तक वह असत्य नही छोडता। मन, वचन कर्म से सत्य का पुजारी बनने पर मनुष्य ससार को जीत लेता है। वह परमेष्ठिनी वाक् सत्सग से ही सुसस्कृत, मधुर और और सत्यवादिनी बनती है।

3. जीवन का उत्थान होता चला जाता है, असख्य गिरे हुए उठते हैं, डाकू, ऋषि बनते है, हजारो भूले-भटके सच्चा मार्ग प्राप्त करते है, लाखो निराश हताशो को आशा का जीवन मिलता है।

4 समस्त पापो के ढेरो का नाश हो जाता है। सत्सग रूपी ज्ञान की गगा मे नहाने के बाद मन मे मैल नही रहते, करोडो जन्मो की वासना चकनाचूर हो जाती है।

5 चित्त सदा फूल की भान्ति खिला रहता है। प्रसन्नता एव अह्लाद जीवन के अभिन्न अग बन जाते हैं।

6 कीर्ति चारो दिशाओ मे फैल जाती है जब फूल खिलेगा तो सुगन्धि क्यो न फैलेगी। कुसगति मे अपकीर्ति और सत्सगति से कीर्ति अपने आप फैल जाती है। इस प्रकार इहलौकिक और पारलौकिक सारे ही लाभ सत्सग द्वारा प्राप्त हो जाते हैं। मनुस्मृति मे मनु महाराज लिखते हैं—

अभिवादनशीलस्य नित्य वृद्धोपसेविन ।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या-
यशोबलम् ।,

जो अभिवादनशील है और नित्य वृद्धो (विद्वानो) की सेवा (सत्सग) मे करता है, उसके आयु विद्या, यश और बल बढते चले जाते हैं। इसलिए नीतिकारो ने कहा है—

'सता हि सग सकल प्रसूते।'

'सज्जनो के सग से सब कुछ मिल जाता है। ससार मे लोग कामधेनु की खोज करते है परन्तु आज तक ससार के लोगो को यह पता नही चला कि कामधेनु कहा है और कैसी है। ऋषियो ने इसी सत्सग को, सज्जनो की वाणी को कामधेनु कहा है—'वाक् वै कामधुक्' वाणी ही कामधेनु है। लोग कल्प वृक्ष को भी नही जानते, लोगो को आज तक कल्प वृक्ष का यथोचित ज्ञान नही है। कुछ लोग क्षीर सागर मे नवरत्न द्वीप मानते हैं और वही पर कामधेनु और कल्प वृक्ष की कल्पना करते है। परन्तु जैसे इनकी वैतरणी नदी ससार के मानचित्र मे कही नही है, उसी प्रकार से इनका क्षीरसागर और कल्प वृक्ष भी कही नही है असली कल्प वृक्ष ऐतरेय ब्राह्मण ग्रन्थ मे बतलाया गया है—ऐतरेय ऋषि लिखते है—'यज्ञो वै कल्पतरु'—यज्ञ ही कल्प वृक्ष है। यज्ञ का अर्थ है देव पूजा, सगतिकरण और दान। देव पूजा—जो सब देवो का देव परमात्मा उसकी उपासना (सग) करना, माता पिता, आचार्य और विद्वानो की सेवा व सग करना और सूर्य एव चन्द्र आदि भौतिक देवो से यथोचित लाभ उठाना सगतिकरण—विद्वानो और सत्य शास्त्रो के सग से लाभ उठाना। दान यज्ञ करके घृत आदि पदार्थों की सुगन्धि को फैलाना इस प्रकार हम देख रहे है कि यज्ञ का अर्थ हर समय सत्सगति मे रहना है। उसकी सब कामनाए पूर्ण क्यो न हो जाए ? जो यज्ञमयी नौका पर चढ गए वे सकल कामनाओ को पूर्ण करके भवसागर से पार उतर गए और जो इस पर नही चढ पाते वे भवसागर मे डूबते रहते है। वेद कहता है—

न ये शेकुर्यज्ञिया नावमारुहमीमव
तेन्यविक्षिन्त केपय । ऋ 10-44 6।

जो इस यज्ञीय नाव पर न चढ सके वे इस ससार के दलदल मे ही फसते चले जाते हैं। सत्सगति के समान सकल कामनाओ को पूर्ण करने वाला और भवसागर से पार उतारने वाला साधन दूसरा नही है। सत्सगति की किसी से तुलना नही की जा सकती क्योकि यह अतुलनीय है। धन-धान्य, मकान जायदाद, पुत्र, कलत्र, भाई बन्धु, माता-पिता, लोक-परलोक, स्वर्गलोक, देवलोक सब इससे नीचे हैं, लिखा भी है—

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख,
धरिये तुला इक सब ।
तुले न ताहि सकल मिली,
जो लाभहि सत्सग ॥

● मानव जीवन के निर्माण के लिए जितने साधना का अनुष्ठान करना होता है उनमे सबसे बडा साधन सत्सग है। आज तक ससार मे जितने महापुरुष बने है वे सब सत्सग की कृपा के मधुर फल हैं। पतित आदमी को देवता बना देना भटके हुए राही को सुपथ पर लगा देना, गुणहीन को गुणो का भडार बना देना, सन्तप्त को अह्लादित करदेना, रोते हुए को हसा देना, अशान्त को शान्त बना देना कीर्ति रहित की चारो दिशाओ मे कीर्ति फैला देना, जड बुद्धि की जडता को हर लेना, मूर्ख को विद्वान बना देना, लाखो की सभा को मन्त्र मुग्ध कर देने वाला वक्ता बना देना और ससार के बन्धन मे फसे हुए को मुक्ति के परम पद को प्राप्त करा देना सत्सग का ही कार्य है। जिसे एक बार भी जीवन मे सत्सग का सुअवसर प्राप्त हो गया उस का कुछ का कुछ बन गया। पाच मिनट का सत्सग भी मनुष्य के जीवन का कायाकल्प कर देता है जीवन मे महान परिवर्तन कर देता है। जिसने इसके रस का आस्वादन कर लिया, वह जीवन भर इसकी महिमा का बखान करता करता नही थकता। सचमुच इसकी माया निराली है। जी चाहता है कि इसकी प्रशसा का गुणगान करता चला जाऊ और लेखनी यह चाह रही है कि सारा दिन ही नही सारी आयु इसकी गरिमा का उल्लेख करती चली जाऊ, परन्तु इतना होने पर मुझे यह विश्वास नही होता कि जीवन भर इसका गुणानुवाद करने के पश्चात भी इसके समस्त गुणो का वर्णन कर सकू गा या नहीं। मुझे या तो ऐसा लगता है कि एक जीवन मे तो क्या, यदि कोई हजारो जीवन भी धारण करे और आए जीवन मे इसका स्तवन करता चला जाए, तब भी सत्सग के गुणो की कहानी पूरी न हो सकेगी। कोई अकेला ही नही अपितु हजारो विद्वान् पृथिवी तल के वनो की लेखनी बना लें, समुद्र को स्याही बना ले और धरती को कागज बना लें, तब भी हजारो जीवन बीत जाने के बाद भी सत्सग की गुणावली को नही लिखा जा सकेगा। किसी ने कहा भी है—

सब धरती कागद करू,
लेखनी सब वनराय ।
सात समुद्र की मसि करू,
सत्सग गुण लिखा न जाए ।

—श्री आनन्दवेश जी

व्याख्यान माला—७

अतिथि सत्कार

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स. अधिष्ठाता गुरुकुल करतारपुर(पंजाब)

(गतांक से आगे)

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेता सत्यं ब्रवीमी वध इत्स तस्य ।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी ।20।

वह अज्ञानी व्यर्थ अन्न पकाता है, वह अन्न उसके लिए मृत्यु का कारण बनता है यह मैं सत्य कहता हू वह अन्न न उसे न उस के मित्र को पुष्ट करता है क्योंकि केवल अपने लिये पका कर खाने वाला पाप ही खाता है।

न्यायागतेन द्रव्येण कर्त्तव्यं पारलौकिकम् ।
दानं हि विधिना देयं काले पात्रे गुणान्विते ।21।

न्याय द्वारा प्राप्त किये हुए धन से परलोक सम्बन्धी कर्म करना चाहिए। गुण युक्त पात्र को समय पर तथा विधि पूर्वक दान देना चाहिए।

न क्लेशेन बिना द्रव्यं न द्रव्येण बिना क्रिया ।
क्रियाहीने न धर्मः स्याद्धर्महीने कुत सुखम् ।22।

कष्ट के बिना धन नही मिलता, धन के बिना जीवन की कोई क्रिया सिद्ध नही होती, क्रिया-हीन पुरुष धर्म का पालन नही कर पाता और जिसने धर्म का पालन नही किया उसे सुख कहा।

स जीवति य एवैको बहुभिश्चोपजीव्यते ।
जीवन्तो मृतकास्त्वन्ये पुरुषाः स्वोदरम्भरा ।23।

वही जीवित रहता है जो अकेला बहुतो को जीविका प्रदान करता है केवल अपना पेट भरने वाले दूसरे पुरुष तो जीते हुए मुर्दा समान है।

माता-पिता गुरुर्भार्या प्रजा दीन: समाश्रित: ।
अभ्यागतो अतिथिश्चापि पोष्यवर्ग उदाहृत: ।24।

माता, पिता, गुरु, स्त्री, प्रजा, दीन, आश्रित, अभ्यागत और अतिथि यह पालने योग्य वर्ग कहा गया है।

सार्वभौतिकमन्नाद्यं कर्त्तव्यं तु विशेषत ।
ज्ञानविदभ्य प्रदातव्यमन्यथा नरकं व्रजेत् ।25।

सब प्राणियो के लिये अन्नादि पदार्थ देने चाहिए पर विशेष कर ज्ञानी ब्राह्मणो को तो देने ही चाहिए अन्यथा नरक मे जाएगा।

न यज्ञैर्दक्षिणावद्भिर्वह्नि शुश्रूषया तथा ।
गृही स्वर्गमवाप्नोति यथा चातिथिपूजनात् ।26।

जैसे अतिथि क पूजन स गृहस्थी स्वर्ग को प्राप्त होता है वैसे दक्षिणा युक्त यज्ञो द्वारा और अग्नि सेवा द्वारा भी स्वर्ग प्राप्त नही हो सकता अर्थात् यज्ञो मे अतिथि यज्ञ श्रेष्ठ है।

यदि योगी तु संप्राप्तो भिक्षार्थी समुपस्थित: ।
योगिनं पूजन्नित्यमन्यथा किल्विषी भवेत् ।27।

यदि भिक्षा चाहने वाला कोई योगी उपस्थित हो जाए तो गृहस्थी पुरुष ऐसे योगी की अवश्य पूजा करे नही तो वह पाप का भागी होगा।

यथा भस्म तथा मूर्खो विद्वान्प्रज्वलिताग्निवत् ।
होतव्यं च समिद्धेऽग्नौ जुहुयात्को नु भस्मनि ।28।

मूर्ख भस्म के समान होता है, विद्वान् जलती हुई अग्नि के समान होता है। इसलिए प्रज्वलित अग्नि मे ही हवन करना चाहिए, भस्म मे कौन हवन करता है? अर्थात् विद्वान् अतिथि का ही सम्मान करें।

सर्वेषामेव दानानामन्नदानं परं स्मृतम् ।
सर्वेषामेव जन्तूनां यतस्तज्जीवितं परम् ।29।

सभी दानो मे अन्न दान को श्रेष्ठ कहा गया है क्योकि वह अन्न सारे ही जीवो का उत्तम जीवन है।

कृशाय कृतविद्याय वृत्तिक्षीणाय सीदते ।
अपहन्यात् क्षुधां यस्तु न तेन पुरुष: सम: ।30।

कमजोर शरीर वाले, विद्वान्, जीविका से रहित और दुखी होते हुए व्यक्ति की भूख को जो दूर करता है उसके बराबर कोई दूसरा पुरुष नही है।

अग्नि होत्र क्यों करें ?

लेखक—श्री ब्र अनिल कुमार जी
दयानन्द मठ दीनानगर (गुरदासपुर)

अग्नि मे आहुत की गई पदार्थ सम्बन्धी क्रिया को अग्नि होत्र कहते हैं। वैदिक विचारधारा मे अग्नि होत्र का बडा महत्त्व है। इसे हवन भी कहते है। प्रत्येक शुभ कार्य का प्रारम्भ हवन मे होता है। महर्षि दयानन्द कृत 16 संस्कारो मे अग्नि होत्र का मुख्य स्थान है। संस्कारो मे हवन का वही स्थान है जो स्थान भोजन बनाने मे पानी का। अग्नि होत्र का वैज्ञानिक आधार क्या है ? ऋषि इसे अपना अभिन्न अग क्यो बनाए रखते थे ?

मुख्य तौर पर अग्नि होत्र के चार उद्देश्य कहे जाते हैं। जो ये हैं—(1) वैयक्तिक तथा सामाजिक वायुमण्डल को शुद्ध करना। (2) वैयक्तिक तथा सामाजिक रोगो को दूर करना। (3) रोग के कीटाणुओ को नष्ट करना (पशु, पक्षी, पौधे इत्यादि सभी को) (4) वृष्टि की कमी को दूर करना। सबसे पहले समझ लेने की बात यह है कि अग्नि मे डाला हुआ पदार्थ कभी नष्ट नही होता। अग्नि स्थूल पदार्थ को सूक्ष्म रूप मे परिवर्तित कर देता है। अग्नि मे यज्ञ करते हुए जो कुछ डाला जाता है। अर्थात् घी, गुग्गल, जायफल, जावित्री, मुनक्का आदि वह सब परमाणुओ मे टूट-टूटकर सारे वायुमण्डल मे व्याप्त हो जाता है। उदाहरणार्थ जब तक मिर्च को आप जेब मे डाले रहेगे कुछ नही होगा। ज्योंहि आप अग्नि मे डाल देते हैं, तो देखीए आपकी परेशानी कितनी बढ जाती है। मनु जी ने तो सच्च ही लिखा है—"अग्नौ हुत हवि: सम्यक् आदित्य उपतिष्ठति।" अर्थात् आग मे डालने से हवि सूक्ष्म होकर सूर्य तक फैल जाती है। अग्नि परिमाणात्मक (क्वाटीटेटिव) तथा गुणात्मक (क्वालीटेटिव) भी परिवर्तन करता है। सूक्ष्म परमाणुओ मे विभक्त होकर औषधियो का भी गुण बढ जाता है। अग्नि होत्र का यह आधारभूत सिद्धान्त है इस सिद्धान्त को आयुर्वेद, ऐलोपैथी, होम्योपैथी आदि सब चिकित्सा पद्धतिया स्वीकार करती हैं। मनुष्य का स्वास्थ्य उसके शुद्ध रुधिर पर आश्रित है। रुधिर जितना शुद्ध होगा व्यक्ति उतना ही स्वस्थ होगा। शरीर मे रुधिर का सचार तो हृदय से होता है। परन्तु अशुद्ध-रक्त को शुद्ध करने का काम फेफडे का है। जैसे—खाना हज्म होकर, रुधिर बनकर, शरीर मे खपता है, वैसे यह रुधिर जिस पर स्वास्थ्य तथा जीवन-निर्भर है, फेफडो द्वारा शुद्ध होकर शरीर मे सचार करता है। तथा हमे जीवन-शक्ति प्रदान करता है। अगर फेफडो मे शुद्ध तथा पौष्टिक वायु पहुचेगी तो व्यक्ति स्वस्थ्य सुन्दर सुडौल होगा, अगर फेफडो मे अशुद्ध कीटाणु मिश्रित अपौष्टिक हवा पहुचेगी तो व्यक्ति अस्वस्थ्य, कुरुप तथा बेडोल होगा।

ये शुद्ध तथा पौष्टिक हवा कहा से आएगी। ये सब हमें अग्निहोत्र से ही मिल सकती है। उपरोक्त बातो को ध्यान मे रखकर हमे सोच लेना चाहिए कि हम लोगो को अग्नि होत्र प्रात: साए प्रतिदिन अवश्य करना चाहिए।

सम्पादकीय—

समय की माँग को पहचानो

आज सारे देश में उथल-पुथल मची हुई है। जहां भी देखें आतकवाद, स्वार्थवाद और अलगाववाद सिर उठा रहा है। यू तो आसाम और उत्तर प्रदेश के कई स्थानो पर जो कुछ हो रहा है उसे सुन कर व पढ कर चिन्ता होती ही है परन्तु सबसे भयकर स्थिति पजाब की है। आज सारा पजाब जल रहा है। भय और आतक से लोग अपने घरो को छोड कर जा रहे हैं। ऐसा वातावरण वहा बना दिया गया है कि एक समुदाय के लोग भयभीत होकर वहा से स्वय चले जाए और हो भी ऐसा ही रहा है। सरकार की नीति का भी कुछ पता नहीं कि वह क्या चाहती है। अभी तक जाने वालो के बारे में चिन्ता तो प्रकट की जा रही है। कुछ लोग कई बार उनकी दर्द भरी दास्तान सुन कर आसू भी बहा देते हैं। उन्हें वापिस लाने का प्रयत्न भी किया जाता है। परन्तु वह यहा आकर सुरक्षित रह सकेंगे, इसकी कोई गारन्टी नही देता। उनकी सुरक्षा का कोई प्रबन्ध नही किया जा रहा। ऐसी स्थिति मे वह वापिस कैसे आए। आज पजाब के हालात से सारे देश के लोग अवगत हैं। देश के दूरस्थ कोने मे बैठा हुआ भी हर व्यक्ति पजाब की स्थिति से परिचित और चिन्तित है।

कुछ स्वार्थी लोग देश के और टुकडे कर देना चाहते हैं। आजादी के साथ ही देश दो भागो मे बट गया था। भारत के एक टुकडे को पाकिस्तान कहा जाने लगा। अग्रेज ने हिन्दू और मुसलमानो के दिलो मे वह जहर भरा कि कन्धे से कन्धा मिला कर आजादी के लिए काम करने वाले मुसलमान और हिन्दू जो पहले मिल कर रह रहे थे और मिल कर आजादी की लडाई लड रहे थे एक दूसरे के शत्रु बन बैठे और भारत छोडने से पहले अग्रेज ने पाकिस्तान की नीव रखवा दी। भारत ने इसके बाद भी महान् उन्नति की और आजादी के बाद यह आगे ही आगे बढता गया। भारत ने सारे ससार मे अपना एक उच्च स्थान बना लिया है। आज कुछ विदेशी फिर भारत की उन्नति को देख कर यहा विघटन पैदा करने पर तुल गए हैं और भारत के और टुकडे करवा देना चाहते हैं। यह तो ठीक है कि वह अपने इस गन्दे इरादे में कभी सफल न हो सकेंगे, भारत एक है और एक ही रहेगा। परन्तु वह आतक और भय का वातावरण पैदा करने मे सफल हो रहे हैं जिसके ऊपर तुरन्त काबू पाना अति आवश्यक है। सरकार की भिन्न-भिन्न नीति के कारण विशेष कर देश के बाकी हिस्सो की बजाए पजाब का वातावरण विस्फोटक हो गया है। एक समुदाय के बुद्धिमान लोग यदि बुद्धि से काम न लेते तो यह आग इतनी भयकर लगती की बुझाए न बुझती, परन्तु सहनशील और देश के प्रति सब कष्ट सह कर भी यह लोग देश को एक बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील हैं।

आज पजाब के बारे मे चारो तरफ आवाज उठने लगी है कि पजाब जल रहा है इसकी जलती हुई आग पर तुरन्त काबू पाया जाए कि कहीं यह आग सभी कुछ भस्मसात न कर दे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने इस सम्बन्ध मे 6 जुलाई को जालन्धर मे "पजाब बचाओ" सम्मेलन करके इस आवाज को बुलन्द किया है कि सभी देशवासी इकट्ठे होकर देशद्रोही, विघटनकारी और आतकवादी तत्वो पर तुरन्त काबू पाए। सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने यह घोषणा की थी कि हमे पजाब नहीं छोडना चाहिए, बल्कि यहीं रहकर हर स्थिति का डटकर सामना करना चाहिए। उन्होंने आगे यह भी कहा कि हम खालिस्तान किसी भी हालत मे नही बनने देंगे। उन्होंने सभी हिन्दुओ को एक जुट होकर कार्य करने की प्रेरणा दी है।

आज समय की माग है कि आर्य समाज पूर्व की भान्ति देश जाति और समाज का कार्य करने के लिए सबसे आगे की पक्ति मे खडा हो जाए। आर्य समाज ने सदा देश के लिए बलिदान दिए हैं आजादी के पौधे को अपने खून से सींचा है। आज यदि उस पौधे की कोई शाखाओ को काटने लगा है। इसके फलो को तोडकर उसे उजाड देना चाहता है तो आर्य समाज को इसे किसी भी स्थिति मे सहन नहीं करना चाहिए। आर्य समाज सदा से देश का प्रहरी रहा है आज भी उसे अपने कर्त्तव्य को उसी प्रकार निभाना चाहिए जैसे वह पहले निभाता रहा है। 12 और 13 जुलाई को दिल्ली मे सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे दो सम्मेलन हुए हैं जिनमे पजाब की स्थिति पर चिन्ता प्रकट करते हुए वर्तमान स्थिति पर विचार किया गया। अब विचारने का समय नही कुछ करने का समय है। आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य चाहे वह देश के किसी भी कोने मे क्यो न रहता हो, उसे समय की माग को देखते हुए मैदान मे कूद पडना चाहिए। यदि आर्य समाज आज अपने कर्त्तव्य से पिछड गया और इस भयकर स्थिति मे भी विचार ही करता रहा तो फिर आर्य समाज के गौरव को बहुत बडा धक्का लगेगा। आज देश सकट की घडियो मे से गुजर रहा है। इस सकट से आर्यसमाज इसे उभार सकता है। आर्य समाज मे वह महान् शक्ति है जिसकी धाक सदा से सारे देश मे रही है। सारे देश के आर्य बन्धुओ को सगठित होकर एक जुट होकर कार्य आरम्भ कर देना चाहिए।

इस समय मैं एक सुझाव भी देना चाहूगा कि प्रत्येक आर्य समाज के जितने भी सदस्य है वह किसी विशेष सामूहिक पग उठाने से पहले सूचनार्थ एक ही दिन, एक ही समय मे पूर्व से दिन निश्चित करके भारत के प्रधानमन्त्री और गृहमन्त्री को एक पत्र लिखे जिसमे एक जैसी भाषा मे यह माग की जाये कि यदि उसने पजाब के हिन्दुओ की रक्षा न की और आतकवादियो पर काबू न पाया तो आर्य समाज एक महान् आन्दोलन आरम्भ कर देगा जिसका सारा उत्तरदायित्व सरकार पर होगा। यह पत्र केवल आर्य समाजें ही नही आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य लिखे। सारे भारत मे आर्य समाज की लगभग 4000 शाखाए होगी और उनके लाखो सदस्य होगे यदि सभी एक ही दिन ऐसे पत्र लिख देंगे तो दो-दिन मे सभी पत्र प्रधानमन्त्री के पास पहुच जाएगे और जब यह लाखो पत्र पहुचेंगे तो सरकार को पता चल जाएगा कि अब सारे देश का आर्य समाज जाग पडा है और वह अब कुछ करके ही रहेगा। सार्वदेशिक सभा तथा सभी प्रान्तीय सभाए यदि अपनी प्रत्येक आर्य समाज को ऐसा आदेश दे और प्रत्येक आर्य समाज के अधिकारी अपने प्रत्येक सदस्य को ऐसा आदेश दे और यह पत्र लिखवाए तो यह कार्य हो सकता है। इस कार्य मे एक तो सभी का योगदान हो जाएगा तथा साथ ही प्रत्येक सदस्य अपना कर्त्तव्य निभाने के लिए तैयार भी हो जाएगा और एकता व सगठन का प्रदर्शन भी होगा। कोई विशेष आन्दोलन आरम्भ करने से पहले हमे जन जन मे जागृति पैदा कर देनी चाहिए। यह कार्य एक या दो व्यक्तियो के करने का नही यह तो प्रत्येक आर्य समाजी के करने का है। यही समय की माग है इसे पहचानो।

सह-सम्पादक

वेदांक के लिए लेख भेजें

आर्य मर्यादा साप्ताहिक का प्रतिवर्ष की भान्ति इस बार भी कृष्ण-जन्माष्टमी और रक्षा बन्धन के अवसर पर वेदाक प्रकाशित हो रहा है। हमने सभी लेखको को पत्र लिख दिए हैं कि वेद के मानव मात्र के लिए जो जीवनोपयोगी आदेश हैं उनके आधार पर लेख भेजें। कुछ लेख हमे प्राप्त भी हुए हैं। परन्तु हमे इन लेखो की शीघ्र आवश्यकता है ताकि उसके अनुसार वेदाक के आकार और मैटर का निर्णय किया जा सके। हमारी इच्छा है कि यह अक बहुत उपयोगी सामग्री से ओत-प्रोत हो।

हमारी सभी लेखको से प्रार्थना है कि अपना अमूल्य लेख शीघ्र भेजने का कष्ट करें। ताकि इस अक की तैयारी अभी से आरम्भ की जा सके। आशा है कि लेखक महानुभाव हमारी प्रार्थना पर ध्यान देंगे।

सह-सम्पादक

भारत में समाजवाद या पूंजीवाद ?

लेखक—श्री महावीर सिंह जी चोहान

विश्व के जितने भी समुन्नत या प्रगतिशील देश है उन मे से अधिकाश या तो समाजवादी हैं या पूंजीवादी। या यो कहिए कि विश्व मे प्रचलित अनेको वादो मे पूंजीवाद और समाजवाद अग्रणी है। भारत वर्ष भी एक प्रगतिशील राष्ट माना जाता है। कुछ लोग ऐसा उदघोष करते है कि भारत एक समाजवादी राष्ट्र है। पर इसका विरोध करने वाले भी कुछ कम नही हैं। अर्थात् समाजवाद के प्रतिवादी इसे पूंजीवाद का घर मानते हैं। प्रचलित मतो के आधार पर भारत या तो समाजवादी है या पूंजीवादी। पर वास्तविकता ?

वास्तविकता जानने हेतु भारतीय प्रणाली को इन दोनो वादो की कसौटी पर कस कर देखना होगा। जिस पर यह पूरा उतरे वही मान्य होनी चाहिए। तो आईये, इसकी परीक्षा कर देखे।

प्रथम समाजवाद को ही ले। समाजवाद का विशाल भवन समानता की दढ नीव पर ही आश्रित होता है। भारत वर्ष का सविधान सभी को समानता का अधिकार प्रदान भी करता है। पर इसकी उपयोगिता सविधान की जिल्दो मे घिर कर ही रह गयी। भारत मे असख्य लोग ऐसे है जो सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त खून पसीना एक करके भी अपनी आजीविका नही कमा पाते। रात्रि मे भूखे पेट, मा वसुन्धरा की गोद मे आकाश की चादर ओढ कर ही सो रहते हैं। दूसरे कुछ लोग ऐसे है जो चुनाव के दिनो मे जनता को सब्ज बाग दिखा कर अपना उल्लू सीधा करने मे प्रवीण होते है। पाच वर्ष तक तो वे स्वर्गीय आनन्द का रसास्वादन करते ही हैं उसके बाद के लिए भी पर्याप्त धन जमा कर निर्धन के शोषण को अपना धर्म मान लेते है। इसी का नाम है न समानता।

समाजवाद को स्मरण करते ही स्मृति पटल पर एक चित्र उभर आता है। एक दुबल सा व्यक्ति पसीने से तर है, पेट और कमर माना साथ जुड गए है, उसका मास फूल गया है, तदपि वह रिक्सा खीच रहा है। रिक्सा म एक मोटी सी तादवाला भा ी भरकम आदमी सवार है, ऊपर लाऊड स्पीकर बन्धा है और वह मोटा व्यक्ति ध्वनियन्त्र को मुह के सामन करके चिल्ला रहा है—"भाईयो। यदि आप मेरा साथ दे तो निश्चय ही समाजवाद की जय होगी, आदमी और आदमी मे भेदभाव न रह पाएगा।" वाह रे आदमी पर सवारी करने वाले समाजवादी, यही है तेरी समाजवादी-समानता ?

बैको का राष्ट्रीयकरण करके जनसाधारण का फुसलाने का प्रयास किया गया। पर कमरतोड़ मह गाई और प्रतिदिन बढता भ्रष्टाचार ठह का मार कर हस पड।

समाजवाद के अधिवक्ता 'समान योग्यता वालो को समान अवसर' प्रदान करने को ही समाजवाद बताते है। पर मै उनसे पूछना चाहता हू कि एक 'चिट्ठी वाला' मैट्रिक जब एक बी ए पास का मजाक उड़ाता है तो उनके ये सिद्धान्त कहा चले जाते हैं ? जहा तक योग्यता का सम्बन्ध है डा हरगोविन्द खुराना सरीखो की योग्यता यहा दो कौडी मे न बिकी। वही खुराना आज विश्व के प्रकाडतम वैज्ञानिक है भारत के कारण नही अमेरिका की कृपा से। काश ! उनके पास मन्त्री का पत्र होता या वे किसी विधायक के नाती होते।

समाजवाद का आधारभूत सिद्धान्त है— "क्षमतानुसार करिए और आवश्यकतानुसार पाईये।" पर क्या भारत इस कसौटी पर पूरा उतरता है ? नही, दिन प्रतिदिन बढती हुई बेकारी और भुखमरी इसके प्रमाण है।

आज के भारत का प्रत्येक उद्योगपति या व्यापारी दो लेखा पुस्तको का प्रयोग करता है। एक मे तो वास्तविकता होती है तथा दूसरी होती है सरकार की आखो मे धूल झोकने हेतु। जहा नेता भी आय कर चुराते हो, अधिकारी गण 'विटामिन आर'(रिश्वत) बिना एक पल न काट सकें, क्या वहा समाजवाद कभी पनप सकता है—नही। समाजवाद का अन्य अर्थ यह भी होता है कि समाज पहले स्वार्थ बाद मे। पर यहा तो स्थिति एकदम विपरीत है। विरला ही ऐसा होगा जो स्वार्थ को लात मार कर समाज की बात सोचे। अत कहना होगा कि भारत मे समाजवाद नही समाजवाद है।

यह तो हुई समाजवाद की बात, आईये अब जरा पूंजीवाद पर भी दृष्टिपात कर ले। भारतीय पूंजीवाद के आधार पर यदि पूंजीवाद की परिभाषा की जाए तो यही कहना होगा—"बैंको से रुपये उठा कर भाग जाना या सार्वजनिक सम्पत्ति को हड़प जाना ही पूंजीवाद है।"

उडीसा के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री बीजूपटनायक तथा नगरवाला के नामो को कौन नही जानता। एक ने तो राष्ट्रीय सुरक्षा दल के लिए स्वीकृत सामान को हड़प करके तथा दूसरे ने बैंक से रुपये चुरा कर पूंजीपति बनने की सोची—पर भाग्य ने धोखा दे दिया। यदि भारतीय पूंजीवाद का और भी स्पष्टीकरण चाहते हो तो किसी ऐसे समाचारपत्र को उठा कर देखिये जिसमे किसी उद्योग या बान्धादि के उदघाटन का समाचार छपा हो। समाचार की भाषा कुछ इस प्रकार होगी—अमुक स्थान पर एक बाध (या उद्योग) का उदघाटन समारोह सम्पन्न हुआ। प्रधानमन्त्री (या किसी अन्य) ने उद्घाटन भाषण देते हुए कहा कि इस के निर्माण के लिए हम रूस (या अन्य किसी देश) के आभारी है। वही है क्या पूंजीवाद की विलक्षणता ? मस्तिष्क मे जब सडक के किनारे सोये हुए अधनगे और भूखे व्यक्तियो का स्मरण आता है तो पूंजीवाद पर हसी आने लगती है। यदि भारत एक पूंजीवादी राष्ट्र है तो क्या उन पिचहत्तर व्यक्तियो के लिये जो राष्ट्र की समस्त सम्पत्ति का पैसठ प्रतिशत सम्हाले बैठे हैं। बडे-बडे उच्चाधिकारी रिश्वत की फटी कौड़िया मे अपनी मान मर्यादा का सौदा करते दिखायी देते है तो ऐसे पूंजीवाद म घृणा हो जाती है। यदि कुछ कागज के टुकडो के लिये राष्ट्र के रहस्य शत्रु को बता कर राष्ट्र के जीवन मे खेलना ही पूंजीवाद है तो धिक्कार है उस।

सच्चा पूंजीपति का भामाशाह जिसने मातृभूमि के सकट विमोचनार्थ अपने पिता, पितामहो द्वारा अर्जित अपनी सर्व सम्पत्ति महाराणा मे चरणो मे अर्पित कर दी थी। आदर्श पूंजीवाद है वैदिक पूंजीवाद, जो कहता है—'हे मानव, सौ हाथो से कमा और सहस्र से वितरित कर दे। पर वर्तमान भारतीय इस कथन से कोसो दूर हैं। उसकी कथनी और करनी मे, वार्ता और व्यवहार मे जमीन आसमान का अन्तर है। मुह मे राम-2 बगल मे छुरी" तथा राम-राम अपना पराया माल अपना" वाली सूक्तिया उस पर अक्षरश चरितार्थ होती है। इसी लिये तो कहा जाता है कि यदि भारत मे कोई वाद है तो वह है—बकवाद।

बकवाद का प्रचलित अर्थ है—बकवाद-अनर्गल प्रलाप-निरर्थक वार्ता। वस्तुत: बकवाद दो शब्दो के मेल से बना है—बक+वाद अर्थात् बगुलावाद या बगुले के समान आचरण वाला। बगुले से तो आप सुपरिचित होगे-बड़ा भोला होता है बेचारा, दिन भर एक ही टाग के सहारे खडा रहता है, आखें बन्द किये रहता है। बडा चिन्तनशील है। न जाने क्या सोचता रहता है सारा दिन, अरे। यह क्या, मेढकी आई और यह भक्त उस पर झपट पडा नही, नही वह तो तपी है. ज्यो का त्यो खडा है। ध्यान से देखिये एक मेढकी आई और भक्तवर उसे भी हड़प गए। पता चल गया न सत्यता का। सभी तो नही, अधिकाश लोग यहा भी इसी मनोवृत्ति के दास हैं।

भारत के धवल भाल पर बकवादी होने का जो कलक लगा है इसे दूर करने हेतु आज के युवा वर्ग के ही हाथ समर्थ हैं। आज हम सभी यह प्रण ले-सकल्प करे कि हृदय मन्दिर मे ज्ञान ज्वाला को प्रदीप्त कर बकवाद और समाजवाद के अन्धेरे को दूर भगाने मे कोई कसर उठा न छोडेंगे।

वस्तुत समाजवाद और पूंजीवाद का विवेकपूर्ण समन्वय ही राष्ट्रोन्नति का सर्वोत्तम सोपान है। इस महान् कार्य का भार आज के नवयुवको पर है—अपनी सबलता तथा नवयौवन को प्रमाणित करे।

शानदार परीक्षा परिणाम

आर्य हाई स्कूल बस्ती गुजा जालन्धर का दसवी श्रेणी की परीक्षा का परिणाम शत-प्रतिशत आया है। 112 विद्यार्थियो ने परीक्षा दी और सभी पास हुए। आर्य हाई स्कूल बस्ती गुजा का परिणाम 100 प्रतिशत आया जब कि पजाब स्कूल ऐजुकेशन बोर्ड का दसवी परीक्षा का परिणाम लगभग 73 प्रतिशत आया। इससे पूर्व भी स्कूल का परिणाम अच्छा आता रहा है। इसका श्रेय मुख्याध्यापक प रामकुमार शर्मा तथा समस्त अध्यापको, प्रबन्ध समिति तथा बच्चों को ही है। —सरदारीलाल आर्य रत्न प्रबन्धक

आचार्य रामदेव जी के कुछ रोचक संस्मरण

संग्रहकर्ता—डा भवानीलाल जी भारतीय

※

आचाय रामदेव की शिक्षा डी ए वी कालेज लाहौर मे हुई थी। किन्त उनका विवाह अल्पावस्था मे ही जालन्धर के एक आय परिवार मे निश्चित हो गया। उनकी पत्नी का भी अध्ययन आय कन्या महाविद्यालय म हुआ था। इस नाते विवाह के समय कन्या पक्ष की ओर स महाविद्यालय के सचालक लाला देवराज तथा उनके सहयोगी (रिश्ते मे बहनोई) लाला मुशीराम उपस्थित थे। उस समय तक कालेज दल तथा लाला मुशीराम के अनुयायियो मे वैचारिक मत भेद पैदा हो चुके थे। इसलिए जब वर के रूप मे उपस्थित किशोरावस्था म रामदेव को बताया गया कि महात्मा पार्टी के लीडर वहा बठ हुए है तो कालेजदल के पक्ष पोषक रामदेव क मुह स अनायास ही निकल पडा—अच्छा आय समाज के सब झगडो की जड यही है।

किन्तु कुछ समय पश्चात यही रामदेव कालेज पक्ष की विचारधारा को तिलाजलि देकर महात्मा मुशीराम के अनन्य अनुयायी और सहयोगी बन गए।

जिस समय गुरुकुल कागडी गगा पार की भूमि पर अवस्थित था। एक बार वहा के भवनो मे आग लग गई। आग की लपटो ने आचाय रामदेव के निवास को भी घेर लिया और उनका बहुमूल्य पुस्तकालय आग की लपटो मे धू धू जलने लगा। आचाय जी के पुस्तक सग्रह मे पाश्चात्य दशन साहित्य राजनीति आदि पर बहुत से ग्रन्थ थे। इस भयकर अग्निकाड को देखकर आचाय जी के मुह से निकला—वाह इसमे दुख की क्या बात है? देखो पश्चिमी विचारो और सभ्यता की कितनी शानदार दाह क्रिया हो रहा है।

एक बार रात्रि के समय एक चोर आचाय जी के घर मे घुस आया। उसकी पद चाप को सुनकर रामदेव जी की नीद खुल गई। उन्होने चोर को पुकार कर कहा, भाई लालटेन इधर पडी है। इसे जला लो। घर को खूब अच्छी तरह देख लो, कुछ रुपया पैसा मिले तो मुझ भी बता देना। हा यदि पुस्तक पढनी हो तो बेशक ले जाओ।

गुरुकुल के उत्सव पर धन सग्रह के लिए स्वय सेवक बाल्टिया लेकर निकल पडते थे। थोडे ही समय मे ये बालटिया रुपयो करैंसी नोटो तथा आभूषणो से भर जाती थी। दान दाताओ को यह सब कुछ देने की प्ररणा आचाय रामदेव जी की भावपूण अपील से होती थी। गुरुकुलोत्सव मे एक बार इस दृश्य को देखकर महात्मा गाधी ने कहा था—मैं रूमाल मे चन्दा एकत्र करता हू। आपके यहा तो बालटियो मे धन आता है।

रूस के लेखक काउन्ट लियो टाल्सटाय ने आचाय रामदेव स पत्र व्यवहार करने के पश्चात सत्याथ प्रकाश का अग्रेजी अनुवाद पढा। यह ग्रन्थ भी उन्हे रामदेव जी से ही मिला था। इस ग्रन्थ के एकादश समुल्लास को पढकर टाल्सटाय इतने प्रभावित हुए कि उन्होने अपने राजसी जीवन को छोडकर वान प्रस्थी का जीवन-यापन करने का निश्चय किया और अपनी जमीदारी की एक तृण कुटी म रहने लगे।

बिजनौर जिले के एक अग्रेज प्रशासक ने एक बार कहा था। जब तक महात्मा मुशीराम और प्रोफसर रामदेव है इस सस्था (आय समाज) का कोई सभासद राजभक्त (अग्रेजी) राज्य के प्रति वफादार हो ही नही सकता।

—प शकरदेव विद्यालकार

आचाय रामदेव ने एक बार कहा था —

जिस प्रकार हमारे पूवजो ने वेद सहिताओ को पारपरिक रूप मे कण्ठस्थ किया है उसी प्रकार हम ऋषि की अमर कृति सत्याथ प्रकाश की एक एक पक्ति को कण्ठस्थ कर लगे और उसे नष्ट नही होने दगे। सरकार ग्रथ को जब्त कर सकती है किन्तु हमारी स्मृति मे सुरक्षित उसके ज्ञान को नही।

एक बार रेल सफर मे आचाय रामदेव की महात्मा गाधी स अनायास भेट हो गई। इससे पूव महात्मा गाधी ने यग इण्डिया मे एक लेख लिखकर स्वामी दयानन्द और सत्याथ प्रकाश की कटु आलोचना की थी तथा स्वामी दयानन्द को असहिष्णु एव सत्याथ प्रकाश को निराशाजनक ग्रन्थ बताया था। किन्तु उस भेट के समय जब रामदेवजी ने महात्मा जी को आदर पूवक प्रणाम किया तो गाधी जी ने हसकर कहा—आप बडी जल्दी भूल गए। मैं वो वही गाधी हू जिसने स्वामी दयानन्द और सत्याथ प्रकाश की आलोचना की थी और उसे पढकर आप बहुत बिगडे थे। इस पर आचाय जी ने एक हाथ स महात्मा जी के चरणो को स्पश किया और साथ ही दूसरे हाथ से मुक्का तान लिया। इस परस्पर विरोधी कृत्य को देखकर महात्मा जी विस्मय विमुग्ध रह गए और उन्होंने जब इसका कारण पूछा तो आचाय जी का उत्तर था आप महात्मा हैं राजनीति मे मेरे नेता हैं इसलिए वन्दनीय है किन्तु आपने मेरे आचाय प्रवर की निरथक आलोचना की इसलिए आपके प्रति अपने आक्रोश को मैंने मुक्का तानकर प्रकट किया है। इस पर गाधी जी ने कहा—यह बात तो आपकी अच्छी है कि आप एक ही साथ आदर और रोष को प्रकट कर देते हैं।

एक ईसाई पादरी से शास्त्राथ के प्रसग मे जब आचाय रामदेव ने बाईबिल को अक्षरश उद्धृत किया तो पादरी बोल पडा—प्रोफसर रामदेव जी आप बाईबल को अच्छी तरह जानते हो।

—

धर्मो रक्षति रक्षितः

लेखक—श्री डा कुन्दन लाल जी शर्मा एम ए होशियारपुर

※

मर्यादा पुरुषोत्तम महाराज रामचन्द्र जी के पूवज मनु महाराज ने मनुस्मृति म लिखा है धम एव हतो हन्ति धर्मो रक्षित रक्षित यदि धम की रक्षा न की जाए और उसे नष्ट होने दिया जाए तो धम भी व्यक्ति का एव समाज का नाश कर देता है। वही धम हमारी रक्षा करेगा जिसकी रक्षा हम करगे।

आज से 60 70 वष पूव आय समाज का प्रचार दिग्दिगन्त म फला हुआ था। यह कहना चाहिए कि आय समाज के नाम का तूती बोलती थी। क्योकि शास्त्रार्थों के द्वारा आय समाज के स्वनाम धन्य मान्य विद्वानो के आगे कोई भी मतावलम्बी ठहर नही सकता था। आय समाज इस खडनात्मक प्रवृति के कारण सनातन धर्मी (पौराणिक) आय समाज से दूर होते गए। अब वह बात नही रही। आय समाज ने खण्डनादि त्याग कर शास्त्रार्थो से भी किनारा कर लिया परिणाम स्वरूप अब सभी आर्यों (हिन्दूओ) के पजाब प्रान्त मे दुर्दिन का सामना है। यदि कहे कि हमारा धम सकट मे है तो अतिशयोक्ति न होगी। इस धम सकट के अवसर पर हम मिल कर निश्चय करना चाहिए कि प्रत्येक हिन्दू धर्मी जो पजाब के जिस किसी कोन म भी बठा है। इस विचार से ग्राम वासियो (हिन्दुओ) की सुरक्षा का उत्तर दायित्व हमारे ऊपर आ जाता है। जहा जहा कोई हमारा भाई या बहिन असुरक्षित है। उन्हे तुरन्त नगर मे ले आना चाहिए। उनके निवास आदि के लिए सभी मन्दिर धमशालाओ को खोल देना चाहिए। वे महसूस कर कि उनके पीछे सारा हिन्दू समाज पत्थर की चट्टान की तरह अडिग खडा है। मैं पजाब के हिन्दू को बड प्रबल शब्दो मे चेतावनी देना चाहता हू कि यदि वे अपनी रक्षा आप न करगे तो कोई उनका रक्षा के लिए नहीं आएगा। भगवान भी नहीं क्योकि भगवान भी उन्ही का सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करते है।

पजाब की अपनी मातभूमि को आर्यावर्त की आय समाज के गुरु को तन केश दान पवित्र धरता को महर्षि दयानन्द के चरण चिन्हो म अकित इसी पावन भूमि को और अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द की जन्म स्थली का गुरु विरजानन्द के जन्म स्थान को छोडने का तो नाम तक भी नही लेना चाहिए ऐसा सोचना भी आर्यों क लिए पाप के बराबर है। क्या आप भूल गए ह वीर शिरोमणि अर्जुन ने कहा था।

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्य न पलायनम।

अर्जुन की दो ही प्रतिज्ञाय था न दीनता और न पलायन। महर्षि दयानन्द क मानने वालो उसी ऋषि के विचार को आज घर घर म पहुचा दो। उन्होंने कहा है

अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निबल से भी डरता रहे—अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ महा बलवान और गुणवान भी हो तथापि उस का नाश अवनति और अप्रिया चरण सदा किया करे अन्यायकारियो के बल की हानि सवथा किया कर। इस काम मे चाहे उस कितना ही दारुण दुख प्राप्त हो चाहे प्राण भी भले ही जावे परन्तु इस मनुष्यपन धम स पृथक कभी न होवे।

धम पर मरने वाले अमर हो जाते हे।

—

आर्य परिवार संघ का गठन क्यों ?

लेखक—श्री वेदप्रिय शास्त्री 4 अ 27 विज्ञान नगर कोटा (राज)

किसी भी सभ्य समाज मे जब जन्मना जातिगत मिथ्या अभिमान या समाज-वादी भाषा मे 'नस्ली अह' बढ जाता है तो उसकी प्रगति अवरुद्ध होकर उसका बहुमुखी विकास रुक जाता है। कुछ सशक्त और सम्पन्न लोग समाज के स्वामी बन बैठते हैं और शेष लोग उन के दास बन जाते हैं। ससार की समस्त सम्पत्ति और उपभोगो पर कुछ लोगो का अधिकार हो जाता है सम्पूर्ण प्रतिष्ठा या प्रशस्ति उन के लिए होती है और इस प्रकार शोषण प्रारम्भ होता है। जो लोग इस शोषण मे बाधा उत्पन्न करने का प्रयत्न करते हैं, उन्हे हर प्रकार से कुचलने का पूर्ण प्रयास किया जाता है। कालान्तर मे धर्म, समाज, सस्कृति, देश, जाति और ईश्वर तक की ओट लेकर इस शोषण को सुरक्षित रखा जाता है। समाज की व्यवस्था इस प्रकार की बना दी जाती है कि मनुष्य की कमाई का अधिकाश भाग इन स्वामियो और उनके दलालो के यहा पहुच जाता है। जिसे वे अपने आमोद-प्रमोद मे व्यय करते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त के समस्त कर्मकाण्ड इसी प्रकार के बना दिए जाते हैं जिससे समाज का हर व्यक्ति मानसिक दासता और धर्मभीरुता से बुरी तरह ग्रस्त हो जाता है। इस प्रकार समाज का अधिकाश भाग ज्ञान, बल और धन से हीन हो कर अन्य लोगो के आश्रित हो कर दयनीय जीवन व्यतीत करने को विवश हो जाता है और ये स्वामी लोग उत्पादन के तमाम साधनो पर अधिकार कर लेते है। शनै शनै ये स्वामी लोग विलासिता, चरित्र-हीनता और पुरुषार्थ हीनता के कारण किसी बडी हस्ती के हाथो पराजित हो जाते हैं और अपने लूटे हुए धन का पर्याप्त भाग उस बडी शक्ति को देकर आत्म रक्षा करते हैं। दूसरी ओर सामान्य जनता का शोषण और बढ जाता है और समाज अपना सम्पूर्ण गौरव खोकर पराधीन हो कर अनिश्चित काल के लिए पतन के गम्भीर गर्त मे गिर जाता है। वर्तमान मे हिन्दू कहलाने वाली आर्य जाति की यही अवस्था है।

ऐसे पतित समाज को उन्नत करने के लिए एक मात्र यही उपाय है कि नस्ली अह और शोषण के लिए रचा गया पाखण्ड समाप्त करके एक स्वस्थ व्यवस्था को प्रचलित किया जाए। इसी उद्देश्य से महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की थी। किन्तु वह भी उपरोक्त स्वामियो के चगुल मे फस कर निष्क्रिय रह गया है। ऐसी अवस्था मे यह अत्यन्त आवश्यक है कि इसे इन स्वामियो से मुक्त कर इस के स्वरूप को सवारा जाए। आर्य समाज मे तात्पर्य था एक ऐसा वृत जिस के अन्दर आ जाने पर व्यक्ति की पूर्व तथाकथित जाति एव सम्प्रदायादि समाप्त हो जाते हैं और वह आर्य मात्र रह जाता है। ऐसे आर्यों के समूह के विवाहादि सम्बन्ध परस्पर उसी वृत्त के अन्तर्गत होने चाहिए और निरन्तर बाहर के विकृत जन समूह से चुन-चुन कर पुरुष या स्त्रियो को परिमार्जित कर उन्हे उस वृत्त के अन्दर प्रविष्ट कराते रहना चाहिए। इस प्रकार उस वृत्त के बाहर के लोग तो भीतर आते रहे किन्त अन्दर वाले बाहर न जाने पाव तो समाज निरन्तर बढता रहेगा। किन्तु वर्तमान मे ऐसा कोई वृत्त न होने के कारण आर्यजनो की बडी दयनीय दशा है और शनै शनै व भी विकृत जनसमूह मे विलीन होते जा रहे हैं। वर्तमान मे आर्य समाज के ऊपर से लेकर नीचे तक के समस्त अधिकारी ही जन्मना जाति-पाति या 'नस्ली अह' से बुरी तरह ग्रस्त है फिर जन सामान्य की तो कथा ही क्या ? परिवार की पुत्रिया विवश हो कर अनार्य परिवारो मे देनी पडती हैं जहा उनकी दुर्दशा ही होती है। दूसरी ओर आर्य पुत्रो का विवाह सम्बन्ध अनार्य परिवारो की अपरिमार्जित लडकियो के साथ होता है जो घरो मे आकर पैतृक पाखण्ड का प्रचलन बलपूर्वक करती है और आर्य परिवार की शुद्ध धार्मिक मर्यादा का तिरस्कार कर देती है। इस प्रकार एक आर्य माता-पिता की अपनी आखो से अपने सर्वस्व का नाश देखते हुए रोते रहने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नही रह जाता।

इसलिए वास्तविक आर्य समाज का निर्माण करने के लिए जन्मना जाति-पाति को तोड कर गुण, कर्म और स्वभावानुसार आर्य परिवारो के सम्बन्ध आर्य परिवारो मे बनाये जाने चाहिए तभी इस आर्य जाति का कल्याण सम्भव है।

जब भी कोई जाति-पाति तोडने की बात कहता है तो आर्य समाजी वर्ण व्यवस्था की बात उठा कर जात-पात तोडने की बात को दबाने का प्रयास करता है। जबकि इस समय वर्ण व्यवस्था नाम की कोई व्यवस्था नही है और जो आर्य बन्धु अपने को ब्राह्मण या अन्य वर्णस्थ मानकर वर्ण व्यवस्था होने की बात करता है वह भी गुण, कर्मादि के अनुसार न होकर जन्म के अनुसार है। जिसे आज की भाषा मे जाति व्यवस्था ही कहा जाता है। अत. जात-पात तोडने के समय भयभीत होकर वर्ण व्यवस्था की बात करना आत्म प्रवचना मात्र है।

जात पात और वर्ण व्यवस्था दो पृथक धारणाए हैं, दोनो का साथ साथ चलना असम्भव है। जात-पात के रहते वर्ण व्यवस्था की पुनर्स्थापना नही हो सकती अत जाति-पाति को तोडना या मिटाना अति आवश्यक है।

जन्म मूलक जाति-पाति जब तक कायम है। देश तथा आर्यों की उन्नति नही हो सकती। जात-पात तोडे बिना वर्ण व्यवस्था का क्रम ठीक न हो सकेगा, आज कल वर्ण व्यवस्था तो आर्यों के लिए मरण व्यवस्था बन गई है।

यद्यपि हमने काफी हद तक पौराणिक उपासना पद्धति को त्यागकर वैदिक उपासना पद्धति को अपना लिया है, तथापि हमारा समाज (रोटी, बेटी के सम्बन्ध) उसी पौराणिक हिन्दू पद्धति पर ही चल रहा है जिसका समूल उच्छेद करने के लिए महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की थी। विचार करें कि हम आर्यों का धर्म वैदिक है तो हमारा समाज पौराणिक हिन्दू क्यों ? इन्ही सब समस्याओ पर विचार कर हम ने गुण, कर्म, स्वभावानुसार आर्य परिवारो का निर्माण करने के लिए एव निर्मित आर्य परिवारो को तथाकथित जन्मना जात-पात विहीन और विशुद्ध वैदिक समाज के रूप मे सगठित करने के लिए आर्य परिवार सघ का गठन किया है।

आर्य परिवार सघ आर्य समाज से कोई पृथक सगठन नहीं है अपितु उन आर्यों और आर्य सामाजियो को एक वैदिक समाज के रूप मे सगठित करने का प्रयास मात्र है जो तथाकथित जात-पात के पचडे मे न पड कर धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से जो आर्य हो।

निवेदन है तथाकथित जन्मना जात-पात तोड कर गुण, कर्म, स्वभाव अथवा एक समान विचारानुसार आर्यों के विवाह सम्बन्ध आर्यों मे करने कराने हेतु अथवा जो अविवाहित हैं वे अपना और अपने अविवाहित पुत्र-पुत्रियों का विवाह गुण, कर्मानुसार करने कराने हेतु आर्य परिवार सघ से अपना सम्बन्ध स्थापित करें और जो किसी कारण से ऐसा न कर सकें वे सघ को धन से सहयोग कर यश और पुण्य के भागी बनें।

यमुनानगर में आर्य वीर दल शिविर सम्पन्न

वैदिक साधनाश्रम शादीपुर (यमुनानगर) मे श्री मदन लाल वासुदेव प्रधान व श्री वैद्य रामलाल जी की अध्यक्षता मे 8 6-86 से 23-6-86 तक सम्पन्न हुआ। इस शिविर मे गाव मण्डौली, फतेहपुर, महमूदपुर, शादीपुर आदि ग्रामों के 50 बच्चो ने भाग लिया।

इस मे शिक्षक श्री देवेन्द्रदत्त भारद्वाज ने लाठी चलाना, जूडो कराटे, योगासन आदि का प्रशिक्षण दिया। अन्त मे 23 6-86 को श्री आचार्य सुवर्णदेव जी के कर कमलो द्वारा 50 आर्य वीरो को प्रमाण पत्र वितरित किए गये।

—राम स्वरूप शास्त्री

आर्य समाज ने पंजाब विवाद को जन्म नहीं दिया

लेखक—श्री विजय भूषण जी आर्य

(6 जुलाई से आगे)

पजाब समस्या से तमिलों की तुलना के बाद एक प्रश्न यह है कि भारत में स्वतन्त्रता के बाद सिखों की भी क्या वैसी ही स्थिति हो गई है ? क्या उनके शिक्षा, नौकरी एव व्यापार के अवसरो से वैसी ही अवनति आई है जैसी श्रीलका मे तमिलो को वस्तुत किसी वर्ग के अस्तित्व का प्रश्न भाषा से नहीं, रोटी से जुड़ा हुआ होता है । बाग्लादेश की मूल समस्या भाषाई नहीं, पश्चिमी पाकिस्तान द्वारा उनका आर्थिक शोषण था । पाकिस्तान के सिन्ध एव बलूचिस्तान के लोगो को भी पाकिस्तान के पजाबियो द्वारा किए जाने वाले आर्थिक शोषण के विरुद्ध शिकायत है । यदि भाषा मुद्दा होता तो पाकिस्तान का सबसे सन्तुष्ट वर्ग होता । भारत से गए मुसलमान और सबसे असन्तुष्ट वर्ग होता पजाबी मुसलमान, क्योकि वहा राष्ट्रभाषा उर्दू है ।

श्री महीप सिंह को पजाब को सेना के हवाले करने पर एतराज है । वे शक्ति से दमन के विरोधी हैं । लेकिन नागालैंड में कितने दिन सेना रही ? बेगुनाह मरने वालो के सम्बन्ध मे उनका क्या कहना है ? क्या इन अबोध बच्चो में उनकी कोई भतीजी नहीं है, कोई परजाई नही है ? जब दिल्ली मे चन्द राजनीतिज्ञो के उकसावे में आकर कुछ लोगो ने आदमी की शक्ल सूरत रखते हुए भी आदमियत को छोड़ दिया था, और फौजी दस्तो की मदद ली गई थी तब भी क्या महीप सिह उसके विरोधी थे ? और अब हरियाणा मे शान्ति व्यवस्था के लिए फौज के प्रयोग के बारे मे उनका क्या कहना है ?

पजाब समस्या का मूल भाषाई विवाद में नही है, आर्थिक शोषण मे तो बिलकुल नहीं है । वहा की कोई वास्तविक शिकायत नही है । काल्पनिक की चर्चा करना बेकार है । वहा समस्या की जड़ है सत्ता की राजनीति मे । यह आतकवादी कौन है ? क्या कोई आतकवादी ऐसा भी है जो तस्करी से जुड़ा हुआ न हो ? जब-जब अकाली दल सत्ता से हटता है तब-तब पजाब के मसले गरमा जाते हैं । आज भी अकाली दल की आन्तरिक राजनीति मे पिटे हुए मोहरे ही पजाब की समस्या की बात करते हैं । खालिस्तान और आतकवाद का विरोध भी करते हैं । किन्तु उनके खिलाफ उठाए जाने वाले कड़ कदमो की मुखालफत भी करते है । उनकी सभा मे "खालिस्तान जिन्दाबाद" के नारे भी लगाए जाते है और वे उन का मौन समर्थन भी करते है । अगर पजाब को फौज को न सौंपा जाए तो क्या उन लागो को सौंपा जाए जो बरनाला के पुलिस एक्शन की सूचना चन्द घन्टे पहले आतकवादियो को दे देते हैं ।

एक बेगुनाह का खून बेगुनाह का खून है । वह कभी किसी के द्वारा नही बहाया जाना चाहिए । एक कातिल, कातिल है, उस पर दया ममता दिखाने का किसी को अधिकार नही है । हरियाणा और पजाब का बटवारा दो भाइयो का बटवारा है । जब उन्होंने अलग-अलग रहने क फैसला कर ही लिया है तो उनके मध्य उनकी साझा सम्पत्ति का ईमानदार और न्याय युक्त बटवारा हो जाना चाहिए । एक बात और है । यह दो भाइयों के मध्य बटवारे का मसला है, मजहबी नही । हरियाणा के सिख के हित हरियाणा के साथ जुड हुए है और पजाब क हिन्दुओ क हित पजाब के साथ । इन दोनो प्रदेशा के बाहर के लोग इन दोनो के मध्य विवाद मे बीच-बचाव करने का फर्ज तो रखते है, खुद पार्टी बन कर हाय तावा मचाने का हक नही ।

— ——

यज्ञ का एक रूप : सर्वमेध यज्ञ

लेखक—हरि ओ३म् सिद्धान्ताचार्य

सृष्टि के इस श्रेष्ठतम कर्म के अनेको रूपो यथा गोमेध, अश्वमेध, अजामेध नरमेध, वृहमेध आदि मे एक रूप सर्वमेध भी है । देव पूजा, सगतिकरण और दान की वास्तविक सगति के लिए सर्वमेध का सहारा लेना पड़ता है । लोलुप और ऐषणाओ में घिरा हुआ व्यक्ति यथार्थत न तो देव पूजा ही कर सकता है और न सगतिकरण और दान के अर्थों को ही समझने मे समर्थ होता है ।

यजमान यज्ञ करता हुआ जहा सर्वप्रथम अग्नि जैसे सम्मानवीय और पच भूतो मे अपनी महाभूत को "उद्बुध्यस्वाग्ने". का आह्वान करके उससे इष्ट और आपूर्ति सम्पादनार्थ अपेक्षा करता है वहीं पर उसी यज्ञ की अग्नि और सम्पूर्ण यज्ञ स्वरूप से प्रजा, पशु, ब्रह्म, वर्चस और अन्न आदि अनेको जीवन वर्द्धक पदार्थों की वृद्धि की याचना और कामना भी करता है । परन्तु गृहस्थाश्रम की समाप्ति और वानप्रस्थ के आरम्भ में व्यक्ति देवपूजा, सगतिकरण और दान का सम्यक् सम्पादन करके शनै शनै: वित्त, पुत्र और लोक (कीर्ति प्राप्ति की) ऐषणाओं का त्याग क्रमश करता है । और अन्त में सर्वमेध करके मन मे अपने साथ केवल आध्यात्मिक अग्नि मात्र ले जाता है । जहा ऐषणाओ से घिरा हुआ व्यक्ति देवपूजा और दान से सर्वथा रहित होता है । वही लालची, सगतिकरण मे भी बाधक होता है । अत: दान' का मूल रूप ही दान और देवत्व का निर्माता होता है । क्योकि "देवो दानाद्वा दोत नाद्वा दीपनाद्वा । इस तरह से दान' का सम्यक् सम्पादन ही देवत्व का निमित्त है । इतिहास में प्राचीन सम्राटो के जीवन से आज भी सर्वमेध यज्ञ परिलक्षित होते हैं सम्राट दिलीप अज, युधिष्ठिर, अशोक आदि अनेको सम्राटो के नाम इस श्रेणी मे रखे जा सकते हैं । और फिर सम्राट रघु के सर्वमेध यज्ञ को कौन भुला सकता है । जब वरतन्तु गुरु का शिष्य कौत्स उनसे करोड़ स्वर्ण मुद्राओं की गुरु दक्षिणार्थ याचना करने गया था तब सर्वमेध करने के ही कारण रघु ने कुबेर पर आक्रमण करके उसे मुद्रायें देने की ठानी थी । यजमान इन्हीं यज्ञ भावनाओं के अनुसार ही तो सब कुछ त्याग के लिए आरम्भ करने की कोशिश करता है । क्योकि यज्ञीय सचय की अन्तिम परिणति त्याग में ही निहित होती है । और त्याग से प्राप्ति के द्वार खुलते हैं अत सब कुछ की प्राप्ति के बाद भी यजमान स्वजीवन के उन्नयनार्थ अन्त मे ईश्वर और अग्नि के समक्ष "वसुधैव कुटुम्बकम्" और "आत्मवत् सर्वभूतेषु" के मूल मन्त्र के आधार पर ही मेधा की प्राप्ति के बाद "सर्वं वै पूर्णं स्वाहा" करके सर्वमेध का सम्पादन करता है ।

ऋषियो और शास्त्रो के अनुसार सर्व त्याग ही जीवन यज्ञ का उन्नायक है, सूक्ष्म शारीरिक (दो नेत्र, दो नासिका दो श्रोत और एक मुख इसी यज्ञ के वशीभूत होकर अहर्निश क्रमश रूप, गन्ध, शब्द, अन्न और जल का सर्वथा त्याग करते रहते हैं । क्योकि त्याग में ही उनकी जीवनी शक्ति और सचय मे लाभ अन्तर्निहित है, इसलिए मनुष्य सर्व त्याग की भावना को ध्यान करके समाज और जीवन यज्ञ का अनुष्ठाता बन सकता है ।

—आर्य समाज सुरत (गुजरात)

——

हरियाणा प्रान्तीय आर्य वीर दल महा-सम्मेलन रोहतक में

आर्य वीर दल हरियाणा का दसवा प्रान्तीय महा सम्मेलन गत वर्षों की भाति इस वर्ष 27, 28 सितम्बर दिन शनिवार तथा रविवार को प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर रोहतक मे धूमधाम से मनाया जाना निश्चित हुआ है ।

इसमे आर्य जगत के सुप्रसिद्ध मूर्धन्य युवा विद्वान आर्य सन्यासी तथा हजारो आर्य प्रतिनिधि पधारेंगे । प्रान्त भर से 2000 आर्य वीर पूर्ण गणवेश मे उत्साहपूर्वक भाग लेंगे । सम्मेलन मे आर्य वीर क्षात्र शक्ति का प्रदर्शन करते हुए बिना दहेज विवाह का सकल्प लेकर प्रेरणा स्रोत बनेंगे ।

—अजीत कुमार आर्य,
महामन्त्री, आर्य वीर दल हरियाणा

कलुध, हिंस, विघटन और साम्प्रदायिकता की ताकतों से अकेले जूझता एक कर्मयोगी संत

"देशवासियो को याद रखना होगा कि हमारे हाथ निर्माण के लिए हैं, विध्वस के लिए नही। दूसरो की रक्षा के लिए हैं, उनकी जान लेने के लिये नही।" यह उद्बोधन है, 71 वर्षीय कर्मयोगी सन बाबा आम्टे का, जिन्हाने कलुध, हिंसा, विघटन, भ्रष्टाचार और साम्प्रदायिकता की ताकतो से अकेले जूझने, तथा भारत की एकता को अक्षुण रखने के सकल्प को सब भारतीयो के प्राणो मे फूकने के उद्देश्य से पिछले दिनो एक ऐतिहासिक "भारत जोडो" महा-यात्रा कन्याकुमारी से कश्मीर तक सम्पन्न की। ऐसे ही दुलभ कर्मयोगी सतो के त्याग व कठोर साधना के कारण ही आज हिन्दुस्तानी अपने दश के मुनहरे भविष्य म थोडा बहुत आश्वस्त है, नही तो राजनीतिज्ञो के खोखले, मीठ वायदो और दावो को सुनते सुनत तो वह मोह भग की स्थिति स गुजरत-गुजरत ऊब गया है।

नशीले पदार्थों का सेवन करने वाली और पाश्चात्य सभ्यता की चकाचोंध मे अपनी पहचान खो बैंठने वाली देश की युवा पीढी के प्रति हम भले ही आश्वस्त न हो, लेकिन हजारो कुण्ठ रोगियो को अपन 'आनन्दवन' के माध्यम से आनन्द-लोक मे ले जाने वाले बाबा आम्टे इस पीढी को ही "देश की एकमात्र आशा" मानत है। शायद ऐसी आशा व्यक्त करत समय उन्ह स्वय अपनी तरुणा-वस्था याद आ जाती है, जब सुख-सुविधा मे पूर्ण अपन जीवन का परित्याग कर, इस तरुण वकील मुरलीधर देवीदास आम्टे ने समाज तथा सरकार दोनो के द्वारा पूर्णतया उपेक्षित कुण्ठ रोगियो की सेवा और उन्ह स्वावलम्बी तथा समाज के लिये उपयोगी बनाने का व्रत लिया था। किस प्रकार उनकी दुख से भरी अन्धेरी जिन्दगियो मे आनन्द का प्रकाश पुज बिखेरा, यह देख कर एक विदेश राजनयिक दग रह गया था, और उसने बाबा से पूछा था, "आपके आनन्दवन मे रहने वाले हर कुष्ठ रोगी के चेहरे पर हसी और मुस्कान क्यो है? और बाबा ने मुस्करा कर कहा था, "इसलिए कि हमने यहा हसी और मुस्कान को सक्रामक बना दिया है।

मैगसे से पुरस्कार से सम्मानित पद्म विभूषण अपनी निस्पृह समाज सेवा के लिये अनेकानेक पुरस्कार जीत चुके हैं। नोबेल-पुरस्कार के लिये भी उनका नाम दो ख्यातनामा विदेशी विशेषज्ञो द्वारा सुझाया गया है। किन्तु वे अपना सर्वोच्च पुरस्कार यह मानते हैं कि अपनी "भारत जोडो" यात्रा द्वारा उन्होने भारतीय जन-मानस मे भारत की एकता व अखण्डता को अक्षुण रखने की चेतना जागृत की। जिस तरुण शक्ति को उन्होन "देश की आशा की एकमात्र किरण" माना है, वह दिनो दिन तेजो-मय और उपलब्धियो की आभा से उदभासित हो, तभी बाबा आम्टे की साधना अपने को धन्य मानेगी।

—सदाजीवतलाल
(भारत कल्याण मच)

आर्य समाज सान्ताक्रुज का चुनाव

रविवार दिनाक 29-6-86 को आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई का वार्षिक निर्वाचन 1986-87 के लिए बडे सौहार्द पूर्ण वातावरण मे निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ :—

प्रधान—श्री देवेन्द्र कुमार कपूर। उप-प्रधान—श्री ओकारनाथ आर्य, उप-प्रधान—श्री चन्द्रभान मल्होत्रा, महा-मन्त्री—श्री कैप्टिन देवरत्न आर्य, मन्त्री—श्री विश्वभूषण आर्य, मन्त्री—श्री नरेन्द्र कुमार पटेल, कोषाध्यक्ष—श्री कस्तूरीलाल मदान।

तथा श्री विमलस्वरूप सूद, श्री चमनलाल श्री लालचन्द, श्री सोहनलाल दुग्गल, श्री श्यामलाल तलवार, श्री कुलदीप जुनेजा, श्री दीपक सेठ, श्री सुभाषपाल अन्तरग सभा के सदस्य चुने गये।

—देवरत्न आर्य
महामन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि न पी बी एल 55

वर्ष 18 अंक 17 12 श्रावण सम्वत् 2043 तदानुसार 27 जुलाई 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

आर्य समाज के शिष्टमंडल की प्रधानमन्त्री से भेंट

पंजाब से हिन्दुओं का पलायन तुरन्त रोका जाए

अमृतसर, गुरदासपुर, फिरोजपुर को सेना के हवाले किया जाए

श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती का प्रधानमन्त्री को परामर्श

(आर्य मर्यादा के विशेष सम्वाददाता द्वारा)

17 जुलाई को आर्य समाज का एक शिष्टमण्डल 25 मिनट के लिए प्रधानमन्त्री श्री राजीव गान्धी से मिला। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व में शिष्टमण्डल ने एक ज्ञापन प्रधानमन्त्री को दिया। ज्ञापन में निम्नलिखित मुद्दे उठाए गए —

1 पंजाब से हिन्दुओं का पलायन तुरन्त रोका जाए जो लोग देहात से उखड़ कर आते हैं उनको पंजाब के शहरों के ही भारत सरकार द्वारा स्थापित शिविरों में रखने के प्रबन्ध किए जाएं तथा उन विस्थापितों को वही सहूलियतें दी जाएं जो 1984 में सिख विस्थापितों को दी गई थी।

2 अमृतसर, गुरदासपुर फिरोजपुर जिलों के सीमा से सटे 25 मील तक के क्षेत्र को सेना के हवाले किया जाए ताकि पाकिस्तान से लगी सीमाओं को प्रभावी रूप से सील किया जा सके।

3 पंजाब में राष्ट्रपति शासन लागू किया जाये जिस से अल्पसंख्यकों में विश्वास पैदा हो सके ताकि वे पलायन न करें तथा उग्रवादियों का सफाया किया जा सके।

4 सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी ने मिजोरम समझौते के सम्बन्ध में फैलाई जा रही अनेक भ्रान्तियों की ओर प्रधानमन्त्री का ध्यान आकृष्ट किया और उनके निराकरण पर जोर दिया। प्रधानमन्त्री जी ने ध्यान से सब बातें सुनकर कहा—

(क) पंजाब से पलायन करके आये विस्थापितों को वे सब सहूलियतें दी जाएंगी जो 1984 में दंगा पीड़ित सिख विस्थापितों को दी गई थी।

(ख) पाकिस्तान की सीमाओं को सील करने के लिए कितने क्षेत्र को सेना अपने हाथ में ले इसके बारे में भारत सरकार शीघ्र तजवीज बना रही है।

(ग) भारत सरकार बरनाला सरकार को सक्रिय ही नहीं कर रही बल्कि सब प्रकार की सहायता दे रही है ताकि हिन्दुओं का पलायन रोका जा सके और उग्रवादियों का सफाया किया जा सके।

(घ) मिजोरम के बारे में सब फैलाई जा रही भ्रान्तियां निराधार हैं। वहां कोई विशेष चर्चा या विशेष प्रावधान किए जाने की बात नहीं है और सब कुछ संविधान के अन्तर्गत ही किया जा रहा है।

(ङ) हरियाणा को रावी ब्यास के पानी का उचित हिस्सा मिले इसके लिये भारत सरकार सब आवश्यक कदम उठा रही है।

जन्म-मरण की उलझन—६

भौतिक पदार्थ नश्वर हैं

लेखक—प्रा श्री भद्रसेन जी होशियारपुर

इस बैठक को प्रारम्भ करते हुए महात्मा जी ने कहा—कहते हैं कि भोज जब अभी बालक ही था और गुरुकुल मे अपने साथियो के साथ अपनी पढाई मे जुटा हुआ था तो उसके पिता बहुत बीमार हो गए, हर तरह का अच्छे से अच्छा इलाज कदने पर भी स्वस्थ न हुए और स्थिति यहा तक पहुच गई कि ज्यो ज्यो इलाज किया, रोग बढता ही गया, अन्त मे भोज के पिता ने अ तिम काल को अनुभव करते हुए अपने भाई मुञ्ज को बुलाया और बालक भोज को मुञ्ज के हाथो मौपते हुए कहा—जब तक यह योग्य नही होता तब तक राज्य और इसकी तुम देख-भाल करो।

दिनो पर दिन, सप्ताहो पर सप्ताह और मासो पर मास बीतने लगे। धीरे-धीरे मुञ्ज का मन बदलने लगा और राज्य के मद मे मदमस्त होकर उसने विचारा कि अब तो सदा के लिए राज्य का स्वामी बनना चाहिए और रास्त के इस काटे भोज को भी किसी तरह से रास्ते से हटा देना चाहिए। अपनी इस योजना को पूर्ण करने के लिए किसी विश्वस्त मन्त्री को छाटना शुरू किया। अपने षडयन्त्र मे सम्मिलित करने के लिए तब उसको तैयार करने के लिए पटटी पढानी और प्रलोभन देने शुरू किए। जब समझा कि यह अपने काम का हो गया है, उसको अपने मन की बात बताई और सारी योजना समझाई तथा बहुत बडा इनाम दने का आश्वासन दिया।

कुछ दिन सोचने के बाद मन्त्री ने सोचा, मुञ्ज लोभ मे अन्धा हो रहा है और यह कुछ भी करने मे अब कोई भी बुराई नही समझता क्योकि सब कुछ करने के लिए तैयार है—स्वार्थी दोष न पश्यति, लोभ पापस्य कारणम, लोभ मूलमनर्थानाम। ऐसी स्थिति मे एक दम से मना कर देने पर यह किसी और से यह षडयन्त्र करा सकता है तथा मेरा भी शत्रु बन जाएगा। मैं इस राज का एक पुराना मन्त्री हू, मैंने केवल इस राज्य की ही सेवा नही की, अपितु भोज का अपने बच्चो से भी बढकर समझा है। भोज तो बहुत होनहार है, तथा एक दिन देश के लिए गौरव के रूप मे सामने आएगा। अत ऐसा प्रयास करना चाहिए कि भोज भी बच जाए और मुञ्ज का मन भी बदल जाए। सोच विमर्श के बाद मन्त्री ने एक योजना तैयार की।

पुन एक दिन मुञ्ज के चर्चा चलाने पर मन्त्री ने कहा—आपकी योजना के अनुसार मैं किसी भी सैनिक को साथ नही ले जाऊगा, क्योकि इससे कभी भी भेद फूट सकता है। मैं अकेले ही जाऊगा।

शिकार के बहाने मैं ऐसा तरीका अपनाऊंगा, कि भोज को भी पता न चलेगा, कि यह प्रहार किस ने किया है। भोज को मुझ पर विश्वास भी बहुत अधिक है, अत मेरे साथ शिकार मे जाने पर भोज को सन्देह भी नही होगा। मुञ्ज को मन्त्री की योजना पसन्द आई, कुछ सझाव देकर स्वाकृति दे दी। एक दिन मन्त्री रथ पर सवार हो कर राजधानी से चल पडा और रथ भी स्वय चलाया। सायकाल गुरुकुल म ही आ कर उतरा, गुरुकुल के हर विभाग का अच्छी प्रकार से निरीक्षण किया। सस्था की सुविधाओ और असुविधाओ की जानकारी ली तथा अपेक्षाओ का पता लगाया। रात को गुरुकुल के कुलपति और प्राध्यापको मे शिक्षा के सम्बन्ध मे विचार विमर्श किया। प्रात नित्य कर्मों स निवृत्त होकर अध्ययन अध्यापन का भी कुछ अवलोकन किया। मध्याह्न म मे आचार्य से निवेदन किया, कि भोज को कुछ दिनो के लिए राजधानी ले जाना है। आचार्य से अनुमती ले कर मन्त्री भोज को लेकर चल पडा। जब गुरुकूल से काफी दूर आ गए तो वन मे विश्राम के लिए एक वृक्ष के नीचे रुके। परस्पर अनेक प्रकार की बाते हुई, मन्त्री भोज की बातो से बहुत ही प्रसन्न हुआ। तब बातो ही बातो में मन्त्री ने भोज को उस के चाचा की इच्छा बताई। भोज यह सुन कर कुछ गम्भीर हो गया और कहा, मैं अभी दो मिनट में इस के सम्बन्ध मे अपनी इच्छा बताता हू। तब थोडी देर बाद मन्त्री को एक पत्र देते हुए भोज बोला—मेरे चाचा को यह सन्देश दे देना और मेरे चाचे के सन्तोष के लिए मेरा यह सिर उपस्थित है। आप इसको काट कर और इस मे से आखें निकाल कर मुञ्ज की इच्छा को पूरा करें।

मन्त्री ने भोज के सन्देश को कई बार पढा और अपने होनहार भावी राजा की योग्यता और सज्जनता से प्रभावित होकर कहा, प्रिय भोज! मैंने तुम्हे सावधान करने के लिए ही यह सब कुछ बताया है, क्योकि स्वार्थी, लोभी मनुष्य का मन बहुत चन्चल होता है, वह कभी भी एकदम कुछ भी कर सकता है। अत उत्तरदायित्व पूर्ण व्यक्तियो को सदा सावधान रहना चाहिए। इस के बाद विभिन्न विषयो पर दोनो की काफी बातचीत हुई।

इतने मे पूर्व योजना के अनुसार गुरुकुल से भेजा हुआ व्यक्ति मुञ्ज के पास पहुचा और बडी उदास और गम्भीर मुद्रा मे सूचना दी, कि आप का पुत्र कई दिन से अनुपस्थित है।

उस की बहुत ही खोज की गई, पर उस का कही पता नही चला। हा घनघोर वन की ओर जाते हुए उस के पैरो के निशान अवश्य ही मिले हैं और कोई चारा न देख विवश होकर आज आप के पास आचार्य ने मुझ भेजा है, वैसे प्रबन्धक अभी भी खोज म लगे हुए है। इस सन्देश को सुनते ही मुञ्ज के मन म अनेक तरह की आशकाए उभरने लगी और उस की पत्नी ने अपने एकाकी पुत्र के अज्ञात होने की बात सुनते ही कोसना और रोना शुरू कर दिया।

सायकाल का कुछ अन्धेरा होने पर मन्त्री ने अपनी योजना के अनुसार एक हीरण शावक का शिकार किया और उसकी आखें निकाल कर तथा भोज को रथ मे छिपा कर रथ को अपने घर की ओर हाक दिया। रात्री के प्रथम पहर म रथ मन्त्री के घर पर पहुचा और भोज को एक सुरक्षित स्थान पर छिपा दिया। एक सुन्दर डिबिया मे उन आखो को सजा कर मन्त्री राजा के पास पहुचा। वहा का दृश्य पहले ही शोक विह्वलता से भरपूर था, राजा ने बडी परेशानी स भर कर मन्त्री की ओर देखा। पुनरपि राजा मन्त्री को साथ लेकर एक विशेष एकान्त कमरे मे आया। राजा मुञ्ज ने प्रथम अपने पुत्र के खो जाने और अपनी पत्नी के विशेष विह्वल होने की बात बडी निराशा से कही। राजा के पूछने पर 'धर्म सोऽहं प्रदक्षो...' के अर्थ का लाभ उठाते हुए मन्त्री ने पुत्र मोह से विह्वल मुञ्ज की भावनाओ को अपने सवेदना भरे शब्दो से पहले खूब उभारा फिर बडी मार्मिकता के साथ सारे दृश्य का वर्णन किया और रक्त रजित वस्त्र के साथ ही आखो को दिखाते हुए मन्त्री ने मुञ्ज से कहा, कि भोज ने बडे स्नेह से आप के सम्बन्ध में एक-एक बात पूछी। वह तो आप के प्रति बहुत ही अधिक आदर दर्शाता था और बडी आत्मीयता से आपकी चर्चा करता था। हा, तडप, तडप कर मरते समय आप के लिए आप के चिरन्जीव ने एक सन्देश दिया था और वह पत्र मन्त्री ने राजा मुञ्ज के हाथ मे दिया।

प्रथम तो पुत्र मोह की बेचैनी, उस पर मार्मिकतापूर्ण दृश्य का वर्णन तथा सब से बढ कर भोज की स्नेहपूर्ण बातो के बीच मे मुञ्ज पत्र के सन्देश को पढने लगा—

> "मान्धाता स महीपति कृतयुगेऽलंकारभूतो गत,
> सेतुर्येन महोदधौ विरचित क्वासौ दशास्यान्तक।
> अन्ये चापि युधिष्ठिर प्रभृतयो याता दिव भूपते।
> नैकेनापि सम गता वसुमती मुञ्ज! त्वया यास्यति॥"

सत्य युग मे प्रजाप्रिय सम्मानित राजा मान्धाता हुआ और त्रेता मे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम हुए, जिन्होंने समुद्र पर भी पुल बान्ध कर महाबली रावण का विनाश किया तथा द्वापर मे युधिष्ठिर आदि राजा बने इस तरह ससार मे एक के बाद एक करके अनेक राजा आए और चले गए पर यह धरती किसी के साथ भी नहीं गई। चाहे कुछ ने यह समझा या ऐसा लूट-खसूट का व्यवहार करके यह दर्शाया हो, कि यह वसुन्धरा और उस की सारी सम्पत्ति उन के साथ अवश्य जाएगी। हा, उन के साथ तो यह नहीं गई, पर प्रिय चाचा अब आप को विश्वास हो गया है, कि आपके साथ अवश्य जाएगी।

इन भावनाओं से राजा मुञ्ज के मस्तिष्क को एकदम धक्का लगा और अपने सामने रक्तरजित वस्त्र मे अपने स्नेही भतीजे की आखें देख कर मुञ्ज बहुत अधिक विह्वल हो उठा और अपने पापो को याद करने लगा। मन्त्री के आगे सिर पीट-पीट कर कहने लगा, किसी तरह मेरा भोज मुझे ला कर दो। मैं उस के बिना अब एक पल भी जीवित नहीं रहूगा?

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

आर्य समाज के बुद्धिजीवी

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मुख पत्र "आर्य मित्र" के संस्करण दिनांक 6 जुलाई 1986 में श्री प्रशान्त जी वेदालंकार का सम्पादक के नाम एक पत्र प्रकाशित हुआ है जिस में वह लिखते हैं कि—

"मैंने यह अनुभव किया है कि बुद्धिजीवी वर्ग आर्य समाज से उदासीन हो रहा है पर उसके हृदय में आर्य समाज के लिए तड़प है। वह आर्य समाज को दिशा निर्देश करने के लिए लालायित है। उसके पास आर्य समाज को और अधिक सक्रिय करने के लिए अनेक सुझाव हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व आर्य समाज ने देश का सांस्कृतिक नेतृत्व किया था वह आज भी ऐसा कर सकता है यदि आर्य समाज से प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा बुद्धिजीवी वर्ग दृढ़ संकल्प लेकर खड़ा हो कर आर्य समाज को गतिशील बना दे तो देश की काया पलट हो सकती है।"

कुछ इसी प्रकार के विचार कुछ दिन पहले एक और आर्य युवक श्री डा. वेद प्रताप वैदिक ने मेरे सामने रखे थे उन्होंने भी यह कहा था कि आर्य समाज में बुद्धिजीवियों का अभाव हो रहा है और उसी का यह परिणाम है कि आर्य समाज आज अपने देशवासियो को कोई प्रेरणादायक और निश्चित दिशा नहीं दे रहा।

श्री प्रशान्त वेदालंकार और श्री वेद प्रताप वैदिक ने जो विचार प्रस्तुत किए हैं। उनसे कुछ अधिक मतभेद नहीं हो सकता। मैं यह नहीं समझता कि आर्य समाज में बुद्धिजीवियों की कमी है। यदि हम उनकी एक सूचि बनाने लगें तो बहुत बड़ी बन सकती है। परन्तु जिनका नाम आज बहुत लोग जानते हैं उनमें श्री स्वामी सत्य प्रकाश जी, श्री पं. सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार, श्री आचार्य प्रियव्रत जी, श्री आचार्य उदयवीर जी, श्री स्वामी विद्यानन्द जी, श्री पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक श्री आचार्य रामप्रसाद जी, श्री भवानीलाल जी भारतीय, श्री क्षितीश वेदालंकार, श्री सत्यकाम विद्यालंकार, श्री वेद प्रताप वैदिक जी, श्री प्रशान्त कुमार वेदालंकार यह वह महानुभाव हैं जिन्होंने आर्य जगत् को उच्चकोटि का साहित्य भी दिया है। इनके अतिरिक्त और भी कई विद्वान् हैं जिन पर आर्य समाज गर्व कर सकता है। इसलिए हम यह तो नहीं कह सकते कि आर्य समाज में बुद्धिजीवियों की कमी है। आर्य समाज के विषय में एक प्रचार कई बार यह भी किया जाता है कि इसमें बुद्धिजीवी अधिक हैं साधारण व्यक्ति कम। यही कारण है कि यह एक जन आन्दोलन का वह रूप धारण नहीं कर सकी जो कई दूसरे मतों की संस्थाओं ने किया है। हम कई बार कहा भी करते हैं कि क्या कारण है कि निरंकारियों, नामधारियों, राधा स्वामियों और इस प्रकार की दूसरी संस्थाओं में जनता अधिक संख्या में जाती है। सनातन धर्मियों की संख्या भी आर्य समाजियों से अधिक है। इसका एक कारण यह भी है कि आर्य समाज में बुद्धिजीवी अधिक हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हमें सिखाया भी यही है कि आंखें बन्द करके किसी के पीछे न चलो। सत्य और असत्य की पहचान करके ही किसी का अनुसरण करो। जब हम इस कसौटी पर अपने विचारकों को रखते हैं उस समय हमें पता चलता है कि आर्य समाज कितनी उच्चकोटि की संस्था है। मैं कई बार कहा कहा भी करता हूं कि जब कोई व्यक्ति बाजार में सस्ती चीज खरीदने जाता है तो उसमें कोई न कोई मिलावट अवश्य होती है। असली घी और नकली घी के मूल्य में बहुत अन्तर होता है। यदि आटा में कुछ मिलावट कर दी जाए तो वह सस्ता मिल जाता है। इसी प्रकार जिन संस्थाओं की विचारधारा में किसी प्रकार की मिलावट होती है उनका प्रचार आसानी से और जल्दी हो जाता है। सनातन धर्म का प्रचार मन्दिर में एक घण्टा बजाने से हो जाता है या गंगा में स्नान करने से। यह बहुत आसान काम है। इसके लिए किसी को कुछ देना नहीं पड़ता। हमारे सनातन धर्मी भाईयों ने अपने धर्म को बहुत आसान बना दिया की गंगा में स्नान कर के उसके सब पाप धुल जाते हैं। मुक्ति और मोक्ष का इतना आसान ढंग और कहीं भी न मिलेगा। कई जगह एक व्यक्ति को गुरु मान कर अपने सब पाप उसके सपुर्द कर दिए जाते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि आर्य समाज एक ऐसी धार्मिक संस्था है जहां प्रत्येक व्यक्ति की कड़ी परीक्षा होती है। इस में प्रत्येक व्यक्ति सम्मलित नहीं हो सकता। जो इसमें आना चाहते हैं उन्हे पहले एक परीक्षा के लिए तैयार होना पड़ता है। यह काम वही कर सकते हैं जो बुद्धिजीवी भी हों और जिन्हे अपने धर्म और उसकी मान्यताओ का पता भी हो और उनमें विश्वास भी हो। आर्य समाज का पिछले एक सौ वर्षों में जो प्रचार हुआ है वह उन बुद्धिजीवियो के कारण हुआ है जो आर्य समाज में प्रवेश करने के पश्चात् अपने आपको प्रत्येक प्रकार की परीक्षा के लिए तैयार कर लिया करते थे। पिछले समय में कहा जाता था कि प्रत्येक आर्य समाजी चलता फिरता आर्य समाज है। आज वह स्थिति नहीं है क्यो? इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए। श्री प्रशान्त वेदालंकार और श्री वेद प्रताप वैदिक ने जो प्रश्न उठाए हैं। उन पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। मेरे इस विषय में क्या विचार हैं यह आगामी अंक मे पाठको के सामने रखूंगा।

—वीरेन्द्र

आर्य समाज की अग्नि परीक्षा

आर्य समाज कोई राजनीतिक पार्टी नहीं। इस लिए वह कभी किसी कुर्सी की भीख नहीं मांगता न कभी किसी चुनाव मे अपने उम्मीदवार खड़े करता है। न किसी मन्त्रिमण्डल मे शामिल होने के लिए कोई कोशिश करता है। इसका यह अभिप्राय नहीं कि देश की राजनीति में उसे कोई दिलचस्पी नहीं। उसका यह विश्वास है कि राष्ट्र की रक्षा के लिए धर्म को रक्षा जरूरी है। और धर्म की रक्षा के लिए राष्ट्र की रक्षा आवश्यक है। इसलिए चाहे धर्म पर संकट आए या राष्ट्र पर, आर्य समाज किसी न किसी रूप मे मैदान में निकल आता है।

जो कुछ आजकल पंजाब में हो रहा है उसका प्रभाव प्रत्येक पंजाबी पर पड़ रहा है। आर्य समाज उससे प्रभावित हुए बिना कैसे रह सकता है। उसके हाथ में कोई ऐसी शक्ति नहीं है जिसके द्वारा वह सरकार को कोई कार्यवाही करने को विवश कर सके। लेकिन अपने बलिदान से जनमत संगठित कर सकता है। इसी उद्देश्य को समक्ष रखते हुए अमृतसर में आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द में आजकल भूखहड़ताल का एक सिलसिला चल रहा है। अमृतसर के एक प्रमुख आर्य समाजी श्री नन्द किशोर ने सात दिन के लिए भूखहड़ताल शुरू कर रखी है। आज उनकी भूखहड़ताल का पांचवां दिन है। उन के साथ और भी कई लोग भूखहड़ताल कर रहे हैं। इस का उद्देश्य केवल यह है कि किसी तरह सरकार के बहरे कानो तक अपनी आवाज पहुंचाई जाए। अभी तक वह किसी की आवाज सुनने को तैयार नहीं हुई। सारा देश चीख रहा है कि पंजाब से हिन्दुओ का पलायन किसी तरह बन्द होना चाहिए। सरकार भी कहती है कि होना चाहिए लेकिन उसे रोकने के लिए वह कुछ नहीं रही। इसी सम्बन्ध में गत मास रोहतक में स्वामी इन्द्रवेश जी ने तीन सप्ताह का अनशन किया था। अब अमृतसर में भी यह क्रम शुरू हो गया है। गत 12-13 जुलाई को दिल्ली में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सारे देश की आर्य समाजों के प्रतिनिधि एकत्रित हुए थे और वहां भी यह निर्णय किया गया था कि अब समय आ गया है कि कुछ करना चाहिए। उसके बाद आर्य समाज का एक शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री से भी मिल चुका है। अभिप्राय यह है कि लोहा गर्म हो रहा है। इसके बावजूद यदि सरकार ने कुछ न किया और आर्य समाज ने कोई कड़ा पग उठा लिया तो उसकी जिम्मेदारी आर्य समाज पर नहीं सरकार पर होगी।

—वीरेन्द्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रधानमन्त्री को दिया गया ज्ञापन

माननीय प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी !

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गठित देश के सभी क्षेत्रो के आर्य समाजी नेताओ का एक सद्भावना मण्डल कुछ समय पूर्व पजाब के दौरे पर गया था, जिसका उद्देश्य —

(1) पजाब की स्थिति का अध्ययन करना और

(2) उन सम्भावनाओ का पता लगाना था जिन के द्वारा उस प्रान्त मे रहने वाले सभी वर्गों मे एक बार फिर भाईचारे की भावना पैदा कर वहा पुन सामान्य परिस्थितिया पैदा की जा सकें ।

अपने दौरे से लौटने पर इस सद्भावना मण्डल ने सार्वदेशिक सभा को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिस पर सभा ने गम्भीरता पूर्वक विस्तार से विचार किया । परिणामस्वरूप पजाब समस्या के बारे मे सभा जिस निणय पर पहुची है, उसे इस ज्ञापन के द्वारा आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है ।

—बरनाला सरकार

जब बरनाला मत्रिमण्डल का गठन हुआ था, तब पजाब के हिन्दुओ ने भी अकाली पार्टी को चुनाव के समय समर्थन किया था और आशा की थी कि पजाब के सभी निवासियो के साथ चाहे वे किसी जाति या धर्म के मानने वाले हो समान व्यवहार किया जाएगा । किन्तु दु ख की बात है कि यह आशा पूरी नहीं हुई ।

श्री बरनाला ने कार्य करने का अपना अलग ही ढग निकाला है, जिस पर ध्यान पूवक विचार करने की आवश्यकता है, तभी उनकी कार्य प्रणाली के पीछे छिपे उनके असली उद्देश्य को समझा जा सकता है ।

इस समय पजाब मे जो सरकारी तन्त्र कार्य कर रहा है, उसमे सिखो की सख्या बहुत अधिक है । जो उग्रवादी पहले गिरफ्तार किए गए थे, उन्हे बरनाला मत्रिमण्डल ने न केवल जेल से मुक्त कर दिया, अपितु उन्हें पुलिस तथा अन्य प्रमुख सरकारी महको मे नियुक्त भी किया ।

बरनाला सरकार प्रकारान्तर से पन्थ की सरकार बन गई है, जो सिख-ग्रन्थियो के आदेशानुसार केवल सिखो के हितो के लिए ही कार्य कर रही है । इससे एक ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी गई है जिस मे पजाब का हिन्दू यह सोचने पर विवश है कि अब वहा उसका कोई स्थान नहीं है और उसे अपने जीवन और सम्मान की रक्षा के लिए अपना घर द्वार छोडकर किसी अन्य सुरक्षित स्थान पर चले आना चाहिए हिन्दुओ का पजाब से पलायन शुरू हो चुका है, लेकिन अब तक बरनाला सरकार ने उसे रोकने के लिए कोई प्रभावी कदम नहीं उठाया और न ही उन्हे पजाब में सम्मान पूर्वक अपना जीवन यापन करने का आश्वासन दिया है ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की दृष्टि मे बरनाला सरकार ने न केवल भारतीय सविधान की मूल भावना की उपेक्षा की है, बल्कि वह हिन्दुओ के सामूहिक नर सहार को रोकने मे भी सर्वथा असफल रही है । हमारे पास यह विश्वास करने के लिए पर्याप्त कारण है कि पजाब सरकार जानबूझ कर इस प्रकार के कार्य कर रही है, जिससे धीरे धीरे वहा खालिस्तान का स्वत निर्माण हो जाए । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आपसे माग करती है कि बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त करके पजाब को खालिस्तान बनने से रोका जाए और वहा हिन्दुओ का नर सहार बन्द किया जाए ।

वास्तव मे यह बडे दु ख की बात है कि देश मे अन्यत्र रहने वाली अन्य अल्पसख्यक जातियो को तो विशेष रूप से सरक्षण दिया जाता है लेकिन पजाब के हिन्दुओ के साथ जो वहा पर अल्पसख्यक हैं, जानवरो से भी बुरा व्यवहार किया जाता है । जहा पर वे कम सख्या मे है, वहा तो वे कष्ट भोग ही रहे है, लेकिन जिन स्थानो मे उनकी सख्या अधिक है, वहा पर भी उनकी दशा अच्छी नही है । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अब तक यह समझ नही सकी है कि ऐसे सिखो को जिनका अपराधी रिकार्ड है, कानून तोडने पर भी गिरफ्तार क्यो नही किया जाता है ? जबकि हिन्दुओ को केवल अपनी सुरक्षा के लिए शिव सेना जैसे सगठन बनाने पर गिरफ्तार करके जेल भेज दिया जाता है । इस प्रकार की असगत परिस्थितियो का तुरन्त अन्त होना चाहिए ।

पंजाब समस्या की गम्भीरता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का यह दृढ विश्वास है कि खालिस्तान एक सगठित शक्ति बन चुका है और कुछ विदेशी ताकतें हमारे देश को विघटित करने के लिए उसका उपयोग कर रही हैं । हमारे जैसी सामाजिक और धार्मिक सस्था की अपेक्षा सरकार के पास तो इस बात के प्रबल प्रमाण होने चाहिए कि खालिस्तान की माग के पीछे किन-किन विदेशी शक्तियो का षड्यन्त्र काम कर रहा है यह मानना सत्य नही है कि कुछ आतकवादियो को समाप्त कर देने मात्र से खालिस्तान का आदोलन असफल हो जाएगा । इसकी जडें विदेशो मे है और तथाकथित अकाली एव अन्य शक्तिया इस आदोलन को समाप्त होते देखना नही चाहती ।

पजाब की समस्या पाकिस्तानियो की सहायता से केवल खालिस्तान बनाने की समस्या तक ही सीमित नही है, किन्तु वहा की जनता और भारत सरकार के सामने एक बहुत गहरा अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र उपस्थित हैं, जिसका एक मात्र उद्देश्य हमारे देश को खण्डित करना और उनमे पृथकता की भावना बढाना व इस प्रकार अलग स्थान की माग करना है । जनता मे ऐसा विचार पैदा करना है कि वे एक पृथक जाति (कौम) है और उन्हे एक अलग राज्य की माग करने का अधिकार है । परिस्थिति वास्तव मे बहुत गम्भीर है । इसलिए सभा केन्द्र से अनुरोध करती है कि इस पर वह सही दृष्टिकोण से विचार करें और तुरन्त समुचित कार्यवाही करें । इस विषय मे सभा निम्न मागें केन्द्र सरकार के सामने प्रस्तुत करती हैं .—

(1) बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त करके सविधान की रक्षा की जाए और पजाब मे हिन्दुओ का नर सहार समाप्त किया जाए । "बादल" ने तो पुस्तक रूप मे भारतीय सविधान को जलाया था, लेकिन बरनाला उसकी मूल भावना को ही समाप्त कर रहे हैं ।

(2) पजाब मे राष्ट्रपति शासन लागू किया जाये ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की दृष्टि मे न तो बरनाला और न बादल और न कोई अन्य पार्टी पजाब विधान सभा मे बहुमत प्राप्त करने मे समर्थ है । वर्तमान परिस्थिति में फिर से चुनाव करना भी खतरे से खाली नही है । सभा का मत है कि राष्ट्रपति शासन कम से कम 5 वर्ष के लिए लागू किया जाये । उसके लिए सविधान में आवश्यक सशोधन किया जा सकता है ।

(3) पंजाब के तीनों सीमावर्ती जिले अमृतसर, गुरदासपुर और फिरोजपुर तुरन्त सेना को सौंप दिए जाए । यह न केवल हमारे पडोसी देश की शत्रुतापूर्ण गतिविधियो को देखते हुए आवश्यक है, बल्कि इसलिए भी आवश्यक है कि भारत विरोधी अन्य विदेशी शक्तिया भी हमारे देश के खिलाफ इसी क्षेत्र के द्वारा कार्य कर रही हैं ।

(4) पजाब और काश्मीर के सीमावर्ती क्षेत्रो मे भूतपूर्व (सेना निवृत) सैनिक परिवारो को बसाया जाना चाहिए, जिससे वहा के हिन्दुओ तथा देश की सीमाओ की सुरक्षा की जा सके ।

(5) पजाब के उन शहरी क्षेत्रो में जहा हिन्दू अधिक सख्या मे हो, शिविर लगाकर अन्य उपद्रव ग्रस्त क्षेत्रो से आने वाले हिन्दुओ को रखा जाए जिससे पजाब के हिन्दू पजाब मे ही रहे और उन्हें अन्य प्रान्तो में न भागना पडे । वहा उनकी सुरक्षा के कडे प्रबन्ध किए जावे ।

यह सारा कार्य केन्द्रीय सरकार अपने हाथ मे लवे और जो हिन्दू पजाब छोडकर अन्य प्रान्तो मे चले गए हैं, उन्हे वही सुविधाए प्रदान की जाए जो बरनाला सरकार पजाब मे आने वाले सिखों को प्रदान कर रही है । तथा भारत के अन्य प्रान्तो की सरकारें भी 1984 के दगो के तथाकथित सिख पीडितो को दे रही हैं ।

चण्डीगढ को केन्द्र शासित प्रदेश ही रहने दिया जाए । सभा की दृष्टि मे निम्नलिखित कारणो से आवश्यक है ।

(क) चण्डीगढ का निर्माण सयुक्त पजाब प्रदेश की राजधानी के रूप में हुआ था । इसकी भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि यह न तो पजाब और न हरियाणा की राजधानी के रूप में उपयुक्त रहेगा ।

(ख) चण्डीगढ के अधिकाश निवासी गैर सिख नागरिक हैं, जो पजाब में नही जाना चाहते हैं । उनके दृष्टिकोण को भी नजरअन्दाज नहीं करना चाहिए

(7) भारत सरकार को दमदमी टकसाल और आल इण्डिया सिख स्टूडैंट फैडरेशन के नेताओ से किसी भी रूप में वार्तालाप आरम्भ करने के विचार का स्पर्श भी नहीं करना चाहिए । इस

(शेष पृष्ठ 5 पर)

बाबू जगजीवन राम क्या थे?

हिन्दू थे, हरिजन थे या दोनों थे ।

यह प्रश्न मुझ से इसलिए किया गया है कि बाबू जी के देहान्त पर मैंने जो लेख लिखा था उसमें यह भी लिखा था कि उनका जन्म हरिजन परिवार में हुआ था। इस पर मुझे कुछ पत्र आए हैं जिनमे कुछ भाईयों ने मुझ पर आरोप लगाया है कि मैं हरिजनो को हिन्दुओ से अलग प्रकट करके दोनो के बीच एक दीवार खड़ी करने का प्रयास कर रहा हू। मुझ से यह प्रश्न भी किया गया है कि मैं हरिजनो को हिन्दू समाज का एक अग समझता हू या उन्हे अलग समझता हू। प्रश्न उचित भी है और आवश्यक भी। आज के हालात में अत्यन्त आवश्यक है। जिन भाइयो ने यह प्रश्न किया हैं मैं उनका आभार व्यक्त करना चाहता हू क्योकि मेरा उत्तर सारी स्थिति को स्पष्ट कर देगा। हिन्दुओ तथा हरिजनो के बीच जो खाई पैदा करने की कोशिश हो रही है उसे मिटाने की ओर एक कदम होगा हमे यह नहीं भूलना चाहिए कि अन्य कई लोग और कई शक्तिया हिन्दुओ मे फूट डालने का प्रयास कर रही हैं। जिन्हें हम हरिजन कहते हैं उन्हे हिन्दुओ से अलग करने और उन्हे खरीदने का एक सगठित प्रयास हो रहा है और इसके लिए अनगिनत धन बाहर से भी आ रहा है। इसलिए आवश्यक है कि हम इस मामले को समझने का प्रयास करें और जो गलत फहमिया पैदा की जा रही हैं उन्हे दूर करने के लिए एक सगठित अभियान शुरू किया जाए। आज का यह लेख उसी की एक कड़ी है।

मेरा सम्बन्ध आर्य समाज से है और आर्य समाज जन्म के आधार पर नही कर्म के आधार पर किसी को ब्राह्मण क्षत्रिय या शूद्र समझता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश म जो कुछ लिखा है वह मैं नीचे प्रस्तुत करता हू —

"जो शूद्र कुल मे उत्पन्न होकर ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य के समान गुण कर्म और स्वभाव वाला हो तो वह शूद्र भी ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य हो जाए। वैसे ही उसी तरह जो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य कुल मे उत्पन्न हुआ हो उसके गुण कर्म और स्वभाव यदि शूद्र के सदृश्य हो तो वह शूद्र हो जाए। वैसे क्षत्रिय या वैश्य के कुल मे उत्पन्न होकर ब्राह्मण और शूद्र भी हो जाता है अर्थात् चारो वर्णों मे जिस-जिस वर्ण के सदृश्य जो-जो पुरुष व स्त्री हो वह उसी वर्ण मे गिना जावे।"

और फिर वह लिखते हैं "धर्माचरण से निकृष्ट वर्ण अपने से उत्तम वर्ण को प्राप्त होता है और वह उसी वर्ण मे गिना जावे जिसके वह योग्य हो।"

स्पष्ट है कि जो कुछ महर्षि दयानन्द ने लिखा है वह वेदो के आधार पर है। और उसके अनुसार कोई व्यक्ति किसी विशेष कुल मे उत्पन्न होकर उसी के अनुसार नही बन जाता। वह आगे क्या बनता है यह बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि उसकी अपनी कार्यविधि क्या है। एक तुच्छ से तुच्छ कुल में पैदा हुआ व्यक्ति अपने व्यवहार से उच्च से उच्च पद पर पहुच सकता है। शूद्र शब्द ने कई प्रकार की गलत फहमिया पैदा की हैं। महर्षि दयानन्द ने इसकी भी व्याख्या की है। उनका कहना है कि शूद्र का अर्थ है एक ऐसा व्यक्ति जो अनाड़ी हो, अशिक्षित हो, या किसी ऐसे रोग से ग्रस्त हो जो छूत के कारण दूसरों को भी लग सके। इसीलिए किसी समय जिन्हे हम आज शूद्र कहते हैं उन्हें अछूत भी कहा जाता था।

हमारा इतिहास और हमारी परम्पराए इस विचार की पुष्टि करती हैं। प्राचीन समय में जन्म के आधार पर नही कर्म के आधार पर फैसला किया जाता था कि कौन क्या है। हम महर्षि बाल्मीकि और भक्त शिरोमणि गुरु रविदास की पूजा करते हैं तो इसलिए कि वे अपने तप-त्याग और विचारधारा से हमारे समाज के बड़े से बड़े ब्राह्मण से भी ऊचा उठ गए थे। यद्यपि उनका जन्म छोटे परिवारों मे हुआ था। मुझे खेद होता है उस समय जब मैं बाल्मीकियो और रविदासियों को अपने आपको हरिजन कहते सुनता हू। यह हीन भावना न केवल उनके लिए हानि कर सिद्ध हो रही है बल्कि सारे हिन्दू समाज के विनाश का कारण बन रहा है। महाभारत मे महर्षि विदुर का नाम भी आता है। वह एक बहुत बड़े राजनीतिज्ञ थे। जिस तरह चाणक्य नीति प्रसिद्ध है उसी तरह विदुर नीति भी मशहूर है लेकिन महात्मा विदुर का जन्म भी एक छोटे परिवार मे हुआ था। महाभारत मे उन्हे एक विशेष स्थान दिया गया है। यह तीन उदाहरण मैंने उनके दिए हैं जो छोटे परिवार में पैदा होकर बहुत ऊचा उठ गए। एक ऐसा उदाहरण भी देना चाहता हू जब एक व्यक्ति उच्च कुल मे पैदा होकर नीचे गिर गया और ऐसा गिरा कि हजारो वर्ष गुजर जाने पर भी हम उसे क्षमा करने को तैयार नही हुए। रावण का जन्म एक ब्राह्मण परिवार मे हुआ था। वह वेदो का बहुत बड़ा पडित था लेकिन उसने एक गलती कर दी जो माता सीता का अपहरण कर लिया। उसके लिए हमने उसे आज तक क्षमा नही किया।

जो कुछ मैंने लिखा है उससे यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि किसी विशेष कुल मे उत्पन्न होकर न कोई ब्राह्मण बनता है न क्षत्रिय न वैश्य न शूद्र। जैसे उसके कर्म होते हैं वैसा ही बन जाता है। इस दृष्टिकोण से मैं बाबू जगजीवन राम को किसी ब्राह्मण से कम नही समझता। जिसका अर्थ है कि मैं उन्हे हिन्दू समाज का एक महापुरुष समझता हू। हरिजन शब्द का एक ऐतिहासिक महत्व हो गया है। गांधी जी ने उन भाइयो को जो सदियो से पद दलित थे उनका नाम हरिजन रख दिया। साथ ही यह भी स्पष्ट कर दिया था कि वह इन्ह हिन्दुओ से अलग नही समझते। इसके लिए उन्होंने व्रत भी रखा था और यह व्रत उन्होने उस समय तोड़ा जब ब्रिटिश सरकार ने यह मान लिया कि हरिजन हिन्दुओ से अलग नही हैं। मैं भी हरिजनो को हिन्दू समाज का उसी तरह एक अग समझता हू जिस तरह हम किसी को शर्मा या वर्मा कह द। वे दोनो हैं तो हिन्दू ही। इसी तरह यदि हम यह समझ ले कि हरिजन भी हिन्दू समाज का वैसे ही एक अग है जैसे मल्होत्रे, कपूर और खन्ने, पुरी या अन्य हरिजन भी हिन्दुओ की एक जाति है। यदि हिन्दू समाज ने जीवित रहना तो उसे यह समझना पड़ेगा कि हरिजन हिन्दुओ से अलग नही है। जन्म के आधार पर कोई व्यक्ति न ऊचा उठ सकता है न नीचे गिर सकता है। जैसा कर्म करेगा वैसा ही भरेगा। इस दृष्टिकोण से बाबू जगजीवन राम हिन्दू ही थे। यद्यपि उनका जन्म एक हरिजन परिवार मे हुआ था। यदि कोई और भाई इस विषय पर अपने विचार हमे भेजना चाहे तो हम उन्हे सहर्ष प्रकाशित करेंगे।

—वीरेन्द्र

(4 पृष्ठ का शेष)

प्रस्ताव को उन लोगो ने हवा मे उछाला है, जो देशद्रोहियो के साथ छिपे रूप मे मिले हुए है और जो राष्ट्रीय ध्वज का अपमान करते हैं, जिन्होंने भारतीय सविधान की प्रतिया को जलाया है और जो खुले तौर पर विद्रोह का झण्डा उठाए खड़े हैं। दमदमी टकसाल के नेताओ ने सार्वजनिक रूप से यह घोषणा की है कि वे पृथक प्रधान, पृथक सविधान और पृथक ध्वज चाहते हैं। उन्हे जब तक यह प्राप्त नही होगा, वे चैन से नहीं बैठेंगे।

(8) शहाबुद्दीन जैसे लोगो पर कड़ी नजर रखना जरूरी है, जो अपने वक्तव्यो द्वारा यह धमकी दे रहे हैं कि उनके अपने सम्प्रदाय के लोग जिनकी सख्या इस देश मे 10 करोड़ है और जो आबादी का साढे 12 प्रतिशत है। एक प्रतिशत सिख अल्पसख्य समुदाय की तुलना मे देश के समक्ष अधिक भयकर स्थिति उत्पन्न करने की क्षमता रखते हैं। ऐसे वक्तव्य देश को और अधिक सकट की स्थिति मे डाल सकते हैं।

इस सभा ने सरकार के ऐसे सभी प्रयासो मे अपना सहयोग दिया है, जिन से देश की अखण्डता सुरक्षित रहती हो और अभी भी अपना सहयोग देते रहने को यह सभा तत्पर है। परन्तु जब देश की सुरक्षा को खतरा हो और हिन्दुओ की जो इस देश मे बहुमत मे है, उनकी प्रतिदिन हत्या की जा रही हो, यह सभा मूक दर्शक नही रह सकती। अतएव हमारा आपसे निवेदन है कि आप तुरन्त ही प्रभावी कार्यवाही कर।

गत 12-13 जुलाई को देश के प्रमुख आर्य नेताओ एव कार्यकर्ताओ का एक विशेष सम्मेलन दिल्ली मे सम्पन्न हुआ, जिसमे पजाब की स्थिति पर विस्तार से विचार किया गया। इस सम्मेलन ने एक आठ सदस्यीय समिति का गठन किया है, जिसका उद्देश्य स्थिति की समीक्षा करके भावी कार्यक्रम का निर्माण करना है। इस सम्मेलन ने यह भी निर्णय किया है कि सम्पूर्ण भारत मे आगामी 15 अगस्त 1986 को पजाब बचाओ देश बचाओ-दिवस मनाया जाये।

हमे आशा है कि सरकार हिन्दू समाज मे फैल रहे, जन आक्रोश को शान्त करने के लिए प्रभावी कदम उठावेगी।

भवदीय

आनन्दबोध सरस्वती

प्रधान

हिन्दी में मंत्र काव्य का प्रवर्तक कवि सुरेश

लेखक—डा. हुकमचन्द राजपाल अध्यक्ष हिन्दी विभाग
पजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला

हिन्दी काव्य मे गीत के बाद नवगीत और नवगीत के बाद मन्त्र गीत तथा इसी तरह नई कविता के बाद मन्त्र कविता का जन्म हुआ है। कथ्य की मन्त्र शैली के साथ शिल्प की अणुबन्ध शैली का आविर्भाव भी ऐतिहासिक है। हिन्दी कवियो मे सुरेश का नाम अणुबन्ध शैली की इस मन्त्र कविता के प्रवर्तक के रूप मे लिया जा रहा है। अकुर प्रवाल तथा मुकुल शैलानी नामक तीन काव्य सग्रहो के अतिरिक्त कवि की अनेक कविताए पत्र पत्रिकाओ व अन्तर्राष्ट्रीय राष्ट्रीय मचो आकाशवाणी दूरदर्शन द्वारा प्रकाशित प्रसारित हैं। अकुर के माध्यम से अकुरित 'सरगम' शीर्षक कविता हिन्दी का पहला मन्त्र गीत है।

फसल है यही मन की यही
सच की बलियाती सरगम के
दाने जिसमे नए निरोए हैं

यह सुखद सयोग है कि उत्तर प्रदेश मे अमृतलाल नागर जिन दिनो मानस का हस उलीक रहे थे उन दिनो पजाब मे कवि सुरेश ने 'मानस की हेमह सिनी' की लहर लिपि मे, 'मनु पुत्रा के भव अनुभव की कर्कश करुण कहानी' रचनी शुरू की। धरती की कोख से जन्मे मानव जीवन की विषमता के यथार्थ से ताल्स्ताय के 'हऊ मच लैंड डज ए मैन नीड' की तरह आहत होकर यह इतिहास दर्शन-विज्ञान-कला के गम्भीर अध्ययन मे प्रवृत्त हुआ है। इस प्रवृत्ति ने कवि को शीशमहल के वैभव का विलास भोगी नही बनने दिया बल्कि कलम कुदाली लेकर जीवन की प्यारी और खुली धरती मे ला पहुचाया है। इस तरह मार्क्स दर्शन के समानान्तर भारतीय समाजवाद और प्रगतिशीलता के प्रतिनिधि मन्त्र की फसल को हिन्दी कविता मे उगाने का एतिहासिक काम कवि सुरेश ने 1960 म शुरू किया। अकुर से अकुरित यह काव्य प्रवाल मे पल्लवित और मुकुल शैलानी मे मुकुलित हो चुका है।

भारतीयता-राष्ट्रीयता, प्रकृति प्रेम सास्कृतिक गौरव को जन सामान्य के लिए उपलब्ध कराने का श्रेय कवि सुरेश को है। कवि के दूसरे कविता सकलन प्रवाल को स्वतन्त्रयोत्तर हिन्दी कविता का मील पाहन बता कर डा ब्रजलाल गोस्वामी ने कवि सुरेश के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का परिचय देते हुए लिखा है कि प्रवाल के कवि की चेतना शैलजा कुमारी तो है ही वह सस्कृति के स्तन्यपान से तरुण हुई है। प्रवाल का कवि एक प्रबुद्धचेता कवि है जो भारतीय सस्कृति के प्रेम मे आकण्ठ मग्न है।

यथार्थ की जमीन पर समष्टि भूति के रहस्य को निवेदित कवि सुरेश की रचना धर्मिता परम्परा और युग बोध की सधि मे खिली है। इसीलिए भारतीय नवजागरण मे आस्था का यह कवि ऋषियो मुनियो तपस्वियो की पावन धरती को शत शत प्रणाम करता है।

हेम कुण्ड से गर्भित
हर पाटलिपुत्र-अमृतसर-
आनन्दपुर-मुक्तसर
गगा का घर है,
सगम की प्रकृति
प्रयाग का वर है,
मेरे वैदिक आदर्शों का सस्करण
वह।
मध्यकालीन हो कहा
आधुनिकता का भी वह स्वर
है। (मुकुल शैलानी पृ 106)

सस्कृति, भारतीयता, पौराणिकता और आधुनिकता की गहरी समझ के कारण कवि सुरेश की कविता गुरु गम्भीर हो गई है। वह धर्म को भी नए रूप मे प्रतिपादित करता है। प्रवाल की बहुचर्चित भूमिका सौंदर्य और आस्थावादी धरातल पर इतिहास मूलक यर्थाथ मे केन्द्रित है। पौराणिक मिथको के इतिहास गत यर्थाथ एव प्रतीक पक्ष को वह स्पष्ट करता है। आज के यूरोप मे "ग्लोबल विलेज" की चर्चा है। कवि सुरेश द्वारा ऊर्ध्वगा वृत्ति के प्रतिनिधि जिस समष्टि मानव अथवा अन्तर्यामी देव रूप की व्याख्या की गई है वह ग्लोबल विलेज का पूर्व रूप है। वसुधा को एक परिवार मे विकसित करने की वैदिक व औपनिषदिक सकल्पना की वैज्ञानिक व्याख्या करके उसकी पौराणिकता को कवि सुरेश ने प्रवाल की भूमिका में स्पष्ट किया है। पौराणिकता पर जमी मिथकी काई को हटा कर मन्त्र गीत से गर्भित करने का बीड़ा कवि ने उठाया है।

कवि सुरेश के तीसरे काव्य सग्रह मुकुल शैलानी की सभी कविताए कश्मीर से सिक्किम तक फैले हिमालय को गर्भित हैं। मुकुल शैलानी का पूरा ढाचा मन्त्रात्मक होने के कारण मन्त्र द्रष्टा के रूप मे कवि सुरेश की रचना धर्मिता का महत्वपूर्ण अध्याय बन गया है। इतिहास दर्शन-विज्ञान-कला के कोण से हिमालय का गम्भीर अध्ययन मुकुल शैलानी के सकल्प मे है। गतानुगतिकता व दम्भके दशो से मुक्त होकर आगे बढने के लिए, समज से समाज मे परिणति के ऋत को पहचानने व जीवन मे ढालने के लिये मन्त्र का आमत्रण रचते हुए कवि ने अपनी ऋतवादी प्रगतिशील समसामयिक पीढी की पहचान इन शब्दो मे थापी है।

अन्तरिक्ष मे चकराती धरा पर
स्वर्ग की सिद्धि के भूमि पुत्र
पुरखो के तप व दीक्षा के
प्रचार प्रसार।
हम हैं अर्वाचीन
अतीत की शोध
अनागत के बोध
हमी आधुनिक
परम्परा के मथन निखार उसार
(मुकुल शैलानी पृ. 20)

डा मनमोहन सहगल आदि द्वारा सम्पादित सन्मार्ग (पजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला के पजाब कविता विशेषाक 1978 मे वक्तव्य सहित छपी अपनी अणुबन्ध मन्त्र कविता (टेप अ तिथि परिवर्तन की) को कवि सुरेश ने "अन्तरिक्ष यात्रा के युग मे अस्तित्व और साम्य दर्शन से एक पग आगे बढ कर तीसरी दुनिया की ओर से मानव दर्शन की नई तलाश" कहा है। इसी लिए कवि सुरेश की प्रगतिधर्मिता आरोपित न होकर गर्भित है, ऋषि धर्म का अरूण चिन्ह ,है भाषा मे वेद का ऋत है

कवि सुरेश की मन्त्र कविता का एक पहलू प्रकृति का विशद और गम्भीर विश्लेषण है। अकुर और प्रवाल के बाद मुकुल शैलानी मे उस विश्लेषण का एक शैल शिखर ही उभर आया है। प्रकृति के आकृति मूलक आकर्षण मे पैठकर कवि ने व्यष्टि के स्तर पर उसमे निज और आत्म तथा समष्टि के स्तर पर समज और समाज की प्रकृति को खोज कर जो आलाप लिया है वह काव्य जगत मे अभूत पूर्व है। कालीदास ने ऋतु सहार द्वारा जबकि अब्दुर्रहमान ने सदेश रासक और जायसी ने पद्मावत मे षड् ऋतु वर्णन सयोग और वियोग शृगार के लिए किया है। मैथिलीशरण गुप्त ने भी साकेत में ऋतु वर्णन अवतः वियोग शृगार के लिए ही किया है। स्वतन्त्र भारत के कवि सुरेश ने हिन्दी में मन्त्र गीतों में पहली बार षड् ऋतु वर्णन का सफल प्रयोग किया है।

सामाजिक सदर्भ मे कवि सुरेश की कविता हमें मशीन युग की कारखाना केन्द्रित मजदूर और दफ्तर केन्द्रित बाबू जिन्दगी की एक झलक देती है। सन्ध्या समय मिल का बजता भोपू छुट्टी का ही नही, पूजी का भी भोपू है। पैरो तले पड़े श्रम की पीड़ा कवि की धड़कनो में है। दिन ढले आकाश की मिल से बाहिर आ रही सन्ध्या एक मजूरिन है। घोसलो को लौट रहे पक्षियो का कोलाहल मिल से बाहिर आ रहे मजदूरो का ही नही, दफ्तर से निकले बाबू लोगो की हलचल का भी स्वर है। यह स्वर अपनी ही मेहनत के फल से वचित प्राणियो का है। जन साधारण के शोषण को जनतन्त्र इसलिए समाप्त नही कर पा रहा क्योंकि वह पूजी के कारा गृह मे बन्दी है —

जन मानस डूब रहा है
सत्ता के कुत्सित युग मे
जनतन्त्र अभी भी बन्दी
पूजी के कारा गृह में!
(साध्य सदोह, पृ. 30)

शुक्र के रूप मे आकाश मे उदित सध्या तारा वस्तुत सध्या द्वारा जलाया गया दीपक ही नहीं बल्कि शोषण से मुक्त समाज की एक स्वस्थ जनतन्त्रात्मक भावी व्यवस्था का भारतीय सपना है।

घर दिया जला नभ मे जो
सध्या ने दीपक अपना
झलमल वह शुक्र नहीं क्या
सामाजिकता का सपना?

सध्या तारा का यह रूप निराला की सध्या सुन्दरी परी और पन्त की एक तारा को पीछे छोड़ आया है। प्रवाल मे सध्य सदोह एक ऐसी कविता है जिस मे छाया प्रगति और प्रयोग के तीनो रग निखर कर ढले हैं और मन्त्र की दिशा के साथ इतिहास गत यथार्थ साकार हुआ है। कवि सुरेश की बिम्ब रचना वैदिक बौद्ध और पौराणिक दर्शन के साथ-साथ इतिहास और विज्ञान की गहरी पकड़ व पहचान की देन है। इसीलिए उसकी कविता व्योम कुओं की परी न होकर यथार्थ की जमीन का दस्तावेज हो गई है।

(क्रमशः)

आर्य समाज के प्रेस व मंच का स्वरूप एवं वैदिक सिद्धान्त रक्षार्थ साहित्य व भाषणों का स्वरूप क्या हो ?

लेखक—डा.श्रीराम पथिक भिक्षु सत्यार्थ शास्त्री
कुटमलपुर (सहारनपुर) उ प्र

चाहता हुआ भी उपरोक्त विषय पर न कुछ लिख पाया मूल कारण अपनी ही अयोग्यता आदि का, परन्तु जब कई आर्य विद्वान् न जाने किस कारण से अथवा जाने अनजाने वैदिक सिद्धान्तो एव महर्षि की मान्यताओ के विपरीत बोलत व लिखते हैं तब साधारण जनता क्या सोचेगी।

महर्षि चरित्र पर फिल्म बनने पर विपक्ष व पक्ष मे आर्य विद्वानो ने ही अपने खुले विचार दिये जनता को, और दोनो ही पक्ष तर्क युक्ति का सहारा लेते है। तर्क ही सहारा है एव बल है।

पहले सभी आर्य पत्रो मे सरल व सिद्धान्त पुष्टी के ही लेख होते थ जो अब नाममात्र के हैं, यदि आते हैं तो लम्बे तथा जटिल (कठिन) भाषा मे शास्त्रार्थों का विषय ही सिद्धान्त रक्षा था।

अब शास्त्रार्थ होते नही न ही अब पहले से निर्भीक सन्यासी वानप्रस्था व गृहस्थी उपदेशक रहे, पहले कभी आर्य समाज मे आने वाले युवक युवतिया भी अपने दैनिक वार्तालाप मे आय सिद्धान्तो का प्रचार करते थे, अब आय समाज मे युवा पीढी का अभाव सभी महसूस करते हैं परन्तु उचित हल जानते हुए भी अपनाते नही क्योकि बडो की कुर्सी छिनती है। कई मन्त्री प्रधानो का तो आर्य साहित्य का स्वाध्याय नाम मात्र भी नही, प्रचारक दबने लगा है।

कई आर्य साहित्यकार स्वार्थ या मित्रता आदि कारणो से अपनी पत्रिकाओ मे सिद्धान्तहीन लेख छापते हैं जैसे आर्य गजट उर्दू का शताब्दी अक 11 मई 1986 के पृष्ठ 12 पर प्रसिद्ध लेखक जमनादास अख्तर लिखते हैं.—

"4 हजार वर्ष पूर्व इराक के मन्दिरो मे वैदिक देवताओ की पूजा होती थी, राम की मूर्ति की पूजा होती थी, इसी तरह मिश्र मे।"

"एक दस्तावेज से मालूम होता है कि दशरथ को उसके एक बेटे ने या भतीजे ने कत्ल किया था।" आत्म स्वरूप पाठको अब आप ही विचारें जब ऐसे लेख साधारण व्यक्ति पढे आर्य पत्रिका मे, भले लेखक ने अपने को पहले ही मैं सनातन धर्मी हू लिखा परन्तु प्रश्न है इस लेख के छपने पर आय सिद्धान्त की पुष्टि हुई अथवा मूर्ति पूजा का प्रचार हुआ। साथ ही इतिहास को स्वय कुरूप करना, सरिता आदि पत्रिकाओ को तो दोष देते हैं पहले घर देखे अपना कई उपदेशको की प्रवृत्ति है तीव्र तीखा खण्डन या कोरा तर्क करने की अन्य मतो के श्रद्धालु (भक्त स्वभाव के) जब शुरू मे इन्हे सुनते हैं तो तत्काल उठ जाते हैं कुछ सकोच सभ्यता वश बैठे रहते हैं, तो पुन आर्य समाज मे न आने की सोचते हैं।

यह प्राय: कहा जाता नही वास्तविकता है कि हम में पहली सी श्रद्धा, निष्ठा, लग्न, नहीं रही जो 25 या पचास वर्ष पूर्व थी।

पहले आर्य समाज के उत्सव तथा आर्य विद्वानो की कथाए खुले रूप मे होती थी अब आर्य समाज मे ही होती हैं फिर वृद्ध नर नारी ही पहुचत है, अपनी सन्तानो को सग नही ले आते। जैसे कि मन्दिरो मे जाते हुए सास बेटी बहू को, पिता पुत्र पौत्रों को ले जाता है। साथ ही विडम्बना है अब कभी पुत्र आदि जिज्ञासा वश या शका रूप से मूर्ति पूजा या अन्य पर्व त्योहारो आदि विषयों पर पूछता है तो उत्तर मिलता है कि ऐसे प्रश्न मत पूछो बडा से आओ। कई आर्य समाजो के अधिकारी भी मन्दिरो मे जाते हैं। मत्था टेकते हैं। रामायण के पाठ रखवाते हैं। मैंने स्वय देखा बटोली में मन्त्री जी ने पुत्र की शादी पर घर तुलसी कृत रामायण का भोग डाला तथा बरात से पूर्व बेटे को मन्दिर पर मत्था टिकवाने ले गया।

आज की विवेकशील युवा पीढ़ी सुनना पढ़ना चाहती है अपनी देवी देवताओं की वर्तमान मूर्तियों की सम रेखा पर कि वहार के पूर्व, शिर,क्यो हैं। [illegible] की [illegible] की क्या ? अत: अब जरूरत है [illegible] तथा पाठकों की हित में उपरोक्त विषयों पर [illegible] [illegible] के विचार लिखे जायें।

आलोचना न नहीं सिद्धान्त रक्षार्थ अब आर्य विद्वानो, पुरोहितो को सोम आदि के व्रत सत्यनारायण आदि की कथाये नही करनी चाहिए आजकल हमारे कई पुरोहित प्राय करते हैं। यह कटु सत्य है कि जितना सम्मान समाज हिन्दू पण्डितो, साधुओं का करता है आर्य जन नही करत अत जब तक हमारे साहित्य तथा कथा व भाषणो मे वैदिक सिद्धान्ता की पूर्णतया पुष्टि नही होती वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार कैसे होगा ? केवल वैदिक धर्म क जय घोष आदि नारो से कब तक सन्तुष्टी होगी।

आर्य समाज ऋषि कुंज पक्का बाग जालन्धर का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज ऋषि कुंज पक्का बाग जालन्धर नगर का वार्षिक चुनाव वर्ष 1986-87 हेतु दिनाक 13-7 86 को विधिवत आर्य समाज मन्दिर (ऋषि कुंज) पक्का बाग म सम्पन्न हुआ जिस मे सर्व सम्मति से निम्नलिखित अधिकारी, अन्तरग सदस्य व आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए विधि अनुसार तीन वर्ष के लिए सभा प्रतिनिधि निर्वाचित हुए —

प्रधान—श्री चौ ऋषिपाल सिंह एडवोकेट,
वरिष्ट उप प्रधान—श्रीमती कृष्णा सेठ,
उप प्रधान—श्री सोहनलाल डावर।
महामन्त्री—श्री लालचन्द मेहरा एडवोकेट
सहायक मन्त्री—श्रीमती कमला आर्या (पक्का बाग)
उप मन्त्री—श्री विनय कुमार
प्रचार मन्त्री—श्रीमती सुशीला भगत।
कोषाध्यक्ष—श्री विजय पराशर
पुस्तकाध्यक्ष—श्रीमती प्रेमलता महाजन।
सहायक पुस्तकाध्यक्ष—श्रीमती प्रकाशवती।
अधिष्ठाता, आर्य वीर दल—श्री रूप सैनी।
लेखा निरीक्षक—श्री गोकल चन्द भगत।

अन्तरग सदस्य —

श्री वीरेन्द्र जी (वीर प्रताप)
श्रीमती कमला शर्मा
श्री [illegible] ठकेदार
श्री [illegible] नाथ ठकेदार
श्री मास्टर मैया दास
श्री सुरेन्द्र कुमार
श्री रणवीर कुमार मेन्ता
श्रीमती उमा महाजन
चौ राम लुभाया जी

प्रतिनिधि—आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब

श्री वीरेन्द्र जी (वीर प्रताप)
चौ ऋषिपाल सिंह एडवोकेट
श्री लालचन्द जी मेहरा एडवोकेट
श्रीमती कमला आर्या (पक्का बाग)
श्रीमती मनीषा भगत

ऋषिपाल सिंह एडवोकेट
प्रधान

आर्य समाज अबोहर का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज अबोहर का वार्षिक चुनाव 29-6-86 को हुआ। जिसमे श्री परमानन्द जी को प्रधान चुना गया। और साधारण सभा ने उन्हे अन्य पदाधिकारी अन्तरग सभासद सस्थाओ के प्रबन्धक अथवा प्रबन्धक कमेटिया व प्रतिनिधि सभा के सदस्य नियुक्त करने का अधिकार दिया। उन्होंने आर्य समाज अबोहर के निम्न पदाधिकारी मनोनीत किए।

प्रधान—श्री परमानन्द जी, उप-प्रधान—श्री कुन्दन लाल जी, श्री केदारनाथ जी, श्री बूटा राम जी, मन्त्री श्री रामशरण दास जी, उप-मन्त्री-श्री विपन कुमार जी, प्रचार मन्त्री—श्री कृष्ण चन्द्र जी, श्री मदन लाल जी, श्री [illegible] गोबिन्द जी, सम्पत्ति अध्यक्ष—श्री [illegible] चन्द जी, कोषाध्यक्ष—श्री मुरारी लाल जी, विद्याचन्द्र जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश जी, लेखा निरीक्षक—श्री मुकन्द लाल जी, प्रबन्धक—डी एल वैदिक हाई स्कूल—श्री दीनानाथ जी, प्रबन्धक आर्य पुत्री पाठशाला—श्री लालचन्द जी, सहायक मैनेजर—श्री सोहन लाल जी, प्रबन्धक उत्तम चन्द स्कूल—श्री देवराज जी, प्रबन्धक—डी आर जयदेवी स्कूल—श्री वीरेन्द्र असीजा।

अन्तरग सभासद्

डा श्रीराम जी।
श्रीमती ऋतु बोगरा।
श्रीमती लक्ष्मी देवी।
श्रीमती प्रकाशवती।
श्री प्रेम सेतिया।

—रामशरण दास

धर्म शिक्षा पुनश्चर्या शिविर नागबनी (जम्मू) में सम्पन्न

आय विद्या सभा डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्ती समिति, नई दिल्ली की ओर से महाराजा हरिसिंह एग्रीकल्चर कालिजिएट स्कूल नागवनी (जम्मू) मे 4 ५ व 6 जुलाई 1986 को धम शिक्षा पुनश्चर्या शिविर का आयोजन किया गया जिसमे दिल्ली हरियाणा हिमाचल प्रदेस एव पजाब प्रान्तो के डी ए वी स्कलो के धम शिक्षको ने भाग लिया। 4 जुलाई को प्रात यज्ञोपरान्त शिविर का उदघाटन करते हुए डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रधान प्रो वेद व्यास जी ने धम के वास्तविक पर प्रकाश डाला। आपने कहा कि धम किसी सम्प्रदाय या मत विशष को नही कहते। सम्प्रदायो की मलीणता क कारण ही समाज मे अशान्ति पदा हती है। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित धम की व्याख्या करते हुए आपने कहा कि धम का स्वरूप न्यायाचरण है और न्यायाचरण उसको कहते है जो पक्षपात को छोड के सब प्रकार से सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करता है। धम शिक्षा शिविरो की उपयोगिता के बारे मे अपने विचार प्रकट करते हुए प्रो वेद व्यास जी ने कहा कि अपने जन्मकाल से ही डी ए वी सस्थाओ मे धम शिक्षा पाठ्यक्रम का एक प्रमुख अग रहा है

सगठन सचिव श्री दरबारी लाल जी ने अपने ओजस्वी भाषण मे कहा कि यदि डी ए वी सस्थाओ से आय समाज के सिद्धान्तो के प्रचार मे योगदान नही मिलता तो इन सस्थाओ की कोई उपयोगिता नही है। शिक्षण सस्थाए खोलना सरकार का दायित्व है। हमने तो इन सस्थाओ को इसलिए खोला है कि ताकि इनके माध्यम से वदिक धम का प्रचार हो सके

आय प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रामनाथ जी सहगल ने कहा कि सभा की ओर से सभी डी ए वी पब्लिक स्कलो मे आय समाज स्थापित की जा रही हैं। उन आय समाजो मे प्रचार व्यवस्था के लिए सभा की ओर से एक ठोस योजना तयार की जा रही है। श्री सहगल जी ने धम शिक्षा प्रशिक्षण शिविरो के लिए प्रसन्नता व हष प्रकट करते हुए इनके प्रति सभा के पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर आय विद्या सभा नई दिल्ली के मन्त्री प्रि तिलकराज गुप्ता ने स्कूलो मे धम शिक्षा का विस्तार करने के लिए एक आकषक व रोचक योजना प्रस्तुत की। उन्होने आशा प्रकट की कि आगामी वर्षों मे धम शिक्षा परीक्षा मे अधिक सख्या मे छात्र भाग ले सकगे प्रिसिपल आर एन मेहता ने अपने स्वागत भाषण म डी ए वी सस्थाओ का सक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत करते हुए सभा का स्वागत किया।

तीन दिन प्रात व मध्याह्नोत्तर बठको मे वदिक सिद्धान्तो आय समाज के इतिहास व डी ए वी आन्दोलन का राष्ट्रीय देन विषयो पर विद्वानो के भाषण होते रहे। स्कूलो मे धम शिक्षा को रोचक बनाने के उपायों पर उपस्थित अध्यापको ने अपने-अपने विचार प्रकट किए।

डी ए वी नैतिक शिक्षा परामर्शदाता प्रो रत्नसिंह ने समापन भाषण मे आय समाज द्वारा किए गए सामाजिक व धार्मिक सुधारो पर सक्षिप्त प्रकाश डालते हुए कहा कि केवल आर्य समाज ही एक मात्र ऐसा सगठन है जो अपने आरम्भिक काल से राष्ट्रीयता का पक्षधर रहा है। देश की अखण्डता व सुरक्षा के लिए आर्य समाज को सशक्त करना आवश्यक है। शिविर मे उपस्थित अध्यापको को सम्बोधित करते हुए प्रो रत्नसिंह ने कहा कि सभी अध्यापक अपने विद्यार्थियो मे वैदिक धम की शिक्षा देने के लिए विशेष प्रयत्न कर।

आय विद्या सभा शिक्षा परामर्शदाता श्री जुगल किशोर भारद्वाज व प्रिंसिपल शर्मा द्वारा शिविर के आयोजन को सफल बनाने में जो भरसक प्रयत्न किया, उसकी सराहना की गई।

—रामनाथ सहगल
सभा-मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आय मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आय प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 पंजि. नं. पी.जे.एल 55

वर्ष 18 अंक 18 19 श्रावण सम्वत् 2043 तदनुसार 3 अगस्त 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

प्रभु मिलन की राह

लेखक—श्री पं. शान्तिप्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी

यजु कर्म काड का वेद है। उसके अन्तिम अध्याय का नाम वेदान्त है, जो कि नवीन वेदात के कल्पित अद्वैतवाद से भिन्न है। शास्त्रो मे कई प्रकार की नास्तिकता बताई गई है। ईश्वर अथवा उसके यथार्थ गुणो से इनकार करना तो नास्तिकता है ही किन्तु जीव तथा प्रकृति, यथार्थ ज्ञान वेद और मुक्ति आदि युक्ति सिद्ध तथा शास्त्र सम्मत सिद्धान्तो को न मान कर भ्रम जाल मे ग्रसित हो विरुद्ध कर्म करना भी नास्तिकता है। जिसका परिणाम विनाश अध पतन, पराधीनता तथा मृत्यु है। यजु का 40 वा अध्याय जो वेदान्त के नाम से ही प्रख्यात है। वह अद्वैत वाद का मण्डन नही करता। अपितु इसे भी नास्तिकता बता कर इसका बडा भारी खण्डन करता है। इस अध्याय के प्रथम तीन मन्त्रो मे कर्त्तव्य पचक का सविस्तार से वणन है। विचार पूवक ध्यान देने की आवश्यकता है —

> ईशावास्यमिद सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् ।
> तेनत्यक्तेनभु जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ।। यजु. 40.1

जो कुछ भी ससार मे गतिशील यह जगत् है। यह सब का सब ईश्वर से आच्छादित है। अत प्रभु को त्यागे हुए ससार द्वारा तुम सब त्याग पूवक भोग करो किसी के धन का अधिकार का, [illegible] मत करो। यह सब कुछ किसी का [illegible] उस जगदीश्वर का है।

इस मन्त्र मे मनुष्य को तीन कर्त्तव्यों का उपदेश वेद ने दिया। प्रथम यह कि ईश्वर विश्वास मे पूण आस्था हो और उसे जगत् का अभिन्ननिमित्तोपादान [illegible] कारण [illegible] कार्य कायक सम्बन्ध और [illegible] जाए।

यदि ईश्वर नही तो ससार का [illegible] कौन ? जड जगत का नियमेण [illegible] कैसे होगा ? जगत की उत्पत्ति, और प्रलय का क्रम पूर्वक प्रवाह कौन जारी करेगा ? अतः ईश्वर की सत्ता माननी अत्यन्त आवश्यक है। इसके बिना [illegible] का तार सम्य भी स्थिर नहीं रह सकता। और नास्तिकता से [illegible] [illegible] [illegible]

यदि सष्टा और सृष्टि मे कोई भेद नही। तो जडता कहा से आई ? जबकि परमात्मा चेतन है। और चेतना द्वारा सजन करता है। पुन जड जगत मे भी ईश्वरीय चेतना माननी आवश्यक ठहरेगी जिसका सवथा अभाव है। ईश्वर सवज्ञ और जीव अल्पज्ञ तथा प्रकृति अज्ञ है। इस भेद का जो भी कारण बताया जाएगा वह ब्रह्म से अतिरिक्त पदार्थ की सत्ता का प्रति पादक होगा। और अद्वैत वाद खण्डित हो जाएगा। अद्वैत वाद मे कम फिलासफी का भी गला घोट दिया गया है, जिसका परिणाम आलस्य और तज्जनित भारत वष की सहस्रो वर्षों की पराधीनता है।

अत वेद ने ईश्वर को जगत मे व्यापक तथा जगत को ईश्वर मे व्याप्य मान कर सवज्ञ को जड का यथावत उपयोग कर सकने के कारण स्वामी माना है। उस स्वामी के स्वत्व का उप-भोग समस्त जीव समूह त्याग पूर्वक करें। यह त्याग की शिक्षा जीवो के लिए द्वितीय कर्त्तव्य है। इसी त्याग पूर्वक जीवन के व्यतीत करने का नाम [illegible] है। [illegible]

सारा यजुर्वेद करता है। कि समस्त प्राणी अपनी आयु का एक 2 सास तथा आख कान आदि शरीर के समस्त घटक अवयव अपने न समझ कर यज्ञ मे, त्याग मे लगावें। क्योकि यह सारा शरीर इस जगत का भोग है जो कि जगतपति ने त्याग पूवक जीवन व्यतीत करने के लिए हमे प्रदान किया है। शरीर का सदुपयोग दूसरे श्रेष्ठतम शरीर की प्राप्ति का कारण बन कर अन्त मे जीव को मोक्ष धाम तक ले जाता है। अथवा यह शरीर भी छीना जा कर अधमयोनियो की प्राप्ति का कारण बनता है।

तीसरे कत्तव्य मे यह बताया है कि त्याग पूवक जीवन व्यतीत करने का यह अभिप्राय है कि कोई भी प्राणी किसी भी प्राणी के अधिकार पर छापा न मारे। किसी का धन न ले। दूसरे के स्वत्व पर अपना स्वत्व न रखे। क्योकि यह सब कुछ किसी का भी नही। प्रभु का है। अत दु खो से, भव सागर से, शरीर के बन्धन से और हर प्रकार की पराधीनता से छूटने की अभिलाषा रखने वाले, हे प्राणियो ! पूण स्वातन्त्र्य मुक्ति की प्राप्ति के लिए यत्न कर रहे हे जीवो ! तुम सब परस्पर प्रेम बढाते एक दूसरे की सहायता करते हुए, एक दूसरे के अधिकारो पर मत मरो। अनुचित छीना झपटी द्वारा राक्षस बन कर विनाश को मत प्राप्त होओ। यह वेदोपदिष्ट तीसरा कर्त्तव्य है

चतुर्थ कर्त्तव्य

कुर्वन्नेवेह कर्माणि। कर्म करते हुए सौ वष तक और उसमे अधिक जीने की इच्छा करो। यह शुभ कर्म हो इनके बिना कोई भी जीव दु खो से छूट सुख को नही प्राप्त कर सकता अत न कर्म लिप्यते नरे—कर्मफल की आसक्ति मे न फसने वाले जीव मे कर्म-लेप नही होता। ऐसा मनुष्य ही निष्काम कर्मों द्वारा समस्त ससार को लाभान्वित करता हुआ स्वय उसके फल की आकांक्षा से लिप्त न होकर शरीर बन्धनो की कडी जजीरो को काट कर बहुत बडी आनन्दमयी दु ख रहित अवस्था को प्राप्त करने का अधिकारी बनता है। अत निष्काम कर्म सम्पादन द्वारा ससारहित करना यह चौथा कर्त्तव्य वेद मे वर्णित हुआ। और अन्त मे पाचवें कर्त्तव्य द्वारा नास्तिकता के परिणाम मृत्यु से बचने का उपाय भी बता दिया।

पचम कर्त्तव्य

असुर्या नाम ते लोका। आत्म हत्यारे—ईश्वर पर विश्वास न रखने वाले उसको मान कर भी उसके गुणो को यथावत् न समझ कर उसके कानून का, नियम का मर्यादाओ का उल्लघन करने वाले अत प्राणिहित को हानि पहुचाने वाले आत्मा मे परमात्मा प्रेरित आवाज को न सुनने वाले अथवा सुन कर भी उसके विपरीत कर्म करने वाले अपनी तथा पराई आत्मा की हत्या करने वाले, आत्महत्या—खुदकशी करके जीवन का अन्त करने वाले, दूसरो की आत्मा का हनन कर के उनके धन, जीवन, शरीर से अपना स्वार्थ सिद्ध करने और अपना पेट भरने वाले, सभी प्रकार के नास्तिक घोरान्ध-कार युक्त महातिमिर आसुरीयोनियो मे पड कर दु खादि दु ख के भागी बनते हैं। और बारम्बार मृत्यु का ग्रास बन कर मोक्षभोग से दूर होते जाते हैं। अत मनुष्य का पाचवा कर्त्तव्य यह है कि वह मृत्यु के महान दु ख से बचने के लिए —

अनेजदेक मनसोजवीयो—उस पर-मेश्वर का साक्षात्कार करे, जो भगवान मन तथा इन्द्रियो से सवथा अतीत है जो केवल मोक्षमार्ग द्वारा अपने ही आत्मा मे निरन्तर अभ्यास से देखा जाता है। जिसके दर्शन कर लेने पर समस्त क्ल-केशो, दुरित कर्मों तथा दु खो का नाश हो कर अमृत पद की प्राप्ति होती है।

आर्य समाज के शोध विद्वान्—

मौलवी महेश प्रसाद

राहुल सांकृत्यायन के संस्मरण—

प्रेषक—डा भवानीलाल जी भारतीय चण्डीगढ

"जीवन मे सबसे अधिक प्रभाव मेरे ऊपर मौलवी महेश प्रसाद का पड़ा। राजनीति और देशभक्ति के विचारों से 1914 तक मैं बिल्कुल अपरिचित था। 1915 के आरम्भ मे मुसाफिर विद्यालय (आगरा) मे दाखिल होने पर मौलवी महेश प्रसाद के घनिष्ठ सम्पर्क मे एक वष से अधिक समय तक रहना पड़ा।

इसी समय अन्धे को आख मिलने की तरह दुनिया को देखने की आख मुझे भाई साहब की कृपा से मिली। वह उस समय मुसाफिर विद्यालय मे अरबी अध्यापक थे। हम सब लोग उन्हे भाई साहब कहा करते थे। अभी "मौलवी आलिम फाजिल" की उपाधि उन्हें प्राप्त न हुई थी। हम दोनो की उमर मे दो-चार ही वष का अन्तर होगा इसलिए आत्मीयता स्थापित करने मे आयु बाधक नही हो सकती थी। मुसाफिर विद्यालय का नाम सुनकर आय समाजी विचारो से प्रभावित मैं प्रयाग के माघ मेले से आगरा पहुचा। प्रयाग मे किसी ने कहा भी कि लिखा पढी करके पहले भर्ती के बारे मे निश्चय हो जाने पर जाइए। लेकिन अब छोटा-मोटा घुमक्कड बन चुका था, इसलिए मुझे भय नही मालूम हुआ, कि यदि विद्यालय मे भर्ती नही हुई, तो क्या होगा। मुसाफिर विद्यालय मे भर्ती होने मे कोई दिक्कत नही हुई। मैं वहा से सभी विद्यार्थियो से अधिक सस्कृत जानता था, उर्दू मिडल पास था और बोलने चालने, देखने सुनने मे भी प्रभाव रखता था।

भाई साहब हमे अरबी पढाते थे। विद्यालय के कोस मे जितना सस्कृत थी उससे कही अधिक मैं जानता था इस लिए मुझे उसके पढने से छुट्टी थी। अरबी की पढाई के बाद दूसरी शिक्षा थी भाषण और शास्त्राथ की। जो अधिकतर प्रयोग रूप मे होती थी। अपने ज्ञान को बढाने के लिए सभी पुस्तक हमारे पाठयक्रम में थी। मुसाफिर विद्यालय तथा प भोजदत्त के उर्दू साप्ताहिक 'आर्य मुसाफिर' के कार्यालय मे जितनी भी पुस्तकें थी, सबको मैंने पढ लिया। आर्य समाज वैदिक धर्म और स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तो के प्रचार करने पर बहुत जोर देता था। स्वामी दयानन्द ने देशभक्ति और देश की स्वतन्त्रता का सन्देश अपने ग्रन्थों में दिया था, इसलिए देशभक्ति का बहुत स्वागत था। प्रथम विश्व युद्ध का आरम्भिक समय था। आर्य समाज के राष्ट्रीय भावो की भनक अग्रजी अधिकारियो को लग गई थी, इसलिए वह आर्य समाज और उसके उपदेशको को सन्देह की दृष्टि से देखते थे। इस वातावरण मे आकषण राष्ट्रीयता की ओर होना स्वाभाविक था। उसके लिए किसी का पथ प्रदशन प्राप्त हो, तो सालो की मजिल महीनो मे तय हो सकती थी और हमारे लिए ऐसे पथ-प्रदशक थे, भाई महेश प्रसाद।

महेश प्रसाद का जन्म इलहाबाद जिले के कायस्थान कस्बे मे हुआ था। मैंट्रिक पास कर पुलिस सब इन्स्पेक्टर बनने की बात करीब-करीब से हो गई थी, किन्तु प्रयाग मे पढते वक्त वह उग्र देशभक्तो के सम्पक मे आए थे जिसके कारण घर का आग्रह रहने पर भी उन्होंने पुलिस की नौकरी पसन्द नही की और आय समाजिक विचारो के कारण आय मुसाफिर विद्यालय से निकलने वाले प्रथम स्नातको मे वह और प धमवीर (मेरठी) थे। वह न वक्ता थे और न लेखक, पर शिक्षक होने के सारे गुण उनमे थे। जल्दी किसी के ऊपर प्रभाव नही डाल सकते थे, पर धीरे धीरे जो प्रभाव उन का पडता वह बड़ा पक्का होता था। पढाई समाप्त करने के बाद मुसाफिर विद्यालय मे उन्हे अरबी का अध्यापक बना दिया गया। उनके बाद जो मडली आई, वह मेरे समय दूसरी और अन्तिम श्रेणी मे थी। भाई साहब ज्यादा सौभाग्य शाली थे। प्रयाग से उर्दू मे हिन्दुस्तान के नाम से उग्र राष्ट्रीयता वादी पत्र निकलता था, जिसके सभी सम्पादक जेल की हवा खाने के लिए भरती होते थे। सम्पादको मे महात्मा नन्दगोपाल भी थे, जिनका प्रभाव भाई साहब पर बहुत पडा था। श्री अम्बा प्रसाद सूफी जैसे और भी कितने ही देशभक्तो के जीवन से उन्हे देशभक्ति की शिक्षा मिली थी।

हमे पाठ्य पुस्तकों से अधिक इन बातो को भाई साब बतलाया करते थे। इस प्रकार मुसाफिर विद्यालय धार्मिक नही राष्ट्रीयता का विद्यालय था। उसके संस्थापक प भोजदत्त अब बुढापे और रोग के कारण कुछ नहीं कर सकते थे। विद्यालय का सारा भार उनके ज्येष्ठ पुत्र डा लक्ष्मीदत्त के ऊपर था, जो "साबिर" अकबराबादी के नाम से उर्दू में शेर कहा करते थे। उनकी कविताओ में काफी गर्मी रहती थी। वह नही चाहते थे कि विद्यालय उग्र राष्ट्रीय विचारो के कारण खतरे मे पड जाये, पर उनकी तरफ से हमारे रास्तो मे कोई बाधा भी नही थी।

भाई साहब ने हमे आख दी, देश-पुकार सुनने के कान दिये, प्राणदान करने वाले हुतात्माओ के अनुकरण करने की प्रवृत्ति दी। भाई साहब केवल स्वदेशी और मोटा कपड़ा पहनते थे। उनके बिना कहे ही हमने इस बात मे उनका अनुसरण किया। मुसाफिर विद्यालय से निकलने वक्त 1916 की फरवरी मे अब मैं दूसरा ही था, घुमक्कड कुछ और ही था।

यद्यपि मैं अब आय समाज का उपदेशक बन सकता था और मुझ वैसा करना भी चाहिए था किन्तु विद्या की पिपासा मुझ खीचकर लाहौर ले गई, जो आर्य समाज का बड़ होने के साथ विद्या केन्द्र था। वहां पहुचने पर मैंने भाई साहब को लिखा और वह भी अपने अरबी ज्ञान से असन्तुष्ट होकर लाहौर चले आए। उन्होंने कुछ साल लगा कर पंजाब यूनिवर्सिटी की अरबी की सर्वोच्च परीक्षा "मौलवी फाजिल" पास की। वह परीक्षा पास करने वाले वह सबसे पहले हिन्दू थे। लाहौर मे भाई साहब से हमारा सम्पर्क रहा। किन्तु वह अपने पढने मे एकाग्र होकर डटे हुए थे, कहीं इधर-उधर जाने का नाम नही लेते थे पर घुमक्कड़ी धर्म के अनुयायी मेरे लिए छ महीने से अधिक एक जगह रहना पाप था। भाई साहब को जो देना था, मेरे जीवन मे जो परिवर्तन करना था, वह सब कर चुके थे। पढाई समाप्त करने के बाद हिन्दू यूनिवर्सिटी मे उन्हे अरबी आध्यापक का काम मिल गया, और यही काम करते उन्होंने अपने जीवन को [illegible] किया। बनारस मे मैं बराबर [illegible] दर्शन करता था। और वह अन्तिम समय तक आर्य समाज के सिद्धान्तो मे विश्वास रखते थे। और उत्सवों पर व्याख्यान देने आते थे। मैं आय समाज वेद और ईश्वर सबसे निर्मुक्त हो गया था। पर उस साधु पुरुष के प्रति मेरी श्रद्धा मे कोई अन्तर नही आया।

तन उजला मन काला

लेखक—श्री मोहनलाल शर्मा रश्मि"
907।ए फ्रीलैंडगज दाहोद (गुजरात)

तेरा तन उजला मन काला, यू सुख चैन न मिलने वाला ॥
तेरा तन ।

स्वाथ अपना छोड के भाई, तू अब पुण्य कम कमा ले।
दान धम की राह पे चल के, तू यह अन्तमन चमका ले ॥
हीरा जनम गवा कर तूने ये क्या से क्या कर डाला।
तेरा तन उजला मन काला, यू सुख चैन न मिलने वाला ॥

छोड के अमृत क्यो मेरे भाई तू विष का प्याला पीये।
मन का आपा छोड के तू, क्यो जख्मो को न सीये ॥
मोती मोती जुटा-जुटा कर, तू जोड ले प्यार की माला।
तेरा तन उजला मन काला, यू सुख चैन न मिलने वाला ॥

धन दौलत ये यहीं रहेगा, तू तो खाली हाथ चलेगा।
अन्त समय मे पछता कर, तू बस खाली हाथ मलेगा।
इन मोहो की जजीरो से, तू न छुटकारा पाने वाला।
तेरा तन उजला मन काला, यू सुख चैन न मिलने वाला ॥

पर हित की कोई बात कभी भी क्या तेरे मन मे आई।
हर दम सच्चाई से दूर रहा तू, बस झूठ की माया गाई।
अज्ञान अधेरा दूर हटा कर, हो सद्ज्ञान का "रश्मि" उजाला।
तेरा तन उजला मन काला, यू सुख चैन न मिलने वाला ॥

सम्पादकीय—

आर्य समाज के बुद्धिजीवी–2

जैसा कि मैंने पिछले लेख में भी लिखा था कि आर्य समाज में बुद्धिजीवियों की कमी नहीं है ऐसे उच्चकोटि के विचारक आर्य समाज में बैठे हैं जिन पर हम गर्व कर सकते हैं। आर्य समाज की यही एक विशेषता रही है कि इसमें अधिकतर वह व्यक्ति सम्मलित होते हैं जो आंख और कान खोल कर अपने चारों तरफ की स्थिति को समझ सकते है और फिर उसे सन्तुलित भाषा में जनता के सामने रख सकते हैं। आज तो स्थिति बहुत कुछ बदल गई है। कभी आर्य समाज में ऐसे व्याख्याता होते थे जिन्हें सुनने के लिए हजारों व्यक्ति इकट्ठे हो जाते थे। यह मैं उस युग की बात कर रहा हूं जब अभी लाऊडस्पीकर प्रचलित न हुआ था फिर भी बड़ी भारी संख्या में लोग आर्य समाज के उत्सवों में आया करते थे। यह केवल इसलिए कि जो महानुभाव व्याख्यान दिया करते थे उनका अध्ययन इतना विस्तृत होता था कि लोगों को उनकी योग्यता और विद्वता को देख कर आश्चर्य हुआ करता था। मैंने वह समय भी देखा है जब लाहौर आर्य समाज के उत्सव में आचार्य रामदेव जी व्याख्यान दिया करते थे। वह अपने साथ 10-15 पुस्तकें लाया करते थे। व्याख्यान के समय उनमे से बहुत कुछ पढ़ कर लोगों को सुनाया करते थे। इससे लोगों पर इतना अधिक प्रभाव होता था कि वह समझते थे कि आर्य समाज उच्चकोटि के बुद्धिजीवियों की एक संस्था है।

आज स्थिति बहुत कुछ बदल रही है उच्चकोटि के उपदेशक और बुद्धिजीवी आज भी आर्य समाज मे मिल जाएंगे परन्तु किसी न किसी कारण वह जनता के सामने नहीं आ रहे। उनका क्षेत्र बहुत सीमित होता जा रहा है। इसलिए आर्य समाज का जनता पर अब वह प्रभाव नहीं रहा जो पहले हुआ करता था। जिस बात की आज आवश्यकता है वह यह कि आर्य समाज के बुद्धिजीवी समय-2 पर बैठ कर उन समस्याओं पर विचार करें जो आज देश के सामने हैं और आर्य समाज के दृष्टिकोण से अपने देशवासियों का मार्ग प्रदर्शन करें। सब से बड़ा प्रश्न तो आज हमारे सामने यही है कि देश की राजनीति को जिस ढंग से चलाया जा रहा है उसका अन्त में परिणाम क्या होगा ? कोई कारण नहीं कि आर्य समाज स्पष्ट रूप से अपने विचार जनता के सामने न रखे। अभी थोड़ा समय हुआ जब आचार्य प्रियव्रत जी ने वेदों के राजनैतिक सिद्धान्त नाम का एक बहुत बड़ा ग्रन्थ प्रकाशित किया था। उसे पढ़ने के पश्चात् तो कोई व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि आर्य समाज का कोई राजनैतिक दृष्टिकोण नहीं है। आचार्य प्रियव्रत जी के ग्रन्थ में इतना कुछ लिखा हुआ है कि उसके आधार पर आर्य समाज अपने देशवासियों का नेतृत्व कर सकता है परन्तु यदि हमारे लिखे लिखाए ग्रन्थ बन्द पड़े रहें और किसी को उनका पता न चले तो उससे न तो लिखने वाले को सन्तोष होगा और न उनके देशवासियों को उससे कोई लाभ होगा। इसी के साथ एक और प्रश्न भी उठता है वह यह कि साधारण जनता तक पहुंचने के लिए आर्य समाज क्या कर रहा है ? इस समय देश की प्रत्येक प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का कोई न कोई साप्ताहिक पत्र अवश्य है। इनके अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और परोपकारिणी सभा के पत्र भी हैं। परन्तु इन सब का एक सीमित क्षेत्र है। आर्य समाजी तो उन्हें पढ़ते हैं। आर्य समाज से बाहिर के लोग नहीं पढ़ते। इसलिए इन साप्ताहिक पत्रों की वह उपयोगिता नहीं है जो होनी चाहिए। किसी समय आर्य समाज के प्रचार का मुख्य साधन छोटे-छोटे ट्रैक्ट हुआ करते थे। वह जन साधारण तक पहुंच जाते थे बड़ी सरल भाषा में लिखे जाते थे। उन्हें पढ़ कर लोगों को आर्य समाज के विषय में बहुत कुछ पता चल जाता था ! अब उस किस्म के ट्रैक्ट भी बहुत कम प्रकाशित होते हैं। यदि कुछ बुद्धिजीवी अपने जिम्मे यही काम ले लें कि वह इस प्रकार के छोटे-2 ट्रैक्ट सरल भाषा में प्रकाशित कर दें तो उनसे भी आर्य समाज का बहुत प्रचार हो सकता है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के उप कुलपति आचार्य रामप्रसाद जी "श्रद्धा साहित्य प्रकाशन" के नाम से छोटी-2 पुस्तिकाएं प्रकाशित करते रहते हैं। उनके द्वारा प्रचार भी होता है। और वह बहुत अधिक सर्वप्रिय भी होती जा रही हैं। इसी प्रकार का और साहित्य भी यदि समय-समय पर प्रकाशित होता रहे तो उससे आर्य समाज को बहुत अधिक लाभ होगा। जनसाधारण बड़े-बड़े ग्रन्थ नहीं पढ़ता। अब तो उनका मूल्य भी बहुत हो गया है। इसलिए प्रचार कार्य के लिए वह अधिक लाभकारी नहीं हो सकते। समस्या का यह भी एक पक्ष है जिस पर बुद्धिजीवियों को विचार करने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त एक और पक्ष भी है जिसके विषय मे आगामी अंक मे लिखूंगा।

—वीरेन्द्र

निजाम की जेल में

मैं आजकल आर्य समाज के बुद्धिजीवियों के विषय मे लिख रहा हूं। उनमे एक श्री क्षितीश वेदालंकार भी हैं। वह उच्चकोटि के पत्रकार साहित्यकार और इतिहासकार है। अभी थोड़ा समय हुआ जब उन्होंने पंजाब की राजनीति के विषय मे एक पुस्तक लिखी थी मेरे विचार मे इस विषय पर इससे पहले किसी दूसरे ने ऐसी पुस्तक नहीं लिखी क्योंकि वह स्वयं उच्चकोटि के लेखक और साहित्यकार हैं। इस लिए जब लिखते है तो अपनी कलम तोड़ देते है। आर्य समाज में बहुत कम ऐसे लेखक और पत्रकार हैं जिन्होंने वह ख्याति प्राप्त की हो जो श्री क्षितीश वेदालंकार ने की है।

अब उन्होंने "निजाम की जेल में" नाम की एक और पुस्तक प्रकाशित की है यह वास्तव में हैदराबाद सत्याग्रह का संक्षिप्त इतिहास है। परन्तु यह इतिहास नहीं रहा एक उपन्यास बन गया है। श्री क्षितीश जी का लिखने का अपना एक अनूठा ढंग है। इसलिए उन्होंने जो कुछ अपनी इस पुस्तक में लिखा है उससे हम न केवल हैदराबाद सत्याग्रह के विषय में ही बहुत कुछ जान सकते है। साथ ही जिन परिस्थितियों में और जैसे आर्य समाज को यह संघर्ष करना पड़ा और उसके कारण उस समय के हमारे नेताओं ने आर्य समाज को अपनी श्रद्धा के जो फूल पेश किये थे उसका भी हमें कुछ पता चलता है। महात्मा गान्धी, श्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू, श्री सरदार पटेल और दूसरे नेताओं ने उस समय यही स्वीकार किया था कि आर्य समाज एक ऐसी संस्था है जो विशुद्ध अहिंसात्मक और न्यायमय सत्याग्रह कर सकती है। यह सत्याग्रह 1939 में हुआ था। हम इसके विषय में बहुत कुछ भूल चुके थे ! श्री क्षितीश जी ने अपनी इस पुस्तक के द्वारा पुराने इतिहास को फिर दोहरा दिया है जिन व्यक्तियों ने उस समय सत्याग्रह में भाग लिया था उनमें से आज जो जीवित हैं सरकार ने उन्हें दूसरे स्वतन्त्रता सेनानियों की तरह पेन्शन देने का फैसला किया है। जो लोग उस सत्याग्रह के विषय में कुछ जानना चाहते हैं मैं उनसे कहूंगा कि वह श्री क्षितीश वेदालंकार द्वारा लिखित पुस्तक "निजाम की जेल में" अवश्य पढ़ें। इसका मूल्य बीस रुपये है और वह "दी वर्ल्ड पब्लिकेशन 807/95 नेहरू पैलेस नई दिल्ली से मिल सकती है। इसके अतिरिक्त आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग नई दिल्ली और सार्वदेशिक सभा आसफली रोड़ नई दिल्ली से भी मिल सकती है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब भी इसकी कुछ प्रतियां मंगवा रही है यह हमारे कार्यालय से भी मिल सकती है।

—वीरेन्द्र

मेरी अपनी शोक सभा

लेखक—श्री आचार्य कृष्णदत्त जी हैदराबाद

पता नही क्यो, कुछ दिनो से मेरी इच्छा यह जानने की हो रही है कि मेरी अपनी शोक सभा का क्या रूप होगा। कौन क्या कहेगा। शोक सभा मे कितने लोग आएगे ? इत्यादि, इत्यादि। जैसे ही मेरे मस्तिष्क मे ये विचार आये, मैं खिलखिला कर हसा . ऐसा लगा जैसे कोई भीतर से मेरा मजाक उड़ा रहा है। हसी के साथ ही एक विचार उठा, क्यो महाशय ? किस भ्रम मे हैं आप ? आप इतने बड़े और इतने महत्वपूर्ण कब से बन गये, जो आपके दिवगत होते ही आपके लिए शोक सभा आयोजित की जाएगी ? क्या हैसियत है आपकी ? क्या किया है आपने दुनिया मे आकर ?

ऐसा लगा कि मेरे भीतर कोई बैठ कर मेरा मजाक उड़ा रहा है। मैं बहुत झुझलाया। सोचा, भीतर हाथ डाल कर, जो भी अन्दर बैठा है उसकी गर्दन पकड़ कर बाहर खीच लू। मैं यह सोच ही रहा था, कि अचानक मेरे भीतर से कुछ निकला और मेरे सामने एक आकृति धारण करके खड़ा हो गया। अरे, यह तो मेरा ही रूप है। मुझ जैसा ही रग-रूप, अपना ही कद और अपनी ही शक्ल यह मैं ही तो हू। फिर भी पूछ लिया, "आप कौन ?" उत्तर मिला, "जो आप, वही मैं। तुम्हारी अन्तरात्मा, तुम्हारा जमीर। पर कौन क्या से क्या मतलब ? असल बात पर आओ। क्या सोच रहे हो ?"

"तुम से छुपा ही क्या है ? मैं अपनी शोक सभा के लिए सोच रहा हू। क्या मैं इतना निकम्मा हू ? मैं मुहल्ले की सेवा समिति का तीन साल उप-प्रधान रहा। कोग्रस सेवा दल मे उप-दलपति रहा। मुहल्ले की कन्याशाला का दस साल मन्त्री रहा। अब बिल्डिग कमेटी का कोषाध्यक्ष हू। नगर की 30 35 सस्थाओं से मेरा सम्बन्ध है।"

"बस-बस रुक जाओ। क्या तुम मुझ से सुनना चाहते हो कि इन पदो पर रह कर तुमने क्या किया है ?"

"अरे तुम ही ऐसी बात करोगे तो क्या बनेगा ? शोक सभा मे मेरा गौरव तुम्हारा गौरव है। मुझ से अलग हो कर मुझ से ही क्यो गुर्रा रहे हो ? चुप भी रहो और जैसे भीतर से बाहर निकल आये हो पुन भीतर चले जाओ।"

"पर यह सब कुछ अच्छा नही लगता।"

"सभी लोग ऐसा ही करते हैं। मैं भी करू तो बुरा क्या है ? देखो उस नेता ने जेब के पैसे खर्च करके अपनी षष्टि पूर्ति मनाई। रगपुर के उस समाज सेवी ने धर्म टस्ट के धन से अपना अभिनन्दन ग्रन्थ छपवाया। कमलानन्द सन्यासी ने मन्दिर के पैसो से अपना जुलूस निकलवाया और अपनी जय-जयकार करने के लिए अपनी जेब से पैसे खर्च करके किराये के आदमी मगवाये। अगर मैंने भी अपनी मृत्यु के बाद शानदार शोक सभा का आयोजन किया तो कौन सा पाप होगा ? जैसा देश, वैसा भेस। तुम चुप भी रहो। अपने पैर पर आप कुल्हाड़ी क्यो चला रहे हो ? तुम तमाशा देखते चलो और अब चुपचाप भीतर घुस जाओ।"

उस आकृति ने मेरे भीतर प्रवेश किया। मैंने अपनी शानदार शव यात्रा की योजना बनाई, शोक सभा का खाका तैयार किया, पूरे खर्च का प्रबन्ध किया, और एक दिन आखरी सास ली।

मैं अपने मृतक शरीर से निकल कर घर की छत पर चढ गया। देखते ही देखते मेरे मरने की खबर शहर मे फैल गई। सुबह के अखबारों मे मेरे मरने का समाचार छप गया। लोग मेरे घर आने लगे। घर के सामने भीड़ बढ़ती गई। सहसा एक मोटर आ कर दरवाजे पर रुकी। यह क्या, उसमे से सत्यपाल और धर्मपाल उतरे। दो बार स्कूल के चुनावो मे और दो बार असैम्बली के चुनावो में मुझ से हार चुके थे, ये दोनो प्रतिद्वन्दी आज मेरे घर शायद जीवन भर का बदला चुकाने आये हैं। पर नही, उन्होंने मेरे दोनो पुत्रो को बुलाया। सीने से लगाया। सिर पीठ पर हाथ फेर कर दिलासा दिया। मेरी पत्नी का ढाढस बन्धाया और अपने 4 6 कारिन्दो को बुला कर कहा, खर्च की परवाह मत करो। मोटर पर लाऊड स्पीकर कसो और शहर भर मे घोषणा कर दो कि नगर के कर्मठ नेता धर्मनायक कालिशरण जी की शव यात्रा 12 बजे निकलेगी। शव यात्रा में अधिक से अधिक लोग पधार कर अपने दिवगत नेता को श्रद्धाजलि दें।

मैं हैरान हो कर सुनने लगा। जीवन भर मुझे भ्रष्ट और पापी कहने वाला वह सत्यपाल आज मुझे धर्मनायक की उपाधि से विभूषित कर रहा है। दोनो ने मेरी शव यात्रा का शानदार प्रबन्ध किया। एक बड़े ट्रक पर मेरा शव रखा गया। शव के एक ओर सत्यपाल ओर दूसरी ओर धर्मपाल हाथ जोड़े खड़े हो गये। मैं समझ नही पा रहा था कि यह मेरी शव यात्रा थी या दोनो की मुक्ति यात्रा।

ज्यो त्यो मेरी शव यात्रा समाप्त हुई। मेरा दाह सस्कार हुआ और मेरी शोक सभा के दिन, स्थान और समय की घोषणा हो गई। अध्यक्ष बने मेरे एक राजनैतिक प्रतिद्वन्दी। निर्धारित दिन और समय पर शोक सभा आरम्भ हुई। अध्यक्ष जी ने अपने प्रारम्भिक भाषण मे कहा, "सज्जनों, आप लोगों को मालूम ही है कि आज हम यहा क्यो इकट्ठे हुए हैं। धर्मनायक कालिशरण जी वस्तुत. धर्म के मर्मज्ञ और धर्म शास्त्रो के धुरन्धर विद्वान् थे, "मैं सभा स्थल के बीचो-बीच खड़े पीपल के पेड़ की चोटी पर बैठ कर अपना गुणगान सुन रहा था। मैं बड़ा ही हैरान था कि मैं धर्म का मर्मज्ञ किस तरह बन गया। अध्यक्ष महोदय ने मुझे धर्म शास्त्रो का विद्वान होने की उपाधि दे दी, जो स्वय धर्म से पूर्णत अनभिज्ञ थे। अपने आपको ब्राह्मण कह कर भी रात-दिन मास, मदिरा में डूबे, काचन-कामिनी के पाश मे जकड़े रहे थे। ऐसे धुरन्धर धर्माचार्य ने मुझ जैसे तीन बार मैट्रिक की परीक्षा मे अनुत्तीर्ण व्यक्ति को धर्म शास्त्रो का विद्वान् बना दिया। कुछ समय के लिए दिल मे गुदगुदी हुई। पर भीतर से मेरी अन्तरात्मा चीख उठी, "लो सुनो, तुम जो नही थे वही सब कुछ तुम्हारे सिर मढ़ा जा रहा है।" मैंने झटक कर कहा, "चुप हो जाओ।" तभी मेरे कानो में अध्यक्ष के ये शब्द पड़े, भाइयो, दिवगत आत्मा बड़े दानी और उदार थे। उन्होंने कितने ही स्कूलो, मन्दिरो और धर्मशालाओ को दान दिया है। दान का उन्होने आदर्श स्थापित किया है।" मेरी अन्तरात्मा ठहाका मार कर हस पड़ी और कहने लगी, "खुश हो गए ? हनमान के मन्दिर के लिए दान मे मिलें 200 सीमेट के थैलो मे से 50 थैले मार कर और स्कूल के लिए प्राप्त 200 लारी रेत मे से 25 लारी रेत घर मे उतार कर भी दानवीर बन रहे हो। चार व्यापारियो के गुप्तदान को अपने नाम पर लिखवा कर और घर के पीछे मन्दिर की जगह हड़प कर बेहयाई से दानवीर कर्ण से तुलना करवाते तुम्हे शर्म नही आती ?" 'चुप रहो, वरना गला घोट दूगा, समझे। गड़े मुर्दे उखाड़ते तुम्हे शर्म नही आ रही है ?" क्षीण स्वर मे अन्तरात्मा ने कहा, "मेरा गला घोट कर तुम्हे क्या मिलेगा ? मैं तो अपने आप मरा जा रहा हू। पर जब तक शक्ति है तुझे सचेत करना मेरा काम है।"

दूसरे एक सज्जन कहने लगे, "सज्जनो, आज हमारी नगरी अनाथ हो गई। हमारे बीच मे कालिशरण जी क्या उठ गये, धार्मिकता, कर्मठता, परोपकार उठ गया। अब हम छोटी-बड़ी बातो के लिए किस का सहारा ढूढेंगे ? बीच मे 5 10 लोगो ने "कालिशरण की जय" "कालिशरण जिंदाबाद" के नारे लगाये। मैं पेड़ से यह देखने के लिये किंचित नीचे उतर आया कि जयनाद करने वाले कौन हैं ? ये सभी अपरिचित है। कही से बुलवाये गये हैं। इनके बीच मे धर्मपाल बैठा हुआ है। मेरा विरोधी, मुझ अपना दुश्मन न 1 कहने वाला। बात समझ में नही आई। भीतर से अन्तरात्मा ने कहा, "मूर्ख कालिशरण सम्भल। यह बड़ी शोक सभा, यह नारे, मोटर से लाउड स्पीकर द्वारा घोषणा, धर्मवीर की यह उपाधि, लोग दो दिनो मे सब कुछ भूल जाएगे। जनता की स्मृति दुर्बल होती है। आज तक तू जिनकी कीर्ति के लिए बाधक बना हुआ था आज तेरे बहाने वे जनता के सामने आ रहे हैं। आजकल तो कम्युनिस्ट भी महात्मा गांधी के नाम की दुहाई दे रहे हैं, तो तू किस खेत की मूली है। इस सब का राज उस समय खुलेगा, जब तेरे बेटो के हाथो मे खर्च का बिल आयेगा। यह सब मुट्ठी गरम करने के हथकडे हैं। तेरे कारण हुए उनके आर्थिक नुकसान की पूर्ति अब होने जा रही है।" यह सुन कर मैं कुछ चिन्तित हो गया। पर अपनी प्रशसा, अपना जय-जयकार अच्छा लग रहा था। एक के बाद दूसरा, इस प्रकार कई लोग मेरी तारीफ में बोलते गये। मेरे अन्दर जो गुण थे उन्हें बढ़ा-चढ़ा कर और जो कुछ मुझ में नहीं था उसका उल्लेख करके लोगो ने मेरी तारीफ के पुल बाधे।

मेरे स्कूल का हैडमास्टर खड़ा हो गया। कहने लगा, "भाइयो, श्री कालिशरण जी बहुत बड़े शिक्षा प्रेमी और एज्यूकेशनिस्ट थे। उन्होंने कितने ही स्कूलो और कालेजो का सचालन किया था। वे शिक्षा के मर्मज्ञ थे।" हैडमास्टर की इस बात से मैं स्वय उलझन में पड़ गया। स्कूल के सचालन काल में पाच बार अध्यापको ने मेरे विरोध मे हड़ताल की थी।

(क्रमश:)

हरिजन कौन है ?

बाबू जगजीवन राम के देहान्त पर मैंने जो लेख लिखे थे उन पर कुछ भाइयो ने आपत्ति की थी। उन्हें यह शिकायत थी कि मैं हरिजनो को हिन्दुओ से अलग प्रकट कर रहा हू। मेरा न उस समय यह विचार था न आज है। जब मैंने कह दिया कि मैं जन्म के आधार पर नहीं, कर्म के आधार पर किसी को ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य और शूद्र मानता हू तो हरिजनो को हिन्दुओं से अलग मानने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। जिन्हे हम हरिजन कहते हैं, वे हिन्दुओ के अतिरिक्त किसी और से जोडे नहीं जा सकते। मैं तो यह भी कह सकता हू कि वह ही हिन्दू हैं। यदि महर्षि वाल्मीकि और भगत शिरोमणि गुरु रविदास के अनुयायी हिन्दू नही हो सकते तो और कौन हो सकता है। इसलिए इस विवाद मे पड़ने का कोई लाभ नही होगा कि हरिजन हिन्दू हैं या नहीं? जैसे कि मैंने लिखा था कि हरिजन हिन्दुओ की उसी तरह एक जाति हैं जिस तरह कपूर, खन्ना, मल्होत्रा, भट्टी, नारंग आदि। जिन्हे हम हरिजन कहते हैं उनमे एक वर्ग वह भी है जिन्हे महाशय या भगत कहते हैं। आर्य समाजियो को भी महाशय कहते हैं। इसलिए भगत और महाशय हरिजन भी उसी तरह आर्य समाजी हैं जैसे कोई अन्य आर्य समाजी। आर्य समाज के एक प्रसिद्ध नेता स्वर्गीय श्री महाशय कृष्ण 'महाशय जी' के नाम से प्रसिद्ध थे। इसलिए यदि हरिजन ... से कोई अपने आपको महाशय कहता है तो वह उसी तरह हिन्दू है जिस तरह कोई अन्य।

इसलिए जिन्हे हम हरिजन कहते हैं उन्हें हिन्दुओ से अलग नहीं किया जा सकता। किन्तु हरिजनो के बारे मे एक और चर्चा काफी समय से चल रही है। वह यह कि एक व्यक्ति सामाजिक रूप से पिछड़ा है। उसे तो वे सभी सुविधाए मिलनी चाहिए जो हमारे सविधान मे कानूनी तौर पर आरक्षित कर रखी हैं। लेकिन जो लोग आर्थिक रूप से पिछडे हुए नहीं हैं उन्हे यह सुविधाए क्यो दी जाए ? हरिजनो मे भी अब दो प्रकार के लोग पैदा हो गए हैं। एक वे जो पहले की तरह आज भी आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े हुए हैं। जो स्वय आर्थिक रूप से सम्पन्न हैं वे हरिजनो के आर्थिक रूप से पिछडे वर्ग को पूछते तक नहीं। और फिर अपनी सम्पन्नता के कारण वह आपस मे लडने लग जाते हैं। उनमे से कोई करोड पति बन जाता है तो वह अपने आपको फिर भी हरिजन ही कहता है। लेकिन उसकी अपनी दुनिया अन्य हरिजनो से भिन्न होती है।

बाबू जगजीवन राम के देहान्त पर सारे देश मे शोक मनाया गया है। वह इसलिए कि उनकी गणना देश के चोटी के राजनीतिज्ञो और शासको मे की जाती है। डा भीमराव अम्बेदकर और बाबू जगजीवन राम इन दोनो ने देश के सामाजिक रूप से पिछडे वर्ग के लिए जो कुछ किया है किसी और ने नही किया। यह भी अजीब सयोग है कि ये दोनो उच्चकोटि के राजनीतिज्ञ थे। डा [illegible] ने तो हमारे देश का सविधान तैयार किया था इसलिए उनकी योग्यता सर्वमान्य थी। बाबू जगजीवन राम ने उस सविधान को कार्यरूप दिया था। दोनो का नाम हमारे इतिहास मे अमर रहेगा।

लेकिन बाबू जगजीवन राम के जीवन का एक नया पक्ष सामने आया है। जिसके कारण यह प्रश्न पैदा हो रहा है कि जिन्हे हम हरिजन कहते हैं वे आखिर हैं कौन ? जो आर्थिक रूप से पिछडे हुए हैं वे हरिजन हैं ? जो सामाजिक रूप से पिछडे हैं वे हरिजन हैं ? या जो दोनो तरह से पिछडे हैं उन्हे हम हरिजन कहें ?

यह प्रश्न इसलिए पैदा होता है कि बाबू जगजीवन राम की सम्पत्ति के बारे में उनके परिवार में झगड़ा शुरू हो गया है। यह शायद अब अदालत तक भी जा पहुचे। समझा जाता है कि बाबू जी की जायदाद दस-पन्द्रह करोड से कम नहीं होगी। धन, जमीन, मकानो और कोठियो के अतिरिक्त उनके पास कई तरह के हीरे जवाहरात भी थे जो उन्होंने जगह-जगह से खरीदे थे। बाबू जी बिहार के एक छोटे से गांव में एक गरीब हरिजन परिवार मे पैदा हुए थे। इतना धन और इतनी सम्पत्ति उन्होंने कैसे पैदा कर ली। यह एक और प्रश्न है। इस समय तो प्रश्न यह है कि इस सम्पत्ति का उत्तराधिकारी कौन है ?

बाबू जी का एक ही लड़का था। सुरेश राम। एक उनकी लड़की है मीरा जो पहले भारत सरकार के विदेश विभाग मे काम करती थी। अब वह लोकसभा की सदस्य है। सुरेश राम की दो पत्निया हैं। एक कमलजीत जिससे एक लड़की भी है। दूसरी सुषमा चौधरी उसका कोई बच्चा नही है। बाबू जी कहा करते थे कि सुरेश की रखैल है लेकिन वह कहती है कि वह उसकी विधिवत पत्नी है। और सुरेश अपनी सम्पत्ति की वसीयत उसके नाम कर गया है। वह भी भागो की है।

अब बाबू जगजीवन राम की सम्पत्ति का दावा करने वाली चार महिलाए हैं। एक उनकी पत्नी श्रीमती इन्द्राणी राम, एक उनकी बेटी मीरा कुमारी, दो सुरेश की पत्निया कमलजीत और सुषमा चौधरी। एक उनकी पोती मेधावी जो कहती है कि बाबू जी की जायदाद पर पहला अधिकार उसका है। उनकी मा की सुरेश के साथ विधिवत शादी हुई थी। बाद मे यदि सुरेश ने उसे छोड दिया तो क्या हुआ ? सुषमा तो उसकी रखैल थी। असली पत्नी तो मेरी ही मा थी। इसलिए बाबू जी की सम्पत्ति पर केवल मेरा अधिकार है। मीरा कहती है कि मैं बाबू जी की बेटी हू। इसलिए पहला अधिकार मेरा है।

साराश यह कि बाबू जी की सम्पत्ति के कारण उनकी उत्तराधिकारी देवियां आपस मे लठमलट्ठा होने लगी है। यदि सुरेश जीवित रहता तो यह लड़ाई न होती।

इस लड़ाई के विवाद मे पडे बिना यह सोचने वाली बात है कि एक व्यक्ति जो दस-पन्द्रह करोड रुपए की सम्पत्ति का मालिक हो क्या वह भी हरिजन ही है ? इस समय इस विवाद मे भी पडने की आवश्यकता नही कि ये सम्पत्ति कैसे बनाई गई। इस वास्तविकता से कोई इन्कार नही कर सकता कि 1946 से लेकर 1980 तक बाबू जगजीवन राम लगातार मन्त्री बने रहे हैं। इस अवधि मे उन्होंने न तो कोई उद्योग शुरू किया न कोई व्यापार शुरू किया। फिर भी इतनी सम्पत्ति बना ली। क्या फिर भी वह हरिजन ही रहे ?

दूसरी ओर ऐसे ब्राह्मण या क्षत्रिय मिलते है जो जीवन भर मेहनत करते हैं फिर भी अपना एक मकान तक नही बना सकते। लेकिन सरकार उन्हें वे सुविधाए नही देती जो हरिजनो को देती है। मैं यह भी स्वीकार करता हू कि धन बनाना प्रत्येक व्यक्ति के लिए आसान नही होता। इस के लिए भी एक विशेष प्रकार की सूझबूझ की आवश्यकता होती है। कोई व्यक्ति इसके सहारे यदि धन बना ले तो उसका अधिकार है कि उसका जिस तरह प्रयोग करना चाहे कर सकता है। जो धन इकट्ठा किया गया है वह वैध है या अवैध इसका निर्णय करना सरकार का काम है। यदि वह स्वय ही सरकार हो तो उसके लिए यह और भी आसान हो जाता है। एक बार लोकसभा मे यह प्रश्न भी उठा था कि बाबू जगजीवन राम ने दस वर्ष आयकर नही दिया था तो इन्दिरा जी ने उत्तर दिया था कि वह भूल गए थे अब दे देंगे।

लेकिन देखना तो यह है कि हरिजन कौन है ? एक व्यक्ति करोड़पति बनकर भी हरिजन रहता है दूसरी ओर एक ऐसा व्यक्ति भी हरिजन नही बन सकता जिसे दो समय की रोटी भी नही मिलती—यह क्यो ?

(क्रमश)

—वीरेन्द्र

आर्य मर्यादा का वेदांक

जैसा कि मैंने पहले भी निवेदन किया था कि श्रावणी "रक्षा बन्धन" पर्व पर आर्य मर्यादा का वेदांक प्रकाशित किया जा रहा है। जिसमे बड़े उच्चकोटि के लेखको के लेख होंगे। इसलिए मेरी सभी आर्य समाजो तथा शिक्षा सस्थाओ के अधिकारियो से प्रार्थना है कि वह अपना आर्डर इस अंक के लिए अधिक से अधिक सख्या मे भेजें। यह अंक अधिक से अधिक लोगो के हाथ मे पहुचे। इसके लिए सब आर्य बन्धुओ को प्रयास करना चाहिए ताकि वेद का अधिक से अधिक प्रचार और प्रसार हो।

इस लिए अपना आर्डर सभा कार्यालय मे शीघ्रातिशीघ्र भेजने का कष्ट करें ताकि आपकी प्रतियां सुरक्षित कर ली जाए।

—सभा महामन्त्री

आयुर्वेद और आतंकवाद

लेखक—श्री वैद्य बेणी प्रसाद जी शास्त्री
कर्ताराम स्ट्रीट, लुधियाना

आयर्वेद और आतकवाद, सम्भव है यह शीर्षक ही आपको चौका देने वाला प्रतीत हो रहा होगा । भला आयुर्वेद का आतकवाद से क्या रिश्ता ? आयर्वेद चिकित्सा शास्त्र और आतकवाद राजनीति का अन्तिम शस्त्र । यह कोई रोग थोडा है । परन्तु विस्मय की कोई बात नही है, आयुर्वेद सार्वभौम चिकित्सा शास्त्र है, इसमे व्यष्टि एव सम्पूर्ण समाज को आक्रान्त करने वाली शारीरिक मानसिक ऐहलौकिक, पारलौकिक सब सब प्रकार की अधि व्याधियो का विवेचन किया गया है । भारतीय मनीषियो ने जीवन की प्रत्येक उथल-पुथल का सूक्ष्म निरीक्षण करके उनके कारण और निवारण का प्रयास किया है । आतकवादजन्य जनपदोध्वस सामाजिक रोग है, अत इसे आयुर्वेद की परिधि से बाहिर कैसे रखा जा सकता था ।

चरक सहिता के जनपदोध्वसनीय अध्याय म वर्णित भगवान् आत्रेय का मौलिक चिन्तन आज की पजाब समस्या पर पूरी तरह फिट बैठता है । क्या विचित्र सयोग है यह विवचन करते समय भगवान आत्रेय पजाब की भूमि पर ही विचरण कर रहे थे । उस समय पजाब की भौगोलिक सीमाए अत्यन्त विस्तृत थी ।

भगवान आत्रेय इस समस्या को सामाजिक महामारी (एपिडीमिक) मानते हैं । उनका कहना है कि इस शस्त्रोत्पा[illegible] जनपदोध्वस का कारण है [illegible] व्यक्ति की उच्छृंखलता [illegible] अधम अर्थात [illegible] । "[illegible] [illegible], तथा [illegible] प्रजाप [illegible] । तद्यथा— यदा देश नगर, निगम जनपद प्रधाना धर्मम त्म्याधर्मेण प्रजा वर्तयन्ति, तदाश्रितोपाश्रिता पौर जनपदा व्यवहारोपजीविनश्च तमधर्ममेवाभिवर्धयन्ति । तत सोऽधर्म प्रसभ धर्ममन्तर्धत्ते । तथा शस्त्रप्रभवस्य जनपदोध्वसस्याप्यधर्म एव हेतुर्भवति । तेऽति प्रवृद्ध लोभ रोष मोह माना दुर्बलानवमत्यात्मस्वजन परोपघाताय शस्त्रेण परस्परमभिक्रमन्ति, परान्वातिक्रामन्ति, परैर्वाभिक्रम्यन्ते । प्रागपि चाधर्मा दृते, नाशुभस्योत्पत्तिरन्यतोऽभूत् । तत उध्वसन्ते जनपदा: ।" अब देश नगर निगम एव जनपदो के उच्चाधिकारी एव राजपुरुष धर्म विमुख होकर प्रजा के साथ भ्रष्टाचार पूर्ण व्यवहार करते हैं तब उनके अधीनस्थ छोटे बडे कर्मचारी अपने से बडो का पेट भरने के लिए तथा उनके नाम पर स्वय धन एकत्रित करने के लिए निर्दयता पूर्वक रिश्वत एव घूसखोरी का बाजार गर्म कर देते है । राज कर्मचारियो से सताया गया व्यापारी वर्ग भी चोर बाजारी, मुनाफाखोरी, मिलावट आदि के घटिया से घटिया तरीके अपना कर अबोध जनता को लूटने लग जाता है, यह भ्रष्टाचार फलता-2 सम्पूर्ण प्रजा को अपने घेरे म ले लेता है और सम्पूर्ण समाज का चरित्र भ्रष्ट हो जाता है, लोभ, मोह और [illegible] पर [illegible] । लोग [illegible] [illegible] धर्म [illegible] को भूल जाते है । [illegible] सहयोग मे भ्रष्टाचार की [illegible] को [illegible] खोज लेते है । समय का अधिक लाभ उठाने के लिए अनेक लोग शस्त्रपाणी होकर हत्या और लूटपाट का बाजार गर्म कर देते हैं, दूसरो को पराओ को, मार्ग म रुकावट बनने वाले आत्मीय स्वजनो को भी मारने से नही हिचकिचाते । इस प्रकार की आपाधापी मे देश उजड जाया करते हैं । किसी भी युग मे जब जब ऐसी स्थिति आई है इसका मूल कारण सदा ही अधर्म अर्थात् भ्रष्टाचार रहा है । यह है भगवान् आत्रेय द्वारा प्रतिपादित आज की पजाब समस्या का मूल कारण ।

निष्पक्ष विचारको की मान्यता है कि पजाब का समस्या हिन्दू-सिख समस्या नही है, यदि अकाली इसे अपने धर्मयुद्ध का चमत्कार मानें तो यह उनका दिमागी दिवालियापन है, एक्शन ब्ल्यूस्टार के कारण कुछ भटके हुए नौजवानो का मसला मानने वाले लोग भी दिग्भ्रमित हैं । यह तो शत्रु राष्ट्रो द्वारा योजनाबद्ध रूप मे पजाब के मार्ग से भारत पर किया गया भयकर आक्रमण है । वैज्ञानिक ढग से लडा जा रहा नवीनतम गुरिल्ला युद्ध है । योजना, अत्याधुनिक शस्त्रास्त्र एव कुछ गिने चुने मार्ग दर्शक ही बाहर से आए हैं, शेष सब कुछ यहा से ही जुटाया जा रहा है । अनुकूल आधार-भूमि मिल जाने के कारण आनन-फानन मे विशाल क्षेत्र मे फैलता जा रहा है, अनेको सक्रिय सहयोगी हो गए हैं, सहानुभूति रखने वालो की सख्या तो लाखो को पार करने लगी है । भोले-भोले सामान्य सामान्य लोगो की बात छोडो, इस कूटनीतिक गहरी चाल मे मंजे हुए राजनैतिक नेताओ धार्मिक सामाजिक विचारको और चिन्तको को भी अपनी लपेट मे ले लिया है । हिटलर की 'फिफ्थ' कालम योजना का यह अत्यन्त परिष्कृत रूप है ।

इस देशघाती योजना को इतनी विस्तृत आधार भूमि कैसे मिल गई ? भगवान् आत्रेय के अनुसार भ्रष्टाचार इसका एक मात्र कारण है । भ्रष्ट नेताओ और भ्रष्ट अफसरो ने जनता को देश के साथ जुडने ही नही दिया । स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्र की रोशनी को जन सामान्य तक पहुचने ही नही दिया । गोरे लुटेरे गए और काले लटेरे आ गए । जन सामान्य की दशा और भी खराब हो गई है । इससे राष्ट्रीय शरीर की [illegible] क्षमता नष्ट हो गई । बाहर से आक्रमण आने की देर है, [illegible] की कमी नही है । स्वार्थी देश [illegible] के भाव सुलभ है । प्रति क्षण [illegible] शरीर पर हमला करते है, परन्तु प्रबल रोगप्रतिरोधक क्षमता के (एमुनिटी) कारण स्वय नष्ट हो जाते है । राष्ट्र के शरीर मे भी रोगप्रतिरोधक क्षमता उत्पन्न करने के लिए भ्रष्टाचार को भस्म करने वाला टीका बहुत बेरहमी से लगाना होगा । इससे स्वाभाविक जन सहयोग प्राप्त होगा । उसके साथ पुलिस एव अर्ध सैन्य बलो का सहयोग, बस इतने मात्र से राष्ट्र इस भयकर आक्रमण से विजयी होकर निकलेगा । केवल सेना का प्रयोग इसका सही स्थाई इलाज नही है । द्वितीय महायुद्ध के समय हिटलर को एक अमेरी जूनियर के बिना दूसरा देशद्रोही अंग्रेज नहीं मिला, शायद रूस मे तो एक व्यक्ति भी समानान्तर सरकार बनाने को न मिल सका । निदान परिवर्जन आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रथम सूत्र है । इसे पजाब की स्थानीय समस्या मानकर केवल पजाब सरकार के सहारे छोडना प्राणघातक होगा ।

आशा है प्रधानमन्त्री समस्या के इस पक्ष पर अवश्य विचार करेंगे और दृढता से कदम उठायेंगे । हजारो वर्ष पूर्व त्रिकालदर्शी महर्षियो ने जिस सत्य का साक्षात्कार किया था, मैंने तो केवल उसको सामान्य जन बोध गम्य भाषा मे प्रस्तुत ही किया है । इस मे मेरा कुछ भी नही हैं ।

आपका कर्त्तव्य

जिस प्रकार शरीर को जीवन्त एव स्वस्थ रखने के लिए धडकता हुआ दिल तथा प्रतिक्षण शुद्ध प्राण वायु का सतत सचार करने वाले फेफडे अत्यावश्यक है, ठीक उसी प्रकार किसी भी समाज को जीवन्त एव स्वस्थ रखने के लिए अनेको समाचार पत्रो का होना भी बहुत जरूरी है । समाचार पत्र समाज की दशा के परिचायक हैं, उनकी ग्राहक सख्या समाज की उदारता एव जागरूकता का माप दण्ड है । सम्पूर्ण उत्तर भारत मे चरक चर्चा एक मात्र आयुर्वेदिक पत्रिका है । इसे जीवन्त रखना आपका परम पुनीत कर्त्तव्य है आप स्वय ग्राहक बनें और अपने मित्र बन्धुओ को ग्राहक बनावें । वार्षिक चन्दा केवल 20 रुपये मात्र है ।

(चरक चर्चा पत्रिका से)

मण्डी बाग खजान्चियां का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज मण्डी बाग खजान्चियां लुधियाना का वार्षिक निर्वाचन (1986-87) का दिनांक 13-7-86 को सम्पन्न हुआ । इस मे डा. मूलचन्द जी को सर्वसम्मति से पुन: प्रधान चुना गया तथा उन्हे शेष अधिकारियो, अन्तरग सदस्यो और आगामी तीन वर्ष के लिए प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रतिनिधियो के मनोनयन का पूर्ण अधिकार दिया गया ।

—मन्त्री
आर्य समाज

आर्य समाज जीरा का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज जीरा (फिरोजपुर) का वार्षिक चुनाव 1-6-86 को हुआ । चुनाव निम्न प्रकार से हुआ :—

प्रधान—श्री सोमप्रकाश जी
मन्त्री—श्री मेहरचन्द जैन
उप-मन्त्री—श्री हरबसलाल जी
खजान्ची—श्री सुभाष चन्द जी
उप-प्रधान—श्री बलविन्दर कुमार जी
लायब्रेरियन—श्री हरबंसलाल जी
स्टोरकीपर—श्री प्रमोद कुमार जी

मन्त्री

आर्य युवक एवं आर्या युवति दल हरियाणा का महा सम्मेलन

शनिवार तथा रविवार 4,5 अक्तूबर 1986 को भारत वर्ष की सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक औद्योगिक नगरी पानीपत मे आर्य कालेज पानीपत के विशाल मैदान में (बस स्टैंड के सामने) प्रान्तीय स्तर पर बडे हर्षोल्लास के साथ होने जा रहा है। इस महा सम्मेलन में हरियाणा तथा अन्य प्रान्तो से सभी आर्य युवक एव आर्या युवतियां उपस्थित होंगे। इस अवसर पर आर्य जगत् के शिरोमणि सन्यासी वेदज्ञ विद्वान् संगीताचार्य ओजस्वी युवक वक्ता वर्तमान ज्वलन्त प्रान्तीय, राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओ के सन्दर्भ मे वैदिक सिद्धान्तो के आधार पर गम्भीर विचार देंगे।

यह सम्मेलन आर्य युवक एव युवतियो की जन-जन मे क्रान्ति का सूत्रपात करते दर्शनीय भव्य रैली के साथ व्यायाम प्रदर्शन, राष्ट्रीय अखण्डता सम्मेलन, वेद सम्मेलन, आर्य युवक एव युवति सम्मेलनो का आयोजन होगा।

ये महा सम्मेलन क्यों—

★ इस अवसर पर आर्य युवक एव युवतियो को राष्ट्र की अखण्डता के लिए तन-मन-धन से कार्य करने की दीक्षा दी जाएगी, ताकि इस समय राष्ट्र में बढ़ते हुए साम्प्रदायिक, राष्ट्र विरोधी तत्वो का डट कर मुकाबला कर सकें।

★ युवक एव युवतियो को शारीरिक मानसिक तथा सामाजिक रूप मे सर्वांगीण विकास के लिए दीक्षा दी आएगी।

★ आर्य युवक एव युवतियो को जातपात एव दहेज प्रथा जैसी भयकर सामाजिक कुरीतियो को तोड कर गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करने की दीक्षा दी जाएगी।

★ इस महा सम्मेलन के अवसर पर बहुत बडी सख्या मे युवको को शराब, मास, बीडी, सिगरेट आदि नशीले पदार्थों को त्यागने की प्रतिज्ञा कराई जायेगी। इसके साथ वे युवक इस दल के सदस्य बनकर आजन्म दल के नियमो का पालन करने का व्रत लेंगे। अत राष्ट्र की अखण्डता एव प्राचीन सत्य सनातन वैदिक धर्म के अनुसार मानवता मे विश्वास रखने वाले सज्जनो, माताओ, बहनों से निवेदन है कि अपने परिवार के युवक युवतियो को इस दल के सदस्य बनने तथा तन-मन धन से सहयोग देकर इस महा सम्मेलन की सफलता मे सराहनीय सहयोग दे।

—जगदीशचन्द्र वसु

श्री जयचन्द जी को श्रद्धांजलि

हैदराबाद आन्दोलन के सेनानी, महान् समाज सेवी एवम् दीनानगर के स्तम्भ तथा स्वामी स्वतन्त्रानन्द मैमोरियल कालेज दीनानगर की प्रबन्धकर्तृ सभा के मैनेजर मान्यवर श्री जयचन्द जी ओहरी का 12 जुलाई 1986 को हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। उनके निधन का समाचार सुनते ही सारा नगर शोक सागर मे डूब गया। 13 जुलाई को उनका अन्तिम सस्कार किया गया। शव यात्रा मे लगभग 10 हजार व्यक्ति सम्मिलित हुए। रात्रि को आर्य समाज मन्दिर मे पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में शोक सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर निम्नलिखित महानुभावों ने अपने प्रिय नेता को श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

श्री बलदेव राज विज (उप प्रधान)
श्री धमपाल गुगरा।
श्री गगा बिशन बाली।
श्री विजय कुमार महोपदेशक।
श्री रघुनाथ सिंह शास्त्री,
प्रिंसीपल श्री अश्विनी कुमार जी,
प्रिंसीपल श्री मन्धव राज जी,
मास्टर हसराज जी।
लाला धर्म दत्त जी।
श्री साक्षी राम जी
प मायाधारी जी।
चौधरी सुन्दर सिंह (एम पी)
श्री जयमुनि (एम एल ए,)
श्री रमेश जोशी,
कामरेड श्री हसराज।

—प्रिंसीपल अश्विनी कुमार

आओ ! उतर आओ !

लेखक—डा. श्री रश्मि मल्होत्रा बी. इ 10 डी
डी.डी ए फ्लैट्स मुनीरका, नई दिल्ली

दु खो का दु ख मानकर।
हम क्यो होते हैं दु खी ?
जहान मे सुख तो है केवल
—एक झरना-मात्र,
जो बहता है कभी-कभार
और अपनी फुहारो से,
अपनी ठडक म,
सराबोर कर देता है।
और हम इतने नादान हैं,
कि मान बैठते हैं,
कि शायद जिन्दगी—
इसी झरने तले ही कट जाएगी।
पर कहा ?
दु खो का समुद्र तो
मुह-बाए सामने खडा रहता है,
पल-हर-पल,
लहरो का सदेशा भेजता है—
कि—
आओ बन्धु ! मेरे मे डूब डूब जाओ
डूब जाओ बन्धु।
हा इसी समुद्र के बहाव म,
बहते चले जाओ।
लहरो मे अठखेलिया करते हुए,
राह की चट्टानो के,
टकराव से सम्भलते हुए,
मत्स्यी चालो और मगरमच्छी
सहानुभूतियो से,
बचते हुए,
गहरे उतर जाओ बन्धु।
उतरो। और गहरे उतरो।

क्यू घबराते हो बन्धु ?
गहरे पैठोगे तो कुछ
पाओगे न ?
तब ही तो खोज पाओगे
पीडाओ [illegible] से,
[illegible] मोती।
[illegible]
कि तुम [illegible]
[illegible] भटका
[illegible]ओ,
[illegible]
[illegible] गुम
[illegible]ओ !
थोडा हाथ [illegible] है।
थोडा [illegible] जरूरी है।
पार पा[illegible] है।
और अनमोल [illegible]
मोती [illegible]
उपाय जानना भी [illegible]।
पर, घबराओ न [illegible]
जब तक [illegible] उतरोगे
नही।
तब तक विचारा के मोती न मिल
पाएगे,
और तुम—
दु खो का [illegible] कर ही
पीडा [illegible]
उम्र भर।

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना का वार्षिक निर्वाचन

13-7-86 रविवार प्रातः 11 बजे आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना की साधारण सभा सम्पन्न हुई जिस में 1986-87 के लिए निर्वाचन किया गया।

सर्व सम्मति से श्री नवनीत लाल जी आर्य को प्रधान चुन लिया गया। उन्हें अन्तरग सभा उप समितिया, तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दिया गया। उन्होंने निम्न अन्तरंग सभा तथा उप समितियों की नियुक्तिया की। जो इस प्रकार हैं।

सरक्षक—सब श्री—ज्ञानचन्द जी आर्य, रामजीदास अग्रवाल, प्रवीनकुमार गर्ग एडवोकेट।

प्रधान—श्री नवनीत लाल आर्य।

उप प्रधान सवश्री ज्ञानी गुरदियाल सिंह आर्य, हर भगवान पावा, मदनमोहन चड्ढा, बलवन्त राम महता, देव राज आर्य।

मन्त्री—श्री बलदेव राज सेठी।

उप मन्त्री—सब श्री-महिन्द्र प्रताप आर्य, श्री यशपाल, सुधीर भाटिया। श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, सुरेश चड्ढा।

कोषाध्यक्ष—श्री अश्वनकुमार आर्य।

उप-कोषाध्यक्ष—श्री जगजीवन दास सूद।

पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री मास्टर रामप्रसाद जी सम्मड।

उप-पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री राजेन्द्र कुमार आर्य।

आर्य वीर दल अध्यक्ष—श्री मतवाल चन्द आर्य।

अन्तरंग सदस्य—सर्वश्री—रणवीर भाटिया, नरेन्द्र सिंह भल्ला, मगल सेन बधवा दीवान राजेन्द्र कुमार, रोशनलाल शर्मा, सीताराम कलसी, म लक्षमनदास, म कमचन्द चोपडा, दीवान चन्द तूफान।

उप-समितिया

न्याय तथा सलाहकार अध्यक्ष—श्री रणवीर भाटिया।

मनेजर औषधालय—श्री नरेन्द्रसिंह भल्ला।

उप-मनेजर औषधालय—मास्टर लक्षमण दास।

निरीक्षक—श्री भीम सेन थापर।

यज्ञ-अध्यक्ष—श्री कुलदीप जी आर्य

उप यज्ञ-अध्यक्ष—श्री देवराज जी आर्य, श्री दूनीचन्द आर्य।

लगर अध्यक्ष—श्री बसंयती राम महता।

उप-अध्यक्ष—श्री सुधीर भाटिया सन्त कुमार आर्य।

धनसग्रह अध्यक्ष—श्री ज्ञानी गुरदियालसिंह आर्य, उप-ज्ञान प्रकाश वर्मा

भवन निर्माण अध्यक्ष—श्री रणवीर भाटिया।

उप भवन निर्माण अध्यक्ष—श्री बोध राज भाटिया।

वेद प्रचार अध्यक्ष—श्री रोशनलाल आर्य

उप वेद प्रचार अध्यक्ष श्री कृपाराम

सहायता निधि अध्यक्ष—श्री ज्ञानचन्द जी आर्य, उप श्री ज्ञानी गुरदियाल सिंह आर्य।

हस्ताक्षर-नवनीत लाल आर्य।
प्रधान।

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत का चुनाव

आर्य समाज बड़ा बाजार पानीपत का निर्वाचन 20-7-86 को श्री रामानन्द जी सिंगला की प्रधानता में निम्न प्रकार सर्व सम्मति से हुआ।

प्रधान—श्री रामानन्द जी सिंगला।
उप-प्रधान—श्री मेघराज जी आर्य
मन्त्री—श्री कुलभूषण जी।
उप-मन्त्री—श्री [illegible] जी।
प्रचार मन्त्री—श्री ठाकुर दास जी बत्रा।
कोषाध्यक्ष—श्री मदन मोहन जी।
पुस्तकाध्यक्ष—श्री सुधीर कुमार जी सिंगला।

—कुलभूषण
मन्त्री

श्री वीर द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

आज हम कहां खड़े हैं—४

आर्य समाज का धर्म पक्ष

प्रामाण्यवाद

ले—श्री पण्डित सत्यदेव जी विद्यालंकार
शान्ति सदन 145।4 सेंट्रल टाऊन जालन्धर

"आर्य मर्यादा" के कुछ पिछले अंको मे आर्य समाज के शिक्षा कार्य तथा राजनीतिक कार्य महत्व पर विचार करने का प्रयत्न किया गया है। शिक्षा कार्य के विषय मे विचार करने पर कुछ ऐसी धारणा बनती है कि इस क्षेत्र मे आर्य समाज का बहुत बडा प्रयत्न है और बहुत अधिक महत्व है। इसे प्राय सब शिक्षा शास्त्री स्वीकार करते हैं। हमारे शिक्षा कार्य के अनेक स्तर और दिशाए हैं। संस्कृत पाठशालाओ तथा उपदेशक विद्यालयो से लेकर गुरुकुल विश्वविद्यालय तथा डी ए वी संस्थान तक सहस्रो की संख्या मे संस्थाए हैं तथा लाखो की संख्या मे शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी। इन सब मे स्कूल और कालिजो का विस्तार मुख्य हैं। सब संस्थाओ मे शिक्षा पद्धति वही है। सरकार द्वारा अनुमोदित और प्रचारित जो अन्य सब स्कूलो और कालिजो मे है। अन्तर केवल इतना है। एक हिन्दू वातावरण, दूसरा धर्म शिक्षा का प्रबन्ध तथा तीसरा हिन्दी तथा संस्कृत के महत्व को स्वीकार करना।

प्राय भारत मे सभी धर्मों के लोग अपनी-2 संस्थाओ मे इसी ढाचे पर काम कर रहे हैं। अर्थात अपना विशिष्ट वातावरण, अपनी विशिष्ट धार्मिक शिक्षा तथा अपनी विशिष्ट भाषाओ का महत्व पर शिक्षा सरकारी।

यहा यह समझ लेना चाहिए कि आर्य समाज की इन शिक्षा संस्थाओ मे न तो ऋषि दयानन्द प्रणीत शिक्षा पद्धति है और न ही कोई मौलिक या राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति। इस प्रचलित शिक्षा पद्धति की अपूर्णताओ के प्रति सारा देश सजग है। लगातार इस पर विचार हो रहा है। भारत भर के शिक्षा शास्त्री एक ऐसी शिक्षा पद्धति के विकास के लिए प्रयत्न कर रहे हैं जिस से भारतीय संस्कृति के मूल्य आदर्श भी विकसित हो, ज्ञान का स्तर भी ऊंचा रहे तथा सबसे बढ कर नवयुवको की आजीविका की समस्या का समाधान हो।

आर्य समाज के शिक्षा शास्त्री इस कार्य मे कितना योगदान दे सकेंगे यह भविष्य के गर्भ मे है।

इस ही सिलसिले मे "आर्य समाज का राजनीतिक कार्य" इस विषय पर भी कुछ विचार हुआ। ऋषि दयानन्द की मौलिक देश भक्ति की भावना से आज तक आर्य समाज अनुप्राणित है। ऋषिवर के शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा से लेकर आजतक के आर्य वीरो ने देश के राजनीतिक उत्थान मे खुल कर भाग लिया, अपूर्व बलिदान दिए तथा अपनी संख्या से कहीं अधिक महत्व का कार्य किया। पर आर्य समाज की अकाली दल या मुस्लिम लीग की तरह की कोई अलग पार्टी नहीं बनी। अकाली दल के 'राज करेगा खालसा' अथवा मुस्लिम लीग के "पाकिस्तान" जैसा अलग आदर्श, अलग विधान भी कोई नही बना। आर्य नेताओ ने अपनी 2 रुचि के अनुसार देश की आजाद और विस्मिल की सशस्त्र क्रान्ति संस्थाओ से लेकर गांधी जी की कांग्रेस और जनता पार्टी तथा भारतीय जनता पार्टी आदि सबमे भाग लिया और महत्वपूर्ण योगदान दिया।

आदरणीय प॰ सत्यदेव जी विद्यालंकार ने यह एक सार गर्भित लेख लिखा है। उन्होंने जो प्रश्न उठाए हैं वह विचारणीय हैं। इनके द्वारा उन्होंने आर्य जगत् की बहुत बड़ी सेवा की है। इस विषय पर यदि कुछ और विद्वान् भी लिखना चाहे तो उनके विचार "आर्य मर्यादा" मे प्रकाशित करने मे हमे प्रसन्नता होगी। मान्य पंडित जी ने कई गम्भीर प्रश्न उठाए हैं। जिन पर विचार होना चाहिए।

सम्पादक

आर्य समाज के "शिक्षा कार्य" तथा "राजनीतिक कार्य के विवेचन के बाद "धर्म पक्ष" अर्थात् धार्मिक सिद्धान्तो विचारो तथा कार्यों पर भी कुछ विचार करना प्रासंगिक होगा। यह ही आर्य समाज का मुख्य कार्य क्षेत्र है। यह एक बहुत बडा विषय है अत समूचे रूप मे तो विचार सम्भव ही नही एक छोटे से क्षेत्र को लेकर कुछ ऊहापोह किया जा सकता है। आर्य समाज के प्रबुद्ध लेखको ने पिछले दिनो समाचार पत्रो मे सिद्धान्त तथा साहित्य की अच्छी चर्चा चलाई है। वेद तथा वेदांगो के विषय मे प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य विश्वश्रवा जी तथा विज्ञान वेत्ता सन्यासी स्वा सत्य प्रकाश जी ने अपने विचार दिए हैं। इस ही प्रकार भाषा-विज्ञान के विद्वान् श्री वीरसेन जी वेदश्रमी जी ने अपने अनुसन्धान के कुछ परिणाम दिए हैं। दिल्ली से प्रकाशित होने वाली पत्रिका वेदोद्धारिणी मे भी वेद तथा वैदिक विषयो की चर्चा होती है। ऐसे ही न जाने कितने विद्वान् इस विषय मे परिश्रम कर रही है।

सब से पहले आर्य समाज के मूल श्रद्धा स्थल वेद के विषय मे, सामान्य लोगो की दृष्टि से कुछ चर्चा करनी होगी। वेद की प्रामाणिकता तथा अपौरुषेयता ब्रह्मा से लेकर जैमिनी तक, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, वेदाङ्ग, उपाङ्ग, उपवेद, उपनिषद् आदि सबका सर्वमान्य सिद्धान्त है। स्वा सत्यप्रकाश जी ने 15-12-85 मे प्रकाशित अपने लेख मे स्पष्ट किया है। उनका कहना है कि वैदिक साहित्य ही नही वेदार्थ को स्पष्ट करने वाले सायण, महीधर, स्कन्द स्वामी, वेंकट माधव आदि सब आचार्य भी वेद की प्रामाणिकता और अपौरुषेयता को मानते हैं। इस तथ्य के विषय मे सम्भवत किसी को सन्देह न होगा। पर सामान्य मनुष्य की दृष्टि से तो मुख्य प्रश्न यह है कि वेद कहते क्या हैं? वेद आप तो कुछ कहते नहीं, वेद का व्याख्याकार जो कुछ कहता है वही वेद का अभिप्राय समझ लिया जाता है। व्याख्याकार भिन्न 2 अर्थ करते है। एक श्रद्धालु आर्य सन्ध्या कर रहा है। भक्त भगवान से याचना करता है। पहले ही मन्त्र मे द्विविधा आ पडती है "आपो भवन्तु पीतये मे" ऋषि दयानन्द कहते हैं पीतये के पूर्णानन्द की प्राप्ति के लिए। स्वा वेदानन्द जी कहते हैं पान के लिए श्री मनोहर विद्यालङ्कार कहते हैं। पान द्वारा तृप्ति तथा रक्षण प्रदान करने के लिए अब भक्त क्या समझे और भगवान क्या समझें और क्या दें। यह एक शब्द का हाल नहीं सहस्रो शब्दो का यही हाल है नीचे कुछ उदाहरण देखिए —

सन्ध्या मन्त्रों से—

पीतये —स्वा दयानन्द जी— पूर्णानन्द की प्राप्ति के लिए।

श्री मीमांसक जी, पूर्णानन्द के भोग के लिए।

श्री वेदानन्द जी, पान के लिए।

श्री बुद्धदेव जी परम रस का पान करने के लिए।

श्री मनोहर जी पि अ पान द्वारा तृप्ति तथा रक्षण प्रदान करने के लिए।

ऋतञ्च-सत्यञ्च—स्वा दयानन्द जी (ऋत—वेद ज्ञान, सत्य—त्रिगुणात्मक प्रकृति।

श्री मीमांसक जी—ऋतम्-गति-शील चेतन जगत् सत्यम्-स्थिर रहने वाला अचेतन जगत्।

श्री वेदानन्द जी—ऋतम् ऋत
सत्यम्—सत्य

श्री बुद्धदेव जी—ऋतम्-यथार्थ ज्ञान वेद, सत्यम्—त्रिगुणात्मक प्रकृति।

श्री मनोहर जी वि-अ—ऋतम्—प्रकृति सम्बन्धी नियम और तद्रूप प्रकृति।

सत्यम्—जीवन सम्बन्धी नियम और जीवनधारी प्राणी।

असित —स्वा दयानन्द जी,
बन्धन रहित।

श्री क्षेमकरण जी, कृष्ण सर्प के समान सेना व्यूह।

श्री बुद्धदेव जी—बन्धन काटने वाला।

श्री वेदानन्द जी—बन्धन रहित भगवान्।

श्री मनोहर जी—बन्धनो से रहित असित नाग कुण्डल मारे हुए।

तिरश्चिराजी—स्वा दयानन्द जी, जो पदार्थ कीट पतङ्ग वृश्चिक आदि तिर्यक कहाते हैं उनकी पंक्ति।

श्री क्षेमकरणजी—तिरछी धारी वाले साप या पशु-पक्षी की पंक्ति—(समान व्यूह)।

श्री बुद्धदेव जी—कुटिल चाल से।

श्री वेदानन्द जी—छिप कर गति करने के कारण प्रकट होने वाला भगवान्।

श्री मनोहर जी—कुटिलताओ पर शासन करने वाले उसके गुण।

पृदाकु—स्वा दयानन्द जी—बड़े-बड़े अजगर सर्पादि विषधारी प्राणी।

श्री क्षेमकरण जी अजगर, बिच्छू, बाघ व चीता व हाथी। (अध्यक्ष व्यूह)

श्री बुद्धदेव जी—छिप कर वार करने वाले।

श्री वेदानन्द जी—पालन करने के साथ गतिदाता विधाता।

श्री मनोहर जी—स्वभाव में अच्छी तरह सूझने वाले गुण।

(फुत्कार शब्द करने वाला सर्प)

स्वज:—स्वा दयानन्द जी—जो अच्छी प्रकार अजन्मा है।

श्री क्षेमकरण जी—आप उत्पन्न होने वाला या बहुत दौड़ने वाला सर्प (तत्समान व्यूह)।

श्री बुद्धदेव जी-अपने आप ही प्रादुर्भूत होकर।

श्री वेदानन्द जी—अत्यन्त अजन्मा। उत्तम गतिदाता।

श्री मनोहर जी-स्वयं उत्पन्न ज्योति।

(क्रमश:)

सम्पादकीय

आर्य समाज के बुद्धिजीवी-3

आर्य समाज के प्रचार मे आजकल जो कठिनाईयां पैदा हो रही हैं उनके विषय में अपने विचार प्रकट करते हुए मैंने लिखा था कि आर्यसमाज में जो बुद्धिजीवी हैं उन्हें इस दिशा मे विशेष ध्यान देना चाहिए। आर्य समाज ने इस वक्त तक जो भी ख्याति प्राप्त की है उसका एक कारण यह भी है कि उसके विषय के प्रायः यह धारणा बनी हुई है कि इस में सुशिक्षित और बुद्धिजीवी बहुत हैं और यह लोग आंख और कान बन्द करके नहीं चलते अपितु प्रत्येक विचार को सत्य की कसौटी पर परख करके ही या तो उसे स्वीकार करते हैं या फैंक देते हैं। आर्य समाजियों की यह विशेषता भी होती है कि वह जब किसी सिद्धान्त को अपना लेते हैं तो उसे क्रियान्वित करने का भी प्रयास करते हैं। यह सब कुछ उसी स्थिति में हो सकता है जब एक व्यक्ति स्वयं बुद्धिजीवी हो, जो कुछ उसे कहा जाए वह उसे समझ सके और स्वयं ही निर्णय ले सके कि क्या ठीक है और क्या त्याज्य है।

इसलिए आर्य समाज के प्रचार में बुद्धिजीवियों का जो योगदान है उसकी अवहेलना नहीं की जा सकती परन्तु एक ऐसा क्षेत्र भी है जिसमे उन्होंने अपना वह सहयोग नहीं दिया जो उन्हें देना चाहिए था। वह अंग्रेजी का क्षेत्र है। हम इसे स्वीकार करें या न, परन्तु यह एक वास्तविकता है कि अंग्रेजी एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है। यदि हमने अपनी विचारधारा को अपने देश की सीमाओं से बाहिर भी ले जाना है तो यह अंग्रेजी के बिना न हो सकेगा। हमारे अपने देश मे ही बहुत से ऐसे व्यक्ति हैं जो अंग्रेजी को अधिक महत्व देते हैं। विशेष कर दक्षिण भारत में। ऐसे व्यक्तियों तक पहुचने के लिए अंग्रेजी मे साहित्य निर्माण की आवश्यकता है। इस दिशा मे कुछ काम तो हुआ है परन्तु उतना नहीं जितना कि होना चाहिए। श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी,श्री प.सत्यव्रत जी,श्री सत्यकाम विद्यालकार,श्री दत्तात्रेय जी और कुछ और महानुभावो ने भी अंग्रेजी में कुछ साहित्य तैयार किया है। यह बहुत उच्चकोटि का साहित्य है। परन्तु ऐसा नहीं जो जनसाधारण तक पहुच सके,बड़ी-2 पुस्तकें बहुत कम लोग पढ़ते हैं। छोटी पुस्तक कम कीमत वाली लोग खरीद भी लेते हैं और पढ़ भी लेते हैं। मैंने पिछले एक लेख मे लिखा था कि किसी जमाना मे आर्य समाज के प्रचार का साधन चालीस-पच्चास पृष्ठ का एक ट्रैक्ट हुआ करता था। जितना प्रचार ट्रैक्टों के द्वारा हुआ है किसी और प्रकार से नहीं हुआ आज आवश्यकता इस बात की है कि अंग्रेजी जानने वाले बुद्धिजीवी ऐसी छोटी-छोटी पुस्तकें लिखें जो सर्व साधारण मे प्रचलित हो सकें। बम्बई मे "फ्री इन्टरप्राईज" नाम की एक संस्था है वह देश की भिन्न 2 समस्याओं पर छोटे-छोटे ट्रैक्ट प्रकाशित करती रहती है और किसी का मूल्य एक रुपए से अधिक नहीं होता। इस समय तक सैकड़ों ट्रैक्ट प्रकाशित हो चुके हैं। क्यो न आर्य समाज भी इसी प्रकार की एक संस्था बना ले, जिसका काम केवल अंग्रेजी मे साहित्य तैयार करना हो। हमारी सब से बड़ी समस्या यह है कि हमारे नेताओं के पास इतना समय ही नहीं कि वह इस विषय पर विचार कर सकें। जब मैं लिखता हू तो नेता गण नाराज होते हैं। परन्तु यह एक सोचनीय स्थिति है कि आर्य समाज की स्थापना शताब्दी के पश्चात् आर्य समाज देश की जनता को कोई नई दिशा नहीं दिखा सकी। देश के सामने इस समय अनगिनत समस्याएं हैं उनके विषय मे आर्य समाज का दृष्टिकोण सामने नहीं आता। यह काम बुद्धिजीवियों का है उन्हे किसी संस्था विशेष की ओर नहीं देखना चाहिए अपनी ही एक छोटी संस्था बना कर प्रचार कार्य के लिए ऐसा साहित्य प्रकाशित करना चाहिए जो जनसाधारण मे सर्व प्रिय हो। आर्य समाज के 10 नियम हैं क्यों न एक-एक नियम पर एक ट्रैक्ट प्रकाशित किया जाए। इस प्रकार बहुत अधिक प्रचार हो सकता है और जिस क्षेत्र मे अब आर्य समाज पिछड़ रहा है उसमें वह फिर आगे निकल सकता है और आर्य समाज को फिर वही महत्व मिल सकता है जो उसे पच्चास-साठ वर्ष पहले मिलता था। क्या आर्य समाज के बुद्धिजीवी मेरे इस सुझाव पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करेंगे और आर्य समाज के प्रचार कार्य को एक नई दिशा देने का प्रयास करेंगे?

—वीरेन्द्र

गुरुकुल करतारपुर का महत्व

गुरु विरजानन्द स्मारक ट्रस्ट समिति करतारपुर के अन्तर्गत कई वर्ष से गुरु विरजानन्द जी की स्मृति मे यह गुरुकुल(संस्कृत महाविद्यालय) बड़े सुचारु रूप से चल रहा है। इस विद्यालय मे पजाब के अतिरिक्त दूसरे प्रान्तों के विद्यार्थी भी पढ़ते हैं। पजाब मे गुरुकुल पद्धति से चलने वाला यह एक मात्र विद्यालय है। इसके मन्त्री श्री चतुर्भुज जी मित्तल, प्रधान श्री सेठ शिवचन्द जी अग्रवाल और कोषाध्यक्ष श्री यशफूल जी अग्रवाल ... ही जालन्धर के प्रसिद्ध उद्योगपति और कर्मठ कार्यकर्ता हैं। इनकी देख-रेख मे यह विद्यालय निरन्तर उन्नति कर रहा है। एक छोटे से भवन मे विद्यालय आरम्भ किया गया था परन्तु आज एक विशाल भवन का रूप धारण कर चुका है। इसकी अपनी गौशाला है जिसमे कई गऊएं हैं। इस विद्यालय को केवल जालन्धर ही नहीं सारे पजाब और पजाब से बाहिर से भी सहयोग मिल रहा है। जब गुरुकुल का वार्षिकोत्सव होता है उस पर भारी सख्या मे लोग हुम-हुमा कर आते हैं साथ ही विशाल शोभा यात्रा भी निकाली जाती है। विद्यार्थियो का व्यायाम आदि का प्रदर्शन भी बड़ा प्रभावित करने वाला होता है। इस वर्ष यह उत्सव 28 सितम्बर से 5 अक्तूबर तक होगा।

तीन अगस्त को इसका वार्षिक चनाव हुआ सर्व सम्मति से पुनः इन्हीं तीनों अधिकारियो को चन लिया गया। इसके अन्य अधिकारी और कार्यकर्ता भी बहुत लग्नशील हैं। वह अपने अधिकारियो को पूरा-2 सहयोग देते हैं। विद्यालय के आचार्य श्री नरेश कुमार जी शास्त्री और स. अधिष्ठाता श्री सुखदेव जी शास्त्री दोनो बहुत ही लग्नशील हैं। अन्य अध्यापको का भी उन्हे पूरा-2 सहयोग मिल रहा है। किसी एक की प्रशसा क्या करें यहा तो सभी अधिकारी और कार्यकर्ता एक से एक बढ़ कर हैं और मिलकर विद्यालय को उन्नत करने मे लगे हुए हैं।

यह महाविद्यालय गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की विद्याधिकारी जो की विशारद तथा मैट्रिक की सयुक्त उपाधि तक मान्यता प्राप्त है। अर्थात् गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित है। इस वर्ष ट्रस्ट की सभा मे यह भी निर्णय किया गया है कि आगे इसे प्राज्ञ, विशारद तथा शास्त्री श्रेणियो के लिए गुरुनानक विश्वविद्यालय अमृतसर के साथ सम्बद्ध करा लिया जाए। इन कक्षाओ मे प्रवेश की तिथि 20 अगस्त तक बढ़ा दी गई है। अब प्रवेश आरम्भ है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने शास्त्री कक्षा को कर्मकाण्ड की, पुरोहित, उपदेशक कक्षा के साथ जोड़ने का प्रस्ताव रखा और कहा कि ऐसा करने से जहा सस्कृत अध्यापको की पूर्ति होगी वहा उपदेशक वर्ग का अभाव भी दूर होगा। श्री वीरेन्द्र जी ने इसमे सगीत की शिक्षा को भी आवश्यक अग बनाने पर जोर दिया। यह प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया। वैसे तो इस दिशा मे यह विद्यालय पहले ही कार्य कर रहा है परन्तु अब यहा विशेष रूप से शास्त्री के साथ-साथ उपदेशक भी तैयार होंगे।

मै समझता हू विद्यार्थियो के लिए यह शिक्षा का एक सर्वोत्तम स्थान है केवल मात्र 30 रु. मासिक पर दूध, भोजन, आवास एव शिक्षा की समुचित व्यवस्था है और जो शास्त्री के छात्रो के लिए सर्वथा निशुल्क है। उच्च और धार्मिक शिक्षा प्राप्त कराने के लिए माता-पिता अपने बच्चो को इस विद्यालय मे प्रवेश कराएं ताकि आज के दूषित वातावरण से भी बच्चो को बचाया जा सके। इसलिए विद्यार्थियो को प्रवेश के लिए शीघ्र ही आचार्य जी से सम्पर्क करना चाहिए।

दानी महानुभावों के लिए भी यह एक मात्र ऐसा स्थान है जहां उनका दान विद्या पर खर्च किया जाएगा और जिसका उन्हे अतिपुण्य मिलेगा। हम आशा करते हैं कि दानी महानुभाव भी इस विद्यालय को धन भेज कर पुण्य के भागी बनेंगे। गुरु विरजानन्द जी की जन्मभूमि करतारपुर एक पुण्य भूमि है उनकी स्मृति में चलने वाले इस विद्यालय को सभी आर्य बहनें तथा भाई अपना पूरा-पूरा सहयोग दें।

—सह-सम्पादक

जिनकी कथाओं में अमृत बरसता था—

पीयूषवर्षी स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

ले—डा भवानीलाल जी भारतीय चण्डीगढ़

स्वामी दयानन्द के भक्ति भावापन्न जीवन चरित्र दयानन्द प्रकाश के अमर लेखक स्वामी सत्यानन्द सरस्वती का जन्म ग्राम पोठोहार जिला रावलपिण्डी मे 1862 ई मे हुआ था। ये जैन मतावलम्बी थे। जैन समाज मे इनकी पर्याप्त ख्याति थी। जन मत के अनुसार इन्होंने अनेक कुछ साधनाए भी की, किन्तु आत्मिक शान्ति नही मिली। तब ये आर्य समाज की ओर आकृष्ट हुए और दिसम्बर 1898 मे विधिवत् आर्य समाजी बन गए। आर्य समाज बच्छोवाली मे रह कर स्वामी जी ने वेद उपनिषद् रामायण, महाभारत आदि का अध्ययन किया और सरल किन्तु आकर्षक शैली मे इन ग्रन्थो की कथाए आर्य समाजो मे करने लगे। मधुर प्रवचन कर्ता तथा कथा करने वाले के रूप मे स्वामी सत्यानन्द को आर्य समाज मे पर्याप्त ख्याति मिली। 1921 मे ये गुरुकुल कागडी के आचार्य बनाए गए और 1924 तक इस पद पर रहे।

लाहौर मे प ठाकुर दत्त अमृतधारा वालो के यहा आपका निवास रहता था। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने 1925 मे जब गुरुदत्त भवन मे उपदेशक विद्यालय आरम्भ किया, तो स्वामी जी ने इस कार्य हेतु एक लाख रुपया एकत्र कर कर सभा को भेन्ट किया। 9 अक्तूबर 1927 को जब आप महाशय राजपाल बुक सैलर की दुकान पर लाहौर के अनारकली बाजार में बैठे थे तो अब्दुल अजीज नामक मुसलमान ने इन्हे ही रगीला रसूल का प्रकाशक महाशय राजपाल समझ कर इन पर छुरे का प्रहार किया। पर्याप्त समय तक हस्पताल मे रह कर स्वामी जी ने स्वास्थ्य लाभ किया।

कालान्तर मे स्वामी सत्यानन्द के विचारो मे परिवर्तन आ गया और इनका झुकाव सन्तमत की ओर हो गया। अब ये अपने भक्तो को रामनाम की दीक्षा देने लगे और अपने इन नवीन विचारो को पुस्तक रूप मे भी निबद्ध किया जिसे इनके अनुयायियो मे प्रचारित किया गया गया। प बुद्धदेव मीरपुरी ने स्वामी जी के इस सिद्धान्त स्खलन की आलोचना एक पुस्तक लिख कर की जो सत्यानन्दी पाखण्ड खण्डन शीर्षक से 1930 मे आर्य प्रेस अमृतसर से प्रकाशित हुई। 98 वर्ष की दीर्घायु पार कर स्वामी सत्यानन्द 13 नवम्बर 1960 को परलोक वासी हुए। उनके द्वारा रचित ग्रन्थो का विवरण इस प्रकार है।

1 श्रीमद्दयानन्द प्रकाश अत्यन्त ललित भाषा शैली तथा भावना प्रवण शैली से लिखा गया स्वामी दयानन्द का जीवन चरित सर्व प्रथम 1975 वि (1918 ई) मे राजपाल अध्यक्ष आर्य पुस्तकालय, लाहौर द्वारा प्रकाशित हुआ। गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली, सत्यप्रकाशन मथुरा वेद प्रचारक मण्डल दिल्ली (1964 ई) तथा दयानन्द सस्थान, दिल्ली ने इसे अनेक सस्करणो में छापा है।

2 एकादशोपनिषद् ईशोपनिषद् से श्वेताश्वतरोपनिषद् पर्यन्त 11 उपनिषदो की टीका लाहौर से प्रकाशित हुई 1995 वि मे द्वितीय सस्करण छपा।

3 वाल्मीकीय रामायण सार (पद्य)

4 श्रीमद्भगवद्गीता (भाषानुवाद)

5. आय समाजिक धर्म आर्य समाज के दस नियमो की सारगर्भित व्याख्या।

प्रथम सस्करण साहित्यसदन लाहौर से प्रकाशित हुआ। द्वितीय सस्करण सुधारक (गुरुकुल झज्जर) का मासिक मुख पत्र) के विशेषाक के रूप मे फाल्गुन 20,5 वि मे प्रकाशित हुआ।

6 सत्य उपदेश माला—सरस्वती आश्रम ग्रन्थमाला सख्या 4 के अन्तर्गत राजपाल एण्ड सन्ज लाहौर से प्रकाशित 1921 मे द्वितीय सस्करण छपा।

7 दयानन्द वचनामृत—

सत्यग्रन्थ माला के प्रथम पुष्प के रूप मे साहित्य सदन लाहौर से प्रकाशित। इसमे ऋषि दयानन्द के विभिन्न 15 विषयो पर उपदेशो का सग्रह किया गया है। अमृत कलश शीर्षक से आर्य ज्योति जालन्धर ने फरवरी 1972 मे इसे विशेषाक के रूप में पुन. प्रकाशित किया।

8 भगवद् प्राप्ति क्यों और कैसे? प ओम् प्रकाश आर्योपदेशक जालन्धर द्वारा प्रकाशित।

—

सहमा वतमान

ले—श्री मनजीत अरोड़ा कक्षा-10 शिवदेवी मल्र्स हाई स्कूल जालन्धर

रात होती है तरुण के आलिंगने में।
दिन गुजरता है बेकरारी के आलिंगने में॥

जमा रौनक होती है आतंक की,
हर शाम जब भी होती है जवान।
कापती कहीं सिसकती जिंदा,
बेफिक्री मस्ती हो गई मुर्दा।

कपित होते निकल पडते जो राही घर से,
घर छूट पाते न पल भर भी डर से।
हथेली पे लिए जान फिरते हैं नर-नारी,
मानवता को चुकानी पडी आज कीमत भारी।

पुछे जाते हैं सिन्दूर कई जाने अनजाने में,
होती है वृद्धि नित आतंकवाद के बढाने मे।
असफल है सरकार हो रही हानि को भर पाने मे,
रत्ती भर भी शान्ति रही न अब जमाने मे।

दिन दिहाडे बिछुड जाते हैं बच्चो से बाप,
बढता जाता है जीव हत्या का पाप।
प्रलय की करीब आ रही है रात,
घिरी खतरे से आज ये मानस जात।

मानवीय चीत्कार से होता है शोर,
छिन जाता है किसी से मुह का भी कोर।
न होगी क्या जागृति की कभी भोर,
निर्दोष जनता सहेगी अब जुल्म कितने और।

उठ चुका है जहा से गाधी नेहरू का नाम,
रामायण, महाभारत, गीता जैसे हो गई है बदनाम।
भरी पडी है आज मारकाट की दुकान,
पड गई खतरे मे आज तो भारत की शान।

जरा झुकना......तो हम सीखें

जड वस्तु बोलती नही परन्तु विद्वान् लोग हमें समझाने के लिए या शिक्षा देने के लिए जड वस्तु को अपनी वाणी दे देते हैं और उसकी उपमा से एक सार गर्भित उपदेश हमे द जाते हैं।

"एक घडा पानी से भरा था उसके ऊपर उसे ढकने के लिए एक कटोरी रखी थी। घडा दिन भर लोगो की प्यास बुझाता रहा जो भी प्यासा बर्तन लेकर उसके आगे झुका घडे ने स्वय भी झुक कर उसे भर दिया। खाली बर्तन आते गए और भरते गए। घडे के ऊपर पडी कटोरी खाली की खाली रही। उससे यह सहा नही गया आखिर अधीर होकर उसने घडे से पूछ ही लिया कि आप सभी खाली बर्तनो को भर रहे हो जो भी आपके पास आता है मैंने तुम्हारा क्या बिगाडा जो अभी तक मुझे एक बूद भी पानी नहीं दिया। घडा बोला, जो भी खाली बर्तन मेरे पास आकर झुकता है मैं भी उसे झुक कर पानी से भर देता हू लेकिन तू तो मेरे सिर पर अकडी बैठी है। तुझे पानी कैसे मिल सकता। लेने वाला नीचे होता है देने वाला ऊपर। यदि पानी लेना है नीचे आओ और झुको मैं तुम्हें भी पानी से भर दूगा। अब कटोरी को अपनी अज्ञानता का बोध हुआ।"

ज्ञान व विद्या लेने वाला नम्र हो कर गुरु के चरणो में झुक, बैठ कर ही विद्या ले सकता। घमण्डी और अभिमानी व्यक्ति ज्ञानी गुरु के पास रहते हुए भी विद्वान् नहीं हो सकता। ज्ञानी बनना है तो झुकना सीखो।

—श्रीराम पथिक भिक्षु
कुतुबपुर (सहारनपुर)

श्रीकरण जी शारदा को एक श्रद्धांजलि

(जन्म 14 जून 1919 निधन 20 जुलाई 1986)

आना जाना संसार का क्रम है। यह क्रम नहीं होता तो इसका नाम संसार न होकर कुछ और होता, क्रम सामान्य होने पर भी इसमें सब सामान्य नहीं होते। जिनका जीवनकाल अपने और अपने परिवार से हटकर समाज के लिए होता है, उनका जीवन व्यक्ति में न होकर समाज मे प्रतिष्ठित हो जाता है। समाज मे व्यक्ति स्वयं से नहीं अपने कार्यों से जीवित रहता है यही जीवन बाद में आने वाली पीढी को जीवन की दिशा प्रदान करता है और सामाजिक जीवन जीने की प्रेरणा देता है। ऐसा ही प्रेरणादायी एक जीवन है परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्रीकरण जी शारदा का। आज वे अपने पार्थिव शरीर से हमारे मध्य नहीं रहे, उनकी भौतिक लीला समाप्त हो गई परन्तु उनका यश शरीर अक्षुण हुआ जो हमें प्रेरणा प्रदान करता रहेगा।

शारदा जी को सामाजिक जीवन की कला अपनी पैतृक परम्परा से मिली थी। उनके परिवार में देश भक्ति, समाज सेवा और सार्वजनिक कार्यों के निष्पादन की भावना को उच्च स्थान प्राप्त था। इसी परिवार मे स्वर्गीय रामविलास शारदा जो आर्य समाज के उच्चकोटि के नेता थे जिन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द, मास्टर आत्माराम अमृतसरी तथा स्वामी नित्यानन्द आदि के सहयोग से सार्वदेशिक सभा की स्थापना के पूर्व आर्य समाज का नेतृत्व एव मार्गदर्शन किया। इसी परम्परा मे इनके सुपुत्र देश भक्त चादकरण शारदा का जीवन देश, धर्म तथा समाज के लिए समर्पित रहा है। उनके कार्य और नेतृत्व की कथा इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ हैं। इन्हीं के परिवार में श्रीकरण शारदा का जन्म आषाढ कृ प्रतिपदा वि स 1976 तदनुसार 14 जून 1919 को बडौदा में हुआ था। आपके नाना राज्यरत्न स्व आत्माराम जी अमृतसरी उस काल मे बडौदा मे निवास करते थे। इनकी माता जी का नाम श्रीमती सुखदा देवी था। वे भी अपने समय मे अग्रगण्य महिला समाज सेविका थी, आपने अजमेर को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर अनेक लोक कल्याण के कार्य किए थे। ऐसे योग्य माता-पिता के मार्ग दर्शन मे शारदा जी का लालन-पालन हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा अजमेर के गवर्नमेंट हाई स्कूल तोपदडा मे तथा गवर्नमेंट कालेज अजमेर मे हुई थी। उच्च शिक्षा के लिए आपने आगरा कालेज आगरा को चुना तथा यहा से आपने बी ए एल एल बी की परीक्षा सम्मान सहित उत्तीर्ण की।

वह समय था जब देश में 1942 का आन्दोलन अपनी चरम सीमा पर था। शारदा जी की देश भक्ति ने उन्हें राष्ट्रीय सग्राम मे कूदने के लिए बाध्य कर दिया तो इसमें आश्चर्य की क्या बात। इस युद्ध मे सक्रिय भाग लेने का आपको पुरस्कार मिला और आपको कालेज से निष्कासित कर दिया गया। एक देश भक्त समाज सेवी परिवार के उत्तराधिकारी के रूप मे आपको देखकर विदर्भ के प्रसिद्ध देश भक्त एव कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता श्री बृजलाल बियाणी ने अपनी बडी पुत्री कमला का विवाह श्रीकरण जी के साथ कर दिया। शिक्षा प्राप्ति के अनन्तर आपने अजमेर को अपना कार्य क्षेत्र बनाया। वकालत करते हुए आप सार्वजनिक जीवन मे भी बराबर भाग लेते रहे। आप 1944 से 1950 तक अजमेर कांग्रेस के मन्त्री तथा 1953 तक प्रदेश कांग्रेस के सदस्य रहे। स्वतन्त्रता के उपरान्त कांग्रेस को अपने उद्देश्य से दूर हटते देख कर आपने जनसघ की सदस्यता स्वीकार की। वहां भी जिले के अध्यक्ष के रूप मे तथा प्रदेश सगठन कर्ता के रूप मे नेतृत्व की अग्रिम पक्ति मे प्रतिष्ठित रहे। जितने भी राजनैतिक एव राष्ट्रीय आन्दोलन हुए आपने उनमें बढ-चढ कर भाग लिया। 1971 मे बगला देश की मान्यता के लिए जनसघ द्वारा चलाए आन्दोलन मे भाग लेकर गिरफ्तार हुए और आप को तिहाड जेल मे रखा गया। इसी प्रकार पाकिस्तान के युद्ध मे जीते गये प्रदेश जब भारत सरकार ने लौटाने का निश्चय किया तब भी आपने अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व मे सत्याग्रह किया।

जब भी देश में बाहर या अन्दर विपत्ति आई, कही अन्याय होने लगा तो आपने अपने पूरे बल से उसका विरोध किया। श्रीमती गांधी ने जब देश मे आपातकाल थोपा तब आपको भारत सरकार बाहर कैसे रहने देती। आपको गिरफ्तार करके 14 माह तक अजमेर जेल मे रखा। 1977 के चुनाव मे अजमेर की जनता ने आपको ससद मे पहुचा दिया, आप प्रचण्ड बहुमत से विजयी हुए। आपने इस अवधि के कार्यकाल में अजमेर एव देश के अनेक लोक हितकारी कार्य किये।

आर्य समाज के क्षेत्र में आपकी प्रारम्भ से ही रुचि थी। 22 अप्रैल 1956 से आप परोपकारिणी सभा के सदस्य रहे वे सभा के पुस्तकाध्यक्ष तथा सयुक्त मन्त्री रहे सन् 1964 से आजीवन आप परोपकारिणी सभा के मन्त्री चुने जाते रहे। आपके मन्त्रित्व काल में सभा की उपलब्धिया गौरव प्रदान करने योग्य हैं। आपने न केवल सभा की सम्पत्ति की सुरक्षा की अपितु उसे निरन्तर बढाने का प्रयत्न करते रहे। आपका अधिकाश समय सभा के हित चिन्तन में ही व्यतीत होता था अस्वस्थ होने पर भी सभा के कार्य से न्यायालय मे जाना, प्रशासन के लोगो से मिलना सभा की सम्पत्ति व कार्यकलाप की देखभाल करना आपकी जीवनचर्या थी। 1983 मे विश्व स्तर पर ऋषि निर्वाण शताब्दी का आयोजन कर आपने अपनी कर्मठता और ऋषि भक्ति का अनुकरणीय परिचय दिया था। उस काल मे कई वर्षों तक आपको निरन्तर अथक काम करना पडा, परन्तु काम की सफलता ही आपका लक्ष्य रहा। आपने अपने स्वास्थ्य व विश्राम की कभी परवाह नही की और आर्य समाज के इतिहास के अविस्मरणीय समायोजन को आर्य जनता व सभा के कर्मठ सदस्यो के सहयोग से सफल कर दिखलाया। इस समारोह के अवसर पर सभा की ओर से अनेक ऐतिहासिक कार्य किये गये। ऋषि के अनेक ग्रन्थो के सुन्दर सस्करण प्रकाशित किये गए। वेद भाष्य के अतिरिक्त सभी ऋषिकृत ग्रन्थो को दो भागो मे आकर्षक साज-सज्जा के साथ प्रकाशित कराया। ऋषि उद्यान मे एक भव्य सुन्दर विशाल यज्ञशाला का निर्माण भी आपने अपने पुरुषार्थ से कराया। यह यज्ञशाला शारदा जी की लगन और ऋषि के प्रति श्रद्धा का कीर्ति स्तम्भ है। शताब्दी के अवसर पर इस यज्ञशाला मे एक मास तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया था। इस प्रकार यह शताब्दी समारोह भी आपके जीवन की सबसे बडी सफलता कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नही होगी। तभी से आपका स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा था गत मास आप चिकित्सा के लिए कलकत्ता गए थे और हम सभी आशा कर रहे थे, आप स्वस्थ होकर हमारा उत्साह बढाएगे और लम्बे समय तक मार्गदर्शन करेंगे परन्तु ईश्वरेच्छा बलीयसी। 20 जुलाई की रात्रि मे उन्होंने अपने नश्वर शरीर का त्याग कर अपने यश शरीर को हमारे मध्य मार्गदर्शक बना दिया। ऐसे कर्मठ लग्नशील, ऋषिभक्त, आर्य सेवक के लिए हमारी नम्र श्रद्धाजलि।

> परिवर्तनी ससारे मृतः को वा न जायते।
> स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्॥

—धर्मवीर

---

77 वें बलिदान दिवस पर—

महान् शहीद क्रांतिकारी मदनलाल ढींगरा

भारत के महान क्रान्तिकारियो का एक ध्येय था कि भारत को स्वतन्त्र करा कर राम राज्य स्थापित करेंगे।

अग्रेज अफसर को गोली से उडा देने वाले पजाब के वीर सपूत श्री मदन-लाल ढींगरा ने लन्दन मे भारत के महान क्रान्तिकारी वीर सावरकर जी के आदेश पर सन 1907 को कर्जन वेली को गोली से उडा दिया।

चर्चिल जैसे भारत विरोधी भी उस के शौर्य पर झूम उठे। विश्व भर मे अपने समाचार पत्रो मे इस सूचना को प्रथम पृष्ठ पर छापा। अपने अग्रलेखो मे भारत के महान नेता वीर सावरकर को बधाईया भेजी।

वीर मदन लाल ढींगरा ने अपने बयान मे कहा कि मैं हिन्दू हू और हिन्दू होने के नाते ही भारत स्वतन्त्रता के हेतु भगवान राम और कृष्ण की पूजा पद्धति को मानता हू। उन्हे जिस दिन फासी का आदेश हुआ उन्होंने प्रात चार बजे उठकर स्नान के उपरान्त वीर सावरकर द्वारा भेजे गए यज्ञोपवीत को धारण किया गीता आदि के पाठ के उपरान्त सादे वस्त्र पहन कर सीना तान कर हसते हुए उस फासी के तख्ते की ओर अग्रसर हुए। अग्रेज इसाई पादरी यीसू मसीह का उपदेश देने के लिए जैसे ही वीर ढींगरा के समीप आया तो तत्क्षण ही उसे एक ओर हो जाने का इशारा कर दिया।

लन्दन मे कर्जन वेली को गोली से उडा देने के बाद एक शोक सभा लन्दन मे आयोजित की गई। सभा की अध्यक्षता सर आगा खा ने की जिस मे अमृ-सर पजाब के वीर मदनलाल ढींगरा के कार्य की निन्दा हेतु एक प्रस्ताव रखा, जिस का विरोध डटकर वीर सावरकर जी ने किया सभा के अध्यक्ष ने विरोध करने वाले का नाम पूछा तो सिंह आवाज मे कहा सावरकर, सभा मे भगदड मच गई वीर सावरकर जी ने अपने प्राणो की भी बाजी लगा कर वीर ढींगरा का केस शेरो की भान्ति लडा वीर ढींगरा को 16 अगस्त 1908 को फासी पर लटकाया गया।

—जगबहादुर मल्होत्रा
30-पाठक निवास- पक्का बाग जालन्धर

हरिजन कौन है ? (2)

गांधी जी ने जब छूतछात समाप्त करने का आन्दोलन शुरू किया था उनका वास्तविक उद्देश्य समाज के उस वर्ग को ऊंचा उठाना था जो शताब्दियों से समाज के पांव तले दबाया जा रहा था। उन्हें हरिजन का नाम दे दिया लेकिन यह था वास्तव मे उन लोगो के लिए जो आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े हुए थे और जिन्हें हम अछूत कहते थे।

गांधी जी से पहले एक और महापुरुष हुए थे जिन्होंने छूतछात समाप्त करने की कोशिश की थी वह महर्षि दयानन्द सरस्वती थे। उनके आदेश के अनुसार आर्य समाज ने अछूतों के उद्धार के लिए एक आंदोलन शुरू किया था। अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उसमे सक्रिय भाग लिया था लेकिन उन्होंने उसका नाम अछूतोद्धार नहीं बल्कि दलितोद्धार रखा था अर्थात कोई व्यक्ति जो दलित है चाहे आर्थिक रूप से या सामाजिक रूप से उसे दलित ही कहा जाता था और उसके उद्धार के लिए जो आंदोलन शुरू किया गया था उसका नाम दलितोद्धार रखा गया था।

खालसा पंथ छूतछात की अनुमति नहीं देता। श्री गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज ने जिन पांच प्यारों को खालसा सजाया था उनमे केवल एक खत्री था। शेष चारो वे थे जिन्हें उस समय पिछड़ी जाति के लोग कहा जाता था और आज हरिजन कहते हैं। गुरु गोविन्द सिंह जी के पिता शहीदो के सिरताज गुरु तेगबहादुर का सिर दिल्ली से उठा कर आनन्दपुर साहेब तक पहुंचाने वाला भी एक मजहबी सिख था। मजहबी सिखो को भी हम हरिजन कहते हैं। गुरु साहेबान ने किसी को शूद्र या हरिजन नहीं माना था। वह सबको बराबर समझते थे। इसीलिए उन्होंने कहा था :—

"रंगरेटा गुरु का बेटा"

जब स्वाधीनता के पश्चात् देश के नए संविधान मे हरिजन को कुछ रियायतें दी गई। तो अकालियो ने भी कहना शुरू कर दिया कि उनके हरिजनो को भी यह सुविधाएं दी जाएं। सरदार पटेल ने कहा कि सिख धर्म छूतछात की अनुमति नहीं देता लेकिन मास्टर तारा सिंह और ज्ञानी करतार सिंह न माने। उन्हें डर था कि यदि यह रियायतें केवल हिन्दू हरिजन तक ही सीमित रही तो मजहबी सिख हिन्दुओ मे चले जाएंगे। इसीलिए इस प्रश्न पर उन्होंने एक मोर्चा लगा दिया। और जो कुछ सरदार पटेल मानने को तैयार नहीं हुए थे पण्डित जवाहर लाल मान गए। अकालियो ने मजहबी सिख और अन्य पिछड़े वर्गों को अलग होने से तो बचा लिया लेकिन उन्हें वह सम्मानजनक स्थान नहीं दिया गया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी का प्रधान कोई जाट या गैर जाट सिख हो सकता है लेकिन मजहबी सिख नहीं हो सकता। गैर जाट सिख भारत का राष्ट्रपति तो हो सकता है और मजहबी सिख भारत का गृहमन्त्री हो सकता है लेकिन शिरोमणि कमेटी का प्रधान नहीं हो सकता।

अभिप्राय यह कि कौन हरिजन है और कौन नहीं यह अब कोई धार्मिक प्रश्न नहीं रहा। एक शुद्ध राजनीतिक प्रश्न बन गया है। आज हरिजनो की आर्थिक स्थित पहले से अपेक्षाकृत बहतर है। बाबू जगजीवन राम जैसे करोड़पति तो शायद अधिक मिलने कठिन हो लेकिन लखपति अब आपको कई मिल जाएंगे। इसके अतिरिक्त वह बड़-बड़े पदो पर नियुक्त हैं। प्रगति का कोई द्वार ऐसा नहीं जो उनके लिए बन्द हो। वे अपने देशवासियो के लगभग बराबर आ गए हैं।

फिर भी उनमे कुछ लोग अभी हैं जो आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े हैं। ऐसे लोग गैर हरिजनो मे भी मिल जाएंगे ब्राह्मण और क्षत्रियो मे भी मिल जाएंगे। ऐसे लोग हर वर्ग और हर समाज मे पिछड़ा हुआ जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उन गरीबो को कोई पूछता नहीं।

ऐसे हालात मे क्या अब समय नहीं आ गया जब हरिजन की नई व्याख्या की जाए। बाबू जगजीवनराम करोड़पति बन कर भी हरिजन कहलाए और कोई ब्राह्मण कंगाल रहकर भी हरिजन न कहला सके यह समझ में नहीं आ रहा। हमारे समाज मे यह जो नया भेदभाव पैदा किया जा रहा है उसके कारण हिन्दू समाज मे एक नई कशमकश शुरू हो गई है। सरकारी नौकरियों और कालेजों में प्रवेश इसी आधार पर होते हैं। कम अंक लेने वाले लड़के को इसलिए प्रवेश दे दिया जाता है कि वह हरिजन है और अधिक अंक लेने वाले को प्रवेश इन्कार कर दिया जाता है क्योंकि वह हरिजन नहीं है। गुजरात में कुछ समय से जो आन्दोलन चल रहा है उसका एक कारण भी यह ही है।

इन हालात मे हरिजन कौन है—इसकी नई व्याख्या करनी पड़ेगी। सरकार को एक विशेष स्तर निर्धारित करना पड़ेगा जो उस पर पूरा उतरे वही हरिजन समझा जाए। जन्म के आधार पर किसी की जाति निर्धारित करने का क्रम समाप्त होना चाहिए। यह इसलिए भी आवश्यक है कि जो हरिजन अब सम्पन्न हो रहे हैं उनमे जो लखपति और करोड़पति बन रहे हैं वे हरिजनों के गरीब वर्ग की कोई मदद नहीं करते, बल्कि उन्हें घृणा की दृष्टि से देखते हैं। सरकार की ओर से जो सुविधाएं मिलती हैं वे सब वे पूंजीपति हरिजन ले लेते हैं। लेकिन अपने ही हरिजन भाईयो की कोई मदद करने को तैयार नहीं होते। बाबू जगजीवन राम ने एक स्कूल बनवाया था उसका नाम उन्होंने जगजीवन राम विद्या मन्दिर रखा था। उसका उन्होंने एक ट्रस्ट बना दिया था। जिसे उन्होंने आठ करोड़ रुपया दे दिया था। उनके बाद उनकी बेटी मीरा उस ट्रस्ट की प्रधान है। लेकिन कितने पूंजीपति हरिजन हैं जो हरिजनो की कोई मदद करते हैं। इंग्लैंड तथा अन्य देशो मे ऐसे हरिजनो की संख्या बहुत अधिक है उनमे कई करोड़पति भी हैं।

अभिप्राय यह कि हालात के अनुसार हम अपने सामाजिक दृष्टि में कुछ परिवर्तन करते रहे तो उसका सबको लाभ रहेगा। आज से सौ वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द ने दलितोद्धार का नाम दिया और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उनसे जो कुछ हो सकता था वह उन्होंने किया। जिन्हे हम पहले अछूत और फिर दलित कहते थे गांधी जी ने उन्हें हरिजन का नाम दे दिया। स्वाधीनता के बाद देश का वातावरण बदल गया। पहले डाक्टर अम्बेदकर थे और उनके बाद बाबू जगजीवन राम जैसे देश के नेताओ ने एक नया माहौल पैदा करने का प्रयास किया। उससे हरिजनो मे एक नई जागृति आ गई। अब उनमे से कई अपने पांवो पर खड़े हो गए हैं। जो रह गए हैं उनकी ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। लेकिन वे तो अन्य वर्गों मे भी हैं। इसलिए हरिजन की नई व्याख्या करने की आवश्यकता है अब जन्म के आधार पर नहीं कर्म के आधार पर निर्णय होना चाहिए कि हरिजन कौन है ?

—वीरेन्द्र

आर्य मर्यादा का वेदांक

जैसा कि मैंने पहले भी निवेदन किया था कि आगामी "रक्षा बन्धन" पर्व पर आर्य मर्यादा का वेदांक प्रकाशित किया जा रहा है। जिसमें बड़े उच्चकोटि के लेखको के लेख होंगे। इसलिए मेरी सभी आर्य समाजों तथा शिक्षा संस्थाओं के अधिकारियो से प्रार्थना है कि वह अपना आर्डर इस अंक के लिए अधिक से अधिक संख्या मे भेजें। यह अंक अधिक से अधिक लोगो के हाथ में पहुंचे। इसके लिए सब आर्य बन्धुओ को प्रयास करना चाहिए ताकि वेद का अधिक से अधिक प्रचार और प्रसार हो।

इस लिए अपना आर्डर सभा कार्यालय मे शीघ्रातिशीघ्र भेजने का कष्ट करें ताकि आपकी प्रतियां सुरक्षित कर ली जाएं।

—सभा महामन्त्री

संगरूर में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज संगरूर का मासिक पारिवारिक सत्संग इस बार 27-7-86 को श्री योगीराम जी अन्तरंग सभा सदस्य के घर देवर बस्ती मे हुआ जिसमें काफी संख्या मे आर्य जन सपरिवार उपस्थित हुए तथा जलपान भी किया।

इससे पूर्व श्री निरञ्जन देव जी आर्य द्वारा इस बस्ती में विवाह संस्कार करवाए गए हैं जिससे काफी दान व दक्षिणा प्राप्त हुई।

● आर्य समाज संगरूर (पंजाब) का वेद प्रचार सप्ताह 19 अगस्त से 27 अगस्त 86 तक मनाया जा रहा है जिसमें श्री महात्मा प्रेम प्रकाश जी वानप्रस्थी धूरी द्वारा सामवेद पारायण यज्ञ तथा प्रवचन होगा और श्री स्वामीसिंह जी हितकर के मनोहर भजन होंगे। इस यज्ञ में रोम निवारण यज्ञ भी किया जाएगा।

—मंत्री

मेरी अपनी शोक सभा

लेखक—श्री आचार्य कृष्णदत्त जी, हैदराबाद

(गतांक से आगे)

मैंने एक बार तो स्कूल में जा कर अध्यापक को गाली भी दी थी। मुझे हर बात हैडमास्टर समझाया करता था और मैं उसके ड्राफ्ट पर हस्ताक्षर कर देता था। और आज वही हैडमास्टर मुझे शिक्षा-शास्त्री कह रहा है। कोई हंस रहा था। मैं झेंप गया। वही शैतान भीतर से हंस रहा था। मुझे खामोश देख कर कहने लगा, कहो महाशय झेंप क्यों रहे हैं? मैट्रिक में बार-बार फेल होकर और नकल करने के अपराध में रैस्टिकेट होकर भी शिक्षा क्षेत्र के विद्वान् बन रहे हो। दूसरों से भाषण और लेख लिखवा कर भी हिन्दी के साहित्यकार बन गये हो, महाशय, बधाई हो! को सुनो।"

"भाइयो, कालिचरण जी का मुझ पर बहुत विश्वास था। मैं उन्हें अपना बुजुर्ग समझता था। मैं तो अनाथ हो गया। मैं सोच रहा था कि यह महाशय दो बार म्यूनिसिपल चुनाव में मेरे मुकाबले में खड़े हुए व्यक्ति का प्रचार करके मेरा विश्वास-पात्र, मित्र और स्नेह-भाजन बन रहा है। मुझे बदनाम करने के लिए मुझ पर कौन-सा लांछन इसने नहीं लगाया था। कौन-कौन से हथकण्डे काम में नहीं लाये थे। मैं घबरा सा गया। फिर भी अपनी प्रशंसा, झूठी रह कर भी मुझे प्यारी लग रही थी। मैं समझ रहा था कि मैं तो इतिहास पुरुष बन गया हूं! अजर-अमर रहूंगा। जगह जगह मेरे स्मारक बनेंगे। मेरी जीवनी लिखी जाएगी। उसके छपवाने के लिए मैंने पैसे भी रख छोड़े हैं। उसमें छपने के लिए चित्र भी चुन कर रख दिये हैं। अपने हाथ से उन पर टिप्पणियां भी लिखी हैं।

मैं पेड़ से उतर कर लोगों में मिल गया, श्रोताओं का मत जानने के लिए दो-चार वयस्क खड़े रहकर बातें कर रहे थे। एक ने कहा, सुन लिया। यह अध्यक्ष और यह वक्ता, एक से बढ़कर एक घुटेल हैं। जीवन भर मरने वाले से लड़ते रहे, और आज तारीफ करते नहीं थक रहे हैं। दूसरे ने कहा, "यह सब रिक्त स्थान की पूर्ति मात्र है। मरने वाला येन-केन प्रकारेण शहर के जन-जीवन पर छाया हुआ था। आज उनकी जगह लेने के लिए ये सभी छटपटा रहे हैं। मरने वाले से सच्ची हमदर्दी रखने वाले तो अलग-थलग ही बैठे हुए हैं।"

एक अधेड़ आयु वाला कहता हुआ गुजरा, "सब साले चोर हैं। मरने वाला भी क्या कम था? जब भी मन्दिर की तामीर शुरू होती थी, तो उसके घर की भी तामीर शुरू हो जाती थी। आज वह धर्मवीर, धर्मनायक, पुण्यात्मा न जाने कुछ बन गया है। अपनी विधवा भाभी का पैसा हड़प कर, चचेरे भाइयों को चौराहे पर खड़ा कर दिया।" यह सुनकर मैं वहां से भागा। कोसने वाले महाशय कुन्दी मेरे मुनीम थे। मेरे पूरे राजदार। मैं तेजी से भाग रहा था कि भीड़ में एक सज्जन से टकराया और जोर से सड़क पर गिर पड़ा। हड़बड़ा कर जो उठा तो क्या देखता हूं कि मैं पलंग से लुढ़क कर नीचे बैठे हुए कुत्ते पर जा गिरा हूं और वह 'क्या-क्या' करता हुआ कमरे से बाहर भाग गया। उठ कर पलंग पर बैठते हुए मैं सोच रहा था कि यह सब क्या हो गया। सपना ही तो था।

होनहार विद्यार्थी

श्री योगरत्न सरीन सुपुत्र प्रो. सुदर्शन-कुमार सरीन (पौत्र श्री वेद प्रकाश जी सरीन प्रधान आर्य समाज नवांशहर) गवर्नमैंट कालेज होशियारपुर का विद्यार्थी, जिसने पिछले साल पंजाब एजूकेशन बोर्ड की दसवीं श्रेणी की परीक्षा में प्रान्त भर में प्रथम रहने का रिकार्ड, कायम किया था इस वर्ष भी पंजाब यूनीवर्सिटी चण्डीगढ़ की प्रैप-मैडीकल परीक्षा में प्रथम आकर कायम रखा।

—

आर्य समाजों के अधिकारियों की सेवा में निवेदन

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि नवयुवकों ने भी पंजाब में वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार का बीड़ा उठाया है। सबसे पहले लुधियाना के आर्य नवयुवकों ने 20 फरवरी 1982 को एक बहुत बड़ा सम्मेलन आर्य हायर सैकण्डरी स्कूल में किया था, जिसमें पंजाब भर की आर्य समाजों के अधिकारियों एवं कार्य कर्ताओं को सम्मानित किया गया था। इस प्रकार के बहुत से कार्यक्रम नवयुवकों ने भिन्न-भिन्न स्थानों पर किए हैं। इसके अतिरिक्त पंजाब की आर्य समाजों में आर्य युवक सभा की स्थापना की गई। इस प्रकार से आर्य समाज के प्रचार एवं प्रसार के कार्य में नवयुवकों के योगदान को नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता।

आज पंजाब में जो हालात हैं उनमें संगठन का बहुत अधिक महत्व है। युवकों में अभूतपूर्व साहस होता है। वे कुछ कर दिखाने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं, बशर्ते उनकी शक्ति का सदुपयोग किया जाए। 31 मई 1986 को लुधियाना में एक युवक सम्मेलन किया गया था तथा उसके पश्चात् विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें यह सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया कि सभी आर्य समाजों में आर्य युवक सभाएं बनाई जाएं तथा सभी इकाइयों में तालमेल रखने के लिए आर्य युवक सभा पंजाब का राज्य स्तर पर गठन किया गया। इसके अतिरिक्त उस सदस्यों की कार्यकारी समिति भी बनाई गई। यह सदस्य आर्य समाजों में जाकर नवयुवकों से सम्पर्क स्थापित करेंगे।

हमें पूर्ण विश्वास है यदि आप हमें सहयोग दें तो पंजाब में आर्य समाज के प्रचार का कार्य बड़ी तेजी से आगे बढ़ सकता है। इसलिए आपसे प्रार्थना है कि यदि आप की समाज में आर्य युवक सभा बनी हुई है तो आप कृपया आर्य युवक सभा के अधिकारियों के नाम व पते भेजने की कृपा करें। यदि आपकी समाज में आर्य युवक सभा नहीं है तो कृपया अपनी समाज के सक्रिय नवयुवकों के नाम व पते लिख कर भेजें। ताकि उनसे सम्पर्क करके आर्य युवक सभा के संगठन को मजबूत किया जा सके। हमें पूर्ण आशा ही नहीं अपितु विश्वास है कि जिस प्रकार पहले भी आपने नवयुवकों को पूर्ण सहयोग दिया है, उसी प्रकार से अब भी आप हमारा मार्ग दर्शन करेंगे।

—रोशनलाल शर्मा,
संयोजक, आर्य युवक सभा पंजाब
(दाल बाजार) लुधियाना

श्री श्रीकरण शारदा का निधन

आर्य जगत् को यह जानकर अत्यन्त दुःख होगा कि सब प्रतिष्ठित आर्य नेता तथा परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री श्रीकरण जी शारदा का 68 वर्ष की आयु में दिनांक 20 जुलाई को कलकत्ते में उनके बड़े पुत्र श्री हर्षवर्धन के यहां निधन हो गया। श्री शारदा सुप्रसिद्ध आर्य नेता कु. चान्दकरण शारदा के सबसे बड़े पुत्र थे। उनका जन्म 14 जून 1919 को बड़ौदा में नाना प. आत्माराम जी अमृतसरी के यहां हुआ। बी ए एल बी की परीक्षाएं उत्तीर्ण करने के पश्चात् उन्होंने कुछ वर्ष तक वकालत भी की। 1958 में वे परोपकारिणी सभा के सदस्य निर्वाचित हुए तथा सभा के संयुक्त मन्त्री पद पद कार्य किया। 1964 में आप सभा के मन्त्री चुने गये। तब से लेकर जीवन पर्यन्त 22 वर्षों तक आपने अत्यन्त निष्ठापूर्वक सभा का मन्त्री के रूप में कार्य भार सम्भाला।

श्री करण जी शारदा

परोपकारिणी सभा अजमेर के मन्त्री श्री करण शारदा का 20 जुलाई को कलकत्ते में 68 वर्ष की आयु में निधन हो गया। श्री शारदा जी कु. चान्दकरण जी शारदा के सबसे बड़े पुत्र थे। वे गत वर्ष से रूग्ण चल रहे थे। कई वर्ष तक लगातार उन्होंने परोपकारिणी सभा की सेवा की और कई वर्ष से निरन्तर इसके मन्त्री चले आ रहे। उनके निधन का समाचार सुन कर सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने शोक व्यक्त करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से तार द्वारा शोक सन्देश भेजा। दिवंगतात्मा के लिए सद्गति की प्रार्थना करते हुए परिवार जनों के लिए इस असहाय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की परमात्मा से प्रार्थना की।

वे गत वर्ष से अस्वस्थ थे। परमात्मा दिवंगत शारदा जी की आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

—डा. भवानीलाल भारतीय
संयुक्तमन्त्री परोपकारिणी सभा अजमेर

वेद प्रचार-यात्रा सम्पन्न

20 जून से 20 जुलाई तक आर्य जगत के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् ब्रह्मचारी आर्य नरेश द्वारा कोटद्वार, बैंक डाउन आर्य समाज, हरिद्वार, बी एच इ एल मसूरी आर्य समाज नाहन (हिमाचल), यमुनानगर अशोक विहार-शिवाजी एनक्लेव (दिल्ली) आर्य समाज खेतड़ी (राजस्थान) रोहतक तथा आर्य समाज फरीदाबाद, नारनौल तथा वहां के विद्यालयो मे शारीरिक आत्मिक एव राष्ट्रीय उन्नति पर वेद शिक्षाओ, कथाओ व योगासनो द्वारा जनता का मार्ग दर्शन किया। अनेक लोगो ने दैनिक यज्ञ सन्ध्या व व्यायाम करने तथा चाय मांस मद्य आदि छोड़ने के व्रत लिए।

कार्यालय स
उद्गीथ साधना स्थली (हिमाचल)
89 ज्ञानसदन, माडल बस्ती दिल्ली

आर्यसमाज कपूरथला में शोक सभा

आर्य समाज कपूरथला की यह साधारण बैठक मुक्तसर के निकट 14 बस मुसाफिरो की उग्रवादियो द्वारा हत्या पर गहरी चिन्ता और शोक प्रगट करती है। और पजाब सरकार और भारत सरकार से माग करती है कि अल्पसख्यक लोगो की जानोमाल की सुरक्षा का अविलम्ब उचित प्रबन्ध किया जाए और पजाब का शासन सेना के हवाले कर दिया जाए ताकि गड़बड़ फैलाने वालो को सख्ती से दबाया जाए और पजाब से हिन्दुओ का पलायन रुक सके। यह सभा मृतको की आत्मा की शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना करती है और उन के सम्बन्धियो से इस अवसर मे हमदर्दी और सहानुभूति प्रकट करती है।

—हरिसिंह
मन्त्री

आर्य समाज रायकोट का वार्षिक चुनाव

20-7-86 दिन रविवार को साप्ताहिक हवन के उपरान्त आर्य समाज रायकोट का चुनाव हुआ। जिसमे सर्व सम्मति से निम्नलिखित सदस्य मनोनीत किए गए।

प्रधान—श्री भीमसैन जी लोहे वाले
उप-प्रधान—श्री प्रेमनाथ जी गुप्ता
कोषाध्यक्ष—श्री रामस्वरूप जी अग्रवाल।
मन्त्री—श्री सतीश कुमार कौशा
सह-मन्त्री—श्री जय प्रकाश

श्री धर्म प्रकाश जी वैद्य आर्य समाज रायकोट के सरप्रस्त चुनें गए।

अन्तरग सदस्य —

श्री सत्यपाल जी शर्मा, श्री राजेन्द्र कुमार कौशा, श्री अर्जुनदास पिप्लानी, श्री सुरेन्द्र कुमार पासी, श्रीमती आर्दा बाला, श्रीमती ताराबती कौशा, श्री महावीर प्रसाद,

—सतीश कुमार-मन्त्री

बस्ती दानसमन्द्रा, जालन्धर में प्रचार

आर्य समाज बस्ती दानसमन्द्रा जालन्धर मे लगातार एक वर्ष से प्रति-दिन प्रातः दो घन्टे तक सत्सग किया जाता है जिसमें भारी सख्या मे प्रतिदिन आर्य बहन-भाई भाग लेते हैं और अपना-2 सहयोग देते हैं। प्रति रविवार को विशेष यज्ञ किया जाता है जो बड़ी सफलतापूर्वक चल रहा है।

—फकीर चन्द-मन्त्री

आर्य समाज फतेह-गढ़ चूड़ियां के प्रधान का चुनाव

20-7-86 को आर्य समाज फतेहगढ़ चूड़िया की बैठक हुई। बैठक में श्री नरेन्द्र कुमार गुप्ता जी को सर्व सम्मति से प्रधान चुना गया। पहले प्रधान श्री विजय कुमार जी द्वारा स्थाई रूप से हरियाणा में चले जाने के कारण यह चुनाव किया गया—सतीश कुमार-मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 18 अंक 20. 2 भाद्रपद सम्वत् 2043 तदनुसार 17 अगस्त 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

स्वतन्त्रता प्राप्ति में महर्षि दयानन्द और आर्य समाज का महान् योगदान है ?

१५ अगस्त प्रतिवर्ष अनेकों आर्य वीर बलिदानियों के बलिदान की याद ताजा करता है

प्रतिवर्ष 15 अगस्त को सारे देश मे स्वतन्त्रता दिवस मनाया जाता है । प्रधानमन्त्री द्वारा इस दिन दिल्ली के लालकिले पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। इस दिन अनेको समारोह आयोजित किए जाते है। स्थान-2पर और दिल्ली मे विशेष रूप से विशाल शोभा यात्रा भी निकाली जाती है। सारे देश मे इस दिन खुशिया मनाई जाती हैं।

देश की आजादी पर खुशिया मनाए। यह तो आवश्यक है परन्तु यदि हम इस अवसर पर उन महान क्रान्तिकारियो और हुतात्माओ को याद न करें, जिन्होने इस आजादी के लिए अपने प्राणो की बलि चढाई, फासी के फन्दे हसते-2 गल मे डाले, काले पानी और दूसरी जेलो और काल कोठरियो मे अपनी जवानिया गाली तो कृतघ्नता होगी उनको भी हम अपनी श्रद्धाजलि भेन्ट करे।

★

महर्षि दयानन्द जी ने स्वतन्त्रता का जयघोष किया था। लोकमान्य तिलक ने "स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, का नारा लगाया था। महर्षि की प्रेरणा से स्वामी श्रद्धानन्द जी, लाला लाजपतराय, वीर सावरकर, देवता स्वरूप भाई परमानन्द, रामप्रसाद बिस्मिल सरदार भगत सिह, राजगुरु और सुखदेव आदि अनेकों आर्य वीरो ने इस आजादी के लिए अपना बलिदान दिया था। हुतात्माओ को आज उन हुतात्माओ की याद मनाते हुए उनके जीवन से प्रेरणा लेने का सकल्प ग्रहण करें।

आज हम स्वतन्त्र हैं परन्तु हमारी आजादी के लिए आज भी अनेको खतरे पैदा हो गए हैं। विदेशी फिर देश मे घुस-पैठ कर रहे हैं, चारो ओर विघटन-कारी और आतकवादी छाए जा रहे हैं। क्या देश भक्त इन सकट की घडियो में भी सरकार के मुह को देखते रहने और स्वय देश को बचाने के लिए मैदान मे नही आएगे ? देश भक्त नोजवानो चेतो देश की आजादी को आच न आने पावे।

15 अगस्त 1947 की वह ऐतिहासिक रात

लेखक—श्री धर्मपाल जी शास्त्री माण्डौठी

देश को पराधीन हुए यू तो कई शदियां बीत गई थी, पर अंग्रेजो को भारत मे आए अभी पौने दो सौ साल ही हुए थे। मुगलो और अंग्रेजो के राज्य मे एक अन्तर यह था कि मुगल खून खराबी मे अधिक विश्वास रखते थे, और अंग्रेज कूटनीति मे यू अंग्रेज ने भी बल प्रयोग अथवा क्रूरता मे कोई कसर नही उठा रखी थी। 1857 के अत्याचार और जलियां वाला बाग उसी के उदाहरण है फिर भी मुगलो की तुलना मे अंग्रेजो के अत्याचार कुछ हल्के थे। लेकिन एक बात दोनो मे समान थी, भारत की सम्पदा जैसे और जितने हाथो से लूटी जा सके लूटी। निरीह भारतवासी मन मसोस कर यह सब देख रहे थे।

आखिर पन्द्रह (15) अगस्त 1947 का वह भाग्यशाली दिन आ ही गया जिस दिन देशवासियो की साधना पूरी हुई। 15 अगस्त का सूरज निकलने से पहले 14 अगस्त की आधी रात को सबकी आखें घडी की सूई पर टिकी हुई थी। कितनी उत्सुकता और तेजी से रात्री मे बारह बजने की प्रतीक्षा हो रही थी। ससद के केन्द्रीय कक्ष मे जहा स्वतन्त्रता की यह घोषणा हुई वहा अध्यक्ष के आसन पर विराजमान राजेन्द्र बाबू ने जब यह कहा अब घडी की सूई को बारह तक पहुचने मे ठीक आधा मिनट शेष रह जाता है, मैं घडी की इन तीस सैकिण्डो की उत्सुकता मे प्रतीक्षा कर रहा हू। उस समय सबको लग रहा था आज इस घडी को क्या हो गया है। कुछ ही क्षणो मे सूई वहा पहुच गई और बारह बजते ही अध्यक्ष तथा सदस्य खडे हो गए। राजेन्द्र बाबू ने सदस्यो को प्रतिज्ञा लेने के लिए सावधान किया और पहले हिन्दुस्तानी सदस्यो से (हिन्दी) मे इन शब्दो मे प्रतिज्ञा ग्रहण करवाई

"अब जब कि हिन्दवासियो के त्याग और तप से स्वतन्त्रता हासिल कर ली है, मैं जो सविधान परिषद का एक सदस्य हू अपने को बडी नम्रता से हिन्द और हिन्दवासियो की सेवा के लिए अर्पित करता हू, जिससे यह प्राचीन देश ससार में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर सके और ससार मे शान्ति स्थापित करने और मानव जाति के कल्याण मे अपनी पूरी शक्ति लगाकर खुशी से हाथ बटा सकू।"

सविधान परिषद के सदस्यो द्वारा शपथ ग्रहण करने के पश्चात लार्ड माउट बेटन को वायसराय की बजाय गवर्नर जनरल के पद पर नियुक्त करने की सूचना देने का भी निश्चय हुआ। अध्यक्ष श्री राजेन्द्र बाबू ने प्रस्ताव करते हुए कहा—अब वायसराय को इस बात की सूचना दी जाय कि भारतीय विधान परिषद ने भारत का शासनाधिकार ग्रहण कर लिया है। इस सिफारिश को भी स्वीकार कर लिया है कि 15 अगस्त 1947 से लार्ड माउट बेटन भारत के गवर्नर जनरल होगे। यह सन्देश स्वय अध्यक्ष तथा श्री जवाहर लाल नेहरू द्वारा लार्ड माउट बेटन तक पहुचाने का भी निश्चय हुआ।

भारत का वर्तमान राष्ट्रीय ध्वज भी इसी अवसर पर भारतीय महिला समाज की ओर से श्रीमती हसा मेहता ने अध्यक्ष महोदय को भेंट किया। जिन महिलाओ की ओर से अशोक चक्राकित यह तिरगा ध्वज अध्यक्ष महोदय को भेंट किया गया उन 74 महिलाओ मे श्रीमती विजय लक्ष्मी, श्रीमती सरोजनी नायडू, राजकुमारी अमृतकौर कुमारी मणिबेन पटेल आदि के अतिरिक्त भूत पूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी भी सम्मिलित थी। श्रीमती हसा मेहता ने राष्ट्र ध्वज उत्तोलन करते हुए कहा—पहली राष्ट्रीय पताका इस महिमा मन्दिर भवन पर सुशोभित हो, उसे भारतीय महिला समाज एक उपहार की तरह उपस्थित कर रहा है। अपनी स्वतन्त्रता के प्रतीक स्वरूप इस पताका को उपस्थित करते हुए हम पुन राष्ट्र को अपनी सेवाए अर्पित करती है। महान भारत की प्रतीक यह पताका सदा फहराती रहे और विश्व भर मे आज जो सकट की कालिमा छाई हुई है, उसे यह प्रकाश दे।

भारतीय स्वाधीनता की घोषणा मे अध्यक्ष श्री राजेन्द्र बाबू प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू और सर्वपल्लि डाक्टर राधाकृष्ण के सक्षिप्त ऐतिहासिक भाषण भी हुए। राजेन्द्र बाबू ने तो यही से अपनी बात आरम्भ की आज हम अपने देश की बागडोर अपने हाथो मे ले रहे हैं इस अवसर पर हमे उस परमपिता परमात्मा की याद करनी चाहिए जो मनुष्यो और देशो के भाग्य बनाता है। डा राधाकृष्ण ने भी अपने भाषण मे भारत की सास्कृतिक विरासत की चर्चा करते हुए कहा—इस देश का भविष्य फिर वैसा ही महान होगा जैसा इसका अतीत महिमामय रहा है।

चौदह अगस्त की उस चिर प्रतीक्षित रात्री मे भारतीय नेताओ ने अपने मन के जो उद्गार प्रकट किये उनमे प्रसन्नता के साथ साथ उनकी व्यथा भी अलग बोल रही थी। कार्यवाही सक्षिप्त थी पर एक एक शब्द अपना अध्याय बनाता जा रहा था। देश के विभाजन को देख कर सबके मन दुखी थे। आखिर दम तक सब यत्न किया कि किसी तरह विभाजन रुक जाए। पर मुस्लिमलीग की हठ और अंग्रेज की कूटनीति के आगे उन्हे हार माननी पडी। देश मे जो लूट-पाट और मारकाट का दौर चल रहा था उसमे सभी परेशान थे। नेहरू जी अपने मन की उस व्यथा को न रोक सके और कह उठे हमारे दिल मे दर्द है। लेकिन यह भी हम जानते है कि हिन्दुस्तान भर मे खुशी नही है। हमारे दिल मे रज के टुकडे काफी है। दिल्ली मे बहुत दूर न। बडे बडे शहर जल रहे है वहा की गर्मी यहा आ रही है। ऐसे मे खुशी पूरे तौर से नही हो सकती। लेकिन फिर भी हमने इस घडी हिम्मत से सब बातो का सामना करना है। न हाय हाय करनी है न परेशान होना है। जब हमारे हाथ मे बागडोर आया है तो फिर ठीक तरह से गाडी को चलाना है।

देश जिनके त्याग, तप और बलिदानो से स्वतन्त्र हुआ उन्हे इस अवसर पर कैसे भुलाया या भुलाया जा सकता है। राजेन्द्र ने कहा—जिन्होने इस दिन को लाने के लिए प्राण न्योछावर कर दिये हसते हसते फासी के तख्तो पर चढ गये, गोलियो के शिकार बने जेल खानो और काले पानी के टापू मे घुल 2 कर अपने जीवन का उत्सर्ग किया। आज का यह दिन उनकी तपस्या और त्याग का ही फल है। नेहरू जी ने भी उन्हे भाव भरे हृदय से श्रद्धाञ्जलि दी।

15 अगस्त की प्रात दस बजे भारतीय विधान परिषद की बैठक फिर कास्टीटयूशन हाल नई दिल्ली मे समवेत हुई। अध्यक्ष राजेन्द्र बाबू के साथ भारत के प्रथम गवर्नर जनरल लार्ड माऊट बेटन और उनकी धर्मपत्नी भी इस मे पधारी। प्रारम्भ मे भारत के ऐतिहासिक स्वाधीनता पर्व के लिए विदेशो से आये कुछ विशेष स्वाधीनता सदेश पढकर सुनाये गये, इनमे चीन, कनाडा, आस्ट्रेलिया, इण्डोनेशिया, नेपाल और सयुक्त राज्य के प्रधानमन्त्री के सन्देश भी सम्मिलित थे। उसके बाद गवर्नर जनरल ने ब्रिटिश सम्राट का एक सन्देश पढकर सुनाया—

"इस ऐतिहासिक दिन, जबकी भारत ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल मे एक स्वतन्त्र और स्वाधीन उपनिवेश के रूप मे स्थान ग्रहण कर रहा है। मैं आप सबको अपनी शुभकामनाए भेजता हू।

आपके इस स्वाधीनता महोत्सव मे प्रत्येक स्वतन्त्रता प्रिय राष्ट्र भाग लेना चाहेगा। क्योकि प्रारम्भिक स्वीकृति द्वारा सत्ता का जो हस्तान्तरण हुआ है, उसमे एक ऐसे महान लोकतन्त्रीय आदर्श की पूर्ति हुई है जिसे ब्रिटेन और भारत दोनो देशो के लोग समान रूप से कार्यान्वित करने के लिए कटिबद्ध रहे है। यह सब शातिपूर्ण परिवर्तन द्वारा सम्पन्न हो सका है।

भविष्य मे आपको बडी जिम्मेदारियो का भार वहन करना है किन्तु जब मै आपके द्वारा प्रकट की गई राजनीतिज्ञता तथा किये गए त्यागो का विचार करता हू तो मुझे विश्वास हो जाता है कि भविष्य का भार आप समुचित रूप मे वहन कर सकेगे।'

भारतीय स्वाधीनता के ऐतिहासिक पर्व पर जहा भारतवासी फूले नही समा रहे थे और हसी खुशी नाच गा कर द्वारा अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर रहे थे। वहा देश के दूरदर्शी नेता आने वाले भारत की तस्वीर बनाने के लिए एक बडे परिश्रम और सकल्प का स्वप्न देख रहे थे। पण्डित जी ने तो अपने भाषण का प्रारम्भ ही यहा से किया था।

'कई वर्ष हुए जब हमने किस्मत की बाजी लगाई थी अब समय आ गया जब हम उसे पूरा करे। एक मजिल पूरी हुई लेकिन भविष्य के लिए हमने एक प्रण और प्रतिज्ञा करनी है। वह हिन्दुस्तान के लोगो की सेवा करना है। हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि रग जी ने इन ही भावो को अपनी कलम मे पिरोकर लिखा था—

ओ विप्लव के थक साथियो,
विजय मिली है विश्राम न समझो॥

स्वाधीनता का यह ऐतिहासिक पर्व आज फिर विकासोन्मुख भारत के कानों मे इन्ही शब्दो को दोहरा रहा है।

सम्पादकीय—

स्वाधीन भारत में आर्य समाज

15 अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस है। कोई व्यक्ति जो स्वाधीनता के लिए हमारे देश वासियो ने जो सघर्ष किया था उसका इतिहास लिखें तो वह आर्य समाज को उसका श्रेय दिए बिना नहीं रह सकता। हम प्रायः कहा करते हैं कि काग्रेस ने देश को आजाद कराया था। हम यह भूल जाते हैं कि कांग्रेस की स्थापना 1885 मे हुई थी। आर्य समाज का जन्म 1875 मे हुआ था। 10 वर्ष पहले आर्य समाज ने यह कहना आरम्भ कर दिया था कि दूसरो का राज्य चाहे कितना अच्छा क्यो न हो फिर भी वह स्वराज्य से अच्छा नहीं हो सकता। महर्षि दयानन्द ने जब यह घोषणा की थी तो यह एक प्रकार से एक निमन्त्रण था अपने देश वासियो को कि भाई कब तक सोए रहोगे और कब तक दूसरो की पराधीनता सहन करते रहोगे। अग्रेज के राज्य मे आपको चाहे कितना सुख हो, फिर भी वह राज्य, स्वराज्य की जगह नहीं ले सकता इसलिए हमे स्वराज्य के लिए प्रयास करना चाहिए। महर्षि दयानन्द तो 1883 मे चले गए लेकिन जाते हुए अपने देशवासियो को यह कह गए कि स्वतन्त्रता के बिना आपके न धर्म की रक्षा हो सकती है न सस्कृति की रक्षा हो सकती है। उनके जाने के पश्चात उनके देशवासियो ने उनके इस आदेश को क्रियान्वित करने के लिए एक सघर्ष शुरू कर दिया था जो 1885 मे काग्रेस के रूप मे हमारे सामने आया। उसके पश्चात् काग्रेस ने लगातार अपने देश की आजादी के लिए जो सघर्ष किया था उसमे आर्य समाज अपना सक्रिय योगदान देता रहा है। न केवल गाधी जी के कहने पर हजारो आर्य समाजी जेल मे गए थे कई फासी पर भी चढ गए थे। आर्य समाज बडे गर्व से कह सकता है कि देश को स्वतन्त्र कराने के लिए अपना जो योगदान आर्य समाज ने दिया या किसी दूसरी धार्मिक या सामाजिक सस्था ने नहीं दिया।

15 अगस्त 1947 को हमारा देश आजाद हो गया और उसके साथ हमारे इतिहास का एक अध्याय समाप्त हो गया, उस इतिहास मे आर्य समाज का नाम स्वर्णमय अक्षरो मे लिखा जाएगा, परन्तु इसके साथ हमारा दायित्व समाप्त नहीं हो जाता। महर्षि दयानन्द ने हमे केवल धार्मिक दिशा ही नही दिखाई थी, सामाजिक और राजनैतिक दिशाए भी दिखाई थी। कई बार हम कह देते है कि हमारा राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह वही व्यक्ति कह सकते हैं जिन्होने सत्यार्थ प्रकाश का छटा समुल्लास नहीं पढा यदि महर्षि की यह धारणा होती कि आर्य समाज को राजनीति मे कोई भाग नहीं लेना चाहिए तो वह छटा समुल्लास न लिखते। यह समुल्लास लिखने के पश्चात् उन्होंने यह हम पर छोड दिया कि हम स्वय यह निर्णय लें कि आर्य समाज राजनीति मे सक्रिय भाग ले या न ले और ले तो किस रूप मे।

इसी के साथ महर्षि ने हमे कुछ सामाजिक दिशाए भी दिखाई थी। सत्यार्थ प्रकाश को पढने से पता चल जाता है कि उन्होने मनुष्य जीवन की सब समस्याओ पर अपने विचार हमारे सामने रखे थे। समय काल और परिस्थितियो के अनुसार कई समस्याए बदल जाती है और उनका समाधान भी बदल जाता है देश की जो स्थिति एक सौ वर्ष पहले थी वह आज नहीं है। परन्तु हमारी सामाजिक समस्याओ के विषय मे जो कुछ महर्षि ने हमे बताया था उसके आधार पर हम बहुत कुछ सोच सकते हैं और यदि परिस्थितिया बदल गई हैं और नई समस्याए सामने आ गई हैं फिर भी हमें उन पर विचार करना चाहिए और इस क्षेत्र मे आर्य समाज को अपने देश की जनता को उचित मार्ग दिखाना चाहिए।

यह सब कुछ लिखने से मेरा अभिप्राय केवल यह है कि आर्य समाज ने इस देश को आजाद तो करा दिया परन्तु आजादी के बाद देश किधर जा रहा है यह देखना भी आर्य समाज का ही काम है। सबसे बड़ा प्रश्न हमारे सामने यह है कि देश की सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्था अब क्या बनती है? आर्य समाज इस विषय मे बिल्कुल मौन बैठा है। कोई कारण नहीं कि देश की भिन्न-2 समस्याओ के विषय मे आर्य समाज का दृष्टिकोण जनता के सामने न आये। यदि हमने अपने देश को आजाद कराया है तो उसकी आजादी की रक्षा करना भी हमारा ही काम है। यदि हम इस ओर ध्यान नहीं देते तो अपने देश के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं करते। हमारा राष्ट्र नहीं बचता तो धर्म भी नहीं बच सकता। धर्म और राष्ट्र दोनो की रक्षा के लिए यह आवश्यक है कि आर्य समाज सक्रिय रूप से आगे आये और देश की जनता का मार्ग दर्शन करें।

15 अगस्त को स्वाधीनता के दिन प्रत्येक आर्य समाजी को यह सकल्प करना चाहिए कि राज्य और धर्म की रक्षा के लिए हम से जो भी त्याग और बलिदान मागा जाएगा हम वह देंगे। स्वराज्य की प्राप्ति के लिए आर्य समाज ने अपना जो योगदान दिया था उसे भुलाया नहीं जा सकता परन्तु उसके लिए यह भी आवश्यक है कि हम दूसरो को कुछ कहने से पहले अपने अन्दर झाक कर देख कि हम अपने धर्म और राष्ट्र की रक्षा के लिए स्वय क्या कर रहे है?

आज हमारे सामने क्या समस्याए हैं और उन समस्याओ का आर्य समाज क्या समाधान अपने देशवासियो के सामने रख सकता है इस विषय मे आगामी अक मे अपने विचार पाठको के सामने रखूगा।

—वीरेन्द्र

रक्षाबन्धन-श्रावणी उपाकर्म

19 अगस्त को सभी स्थानो पर रक्षा बन्धन का पर्व मनाया जा रहा है। यह पर्व बडी धूम-धाम से मनाया जाता है। प्राचीनकाल से हम इस पर्व को मनाते आ रहे है। इस पर्व का वास्तविक स्वरूप तो लोप हो चुका है अब केवल बहनें अपने भाईयो को और पुरोहित अपने यजमानो को विशेष तिल्ले व धागे आदि से बनी चमकीली राखिया बान्धते है। भाई बहनो को तथा यजमान अपने पुरोहित को इस अवसर पर कुछ दक्षिणा दे देता है बस इतने से ही समझ लिया जाता है कि पर्व मना लिया गया।

यह पर्व स्वाध्याय का प्रतीक है। इस अवसर पर बडे-2 यज्ञ कथाओ आदि का आयोजन किया जाए तथा स्वाध्याय करने के लिए व्रत लिया जाए यह आवश्यक भी है। यही इस पर्व को मनाने का भाव प्राचीनकाल मे था।

आओ आजकल के स्वरूप मे भी इस पर्व को 19 अगस्त को मनाते हुए निश्चय करे कि अपनी बहनो तथा देश जाति और समाज की रक्षा के लिए सदा तत्पर रहेगे। देश की बहनें इस समय खतरे मे है। कितनी बहनो के सिन्दूर आतकवादियो द्वारा आज पोछे जा रहे हैं। कितनो के सुहाग लूटे जा रहे हैं, परन्तु भाई आज मूक बन कर यह सब कुछ देख रहा है। ऐसी अवस्था मे भाई का बहन के प्रति क्या कर्त्तव्य है? क्या इस पर्व को मनाते हुए भाई इस गम्भीर प्रश्न पर कुछ विचार करेंगे? या पूर्व की भान्ति केवल औपचारिक रूप से ही इस पर्व को मनाते हुए केवल बहनो से राखि बन्धा कर ही समझ लेंगे कि उन्होंने पर्व मना लिया है।

आज देश पर सकट छाया हुआ है कुछ विदेशी भारत मे विघटन पैदा करके यहा अराजकता फैलाना चाहते है। पर्व हमे एकता के सूत्र मे बान्धने के लिये और अपने कर्त्तव्य का बोध कराने के लिए आते हैं। आओ रक्षा-बन्धन का पर्व मनाते हुए विचार करें कि हम कहीं अपने कर्त्तव्य से विमुख तो नहीं हो रहे जो हमारा कर्त्तव्य अपने देश जाति और समाज के प्रति है।

—सह-सम्पादक

क्या 'स्व' निरपेक्ष स्वराज्य ही हमारा लक्ष्य है ?

लेखक—डा यशपाल शास्त्री घाटेडा

※

'स्वराज्य' शब्द मे कितनी आह्लादकता, कितनी पवित्रता, कितना आकर्षण है। सचमुच यदि हमारे देश मे सच्चा स्वराज्य होता तो हम स्वर्ग को भूल जाते। परन्तु विगत अठतीस वर्षों का शासन अपने कार्य-कलापो द्वारा यह बता चुका है कि हमारा लक्ष्य अभी बहुत दूर है।

कई पाठको को यह आश्चर्य हो सकता है कि स्वतन्त्र भारत मे लेखक को स्वराज्य नही दीख रहा, जबकि भारत मे अब अपनो का ही राज्य है। सचमुच लेखक यह सब जानता है परन्तु बहुत से पाठक हैं जो 'स्व' 'स्वराज्य' स्वतन्त्रता' जैसे शब्दो का प्रयोग तो करते हैं उनके गम्भीर अर्थ को नही समझते। तो पहले इन शब्दो पर कुछ विचार कर लेना सुविधाजनक रहेगा।

हमारे इस भु मण्डल पर लगभग दो सौ छोटे बड़े देश है। परन्तु किसी भी देश के निवासी दूसरे देशो के निवासियो से कई बातो मे नही मिलते। यह विशेषता कई बातो मे देखी जाती है। **वंश, वर्ण, आकार-प्रकार, वेश-भूषा, खान-पान, भाषा, इतिहास, परम्परा एव धार्मिक विश्वास। इन सब की सम्मिलित विशेषता ही किसी देश को एक पृथक-विशेषता प्रदान करती है। इसे राष्ट्रीय विशेषता कहते हैं। इसी को राष्ट्र का 'स्वत्व' कहा जाता है।**

इस सदर्भ मे यदि हम भारतीय अपने प्रति विचार करे तो पायेंगे जैसे हमारी भी एक राष्ट्रीय विशेषता है जो हमे राष्ट्रो की पंक्ति मे अन्य राष्ट्रो से पृथक् विशेष स्थान प्रदान करती है। **यह विशेषता हमारी प्राचीन संस्कृति, इतिहास, भाषा, भूषा, खानपान, परम्परा, तीर्थ-स्थान तथा धार्मिक विश्वासो के कारण है। यही हमारा 'स्व' है यही हमारा स्वाभिमान है।**

इस स्व की अभिव्यक्ति यदि हमारे राज्य मे होती है तो हम कह सकते हैं कि हम स्वराज्य का उपभोग कर रहे हैं। इस 'स्व' के अनुरूप यदि हमारा तन्त्र रचा गया है तो हम कहेंगे कि हम स्व-तन्त्र-ता का उपभोग कर रहे हैं। यदि अपने इस स्व का हमे अभिमान है तो हम स्वाभिमानी हैं।

हमारा यह स्व कहा से आया है ? किसी भी राष्ट्र का स्व कोई पूर्व निर्मित वस्तु नही होती। उसके निर्माण के पीछे बहुत परिश्रम तपस्या तथा बलिदानो की परम्परा रहती है। सृष्टि के आदिमकाल से ही हमारे ऋषियो, मुनियो, सन्तो, विद्वानो, वीरो तथा जनसाधारण ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे कठोर परिश्रम एव तपस्या की है। इस तपस्या द्वारा प्राप्त उत्तम फलो को सुरक्षित रखने के लिए बहुत से बलिदान देने पड़े हैं। तब कही हमने एक सस्कृति का विकास किया है जिसे हम और सारा ससार भी हिन्दू सस्कृति के नाम से पुकारता है।

उदाहरण के लिए सब धर्मों मे समानभाव रखना, शत्रु पक्ष की स्त्रियो मे भी मातृभाव रखना, जीव मात्र पर दयाभाव रखना, पतिव्रत एव एक पत्नी व्रत लेना, शरणागत की रक्षा के निमित्त अपना सर्वस्व निछावर कर देना आदि कुछ ऐसे आदर्श है जिनके पीछे बलिदानो तथा त्याग-तपस्याओ की एक लम्बी परम्परा है। यह हमारी सास्कृतिक धरोहर है यही सब कुछ हमारा "स्व" है।

ज्ञात इतिहास काल से बहुत पहले ही हम इस स्व के लिए सघर्ष करते आ रहे हैं बलिदान देते आ रहे हैं। देवासुर सग्राम के रूप मे हमने सबसे पहला युद्ध उनसे लड़ा था जो हमारे इस स्व को मिटाने का प्रयत्न कर रहे थे। उसके पश्चात् लकायुद्ध के रूप मे हमने दूसरा बड़ा सघर्ष उस शक्ति के विरुद्ध किया जो हमारी इस पवित्र धरोहर को मिटाना चाहती थी। उसके पश्चात महाभारत युद्ध मे हमने बहुत क्षति उठा कर भी उस तत्व पर विजय पाई जो हमारे स्व पर हावी होना चाहता था। यह सारे प्रयत्न ज्ञात-इतिहास (जिसे आज का इतिहासकार अज्ञात या कल्पित कहता है) से पूर्व के हैं।

ज्ञात-इतिहासकाल मे सिकन्दर-शक-हूण-अफगान, ईरान, मुगल तथा यूरोपीय शक्तियो के साथ किए गए सघर्ष इसी क्रम मे आते हैं। बाहर से यह सब सघर्ष राजनैतिक दीखते हुए भी सास्कृतिक हैं। क्योंकि प्रत्येक आक्रान्ता ने यहा पर अपनी सस्कृति फैलाने का प्रयत्न किया तथा हमारी सस्कृति को मिटाने का प्रत्येक सम्भव उपाय काम मे लिया है।

यहा पर यदि हम अपने मूल प्रश्न को पुन दोहरा लें तो अच्छा रहेगा। क्या स्व निरपेक्ष स्वराज्य ही हमारा लक्ष्य था ? जो राष्ट्र विगत कई सहस्राब्दियो से अपने स्वत्व की रक्षा के लिए सघर्ष करता आ रहा है बहुत कुछ क्षति उठा कर जिसने 1947 मे स्वतन्त्रता प्राप्त की है उस राष्ट्र की क्या अपनी कुछ अपेक्षाए नहीं हैं ? कुछ आशाए-आकाक्षाए नही हैं ? यदि ये सब नही थी तो राणा प्रताप को जगलो मे भटकने की क्या आवश्यकता थी ? अकबर के दरबार मे बहुत ऊचा पद उसे मिल सकता था ! शिवाजी को जीवन भर कष्ट उठाने की क्या आवश्यकता थी ? औरगजेब कई बार ऊचे प्रस्ताव रख चुका था। गुरुओ को शीश कटाने की, बच्चो को दीवारो मे चिनवाने की तथा बन्दावैरागी का मास तप्त चिमटियो से खिचवाने की क्या आवश्यकता थी ? अठारह सौ सत्तावन तथा उसके पश्चात् के सघर्ष मे भी सहस्रो लोमहर्षक बलिदान देने की क्या आवश्यकता थी ? क्या ये सब राजनैतिक बलिदान थे।

निश्चय ही ये सब 'स्वत्व' की रक्षा के लिए दिये गये बलिदान थे। वह स्वत्व क्या है आशा है पाठको को स्पष्ट हो गया होगा। आज भी इस स्वत्व की रक्षा मे खड़े होने वालो के सिर पर नगी तलवार लटक रही है, पीड़ित दण्डित किया जा रहा है। जिनके सम्मुख राजनैतिक लाभ ही सर्वोपरि वस्तु है वे सब प्रकार से सुख भोग रहे हैं।

अब प्रत्येक विज्ञ पाठक को स्वय निर्णय करना चाहिए कि क्या वास्तव मे भारत मे स्वराज्य है ? क्या हमारे किसी भी कार्यकलाप से 'स्व' की अभिव्यक्ति होती है ? क्या किसी भी अवसर पर हमारे स्व का सवर्धन सपोषण किया जाता है ? यह कहने मात्र से कि दिल्ली के सिंहासन पर भारतीय ही बैठे हैं स्वराज्य नही हो जाता। यदि ऐसा ही है तब तो रावण, कस, दुर्योधन आदि स्वदेशीय ही थे तब भी स्वराज्य ही था। परन्तु स्वराज्य की कसौटी यह नहीं हो सकती।

हम पहले भी कह आये हैं कि समान पूर्वज, समान इतिहास भाषा, तीर्थ स्थान त्योहार परम्परा इन एक देश विशेष जिस पर माता-जैसी श्रद्धा हो यह सब बातें मिलकर किसी जनसमूह को राष्ट्र की सज्ञा प्रदान करते हैं। भारत-भूमि पर बसने वाले लोग एक राष्ट्र हिन्दू-राष्ट्र कहलाते हैं। अनादिकाल से यह हिन्दू राष्ट्र कहलाता आया है। जब इस पर शक राज्य, हूण राज्य, अफगान राज्य, ईरानी राज्य, मुगल राज्य तथा अग्रेजी राज्य रहा तब भी यह हिन्दू राष्ट्र ही रहा। इसका सीधा-सा अर्थ है कि राज्य कोई स्थाई वस्तु नहीं वह परिस्थितियो वश बदलता रह सकता है।

राष्ट्र की सर्वविध उन्नति के लिए आशाओ-आकाक्षाओ की पूर्ति के लिए एक राष्ट्र की सर्वविध क्षमताओं की अभिव्यक्ति के लिए एक राज्य की आवश्यकता होती है। राज्य एक प्रतिनिधि सस्था है जिसे राष्ट्र चुनता है। यदि वह राष्ट्र की आकाक्षाओं की पूर्ति ठीक से करता है तो हम कह सकते हैं कि वह राज्य स्वराज्य है। यदि ऐसा नही तो वह स्वराज्य नही है। ऐसा राज्य राष्ट्र स्वीकार नही होता देर-सबेर उसे समाप्त कर दिया जाता है। दिल्ली के सिंहासन पर विगत दो सहस्र वर्षों से होने वाला पट-परिवर्तन इसी रहस्य का स्मरण कराता है।

विगत वर्षों से दिल्ली के सिंहासन पर दल-विशेष का राज्य है। परन्तु अनेक प्रकार से सोचने-विचारने पर भी यह राज्य स्वराज्य की कसौटी पर ठीक नही उतरता। केवल एक ही अन्तर दीख पड़ता है कि गोरे अग्रेजो के स्थान पर काले अग्रेज शासन की बागडोर सम्भाले हैं। राष्ट्र की आकाक्षाओ के विपरीत गोवध आज तक चल रहा है अपितु पहले से अधिक प्रगति पर है। राष्ट्र-भाषा आज भी पद-दलित है। धर्मनिरपेक्षता की आड़ मे हिन्दू द्वेष तथा हिन्दुत्व विनाश पग-पग पर झलकता है।

आदिकाल से लेकर महात्मा गाधी तक जिस 'स्वत्व' के लिए सघर्ष चलाये गए। महात्मा गाधी तथा विनोबा ने जिस राष्ट्रीय स्वरूप को अपने आचरण तथा भाषणो से प्रगट किया, हिन्दुत्व एव हिन्दू धर्म सस्कृति की प्रतिक्षण मुक्त कण्ठ से प्रशसा की उसी तत्व को शासन ने पग-पग पर पद-दलित किया। सुधारो के नाम पर जितने हस्तक्षेप हिन्दू पूजा-स्थलो एव हिन्दू सयुक्त परिवारो के विधानो मे किए गए उतने और किसी के लिए नही किए गए। हिन्दू शब्द से ही इस राज्य को चिढ़ है।

ऐसी यह भयानक परिस्थिति है। लगता है जैसे हिन्दू राष्ट्र विदेशी-स्वदेशी राज्यो से सघर्ष चलाते 2 अभी अपने गन्तव्य पर नहीं पहुच पाया है। शासको का स्वदेशी होना ही पर्याप्त नहीं स्वाभिमानी तथा राष्ट्राभिमानी होना भी उतना ही आवश्यक है। स्वदेशी होकर भी हमारे शासक ऐसा राष्ट्र की आशाओं-आकांक्षाओं के विपरीत

(शेष पृष्ठ 5 पर)

भारतीय क्रान्तिकारियों में—आस्तिकवाद

लेखक—श्री लक्ष्मीकान्त जी शुक्ल

'आप यहा कैसे ?' आज जब कभी मैं धार्मिक समारोहो मे जाता हू और वहा मेरा परिचय एक पुराने क्रान्तिकारी के रूप मे होता है तो अक्सर लोगो को इसी प्रश्न सूचक मुद्रा मे पाता हू। इसमे लोगो का दोष नही है। सम्भवत: अब के प्रगतिशील विचारक विशेषकर कम्युनिस्ट तबके के अनुयायी अधिकतर—नास्तिक होने का दावा करते हैं और यह समुदाय क्रान्तिकारियो का उत्तराधिकारी माना जाता है। परन्तु जहा तक मैं समझ पाया हू, इस नास्तिकवाद का स्वरूप सिवाय एक आधुनिक आडम्बर के और कुछ नही है । बुनियादें हम सबकी एक ही भारतीय सभ्यता और संस्कारो पर टिकी हुई हैं।

विप्लवी प्रवाह का आध्यात्मिक स्वरूप

यदि आप भारतीय क्रान्तिकारियो के इतिहास पर गौर से नजर डालें तो गदरकाल से लेकर देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति तक—श्रीमंगल पाडे जिन्होंने विदेशी हकूमत पर पहली गोली चलाई थी, उसके बाद बगाल के शहीद शिरोमणि—खुदीराम बोस, प्रफुल्ल चाकी महाराष्ट्र के चाफेकर बन्धु, काकोरी के श्री रामप्रसाद 'बिस्मिल' तथा अशफाकउल्ला खा आदि वेद मन्त्रो तथा गीता और कुरान का पाठ करते हुए फासी पर चढ जाते हैं ।

अमर शहीद प.रामप्रसाद 'बिस्मिल' के लिए प्रसिद्ध है कि फासी के समय अन्तिम इच्छापूर्ति के रूप मे उन्होंने सस्वर अग्निहोत्र किया और 'ओ३म् विश्वानि देव, इस पवित्र मन्त्र के उच्चारण पूर्वक उन्होंने फासी चुम्बन किया।

बगाल का सन् 1903 से 1908 तक का विप्लवी बीजारोपण काल, वन्देमातरम् आनन्दमठ भवानी मन्दिर आदि के अवशेष आज भी मातृ वन्दना की स्वर लहरो से गूज रहे हैं। श्री अरविन्द उसी समय की देन हैं। योगी अरविन्द के अनुज श्री बारीन्द्र घोष तथा स्वामी विवेकानन्द के भाई भूपेन्द्रनाथ दत्त जीवन पर्यन्त अपनी क्रान्तिकारी कर्मठता के कारण, भीषण यातनाए झेलते रहे। अण्डमान की काल-कोठरिया और स्वतन्त्रता-युद्ध की भुखमरी भी उन्हें नास्तिक नहीं बना पाई।

कई क्रान्तिकारी खासी बड़ी विप्लवी आयु के दीवाने नजर आए। उनमें सरदार भगतसिंह के निकटतम सहयोगी श्री बटुकेश्वर दत्त का नाम विशेष उल्लेखनीय है। मुझे उनके अन्तिम दिनो की याद है कि मृत्यु शैय्या पर वह किस प्रकार निर्भयतापूर्वक, प्रभु की [illegible] तथा दार्शनिक विचारशैली से हम सब को ढाढस बधाया करते थे। उस क्रान्तिवीर के सम्मुख, जीवन-मरण की परिभाषा को गीता और उपनिषदो के ज्ञान का सच्चा अनुभव कहा जा सकता है भले ही उनके जेल के लम्बे अवकाश-अण्डमान की यातनाओ के मध्य भी उन्हे कभी (बाह्य रूप से) धर्म ग्रन्थो का अध्ययन करते नही देखा गया। पर वे सिर से पैर तक आस्तिक थे।

शचीन्द्र सान्याल की संध्या उपासना

इसी प्रकार सन् 1931 के आरम्भ मे जब मैं आजन्म कारावास की डिग्री लेकर नैनी सैन्ट्रल जेल पहुचा और प्रसिद्ध क्रान्तिकारी नेता श्री शचीन्द्रनाथ सान्याल को वेद उपनिषदो के अध्ययन के साथ-साथ सन्ध्या उपासना मे रत पाया तो अन्य साथियो के साथ मुझे भी उनका उपहास करने मे कोई सकोच नहीं हुआ। नास्तिकता का जामा पहिनना क्रान्तिकारीपन की एक शान सी जान पडी। उन्ही दिनो श्री शचीन्द्र ने 'धर्म' समाज और विज्ञान, तथा 'हिन्दू धर्म की समीक्षा' जैसे ग्रन्थो की रचना की थी ।

इस सन्दर्भ मे सरदार भगतसिंह के विषय मे भी भ्रमजनक विचार कुछ लोग व्यक्त करते है। मुझे याद है—एक बार फरारी की हालत में उत्तर के किसी गाव मे विचरते हुए जब वहा की गरीबी उनसे देखी न गई तो उन्होंने एक ग्रामीण से उसको गरीबी मे निर्वाह का कारण जानना चाहा उत्तर मिला 'भगवान् की मर्जी' सरदार का चेहरा तमतमा उठा और वह यह कहते हुए चुने गये कि 'यदि वास्तव भगवान् कहीं है तो पहले हमें उससे निपट लेना चाहिए।'

वही सरदार भगतसिंह यह भी गुनगुनाते पाये गये 'वो सूरते इलाही किस देश बसतिया हैं,—अब जिनके देखने को आखें तरसतिया हैं।'

इतना ही नही, जब सरदार भगतसिंह को फासी का हुक्म हो चुका था और जेल अधिकारी उनकी अन्तिम इच्छा जानना चाहते थे तो उन्होंने श्री शचीन्द्रनाथ सान्याल से मिलने की अभिलाषा को प्राथमिकता दी थी । जबकि शचीन्द्रा दृढ आस्तिक विचारो के थे। (सरदार भगतसिंह की वैदिक सद्धर्म निष्ठा से हम सभी परिचित हैं यज्ञोपवीत पहनते थे और नित्य गायत्री जप करते थे—।)

मूलत: मन्मथनाथ जी भी नास्तिक नहीं

आजादी के बाद भी बहुत से साथियो को समाज की धार्मिक व्यवस्था पर नाक-भौ सिकोडते पाया । एक साहित्यकार—विचारशील क्रान्तिकारी मित्र श्री मन्मथनाथ गुप्त शहीदो की जय बोलते हैं पर भगवान् के नाम पर उलझ पडते हैं । परन्तु विचार विनिमय के अन्तर्गत जब उनके भावो मे विद्रोह केवल पाखण्डो के प्रति पाता हू तो उनके विद्रोही विचारो के साथ चलने मे ही मजा आता है। मूलत. वह भी नास्तिक नही हैं। धर्म के नाम पर समाज मे प्रचलित विडम्बनाओ की चपेट से बचने के लिए यदि कोई नास्तिक कहलाने लगता है तो इसमें दोष किसका है ? स्वामी विवेकानन्द के शब्दो मे "एक पाखण्डी से नास्तिक कही अच्छा है।'

———

(4 पृष्ठ का शेष)

आचरण कर रहे है । मदिरापान की की खुली छूट, भ्रष्टाचार की सीमातीत वृद्धि, पूजीवादी समाज व्यवस्था पर आधारित लोकतन्त्र, शोषण एव उत्पीडन यह सब विदेशी शासन से कथमपि कम नही हैं।

प्राचीन भारत मे आने वाले यात्रियो तथा अन्य ऐतिहासिक प्रमाणो से पता चलता है कि जब यहा पर स्वराज्य था, हिन्द राष्ट्र की आशाओ के अनुरूप राज्य था तब भारत का प्रत्येक जन सुखी था। आज ऐसा कुछ दीख नहीं पडता। सम्पत्ति तथा सत्ता पर चालीस-पचास घरानो का एकाधिकार हो गया है। क्या एस स्व निरपेक्ष स्वराज्य के लक्ष्य को लेकर ही हम सघर्षरत रहते आए हैं।

सोचिए ! विचारिए ! चेतिए !

(विश्व हिन्दु मे)

बने सुराज्य, स्वराज्य हमारा

लेखक—श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ.प्र.)

अमर शहीदों की आशाए,
ऋषि-मुनियों की अभिलाषाए,
हो परिपूर्ण त्वरित गति से अति,
लु ठित हो तमपूर्ण निशाए,

खिले नवल आशा की कलिका—
सुरभित हो उद्यान हमारा।
बने सुराज्य, स्वराज्य हमारा ॥

वेदो का पथ हम अपनाए,
दानवता की वृत्ति भगाए,
मातृभूमि हो समृद्धिशाली—
शुभ कीर्ति से पूर्ण दिशाए,

मानवता पूरित हो जन-जन—
बढे प्रगति पथ राष्ट्र हमारा।
बने सुराज्य, स्वराज्य हमारा।

राजनीति से स्वार्थ हटाए,
देश भक्ति का स्रोत बहाए,
स्वतन्त्रता सदेश विश्व को,
देकर, ध्वज तिरंग लहराए,

धरती का फिर गुंज कहाए—
प्यारा भारत वर्ष हमारा ।
बने सुराज्य, स्वराज्य हमारा ॥

क्रान्तिकारी शहीद, रोशनलाल मेहरा

लेखक—श्री रामसिंह जी बघेले

आजादी की लड़ाई का इतिहास भारतीय युवकों के दिल हिला देने वाले कारनामों से भरा पड़ा है। इस महान लड़ाई में हजारों युवकों ने अपनी आहुतियां दी हैं। इन लोगों की याद धीरे धीरे मिटती जा रही है। गली कूचों में आज भी इनके दिल हिला देने वाले कारनामों का इतिहास छुपा पड़ा है। आज कौन अंधेरी गलियों में निकल कर इतिहास की खोज करे? आजादी के लिए जो आहुतियां दी गयी उनमें से एक हैं अमृतसर के एक खत्री परिवार का युवक रोशनलाल मेहरा। रोशनलाल मेहरा की कहानी आज तक जनता के सम्मुख प्रस्तुत नहीं हुई। यह दुर्भाग्य है। रोशनलाल मेहरा के एक साथी सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री शम्भूनाथ आजाद से प्राप्त सामग्री के आधार पर यह संक्षिप्त जीवनी प्रस्तुत की जा रही है।

पारिवारिक जीवन व शिक्षा

रोशनलाल मेहरा का जन्म अमृतसर के एक खत्री परिवार में सन 1914 सम्वत 19[illegible] श्रावण सुदी पूर्णमासी, दिन [illegible] को हुआ था। इनके पिता का नाम [illegible] तथा माता का नाम ललिता देवी था। [illegible] इनके तथा दो [illegible] भाई श्री नन्दकिशोर [illegible] में मारे गए। शेष भाई तथा बहन अमृतसर में रहते हैं। वह मकान भी सुरक्षित है जिसमें रोशनलाल का जन्म हुआ था।

इनकी माता ललिता देवी चाहती थी कि देश में जो गुप्त क्रांतिकारी आन्दोलन चल रहा है उसमें वे भी भाग लें। इसलिए वे बंगाल की क्रांतिकारी 'अनुशीलन समिति' से अपना सम्बन्ध बनाए हुए थी। वे चाहती थी कि रोशनलाल भी बड़ा होकर देश की आजादी के लिए लड़ी जा रही क्रांतिकारी लड़ाई में भाग लेकर दुश्मनों का मुकाबला करे। यह उनकी दिली इच्छा थी। ललिता देवी खुद भी क्रांतिकारी साहित्य पढ़ा करती थी तथा उन्हीं का कहानियां का रूप देकर बालक रोशनलाल को भी सुनाया करती थी। ललिता देवी ने क्रांतिकारियों को समय समय पर आर्थिक सहायता भी दी। आजादी की क्रांतिकारी लड़ाई में जिसने भी थोड़ा सहयोग दिया है उसे हम आज सम्मान के साथ याद करना चाहिए। यह हमारा प्रथम व परम कर्त्तव्य है। ललिता देवी ने क्रांतिकारी आन्दोलन में जो भी सहयोग दिया है उसे हमें भुलाना नहीं चाहिए।

रोशनलाल की प्रारम्भिक शिक्षा अमृतसर के गवर्नमैंट स्कूल में ही हुई। उन्होंने उर्दू व हिन्दी में दसवीं कक्षा तक उक्त स्कूल में शिक्षा पाई। देश में क्रांतिकारियों का कार्य जोरों से चल रहा था। मां के विचारों की छाप [illegible] पर पूरी तरह पड़ी। आपने इसी धन से स्कूल छोड़कर सारा समय क्रान्तिकारी कार्यों में लगाने का फैसला किया। 1928 में इनकी माता ललिता देवी का देहान्त हो गया। जिस समय ललिता देवी का देहान्त हुआ उस समय रोशनलाल की उम्र सिर्फ 1[illegible] वर्ष की ही थी।

क्रान्ति के पथ पर

19[illegible] में बंगाल की 'अनुशीलन समिति' के सदस्य श्री दयानन्द पन्त अमृतसर में रहते थे। श्री पन्त ने ही [illegible] रोशनलाल का दल से सम्बन्ध बनाने की बात की। 19[illegible] से लेकर अक्तूबर 1932 तक रोशनलाल का कार्यक्षेत्र अमृतसर ही रहा। इसी बीच पंजाब संयुक्त प्रान्त (उत्तर प्रदेश) तथा बंगाल आदि के क्रांतिकारियों से बराबर सम्बन्ध बनाए रहे।

1931 में अमृतसर की एक गली में इन्होंने मकान किराये पर लिया। दिखने में ऐसा लगता था कि यह युवक संगीत आदि की शिक्षा में रत है। लेकिन वास्तविकता यह नहीं थी। उन दिनों पुलिस बड़ा अत्याचार कर रही थी। इसी मकान में रोशनलाल और उमाशंकर ने यह फैसला किया कि अमृतसर पुलिस कोतवाली को बम से उड़ा कर बर्बर अधिकारियों को सचेत कर देना चाहिए। कार्यक्रमानुसार कोतवाली पर बम फैंका गया। इससे कोतवाली को काफी क्षति पहुंची। पुलिस पता नहीं लगा सकी कि यह कार्य किसने किया। लेकिन पुलिस पहले से अधिक सतर्क हो गई। दोनों साथी साफ बच गए।

क्रांतिकारी डकैती न डालें

सितम्बर 1932 में विभिन्न प्रांतों के क्रांतिकारियों की एक बैठक अमृतसर में हुई। क्रांतिकारियों को हमेशा धन की जरूरत रहती थी। वे इस कमी को डकैतियां डाल कर पूरा करते थे। अम्बाला जिले में डाली एक डकैती की समीक्षा करते हुए रोशनलाल ने कहा—"इस डकैती में दो आदमियों का बलिदान व्यर्थ में गया और धन भी पर्याप्त नहीं मिला। क्रान्तिकारियों के जीवन में अब तक जितनी भी राजनैतिक डकैतियां डाली गई हैं, उनके नतीजे व प्रतिक्रियाओं को देखते हुए, अपने सम्पर्क के सभी साथियों को कठोरता से यह हिदायत दी जाए कि वे भविष्य में कोई डकैती नहीं डालें और न वे डकैतियों के कार्यों में सहयोग करें।" रोशनलाल के इन विचारों को सभी सदस्यों ने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

मद्रास में क्रांतिकारी संगठन

इसी मीटिंग में रोशनलाल ने मद्रास में क्रांतिकारी आन्दोलन को संगठित करने के बारे में अपने विचार रखते हुए कहा, मद्रास प्रांत में लम्बे समय से कोई भी क्रांतिकारी संगठन कार्य नहीं कर रहा है, फलतः वहां के शासक बड़े चैन और घमण्ड के साथ बार-बार यह एलान करते हैं कि उनके प्रांत की जनता सबसे अधिक राजभक्त है। यह हमारे लिए चुनौती और लज्जा की बात है। इसलिए हम शीघ्र मद्रास प्रांत में पहुंचकर कार्य करना चाहिए। मद्रास प्रांत में क्रांतिकारी संगठन तथा [illegible] के लिए धन मैं अपने घर से दूंगा। रोशनलाल का यह राय सर्वसम्मति से मान ली गई। निश्चय ही उनका यह सुझाव सही था, क्योंकि मद्रास प्रांत शांत था और उसको आंच देना ही था।

उपरोक्त मीटिंग के बाद रोशनलाल ने शम्भूनाथ आजाद को सूचित किया कि वे रोज बाग में मुझे मिल जाएं। रोशनलाल के पिता की कपड़ा की एक दुकान थी। सभी लोग चाबियां इन्हीं को दे कर कहीं चले गए थे। रुपया लेने का इससे अच्छा समय फिर शायद कभी हाथ न आता। रोशनलाल ने दुकान में से 5 हजार आठ सौ रुपये निकाल लिये। यह रुपये लेकर रोशनलाल बाग में आये, जहां शम्भूनाथ आजाद पहले से ही इनका इन्तजार कर रहे थे। रोशनलाल ने यहां शम्भूनाथ आजाद को मद्रास दल की स्थापना के लिए 5000 रुपये दे दिये। शेष रुपया उन्होंने अपने पास रख लिया। इस घटना के बाद वे अपने घर से हमेशा के लिये चले गये। अब वे फरारी का जीवन बिता रहे थे। उपरोक्त घटना की गूंज शहर में जल्द ही फैल गई। पुलिस व गुप्तचर विभाग आश्चर्य में पड़ गया।

रोशनलाल के कहे मुताबिक शम्भूनाथ आजाद ने उक्त रुपया लाहौर के निवासी रामबिलास शर्मा के पास आवश्यक हिदायत दे कर रख दिया। इस घटना के बाद रोशनलाल श्री सीतानाथ के साथ दिल्ली आ गये। यहां शम्भूनाथ आजाद ने एक मकान में दोनों को ठहरा दिया। इन दोनों के दिल्ली पहुंचने के तीन दिन बाद ही रोशनलाल के पिता और उनके साथ में अमृतसर के सी आई डी वाले भी दिल्ली आ पहुंचे। उन्हें कुछ हाथ नहीं लगा। दिल्ली से रोशनलाल, सीतानाथ तथा शम्भूनाथ आजाद मद्रास पहुंच गए। नित्यानन्द वात्सायन पहले ही मद्रास पहुंच चुके थे। मद्रास से तीनों साथी ऊटकमण्ड गए तथा बाद में अपना कार्य आरम्भ करने के लिए मद्रास शहर आ गए। मद्रास आकर इन्होंने अपना केन्द्र कायम किया। इसी समय खबर मिली कि बंगाल में पुलिस ने क्रान्तिकारियों के कुछ गुप्त कागजात प्राप्त कर लिए हैं। इस खबर से इन्हें चिन्ता होना स्वाभाविक था। उक्त घटना के कारण सीतानाथ डे को कुछ दिनों के लिए बंगाल भेजा गया।

गिरफ्तारी के लिए पुरस्कार घोषित

इसी बीच रोशनलाल कई बार दिल्ली, पंजाब तथा ग्वालियर आए। इस वक्त तक दिल्ली तथा पंजाब से उन के लिए वारन्ट निकल चुका था। पंजाब पुलिस ने इनकी गिरफ्तारी के लिए [illegible]0,000 रु का पुरस्कार घोषित किया।

डाके का विरोध

[illegible]सिंह ने रोशनलाल को ऊटी बैंक लूटने के निर्णय से अवगत कराया। इस पर रोशनलाल ने कहा "बैंक डकैती करने का फैसला निश्चय ही अफसोसजनक और घातक है। जो काम हमें नहीं करना है, वही आप करने जा रहे हैं। दक्षिण भारत में अपने कार्य का प्रारम्भ, जिस बिन्दु से हम करने का संकल्प कर के आए थे, वहां से उसका श्रीगणेश होने नहीं जा रहा है।

बम परीक्षण में शहीद

रोशनलाल ने एक छोटा बम परीक्षण के लिए तैयार किया। 1 मई को रोशनलाल तथा साथियों ने तय किया कि बम को रात के साढे आठ बजे मद्रास बन्दरगाह की पूर्व दिशा में, पैट्रोल की टंकियों से दो फर्लांग आगे, रामपुरम क्षेत्र के समुद्र तट पर बम का परीक्षण करेंगे। परीक्षण के लिए रोशनलाल, शम्भूनाथ आजाद, गोविन्दराम वर्मा, इन्द्रसिंह मुनी आदि लोग गए। परीक्षण रोशनलाल को करना था बाहर का कोई व्यक्ति न आ सके, इसके लिए शम्भूनाथ आजाद, गोविन्दराम वर्मा तथा इन्द्रसिंह मुनी तीनों ओर दूर तक खड़े हो गए। थोड़ी ही देर में जोर से धमाके के साथ रोशनी चमकी और चारों ओर धुआं फैल गया। तीनों साथी रोशनलाल के वापिस आने का इन्तजार कर रहे थे।

इस तरह निरन्तर संघर्ष करते हुए रोशनलाल 1 मई 1933 को इस बम परीक्षण में शहीद हो गए।

आर्य समाज सम्प्रदाय (मत) नहीं था क्या बन रहा ?

श्री पथिक जी भिक्षु—मानव सेवा आश्रम छुटमलपुर (सहारनपुर)

आय समाज की स्थापना से आज तक हमारे सभी छोट बड विद्वान लेखको का वाणी व लेखो द्वारा यही प्रयास रहा तथा भविष्य मे रह सकता है कि आय समाज मत अथवा कोई सम्प्रदाह नही बलिक श्र ष्ठ व्यक्तियो का एक सगठन है जो मानव जाति को उन्नत बनाने एव उसके मल उद्देश्य को प्राप्त कराने मे एक ठोस कायक्रम रखता है। जो वेद को ही धम ग्र य मानकर पाखण्ड कुरीतियो एव अ याय अ याचार आदि मिटाकर विश्व मे एक ही धम जो आदि सष्टि से महाभारत काल तक रहा यह पुन वदिक धम की स्थापना करगा। तभी सवत्र मानव मात्र मे एक उच्च विचारधारा प्रवाहित होगी चाहे वह किसा भी प्रात या देश का हो प्रम बन्ने से चहु ओर मानवता का बोलबाला होगा

विचारणीय प्रश्न यह है कि दूसरे धर्मो (मतो) वाल हम शुरू म अब तक एक मत ही क्यो कहते है। तथा आज 111 वर्षो बाद भी भरमक प्रयास क न पर इस मौलिक बात को अ य मतो क उच्चकोटि क या साधारण से व्यक्तियो के गले के नीचे भा नही उतार पाय ?

अब दूसरा गम्भीर प्रश्न यह है कि हमा ही कई कम० कायकत चाहे व छाटा बडा विद्वान या नता आदि हो आय समाज को भी एक मत का रूप दकर अपना सगठन बना क्या अपना हा कर्सी का भख या यश की प्रवत्ति बनाए रखना नही चाहते ? कहते तो नहा पर न करते यही है।

यदि मरा भी यह सोचना सखता है ता फिर आय समाज को वह सफलता क्या नही मिली जा मिलना चा हए थी मेरे विचारानुसार जिस नीति म अधिकतर आय समाज के मख्य अधिकारी चल रह है तो वह दिन दर नही जब आय समाज हि दुओ मे जनी बौद्ध कबीरपथ राधा स्वामा आदि का सा एक और मत बन कर रह जाएगा ?

तीसरा प्रश्न यह है कि यदि अब भा हम सबने इस स्थिति को न समझा न सम्भाला तो हा सकता है कि देव दयान द के स्व न का जिस आय समाज ने पूरा क ना था किसी और नाम से पूण करेग क्याकि अज्ञान से ज्ञान श्रष्ठ है। सभी ज्ञान चा त ह अज्ञानी नही रहना चाहत। यह भी एक ध्रुव सत्य है कि महर्षि दयानन्द का नाम तथा आदश काय सय चन्द्रवत इतिह स के स्वण पन्नो पर चमकता रहगा। परन्तु साथ मे यह भी लिखा हागा कि देव दयानन्द के बाद आय समाज के इन काय कर्ताओ न अब तक महर्षि ने जो विचार दिया था अनेको ने उसक प्रचार प्रसार मे अपना सवस्व समपण करके वदिक धम की महान सेवाए की है और वतमान मे यह भी लिखा जा रहा ह कि इन स्वर्ण पीन वाले मजनओ ने निज स्वाथ या लोभ मोह अन न आदि स देव दयान द के किए कराये पर पानी फेर रहे अथवा फेरवा रहे हैं।

आर्य बन्धुओ आप किस कोटि म अपना नाम चाहते है ? क्या उन चन्द धर्म के दीवानो म जसे प धम देव विद्या मानण्ड प लेखराम आय पथिक स्वामी श्रद्धान द महाराज स्वामी दर्शनान द आदि जिन्होने वदिक धम की रक्षाथ सवस्व बलिदान किया। इन चन्द पक्तियो को देख कर यदि एक भी व्यक्ति महात्मा ह सराज लाला लाजपतराय स्वामी आत्मानन्द का भाति काय क्षत्र मे उतर आये तो मे अपना लिखना साथक समझ गा

--उलझन--

लेखक—श्री कविवर प्रणव शास्त्री एम ए महोपदेशक

कस गीत विजय क गाऊ।

कदम कदम पर हार हा रही कस जय हार सजाऊ।
जिधर देखिए धम कम मे रावण का दिखा मजा है
ममसौन की सुरापान कर िसा ा न ार सजा है
निशाचरा का बलन्दत स क ण क मन लजा ह
आज अयोध्या क आग म कसे सुकमा च प

सुरसा क स म व नन्दित क न क न न
य का वि वस म नज्न छ नी अडर रा है

खरदूषण क वश ज क कन्लि व फन्क है
मग मरीच क्चाल भरत कस न्तरी न ज

राम खा ग्य खा एम व्य म न रण आ
देव सा गय एक साथ ह वञ्चकन का वरण न्आ

अन्न भावाप्रय पण प्रतीक अव ना मच मरण ना न
स्वाभिमान न न मा ा म भव ा ना

को अद्भ य ा स्वक्ता म न त।
युद्ध क लड्डू क पि मतवज प न तना पर गाना।

पजावी पारुष का वभव क्ना ख ाय कर गत
कम नप णजातसिह ा नज फिर व नि

प्रणव स ा आाआ के ओ ज ज हए नगा।
ना मनो वाण क पतङ्गा नज य न गाउ।

चौप चापाये शोक म यण क पज न फाग।
बन पवन म आा ल। नवमा न न ा स ा 6

प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री मे प्रवेश लेवे

सस्कृत पढने के इच्छुक छात्र प्राज्ञ विशारद शास्त्री श्र णियो मे प्रवेश के लिये निम्न पते पर 20 अगस्त 986 तक आवेदन कर सकते हैं न्यूनतम योग्यता कक्षा 8 उत्ताण हो।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार की 10 वी कक्षा मे क्रमश प्रवेश के लिए कक्षा 5 उत्तीण छात्र भी आवेदन कर सकते हैं।

मात्र 30 रु मासिक पर दूध भोजन आवास एव शिक्षा की समुचित व्यवस्था। शास्त्री के छात्रो के लिये सवथा नि शुल्क शीघ्रता करें।

—प्राचाय

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय
करतारपुर (जि जालन्धर)

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक करतारपुर का त्रैवार्षिक चुनाव एव सस्कृत के लिए नई योजनाए

श्री गुरु वि जा स्मारक न मन्त ट्रस्ट करतारपुर का त्रवा षिक च व न द के पप्रधान श्री सयानन्द ज म नाल तृ्धियाना की अध्यक्षत म सम्पन्न आ जसम सव सम्मति से तान वष के लिय ट्रस्ट क प्रधान ा त्रिचन्द जा अग्रवा ा उ मन्त्री श्री चतुभु ज जा मित्तल जालन्धर कोषाध्यक्ष श्री यशपाल चन्द जी अग्रवाल करतारपुर पुन निवाचित हुए।

सभा ने यह भी निणय लिया कि ट्रस्ट का सस्कृत महाविद्यालय पहले ही गुरुकुल कागडी विश्व विद्यालय हरिद्वार से विद्याधिकारी जो कि विशारद तथा मैट्रिक की सयुक्त उपाधि तक मान्यता प्राप्त है। आगे की प्राज्ञ विशारद, शास्त्री श्र णियो के लिए इस विद्यालय को गुरु नानक विश्व-विद्यालय, अमृतसर के साथ सम्बद्ध क न ा ए तथ सके ल ए प्रवेश की अन्तिम तिथि 0 अगस्त 1986 घोषित कर दी जाए ार ानि व सभा के प्रधान ज व र जी न शास्त्री कक्षा को उपकरण का परान्ति उपदेशक कक्ष क सा ा जोडने का प्रस्ताव रखा और कहा कि ऐसा करने स जहा सस्कृत अध्यापको की पूर्ति होगी वहा उपदेशक वग का अभाव भी दूर होगा। श्री वीरेन्द्र जी ने इसम सगीत की शिक्षा को भी आवश्यक अग बनाने पर जोर दिया। सभा ने श्री वीरेन्द्र जी क इस प्रस्ताव को सवसम्मति से स्वीकार किया पढाई के साथ टक्निकल कक्षाए शुरू किये जाने का प्रस्ताव भी विचाराधीन रूप मे स्वीकार किया गया। वार्षिक उत्सव 28 सितम्बर से 5 अक्तूबर 86 तक मनाया जाएगा।

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना की गत सप्ताह की गतिविधिया

● श्रीमती स्नेह जी बेरी क घर पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। सब बहिनो ने बच्चे की दीघायु की कामना का तथा परिवार को बधाई दा। प्रिया सुपत्नी स्नेह स्त्री आय समाज की सन्स्या है तथा श्रीमती निमला जी व ी मन्त्री स्त्री आय समाज की पुत्र बधु है।

● पिछले आठ वर्षों म नि तर सक्रान्ति का सत्सग भिन्न ? परिवारो में होता है। परिवार को आय समाज के नियमो का कलण्ड अथवा मर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का चित्र तथा आय साहित्य भ ट किया जाना है। यह आयोजन अ यत लाभकारी । इससे वेद प्रचार होता है तथा सभी परिवारो मे यज्ञ की लाभकारी बातो का प्रवचन द्वारा सब को बताया जाता है। इस बार का यन श्रीमती यशवन्ता जी धल्ला के घर मिविन लाईनज म हुआ मब परिवार यथा शक्ति दान भी दन है।

● श्रीमती नह जो सूद अ तरग सदस् ा मम ज क मुपत्र अजय सूद के विवा के अ रम्भ म 0 7 86 को यज्ञ क या ाय । पास पडोस पर अ छ प्रभाव र मारा काय श्रामता कमन जा अ ा प्र ान स्त्री समाज ने क्रा । ा व र न 101 र स्त्री आय सम ज को दान न्यि ।

● श्रीमती वीरा वाला जा भाटिया के निध न प अन्तिम शोक न्विम पर श्रीमन कमला ी अ या न यज्ञ कराया तथ वग म की सन्गति के लिय सम्मिलित प्र थना भा की भाटिया परिव र ने नका पण्य स्मति मे अ य न थ अ क साथ स्वी आय सम ज को 00 रु दान दिय यह यज्ञ ल गन भवन धर्मसिह नगर म सम्पन्न हुअ

—मन्त्री

निर्दोष लोगो की हत्या पर शोक सभा

7 7 86 दिन रविवार को आम समाज के साप्ताहिक सत्सग के पश्चात आय समाज वरी क सन्स्यो की एक विशेष सभा आन्रणीय महात्मा प्रम प्रकाश जी वानप्रस्थी की अध्यक्षता मे हुई जिसमे निम्नलिखित प्रस्ताव सव सम्मति से पारित किए गए —

● मुक्तसर मे उग्रवादियो द्वारा निदाष बस यात्रियो की निमम हत्या की भत्सना की गई और सरकार से माग का गई कि उग्रवादियो को पकड कर कठोर स कठोर दण्ड दिया जाए। उन यात्रियो की आत्म की शाति के लिए दो मिन्ट का मौन ख कर सव सम्मति से शोक प्रस्ताव पास किया गया

★ भारत सरकार से यह माग की गई कि पजाब रा य म बरनाला सरकार (अका ी सरकार) कानन व यव स्था बनान मे बुरो तरह विफल रहा है। रा य मे किसी भा व्यक्ति को जान व माल की सुरक्षा नही है। राज्य मे जगल का कानून लागू है। इसलिए इस बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त किया जाये और राष्टपति शासन लागू करके सारे राज्य भर मे सेना तैनात की जाए। ताकि उग्रवाद को कुचला जा सके।

—सतीश आय (धूरी)

दो अध्यापक चाहिए

योग्यता—सस्कृत व्याकरण सस्कृत साहित्य से आचाय परीक्षा उत्तीण।

गणित तथा अग्र जी सहित बी एस सी परीक्षोत्तीण।

वेतनमान—600रुपए+वार्षिक वद्धि सम्पक कर। —आचाय

श्री गुरु विरजानन्द वदिक सस्कृत महाविद्यालय करतारपुर (जाल धर)

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा
जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

ज्ञान का आदि श्रोत वेद है

बृहस्पते प्रथम वाचो अग्र यत्प्रैरत नामधेय दधाना ।
यदेषा श्रेष्ठ यदरिप्रमासीत प्रेणा तदेषा निहित गुहावि. ॥ 1 ॥
ऋग्वेद—1071

अर्थ—(बृहस्पते) हे बृहस्पति अर्थात महान ज्ञान से युक्त वेदवाणी के स्वामी परमात्मन् (प्रथमम) सृष्टि के आरम्भ मे मनुष्यो को उत्पत्ति के समय आदिम ऋषियो ने (यत) जो (अग्रम) पहले पहल (नामधयम) भिन्न भिन्न पदार्थो के नामो को (दधाना) धारण करने वाली, देने वाली (वाच:) वेद की वाणियो को (प्रैरत) प्रेरित किया, वह वह ज्ञान (यत) क्योकि (एषाम) इन ऋषियो का (श्रेष्ठम्) श्रेष्ठत्व था (यत) क्योकि इनका (अरिप्रम) निष्पाप व अकलकित था (तत) इसलिए (प्रेणा) अपना प्रेरणा या अपने प्रेम से, आपने (एषाम) इनके (गुहा) हृदय मे, बुद्धि मे (निहितम) रख दिया, वही उन आदिम ऋषियो के द्वारा अन्य मनुष्यो के लिए (आविः) प्रकट हुआ।

जब मनुष्यो की सृष्टि हुई तो व कोई वाणी, कोई भाषा नही जानते थे। परमात्मा ने आदिम ऋषियो को ज्ञान देकर उन्हे वेद वाणी वेद की भाषा सिखाई। उन ऋषियो ने यह वेद का ज्ञान अन्य मनुष्यो को सिखाया और वेद की भाषा उनमें प्रचलित की। इस प्रकार परमात्मा ने आदिम ऋषियो को ज्ञान दिया और भाषा सिखाई। फिर उन ऋषियो दूसरे लोगो को ज्ञान दिया और भाषा सिखाई। भाषा बिना सिखाये नही आ सकती। इसलिए परम्परा से भाषा सिखाने वाला आदि गुरु परमात्मा को ही स्वीकार करना पडता है। आदिम ऋषियो को परमात्मा ने वेद का ज्ञान और भाषा इसलिए सिखाई क्योकि वे सब श्रेष्ठ और निष्पाप थे। पूर्व कल्प से पूर्व का सृष्टि मे उनके कर्म सब से श्रेष्ठ और सबसे निष्पाप रहे थे। उनके इन सब से पवित्र कर्मो के फलस्वरूप उन्हे प्रलय के बाद इस सृष्टि मे परमात्मा ने पवित्र वेदज्ञान का अधिकारी तथा अन्य सब मनुष्यो का प्रथम गुरु बनाया और इस प्रकार ससार मे ज्ञान प्रवाहित हो गया।

यह अक 21 22 दिनाक 24 तथा 31 अगस्त 1986 तदानुसार 9 तथा 16 भाद्रपद 2043 का सम्मलित अक

इस अक का—मूल्य-3 रु०

भगवान् कृष्ण हमें क्या सिखाते हैं ?

हमारी संस्कृति दो महापुरुषों के जीवन पर निर्धारित है। हम जब कभी किसी समस्या में घिर जाते हैं तो प्रायः इन दोनों को याद करते हैं। वह हैं भगवान् राम और भगवान् कृष्ण। इन दोनों पर हमें इतना गर्व है कि हम बाकी सब कुछ भूल जाते हैं, परन्तु इन्हें कभी नहीं भूलते। और इनके लिए हमारे दिलों में जो आदर और सम्मान है वह कई बार हमें इनके विषय में कुछ ऐसी बातें कहने पर विवश कर देता है जो सामान्य परिस्थितियों में हम किसी दूसरे के विषय में कहना पसन्द न करें। भगवान् राम के विषय में इतना कुछ नहीं कहा जाता, जितना कि भगवान् कृष्ण के विषय में कहते हैं। उनके भक्तों ने उन्हें कुछ बदनाम भी कर दिया है क्योंकि कई बार उनके विषय में वह बातें भी कह दी जाती हैं जो हम किसी साधारण व्यक्ति के विषय में भी नहीं कह सकते। गोपियों के साथ उनका क्या सम्बन्ध था और वह रास लीला में क्या कुछ किया करते थे। इस प्रकार की कई ऐसी बातें हैं जिन से श्री कृष्ण जी की शोभा नहीं बढ़ती, अपितु उनके जीवन का एक ऐसा पक्ष हमारे सामने आता है जिस पर हम गर्व तो नहीं कर सकते, परन्तु कई बार लज्जा से सिर झुक जाता है। अपने किसी दूसरे महापुरुष के साथ हमने इतना अन्याय न किया होगा, जितना हम भगवान् कृष्ण जी के साथ करते हैं, परन्तु वास्तविक स्थिति यह है कि उनका व्यक्तित्व इतना महान् था जिसका हम कभी अनुमान भी नहीं लगा सकते। एक ऐसा व्यक्तित्व ही वह सब कुछ कह सकता था जो उन्होंने गीता में कहा है। यही कारण है कि पांच हजार वर्ष व्यतीत हो जाने पर आज भी श्री कृष्ण जी की गीता हमारे लिए सबसे अधिक प्रेरणादायक ग्रन्थ है। हम अपने इतिहास को देखें तो सबसे ऊंचा स्थान हम वेदों को देते हैं। वेदों का कुछ निचोड़ हमें उपनिषदों में मिलता है और उपनिषदों का निचोड़ गीता में मिलता है। इसमें हमें मानव जीवन के कई पक्ष देखने को मिलते हैं। एक समय वह भी आता है जब अर्जुन लड़ने से इन्कार कर देता है। फिर भगवान् कृष्ण की प्रेरणा से वह उसके लिए तैयार हो जाता है। श्री कृष्ण जी केवल उसे लड़ने के लिए ही तैयार नहीं करते, बल्कि स्वयं उसके सारथी भी बन जाते है और ऐसी परिस्थितियां पैदा करते है कि वह विजय प्राप्त करे।

कई लोग भगवान् कृष्ण पर यह आरोप लगाते हैं कि उन्होंने भाई-भाई को आपस में लड़ा दिया था। पाण्डव कौरवों के मुकाबला में बहुत

कमजोर थे। वह सम्भवतः लड़ने के लिए तैयार न होते यदि श्री कृष्ण उन्हें इसके लिए प्रेरणा न देते ।

जो व्यक्ति यह आरोप भगवान् श्री कृष्ण पर लगाते हैं वह यह भूल जाते हैं कि महा-भारत की लड़ाई से पहले भगवान कृष्ण दुर्योधन के पास भी गए थे उसे समझाने का भी प्रयास किया था। जब उन्होंने देखा कि वह किसी प्रकार भी नहीं मानता और पाण्डवों के साथ अन्याय किया जा रहा है तो उस अन्याय के विरुद्ध लड़ने के लिए उन्होंने पाण्डवों को तैयार किया । जब वह उसके लिए तैयार हो गए तो पूरी तरह श्री कृष्ण ने उनकी सहायता की और स्वयं अर्जुन के सारथी बनकर रण-क्षेत्र में पहुंच गए ।

यह है भगवान् कृष्ण की सारी मान्यताओं का सार और वह यह कि अन्याय के आगे किसी भी स्थिति में मनुष्य को झुकना नहीं चाहिए। अपने अधिकारों की रक्षा के लिए उसे चाहे बड़े से बड़ा कितना ही बलिदान देना पड़े, वह दे, परन्तु अन्याय के आगे न झुके ।

यह एक ऐसा उपदेश है जिसने हमें समय 2 पर प्रभावित किया है। जब हम अंग्रेज के विरुद्ध लड़ रहे थे तो कई क्रान्तिकारी युवक गीता हाथ में लेकर फांसी पर चढ़ जाया करते थे और वह कहा करते थे कि भगवान् कृष्ण ने हमें यही सिखाया कि अन्याय के आगे कभी नहीं झुकना और अपने अधिकारों रक्षा के लिए जो भी बलिदान देना पड़े वह दे देना चाहिए ।

आज की स्थिति में जब हम भगवान् कृष्ण के इस उपदेश पर विचार करते हैं तो इसका महत्व हमारे सामने आता है। आज पंजाब में दो शक्तियों के बीच लड़ाई हो रही है। एक तरफ वह हैं जो केवल अपनी शक्ति के सहारे दूसरों के अधिकार छीनना चाहते हैं, दूसरी तरफ वह हैं जो कुछ कमजोर तो हैं और उनका कोई संगठन भी नहीं। फिर भी वह अभी तक झुकने को तैयार नहीं हैं। कई लोग कहते हैं कि पंजाब में हिन्दुओं सिखों की लड़ाई है। मैं इसे हिन्दू-सिख की लड़ाई नहीं समझता। सिख गुरुओं में भी कई श्री कृष्ण के भक्त थे। श्री गुरु गोविन्द सिंह जी ने कृष्ण अवतार पर कविता भी लिखी थी। वह न भगवान कृष्ण के विरोधी थे न हिन्दुओं के विरोधी थे। परन्तु उनके कई अनुयायी दोनों का विरोध करते हैं। उन्हें प्रेरणा सीमा पार से मिलती है। इसलिए पंजाब में जो कुछ हो रहा है वह वास्तव में भारत और पाकिस्तान के बीच एक लड़ाई है । हमारे लिए यह एक धर्म युद्ध है। देश की रक्षा के लिए जो भी लड़ाई लड़ी जाए वह धर्म युद्ध ही होता है और ऐसे धर्म युद्ध के लिए ही भगवान कृष्ण ने अर्जुन को तैयार किया था और उसे कहा था कि अर्जुन अपने अधिकारों की रक्षा के लिए लड़ने के लिए तैयार हो जाओ। इस लड़ाई में यदि तू मारा गया तो तुझे स्वर्ग मिलेगा और यदि तू जीत गया तो इस धरती पर राज करेगा।

यही वह सन्देश है जो कृष्ण जन्माष्टमी हमें देती है। उनके जन्मोत्सव पर हम उनकी पूजा करते हैं। वास्तव में मूर्तियों की पूजा करना या आरती उतारना इसका कोई लाभ नहीं। देखना तो यह चाहिए कि भगवान कृष्ण ने हमें क्या सिखाया था। उनका उपदेश केवल महाभारत के अर्जुन के लिए ही न था वह सारे मानव

समाज के लिए था। महाभारत की लड़ाई तो हररोज होती है । धर्म और अधर्म की, न्याय और अन्याय की लड़ाई हम अपने जीवन में भी हररोज देखते हैं और कई बार हम सोचने लगते हैं कि क्या करें, लड़ें या न लड़ें। यह स्थिति उस समय और भी विकट रूप धारण कर लेती है जब कोई अपना सम्बन्धी या मित्र अपना विरोधी हो। हम कई बार यह कहते हैं कि पंजाब में हमें आपस में लड़ना नहीं चाहिए। भाई-भाई की लड़ाई किसी भी स्थिति में उचित नहीं कही जा सकती, परन्तु जहां अन्याय हो रहा हो, धांधली मचाई जा रही हो, वहां झुक जाना और अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष न करना भगवान् कृष्ण के अनुसार यह एक पाप है। हम यदि इस रहस्य को समझ लें और जो कुछ भगवान कृष्ण कह गए उसे अपने जीवन में क्रियान्वित करने का प्रयास करें तो हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। श्री कृष्ण का जीवन और उनके उपदेश हमारे लिए सबसे बड़े पथ-प्रदर्शक हैं, यदि हम उन्हें समझ लें तो अपने लक्ष्य में हम सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

—वीरेन्द्र

कुछ "बुनियाद" के बारे में

आजकल दूरदर्शन पर एक धारावाहिक "बुनियाद" दिखाया जा रहा है । इस में बार-बार आर्य समाज का उल्लेख आता है। यह लाहौर की उस समय की कहानी है जब अभी देश का विभाजन नहीं हुआ था। उन दिनों लाहौर में बच्छोवाली नाम की एक गली थी जहां आर्य समाज का एक बहुत बड़ा मन्दिर था। आर्य समाज के बड़े-बड़े नेता वहां जाकर भाषण दिया करते थे। जो लोग उस पंजाब से आए हैं और जिन्होंने आर्य समाज बच्छोवाली का नाम भी उस समय सुना था वे हैरान हैं कि "बुनियाद" में जो घटनाक्रम दिखाया जा रहा है क्या ये सही है? कुछ को यह भी डर है कि यह कहीं आर्य समाज को बदनाम करने के लिए कोई ऐसी कहानी तो नहीं दिखाई जा रही जो अन्त में यह प्रकट करे कि आर्य समाज कोई अच्छी संस्था नहीं है। मुझे कई पत्र प्राप्त हुए हैं जिनमें मुझ से पूछा गया है कि जो कहानी दिखाई जा रही है क्या यह सही है? और क्या यह सब कुछ वहां हुआ था?

'बुनियाद' में जो कुछ दिखाया जा रहा है वह एक ऐसे परिवार की कहानी है जो देश के विभाजन के समय लाहौर में था और उन हालात से कुछ प्रभावित हुआ था। इस सारे परिवार का आर्य समाज के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था लेकिन इनमें दो ऐसे पात्र हैं जो आर्य समाज के प्रभाव में आए थे। एक आत्मानन्द दूसरा हवेली राम। बताया गया है कि ये दोनों आर्य समाज बच्छोवाली जाया करते थे। वहां उन्होंने जो कुछ सुना था उससे प्रेरित होकर उन्होंने देश और धर्म की सेवा करने का व्रत लिया था और फिर अपना सारा जीवन उसी में लगा दिया। हवेलीराम ने एक विधवा से शादी कर ली। इस तरह यह सिद्ध कर दिया कि आर्य समाज विधवा विवाह का विरोधी नहीं है। आत्मानन्द और हवेलीराम दोनों उस समय की इन्कलाबी पार्टी में शामिल हो गए थे। यह भी आर्य समाज के इतिहास के अनुसार ही है। भगतसिंह और सुखदेव दोनों का आर्य समाजी परिवारों से सम्बन्ध था काकोरी के शहीद राम प्रसाद बिस्मिल ने अपनी आत्मकथा में लिखा था कि वह जो कुछ बने है आर्य समाज की बदौलत।

सारांश यह कि 'बुनियाद' में आत्मानन्द और हवेलीराम यह आर्य समाजी विचारों और उस के जीवन को प्रस्तुत कर रहे है। इससे अधिक 'बुनियाद' का आर्य समाज से कोई सम्बन्ध नहीं। यह कहानी अन्त में जाकर कहां और कैसे समाप्त होगी मेरे लिए कुछ कहना कठिन है। लेकिन इसमें इन दो आर्य समाजियों का जो रूप पेश किया जा रहा है वह ऐसा है जिस पर प्रत्येक आर्य समाजी गर्व कर सकता है और इससे यह भी पता चल जाता है कि जिस व्यक्ति पर आर्य समाज की शिक्षाओं का प्रभाव होता है उसका जीवन क्या बन जाता है। इस समय तक जो कुछ दिखाया गया है उसमें आत्मानन्द और हवेलीराम इन दोनों के बारे में कुछ भी ऐसा नहीं दिखाया गया जिस पर कि वे शर्मिन्दा हों या कोई आर्य समाजी शर्मिन्दा हो कि यह क्या दिखाया जा रहा है। इसके बाद क्या होगा मै नहीं जानता। इस समय इतना ही कह सकता हूं कि 'बुनियाद' के इस पहलू की ओर भी अधिक ध्यान देना चाहिए कि किस तरह दो व्यक्तियों ने आर्य समाज की प्रेरणा से अपने आपको अपने देश और धर्म की सेवा में लगा दिया।

—वीरेन्द्र

महामानव श्रीकृष्ण

लेखक—श्री डा.भवानीलाल जी
भारतीय, चण्डीगढ़

पांच हजार वर्ष पूर्व ठीक आज की तरह ही विश्व के क्षितिज पर भादों की अन्धेरी तमिस्रा अपनी गहन कालिमा के साथ छा गई थी। तब भी भारत में जन था, धन था, शक्ति थी, साहस था, कला और कौशल क्या नहीं था? सब कुछ था, पर एक अकर्मण्यता भी थी, जिससे सब कुछ अभिमत मोहाच्छादित और तमसावृत्त था? महापुरुष अनेक हुए हैं परन्तु लोक नीति और अध्यात्म को समन्वय के सूत्र मे गूंथ कर "कर्मण्येवाधिकारस्ते माफलेषु कदाचन" का पान्चजन्य फूंकने वाले कृष्ण ही थे।

ससार मे अनेक महामानव समय-समय-2 पर उत्पन्न हुए। उनमे कोई धर्म संस्थापक या तो कोई स्वराज्य सृष्टा, कोई परम निस्पृह सन्यासी था तो कोई विलक्षण राजनीतिज्ञ-परन्तु इन सभी आदर्शों की चरम अभिव्यक्ति यदि किसी एक व्यक्ति मे हुई है, तो वे हैं श्रीकृष्ण। उनके जीवन में आर्य चरित्र की चरम परिणति दिखाई देती है। अतः यदि उन्हें विश्व के महान् विभूति सम्पन्न पुरुषों का मूर्धन्य कहें तो कोई अत्युक्ति नही होगी।

प्रसिद्ध गुजराती साहित्यकार और राजनीतिज्ञ कन्हैयालाल मुन्शी के शब्दो मे हम कह सकते है— "इतिहास की रंगभूमि पर जब ऐसे व्यक्ति आते है तब दूसरे तत्व पुरुषार्थ विहीन हो जाते हैं। इतिहास क्रम रुक जाता है। समय शक्तियो का मान भूल कर दर्शकों का मन उस के आस-पास लिपट जाता है। नायक के मोह में नाटक का अर्थ विस्मरण हो जाता है। भूतकाल की रंगभूमि पर ऐसे अनेक व्यक्ति हुए हैं—परशुराम, मधुसूदन श्री कृष्ण और समस्त जगत् के राजनीतिज्ञ शिरोमणि भगवान् चाणक्य"

आर्य जीवन का सर्वाङ्गीण विकास हमें कृष्ण के चरित्र मे दिखाई देता है। जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नही है, जिसमे उन्हे सफलता न मिली हो राजनीति और समाज नीति, धर्म और दर्शन सभी क्षेत्रों में वे महान् राजनीतिज्ञ, क्रान्ति के सूत्रधार और साम्राज्य सृष्टा के रूप मे दिखाई देते हैं। परन्तु उनकी प्रवृत्तियां यहीं तक सीमित नहीं हैं वे आध्यात्म मार्ग के पथिक भी हैं। अपने समय के महान् साधक और तत्व चिन्तक के रूप मे हमारे समक्ष आते हैं।

उनके समय में भारत में गाधार से लेकर सह्याद्रि पर्वतमाला तक क्षत्रिय राजाओ के छोटे-2 राज्य थे। एक चक्रवर्ती सम्राट् के न होने से अनेक राजा अत्याचारी, स्वेच्छाचारी और प्रजा पीड़क हो गये थे। मथुरा का कस, मगध का जरासंध, चेदि नरेश शिशुपाल और हस्तिनापुर के कौरव सभी, दुष्ट, विलासी और दुराचारी थे। श्रीकृष्ण ने अपने अद्भुत राजनैतिक चातुर्य से इन सभी राजाओ का मूलोच्छेद कराया और धर्मराज, अजातशत्रु युधिष्ठिर का अखड एक क्षत्र, सार्वभौम चक्रवर्ती शासन स्थापित किया।

जिस प्रकार वे नवीन साम्राज्य निर्माता और युग प्रवर्तक थे, उसी प्रकार अध्यात्म और तत्व चिंतन के क्षेत्र में भी वे अपना अनुपम और अद्वितीय स्थान रखते थे। जल मे रहने वाले कमल पत्र के समान निर्लेप रहने वाले स्थितप्रज्ञ व्यक्ति का जैसा वर्णन उन्होंने अपने गीता दर्शन मे किया है उसके मूर्त उदाहरण वे स्वयं थे। उनके जीवन की यह विशेषता है कि प्रवृत्ति और निवृत्ति श्रेय और प्रेय, ज्ञान और कर्म आदि प्रत्यक्ष मे विरोधी दीखने वाली

प्रवृत्तियों का उनमें अद्‌भुत सामंजस्य था । वे एक उच्चकोटि के साधक, चिंतक, योगी और दार्शनिक थे। उन्होंने धर्म के दोनो पक्षों—अभ्युदय और निश्रेयस को अपने जीवन में समान महत्व दिया था। आर्य संस्कृति की यही विशेषता है कि उसके उपासक सासारिक विभूति की प्राप्ति के साथ-साथ पारलौकिक उन्नति की ओर भी ध्यान देते रहे हैं और उन्होंने मानव जीवन के चरम लक्ष्य—मोक्ष प्राप्ति को कभी नहीं भुलाया । अतः हम देखते हैं कि अध्यात्म विद्या का अत्यन्त सरल और स्पष्ट निरूपण कृष्ण ने अपने विचार और व्यवहार के द्वारा उपस्थित किया है ।

कृष्ण ने देश की सामाजिक परिस्थिति को अपनी दृष्टि से कभी ओझल नही किया। उन्होने पतनोन्मुख समाज को उद्‌बोधन दिया । स्त्रियो, वैश्यों और शूद्रो के नष्ट होते हुए अधिकारो का उन्होंने बलपूर्वक प्रतिपादन और समर्थन किया। वर्ण-व्यवस्था मे उत्पन्न होने वाली शिथिलता, विकृति और अव्यवस्था को यथाशक्य दूर करने का प्रयत्न किया । महाभारत काल में वर्णसांकर्य और वर्ण विरोध का बोल बाला था। द्रोणाचार्य जैसे ब्राह्मण राजकुमारो को शस्त्राभ्यास कराकर अपनी जीविका का निर्वाह करते थे। क्षत्रिय राजकुमारो को अपने अभिजात कुलोत्पन्न होने का बड़ा गर्व था। भीम ने कर्ण का सूत पुत्र होने के कारण अपमान किया। द्रोपदी ने स्वयंवर के अवसर पर पुन: कर्ण का तिरस्कार किया। क्षत्रियकुमारो के इस मिथ्या गर्व को सन्तुष्ट करने को एकलव्य जैसे शस्त्र विद्या के जिज्ञासु परन्तु शूद्रकुलोत्पन्न छात्र की जिज्ञासा वृत्ति को कुण्ठित किया जा रहा था। भीष्म जैसे धर्मपरायण पुरुष भी अपने आपको दुर्योधन के अन्न से पला हुआ समझ कर अधर्म का पक्ष ग्रहण करने मे ही औचित्य समझते थे।

समाज के इस नैतिक पतन को देख कर मानव बन्धुत्व के प्रबल समर्थक श्रीकृष्ण का हृदय पीड़ित और शोषित वर्ग की दयनीय दशा को देख कर क्षुब्ध हो उठा। कृष्ण उच्चकुल के गौरव और राजवंश के अहंकार को भुला कर सामान्य जनता के पक्ष-पोषक बन गए । वे राजाओं की आध्यात्मिक शक्ति में विश्वास नहीं रखते थे । कृष्ण गोपालो के तो सखा ही थे। उन्होने अहंकार गर्व में मूढ़ता को प्राप्त हुए सम्राट् दुर्योधन का आतिथ्य अस्वीकार किया और दासी पुत्र विदुर के घर को पवित्र किया।

आज आवश्यकता इस बात की है कि कृष्ण के इस दिव्य चरित्र का अधिक से अधिक मनन और अनुशीलन किया जाए। न केवल मनन ही अपितु उन के जीवन और उनकी शिक्षा को प्रकाश स्तम्भ मान कर हम अपने लक्ष्य की ओर बढ़ें। कृष्ण की शिक्षा में ही न केवल भारत का अपितु समस्त विश्व का कल्याण निहित है। आज जबकि आर्य धर्म, सभ्यता और संस्कृति पर बहुमुखी आक्रमण हो रहे हैं तब श्रीकृष्ण की मगलमय वाणी और उनका तेजस्वी प्रतिभावान और संस्कारी व्यक्तित्व ही हमारा पथ-प्रदर्शन कर सकता है।

सहस्रों वर्षों से विस्मृत कृष्ण के इस ओजस्वी और क्षमताशील चरित्र तथा इतिवृत्त की ओर सर्व प्रथम सुधारक शिरोमणि दयानन्द और बंगाल के साहित्य सम्राट् बंकिमचन्द्र ने हमारा ध्यान आकृष्ट किया। बकिम ने तो कृष्ण चरित्र की बुद्धिवादी और वैज्ञानिक व्याख्या भी हमारे सामने प्रस्तुत की। इसके लिये हम उनके चिरकृतज्ञ रहेंगे।

पंजाब बचाओ, देश बचाओ सम्मेलन

15 अगस्त 1986 को आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना मे पंजाब में अल्पसंख्यक हिन्दू जाति के साथ हो रहे अन्याय तथा उन पर किये जा रहे अत्याचार के विरुद्ध पंजाब सरकार तथा भारत सरकार को आवाज पहुंचाने के लिए जहा सम्मेलन किया। वहां पर उपस्थित नर-नारियों ने भारत सरकार की इस ढिल-मिल पालीसी की निन्दा की। आतंकवाद को समाप्त करने के लिए शीघ्र तथा ठोस पग उठाने के लिये कहा, तथा प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया। जिसे प्रधानमन्त्री व मुख्यमन्त्री को भेजा गया।

स्वराज्य को सुराज्य में परिणित करें-वेद

लेखक—श्री अवनीन्द्र कुमार जी
विद्यालंकार नई दिल्ली

ऋग्वेद मण्डल 1 सूक्त 80 तथा सूक्त 84 के 10 11 और 12 वे मन्त्र की समाप्ति 'स्वराज्यम्' इस शब्द से होती है। अत: असन्दिग्ध रूप से कहा जा सकता है कि 'स्वराज्य' का महत्व हमे सर्व प्रथम वेद मे ही मिलता है। स्वराज्य प्रेरक इन मन्त्रो की निर्दिष्ट शिक्षा भूमण्डल के किसी भी भू-भाग पर समान रूप से चरितार्थ होती है। वेदोक्त शिक्षा पर आचरण करने पर ही कोई भी राष्ट्र सुखी व समृद्ध हो सकता हे। आज की परिस्थिति मे भारत वर्ष के गणनायक वेद प्रतिपादित इस निर्देश ि पालन का यदि हृदय पूर्वक सकल्प ले तो कोई आश्चर्य नही कि हमारा देश अत्यल्प समय मे ही स्वराज्य से सुराज्य मे परिणित हो सकेगा।

इत्था हि सोम इन्मदे ब्रह्मा चकार वर्धनम्।
शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या नि:शशा अहिम-
र्चन्ननुस्वराज्यम् ॥1॥

राष्ट्र के अधिपति अथवा नायक को बलशाली, शस्त्रास्त्र विद्या से सम्पन्न, सूर्य की भाति देदीप्यमान तथा चारो वेदो का ज्ञाता होना चाहिए। उसे अपने पराक्रम से निरन्तर स्वराज्य को ऐश्वर्ययुक्त करने, अन्याय आदि कुत्सित कृत्यो को दूर भगाने तथा अनुकूल आनन्द की वृद्धि करने मे सदा यत्नशील रहना चाहिए।

स त्वामदद् वृषा मद सोम. श्येनाभृत: सुत:।
येना वृत्रनिरद्भ्यो जघन्थ वज्रिन्नोजसार्चन्ननु
स्वराज्यम् ॥2॥

राजा को वज्र तुल्य होना चाहिए। शस्त्रास्त्र विद्या से सुसम्पन्न तथा मेघो को विदीर्ण करने वाले सूर्य की तरह उसे अपने अपूर्व पराक्रम से प्रजा पर आने वाले सकटो और शत्रु के आतको को छिन्न-भिन्न कर अपनी प्रजा का परिपालन करना चाहिए।

प्रेह्यभीहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि यसते।
इन्द्र नृम्ण हि ते शवो हनो वृत्र जया अपोऽर्चन्ननु-
स्वराज्यम् ॥3॥

राजा का स्वरूप सुखकारी होता है। उसे प्रजा का रक्षण व रजन दोनो ही करने चाहिए। जिस प्रकार किरण समूह मेघ को विदीर्ण कर जलो का नियमन करता है उसी प्रकार राजा को चाहिए कि वह अपने शत्रुओ का हनन कर स्वराज्य का सत्कार करता हुआ राष्ट्र के धन को बढाए। वह अपने सैन्य बल के साथ शारीरिक व आत्मिक बल भी दृढतापूर्वक बढा कर सदा शत्रुओ का सहार करते हुए विजयश्री प्राप्त करता रहे।

निरिन्द्र भूम्या अधि वृत्र जघन्थ निर्दिव:।
सृजा मरुत्वतीरव जीवधन्या इमा अपोऽर्चन्ननु
स्वराज्यम् ॥4॥

राज्य मे अधर्माचरणयुक्त व्यक्तियो को दण्ड देना राजा का कार्य है। दुष्टो को दण्ड देने मे राजा को कभी प्रमाद नही करना चाहिए, अन्यथा उसके राज्य मे धर्म का ह्रास होने लगता है। अत राजा को चाहिए कि वह स्वराज्य का सत्कार करता हुआ धर्म का रक्षक बन कर प्रशासन करे तथा नित नाना सुखो का अधिकारी बने।

इन्द्रो वृत्रस्य दोधत: सानु वज्रेण हीलित: ।
अभिक्रम्याव जिघ्नतेऽप: सर्माय चोदयन्नर्चन्ननु-
स्वराज्यम् ।।5।।

जब राजा अपने कर्त्तव्य-पालन से विमुख होता है तो विरोधी शक्तियां सिर उठाने लगती है, फलत: बाह्य शक्तियो का सामना करने मे वह असमर्थ हो जाता है। उसकी सेना शत्रु सेना के द्वारा त्रस्त व अस्त-व्यस्त हो जाती है तब उसकी प्रजा उसे प्रतिष्ठा का पात्र नही समझती। इससे राजा को अपमानित होना पडता है। अत: ऐसी स्थिति से बचने के लिए राजा को चाहिए कि वह अपने प्रमुख कर्त्तव्य—राष्ट्र रक्षा का अवश्य ध्यान रखे।

अधि सानौ नि जिघ्नते वज्रेण शतपर्वणा।
मन्दान इन्द्रो अन्धस: सखिभ्यो गातुमिच्छत्यर्चन्ननु
स्वराज्यम् ।।6।।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार वस्तुओ अथवा परिस्थिति की अनुकूलता चाहता हैं । जो उत्तम कर्मकर्त्ता होते है उन्हे उत्तम शिक्षा तथा उत्तम व्यवहार की अपेक्षा होती है। अत: ऐसे उत्तम चरित्र वालो के आनन्द के लिए राजा को यथा योग्य व्यवहार करते हुए अन्नदाता के रूप मे स्वराज्य का सचालन करना चाहिए।

इन्द्र तुभ्यमिदद्रिवोऽनुत्तं वज्रिन् वीर्यम्।
यद्ध त्य मायिन मृग तमु त्व माययावधीरर्चन्ननु
स्वराज्यम् ।।7।।

राजा को स्वराज्य की प्रतिष्ठा के लिए कूटनीति का अवलम्बन भी लेना पडता है। राष्ट्र मे मायावी, कपटी तथा छद्मवेशी व्यक्ति भी होते हैं। ये राष्ट्र की शक्ति को भीतर ही भीतर क्षीण करते रहते हैं। इन दुष्ट शक्तियो को समाप्त करने के लिए राजा को दण्ड ग्रहण करना चाहिए जिससे ये विपरीत आचरण मे प्रवृत्त न हो सके। निर्धारित राज्य-नियमो का स्वय पालन करते हुए प्रजा से कर आदि का उचित रूप मे दान लेना राजा का ही कर्त्तव्य है।

वि ते वज्रासो अस्थिरन्नवतिं नाव्या अनु।
महत् त इन्द्र वीर्यं बाह्वोस्ते बलं हितमर्चन्ननु-
स्वराज्यम् ।।8।।

राष्ट्र की नौ सेना बडी सख्या मे होनी चाहिए। शस्त्रास्त्रो से सुसज्जित सेना सदा नौकाओ मे उद्यत रहनी चाहिए। यह राष्ट्र की महान् शक्ति है। इस शक्ति के द्वारा ही स्वराज्य की सुरक्षा हो सकती है, राज्य-लक्ष्मी की उपलब्धि भी इसी से सम्भव है।

सहस्रं साकमर्चत परिष्टोभत विंशति।
शतैनमन्वनोनवुरिन्द्राय बाह्वोद्यतमर्चन्ननु
स्वराज्यम् ।।9।।

पारस्परिक साहचर्य से ही राज्य की व्यवस्था सुचारु रूप से चलती है। जब तक राजा और प्रजा पारस्परिक कर्त्तव्य-सम्बन्धो को नही निभाते तब तक राज्य मे धर्मादि की रक्षा नही हो सकती। राष्ट्र मे व्याप्त अधर्माचरण को रोकने के लिए प्रजा को चाहिए कि वह वेद अर्थात् ज्ञान तथा अन्नादि उपभोग्य सामग्री की वृद्धि मे अपने राज्याध्यक्ष को सहयोग देते हुए उसके अनुकूल आचरण करें।

इन्द्रो वृत्रस्य तविषीं निरहन्त्सहसा सह: ।
महत् तदस्य पौंस्यं वृत्रं जघन्वाँ असृजदर्चन्ननु
स्वराज्यम् ।।10।।

राजा का पुरुषार्थ इसी मे है कि वह स्वराज्य की सुख-समृद्धि के लिए प्रबल सामर्थ्य द्वारा शत्रु का गर्व चूर करता रहे। यही राजा की महनीयता है।

इमे चित् तव मन्यवे वेपेते भियसा मही।
यदिन्द्र वज्रिन्नोजसा वृत्रं मरुत्वाँ अवधीरर्चन्ननु
स्वराज्यम् ।।11।।

शस्त्रविद्यावेत्ता राजा के भय से ही शत्रु निरन्तर प्रकम्पित होते हैं। राजा के अनुकूल बनने के लिए वे सदा यत्न करते है। अत राजा को चाहिए कि वह अपने राज्य की अनुकूलता के निमित्त शत्रु दमन मे कभी पीछे न हटे।

न वेपसा न तन्यतेन्द्रं वृत्रो वि बीभियत्।
अभ्येनं वज्र आयस: सहस्रभृष्टिरायतार्चन्ननु
स्वराज्यम् ।।12।

राजा को सम्भावित आक्रमण से सदा सतर्क रहना चाहिए। उसे कभी कोई शत्रु अपनी प्रबल सैनिक शक्ति से भयभीत न कर सके। अत: राजा को आत्मरक्षा तथा प्रत्याक्रमण की पूर्व सज्जा कर लेनी चाहिए। उसे लौह तथा आग्नेयास्त्रो से भी सयुक्त रहना चाहिए।

सत्य ज्ञान प्राप्ति के साधन

ले.—चौ. श्री ऋषिपालसिंहजी एडवोकेट,
अधिष्ठाता वेद प्रचार, पंजाब, जालन्धर

न्यायालय में भी गवाह (साक्षी) के ब्यान होने से पूर्व, उसे शपथ ग्रहण कराई जाती है, मैं ईश्वर को साक्षी समझकर कसम खाता हूं कि मैं जो कुछ भी कहूंगा, सच कहूंगा और सच के सिवाए कुछ न कहूंगा, इत्यादि। इसी प्रकार जितने भी सद्‌पुरुष हैं अथवा धर्म-धर्मान्तर हैं सभी का यही कहना है कि सच बोलो। यहां तक कि सत्य के रूप को ईश्वर से जोड़ दिया गया है—

सच बराबर तप नही, झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय सांच है, ताके हृदय आप॥

अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि यह सच क्या वस्तु है ? और यह कैसे जाना जाये कि सत्य क्या है, असत्य क्या है। क्योंकि सत्य और असत्य की कसौटी का ज्ञान साधारण व्यक्ति को आज के मजहबी व राजनैतिक युग में नहीं है। इसी कारण सारे समाज का वातावरण दूषित हो गया है और इस प्रकार न चाहते हुए भी झूठ बोलकर पाप के गहरे समुद्र में गिरते चले जा रहे हैं। यहा तक कि जितने मत-मतान्तर और पन्थ पथान्तर अधिक फैल रहे हैं उतना ही वातावरण दूषित अधिक होता चला जा रहा है। चाहे कहते सभी यही हैं कि 'सच' बोलना चाहिए।

वास्तव में सच बोलने के सम्बन्ध में समय-समय पर विचार समाज के समक्ष आते रहे हैं और जिनका प्रभाव समाज को सोचने और विचारने में परिवर्तन लाता रहा है। साधारणतया कह भी दिया जाता है कि यदि आप 'सच' कह रहे हैं तो आपके पास इसका क्या प्रमाण है।

प्रमाण

प्रमाण अर्थात् 'सही ज्ञान प्राप्ति के साधन' भिन्न-भिन्न विचारकों ने भिन्न-भिन्न माने हैं। जैसे कि भौतिकवादी केवल 'प्रत्यक्ष' को ही प्रमाण मानते हैं, अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों से (विशेषतया) आंखों से देखी हुई वस्तु या घटना को ही सच्च मानते हैं। वैसे प्रत्यक्ष भी दो प्रकार के बताए गए हैं, प्रथम "निर्विकल्प प्रत्यक्ष" व दूसरा "सविकल्प प्रत्यक्ष "प्रत्यक्ष की व्याख्या की अधिक आवश्यकता नहीं।

परन्तु इतने से काम नही चल सका और 'अनुदान' को भी प्रमाण मानना पड़ा क्योंकि प्रत्येक वस्तु देखी नही जा सकती। अत: ज्ञान से जो ज्ञान उत्पन्न हो वही अनुभव है। जैसे मेज का एक कोना देखकर बाकी के हिस्से को जो छुपा हुआ है, बिना देखे ही कह दिया जाता है कि यह मेज है। अत: पता चला कि मेज के बारे में पहले से प्रत्यक्ष का ज्ञान था तभी बिना देखे कह दिया कि अमुक वस्तु मेज है। अनुभव के भी तीन भाग किये जा सकते है, अर्थात् 'पूर्ववत्' जिससे कारण को देखकर कार्य का पता चल सके, जैसे बादलों को देखकर वर्षा का अनुमान लगाया जाना। 'शेषवत' अर्थात् नदी में पानी के बहाव को तीव्र देखकर कि पीछे कहीं वर्षा हुई है। इस कार्य को देखकर कारण का अनुमान हो जाता है। तीसरा अनुमान 'सामान्यतो दृष्ट' है जैसे इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दु:ख और ज्ञान को होते देख अनुमान लगाना कि 'आत्मा' कोई वस्तु है। क्योंकि यह

'आत्मा' जल, वायु, पृथ्वी, आकाश, अग्नि, समय व स्थान व मन में नहीं है। अत: यह दु:ख-सुख इत्यादि 'आत्मा' के लक्षण हैं जो अदृष्ट हैं।

तीसरा प्रमाण—उपमान—अर्थात् किसी वस्तु को तुलनात्मक देखकर ज्ञान प्राप्त करना, जैसे एक व्यक्ति ने जैबरा जानवर नहीं देखा। उसे बताया गया कि गधे जैसे जानवर के ऊपर बड़ी-बड़ी, मोटी-मोटी धारियां पड़ी होती हैं। जब वह व्यक्ति जंगल में गया और उसने वैसा गधे जैसा जानवर देखा, जोकि पहले कभी नहीं देखा था तो फौरन उसने कह दिया कि यह जैबरा है। अर्थात् उपमान वह प्रमाण हुआ कि पहले से जानी हुई वस्तु को बिना देखी वस्तु से तुलना करके जो ज्ञान प्राप्त हुआ, वह उपमान प्रमाण है।

चौथा प्रमाण—शब्द, है जोकि आप्त पुरुषों ने बड़े बुजुर्गों ने, जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाण से देखा हो और वह कह रहे हैं, उसे भी सत्य माना जाएगा। जैसे कि किसी ने यह नहीं देखा कि उसका जन्म कहा हुआ अथवा वह किस माता-पिता की सन्तान है। इस बात को सत्य मानने के लिए हमें बड़े बुजुर्गों का कहा मानना होता है कि उसके माता-पिता अमुक व्यक्ति हैं और हमें यह ज्ञान हुआ। वैसे भी शब्द प्रमाण में 1.आकांक्षा 2, योग्यता, आसति तथा तात्पर्य का होना आवश्यक है। जैसे शब्द से कहा जाए, गाय को लाओ। यदि मध्यान्तर डाल कर यह कहा जाए। अर्थात् प्रात: कहा जाए, 'गाय' दोपहर को कहा जाए 'को' और सायं को कहा जाए 'लाओ' तो यह शब्द किसी की समझ में नहीं आवेंगे और यदि एक दम कहा जाए कि 'गाय को लाओ' तो यह शब्द ज्ञान समझ में आ जाएगा!

पांचवां प्रमाण—अर्थापत्ति है। जो एक बात कहने से दूसरी बात बिना कहे समझ जाए। जैसे कहा जाए कि 'अरुण' सारा दिन खाना नहीं खाता, फिर भी मोटा-ताजा है। यह दोनों बातें परस्पर विरोधी हो गई। इन दोनों बातों को यह जानकर सत्य कहा जा सकता है कि अरुण रात को खाना खा लेता होगा।

अभाव

अभाव छटा प्रमाण है। जो वस्तु किसी स्थान पर नहीं है उसे अभाव कहेंगे। तुम पानी लाओ, अगर किसी को ऐसे कहा जाए, परन्तु वहां पानी नहीं है और जहां पानी है वहां से ले आना चाहिए। अब यह ज्ञान कि वहां पानी नहीं है, 'अभाव' प्रमाण माना जाएगा। इसे अनुपलब्धि भी कहते हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् प्रमाणों का उल्लेख करते हुए दो 'प्रमाण' और बताते हैं कि सत्य ज्ञान के लिए प्रमाण 'एतिह्य' अर्थात् इतिहास भी होता है। अर्थात् जो 'शब्द प्रमाण' के अनुकूल हो। इतिहास से भी सत्य ज्ञान का पता चलता है। जैसे मनुस्मृति इत्यादि व अन्य ऐतिहासिक ग्रन्थ। साथ ही ध्यान योग बात यह है कि बुद्धिपूर्वक सोच समझकर पता करें कि कहीं मिलावट तो नहीं की गई और क्षीर-नीर कर ले सत्य ज्ञान हेतु।

आठवां प्रमाण जो पाखण्डों का खण्डन करने वाले महान् संन्यासी, योगी दयानन्द बताते हैं वह है 'सम्भव' प्रमाण अर्थात् जो बात प्रमाण युक्त सृष्टि क्रम के अनुकूल हो। यानि यदि कोई कहे कि अमुक व्यक्ति बिना माता-पिता के वीर्य संयोग से उत्पन्न हो गया, यह बात सत्य ज्ञान नहीं हो सकती। भिन्न-भिन्न मजहबों में भिन्न-भिन्न प्रकार के चमत्कारों (मोजजों)को महत्व दिया गया है। वास्तव में वह सब असत्य ज्ञान है। चमत्कार सत्य ज्ञान से विपरीत है अत: सम्भव नहीं। इस प्रमाण के अभाव में अन्ध श्रद्धा और अन्धविश्वास ने मानवता को लूट खाया है और दु:खों को बढ़ाया है।

न तो हनुमान जी अपने मुंह में सूरज डाल सकते हैं न बाबर की जेल में अपने आप चक्की चल सकती है। बाबा फरीद के सिर पर छ: इंच ऊंची मिट्टी की टोकरी ढोते समय रहना भी असम्भव है। बिना किसी उपाय के बारह मन की पत्थरी भी गंगा में नहीं तैर सकती इत्यादि इत्यादि।

इन प्रमाणों के सही ज्ञान से अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि होती है। सुख बढ़ते हैं, दु:ख घटते हैं।

—

वेद ज्ञान का महत्व

लेखक—श्री सालिग्राम जी पराशर शास्त्री जालन्धर

★★

प्राय: देखा जाता है कि मानवेतर सब प्राणियो को स्वभाव से ही उन के जीवन के पालनार्थ व रक्षार्थ ज्ञान प्राप्त है। बिल्ली व बन्दर आदि पशु पैदा होते ही बिना सिखाए वृक्षों पर चढ़ने लग जाते हैं चिड़ियों को किसी ने घोंसला बनाना नहीं सिखाया परन्तु स्वभाव से ही परमात्मा ने उनको ऐसा करने का ज्ञान प्रदान किया है। सब पक्षी अपने पंखों द्वारा बिना सिखाये उड़ने लग पड़ते हैं। अत: मनुष्य के अतिरिक्त सब जीवों को सहज ज्ञान प्राप्त है। मानव ही एक ऐसा प्राणी है जिसे बिना रोने तथा माता का स्तन चूसने के कुछ भी बिना सिखाए नहीं आता। अर्थात् मानव का ज्ञान निमित्तिक ज्ञान है जिस की प्राप्ति कोई न कोई निमित्तिक साधन ही करा सकता है। तभी उपनिषदों ने कहा है "मातृमान पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद" अर्थात् मानव की सबसे प्रथम गुरुमाता है फिर पिता व आचार्य है। योग दर्शन के ऋषि के अनुसार "स. पूर्वेषामपि गुरु: कालेनानवच्छेदात्" अर्थात् सब गुरुओं का गुरु वह परमपिता परमात्मा है जिसने वेद द्वारा मानव सृष्टि के आरम्भ में ही मानव के पथ प्रदर्शन के लिए सब प्रकार का ज्ञान उसे प्रदान किया और उस परमात्मा तथा उसके वेद ज्ञान पर काल व समय का कोई प्रभाव नहीं। वह तथा उसका वेदज्ञान शाश्वत काल से है और उस का कोई आदि या अन्त नहीं।

वेद का ज्ञान किसी विशेष जाति, समय, देश के लिए नहीं परन्तु वह समस्त मानव जाति के लिए प्रत्येक काल व देश के लिए है। उस की सारी शिक्षाएं समान रूप से सारे मानवों को जीवन का सत्य मार्ग दर्शाने तथा उस मार्ग पर चलने को उत्साहित करने के लिए हैं। सत्य ज्ञान का उद्देश्य मानव को वास्तविक सुख, शांति व आनन्द की प्राप्ति कराना है। जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसे वेद ने सूत्र रूप में छुआ न हो। तभी महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज के तीसरे नियम में कहा है कि "वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना व सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" वेद जितना आध्यात्मिक क्षेत्र का पथ प्रदर्शक है उतना ही जीवन के व्यवहारिक पक्ष का भी मार्ग दर्शाता है। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व के उत्थान के लिए सब प्रकार के साधन वेद में बताये गए हैं। बड़े से बड़े विद्वान् तथा साधारण से साधारण मनुष्य के लिए भी वेद के मंत्रों से बहुत कुछ प्राप्त किया जा सकता है। जो भी किसी ग्रन्थ में अच्छाई है वह वेद से ही गई है यद्यपि उसके शब्दों में या कहने के ढंग में अन्तर है। यदि प्रत्येक सम्प्रदाय के मान्य ग्रन्थों में से सत्यता तथा सारी मानव जाति के हित की बातों को एकत्रित किया जावे तो पता चलेगा कि ये सब एक ही प्रकार के सिद्धान्त को मानने वाले हैं। परन्तु जो-जो बातें क्षुद्र दृष्टि रखते हुए असत्यता उनमें आ गई है वह उन की अपनी है। इस प्रकार सब धर्मों व सम्प्रदायों में सब मानव हित की बातें वेद से ही ली गई हैं परन्तु उन में स्वार्थ बुद्धि से अपने विशेष प्रयोजन को सिद्ध करने के लिए प्रत्येक सम्प्रदाय ने कुछ न कुछ असत्या का मिश्रण कर दिया है जो उनका अपना है।

अत: यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि मानव के समस्त सत्य ज्ञान का स्रोत केवल वेद है। मानव जाति

ने यदि सुख शांति तथा आनन्द की प्राप्ति करनी है तो अत्यावश्यक है कि वैदिक सिद्धान्तो और शिक्षाओ का व्यक्ति पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय तथा वैश्विक स्तरो पर अनुकरण करे । जितना-2 मानव वेद के समीप होता जावेगा उतनी-2 मात्रा मे उसका जीवन दिव्यता को धारण करता जावेगा और इसके विपरीत जितना वह वेद की शिक्षाओ से दूर हटता जावेगा उतना ही उस के जीवन मे ह्रास अथवा पशुत्व का प्रवेश होकर वह अपने तथा अन्यो के जीवन को भी अज्ञान अन्धकार से आच्छिन्न करता जावेगा। यही कारण है कि महर्षि दयानन्द जी ने वेद का पढना पढाना सुनना सुनाना तथा उसका अनुकरण करना प्रत्येक आर्य परम धर्म बताया है और आर्य समाज का मूल उद्देश्य वेद का प्रचार व प्रसार करना था जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही आर्य समाज ने पूरी शक्ति लगा कर बहुत सख्या मे शैक्षणिक सस्थाए खोली थी। महर्षि दयानन्द जी का यह स्वप्न हम कितना पूरा करने मे समर्थ हुए हैं यह सब के सामने है।

वेद के गहन स्वाध्याय के लिए तो सस्कृत तथा वैदिक भाषा का पूर्ण ज्ञान अत्यावश्यक है। "ऋषय: मन्त्र द्रष्टार" अर्थात् ऋषि उसे कहते हैं जो वेद मन्त्रो का अतिगहनता से मनन वा चिन्तन करके उस का सार तत्व निकालने मे समर्थ हो। इतनी योग्यता तो किसी भाग्यवान को ही प्राप्त हो सकती है परन्तु फिर भी साधारण मनुष्य के लिए भी वेद मे बहुत से सरल सुबोध मन्त्र हैं जिन को समझने के लिए बहुत अधिक विद्वत्ता वा गहन मनन की आवश्यकता नही यद्यपि जितना अधिक मनन उन पर किया जावे उतना ही गहन तत्व उन्ही वेद मन्त्रो के शब्दो से निकाला जा सकता है। मेरा आशय वेद मन्त्रो मे से कुछ सरल सूक्तिया देना है जिसे सस्कृत वा हिन्दी का थोडा सा ज्ञान रखने वाला भी समझने मे समर्थ हो सकता है और उसकी शिक्षा को अपने जीवन मे धारण करके लाभ उठा सकता है। ये सूक्तिया थोडे से परिश्रम से स्मरण भी हो सकती हैं। जब भी हम कोई कार्य इन शिक्षाओ के विपरीत करें तो ये स्मरण की हुई वेद की सूक्तिया हमे उस कार्य के न करने के लिए भी प्रेरित कर सकती हैं। अतः नीचे कुछ ऐसी वेद सूक्तियाँ दी जा रही हैं तथा उनके सरल भाषा मे सक्षेप से अर्थ और भाव भी दिए जा रहे हैं :—

सूक्ति—संक्षेप भाग

1. ईशा वास्यं इदं सर्वम् :—ससार के कण-कण मे वह परमात्मा व्याप्त है अर्थात् हमारी आत्मा, बुद्धि, मन व इन्द्रियो में बैठा हुआ वह, प्रभु हमारी सर्व क्रियाओ का साक्षी है। यदि हम कोई भी अभद्र कार्य करेंगे तो उसके परिणाम से हम किसी स्थिति मे बच नही सकते। कोई ऐसा विचार व कर्म नही जो हम प्रभु से छुप कर कर सकते हैं। इस प्रकार प्रभु को सर्व साक्षी जान कर मानव को दु:चिन्तन दुर्वचन व दुष्कर्म का पूर्ण रूपेण त्याग करके अपने जीवन को शुद्ध, पवित्र, सरल और सत्य बनाने का प्रयास करना चाहिए।

2. तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा .—प्रभु ससार के सब पदार्थों मे विद्यमान होने से सब पदार्थों का स्वामी वही है। उसने ही हमारे प्रयोग के लिए ससार के सब पदार्थ प्रदान किए है। हमे परमात्मा की ओर से आज्ञा है कि इन का उपभोग तो करें परन्तु त्याग भाव से अर्थात् किसी प्रकार हम इन भोगो मे आसक्त न हो जावें। जिस प्रकार मक्खी शहद के बर्तन के किनारे पर बैठकर उसे खा कर उड जाती है उसमे गिर कर अपने आप को फसाती नही इसी प्रकार मनुष्य को भी ससारिक पदार्थों का उपभोग सयम से तथा ममता रहित होकर करना चाहिए क्योकि ये पदार्थ उसके नही परन्तु परमपिता परमात्मा के हैं।

3. मा गृध:—गीध मत बन अर्थात् लोभ और लालच को त्याग दे। गीध ऊपर आकाश से किसी भोग्य पदार्थ को देख कर उस पर झपट पडता है चाहे उस का परिणाम कुछ भी हो परन्तु मानव बुद्धिजीवी है उसे लोभ और लालच से ऊपर उठकर ही ससार का उपभोग करना चाहिए। यही उसकी मानवता है।

(शेष पृष्ठ 16 पर)

वेद माता का अनुपम वरदान

लेखक—श्री वृतपाल जी साधक लुधियाना

स्तुता मया वरदा वेद माता प्रचोदयन्ताम् पावमानी द्विजानाम् ।
आयु प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् मह्यम् दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ॥

अथर्व 19 कां. 71 सूक्त 1 म.

पदार्थ—(स्तुता) स्तुति के योग्य-प्रशंसनीय (मया) मेरी (वेद माता) वेद रूपी माता (वरदा) वर देने वाली है। वरीयता श्रेष्ठता देने वाली है (प्रचोदयन्ताम) हमें प्रेरणाएं देने वाली-मार्ग दर्शन करने वाली है (पावमानी) पावनता-पवित्रता देने वाली है (द्विजानाम्) द्विजों को विद्वानों को जो वेद का अध्ययन कर सकने की क्षमता रखते हों (आयुः प्राणं प्रजाम् पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्) आयु को, प्राण शक्ति को, प्रजा सन्तान को, पशुओं को, यश वा कीर्ति को, धन ऐश्वर्यों को, ब्रह्म तेज को, महान् तेजस्विता को (मह्यम् दत्वा) मुझे देकर (व्रजत) ले चलो (ब्रह्म लोकम्) ब्रह्म लोक में, मोक्ष पद में ॥ 19-71-1 ॥ अथर्व वेद ।

भावार्थ—अथर्व वेद के इस वेद मन्त्र के माध्यम से मनुष्य जीवन के परम ध्येय और जीवन यापन के विधि-विधान का पूरा-पूरा ज्ञान दर्शाया गया है। मन्त्र के पहले पद में पवित्र वेद वाणी के विशेषण व्यक्त किये गये है और मन्त्र के दूसरे पद में कुछ जीवनोपयोगी वस्तुएं ईश्वर से मांगी गई हैं और उन अभीष्ट वस्तुओं का प्रयोग किस उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया जाना चाहिए। यह व्यक्त किया गया है। अर्थात् मानव जीवन का वास्तविक और सर्वोत्तम उद्देश्य क्या है? यह ही इस वेद मन्त्र में दर्शाया गया है। वस्तुतः मानव जीवन का परम ध्येय मोक्ष पद की प्राप्ति ही एक मात्र है। यही इस मन्त्र में व्यक्त किया गया है कि मेरी यह वेद माता को स्तुति के योग्य है प्रशंसनीय है। जो मनुष्य इस का गम्भीर अध्ययन करके अपना सम्पूर्ण आचरण वेदानुकूल बनाते हैं। यह वेद माता उनको उत्कृष्ट वा श्रेष्ठतम भी बनाती है। वा उन्हें अपनी अन्तः प्रेरणायें देकर उनका मार्ग दर्शन भी करती है और जो इस का अध्ययन नियमित रूप से किया करते हैं। यह वेद माता उनके लिए पावनता को निरन्तर प्रदान किया करती है। इस पवित्र और परिपूर्ण वेद वाणी का जो विद्वान् जन नियमित रूप से नित्य प्रति अध्ययन करते रहते हैं और अपना आचरण इसके अनुरूप ही बनाते हैं। यह वेद वाणी उनको भद्र वा कल्याण प्रद प्रेरणाएं देकर उन्हें पावनता भी दिया करती है और उनके जीवन को सुखी, सफल वा समृद्ध भी बनाती है और उनके जीवन की सभी क्रियायें दोष रहित भी बना देती है जिस से उन द्विज महानुभावों का पूर्ण त्राण हो जाता है। द्विज का अर्थ है जिसके दो जन्म हों। एक शारीरिक जन्म और दूसरा विद्या माता के द्वारा सज्ञान बनना। इस वेद माता के द्वारा पावनता भी और प्रेरणायें भी उन्हीं मनुष्यों को मिला करती हैं जो विद्वान् हो और जो वेद का अध्ययन नित्य प्रति करते हों। दूसरे पद में ईश्वर से आयु, प्राण शक्ति, प्रजा, पशु, कीर्ति, धन समूह अर्थात् जीवनोपयोगी सभी वस्तुएं तथा ब्रह्म वर्चस अर्थात् महान् तेजस्विता मांगी है। कि यह सातो वस्तुएं मुझे देकर ब्रह्मलोक में ले चलो। ब्रह्मलोक अर्थात् मोक्ष पद का अधिकारी वह मनुष्य ही हुआ करता है। जिसका जीवन पूर्णतया वैदिक मर्यादाओं के ही अनुरूप है। वस्तुतः

मोक्ष पद की प्राप्ति ही मानव जीवन का परम ध्येय है। जिस में जन्म मरण के बन्धन से छुटकारा मिल जाता है।

यहां विचारणीय यह बात है कि क्या ईश्वर की इस सृष्टि में कोई वस्तु केवल मांगने मात्र से ही मिल सकती है? इसका उत्तर है कि केवल मांगने मात्र से नहीं अपितु सतत् पुरुषार्थ से ही प्रत्येक वस्तु की प्राप्ति हुआ करती है। यही विधाता की सृष्टि की व्यवस्था है। बिना उपयुक्त यथोचित समय पर पुरुषार्थ करने के किसी वस्तु की उपलब्धि कदापि नहीं हो सकती।

अब प्रश्न यह है कि उक्त सातों अभीष्ट उपलब्धियां किस प्रकार हो सकती हैं? और इनका प्रयोग किस रीति से किया जावे कि हम मानव के परम ध्येय अर्थात् ब्रह्म लोक (मोक्ष पद) के पाने के अधिकारी बन कर इसको प्राप्त कर सकें।

आयु उस अवधि को कहते हैं जिस मे हमारा, आत्मा हमारे शरीर के साथ संयुक्त रहता है। आत्मा और शरीर का यह संयोग तभी समाप्त होता है जब हमारा समूचा शरीर अथवा इस का कोई महत्वपूर्ण अंग अपनी कार्य क्षमता को खो देता है। तब हमारी यह आत्मा हमारे शरीर को अपनी कार्य सिद्धि के अयोग्य जान कर इसका परित्याग कर देता है इसी को मृत्यु कहते हैं। हमारी आयु अपनी तभी पूरी कर सकती है यदि हम स्वस्थ और निरोग बन रहें। यह तभी हो सकता है यदि हम स्वास्थ्य रक्षा के नियमों का परिपालन करते रहें। ब्रह्मचर्य का पालन करते रहें और दुर्घटनाओं से बचते रहें। दूसरी वस्तु है प्राण शक्ति जो हमारे जीवन का मुख्याधार है। यह योगाभ्यास और ब्रह्मचर्य के तप से दृढ़ बनी रहती है। प्रजा, पशु तथा द्रविण (धन समूह) यह तीनों ही जीवन उपयोगी साधन हैं। कीर्ति और ब्रह्म वर्चस यह भी हमारे शुभ कर्मों के फल से उपलब्ध होते हैं। इन सातों को प्राप्त करके ही हम जीवन मुक्त हो सकते हैं और जीवन मुक्त साधक ही परम मोक्ष पद को प्राप्त कर सकते हैं। यही जीवन का परम ध्येय है।

(14 पृष्ठ का शेष)

4. मा व: स्तेन ईशत:—तुम पर भी शासन न करें अर्थात् हम कभी दूसरे के अधिकार को हड़पने का प्रयत्न न करें। अस्तेय की भावना सदा हम में ओत प्रोत रहे। "पर द्रव्येषु लोष्टवत्"—दूसरे के धन को हम मिट्टी के ढेले के समान जानें और किसी भी प्रलोभन के वशीभूत होकर पराए धन के हरण की भावना हमारे मन में न आए।

5. मा अघशंस:—किसी प्रकार किसी प्रकार का पाप भी हमारे मन पर शासन न करे अर्थात् हमारे मन में कभी पाप की भावना न आने पावे। ससार के विषय भोगों में फंसा मनुष्य काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार, ईर्षा, द्वेष आदि मनोविकारों का शिकार हो जाता है। यथा शक्ति इन दुष्वृत्तियों से बचने के प्रयत्न करते हुए हम सुचिन्तक सुवक्ता व सुकर्मी बनें।

6. मनुर्भव—मननशील मानव बन कोई भी कार्य बिना पूर्ण रूप से सोचे समझे बिना तथा उसके परिणाम को दृष्टि में न रखते हुए नहीं करना चाहिए। "मननात् मनुष्य" सुमन और सुचिन्तन से ही मानव बनता है अन्यथा वह दानव के तुल्य है।

7. इदं अहं अनृतात् सत्यं उपैमि:—मैं अपने जीवन से झूठ, छल, फरेब, कपट आदि को त्याग सत्यता को धारण करूं। मेरा चिन्तन, वचन तथा कर्म सत्य पर आधारित हों। असत्यता अर्थात् बुराईयों को अपने जीवन से निकाल कर भद्रताओं को जीवन का अंग बनाऊं।

इस प्रकार लेख को लम्बा न करते हुए ऐसी वेद सूक्तियों को केवल स्मरण ही न करते हुए परन्तु उनका जीवन में पालन करते हुए हम इन से बहुत लाभ उठा सकते हैं। ये वेद सूक्तियां हमें सच्चा आर्य बनने में बहुत दूर तक सहायक हो सकती हैं।

श्रीकृष्ण युद्ध नहीं शान्ति चाहते थे

ले.—श्री यशपाल आर्य बन्धु आर्योपदेशक; आर्य निवास, चन्द्रनगर मुरादाबाद

संसार के महापुरुषों के सम्बन्ध में, प्राय: यह देखा गया है कि कुछ ऐसी बातें जन-सामान्य में प्रसिद्धि पा जाती हैं कि जो वास्तविकता से कोसों दूर होती हैं। ऐसी ही एक बात योगीराज श्रीकृष्ण जी के सम्बन्ध में उड़ा दी गई है कि वे युद्ध लिप्सु थे। महाभारत का युद्ध उन्होंने ही कराया। अब देखना यह है कि क्या वस्तुत: श्री कृष्ण जी युद्ध लिप्सु थे ? हमारा विश्वास है कि ऐसा मानना सर्वथा निराधार एवं नितान्त मिथ्या है कि श्रीकृष्ण युद्ध लिप्सु थे। अपितु वे नितान्त शान्ति प्रिय थे और उन्होंने युद्ध को टालने का भरसक प्रयत्न भी किये। महाभारत के उद्योग पर्व मे उनके प्रयत्नों का विस्तार से वर्णन मिलता है। किन्तु कभी-कभी असत्य बात भी इतना प्रचार पा जाती है, कि वह सत्य ही लगने लगती है। यहां भी यही हुआ है। महाभारत का वह प्रसंग जो श्रीमद्भगवद्गीता के नाम से सुविख्यात है, इतनी प्रसिद्धि पा चुका है कि जिसकी कोई कल्पना भी नही की जा सकती। इस प्रसंग में श्रीकृष्ण जी को अर्जुन को युद्ध के लिए उकसाते दर्शाया गया है। युद्ध के मैदान में अर्जुन अपने सगे सम्बन्धियों को देखता है तो उसे मोह उत्पन्न हो जाता है। श्रीकृष्ण जी इसे कायरता की संज्ञा देते हैं एवं उसे अपना कर्त्तव्य सुझाते हैं। इसी से जन-सामान्य यही समझता है कि श्रीकृष्ण जी ने ही अर्जुन को युद्ध के लिए उकसाया अत: वे शान्ति प्रिय नहीं अपितु युद्ध लिप्सु थे।

युद्ध को टालने के लिए श्रीकृष्ण जी के प्रयत्न

युद्ध को टालने के लिए श्रीकृष्ण जी से युधिष्ठिर ने निवेदन किया कि आप स्वयं हस्तिनापुर जाकर दुर्योधन को समझाए ताकि यह भीषण नर-संहार रोका जा सके। श्रीकृष्ण जी इस कार्य के लिए झट तैयार हो गए और कहा कि—दैवं च मानुषं चैव संयुक्तं लोक-कारणम्। अहं हि तत् करिष्यामि परं पुरुष कारत: ॥ (उद्योग पर्व 78|5) और "देवं तु न मया शंक्यं कर्म कर्त्तुं कथंचन। विभाव्यं तस्य भूयश्च कर्म पापं दुरात्मन: (78|21) तात्पर्य यह कि संसार में घटनाएं दो कारणों से हुआ करती हैं। एक पुरुषार्थ से दूसरे भाग्य या दैव से। मैं पुरुषार्थ करूंगा, किन्तु दैव मेरे अधीन नही। अत: परिणाम क्या होगा, यह मैं नहीं कह सकता। इतना ही नही श्रीकृष्ण जी ने यह भी कहा कि यदि दुर्योधन न माना तो मैं भी उसकी यह करतूत सभी उपस्थित राजाओं के सम्मुख अवश्य प्रकट कर दूंगा।

हस्तिनापुर पहुचने पर श्रीकृष्ण जी ने महात्मा विदुर जी के यहां ठहरना उचित समझा। विदुर जी इस युद्ध को रोकने का पहले ही पर्याप्त प्रयत्न कर चुके थे अत: अब उन्हे श्रीकृष्ण जी को उसी प्रयोजन से आया जानकर एक निराशा सी उत्पन्न हुई और वे बोले कि—आप व्यर्थ ही आये हो और आप अपनी अप्रतिष्ठा ही करा बैठेंगे। दुर्योधन मूढ और स्वेच्छाचारी है, वह धर्म की बात नही सुनेगा। जिस प्रकार चाण्डालो के सामने ब्राह्मणो के वचनो का कोई सत्कार नही होता, उसी प्रकार दुष्ट दुर्योधन की सभा में आपके वचनों का कोई सत्कार नही होगा अपितु दुष्टों की सभा में आप जैसे नर श्रेष्ठ का जाना अप्रतिष्ठा ही का कारण होगा। अत: ऐसे व्यर्थ के काम से दूर ही रहना चाहिए। श्रीकृष्ण जी ने विदुर जी को जो उत्तर दिया, वह इस बात को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि श्रीकृष्ण जी युद्ध नही, शान्ति चाहते थे। श्रीकृष्ण जी ने आर्योचित गम्भीरता के साथ विदुर जी

को कहा कि—"दुर्योधन की दुष्टता का मुझे भलीभांति ज्ञान है किन्तु समस्त पृथिवी का रूधिर से पटा जाना देखा नही जाता। किन्तु रूधिर बहने वाला है, कितनी भीषण विपत्ति इस संसार पर आने वाली है? यह सब सोच विचार कर मैं यहा आने और युद्ध रोकने के लिए विवश हो गया हूं।

इतना ही नही श्रीकृष्ण जी तो यहां तक कहते हैं कि—ऐसे समय मे जो व्यक्ति इन लड़ते को मृत्यु के मुख से खींच ले, वह अत्यन्त पुण्य का भागी होगा, वह उत्तम धर्म को प्राप्त होगा। यह भीड़ दुर्योधन और कर्ण की लाई हुई है, मैं इन्हें अवश्य समझाऊ गा। लाख वैरी हों आखिर हैं तो अपने ही। जो मित्र को किसी व्यसन का शिकार होता देख बचाता नहीं, वह क्रूर है। आपत्ति पड़ने पर आत्मीय को केशों से पकड़ कर भी खींचने का यत्न करें, तब भी मनुष्य निन्दा का पात्र नहीं होता। मैं तो कौरवों के हित की भी कहूंगा और पाण्डवों के हित की भी। यदि दुर्योधन को फिर भी शंका बनी रहती है, तो बनी रहे पर मेरा हृदय तो सन्तुष्ट हो जाएगा कि मैंने भरसक प्रयत्न किया है। यत्न करने पर भी यदि सिद्धि नही मिलती तो इसमें मेरा क्या दोष? धर्म कार्य को करता हुआ भी मनुष्य यदि सफल नहीं होता तो उस पुण्य को तो वह प्राप्त कर ही लेता है, इसमें मुझे तनिक भी सन्देह नही। हे विदुर यह सब कुछ सोच समझ कर ही सच्चे मन और स्वच्छ हृदय से युद्ध रोकने का मैं अवश्य प्रयत्न करूंगा।

मेरा यह प्रयत्न सफल हो या विफल, अधार्मिक, अज्ञानी तथा सुहृद मित्रगण यह तो न कह सकेंगे कि समर्थ होते हुए भी कृष्ण ने युद्ध के लिए तत्पर कौरवो और पाण्डवों को न रोका। श्री कृष्ण जी महात्मा विदुर को ऐसा उत्तर देकर सभा स्थल पर जा विराजे और वहां पर महाराज धृतराष्ट्र से अत्यन्त नम्रतापूर्वक निवेदन किया कि—मैं इस बात की याचना करने आया हूं कि कौरवों और पाण्डवों में सन्धि हो जाए और परस्पर शान्ति की स्थापना हो जाए ताकि धरती से वीरों का विनाश न हो। इसके अतिरिक्त और कोई याचना मुझे नहीं करनी।

श्रीकृष्ण जी के वचनों को सुनकर धृतराष्ट्र ने उत्तर में कहा कि—मैं तो शान्ति चाहता हूं पर क्या करूं, दुर्योधन मेरा कहना मानता ही नहीं। आप उसे ही समझाने की कृपा करें। धृतराष्ट्र के कहने पर श्रीकृष्ण जी ने दुर्योधन को समझाने के प्रयास प्रारम्भ कर दिये। उन्होंने किस ढंग से और किन शब्दों में दुर्योधन को समझाया यह ऐतिहासिक महत्व के हैं।

यथा—महाप्राज्ञ कुले जात: साध्वेतत् कर्तुमर्हसि। श्रुतवृत्तोपसम्पन्न: सर्वै: समुदितो गुणै: ॥ दौष्कुलेया दुरात्मानो नृशंसनिरपत्रपा:। त एतदो वृत्तं कुर्वन्यथा त्वं तात् मन्यसे ॥ त्वामेव स्थापयिष्यन्ति यौवराज्ये महारथा महाराज्ये पितरं धृतराष्ट्रं जनेश्वरम् ॥ अर्थात्—भाई! जब एक ही महान् कुल में उत्पन्न हुए हो, विद्या प्राप्त की है, शूर हो, फिर शील क्यो कुलहीनो का सा दिखाते हो? अपने भाइयों से व्यर्थ का वैर और परायों के सहारे इतना गर्व? युद्ध का परिणाम तो कुल का नाश है। सन्धि कर लो। धृतराष्ट्र राजा रहे और तुम युवराज।

श्रीकृष्ण जी के इस प्रस्ताव का कौरव दल के सभी नायकों भीष्म, द्रोण आदि ने समर्थन किया और दुर्योधन को सभी ने समझाया परन्तु वह मूढ किसी की कब सुनता था? राजसत्ता के मद में मस्त होकर बोला कि यावच्च राजा ध्रियते धृतराष्ट्रो जनार्दन। न्यस्तशस्त्रा वयं ते वाप्युपजीवाम माधव ॥ अपदेय पुरादत्तं राज्यं परवतो मम। अज्ञानाद्वा भयाद्वापि मयि बाले जनार्दन ॥ यावद्धि तीक्ष्णया सूच्या विध्येदग्रेण केशव। तावदप्यपरित्याज्य भूमेर्न: पाण्डवान् प्रति ॥ अर्थात्—जब तक धृतराष्ट्र स्वयं राज्य करते थे, मैंने हथियार डाल रखे थे परन्तु जब उन्होंने राज्य मुझे सौंप दिया, चाहे अज्ञान से चाहे भय से, तो अब मेरी ही चलेगी। मैं सूई की नोक भर भूमि भी पाण्डवों को न दूंगा।

उपरोक्त विवरण इस बात को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त है कि युद्ध के लिए श्रीकृष्ण नहीं, दुर्योधन उत्तरदायी है। दुर्योधन को श्रीकृष्ण सहित सभी ने

(शेष पृष्ठ 19 पर)

'तमसो मा ज्योतिर्गमय'

लेखक—श्री पं राधेश्याम जी आर्य, विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ प्र)

वसुधा का कण-कण प्रमुदित हो, ज्ञान तथा विज्ञान उदित हो,
बने व्यवस्था ऐसी भू पर—जिसमे जन कल्याण निहित हो,
क्षत विक्षत हो महिमण्डल पर—विस्तृत जो अन्याय अनय।
तमसो मा ज्योतिर्मय ॥

प्रेम दया की ज्योति जगे, द्वेष ईर्ष्या दूर भगे,
हिंसा का हो सर्वनाश अब—मानव-मानव को न ठगे,
तिमिर नष्ट हो भू मण्डल का—मानव मन हो ज्योतिर्मय।
तमसो मा ज्योतिर्मय ॥

सुख-समृद्धि—सफलता छाए, कण-कण मे समरसता भाए,
युग का बने प्रवर्तन ऐसा जन-जन मे नवजीवन आए,
फैले आर्ष विचार धरा पर—गू ज उठे सगीत मधुरमय।
तमसो मा ज्योतिर्मय ॥

———

(18 पृष्ठ का शेष)

समझाया किन्तु उसने एक न मानी। तभी महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी उसी को उत्तरदायी ठहराते हुए उसे "दुष्ट और गोत्र-हत्यारा" लिखा है। दुर्योधन का यह हठ धृतराष्ट्र, भीष्म, द्रोणाचार्य, कर्ण और शकुनि आदि के भरोसे पर आश्रित था। यदि ये लोग दुर्योधन का आख मूद कर समर्थन न करते तो उसे ऐसा करने का साहस कदापि न हो सकता था। अत दुर्योधन के बाद युद्ध के लिए यदि कोई और उत्तरदायी है तो निश्चय ही यही लोग हैं। श्रीकृष्ण जी ने तो दुर्योधन को इस बात की भी चेतावनी दी कि—दूसरो के भरोसे पर इतना गर्व नही करना चाहिए। पर दुर्योधन पर तो राजहट सवार था। अत उसने किसी की भी न सुनी।

अन्त मे हम यही कहेगे कि श्रीकृष्ण जी ने युद्ध को टालने के जो प्रयत्न किये उनका यथार्थ मूल्याकन करने के पश्चात प्रत्येक व्यक्ति यही कहेगा कि श्रीकृष्ण जी युद्ध लिप्सु नही शान्ति प्रिय थ। किन्तु जब युद्ध गने पड ही जाये तोउस से पलायन करना वे कायरता समझते थे। क्षात्र धर्म यही कहता है कि जब युद्ध अनिवार्य हो जाए तो फिर उसम कदापि न हटे। श्रीकृष्ण जी ने यही किया। अत उन्हे युद्ध लिप्सु कह । उनके प्रति अन्याय करना होगा।

—जन्माष्टमी—

लेखक—श्री कविवर 'प्रणव" शास्त्री एम. ए. सहोपदेशक

जन्म-अष्टमी पर्व पुरातन नये रूप मे आया है ।
नया जागरण, नयी चेतना, नयी भावना लाया है ॥1॥

इतिहासो के पृष्ठ आज फिर लगे स्वय को दुहराने ।
अनय, अन्ध, अज्ञान दिश के घन घमण्ड हैं घुमडाने ॥

अत्याचारी डटे हुए हैं आगन मे भृकुटी ताने ।
भारतीय सौभाग्य स्रोत को किसने आज सुखाया है ।2।

यहा कस के वशधरो, ने अपने डेरे डाले हैं ।
जरासन्ध, शिशुपाल मचलते निर्भय हो मतवाले हैं ।

सम्प्रदाय के नाग कालिये उगल रहे विष काले हैं ।
साहस का व्यक्तित्व सो गया जगता नही जगाया है ।3

पौरुष के वसुदेव-देवकी बन्द पडे हैं कारा मे ।
झेल रहे हैं कष्ट भयानक बडी यातना धारा मे ॥

भगदड मची हुई है, सचमुच पञ्चनदी चौबारा मे ।
सतलुज व्यास नदी यमुना मे कितना रक्त बहाया है ।4।

पश्चिम की भी टेम्स नदी मे आई बाढ डुबाने को ।
अरबी सागर उफन रहा है, भारतीयता खाने को ।

इसीलिए हो सावधान अब कृष्ण-नीति अपनाने को ।
शठेशाठ्य समाचारेत, का गू जे शोर सवाया है ॥5॥

याद रहे स्वतन्त्र्य महत्व को आच नही आने पावे ।
देने मात पडोसी छलिया चाल नहीं चलने पावे ।

अखडता की धवल ध्वजा यह प्यारा नहीं झुकने पावे ।
आतङ्की भावो का कर दो बिल्कुल'प्रणव'सफाया है ।6

श्री कृष्ण का चमत्कारिक जीवन

ले,—श्री स्वामी योगानन्द पीलीभीत

योगदर्शन का सूत्र है—ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठियां वीर्य लाभ

शब्दार्थ—

ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठायाम्—ब्रह्मचर्य की दृढ स्थिति होने पर "वीर्य लाभ" —वीर्य का लाभ होता है।

भावार्थ—वीर्य ही सब शक्तियो का मूल कारण है, उसकी पूर्णतया साधना से शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तिया बढ जाती हैं तथा योग मार्ग मे बिना किसी रुकावट के साधक उन्नति प्राप्त कर सकता है।

श्री कृष्ण ने अपने जीवन को ब्रह्मचर्य की कसौटी पर कस कर मानव के समक्ष चमत्कार भरे आदर्श उपस्थित किये—घटना है .—

कस ने कृष्ण और बलराम का वध करने की योजना बनाई, मथुरा मे महायज्ञ करने की घोषणा करवा दी साथ ही कृष्ण को निमन्त्रण पत्र भेजा कस के इस रहस्य का पता अक्रूर जी को लगा तो इस भेद को बताने के लिए कृष्ण जी के पास अक्रूर जी गोकुल पहुचे, सारे षड्यन्त्र रहस्य बता कर वापस मथुरा आ गये।

महायज्ञ की निश्चित तिथि पर दोनो भाई बलराम और कृष्ण सम्मिलित होने मथुरा चल पडे कस ने दोनो भाइयो की परीक्षा हेतु मार्ग में एक धनुष लटका दिया था। जिसकी प्रत्यञ्चा को बडे-2 सूरमा नहीं चढा पाते थे धनुष को देखते ही बलराम ने मुस्करा कर कहा भैय्या कृष्ण। हमारे तुम्हारे बल की परीक्षा कस देखना चाहता है। यह सुनते ही कृष्ण की भुजाए फडक उठी कुर्ते की दोनो बाजुए चढा कर धनुष को उतार, उसकी प्रत्यञ्चा इस जोर से चढाई कि धनुष के दो टुकडे हो गए। इस घटना की सूचना गुप्तचरो ने कस को दी सूचना पाते ही कस का दिल दहिल उठा और पसीना-2 हो गया।

दोनो भाई कृष्ण और बलराम यज्ञ शाला के निकट पहुचे तो यज्ञ द्वार पर मस्त खूनी हाथी झूम रहा था, हाथी के निकट पहुचते ही हाथी मारने को लपका कृष्ण ने बडी फुर्ती से हाथी के दातो को पकड कर उखाड डाला, हाथी घायल होकर पृथ्वी पर गिर पडा दोनो भाई ब्रह्मचर्य शक्ति का परिचय देते हुए आगे बढ रहे थे, आगे देखा तो चार पहिलवान चाणूर, मुष्टक, सत, वत्सल लगोट, जामिया खीचे हुए खडे थे, देखते ही चाणूर कृष्ण से और मुष्टक बलराम से मल्ल युद्ध करने चिपट गये, चाणूर और मुष्टक को ऐसा पटका कि उनकी हड्डी पसलिया बराबर हो गई, यह देख सत-वत्सल भाग खडे हुए, यह सारा दृश्य कस देख रहा था, आग बबूला होकर नगी तलवार ले कृष्ण पर झपटा कृष्ण ने बडी वीरता से तलवार छीन कस का वध कर डाला, यह कृष्ण की वीरता के अद्वितीय उदाहरण हैं।

वीर्य इस शरीर का राजा है, उसकी सुरक्षा करना अत्यन्त आवश्यक है, उसका पतन मानव को पतन की तरफ ले जाता है, इसकी साधना-आरोग्यता बुद्धि, बल,पराक्रम, उत्साह को देने वाली है अगर हम योगीराज

(शेष पृष्ठ 23 पर)

आर्य संस्कृति के रक्षक योगीराज कृष्ण

लेखक—श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी भटिण्डा

कई बहिन भाई प्रायः पूछा करते हैं कि क्या आर्य समाज राम और कृष्ण को मानते हैं—वह इसलिए पूछते हैं कि उनके ख्याल मे आर्य समाज राम और कृष्ण को नही मानते इस प्रकार का घोर भ्रम उन मे है। वास्तव मे यदि देखा जावे तो राम और कृष्ण को तो केवल आर्य समाज ही मानता है और कोई उनके मुकाबले मे इतने ऊचे आदर्शवादी इन महापुरुषो को नही मानता जितना कि आर्य समाज मानता है। आओ हम योगीराज कृष्ण के जीवन का अध्ययन करें। जन्म—कस श्री कृष्ण जी के पिता वसुदेव को जेल मे बन्द कर स्वय मथुरा मे राज्य करने लगा इसी जेल मे श्री कृष्ण जी का जन्म भाद्रपद वदि अष्टमी को हुआ—कस की बहिन देवकी के पेट से जिस दिन श्री कृष्ण जी का जन्म हुआ देव योग से उसी दिन यशोदा रानी के पेट से कन्या का जन्म हुआ—कस के अत्याचारो से सारी प्रजा दु खी थी अतः वसुदेव ने अपने पुत्र को नन्द जी के घर गोकुल मे भेज कर उस की कन्या को लाकर अपने पास जेल मे रख कर कह दिया कि कन्या का जन्म हुआ है वह कन्या राजा कस ने मरवा दी—बहुत समय के पश्चात् कस को पता चला कि वसुदेव का पुत्र कृष्ण गोकुल मे जीवित है।

छात्र अवस्था—आपने ऊपर पढ ही लिया कि श्री कृष्ण जी का जन्म कठिन परिस्थितियो मे हुआ था-अब श्री कृष्ण जी ने आचार्य सदीपन के आश्रम मे रह कर धनुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की तथा आचार्य अङ्गिरस के चरणो मे बैठ कर ब्रह्म विद्या की प्राप्ति की—उन गुरुकुलो मे वह अपने सहपाठी सुदामा आदि के साथ वन से समिधा और फल आदि लाते और गोपालन एव गुरु सेवा मे समान रूप से तत्पर रहते थे—पढाई के समय से पूर्व ही उन में नेता तथा लोकनायक के गुण दृष्टिगोचर होने लग गए थे क्योकि श्री कृष्ण ने अपनी बुद्धिमत्ता और पराक्रम से अनेक आपत्तियो से लोगो को मुक्त कराया था। स्नातक बनने के पश्चात् वह चक्रवर्ती राज्य की स्थापना मे जुट गए और इस का श्री गणेश मथुरा से आरम्भ किया।

प्रथम पग—श्री कृष्ण ने पहला लक्ष्य अत्याचारी कस को बनाया कस को मार कर यादवो के सघ की पुनः स्थापना कर अपने नाना उग्रसैन को मथुरा का राजा बनाया।

दूसरा पग—अब श्री कृष्ण ने कस को मार कर उनकी स्त्रिया "अस्ति" और प्राप्ति को उन के पिता जरासन्ध के घर पहुचा दिया—तब जरासन्ध चढ आया श्री कृष्ण ने उसे 2 बार हराया।

ब्रह्मचर्य पालन में महान् तप—

श्री कृष्ण जी ने 48 वर्ष की आयु मे रूक्मणी से विवाह किया—विवाह के पश्चात् भी पति पत्नी का पुत्र की प्राप्ति के लिए 12 वर्ष तक इकट्ठे रहते हुए ब्रह्मचर्य पूर्वक हिमालय पर्वत के दामन मे तपस्या करना बड़ा भारी सयम का सूचक है उन्होने जीवन प्रर्यन्त एक विवाहित रूक्मिणी को पत्नी के रूप मे रखा (16000 गोपिया तथा मक्खन चोर एव स्त्रियो के नहाते समय उनके कपड़े उठाने की घटनाए निराधार और इनके अति पवित्र जीवन पर धब्बा लगाने वाले स्वार्थी लोगो की लिखी हुई हैं।)

महाभारत युद्ध को रोकने का यत्न

श्री कृष्ण के जीवन की यह भी बडी विशेषता है कि उन्होने दूत बन कर कई बार कौरवो को समझाया

और यत्न किया कि किसी प्रकार सन्धि हो जावे और खून की नदिया न बहे—परन्तु जब सफलता न मिली तो अपनी सेना तथा धन कौरवो को और स्वय अकेले पाडवो की ओर होकर श्री कृष्ण जी ने अर्जुन का सारथी बन कर अपनी राजनीति से सत्य पक्ष पाडवो को विजय दिलाई।

योग की विभूतियां :—

जयद्रथ वध के समय श्री कृष्ण ने दृष्टि अनुबन्ध द्वारा सूर्य अस्त होने का बोध लोगो का कराया—

निर्लोभता :—श्री कृष्ण ने कस को मार कर स्वय राज न करके उग्रसेन को मथुरा का राजा बनाया और जरासध का वध करके उसके पुत्र सहदेव का राजा बनाना उन का लक्ष्य अन्याय और अत्याचार को मिटाना था—।

आदर्श मैत्री भाव :—गुरुकुल के समय का उनका सहपाठी सुदामा निर्धन अवस्था मे जब श्री कृष्ण को मिलने गया यह मैत्री प्रेम अब तक मानव प्राणी के लिए प्रेरणा का आधार रहा है।

नीति में निपुण :—जब कर्ण ने रथ का पहिया निकालते समय अर्जुन को कहा कि धर्म आज्ञा नही देता कि निहत्थे पर तीर चलाओ मुझे रथ का पहिया निकाल लेने दो तब तक रूको—

उस समय योगीराज कृष्ण ने ललकार कर कर्ण को कहा कि जब भीम को विष दिया था तब तुम्हे धर्म याद न आया। (2) जब एक वस्त्र धारण द्रोपदी को घसीट कर भरी सभा मे लाए तब धर्म क्रियाओ भूल गए—। (3) तेरह वर्ष बीतने पर भी पाडवो का राज्य न देना भी तो अधर्म है। (4) जब सात-2 महारथियो ने मिल मिल कर निहत्थे अभिमन्यु की हत्या की थी तब तेरा धर्म कहा चला गया था—यह कह कर श्री कृष्ण ने अर्जुन को कहा कि धर्म तुम को कर्ण वध के लिए पुकार रहा है। अतः अर्जुन ने अपने तीरो से कर्ण को समाप्त कर दिया।

सेवा का अनुपम नमूना :—

युधिष्ठिर के यज्ञ मे आए सभी विद्वानो के चरण धोने की जिम्मेवारी श्री कृष्ण ने ली थी—महर्षि दयानन्द ने श्री कृष्ण जी जीवन के बारे तो अति उत्तम लिखा कि 'श्री कृष्ण जी ने जन्म से लेकर मरण पर्यन्त कोई भी पाप कार्य नही किया'—परमपिता परमात्मा हमे बुद्धि दे कि हम उन के पवित्र जीवन से शिक्षा प्राप्त करे और जो अज्ञानी और स्वार्थी लोगो ने उनके जीवन पर लाछन लगाने का यत्न किया। उन को भी दूर करने मे सामर्थ हो सके।

(21 पृष्ठ का शेष)

श्री कृष्ण जैसा बनना चाहते हैं, तो विषयी लोगो से दूर रहना पड़ेगा, बुरे विचारो को त्यागना पड़ेगा तभी हम दीर्घ जीवी बन सकेंगे—वेद ने कहा—

"मरण बिन्दु पातेन जीवन बिन्दु धारणात्"

वीर्य रक्षा न करना मृत्यु है, रक्षा करना जीवन है।

ब्रह्मचर्य ऐसा साधन है जिसके सिद्ध होने पर कठिन से कठिन कार्यो मे भी शीघ्र सफलता प्राप्त होती है इसके बल से हम ससार सागर को पार कर सकते हैं यह प्रभु मन्दिर की नीव है वेद ने कहा।

आयुष्यं ब्रह्मचर्यस्य रायस्पोषमौद्भिदम्।
इदं हिरण्यं वर्च्चस्वज्जैत्राया विशता वुमाम ॥

(पदार्थ) हे मनुष्य (औद्भिदम) दुःखो के नाशक (आयुष्यम्) जीवन के लिए हितकारी (वर्चस्वम्) अध्ययन के उपयोगी (रायःपोषम्) धन की पुष्टि करने हारे (वर्चस्वत) प्रशस्त अन्नो के हेतु (हिरण्यम्) तेज-स्वरूप सुवर्णादि ऐश्वर्य (जैत्राय) जय होने के लिए (माम्) मुझ को (आ विशतात्) आदेश करे अर्थात् मेरे निकट स्थिर, वह तुम लोगो के निकट भी स्थिर होवे।

भावार्थ—आयु के बढाने वाले कान्ति दायक बल को देने वाले स्फूर्ति के देने वाले—सब प्रकार के रोगो का नाश करने वाले तेज को ओज को प्रदान करने वाले, वीर्य को मुझे हे प्रभु दो—।

आर्य समाज का तृतीय नियम--

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है

लेखक—डा भवानीलाल जी भारतीय चण्डीगढ़

आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयान्न्द ने लाहौर में आर्य समाज के नियमो एव उद्देश्यो का जब निर्धारण किया तो उन्होने वेद विषयक तृतीय नियम को इस प्रकार सूत्र बद्ध किया, "वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढना पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।" यह स्मरण रखना चाहिए कि स्वामी दयानन्द को पजाब मे आमन्त्रित करने वालो मे पञ्चनदीय ब्रह्म समाज के नेताओ का प्रमुख हाथ था और प्रारम्भ मे उन्होने ही स्वामी जी के व्याख्यानो की व्यवस्था की थी किन्तु जब उन्हे महर्षि के वेद विषयक दृढ विचारो की विस्तृत जानकारी मिली तो उन्होंने न केवल उनके प्रवचन की व्यवस्था से ही अपना हाथ खीच लिया। अपितु स्वामी जी के अतिथ्य सत्कार में भी न्यूनता कर दी। तथापि महर्षि वेद विषयक अपने इस दृढ विचार पर पूर्णतया स्थिर रहे और उन्होंने इसे आर्य समाज के नियमो मे सम्मिलित करना ही आवश्यक समझा।

यहा यह लिख देना भी समीचीन ही होगा कि स्वामी दयानन्द के उपयुंक्त विचार मे ऐसा कुछ नही है जो प्राचीन मान्यताओ के प्रतिकूल हो अथवा इस मे कुछ नवीनता हो। वेदो के विषय मे सर्वाधिक आस्थावान् मनुस्मृति के रचयिता राजर्षि मनु ने तो शताब्दियो पूर्व ही वेद के सर्वविद्यामयत्व को लक्षित कर निम्न घोषणाए की थी—

> पितृ देव मनुष्याणां वेदश्चक्षुः सनातनम्।
> अशक्यं चाप्रमेयं च वेद शास्त्रमिति स्थिति ॥12।94

अर्थात्—यह वैदिक ज्ञान पितरो, देवताओ तथा मनुष्यो का सनातन चक्षु है क्योकि इसी ज्ञान की सहायता से हमारे पालक पितर गण, हमारे विद्वान् देवगण तथा सामान्य मनुष्य स्वकर्त्तव्यो का निर्धारण करते है तथा अनन्त सत्य विद्याओ से युक्त होने के कारण यह अशक्य एव अप्रमेय है।

आगे चल कर मनु पुन इस बात पर जोर देते हैं कि मनुष्य जाति का चातुर्वर्ण्य विभाजन, मनुष्य जीवन को चार आश्रमो मे विभक्त जीवनचर्या तथा जो कुछ भूत, भविष्य एव वर्तमान मे विद्यमान विद्याये हैं वे सभी वेदो से ही प्रसिद्ध होती है। प्रासगिक श्लोक इस प्रकार है—

> चातुर्वर्ण्यं त्रयोलोकाश्चत्वारश्चाश्रमाः पृथक्।
> भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात् प्रसिद्धति ॥12।97

इसी प्रसग मे मनु पुन: यह स्पष्ट कर देते हैं कि वेदो मे आध्यात्मिक विद्याओ के अतिरिक्त सेनापतित्व राज्य व्यवस्था, दण्डनीति यहा तक कि सर्व लोक सचालन के लिए जिस बुद्धि एव योग्यता की आवश्यकता होती है वह सब विद्यमान है और वेद शास्त्र विद् लोग ही सेनापति कर्म, राज्य शासन तथा दण्डनीति के सचालन मे कुशल होते हैं।

महर्षि दयानन्द ने मनु के उपयुंक्त अभिप्राय के निम्न श्लोक—

> सैनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च।
> सर्व लोकाधिपत्यं च वेद शास्त्रविदर्हति ॥12।100॥

को सत्यार्थ प्रकाश के छटे समुल्लास तथा संस्कार विधि के बृहस्वाश्रम प्रकरण में उद्धृत किया है।

यदि महर्षि दयानन्द ने वेदों को संसार की समस्त आध्यात्मिक एवं भौतिक विद्याओं का आदि स्रोत कहा तो इसमें उन्होंने कुछ भी अत्युक्ति नहीं की। उपनिषदों में जहां परा और अपरा विद्याओं का उल्लेख मिलता है वहां कहा गया है—द्वे विद्ये वेदिक इति...परा चैवापरा च। अर्थात् दो विद्याएं जानने योग्य हैं जिन्हें ब्रह्म ज्ञानियों ने परा और अपरा कहा है। आगे चल कर मुण्डकोपनिषदकार ऋषि लिखते हैं—तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोथर्ववेद............अथ परा यया तदक्षरधिगम्यते ॥ यहां स्पष्ट ही अपरा विद्याओ में ऋगादि चारों वेदों की गणना की गई है तथा परा विद्या उसे कहा गया है जिससे अक्षर अविनाशी ब्रह्म का ज्ञान होता है। कई विचारक उपनिषदकार के मूल अभिप्राय को न समझ कर यह कह बैठते हैं कि वेदों की गणना अपराविद्या में की गई है अतः इन्हें उपनिषद्कार ने हीन स्थान प्रदान किया है जब कि ये लोग पराविद्या का प्रतिपादन करने से उपनिषदों को वेदों की अपेक्षा श्रेष्ठ मानते हैं। स्वामी दयानन्द इस विचार से सहमत नहीं हैं। उनके अनुसार वेदों को अपरा विद्या इसी लिए कहा गया है कि उनमें भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनो प्रकार की विद्याओं का समावेश है। यदि वेदों में केवल अध्यात्म विषय का ही प्रतिपादन होता तो वे एकाङ्गी हो जाते। ईश्वरोक्त ज्ञान सर्वांगीण होता है, अतः वेदों को अपरा विद्या कहने से उसकी अवगणना नहीं होती। वस्तुतः महर्षि तो ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में स्पष्ट लिखते हैं—अत्र चत्वारो वेद विषयाः सन्ति। विज्ञान कर्मोपासना ज्ञान काण्डभेदात्। अर्थात् वेदो में विज्ञान, कर्म, उपासना तथा ज्ञान का ही मुख्यतया वर्णन मिलता है। इसमें भी वे विज्ञान को सर्व प्रथम मानते हैं—तत्रा-दिमो विज्ञान-विषयो हि सर्वेभ्यो मुख्योऽस्ति। स्वामी जी विज्ञान का अत्यन्त व्यापक अर्थ करते हैं। उनके अनु-सार विज्ञान के अन्तर्गत वे सभी विद्याएं समाविष्ट होती हैं जिनसे परमेश्वर से लेकर तृण पर्यन्त अर्थात् महान् से महान् परमात्मा से आरम्भ कर तुच्छातितुच्छा घास के तिनके तक के पदार्थों का वास्तविक ज्ञान प्राप्त होता है—तत्र परमेश्वरादारभ्य तृणपर्यन्तपदार्थेषु साक्षाद्-बोधान्वयत्वात्। इस प्रकार उन्होंने वेद प्रतिपादित विद्याओं में अध्यात्म प्रधान तथा भौतिक विषयों का विवेचन करने वाली दोनों प्रकार की विद्याओं का अस्तित्व स्वीकार किया है। इतने पर भी वे यह मानते है कि वेदों का चरम तात्पर्य तो परमेश्वर का ज्ञान कराना ही है, वही सब पदार्थों में प्रधान होने से वेदों का प्रमुख प्रतिपाद्य है—तत्रापीश्वरानुभवो मुख्योऽस्ति कुतः अत्रैव सर्वेषांवेदानां तात्पर्यमस्तीश्वरस्य खलु सर्वेभ्य पदार्थेभ्यः प्रधानत्वात्।

स्वामी दयानन्द द्वारा प्रतिपादित इस सिद्धान्त के अर्थ को न समझने के कारण कालान्तर में अनेक प्रकार के भ्रम फैलाये गये। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भूतपूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष पं. बलदेव उपाध्याय ने तो प्रकारान्तर से स्वामी दयानन्द के उपर्युक्त कथन पर आक्षेप करते हुए लिखा—अपरं चामीवेदेषु नवीनाना-मपि आधुनिकैः पाश्चात्य-विज्ञान वेदिभि – प्राकाश्यं नीतानामाविष्काराणां धूमयान-वायुयान तडिच्छकर-स्वनग्राहादीनां नैव कल्पितां सम्भावनां, अपितु वास्तविकी सत्तां वेदे मन्यन्ते। सर्वेषामाविष्कृतानां आविष्करिष्य-माणानां च विज्ञान तत्वा नामाकारो वेद एवेति तेषाम-भिमतं मत विवावलोक्यते। एतत् सिद्धान्त मनुसरद्भि-स्तैस्तथैव वेद व्याख्याता यथा वैज्ञानिकानामाविष्काराणां तत्र स्थितिः कयापि रीत्या प्रतिपाद्येत्। परन्तु एषोऽपि सिद्धान्तों नैव विप्रज्जन मनोरमः॥ अर्थात् ये लोग (स्वामी दयानन्द के मतानुयायी, वेदो मे आधुनिक पाश्चात्य विज्ञान यथा, धूमयान, वायुयान, ट्राम आदि की वेदों में सत्ता केवल कल्पित ही नहीं करते अपितु उसे पूर्णतया सत्य भी मानते हैं। इनका मत है कि वेदो में अब तक हुए तथा आगे भी होने वाले सभी आवि-ष्कारों का यथावत उल्लेख मिलता है। इस सिद्धान्त को स्वीकार करने वाले लोग येन,केन, प्रकारेण इन वैज्ञा-निक आविष्कारों की सत्ता वेदों में सिद्ध कर ही देते हैं,

किन्तु यह सिद्धान्त विद्वानो को मान्य नही हो सकता। अपने एक अन्य ग्रन्थ "आचार्य सायन और माधव" मे भी प बलदेव उपाध्याय ने अपनी उपर्युक्त धारणा को ही निम्न शब्दो मे व्यक्त किया है—"क्या वेद की महिमा इसी मे है कि विज्ञान की समग्र वस्तुओ का वर्णन उसमे उपलब्ध हो, वेद आध्यात्मिक ज्ञान की निधि हैं। भौतिक विज्ञान की वस्तुओ का वर्णन करना उनका वास्तविक उद्देश्य नही है। ऐसी दशा म यौगिक प्रक्रिया के अनुसार इन चीजो को वेदो के भीतर बतलाना उचित जान नही पडता।"

परन्तु योगी अरविन्द जैसे वेदज्ञ विचारक और चिन्तक स्वामी दयानन्द की इस मान्यता का पूर्ण समर्थन करते हैं। वे तो यहा तक लिखते हैं कि "कि स्वामी दयानन्द की इस मान्यता का पूर्ण समर्थन करते हैं। वे तो यहा तक लिखते हैं कि—"स्वामी दयानन्द के इस विचार मे कि वेद मे न केवल धर्म के किन्तु विज्ञान के सायो का भी मूल है, कुछ भी आश्चर्य की बात नही है। मेरा तो अपना यह भी विश्वास है कि वेद में एक ऐसे विज्ञान के सत्यो का उल्लेख है जिससे वर्तमान जगत् सर्वथा अनभिज्ञ है और इस अवस्था मे तो यही कहना उचित होगा कि वैदिक ज्ञान की गम्भीरता एव विस्तार की चर्चा करते समय स्वामी दयानन्द ने यूनोक्ति ही की है अत्याधिक नही।"

वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है।

यस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छंदांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुरतस्मादजायन ॥

यजुर्वेद अध्याय 31 मन्त्र 7 ॥

अर्थ—(तस्मात) उस (सर्वहुत) सब के दाता (यज्ञात्) पूजनीय प्रभु से (ऋचः) ऋग्वेद (सामानि) सामवेद (जज्ञिरे) उत्पन्न हुए। (तस्मात उसी से (छन्दांसि) अथर्ववेद (जज्ञिरे) उत्पन्न हुए (तस्मात्)उसी से (यजु) यजुर्वेद उत्पन्न हुआ।

भावार्थ—परम पूजनीय परमात्मा की कृपा से ही चारो वेद उत्पन्न हुए हैं। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। इस लिए हम सब नर नारियो को परमात्मा के उपदेश के अनुसार अपना धार्मिक जीवन व्यतीत करना चाहिए।

वेदों को पढो।

अन्ति सन्त न जहात्यन्ति सन्त न पश्यति।
देवस्य पश्य काव्य न ममार न जीर्यति ॥ अथर्ववेद 10।8।52

(अन्ति) समीप (सन्तम) होते हुए को (न) नही (पश्यति) देखता है। (अन्ति) समीप (सन्तम्) होते हुए को (न) नही (जहाति) छोडता है। भगवान् के वेद (काव्यम्) काव्य को (पश्य) देख, (न) वह न तो (ममार) मरता है और न ही (जीर्यति) पुराना होता है।

भावार्थ—परमात्मा का वेद काव्य सदा अमर रहता है। यह वेद ज्ञान कभी नष्ट नही होता है और सदैव नया रहता है। यह कभी भी पुराना नही होता है। सदा उस वेद (ज्ञान) को पढकर प्राप्त करना चाहिए। वेद-ज्ञान सृष्टि के आरम्भ से आज तक सदा नया ही बना रहा है। इसलिये अत्यन्त पुरुषार्थ करके वेद-ज्ञान को सदा ग्रहण करना चाहिये।

वेद पढ़ें, सुविचार बढ़ें

लेखक:—श्री प्रा. भद्रसेन जी दर्शनाचार्य होशियारपुर

अब हम वेद की बात करते हैं, तो एकदम हमारा ध्यान ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की ओर जाता है। जो कि संसार के पुस्तकालय की सब से पुरानी पुस्तकें हैं तथा ये चारों वेद ही संसार के सारे साहित्य के मूल आधार हैं। भारतीय साहित्य का वेद से सीधा सम्बन्ध है। संस्कृत साहित्य का वैदिक भाग तो वेदों के शब्दों और भावों को समझने-समझाने के लिए ही बना है और दूसरा संस्कृत और भारतीय भाषाओं का साहित्य वेदों को बड़े आदर से स्मरण करता है। अतः भारतीय संस्कृति, धर्म, सभ्यता और इतिहास का मूल आधार वेद ही है।

वेदों की भाषा संस्कृत है, वेद की भाषा आज की संस्कृत से शब्दों की आकृति और अर्थ में अनेक तरह से भिन्न भी है! वेद की भाषा पद्यमयी है, जिस मे किसी न किसी छन्द के अनुसार नपे-तुले अक्षर होते हैं। इसीलिए वे गाए भी जा सकते हैं। जैसे कि गायत्री छन्द मे चौबीस अक्षर होते है, जो कि तीन भागों मे बटे हुए है, जिसे पाद कहते है। चारो वेदो मे गायत्री आदि छन्दो में बीस हजार के लगभग मन्त्र है।

अपनी छन्दोबद्धता आदि के कारण वेद काव्य भी कहलाते है। पश्य देवस्य काव्यम्। अथर्ववेद 10-8-32 कवि की रचना को काव्य कहते है। काव्य का ही एक नाम साहित्य भी है, क्योंकि इस में शब्द और अर्थ का सुन्दर साथ होता है। इसीलिए एक कवि अपनी कल्पना की उड़ान से तपे-तुले शब्दों (छन्द) द्वारा सुन्दर अर्थ को दर्शाता है। किसी साहित्य मे शब्द अर्थ के साथ रस-गुण अलंकार का भी मेल होता है, जैसे एक चित्र में वस्तु की आकृति, रूप, रंग का जंचाव होता है। ऐसे ही काव्य में शब्द-अर्थ-रस-गुण अलंकार का जंचाव होता है। इन का यह जंचाव ही रसिकों के हृदयों को आकर्षित करता है। तब सुनने वाले मन्त्र मुग्ध हो कर उसे सुनते हैं। जैसे कि वेद का एक मन्त्रांश है—वाचा वदामि मधुमत् अथर्ववेद 1-34-3। जैसे ये शब्द सुनने और बोलने में सरल-सरस हैं। वहा इन का अर्थ है 'मैं वाणी से मधुर बोल बोलू'

भारतीय विश्वास के अनुसार ईश्वर ने हमारे कल्याण के लिए जहां सूर्य, चन्द्र, जल, वायु, धरती और उस के पदार्थ बनाए हैं। वहा इन सब पदार्थों का प्रयोग कैसे किया जाए, इस का ज्ञान भी परमात्मा ने वेदों द्वारा दिया, क्योकि ज्ञान के द्वारा ही हम प्रत्येक पदार्थ का प्रयोग और किसी कार्य को करने में समर्थ होते हैं। वेद शब्द का अर्थ भी ज्ञान ही है। जैसे आखों से देखने के लिए प्रकाश की आवश्यकता होती है, ऐसे ही बुद्धि से किसी चीज, बात को सोचने, समझने के लिए ज्ञान की जरूरत होती है। ईश्वर के बनाए हुए सूर्य-जल-वायु जिस प्रकार सब के लिए एक से है, इन में एक रूपता है। ये किसी विशेष वर्ग, क्षेत्र से सम्बद्ध नही हैं। ऐसे ही ईश्वरीय ज्ञान वेद भी नित्य एक रूप सार्वकालिक, सार्वभौमिक और सार्वजनीन है! क्योकि सूर्य, जल, वायु आदि प्राकृतिक पदार्थों और वेद, इन दोनो का कर्त्ता एक ही है। इसीलिए इन दोनो मे अनेक तरह से समानता मिलती है, जैसे कि भूगोल और भूगोल की पुस्तक एक सी होती है, अतः यह सारा भौतिक संसार भूगोलवत् है और वेद उस का बोधक ज्ञान है।

इस प्रकार वेद का सामान्य स्वरूप स्पष्ट हो जाने पर 'वेद पढ़ें' शीर्षक के अनुरूप एक और विशेष बात हमारे सामने आती है, कि वेद के महत्व को अनुभव करते हुए हम उस का पाठ करें। वेद का यह पाठ केवल उच्चारण

तक सीमित न हो, अपितु उस के अनुसार व्यवहार भी हो अर्थात् यह पाठ ठीक उसी प्रकार होना चाहिए। जिस प्रकार हम अपने बच्चो से आशा रखते है, कि वे अपने पढे हुए के अनुसार प्रात जागरण, मुख-दन्त प्रक्षालन, स्नान आदि करे। ऐसे ही हमे भी वेद के पाठ के अनुसार चलना चाहिए। जिस से यह पंक्ति चरितार्थ हो सके। वेद पढें-सुविचार बढें, बल पाए चढें नित ऊपर को। हमारा वेद पाठ ठीक उसी प्रकार होना चाहिए, जिस प्रकार युधिष्ठर ने अपना पाठ पढा था।

कहते हैं कि युधिष्ठिर भी अन्य पाण्डव और कौरवो के साथ गुरुचरणो मे बैठकर नित्य प्रति पढा करते थे। एक दिन सभी ने गुरु जी के पूछने पर अपना पिछला पाठ सुना दिया। केवल युधिष्ठर ने नही सुनाया। दूसरे,तीसरे दिन गुरु जी ने पुन. युधिष्ठर को पाठ सुनाने के लिए कहा, पर युधिष्ठर चुप रह गया। गुरु जी ने सोचा बडा भाई है, हो सकता है, राज्य के कार्य के कारण पाठ स्मरण का अवसर न मिला हो। अगले दिन अवश्य सुना देना, यह कह कर गुरु जी ने प्रकरण को वही समाप्त कर दिया। अगले दिन पुन: पाठ सुनाने के लिए जब कहा गया, तो युधिष्ठर फिर भी चुप ही रहा। तब गुरु जी ने कुछ क्रोध से कहा —यह कौन सा बहुत बडा पाठ है, जो अभी तक याद नही हुआ, इस तरह कब तक काम चलेगा। तुम्हे यह शोभा नही देता। अगले दिन जब गुरु जी ने पूछा, तो युधिष्ठर ने कहा, कि गुरु जी कुछ-कुछ याद हुआ है। उन्होने पूछा यह कैसे ? तब युधिष्ठर ने बडे विनय से बताया, कि पहले कोई व्यक्ति जब मुझे नापसन्द बात कहता था, तो एकदम क्रोध आ जाता था, पर अब जब से आप ने 'क्रोध मा कुरु' का पाठ पढाया है। तब से मैं उस को जीवन व्यवहार मे उतारने का प्रयास कर रहा हू। कल कई दिन बाद भी अपना पाठ न सुनाने पर जब आप ने कुछ कहा तो पहली बार पाठ के अनुसार मुझे क्रोध नही आया। इसीलिए मैंने कहा है कि मेरा पाठ मुझे कुछ कुछ याद हो रहा है। अत: इस दृष्टान्त का दार्ष्टान्त यही है कि हमे भी वेद पाठ का युधिष्ठर की तरह जीवन मे उतारना चाहिए।

जैसे कि हम अथर्ववेद मे पढते हैं कि:—
अनुव्रत. पितु पुत्रो माता भवतु समना.।
जाया पत्ये मधुमती वाच वदतु शान्तिवाम् ॥
मा भ्राता भ्रातर द्विक्षन् मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्च: सव्रता भूत्वा वाच वदत भद्रया ॥
अथर्ववेद 3-30-2-3।

पुत्र पिता के अनुकूल आचरण करे और माता के विचारो का आदर करने वाला हो। पत्नी पति के लिए मधुर और शान्तिदायक वाणी बोले। भाई-भाई से, बहिन बहिन से, भाई-बहिन परस्पर घृणा, द्वेष, वैर, विरोध न करें। अपितु सहयोगी, एक से व्यवहार वाले होकर परस्पर आदर से अच्छी वाणी बोलें। इन मन्त्रो का सीधा सा भाव यह है कि हमारे पारिवारिक जीवन मे परस्पर प्रेम, सद्भाव और सहयोग हो, हम किसी प्रकार से परस्पर घृणा, ईर्ष्या, द्वेष न करें। यह ठीक है कि इन वचनो को पढते समय हमारे मन मे ऐसी भावना आती है, पर व्यवहार मे विशेष रूप से बडे हो जाने पर जब स्वार्थ टकराते हैं या लोभवशात् हम परस्पर प्रेम, सद्भाव, सहयोग की भावना से उल्टा भी कर बैठते हैं। ऐसी स्थिति मे हमे अपने मन को बार बार समझाना चाहिए और वेद के पाठ के अनुसार अपने जीवन को ढालने का बार-बार प्रयास करना चाहिए। जब भी मन ढीला हो, इस घटना का स्मरण करना चाहिए।

कहते हैं कि बोपदेव जब विद्यार्थी था, तो उस को व्याकरण नही आता था। इसीलिए उस को प्रतिदिन कक्षा मे अपमान सहना और गुरु जी के कटु वचन सुनने पडते थे। रोज-रोज के अपमान से दु खी हो कर एकदिन बोपदेव चुपचाप शिक्षणालय से दौड गया। चलते-चलते जब काफी समय बीत गया और प्यास लगी, तो वह पानी पीने के लिए एक कुए पर रुका, वहा उस ने देखा कि कुए के मुख पर बडे-बडे मजबूत पत्थर लगे हुए हैं और उन मे कहीं-कहीं कुछ निशान हैं। मण्डेर पर भी अनेक जगह गहरे निशान बने हुए हैं। इतने मे कुछ महिलाए वहा आईं और उन्होने अपने घडे रखे और पानी भरना शुरु कर दिया। बोपदेव ने देखा जहा मिट्टी के घडे रखे हैं, वहा पत्थर मे बिल्कुल वैसे ही निशान हैं। मण्डेर पर जहा रस्सी से पानी भरा जा रहा था, वहा रस्सी के जगह-जगह निशान बन गए हैं। पानी पीने के

बाद भी वह कुछ देर बैठा सोचता रहा, यह सब कैसे हो गया। तब सोचते-सोचते उस के मन में आया, जब मज-बूत पत्थर पर भी साधारण सी कच्ची रस्सी और घड़े को बार-बार रखने से निशान बन सकते हैं, तो फिर मैं तो एक विचारशील हूं, जब और पुस्तकें मुझे याद हो जाती हैं तो बार-बार के अभ्यास से व्याकरण स्मरण क्यों नहीं हो सकता। क्योंकि:—

करत-करत अभ्यास के जड़ मति होतसुजान।
रस्सी आवत जावत से सिल पर पड़त निशान ॥

ऐसा सोच कर बोपदेव पाठशाला में लौट आया और दृढ़ निश्चय के साथ व्याकरण को पढ़ने लगा और विषयों की तरह व्याकरण मे भी वह कुशल होने लगा।

वस्तुत: बोपदेव की तरह हमें अपने मन में दृढ निश्चय कर के अपने पाठ को जीवन मे उतारने का प्रयास करना चाहिए। जैसे हम अपने बच्चो को लिखना सिखाने के लिए पहले उन का हाथ पकड़ कर लिखाते हैं और फिर बच्चे लकीरों पर स्वयं और बाद में बिना किसी सहारे के लिखने में समर्थ हो जाते हैं। ऐसे ही पहाड़े याद कराने के लिए हम बच्चों को बार-बार बुलवाते हैं। और यह सब जैसे अभ्यास से ही सिद्ध होता है वैसे ही हमें भी अपने जीवन में ढालने के लिए वेद के पाठ का अभ्यास करना चाहिए।

नि:सन्देह जीवन में हम अनेक बार अनुभव करते हैं और सोचते है कि आगे से हम सदा इस प्रकार का व्यव-हार करेंगे। पर व्यवहार में फिर ऐसी कोई बात हो जाती है, या स्थिति आ जाती है, कि हमारा सोचा धरा का धरा रह जाता है। जैसे कि हम प्राय: साप्ताहिक सत्संग के अन्त मे संगठन सूक्त का पाठ करते हैं, पर सामाजिक जीवन में उस से विपरीत व्यवहार पर उतर आते है। ऐसी स्थिति में हमे अकेले में तथा दूसरों के साथ मिल कर सगठन के बारे में सोचना चाहिए। असफल होने पर भी धैर्य नहीं खोना चाहिए। अपितु ब्रूसो की तरह पुन: पुन: दृढ़ संकल्प के साथ कार्यक्षेत्र में लगातार प्रयास करना चाहिए।

ब्रूसो एक छोटे से देश का राजा था, उसके राजकार्य से वहां की जनता प्रसन्न थी। एक बार एक बड़े पड़ौसी राजा ने आक्रमण कर दिया। ब्रूसो ने डट कर उस को मुंह तोड़ उत्तर दिया। इस का बदला लेने के लिए पड़ौसी राजा ने बड़ी भारी सेना के साथ फिर आक्रमण किया। अपनी सीमित शक्ति के कारण ब्रूसो अधिक देर तक उस का मुकाबला न कर सका और युद्ध के मैदान से वन में दौड़ गया। ब्रूसो शत्रु से छिप कर जब वन-वन में भटक रहा था, तो एक दिन गुफा मे छिप कर बैठे हुए ब्रूसो ने देखा कि एक छोटा सा कीड़ा गुफा की दीवार पर चढ़ने का प्रयास कर रहा है। वह थोडी दूर चढ़ता और गिर पड़ता। इस प्रकार छ: बार प्रयास करने के बाद ही वह चढ़ने में सफल हो सका। यह दृश्य देख कर ब्रूसो ने अपने मन मे दृढ संकल्प और निश्चय किया. कि अपनी स्नेही जनता के सहयोग से आज नही तो एक दिन शत्रु का मुंह मोड़ने मे मैं अवश्य ही सफल हो जाऊंगा। यह निश्चय कर के ब्रूसो लौट आया और पुन: अपनी सेना को संग-ठित कर के अपने देश को स्वाधीन कराया।

वेद को पढ़ते हुए हम कई बार जीवन में पढ़े हुए से दूर चले जाते है। ऐसी स्थिति मे पुन: वेद के पाठ से उत्साह प्राप्त कर के ब्रूसो की तरह हम अपने मन को सजग करें। नि:सन्देह जीवन मे अनेक बार विषम स्थिति आती है और हम उल्टे रास्ते पर चल पड़ते है।

इस प्रकार असफल होने पर भी गुफा के कीड़े की तरह जुटे रहने पर हम एक दिन वेद के अनुसार जीवन को ढालने में अवश्य ही सफल हो सकते है। इस के लिए सब से बड़ी जरूरत यही है कि हम धैर्य खोए बिना वेद को पढ़ कर जहा अपने सुविचार बनाए वहां वेद के विचार के अनुसार चलने का अभ्यास करे। और तब हमारा यह गुनगुनाना सर्वथा चरितार्थ हो सकेगा कि:—

वेद पढ़े, सुविचार बढ़ें, बल पाय चढ़ें नित ऊपर को।
अविरुद्ध रहें, ऋजु पन्थ गहे, परिवार कहे, वसुधा भर को ॥

—

वेदो रक्षति रक्षितः

लेखक—श्री अभयदेव जी शर्मा एम. ए पी एच डी. अध्यक्ष वेद संस्थान अजमेर

"आर्य मर्यादा" का निर्धारण वेद-श्रुति से हुआ करता है। अत: आर्यत्व की रक्षा के लिए वेद अपेक्षित है। पर, वेद रक्षा तब करता है जब वेद की रक्षा आर्य करे। वेद किसलिए? आर्य बनने के लिए। आर्य को ही ब्राह्मण (ब्रह्म का ज्ञाता) कहते है। आर्य ही ऋषि (तत्व का साक्षी, द्रष्टा) है। आर्य ही वेद द्वारा यज्ञ कर के देव बनता है और उस स्थिति मे रमता है जहा स्व है, आनन्द है (स्वर्-ग)।

जो आर्य नही वह द्विज नही। उसका वेदो की माता गायत्री की कोख से जन्म नही हो पाता है। वह तो पतित-सावित्रीक (गायत्री वेदमाता से हीन मातृहीन-अनाथ) रह जाता है। जो आर्य नही वह अनार्य तो दस्यु है जो अजर, अमर, चेतन आत्मतत्व का उपक्षय (दसु—उपक्षय) कर के, जड शरीर से अपना तादात्म्य कर करके जडबुद्धि, सवेदनहीन, प्राणरम और देहपरायण बना हुआ है। ऐसा दस्यु तो वह असु-र है जो अपनी देहपरिधि की सकुचित स्वार्थ सीमा से बाहर के लोक, परलोक को देख नही पाता। अह कार-रूप वृत्र के आवरण मे अपने आत्मा का दम घुटना हुआ देख कर भी उसे वेदना नही होती। वह स्व के बजाय स्व मे लीन होना है। स्व को विराट उरु स्व ज्योति से सवलित करने के लिए जिस आर्यत्व की अपेक्षा है उसे पाने के लिए दैवासुरम् सग्राम करना होता हैं और इस सग्राम मे विजय मिलती वेद का पल्ला पकडने से।

वेद पोथी है मनुष्य को प्राप्त सबसे पुरानी पोथी। पर, पुरानी होने से ही कोई वस्तु अच्छी नही हो जाती, और नवीन हर वस्तु बुरी नही भी हो सकती है। पोथिया तो ढेरो है। जागरुक, प्रबुद्ध मस्तिष्क सदा से पोथिया बोलता आया है जिन्हे किन्ही ने रट लिया, लिख लिया तो वे आज तक सुरक्षित चली आ रही है। अनगिनत पोथिया नष्ट भी हो गई होगी, जैसे वेदो की सहस्राधिक शाखा सहिताओ, ब्राह्मणारण्यकादियो मे से दस-बारह के अलावा सब विलुप्त है। इजील, बाईबिल, कुरान, गुरुग्रन्थ साहब जैसी कुछ पोथिया सुरक्षित हैं। कपिलकणादादि वैज्ञानिक-दार्शनिको की पोथिया भी कुछ सुरक्षित हैं। यह पोथिया कागज-पत्र पर लिखी, भार-आकारयुक्त पाठ्य पुस्तक होने मात्र से अध्येय नही बन जाती हैं। इन मे कुछ हैं जो मनुष्य को उस के स्वरूप-बोध मे सहायक हैं। अत मनुष्य इन्हे पढता है। ये श्रुतिया हैं, सुनी-सुनाई जाती हैं। ये पोथिया है, पढी-पढाई जाती हैं। ये शास्त्र है, इन मे आर्य बनने के लिए आचारादेश है। पढ सुन कर आचरण करने पर ही पोथी का अस्तित्व सार्थक है, आचारहीन को पोथिया पवित्र नही करती, आचार-हीन न पुनन्ति वेदा (मनुस्मृति)

भारत की मान्यतम पोथी वेद है। देश-काल की परिधि के परे जो शाश्वत तत्व पोथियो मे है उसके कारण हर पोथी अखिल मानवता के लिए हैं, किसी साम्प्रदाय विशेष की बपौती वह नही होती। पर, वेद नामक प्राचीनतम पोथी मे तो शाश्वत ही शाश्वत, निरा सनातन तत्व साद्यन्त भरा पडा है क्योकि यह उस ज़मान की पोथी है जब मनुष्य देश, वर्ग, साम्प्रदायो की सीमाओ को या तो जानता नही था, अथवा उन की कट्टरता से अनभिज्ञ था। अत: वेद नामक पोथी जितनी सार्वभौम और सार्वकालिक है वैसी अन्य कोई पोथी नही है।

अपनी इस प्राचीनता के कारण, विभिन्न देशो और साम्प्रदायो की पवित्र पोथियो के रूप मे वेद ही सर्वत्र

विराजमान है। मनु ने 'सर्वं वेदात् प्रसिध्यति' (मनुस्मृति) ठीक ही कहा था। तात्कालिक देश-कालिक बातों को छांट दें तो सब पवित्र पोथियों में, सन्तो, मुनियो, सिद्धों, अर्हतो, ऋषियो, फकीरो, भक्तो की उक्तियो मे वेद मौजूद है। चीन, जापान, फारस, अरब, युनान, रोम, कही भी वैचारिक परम्परा को ले, वहा वेद उपस्थित मिलेगा। सद्भाग्य से भारत में वेद चिन्तन की परम्परा फिर भी काफी कुछ सुरक्षित रह गई है। अत: भारत के वेद से इन सब अन्य पोथियो के तत्वज्ञान को, अनबूझ उक्तियों, बेतुकी कथाओ को, परस्पर विरोधी बातों को, गर्हित लगने वाली घटनाओ को हस्तामलकवत् समझा जा सकता है। ऐसा होने पर विभिन्न सम्प्रदायो और मान्यताओ के पक्षधर अपनी वैचारिक थाती को बेहतर समझ सकेंगे। और तब खुलेगा वास्तविक धर्मसमन्वय का राजमार्ग जिस पर स्वेच्छया सब अनायास आ रहे होंगे। जहा सम्प्रदायों की दूरिया और कटुताए दूर होगी और पुन: अखिल मानवता का अभिन्न स्वरूप उजागर होगा (अ-भिन्न खिल्य, ऋग्वेद)।

अत: वेद-रूप परम गुरु की शरण मे आना आर्यत्व की प्रथम और प्रमुख पहचान है। जो वेदाध्ययन नही करता वह आर्य नही है वेदाध्ययन कैसे हो? वेद की भाषा तक पहुचने के लिए संस्कृताध्ययन अनिवार्य है। अत: जो सस्कृत नही जानता वह वेद नही पढ सकता! वेद के स्वाध्याय के लिए वेद का ऐसा अध्ययन अपेक्षित है कि वेद अध्येता की स्व-सम्पत्ति, निजी वस्तु बन जाए। वेद के अनुवाद वा टीकाएं बाच लेना वेदाध्ययन नहीं है। हर अनुवादक, टीकाकार, भाष्यकार व्याख्याकार ने वेद में जो जितना जैसा समझा वह उतना वैसा मात्र उसकी कृति में है। पर, वेद उससे विराट् और अधिक है। वेद की अनन्तता को कोई एक मस्तिष्क कृत्स्नतया नहीं अधिगत कर सकता। वैज्ञानिक को अब वेद का प्रत्येक शब्द विज्ञानपरक लगने लगा है। विज्ञान की जो गुत्थियां खोले नही खुल पा रही है उन्हें खोलने के लिए देशी-विदेशी वैज्ञानिक वेदों, उपनिषदों, बौद्ध उक्तियों से आशा लगा रहे हैं। आत्मप्रायण को वेद मे साद्यन्त आत्मतत्व का सागोपांग विवेचन दिखाई पड़ता है। इस प्रकार वेद एक ओर भूत-भौतिक ब्रह्माण्ड को, इस लोक को स्पर्श करते है तो दूसरी ओर चेतन तत्व को, परलोक को, पिण्ड को छूते है। वेद अणोर अणीयान् हैं, तो महतो महीयान् भी है। वेद मनुष्य को प्राप्त सर्वश्रेष्ठ पूंजी है, 'न भूतो न भविष्यति'।

वेद का इतना महिमाभाव क्यों है? पोथियां तो ढेरो है। किसी भी पोथी की शाश्वत शिक्षाओं का आचरण मनुष्य के लिए पर्याप्त है, फिर वेद का ही आग्रह क्यों? इसका कुछ समाधान तो ऊपर हो चुका है कि वेद गंगोत्री का, उत्सप्रसूत, पावनातिपावन जल है जब कि अन्य पोथियों में देश-काल का मिश्रण उसे प्रदूषणयुक्त बनाए हुए है। 'काफिर' शब्द सुनते ही राग-द्वेष के कीट मस्तिष्क को उतेजित करने लगते है, पर जब उनके स्थान पर वृत्र, पणि या कोई असुर-दस्यु-रक्ष:पिशाच-वाची पद रख दिया जाए तो बात सहज ग्राह्य हो जाती है कि पणि या काफिर को तो जीने का हक है ही नहीं, उसे तो देखते ही मार देना है, पणिकं जहि, लोक और परलोक को जितनी परिपूर्णता से वेद समेटता है अन्य कोई पोथी नही समेटती। अत: वेदाध्येता के व्यक्तित्व का जितना परिपूर्ण विकास हो सकता है उतना अन्य पोथियों द्वारा अशक्य है।

और यही वेद का वेदत्व अथवा महिमाभाव मुखर होता है। पोथी का 'वेद' नाम तो, शब्द का गौण प्रयोग है। वस्तुत: वेद शब्द का अर्थ है ज्ञान। वेद नामक ज्ञान-विशेष का भाजन होने से पोथी को भी वेद कह दिया गया है। स्पष्ट है कि वेद का वेदत्व वेद नामक ज्ञान है। वेदना, संवेदना, अनुवेदन जैसे शब्दों में भी वेद अंश मौजूद है। वेद 'देव' का विलोम है। वेद से देव बन जाता है। देव सत्य है, जबकि मनुष्य अन्-ऋत है। ऋत को ग्रहण करके उसे सत्य में परिणत करना देवों का कार्य है, जैसे पृथ्वी सूर्य से ताप प्रकाश ऊर्जारूप ऋत को ग्रहण कर शस्यादि सम्पत्ति रूप सत्य को जन्म देती है। पर जो ऋत-उर्जा को ग्रहण ही नहीं कर रहा वह उसे अपने उपयोगार्थ सत्य में परिणत नहीं कर सकता। ऋत

परमात्मा का यह वदरूपी काव्य देखो, यह कभी मरता नही और कभी जीण नही होता। यह सदा एक जैसा ही रहता है। इन मे कभी न्यून वा अधिक नही होता। अत यह सनातन रहा है। इस विषय मे कहा है—

अपूर्वेणेषिता वचः ता वेदन्ति यथायथम्।
ब दन्तीर्यत्र गच्छन्ति तदाहुर्ब्राह्मण महत्॥
अथर्व. 20-8-33

(अ—पूर्वेण एषित वाच) जिससे कोई प्राचीन नही ऐसे परमेश्वर से प्ररित की हुई वाणिया चार वेदरूपी वाणिया है। (ता यथायथ वदन्ति) व वद रूपी वाणिया यथातथ्य रूप से सब ज्ञान बोलती हं। व वाणिया जहा पहुचती हैं। (तत् महद् ब्राह्मण आहु) वह बडा ब्रह्म है ऐसा कहते हैं। अर्थात् वद वाणिया जो अन्तिम ज्ञान कहती है, वही 'महत ब्रह्म' है। यह ज्ञान 'अ-पूर्व' स 'इषित' अर्थात प्रेरित है। न कि यह अपूर्व ने बनाया है। अपूर्व परमात्मा है, क्योकि उस के पूर्व दूसरा कोई नही है। उस के पास यह वदवाणी विद्यमान है। उस वदवाणी को वह बाहर प्रकट करता हैं। और देखिए—

बृहस्पते प्रथम वाचो अग्र यत्प्रैरयत नामधेय दधानाः।
यदेषा श्रेष्ठ यदरिप्रमासोत् प्रेणा तदेषा निहित गुहाविः॥
ऋ. 10-17-7

ह (बृहस्पत) ज्ञानपत! (नामधेय दधाना वाच) प्रत्येक पदाथ को नाम देने वाली वदवाणिया (प्रथम अग्र यत प्रेरयत) प्रथमत अग्रभाग मे जब प्ररित की गई तब (एषा यत् श्रष्ठ अरिप्र) उन मे जो श्रेष्ठ और शत्रु से रक्षण करने वाली वाणी थी (प्रेणा एषा गुहा निहित) प्रेम से बुद्धि मे रखी हुई थी, (तत आवि) वही प्रकट की गई।

वेदवाणी प्रत्येक पदार्थ का नाम रखती है। वह प्रथम अर्थात सृष्टि के प्रथम समय मे प्रकट की गई, उसमे ब्रह्म का वर्णन करने वाली, श्रेष्ठ तत्व का वर्णन करने वाली मन्त्र की वाणी थी, वह बुद्धि के अन्दर गुप्त थी वही प्रकट की गई। सब के हितार्थ प्रकट की गई।

वेद के शब्दो से पदार्थों के नाम आदि समय मे दिए गए थे। यह वेदवाणी बुद्धि मे भी प्रकट की गई। सब लोगो का इस और परलोक मे कल्याण हो इसलिए यह वेदवाणी प्रकट की गई। अत यह वेद रचे नही गये, पर जो बुद्धितत्व मे थे वे सर्वकल्याण के लिए प्रकट किये गए।

ऐसे यह वेद सत्य है, सनातन है, अनादि हैं, शाश्वत हैं, त्रिकालाबाधित सत्यज्ञान देने वाले अपूर्व ग्रन्थ है। इस का मनन करने से इनको गहराई मे उतारा जा सकता है। इनका एक प्रकट या स्थूल अर्थ है दूसरा गुह्य अर्थ है। गुह्य अर्थ ही गहराई मे ले जाने वाला, अथवा गहराई मे पहुचने वाला है। और यही अर्थ मानव का सच्चा कल्याण करने वाला है।

भारद्वाज महर्षि की कथा है कि सौ सौ वर्षों का तीन जन्मो का समय इन्द्र ने भारद्वाज को दिया। फिर भी वे अधिक जन्म ले कर वेद का ही मनन करना चाहते थे। इन्द्र ने पूछा कि इतना इसमे क्या है, तो भारद्वाज ऋषि ने कहा कि—हे इन्द्र! मैंने इन जन्मो मे वेद का ही मनन किया। जितना मेरा मन्त्रो का मनन अधिक होता गया उतनी अधिक गहराई मुझे मन्त्रज्ञान मे मालूम हुई। इस लिए मै अधिक गहराई मे उतरना चाहता हू।

यह है वेदार्थ की गहराई। जो मनन करेगा वह इस गहराई मे पहुचेगा और सत्य आनन्द का भागी होगा। यह आनन्द प्रत्येक आय प्राप्त करे,इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने नियम बनाया है—वेद सब सत्य विद्या के ग्रन्थ है। वेदो का पढना और पढाना, सुनना और सुनाना आर्यो का परम धम है।

इस परम धम का पालन करने वाले अर्थात् वेद का मनन प्रतिदिन करने वाले जितने लोग होंगे वे ही महर्षि जी के सच्चे अनुयायी होंगे।

प्रत्येक आर्य गृह मे वेदो के ग्रन्थ हो, उन के समझने के लिए प्रत्येक आय स्त्री-पुरुष सस्कृत सीखे और प्रतिदिन जितना सम्भव हो, उतना वेद मन्त्रो का मनन किया जाये और वैसा आर्यों का आचरण हो। तब इस भूमण्डल मे स्वर्गीय आनन्द मिल सकता है।

ज्ञान विज्ञान का स्रोत वेद

लेखक—श्री पृथ्वीराज जिज्ञासु एम. ए.
संस्कृत दीनानगर

★
★★

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदो को सब सत्य विद्याओ का पुस्तक माना है। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका मे ऋषिवर लिखते है।"

अत्र चत्वारो वेद विषया सन्ति। विज्ञानकर्मोपासनाज्ञानकाण्ड भेदात् ॥
तत्रादिमो विज्ञान विषयो हि सर्वेभ्यो मुख्योस्ति।
तस्य परमेश्वरादारभ्य तृण पर्य्यन्तपदार्थेषु साक्षात्बोधान्वयत्वात् ॥

ईश्वर से लेकर तृण पर्यन्त सभी पदार्थों का ज्ञान वेदो मे उपलब्ध होता है। ससार का कोई सद्ज्ञान ऐसा नही जो वेदो मे न मिल सके। महर्षि बोध ने अपनी पुस्तक "दयानन्द, दि मैन एण्ड हिज वर्क" मे लिखा है" वेदो मे केवल धर्म ही नही विज्ञान भी है—महर्षि दयानन्द के इस विचार से चौंकने की कोई बात नही है। क्योकि वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। मेरा विचार तो यह है कि वेदो मे विज्ञान की ऐसी बाते भी है, जिनका पता आज के वैज्ञानिको को नही चला है। इस दृष्टि से देखने पर तो यह दीखता है कि वेदो मे निहित ज्ञान के विषय मे अत्युक्ति नही, अपितु अल्पोक्ति से दयानन्द ने काम लिया है। भगवान शकराचार्य जी ने वेदान्त दर्शन का भाष्य करते हुए "शास्त्रयोनित्वात्" सूत्र के भाष्य मे वेद को सब ज्ञानो और विज्ञानो का स्रोत बतलाया है। इसके कई स्थानो पर विदेशी विद्वानो ने भी लिखा है कि वेद मे सम्पूर्ण ज्ञान और विज्ञान का भण्डार भरा पडा है। पाश्चात्य विद्वान् डब्ल्यू डी, वरोन लिखते हैं। "वैदिक धर्म इज ए थरोगली ए साइंनटीफिक रिलीजन, हेयर साईस एण्ड फिलोसफी मीट हैड इन हैड"वास्तव यदि हम वेदो का गहन दृष्टि से एवम् किसी पूर्वाग्रह से ऊपर उठकर स्वाध्याय करे तो हम इस निष्कर्ष पर पहुचेंगे कि ससार मे जितना भी विज्ञान है वह सब वेदो से ही लिया गया है। भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान गणित,ज्योतिष तथा कृषि विज्ञान, राजनीति विज्ञान एवम् शास्त्र इन सबका मूल स्रोत वेदो मे निहित है। पाश्चात्य विद्वान् कहते हैं कि सूर्य मे सात रगो की किरणे हैं। इस बात का सर्व प्रथम न्यूटन ने 16 वी शताब्दी मे आविष्कार किया था, उनसे पूर्व यह बात किसी को विदित नही थी। परन्तु पाश्चात्य विद्वानो एवम उनके मतानुयायी प्राच्य विद्वानो को भी यह जान लेना आवश्यक है कि सूर्य की किरणो के सात रगो का वर्णन और इससे भी अधिक चमत्कार युक्त वर्णन ससार के सर्व प्रथम साहित्य एवम् वेदो मे मिल जाता है। इस की पुष्टि के लिए यहा दो एक उदाहरणो से दिग्दर्शनमान करना ही पर्याप्त होगा।

"सप्तत्वा हरितो रथे वहन्ति देव सर्य। शोचिष्केश विचक्षणं अर्थात् हे मय ! तुमको रथ मे जुडी हुई सात घोडिया (किरणे) ले जा रही है। ऋग्वद 1।50।9

"एको अश्वो वहति सप्तनामा। ऋग्वेद 1।164।8।।

अर्थात् सूर्य को एक घोडा ले जा रहा है, परन्तु उसके सात नाम हैं।

"अव दिवस्तारयन्ति सप्त सूर्यस्य रश्मय। अथर्ववेद 17।10।17।1।

अर्थात्—सूर्य की सात किरणें दिन को उत्पन्न करती हैं। इन वेद मन्त्रों से यह स्पष्ट हो गया है कि सूर्य की सात रंगों की किरणें हैं। क्योंकि संस्कृत साहित्य में सूर्य को "सहस्त्ररश्मि" कहा गया है अतः सूर्य की सात किरणें होना असम्भव है। सात किरणों से अभिप्राय सात रंग की किरणें हैं। सूर्य की किरणों में कौन-कौन से रंग हैं, इसका वर्णन भी छान्दोग्योपनिषद् मे पाया जाता है—।

असौ वा आदित्यः पिंगल एष शुक्ल एष नील एष पीत एष लोहितः। छान्दोग्य 8-6-1

"सूर्य ग्रहण एवम् चन्द्र ग्रहण"

यत्वा सूर्य स्वर्भानुस्तमसा विध्यदासुरः ऋग्वेद 5-40-1

अर्थात्—हे सूर्य! तुमको स्वर्भानु अन्धकार से युक्त करता है। स्वर्भानु असुर है। सूर्य को चन्द्रमा की छाया और चन्द्रमा को पृथ्वी की छाया ढक लेती है, यही छाया असुर है "स्वर्भानु" है। जब चन्द्रमा की छाया सूर्य को ढकती है तब सूर्य ग्रहण होता है और जब पृथ्वी की छाया चन्द्रमा को ढक लेती है तब चन्द्र ग्रहण हुआ करता है। छाया से ढके हुए होने के कारण सूर्य और चन्द्रमा नही चमका करते, यही सूर्य ग्रहण एवम् चन्द्र ग्रहण है। यही वर्णन वेदानुकूल ज्योतिष ग्रन्थों में पाया जाता है। सूर्य सिद्धान्त में लिखा है :—

छादको भास्करस्येन्दुर धस्थो घनवद भवेत्। भूच्छायां प्राङमुखश्चन्द्रो विशत्यस्य भवेद सौ॥

अर्थात्—चन्द्रमा नीचे से बादल के समान सूर्य को ढक लेता है और पूर्व की ओर को पृथ्वी की छाया मे प्रवेश करता है।

वनस्पति विज्ञान में एक प्रश्न है कि पेड़ों एवम् पौधो के पत्ते हरे क्यों होते हैं। इसका उत्तर वेद माता बड़े सुन्दर ढंग से देती है।

पिशंङ्ग प्रापिप्रतियुञ्जते कविः। ऋग्वेद 4-53-2।

अर्थात्—लता तथा पेडो के पत्ते दोनो वर्णों (सूर्य का लाल तथा पृथ्वी का रग कृष्ण वर्ण के मेल से हरे बनते हैं।

सृष्टि विद्या का यदि वेदो से गम्भीर अनुशीलन किया जावे तो गणित और विज्ञान का अनेक रूप मे दर्शन होता है। वेद में आयु के एक प्रकरण मे सृष्टि की आयु का उल्लेख आता है जिसमें युगों की आयु एवम् पूर्ण सृष्टि की आयु का भी संख्याओं में दिग्दर्शन होता है। मन्त्र इस प्रकार है :—

शत तेऽयुतं हायनान द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृण्मः।
इन्द्राग्नी विश्वेदेवास्तेऽनुमन्यताम् हृणीयमानाः॥ अथर्ववेद 8-2-2।

वेद में प्रयुक्त संख्याओं को अंकों में लिखे के क्रम से विपरीत चलना होगा। इस प्रकार हैं :—

चत्वारि	त्रीणि	द्वे	अयुतं	शतं
4	3	2	0000	000

ते हायनान युगे कृण्मः—तेरे वर्ष युग मे विभाजित करता हूं। अर्थात् सृष्टि की आयु की संख्या 4 अरब 32 करोड वर्ष हुई।

अब इसी संख्या को क्रमशः इन्ही द्वे, त्रीणि, चत्वारि इन वेद के पदो से गुणा करते जावें तो उत्तरोत्तर द्वापर, त्रेता एवम् सत्युग की आयु की संख्या ज्ञात हो जाती है।

4, 32,000 × 1 = 4,32,000 कलियुग के वर्ष
4, 32,000 ,,2 ,, 8,64,000 द्वापर के वर्ष
4, 32,000 ,,3 ,,12,96,000 त्रेता के वर्ष
4, 32,000 ,,4 ,,17,28,000 सतयुग के वर्ष

43,20,000

तैतालीस लाख बीस हजार वर्ष एक चतुर्युगी की आयु अत सृष्टि की आयु 71 चतुर्युगी का एक मन्वन्तर और 14 मन्वन्तरों का एक कल्प युग, व ब्राह्मदिन या सृष्टि की आयु होती है। अत. 71 × 14 994 चतुर्युगी और 24 मन्वन्तर की 6 सन्धियो की चतुर्युगी जोडकर एक हजार चतुर्युगी का समय सृष्टि की आयु है। कितना अद्भुत गणित है वेद का।

इसके अतिरिक्त अध्यात्म विज्ञान एवम् मानवता के लिए समस्त उपयोगी ज्ञान वेद के पढने से प्राप्त हो सकता है। परन्तु दुख की बात है कि आज हमारे देशवासी वेद को भी उसी कोटि मे रखते हैं, जिसमें कि अन्य मजहबी किताबो को प्रभु हमें शक्ति दें ताकि हम इस ज्ञान-विज्ञान के स्रोत ईश्वरीय वाणी का सम्पूर्ण विश्व मे प्रचार करे। और कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के जय घोष को साकार कर सकें। इसी मे मानव जाति का कल्याण है।

श्रीकृष्ण क्या थे ?

लेखक—श्री महेन्द्रपाल आर्य राबौर(कुरुक्षेत्र)

श्री कृष्ण जी ने आकर भारत का उद्धार किया।
वैदिक धर्म प्रचार किया .. ..
जन्म हुआ तब भारत पर घनघोर घटाए छाई थी।
छली प्रपंची दुष्ट निकम्मो की हर तरफ बढाई थी।
चक्र-सुदर्शन हाथ मे लेकर दुष्टो का सहार किया ..
अस्त्र-शस्त्र रण विद्या और कुछ योग की शिक्षा लेने को
सन्दिपनी के पास गए सब कुछ अर्पण कर देने को।
आज्ञाकारी रहे, गुरु का आदर और सत्कार किया .....
महाभारत के सूत्रधार बन विपुल युद्ध का बजा दिया।
सत-असत्य का सही विवेचन कर पाण्डवो का पक्ष लिया।
अर्जुन के सतप्त हृदय मे साहस का सचार किया—
अकीर्ति से मृत्यु भली है गीता मे सन्देश दिया।
धर्म अधर्म का विश्लेषण कर सत्य धर्म उपदेश दिया।
'श्याम' योग्य था जो जिसके, उससे वैसा व्यवहार किया—
श्री कृष्ण जी ने आकर भारत का उद्धार किया।

वेद का उपाध्याय वेद ही है

लेखक—श्री वचनपालार्य विद्यावाचस्पति

प्रिय पाठको। वेद के स्वाध्याय से विदित होता है कि वेद का उपाध्याय वेद ही है। इस विषय मे जहा तक ग्रन्थो का सम्बन्ध है उनके अर्थ खोलने के लिए खुलासे 'संक्षिप्त गाइड' तथा प्रश्नोत्तरीय और कुञ्जिया हमे उपलब्ध होती हैं, कही डिक्शनरिया व शब्द कोष है। ठीक है आजकल के वेद के पठन-पाठन की सरल-तर-सरलतम विधिया तथा सरलार्थ भाषा-भाष्य छप रहे है परन्तु वास्तव मे यदि देखा जाए तो वेद का खुलासा वेद ही है, वेद की प्रश्नोत्तरी वेद ही है और वेद की कुञ्जी भी वेद ही है। दूसरे शब्दो मे इसे ही आप यो कहलीजिए कि वेद की डिक्सनरी वेद ही है अर्थात् वेद का शब्द कोष वेद ही है। ऐसा सुना जाता है कि व्याकरण के बिना वेद का ज्ञान नही होता "सत्यमेवत्" किन्तु जरा सोचो तो सही, वेद सब सत्य विद्याओ का भण्डार होने से, व्याकरण की उत्पत्ति भी वेद ही से हुई, अत' वेद का व्याकरण स्वत वेद ही है एतदर्थ यह सर्वथा सत्य है कि वेद का उपाध्याय वेद ही है। सामान्यत' वेद शब्द का अभिप्राय है सत्य ज्ञान से तथा "उपाध्याय" से तात्पर्य है श्रेष्ठ, अध्यापक का, गुरु का और वह है एक मात्र ईश्वर है, इस बात की पुष्टि मे योगशास्त्र के रचयिता महर्षि पतञ्जलि जी लिखते है कि—

सूत्र—स पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात् ॥
(योग सूत्र)

अर्थात् वह ईश्वर ही सबका आदि गुरु है। इसी प्रसग मे महर्षि कणाद जी ने भी अपने वैशेषिक शास्त्र मे लिखा है।

सूत्र—तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम् ॥
वैशेषिक सूत्र 1। 1। 3।

अर्थ—आदि गुरु ईश्वर का कथन होने से वेद का प्रमाणत्व और गुरुत्व स्वत. सिद्ध है इसलिए भी यह उक्ति सत्य है कि "वेद—स्योपाध्याय वेद एव अति" अर्थात् वेद का उपाध्याय वेद ही है। वेद ही अपनी विवेकपूर्ण प्रश्नोत्तर शैली बुद्धि पूर्वक रचना का एक अद्वितीय उदाहरण है, महर्षि कणाद जी लिखते है कि—

सूत्र—बुद्धि पूर्वावाक्य कृतिर्वेद ॥
वैशेषिक 6। 1। 1।

अर्थ—वेद मे वाक्य रचना बुद्धिपूर्वक है। उदाहरणार्थ दूसरे सूत्र मे लिखा है कि—

सूत्र—ब्राह्मणे सज्ञाकर्म सिद्धि लिङ्गम् ॥
वैशेषिक सूत्र 6। 1 2।

इसका अभिप्राय यह है कि ऐतरेय आदि ब्राह्मण ग्रन्थो मे सज्ञापूर्वक कर्मानुष्ठान प्रथम सूत्रोक्त विषय की सिद्धि का प्रतीक है, तात्पर्य यह कि—

वेदो मे कोई वाक्य ऐसा नही जो बुद्धि के विपरीत हो, जैसे-मनुष्य रचना असम्भव आदि दोष युक्त होती है यथा गप्पो के भण्डार पुराणादि अनेक ग्रन्थ है। जो ऐतरेय आदि ब्राह्मण ग्रन्थो मे वेदोक्त पदार्थो की सज्ञा जान कर जिस कर्मानुष्ठान का प्रतिपादन किया है-वह कर्मानुष्ठान और उसका ठीक-ठीक फल इस बात की सिद्धि म—

पहिचान है कि—वदो की रचना बुद्धिपूर्वक है। जैसे—

उदाहरणार्थ—यह सूक्ति—(1) कस्त्वा युनक्ति सत्वा युनक्ति कस्मैत्वा युनक्ति तस्मैत्वा युनक्ति 1।
यजुर्वेद 1। 6।

(2) सूक्ति—कस्त्वा विमुञ्चति सत्वा मिमुञ्चति

कस्मैत्वा विमुञ्चति तस्मैत्वा विमुञ्चति. । यजु. 2। 23 अर्थात् हे जीवात्मन्: तुझ को इस प्रकृति रूप शरीर के साथ कौन सयुक्त करता है। उत्तर मिला कि—वही सृष्टि का रचयिता ईश्वर संयुक्त करता है "प्रश्न" "कस्मै प्रयोजनाय" उत्तरम् तस्मै ब्रह्मा ईश्वर प्राप्ति करणाय" अर्थात् किस प्रयोजन के लिए नियुक्त किया ? इसका उत्तर—उसी आनन्द घन ईश्वर की प्राप्ति कर सकू इस हित कामना से वह जगदीश्वर शरीर रूपी गाड़ी (साधना) के साथ मुझ (साधक) को नियुक्त करता है। अगली सूक्ति मे लिखता है कि—हे जीवात्मन् ! तुझको इस ससार रूप बन्धन से कौन विमुक्त करता है ? उत्तर मिला कि—वही सृष्टि का पालक ईश्वर विमुक्त करता है "स ईश्वर: त्वा कस्मै प्रयोजनाय विमुञ्चति ? उत्तरम्— तस्मै पारब्रह्मप्राप्तिकरणाय अस्मात ससार बन्धात् विमुञ्चति" अर्थात् वह ईश्वर तुझको किस प्रयोजन के लिए ससार बन्धन से मुक्त करता है ? इसका उत्तर यह है कि—उस आनन्दघन महेश की प्राप्ति करने के लिए इस ससार बन्धन से विमुक्त करता है। सज्जनो ! आपने देखा कि इन दो सूक्तियो मे किस प्रकार के गम्भीरतम् प्रश्नो का बुद्धिपूर्वक उत्तर दिया है। इसलिए इस सूत्र की सार्थकता और भी बढ़ जाती है कि-"बुद्धिपूर्वाकवाक्य कृति वेदे" और इन प्रश्नोत्तरो से—यह भी ज्ञात हुआ कि वेद का उपाध्याय वेद ही ही है। इस विषय के प्रतिपादक चारो वेदो मे अनेक मन्त्र पाए जाते है किन्तु हम स्थाली पुलाक न्याय से मन्त्र उद्धृत करेंगे, जो "वेद का उपाध्याय वेद ही है।" इस विषय का स्पष्ट प्रतिपादन करते है—

मन्त्र प्रमाण—प्रश्न न. (1) ओ३म्—कस्य नून-कतमस्या अमृतानांमनामहे चारू देवस्य नामं।

कोनो मह्याअदितये पुनदात्पितरं च दृशेयं मातरं च ॥ऋ.। 24। 1।

अर्थ—अमृतानाम्—अमर देवो में, ',कतयस्य कस्य देवस्य—किस सुखमय देव के, "चारु—सुन्दर नाम का, मनामहे—हम मनन करें ? "क: न:—कौन हमें, "मह्यै अदितये—बड़ी स्वतन्त्रता, बन्धन रहितता के प्रति, "पुन: दात्—फिर देता है और किसकी कृपा से, "मातर च—माता और "पितरं च—पिता को" "दृशेयम्—देखते है ! म. प्र. न. (1) ओ३म्—अग्ने-र्वयं प्रथमस्यामृताना मनामहे चारु देवस्य नामं।

स नो मह्या अदितये पुनर्दात्पितरं च दृशेयं मातरं च ॥ ऋ. 1। 24। 2।

अर्थ—अमृताना प्रथमस्य— अमरो में पहिले "अग्ने: वयम्—तेजस्वी देव परमात्मा के "चारु—सुन्दर नाम का, "मनामहे-हम मनन करे, "स न: मह्यै: अदितये पुन: दात्—वही हमको महती स्वतन्त्रता मे पुन: देता है (और) "मातरं च पितरं च दृशेयम्—जिससे हम माता पिता को देखते है।

प्रथम मन्त्र मे तीन प्रश्न है कि—(1) अमर देवों मे किस सुखमय देव के सुन्दर नाम का हम मनन करें ? (2) कौन हमें फिर बन्धन रहित करता है ? (3) और किसकी महान् कृपा मे हम पुन: माता-पिता को प्राप्त होते वा देखते है।

इन तीन प्रश्नों का उत्तर क्रमश: अगले मन्त्र में दिया है। "अमर देवो में पहिले अग्नि स्वरूप परमात्मा के सुन्दर नाम का हम मनन करें।" यह प्रथम प्रश्न का उत्तर है, वही हमे—महती स्वतन्त्रता प्रदान करता है, ये दूसरे प्रश्न का उत्तर हुआ। और तीसरे प्रश्न का उत्तर यह है कि—उसी तेजस्वी ईश्वर की कृपा से हम माता-पिता को प्राप्त करते व देखते है। आइये अब यजुर्वेद की प्रश्नोत्तर शैली का भी अवलोकन कीजिये—

म. प्र. न (2) ओ३म्—क: स्विदेकाकी चरति कउ स्विज्जायते पुन:।

किं स्विद्धिमस्य भेषजं भूमिरावपन महत् ॥ यजु. 23। 45।

अर्थ—हे विद्वानो ! क: स्विदेकाकी चरति—कौन अकेला विचरता है ? उ—और "क-स्वित् पुन: जायते—कौन पुन:-पुन: उत्पन्न होता है ?" "किं स्वित् हिमस्य भेषजम्—कौन शीत का औषध है ?" "किं उ महत् आवपनम्"—और क्या बडा अच्छे प्रकार सब बीज बोने का आधार है, इस सब को आप कहिये।

म. प्र. उ. न. (2) ओ३म्—सूर्यः एकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः।
अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत् ॥ 23।46 ॥

अर्थ—हे जिज्ञासु पुरुषो ! सूर्य एकाकी चरति—सूर्य लोक अकेला स्वपरिधि में घूमता है, "चन्द्रमा पुनः जायते—आनन्द प्रदाता चन्द्रमा फिर-फिर प्रकाशित या उत्पन्न होता है।

"अग्नि हिमस्य भेषजम् —पावक शीत का औषध है, और "महत् आवपन भूमि—बड़ा अच्छे प्रकार सब बीजो के बोने का आधार "कि जिसमे सब कुछ बोया जाता है ऐसा तुम लोग जानो। यहा प्रथम मन्त्र मे चार प्रश्न हैं इन्ही प्रश्नो का उत्तर अगले मन्त्र मे क्रमशः दिया है—(1) अकेला कौन विचरता है ? (2) पुनः कौन उत्पन्न होता है ? (3) शीत का औषध क्या है ? (4) सब पदार्थ जिसमे उत्पन्न होते हैं, ऐसे बीज बोने का बृहत् क्षेत्र कौन है ? अब इन्ही प्रश्नो के उत्तर सुनिये—(1) सूर्य अपनी परिधि मे अकेला ही विचरता है। (2) चन्द्रमा पुनः सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित हो कर उत्पन्न होता है। (3) शीत का औषध अग्नि है। (4) और पृथ्वी सब पदार्थों के बीज वपन करने का एक मात्र महत् क्षेत्र है।

म. प्र. प्रश्न न (3) ओ३म्—किंस्वित्सूर्य सम-ज्योतिः किं समुद्र समसरः।
कि स्विनत्पृथिव्यै वर्षीयः कस्य मात्रा न विद्यते ॥ 23 । 47 ।

अर्थ—हे विद्वान् ! कि स्वित्सूर्य समज्योति—कौन सूर्य के समान स्व प्रकाश स्वरूप है ?

"कि समुद्र सम सरः—कौन समुद्र के समान ताल है ?" जिसमे जल आते जाते हैं।

"कि स्वित्पृथिव्यै वर्षीयः—कौन पृथ्वी से अधिक बड़ा है ?" "कस्य मात्रा न विद्यते—किसका माप तोल व परिमाण विद्यमान् नही है ?

म.प्र. "उ." न. (3)ओ३म्—ब्रह्म सूर्यसम ज्योति-द्यौः समुद्र समसरः।
इन्द्रः पृथिव्यैवर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते ॥
यजु. 23 । 48 ॥

अर्थ—हे ज्ञानभिलाषि पुरुषो ! तुम "सूर्य सम-ज्योतिः ब्रह्मः—सूर्य के समान स्वप्रकाश स्वरूप सबसे बड़े परमेश्वर को जानो, समुद्र सम सरः द्यौः—समुद्र के समान ताल है, द्युलो-द्युलोक "पृथिव्यैः वर्षीयान इन्द्रः—पृथिवी से बड़ा है सूर्य और "गोस्त मात्रा न विद्यते—वाणी का तो कोई परिमाण विद्यमान नही है।

यहा भी प्रथम मन्त्र मे प्रश्न और दूसरे मन्त्र मे उत्तर विद्यमान है जैसे —पहले मन्त्र मे—

(1) सूर्य के समान स्व प्रकाश स्वरूप कौन है ? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए अगले मन्त्र मे कहा है कि—सूर्य के समान स्वप्रकाश स्वरूप अनन्त सामर्थ्यवान् ईश्वर है। पहले मन्त्र मे दूसरा प्रश्न है कि—(2) समुद्र के समान दूसरा ताल कौन सा है ? अगले मन्त्र मे इसी के उत्तर स्वरूप कहा है कि—समुद्र के समान दूसरा ताल है द्युलोक। तीसरा प्रश्न उद्धृत करते हुए प्रथम मन्त्र मे कहा है कि—(3) पृथ्वी से बड़ा कौन पदार्थ है ? इसी का उत्तर देते हुए दूसरे मन्त्र मे लिखा है—पृथ्वी से बड़ा सूर्य है। और पहिले मन्त्र का चौथा प्रश्न है कि—(4) कौन ऐसी वस्तु है जिस का कि कोई परिमाण नही है ? इसी के उत्तर मे ये सूक्ति पढी गई है कि—"गोस्तु मात्रा न विद्यते" अर्थात् वाणी की मात्रा नही है, इसे ही दूसरे शब्दो मे यो कह लीजिए कि वाणी का कोई माप तोल नही है। अतः वाणी का निरन्तर सदुपयोग करना चाहिए।

आइए अब इसी प्रसग मे सामवेद की पवित्र ऋचाओ का भी स्वध्याय करते चले—

म. प्र (प्रश्न न. 4) ओ३म्—कयानश्चित्र आभुव दूती सदा वृधः सखा। कयाशचिष्ठया वृता ॥
सा 2 । 6।5

अर्थ—हे इन्द्र ! कया—किस रीति से तु, "नः—हमारा, "सखा—मित्र, "आभुवत—होवे ?"

उत्तर—"ऊती—रक्षा से, "कया—किस, "वृता-कर्म सेवावृत्ति से, "चित्र:—विचित्र गुण कर्म स्वभाव

होवे ?" उत्तर—"श्रविष्ठया—श्रद्धा युक्त से, इस प्रकार, "सवावृध:—सर्वदा वृद्धियुक्त होवे । इस एक ही मन्त्र में दो प्रश्न हैं साथ ही जिनका उत्तर भी बड़ी गम्भीरता से परम पुण्या कल्याण कारिणी, भवभय निवारिणी, भव सागरतारिणी पावमानी वेदमाता ने स्वत: ही दे दिया है ।

म. प्र. (प्रश्नोत्तर 5) ओ३म्—कद् प्रचेतसे महेवचो देवाय शस्यते ।

तदिद्ध्यस्य वर्धनम् ॥ सा. 2-12-2 ।

अर्थ—महे-बड़े, प्रचेतसे—ज्ञानी, इन्द्र अर्थात् राजा के लिए, वच:—चेतावनी का वचन, कत्उ—क्यों, शस्यते—कहा जाता है ? उत्तर—हि—क्योंकि (तत्) वह वचन (सावधानी, 'अस्य—इस राजा की, वर्धनम् इत्—वृद्धि कारक ही है । इस ऋचा में एक ही प्रश्न है उस का उत्तर भी बड़े महत्वपूर्ण शब्दों में दिया गया है ।

म. प्र. (प्रश्न नं. 6) ओ३म्—

कस्ते जामिर्जनानामग्ने को दाश्वध्वर: ।

को ह कस्मिन्नसिश्रित: ॥ सा. 15-1-1534 ॥

अर्थ—हे ईश्वर! ते—आपके, जनानाम्—प्रजाजनो का, जामि—बन्धु, क:—कौन है, दाश्वध्वर:—दत्तयज्ञ, क:—कौन है, क:—कौन, ह—प्रसिद्ध, कस्मिन्—किसमें श्रित:—आश्रित, असि—है ? इन प्रश्नो का उत्तर अगले मन्त्र में दिया है ।

म. प्र.(उत्तर नं. 6) ओ३म्—त्वं जामिर्जनाना-मग्नोमित्रोअसि प्रिय: :

सख्या सखीभ्य: इड्य ॥ सा. 15-2-1536 ॥

अर्थ—अग्ने—हे जगदीश्वर, त्वम्—तू, जानानाम्-प्रजाजनों का जामि, बन्धु, प्रिय:—प्यारा, मित्र—मित्र सखा—समाननामा (चेतन होने से, सखीभ्य—मित्रों से, इड्य—स्तुति करने योग्य, असि—है । इस मन्त्र का आध्यात्मिक अर्थ भी प्राय: पूर्वोक्तार्थ के समान ही है ।

इसी विषय का प्रतिपादन करते हुए अथर्ववेद में लिखा है—

म. प्र.(प्रश्न नं.7) ओ३म्

कास्मिन्नङ्गेतिष्ठति भूमिरस्य कस्मिन्नङ्गे तिष्ठ-त्यन्तरिक्षम् ।

कस्मिन्नङ्गे तिष्ठत्याहिता द्यौ: कस्मिन्नङ्गे-तिष्ठत्युत्तरं दिव: ॥

अथर्व. 10-7-3 ॥

अर्थ—अस्यकास्मिन् अङ्गे भूमि—इस के किस अंग में भूमि, तिष्ठति—रहती है, कस्मिनअङ्गे अन्तरिक्ष तिष्ठति—किस अंग में अन्तरिक्ष ठहरा है, कास्मिन् अङ्गे द्यौ: आहिता—किस अंग मे द्युलोक रखा है (और) कस्मिन् अङ्गे दिव: उत्तरम्—किस अंग में द्युलोक के परे का स्थान ठहरा है ।

म प्र. (उत्तर नं. 7) ओ३म्

यस्मिन्स्तब्ध्वा प्रजापति: लोकान्स र्वाधारयत् ।

स्कम्भं तं ब्रूहि कतम: स्विदेव: ॥

अथर्व. 10-7-7 ।

अर्थ—यस्मिन्—जिसमें रह कर 'प्रजापति सर्वान्-लोकान्'— सब लोगों को 'स्तब्ध्वा-स्तम्भन करके, अधारयत्—धारण किया करता है । त स्कम्भ ब्रूहि—वह आधार स्तम्भ है ऐसा तू कह, 'सकतम. स्वितएव'—वह निश्चय करके आनन्दमय ही है । अर्थात् जो सब लोकों को महती शक्ति रूप आधार स्तम्भ हो कर, पृथिवी, अन्तरिक्ष, द्युलोक और उससे परे के सभी लोक लोकान्तरो को धारण करने वाला एक मात्र आनन्द घन सुख स्वरूप ईश्वर है । प्रिय पाठको ! अब आप भली भान्ति समझ गये होंगे कि वास्तव में, वेद का उपाध्याय वेद ही है । वेद का कोई भी स्थल ऐसा नही है कि कोई शका, प्रश्न उठाया हो और उसका उत्तर वा समाधान न करके उसे गोल कर दिया हो, अपितु प्रश्न का उत्तर, शका का समाधान वेदो में विवेक पूर्वक सर्वत्र पाया जाता है । हमारा वेद रूप उपाध्याय किसी का गला नही घोटता, किसी को बाध्य नही करता, किसी के मुख पर ताला नही लगाता है । किसी की बुद्धि एवं विचार शक्ति को कुण्ठित नही करता, किसी को भी अन्धानुकरण करने की आज्ञा नहीं देता और न ही किसी के जीवन को अन्धकार मे फंसा कर नष्ट भ्रष्ट करता है , अपितु वेद तो ज्ञानपूर्वक प्रवचन करने की आज्ञा देता है । शका का समाधान, प्रश्नो

का उत्तर बडी गम्भीरता के साथ समाधान करता है। जैसे उक्त मन्त्रों मे प्रश्नोत्तर दिखाये गए हैं। इससे बुद्धि को विस्तृत विचार शक्ति मिलती है। वेद धूमिल रूप अन्धकार से बचाता, ध्वान्त में मानव जीवन की रक्षा कर आदर्श जीवन का निर्माण करता है, अत: वेद का उपाध्याय वेद ही है।

भद्र पुरुषो आज ससार मे प्रतिदिन एक से एक नये मत को जन्म दिया जा रहा है। परन्तु सारे के सारे सब के शिरोमणि सत्य के बिना शून्य है। तर्क रूप प्राऽविवाक के सामने इनकी जुबान खुलने नही पाती अर्थात् तर्क की कसौटी पर कसने के बाद सब फीके पड जाते है। वास्तविकता यह है कि श्रेष्ठता, सत्यता, वैज्ञानिकता से इन का कोई सम्बन्ध नही 'घटाटोपवत्' बाह्य आडम्बर मात्र है। ईसाई और मुसलमानो के धर्म ग्रंथ बाईबिल और कुरान के विषय मे तो प्रश्न करने वाले जिज्ञासुओ का 'मुख'मजहब में अकल का दखल नही। यह कह कर बन्द कर दिया जाता है। अन्य मतावलम्बी भी 'गुरु वाक्यम् प्रमाणम्' इत्यादि वचन घड़ लेते हैं और अपने बचाव के लिए कहते हैं। 'जाको प्रभु दु:ख दारुण देहिं' वाकी मति पहिले ही हर लेहि। सकल पदार्थ हैं जगमाहि। भाग्यहीन नर पावत नाहि॥ इत्यादि तुलसी, कबीर आदि सन्तो के वचनो का उच्चारण करते और भोले लोगों को बहकाते रहते है तथा इन्ही वचनों पर विश्वास करो यही ईश्वरीय वाणी है, ऐसा कह कर जिज्ञासुओ के मुख बन्द कर दिए जाते हैं और तर्क, शका, समाधानादि को कोई महत्व नही दिया जाता। जिस से कोई विचारशील पुरुष हो उस की भी विचार शक्ति जाती रहे और सदा-सर्वदा उन पाखण्डियों के भ्रम जाल में पड़ा रहे, सारी जिन्दगी भर उन की खुशामद व ताबेदारी करता रहे जीवन भर उन्हीं किल्विषी महा निकम्मों के आधीन व्यतीत करता है। कोई अल्प ज्ञानी मानव भी इन पापात्माओ से छुटकारा पा कर निज जीवन का उद्धार कर सकता है। किन्तु कुसंग में रहते रहते उन के सस्कार इतने दृढ़ हो गए कि वे अच्छी बात सुनने को भी उद्यत नहीं होते। स्वयं नास्तिक और भ्रमित बुद्धि होने से उन को सारा संसार नास्तिक, भ्रम, असार और असत्य प्रतीत होता है। स्वयं अज्ञानी होते हुए भी अपने आप को ज्ञानी हो सिद्ध करते हैं और अन्य विद्वानों को भी अज्ञानी कहते है, परन्तु वेद प्रवक्ता ईश्वर सर्व गुण सम्पन्न अनुपमेय और अनन्त है। अत: वेद स्वत: प्रकाश पुञ्ज हैं। सत्यज्ञान का एक मात्र आधार स्तम्भ हैं। ज्ञान विज्ञान का भण्डार, विवेक पूर्ण तर्क वितर्क का निधि है। एतदर्थ 'वेदस्योपाध्याय वेद एवं अस्ति' अर्थात् वेद का उपाध्याय वेद ही है।

यह सब सुन सब के शान्त चित्त में एक लहर सी दौड़ पड़ी और जय,जय की ध्वनि से आकाश गुञ्जायमान हो उठा कि—

वेदस्योपाध्याय वेद एव अस्ति, वेदस्योपाध्याय वेद एव अस्ति, वेद स्योपाध्याय वेद एव अस्ति'।

अर्थात् वेद का उपाध्याय वेद ही है। वेद का उपाध्याय वेद ही है। फिर सभी मिल कर बोल उठे—

1—जो बोले सो अभय-वैदिक धर्म की जय।

2—जगद् गुरु विरजानन्द की जय॥

3—गुरुवर दयानन्द की जय॥।

॥इत्योऽम् शुभम्॥

(32 पृष्ठ का शेष)

नही जहां संस्कृत और वेद नही। जहा सस्कृत और वेद हैं वहां ही वास्तविक आर्य समाज है, नाम चाहे कुछ भी हो। पत्तो को धोने से वृक्ष को पोषण नहीं मिलता। धर्म वृक्ष की जड वेद है। धर्म की रक्षा है। वेद नही तो धर्म नहीं। धर्म पंगु है, बलवान् कन्धे उसे ढोते हैं। वेद भी पंगु है, बलवान् कधों पर ही वह विराजता है।

गांधी के निधन के बाद गांधी चिन्तन की अपेक्षा देख कर विनोबा ने वेदना और व्यंग्य में कहा था कि हम लोग (गांधीवादी) गांधी जी की विधवाएं है। वेद और दयानन्द की उपेक्षा के माहौल में ऐसा लगता है कि मानो, हम लोग (वेदाध्यायी, वेदानुरागी) भी वेद और दयानन्द की विधवाए हो। दयानन्द के नाम पर केवल सस्कृत, वेद और आर्यत्व जैसी दिव्य उदात्त बातें शोभा देती है। सात समुद्र पार की आग्ली भाषा को सनाथ करने को तो और ढरों लालायित हैं। समाज सुधार करने को उतावले और बहुत है। पर वेद का काम तो आर्यत्व का महत्व जानने वालो को ही करना है। देर आयद दुरुस्त आयद ही सही सर्वधर्मान् परित्यज्य, वेद ही की शरण जाने में आर्य समाज का गौरव है,यही''आर्य मर्यादा'' है। प्रत्येक आर्य समाज को सस्कृत-वेद की पाठशाला बन जाना चाहिए। काश, इस धरती पर ऐसी कुछ तो आर्य समाजें होती।

टैलीफोन 74250 पं. पी..जे.एल 55

वर्ष 18 अंक 23, 23 भाद्रपद सम्वत् 2043 तदानुसार 7 सितम्बर 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे(वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

आततायी आतंकवादी को शीशे की गोली से बीन्ध दें

ले.—श्री सोमपाल जी शास्त्री
वेद मन्दिर ज्वालापुर हरिद्वार

✻

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम् ।
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा ॥

अथर्व. कां सू. 16 मं. 4॥

(यदि) यदि (नः) हमारी (गाम्) गाय को (हंसि)मारता है । (यदि अश्वम्) यदि अश्व को मारता है (यदि पूरुषम्) यदि पुरुष को मारता है (तं त्वा) उस तुझ आततायी को (सीसेन) सीसे की गोली से (विध्यामः) हम बींध देते हैं । (यथा) जिससे तू (नः) हमारे (अवीरहा) वीरों का वध न करने वाला (असः) होवे ।

आज मेरे राष्ट्र का हर तरह से हनन किया जा रहा है, राष्ट्र पर चारों ओर से असुरों ने आक्रमण कर दिया है । हर तरह से असुर मेरे राष्ट्र को नोच लेना चाह रहे हैं । कोई मेरे राष्ट्र की पृथिवी को बांट लेने की बात करके इसकी अखण्डता का हनन करना चाह रहा है । कोई गाय सदृश उपकारी पशुओं का हनन कर रहा है, ताकि मेरा राष्ट्र बल रहित एवं दुग्ध व धन-धान्य से वंचित रह कर पतन के गहन गर्त में गिर जाए । इतना ही नहीं यह असुरों का आक्रमण मेरे राष्ट्र सैनिकों के सुरक्षा साधनों तक भी हुआ है, मेरे राष्ट्र सैनिकों के हथियारों को ध्वस्त करने का प्रयास किया जा रहा है ।

यह असुर शक्तियां मेरे राष्ट्र के अश्वों को समाप्त करने पर भी तुली हैं, यह शक्तियां मेरे राष्ट्र की द्रुत संचार व्यवस्था को भी नष्ट-भ्रष्ट कर देना चाह रही हैं, जिससे सम्पूर्ण राष्ट्र में व्याप्त अश्व की भान्ति द्रुत-संचार व्यवस्था पंगु हो जाए तथा असुरों को अपने पाप कर्म करने का अवसर मिल जाए । यह घृणित चाल यहीं तक सीमित नहीं है, सर्वाधिक शोचनीय विषय तो यह है कि मेरे राष्ट्र में बसने वाले सभ्य पुरुषों पर भी नित्य प्राण घातक हमला किया जा रहा है, राष्ट्र-हित में सर्वस्व न्योछावर करने को उद्यत वीर, धीर पुरुषों का रक्त बहाया जा रहा है । कितने ही निर्दोष, निष्पाप, राष्ट्र भक्त, सुशील, सभ्य, सुसंस्कृत भद्र पुरुषों के रक्त से ये असुर अपने आपको नित्य-कलंकित कर रहे हैं । चारों ओर त्राहि-त्राहि मची है, अब तो यह घृणित कृत्य असह्य ही हो उठा है, राष्ट्रभक्त भद्र जनता अपने प्राणों की सुरक्षा की प्रत्याशा में इतस्ततः पलायन करती फिर रही है । इतना अनर्थ होने पर भी शासकों को कुछ अवगत ही नहीं हो पा रहा है कि राष्ट्र में असुरों का साम्राज्य किस चरम सीमा तक पहुंच गया है ।

आज मै देख रहा हूं कि असुर प्रवृत्तियां मेरे राष्ट्र को पतन की ओर ले जा रही हैं । कहीं राष्ट्र-द्रोह है, कहीं मानव रक्त बहाया जा रहा है, कहीं अविश्वास की भावना है, कहीं स्वार्थ-वृत्ति है, कहीं एक दूसरे को नीचा दिखाने की बेढ़गी चालें हैं । लेकिन इन्हें समझ लिया है, मैं इनसे सख्ती के साथ निपटूंगा मै अपने राष्ट्र में किसी भी निर्दोष की हत्या सहन नहीं कर सकता,मैं मानव रक्त को सड़कों, गलियारों, बाजारों में प्रवाहित होता नहीं देख सकता । मैं चाहता हूं कि किसी भी निर्दोष का एक कतरा रक्त भी धरती मां के वक्ष-स्थल पर न पड़े । क्या तुम जानते नहीं हो ? मां के वक्ष पर उसी के पुत्र का रक्त गिरने से मां पर क्या बीतेगी ? क्या तुम्हें मां के उपकार याद नहीं है ? जब तुम्हारा एक भी आंसू आंखों से निकलने को होता था, तब तुम्हारी मां क्या कुछ करने को उद्यत नहीं हो जाती थी ? उस मां को मत सताओ, उसकी ममता का—ध्यान करो ।

ऐ राष्ट्र द्रोह से युक्त असुर प्रवृत्ति के हत्यारों, मै तुम्हें अपने राष्ट्र से खदेड़ कर ही दम लूंगा । मैं तुम्हें अच्छी तरह पहचान गया हूं । अब मै तुम्हारा सर्वनाश ही करूंगा । मै तुम्हें तुम्हारे पुत्र,पौत्रों तक से रहित कर दूंगा, मै तुम पर प्राण-घातक शस्त्रों से वार करूंगा, सीसे की गोली से छलनी कर दूंगा, बन्दी बना कर कारागार में डालूंगा, तुम्हें ताड़ित करूंगा ऐ राष्ट्र-द्रोह के पंक में स्वयं को कलंकित करने वाले असुरो, तुम शीघ्र ही मेरे राष्ट्र से पलायन कर जाओ किन्ही पर्वत मालाओं में जाओ, वहां जाकर अपने आपको समाप्त कर दो । गहन वनों में जाकर वृक्षों से टकराओ । कुछ भी करो लेकिन मेरी धरती मां को घृणित कृत्यों से कलंकित न करो । मेरे राष्ट्र को अशान्ति, दुःख, दारिद्रय, कलह, वैमनस्य, विद्रोह का अड्डा मत बनाओ । मेरा मन राष्ट्र भावों से ओत-प्रोत है । राष्ट्र देवी पर मै तथा मेरे राष्ट्र के निवासी अपना सर्वस्व न्योछावर करने को उद्यत हैं । राष्ट्र को सशक्त एवं उन्नत करने के लिए मैं सर्वस्व बलिदान के पथ पर बढ़ना चाहता हूं । मैं चाहता हूं कि मेरे राष्ट्र के सभी निवासी पूर्ण राष्ट्र-भक्त हों, परस्पर मित्र-भाव से वर्तते हों, जिससे मेरे राष्ट्र में सुख और शान्ति का साम्राज्य हो ।

—✦✦—

जन्म-मरण की उलझन—९

भौतिक पदार्थ नश्वर हैं

लेखक—प्रा श्री भद्रसेन जी होशियारपुर

(27 जुलाई से आगे)

मैं आज ही उस की हत्या के प्रायश्चित के लिए सब के सामने आत्मदाह करूंगा। वैसे तो मेरे पुत्र का खो जाना, मेरे पापो का ही परिणाम है और हम दोनो पति पत्नी को आज पता चला है, कि किसी पुत्र विहीन का क्या हाल होता है, पर भोज की इस हत्या के षड्यन्त्र से तो मैं पूरी तरह से नंगा हो गया हूं, कि मैंने स्वार्थ और लोभवश कितना बडा पाप कमाया है। आत्म-दाह के अतिरिक्त मेरे लिए मुंह छिपाने का कोई रास्ता नही है। जनता जाने और उसका राज्य जाने, कि इस का अब क्या होगा, पर मैंने तो इस 'पाप के बाप' को छोड दिया है।

मैं सूर्योदय के साथ ही सब के सामने अग्नि मे प्रवेश करूंगा। आप मुझ पर दया करके चिता का प्रबन्ध करा दीजिए, जिससे मैं अपने पापो का कुछ प्रायश्चित कर सकूं।

मुञ्ज ऐसा कहते-कहते कुछ देर के लिए मौन हो गया और फिर बडे गम्भीर ढंग से कहने लगा। मन्त्री जी यदि अब भी किसी प्रकार से कही से भोज आ जाए, तो मैं चाहे उस के सामने मुंह दिखाने योग्य नही हूं, फिर भी बेशर्म की तरह एक बार मे उसके सामने जाऊंगा और उस के पैरो मे पड कर क्षमा मांगूंगा, कि मैं चाहे जीवित रहने योग्य नही हूं, फिर भी वह मुझे एक जीवनदान दे दे। जिस से मैं जीवित रह कर अपने पाप सब को बता सकूं, तथा प्रायश्चित के रूप मे साधु वेश धारण करके जहां आत्म सुधार का प्रयास करूंगा, वहां सारी दोपहर रास्तो पर झाड़ू लगाया करूंगा। ऐसा कहते-कहते मुञ्ज सिर पत्थर पटक कर रोने लगा और एकदम बेसुध हो गया। कुछ देर बाद होश मे आने पर मुञ्ज गिड-गिडा कर मन्त्री को कहने लगा, किसी तरह एक बार मुझे भोज से मिला दो और फिर रोते-रोते बेसुध हो गया।

मन्त्री ने मुञ्ज की इस विह्वलता-पूर्ण स्थिति से दुःखी हो कर मुञ्ज के होश मे आने पर उसे सही स्थिति बता दी। तब विलाप करता हुआ मुञ्ज नंगे पैरो मन्त्री के साथ निर्दिष्ट स्थान पर गया और भोज के पैरो मे पड कर अपने पाप के लिए क्षमा मांगी। प्रात भोज का राज्याभिषेक कराया, साधु का वेश धारण कर के प्रायश्चित के लिए स्वयं वन की राह ली।

इस कथानक को पूर्ण करते हुए महात्मा जी ने कहा—हम अपने चारो ओर की भौतिक चीजो को नष्ट होते हुए देखते हैं, फिर भी इन नाशवान, यहीं रहने वाली चीजो के लिए इतनी हेरा-फेरी, बेईमानी करते हैं। दुःख की बात तो यह है कि और क्षत्रो की तो बात ही क्या? आज हम ने धर्म के क्षत्र को भी व्यापार का धन्धा और अड्डा बना लिया है। जो धर्म सब के भले के लिए सब को आपस मे जोडने का काम करता था। आज वहां अपने और पराए के आधार पर घृणा, ईर्ष्या, द्वेष की आग को हवा दी जा रही है, पंजाब का वातावरण इस का ताजा उदाहरण है। कर्मकाण्ड का प्रदर्शन ही धर्म का मुख्य मर्म बन कर सामने आ रहा है, तभी तो आज अधिकतर धर्म-कर्म, दान पुण्य पापो को छिपाने के लिए या दूसरो की आंखो मे धूल झोंकने के लिए ही करते हैं। तभी तो नत्था सिंह ने लिखा है—

'बांटता है कम्बल, चमडी
लोगोंकी उधेड करके।'

हम अपने प्रिय शास्त्रो का पाठ करते हुए बार बार कहते है—'जो जस करहि, तस फल चाखा' 'जो जैसा बीज बता है—वही वैसा फल प्राप्त करता है, संसार मे कोई "बोय पेड बबूल के आम कहां से खाय' के सिद्धान्त का उल्लंघन नही कर सकता। जो जैसा करता है, उस को वैसा ही फल हर स्थिति मे भोगना पडता है। तब किसी से छल-कपट और अन्याय का व्यवहार करने का क्या लाभ? भारतीय संस्कृति के मूल आधार वेद स्पष्ट शब्दो मे चेतावनी देते हैं, कि—

किल्बिषमत्र नाधारोऽस्ति न
मन्मिश्रैः समस्मान एति।
अनूम पात्र निहित न एतत्
पक्तार पक्वः पुनराविशाति।
अथर्व 13,3,38

कर्मफल रूपी पात्र—व्यवस्था पूर्ण है, इस से बचने का इस मे कोई छिद्र नही, न ही किसी के सहारे इस से बच सकते हैं और न ही मित्र, बन्धु इस मे भागीदार बन सकते हैं, जो कर्म करता है, यह पक कर उसी के पास ही जाता है। ऐसे विचारो के आधार पर भारतीय संस्कृति की महत्ता को सामने रख कर इस पर गर्व करना एक अच्छी बात है, पर विचारणीय बात तो यह है, कि उस के प्रति श्रद्धा और विश्वास रखते हुए हम उसका कितना पालन करते है, क्योंकि भारतीय संस्कृति का मूल तत्व कर्म फल की व्यवस्था ही है और अन्य बात तो उस की व्याख्या तथा सहायक रूप मे ही हैं। हम अपनी संस्कृति के अनुसार जो रत्त नाग कापका—सदृश वचनो का कीर्तन, पाठ तो खूब करते है, पर इस का प्रभाव हमारे जीवन मे बहुत कम ही दिखाई देता है। हमारी स्थिति उस साधु जैसी ही है, जिस के सम्बन्ध मे कहते हैं, कि—

एक व्यक्ति किसी अच्छे खासे डेरे का महन्त था और उसको दुनियावी चीजें जोडने का बडा शौक था। वह पढने-लिखने तथा ध्यान, सत्संग से सदा दूर रहता था। उसने अपने इस शौक को खूब पूरा किया। धीरे धीरे महन्त जी बूढे होते गए। एक बार वह महन्त इतना अधिक बीमार हुआ, कि बचने की कोई आशा न रही तथा एक दिन सत्संगियो और चेलों को रोते बिलखते छोड कर —

इस दुनिया से कूच कर गया।
उस की अन्तिम—

क्रियाओ से निवृत्त होने के बाद बडे चेले (उत्तराधिकारी) ने डेरे की एक-एक चीज को सम्भालना शुरू किया और सारी चीजें तो मिल गईं, पर गुरु जी के पास जो कुछ तोले शुद्ध सोना था, वह नही मिला। सोचते-सोचते ध्यान आया, जिन दिनो गुरु जी बीमार थे, उन दिनो उन्होने एक बार सुनार को बुलाया था। शायद उस से कुछ पता चल जाए, यह सोच कर उस ने एक दिन एकान्त में सुनार से पूछा, उस ने उत्तर दिया, हां, उन के पास बहुत बढिया सोना था। उन्होंने मुझ से उस की बहुत छोटी-छोटी डलियां बनवाई थी। तब सोचने पर ध्यान आया, कि गुरु जी अन्तिम दिनो बडे चाव से शुद्ध देसी घी का हलवा बन-वाया करते थे और वे उसको सदा एकान्त मे ही खाया करते थे। हो न हो वे हलवा इसी लिए बनवाया करते हो, कि जिस से इस के साथ सोने के वे टुकडे आराम से निगले जा सकें। हो सकता है उन्होंने सोचा होगा, यदि डेरे के मकान, वस्त्र आदि मेरे साथ न भी गए, तो कम से कम यह सोना तो इस तरह साथ चला जाएगा।

यही कुछ स्थिति और व्यवहार अधिकतर हम सब का है। तभी तो आए दिन समाचार पत्रो मे भ्रष्टाचार, गबन की घटनायें छपती रहती हैं। इन से यही अवगत होता है, कि जिस को कोई कुर्सी या पद किसी प्रकार से मिल जाता है, तो वह एक ही बार सारी कसर पूरी करने लग जाता है। जनता के वोटो से कुछ समय के लिए चुने जाने वाले प्रतिनिधियो मे से अनेको ऐसे है या थे, जिन्होने कौन सा भ्रष्टाचार नही किया? इन के व्यवहारो से ऐसा प्रतीत होता है कि यह अपने से ऊपर किसी को समझते ही नहीं और न ही किसी विधान को अपने लिए मानते है या थे। इन के लिए सब कुछ वैध था या है, तभी तो गद्दियो को सदा हथियाये रखने के लिए चुनाव आदि मे ये क्या कुछ नही करते? आए दिन कोई न कोई भाण्डा (जांच रिपोर्ट) चौराहे पर फूटता रहता है। यह तो अटल नियम है, कि 'अहू कारया सो मारया' पर आज हम सब की प्राय. यही स्थिति है, कि 'सामान सौ बरस का, पल की खबर नहीं' इसीलिए ही वेद ने पहले से ही सावधान करते हुए कहा है—'अश्वत्थे वो निषदनम्—तुम्हारा (हमारा) बसेरा इस चलायमान जगत् मे है।

सर्वप्रिय जी ने एक उपसंहार भरी दृष्टि चारो ओर डालते हुए कहा, आज हमने मन्त्र के प्रथम चरण पर विचार किया है।

(क्रमश)

सम्पादकीय—

कन्या गुरुकुल देहरादून

31 अगस्त को आर्य विद्या सभा की एक बैठक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में हुई थी। उसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से मेरे अतिरिक्त सभा की वरिष्ठ उप-प्रधान श्रीमती कमला आर्या, महामन्त्री श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा, मन्त्री श्री सरदारी लाल आर्य रत्न, श्री अश्विनी कुमार एडवोकेट, श्री ओमप्रकाश पाशो, वेद प्रचार अधिष्ठाता, श्री ऋषिपाल सिंह एडवोकेट आर्य वीर दल के अधिष्ठाता, श्री आशानन्द जी आर्य, अधिष्ठाता साहित्य विभाग कुमारी विमला छाबड़ा वरिष्ठ अन्तरंग सदस्य श्री केवल कृष्ण पुरी, श्री रामनाथ जी शर्मा श्री राजेन्द्र दीवान व गुरुकुल कांगड़ी के विख्यात स्नातक श्री प. सत्यदेव विद्यालंकार भी इस में सम्मलित हुए थे इनके अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ जी मरवाह कन्या गुरुकुल देहरादून के अधिष्ठाता श्री राममूर्ति जी केला और देहली आर्य प्रतिनिधि सभा के भू. पू. प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा भी सम्मलित हुए थे।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री आर सी शर्मा और उपकुलपति आचार्य रामप्रसाद जी और कन्या गुरुकुल देहरादून की की आचार्य श्रीमती दमयन्ती कपूर भी इसमें सम्मलित हुई थी।

विद्या सभा में गुरुकुल कांगड़ी और कन्या गुरुकुल देहरादून की समस्याओं पर विचार किया गया गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी में जो स्थिति पैदा हो गई है उसे ध्यान में रखते हुए भावी कार्यक्रम का भी निर्णय लिया गया है। विद्या सभा के इस अधिवेशन का रुकवाने के लिए डा हरि प्रकाश की ओर से दो दिन पहले हरिद्वार के न्यायालय में एक याचिका दी गई थी कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के विरुद्ध निषेधाज्ञा जारी की जाए और उन्हें गुरुकुल में आर्य विद्या सभा की बैठक करने से रोका जाए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के विधि मन्त्री श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा और वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री ऋषिपाल सिंह जी ने सभा की ओर से इस याचिका का विरोध किया और बताया कि यह आर्य विद्या सभा ही वास्तविक सभा है जो गुरुकुल कांगड़ी और उससे सम्बन्धित सब संस्थाओं का प्रबन्ध करती है। माननीय न्यायाधीश ने दोनों पक्षों की बात सुनने के पश्चात् डा. हरिप्रकाश की याचिका रद्द कर दी और आर्य विद्या सभा को अपनी बैठक करने की अनुमति दे दी। इस सन्दर्भ में यह भी बता देना चाहता हूं कि जो समान्तर विद्या सभा बनाई गई है उसके विरुद्ध जालन्धर के न्यायाधीश ने अपना यह निर्णय देदिया है कि यही सभा वैध है जिसे पूर्व से ही गुरुकुल कांगड़ी और उससे सम्बन्धित संस्थाओं का प्रबन्ध करने का अधिकार है। इस प्रकार जिस विद्या सभा के चौधरी डा हरिप्रकाश बने हुए हैं उसका अब कोई कानूनी अस्तित्व नहीं है इस प्रकार गुरुकुल कांगड़ी और उससे सम्बन्धित संस्थाओं में किसी प्रकार का हस्तक्षेप करना अवैधानिक होगा और जो भी व्यक्ति उनके कहने पर कोई भी कार्यवाही करेगा वह न्यायालय की मान हानि का दोषी समझा जाएगा।

आर्य विद्या सभा की बैठक समाप्त करने के पश्चात् कई सदस्य देहरादून चले गए ताकि अपनी दूसरी विख्यात संस्था कन्या गुरुकुल को भी देख सकें। कन्या गुरुकुल की आचार्य श्रीमती दमयन्ती कपूर ने उन्हें सारा गुरुकुल दिखाया और साथ ही अपनी समस्याएं भी विद्या सभा के सदस्यों के सामने रखी। कन्या गुरुकुल की कन्याओं ने अपना जो सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया उससे सदस्य बहुत अधिक प्रभावित हुए। उन सबका यह एक मत था कि आर्य समाज की शिक्षा संस्थाओं में कन्या गुरुकुल देहरादून एक अत्यन्त सफल प्रशंसनीय और आदर्श संस्था है। इसको हमें प्रत्येक प्रकार से सहायता करनी चाहिए। सब सदस्य गुरुकुल की छात्राओं के कार्यक्रम से इतने अधिक प्रभावित हुए कि मोगा के श्री केवल कृष्ण पुरी ने वह सब कुछ देख कर अपनी ओर से कन्या गुरुकुल को पांच हजार रुपये का दान दिया। इस गुरुकुल की समस्याएं बहुत अधिक हैं उनके लिए बहुत अधिक धन की आवश्यकता है उसके भवन पुराने हैं। खण्डर बनते जा रहे हैं यदि समय पर उन्हे ठीक कराने का प्रयास न किया गया तो किसी भी समय वहा कोई दुर्घटना भी हो सकती है। इस सारी स्थिति को देखते हुए और प्रतिनिधि सभा के जो अधिकारी वहा बैठे थे उन्होंने आपस मे विचार-विमर्श के पश्चात 50 हजार रुपया कन्या गुरुकुल को देने की घोषणा की। इस सन्दर्भ मे यह भी बता देना चाहता हू कि कि इससे पहले भी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब कन्या गुरुकुल को 50 हजार रुपये की सहायता दे चुकी है इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि कन्या गुरुकुल और दूसरी संस्थाओ को कौन सी सभा किसी सकट मे सहायक हो सकती है। मै पजाब की सब आर्य समाजो से यह निवेदन करना चाहता हू कि वह भी कन्या गुरुकुल देहरादून की यथा सम्भव सहायता करें।

इस गुरुकुल मे लडकियो को जो शिक्षा दी जाती है उसका स्तर बहुत ऊचा है और वहा कई उच्च परिवारो की लडकिया भी शिक्षा प्राप्त करने आती है। इसलिए जो लोग चाहते है कि उनकी बच्चिया भारतीय वातावरण मे शिक्षा प्राप्त कर उन्हे अपनी बच्चियो को इस गुरुकुल मे भेजना चाहिए।

—वीरेन्द्र

फतेहगढ़ चूड़ियां के पीड़ित भाई और बहिनें

फतेहगढ़ चूड़ियां पंजाब का एक बहुत छोटा सा कस्बा है परन्तु वहां उग्रवादियों की गोलियों के [illegible] व्यक्ति शिकार हुए हैं। वहां आर्य समाज भी सक्रिय है और उसका एक मन्दिर भी बना हुआ है इसलिए सारी स्थिति को देखने के लिए मैं और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री श्री सरदारीलाल जी 23 अगस्त को [illegible] वहां [illegible] जो कुछ देखा और सुना उसे सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। किसी का भाई मार दिया गया। किसी का बेटा मार दिया गया। उस कस्बे के प्रमुख व्यक्ति आर्य समाज मन्दिर में इकट्ठे हो गए और उन्होंने मुझे अपनी [illegible] हृदय विदारक कहानी सुनाई। पंजाब सरकार उन सिखो की सहायता करती है जो दंगा पीड़ित है और दूसरे प्रान्तो मे आते है, परन्तु जो पंजाब के उग्रवादियो की गोलियो का शिकार होते हैं जिनके परिवार अनाथ हो गए हैं घर उजड जाते हैं उनकी सरकार कोई सहायता नही करती। वहा मुझ कुछ महिलाए भी मिली जो बेचारी आज बिल्कुल निस्सहाय है मैंने उन सब को आर्य समाज की ओर से पांच पांच हजार रुपए की सहायता देने की घोषणा वहीं की थी इसलिए अब उनके लिए रुपया इकट्ठा होना चाहिए। मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती का आभारी हू कि मेरी प्रार्थना पर उन्होंने पांच हजार रुपया भेज दिया है। पंजाब छोडकर जो व्यक्ति दिल्ली गए हुए हैं सार्वदेशिक सभा वहा उनकी भी सहायता कर रही है। इसलिए यह रुपया हमने पंजाब में जमा करना है। मैं पंजाब की सब आर्य समाजो से यह निवेदन करना चाहता हू कि उग्रवादियो द्वारा पीड़ित बहनो और भाईयो की सहायता के लिए वह अधिक से अधिक रुपया जमा करें। फतेहगढ़ चूडियां के बाद हम दूसरे स्थानो पर भी जाकर अपने पीड़ित बहनो और भाईयो की सहायता करना चाहते हैं। उसके लिए बहुत अधिक धन की आवश्यकता होगी। आशा है पंजाब के आर्य समाजों इस ओर ध्यान देंगे और सभा की इस कार्य मे सहायता करेंगे।

—वीरेन्द्र

आर्य समाज और हिन्दू समाज

सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी की नई लेख माला

आर्य समाज और हिन्दू समाज इस शीर्षक से श्री वीरेन्द्र जी 'आर्य मर्यादा के आगामी अंक से एक नई लेख माला प्रारम्भ कर रहे हैं। जिस में देश की वर्तमान समस्याओं पर प्रकाश डाला जाएगा। आर्य समाजों के अधिकारी गण इसके द्वारा आर्य समाज के दृष्टिकोण का प्रचार कर सकते हैं।

—व्यवस्थापक

आज हम कहां खड़े हैं–४

आर्य समाज का धर्म पक्ष

प्रामाण्यवाद

ले—श्री पण्डित सत्यदेव जी विद्यालंकार
शान्ति भवन 145।4 सेंट्रल टाऊन जालन्धर

(10 अगस्त से आगे)

कल्माष ग्रीव —श्री दयानन्द जी—हरित रग वाले वृक्षादि ग्रीवा के समान।

श्री क्षमकरण जी—चितकबरे या काले गले वाले साप (तत्समान व्यूह)।

श्री वेदानन्द जी—विचित्र ग्राहक शक्ति वाला प्रभु।

श्री बुद्धदेव जी—रग-बिरगे वनस्पति जिसके ग्रीवा रूप है।

श्री मनोहर जी—रग बिरगी ग्रीवा वाले वृक्षो की तरह।

श्वित्र —श्री दयानन्द जी—ज्ञान मय।

श्री क्षम करण जी—श्वेत वर्ण वाल साप।

श्री वदानन्द जी—गति दकर रक्षा करने वाला।

श्री बुद्धदेव जी—श्वेत शुभ्र ज्योतिर्मय।

श्री मनोहर जी—प्रगति सहित करते हुए प्राणिमात्र।

मित्रस्य —स्वामी दयानन्द जी—रागद्वेष रहित मनुष्य, सूर्य लोक और प्राण।

श्री मीमासक जी—मित्र भाव वाला उपासक।

श्री वेदानन्द जी—प्राण, सूर्य तथा सर्व स्नेही मनुष्य।

श्री बुद्धदेव जी—मित्र।

श्री मनोहर जी—मित्र के समान मित्रता, समानता और हितात्मता।

भर्ग —स्वामी दयानन्द जी शुद्ध स्वरूप। सब दु खो का नाशक तेज स्वरूप। सब क्लेशो को भस्म करने हारा पवित्र और शुद्ध स्वरूप।

श्री मीमासक जी—प्रकाश स्वरूप।

श्री बुद्धदेव जी—शुद्ध विज्ञान स्वरूप

श्री मनोहर जी—पापो को भस्म कर के आनन्द देने वाला तेज।

शिव सकल्प मन्त्र —

दैवम्—स्वा दयानन्द जी—आत्मा में रहने वाला वा जीवात्मा का साधन।

स्वामी वेदानन्द जी—दिव्य शक्ति से युक्त।

सुप्तस्यएति-स्वामी दयानन्द जी—सोते हुए भीतर अन्त करण मे जाता है।

स्वामी वेदानन्द जी—सुप्त अवस्था मे भी दूर दूर भागता है।

अमृतेन—स्वामी दयानन्द जी—नाश रहित परमात्मा के साथ युक्त होने वाले मन से।

जब योग विद्या द्वारा मन का ईश्वर से सम्बन्ध होता है—उस समय।

स्वामी वेदानन्द जी—अमर मन से।

यजु 23-56 मन्त्र —

श्वावित् कुरू पिशङ्गिला—स्वामी दयानन्द जी सही किए हुए खेती आदि अवयवो का नाश करती है।

स्वामी वदानन्द जी—वृद्धि को प्राप्त होकर—ससारावस्थापन्न होकर कार्यो के रूपो को प्रगट करती है।

शश आस्कन्द मर्षति .—स्वामी दयानन्द जी—खरहा के तुल्य वेग युक्त, कृषि आदि मे खरखराने वाला वायु अच्छे प्रकार से कूद के चलने अर्थात् एक पदार्थ से दूसरे पदार्थ को शीघ्र प्राप्त होता है।

स्वामी वेदानन्द जी—चतुर ज्ञानी पुरुष प्राकृत पदार्थो मे कूद जाता है। अथात् प्रकृति के बन्धन से परे हो जाता है।

अहि पन्था विसर्पति—स्वामी दयानन्द जी—मघ मार्ग मे विविध प्रकार से जाता है।

स्वामी वदानन्द जी—सर्पवत कुटिल स्वभाव पुरुष जन्म मरण मार्ग पर विविध प्रकार से चलता है।

यह तो एक छोटा सा उदाहरण है। यदि मन्त्रो पर थोडा परिश्रम किया जाए तो पता लगेगा कि ऐसे सहस्रा शब्द है जिनके आर्य विद्वानो ने ही भिन्न-भिन्न अर्थ किए हे। जिस ग्रन्थ के विषय मे यही निश्चय न हो कि उसका अभिप्राय क्या है तो उसकी प्रामाणिकता क्या होगी। सन्दिग्धार्थ या अनिश्चितार्थ मन्त्र की प्रामाणिकता की बात करना प्रामाणिकता का उपहास करना है। सम्भवत इसीलिए आचार्य विश्वश्रवा जी ने अपने "आर्य जगत" के 18-3-84 तथा 25-3-84 के अंको मे प्रकाशित लेखो मे अनेक परोपकारिणी सभाओ के बनाने पर बल दिया है। इन मे एक का कार्य ऋषि के वेद भाष्यो का देश देशान्तर की भाषाओ मे अनुवाद प्रकाशित करना होगा। स्वतन्त्र अनुवादो को प्रामाणिक नही माना जाएगा। आचार्य जी ने इस परोपकारिणी सभा का कार्य ऋषि ग्रन्थमाला का सब भाषाओ मे अनुवाद, वैदिक साहित्य का वैदिक दृष्टिकोण से अनुवाद तथा दर्शनो-उपनिषदो का वैदिक दृष्टि से अनुवाद इत्यादि होगे, ऐसा कहा है।

आचार्य जी ने आर्य समाज पर किए आक्षेपो का उत्तर देने के लिए, विदेशीय भाषाओ मे अनुवाद के लिए तथा भिन्न-2 वादो विकासवाद-मार्क्सवाद आदि के विरुद्ध विचार के लिए भी भिन्न-2 परोपकारिणी सभाओ के निर्माण की योजना उपस्थित की है। मैं समझता हू कि भिन्न-2 परोपकारिणी सभाओ के निर्माण की अपेक्षा इस्लाम तथा ईसाईयत के सिद्धान्तो पर विचार के लिए बनी हुई स्वतन्त्र यूनिवर्सिटियो की तरह एक दयानन्द विश्वविद्यालय होना चाहिए जिसका केवल कार्य वैदिक ग्रन्थो के प्रमाणिक भाष्य तैयार करना तथा वैदिक सिद्धान्तो पर आने वाली आपत्तियो का जिनमे भिन्न-2 वादो तथा इतिहास, विज्ञान तथा अन्य सब ज्ञान की विधाओ द्वारा उठाई गई अनन्त आपत्तिया होगी—समाधान करना लक्ष्य हो। यह सस्था सरकार पर आश्रित नही होगी—आर्य जनता पर आश्रित होगी।

अब मूल प्रश्न पर फिर आना चाहिए। ऋषि दयानन्द ने तो ऋग्- अपूर्ण तथा यजु पूर्ण इतना ही भाष्य किया है। शेष वेद भागो के भाष्य का क्या बनेगा। उनकी प्रामाणिकता क्या होगी। मैं जहा तक समझ पाया हू। वेद भाष्य के लिए भिन्न-भिन्न सम्बद्ध विषयो पर पारङ्गत पण्डितो का मण्डल होना चाहिए। एक एक शब्द पर विचार कर अर्थ निश्चय हो तब कुछ प्रामाणिकता होगी।

यह बात कठिन बहुत है। मैंने इस विषय में आचार्य प्रियव्रत जी विद्यावाचस्पति तथा श्री मनोहर विद्यालङ्कार जी से उनके किए वेद मन्त्रो के अनुवादो के विषय मे पूछा था। उत्तर से कुछ बात स्पष्ट नही हुई। श्री मनोहर विद्यालकार जी ने तो कुछ ऐसा प्रगट किया कि वैदिको शब्दो का प्रामाणिक और निश्चित अर्थ सम्भव ही नही।" 'अनन्ता वै वेदा.' वेद तो अनन्त हैं। उनके मन्त्रो के अर्थो को बाधा नही जा सकता। मुझ उनके उत्तर से एक साहित्यिक घटना का स्मरण हो आया। महा कवि मैथिली शरण गुप्त जी ने राम कथा को लेकर एक काव्य लिखा "साकेत"। उसमे सम्पूर्ण राम कथा का केन्द्र आयोध्या को बनाया और घटना चक्र मे अच्छा खासा परिवर्तन कर दिया जब आलोचको ने मूल घटनाओ मे परिवर्तन के विषय में आपत्ति उठाई तो भक्त प्रवर गुप्त जी का उत्तर था हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता। भगवान् राम अनन्त हैं। उनके चरित भी अनन्त हैं—समय समय पर भक्तो के मन में उद्भावित होते रहते हैं। भक्तो की दृष्टि से उत्तर तो ठीक है पर इस प्रकार रामचन्द्र का जीवन ऐतिहासिक तथ्य न होकर भक्त समूह की भावना और कल्पना का तथ्य बन जाएगा। बन जाएगा नही बन गया है। सम्भवत: आर्य विद्वान वेदो के विषय मे, वैदिक साहित्य के विषय मे अथवा ऋषि जीवन के विषय मे ऐसी स्थिति ठीक नही समझेंगे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा चारो वेदो का हिन्दी भाष्य प्रकाशित किया गया है। स्वामी सत्यप्रकाश जी तथा उनके सहायक विद्वान् अग्रेजी मे वेद भाष्य प्रस्तुत कर रहे हैं। उनका प्रयत्न प्रशसनीय है। पर क्या आर्य विद्वान उन भाष्यो मे स्पष्ट किए अर्थों को ठीक या प्रामाणिक मानते है ? यदि आचार्य विश्वश्रवा जी के "आर्य मर्यादा" के 11-12-83 "आर्य जगत्" के 18-3 84 तथा 25-3 84के अंको मे प्रकाशित लेखो को पढा जाए तो सन्देह ही सन्देह हो जाते हैं। मान्य आचार्य विश्वश्रवा जी जब लिखते है तो पण्डित प्रवर जगन्नाथ की "दिगन्ते श्रूयन्ते" की आह्वान भरी शैली मे लिखते है। उनका विचार है कि अनुवाद ऋषि भाष्य के अनुकूल नही। उनका यह भी कहना है कि यास्क के निरुक्त को भी अभी तक ठीक से समझा नही गया। (वेदोद्धारिणी-मार्च 1985)। इसी प्रकार वेदोद्धारिणी के अन्य अंको के पढने से भी यही आभास होता है कि वेद मन्त्रो के अर्थ, देवता, ऋषि तथा छन्द आदि का अभिप्राय और विनियोग ये सब अभी तक सदेहास्पद ही बने हुए है। कुछ विद्वान् पारायण यज्ञो पर आक्षेप कर रहे हैं और प्राचीन श्रौत यज्ञो की ओर ध्यान खीच रहे है।

इस सबस यह परिणाम निकलता है कि आर्य समाज की स्थापना ई 1875 तथा परोपकारिणी सभा की स्थापना-ई-1883, से लेकर अब तक 110 या 103 वर्ष व्यतीत होने पर भी आर्य समाज के आधार वेदो का न तो कोई निश्चितार्थ स्पष्ट हुआ और न तत्सम्बन्धी देवता, ऋषि, छन्द, विनियोग का कोई निश्चित स्वरूप सामने आया। यह कार्य सम्भवत. अनेको वर्ष ऐसे ही चलता रहेगा तो समान्य मनुष्य के लिए वेदाध्ययन और वैदिक कर्मकाण्ड का क्या महत्व होगा। क्या ये वस्तु उसके जीवन मे कुछ उपयोगी होगी।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

पंजाब बचाओ, देश बचाओ

निम्न आर्य समाजों में पजाब बचाओ देश बचाओ दिवस मनाया गया आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर जालन्धर

15 अगस्त 86 को शुक्रवार प्रात 7 बजे आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर जालन्धर में एक बैठक हुई, जिस मे मुलखराज आर्य कार्यकर्ता प्रधान ने पजाब मे हिन्दुओ की प्रतिदिन हत्याए और पजाब से भाग कर जो हिमाचल, हरियाणा, दिल्ली मे काफी लोग जा चुके हैं पर प्रकाश डाल कर यह प्रस्ताव रखा जो सब सम्मति से स्वीकार हुआ।

प्रस्ताव —

1 यह सभा भारत सरकार से माग करती है कि पजाब मे बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त करे क्योकि यह प्रान्त मे अल्पसख्यक हिन्दुओ की सुरक्षा तथा कानून व्यवस्था बनाये रखने मे पूणत असफल रहा है। अत पजाब को सेना के हवाले किया जावे।

2 बरनाला सरकार अपरोक्ष रूप मे उग्रवादियो को शह देकर खालिस्तान के निर्माण का माग प्रशस्त कर रहा है क्योकि अकाली दल ने प्रस्तावित सीमा सुरक्षा बिल का विरोध किया है।

3 पजाब से जो हिन्दू विस्थापित होकर अन्य राज्यो मे शरण लिए हुए हैं, सरकार उनके आवास भोजन और पुनवास की व्यवस्था उसी तरह करे जिस प्रकार 1984 के काण्ड से प्रभावित सिखो के लिए की गई थी।

4 पजाब मे भयाक्रान्त हिन्दुओ की सुरक्षा के लिए कड़े कदम उठाए जावें और उग्रवादियो आतकवादियो को कडी से कडी सजा दी जावे।

5 यह सभा भारत सरकार के सीमा सुरक्षा बिल का जोरदार समथन करती है। राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए गुजरात से लेकर कश्मीर तक की सीमा पट्टी की सुरक्षा के लिए यह विधयक राष्ट्रीय हित मे है।

मन्त्री

—

जालन्धर आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार (अड्डा होशियारपुर) का पारित प्रस्ताव

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर श्रद्धानन्द बाजार जालन्धर के दैनिक सत्सग मे सवसम्मति से निम्नलिखित प्रस्ताव पास हुआ।

1 यह सभा भारत सरकार से माग करती है कि पजाब मे बरनाला सरकार को तुरन्त बखास्त करे क्योकि यह प्रान्त मे अल्पसख्यक हिन्दुओ की सुरक्षा तथा कानून व व्यवस्था बनाए रखने मे पूणत असफल रही है। अत पजाब को सेना के हवाले किया जावे।

2 बरनाला सरकार अपरोक्ष रूप मे उग्रवादियो को शह देकर खालिस्तान के निर्माण की माग को प्रशस्त कर रही है क्योकि अकाली दल ने प्रस्तावित सीमा सुरक्षा बिल का विरोध किया है।

3 पजाब मे जो हिन्दू विस्थापित हो कर अन्य राज्यो मे शरण लिए हुए हैं। सरकार उनके आवास भोजन और पुनवास की व्यवस्था उसी तरह करें, जिस प्रकार 1984 के काण्ड से प्रभावित सिखो के लिए की गई थी।

4 पजाब मे भयक्रान्त हिन्दुओ की सुरक्षा के लिए कड़े कदम उठाये जावें और उग्रवादियो आतकवादियो को कडी से कडी सजा दी जावे।

5 यह सभा भारत सरकार के सीमा सुरक्षा बिल का जोरदार समथन करती है। राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए गुजरात से लेकर कश्मीर तक की सीमा पट्टी की सुरक्षा के लिए यह विधयक राष्ट्रीय हित मे है।

—जसवन्त राय
मन्त्री

आर्य समाज कोटकपूरा का पारित प्रस्ताव

15 8 86 को आर्य समाज कोटकपूरा मे एक विशेष बैठक हुई जिस मे निम्नलिखित प्रस्ताव सार्वदेशिक सभा व आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की आज्ञानुसार पास करके प्रधानमन्त्री जी तथा भारत सरकार व राज्यपाल महोदय पजाब सरकार को भेज दिए हैं। आप का सूचनार्थ व आर्य मर्यादा को भी प्रति लिपि भेज रहा हू

1 आज की यह सभा भारत सरकार से माग करती है कि पजाब मे बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त कर क्योकि यह प्रान्त मे अल्पसख्यक हिन्दुओ की सुरक्षा तथा कानून व व्यवस्था बनाए रखने मे पूणत असफल रही है। अत पजाब को सेना के हवाले किया जावे।

2 बरनाला सरकार अपरोक्ष रूप मे उग्रवादियो को शह देकर खालिस्तान के निर्माण का माग प्रशस्त कर रही है। क्योकि अकाली दल ने सीमा सुरक्षा बिल का विरोध किया है।

3 पजाब मे जो हिन्दू विस्थापित होकर अन्य राज्यो मे शरण लिए हुए है। सरकार उनके आवास भोजन और पुनवास की व्यवस्था उसी तरह करे जिस प्रकार 1984 के काण्ड से प्रभावित सिखो के लिए की गई थी।

4 पजाब मे भयाक्रान्त हिन्दुओ की सुरक्षा के लिए कड़े कदम उठाये जावें और उग्रवादियो व आतकवादियो को कडी से कडी सजा दी जावे।

5 यह सभा भारत सरकार के सीमा सुरक्षा बिल का जोरदार समर्थन करती है। राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए गुजरात से लेकर कश्मीर तक की सीमा पट्टी की सुरक्षा के लिए यह विधेयक राष्ट्रीय हित मे है।

मन्त्री

—

आर्य समाज वेद मन्दिर बस्ती दानिशमन्दा जालन्धर मे पजाब बचाओ प्रस्ताव पारित किया गया

पजाब के लोगो को इस समय मुश्किल से गुजरना पड रहा है। इस पर विचार करने के लिए आर्य समाज वेद मन्दिर बस्ती दानिशमन्दा जालन्धर मे एक विशेष मीटिंग बुलाई गई। यह मीटिंग 15 8 86 दिन शुक्रवार सुबह 8 बजे से 10 बजे तक की गइ। इस मीटिंग की प्रधानता डा ज्ञानचन्द जी ने की। सभा मे सभी स्त्रिया पुरुषो ने भाग लिया।

सभा मे सभी उपस्थित सदस्यो ने अपने 2 विचारो मे सरकार से यह माग की कि आजकल जो पजाब के लोगो को अपनी सुरक्षा करना बहुत ही असम्भव हो गया है। इस लिये सभा ने कुछ प्रस्ताव पास किए है जिसमे कि पजाब मे लोग शान्ति से रह सके। यह प्रस्ताव हम प्रधानमन्त्री व पजाब के राज्यपाल को भेज रहे है। ताकि इस पर ध्यान दिया जा सके।

1 यह सभा भारत सरकार से माग करती है कि पजाब मे बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त करे, क्योकि यह प्रान्त मे अल्पसख्यक हिन्दुओ की सुरक्षा तथा कानून व व्यवस्था बनाये रखने मे पूणत असफल रही है। अत पजाब को सेना के हवाले किया जाये।

2 बरनाला सरकार अपरोक्ष रूप मे उग्रवादियो को शह देकर खालिस्तान के निर्माण का माग प्रशस्त कर रही है। क्योकि अकाली दल ने 'सीमा सुरक्षा बिल का विरोध किया है।

3 पजाब मे भयक्रान्त हिन्दुओ की सुरक्षा के लिए कड़े कदम उठाये जाए और उग्रवादियो आतकवादियो को कडी से कडी सजा दी जाए।

4 यह सभा भारत सरकार के सीमा सुरक्षा बिल का जोरदार समथन करती है। राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए गुजरात से लेकर कश्मीर तक की सीमा पट्टी की सुरक्षा के लिए यह विधयक राष्ट्रीय हित मे है।

5 पजाब से जो हिन्दु विस्थापित हो कर अन्य राज्यो मे शरण लिए हुए है। सरकार उनके आवास भोजन और पुनवास की व्यवस्था उसी तरह करे जिस प्रकार 1984 के काण्ड से प्रभावित सिखो के लिए की गई थी।

—फकीर चन्द
मन्त्री

—

(4 पृष्ठ का शेष)

इस अव्यवस्था का परिणाम यह हुआ है कि समस्त स्वाध्यायशील विद्वानो को छोड कर आर्य जनो के दर्शन चिन्तन तथा कर्मकाण्ड का आधार वेद नहीं रहे। वास्तविक आधार सत्यार्थ प्रकाश ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तथा संस्कार विधि ऋषि दयानन्द के ये तीन महाग्रन्थ बन्धकारी बन गए है। हमारा सम्पूर्ण चिन्तन और धार्मिक प्रक्रियाए इन्ही के आधार पर चल रही है। सौभाग्य से इन तीनो ग्रन्थो के विचारो को समझना असाध्य नही।

वेद के विषय मे चर्चा करते हुए इतना और उल्लेख करना चाहूगा कि टंकारा मे रचाए गए उत्सवो पर प्रति वर्ष भिन्न भिन्न विद्वानो द्वारा अधिष्ठित पारायण यज्ञ लगभग 15 16 मे सम्मिलित होने का अवसर मिला। उन अवसरो पर जब वेद पाठ के समय कोई विप्रतिपत्ति होती थी अशुद्ध पाठ का संशय होता था। जो निर्णय के लिए श्री सातवलेकर जी द्वारा प्रकाशित सहिता ग्रन्थ अथवा स्वामी जगदीश्वरानन्द जी द्वारा प्रकाशित सहिता ग्रन्थ के पाठ को प्रमाण माना जाता था परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा प्रकाशित गुटका रूप सग्रह सहिता को नही। इससे मन को क्लेश अवश्य होता था।

—*—

आर्य समाज बीकानेर मे पजाब बचाओ दिवस

15 अगस्त को बीकानेर नगर व परमानन्द बस्ती आय समाजो के सयुक्त तत्त्वावधान मे पजाब बचाओ देश बचाओ दिवस के उपलक्ष मे दयान द बाल मन्दिर मे सभा हुई जिसम सव सम्मति से यह प्रस्ताव पास किया गया —

यह सभा विगत पाच वर्षो स पजाब मे हो रही हिसक गतिविधियो पर गहरी चिन्ता व्यक्त करती है। हमारी माग है कि पजाब के सीमावर्ती तीन जिले सेना के हवाले किए जाए और जब तक वह काम किया जाए जिससे वहा स्थाई शान्ति कायम हो।

सभा पूर्व परमानन्द बस्ती आय समाज से भारत माता की जय देश की रक्षा कौन करेगा हम करेगे हम करेगे और पजाब बचाओ देश बचाओ के नारे लगाता जन समूह जलूस बनाकर दयानन्द बाल मन्दिर पहुचा। बालको को 15 अगस्त के जलूस के बाद ... सभा ... । —भवरलाल आय बन्धु मन्त्री

आय समाज रीपाड नगर मे पजाब बचाओ दिवस

आय समाज ... (...) की ओर से एक आम सभा दिनाक 15 8 86 को ... जिसम ... दिवस सावदेशिक आय प्रतिनिधि ... अनुमार मनाया गया। सभा मे निम्न प्रस्ताव सव सम्मति से पास किया गया।

प्रस्ताव ... पजाब मे ... रही हिसक गति विधि पर गहरी चिन्ता व्यक्त ... हमारी माग है कि पजाब के सीमावर्ती ... जिले सेना के ... किए ...

... के ... प्रस्ताव का समथन करना ... पाकिस्तान ... पजाब तथा जम्मू काश्मीर पर सीमा ... सशोधन ... आतकवादी तथा पाकिस्तानी ... सक ... है

... के ... मरवा ... मन्त्री

आय समाज बगा मे पजाब बचाओ दिवस

1 ... 86 को ... समाज बगा म 15 अगस्त 1986 को दिन पजाब बचाओ दिवस के रूप मे मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता श्री दशराज प्रधान आय समाज बगा ने की। इस प्रोग्राम मे निम्नलिखित प्रस्ताव सव सम्मति से पास हुआ।

प्रस्ताव—1 यह सभा भारत सरकार से माग करती है कि पजाब मे बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त करे क्योकि यह प्रान्त मे अल्पसख्यक हिन्दुओ की सुरक्षा तथा कानन व्यवस्था बनाये रखने मे पूणत असफल रही है। अत पजाब को सेना के हवाले किया जाये।

2 बरनाला सरकार अपरोक्ष रूप मे उग्रवादियो को शह देकर खालिस्तान के निर्माण का माग प्रशस्त कर रही है। क्योकि अकाली दल ने प्रस्तावित सीमा सुरक्षा बिल का विरोध किया है।

3 पजाब से जो हिन्दू विस्थापित होकर अन्य राज्यो मे शरण लिए हुए है सरकार उनके आवास भोजन और पुनर्वास की व्यवस्था उसी तरह करे जिस प्रकार 1984 के काण्ड से प्रभावित सिखो के लिए की गई थी।

4 पजाब मे भयाक्रान्त हिन्दुओ की सुरक्षा के लिए कड कदम उठाए जाए। और उग्रवादियो आतकवादियो को कडी से कडी सजा दी जावे।

5 यह सभा भारत सरकार के सीमा सुरक्षा बिल का जोरदार समथन करती है। राष्ट्रीय एकता और अखडता के लिए गुजरात से लेकर काश्मीर तक की सीमा पट्टी की सुरक्षा के लिए यह विधयक राष्ट्रीय हित मे है। देशराज प्रधान

आय युवक समाज बरनाला मे पारित प्रस्ताव

15 8 86 रविवार साय 7 30 बजे *आय समाज मन्दिर की सहदारी मे* हुई आपातकालीन बठक मे आय समाज मन्दिर म युवक समाज की तरफ से दिए जा रहे धरने के सम्बन्ध मे निम्न प्रस्ताव सव सम्मति से पारित किया गया।

प्रस्ताव—क्योकि श्री वीरेन्द्र जी (सभा प्रधान) ने स्पष्ट रूप से आय समाज के अधिकारियो को यज्ञ कराने का निर्देश दिया है एवम जिला आय सभा के महामन्त्री जी ने आय युवक समाज को अपना धरना समाप्त करने की प्राथना की है अन समाज उनकी प्राथना को आदेश मानते हुए अपना धरना स्थगित करती है। —रामसरण दास गोयल प्रधान

आर्य समाज मन्दिर सामाना जि. पटियाला का पारित प्रस्ताव

सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार 15 अगस्त 1986 को आय समाज मन्दिर सामाना मे एक विशेष सभा का आयोजन किया गया। जिस मे पजाब की नाजुक हालत को देखते हुए निम्न प्रस्ताव बडी गम्भीरता से पारित किये गये —

★यह सभा सरकार से माग करती है कि पजाब मे बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त करे। क्योकि यह प्रात मे अल्पसख्यक हिन्दुओ की सुरक्षा तथा कानन व्यवस्था बनाए रखने मे पूणत असफल रही है। अत पजाब को सेना के हवाले किया जाए।

★बरनाला सरकार अपरोक्ष रूप मे उग्रवादियो को शह देकर खालिस्तान के निर्माण का माग प्रशस्त कर रही है क्योकि अकाली दल ने प्रस्तावित सीमा सुरक्षा बिल का विरोध किया है।

★पजाब से जो हिन्दू विस्थापित होकर अन्य राज्यो मे शरण लिये हुए है सरकार उन के आवास भोजन और पुनर्वास की व्यवस्था उसी तरह कर जिस प्रकार 1984 व काड म प्रभावित सिखो के लिए की गई थी।

★पजाब मे भयाक्रान्त हिन्दुओ की सुरक्षा के लिए कड कदम उठाये जाए और उग्रवादियो आतकवादियो को कडी से कडी सजा दी जावे।

★यह सभा भारत सरकार के सीमा सुरक्षा बिल का जोरदार समथन करती है। राष्ट्रीय एकता और अखडता के लिए गुजरात से लेकर काशमीर तक की सीमा पट्टी की सुरक्षा के लिए यह विधयक राष्ट्रीय हित मे है। मन्त्री

आय समाज (लुधियाना पश्चिम) मे पारित प्रस्ताव

आय समाज (लुधियाना पश्चिम) की कायकारिणी की एक विशेष बठक 15 8 86 को सम्पन्न हुई जिसम निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किये गये।

प्रस्ताव 1 यह सभा भारत सरकार से माग करती है कि पजाब मे बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त करे क्योकि यह प्रान्त मे अल्पसख्यक हिन्दुओ की सुरक्षा तथा कानून व्यवस्था बनाए रखने म पूणत असफल रही है। अत पजाब को सेना के हवाले किया जावे।

2 बरनाला सरकार अपरोक्ष रूप मे उग्रवादियो को शह देकर खालिस्तान के निर्माण का माग प्रशस्त कर रही है क्योकि अकाली दल ने प्रस्तावित सीमा बिल का विरोध किया है।

3 पजाब से जो हिन्दू विस्थापित होकर अन्य राज्यो मे शरण लिए हुए, सरकार उनके आवास, भोजन और पुनर्वास की व्यवस्था इसी तरह करे जिस प्रकार 1984 के काण्ड से प्रभावित सिखो के लिए की गई थी

4 पजाब मे भयाक्रान्त हिन्दुओ की सुरक्षा के लिए कड कदम उठाये जाए और उग्रवादियो आतकवादियो को कडी से कडी सजा दी जावे।

5 यह सभा भारत सरकार के सीमा सुरक्षा बिल का जोरदार समथन करती है। राष्ट्रीय एकता और अखडता के लिए गुजरात से लेकर काश्मीर तक की सीमा पटटी की सुरक्षा के लिए यह विधयक राष्ट्रीय हित मे है। मन्त्री

आर्य समाज भटिण्डा मे प्रस्ताव पारित

प्रस्ताव 1 आय समाज भटिण्डा भारत सरकार से माग करती है कि पजाब मे बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त करें। क्योकि यह प्रात मे अल्पसख्यक हिन्दुओ की सुरक्षा तथा कानून व्यवस्था बनाए रखने म पूणत असफल रही है। अत पजाब को सेना के हवाले किया जावे।

2 बरनाला सरकार अपरोक्ष रूप मे उग्रवादियो को शह दकर खालिस्तान के निर्माण का माग प्रशस्त कर रही है क्योकि अकाली दल ने प्रस्तावित सीमा सुरक्षा बिल का विरोध किया है।

3 पजाब से जो हिन्दु विस्थापित हो कर अन्य राज्यो मे शरण लिए हुए हैं।, सरकार उनके आवास, भोजन और पुनवास की व्यवस्था उसी तरह करें, जिस प्रकार 1984 के काड से प्रभावित सिखो के लिए की गई थी।

4 पजाब मे भयाक्रान्त हिन्दुओ की सुरक्षा के लिए कड कदम उठाये जाए और उग्रवादियो और आतकवादियो को कडी से कडी सजा दी जाए।

5 यह सभा भारत सरकार के सीमा सुरक्षा बिल का जोरदार समथन करती है। राष्ट्रीय एकता और अखडता के लिए गुजरात से लेकर काश्मीर तक की सीमा पट्टी की सुरक्षा के लिए यह विधयक राष्ट्रीय हित मे है।

—बलीरचन्द-प्रधान

स्त्री आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार, (साबुन बाजार) लुधियाना का चुनाव

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार का वार्षिक चुनाव 12-8-86 मगलवार साय साढे 4 बजे श्रीमती शकुन्तला जी मण्डल की अध्यक्षता मे आर्य समाज मन्दिर मे हुआ। जिसमे 1986-87 के लिए चुनाव हुआ।

सर्व सम्मति से पुन. श्रीमती कमला जी आर्या को चौथी बार प्रधान चुन लिया गया। सब उपस्थित बहिनो ने तालियो से इस निर्णय का स्वागत किया सब के निर्णय को शिरोधार्य करते हुए श्रीमती कमला जी आर्या ने मन्त्री तथा कोषाध्यक्ष का चयन सब सदस्यो के समक्ष सर्वसम्मति से घोषित किया जो क्रमश निम्न प्रकार से हैं। मन्त्री श्रीमती विनोद जी सोई तथा कोषाध्यक्ष श्रीमती शकुन्तला जी खुराना को बनाया साथ ही आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए बहिनो के नाम भी सर्व सम्मति से स्वीकार किये गये तथा बाकि अन्तरग का अधिकार प्रधान जी को दे दिया गया। जो निम्न प्रकार से है।

प्रधान—श्रीमती कमला जी आर्या
मन्त्री—श्रीमती विनोद जी सोई।
कोषाध्यक्ष—श्रीमती शकुन्तला जी खुराना।
सरक्षक—श्रीमती शकुन्तला जी मण्डल।
सरक्षक—कुमारी सत्या जी आर्या।
वरिष्ठ उप-प्रधान—श्रीमती निर्मला जी बेरी।
उप-प्रधान—श्रीमती यशवती जी मल्ला।
उप-प्रधान—श्रीमती राजेश्वरी जी वर्मा।
उप-मन्त्री—श्रीमती तृप्ता जी वर्मा।
उप-मन्त्री-श्रीमती स्नेह जी सूद।
,, ,, सत्या जी दीवान।
सह-कोषाध्यक्ष-श्रीमती कान्ता जी मारकन्डे।
सदस्य-श्रीमती सत्या जी सोई।
,, ,, फूला जी गुप्ता।
,, ,, जनक जी शर्मा।

प्रतिनिधि :—

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए श्रीमती कमला जी आर्या, 350 सती सूदा गली लुधियाना।

श्रीमती विनोद जी सोई, 351 सती सूदा गली लुधियाना।

श्रीमती शकुन्तला जी खुराना, 1671 रडी मुहल्ला लुधियाना।

श्रीमती निर्मला जी बेरी, निर्मल आईस फैक्ट्री माता रानी चौक लुधियाना

श्रीमती राजेश्वरी जी वर्मा, बी 7 4 78 गुज्जरमल रोड लुधियाना।

श्रीमती विजय लक्ष्मी जी शर्मा, 7-ए लिंक रोड जालन्धर नगर।

—

आर्य समाज गऊशाला रोड़ फगवाड़ा का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज गऊशाला रोड फगवाडा का वार्षिक चुनाव 10-8-86 दिन रविवार को श्री यशपाल जी दुग्गल की अध्यक्षता मे हुआ जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी सर्व सम्मति से चुने गए।

सरक्षक—श्रीमती चाद कपूर, तथा लाला अमरचन्द मढिया।

प्रधान—महाशय अमृतलाल गुलाटी

उप प्रधान—हकीम सत्यपाल, श्री यशपाल दुग्गल, श्री अमरनाथ सोनी, श्री बलबीर बर्मानी।

महामन्त्री—श्री बालकृष्ण सभ्रवाल,

मन्त्री—श्री सुदेश ओहरी, श्री शीतल कोहली, श्री रमण नारग एडवोकेट।

प्रचार मन्त्री—प्रो सत्यदेव जी सरल।

आफिस मन्त्री—मास्टर खरैतीराम गुप्ता।

कोषाध्यक्ष—मास्टर जगन्नाथ बहल

लेखा निरीक्षक—प्रो कैलाश नाथ भारद्वाज।

पुस्तकाध्यक्ष—श्री राजिन्द्र प्रसाद,

बालकृष्ण सभ्रवाल
मन्त्री

आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर का चुनाव

आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर का चुनाव दिनाक 10-8-86 को हुआ। जिसमें श्री दर्शन कुमार जी मेहरा सर्व-सम्मति से प्रधान निर्वाचित हुए। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित अधिकारी निर्वाचित हुए।

कार्यकारी प्रधान—श्री रामनाथ जी शर्मा, वरिष्ठ उप-प्रधान—श्री कश्मीरी लाल रगवाले, उप-प्रधान—श्री ब्रह्मदत्त जी सूद, महामन्त्री—श्री मा रामरखा मल जी, मन्त्री—श्री राकेश मेहरा, कोषाध्यक्ष—श्री धर्मवीर जी, लेखा-निरीक्षक—श्री सत्यपाल जी आर्य, यज्ञ-प्रबन्धक—श्री रमेश कुमार जी तालवाड,

—रामरखा मल
महामन्त्री

आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना का चुनाव

आर्य समाज हबीब गज अमरपुरा लुधियाना का वार्षिक चुनाव 3-8 86 रविवार को सत्सग के पश्चात् हुआ, आर्य समाज की साधारण सभा की बैठक मे श्री आशानन्द जी आर्य को सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया और उन्हे शेष अधिकारी, अन्तरग सदस्य तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रतिनिधि मनोनीत करने का अधिकार दिया गया जो कि प्रधान जी ने निम्न प्रकार से किया।

प्रधान—श्री आशानन्द आर्य।

उप-प्रधान श्री ज्ञानचन्द भगत, श्री यशपाल भगत, श्रीमती बेअन्ती देवी

मन्त्री—श्री वेद प्रकाश महाजन।

उप मन्त्री—कुमारी उर्मिला आर्य, श्री रविन्द्र कुमार आर्य, श्री यशपाल आर्य

कोषाध्यक्ष—श्री धर्मपाल भगत, सहायक कोषाध्यक्ष—श्रीमती राजराणी अधिष्ठाता आर्य वीर दल-रवीन्द्र कुमार आर्य, यज्ञ अध्यक्ष—कुमारी उर्मिला।

अन्तरग सदस्य —

श्री देशराज, श्री हरबन्स लाल, श्री जनकराज भगत, श्री साधु राम, श्री योगराज श्रीमती अमरजीत कौर, श्रीमती भागवन्ती।

—आशानन्द आर्य

आर्य समाज खरड़ जिला रोपड़ का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज खरड जिला रोपड (पजाब) का [illegible] दिनाक 3-8 86 को चुनाव हुआ जिस मे निम्नाकित सदस्या का सर्व सम्मति से पदाधिकारी चुना गया।

प्रधान—श्री नन्दलाल जी
उप प्रधान—श्री शम्भु राम
मन्त्री—श्री सत्यपाल भगत्यार
उप मन्त्री—श्री विनय कुमार, श्री सन्त कुमार, श्री [illegible] शर्मा।
कोषाध्यक्ष श्री कपिल देव
पुस्तकाध्यक्ष—श्री अशोक कुमार
अधिष्ठाता आर्य वीर दल- श्री महेश कुमार
प्रतिनिधि-श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, श्री मणीकान्त, श्री जगदीश चन्द्र वर्मा।

— सत्यपाल भगत्यार
मन्त्री

—

आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर में प्रस्ताव पारित किया गया

● यह सभा भारत सरकार से माग करती है कि पजाब मे बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त करे क्योंकि यह प्रान्त मे अल्पसख्यक हिन्दुओ की सुरक्षा तथा कानून व व्यवस्था बनाए रखने मे पूर्णत. असफल रही है। अत पजाब को सेना के हवाले किया जावे।

● बरनाला सरकार अप्रत्यक्ष रूप मे उग्रवादियो को शह देकर खालिस्तान के निर्माण का मार्ग प्रशस्त कर रही है, क्योंकि अकाली दल ने प्रस्तावित सीमा सुरक्षा बिल" का विरोध किया है।

● पजाब से जो हिन्दू विस्थापित हो कर अन्य राज्यो मे शरण लिए हुए हैं, सरकार उनके आवास, भोजन और पुनर्वास की व्यवस्था उसी तरह कर जिस प्रकार 1984 के काण्ड म प्रभावित सिखो के लिए की गई थी।

● पजाब मे भयाक्रान्त हिन्दुओ की सुरक्षा के लिए कडे कदम उठाए जाए और उग्रवादियो, आतकवादियो को कडी से कडी सजा दी जाए।

● यह सभा भारत सरकार के सीमा सुरक्षा बिल का जोरदार समर्थन करती है। राष्ट्रीय एकता और अखडता के लिए गुजरात से लेकर कश्मीर तक की सीमा पट्टी की सुरक्षा के लिए यह विधेयक राष्ट्रीय हित मे है।"

—नरेश कुमार
मन्त्री

शुद्धि समाचार

दिनाक 7 8 86 को आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्वावधान मे ग्राम तिजारा आर्य समाज मन्दिर मे जिला अलवर मे सेवानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे मेव मुसलमानो ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया, और यज्ञ मे आहुतियां देकर प्रतिज्ञा की, उन्हें समाज मे सम्मान और इज्जत दी गई और आर्य समाज ने कपडा वितरण किया और सेवानन्द सरस्वती ने शुद्धि पर बल दिया और प. चन्द्र स्वरूप आर्य का सहयोग रहा। इस अवसर पर 8 व्यक्ति शुद्ध हुए।

मन्त्री

श्री गंगाराम शर्मा पुरोहित का निधन

आर्य जगत को यह जान कर अत्यन्त दु:ख होगा कि श्री प गंगाराम शर्मा विद्यावाचस्पति अवैतनिक पुरोहित आर्य समाज लेख राम नगर कादियां का निधन 30 जुलाई 1986 को 84 वर्ष की आयु में हो गया है। श्रद्धेय प जी का जन्म बद्दोमल्ली जिला स्यालकोट (पाकिस्तान) मे एक ब्राह्मण परिवार मे नवम्बर 1902 मे हुआ था विभाजन के बाद यहां आ करके आर्य समाज के प्रचार कार्य मे व्यस्त रहे। आप एक अच्छे लेखक थे आर्य गजट मे जो इनके बहुत से लेख छपते रहे आपने कई छोटे छोटे ट्रैक्ट भी लिखे। आर्य सत्संग गुटका भी छपवाया। गत चार महीना से अस्वस्थ थे। परमात्मा दिवंगत प गंगाराम जी की आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

—रमेश भण्डारी
मन्त्री

शोक प्रस्ताव

आर्य हाई स्कूल थानेसर की प्रबन्धक कमेटी, इस क्षेत्र के महान् आर्य नेता, आर्य समाज थानेसर के उप-प्रधान, अनगिणत आर्य संस्थाओं के संस्थापक सदस्य व आर्य हाई स्कूल थानेसर की प्रबन्धक कमेटी के वरिष्ठ सदस्य श्री रलिया राम जी के असमय, अचानक निधन पर अत्यन्त दु:ख व शोक प्रकट करती है। यह दु:ख हम सबके लिए असहनीय है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह उनको सदगति देवे और उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके परिवार को उनकी जुदाई का यह महान कष्ट सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

दो मिन्ट के लिए मौन खड़े होकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि भेन्ट की गई और उनकी आत्मा की शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई।

—डा रामप्रसाद मल्होत्रा
—प्रबन्धक—
आर्य हाई स्कूल थानेसर (कुरुक्षेत्र)

गुरुकुल ग्राम सेवा में आर्य कुमार सभा की स्थापना

5 अगस्त 1986 को पूज्यपाद स्वामी धर्मानन्द जी की अध्यक्षता मे आर्य कुमार सभा की स्थापना उल्लास-मय वातावरण में सम्पन्न हुई। जिसके पदाधिकारियों का चुनाव सर्व सम्मति से निम्न प्रकार हुआ।

सभा प्रधान—श्री चन्द्रशेखर शास्त्री
उप-प्रधान—श्री वीरेन्द्र कुमार।
मन्त्री—श्री शान्ति प्रिय शास्त्री।
उप-मन्त्री—श्री दयासागर आर्य।
कोषाध्यक्ष—श्री कुलदेव आर्य।
पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री विद्यानिधि शास्त्री व चन्द्रशेखर आर्य।

इस सम्बन्ध मे एक कार्यकारिणी समिति का गठन किया गया जो इस प्रकार है।

व ओ३म्प्रकाश, सन्तोष, राजेश

—शान्तिप्रिय शास्त्री
मन्त्री

स्त्री आर्य समाज पक्का बाग जालन्धर का वार्षिक चुनाव

16-8-86 को स्त्री आर्य समाज ऋषि कुंज पक्का बाग जालन्धर का वार्षिक चुनाव हुआ जिस में निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए —

प्रधाना—श्रीमती कमला जी आर्या
उप-प्रधाना—श्रीमती कृष्णा जी सेठ
मन्त्राणी—श्रीमती सुशीला जी भगत
उप-मन्त्राणी—श्रीमती प्रेमवती जी गुप्ता।
कोषाध्यक्ष-श्रीमती कमला जी शर्मा
उप-कोषाध्यक्ष—श्रीमती निर्मल जी शर्मा।

—सुशीला भगत
मन्त्राणी

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि. नं. पी.जे.एल 55

वर्ष 18 अंक24. 30 भाद्रपद सम्वत् 2043 तदानुसार 14 सितम्बर 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे(वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

महर्षि दयानन्द का यज्ञ विषयक वैज्ञानिक पक्ष

लेखक—श्री प वीरसेन जी वेदश्रमी

यज्ञ मे मन्त्रोच्चारण कर्म के साथ आवश्यक है

महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने यज्ञ की एक अत्यन्त लघु पद्धति या विधि हमे प्रदान की जो 20 मिनट मे पूर्ण हो जावे। उसमे मन्त्र के साथ कर्म और आहुति का योग किया। बिना मन्त्र के यज्ञ का कोई कर्म, यज्ञ का अङ्ग नही बन सकता। बिना मन्त्र उच्चारण किये किसी भी पदार्थ को अग्नि मे जला देने से, वह यज्ञाहुति का स्वरूप प्राप्त नही कर सकती और न वह उस महान लाभ को भी उत्पन्न करने में उतनी समर्थ हो सकती है। इसलिए विधिवत् यज्ञ करने से ही यथोचित लाभ होगा, अन्यथा नहीं।

यज्ञ की प्रथम क्रिया और प्रथम मन्त्र का भाव

महर्षि दयानन्द ने प्राणि मात्र पर अपार दया करके यज्ञ की प्रथम क्रिया प्रारम्भ करने के लिए एक छोटा सा मन्त्र दिया। कहा कि इस महान काय के लिए अग्नि प्रदीप्त करना हो तो-ओ३म् भूर्भुव स्व —यह छोटा सा मन्त्र बोल कर घृत का दीपक प्रज्वलित कर लेना। क्योंकि वही घृत दीप की मलाधार प्रारम्भ ज्योति ही व्याप्त रूप मे विराट बन कर भू अर्थात् पृथिवी, भुव अर्थात् अन्तरिक्ष और स्व अर्थात द्युलोक के लिये ओ३म् रक्षा करने वाली है। इसी घृत युक्त अग्नि शिखा मे भू अर्थात् प्राणो को जीवन करने की शक्ति है। इसी मे भुवः अर्थात् दुखनाशक शक्ति है और इसी में स्व अर्थात् लोक परलोक का समस्त सुख प्रदान करने की शक्ति है।

यज्ञ मे द्वितीय क्रिया और उसका मन्त्र

केवल घृत का दीपक जलाने से यज्ञ नही हो जाता। इस घृत दीप की अग्नि से कपूर को प्रज्वलित कर उस पर चन्दनादि की समिधा रखकर उसे एक पात्र मे रखना चाहिए और ओ३म भूर्भुव स्वर्द्यौरिव भूम्ना —यह सम्पूर्ण मन्त्र बोलकर कुण्ड मध्य मे उसे स्थापित करना चाहिए। मन्त्रो मे जो अपूर्व विज्ञान भरा है वह मन्त्र बोलने से ही जाना जाता है। बिना मन्त्र के वह प्रकाशित नही होता।

द्वितीय क्रिया के मन्त्र का भाव

इस अग्न्याधान मन्त्र का भाव निम्न प्रकार हृदयगम करना चाहिए। ओ३म भूर्भुव स्वर्द्यौरिव भूम्ना—यह भूभु व स्व आदि तीन ज्योतियो से युक्त अग्नि है जो प्रकाशमय द्युलोक के समान महान् विशाल है और पृथिवी व वरिम्णा—अन्तरिक्ष के समान महिमाशाली है, सामर्थ्यवान एव सर्व सुखोत्पादक है। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठ-उस देव यजनि अर्थात् देवो की यज्ञस्थली पृथिवी के पृष्ठ के ऊपर—अग्निमन्नाद—अन्नो के पक्व करने वाली अग्नि को—अन्नाद्यायादधे—अन्नो को भोज्य रूप प्रदान करने के लिये स्थापित करता हू। अन्नो को भोज्य रूपता प्रदान करने का एक गूढ तात्पर्य यह है कि यज्ञ से जो अन्न की उत्पत्ति एव पक्वता होती है उस अन्न मे से विष का भाग दूर होता जाता है। उसमे रोगोत्पादकता का दोष नही होता और वह अन्न अत्यन्त स्वादिष्ट, बल, वीर्य, बुद्धिवर्धक तथा पुष्टिकारक हो जाता है।

तृतीय क्रिया उसका मन्त्र और भाव

इस प्रकार पूर्वोक्त मन्त्र पूर्वक अग्नि स्थापना क्रिया होने पर तीसरी क्रिया—ओ३म उदबुध्यस्वाग्ने मन्त्र उस अग्नि को प्रदीप्त करने सम्बन्धित है। उस स्थापित अग्नि को लक्ष्य मे रख भावना करनी चाहिए कि ओम उदबुध्यस्वाग्ने—अर्थात् हे अग्नि तू ऊपर की ओर बढ, प्रतिजागृहि– अत्यन्त प्रदीप्त हो, क्योकि—त्वमिष्टापूर्ते ससृजेथाम अर्थात तुम हमारे लिये इष्ट अर्थात अभीष्ट सिद्धि इष्ट भोगो के दाता हो, तुम ही हमारी समस्त इष्टिया—यज्ञया गादि—के साधक हो और आपूर्त अर्थात कुआ, बावडी, तालाब, उद्यान, गृह, भवन आदि की पूर्ति करने वाले अर्थात उनको भरने, पूर्ण करने वाले हो।

चतुर्थ क्रिया 3 समिधादान चार मन्त्रो से 3 अग्नियो के लिए

यज्ञ की आधारभूत प्रक्रिया से पूर्वोक्त मन्त्र में समिधा का काय प्रथम है। अत अग्नि प्रदीप्त होने पर उसमे समिधादान की क्रिया करनी चाहिए। अत 4 मन्त्रो से 3 समिधादान की क्रिया का विधान किया गया है। 4 मन्त्र चारो दिशा अर्थात समस्त दिशाओ के बोधक हैं। उन समस्त दिशाओ का पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्यौ या भू, भुव स्व इन तीन रूप से विभाग है। इन तीनो स्थानो मे तीन प्रकार की अग्निया हैं। पथिवी लोक की अग्नि को पवमान कहा गया—अन्तरिक्ष लोक की अग्नि को पावक कहा गया और द्यु स्थानीय अग्नि को शुचि कहा गया है। अत तीनो अग्नियो के लिये 3 समिधा दान की क्रिया का विधान किया गया। इन तीनो समिधाओ द्वारा इस स्थापित यज्ञाग्नि को तीनो लोको मे क्रियाशील करके यज्ञ को ब्रह्माण्ड व्याप्त किया जाता है। समिधा दान के चार मन्त्रो के अन्त मे जो—इद न मम—का पाठ है वह ध्यान देने योग्य है। प्रथम मन्त्र मे इदमग्नये जातवेदसे, द्वितीय मन्त्र मे इदमग्नये, तृतीय मन्त्र मे प्रथम मन्त्रवत् पाठ है और चतुर्थ मन्त्र मे—इदमग्नये अङ्गिरसे—पाठ है। अर्थात तीन ही अग्नि हैं। एक अग्नि, दूसरी अगिरस, तीसरी जातवेद। अत 3 अग्नियो की समिधा हुई।

पाचवीं क्रिया पाच घृताहुतिया

समिधाग्नि दुवस्यत, इसके बाद-घृतैर्बोधयतातिथिम—पद है। पहले पद समिधाग्नि दुवस्यत के अनुसार समिधा दान की क्रिया सम्पूर्ण हो गई अत—घृतैर्बोधयतातिथिम—की क्रिया होनी चाहिए। अत 5 घृताहुतियो का विधान किया गया।

पाच घृताहुति क्यों ? (1)

इस ब्रह्माण्ड मे पूर्वोक्त तीनो लोको मे तीन अग्नियो से तथा तीन लोक रूपी समिधाओ से 5 अग्निया क्रियाशील होती हैं। उससे सबकी रचना व पालन होता है। उपनिषदो मे तथा शतपथ ब्राह्मण मे उसे पचाग्नि कह कर वणन किया है। अत पाच अग्नियो के लिए 5 घृताहुति का एक क्रम रखा गया है।

पाच घृताहुति क्यो (2)

जगत पर दृष्टिपात करें तो यह पाच भौतिक ही है। प्राणि जगत को देख तो यह पाच प्राणो से ही जीवित हैं और मनुष्य की प्रधान रूप से पाच ही कामनाए—प्रजा, पशु, ब्रह्म, तेज, अन्न (भोजन) एव उपभोग शक्ति है। पच घृताहुति मन्त्र मे इन्ही पाच मे अपने को समिद्ध एव समृद्ध करने की यज्ञ से प्रार्थना है। अत 5 घृताहुति का विधान यज्ञ मे करने से पच भूत, पच प्राण के लिए आहुति से उनकी पुष्टि पूर्वक अपनी पच सूत्री योजना की पूर्ति का भाव है।

(क्रमश)

व्याख्यान माला–७

अथ ब्रह्मचर्यम्

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स. अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर(पंजाब)

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति।
आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते ॥1॥

ब्रह्मचर्य के तप के द्वारा राजा राष्ट्र की रक्षा करता है आचार्य भी ब्रह्मचर्य पूर्वक ब्रह्मचारी को चाहते हैं।

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत् ॥2॥

ब्रह्मचर्य और तप से देवताओ ने मृत्यु को जीत लिया था इन्द्र ने भी ब्रह्मचर्य के द्वारा देवताओ को सुख उपलब्ध कराया था।

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।
अनड्वान् ब्रह्मचर्येणाश्वो घासं जिगीषति ॥3॥

ब्रह्मचर्य से कन्या युवा पति को प्राप्त करती है, बैल और घोड़ा भी ब्रह्मचर्य के द्वारा अपने खाद्य पर विजय पाता है। अर्थात् शक्तिशाली होता है।

धर्म्यं यशस्यमायुष्यं लोकद्वयरसायनम्।
अनुमोदामहे ब्रह्मचर्यमेकान्तनिर्मलम् ॥4॥

जो ब्रह्मचर्य धर्म का हेतु कीर्ति तथा दीर्घायु का देने हारा, इहलोक तथा परलोक दोनो मे ही शक्ति का अद्भुत स्रोत तथा अद्वितीय निर्मल है उसका अनुमोदन करते हैं। अर्थात् ब्रह्मचर्य को महत्व देते हैं।

ब्रह्मचर्यं परं शौचं ब्रह्मचर्यं परन्तप।
ये स्थिता ब्रह्मचर्येण ब्राह्मणास्ते दिवं गताः ॥5॥

ब्रह्मचर्य परम पवित्र है, ब्रह्मचर्य ही परम तप है, जो ब्राह्मण ब्रह्मचर्य द्वारा अपना व्यक्तित्व स्थिर करते है उन्ह ही दिव्यलोक की प्राप्ति होती है।

समुद्रतरणे यद्वदुपायो नौः प्रकीर्तिता।
संसारतरणे तद्वद्ब्रह्मचर्यं प्रकीर्तितम् ॥6॥

जैसे समुद्र पार करने के लिए नौका उपाय कही जाती है वैसे ही ससार रूपी सागर को पार करने मे ब्रह्मचर्य को श्रेष्ठ आधार माना गया है।

नीरोगः कान्तिसम्पन्नः सर्वदुःखविवर्जितः।
ब्रह्मचारी भवेल्लोके पाप्मना च विवर्जितः ॥7॥

ब्रह्मचारी ससार मे पाप रहित, आरोग्य, सुन्दर एव सब दुःखो से रहित होता है।

किं बहूक्तेन लोकेऽस्मिन्साधनं यद्धि विद्यते।
ब्रह्मचर्ये तु तत्सर्वमन्तर्भवति सर्वथा ॥8॥

अधिक क्या कहे, इस ससार मे सफलता के हेतु रूप जो भी साधन हैं वे सब इस ब्रह्मचर्य के अन्दर ही व्याप्त हो जाते हैं।

यथा गजपदे सर्वे पादा अन्तर्भवन्ति हि।
नैतस्मादधिकं किञ्चिद् ब्रह्मचर्याद्धि विद्यते ॥9॥

जैसे हाथी के पैर मे सब के पैर आ जाते हैं इसी प्रकार इस ब्रह्मचर्य से अधिक ससार मे कुछ भी नही है।

सर्वसाधनसम्पन्ना ब्रह्मचर्यं विवर्जिताः।
क्लेशं हि मुनयो वेदुर्विद्वांसोऽपि च कोटिशः ॥10॥

जो विद्वान् अथवा मनस्वी पुरुष सभी साधनों से सम्पन्न होकर भी मात्र ब्रह्मचर्य से हीन है वह अनेकधा कष्ट भोगता है।

कर्मणा मनसा वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा।
सर्वत्र मैथुनत्यागो ब्रह्मचर्यं प्रचक्षते ॥11॥

सदा सब अवस्थाओं में तथा सर्वत्र ही मन, कर्म और वचन से मैथुन का त्याग करना ही ब्रह्मचर्य कहलाता है।

आजन्ममरणाद्यस्तु ब्रह्मचारी भवेदिह।
न तस्य किञ्चिदप्राप्यमिति विद्धि नराधिप ॥12॥

इस ससार में जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त जो ब्रह्मचर्य का पालन करे। हे राजन्! उस के लिए कुछ भी अप्राप्य नही होता ऐसा जानो।

ये तपश्च तपस्यन्ति कौमारा ब्रह्मचारिणः।
विद्यावेदव्रतस्नाता दुर्गाण्यतितरन्ति ते ॥13॥

जो ब्रह्मचारी कुमार होते हैं और तप करते हैं वे किले जैसी कठिन तथा दुर्गमता को भी पार कर जाते हैं।

सुखं दान्तः प्रस्वपिति सुखं च प्रतिबुध्यते।
सुखं पर्य्येति लोकांश्च मनश्चास्य प्रसीदति ॥14॥

ब्रह्मचारी सुख पूर्वक सोता है, और सुख पूर्वक उठता है, और ससार में सुख पूर्वक घूमता है, और इसका मन सदा प्रसन्न रहता है।

अदान्तः पुरुषः क्लेशमभीक्ष्णं प्रतिपद्यते।
अनर्थांश्च बहूनन्यान् प्रसृजत्यात्मदोषजान् ॥15॥

असयमित इन्द्रियो वाला कामी पुरुष बार-बार क्लेश प्राप्त करता है तथा अपने दोषो से पैदा होने वाले और भी बहुत से अनर्थों को जन्म देता है।

इन्द्रियाणां विचरतां विषयेष्वपहारिषु।
संयमे यत्नमातिष्ठेद्विद्वान् यन्तेव वाजिनाम् ॥16॥

अपहरण करने वाले विषयो मे विचरण करने वाली इन्द्रियो पर विद्वान् मनुष्य प्रयत्न पूर्वक ऐसा सयम करे जैसा कि एक श्रेष्ठ सारथी अपने घोडो को नियन्त्रित रखता है।

आपदां कथितः पन्था इन्द्रियाणाम सयंमः।
तज्जयः सम्पदां मार्गो येनेष्टं तेन गम्यताम् ॥17॥

इन्द्रियो का असयम विपत्तियो का मार्ग कहा गया है तथा इन्द्रियो पर विजय प्राप्त करना सम्पत्तियो का मार्ग कहा गया है। अब मनुष्य यदि विपत्ति चाहता है तो असयम का मार्ग अपनाये यदि सम्पत्ति चाहता है तो सयम का मार्ग अपनाए।

धर्मार्थौ यः परित्यज्य स्यादिन्द्रियवशानुगः।
श्री प्राण धनदारेभ्यः क्षिप्रं स परिहीयते ॥18॥

धर्म और अर्थ का परित्याग करके जो मनुष्य इन्द्रियो के वशीभूत हो जाता है उसको शीघ्र ही लक्ष्मी, प्राण, धन और स्त्रिया त्याग देती हैं।

आहारस्य परंधाम शुक्रं तद्रक्ष्यमात्मनः।
क्षये ह्यस्य बहून्दोषान्मरणं चाधिगच्छति ॥19॥

आहार—भोजन का सर्वोत्तम परिपाक वीर्य है, इसीलिए मनुष्य को चाहिए कि वह इस वीर्य की रक्षा करे। क्योकि इस वीर्य के क्षीण होने पर मनुष्य बहुत दोषो को यहा तक की मृत्यु को भी प्राप्त हो जाता है।

एकः शयीत सर्वत्र न रेतः स्कन्दयेत क्वचित्।
कामाद्धि स्कन्दयन् रेतो हिनस्ति व्रतमात्मनः ॥20॥

सब स्थानों पर ब्रह्मचारी अकेला सोवे तथा कहीं भी वीर्य स्खलन न करे क्योकि काम वश वीर्य पात करता हुआ ब्रह्मचारी अपने ब्रह्मचर्य व्रत को नष्ट कर देता है।

(क्रमशः)

सम्पादकीय-

आर्य समाज और हिन्दू समाज

भारत के हिन्दुओं का भविष्य क्या है? दूसरे धर्मावलम्बी धीरे-धीरे उनके महत्व को समाप्त तो न कर देंगे? 15-20 वर्ष के पश्चात् यह स्थिति तो न होगी कि जो हिन्दू आज अपने ही देश में बहुमत हैं, वे ही अल्पमत हो जाएं? और उसी के साथ उनका राजनैतिक महत्व भी समाप्त हो जाए?

इस प्रकार के कई प्रश्न आजकल हिन्दू समाज में किए जा रहे हैं। जहां दो-चार हिन्दू इकट्ठे होते हैं। वहीं कहने लगते हैं कि हिन्दुओं का क्या बनेगा? भारत सरकार की धर्म निरपेक्ष नीति का कुछ पता नहीं चल रहा। एक तरफ वह कहती है कि वह किसी भी धार्मिक संस्था के साथ अपना कोई सम्बन्ध रखना नहीं चाहती। दूसरी तरफ अपनी राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए वह उनके साथ कई प्रकार के समझौते भी कर लेती है। कांग्रेस के नेता विशेष कर हिन्दुओं की धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं के विरुद्ध बोलते रहते हैं। परन्तु आवश्यकता पड़ने पर मुसलमानों, ईसाईयों, सिखों की धार्मिक संस्थाओं के साथ समझौता करने को भी तैयार हो जाती है। केरल में कांग्रेस ने मुस्लिम लीग के साथ समझौता कर रखा है। पंजाब में अकाली दल के साथ ईसाईयों की कोई राजनैतिक पार्टी नहीं है। यदि बने तो कांग्रेस उनके साथ भी समझौता करने को तैयार हो जाये। वह अल्पसंख्यक धार्मिक संस्थाओं को जो महत्व देती है, उसका अनुमान हम इस से लगा सकते हैं कि पिछले दिनों जब ईसाई जगत् का महान् नेता पोप पाल भारत आया था, तो भारत सरकार की ओर से उसका भव्य स्वागत किया गया था। एक धर्म निरपेक्ष सरकार को किसी धार्मिक नेता का इस प्रकार स्वागत करना उचित प्रतीत नहीं होता। जो महत्व ईसाई जगत् में पोप को दिया जाता है, वही महत्व हिन्दू जगत् में शंकराचार्य और दूसरे संन्यासियों को दिया जाता है। परन्तु हमारी सरकार ने कभी इनमें से किसी का इस प्रकार स्वागत नहीं किया जैसा कि पोप पाल का किया गया। मुसलमानों की भावनाओं के तुष्टिकरण के लिए हमारी सरकार ने पिछले दिनों शाहबानो केस के सुप्रीम कोर्ट के फैसला को बदल दिया था। जब हिन्दू कोड बिल बनाया गया था तो कई हिन्दू संस्थाओं ने उसके विरुद्ध प्रस्ताव पास किये थे। परन्तु पं. जवाहरलाल नेहरू एक भी सुनने को तैयार न थे और तो और उन्होंने उस वक्त के राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद के विरोध की परवाह भी न की थी और हिन्दू कोड बिल पास कर दिया था।

कहने का अभिप्राय यह है कि यद्यपि हिन्दू इस देश में बहुसंख्यक हैं फिर भी दिन प्रतिदिन उनका महत्व कम हो रहा है। यह एक ऐसी स्थिति है जो सारे हिन्दू जगत् के लिए चिन्ता का कारण बनी हुई है। और हिन्दू प्रायः आपस में यही सोचते रहते हैं कि उनका क्या बनेगा। सारे हिन्दू जगत् में एक निराशा छाई हुई है। जिसके कारण न तो वे अपने राजनैतिक अधिकारों के लिए लड़ सकते हैं, न सामाजिक अधिकारों की रक्षा कर सकते हैं।

यह एक अत्यन्त गम्भीर स्थिति है जिस पर प्रत्येक उस व्यक्ति को विचार करना चाहिए जो न केवल हिन्दू जाति के भविष्य को उज्ज्वल देखना चाहता है, साथ ही अपने देश की एकता स्वाधीनता और संगठन को भी सुदृढ़ देखना चाहता है। हमारे विरोधी हमारे विषय में चाहे कुछ कहें हमें इस वास्तविक स्थिति को नहीं भूलना चाहिए कि यह देश हिन्दुओं का देश है। वास्तव में यह आर्यों का देश है। इतिहास के किसी युग में आर्यों को हिन्दू कहा जाने लगा। क्योंकि यह देश हिन्दुओं का देश है, इसलिए हिन्दुस्तान कहा जाने लगा। पाकिस्तान बनने से पहले भी इसे हिन्दुस्तान ही कहते थे। मुसलमान भी इसे हिन्दुस्तान कहते थे। यही कारण था कि उर्दू के विख्यात कवि डा. मुहम्मद इकबाल ने तराना-ए-हिन्दी नाम की अपनी कविता में लिखा था :—

"सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा"। यह सब कुछ लिखने के बाद इकबाल ने पाकिस्तान का झण्डा उठा लिया। परन्तु उसकी कलम से हिन्दुस्तान के विषय में जो कुछ निकल चुका था वह तो बदला न जा सकता था। कहने का अभिप्राय यह कि हम अपने देश को आज चाहे भारत कहें और चाहे हिन्दुस्तान कहें। है तो यह वास्तव में हिन्दुओं का ही देश। हम न तो मुसलमानों को यहां से निकालना चाहते हैं और न ईसाईयों को, सिखों को निकालने का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता वे उसी प्रकार हिन्दू हैं, जैसे हम। उन में से कुछ के दिमाग में एक खलल पैदा हो गया है। इस लिए वे खालिस्तान की बात करते हैं, वास्तविक स्थिति तो यह है कि दसों के दसों गुरु उनके इसी देश में पैदा हुए थे और गुरु गोविन्द सिंह जी तो कहते थे कि उनकी मातृभाषा हिन्दी है। उन्होंने अपनी आत्म कथा विचित्र नाटक में हिन्दू देवी-देवताओं के विषय में जो कुछ लिखा है, उसे पढ़ कर कोई व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि वे हिन्दू न थे। उन्होंने अपनी तरफ से 50 पण्डित संस्कृत पढ़ने के लिए बनारस भेजे थे। अपनी आत्म कथा "विचित्र नाटक" उन्होंने लिखा तो हिन्दी में था, परन्तु उसके प्रत्येक अध्याय के अन्त में संस्कृत में उसे समाप्त किया है। इसलिए हम यह कैसे मान सकते हैं कि वे हिन्दू न थे। सिखों में कुछ व्यक्ति यह आवश्यक कहते हैं कि वे हिन्दू नहीं हैं। उन्हें अधिक महत्व देने की आवश्यकता नहीं है। कुछ राजनैतिक स्वार्थ को सामने रखते हुए वे ऐसी बातें कर रहे हैं। वास्तविक स्थिति तो यह है कि सिख तो हिन्दुओं से अलग नहीं हैं, लेकिन मुसलमान और ईसाई इन दोनों में और हिन्दुओं में बहुत अन्तर है। हम अपने आपको धोखे में रखते हैं, जब हम हिन्दू मुस्लिम भाई-भाई कहते हैं। जो मुसलमान और ईसाई कई पीढ़ियों से इस देश में रह रहे हैं, हम उनके साथ भाईयों जैसा व्यवहार करने को तैयार हो सकते हैं। अगर वे भी बाहर की दुनिया को भूल कर भारत को ही अपनी मातृभूमि और पुण्य भूमि समझने को तैयार हों। मुसलमानों की पुण्य भूमि मक्का और मदीना है। ईसाईयों की पुण्य भूमि यरूसलम और जहां तक हमारा सम्बन्ध है हमारे विषय में तो इकबाल लिख गये हैं :—

"खोके वतन का मुझ को हर जर्रा देवता है" अर्थात् प्रत्येक हिन्दू के लिए इस देश का कण-कण एक देवता है यदि इस सारी स्थिति को हम समझ लें तो जो समस्यायें आज हमारे सामने खड़ी हो रही हैं। उन का समाधान ढूंढना आसान हो जायेगा। मेरा यह भी निश्चित मत है कि वह समाधान केवल आर्य समाज ही ढूंढ सकता है। यह क्यों? और कैसे? इसका उत्तर आगामी अंक में दूंगा।

—वीरेन्द्र

श्रीमती विमला इन्दु का देहावसान

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तरंग सदस्य तथा आर्य समाज फगवाड़ा के प्रमुख कार्यकर्ता प्रसिद्ध आर्य नेता श्री वैद्य ओम्प्रकाश जी इन्दु की धर्म पत्नी श्रीमती विमला इन्दु जी का 30-8-86 शनिवार को आकस्मिक निधन हो गया। श्रीमती विमला जी का फगवाड़ा के धार्मिक क्षेत्र मे विशेष स्थान था। वह केवल धार्मिक प्रवृत्ति की ही नही थी बल्कि धार्मिक कृत्यो को करने वाली भी थी। वह एक साहसी महिला थी जो कार्य उन्होने अपने हाथ मे लिया उसे पूरा करके छोड़ा। श्री ओम्प्रकाश जी इन्दु के साथ वह कन्धे से कन्धा मिला कर चलती थी। अचानक उनका चले जाना 'इन्दु' परिवार के लिए तथा फगवाड़ा की धार्मिक सस्थाए तथा आर्य समाज के लिए एक दुखदायी घटना है। प्रभु उनकी आत्मा को सद्‌गति प्रदान करे और इन्दु परिवार को इस असहाय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—सह-सम्पादक

जन्म-मरण की उलझन—१०

नाशवान—नश्वर—देह

लेखक—प्रा श्री भद्रसेन जी वर्शनाचार्य
साधु आश्रम (होशियारपुर)

आज जब भजनो के पश्चात सर्व प्रिय जी ने कथा शुरू की, तो उन्होंने कहा, पिछले सत्संग की समाप्ति पर कुछ सज्जन मेरे पास आए थे और शोक की अभिव्यक्ति करते हुए कहने लगे, श्रीमान जी आपने भी यह दुखद समाचार सुना होगा, कि पड़ोस से एक बारात बस द्वारा गई थी। रास्ते मे जब एक दूसरी बस ने उससे रास्ता मांगा, तो बाराती खुशी के नशे में अपने ही मूढ मे थे, उन मे से कुछ नव-युवको ने चालक को प्रोत्साहित किया। चालक ने अपनी बस तेज कर दी, इस प्रकार उन दोनो बसो मे काफी देर तक आगे निकलने की ललक लगी रही। इसी भाग दौड मे बारात की बस चालक के काबू से बाहर हो गई तथा इतनी बुरी तरह से दुर्घटना हुई, कि 40 बाराती घटना स्थल पर ही दम तोड गए, शेष हस्पताल मे किसी न किसी अंग से अपाहिज हो कर अपना इलाज करा रहे हैं।

वैसे तो प्रतिदिन कही न कही रेल, बस, वायुयान आदि वाहन और विस्फोट की दुर्घटना या अपहरण, तूफान, आगजनी, गोली काण्ड आदि से एक साथ अनेको की मृत्यु होती रहती है। पर पड़ोस की बात होने से हर एक की जबान पर इसी की चर्चा है। इस दुर्घटना को सुनकर प्रत्येक के मन मे अनेक आशकाए उभरती हैं, कि क्या इन सब की मौत पहले से ही निश्चित थी ? या यह एक स्वतन्त्र दुर्घटना है ? क्या भगवान की मर्जी से ही सब कुछ होता है या घटने वाली घटना के पीछे कोई ऐसी व्यवस्था होती है जिस के अनुसार घटनाए घटती हैं ? इन मे से कुछ बातो पर हम पहले विचार कर चुके हैं और कुछ पर गहराई से आगे विचार करेंगे। आज सब से पहले सोचने वाली बात तो यह है, कि जिस किसी की भी कारण से मौत हो, वह होती शरीर की ही है।

अतः केवल हमारे द्वारा प्रतिदिन बरती जाने वाली दुनियावी चीजें ही अस्थिर नहीं हैं, अपितु हमारा यह शरीर, जो कि 'देवाना पुरी अयोध्या' कहलाता है और जिस को हम सवेरे से शाम तक पालते पोसते हैं तथा हर समय सवारने मे लगे रहते हैं, वह भी नाशवान है, पता नही कब किधर से आंधी का कैसा झोका आए और यह डण्ठल से अलग हुए पत्ते की तरह नीचे ही पड़ा दिखाई दे। तभी तो वेद ने पूर्व मन्त्र के दूसरे भाग मे कहा है—'पर्णे वो वसतिष्कृता' अर्थात पत्ते जैसे पतनशील शरीर मे तुम्हारा वास है। आए दिन होने वाली जो घटनाएं सामने आ रही हैं, उन से तो यही सिद्ध होता है कि इस शरीर का कोई भरोसा नही, कब यह जवाब दे जाए ? शरीर शब्द का भी यही भाव है, कि ससार की अन्य विनाशशील वस्तुओ की तरह यह भी क्षीण होने वाला है। शास्त्रो मे स्थान स्थान पर शरीर की नश्वरता का सकेत मिलता है। जैसे कि 'तव शरीर पतयिष्णु' ऋ 1,163,11 तेरा यह शरीर नष्ट होने वाला है, अथेद भस्मान्त शरीरम यजु 40,15—शरीर का अन्त भस्म ही है, जो कि अन्त मे धरती की धूल में ही समा जाती है, अर्थात हम सभी का शरीर विनाशशील है और ऐसा सभी शरीर धारियो के साथ होता है, यह किसी एक की बात नही। तभी तो विरागीजन अनेक बार विविध रूप मे एक आख्यान सुनाते हैं।

एक दम्पती किसी महात्मा के चरणो मे पहुचे, अभिवादन के पश्चात जब वे सामने बैठे, तो महात्मा जी ने उनके मुख को देख कर कहा, क्या बात है ? बहुत ही उदास, निराश और हताश दिखाई देते हो। यह सुनते ही एक दम दोनों ने रोना शुरू कर दिया, कुछ समय बाद रून्धे गले से पति ने कहा, महात्मा जी हमारी तो दुनिया ही लुट गई, हमारे जैसा दुखी, दुर्भाग्यशाली इस ससार में और कोई भी नहीं है। अब तो छुटकारे का एक ही रास्ता दिखाई देता है, कि हमारे भी प्राण निकल जाए, क्योकि हमारी आखों का तारा, हृदय कमल अब इकलौता सजीव हमे रोते-बिलखते छोड कर चला गया है। अब हमे चारो ओर अन्धेरा ही अन्धेरा दिखाई देता है। इसी लिए सिर पटक-पटक कर हम जहा-तहां अपनी मौत ढूढ रहे हैं। हमें न अब खाना अच्छा लगता है और न ही अब जीने की इच्छा है।

महात्मा जी ने अनेक तरह से धैर्य बधाने का प्रयास किया, पर वे दोनो एक दम रोने लग जाते और अपने पहले वाले शब्दो को दुहराते हुए कहने लगते भगवान न जाने हम से क्यो नाराज हैं, हम पर यह पहाड जैसे दुख क्यो डाल रहा है। बार-बार धैर्य बधाने के बाद भी जब उन मे कोई अन्तर न आया, तो महात्मा जी ने कहा—आप दोनो सोचते हैं, कि हम जैसा इस दुनिया में कोई दुखिया नही है। अत तुम दोनो जाकर पहले किसी ऐसे घर से एक रोटी लाकर दो, जिस घर मे किसी भी सदस्य की कभी मृत्यु न हुई हो, इस के बाद फिर अगली बात करेंगे।

अपने आपको सब से अधिक दुखी समझते हुए, वे दम्पती वहा से चले और महात्मा जी के कथन को पूरा करने के लिए एक के बाद एक घर का द्वार खटखटाने लगे और बडी आशा के साथ अपनी बात बता कर रोटी मांगते। पर साय तक सारे कस्बे मे घूमने पर भी उन्हें कोई ऐसा घर न मिला। तब थक कर खाली हाथ महात्मा जी के पास पहुचे। सारी स्थिति का स्मरण कराते हुए महात्मा जी ने कहा—यह कोई तुम्हारे अकेले की ही बात नही, अपितु सभी ग्रामो और नगरों की यही स्थिति है, क्योकि इस दुनिया मे आना-जाना सदा चलता रहता है। जो भी इस ससार मे आता है, वह एक न एक दिन यहा से अवश्य ही जाता है, कोई भी यहा सदा नही रहता। अत यह बात केवल तुम्हारे साथ ही नहीं हुई, ऐसा सभी के साथ होता है।

धैर्य के साथ कुछ विचार करो, तुम दोनो अभी बहुत बूढे नही हुए, तुम्हारे शरीर स्वस्थ हैं, तुम्हारे पास जीवन निर्वाह के योग्य एक अच्छा मकान है और पर्याप्त कमाई का साधन है तथा सब से बडी बात तो यह है कि अभी तुम्हारे दो बच्चे और भी हैं, यह ठीक है कि वे उसे का स्थान नहीं ले सकते, पर वैसे ही बालक हैं। उनका ठीक प्रकार से पालन करो, इस में क्या बात है, कि वे तो लडकियां हैं, समय के साथ इस भावना में बहुत अन्तर आ रहा है। उनको भी हर प्रकार से योग्य बनाओ, वे तुम दोनो के भविष्य की आशायें अवश्य ही पूर्ण करेंगी। इतना अधिक हताश, निराश, उदास होने की कोई बात नहीं ? सब तो दोनों के सहयोग से चलता है, तुम्हारा योगदान कभी छिप नहीं सकता। अत हर तरह से धैर्य धारण करके अपने कर्त्तव्य का पालन करो, हमें कभी भी ऐसी लापरवाही नहीं होनी चाहिए, जिस से फिर पछताना पडे। हमें कभी भी इस भ्रम में नही रहना चाहिए, कि मैं बालक हूं तो इतने दिन जीना लिखा है और मेरी आयु तो अभी केवल इतनी ही हुई है। कोई पता नहीं कब कैसी घटना घट जाए, कि जिस के परिणाम स्वरूप यह मिट्टी की काया मिट्टी में ही मिली हुई मिले। क्योकि बहुत सारे अपनी लापरवाही, बदपरहेजी, आहार विहार की अनियमितता, शराब आदि नशे में और बार-बार गलत व्यवहारो के दुष्परिणामों या ठोकरो से न सम्भलते हुए भी जानबूझ कर मौत को बुलाने का कार्य करते हैं। परस्पर के ईर्ष्या द्वेष से एक दूसरे पर घातक आक्रमण करते हैं, आश्चर्य है, कि पुनरपि हम बडे सहज रूप में कहते हैं कि मौत पर किस का वश है ?

प्रतिदिन सामने वाली लडाई की घटनाओ तथा दुर्घटनाओं से भी यही सिद्ध होता है, कि यह भौतिक शरीर विनाशशील है। इसीलिए शरीर शब्द के स्वारस्य को स्पष्ट करते हुए निरुक्तकार यास्क ने लिखा है, कि शरीर का स्वभाव कटने, मरने वाला है, जब कभी जहा-कहीं से कट जाता है तथा यह ठण्डा पड जाता है अर्थात न जाने किस घटना के कारण यह कब ठण्डा पड जाए, आये दिन यही तो हम अपने चारो ओर देख और सुन रहे हैं, कि किसी के हाथ में तराजू या कलम पकडा का पकडा ही रह जाता है। आगजनी, यन्त्रों तथा यानों की दुर्घटनाओ और बदले की भावना से होने वाले आक्रमणो, बन्धको ने मौत को खिलौना ही बना कर रख दिया है। जैसे खिलौने को कोई जब चाहता है, जैसे चाहता है तोड-मरोड कर रख देता है। यही कुछ भौतिक शरीरों का रूप सामने आ रहा है।

इन बातो को सुन कर पूछने की अनुमति प्राप्त करके विवेकशील ने कहा, कि इस सब का फिर तो यही भाव हुआ, कि आयु निश्चित नहीं है अर्थात् अकालमृत्यु भी होती है। परन्तु भाग्यवाद के अनुसार तो सब की आयु निश्चित बताई जाती है और यहाँ काल मृत्यु ही मानी जाती है। उन की मान्यता के अनुसार जिस की जिस समय जिस स्थान पर जिस रूप में मृत्यु लिखित है, उसी रूप मे ही उसकी मृत्यु होती है। अच्छा हो यदि अब मे इस विषय पर भी कुछ प्रकाश डालें।

(क्रमशः)

पंजाब बचाओ

लेखक—श्री रणवीर जी भाटिया
बी. 12।316, शाहपुर रोड लुधियाना

सृष्टि रचियता भयभंजन-हमारे, सत सुनो अब मेरी ।
घोर अत्याचार करते उग्रवादी, देख पुलिस कमजोरी ॥
इन दुष्टों के हमें बचालो, हिंसा यह हैं दिन-रात करते ।
मासूम जिन्दगियो से खेलते हैं यह,
न यह कर्मों का विचार करते ॥
क्रूरता इन के मन में भरी है, आज देश इनका शोक बना ।
न देखते यह किसी की लाचारी, शोषण करते रोज नया ।
सर्व शक्तिमान् प्रभु जगत् पालक, अब तुम्हारा एक सहारा है ।
नही भरोसा रहा सरकार पर, अब तुम्हारी ओर दृष्टि है ।
संचार करो शक्ति भुजाओ में, आज़, उठे हृदय मे ऐसी ज्वाला ।
अत्याचारी को नष्ट करने में, सभी में हो एक जोश निराला ।
पंजाब बचाओ, देश बचाओ, कोरी बातो से तो होगा नही ।
जब तक नही मैदान में उतरते,
"भाटिया" काम बनने वाला नहीं ।

ओम् नाम के हीरे मोती

ओ३म् नाम के हीरे मोती, मैं बिखराऊं गली-गली ।
ले लो रे ! कोई ओ३म् का प्यारा, आवाज़ लगाऊं गली गली ॥
माया के दिवानो सुन लो, इक दिन ऐसा आएगा ।
धन-दौलत रूप खजाना, धरा यही रह जाएगा ॥
सुन्दर काया माटी होगी, चर्चा होगी गली-गली ।1।
ले लो रे ! कोई ओ३म् का प्यारा, ...
मित्र—प्यारे सगे सम्बन्धी, इक दिन तुझे भुलायेंगे ।
कल तक जो कहते थे अपना, अग्नि मे तुझे जलायेंगे ॥
दो दिन का यह चमन खिला है, फिर मुरझाये कली-कली ।2।
ले लो रे ! कोई ओ३म् का प्यारा... ..
क्यो करता है तेरी मेरी, छोड़ दे इस अभिमान को ।
छोड़ जगत् के झूठे धन्धे, जपले प्रभु के नाम को ॥
गया समय फिर हाथ न आये, फिर पछताये घड़ी-घड़ी ।3।
ले लो रे ! कोई ओम् का प्यारा .....
जिसको अपना कह कह करके, मूरख तू इतराता है ।
छोड़ दें तुझे साथ जिस्म में, साथ नही कोई जाता है ।
दो दिन का है रैन बसेरा, आखिर होगी चलो-चलो ।4।
ले लो रे ! कोई ओ३म् का प्यारा... ...
जिन-जिन ने ये मोती लूटे, वे सब मालो-माल हुए ।
नाम के जो बने पुजारी, आखिर वे कमाल हुए ॥
सोना-चांदी माया वालो, मैं समझाऊं गली-गली ।5।
ओ३म् नाम के हीरे मोती.......,.
—(सत्यनारायण आर्यों-मुबारकपुर)

आर्य समाज सोहन गंज दिल्ली का चुनाव

आर्य समाज सोहन गंज दिल्ली का वार्षिक चुनाव गत 23जुलाई86 को शान्ति पूर्वक सम्पन्न हुआ और निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए ।

प्रधान—श्री शिवप्रसाद गुप्ता ।
मन्त्री—श्री प्रेम सागर ।
कोषाध्यक्ष—श्री हेमसिंह जी ।

महिला आर्य समाज
प्रधाना—श्रीमती कृष्णा रहेजा ।
मन्त्राणी—श्रीमती प्रेम कुमारी जी
कोषाध्यक्ष—श्रीमती कमलेश जी ।
मन्त्री

आतंक पीड़ित परिवार सहायक कोष के लिए प्राप्त राशियों की सूची

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने आतंकवाद से पीड़ित भाईयों की सहायता के लिए एक सहायता कोष आरम्भ किया है जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली ने भी 5 हजार रुपया भेजा है और इसमे निम्न महानुभावो ने भी दान दिया है । हमारी और भी दानी महानुभावो से प्रार्थना है कि इस सहायता कोष में अधिक से अधिक धन भेजें ।

सत्यव्रत शर्मा
सभा महामन्त्री

1	के के पुरी, मोगा	1100-00
2	आर्य समाज मनीमाजरा चण्डीगढ	580-30
3	आर्य समाज गौशाला रोड फगवाडा	500-00
4	यशपाल जी दुग्गल द्वारा आर्य समाज गौशाला रोड फगवाडा	101-00
5	हीरालाल जी ग्रोवर द्वारा आर्य समाज गौशाला रोड फगवाडा	21-00
6	सनातन धर्म सकीर्तन मण्डल द्वारा आर्य समाज फगवाडा	101-00
7	जगदीशचन्द्र जी छाबडा द्वारा आर्य समाज गौशाला रोड फगवाडा	20 00
8	कालीचरण जी सूद आर्य समाज गौशाला रोड, फगवाडा	10-00
9	श्रीमती वेदवती जी गहन द्वारा स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना	250 00
10	श्रीमती शान्ता अग्रवाल, स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना	101-20
11	श्रीमती पुष्पा जी द्वारा स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना	201-00
12	गुप्त दान द्वारा स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना	170-00
13	श्रीमती विद्यावती आर्य द्वारा स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना	100-00
14	पुष्पा बोगिया द्वारा स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना	100 00
15	श्रीमती विद्यावती गौड द्वारा स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना	51-00
16	श्री प्रदीप भल्ला द्वारा स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना	51-00
17	श्री उषा रानी द्वारा स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना	51-00
18	श्रीमती सीता जी मदान द्वारा आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना	21 00
19	श्री यशवती डोगरा द्वारा स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना	21 00
20	श्री सन्तोष गुप्ता द्वारा स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना	22-00
21	श्रीमती कुन्ती देवी द्वारा स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना	21-00
22	श्री कैलाश पाहवा द्वारा स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना	11-00
23	वैद्य ओमप्रकाश जी इन्दु फगवाडा	51-00

आर्य प्र. नि. सभा पंजाब से सम्बन्धित सब आर्य समाजों के अधिकारियों की सेवा में

जैसा कि आपको मालूम है पंजाब में पिछले एक वर्ष में 500 से अधिक व्यक्ति मौत के घाट उतारे गए हैं। उनमें अधिकतर हिन्दू हैं। जो मारे गए हैं, उनके परिवारों को सरकार की ओर से कोई सहायता नहीं मिल रही। कई विधवायें रो रही हैं, कई बच्चे चीख रहे, क्योंकि उन्हें रोटी देने वाला उनसे छीन लिया गया है। स्थिति कितनी गम्भीर है जिसका अनुमान पिछले दिनों उस समय लगा जब मैं और हमारी सभा के मान्य मन्त्री श्री सरदारीलाल जी आर्य रत्न हम दोनों फतेहगढ चूड़िया गये थे। आर्य समाज बटाला के प्रधान, मन्त्री और दूसरे अधिकारी भी हमारे साथ गये थे। फतेहगढ चूड़िया मे आर्य समाज का एक बहुत पुराना मन्दिर है और वहा के आर्य भाई भी बहुत सक्रिय रहते हैं। हमने आर्य समाज मन्दिर फतेहगढ चूड़िया मे जाकर उस नगर के प्रमुख हिन्दुओ से बैठकर बात की वहा हमे पता चला कि जिन परिवारो के कमाने वाले मार दिए गए हैं सरकार ने उन की कोई सहायता नही की। जो कभी पीड़ित सिख भाई या बहनें दूसरे प्रान्तो से आते हैं, हमारी सरकार उनकी प्रत्येक प्रकार से सहायता करती है, परन्तु जो हिन्दू मारे जाते हैं उनके परिवारो की कोई सहायता नही करती। मुझे वहा 5 परिवार ऐसे मिले, जिनके पास अब कुछ खाने को भी नही है। मैंने उन्हें यह आश्वासन दिया था कि आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब की ओर से उनकी जो भी सहायता हो सकेगी, हम करेंगे दूसरे कई शहरो मे भी कई ऐसे परिवार है, जिनके प्रमुख व्यक्ति या कोई कमाने वाला मार दिया गया है और सरकार की ओर से उनकी भी कोई सहायता नही की गई।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को अपने ऐसे भाईयो की सहायता अवश्य करनी चाहिए। फतेहगढ चूड़िया वाली देवियो को तो मैं यह आश्वासन दे आया हूं कि हम उनकी सहायता अवश्य करेंगे। हो सकता है जब हम दूसरे शहरो मे जाए तो वहा भी हमे ऐसे परिवार मिल जाए। इसके लिए आवश्यक है एक आतक पीड़ित परिवार सहायता कोष शुरू किया जाये। आपसे प्रार्थना है कि आप अपने नगर म रे इस कोष के लिए जितना भी अधिक धन इकट्ठा कर सकें, कर के हमे भेजें। मैं सोच रहा हू कि हम दूसरे स्थानो पर भी जाए, जहा ऐसे परिवार रहते हैं। जिनकी हमे सहायता करनी चाहिए। परन्तु वहा जाने का लाभ तभी हो सकता है, यदि हम अपनी सभा की ओर से उनकी कोई सहायता कर सकें। इसमे मैं आपका और आपकी आपकी आर्य समाज का योगदान चाहता हू। हम जिन-जिन को सहायता दिया करेंगे, उसकी सूचना समाचार-पत्रो में प्रकाशित करवा देंगे। इस प्रकार के जो पीड़ित परिवार हैं, सभा की ओर से उन्हें कम से कम पाच हजार रुपया की सहायता तो अवश्य मिलनी चाहिए। आज की परिस्थितियों मे इससे कम की सहायता से किसी का कुछ न बनेगा। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि आय प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित प्रत्येक आर्य समाज अवश्य कुछ न कुछ इकटठा करें और वह राशि हमे भिजवा दें हम उसकी सूचना आर्य मर्यादा मे प्रकाशित कर दिया करेंगे। आशा है आप इस ओर विशेष ध्यान देंगे। पंजाब मे बहुत बड़ा सकट हिन्दुओ पर आ रहा है, आय समाज को उसमे सक्रिय रूप से अपने उन भाइयो की सहायता करनी चाहिए जो उग्रवादियो के शिकार हो रहे हैं।

वीरेन्द्र
सभा प्रधान

ब्रह्मदत्त शर्मा
सभा महामन्त्री

आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर में स्थापना दिवस मनाया गया

आर्य समाज शक्ति नगर का स्थापना दिवस 17 अगस्त रविवार को बड़ी धूम धाम से मनाया गया। प्रात महान गायत्री यज्ञ किया गया इसके उपरान्त पंजाब बचाओ, देश बचाओ दिवस मनाया गया। सभा की ओर से भेजा गया प्रस्ताव पारित किया गया और प्रस्ताव की प्रतियां प्रधानमन्त्री तथा पंजाब प्रान्त के गवर्नर को भेजी गई।

दोपहर को प्रीति भोज दिया गया जिसमे सब आर्य समाजो के सदस्यो ने भाग लिया।

—रामरक्खामल

क्या है लाभ जीने से—

लेखक—श्री मोहनलाल शर्मा 'रश्मि'
907/ए क्रीसेण्ट गंज, दाहोद (गुजरात)

लगाया ही नहीं तुमने, किसी का दर्द सीने से।
किसी के काम न आये तो क्या है लाभ जीने से॥

सीखा ही नहीं तुमने, किसी की आग में जलना।
मजा क्या है पता तुमको, ये कड़वे घूंट पीने से॥

ये निश्चय जान लो प्यारे मिलेगी शान्ति तुमको।
किसी टूटे हुए दिल के भाई जख्म सीने से॥

यहां चोरी अनीति का है लगा अम्बार तेरा ये।
वही धन काम आयेगा, जो कमाया है पसीने से॥

इन झूठे कंकड़ पत्थर को, लिए फिर रहे हो क्यो।
उठाया लाभ न तुमने कभी यहां सच्चे नगीने से॥

बरबादियो का हाल "रश्मि" हमसे क्या पूछो।
अफसाना सारा कह रहे ये दो नैन भीने से।

ऋषि मेले का आयोजन

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दीपावली के अवसर पर अनासागर के सुरम्य तट पर ऋषि उद्यान मे दिनाक 7-8-9 नवम्बर, 1986 अर्थात् शुक्र, शनि, रविवार को समारोह पूर्वक मनाया जाएगा।

इस अवसर पर आर्य जगत् के मूर्धन्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज, स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज, प उदयवीर जी शास्त्री दर्शनाचार्य, महात्मा आर्य भिक्षु जी वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर, प्रो शेरसिंह जी भू पू केन्द्रीय मन्त्री हरियाणा, डा भवानी लाल जी भारतीय अध्यक्ष दयानन्द शोधपीठ चण्डीगढ साथ ही प आनन्दप्रिय जी बड़ौदा गुजरात आदि सन्यासी, विद्वान् प्रसिद्ध भजनोपदेशक धार्मिक नेता समारोह मे भाग लेंगे और ओजस्वी विचारो से जनता का मार्ग दर्शन करेंगे। इस वर्ष सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया है।

इस वर्ष से आनासागर के तट पर ऋषि उद्यान के मनोरम वातावरण में वानप्रस्थ आश्रम का प्रारम्भ किया गया है। जो महानुभाव वानप्रस्थ एव संन्यास की दीक्षा लेकर अपने जीवन का शेष समय आत्मोन्नति व देशोपकार में लगाना चाहें उनके लिए आदर्श अवसर है।

सभी धर्म प्रेमी अपने परिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।

—डा भवानी लाल जी भारतीय

डा. आनन्द सुमन को कोई सहयोग न दें

हमे पता चला है कि डा. आनन्द सुमन इन दिनों पंजाब तथा अन्य प्रान्तो मे सार्वदेशिक सभा, पंजाब रक्षा कोष तथा शान्ति प्रकाशन के नाम पर धन एकत्र कर रहे हैं। इस प्रकार की शिकायतें सार्वदेशिक सभा मे प्रबुद्ध आर्य जनों और आर्य समाजों से प्राप्त हुई हैं। श्री आनन्द सुमन को सभा ने इस प्रकार के कार्य न करने के लिए सावधान कर दिया था, किन्तु उन्होंने इस पर आचरण नहीं किया। पता चला है कि इन दिनों वह पंजाब में धन एकत्र कर रहे हैं।

अतः समस्त आर्य जनों और आर्य समाजों को सूचनार्थ निवेदन है कि भविष्य मे आनन्द सुमन को किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग न करें क्योंकि सार्वदेशिक सभा विगत कई वर्षों से उन्हें 500 सौ रुपया मासिक सहायता देते आ रही है और उनके आवास आदि की समुचित व्यवस्था भी निःशुल्क की हुई है। उनके द्वारा इस प्रकार धोखे से धन एकत्र करना कानूनी अपराध है। अत एव आर्य जनों, आर्य समाजों तथा अन्य हिन्दू संगठनों की सूचनार्थ यह विज्ञप्ति प्रकाशित की जा रही है।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

पंजाब बचाओ, देश बचाओ

आर्य समाज मुकेरियां का पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव—1. यह सभा भारत सरकार से माग करती है कि पजाब में बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त करें, क्योकि यह प्रान्त मे अल्पसख्यक हिन्दुओ की सुरक्षा तथा कानून व व्यवस्था बनाए रखने मे पूर्णत असफल रही है। अतः पंजाब को सेना के हवाले किया जाए।

बरनाला सरकार अपरोक्ष रूप मे उग्रवादियों को शह देकर खालिस्तान के निर्माण का मार्ग प्रशस्त कर रही है, क्योंकि अकाली दल ने प्रस्तावित "सीमा सुरक्षा बिल" का विरोध किया है।

पजाब से जो हिन्दू विस्थापित होकर अन्य राज्यो मे शरण लिए हुए हैं। सरकार उनके आवास, भोजन और पुर्नवास की व्यवस्था उसी तरह करे, जिस प्रकार 1984 के काण्ड से प्रभावित सिखो के लिए की गई थी।

पजाब मे भयाक्रान्त हिन्दुओ की सुरक्षा के लिए कडे कदम उठाये जाए और उग्रवादियो को कडी से कडी सजा दी जावे।

यह सभा भारत सरकार के सीमा सुरक्षा बिल का जोरदार समर्थन करती है। राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए गुजरात से लेकर काश्मीर तक की सीमा पट्टी की सुरक्षा के लिए यह विधेयक राष्ट्रीय हित मे है।"

मन्त्री

आर्य समाज जलालाबाद (पश्चिमी) जिला फिरोजपुर मे प्रस्ताव पारित किया गया

आर्य समाज जलालाबाद (पश्चिमी) की एक विशेष बैठक श्री मोहन लाल जी मोगा प्रधान आर्य समाज की अध्यक्षता मे हुई जिस मे निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किए गए —

यह सभा भारत सरकार से माग करती है कि पजाब मे बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त करें, क्योकि यह प्रान्त मे अल्पसख्यक हिन्दुओ को सुरक्षा तथा कानून व्यवस्था बनाए रखने मे पूर्णतय असफल रही है। अत पजाब को सेना के हवाले किया जाए।

बरनाला सरकार अपरोक्ष रूप मे उग्रवादियो को शह देकर खालिस्तान के निर्माण का मार्ग प्रशस्त कर रही है, क्योकि अकाली दल ने "सीमा सुरक्षा बिल" का विरोध किया है।

पजाब से जो हिन्दू विस्थापित होकर अन्य राज्यो मे शरण लिए हुए है, सरकार उनके आवास, भोजन और पुनर्वास की व्यवस्था उसी तरह करे जिस प्रकार 1984 के काण्ड से प्रभावित सिखो के लिए की गई थी।

पजाब से भयाक्रान्त हिन्दुओ की सुरक्षा के लिए कडे कदम उठाए जावें और उग्रवादियो, आतकवादियो को कडी से कडी सजा दी जावे।

यह सभा भारत सरकार के सीमा सुरक्षा बिल का जोरदार समर्थन करती है। "राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए गुजराज से लेकर काश्मीर तक की सीमा पट्टी की सुरक्षा के लिए यह विधयक राष्ट्रीय हित मे है।"

प्रतिया प्रेषित —

- प्रधानमन्त्री, भारत सरकार नई दिल्ली
- राज्यपाल, पजाब सरकार चण्डीगढ
- प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर
- साप्ताहिक आर्य मर्यादा जालन्धर
- साप्ताहिक आर्य जगत नई दिल्ली

—रिखीराम मन्त्री

आर्य समाज बंगा रोड़ फगवाड़ का चुनाव

आर्य समाज बगा रोड फगवाडा की साधारण सभा 3 अगस्त 1986 को हुई जिसमे निम्नलिखित अधिकारी नए वर्ष के लिए चुने गए।

प्रधान—महाशय बनारसी दास।
उप-प्रधान—श्री वेद व्रत प्रभाकर
,, श्री त्रिलोक नाथ।
,, श्रीमती चाद भल्ला।
मन्त्री—श्री देशबन्धु चोपडा एम ए
उप मन्त्री—श्री कमल किशोर बरमानी।
,, श्री सुदर्शन कुमार।
,, श्रीमती सुदेश छाबडा।
प्रचार मन्त्री—श्री धर्मदत्त प्रभाकर
कोषाध्यक्ष—श्री देसराज।
आय व्यय निरीक्षक—श्री विजय सरोवर।

—देशबन्धु चोपडा
मन्त्री

गुरुकुल आश्रम, आम सेना (उड़ीसा) मे पारित प्रस्ताव

"श्री राजीव गाधी प्रधानमन्त्री भारत सरकार"

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष के आदेश पर 15 अगस्त को मध्यान्होत्तर 4 बजे आर्य समाज आम सेना, गुरुकुल आश्रम, आमसेना, कन्या गुरुकुल आमसेना आर्य समाज गौतम, जेजरा, ठेलकु बेडा आदि ने मिल कर ब रोड मे विशाल शोभा यात्रा "पजाब बचाओ, देश बचाओ दिवस के उपलक्ष्य मे ब रोड मे विशाल शोभा यात्रा निकाली। यह जलूस राम मन्दिर के सामने सभा के रूप मे बदल गया, वहा प बीरेन्द्र कुमार प विद्या निधि ने ने राष्ट्रीय गीत गाये। श्री प चन्द्रशेखर, श्री शिव प्रताप पाण्डेय ने पजाब समस्या के विषय मे अपने विचार रखे अन्त मे श्री स्वामी धर्मानन्द जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उडीसा ने ओजस्वी शब्दो मे भारत सरकार से माग की कि वह तुरन्त पजाब समस्या को सेना के हवाले करे। फिर उन्होंने तीन प्रस्ताव रखे, जो सर्व-सम्मति से सभा मे स्वीकार हुए।

प्रस्ताव—1 यह सभा विगत 5 वर्षों से पजाब मे हो रही हिंसक गतिविधियो पर गहरी चिन्ता व्यक्त करती है। हमारी माग है कि पजाब के सीमावर्ती जिलो को सेना के हवाले किया जावे।

यह सभा प्रधानमन्त्री श्री राजीव गान्धी के उस प्रस्ताव का समर्थन करती है जो पाकिस्तान से लगी पटटी राजस्थान, पजाब तथा जम्मू काश्मीर पर सीमा सुरक्षा विधेयक द्वारा सविधान मे सशोधन करके आतकवाद तथा पाकिस्तानी घुस पैठ को खत्म करने के लिए कृत सकल्प है।

यह सभा विपक्षी दलो से अपील करती है कि देश हित के कार्यों में सरकार का सहयोग द।

प्रतिलिपि—श्रीमान मुख्यमन्त्री उडीसा भुवनेश्वर
- श्री जिनाधीश कालाहाण्डी भवानी पटना।
- श्री प्रधान जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली।

आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर मे पारित प्रस्ताव

15 8 86 शुक्रवार साय 6 बजे आर्य समाज मन्दिर माडल टाऊन जालन्धर मे श्री बलदेव राज जी वर्मा की अध्यक्षता म एक बैठक हुई जिसमें निम्नलिखित प्रस्ताव सब सम्मति मे पारित किए।

1 यह सभा विगत 5 वर्षों स पजाब मे हो रही हिंसक गतिविधियो पर गहरी चिन्ता व्यक्त करती है। हमारी माग है कि पजाब के सीमावर्ती तीन जिले सेना के हवाले किए जाव।

2 यह सभा प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी के उस प्रस्ताव का समर्थन करती है जो पाकिस्तान से लगी पट्टी राजस्थान, पजाब तथा जम्मू काश्मीर पर सीमा सुरक्षा विधयक द्वारा सविधान मे सशोधन करके आतकवाद तथा पाकिस्तानी घुस पैठ को खत्म करन के लिए कृत सकल्प है।

3 यह सभा विपक्षी दलो स अपील करती है कि देश हित के कार्यों में सरकार का सहयोग द।

—हरवश लाल
मन्त्री

शोक प्रस्ताव

दिनांक 31-8-86 को साप्ताहिक सत्संगोपरान्त आर्य समाज मण्डी बाग, कजाचिया की शोक सभा मे पारित प्रस्ताव—यह शोक सभा एक सत्यवादी स्पष्ट वक्ता, निर्भीक एव कमठ आर्य समाज के कार्यकर्ता वैद्य ओम प्रकाश जी इन्दु की धर्म पत्नी श्रीमती विमला इन्दु के हृदयगति अवरोध के कारण अकस्मात एवम् अकाल निधन पर गहरा दु ख प्रकट करती है। स्वर्गीय सद्गुण सम्पन्न विमला जी का विनम्र स्वभाव, हार्दिक अतिथि सत्कार भाव तथा सदा प्रफुल्लित मुख आदरणीय वैद्य जी को तो क्या किसी को भी विस्मरणीय नही होगा जो कोई एक क्षण के लिए भी स्वर्गीय इन्द के सम्पर्क मे आया होगा। उस परम पिता परमात्मा के नियमो की अटलता को स्वीकार करते हुए यह शोक सभा उस परम पिता परमात्मा से प्राथना करती है कि वह दिवगत आत्मा को सदगति प्रदान करे तथा आदरणीय वैद्य जी के परिवार के सदस्यो, निकट सम्बन्धियो और मित्रो को इस अपरणीय तथा असहनीय दु ख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

यह भी पारित किया गया कि इस की एक प्रतिलिपि वैद्य ओम प्रकाश जी इन्दु तथा उनके शोक विह्वल परिवार से हार्दिक सहानुभूति प्रदर्शन हेतु भेजी जावे।

रमा शर्मा
मन्त्री

आर्य समाज जालन्धर छावनी का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज जालन्धर छावनी का वार्षिक चुनाव 10-8-86 को सर्व सम्मति से निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान—श्री इन्द्रसेन जी मलिक वरिष्ठ उप प्रधान—श्री जनकराज महाजन हैडमास्टर, उपप्रधान—श्री चमनलाल जी नन्दा, मन्त्री—श्री काशीराम जी अग्रवाल, उपमन्त्री—श्री स्वदेश कुमार जी लाला, कोषाध्यक्ष—श्रीराम नाथ जी, लायब्रेरियन—श्री रामचन्द्र जी, अधिष्ठाता आर्य वीर दल—श्री चन्द्र प्रकाश जी गुप्ता।

—स्वदेश कुमार लाला-उप-मन्त्री

आर्य समाज महावीर नगर अरेरा कालोनी, भोपाल में वेद सप्ताह

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि इस वर्ष भी प्रतिवर्ष की भान्ति आर्य समाज मन्दिर महावीर नगर मे 28 अगस्त से 3 सितम्बर 1986 तक वेद सप्ताह मनाया गया। आयोजन का सुरम्य समाज भवन में जो बस स्टाप 10 के समीप है, प्रतिदिन 6 बजे सायकाल से आरम्भ होकर 8-15 सायं तक हुआ उज्जैन महानगरी से आर्य जगत् के ख्याति प्राप्त सन्यासी स्वामी आत्मदेव जी प्रतिदिन वेद कथा करते रहे।

इसके अतिरिक्त आर्य जगत् के अन्य ख्याति प्राप्त विद्वान तथा भजनोपदेशक भी प्रभावशाली उपदेश करते रहे। इन सभी के द्वारा वेद के मूलभूत सिद्धान्तो का सरल और मनोरम विवेचन होता रहा।

सैकड़ो आर्य बन्धुओ ने प्रतिदिन सपरिवार तथा इष्ट मित्रो सहित पधार कर इस सुअवसर का लाभ उठाया।

- आर्य समाज के अन्य क्रिया-कलाप तथा सूचनाएं
- सम्मिलित सत्सग प्रत्येक रविवार प्रात 8 से 10 बजे तक
- महिला समाज सत्सग प्रत्येक शनिवार साय 4 से 6 बजे तक
- सार्वजनिक वाचनालय एव पुस्तकालय।
- धर्मार्थ होमियो चिकित्सा की व्यवस्था।
- संस्कृत शिक्षण की व्यवस्था।
- सगीत शिक्षा एव परीक्षाओ की तैयारी की व्यवस्था।
- वेद सप्ताह मे आर्य साहित्य की बिक्री की व्यवस्था।

—कैलाशचन्द्र गौड़
मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 रजि. नं पी.जे.एल 55

वर्ष 18 अंक25, 6 आश्विन सम्वत् 2043 तदानुसार 21 सितम्बर 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे(वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

महर्षि दयानन्द का यज्ञ विषयक वैज्ञानिक पक्ष--2

लेखक—श्री पं वीरसेन जी वेदश्रमी

षष्ठक्रिया जलसिंचन

पंच घृताहुतियो से जब हमने अग्नि को—इध्यस्व वर्धस्व किया तो अग्नि से उस स्थान विशेष मे तापाधिक्य होगा ही। ताप की वृद्धि से उस तृप्त वायु-मण्डल की परिधि के बाहर चारो ओर का जो वायु का आवरण होगा वह अपेक्षाकृत आर्द्रतापूर्ण होगा। अर्थात् ताप के चारो ओर आर्द्रता का मण्डल स्वभावत: संचित या निर्मित होता है इसी रहस्य को यज्ञ में भी प्रकट करने के लिए पाच घृताहुतियो के पश्चात् जल सिंचन का विधान है। अर्थात् सृष्टि की कार्य प्रणाली में अग्नि होने पर, ताप होने पर जल अवश्य प्रकट होता है। उपनिषद्कारो ने इसीलिए अग्नेराप — अर्थात् अग्नि से जल की उत्पत्ति कहा है। हमारे शरीर मे भी जब अग्नि ताप बढ़ जाता है तो जल से ही उसका शमन सन्तुष्टि होती है। अग्नि में यदि जल डालेंगे तो अग्नि शान्त हो जाएगी। अग्नि को तो प्रदीप्त रखना है, अत अग्नि के चारो ओर जल सिंचन करके जल का मंडल बनाकर, ताप के चारो ओर आर्द्रता स्थापित एव उत्पन्न की जाती है। जो सृष्टि विज्ञान के स्वरूप का प्रदर्शन ही है।

सप्तम् क्रिया-आघारावाज्य आहुतियां

जल सिंचन के पश्चात्-अग्नये स्वाहा की आहुति से सोम की उत्पत्ति होती है। क्योकि ताप के साथ जलीय [illegible] हुआ। [illegible] उत्पन्न सोम के लिए आहुति सामान्य स्वाहा से [illegible] और सोम शक्तियों से प्रजनन अर्थात् प्रजापति शक्ति [illegible] पराक्रम अर्थात् इन्द्र शक्ति का सृष्टि मे सचार होता है। इसी को-प्रजापतये स्वाहा-और इन्द्राय स्वाहा-के रूप मे आहुति देकर सृष्टि मे इन शक्तियो को सामर्थ्यवान् बनाया जाता है।

यज्ञ प्रात:काल एवं सायंकाल करना चाहिए

सृष्टि मे अग्नि और सोम का उद्-गम तथा उनकी परस्पर में आहुतिया प्रात:काल सूर्योदय होने पर प्रारम्भ होने लगती हैं जिससे प्रजापति एव इन्द्र शक्ति सामर्थ्य का वर्धन होता है। वही क्रम सायकाल भी होता है। जब सृष्टि मे प्रकृति का यह यज्ञ प्रारम्भ हो तो हमे भी अपना यज्ञ सूर्योदय एव सूर्यास्त समय मे करना चाहिए। अहोरात्र की सन्धियो, मे किया गया यज्ञ अहोरात्र मे व्याप्त हो जाता है।

यज्ञ की 24 आहुतियों का काल से साम्य

यज्ञ मे 24 आहुतिया हैं। काल भी अहोरात्र रूप से 24 घन्टो के रूप मे विभक्त है। 24 घण्टो का अहोरात्र का काल है। प्राचीन ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से 60 घटिका (घडी) का अहो-रात्र होता है। जिससे एक घडी 24 मिनट की हो जाती है। इस प्रकार दैनिक यज्ञ का सम्बन्ध जहा सृष्टि के तत्वो से है वहा साथ ही अहोरात्र के काल से भी है। इस प्रकार काल सृष्टि से भी यज्ञ मायसी स्वरूप म स्थित है।

अष्टम् क्रिया प्रात;कालीन होम की 4 आहुतियां

इस प्रकार से यज्ञ पृथिवी के अन्त-रिक्ष को क्रियाशील करता हुआ द्युलो-कस्थ अग्नि अर्थात् सूर्य से सम्बन्ध स्था-पित करता है जिससे अग्नि मे दी गई आहुतिया सूर्य मण्डल मे पहुचती हैं। उस समय सूर्योज्योतिर्ज्योति सूर्य: स्वाहा—आदि मन्त्रो से 4 आहुतिया दी जाती हैं।

नवम क्रिया 4 व्याहृति आहुतियां

सूर्य मण्डल को प्राप्त आहुतियो से इस त्रिलोकी मे बस भू:, भुव, स्व: लोको मे, अग्नि, वायु और आदित्य से प्राण, अपान और व्यान प्रवाह गति करता है। अत भूरग्नये प्राणाय स्वाहा आदि 4 मन्त्रो की आहुतियो का विधान किया गया है। इस प्रकार सृष्टि क्रिया विज्ञान रहस्य की प्रक्रिया के बोध के लिए यज्ञ का अनुष्ठान समादरणीय प्रतीत होने लगता है।

दसवीं क्रिया आपोज्योति मन्त्र से आहुति

यज्ञ की पूर्वोक्त प्रक्रिया अब हमे परम लक्ष्य की ओर भी ले जाती है। सृष्टि मे जो यज्ञ चल रहा है उसका सचालक परब्रह्म ओ३म् ही है। जल और अग्नि (तेज ज्योति) ही इस विश्व मे प्रधान रूप से कार्य कर रहे हैं। वृक्ष बनस्पति, अन्न फलादि मे इन दोनो के कारण रस उत्पन्न हो रहा है। अर्थात् आपोज्योति रस:—यह क्रम चल रहा है और उस रस मे—अमृत—जीवन विद्यमान है। अत मन्त्रआपो ज्योति रसो अमृतम्—इस क्रम से अमृत के सचार करने वाले जीवनदाता—ब्रह्म की ओर बढने को कहता है। वही सर्वाधार, सर्वव्यापक सब सुखो का दाता, सर्वदु:ख हर्त्ता, सर्वरक्षक भू, भुव, स्व इन तीनो लोगो मे ऋग्यजु साम मे व्याप्त ओ३म् परम लक्ष्य है। उसे प्राप्त करन के लिए ओ३म् —आपोज्योतीरसो अमृत ब्रह्म भूर्भुव: स्वरोम् स्वाहा—मन्त्र से आहुति का विधान किया है। यह यज्ञ प्रक्रिया सृष्टि विज्ञान के माध्यम से अन्ततोगत्वा पर ब्रह्म तक हमे ले जाती है। आध्यात्म पक्ष मे आप: ही श्रद्धा है उससे उत्तरोत्तर सूक्ष्मता प्रकाश आनन्द अमृत, (मोक्ष सुख) ब्रह्म की प्राप्ति, ब्रह्म के भूर्भुव. स्व भर्ग की प्राप्ति होती है। जिसमे जीवन उन्नत होता है।

ग्यारहवीं क्रिया 3 याचनायें प्रभु से

इस सम्पूर्ण यज्ञ क्रिया के करने के उपरान्त 3 मन्त्रो में निम्न याचनायें की गई है —

1 या मेधा देवगणा—इस मन्त्र से मेधावी करने की याचना।

2 विश्वानि देव—इस मन्त्र से सर्व दु:खादि दूर और कल्याणकारक गुण कर्म स्वभाव की प्राप्ति की याचना।

3. अग्ने नय सुपथा राये—इस मन्त्र से ऐश्वर्य युक्त सुपथ की प्राप्ति की निष्पाप जीवन करने की याचना है जिससे परमात्मा की उपासना, यज्ञादि शुभ कर्मों मे बार-बार प्रवृत्ति होती रहे। अत: उपरोक्त तीन मन्त्रो से आहुति का विधान यज्ञ मे किया गया है।

बारहवीं क्रिया—पूर्णाहुति

यज्ञ का यह सौरभ सर्वत्र व्याप्त हो—सभी को इसका शुभ लाभ पर-मात्मा प्रदान करें और अपना शुभ आशीर्वाद प्रदान करे अत: ओ३म् सर्वं वै पूर्ण स्वाहा। मन्त्र को तीन बार बोलते हुए तीन आहुतिया प्रदान की जाती हैं। ओ३म् भूर्भुव: स्व: कह कर जिस यज्ञाग्नि को प्रदीप्त किया था जो तीन प्रकार की है तीनो लोको मे व्याप्त है उसी के लिए अन्त मे पुन आहुतियों से यज्ञ क्रियापूर्ण हो जाती है।

यज्ञ महाविज्ञान है

इस दृष्टि से देखने पर यज्ञ सृष्टि विज्ञान, प्रकृति विज्ञान, मनोविज्ञान, अध्यात्मविज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, वायु-मण्डल शोधन विज्ञान, वातभेषज निर्माण चिकित्सा विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, मन्त्र विज्ञान आदि अनेक विद्या विज्ञानो से ओत-प्रोत है। अत. यज्ञ महाविज्ञान् है। इस संक्षिप्त लेख मे इसका कुछ लाभ प्रदर्शित किया है। आशा है कि पाठकगण इस यज्ञ कार्य मे रुचि ग्रहण कर यज्ञ को अपनाएगे।

———

जन्म-मरण की उलझन—१०

(गतांक से आगे)

कालमृत्यु या अकालमृत्यु —विवेकशील के प्रश्न के साथ कुछ अन्य श्रोताओं की जिज्ञासा को ध्यान में रखते हुए सर्व प्रिय जी ने कहा—विचारशील सत्संगी बन्धुओ संसार के व्यवहार, जीवन के अनुभव और तर्क, प्रमाण से तो यही सिद्ध होता है, कि किसी की आयु निश्चित नहीं है। समय-समय पर होने वाली महामारियो, दैवी प्रकोपो, दुघटनाओ और युद्धो—

आक्रमणों से भी यही प्रमाणित होता है किसी की आयु निश्चित नही है। वेद मे एक दो स्थान पर ही नही, अपितु सैकडो बार आयु बढाने की प्रार्थनाए आती हैं। जैसे कि 'आयु मे पाहि' यजु 14, 17, प्रायुस्तारिष ऋ 1 34 11, य 34,47, कृणुते दीर्घमायु य 34, 51, नव्यमायु प्र सु तिर ऋ 1,10,11 द्राघीय आयु प्रतर दधाना ऋ 1,53,11 अस्माकमायुर्वर्धयन ऋ 3,61,15 द्रविणोदा रासते दीर्घमायु ऋ 1,95,8) कई स्थलो पर तो प्रार्थनाओं मे आयुवर्धक पदार्थों, क्रियाओ का स्पष्ट सकेत मिलता है। आयुयज्ञन कल्पताम् य 9,21, अस्मायु य 18,5, यदि आयु बढ नही सकती, तो आयु बढाने की प्रार्थनाओ का क्या प्रयोजन है? इसी प्रकार अनेक स्थलो पर वेद मे बीच की मौत से बचने की प्रार्थना की गई है तथा बीच की मौत से बचाने वाले साधनो का भी सकेत किया गया है। मा न मायु प्रमोषी य 8,23, —— मत्याग्नेरिषदायुरन्तो य 25 12 अपमृत्यु दधता पवतेन य 35,15, ब्रह्मचर्येण देवा मृत्युमुपाघ्नत अथव 11,6,19) आयु के निश्चित होने पर बीच की मृत्यु से बचने की चर्चा निरथक सिद्ध होती है।

आयुर्वेद आदि के चिकित्सा ग्रन्थो में आयु को बढाने वाले प्रयोगो और औषधों का विस्तार से वर्णन मिलता है, (विस्तारार्थ लेखककृत—'अमृत की खोज में' 'वीर प्रताप' मार्च अप्रैल 86 मगलवार का सस्करण देखें)। यदि आयु बढ नही सकती, तो इस सारे वर्णन और उपचार का क्या उद्देश्य? चिकित्सा शास्त्र के वचन से तो यही सिद्ध होता है कि आयु घटाई बढाई जा सकती है। इसीलिए ही आयुर्वेद के मान्य आचार्य चरक ने एक सोदाहरण वर्णन दिया है—

प्रश्न—काल मृत्यु और अकाल मृत्यु कैसे होती है?

उत्तर—भगवान आत्रेय ने अग्निवेश से कहा, कि जैसे रथ की धुरी अपनी विशेषताओ से युक्त होती है और वह उत्तम तथा सबगुण सम्पन्न होने पर भी चलते-चलते समयानुसार अपनी शक्ति के क्षीण हो जाने से नष्ट हो जाती है, इसी का नाम काल मृत्यु है। जैसे वही धुरी बहुत बोझ लाद देते हे, ऊचे नीचे मार्ग पर चलने से, पहिए के टूटने से कील निकल जाने से, तेल न देने से बीच मे ही टूट जाती है। उसी प्रकार शक्ति से अधिक काम करने से, उचित रूप से भोजन न करने से, हानिकारक भोजन खाने से, इन्द्रियों के असयम से, कुसगति से, विष आदि खाने से और अनशन आदि से बीच मे ही आयु समाप्त हो जाती है, इसी को अकाल मृत्यु कहते हैं। इसी तरह रोगो की ठीक चिकित्सा न होने से भी अकाल मृत्यु होती है। "अनुवाद चन्द्रिका।"

इस प्रसग को समझने का एक सुन्दर उदाहरण यह भी है, कि हम ग्रीष्म ऋतु मे प्रतिदिन बर्फ के कारखाने से बर्फ लाते हैं। उस बर्फ को कोई आईस बाक्स में, कोई भूसे मे दबा कर और कुछ बोरी मे लपेट कर या कुछ ऐसे ही रखते हैं तो कोई जल मे डालते हैं। इन सब स्थितियों मे बर्फ के पिघलने का समय अलग अलग होता है, चाहे एक ही कारखाने से एक ही सिल्ली से एक जैसी बर्फ लाई जाए। क्योकि उस साधन के बदलने से बर्फ के पिघलने की गति मे अन्तर आ जाता है। ठीक इसी प्रकार शरीर की उम्र के सम्बन्ध में यही स्थिति देखी जाती है। कोई शरीर का सावधानी से प्रयोग करते हैं, तो कुछ जानबूझ कर लापरवाही बर्तते हैं।

प्रतिदिन के अनुभवों और प्रमाणो से भी यह सिद्ध होता है, कि अकाल-मृत्यु होती है। जो कि अपनी या दूसरों की [illegible] या अन्य आदि [illegible] से होती है। उदाहरण के लिए खेल के मैदान मे हम देखते हैं, कि प्रत्येक खेल के खेलने की अपनी-अपनी व्यवस्था के अनुसार समय निश्चित होता है। कहीं अधिकतर खेल अपना-अपना समय पूरा होने पर खत्म हो जाते हैं, कहा कई बार खिलाड़ियो, दर्शकों के विवाद से भी बीच में खेल खत्म हो जाते हैं। ऐसे ही कई बार मौसम आदि की बाधा के कारण खेल समय से पहले ही खत्म हो जाता है। 'खेल खत्म होना' मुहावरा मौत के लिए प्रयुक्त होता है, जिस से यह और भी अधिक स्पष्ट होता है, कि मौत का समय कोई निश्चित नहीं है।

नि सन्देह, अनेक शास्त्रो मे अनेक ऐसे वचन मिलते हैं तथा ऐसी अनेक घटनायें सुनाई जाती हैं। जिन से यह सिद्ध होता है, कि प्रत्येक की मृत्यु का समय निश्चित है। इसी बात को भाग्य, लेख के नाम से पुकारते है। इस विषय मे सर्वप्रथम योगदर्शन का एक सूत्र उपस्थित किया जाता है, कि—'सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगा' 2,13 'ते ह्लाद परितापफला पुण्यापुण्यहेतुत्वात' 2,14—शुभ—अशुभ कर्मों के कारण ही (जाति आयु-भोग) हर्ष शोक सुख दुख रूपी फल को देते हैं। अर्थात जैसे किसी वृक्ष, पौधे के मूल (जड़) के ठीक होने पर उस से समय-समय पर अकुर, पत्त, टहनी, फूल, फल आदि उभरते हैं, ऐसे ही किसी आत्मा के किए हुए कर्मों के कारण, उन कर्मों के अनुरूप जिस किसी प्राणी को शरीर, उम्र और सुख-दुख आदि भोग मिलते हैं। इस प्रकार के शास्त्रो के वचनो को सामने रखकर निश्चित आयु का दावा किया जाता है। यदि इस सूत्र और प्रकरण पर ध्यान दें, तो यहा मूल बात यह है कि जो प्राणी जो भी कर्म करता है। किए जाने पर वह कर्म पहले क्रियमाण, फिर सञ्चित और तदनन्तर प्रारब्ध कोटि मे आता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कर्म के स्वरूप का विवेचन करते हुए लिखा है—'कर्म जो मन, इन्द्रिय और शरीर में जीव चेष्टा विशेष करता है, वह कर्म कहाता है। वह शुभ-अशुभ और मिश्र भेद से तीन प्रकार का है।48।

क्रियमाण—जो वर्तमान मे किया जाता है, सो क्रियमाण कर्म कहाता है। 49, सञ्चित—जो क्रियमाण का सस्कार ज्ञान मे जमा होता है, उसको सञ्चित सस्कार कहते हैं।50, प्रारब्ध—जो पूर्व किए हुए कर्मों के सुख-दुख रूपफल का भोग किया जाता है, उस को प्रारब्ध कहते हैं।' आर्योद्देश्यरत्नमाला।

[illegible] कर्म के अनुरूप ही उस का फल देह, आयु और भोग के रूप में होता है। यहा के प्रकरण के आधार पर यह कहा जा सकता है, कि जाति, आयु, भोग के क्रम से भी यही बात सिद्ध होती है, कि जाति मनुष्य, पशु, पक्षी आदि का [illegible] कर्मानुरूप शरीर मिलता है, उस शरीर के अनुरूप ही उसकी आयु होती है। [illegible] यहा शरीर की आयु की बात है, न कि इस शरीर में रहने वाले की। जैसे जीव विज्ञान से हर प्राणी के शरीर की अपनी-अपनी आयु आकी गई है, जिसे औसत उम्र कहते हैं। यदि कोई उस शरीर को और अधिक व्यवस्थित ढग से बरतता है, तो उसकी उम्र औरों से अधिक होती है। यही बात हम अपने प्रतिदिन के व्यवहार मे देखते हैं, कि यदि किसी के साथ दुघटना नहीं घटती, तो सम्भल कर चलने वाले औरो से अधिक जीते हैं। अत ऐसे स्थल पर उस-उस प्राणी के शरीर मे लगे मसाले की दृष्टि से आयु का सकेत होता है, कि यह शरीर इतने दिन औसतन रूप से चल सकता है। इसी लिए वेद में अनेक स्थलो पर मनुष्य की आयु का एक सौ वर्ष का अधिकतम सकेत है। जिसका अभिप्राय यही है, कि यह शरीर इतने दिन सामान्य रूप से चल सकता है।

कौन सी मृत्यु काल मृत्यु है और कौन सी अकाल मृत्यु है? इस का स्पष्टीकरण महर्षि वाल्मीकि विरचित रामायण के श्लोक से मिलता है।

> असकल्पितमेवेह यदकस्मात् प्रवर्तते ।
> निवर्त्यारम्भमारब्धमननु दैवस्य कर्म तत् ॥
> अयोध्या का। 22,24

भाग्य को दैव, विधि भी कहते हैं। श्लोक में बताया गया है, कि ससार में सदा अनेक तरह की घटनाए घटती रहती हैं। उन मे से कुछ इस प्रकार की होती हैं, जिन के घटने का कारण स्पष्ट होता है और कुछ का खोजने पर भी कारण समझ मे नहीं आता। जैसे कि पजाब मे 81 से आज तक हजारो मौतें हुई, इस हिंसा-प्रतिहिंसा की इन हजारों मौतो से अधिकतम बिल्कुल स्पष्ट हैं, कि वे किस भावना से किन्ही ने हत्याए की हैं। ऐसी मौतों को अकाल मृत्यु और जिन का ढूढने पर भी कोई कारण सामने नहीं आता, उन्ही को ही स्वाभाविक कालमृत्यु मानना चाहिए।

(क्रमश:)

सम्पादकीय—

आर्य समाज और हिन्दू समाज-2

हमारे राजनैतिक नेता प्रायः इस बात पर बहुत गर्व करते हैं कि हमारी अनेकता में ही एकता है। यह सम्भवत वह इसलिए कहते हैं कि हमारे देश में कई मत हैं, कई भाषाएं हैं। कई किस्म के रसमो-रिवाज हैं भिन्न-2 प्रान्तों की भिन्न-2 प्रकार की वेश-भूषा है। इस सब को मिला कर एक भारत बनता है। इसीलिए हमारे नेता कई बार कहते हैं कि हमारी अनेकता मे ही एकता है। परन्तु यदि हम इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करें तो इस परिणाम पर पहुचेंगे कि इस अनेकता में एकता ने हमारा एक देश तो बना दिया, हमारी एक जाति नही बन सकी। कुछ हमारे नेता अपने आपको और दूसरो को एक भ्रान्ति मे रखने के लिए कई बार सर्व धर्म सम्भाव का विचार भी देने लगते हैं वह समझते हैं कि देश मे एकता उसी स्थिति मे हो सकती है यदि इस देश मे जितने भी धर्म हैं वह सब एक दृष्टि से देखे जाए। जो लोग यह बात कहते हैं उन्हे यह भी मालूम नहीं की धर्म क्या है? धर्म और मत मे क्या भेद होता है? वह हिन्दू धर्म इस्लाम, ईसाइयत सब को एक स्थान पर रखते हैं और वह केवल अपने किसी राजनैतिक स्वार्थ को पूरा करने के लिए। कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे नेता भारत की अनेकता से एकता का जो रूप हमारे सामने रखते रहे हैं, वह पूर्णतया अव्यवहारिक था और उसका कोई अच्छा परिणाम नहीं निकला। हम यह भी कह सकते हैं कि जो भी परिणाम निकला है वह देश के लिए हानिकारक हो रहा है। महात्मा गान्धी 1920 मे सक्रिय रूप मे हमारे देश की राजनीति मे भाग लेने लगे थे और उसी समय से उन्होंने हिन्दू, मुस्लिम भाई-भाई का नारा लगाना शुरू कर दिया था। एक समय वह भी आया जब उन्होने मुसलमानो के "खिलाफत आन्दोलन को देश की आजादी की लड़ाई" का एक अग बना लिया था। "खिलाफत आन्दोलन" से हमारा कोई सम्बन्ध न था। मुसलमानो को धार्मिक दृष्टिकोण से इस मे कुछ दिलचस्पी थी। हिन्दुओ का इससे कोई सम्बन्ध न था। वास्तविक स्थिति तो यह थी कि इस देश की हिन्दू जनता को यह पता ही न था कि "खिलाफत आन्दोलन" है क्या? हमारे देश से बहुत दूर एक मुस्लिम देश टर्की मे उस समय के खलीफा को अग्रेजो ने हटा दिया था इस पर सारे इस्लामी जगत् मे कुछ शोर हुआ। और भारत के मुसलमान भी उत्तेजित हो गए। गान्धी जी उस समय देश की आजादी के लिए लड रहे थे। उसमे वह मुसलमानों का सहयोग भी चाहते थे, इसलिए उन्होने मुसलमानो को सन्तुष्ट करने के लिए खिलाफत की समस्या को आजादी के उस सघर्ष मे सम्मलित कर लिया और मुसलमानो के साथ मिल कर वह कहने लगे कि अग्रेजों ने खलीफा को हटा कर ससार की मुस्लिम जनता के साथ अन्याय किया है। इस लिए खलीफा को फिर से उसके पद पर बिठाया जावे। यह सब कुछ गान्धी जी केवल इस लिए कर रहे थे कि किसी प्रकार मुस्लिम सम्प्रदायिकता की तुष्टी की जाए। उसके पश्चात् भी वह और उनके नेतृत्व में कांग्रेस मुसलमानो की तुष्टी के लिए प्रत्येक प्रकार का पग उठाने को तैयार रहती थी। 1933 मे उस वक्त की बर्तानिया की सरकार ने "कम्युनल अवार्ड" नाम का अपना एक निर्णय दिया था इसके अनुसार जहा एक तरफ हरिजनो को हिन्दुओ से अलग करने का प्रयास किया था, मुसलमानो को भिन्न-भिन्न प्रान्तो मे उनकी सख्या से अधिक कौंसलों मे उन्हें प्रतिनिधित्व दे दिया गया था। देश की हिन्दू जनता इस "कम्युनल अवार्ड" के विरुद्ध थी। कांग्रेस भी समझती थी की अंग्रेज ने एक बहुत बड़ी शरारत की है इसके द्वारा वह हिन्दुओं और मुसलमानों को आपस में लड़ाना चाहता है। इस "कम्युनल अवार्ड" को कांग्रेस को अस्वीकार कर देना चाहिए था परन्तु इस डर से की कहीं मुसलमान नराज न हो जाएं कांग्रेस ने उस "कम्युनल अवार्ड" को [illegible] न किया और उसकी कार्यकारिणी ने यह प्रस्ताव [illegible] कि वह इसे न स्वीकार करती है और न अस्वीकार करती है।

तात्पर्य यह है कि गान्धी जी ने और उनके कहने पर कांग्रेस ने मुसलमानों की तुष्टी के लिए कई ऐसे निर्णय भी लिए जो सर्वथा देश के हित के विरुद्ध थे और यह केवल इस लिए कि कांग्रेस के नेता यही समझते थे कि देश की अनेकता मे ही एकता है।

परन्तु अन्त मे परिणाम क्या निकला मुसलमानो की इस सन्तुष्टि के लिए जो कुछ कांग्रेस ने किया उस सबकी अवहेलना करते हुए मुसलमानो ने अन्त मे पाकिस्तान की माग कर दी और अपना एक अलग देश बना लिया। हम उन्हें भाई-भाई कहते रह गए और उन्होने हमारी पीठ मे छुरा घोप दिया। वही कुछ आज पजाब मे भी हो रहा है। सिखो के विषय मे भी हम यही कहते रहे हैं कि वह हमारे भाई हैं और इस मे सन्देह नहीं कि मुसलमानो और सिखो मे बहुत अन्तर है। हिन्दुओ और सिखो मे बहुत कुछ साझा है हम यह भी कह सकते हैं कि सिख हिन्दुओ का ही दूसरा रूप हैं। फिर भी उनमे आज कई ऐसे हैं लोग जो अपने आप को हिन्दू कहलाने को तैयार नहीं और अपने लिए मुस्लिमलोग की तरह अलग खालिस्तान की माग कर रहे हैं।

यह सब कुछ लिखने से मेरा अभिप्राय केवल यह है कि अब वह समय आ गया है जब हमे यह सोचना चाहिए कि क्या कारण है कि पहले हमारे देश मे पाकिस्तान का आन्दोलन शुरू हुआ अब कुछ लोग खालिस्तान की माग कर रहे हैं। कशमीर का झगडा अभी चल ही रहा है और अब गोरखालैण्ड की माग भी शुरू हो गई। नागालण्ड, अरुणाचल और मिजोरम जैसे क्षेत्रो मे एक बहुत बडा तत्व ऐसा है जो अपने लिए अलग देश मागता है। इसमे सन्देह नहीं कुछ विदेशी ताकतें हमारे देश का विघटन करने का प्रयास कर रही है। परन्तु देखने की बात तो यह है कि यह शक्तिया क्यो सफल हो रही है और हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान की भावना क्यो कमजोर हो रही है? हम सब कहते है कि भारत हमारा देश है। यह हमारी मातृ भूमि और पुण्य भूमि है, परन्तु यह भावना हिन्दुओ मे अधिक है दूसरो मे बहुत कम। मुसलमानो की पुण्य भूमि तो मक्का मदीना है, ईसाईयो की पुण्य भूमि युरोशलम है। कोई मुसलमान या ईसाई राम और कृष्ण को अपने पूजनीय पूर्वज मानने को तैयार नहीं, उनके पूर्वज या तो हजरत मोहम्मद हैं या ईसामसीह हैं हम अपने आपको किसी धोखा मे रखना चाहें तो और बात, वास्तविक स्थिति यह है कि हिन्दू, मुसलमान, ईसाई तीनो भिन्न-2 मार्ग पर चल रहे हैं। यही कारण है कि हमारी एकता इतनी सुदृढ़ नही हो रही जितनी होनी चाहिए। हर चौथे दिन कहीं न कहीं दगा हो जाता है और देश के प्रधानमन्त्री कहते रह जाते हैं कि देश की एकता के लिए पूरा प्रयास होना चाहिए, कुछ होता भी है परन्तु उसका कोई सन्तोषजनक परिणाम नहीं निकलता यह स्थिति क्यो है? और इसमे हिन्दू समाज और आर्य समाज अपना क्या-क्या योगदान दे सकता है। इस पर अगले लेख मे प्रकाश डालूगा।

—वीरेन्द्र

दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती की पुण्य तिथि पर यजुर्वेद पारायण यज्ञोत्सव

रविवार 28 सितम्बर 1986 से रविवार 5 अक्तूबर 1986 तक

समय :—प्रातः 6-30 बजे से 8-30 बजे तक

साय :—4-00 से 6 बजे तक यज्ञ तथा उपदेश होगा।

ब्रह्मा—आचार्य श्री नरेश कुमार जी शास्त्री

वेदपाठी—गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारी

भजन एव प्रवचन—ब्र० अजय कुमार मण्डली के भजन, [illegible] प्रेम प्रकाश जी धूरी तथा अन्य विद्वानो के समयानुसार प्रवचन होंगे।

पूर्णाहुति—रविवार, 5 अक्तूबर 1986, प्रातः 9-30 बजे होगी।

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप इस अवसर पर सपरिवार तथा इष्ट मित्रो सहित सम्मिलित होकर [illegible]।

विशेष—भोजन एव [illegible] का प्रबन्ध [illegible] की ओर से होगा।

[illegible] गुरुकुल करतारपुर (जालन्धर)

सत्ता और सम्पत्ति पर महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण

[illegible] [illegible] से —श्री कैलाश जी सत्यार्थी—

आर्य समाजी इतिहासकारों का बड़ा वर्ग इस नतीजे पर पहुंचा है कि महर्षि दयानन्द का जन्म-दिवस भाद्रपद शुक्ला नवमी है, जो आज है। दयानन्द के अनुयायी इस अवसर पर जगह-जगह समारोह मनाकर इस स्थापित सत्य की ओर जोर से प्रचारित करेंगे कि वे एक महान समाज सुधारक थे, वेदों के प्रकाण्ड पण्डित थे, योगी थे और कुल मिलाकर वे सब थे जो महान से महान आध्यात्मिक पुरुष हो सकता है। इस शोर-शराबे में भूल से भी जो बात दयानन्द के बारे में नहीं कही जाएगी, वह है सत्ता के विकेन्द्रीकरण के पक्ष में और सम्पत्ति के स्वामित्व के खिलाफ उनके विचार।

राजनैतिक सत्ता के केन्द्रीकरण पूंजीवाद, सामाजिक ऊंच नीच, आदमी-औरत की गैर बराबरी, भाग्यवाद, धार्मिक अन्धविश्वास आदि पर टिकी समाज व्यवस्था की मूर्ति के भंजक एवं क्रान्तिदृष्टा फकीर को महज मूर्तिपूजा विरोधी, विभिन्न सम्प्रदायों के खण्डन कारी और हिन्दू सम्प्रदाय के एक अंग की तरह प्रचारित करके दयानन्द का सारा मिशन व्यवस्था पोषक बनाया जा चुका है।

आज हिन्दू समाज के झंडाबरदार बन चुके कितने आर्य समाजी यह ऐतिहासिक तथ्य लोगों को बताते हैं कि आर्य समाज की स्थापना ही बम्बई में एक मुसलमान रहमतुल्ला खां सोनावाला के घर पर हुई थी? वे आर्य समाज की पहली सूची में थे। बम्बई के पहले आर्य समाज काकड़वाड़ी में दानियों की सूची के नामपट्ट पर पहला नाम उन्हीं का है। मृत्यु होने तक दयानन्द के निजी चिकित्सक डा० अलीमर्दान खां थे और मृत्यु शैय्या पर पड़े स्वामी जी ने ऐसे [illegible] को लताड़ा जो मुसलमान होने के कारण चिकित्सक पर सन्देह कर रहे थे। ईसाईयों से उनके रिश्ते इतने अच्छे थे कि ऐनी बेसेंट अपनी थियोसाफिकल सोसायटी का विलय तक आर्य समाज [illegible] चाहती थी, लेकिन किसी कारण यह टल गया। पंजाब में आर्य समाज की तो [illegible] ही सिखों ने सम्भाली थी। लोग जानते हैं कि शहीद भगतसिंह के दादा, पिता आदि सिख होते हुए भी कट्टर आर्य समाजी थे। लेकिन यह अलग पक्ष है।

दयानन्द राजनैतिक या आर्थिक विचारक नहीं थे। लेकिन [illegible] विभाग से भी गुलाम हो [illegible] दयानन्द ने हिन्दी में 'स्वदेशी' और 'स्वराज्य' शब्द घड़े। बाद में तिलक, गांधी जी तथा दूसरों ने इन शब्दों का इस्तेमाल किया व इसी के अनुरूप भारतीय समाज व्यवस्था की व्याख्या की। लोकतन्त्र का प्रयास तो दूर, उसकी कोई सांगोपांग व्याख्या तक जिन दिनों देश में उपलब्ध नहीं थी, तब दयानन्द भारतीय वाङ्मय से निर्वाचन पद्धति तथा विकेन्द्रित सत्ता पर आधारित राज्य व्यवस्था की बातें दृढ़ कर लिख रहे थे। जब मार्क्स और एंगेल्स की "कैपिटल" लिखी नहीं गई थी, तब पूर्व में बैठा यह मनीषी सम्पत्ति के स्वामित्व के पैतृक अधिकार को नकार चुका था। किन्तु आज कितने लोग यह बात जानते हैं, अथवा उस पर बहस करने को राजी हैं?

महर्षि दयानन्द राजनैतिक या आर्थिक विचारक नहीं थे। लेकिन जब देश दिमाग से भी गुलाम हो चला था, तब दयानन्द ने हिन्दी में 'स्वदेशी' और 'स्वराज्य' शब्द घड़े। बाद में तिलक, गांधी जी तथा दूसरों ने इन शब्दों का इस्तेमाल किया व इसी के अनुरूप भारतीय समाज व्यवस्था की व्याख्या की। लोकतन्त्र का प्रयास तो दूर, उसकी कोई सांगोपांग व्याख्या तक जिन दिनों देश में उपलब्ध नहीं थी, तब दयानन्द भारतीय वाङ्मय से निर्वाचन पद्धति तथा विकेन्द्रित सत्ता पर आधारित राज्य व्यवस्था की बातें ढूंढ कर लिख रहे थे। जब मार्क्स और एंगेल्स की "कैपिटल" लिखी नहीं गई थी, तब पूर्व में बैठा यह मनीषी सम्पत्ति के स्वामित्व के पैतृक अधिकार को नकार चुका था। किन्तु आज कितने लोग यह बात जानते हैं, अथवा उस पर बहस करने को राजी हैं?

दयानन्द के विचार से देश के पढ़े लिखे चेतनाशील तथा राष्ट्रवादियों की एक बड़ी जमात प्रभावित हुई। डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया ने अपने कांग्रेस के इतिहास में लिखा है—'असहयोग आन्दोलन में भाग लेकर जेल जाने वालों में अस्सी प्रतिशत से अधिक या तो आर्य समाजी थे अथवा स्वामी दयानन्द के विचारों से प्रेरित। गांधी, महर्षि अरविन्द, विवेकानन्द, सुभाषचन्द्र बोस, सर सैयद अहमद खां आदि ने कई बार दयानन्द के क्रान्तिकारी चिन्तन से प्रेरणा लेना स्वीकार है। गोरी सरकार इस तथ्य से नावाकिफ नहीं। [illegible] षड्यन्त्र के [illegible] 1900 के आसपास आर्य [illegible], तहसीलों, रायसाहबों [illegible] की सरकार [illegible]। [illegible] सरकार [illegible] और [illegible] कई समाज [illegible] गए। [illegible] किया गया। [illegible] लिखे [illegible]।

[illegible] दयानन्द के [illegible] सारी [illegible] के लिए जिम्मेदार तीन दुश्मनों को पहचाना। पहला अभाव, दूसरा अज्ञान और तीसरा अन्याय। इन्हें लोक भाषा में गरीबी, अशिक्षा और गुलामी-गैर बराबरी भी कह सकते हैं। अपनी संस्था के छठवें नियम में उन्होंने इसकी स्थापना का उद्देश्य लिखा "संसार का उपकार करना अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।" शारीरिक उन्नति में सबसे बड़ी बाधा बताया अभाव को, आत्मिक उन्नति में अज्ञान को और सामाजिक उन्नति में अन्याय को। इनका क्रम भी महत्वपूर्ण है। आत्मा अमर है किन्तु मनुष्य का मनुष्य होना उसके शरीर पर आधारित है। शरीर की बड़ी जरूरतें पूरी किए बिना, उसके रखरखाव के बिना व उसकी उन्नति के बिना सारी मनुष्यता का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। रोटी, कपड़ा, रिहाइश तो चाहिए ही।

दूसरा है, आत्मिक उन्नति। शरीर महज एक साधन है उसकी उन्नति साधन को मजबूत करना है। किन्तु इस के साथ ही आंतरिक शुद्धता भी जरूरी है। निजी नैतिकता के बिना सार्वजनिक नैतिकता नहीं आ सकती। तीसरी सार्वजनिक उन्नति है। शरीर और आत्मा का विकास यदि सिर्फ निजी दायरे की चीज बनी रह जाए तो भी समाज व्यवस्था [illegible] जाएगी। इन दोनों से [illegible] ही समाज के बाकी हिस्से [illegible] करने सकेगा, दूसरे [illegible] हो जाएगा। [illegible] निजी उन्नति [illegible]। [illegible] [illegible] की [illegible] चाहिए।

[illegible] और [illegible] के [illegible] उन्होंने स्वदेशी समाज व्यवस्था में बांटा। अलग-अलग रुचि, योग्यता तथा क्षमता के हिसाब से तीन तरह की जिम्मेदारियां सभी लोग सम्भालेंगे। कुछ लोग अज्ञान व अशिक्षा के विरुद्ध जेहाद चलाएंगे, कुछ गरीबी और अभाव के विरुद्ध लड़ेंगे और कुछ विषमता अन्याय के विरुद्ध। बाकी लोग जो प्राकृतिक कारणों से स्वतन्त्र रूप से इन तीनों के लिए अक्षम हों, वे अपनी रुचियों के अनुसार तीनों में से किसी में सहायता के काम में लगें। यदि अनुभव के साथ वे अपनी क्षमताएं बढ़ा लेते हैं, तो उन्हें इस कार्य वर्ग की पहली पंक्ति में शामिल किया जाए। इस तरह समाज में काम के हिसाब से चार हिस्से हो गए। शिक्षक, उत्पादक, व्यवस्थापक और सहायक। चूंकि हरेक व्यक्ति का काम उसकी निजी सामाजिक भूमिका से जुड़ा है अतः कार्यक्षेत्र के पैतृक उत्तराधिकार का प्रश्न ही नहीं उठता। किसी खास काम में लगे व्यक्ति की संतान की रुचि, योग्यता या क्षमता उसमें भी हो सकती है और किसी दूसरे काम में भी। यदि उसमें ये गुण हैं, तो भी उसे जो जिम्मेदारी मिलेगी, उसकी माता चुने हुए विशेषज्ञों की समितियां तय करेंगी, पिता नहीं।

इस व्यवस्था में जहां तक सम्पत्ति के मालिकाना हक का सवाल है, बड़ा साफ है। शिक्षण के काम में जुड़े वर्ग का उत्पादन से कोई सरोकार नहीं। उसके रहने सहने, गुजर बसर का इन्तजाम समाज करेगा। उसकी अपनी कोई निजी सम्पत्ति नहीं होगी। व्यवस्थापक वर्ग वितरण व्यवस्था की देख-रेख समाज में पैदा होने वाली गड़बड़ियों, अपराधों आदि पर नियन्त्रण करेगा, और साथ ही सीमाओं की सुरक्षा का जिम्मा उठाएगा। शिक्षक की तरह उसके भरण-पोषण की जिम्मेदारी समाज की होगी। ठीक इन्हीं दो की तरह सहायक वर्ग की, जो वैसे भी सख्या के हिसाब से बहुत कम होगा, आजीविका का प्रबन्ध समाज करेगा। अब सिर्फ चौथे तबके के वे लोग बचे उत्पादन के काम में जुटे हैं, [illegible] उत्पादन साधनों की [illegible] सौंपी गई है, [illegible] और [illegible] करेंगे। [illegible] होंगे।

(क्रमशः)

आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार, (अड्डा होशियारपुर) जालन्धर का वार्षिक चुनाव

17-8-86 रविवार को सायं चार बजे आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार(अड्डा होशियारपुर) जालन्धर का वार्षिक चुनाव 1986-87 के लिए श्री योगेन्द्र पाल जी सेठ की अध्यक्षता मे सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ। जिसमे निम्नलिखित अधिकारी, अन्तरङ्ग सभा सदस्य चुने गए। सर्व श्री योगेन्द्रपाल सेठ, प्रधान अमृतलाल खन्ना तथा चन्दूलाल, उप-प्रधान, जसवन्त राज मन्त्री, सुभाष सहगल तथा सोहन लाल सेठ, उप-मन्त्री श्री राजेन्द्र अग्रवाल कोषाध्यक्ष, सुदर्शन लाल आनन्द,—पुस्तकालयाध्यक्ष, श्री हसराज शर्मा लेखा निरीक्षक।

अन्तरङ्ग सदस्य—सब श्री प्रकाश चन्द कालड़ा, श्री कुन्दन लाल अग्रवाल, श्री दुनीचन्द थापर तथा डा दीवानचन्द,

लब्भू राम दोआबा सीनियर सैकण्डरी स्कूल जालन्धर की प्रबन्धकर्तृ सभा के सदस्य सर्व सम्मति से निर्वाचित हुए —सर्व श्री योगेन्द्रपाल सेठ, श्री जसवन्त राज, श्री राजेन्द्र अग्रवाल, श्री अमृतलाल खन्ना (प्रिंसीपल) हसराज शर्मा, श्री प्रकाश चन्द कालड़ा, श्री रामनाथ यादव, श्री दुनीचन्द थाप्पर, सोहन लाल सेठ, कुन्दन लाल अग्रवाल, डा दीवान चन्द, श्री वीरेन्द्र सभ्रवाल एडवोकेट, सत्यपाल धीर, दो अध्यापको के प्रतिनिध तथा जिला शिक्षा अधिकारी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रतिनिधि सर्व श्री योगेन्द्र पाल सेठ, श्री अमृतलाल खन्ना, जसवन्तराज।

आर्य समाज स्कूल सम्पत्ति तथा शिक्षा प्रचार समिति के सदस्य सर्व श्री योगेन्द्रपाल सेठ, श्री जसवन्त राज, श्री राजेन्द्र अग्रवाल, श्री अमृतलाल खन्ना, श्री सेठ चन्दूलाल, श्री हसराज मगो, श्री मदन लाल सेठ, सुभाष सहगल, श्री सुदर्शन लाल आनन्द, श्री भगवान दास, श्री रामनाथ यादव, श्री सोहनलाल कालड़ा, श्री प्रकाश चन्द कालड़ा, मुख्याध्यापक इन्डस्ट्रियल एरिया स्कूल, मु अ प्रीतनगर स्कूल।

विशेषज्ञ—श्री वीरेन्द्र सभ्रवाल एडवोकेट
श्री ऋषिपाल सिंह एडवोकेट
श्री अमृतलाल बजाज एडवोकेट

—जसवन्त राज
मन्त्री

—

आर्य समाज नवांशहर में वेद सप्ताह

आर्य समाज की ओर से वेद सप्ताह बडी श्रद्धा और उल्लास के साथ गत वर्षो की तरह इस वर्ष भी मनाया गया। आर्य समाज नवाशहर के सरक्षक प देवेन्द्र कुमार जी, आर्य समाज नवाशहर के प्रधान श्री वेद प्रकाश जी सरीन, आर्य विद्या परिषद के प्रस्तोता श्री धर्म प्रकाश जी दत्त और बाकी अधिकारी वर्ग तथा सहयोगियो ने शहर के भिन्न मुहल्लो मे सफलतापूर्वक हवन यज्ञ तथा वेद प्रचार का काम किया। इन हवन यज्ञो म शहर निवासियो ने उपस्थिति दिखा कर अपनी श्रद्धा और रूचि का परिचय दिया और वेद प्रचार सप्ताह के अन्त मे 27 अगस्त को श्री कृष्ण जन्माष्टमी आय समाज मन्दिर नवाशहर मे बडी धूम-धाम से मनाई गई। हवन यज्ञ के बाद स्थानीय स्कूलो के बच्चो की ओर से कविता आदि का प्रोग्राम हुआ जिसमे दोआबा आय सीनियर सैकण्डरी स्कूल और आय बालविद्या मन्दिर के बच्चा और स्टाफ की उपस्थिति तथा सहयोग का सेहरा प्रिंसीपल हरवंस लाल जी तनेजा और आर्य समाज नवाशहर के कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र मोहन को जाता है जिन के पूण सहयोग से यह प्रोग्राम सफल हुआ। प्रोग्राम के अन्त मे माननीय लाला देवीदास जी ने प्रभावशाली ढग से सब को श्री कृष्ण जी की शिक्षाओ पर चलने की प्रार्थना की। बाद मे प देवेन्द्र कुमार जी ने बच्चो को अपने कर कमलो से इनाम दिये और उपस्थित जनो को साहस के साथ जीने और अन्याय के विरुद्ध हमेशा लडने की प्रेरणा की। तत्पश्चात प्रधान आर्य समाज नवाशहर श्री वेद प्रकाश जी सरीन ने सब को आर्य समाज तथा बाकी कामो मे सहयोग देने के लिये धन्यवाद दिया और आशा की कि सभी अपना सहयोग इसी तरह से देते रहे ताकि आय समाज नवाशहर और नवाशहर की आर्य शिक्षण सस्थाए इसी प्रकार शान्ति से उन्नति की ओर बढती रहे। आदरणीय प्रस्तोता जी ने सभी को दूसरो की धार्मिक भावनाओ का आदर करने तथा अन्याय के विरुद्ध हमेशा लडन के लिए और श्री कृष्ण जी की शिक्षाओ को गहराई तक पढने तथा उनका अनुसरण करन का प्रभावशाली शब्दो म प्रेरणा की।

—हरवसलाल तनेजा

—

आर्य समाज मन्दिर सामाना ज़िला पटियाला का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज मन्दिर सामाना एव इसके द्वारा सचालित दयानन्द माडल स्कूल सामाना (पटियाला) तथा नैना देवी आर्य धर्मशाला सामाना के पदाधिकारियो का चुनाव वर्ष 1986-87 के लिये, श्री देसराज जी की अध्यक्षता मे सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ, जिसमे निम्न पदाधिकारी चुने गए—

(क) आर्य समाज सामाना

सरक्षक—श्री देसराज जी।
प्रधान—श्री रणवीर कुमार जी।
उप प्रधान— श्री महाशय दीनानाथ एव श्री रणवीर सिंह जी।
मन्त्री—श्री कवरभान जी।
उप-मन्त्री—श्री पद्मकान्त जी।
कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश जी।
पुस्तकाध्यक्ष—श्री प गुमाचरण जी
भण्डाराध्यक्ष—श्री नारायण दास जी एव श्री धर्मपाल जी।

(ख) दयानन्द माडल स्कूल सामाना

प्रधान—श्री रणवीर कुमार जी।
प्रबन्धक—श्री कवरभान जी।
लेखानिरीक्षक—श्री [illegible] जी एवं श्री ओमप्रकाश जी।
कोषाध्यक्ष—श्री राजेश जी।
कार्यकारिणी सदस्य—श्री दीनानाथ [illegible]

(ग) नैना देवी आर्य धर्मशाला सामाना

प्रधान—श्री रणवीर कुमार जी।
कोषाध्यक्ष एव सचिव—श्री देसराज जी, श्री सत्यपाल जी, श्री यशपाल जी, श्री ओम प्रकाश जी, श्री वेद जी एव डा रतन कुमार जी।

—कवरभान-मन्त्री

आर्य समाज दुलद्दी गेट, नाभा का चुनाव

17-8 86 रविवार को आर्यसमाज मन्दिर नाभा मे आर्य समाज का वार्षिक चुनाव लाला साधुराम जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। जिसके पदाधिकारी निम्नलिखित है।

प्रधान—श्री साधु राम जी
उप प्रधान—श्री गोवर्धन दास आर्य
मन्त्री—मा. रघुवरदास
उपमन्त्री—श्री ज्ञानचन्द आर्य।
प्रचार मन्त्री—श्री अशोक आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री [illegible] कुमार
पुरोहित [illegible]-प रामदेव [illegible], श्री नारायण दास, श्रीमती [illegible], श्री [illegible], श्री [illegible], श्री के एल. सुमन।

आर्य समाज हबीब गंज (अमरपुरा) लुधियाना में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव

27 8 86 को आय समाज हबीब गज लुधियाना मे श्री कृष्ण जन्मोत्सव बडे उत्साह से मनाया गया।

प्रात 6 30 बजे यजुर्वेद शतक द्वारा यज्ञ आरम्भ हुआ, यज्ञ के यजमान भगत धर्मपाल सपरिवार, आशानन्द आय सपरिवार भगत ज्ञानचन्द सपरिवार, श्रीमती बेअन्ती देवी सपरिवार थे।

स्कूल के छात्रो ने श्री कृष्ण जी के जीवन पर सुन्दर गीत गाए जिस से प्रसन्न होकर श्री खुशवक्त राय सूद, श्री प्रीतम सिंह ने उन्हे आशीर्वाद दिया तथा पुरस्कृत किया, डा, मूलचन्द जी भारद्वाज प्रधान आय समाज बाग खजाचिया, दीवान राजेन्द्र कुमार, प्रबन्धक आय कालेज, श्री अयोध्या प्रकाश मल्होत्रा ने श्री कृष्ण जी के जीवन पर प्रकाश डाला। जनता पर काफी प्रभाव पडा आशानन्द आर्य ने सभा का धन्यवाद करते हुए उन्हे श्री कृष्ण जी का असली स्वरूप जानने के लिए "योगेश्वर कृष्ण" नामी पुस्तक पढने की अपील की यज्ञ शेष के पश्चात कार्यवाही समाप्त हुई।

—आशानन्द आर्य
प्रधान

आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर में प्रचार कार्य

30-31 जुलाई को आर्या [illegible] जी कन्याश्रम (ज्वालापुर) का प्रवचन मोहल्ला गोबिन्दगढ आर्य समाज मे तथा एक अन्य परिवार मे हुआ। जिस से जनता बहुत प्रभावित हुई। 10-8-86 को आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ के [illegible] श्रीमती [illegible] के परिवार ने हवन यज्ञ करवाया जिस में प [illegible] जी ने अपने प्रवचनों से सब को प्रभावित किया। पूर्णमासी रक्षा बन्धन वाले दिन श्री मुन्नी लाल शास्त्री के घर पर हवन यज्ञ हुआ जिसमें प [illegible] जी ने अपने विचार जनता के सामने रखे हाजरी सराहनीय रही।

—[illegible]

———

पंजाब सहायता समिति, आर्य समाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली

दिल्ली मे एक पजाब सहायता समिति गठित हो चुकी है, जिसका मुख्य कार्यालय आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली मे है। इस समिति मे आर्य समाज राष्ट्रीय सेवक, सघ सनातन धर्म सभा, भारतीय जनता पार्टी एव अन्य सस्थाओ के सदस्य सम्मिलित हैं। इस समिति ने अपना कार्य आरम्भ कर दिया है। रविवार 2 8 86 को 2 लाख 26 हजार रुपए की राशि, प्रत्येक परिवार को एक-एक हजार रुपये वितरित किये गये, उन शिविरो के नाम है आर्य समाज, राजौरी गार्डन, सनातन धर्म मन्दिर, कीर्ति नगर, जनकपुरी, आर्य समाज, अशोक नगर, सनातन धर्म मन्दिर, तिलक नगर, आर्य समाज सुभाष नगर, आर्य समाज टैगोर गार्डन, सनातन धर्म मन्दिर उत्तम नगर, आर्य समाज रघुवीर नगर, बाली नगर आदि। वितरण कर्ताओ मे आर्य प्रादेशिक सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल, आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान—श्री सूर्यदेव, भारतीय जनता पार्टी के श्री विजय कमार मल्होत्रा एव श्री मदनलाल खराना, सनातन धर्म सभा के श्री मनोहर लाल कुमार आदि थे।

8-8-86 को मन्दिर मार्ग, पचकुईया रोड नई दिल्ली मे स्थित "पालिका होस्टल" मे ठहराए गये 24 परिवारो को भी प्रत्येक परिवार को एक-एक हजार रुपये की राशि दी गई। अब तक लगभग 3 लाख रुपये की राशि पजाब के विस्थापितो को बाटी जा चुकी है। भविष्य मे भी इसी प्रकार सहायता प्रदान की जाती रहेगी

मेरी समस्त भारतवासियो एव भारत की आर्य समाजो, सनातन धर्म सभाओ एव अन्य सस्थाओ से निवेदन है कि अपनी-अपनी ओर से अधिक से अधिक सहायता की राशि चैक ड्राफ्ट द्वारा आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-1 के पते पर अथवा सनातन धर्म मन्दिर कीर्ति नगर, अथवा "कुमार हाऊस" बारा टटी, दिल्ली-6 के पते पर भिजवाने की कृपा करे।

पजाब सहायता समिति के डिब्बे भी बहुत सारी आर्य समाजो मे भिजवाये गये हैं। उनमे अधिक से अधिक राशि एकत्र कर आर्य समाज, मन्दिर-मार्ग मे भिजवाने की कृपा करें। सहायता के लिए धन एकत्र करने हेतु जो डिब्बा लेना चाह, वह भी आय समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली मे सम्पर्क कर सकते हैं।

—रामनाथ सहगल
मन्त्री

आर्य समाज फील्डगंज लुधियाना की गतिविधियां

कई वर्षों से बन्द पडे श्रीमती कमला आर्या धर्मार्थ औषधालय का शुभ उद्घाटन 25 मई 1986 रविवार को आदरणीय श्री सत्यानन्द जी मुंजाल, मालिक हीरो साईकल तथा उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने अपने कर-कमलो द्वारा किया था। तब से इस औषधालय का सारा कार्यभार डा एम सी भारद्वाज, एम ए पी एच डी एफ आर सी (मध्य-प्रदेश) रजिस्टर्ड होम्योपैथ, पजाब द्वारा वहन किया जा रहा है। उन्हे आर्य समाज की ओर से जहा पूर्ण सहयोग मिल रहा है वहा अपनी विद्वता, योग्यता तथा मधुर भाषित के कारण डा भारद्वाज इतने लोक प्रिय हो गए हैं कि समराला तथा अन्य स्थानो से भी रोगी आकर रोगमुक्त हो रहे हैं। और भी सराहनीय बात यह है कि डा भारद्वाज जी का इतना त्याग है कि वह यह सेवा निःस्वार्थ भाव से कर रहे हैं और आर्य समाज पर आर्थिक रूप से किसी प्रकार का बोझ नही है।

आदरणीय श्री राजेन्द्र कुमार श्री दीवान का मैं आभारी हू जिन्होंने आदरणीय श्री सत्यानन्द जी मुंजाल से प्रार्थना करके इस औषधालय को पुनः जीवित करवाया। साथ ही मैं आदरणीया बहनों श्रीमती कमला जी आर्या, श्रीमती कौशल्या जी प्रधाना आर्य समाज फील्डगंज तथा भाई आशानन्द जी आर्या का आभारी हू जिन्होंने इस त्यागमय परिश्रम द्वारा सेवारत होने के लिये डा भारद्वाज जी को प्रेरित किया है। मैं सब आर्य प्रेमियो से प्रार्थना करता हू कि वे हमे अपना पूर्ण सहयोग दें ताकि हम इस औषधालय की अन्य स्थानो पर शाखाए खोल सकें। इतने अल्पकाल मे आज तक 1698 रोगी स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर चुके हैं।

मन्त्री

मातृ मन्दिर वाराणसी रजत जयन्ती महोत्सव

मातृ मन्दिर (कन्या गुरुकुल) डी 45।129 नई बस्ती रामपुरा वाराणसी में महोत्सव

मुख्य समारोह—24-10-86 से 26-10-86 तक।

(1) विद्वानो का प्रवचन,, विविध सम्मेलन।

(2) छात्राओ के सास्कृतिक कार्यक्रम

(3) छात्राओ के यौगिक आसन, लाठी चालन आदि।

विद्वद् गोष्ठिया—22-10-86 एव 23 10-86।

विषय—शब्द शक्ति और वेद, वैज्ञानिक यज्ञशाला आदि।

तपश्चर्या (योग साधना) शिविर—6-10 86 से 21-10 86।

योग चिकित्सा शिविर—6-10-86 से 21-10-86।

चतुर्वेद पारायण यज्ञ—1-10-86 से 26-10-86 तक।

ब्रह्मा—वेद भाष्यकार प आशुराम जी आर्य।

वेद कथा—प प्रेम प्रकाश जी, प आशुराम जी।

वेद पाठ—मातृ मन्दिर की ब्रह्मचारिणिया।

चतुर्वेद पारायण—श्रावणी से 30-9-86 तक ब्रह्मचारिणियो के द्वारा

विद्वद्-अभिनन्दन-राजर्षि रणञ्जयसिंह जी, अमेठी के कर कमलो द्वारा।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरियाणा का महासम्मेलन रोहतक में

दिनाक 27. 28 सितम्बर 1986, शनि तथा रविवार को छोटू राम पार्क, रोहतक मे

बड़े समारोह पूर्वक हो रहा है। सम्मेलन मे स्वामी ओमानन्द जी महाराज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, के प्रधान **स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती,** वेदो के प्रकाण्ड विद्वान् प शिव कुमार जी शास्त्री, प्रो शेर सिंह जी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा), प बाल दिवाकर जी हंस (प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्य वीर दल), प्रसिद्ध राष्ट्रियवादी प क्षितीश कुमार जी वेदालकार, युवा क्रान्तिकारी वक्ता डा वाचस्पति उपाध्याय, डा वेद प्रताप वैदिक (सह-सम्पादक नवभारत टाइम्स), डा राम प्रकाश जी (अध्यक्ष रसायन विभाग, पजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़) युवा प्रेरणा स्रोत श्री चन्द्र प्रकाश सत्यार्थी एवं प्रसिद्ध क्रान्तिकारी भजनोपदेशक श्री बेगराज जी 'वेग' आदि विद्वान् पधार रहे हैं।

शनिवार दिनाक 27 9-86 को आर्य वीर दल के सहस्त्रो "वीरो की रैली तथा आर्यों का जलूस," आर्य वीर सम्मेलन, रविवार दिनाक 28-9-86 का "वद सम्मेलन," 'व्यायाम प्रदर्शन,' तथा "राष्ट्र रक्षा सम्मेलन" विशेष आकर्षण के केन्द्र होगे।

पजाब तथा समूचे देश की परिस्थितियो पर आर्य समाज के सुलझे हुए विचार सुनने एव आर्य संगठन का परिचय देने के लिए सहस्त्रो की सख्या मे रोहतक पधारिये। आर्य सभी सपरिवार, इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

—अजीत कुमार-मन्त्री

आतंक पीड़ित परिवार सहायक कोष के लिए प्राप्त राशियों की सूची

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने आतकवाद से पीड़ित भाईयो की सहायता के लिए एक सहायता कोष आरम्भ किया है इसमे निम्न महानुभावो ने और दान दिया है। हमारी और भी दानी महानुभावो से प्रार्थना है कि इस सहायता कोष में अधिक से अधिक धन भेजें।

महाशय शर्मा
सभा महामन्त्री

(गताक से आगे)

आर्य समाज अबोहर (पजाब) के द्वारा आतक पीड़ित परिवार सहायता कोष मे भेजा गया धन 2862 रुपए

1	श्री मै सौदागर चन्द देसराज	200 00
2	डा रोशन लाल	201 00
3	श्री परमानन्द डाबा	101 00
4	डा श्रीराम चौधरी	101 00
5	श्री नानकचन्द सतनाम राय	101 00
6	श्री राम कुमार नत्थूराम	101 00
7	श्री पुरुषोत्तम कुमार गगनेजा	100-00
8	श्री दौलतराम छागनमल	101-00
9	श्री रमेशचन्द राजकुमार चौधरी	100 00
10	श्री भगवानदास रामलाल विज	100-00
11	श्री राज कुमार कश्मीरी लाल	101-00
12	श्री बहादुर चन्द मु झाल	100-00
13	श्री फैन्सी क्लाथ हाऊस	101-00
14	श्री सपदेवा क्लाथ हाऊस	101-00
15	श्री मोहनलाल एण्ड सन्ज	51 00
16	श्री धवन ब्रादर्ज	51-00
17	श्री दौलतराम हसराज	50-00
18	श्री बलायतीराम हसराज	51-00
19	श्री [illegible]राज[illegible]	51-00
20	श्री करतार चन्द सराफ	50 00
21	श्री [illegible]नाथ छाबड़ा	50 00
22	श्री [illegible]	50-00
23	श्री डी के इन्डस्ट्रीज	51 00
24	श्री केशवानन्द जी दुलीचन्द डाबा	51 00
25	श्री भूपेन्द्र कुमार आहूजा	51-00
26	श्री हसराज जी आर्य एम एल ए	50 00
27	श्री सी बी लाल मिढ्ढा	51-00
28	श्री मोहनलाल आहूजा एण्ड सन्ज सन्ज	50 00
29	श्री रामसेन दास मक्खनदास	50-00
30	श्री सरदारी लाल नागपाल	50 00
31	श्री सरदारी लाला मिलखी राम	31-00
32.	श्री बी के कारपोरेशन	31-00
33	श्री रामशरण दास	21-00
34	श्री शिवाचन्द आर्य	21-00
35	श्री विजय कुमार सुपुत्र श्री हाकमराय	21 00
36	श्री गुरदित्ता मल राकेश कुमार	21-00
37	श्री मोटाराम हजारी लाल	21-00
38	श्री देवराज सहगल	21-00
39	श्री राजवीर प्रताप असीजा	21-00
40	श्री ठाकरदास पिशौरी लाल	20-00
41	श्री चमनलाल जी जुनेजा	21-00
42	श्री महेन्द्रा क्लाथ हाऊस	21 00
43	श्री सुखराम जाट एण्ड सन्ज	21 00
44	श्री राम कृष्ण जी	20-00
45	श्री देवी दयाल एजन्सीज	21 00
46	श्री ओमप्रकाश गिलहोत्रा	11-00
47	श्री मुकन्दलाल जुनेजा	11 00
48	श्री बूटाराम चुघ	11-00
49	श्री मदनलाल जी गाधी	11-00
50	श्री हेमराज जी लक्षमणदास	11 00
51	श्री राजाराम ओमप्रकाश	11 00
52	श्री वैद्य हसराज बत्तरा	10 00
53	श्री कैलाशचन्द्र नाई	11 00
54	श्री इन्द्राजल (हलवाई)	10 01
55	श्री कन्हैया लाल (हलवाई)	5 00
56	श्री किरपा राम यादव	5-00
57	गुप्तदान	5 00
	जोड	2862-00

(क्रमश)

तुम्हारे-हाथों में—

लेखक—श्री मोहनलाल शर्मा रश्मि
907।ए फीलंड गज दाहोद (गुजरात)

(आकाशवाणी से प्रसारित)

मेघ छटे कटता सशय के, अब सारे बातो मे।
भविष्य देश का है युवको आज तुम्हारे हाथो मे ॥
आत पान के ये झगड, तुम आज मिटा दो सारे।
द्वेष भाव का जहर कही भी, न हो बीच हमारे ॥
आज कसौटी क कगार पर, राष्ट हमारा खडा हुआ।
फर परस्ती का ये मसला, विकराल रूप से अडा हुआ।
जन निर्दोष फस न अब आतकवाद की घातो मे।
भविष्य देश का है युवको, आज तुम्हारे हाथो मे।
अब न भूख अज्ञान गरीबी, गला देश का घोट सके।
आज राष्ट की अखण्डता पर, कोई कर न चोट सके ॥
नव युवको के पास जभी आत्म शक्ति का बल होगा।
हमे अटल विश्वास हमारा हर अभियान सफल होगा ॥
सख को बाटो जाकर के असहायो और अनाथो मे।
भविष्य देश का है युवको आज तुम्हारे हाथो मे ॥
आपस के इस भेदभाव को, मिल कर के अब तोडो।
हिन्दू मुस्लिम,सिख,ईसाई अब सब के दिल को जोडो ॥
ये सस्कृति है उच्च हमारी उज्ज्वल इतिहास हमारा।
अनेकता मे एकता का, यहा दर्शन करता जग सारा।
फसे नही अब राष्ट्र हमारा 'रश्मि' झझावातो में।
भविष्य देश का है युवको आज तुम्हारे हाथो मे ॥

यतिमण्डल का सम्मेलन

अखिल भारतीय वैदिक यतिमण्डल दीनानगर (गुरदासपुर) का सम्मेलन 27,28 सितम्बर 1986 शनि, रविवार को गोहाना मार्ग दयानन्द मठ रोहतक हरियाणा राज्य मे होगा। दूर दराज के सभी वैदिक, यती सन्यासी 26 सितम्बर सायकाल तक रोहतक मठ मे पहुचने की कृपा करें।

भोजन—आवास की व्यवस्था मठ मे ही रहेगी।

वैदिक यतिमण्डल—प्रचारमन्त्री
वेदानन्द वेदवागीश, 119-गौतम नगर,
नई दिल्ली

यजुर्वेद की वैज्ञानिक व्याख्या

भरतपुर के प्रसिद्ध भौतिक शास्त्री वैज्ञानिक और वैदिक चिंतक, श्री डा मनोहरलाल गुप्त वेदो मे साद्यन्त सृष्टि विज्ञान का प्रतिपादन मानते हैं। इसी आधार पर वे वेदो का मानवीय मस्तिष्क मे प्रस्तुत होना असम्भव मानते हैं। अस्यवामाय, वमक नासदीय, पुरुष आदि अनेक वैदिक सूक्तो की और यजुर्वेद के आदिम अनेक अध्यायो की वैज्ञानिक व्याख्या वे लिख चुके हैं, जिनमे से कई व्याख्या छप चुकी हैं। अब यजुर्वेद की उनका वैज्ञानिक व्याख्या का धारावाही प्रकाशन "वेद सविता" मासिक पत्रिका मे आरम्भ होने जा रहा है। जो लोग इस का लाभ लेना चाहे वे निम्नलिखित पते पर सम्पर्क कर सकते हैं

वेद संस्थान 395।29
ब्यावर रोड, अजमेर

—मदनसिंह चौहान
संयुक्त मन्त्री

आर्य समाज, चौक बाजार बुलन्दशहर का चुनाव

10 8 86 को आर्य समाज, चौक बाजार, बुलन्दशहर एव आर्य कन्या इन्टर कालिज बुलन्दशहर का त्रैवार्षिक निर्वाचन श्री खजान दत्त शर्मा, प्रधान आर्य समाज चौक की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ जिसमे निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

पदाधिकारी —

प्रधान—श्री वीरेन्द्र पाल शर्मा।
मन्त्री—श्री अनिल कुमार गुप्ता।
कोषाध्यक्ष—श्री गणश दत्त गोयल।
प्रबन्धक—श्री शान्ति राठी।
आर्य कन्या इन्टर कालिज।

—अनिल कुमार गुप्ता
मन्त्री

राष्ट्र-भृत् यज्ञ तपोवन में २ अक्तूबर से

देहरादून वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून में राष्ट्र-भृत् यज्ञ 2 अक्तूबर से 5 अक्तूबर तक आयोजित किए जाने के लिए जोरों से तैयारी चल रही है। इस यज्ञ के ब्रह्मा महात्मा दयानन्द वानप्रस्थ तथा संयोजक स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती होंगे। वेदों के चुने हुए राष्ट्र विषयक मन्त्रो से विशेष आहुतियां दी जाएगी और मन्त्रो की व्याख्या भी प्रस्तुत की जाएगी। यज्ञ के लिए 21 कुण्ड विशेष रूप से बनाये जा रहे हैं। वेद पाठियो मे अन्य विद्वानो के अतिरिक्त गुरुकुल कुटा के ब्रह्मचारी भी होंगे।

महात्मा दयानन्द जी ने बताया कि यज्ञ मे पीत वस्त्र धोती, कुर्त्ता आदि अनिवार्य होंगे और यदि कोई दुर्व्यसन हो तो उसका परित्याग भी आवश्यक होगा। यजमान बनने के इच्छुक सज्जनो तथा देवियो को कुण्ड आरक्षित कराने के लिए महात्मा दयानन्द जी से पत्र-व्यवहार करना चाहिए। आवास तथा भोजन की सेवा आश्रम की ओर से निःशुल्क की जाएगी परन्तु ऋतु अनुसार बिस्तर, बिछावन और लोटा आदि बर्तन सबको साथ लाने चाहिएं।

इस अवसर पर चलाये जाने वाले योग-साधना-शिविर के निदेशक होंगे योगधाम ज्वालापुर के स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती महाराज।

सभी आर्य समाजो से प्रार्थना की जा रही है कि वे इस सूचना को अपने यहां प्रसारित कर दें।

—देवदत्त बाली
मन्त्री

शोक समाचार

आर्य समाज पाडूसर नाभा के मा परमानन्द वानप्रस्थी जी का रामपुरा-फूल मे अचानक निधन हो गया। जिस से आर्य समाज को काफी क्षति हुई। उन्होंने अपनी सारी जिन्दगी आर्य समाज को अर्पित कर दी थी और सामाजिक कार्य मे अग्रसर रहते थे। परमपिता परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

अशोक आर्य-प्रचार मन्त्री

सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 रजि. नं. पी..जे.एल 55

वर्ष 18 अंक27.20 आश्विन सम्वत् 2043 तदानुसार 5 अक्तूबर 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे(वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

आदर्श परिवार के लिए वेद का आदेश–2

लेखक—पूज्यपाद श्री स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक
वैदिक संस्थान, नजीबाबाद

इतना कह कर वेश्या ने चाकू उठा कर युवक की ओर बढ़ा दिया। पहले तो युवक सहमा किन्तु कुछ क्षण पश्चात् साहस बटोर कर आगे बढ़ा और चाकू लेकर अपने घर पहुंचा। जाते ही चारपाई पर बैठी बूढ़ी मा की छाती मे चाकू मार कर उसका हृदय निकाल लिया तथा उसी स्थिति मे मा के शव को पड़ा छोड़ कर वेश्या के मकान पर पहुंचा। हृदय को हथेली पर रखे हुए जब वह सीढ़िया चढ़ रहा था तो सहसा सीढ़ी मे ठोकर लगने से गिर गया और उसकी हथेली पर से माता का हृदय भी नीचे जा गिरा। जिस समय हृदय नीचे गिरा, तब उसमे से यह ध्वनि निकलती सुनाई पड़ी, "बेटे! तेरे चोट तो नही लगी है।" इस आख्यान से एक बात तो स्पष्ट हो जाती है कि माता स्वसन्तानो के ठोकर लगने की अपेक्षा स्वयं मर जाना अधिक पसन्द करती है। यही कारण है कि जब कभी बालक माता की कार्य व्यस्तता के कारण अधिक समय तक रो लेता है तो माता उसका मुख चूमते हुए कहती है "मर जाय वह मा, जिसने लाल को मारा।" सचमुच मा का जैसा प्यार बच्चे पर कोई नही कर सकता।

प्रसंगवश यहां पर भारत के इतिहास की एक घटना प्रस्तुत कर देना अनुचित न होगा। महाराजा रणजीतसिंह के प्रधान सेनापति हरिसिंह नलवा जब अफगानिस्तान विजय करके लौटे तो घर मे प्रवेश करते ही माता के चरण-स्पर्श करके नमस्ते की। माता ने प्रसन्नता-पूर्वक आशीर्वाद देते हुए युद्ध के समाचार ज्ञात किये। हरिसिंह ने कहा—मा! मैं तेरे ऋण से उऋण हो कर आया हू। नलवा के इन शब्दो को सुन कर मा अत्यन्त गद्‌गद् हो गई तथा बारम्बार आशीर्वाद देने लगी। रात्रि को सोने के समय हरिसिंह की मा ने कहा हरिसिंह आज मैं और तू एक ही पलंग पर सोएगे। हरिसिंह ने उत्तर दिया, मा! बुढ़ापे तक मैं तेरे साथ ही सोता रहूंगा क्या? मा बोली भगवान करे बेटा! तू सहस्रो वर्ष जिये, किन्तु मेरे लिए तो बच्चा ही रहेगा। इच्छा न होते हुए भी हरिसिंह माता के आग्रह को न टाल सके और एक मन्द मुस्कान के साथ चुप हो रहे। बिस्तर तैयार हो गया और हरिसिंह के साथ माता भी उसी पलंग पर लेट गयी। युद्ध और यात्रा थकान के परिणाम-स्वरूप हरिसिंह लेटते ही निद्रा माता की गोद मे बेसुध हो गये किन्तु माता अभी जाग ही रही थी, उसने गिलास मे रखा हुआ पानी—जो लेटने से पहले ही पलंग के पास रख लिया था—उठा कर बिस्तर पर हरिसिंह के नीचे उड़ेल दिया। पानी पड़ने से बिस्तर जो ठण्डा ठण्डा लगा तो हरिसिंह ने करवट बदली और बोले मा! यह बिस्तर कैसे भीग गया? मां ने कहा बेटा! मेरे हाथ से पानी का गिलास उलट गया है। इतना सुनते ही हरिसिंह बिगड़ कर पलंग से नीचे उतर पड़े और बोले-मा मैं मुसीबत का मारा बहुत दिनो तक लोहे से लोहा बजाने के पश्चात् कई दिन की लम्बी यात्रा करके यहा आया था, विचार था कि आज रात्री भर निश्चिन्तता पूर्वक सुख की नीद सोऊंगा किन्तु यहा आप ने पानी डाल कर सब गुड़-गोबर कर दिया। माता ने अत्यन्त धीमे तथा मार्मिक शब्दो मे कहा! हरिसिंह! इतनी अधिक थकान होने पर भी एक रात्री के लिये तुझसे ठण्डक सहन न हो सकी। मुझ से पूछ, जिसे एक दो नही, सैकड़ो रातें इसी प्रकार तेरे मल और मूत्र मे पड़े-2 बितानी पड़ी हैं। इतने पर भी कभी नाक भौं सिकोड़ने का अवसर तो क्या आना था अपितु उसे अपना सौभाग्य समझती थी। भयंकर से भयंकर शीतकाल मे भी जब तेरे बार-बार मूत्र करने से सम्पूर्ण बिस्तर भीग जाता था तो तुझे छाती पर लिटाकर स्वयं उस भीगे तथा गन्दे बिस्तर मे पड़ी रहती थी। कल्पना तो कर उन रातो की और तब एक बार फिर मुंह भर कर कह-मा! मैं तेरे ऋण से उऋण हो आया। मा के मुख से इन शब्दो को सुनते ही हरिसिंह का सिर मा के चरणो मे झुक गया और दोनो हाथो से मा के चरण पकड़ कर अश्रु पूरित दृग करके गद्‌गद् कण्ठ से बोल उठे-मा! जीवन भी तेरे ऋण से उऋण नही हुआ जा सकता। मा का मन सन्तानो के प्रति अत्यन्त सद्भावना पूरित तथा कोमल होता है, इसीलिए वेद कहता है, "माता भवतु समना" मा के मन को सम्यक् प्रकारेण रखने वाले बनो। किसी भी प्रकार से मा के मन की सम्यक्ता, समता, साम्यावस्था मे अन्तर न आने दो।

(क्रमश)

आर्य–परिवार

ले.—स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती अधिष्ठाता वेद प्रचार दिल्ली

रहता जहा आर्य परिवार-समझो उसे स्वर्ग का द्वार।
जहा प्रेम की बहता सरिता, सारे घर मे आनन्द रहता॥

करें अटूट परस्पर प्यार, समझो उसे स्वर्ग का द्वार॥
पति-पत्नी और भगनी भाई-स्वस्थ नीरोग रहे सुखदाई॥

होती नही कभी तकरार, समझो उसे स्वर्ग का द्वार।
पुष्प भांति खिलते रहे हंसते, प्रात. उठकर करे नमस्ते॥

वेद मन्त्र करते उच्चार, समझो उसे स्वर्ग का द्वार।
मात पिता सुत आज्ञाकारी-वैदिक धर्मी सत्य व्रतधारी॥

सत्यासत्य का रहे विचार-समझो उसे स्वर्ग का द्वार।
रखी रहे वेद की पोथी-वेद मन्त्रा की ध्वनि होती है॥

यज्ञ हवन की धुआधार-समझो उसे स्वर्ग का द्वार।
चित्र दयानन्द लेखराम के-श्रीकृष्ण और श्रीराम के।

शोभा पाये घर की दीवार-समझो उसे स्वर्ग का द्वार।
आदर जहा पाते विद्वान्-शुभ कर्मों मे होता दान॥

अतिथि का होना सत्कार-समझो उसे स्वर्ग का द्वार।
रहता जहा आर्य परिवार-समझो उसे स्वर्ग का द्वार॥

आज हम कहां खड़े हैं—५

आर्य समाज का धर्म पक्ष प्रामाण्यवाद

ले—श्री पण्डित सत्यदेव जी विद्यालंकार
शान्ति सदन 145।4 सेंट्रल टाउन जालन्धर

(गतांक से आगे)

6 प्रारम्भिक ऋषियो ने ध्यानावस्थित होकर और समाधिस्थ होकर वेद ज्ञान प्राप्त किया। इस ही प्रकार आगे भी समाधिस्थ और ध्यानावस्थित होकर जिस जिस ऋषि ने, जिस-जिस मन्त्रार्थ का दर्शन किया, जिसका प्रकाशन किसी और ऋषि ने पहले नही किया, उस-उस मन्त्र के साथ, उस-उस ऋषि का नाम स्मरणार्थ लिया जाता है। यह ऋषि मन्त्र द्रष्टा है मन्त्र कर्ता नहीं।

7 प्रलय अनेक प्रकार की है तथा सृष्टि उत्पत्ति भी अनेक प्रकार की होती है। जब महा प्रलय होता है तब आकाशादि से सृष्टि प्रारम्भ होती है। जब आकाश और वायु का प्रलय नही होता तब अग्न्यादि क्रम से सृष्टि होती है, जब विद्युत् और अग्नि का भी प्रलय नही होता तो जलादि क्रम से सृष्टि होती है। अर्थात् जिस-जिस प्रलय मे जहा-जहा तक प्रलय होता है वहा-वहा से सृष्टि की उत्पत्ति होती है।

8 वर्तमान सृष्टि को हुए 196,0852976 वर्ष हुए यही वेदोत्पत्ति का समय है। ऋ भाष्य भूमिका वि 1933 मे लिखी गई। यह बात ऋषि ने फाल्गुन मास कृष्ण पक्ष षष्ठी शनिवार को लिखी।

इस गणना का आधार ऋषिवर ने प्राचीन काल से चला आया, वैदिक कार्यों के प्रारम्भ मे पढा जाने वाला, "ओ३म् तत्सत श्री ब्रह्मणो द्वितीये प्रहरार्धे आदि" संकल्प वाक्य माना है

इस का विवरण इस प्रकार है कि एक चतुर्युगी मे 43200001 वर्ष होते हैं। 71 चतुर्युगी का एक मन्वन्तर होता है। एक सृष्टिकाल मे 14 मन्वन्तर होते हैं। इस समय सातवा मन्वन्तर वैवस्वत मनु के नाम से चल रहा है। इसकी 28 वी चतुर्युगी है। इसके चौथे कलियुग 4976 वर्ष बीत चुके है।

इस गणना के अनुसार वर्तमान सृष्टि को हुए 1960852976 वर्ष हो चुके, शेष 2333227024 वर्ष बाकी हैं। उत्पत्ति से प्रलय तक एक बार सृष्टि की आयु, जिसे ब्राह्म दिन भी कहते हैं 4320000000 होते हैं। अर्थात् 1000 चतुर्युगी का ब्राह्म दिन होता है।

9. ऋ भाष्य भूमिका के इस लेख के पश्चात् आर्य विद्वानो ने संशोधन कर सात मन्वन्तरो के सात सन्धियोग के 12096000 वर्ष जोड दिए हैं। अजमेर से प्रकाशित ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर सृष्टि संवत् 1972949072 है। इसका प्रकाशन वि स. 2028 मे हुआ।

ऋषि प्रतिपादित विचार का विस्तार से अनुमोदन आर्य मुसाफिर प लेखराम तथा अन्य कई आर्य विद्वानो ने किया।

प रघुनन्दन शर्मा ने अपने ग्रन्थ वैदिक सम्पत्ति मे एक नया विचार दिया। उनके अनुसार पृथिवी पर मनुष्य जाति का उद्भव वैवस्वत मन्वन्तर के प्रारम्भ से ही हुआ। जिसको लगभग 12 करोड 5 लाख तैंतीस हजार वर्ष हुए। यही वेदोत्पत्ति का समय है। इससे पहले स्वायम्भुव मनु के समय नाक्षत्रिक जगत की रचना हुई। स्वारोचिष् मनु के समय पृथिवी बनी। तीसरे मनु के समय चन्द्रमा अलग हुआ। चौथे मनु के समय समुद्र से पृथिवी निकली। पाचवें मनु के समय वनस्पति जगत तथा छठे मनु के समय पशु-पक्षी रचना हुई। इत्यादि।

वेदोत्पत्ति के समय के सम्बन्ध मे ऋषिवर का विचार ऊपर दिया गया।

9 पृथिवी आदि की सृष्टि होने के बाद मनुष्य सृष्टि हुई। प्रारम्भ मे सहस्रो मनुष्य युवा अवस्था मे अमैथुनी रचना के रूप मे प्रगट हुए। यह सृष्टि प्रथम तिब्बत (त्रिविष्टप्) मे हुई। वहा से कुछ काल के पश्चात् आर्यावर्त मे आए, जिसकी सीमा उत्तर मे हिमालय, दक्षिण मे विन्ध्याचल पर्वत माला-विस्तार पूर्वी-पश्चिमी घाट तक पूर्व और पश्चिम में समुद्र यह है। इस देश से मनुष्य जाति फिर विश्वभर मे फैली।

10 सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रादि वसु हैं। इन में भी मनुष्यादि सृष्टि होगी। अवयवों का भेद वातावरण के कारण सम्भव है।

संक्षेप से ऊपर लिखी ऋषिवर दयानन्द की वेदादि साहित्य के सम्बन्ध मे धारणाएं हैं।

ऊपर जो कुछ लिखा गया है, वह बहुत अपूर्ण और संक्षिप्त है। वस्तुतः सम्पूर्ण ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ही ऋषि दयानन्द के वेद सम्बन्धी विचारों को स्पष्ट करने वाला ग्रन्थ है।

जो बात विचारणीय है और महत्व की है वह यह है कि क्या हम इन धारणाओं को इस ही रूप में स्वीकार करे और करवाए जैसे अन्य धर्मसम्बन्धी अपनी स्वर्ग-नरक की, तीर्थों की, पैगम्बरो की, अवतारों की चमत्कारो की धारणाओ को विचारों को मानते हैं। केवल धार्मिक विश्वास के रूप में, जिस पर शंका नही की जा सकती, तर्क नहीं किया जा सकता, वैज्ञानिक विश्लेषण नही किया जा सकता। यह स्पष्ट है कि ऋषि दयानन्द तथा आर्य समाज अन्ध धार्मिक विश्वास के रूप में किसी बात को नहीं मानता। वैज्ञानिक, तर्क सम्मत सत्य के रूप में ही स्वीकार कर सकता है।

यहां एक कठिनता है जिसका निराकरण करना ही पड़ेगा। वर्तमान काल मे प्रचलित विज्ञान हमारी बहुत सी धारणाओं से सहमत नही। कुछ बहुत स्थूल उदाहरण लीजिए। भाषाओ का तुलनात्मक अध्ययन एक विज्ञान का रूप धारण कर गया है। भाषा की ईश्वरीय उत्पत्ति, वैदिक भाषा का ही सम्पूर्ण विश्व की भाषाओ का मूल होना, भारत से ही सम्पूर्ण विश्व मे भाषाओं का जाना आदि विचारो का तुलनात्मक भाषा विज्ञान समर्थन नही करता। इतिहास भी अपने आप मे एक विकसित विज्ञान है। सम्भवत हमारी काल गणना और अमैथुनी सृष्टि की बात इस को स्वीकृत नही होगी। सृष्टि उत्पत्ति एक जटिल विषय है। मेरा अपना अध्ययन इस विषय में नहीं के बराबर है। पर इतनी बात तो साधारण मनुष्य भी समझ सकता है कि एक निश्चित तिथि को अनन्तग्रह नक्षत्र उत्पन्न हो गए, किसी एक पृथ्वी पर मनुष्य, पशु, पक्षी, अनन्त प्रकार के जलजीव प्रगट हो गए, और पृथ्वी के अन्दर सोना, चांदी, कोयला, हीरा, तेल, गैस आदि अपने आप जमा हो गए, आदि कल्पना मानना बहुत कठिन है। इन अवस्थाओ मे आने के लिए करोड़ो अरबो वर्षों का समय अपेक्षित होगा।

इतिहास की दृष्टि से विद्वान् हमारी मान्यताओं को कहा तक स्वीकार करते हैं यह विचारणीय है। मनु स्मृति को सृष्टि के प्रारम्भ में मानना, मैथुनी सृष्टि की का युग बनना के अनुसार कार्यों को पहले होना आदि ऐसी मान्यताएं भी बहुत हैं। इस धरती पर मानव का विकास यह ऐसा विषय है जिस पर बहुत कार्य हो चुका है। सैकड़ों विद्वान् इस विषय में कार्य कर रहे हैं। सैकड़ों विश्वविद्यालयों मे काम चल रहा है। चीन तथा रूस के रेगिस्तानो से लेकर अफ्रीका और अमरीका के सघन वनों में मानव जीवन के अवशेष खोज का प्रयोग तथा अस्थि अवशेषों के रूप में विकास लाखों वर्षों पुराने रूपों का अध्ययन कर जो विकास की कड़िया जोड़ी गई हैं। उनका हमारी मान्यताओ से जहां विरोध है उसका प्रतिकार हम कैसे करेंगे और कहां तक कर सकेंगे?

मैंने यहा तुलनात्मक भाषा विज्ञान, इतिहास, मानव विकास विज्ञान तथा सृष्टि विज्ञान के सम्बन्ध मे कुछ मोटे से उदाहरण देकर चर्चा की। ऋषि दयानन्द के ग्रन्थो को ध्यान से पढ़ने पर ऐसे बहुत से और भी विचार मिल जाएंगे, जिनको विद्यालयो और विश्वविद्यालयों मे पढाए जाने वाले ज्ञान शास्त्र स्वीकार नहीं करते। विचित्र बात तो यह है कि आर्य समाज के अपने विद्यालयो और महाविद्यालयो में भी जो कुछ पढ़ाया जा रहा है—वह आर्य समाज के सिद्धान्तों और धारणाओ से मेल नहीं खाता। वास्तव मे स्थिति तो यह है कि इन सस्थाओं के संचालक बेबस हैं। उनके सामने दूसरा कोई विकल्प है ही नहीं। अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए एक बहुत सामान्य उदाहरण देना चाहूंगा। प्राय. इतिहासकार मानते हैं कि आर्य लोग भारत से—बाहर से आये। यहा पहले जो लोग थे, उन्हें द्राविड कहा जाता था। ऋषिवर ने इस विचार का प्रबल विरोध किया। उनका कहना था कि वेद से लेकर सम्पूर्ण भारतीय साहित्य इस बात की पुष्टि नही करता। आर्य ही भारत के मूल निवासी हैं। कुछ दिन हुए आर्य समाज के एक विद्वान् सन्यासी ने भारत सरकार के शिक्षा विभाग को इस विषय मे लिखा था। सम्भवत शिक्षा विभाग ने उनका पत्र विचार के लिये इतिहास के विद्वानों के पास भेजा होगा। इतिहास के विद्वानो की अपनी धारणाए हैं। उन्हे कैसे बदला जावे। इसका एक मात्र उपाय यह है कि इतिहास को नए सिरे से जांचा जाए, खोजा जाये। पर यह एक सामान्य काम नहीं। आर्य विद्वानो ने भी जो इतिहास पुस्तकें विद्यालयो के लिए लिखी है उनमें भी वही पुराने विचार दिए गए हैं।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

गुरुवर विरजानन्द जी की पुण्य तिथि

आर्य समाज के इतिहास में पंजाब की बहुत बड़ी देन है। पंजाब ने आर्य समाज को कई बड़े 2 विद्वान् और कई उच्चकोटि के संन्यासी व वानप्रस्थी दिए। कभी पंजाब आर्य समाज का गढ़ समझा जाता था। इसी पंजाब ने उस महान् विभूति दण्डी स्वामी महर्षि गुरुवर विरजानन्द को जन्म दिया, जिन्होंने 'दयानन्द' को महर्षि दयानन्द बनाकर सारे संसार पर महान् उपकार किया है। यदि महर्षि दयानन्द जी को दण्डी जी नहीं मिल पाते तो सम्भवतः वह इतने उच्चकोटि के विद्वान् न बन पाते। महर्षि दयानन्द जी के जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि पर्व पर और उनके निर्वाण स्थान अजमेर में दीपावली के पर्व पर प्रति वर्ष बड़े समारोह से उत्सव किए जाते हैं और लगभग सारे भारत से इन दोनों अवसरों पर आर्य बन्धु वहां पधार कर महर्षि दयानन्द जी को अपनी श्रद्धांजलि भेंट करते हैं। इन दोनों उत्सवों के अतिरिक्त हमें प्रति वर्ष इसी प्रकार से राष्ट्रीय स्तर पर गुरुवर दण्डी स्वामी विरजानन्द जी की पुण्य तिथि भी मनानी चाहिए। आश्विन वदी त्रयोदशी उनकी पुण्य तिथि है। जो प्रथम अक्तूबर को पड़ रही है, इस दिन उनका निधन हुए 118 वर्ष व्यतीत हो जाएंगे।

गुरुवर विरजानन्द जी के जन्म स्थान की खोज की गई थी उनका जन्म करतारपुर के समीप वेईं नदी के किनारे गंगापुर ग्राम में हुआ था। इसीलिए उनका स्मारक जी. टी. रोड पर करतारपुर (जालन्धर) में बना हुआ है। स्मारक में अब एक गुरुकुल चल रहा है जिसमें दूर 2 से विद्यार्थी आकर शिक्षा पाते हैं। यह गुरुकुल (संस्कृत विद्यालय) बड़े सुचारु ढंग से चल रहा है। प्रति वर्ष गुरुवर जी की पुण्य तिथि पर इस स्मारक का वार्षिकोत्सव होता है। आरम्भ में तो इस अवसर पर पंजाब से बाहिर के भी आर्य बन्धु भारी संख्या में यहां पधारा करते थे, परन्तु अब बाहिर से तो लोग नहीं आ पाते, पंजाब भर से अवश्य आ जाते हैं। जबकि इस अवसर सभी प्रान्तों से आर्य बन्धु आने चाहिएं।

करतारपुर आर्यों के लिए उसी प्रकार का पुण्य तीर्थ है जिस प्रकार के तीर्थ टंकारा और अजमेर हैं। करतारपुर में प्रति वर्ष गुरुवर विरजानन्द जी की पुण्य तिथि पर एक विशेष समारोह किया जाता है। इस बार भी यह समारोह 28 सितम्बर से आरम्भ हो चुका है। इस महान् यज्ञ की पूर्णाहुति 5 अक्तूबर को प्रातः साढ़े 9 बजे होगी। और उसके बाद श्रद्धांजलि सम्मेलन होगा। 4 अक्तूबर को दोपहर बाद शोभा यात्रा भी निकाली जा रही है। इसलिए सभी आर्य बन्धुओं का यह कर्त्तव्य बन जाता है कि वह इस अवसर पर करतारपुर में अवश्य पधार कर गुरुवर को अपनी श्रद्धांजलि भेंट करें। इसलिए सभी आर्य बन्धुओं से प्रार्थना है कि वह 4 तथा 5 अक्तूबर को अवश्य करतारपुर पधारें।

—सह-सम्पादक

आर्य समाज अबोहर का सराहनीय कार्य

सभा ने गत दिनो से आतंक पीड़ित सहायता कोष आरम्भ किया हुआ है और सभी आर्य समाजो और आर्य बन्धुओ से प्रार्थना की है कि वह अपने आतंक पीड़ित भाईयो की सहायता के लिए अधिक से अधिक धन स्वयं अपने पास से तथा दूसरे बन्धुओ से एकत्रित करके सभा को भेजें। सभा की प्रार्थना पर कई आर्य समाजो और आर्य बन्धुओ ने धन भेजा है और आगे भी भेज रहे हैं। जो राशि प्राप्त हो रही है वह क्रमशः आर्य मर्यादा मे प्रकाशित की जा रही है। हम चाहते हैं कि प्रत्येक आर्य इस यज्ञ मे अपनी आहुति डालें।

आर्य समाज अबोहर के अधिकारी इस समय तक यह राशि भेजने मे सबसे आगे हैं उनकी ओर से तीन किस्तें जो भेजी गई थी वह आर्य मर्यादा मे प्रकाशित कर दी गई हैं और अभी और भी राशि वह निरन्तर भेज रहे हैं। उनका यह कार्य अनुकरणीय और सराहनीय है। यदि पंजाब की अन्य आर्यसमाजो के अधिकारी उनसे इस कार्य मे प्रेरणा ले लें और उन्ही की तरह एक एक व्यक्ति के पास जाकर सहायता राशि एकत्रित करें तो हमे विश्वास है कि हम इस राशि के द्वारा सैकड़ो आतंक पीड़ित बन्धुओ की सहायता कर सकते हैं।

हम आर्य समाज अबोहर के अधिकारियो के आभारी हैं कि वह सभा की प्रेरणा से दिल लगाकर यह कार्य कर रहे हैं। आप भी उनका अनुकरण करें और अधिक से अधिक राशि एकत्रित कर सभा को भेजकर पुण्य के भागी बनें। सभी आर्य बन्धुओ को इस पुण्य कार्य मे जुट जाना चाहिए।

दीपावली विशेषांक

आर्य मर्यादा का प्रति वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी दीपावली के शुभ अवसर पर विशेषांक प्रकाशित हो रहा है। जो गत वर्षों की भान्ति बड़ा आकर्षक और प्रभावशाली होगा। जिसमे उच्चकोटि के विद्वानो के लेख तथा कविताएं होंगी। हमारी सभी आर्य मर्यादा के पाठको तथा आर्य समाजो व शिक्षण संस्थाओ के अधिकारियो से प्रार्थना है कि वह इस विशेषांक के लिए गत वर्षों की भान्ति विज्ञापन भी भेजें और अपने अधिक से अधिक प्रतियो के आर्डर भी भेजें। विज्ञापन पुण्य पृष्ठ के रूप मे भी भेजा जा सकता है। अपने किसी प्रिय की स्मृति मे भी आप विज्ञापन भेज सकते हैं।

इसलिए शीघ्र अति शीघ्र विज्ञापन तथा अपना आर्डर भेजें ताकि आपकी प्रतियां सुरक्षित कर ली जाएं।

—सह-सम्पादक

श्रीजुगलकिशोरजी की धर्मपत्नी का देहावसान

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यालयाध्यक्ष श्री जुगलकिशोर जी की धर्मपत्नी श्रीमती स्नेहलता जी का देहावसान 18-9-86 को हो गया, उनका अन्तिम शोक दिवस 28-9-86 को आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर मे साय 3 से 4 बजे तक मनाया गया। इस अवसर पर जालन्धर, फगवाड़ा, लुधियाना और दूसरे स्थानो से आए बन्धुओ ने तथा रिश्तेदार सम्बन्धियो ने वहां पहुंचकर उन्हे श्रद्धांजलि भेंट की तथा उनकी सद्गति के लिए परमात्मा से प्रार्थना की।

श्रीमती स्नेहलता जी एक साहसी तथा उद्यमी और धर्मपरायण महिला थी। उनका जीवन बड़ा सादा रहा है। उन्होंने अपने पुत्र-पुत्रियो को बड़ा योग्य बनाया। उनका अच्छा निर्माण किया जैसे कि माता को करना चाहिए। उनके तीनो लड़के बड़ी अच्छी पोस्टो पर हैं और बहुत योग्य हैं। उनके चले जाने का सभी को महान् दुःख हुआ परन्तु प्रभु की व्यवस्था के आगे किसी का वश नहीं चलता, यहां सभी को नतमस्तक होना पड़ता है।

ब्रह्मचर्य साधना जीवन

लेखक—स्वामी योगानन्द आर्य समाज
अशोक नगर कालोनी पीलीभीत

योग दर्शन मे सूत्र है "ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठिया वीर्य लाभ"

शब्दार्थ—ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठिया—ब्रह्मचर्य की दृढ स्थिति होने पर "वीर्य लाभ" वीर्य का लाभ होता है।

भावार्थ—ब्रह्मचर्य ही सब शक्तियो का स्रोत है, उसकी पूर्णतया साधना मे शारीरिक-मानसिक और आत्मिक बल मिला करता है, योग मे बिना किसी रुकावट के साधक पूर्णतया सफलता प्राप्त करता है।

श्री कृष्ण के जीवन को ब्रह्मचर्य की कसौटी पर परखें तो उन्होंने मानव के समक्ष चमत्कारिक आदर्श उपस्थित किये, घटना है—कस ने कृष्ण और बलराम की वध करने के लिए योजना बनाई, और मथुरा मे महायज्ञ करने की घोषणा कराई साथ ही कृष्ण और बलराम को निमन्त्रण पत्र भेजा, जब अक्रूर जी को कस के इस रहस्य का पता चला तब इस भेद को बताने के लिये कृष्ण और बलराम के पास अक्रूर गोकुल पहुचे और कस का सारा रहस्य बता मथुरा वापस आ गये।

कस के महा यज्ञ की निश्चित तिथि पर दोनो भाई बलराम और कृष्ण सम्मिलत होने मथुरा आये, कस ने दोनो भाईयो को बल परीक्षा हेतु मार्ग मे एक धनुष टगवा दिया था जिसकी प्रत्यञ्चा को बडे 2 सूरमा नही चढा पाते थे, धनुष को देखते ही बलराम ने मुस्करा कर कहा, भैय्या कृष्ण! हमारी तुम्हारी बल परीक्षा कस देखना चाहता है, यह सुनते ही कृष्ण के बाजू फडक उठ, अगरखा की दोनो बाजुए चढा कर, टगा धनुष उतार लिया और प्रत्यञ्चा को इस जोर से खीचा कि धनुष के दो टुकडे हो गये। इस घटना की सूचना गुप्त-चरो ने कस को दी, सूचना पाते ही कस का दिल दहिल उठा और वह पसीना-पसीना हो गया।

अब दोनो भाई आगे बढ और यज्ञशाला के निकट पहुचे, यज्ञ द्वार पर मस्त खूनी हाथी खडा-2 झूम रहा था। ज्यो ही हाथी मारने को इनकी तरफ लपका ही था कि कृष्ण ने बडी फुर्ती से हाथी के दातो को उखाड डाला, हाथी बद हवास होकर पृथ्वी पर गिर पडा दोनो भाई अपनी शक्ति का परिचय देते हुए आगे बढ रहे थे, आगे देखा तो चार पहिलवान-मुष्टक चाणूर-सत-वत्सल लगोट और जाघिया खीचे हुए, अखाडे के निकट खडे हुए थे, देखते ही चाणूर कृष्ण से और मुष्टक बलराम से मल्ल युद्ध को चिपट गये दोनो भाईयो ने दोनो पहिलवानो को ऐसा पटका कि उनकी हड्डी पसलिया बराबर हो गई, यह देख सत वत्सल मैदान छोड भाग खडे हुए। यह दृश्य जब कस ने देखा वह आग बबूला हो उठा, नगी तलवार लेकर कृष्ण पर झपटा, कृष्ण ने बडी वीरता से तलवार छीन कर उसी तलवार से कस का वध कर डाला और अपने माता पिता वसुदेव और देवकी को कारागार से मुक्त कर मथुरा के सिहासन पर श्री उग्रसेन जी को बिठा दिया। यह कृष्ण के ब्रह्मचर्य साधना का अद्वितीय चमत्कार है।

इन घटनाओ से नव-युवको को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। वीर्य इस शरीर का राजा है, उसकी सुरक्षा करना अत्यन्त आवश्यक है उसका पतन मानव को पतन की तरफ ले जाता है इसकी रक्षा आरोग्यता-बुद्धि-बल पराक्रम-स्मृति को देने वाली है। अगर हम योगीराज कृष्ण जैसा बनना चाहते हैं। विषयी लोगो की सगति से खराब चलचित्रो से बचना पडेगा तभी हम वीर्य जीवी बन सकेंगे वेद ने कहा—

"मरण बिन्दु पातेन जीवन बिन्दु धारणात"

वीर्य की रक्षा न करना मृत्यु है, और उसकी रक्षा जीवन है।

आर्य सभा जिला रोपड़ की विशेष बैठक

गत दिनो खरड मे जिला सभा के उप प्रधान डा विचित्रानन्द मिन्हास मोहाली की अध्यक्षता मे हुई। मीटिंग मे जिला भर से वेद प्रचार और आर्य समाज के कार्यक्रम को गति देने के लिए कई योजनाओं पर विचार किया गया और निर्णय किया कि वैदिक सस्कारो को कराने के लिए तथा प्रचार की दृष्टि से जिला रोपड मे एक योग्य पुरोहित की नियुक्ति की जाए। जिला आर्य समाज रोपड के प्रधान श्री ओम्प्रकाश जी महेन्द्र के सद्भाव पर जिला स्तर पर एक प्रचार तथा भजनमण्डली गठित करने का निर्णय किया गया। मीटिंग में जिला भर की आर्य समाजो ने सम्मिलित होकर अपने 2 विचार प्रकट किए।

—ओम्प्रकाश महेन्द्र, वैदिक मिशनरी मोरिण्डा

त्यागी तपस्वी श्री पं. गंगाराम जी को एक श्रद्धांजलि

लेखक—श्री स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती (अमृतसर)

(गतांक से आगे)

उन्होंने पढाने सिखाने की कभी किसी से फीस नही ली थी। विवाह सस्कारों पर भी किसी से मांगते न थे हरिजनो के विवाहो में तो केवल एक रुपया दक्षिणा लेते थे। यदि [कोई रुपया ले देकर या लडकी बडी, [लडका छोटा] या कोई शराब आदि का [विवाह आदि] मे सेवन करता तो बिना विवाह सस्कार कराए आ जाते थे, आपने अनेक शास्त्रार्थों मे बहुत काम किया।

आप जहा एक अच्छे विद्वान् थे गुणवान थे वहा उनमें त्याग तपस्या बहुत थी।

आप एक अच्छे लेखक थे आर्य गजट मे तो उनके बहुत लेख छपते रहे। आपने कुछ छोटे-छोटे ट्रैक्ट भी लिखे, आर्य सत्सग गुटका भी बडा सुन्दर छपवाया जिस मे आर्य समाजियो के लिये बहुत सी धर्म की जानकारी मिलती है।

पाकिस्तान बनने के बाद आप अमृतसर आये तो अमृतसर की समाजों को पता तो था ही कि यह लग्नशील विद्वान हैं एक दो समाजों ने उन्हें पुरोहित बनने के लिए कहा और 150 से 200 रु तक वेतन देने को कहा परन्तु उन्होंने अपने स्वभाव अनुसार इन्कार कर दिया और कादिया मे जाकर डी ए वी स्कूल मे 60 रु मासिक वेतन पर स्कूल अध्यापक बने वहा से रिटायर होने के बाद फिर कादिया मे ही अन्त समय तक रहे कादिया वाले सभी आर्य भाई उनका बहुत सम्मान करते थे।

कादियों मे भी आपके कई शिष्य हैं जिनमे एक श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी दूसरे श्री रमेशचन्द्र 'जीवन' प्रि डी ए वी कालेज कादिया विशेष उल्लेखनीय हैं और पाकिस्तान के भी आप ने लगभग 8-10 भजनीक आदि तैयार किए थे। परन्तु उनमें से भी अब एक मैं सच्चिदानन्द सरस्वती (मथुरा दास) जो मैं तो भारत भर में घूम कर प्रचार कर रहा हू दूसरे श्री प्रताप सिंह जी ठुकराल मुझ से भी अच्छा बोलने वाले थे। ईश्वर इच्छा से वह ऐसे रोग के रोगी हैं कि चलते-फिरते तो हैं बोलते भी हैं परन्तु उनके बोल की समझ नहीं आती।

चूंकि पत्नी का देहान्त हो गया था सन्तान नहीं थी फिर कादियां मे ही रहे। आदरणीय भाई श्री जगदीश मित्र जी बबरील मे कई वर्ष उनको अपने घर मे रखा और उनकी आपने बहुत सेवा की डा केदार नाथ जी भी हर प्रकार से आपका ध्यान रखते रहे आखरी समय जब आपकी टांग टूट गई। तो डा जी ही आपको अमृतसर ले गए और आपका इलाज कराते रहे।

हम सब को चाहिए कि हम उनके जीवन से प्रेरणा लें

———

आर्योपदेशकों, भजनोपदेशकों के लिए विशेष सूचना

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् भजनोपदेशक श्री आशानन्द जी ने पीछे अपनी नेक कमाई में से उन उपदेशको एव भजनोपदेशको को सहायता देने का निश्चय किया था, जो कि वृद्ध हो चुके हैं अथवा कोई कार्य करने में असमर्थ हैं। इस उपलक्ष मे हमने पीछे समाचार पत्रो मे सूचना दी थी। इस सम्बन्ध में लगभग 100 उपदेशको, भजनोपदेशको के प्रार्थना पत्र हमारे पास आ चुके हैं तथा उनकी जांच कर रहे हैं। इन प्रार्थना पत्रों में से सिर्फ 18 ऐसे उपदेशको एव भजनोपदेशको को कुछ अनुदान की राशि दे सकेंगे। बाकी के लिए बाद में सोचा जायेगा। हमने और नये आवेदन पत्र स्वीकार करने बन्द कर दिए हैं, अतः अब कोई इस विषय में प्रार्थना पत्र न भेजें।

—रामनाथ सहगल
मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा,
मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली—110001

आर्य नारी का यशो गीत

लेखक—श्री पं. सत्यव्रत जी शास्त्री रामपुर

मनु, महाभारत, वेदो के आधार पर उन्हीं के माध्यम से नारी का यशो गान किया है।

यस्यां भूतं समभवद् यस्या विश्वमिदं जगत् ।
तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यश. ॥

पारस्कर गृह्य सूत्र का. 1 क. 7 सू. 2

जिसमे भूतकाल के प्राणियो ने जन्म पाया, जिसमे यह समस्त ससार आश्रित है, जो सब की जननी है वह नारी जिस उत्तम यश की पात्री है, उस यशोगाथा को आज हम गाते हैं।

मनु का यशोगीत, अ 3—श्लोक 55

पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभि र्देवरै स्तथा ।
पूज्या भूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभि ।55।

पिता, भ्राता, पति और देवर आदि पारिवारिक जनो को अपनी कल्याण की भावना से सदा स्त्रियो का सत्कार करना चाहिए और उनको वस्त्र, आभूषण भोजनादि साधनो से सर्वदा प्रसन्न रखना चाहिए।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता. ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रिया ।56।

जिस कुल परिवार मे या समाज मे पिता आदि सरक्षको द्वारा स्त्रियो का समुचित सत्कार मान प्रतिष्ठा होती रहती है उस कुल परिवार मे या समाज मे सदा देवता वास करते हैं और जिन कुल-परिवारो मे इनकी प्रतिष्ठा नही होती यथोचित आदर-सत्कार प्राप्त नही होता वहा समस्त यज्ञ, दान आदि क्रिया निष्फल हो जाती हैं।

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धतेतद्धि सर्वदा ।57।

जिस घर मे गृह-देविया अर्थात् बहन, पत्नी, पुत्री, पुत्रवधू—दुखी रहती हैं शोकाकुल रहती हैं चिन्ता निमग्न रहती हैं वे कुल परिवार घर शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं और जहा स्त्रिया किसी भी रूप में दु खी नही रहती सदा प्रसन्न रहती हैं वे घर परिवार कुल धन धान्य से सदा समृद्ध होते रहते हैं।

जामयो यानि गेहानि शपन्त्य प्रति पूजिता ।
तानि कृत्या हतानीव विनश्यन्ति समन्तत ।58।

जिन घरो मे गृह लक्ष्मिया-देविया अपमानित होकर तथा प्रताडित होकर शाप देती हैं या अनिष्ट चिन्तन करती हैं वे घर समृद्ध होने पर भी राक्षसो वादियो के द्वारा सताए हुओ की तरह सर्व प्रकार से नष्ट हो जाते हैं।

तस्मादेताः सदा पूज्या भूषणाच्छादनाशनैः ।
भूति कामैर्नरैर्नित्यं सत्कारेषूत्सवेषु च ।59।

अतः ऐश्वर्य की इच्छा करने वाले पुरुषों को पिता, भ्राता, पति, देवर आदिकों को उत्सवादि शुभ एव माङ्गलिक कार्यों मे वस्त्र, आभूषण आदि से सदा स्त्रियो का सत्कार करना चाहिए उन्हें सदा प्रसन्न रखना चाहिए।

सन्तुष्टोभार्ययाभर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च ।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम् ।60।

जिस कुल परिवार मे पति पत्नी से और पत्नी पति से परस्पर सन्तुष्ट एव प्रसन्न रहते हैं उस कुल-परिवार मे निश्चय ही कल्याण सुख-शान्ति रहती है।

यदि हि स्त्री न रोचेत पुमास न प्रमोदयेत् ।
अप्रमोदात् पुन पुस प्रजनं न प्रवर्तते ।61।

यदि स्त्री स्वय प्रसन्न नही हो या शोभित न हो तो पति को भी प्रसन्न नही कर सकती। पुरुष की बिना प्रसन्नता के सन्तान की उत्पत्ति नही हो सकती। अत सन्तानोत्पत्ति के लिये परस्पर दोना की प्रसन्नता अभीष्ट एव आवश्यक है।

स्त्रियां तु रोचमानायां सर्वं तद्रोचते कुलम् ।
तस्यां त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते ।62।

स्त्री की प्रसन्नता से उसके सन्तुष्ट एव प्रसन्न रहने से समस्त पारिवारिक जन सदा प्रसन्न रहते हैं सुखी रहते हैं और स्त्री की अप्रसन्नता से उसके सन्तुष्ट न रहने से कुछ भी अच्छा नही लगता सब परिवार दु खी रहता है।

यथा वायु समाश्रित्य वर्तन्ते सर्व जन्तव ।
तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते सर्व आश्रमा ।3। ।77।

जिस प्रकार वायु का आश्रय लेकर समस्त प्राणी वर्ग जीवन धारण करते हैं बिना वायु के जीवन क्षण भर भी स्थिर नही रह सकता उसी प्रकार गृहस्थ आश्रम के आधार पर ही अन्य समस्त ब्रह्मचर्यादि आश्रम स्थिर रहते हैं अपना पालन-पोषण करते है किन्तु इस गृहस्थाश्रम के उत्तरदायित्व का मूलाधार एक मात्र सद गृहिणी है कुशल नारी है।

यस्मात्त्रयोऽपि-आश्रमिणो ज्ञानेनान्नेन चान्वहम् ।
गृहस्थेनैव धार्यन्ते तस्माज्ज्येष्ठाश्रम गृही ।3।78।

जिस कारण तीनो आश्रमो को ज्ञान और अन्नादि के द्वारा गृहस्थ पुरुष प्रतिदिन पालन, पोषण धारण करता है अत गृहस्थाश्रम तीनो आश्रमा से बड़ा है। इसी के बल पर सब आश्रम अपना निर्वाह करते हैं।

स सधार्य प्रयत्नेन स्वर्गमक्षय मिच्छता ।
सुख चेहेच्छता नित्य योऽधार्यो दुर्बलेन्द्रियै ।3।79।

जो व्यक्ति इस लोक मे अक्षय सुख चाहता है और परलोक मे मोक्ष सुख का अभिलाषी है उस प्रयत्न पूर्वक अर्थात् सब तरह की विघ्न बाधाओ को सहन करके भी गृहस्थ आश्रम को धारण करना चाहिए अर्थात गृहस्थ अवश्य होना चाहिए किन्तु जो दुर्बलेन्द्रिय है जिसके शरीर मे और इन्द्रियो मे बल नही है। हीन बल है सदा रोगी रहता है ऐसे निर्बल व्यक्ति को गृहस्थ मे प्रवेश नही करना चाहिए यह आश्रम दुर्बलो के लिए अनुकूल नही है।

बालया वा युवत्या वा वृद्धया वापि योषिता ।
न स्वातन्त्र्येण कर्त्तव्य किंचित् कार्यं गृहेष्वपि ।5-147
बाल्ये पितुर्वशेतिष्ठेत् पाणिग्राहस्य यौवने ।
पत्राणां भर्तरि प्रेते न भजेत् स्त्री स्वतन्त्रताम् ।148।

स्त्री बालिका हो या युवती अथवा वृद्धा हो स्वेच्छापूर्वक स्वतन्त्रता से घर मे भी कोई कार्य न करे।

स्त्री को बाल्यावस्था मे अर्थात कुमारावस्था मे पिता के अधीन यौवनावस्थाओ विवाह होने पर पति के अधीन और पति की मृत्यु होने पर अपने पुत्रों के अधीन रहना चाहिए। अर्थात् उनका वरद हस्त सदा उस पर रहना चाहिए व कभी भी अपने को असहाय एकाकी न अनुभव करे। यही स्वतन्त्रता पूर्वक न रहने का आशय है किन्तु उसके स्वत्वाधिकार का अपहरण कदापि नही होना चाहिए।

(क्रमशः)

आतंक पीड़ित परिवार सहायक कोष के लिए प्राप्त राशियों की सूची

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने आतंकवाद से पीड़ित भाईयों की सहायता के लिए एक सहायता कोष आरम्भ किया है इसमें निम्न महानुभावो ने और दान दिया है। हमारी और भी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि इस सहायता कोष मे अधिक से अधिक धन भेजें।

महाव्रत शर्मा
सभा महामन्त्री

(गतांक से आगे)

आर्य समाज अबोहर (पंजाब) के द्वारा आतंक पीड़ित परिवार सहायता कोष मे पहले भी 6268 रुपए की राशि प्राप्त हो चुकी है और अब तीसरी किस्त उन्होंने 3354 रुपए की भेजी है जो इस प्रकार है।

क्र.	नाम	राशि
1	डा चमनलाल जी	251-00
2	श्री परमानन्द सत्यनारायण	201-00
3	श्री दयाल एसोशियन	201-00
4	श्री चौधरी ताराचन्द	201-00
5	श्री बगाई सेल्स कारपोरेशन	201-00
6	सरस्वती देवी धर्म पत्नी स्व श्रीरामलाल सिक्का	200 00
7	श्री मदनलाल जी	101 00
8	श्री टेकचन्द दौलतराय आहूजा	101-00
9	श्री गणश टी कम्पनी	101 00
10	श्री दुलीचन्द नरेन्द्र कुमार	101-00
11	श्री माणकचन्द गोविन्दराम मित्तल	101-00
12	श्री रमण कुमार जी	101-00
13	श्री कालूराम, बिहारी लाल	101-00
14	श्री नत्थूराम अर्जुनदास	101 00
15	श्री मथरादास छाबड़ा	100-00
16	श्री हेतराम सुखराम	50-00
17	श्री साईदास दुलीचन्द बाघला	51-00
18	श्री कुन्दनलाल कश्मीरी लाल बाघ I	50-00
19	नन्दलाल पुरुषोत्तमदास	51-00
20	श्री महताबराय बग्गाराम	51 00
21	श्री दयाराम हरगोविन्दराम	51-00
22	श्री दयाराम प्यारेलाल	51-00
23	श्री चाननमल देवराज हलवाई	31-00
24	श्री राजबक्श अशोक कुमार	31-00
25	श्री गोमाराम जयलाल	21-00
26	श्री अमीरचन्द जसराज	21-00
27	श्री वेद प्रकाश चुघ	11-00
28	श्री मदनलाल चुघ	11-00
29	श्री मुरारीलाल नत्थूराम	11-00
30	श्री रामप्रकाश ओम ल	10-00
31	गुप्त दान	10-00
32	श्री देवी सहाय हरबंसलाल	51-00
33	श्री सोहनलाल सेतिया	51 00
34	श्री महावीर प्रसाद महेश कुमार	51-00
35	डा एम एल कुमार	51-00
36	श्री कृष्ण चन्द्र	51-00
37	श्री महेन्द्र प्रताप	51-00
38	श्री भीमसेन मदनमोहन	51-00
39.	संजय जनरल स्टोर	51-00
40.	श्री प्रकाश रेडीमेड	25-00
41.	श्री कर्मचन्द पुरुषोत्तमलाल	21-00
42.	श्री महावीर ट्रेडिंग कम्पनी	21-00
43.	श्री बनवारी लाल पुरुषोत्तम दास	21-00
44.	श्री नरेश टी कम्पनी	21-00
45	श्री राजेन्द्र कुमार सिद्धू	21-00
46	श्री ओमप्रकाश नारंग	21-00
47.	श्री नेतराम सहकूलसिंह	21-00
48	श्री बनारसी दास बाबूलाल	21-00
49	श्री हनुमान प्रसाद प्रेम कुमार	21-00
50	शिव ट्रेडर्स	21-00
51.	आतुराम अवतार	21-00
52	श्री निहालचन्द जी	10-00
53	श्रीमती भगवान देवी	5-00
		3354-00
	गतांको मे प्रकाशित राशि जो आगे छप चुकी है—	14923-30
	कुल जोड़	18,277 00

(क्रमश:)

आर्य समाज "अनारकली" का वार्षिकोत्सव १० नवम्बर से १६ नवम्बर तक

आर्य जनता को सूचनार्थ निवेदन है कि आर्य समाज "अनारकली" जो कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी ए वी की मुख्य आर्य समाज है का वार्षिकोत्सव सोमवार, 10 नवम्बर से रविवार, 16 नवम्बर 1986 तक होगा। जो कि बड़े समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। सोमवार, 10 नवम्बर से शनिवार 15 नवम्बर तक आचार्य श्रीरामप्रसाद जी वेदालंकार उपकुलपति, कांगड़ी विश्व विद्यालय प्रतिदिन रात्रि को कथा एव प्रात को यजुर्वेद पारायण महायज्ञ करेंगे, शुक्रवार, 14 नवम्बर को 12 से 5 बजे तक महिला सम्मेलन होगा तथा शनि-वार को प्रात 9-30 से मध्याह्न 1-30 बजे तक डी ए वी. शिक्षण संस्थाओं एव अन्य आर्य शिक्षण संस्थाओ के विद्यार्थियों की ओर से सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जायेगा। शनिवार को ही 6 से 8 बजे तक श्री आशानन्द जी भजनोपदेशक द्वारा 20 ऐसे उपदेशको, भजनोपदेशको को सम्मानित किया जाएगा जो काफी वृद्ध हो गए हैं, तथा जिन्होंने अपनी सारी उम्र आर्य समाज की सेवा मे लगा दी है। ऐसे भजनोपदेशक को वे एक-एक हजार रुपये, एक चित्र एव एक दुशाला भेंट करेंगे।

रविवार, 16 नवम्बर को प्रातः यज्ञ की पूर्णाहुति होगी तथा 4 विशेष विद्वानो के उपदेश होंगे। तदन्तर 1 से 2 बजे तक ऋषिलंगर होगा। 2 से 5 बजे तक अखिल भारतीय स्तर पर "आर्य युवक सम्मेलन" होगा।

मेरी समस्त आर्य जनता से प्रार्थना है कि वे उपर्युक्त तिथियां अभी से अंकित कर लेवें तथा उक्त कार्यक्रमो से अवश्य पधारने की कृपा करें।

—रामनाथ सहगल-मन्त्री

श्री देशराज जी थापर के सुपुत्र का शुभ विवाह

आर्य समाज सैं 22 चण्डीगढ़ के सदस्य श्री देशराज जी थापर मकान न 2086 सैक्टर 24 सी.-के सुपुत्र चिरञ्जीव वेदप्रकाश जी थापर का शुभ विवाह आयुष्मति शर्मिला जी सुपुत्री स्व. दीनानाथ चड्ढ़ी (चण्डीगढ़) के साथ पूर्ण वैदिक रीति से यशस्वी प. रामप्रकाश जी पुरोहित द्वारा 14-9-86 को सम्पन्न हुआ। उपस्थित लोगो पर वैदिक विवाह संस्कार का बहुत प्रभाव पड़ा।

मित्रों, सम्बन्धियों ने इस अवसर पर उपस्थित होकर वर-वधू को आशीर्वाद दिया और विवाह की शोभा को बढ़ाया।

मेधा बुद्धि व पावनता की याचना

लेखक—श्री व्रतपाल जी साधक

ओम् यां मेधां देवगणः पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥
यजु. 32-14

पदार्थ—(याम्) जिस (मेधाम्) मेधा बुद्धि की पावनता को (देवगणः) विद्वान् लोग (च) और (पितरः) पितृ वर्ग (उपासते) उपासना करते हैं प्राप्त करते हैं (तया) उस मेधा बुद्धि को (माम्) मुझ को (अद्य) आज (मेधया) मेधा बुद्धि से (अग्ने) हे अग्नि स्वरूप, प्रकाश स्वरूप, परमेश्वर! (मेधा विनम्) मेधावान् (कुरु) कीजिए (स्वाहा) इस बुद्धि की प्राप्ति के लिये बुद्धिवर्धक सामग्रियों से यज्ञ करता हूं॥

भावार्थ—हे अग्नि स्वरूप, प्रकाश स्वरूप परमेश्वर! हम आप से उसी मेधा रूपी, धारणावती, निश्चयात्मिक बुद्धि की याचना करते हैं। जिस मेधा बुद्धि को समस्त विद्वान् जन और अनुभवी बुद्धिमान पितर जन अपने जीवन में धारण करके उसी के माध्यम से अपने जीवन की पावनता (पवित्रता) को स्थिर बना कर अपने कर्त्तव्यों का शोभनीय परिपालन करते रहे हैं। आज हमें भी उसी मेधा बुद्धि को प्रदान करके हमें भी पूर्ण मेधावी बनाइये।

मेधा के अनेक अर्थ कोषो में लिखे हुए हैं। यथा धारणावती बुद्धि, निश्चयात्मिक बुद्धि, तथा पावनता, पवित्रता और निर्दोषता आदि आदि हैं।

वस्तुत. मानव जीवन की पावनता तथा इस के विकास व उत्थान का आधारभूत मूल कारण उसकी पवित्र, धारणावती निश्चयात्मिक बुद्धि ही है। किसी सस्कृत के कवि ने सत्य ही कहा है। कि बुद्धि हीन नर पशु समान।

किन्तु हमारे पौराणिक भाई मेधा का अर्थ यह करते हैं कि किसी पशु या मनुष्य को मार कर वा काट कर उसकी आहुतियां यज्ञ हवन में देना नर मेध तथा गोमेध यज्ञ हुआ करता है।

परन्तु हमारी पवित्र वेद वाणी वा प्रामाणिक शास्त्रो में कहीं भी ऐसे हिंसा-युक्त यज्ञ का कहीं भी विधान नहीं है।

हमारे वैदिक साहित्य मे जो नरमेध, अश्व मेध आदि यज्ञो का जो विधान है। उस का अर्थ केवल यही है कि नरो अर्थात् मनुष्यो को, अश्वो को और गौओं को अधिकाधिक उपयोगी, गुणवती और पूर्ण तथा दोष रहित करना वा बनाना ही है।

मनुष्यों की उत्तम शिक्षा दीक्षा और विद्वानों की सगति से उत्तम आचरण वा गुणवान् बनाना ही नरमेध यज्ञ होता है। तथा अश्व का अर्थ पशु रूप घोड़ा भी है और अश्व हमारी कर्मेन्द्रियो को भी माना जाता है। पशु रूप अश्वो को अच्छा पौष्टिक भोजन देकर उन्हें अच्छा प्रशिक्षण दे कर गुणवान वा उपयोगी बनाया जाता है। तथा हमारी कर्मेन्द्रियों को भोजन आच्छादन वा सयमित जीवन और ब्रह्मचर्य के तप से इन्द्रियें पवित्र किया जाता है—यही अश्वमेध यज्ञ है।

गो मेध यज्ञ मे गौ के अनेक अर्थ हैं—पृथिवी, सूर्य की किरण, वाणी, मनुष्यों की ज्ञानेन्द्रिया और पशु रूप गौ आदि-आदि। इनका सुधार जिन क्रियाओ के माध्यम से किया जाता है वह सब गो मेध यज्ञ होते हैं। जैसा पृथिवी को विज्ञान के द्वारा उपजाऊ बनाना, सूर्य की किरणो से अधिक लाभ प्राप्त करके ऊर्जा प्राप्त करना, वाणी का सुधार शिक्षा, सयम, तप और ब्रह्मचर्य के द्वारा वाणी को सात्विक व ओजस्वी बनाना और मनुष्यो की ज्ञानेन्द्रियो को भी शिक्षा दीक्षा सयम तप के माध्यम से पवित्र बनाना पशु गौ का उत्कृष्ट पालन पोषण करके अधिक दुग्ध बनाना यह सब गौ मेध यज्ञ कहलाते हैं।

२१ सितम्बर को बरनाला में युवक सम्मेलन

आर्य युवक समाज बरनाला की ओर से आर्य समाज बरनाला मे 21 9 86 को प्रात 9-00 बजे से 11-30 बजे तक एक युवक सम्मेलन किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा, महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने की, इस समारोह मे श्री प्रेम प्रकाश जी महात्मा पुरी वाले । रोशनलाल जी शर्मा, सयोजक आर्य युवक सभा पजाब एव कार्यकारिणी के अन्य सदस्य भी शामिल हुए। वेद प्रचार भजन मण्डली लुधियाना के मनोहर भजन हुए। इस अवसर पर जिला आर्य युवक सभा सगरूर का गठन किया गया।

सम्मेलन के पश्चात् आर्य युवक सभा पंजाब की कार्यकारिणी की बैठक हुई जिस मे पजाब स्तर पर संगठन को मजबूत बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

आर्य नवयुवको एव बरनाला की आर्य जनता ने अधिक से अधिक सख्या मे भाग लेकर इस सम्मेलन को सफल बनाया।

—रामशरण दास गोयल
प्रधान आर्य युवक समाज, बरनाला

आर्य समाज बंगा का चुनाव

आर्य समाज बगा का चुनाव दिनाक 3-8-86 को निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान—श्री देशराज डडवाल।
मन्त्री—श्री शादीलाल महिन्द्रू।
उपमन्त्री—श्री छज्जूराम सभा।
कोषाध्यक्ष—श्री रमेश लाल सूरी।
पुस्तकाध्यक्ष—श्री श्यामलाल मौर्य
आर्य वीर दल अध्यक्ष—श्री ज्ञामलाल

अन्तरंग सभा सदस्य—

श्री देशराज डडवाल, श्री शादीलाल महिन्द्रू, श्री छज्जूराम सभा, श्री रमेश लाल सूरी, श्री श्याम लाल मौर्य, श्री ज्ञामलाल, श्री शक्ति कुमार महिन्द्रू, श्री गुरदास मल बत्तरा, श्री राजेन्द्रपाल श्री चौधरी जगतराम मिल।

आर्य समाज रानी का तालाब फिरोजपुर में वेद प्रचार

आर्य समाज (रानी का तालाब) फिरोजपुर शहर मे प्रभु प्रेरणा से और सब भाईयो, बहनो के सहयोग से 18-8 86 से 31-8-86 तक बड़ी श्रद्धा और प्रेम के वातावरण मे वेदों के विद्वान् पण्डित श्री यमनेलाल जी द्वारा सफलतापूर्वक यज्ञ चलता रहा। पूज्य स्वामी प्रकाशानन्द जी की अध्यक्षता में पूर्णाहुति हुई। श्री रामदेव जी गुप्ता ने उदारता से सगत को पूरी सब्जी मीठी चटनी खिला कर सेवा की, श्री जोगिन्द्र पाल जी निम्मा के परिवार ने गुड़ घी के हलवे का प्रशाद बाटा।

—मोहनलाल
मन्त्री

आर्य समाज मोहल्ला गोविन्दगढ़ जालन्धर का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज मोहल्ला गोविन्दगढ़ जालन्धर का वार्षिक चुनाव गत दिनो निम्न प्रकार से सम्पन्न हुआ जिसमे वर्ष 1986-87 के लिए सब अधिकारी सर्वसम्मिति से चुने गये।

प्रधान—श्री रामप्रताप जी, उपप्रधान—श्री अमृतलाल जी बजाज, श्रीमती पार्वती देवी जी, मन्त्री—श्री नरेशकुमार, उपमन्त्री एवं प्रचार मन्त्री—श्री ब्रह्मदत्त जी, कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश पुरी, पुस्तकाध्यक्ष एव भण्डाराध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश चौहर, लेखा निरीक्षक—श्री ब्रह्मदत्त शर्मा।

अन्तरङ्ग सदस्य—श्री कपिलदेव जी, श्री प्रीतमनाथ जी, श्री अवतारराज जी, श्री चतुर्भुज जी मित्तल, श्री मुनीलाल जी, श्री जवाहरलाल जी, श्री भीष्म देव जी सवल, श्रीमती शर्मा देवी।

प्रधान जी को श्री और नाम मनोनीत करने का अधिकार दिया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए निम्नलिखित सज्जन प्रतिनिधि चुने गए।

श्री अमृतलाल बजाज।
श्री ब्रह्मदत्त शर्मा।

—नरेश कुमार-मन्त्री

खेल प्रतियोगिता

11 9 86 से 14 9 86 तक जालन्धर मे स्कूल स्तर पर आयोजित खो-खो मे दोआबा आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल नवांशहर के बच्चो ने जिला जालन्धर की टीम की ओर से अच्छे खेल का प्रदर्शन करके स्टेट ट्राफी जीती और इसी तरह इसी स्कूल की लड़कियो ने अच्छे खेल का प्रदर्शन करके स्टेट स्तर के खो खो के मुकाबलो में स्टेट मे दूसरा स्थान प्राप्त किया।

इस उच्चकोटि की सफलता का श्रेय स्कूल कमेटी के प्रधान श्री देवेन्द्र कुमार जी, मैनेजर श्री वेद प्रकाश जी सरीन, शिक्षा परिषद के प्रस्तोता श्री धर्म प्रकाश जी दत्त स्कूल के प्रिंसीपल श्री हरबंस लाल जी तनेजा को जाता है। स्कूल स्टाफ तथा टीमों के कोच श्री वीरेन्द्र को जाता है। जिनके परिश्रम और सहयोग से यह उच्चकोटि की सफलता प्राप्त हुई है।

—प्रबन्धक

आर्य समाज राजपुरा में सामवेद परायण महायज्ञ

पूज्यपाद महात्मा आनन्द देव जी वानप्रस्थी की अध्यक्षता मे 21 9-86 से 28 9 86 तक मनाया गया।

कार्यक्रम

प्रात 6 बजे से 8 बजे तक।

साय 4 बजे से 6 बजे तक।

21 9 86 रविवार से प्रारम्भ होकर यज्ञ की पूर्णाहुति 28 9 86 रविवार प्रात 10 बजे सम्पन्न हुई। इसके पश्चात ऋषिलंगर का आयोजन किया गया।

आर्य समाज सुजानपुर में वेद प्रचार

गत दिनो आर्य समाज सुजानपुर (गुरदासपुर) मे वेद प्रचार सप्ताह बड़े समारोह से मनाया गया। श्री प रामनाथ जी यात्री तथा श्रीराम जी के भजन होते रहे। दोनो समय प्रात तथा सायं कार्यक्रम चलता रहा। काफी संख्या में लोगो ने इसमे भाग लिया। इस प्रचार का जनता पर अच्छा प्रभाव रहा। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को स्त्री पुरुषो ने मिलकर 301 रु वेद प्रचार की राशि भेंट की।

मन्त्री

नवांशहर में संगीत प्रतियोगिता

13 सितम्बर 1986 को का आशानन्द आर्य बालविद्या मन्दिर में का आशानन्द की जयन्ती पर संगीत कला उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस संगीत प्रतियोगिता में कुल 22 टीमो ने भाग लिया। टीमें दूर-दूर से आई हुई थी। इस उत्सव की मुख्य अतिथि डा श्रीमती नीलम गोयल थे। इस उत्सव मे सभी टीमो ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। सभी आईटमज बहुत रोचकपूर्ण थी। किसी को भी पता नहीं चलता था कि कौन सी टीम प्रथम स्थान प्राप्त करेगी। लेकिन निर्णायक मण्डल के निर्णय के अनुसार माडल स्कूल नवांशहर के विद्यार्थियों को ट्राफी मिली। प्रथम पुरस्कार का आशीर्वाद का आशानन्द की आर्य बाल विद्या मन्दिर का विद्यार्थी [illegible] बना। [illegible] वह विद्यार्थी हमारे स्कूल को [illegible] है। [illegible] तथा [illegible] के गुण को सीख लिया। इस की सफलता का श्रेय श्री [illegible] सिंह जी को जाता है। द्वितीय पुरस्कार [illegible] स्कूल नवांशहर के विद्यार्थी को प्राप्त हुआ। इसी स्कूल के विद्यार्थी सुरजीत सिंह ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

इसी शुभ अवसर पर हमारे स्कूल के दो नये कमरों का उद्घाटन आर्य शिक्षा परिषद् पंजाब के रजिस्ट्रार श्री धर्म प्रकाश दत्त ने किया। संगीत कला को उत्साहित करने के लिए डा श्रीमती नीलम गोयल ने 501 रुपए दिए। और बच्चो को अपने कर कमलों से पुरस्कार बांटे।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 रजि. नं. पी.जे.एल 55

वर्ष 18 अंक28 27 आश्विन सम्वत् 2043 तदानुसार 12 अक्तूबर 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे(वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

आदर्श परिवार के लिए वेद का आदेश—3

लेखक—पूज्यपाद श्री स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक
वैदिक संस्थान, नजीबाबाद

(गताक से आगे)

मन्त्र का तृतीय वाक्य है, "जाया पत्ये मधुमतीम्" पत्नी-पति के प्रति मधुमय, मीठा प्रेममय, उत्तम व्यवहार करने वाली हो। किसी भी परिस्थिति में पत्नी द्वारा पति के प्रति कटु प्रेम-रहित शुष्क, अनुत्तम और अशिष्ट व्यवहार नहीं होना चाहिए। दिन-भर कार्यालय विद्यालय, दूकान तथा खेत पर कार्य करने के उपरान्त जब सायकाल पति घर पहुचता है तो पत्नी के मुस्कराते मुख-मण्डल को देखकर उसकी सारी थकान भाग जाती है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार थके मस्तिष्क वाले व्यक्ति को किसी सुन्दर वाटिका मे पहुचकर विश्राम मिलता है। कार्य मे मुक्त होकर घर पहुँचते समय पुरुष को सदैव यह कामना रहती है कि पत्नी द्वारा उसे प्रेम तथा सद्भावना पूर्ण शब्द सुनने को मिलें यदि ऐसा होता है तो उसके थकान रूपी घाव पर जैसे फाहा लगा दिया गया हो। उसे अत्यन्त मधुर सुख की अनुभूति होती है किन्तु जब उससे विपरीत होता है तो जैसा उसके घाव पर नमक छिड़क दिया गया हो। दिन भर को कार्य व्यस्तता और थकान से सहस्रों गुणा वह कष्ट होता है, जो पत्नी के दुर्व्यवहार से प्राप्त होता है।

'पति' शब्द का अर्थ है पालन करने वाला। पति की सहचरी होने से गृहणी पत्नी कहलाती है। पत्नी' 'शब्द का अर्थ भी पालन करने वाली होती है। पति धन कमाकर पत्नी का पालन करता है तो पत्नी स्वादु अनुकूल उत्तमोत्तम भोजनों के निर्माण, सुन्दर व्यवस्था एवं अन्य अनेक प्रकारेण सुविधा पहुचाकर सेवाओं द्वारा पति के जीवन का पालन करती है। जो पत्नी इस प्रकार पति का पालन न करे यह तो पत्नी शब्द का साक्षात् तथा जीवित-जागृत अपमान है। पत्नी-पति की जीवन सखा है मित्र है। वैदिक पद्धति से होने वाले विवाह सस्कार के अवसर पर सप्तपदी की क्रिया में वर सातवा पग आगे बढाने के लिए निर्देश करते हुए कन्या से कहता है, 'सखे सप्त-पदी भव' सखा, मित्र! मेरे साथ सातवां पग बढाओ। यहा पर देवी, आर्या, आर्य पुत्री, भद्रे, धर्मपत्नी आदि सम्बोधन भी प्रयोग किए जा सकते थे, किन्तु पद्धतिकार को यह स्वीकार न था। पद्धतिकार ने इस बात को समझा कि जो महत्व सखा शब्द में है वह अन्य में नही अत, सखा शब्द को विनियुक्त किया—सखा शब्द अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सखा मित्र बनने तथा मित्रता निभाने के लिए हृदय की पवित्रता अत्यावश्यक है। जब हृदय में अपवित्रता कलुषता आ जाती है तभी मित्रता समाप्त हो जाती है, अत पति-पत्नी मे भी हृदय का पवित्रता अत्यावश्यक है। हृदय की पवित्रता मे ही सद्भावना का निवास है, सद्भावना से ही प्रेम होता है तथा प्रेम से अभि-सिक्त होकर ही परस्पर एक दूसरे की पालना हो सकती है। पत्नी का हृदय यदि पति के प्रति प्रेमाभिसिक्त है तो पति का पालन कर सकती है। अन्यथा पालन के दो अग है—पालन और रक्षण, बिना रक्षण के पालन अधूरा है। रक्षण पूर्वक जो पालन होता है, वही सच्चे अर्थों में पालन है। पत्नी यदि सखा शब्द के मर्म को समझती है, उसका हृदय पति के प्रति प्रेमाभिसिक्त तथा सद्भावनापूर्ण है तो वह पति का रक्षण कर सकती है, उसे आपत्तियो से बचा सकती है, उसको प्रवृत्तियो की दुष्कृत्यो की ओर से हटा सकती है। आपत्तियो का कारण दुष्कृत्य ही है। यदि पति दुष्कर्मी है तो आपत्तियो को आने से कौन रोक सकता है एतदर्थ पत्नी का कर्तव्य है कि वह पति को दुष्कर्मों मे प्रवृत्त होने से बचाए तथा दुष्कर्मों मे लिप्त होने पर उसे उधर से रोकने के लिए सतत प्रयत्न करे। यह कोई असाध्य रोग नही है, आवश्यकता है पत्नी के साधनाशील होने की। इति-हास साक्षी है कि पत्नियो ने किस प्रकार पतियो का दुष्कर्मों से रक्षण किया। यहा हम एक ऐसी ही साध्वी देवी के पति को दुष्कर्मों से बचाने की ऐतिहासिक घटना का उल्लेख करने लगे हैं।

भारतीय महापुरुषो मे स्वामी श्रद्धा-नन्द का नाम अत्यन्त आदर के साथ लिया जाता है। बात स्वामी जी के गृहस्थ जीवन की है। गृहस्थ मे आपका नाम मुन्शीराम था और पत्नी का नाम शिवदेवी जी। एक बार मुन्शीराम को मद्यपान (शराब पीने) की लत पड गई और वह दिन-प्रतिदिन बढती गई। शिव-देवी जी को भी इस विषय का ज्ञान हो गया अत' वह अत्यन्त चिन्तित रहने लगी। समझाती भी थी, परन्तु उन पर लेश भी प्रभाव नही होता था। कब और किस प्रकार प्रभाव हुआ, यह स्वामी श्रद्धानन्द जी के अपने शब्दो मे पढिए।

'बरेली आने पर शिवदेवी (मेरी धर्म पत्नी) का यह नियम हुआ कि दिन का भोजन तो मेरे पीछे करती थी,परन्तु रात को जब मुझ देर हो जाती और पिता जी भोजन कर चुकते तो मेरा और अपना भोजन ऊपर मगा लेती और जब मैं लौटता उसी समय अगीठी पर गर्म करके मुझे भोजन करातीं, पीछे स्वय खाती। एक रात मैं रात के आठ बजे मकान लौट रहा था गाढी दर्जी चौक के दरवाजे पर छोडी। दरवाजे पर ही बरेली के बुजुर्ग रईस मुन्शी जीवन सहाय का मकान था। उनके बडे पुत्र मुन्शी त्रिवेणी सहाय ने मुझे रोक लिया। बोतल सामने रखी और जाम भर कर दिया। मैंने इन्कार किया। बोले—'तुम्हारे लिए ही तो आतशा खिचवाई है। यह जौहर है। त्रिवेणी सहाय जी के छोटे सब मेरे मित्र थे, उनको मैं बडे भाई के तुल्य समझता था, न तो आतशा का मतलब समझा न जौहर का, एक गिलास पी गया। फिर गप्पबाजी शुरू हो गई और उनके मना करते-2 मैं चार गिलास चढा गया। असल मे वह बडी जहरीली शराब थी। उठते ही असर मालूम हुआ। दो मित्र साथ हुए। एक ने कहा चलो मुजरा कराए। उस समय तक न तो मैं कभी वेश्या के मकान पर गया था और न कभी वेश्या को अपने यहा बुलाकर बात-चीत की थी, केवल महफिलो मे नाच देखकर चला आता था। शराब ने इतना जोर किया कि पाव जमीन पर नही पडता था। हम एक वेश्या के घर जा घुसे। कोतवाल साहब के पुत्र को देखकर सब सलाम करके खडी हो गई। घर की बडी नायिका को हुकम हुआ कि मुजरा सजाया जाए। उसकी नोची के पास कोई रुपया देने वाला बैठा था। उसके आने मे देर हुई। न जाने मेरे मुह से क्या निकला ? सारा घर कापने लगा। नोची घबरायी हुई दौडी आई और सलाम किया। तब मुझ किसी अन्य विचार ने आ घेरा। उसने क्षमा मागने के लिए हाथ बढाया और मैं नापाक-नापाक कहते हुए नीचे उतर आया। यह सब पीछे साथियो ने बतलाया। नीचे उतरते हो घर की ओर लौटा, बैठक में तकिए पर जा गिरा और बूट आगे कर दिए, जो नौकर ने उतारे। उठकर ऊपर जाना चाहा, परन्तु खडा नही हो सकता था। पुराने भृत्य बूढे पहाडी पाचक ने सहारा देकर ऊपर चढाया। छत पर पहुचते ही पुराने अभ्यास के अनुसार किवाड बन्द कर लिए और बरामदे के पास पहुचा ही था कि उल्टी होने लगी।

(क्रमश')

रामायण से क्या शिक्षा मिलती है

लेखक—श्री पं. निरञ्जन देव, इतिहास केसरी
सभा महोपदेशक

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम के पवित्र नाम से विश्व का कोई भी पढ़ा लिखा व्यक्ति अनभिज्ञ नहीं। महर्षि वाल्मीकि इनकी अमर गाथा लिख कर स्वयं भी अमर हो गए। एक विदेशी लेखक ने लिखा है कि किसी भी देश, जाति एवं परिवार के लिए रामायण से बढ़ कर, तप, त्याग का उपदेश देने वाली कोई दूसरी पुस्तक सारे जगत् में कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होती।

महाराजा दशरथ ने सन्तान की प्राप्ति के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ किया था। फलस्वरूप उन्हें चार पुत्र रत्न प्राप्त हुए। माता कौशल्या से राम, छोटी रानी कैकेयी से भरत तथा मंझली रानी सुमित्रा से लक्ष्मण और शत्रुघ्न। यद्यपि चारों भाई सरल, विनम्र, योद्धा, त्यागी, तपस्वी, विद्वान्, पितृ भक्त, देश भक्त और नाना प्रकार के गुणों से विभूषित थे, तो भी राम, राम ही थे। उनका परिचय देते हुए देवर्षि नारद महर्षि वाल्मीकि से कहते हैं :—

बुद्धिमान् नीतिमान् वाग्मी श्रीमान्
शत्रु निबर्हणः।
विपुलांसो महाबाहुः कम्बुग्रीवो
महाहनुः।
महोरस्को महेष्वासो गूढ़ जत्रु
ररिन्दमः।
आजान बाहुः सुशिराः सुललाटः
सुविक्रमः।

श्री राम विचारशील, नीतिज्ञ, चतुर वक्ता, ऐश्वर्यशाली, शत्रु नाशक एवं विशाल कन्धों वाले हैं। शंख के समान गर्दन, बड़ी ठोड़ी तथा घुटनों तक लटकने वाली गोल तथा मोटी भुजाओं में भारी धनुष को धारण करने वाले हैं। उनका सिर सुन्दर और माथा चौड़ा है वे वीर योद्धा हैं।

समः सम विभक्ताङ्गः स्निग्ध वर्णः
प्रतापवान्।
पीन वक्षा विशालाक्षो लक्ष्मी वाञ्छुभ
लक्षणः।

"उनके शरीर की रचना अद्भुत है अर्थात् वे न बहुत लम्बे और न ही बहुत छोटे हैं। उनका शरीर सुन्दर तथा चमकदार है। उनकी छाती उभरी हुई और नेत्र बड़े-बड़े हैं वे प्रभावशाली और शुभ लक्षणों से सम्पन्न हैं।

राम की महिमा गाते-गाते नारद जी पुनः कहते हैं :—

धर्मज्ञः सत्य सन्धश्च प्रजानां च
हिते रतः।
यशस्वी ज्ञान सम्पन्नः शुचिर्वश्य
समाधिमान्।

धर्म को जानने वाले, सत्य प्रतिज्ञ, परोपकारी, यशस्वी ज्ञानी पवित्र, जितेन्द्रिय और योग समाधि लगाने वाले हैं।

सर्व शास्त्रार्थ तत्वज्ञ, स्मृतिमान्प्रति
भानवान्।
सर्व लोक प्रियः साधुरदीनात्मा
विचक्षणः।

वे सब शास्त्रों के तत्वों को भली-भान्ति जानने वाले, स्मरण शक्ति वाले और प्रतिभाशाली सर्व प्रिय, सज्जन कभी दीनता न दिखाने वाले और लौकिक तथा अलौकिक क्रियाओं में कुशल हैं। सारांश यह कि—

स च सर्व गुणोपेतः कौसल्यानन्द
वर्धनः।
समुद्र इव गाम्भीर्ये धैर्येण हिम
वानिव॥
विष्णुना सदृशो वीर्ये सोमवत प्रिय
दर्शनः।
कालाग्नि सदृशः क्रोधे क्षमया
पृथिवी समः।
धन देन समस्त्यागे सत्ये धर्म
इवापरः॥

सर्व गुण सम्पन्न श्रीराम, माता कौशल्या के आनन्द को बढ़ाने वाले हैं। वे गम्भीरता मे समुद्र के समान, धैर्य में हिमालय के तुल्य, पराक्रम में विष्णु के सदृश, प्रिय दर्शन में चन्द्रमा जैसे, क्षमा में पृथ्वी की भांति और क्रोध मे कालाग्नि के समान हैं। वे दान देने में कुबेर के समान और सत्य भाषण में मानो दूसरे धर्म हैं।

तथ्य यह है कि राम ही नहीं, राम के माता, पिता, भाई, पत्नी, गुरु एवं श्वसुर आदि भी आदर्श महापुरुष थे। ले देकर एक माता कैकेयी ही ऐसी रही जिसके लिये लक्ष्मण ने भी दुःख प्रकट किया :—

भर्ता दशरथो यस्याः साधुश्च भरतः
सुतः।
कथं नु साम्बा कैकेयी ता दृशी
क्रूर दर्शिनी॥

वीर लक्ष्मण ने राम से गिला किया कि जिसका पति महाराजा दशरथ हो जिसका पुत्र साधु स्वभाव वाला भरत हो ऐसे परिवार में माता कैकेयी जैसी क्रूर स्वभाव वाली कैसे आ गई। मर्यादा पुरुषोत्तम राम, वीर लक्ष्मण द्वारा माता माता कैकेयी की यह निन्दा सहन न कर सके, उन्होंने तत्काल उत्तर दिया—

न तेऽम्बा मध्यमा तात गर्हितव्या
कदाचन।
तामेव इक्ष्वाकु नाथस्य भरतस्य
कथां कुरु॥

हे लक्ष्मण! तुम मझली माता कैकेयी की निन्दा का प्रसंग बन्द करो, केवल महाराज भरत ही की चर्चा करो। जिस माता कैकेयी ने राम को राजगद्दी से उठाकर वनों में धकेला, उनसे सुख सामग्री छीन ली, यहां तक कि रेशमी वस्त्र तक उतरवा कर वृक्षों की छाल पहनाई। सोने के बर्तनों में भोजन करने वाले राम को करपात्री बना दिया। राजकुमारी सीता और वीर लक्ष्मण जैसी निर्मल आत्माएं जिसके अत्याचार के के कारण वनों में ठोकरें खाती फिरी हों। वही कैकेयी जिसने अपने पति की भी जान ली, जिसकी निन्दा प्रत्येक नर-नारी, छोटे बड़े से लेकर गुरु वशिष्ट तक ने भी की यहां तक कि जिस भरत के लिए उसने यह अनर्थ किया, हां वही भरत जिसने उसकी कोख से जन्म लिया उसने भी माता कैकेयी के इस कुकर्म की भरपूर निन्दा की और उसे क्षमा नहीं किया...परन्तु धन्य हैं राम! जो माता कैकेयी की निंदा करना तो दरकिनार! निन्दा सुन भी नहीं सकते। ऐसा उदाहरण अन्यत्र कहीं न पाओगे। महर्षि वाल्मीकि का यह कथन यथार्थ है—

यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च
महीतले।
तावद्रामायण कथा लोकेषु
प्रचरिष्यति॥

जब तक पृथ्वी पर पर्वत स्थित है और नदियां बहती हैं अर्थात् जब तक यह संसार चलेगा तब तक राम कथा भी बराबर चलती रहेगी।

मन्थरा की मन्त्रणा :—

कैकेयी बुरी न थी राम के प्रति उसके मन में कितना आदर था। जब मन्थरा से राम के राजगद्दी पर बैठने का समाचार सुना, तो कैकेयी पलंग से उठ बैठी। देखिये, महर्षि वाल्मीकि क्या लिखते हैं :—

अतीव सा तु संहृष्टा कैकेयी
विस्मयान्विता।
एकमाभरणं तस्यै कुब्जायै प्रददौ
शुभम्॥

समाचार सुनते ही माता कैकेयी ने अत्यन्त प्रसन्नता एवं आश्चर्य से अपना एक सोने का भूषण उतार कर उस कुबड़ी मन्थरा को प्रदान किया। जेवर देने के पश्चात् माता कैकेयी मन्थरा की ओर देखकर बोली : हे मन्थरे! तू ने मुझे अति सुखद समाचार सुनाया है तू मुझे यह बता कि अब तेरी और क्या सेवा करूं? पगली! तू ने शुभ समाचार दूसरे ही ढंग से सुनाया है। मेरे लिये राम और भरत में कोई अन्तर नहीं।

रामे वा भरतेवाऽहं विशेषं
नोपलक्षये।
तस्मात्तुष्टाऽस्मि यद्राजा रामं
राज्येऽभिषेक्ष्यति॥

मैं, राम तथा भरत में कोई विशेष फर्क नहीं देखती। यदि राजा, राम को राज्य सौंपते हैं, तो मैं प्रसन्न हूं।— देखिए! कितने शुद्ध अन्तःकरण से कैकेयी ने राम के राजगद्दी पर बैठने का स्वागत किया। इतने ऊंचे विचार रखने वाली माता कैकेयी कैसे मन्थरा की बुरी मन्त्रणा का शिकार हुई। ईश्वर ऐसे संगी साथियों से बचाएं।

माता कैकेयी के विचार सुन कर मन्थरा भड़क उठी। उसने जेवर परे फैंक माता कैकेयी को निम्न शब्दों में उलटी पट्टी पढ़ाई :—

भोली! तू शोक के स्थान पर खुशी मना रही है। तुझे क्यों पता नहीं चलता कि तू शोक सागर में गोते खा रही है। उलटी समझ पर मुझे दया आती है। क्या कोई समझदार स्त्री. मृत्यु के समान सौकन के वैरी तुल्य पुत्र की उन्नति देखकर प्रसन्न हो सकती है? मन्थरा बोलती चली गई :—

राम के समान भरत का भी राज्य पर अधिकार है इसलिए राम को भरत से भय है, यही सोच कर मैं दुखी हूं। मन्थरा ने कैकेयी को अधिक भड़काने के लिए निम्न शब्द भी कहे :—

विदुषः क्षत्र चारित्रे प्राज्ञस्य प्राप्त
कारिणः।
भयात्प्रवेपे रामस्य चिन्तयन्ती
तवात्मजम्।

श्री राम, राजनीति के पण्डित हैं। वे अति चतुर और समयानुसार कार्य करने वाले हैं। अतः भरत को राम से भय उपस्थित देखकर मैं भय से कांप रही हूं। पुनः कहा :—

कौशल्या सौभाग्यवती है। जिसका पुत्र राजा बनेगा। जो सम्पूर्ण पृथ्वी की स्वामिनी होगी। हे कैकेयी! तुझे उस के सामने दासी समान हाथ जोड़ कर खड़े होना पड़ेगा। मैं तो दासी हूं ही, मेरे साथ तू भी कौशल्या की दासी कहलाएगी और तेरा पुत्र राम का दास होगा——।

पाठक वृन्द! मन्थरा के इस लम्बे चौड़े "उपदेश" से भी कैकेयी प्रभावित न हुई। माता कैकेयी राम से कितनी प्रभावित थी वह उसके प्रत्युत्तर से स्पष्ट होता है। माता कैकेयी ने मन्थरा को टोक कर जवाब दिया :—

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

आर्य समाज और हिन्दू समाज-4

इस शृंखला के मैंने जो तीन लेख इस समय तक लिखे हैं, उनमें देश की वर्तमान परिस्थितियों के इस पक्ष की ओर पाठकों का ध्यान दिलाया था कि यद्यपि हमारे देश के नेता यह कहते हैं कि हमारी अनेकता में ही एकता है, परन्तु वास्तविक स्थिति उस से बिल्कुल भिन्न है। कहने को तो कहा जाता है कि देश एक है, इसलिए इसकी एकता सुदृढ़ रहनी चाहिए। परन्तु इस एक देश में कई धर्म है, कई भाषाएं हैं, कई विचारधारें हैं, कई मतमतान्तर हैं और कई संस्कृतियां हैं। उसका ही यह परिणाम है कि आज पंजाब, कश्मीर, बंगाल, मिजोरम, नागालैण्ड और दूसरे कई प्रदेशों में विघटनकारी शक्तियां सक्रिय हो रही हैं और उनके कारण कई बार यह चिन्ता भी होने लगती है कि देश की एकता रह भी सकेगी या नहीं। 1947 में जब देश का विभाजन हुआ था और पाकिस्तान बनाया गया था, उस वक्त हमारे नेताओं ने कहा था कि वे इस विभाजन को केवल इसलिए स्वीकार कर रहे हैं कि एक बार यह आपस के मतभेद समाप्त हो जाएं, जो हम से अलग होना चाहते हैं, वे हो जाएं और उसके बाद हमारा देश इतना सुदृढ़ और शक्तिशाली हो जाएगा कि कोई शक्ति इसके सामने खड़ी न हो सकेगी। उस समय यह भी कहा जाता था कि हमारे सारे इतिहास में इस प्रकार से इतना बड़ा देश कभी एक विधान और एक निशान के नीचे न आया था। हम भी उस समय इस पर बहुत गर्व करते थे कि संसार में एक नया देश अपनी एकता के बल पर उभरा है और यह सारे संसार को अपनी प्राचीन संस्कृति के आधार पर एक नई दिशा दिखा सकेगा।

परन्तु आज स्थिति क्या है? जो कुछ पंजाब में या कश्मीर में हो रहा है और अब बंगाल में भी होने लग गया है, उसे देख कर यह डर पैदा हो रहा है कि कहीं देश का फिर बंटवारा न हो। पंजाब में खालिस्तान, कश्मीर में पाकिस्तान और बंगाल में गोरखालैण्ड के समर्थक ऐसी स्थिति पैदा कर रहे हैं, जिसमें आगे चल कर हमारे देश का सारा राज्य प्रबन्ध अस्तव्यस्त हो सकता है। देश के राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री तथा और दूसरे अन्य नेताओं ने कई बार यह कहा है कि स्थिति अत्यन्त चिन्ताजनक रूप धारण कर रही है और यदि विघटनकारी तत्वों को दबाने का प्रयास न किया गया तो देश का भविष्य धूमिल हो सकता है। है। जब स्थिति यह हो तो आर्य समाज जैसी संस्था हाथ पर हाथ रखे कैसे बैठ सकती है। देश को आजाद करवाने में आर्य समाज का जो योगदान था, उसने आर्य समाज के कन्धों पर एक और दायित्व भी डाला है, स्वाधीनता के लिए न केवल हजारों आर्य समाजी जेलों में गये थे, अपितु रामप्रसाद बिस्मिल तथा भगतसिंह जैसे आर्य समाजी युवक फांसी पर भी झूल गए थे। उन लोगों ने अपने खून से आजादी की फुलवाड़ी को सींचा था और हम जो उनके पीछे रह गये थे, हमारे जिम्मे में यह काम लगाया था कि जिस फुलवाड़ी को उन्होंने अपने खून से सींचा था। हम उसे सूखने न दें। आज वह सूखती नजर आ रही है। सारे देश में बेचैनी देख रहे हैं। कहीं प्रान्त के नाम, कहीं धर्म के नाम पर, कहीं भाषा के नाम पर एक ऐसी स्थिति पैदा हो रही है, जिसके विषय में आर्य समाज को उदासीन न होना चाहिए और अपने इस कर्त्तव्य को पूरा करने का प्रयास करना चाहिए।

मैं पहले भी यह लिख चुका हूं कि जो स्थिति पैदा हो गई है, उसमें केवल आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है, जो देश को बचा सकती है। यह मैं इसलिए कहता हूं कि हिन्दुओं में जितने सम्प्रदाय हैं, वे सब बंटे हुए हैं। हमारे जो सनातनधर्मी भाई हैं, उनका कोई एक देवता नहीं जिस की वे पूजा कर सकें, कोई भगवान राम की पूजा करता है, कोई कृष्ण की और कोई विष्णु की और कोई शिव की पूजा करता है और कई लोग हनुमान के पुजारी हैं और ऐसे लोगों की कमी नहीं जो सांप की भी पूजा करते हैं। कई वृक्षों और पौधों की पूजा करते हैं। इसी प्रकार जहां तक उनके धार्मिक ग्रन्थों का सम्बन्ध है, कोई गीता का स्वाध्याय करता है, कोई पुराणों का करता है, कोई हनुमान चालीसा का करता है, कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे सनातनधर्मी भाई भिन्न-2 धड़ों में बंटे हुए हैं। जितने उनके धार्मिक वर्ग हैं, उतनी उनकी मूर्तियां हैं। प्रत्येक मन्दिर में भिन्न-2 प्रकार की मूर्तियां रखी गई हैं। हमारे देवी-देवता भी अनगिनत हैं उनकी मूर्तियां भी अनगिनत हैं। मूर्ति पूजा में विश्वास न रखते हुए भी जो भाई मूर्ति पूजा करते हैं, मैं उनकी भावनाओं का आदर करता हूं। परन्तु इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि भिन्न-2 देवी देवताओं की पूजा से किसी भी जाति में एकता और संगठन पैदा नहीं हो सकता। क्या हम नहीं देखते कि मुसलमानों का एक ही पैगम्बर है, हजरत मुहम्मद। इसाईयों का भी एक ही गुरु है ईसामसीह। सिखों के केवल दस गुरु हैं, परन्तु हिन्दुओं में इतने देवी देवता हैं कि कई बार उनकी गिनती भी मुश्किल हो जाती है। कहते हैं कि हमारे देश में 50 लाख साधु हैं। उनके भी कई सम्प्रदाय हैं, कई मठ हैं, कई अखाड़े हैं। कहने का तात्पर्य यह कि हिन्दू जाति सब से अधिक विघटित है। हम आपस में इतना ज्यादा बंटे हुए हैं कि हमारे अन्दर वह संगठन पैदा नहीं होता। जो हम मुसलमानो ईसाईयो, या सिखों में देखते हैं। ऐसी स्थिति में प्रश्न पैदा होगा कि क्या हिन्दुओं में कोई ऐसी संस्था नहीं, जो उनमें एकात्मता की भावना पैदा कर सके और जिस संगठन की आज आवश्यकता है, उसके द्वारा हिन्दुओं में वह एकता और शक्ति पैदा कर सकें कि हम सब मिल कर उन विघटनकारी तत्वों का मुकाबला कर सकें। जो इस देश के नये टुकड़े करना चाहते हैं और हमारी सारी प्राचीन संस्कृति को मिटा देना चाहते हैं। मेरा एक ही उत्तर है वह यह कि केवल आर्य समाज हिन्दुओं में वह संगठन पैदा कर सकता है जिसकी कि आज आवश्यकता है। वह कैसे इसका उत्तर अगले अंक में दूंगा।

वीरेन्द्र

एक दुखान्त समस्या का सुखान्त समाधान

पंजाब की आर्य जनता और विशेषकर आर्य मर्यादा के पाठक जानते हैं कि पिछले कुछ समय से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के बीच कुछ मतभेद पैदा हो रहे थे, जिनका सम्बन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का जो विभाजन 1975 मे हुआ था, उससे था। गुरुकुल कांगड़ी और उससे सम्बन्धित संस्थाओं का प्रबन्ध कैसे किया जाये, इस विषय मे भी कुछ मतभेद था, गुरुकुल और दूसरी संस्थाओ के प्रति आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का एक विशेष दायित्व है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने ही यह संस्थाए प्रारम्भ की थी और आज तक वह ही इनका प्रबन्ध करती चली आई है जब तीन सभायें बन गई, तो यह प्रश्न उठा कि देहली और हरियाणा की प्रतिनिधि सभायें इस सम्बन्ध मे क्या कर सकती है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब उन दोनो सभाओ का सहयोग लेने के लिए सदा ही उत्सुक रही है, प्रश्न केवल यह था कि वह कैसे लिया जाए? और उसकी रूप रेखा क्या हो? इस मतभेद के कारण कई प्रकार की भ्रान्तियां भी पैदा होती रही हैं। परन्तु इसी के साथ यह प्रयास भी होता रहा है कि इस समस्या का कोई समाधान निकाला जाए। आर्य जनता को यह सूचित करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव के सतत प्रयत्नो से इस समस्या का समाधान निकाल लिया गया है और अब सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली और आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के बीच एक ऐसा समझौता हो गया है, जिसके अनुसार गुरुकुल कांगड़ी और उससे सम्बन्धित संस्थाओं का प्रबन्ध सुचारू रूप से चल सकेगा। इस सम्बन्ध मे सार्वदेशिक सभा ने जो प्रस्ताव 22-6-86 को पारित किया था और जो प्रस्ताव आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा ने 29-6-86 को पारित किया था, वे दोनो भी वापस ले लिए जाएंगे। जो मुकद्दमे अब चल रहे हैं, वे भी समाप्त हो जाएंगे। इस प्रकार एक बार फिर मेल-मिलाप का वातावरण पैदा हो जाएगा।

जो फैसला हुआ है इसके लिए मैं श्री वन्देमातरम् का धन्यवाद करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्रद्धेय स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती और सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ जी मरवाह का भी हार्दिक धन्यवाद करता हूं, उन दोनो ने इस गुत्थी को सुलझाने में अपना जो योगदान दिया है, वह सराहनीय है और उसके लिए हम उनके आभारी हैं।

—वीरेन्द्र

राम क्या थे

लेखक—श्री पृथ्वीराज जिज्ञासु एम ए संस्कृत दीनानगर

※

हम प्रतिवर्ष विजय दशमी का पर्व मनाते हैं। नवरात्रो मे स्थान-स्थान पर राम लीलाए होती हैं। रामायण की कथाए एवम अखण्ड पाठो का आयोजन किया जाता हैं। इस अवसर पर रावण और कुम्भ कर्ण के पुतलो को जलाया जाता है। परन्तु हमने यह जानने का यत्न नही किया कि राम क्या थे ? क्यो सहस्रो वर्षों के उपरान्त भी वे अमर हैं ? ससार उन्हे भूल नही पा रहा। उनमे उनमे वह कौन सी विशेषता थी जिसके कारण लोग उनकी पूजा करते हैं। यह विचारणीय प्रश्न है केवल रामलीलाए करके अथवा अखण्ड पाठ आयोजित करके हम राम के सच्चे भक्त नही कहला सकते। राम एक आदर्श पुरुष थे, मर्यादा पुरुषोत्तम थे। आदर्श भाई थे और आदर्श पति थे। राम पितृ भक्त प्रजा वत्सल थे। वह कौन सा गुण है जो राम मे नही था। आओ आज हम उनके गुणो का स्मरण कर अपने जीवन मे ढालने का प्रयत्न करें।

राम की पितृ भक्ति की समता विश्व मे कोई नही कर सका। पिता के कहने पर चौदह वर्ष वनो की यातनाए सहना राम का ही काम था। हस हस कर सकट झेलना, लेकिन कभी मन से भी पिता को न कोसना राम की ही विशेषता थी। जब राम को वन जाने का आदेश होता है और वह अपनी माता कौशल्या के पास वन गमन की आज्ञा लेने जाते हैं, तो कौशल्या राम के प्रति ममता दिखाती है। तो क्या कहते हैं मेरे राम—सुन-जननी सोई सुत बडभागी, जो पितु मातु बचन अनुरागी, तनय मात-पितु तोषण हारी दुर्लभ जननी सकल ससारी।

माता मैं पिताज्ञा पालना अपना धर्म समझता हू इस धर्म-पालन मे मुझे कितने भी कष्ट क्यो न सहने पडे मैं सहूगा।

जिस समय लक्ष्मण को शक्ति लगती है तथा वह मूर्छित हो जाता है उस समय राम की हृदय वेदना वर्णनीय है। वह विलाप करते हुए कहते हैं—देशे देशेस्य कलत्राणि, देशे देशेस्य बान्धवा। तम् तु देश न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरा।

ससार मे बन्धु-बान्धव बहुत मिल जाते हैं, पत्निया भी अनेको मिल सकती हैं, परन्तु सहोदर भाई मिलना बहुत कठिन है। पत्नी के प्रति राम का प्रेम भी अनूठा ही था। जब हनुमान जी सीता के पास जाते हैं तो राम हनुमान जी को कहते हैं, सीता से मेरी तरफ से ये शब्द कहना—तत्व प्रेम रस मम अरु तोरा, जानत प्रिया एक मन मोरा। सो मन रहत सदा तोही पाहीं, जानहु प्रिया रस इतनेहु माही।

राम एक आदर्श राजा थे। उनके राज्य मे जनता सुखी थी। देश धन-धान्य से भरपूर था। कोई भी व्यक्ति छोटी आयु में मृत्यु का ग्रास नहीं बनता था। राम राज्य का वर्णन करते हुए गोस्वामी तुलसी दास जी लिखते हैं :—

दैहिक दैविक भौतिक ताप, राम राज नाहिं काहुहु ब्यापा सब नर करिहहिं परस्पर प्रीति, चलहु सदा श्रुति रत नीति, सब गुनग्य, पण्डित सब ज्ञानी सब कृतज्ञ नाहिं कपट स्यानी, अल्प मृत्यु नाहिं कवनेहु पीरा, सब सुन्दर, सब विरुज सरीरा॥

राम के राज्य मे देश आर्थिक दृष्टि से भी सम्पन्न था। उस समय देश की आर्थिक स्थिति का वर्णन तुलसी दास जी ने इस प्रकार किया है।

मणि दीप राजहिं, भवन भ्राजहिं,
देहरी विद्रुम रची।
मणि खम्ब भीति।
विरञ्चि विरची।
कनक मणि मरकत खची,
सुन्दर मनोहर मन्दिरायत,
अजिर फटिक रुचिर रचें।
प्रति द्वार-द्वार कपाट पुरट बनाई
बहु-वज्रहिं खचे।

राम हृदय से किसी के साथ भी द्वेष नहीं करते थे। जिस समय रावण की मृत्यु हो जाती है तो आप विभीषण को रावण का विधिवत दाह सस्कार करने का आदेश देते हुए कहते हैं—मरणान्तानि वैराणि निवृत्तम् किम् प्रयोजनम् क्रियतामस्य सस्कार। ममपि एष यथा तव।

आओ आज विजय दशमी के पावन पुनीत अवसर पर हम मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन से कुछ सीखने का यत्न करें और उनके गुणों को ग्रहण करके अपने जन्म को सफल बनाए।

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना में वेद सप्ताह सम्पन्न

15 सितम्बर से 21 सितम्बर 1986 तक श्रद्धेय सुपर्णा जी यति (जम्मू निवासी) की अध्यक्षता मे धूम-धाम से मनाया गया है। चारो वेदो के शतको से यज्ञ श्री बालकृष्ण जी शास्त्री की देख-रेख मे अत्यन्त ही सुन्दरता से चलता रहा। सप्ताह भर के आयोजन में 60 के लगभग यजमान बने। श्रीमान् विश्वपाल जी वेदज्ञ ने सपत्नीक यज्ञाग्नि बडी श्रद्धा भावना से प्रज्वलित की। प्रतिदिन एक दम्पत्ति मुख्य यजमान के आसन पर शोभायमान होते थे, साथ मे अन्य बहिनें भी यज्ञ वेदी की शोभा को बढाती थी। श्रीमान् विजय जी आनन्द, जसविन्दर जी फिरोजपुर छावनी से पधार थे उनके भजनो से उपस्थित भाई बहिनें आनन्द विभोर होते रहे। स्थानीय समाजो की बहिनो के तथा आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकण्डरी स्कूल की छात्राओ के भजनो ने भी खूब प्रभावित किया। कार्यक्रम का मुख्याकर्षण यजमानो का समय से पूर्व ही पधारना प्रेरणा देने की बात थी। पूर्णाहुति 21 ता रविवार को बडी सुन्दरता से सभी स्थानीय समाजो के सहयोग से सम्पन्न हुई। सभी उपस्थित भाई-बहिनो ने श्रद्धा से पूर्णाहुति की। पूज्य सुपर्णा जी यति ने सभी यजमानो को आशीर्वाद दिया। स्त्री समाज की ओर से फल तथा ओंकार स्तोत्र यजमानो को भेंट दिए। सभी ने सुव्यवस्थित कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशसा की। मान्या सुपर्णा जी यति का उपदेश आर्य कालेज महिला विभाग एव आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकण्डरी स्कूल मे भी कराया गया। दोनो सस्थाओ पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा। यज्ञ शेष श्रीमती शकुन्तला जी मल्हन सरक्षक समाज की ओर से बाटा गया तथा फलों की भेंट श्रीमती कौशल्या देवी वर्मा सदस्य समाज की ओर से दी गई। सब भाई-बहिनो ने तन, मन, धन से कार्यक्रम को सफल बनाया। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर को पूर्ववत वेद प्रचार विशेष के लिए एक हजार रुपया भेंट किए गए। कुमारी सत्या जी आर्य (सरक्षक समाज) को श्रद्धेय सुपर्णा जी यति को परिवार में रखने का सौभाग्य एव सुअवसर प्राप्त हुआ। आने वाले सभी विद्वानों का यथोचित आदर सत्कार किया गया। कार्यक्रम हर दृष्टि से सफल रहा। स्त्री समाज की प्रधान श्रीमती कमला जी आर्य ने सर्वप्रथम प्रभु का धन्यवाद किया, जिसकी सद् प्रेरणा से यह आयोजन किया गया। साथ ही सब विद्वानो एव सभी पधारने वाले भाई-बहिनो तथा सब सहयोगी बहिनो का हार्दिक धन्यवाद किया। शान्ति पाठ तथा जयघोष के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

—विनोद सोंई
मन्त्री

मोगा में ११ कुण्डीय यज्ञ

स्त्री आर्य समाज मोगा के तत्वावधान मे दिनांक 14 अक्तूबर से 19 अक्तूबर तक पूज्य श्री स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे 11 कुण्डीय यजुर्वेद यज्ञ हो रहा है। स्त्री आर्य समाज की ओर से बहन इन्दुपुरी जी का आह्वान है कि इस यज्ञ मे यजमान बनने के लिए मोगा से बाहर के बन्धुओ को सम्मिलित होकर पुण्य लाभ प्राप्त करना अपेक्षित है जो भाई बहिन यजमान बनना चाहे वे बहन इन्दु जी को स्त्री आर्य समाज मोगा के पते पर अपने कार्यक्रम की सूचना देने का कष्ट करें।

—सत्यव्रत शर्मा
सभा महामन्त्री

आर्य समाज गोविन्दगढ़ जालन्धर के समाचार

आर्य समाज मुहल्ला गोविन्दगढ जालन्धर में वेद प्रचार सप्ताह 1-9-86 सोमवार से 7-9-86 रविवार तक बडे समारोह से मनाया गया। जिसमें प्रातः श्री शालिग्राम जी (शास्त्री) पाठशाला द्वारा यजुर्वेद शतक यज्ञ और श्रीराम जी भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के भजन होते रहे। प्रातः और सायं भजनो के पश्चात् स्वामी सच्चिदानन्दजी के मनोहर वेद उपदेश होते रहे शनिवार 6-9-86 तथा रविवार (7-9-86) को विशेष आनन्द के भरपूर कथन हुए। यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार प्रातः डाली गई। और आर्य समाज की ओर से सभा को 300 रुपया वेद प्रचार के लिए तथा तथा दो सौ (200) रुपया "आर्तक पीडित सहायता फण्ड" के लिए भेजे गए।

—नरेशकुमार मन्त्री

बरनाला में सम्पन्न आर्य युवक सम्मेलन की रिपोर्ट चित्रों द्वारा

श्री रोशनलालशर्मा, संयोजक आर्य युवक सभा पंजाब, श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा, महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का स्वागत करते हुए।

श्री सतीश जी सिखवानी मंच संचालन करते हुए। मंच पर विराजमान हैं युवक सम्मेलन के अध्यक्ष श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब उनके साथ दिखाई दे रहे श्री रोशनलाल शर्मा संयोजक आर्य युवक सभा पंजाब तथा कु. निर्मला जी छाबड़ा प्रिंसिपल श्री लालबहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला।

श्री रामशरण दास गोयल, प्रधान आर्य युवक समाज बरनाला, श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा का स्वागत करते हुए।

युवक सम्मेलन में सम्मिलित भिन्न भिन्न स्थानों के नवयुवक।

आर्यसमाजों तथा दानी महानुभावों से अपील

निवेदन है कि आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर जालन्धर जोकि एक नई कालोनी 1977 में बनी थी मई 1977 में हम जब यहां आए तो हमने अनुभव किया कि यहां पर समीप कोई भी आर्य समाज नहीं है। यहां पर आर्य समाज का प्रचार होना आवश्यक है, तो हमने दिसम्बर 1977 में आर्य समाज की स्थापना कर दी। यहां पर स्थान प्राप्त करके आर्य समाज का प्रचार करना आरम्भ कर दिया गया था। थोड़ा सा भवन निर्माण का काम जो हम कर चुके हैं और अब जो शेष काम आवश्यक है वह इस प्रकार है—

1. चार दीवारी। 2 एक कमरा तैयार है केवल है छत। 3 यज्ञशाला पर गुम्बद। प्रचार के लिए लाऊड स्पीकर। 5 दरियां।

धन के अभाव के कारण यह शेष काम अधूरा है और इसकी शीघ्र ही आवश्यकता है। इसलिए दानी महानुभावों से हमारी अपील है कि हमारी अधिक से अधिक सहायता करें ताकि यह काम पूरा हो सके। सहायता ड्राफ्ट या चैक आर्य समाज के नाम पर इस पते पर भेज सकते हैं।

आर्यसमाज शहीद भगतसिंहनगर जालन्धर शहर।

प्रधान—ओमप्रकाश अग्रवाल, मन्त्री—रणजीत आर्य। कार्यकर्ता प्रधान—मुलखराज आर्य कोषाध्यक्ष—सुखदेवराज आर्य।

अच्छा परिणाम

श्री लालबहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला की छात्रा सुश्री सुनीता सुपुत्री श्री चरनदास ने बी ए (प्रथम वर्ष) परीक्षा में 250/350 अंक तथा इसी कालेज की छात्रा सुश्री दीप्ति गुप्ता सुपुत्री श्री प्रेमराज गुप्ता ने बी ए (द्वितीय वर्ष) परीक्षा में 232/400 अंक प्राप्त कर मेरिट लिस्ट में स्थान प्राप्त किया।

इसके लिए महाविद्यालय की प्राचार्या कु. निर्मला छाबड़ा प्रबन्ध समिति एवं स्टाफ और दोनों छात्राएं बधाई की पात्र हैं।

श्रीमती सोमलता शास्त्री अस्वस्थ

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान तथा पूर्व संसद सदस्य श्री शिवकुमार शास्त्री (एम 87 साकेत नई दिल्ली दूरभाष नं—666552) की पत्नी श्रीमती सोमलता लगभग एक सप्ताह से रोग शैय्या पर हैं। इस समय वे मूलचन्द खैरातीराम हास्पिटल लाजपत नगर, नई दिल्ली में भर्ती हैं। पहले के तीन दिन तक इन्टेंसिव केयर यूनिट में रखा गया। हालत सुधरने पर अब वे कमरा नं 107 में शिफ्ट कर दी गई है। जहां से स्वास्थ्य लाभ कर रही हैं। परमात्मा उन्हें शीघ्र स्वस्थ करे।

— रामनाथ सहगल

गुरुकुल कांगड़ी द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की मूल्य सूची

क्रम	पुस्तक	लेखक	मूल्य
1	अग्निहोत्र	श्री देवराज विद्यावाचस्पति	5 00
2	ब्राह्मण की गौ	श्री अभय विद्यालंकार	3 00
3	वैदिक वन्दना गीत	श्री सत्यकाम विद्यालंकार	10 00
4	वैदिक कर्तव्य शास्त्र	श्री धर्मदेव विद्यावाचस्पति	10-00
5	आत्म मीमांसा	श्री नन्दलाल खन्ना	10-00
6	ईशोपनिषद् भाष्य	श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति	10 00
7	आध्यात्म रोगो की चिकित्सा	श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति	10 00
8	वक्तृत्वकला की प्रगति	श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति	5-00
9	वैदिक स्वप्न विज्ञान	श्री भगवद्दत्त वेदालंकार	6-00
10	विष्णु देवता	श्री भगवद्दत्त वेदालंकार	5 00
11	ऋषिदेव विवेचन	श्री भगवद्दत्त वेदालंकार	5-00
12	वेद विमर्श	श्री भगवद्दत्त वेदालंकार	5 00
13	ऋषि रहस्य	श्री भगवद्दत्त वेदालंकार	5 00
14	भारतवर्ष का इतिहास ३य भाग	श्री आचार्य रामदेव	12 00
15	ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार	श्री स्वामी श्रद्धानन्द	3 00
16	गुरुकुल की आहुति	श्री क्षितीश विद्यालंकार	1 25
17	स्तूप निर्माण कला	श्री नारायण राव	15 00
18	प्रमेह श्वास, अर्शरोग	श्री रामरक्ष	5 00
19	आहार	श्री रामरक्ष	8-00
20	जलचिकित्साविज्ञान	श्री देवराज विद्यावाचस्पति	4 00
21	पाणिनियाष्टकम	श्री गंगादत्तशास्त्री	20 00
22	आर्य भाषा पाठावली	श्री भवानी प्रसाद	2 50
23	सोम	श्री बुद्धदेव विद्यालंकार	2 00
24	शतपथ मे एक पथ	श्री बुद्धदेव विद्यालंकार	2 50
25	बिखरे हुए फूल	श्री बुद्धदेव विद्यालंकार	1 00
26	प्रार्थनावली		1 15
27	इन्द्र विद्यावाचस्पति	श्री सत्यकाम अवनीन्द्र	10 00
28	स्वा श्रद्धानन्द जी के (1म भाग)	श्री लब्भूराम नैय्यर	3 00
	धर्मोपदेश (2य भाग)	,, ,,	5 00
29	गुरुकुल के स्नातक		3 00
30	महर्षि दयानन्द की विश्वदर्शन को देन	श्री प्रो जयदेव वेदालङ्कार	15 00
31	वेदो की वर्णन-शैलियां	श्री डा रामनाथ वेदालङ्कार	50 00

पता —पुस्तक भण्डार गुरुकुल कांगड़ी
पि 249404 (सहारनपुर)

कैप्टन देशराज
स मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी

श्री पं. मुरारीलाल का निधन

पंजाब के आर्य जगत् को यह समाचार सुन कर अत्याधिक दु ख होगा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भूतपूर्व महामन्त्री और कोषाध्यक्ष श्री प. मुरारीलाल जी शर्मा का देहान्त हो गया है। प. जी पिछले कई वर्षों से बीमार चले आ रहे थे। उनकी आँखें भी अब इतनी खराब हो गई थी कि वे कुछ देख न सकते थे, परन्तु आर्य समाज की चिन्ता उन्हें हमेशा लगी रहती थी। जब कभी उनसे कोई बात होती तो आर्य समाज के विषय मे ही बात करते थे। उनकी रुग्णावस्था में भी कई बार हम उनसे विचार-विमर्श के लिए उनके पास जाया करते थे। परन्तु जो परमात्मा को स्वीकार होता है, अन्त में वही होता है। पण्डित जी का स्वास्थ्य उनका साथ छोड़ गया और मृत्यु उन्हें खींच कर ले गई। उनके निधन से उनके परिवार को तो वियोग हुआ है, परन्तु आर्य समाज को भी बहुत आघात पहुंचा है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से मैं सन्तप्त परिवार के साथ सारे आर्य जगत की सहानुभूति प्रस्तुत करते हुए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हू कि वे पण्डित जी की आत्मा को सद्गति प्रदान करें और उनके परिवार को शक्ति दें कि वे इस वियोग को सहन कर सकें।

वीरेन्द्र

आभार-प्रदर्शन

मेरी धर्मपत्नी श्रीमती स्नेहलता देवी जी के स्वर्गारोहण पर माननीय सभा अधिकारियो, कतिपय आर्य समाजो तथा प्रतिष्ठित महानुभावो और स्नेही आर्य बन्धुओ तथा बहनो ने देवी जी के निमित्त रखे गए शान्ति यज्ञ तथा अन्तिम शोक दिवस के अवसर पर पधार कर और शोक सम्वेदना सूचक पत्रो द्वारा मेरा धीरज बधाया है, तथा दिवंगत देवी की आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना की है, मैं उन सभी सज्जनों के प्रति हार्दिक आभारी हू। प्रभु मुझे समाज सेवा की शक्ति दें।

—युगलकिशोर कार्यालयाध्यक्ष
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर

उठो ! राम के बंशज

लेखक—श्री राधेश्याम जी आर्य

दनुज वृत्तियां हैं जन-जन मे
इस युग मे आश्रय पाती।
एक नहीं शत-शत सीताए—
प्रतिदिन यहां हरी जाती।

उठो ! राम के वंशज सुन लो—
सीताओं का दारुण क्रन्दन।

अत्याचार बढा, रावण युग—
जैसा ही निस्सीम भयानक।
परिलक्षित हो नहीं रहा है;
राम सदृश सच्चा उन्नायक।

आज विभीषण की आहें हैं—
करती दानवता वन्दन।

घोर अभावो का राक्षस है,
हमे निगल जाने को तत्पर।
द्वेष-घृणा मिथ्या-हिंसा की,
बढती सन्य आसुरी सत्वर।

भग्न हुआ है मानवता का—
सत्य धर्म का स्पन्दन॥

शुद्धि समाचार

दिनांक 23 9-86 को ग्राम गोविन्दपुर जिला झुनझुनु राजस्थान मे यज्ञ हवन किया गया और सेवानन्द सरस्वती के प्रयत्नो से हवन नटो ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया और यज्ञ में आहुतियां दी गई कि हम मास, मदिरा आदि का त्याग करके आर्य सभ्यता को अपनाएंगे को स्वीकार करते है उन्होंने यह घोषणा की। उनके हाथ से प्रीतिभोज वितरण करवाया गया और बरादरी मे इज्जत दिलाई गई। इसमें भाग लेने वाले व्यक्ति मल्लाह राम, राजलाल, मागे राम, ग्राम भामोट जिला रोहतक के रहने वाले के सहयोग से ये शुद्धि की गई।

—ओमप्रकाश

दीपावली विशेषांक

आर्य मर्यादा का प्रति वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी दीपावली के शुभ अवसर पर विशेषांक प्रकाशित हो रहा है। जो गत वर्षों की भान्ति बड़ा आकर्षक और प्रभावशाली होगा। जिसमें उच्चकोटि के विद्वानो के लेख तथा कविताएं होंगी। हमारी सभी आर्य मर्यादा के पाठकों तथा आर्य समाजो व शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियो से प्रार्थना है कि वह इस विशेषांक के लिए गत वर्षों की भान्ति विज्ञापन भी भेजें और अपने अधिक से अधिक प्रतियो के आर्डर भी भेजें। विज्ञापन पुण्य पृष्ठ के रूप में भी भेजा जा सकता है। अपने किसी प्रिय की स्मृति में भी आप विज्ञापन भेज सकते हैं।

इसलिए शीघ्र अति शीघ्र विज्ञापन तथा अपना आर्डर भेजें ताकि आपकी प्रतियां सुरक्षित कर ली जाएं।

सह-सम्पादक

आतंक पीड़ित परिवार सहायक कोष के लिए प्राप्त राशियों की सूची

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने आतंकवाद से पीड़ित भाईयो की सहायता के लिए एक सहायता कोष आरम्भ किया है इसमे निम्न महानुभावो ने और दान दिया है। हमारी और भी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि इस सहायता कोष में अधिक से अधिक धन भेजें।

सत्यव्रत शर्मा
सभा महामन्त्री

(गताक से आगे)

आर्य समाज अबोहर (पंजाब) के द्वारा आतंक पीड़ित परिवार सहायता कोष में पहले भी 9622 रुपए की राशि प्राप्त हो चुकी है और अब चौथी किश्त उन्होंने 2718 रुपए की भेजी है जो इस प्रकार है।

क्रम	नाम	राशि
1.	श्री बल्लू राम ठम्मी राम	201-00
2.	सेठी काटन ट्रेडर्स	101-00
3.	श्री आत्माराम विजय कुमार	101-00
4.	श्री शेरसिंह गुम्बर	101-00
5.	श्री मूलचन्द मेघराज जैन	101-00
6.	श्री लक्ष्मण दास छाबड़ा	100-00
7.	गुप्तदान	100-00
8.	श्री मोतीराम चरणदास	100-00
9.	श्री चन्नूलाल बिहारी लाल	100-00
10.	श्री डा. एस. पी. अरोड़ा	100-00
11.	श्री दूनीचन्द हरबंस लाल	51-00
12.	श्री काशी राम साधूराम सराफ	51-00
13.	शिवनारायण बनारसी दास	51-00
14.	श्री सुशील कुमार रवीन्द्र कुमार	51-00
15.	श्री मेघराज नन्दलाल	50-00
16.	श्री बिहारी लाल प्रदीप कुमार	51-00
17.	श्री कुलवन्त राय झांब	50-00
18.	श्री सन्तलाल कोंसाटी	50-00
19.	श्री कर्मचन्द बलराज जसूजा	51-00
20.	श्री ओम एग्रो इन्जीनियरज	51-00
21.	श्री जगननाथ जीत कुमार	31-00
22.	श्री मालक चन्द प्रकाश चन्द्र	31-00
23.	श्री जगदीशलाल सपुत्र श्री कालूराम	31-00
24.	श्री कर्मचन्द सतपाल जसूजा	31-00
25.	श्री सोमप्रकाश जसूजा	31-00
26.	श्री बनवारी लाल	20-00
27.	श्री रामकृपाला प्रेम प्रकाश	21-00
28.	श्री सुभाष चन्द्र पवन कुमार	21-00
29.	श्री राजपाल छाबड़ा	21-00
30.	श्री बरैती लाल ओमप्रकाश	21-00
31.	श्री ताराचन्द मदन लाल	21-00
32.	मदू लाल बलहोत्रा	21-00
33.	श्री कुन्दन लाल बलहोत्रा	21-00
34.	श्री प्यारे लाल शर्मा	10-00
35.	श्री पं. मथाराम डावे वाला	11-00
36.	श्री मिलखराज राजपाल	10-00
37.	श्री अमीरचन्द जसूजा	11-00
38.	श्री ब्रजमेश मैडीकल	11-00
39.	श्री छाबड़ा मैडीकल हाऊस	10-00
40	श्री ओमप्रकाश सोमप्रकाश	11-00
41	श्री भजनलाल जगदीश राय	11-00
42.	श्री भाटिया स्वीट हाऊस	11-00
43.	श्री सोदागर चन्द दीवान चन्द कमरा	51-00
44.	श्री भोजाराम भानीराम नागपाल	50-00
45.	श्री बनवारी लाल भोजराज	51-00
46.	श्री डा. सुभाष चन्द्र मिड्ढा	50-00
47.	श्री जयपाल रामचन्द छाबड़ा	50-00
48.	श्री केदारनाथ शर्मा	51-00
49.	श्री मुकन्दलाल ओमप्रकाश मिड्ढा	50-00
50.	श्री पृथ्वीराज सर्राफ	50-00
51	श्री बाबू राम ओमप्रकाश	30-00
52.	श्री बनवारी लाल नागपाल	20-00
53	श्री बागीलाल सरदारी लाल	20-00
54.	श्री जयचन्द शिवचन्द	21-00
55.	श्री काशीराम मुंशलाल	21-00
56.	श्री प्रेमदास जी सराफ	20-00
57	श्री कर्मचन्द मुंशीचन्द सेतिया	21-00
58.	श्री चरणदास जी सेतिया	21-00
59.	श्री डा. सुशील कुमार	21-00
60.	श्री कश्मीरी लाल सेतिया	21-00
61.	श्री हंसराज जुनेजा	15-00
62	श्री मकरदास अमृतलाल कटारिया	11-00
63.	सलूजा मयूनिक हाऊस	11-00
64	श्री रामप्रकाश नागपाल	10-00
65	श्री सुन्दर लाल जीता राम	11-00
66	श्री बनवारी लाल भगवानदास	10-00
		2718-00

श्रीमती कमला आर्या जी (सभा उपप्रधान) द्वारा लुधियाना से 2101 रुपए की प्राप्त राशि

क्रम	नाम	राशि
1	दयानन्द माडल स्कूल मदा. हाऊस लुधियाना	75-00
2.	श्री ओमप्रकाश की सूद ग्रीन पार्क लुधियाना	101-00
3	श्रीमती शान्ता जी शाजी समिटरी रोड लुधियाना	101-00
4	आर्य कालेज महिला विभाग लुधियाना	302-00
5	श्रीमती यशवती जी भल्ला लाल बहादुर शास्त्री हाई स्कूल लुधियाना	1000-00
6.	आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकण्डरी स्कूल की व प्रिंसीपल व समस्त स्टाफ बहिनें	500-00
7.	गुप्त दान	22-00
	योग	4819-00
	गताको मे प्रकाशित राशि जो आगे छप चुकी है—	18,277 00
	कुल जोड	23,096-00

(क्रमशः)

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का शताब्दी समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का शताब्दी समारोह दिनांक 17 से 20 अक्तूबर 1986 शुक्रवार से सोमवार तक प्रकाशवीर शास्त्री नगर, (डी. ए वी. कालेज) लखनऊ मे समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है।

कृपया समस्त आर्य बन्धु अधिक से अधिक सख्या में सम्मेलन मे सम्मिलित होने की कृपा करें, तथा अपना अमूल्य आर्थिक सहयोग चैक, ड्राफ्ट तथा मनी आर्डर द्वारा भेजने की कृपा करें।"

—मनमोहन तिवारी-मन्त्री

जालन्धर में आर्य वीर दल की स्थापना

दिनांक 28 9-86 रविवार को बाद दोपहर तीन बजे जालन्धर नगर की सभी आर्य समाजो की जालन्धर मे आर्य वीर दल की स्थापना पर विचार सम्बन्धी एक आवश्यक बैठक आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर मे बुलाई गई। जिसमे लगभग 40 व्यक्तियो ने भाग लिया। इस बैठक की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कोषाध्यक्ष प हरबंसलाल जी शर्मा ने की। इस बैठक में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न, आर्य वीर दल अधिष्ठाता, श्री आशानन्द जी आर्य तथा वयोवृद्ध आर्य समाजी प कृष्णचन्द्र जी आर्य ने भी भाग लिया।

इस बैठक मे निर्णय किया गया कि जालन्धर की सभी आर्य समाजो के मन्त्री, प्रधानो को लेकर एक कमेटी गठित की जाए, उसके कन्वीनर के रूप मे श्री मुलखराज जी आर्य को नियुक्त किया जाए और वह इस कमेटी की बैठक बुलाकर आर्य वीर दल की स्थापना व इसके शिविर लगाने सम्बन्धी विचार करें। इस निर्णय को सर्वसम्मति से पारित कर दिया। अन्त मे शान्ति पाठ के साथ इस बैठक को विसर्जित कर दिया गया।

—सरदारी लाल
सभा मन्त्री

नवनीतलालजी एडवोकेट अस्वस्थ

श्री नवनीतलाल जी एडवोकेट, जिन्होंने अपनी अधिकांश आयु आर्यसमाज की सेवा मे लगा दी है, आज कल अस्वस्थ है पहले ये गंगाराम अस्पताल मे भर्ती हुए थे, अब ये अपने घर 19 1 निजामुद्दीन ईस्ट, के नजदीक ही जयपुरिया एस्टेट प्लास्टिक सर्जरी क्लीनिक के रूम न —12 निजामुद्दीन ईस्ट नई दिल्ली मे भर्ती हैं। परमात्मा उनको शीघ्र स्वस्थ करे।

—रामनाथ सहगल

वकीलों की आचार संहिता बने

यह दुर्भाग्य का विषय है कि इस समय सारे भारत में कानून एव व्यवस्था की स्थिति अत्याधिक शोचनीय है कानून एव व्यवस्था का मुख्य दायित्व संयुक्त रूप से न्यायालय, पुलिस,अधिवक्ता पर आरूढ होता है। कानून एवं व्यवस्था को चुनौती देने वाले असामाजिक तत्व तथा अपराधी इस समय न्यायालय की पकड मे नहीं आ पाते। इसका मुख्य कारण अधिवक्ताओ की कार्य प्रणाली है। अधिवक्ता अपराधियो की जमानतें करवा कर तथा असत्य-भाषण की सलाह देकर उन्हे छुडा लेते है और फिर वह अपराधी दुगुने उत्साह से अपराध करता है। अधिवक्ताओं की इस कार्य पद्धति से उनकी मर्यादा भी समाज मे महत्व हीन होती जा रही हैं। स्व प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी की हत्या के मुकद्दमे में अभियुक्तो को असत्य एव मिथ्या भाषण की सलाह देकर वकीलों की मर्यादा को क्षति पहुँचाई गई है। समय की आवश्यकता को देखते हुए वकीलो की कार्य प्रणाली पर एक ऐसी आचार संहिता बनाई जाए, जिसका अनुपालन करते हुए कोई वकील अपराधियो समाज विरोधी तत्वो, हत्यारो व देशद्रोहियो की पैरवी न कर सकें।

—राधेश्याम आर्य

नवांशहर की शिक्षण संस्थाओं में पौधे लगाए गए

9 सितम्बर 1986 को स्टेट बैंक आफ इण्डिया नवांशहर की ओर से नवांशहर की आर्य शिक्षण संस्थाओं मे पौधे लगाने का आयोजन किया गया, जिसमें स्टेट बैंक आफ इण्डिया नवांशहर के एजीक्यूटिव मैनेजर श्री विनोद आहूजा फील्ड आफीसर श्री आर, पी शर्मा तथा एकाऊंटस, श्री अरुण राजपाल ने अपने करकमलो से स्थानीय आर्य शिक्षण संस्थाओ मे पौधे लगाए। इस अवसर पर प देवेन्द्र कुमार जी, प्रधान संस्थाओ, श्री वेदप्रकाश जी सरीन प्रधान आर्य समाज नवांशहर व सैक्रेटरी आ के आर्य कालेज और मैनेजर दोआबा, आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल और श्री धर्म प्रकाश जी दत्त, प्रस्तोता आर्य शिक्षा परिषद् पंजाब संस्थाओ के मुखी, स्टाफ तथा बच्चो ने प्रोग्राम में हिस्सा लिया।

—प्रिंसीपल

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 रजि. नं. पो..जे.एल 55

वर्ष 18 अंक 29. 5 कार्तिक सम्वत् 2043 तदानुसार 19 अक्तूबर 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे(वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

आदर्श परिवार के लिए वेद का आदेश—4

लेखक—पूज्यपाद श्री स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक
वैदिक संस्थान, नजीबाबाद

(गतांक से आगे)

उसी समय एक नाजुक छोटी अंगुलियो वाला हाथ सिर पर पहुंच गया और मैंने उलटी झुककर की। अब शिव देवी के हाथ मे मैं बालकवत् था। कुल्ला करा, मेरा मुंह पोछ ऊपर का अंगरखा, जो खराब हो गया था, बैठे-बैठे ही फेंक दिया और मुझे आश्रय देकर अन्दर ले गयीं। वहां पलंग पर लेटा कर मुझ पर चादर डाल दी और साथ बैठ कर माथा और सिर दबाने लगी। मुझे उस समय का करुणा और शुद्ध प्रेम से भरा मुख कभी नहीं भूलेगा। मैंने अनुभव किया—मानो मातृ-शक्ति की छत्रछाया के नीचे निश्चिन्त लेट गया हूं। पथराई हुई आखें बन्द हो गयीं और मैं गहरी नींद सो गया। रात का शायद एक बजा था, जब मेरी आंख खुली। वह चौदह-पन्द्रह वर्ष की बालिका पैर दबा रही थी। मैंने पानी मांगा। आश्रय देकर उठाने लगी, परन्तु मैं उठ खड़ा हुआ। गर्म दूध अंगीठी पर से उतार और उसमे मिश्री डालकर मेरे मुंह को लगा दिया। दूध पीने पर होश आया। उस समय अंग्रेजी उपन्यास (नाव्हल्स) मगज मे से निकल गये और गुसाई जी के खींचे दृश्य सामने आ खड़े हुए, मैंने उठकर और पास बिठाकर कहा—'देवी तुम बराबर जागती रही और भोजन तक नहीं किया। अब भोजन करो।" उत्तर ने मुझे व्याकुल कर दिया। परन्तु उस व्याकुलता में भी आशा की झलक थी। शिवदेवी ने कहा—"आपके भोजन किये बिना मैं कैसे खाती? अब भोजन करने में क्या रुचि?" उस समय की दशा का वर्णन लेखनी द्वारा नहीं हो सकता। मैंने अपनी गिरावट की दोनों-कहानियां सुना कर देवी से क्षमा की प्रार्थना की, परन्तु वहां उनकी माता का उपदेश काम कर रहा था। "आप मेरे स्वामी हो, यह सब कुछ सुनाकर मुझ पर पाप क्यो चढ़ाते हो? मुझे तो यहीं शिक्षा मिली है कि मैं नित्य आपकी सेवा करूं।" उस रात बिना भोजन किये दोनो सो गये और दूसरे दिन से मेरे लिये जीवन ही बदल गया।

छावनी के पारसी मद्य-विक्रयी का बिल बढ़ता ही जा रहा था, दूसरे ही दिन उसका लगभग तीन सौ का बिल आ पहुंचा। उस दिन उसे तीन-चार दिन की छुट्टी लेकर टाल दिया। मुझे चिन्ता तो थी ही, शिवदेवी ने मुझे भोजन कराते समय मेरी चिन्ता का कारण पूछा। अब तो कोई बात आपस मे गुप्त रह नहीं सकती थी। वेद के उपदेशानुसार मानो मेरा विवाह पिछली रात ही हुआ था। मैंने सब कुछ स्पष्ट कर दिया। देवी ने कुल्ला करवा के हाथ मुंह धुलवाए और अपना भोजन पाने से पहले ही अपने हाथ के सोने के कड़े उतार दिये। मैं चकित रह गया—"देवी यह कैसे हो सकता है? तुम्हें आभूषित करने के स्थान में तुम्हें आभूषणो से रहित करने का पाप कैसे लूं।"

इस समय मुझे ठीक संस्कृत कवि की कल्पना के अनुसार दृश्य जचा और मैंने जान लिया कि पतिव्रता देवी पति की स्वास्थ्य रक्षा के समय माता, विपत्ति के समय भगिनी और उसे सन्तान सुख पहुंचाने के लिए धर्म पत्नी का रूप धारण करती है। देवी ने दूसरी जोड़ी दिखा कर कहा—"एक जोड़ी पिता ने और दूसरी श्वसुर महोदय ने दी थी। इनमें से एक जोड़ी व्यर्थ पड़ी है। यह मेरा माल है, जब तन भी आपका है तो इसके लेने मे क्यो संकोच है। आपकी चिन्ता दूर करने का यह महंगा सौदा नहीं।" शब्द पञ्जाबी के थे और उसकी अनुवाद मे कुछ मुझ से बढ़ाया भी गया होगा। प्रलोभन से बचने के लिए शेष रुपये देवी जी की सन्दूकची मे रख दिये और मन मे पक्का निश्चय कर लिया कि जब कमाने लग जाऊं तो व्यय किये हुए धन को फिर से आभूषणो मे मिला दूंगा।

पाठकगण! यही मुन्शीराम आगे चलकर महात्मा मुन्शीराम और फिर स्वामी श्रद्धानन्द बने। पत्नी के मधुमय व्यवहार ने पति के जीवन को शराबीपन से महापुरुषत्व में परिवर्तित कर दिया। 1919 ई मे अमृतसर के जलियांवाला बाग में डायर की गोलियो की मार खाकर मर जाने वाले राष्ट्रीय स्वाधीनता के आन्दोलन को इन्ही स्वामी श्रद्धानन्द ने—उसी अमृतसर मे कांग्रेस का अखिल भारतीय सम्मेलन कराके पुनर्जीवित किया था। स्थिति यह थी कि उस समय कोई उत्तरदायित्व सम्भालने को तैयार नहीं था—यहां तक कि स्वागताध्यक्ष बनने के लिए भी कोई साहस नहीं कर पाता था—तब स्वयं स्वामी जी ने ही इस उत्तरदायित्व पूर्ण पद को सम्भाला था। हिन्दी भाषा प्रचार और हरिजनोत्थान के कार्य को कांग्रेस के कार्यक्रम मे स्थान दिलाया। रौलट-ऐक्ट के विरोध मे निकलने वाले जलूस समारोह का नेतृत्व करते हुए देहली के चांदनी चौक मे घण्टाघर के पास गोरो की सगीनो के सामने यह कहते हुए सीना खोलकर खड़े हो गए कि "इन गरीबो को मारने से पहले इन सगीनो को मेरे सीने मे झोंक दो। इस निर्भीक साधु की हुंकार और उपर्युक्त शब्दो से जनता मे अदम्य उत्साह का संचार हुआ। सेना के अधिकारियो को सेना को वापिस जाने का आदेश देना पड़ा तथा समारोह सकुशल जय-घोष लगाता हुआ आगे चला गया।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय जैसी राष्ट्रीय संस्था को जन्म देकर तो स्वामी जी ने अपने उच्चकोटि के शिक्षा-शास्त्री होने का परिचय दिया तथा मृत कहलाने वाली आर्य भाषा (हिन्दी) के माध्यम से शिक्षा व परीक्षाए दिलाई और इस प्रकार हिन्दी को राष्ट्र भाषा के पद पर बैठाने की ओर एक महत्वपूर्ण पग बढ़ाया। स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र मे भी ईसाईयो के पश्चात् किसी भारतीय का यदि सर्वप्रथम नाम लिया जा सकता है तो वह स्वामी श्रद्धानन्द जी ही थे-जिन्होंने कन्या महाविद्यालय जालन्धर की स्थापना की।

पञ्जाब मे मेवो, मथुरा-आगरा जिलो मे मेवो और ट्रावनकोर कोचीन में मोपलो की सहस्र-सहस्र की संख्या मे शुद्धि कर "भरत मिलाप" के दृश्य उपस्थित किये तथा दीर्घकाल मे बिछड़े भाइयों को वैदिक धर्म की दीक्षा देकर गले लगाया। अखिल भारतीय शुद्धि सभा की स्थापना कर शुद्धि आन्दोलन को स्थायित्व प्रदान किया। अछूतोद्धार सभा खोलकर अछूत कहे जाने वाले भाइयों के लिए वैदिक धर्म के द्वार खोल दिये।

कौन कह सकता था कि शराबी मुन्शीराम महान् सुधारक, शिक्षा प्रसारक तथा राष्ट्रोद्धारक बनेगा किन्तु सतीसाध्वी तथा पतिपरायण पत्नी के मधुमय व्यवहार ने यह सब कर दिखाया। एतदर्थ वेद के शब्दो मे "जाया पत्ये मधुमतीम्" पत्नी को पति के प्रति मधुमय व्यवहार करने वाली होना चाहिये। पत्नियो का मधुमय व्यवहार बड़े-बड़े भ्रष्ट पतियो को सम्मानीय स्थान प्राप्त करा सकता है।

मन्त्र का चौथा वाक्य है "वाचं वदतु शन्तिवाम" वाणी मे (सदैव) शान्ति उत्पन्न करने वाले वचनो को बोले जहां पत्नी-पति के प्रति अन्य प्रकारेण मधुमय व्यवहार करे, वहां वाणी की ओर विशेष ध्यान रखे। किसी भी दशा मे—कोई भी शब्द—ऐसा न बोले, जिससे घर मे कलह होकर अशान्ति बढ़े। समस्त व्यवहार उत्तम, मधुमय हो, किन्तु वाणी से अशान्ति उत्पन्न करने वाले वचन बोले जाए तो सारी मधुमयता पर मिट्टी पड़ जाती है। शान्तिदायक वचन व्यवहार की मधुमयता के पूरक हैं, अतः किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

(शेष पृष्ठ 7 पर)

आज हम कहां खड़े हैं—५

आर्य समाज का धर्म पक्ष

प्रामाण्यवाद

ले—श्री पण्डित सत्यदेव जी विद्यालंकार
शान्ति सदन 14514 सेंट्रल टाउन जालन्धर

(5 अक्तूबर से आगे)

हमारे सिक्ख विद्वानो ने इस विषय में बहुत अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है। पजाब के इतिहास के सम्बन्ध मे जो पुस्तकें मुस्लिम विद्वानो ने लिखी या योरुप के विद्वानो ने लिखी उनमे सिखो के विषय मे जो कुछ लिखा गया वह उन को रुचिकर नही लगा। डा गगासिह तथा अन्य सिख विद्वानो ने अच्छा प्रयत्न करके सिख-इतिहास के सम्बन्ध मे अपना दृष्टिकोण उपस्थित किया। इसका बहुत प्रभाव पडा। सिख विद्वानो ने तो गुरुवाणी की गायन पद्धति का एक नया परिष्कृत रूप विकसित किया है। सगीत के जगत मे इसका अपना एक महत्व है।

कोई यह नही कहता और न ही कह सकता है कि आर्य समाज के एक सौ साल से अधिक लम्बे जीवन मे आर्य विद्वानो ने कोई साहित्य नही उत्पन्न किया। ऋषि दयानन्द तथा उनके प्रमुख शिष्य प लेखराम, प गुरुदत्त, स्वामी श्रद्धानन्द, म हसराज आदि ने तो लेखनी के अविरल प्रवाह से साहित्य मात्रा की सृष्टि की। साहित्य सृजन का कार्य कभी बन्द ही नही हुआ। वैदिक साहित्य, सिद्धान्त ग्रन्थ, धार्मिक तुलना की रचनाए, पत्र पत्रिकाए, कथा, कहानी, जीवनी, काव्य, सम्भवत साहित्य का कोई ऐसा क्षेत्र नही जिसमे आर्य समाज के प्रतिभाशाली विद्वान अपना योगदान नही दे पाए। भारत की प्राय सभी भाषाओ मे तथा विदेशीय अग्रेजी, फ्रेन्च आदि मे भी बहुत अच्छी मात्रा मे वैदिक दृष्टिकोण से रचनाए हुई। अब भी लगातार यह कार्य चल रहा है। प्रत्येक आर्य प्रतिनिधि सभा का अपना पत्र है। अपना प्रकाशित साहित्य है।

पर जैसे-जैसे आर्य समाज विशाल बनता जा रहा है। उसकी अपेक्षाए भी बढती जा रही है। नई नई सम्भावनाए सामने आ रही है। नए-नए अभाव प्रगट हो रहे हैं। ऊपर जो विचार प्रगट किए जा चुके हैं उसके आधार पर यह कहा जा सकता है।

1 सबसे मूल और महत्व की बात तो यह है कि चारो वेदो का प्रामाणिक भाष्य उपलब्ध कराया जाए। यह बहुत बडा कार्य है। वेद के प्रत्येक मन्त्र का, वेद के प्रत्येक शब्द का सुनिश्चित अर्थ होना चाहिए। कार्य असम्भव जो नही। वैदिक शब्द कोष अनेक विद्वानो द्वारा बनाए गए है। पर अभी तक मन माना अर्थ करने की प्रवृत्ति भी चल रही है।

जो वेद भाष्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है उससे सामवेद तथा अथर्व वेद भाष्य के विषय मे प्रामाणिकता का क्या मानदण्ड अपनाया गया यह स्पष्ट नही। ऋग्वेद तथा यजुर्वेद का भाष्य ऋषि कृत है। उसकी प्रामाणिकता पर तो सन्देह नही किया जा सकता, पर उसका बहुत सा भाग सामान्य जनो द्वारा समझना कठिन है। प्रत्येक स्वाध्याय शील मनुष्य को इस बात का अनुभव है। अत उस पर भी विद्वानो द्वारा अधिक परिश्रम किए जाने की आवश्यकता है।

2 वेद के मन्त्रो के ऋषि, छन्द तथा स्वरो के विषय मे भी चर्चा काफी खिचती चली जा रही है। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका से तो ऐसा प्रतीत होता है कि ऋषि दयानन्द की दृष्टि म ऋषि ऐतिहासिक व्यक्ति होंगे। छन्द तथा स्वर का जो सामान्य अर्थ लिया जाता है वही होगा। पर अब तो अनेक विद्वान् ऋषि, छन्द तथा स्वरो के विषय मे अनेक लौकिक अलौकिक कल्पनाए कर रहे हैं। इसका निर्णय भी तो चाहिए।

3 सहिता भाग के अतिरिक्त ऋषि दयानन्द द्वारा प्रमाण रूप मे स्वीकृत ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद्, स्मृति, दर्शन ग्रन्थ आदि जितना वैदिक साहित्य है उसकी ऊहापोह आवश्यक है। उसका प्रामाणिक तथा सरल रूप विश्व के सामने आना चाहिए। इन ग्रन्थो पर बहुत कुछ लिखा जा रहा है पर वह नितान्त अपर्याप्त है, विवादपूर्ण है। बहुत अधिक कार्य शेष है।

4 ऋषि प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तो पर तथा ऋषि ग्रन्थो द्वारा प्रकट किए विचारो पर कुछ आक्षेप तो अन्य धर्मों द्वारा किए जाते हैं। एक बहुत बडा भाग तो उन आक्षेपो का है जो वर्तमान काल मे विकसित इतिहास, भूगोल, भाषा शास्त्र, सृष्टि विज्ञान तथा विकासवाद आदि विज्ञान के भागो द्वारा उठाए गए हैं या उठाए जा सकते हैं। उनका निराकरण किसी एक व्यक्ति के लिए सम्भव नहीं। यह क्षेत्र इतना बडा होगा कि इस कार्य को प्रारम्भ करने के लिए ही बहुत प्रयास करना पडेगा, पूर्ण करने की बात तो दूर की होगी।

ज्ञान-विज्ञान सम्बन्धी इस कार्य के लिए, केवल इस ही कार्य के लिए एक बडे विश्वविद्यालय की आवश्यकता होगी।

प्राचीन भारत के दो प्रकार के आचार्य हुए हैं, मत प्रवर्तक हुए हैं। एक वे है जिन्होंने प्राचीन वेद-शास्त्र परम्परा को आधार माना। आदि शकराचार्य, रामानुजादि इसी परम्परा मे है। दूसरे वे है जिन्होने अपने चिन्तन या ध्यान के अनुभव और प्राप्त ज्ञान को आधार माना। बुद्ध, महावीर स्वामी से लेकर सन्त परम्परा के सब सन्तो तक इसकी अपनी श्रेणी है। इस दूसरी श्रेणी के लिए प्रामाणिकता का प्रश्न ही नहीं। सद् गुरु का अनुभव ही अन्तिम शब्द है—उस पर प्रश्न नही उठ सकता—सदेह नही हो सकता। ऊहापोह की आवश्यकता ही नही।

आदि शकराचार्य परम्परा के आचार्यों ने अपने मत प्रतिपादन के लिए मुख्य रूप से गीता उपनिषद् तथा उत्तर मीमासा का आश्रय लिया इसे बृहत्-त्रयी कहा जाता है। कुछ ने श्रीमद् भगवत् को ओर सम्मिलित कर बृहत् चतुष्टयी का आश्रय लिया। यह सब ग्रन्थ सस्कृत मे हैं, बहुत कुछ निश्चितार्थ है। अत इन आचार्यों का काम कठिन भी था पर लगभग असाध्य कोटि मे न था। ऋषिवर दयानन्द अपने आप मे विलक्षण, अद्वितीय आचार्य थे, सन्त थे और व्यवहारी जीव भी थे। उन्होंने वेद भगवान को अपनी विचारधारा का आधार भूत ग्रन्थ माना। महाभारत-काल की गीता से लेकर सम्पूर्ण ग्रन्थ समूह की वैदिक विचारधारा से विरुद्ध पाया। उन्होंने केवल पौराणिक देवता-वाद, अवतारवाद, जड पूजा तथा अन्य अनन्त प्रपञ्चो का खण्डन किया, इसके साथ ही शकर के अद्वैतवाद, बौद्धो के शून्यवाद तथा जैन मत के अनेकान्तवाद का भी निरास किया। यह एक बहुत बडा और अभूतपूर्व कार्य था। ऋषिवर ने जो अन्ध श्रद्धा को त्यागकर ज्ञान और तर्क का प्रवाह चलाया उसको आगे गति देना बहुत बडा और कठिन कार्य है।

सहिता ग्रन्थों का ही बडा विस्तार है। उनके अग उपांगो का और भी अधिक विस्तार है। वैदिक धर्म—आर्य समाज का इतना विस्तृत आधार है। इस सारे साहित्य को ऊहापोह करना एक विश्वविद्यालय के लिए भी—जो केवल इस ही काम में लगा हो—बहुत अधिक कार्य है। आर्य समाज के वर्तमान विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय इस सम्बन्ध मे प्राय कुछ भी नही कर सकते।

आर्य साहित्य मंगवाएं

आर्य सन्यासिन मीरायति जी द्वारा लिखित साहित्य सस्ते मूल्य पर मगवाए उनसे आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) से सम्पर्क करें। उनके द्वारा लिखित व प्रकाशित साहित्य की सूची निम्न प्रकार है —

1 प्रेरणाप्रद कहानिया, 2 रत्न-माला, 3 श्रुति-सुधा, 4 दीपमाला, 5 स्वर्णमाला, 6 मणिमाला, 7 पारस मणि, 8 कष्ट मोचन, 9 वैदिक कुम्भ स्नान, 10 कुभंमहात्म्य, 11 नकली भगवान, 12 सन्मार्ग दर्शन, 13 ज्ञान गंगा, 14 देवदयानन्द, 15 धार्मिक जीवन, 16 असली और नकली माता-रानी।

यह साहित्य आर्य समाज के प्रचार के लिए बहुत उपयोगी है। इसे मगवा कर प्रचारार्थ वितरण करें।

वेद सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज महावीर नगर, भोपाल में वेद सप्ताह समारोह से मनाया गया। समापन समारोह प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सुरेश भार्गव की अध्यक्षता मे हुआ।

प्रतिदिन प्रात हवन यज्ञ होता रहा स्वामी आत्मदेव जी (उज्जैन वाले) प्रतिदिन वेद कथा करते रहे इसके अतिरिक्त आचार्य उपेन्द्रराव, प यमुना-शकर शुक्ला, प्रो वी आर सुमन, कैप्टन यशपाल महाजन, श्री गौरी शकर कौशल तथा प इशानारायण जोशी के भी प्रवचन हुए।

आर्य समाज में होम्योपैथिक चिकित्सालय तथा नगर निगम के सहयोग से पुस्तकालय चल रहा है। आर्य महिला समाज भी सक्रिय है।

—के सी जैन
मन्त्री

सम्पादकीय—

आर्य समाज और हिन्दू समाज-5

इस श्रृंखला के पिछले लेख में मैंने लिखा था कि हमारे देश में जो विघटनकारी तत्व अपना सिर उठा रहे हैं, उनका मुकाबला कौन कर सकता है। इस देश के हिन्दू आज जिस प्रकार आपस में बंटे हुए हैं उनमें यह शक्ति दिखाई नहीं देती कि वे इन विघटनकारी तत्वों का मुकाबला कर सकें। पिछले लेख में मैंने बताया था कि हिन्दुओं की एकता में कितनी अनेकता है। हमारे कई ऐसे देवी देवता हैं, जिनके नाम पर कई मठ चलते हैं, कई मत चलते हैं। हिन्दुओं का कोई एक लक्ष्य नहीं है, एक ऐसा निशाना नहीं जिसे आगे रख कर चलने को तैयार हों। यही कारण है कि हमारी विरोधी शक्तियां दिन प्रतिदिन प्रबल होती जा रही हैं। इसीलिए मैंने कहा था कि इन सब परिस्थितियों में केवल एक ही संस्था है, जो भारत की एकता, स्वाधीनता और अखण्डता की रक्षा कर सकती है, वह आर्य समाज है। यह मैं इसलिए कहता हूं कि जो एकता आपको आर्य समाज में मिलेगी, वह किसी दूसरी हिन्दू संस्था में नहीं मिलेगी, जिस प्रकार मुसलमानों का एक ग्रन्थ कुरान है। ईसाईयों का एक ग्रन्थ बाईबल है। सिखों का एक ग्रन्थ गुरुग्रन्थ साहब है, इसी प्रकार आर्य समाज का भी एक ही ग्रन्थ है, और वे वेद हैं। वेद के पश्चात् दूसरे धार्मिक ग्रन्थ आते हैं, परन्तु वेद सर्वोप्रिय हैं। उनके महत्व और उनकी महानता को दूसरे हिन्दू भी मानते हैं। सनातनधर्मी भी यह कहते हैं कि वेदो से ऊपर और कुछ नहीं उन्हें पुराण में उपनिषदो में, गीता में, रामायण और महाभारत में भी श्रद्धा है आर्य समाज इन दूसरे धार्मिक ग्रन्थों को महत्व अवश्य देता है, परन्तु इतना नहीं, जितना वेदों को। वेद हमारे लिए सब कुछ हैं और हमें इस बात पर गर्व है कि संसार में वेद सब से पुराने हैं उनसे पहला और कोई धार्मिक ग्रन्थ संसार के पुस्तकालय में नहीं मिलता। हिन्दुओं के पास जब इतनी बड़ी विभूति है, तो कोई कारण नहीं कि वे इधर-उधर भटकते रहें। इसलिए हम सब का यह कर्त्तव्य है कि हम वेद को सर्वोप्रिय मानते हुए उनका प्रचार करें और सारे हिन्दू समाज को वेद के गिर्द जमा कर दें।

हमारे सनातनधर्मी भाई कई देवी देवताओं की पूजा करते हैं। हम केवल एक ईश्वर की पूजा करते हैं। हमारा कोई दूसरा ईश्वर नहीं, दूसरा देवता नहीं। भगवान राम और भगवान कृष्ण जैसे हमारे देश में कई महापुरुष हुए उन सब के लिए हमें श्रद्धा है, हम उनका आदर करते हैं, सन्मान करते हैं परन्तु हमारा ईश्वर केवल एक है, इन महापुरुषो को हम ईश्वर नहीं मानते। जब हम किसी एक महापुरुष को ईश्वर मानना प्रारम्भ कर देंगे तो हर महापुरुष को ईश्वर समझना पड़ेगा। इसलिए आर्य समाज का यह सिद्धान्त बिल्कुल स्पष्ट है कि ईश्वर एक ही है। देवी देवताओं के चक्कर में पड़ कर हमें इधर-उधर नहीं भटकना चाहिए। हमारे सिख भाई भी एक ही ईश्वर की पूजा करते हैं, जिसे वे वाहेगुरु कहते हैं। श्री गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज ने अपनी आत्म कथा "विचित्र नाटक" में यह भी लिखा है कि जो उन्हें परमेश्वर मानेगा वह बहुत बड़ा पाप करेगा। इसलिए जहां तक आर्य समाज का सम्बन्ध है, हमारा एक ही ईश्वर है, एक ही धार्मिक ग्रन्थ है, एक ही प्रार्थना है, एक ही हमारे आचार्य हैं, आर्य समाज में कोई छूतछात भी नहीं है। वेद किसी देश विशेष जाति विशेष मनुष्य विशेष के लिए नहीं लिखे गये थे यह तो मनुष्य मात्र के लिए हैं, जब वेदों का प्रादुर्भाव हुआ था उस युग में संसार में न हिन्दू थे न मुसलमान थे और न ईसाई या सिख थे। केवल मनुष्य ही थे और उनके जीवन की व्यवस्था बताने के लिए वेद का प्रकाश हुआ था।

यदि हम इन सब बातों के आधार पर अपने देशवासियों में एकता का प्रचार करें तो आर्य समाज बहुत कुछ कर सकता है। आर्य समाज किसी प्रकार के विघटन की अनुमति नहीं देता। जब हमने हिन्दुओं में छूतछात को समाप्त कर दिया, हम किसी को अछूत नहीं मानते तो हिन्दुओं के संगठन का इससे बड़ा साधन और क्या हो सकता है? और यदि हिन्दुओं का संगठन शक्तिशाली हो जाए तो फिर इस देश में विघटनकारी शक्तियां अपना सिर नहीं उठा सकेंगी। इसलिए मैं कहता हूं कि आज हमारे देश में जो ऐसे तत्व उठ रहे हैं, जो आपस में लड़ा रहे हैं, भेदभाव पैदा कर रहे हैं, हमारे देश का एक और बंटवारा करवाना चाहते हैं। उनका मुकाबला हम संगठन के द्वारा ही कर सकते हैं और यह काम हिन्दुओं में केवल आर्य समाज ही कर सकता है। अपने जन्म दिन से आर्य समाज हिन्दू विरोधी शक्तियों की प्रत्येक चुनौती का उत्तर देता रहा है, अगर आर्य समाज शुद्धि का आन्दोलन प्रारम्भ न करता तो इस वक्त तक सम्भवतः आधा देश मुसलमान बन गया होता। इसी प्रकार ईसाईयों के प्रचार का जो मुकाबला आर्य समाज ने किया है किसी और ने नहीं किया। तात्पर्य यह है कि जो तत्व हमारे देश को किसी भी प्रकार कमजोर करना चाहते हैं, केवल आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है, जो उनके सामने खड़ी हो सकती है। आर्य समाज की एक और विशेषता भी है और वह यह कि वह अपने किसी स्वार्थ को सामने रख कर यह काम नहीं करती। कई राजनैतिक दल देश की एकता की बात तो करते हैं साथ ही किसी न किसी रूप में उसका मूल्य भी मांगते हैं। आर्य समाज ने आज तक अपनी सेवाओ के लिए अपना देशवासियों से कुछ भी नहीं मांगा। उसने जो कुछ भी किया है निस्वार्थ और निष्काम भाव से किया है। केवल देश की स्वाधीनता, एकता और अखण्डता के लिए ही किया है। हमे अपनी ये कमजोरी भी समझनी चाहिए कि हम जब आर्य समाज का प्रचार करते हैं तो उसकी इन उपलब्धियों को जनता के सामने नहीं रखते। हमें यह न भूलना चाहिये कि धर्म की रक्षा के लिये राष्ट्र की रक्षा आवश्यक है और राष्ट्र की रक्षा के लिये धर्म की रक्षा आवश्यक है। कुछ लोग अपने राजनैतिक स्वार्थों के लिये अपने धर्म का सहारा लेते हैं। आर्य समाज ने आज तक ऐसा कभी नहीं किया। वे अपने आपको देश की राजनैतिक समस्याओ से अलग नहीं रख सकता। परन्तु अपने किसी राजनैतिक स्वार्थ के लिये उसने कभी अपने धर्म का उपयोग नहीं किया। इसलिए मैं यह कहता हूं कि आर्य समाज ही केवल एक ऐसी संस्था है जो देश की स्वाधीनता एकता और अखण्डता की रक्षा कर सकती है। हमारे देश के लिए आर्य समाज के संगठन को शक्तिशाली बनाना अत्यन्त आवश्यक है। यह एक ऐसा उद्देश्य है और एक ऐसा लक्ष्य है, जो प्रत्येक आर्य समाजी को अपने सामने रखना चाहिए और उसे पूरा करने के लिए अपना तन-मन-धन लगा देना चाहिए।

वीरेन्द्र

मोगा में राष्ट्रीय एकता महायज्ञ

स्त्री आर्य समाज मोगा के तत्वावधान में 15 अक्तूबर से 19 अक्तूबर तक दयानन्द मथुरादास महाविद्यालय मोगा के प्रागण मे 11 कुण्डीय राष्ट्रीय एकता महायज्ञ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर श्री स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज श्री स्वामी वेदानन्तानन्द जी महाराज और श्री स्वामी सहजप्रकाश जी महाराज अपने प्रवचनो से जनता को लाभान्वित करेंगे। इनके अतिरिक्त वेदाचार्य डा. कुसमलता आर्या तथा बहन ज्योतिषमती आर्य भी अपने प्रवचनो से जनता को मानव जीवन की भिन्न-2 समस्याओ को सुलझाने का मार्ग प्रदर्शन करेंगी।

यह एक बहुत बड़ा यज्ञ होगा और बहुत समय के पश्चात् ऐसा यज्ञ पजाब मे हो रहा है। इसका श्रेय स्त्री आर्य समाज मोगा को है। वहा की हमारी बहने आर्य समाज के प्रचार मे सदा ही सक्रिय रही है। और समय-2 पर अपने भाईयो का मार्ग प्रदर्शन करती रहती हैं। मेरी पजाब के आर्य भाईयो से यह प्रार्थना है कि वे अधिक से अधिक सख्या मे इस अवसर पर मोगा पहुचें। पूर्णाहुति 19 अक्तूबर को प्रातः 9 बजे डाली जाएगी और 15 अक्तूबर से 19 अक्तूबर तक यह यज्ञ प्रातः 8 से 9 बजे तक और साय 4 से 6 बजे तक हुआ करेगा। ऐसा महत्वपूर्ण अवसर हमे अपने जीवन मे बहुत कम मिलता है। पजाब की वर्तमान परिस्थितियो मे राष्ट्रीय एकता की विशेष आवश्यकता है और राष्ट्रीय एकता महायज्ञ करके स्त्री आर्य समाज मोगा ने पजाब वासियो पर बहुत उपकार किया है। ऐसे अवसर पर हमारे कई वीतराग सन्यासी और महात्मा वहा आए होगे। वे अपने प्रवचनो से हमे बता सकेंगे कि वर्तमान परिस्थितियों मे हमारा कर्त्तव्य क्या है और हम सब मिलकर किस प्रकार अपने देश को बचा सकते हैं। यज्ञ की हमारे शास्त्रो मे बहुत महानता लिखी गई है। यज्ञ जितने भी हो, कम है और मोगा मे होने वाला यज्ञ तो एक बहुत बडा यज्ञ होगा। इसलिए जितने भाई और बहने वहा पहुच कर इस यज्ञ को सफल बना सकें, उतना ही अधिक हम सब का कल्याण होगा।

—वीरेन्द्र

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना में वेद सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना मे 24 अगस्त से 31 अगस्त रविवार तक वेद सप्ताह का आयोजन बड़ी धूम-धाम से किया गया। 24 अगस्त रविवार को वेद सप्ताह का आरम्भ एक विशेष आयोजन से किया गया। उस दिन राष्ट्रीय अखण्डता दिवस मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता भारत मे विख्यात उच्चकोटि की विदुषी स्वामी वेद भारती जी महाराज ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा आज हमारे प्रान्त पजाब मे साम्प्रदायिक एव विघटनकारी शक्तिया राष्ट्रीय अखण्डता को छिन्न-भिन्न करने मे प्रयत्नशील हैं सारा राष्ट्र इस समय सकटमय, स्थिति मे है। यदि अब भी हम सोये रहे तो कभी भी होश मे नही आ पाएगे। हमे अपनी रक्षा स्वय करनी है। शत्रु के खजर को पहचानना है, तथा समझना है व ठीक उत्तर देना है! हम शान्ति प्रिय हैं परन्तु उसका अभिप्राय यह नही कि हम कमजोर हैं।

हमें किसी का निशाना नही बनना, बल्कि बनाना है। आर्य समाज एक श्रेष्ठ लोगो की सस्था है। श्रेष्ठ लोग ही अच्छा मार्ग दे सकते हैं। आज मैं आर्य समाज के इस मच से आपको आह्वान देती हू कि आप सगठित हो, सगठित व्यक्तियो का समूह ही कल्याणकारी मार्ग दे सकता है। इस दुविधा के समय आर्य समाज ने एक आशा की किरण रखी है मैं समझती हू इसमे आपका कल्याण होगा। परन्तु होगा तभी जब आप स्वय उठ खड़े होगे।

जैन समाज की ओर से भी क्रान्ति मुन्नी जी इस सम्मेलन मे पधारे हुए थे। उन्होने भी इकट्ठे होकर कार्य करने के लिये कहा। हिन्दू सभा की ओर से श्री तिलकराज जी ने अपनी ओजस्वी वाणी मे सम्बोधित करते हुए कहा-"स्वतन्त्रता सग्राम में आर्य समाज ने जो भूमिका निभाई है। आप सब लोग जानते ही हैं। शहीद ऐ आजम भगतसिंह, लाला लाजपतराय, बिस्मिल, राजगुरु, सुखदेव, स्वामी श्रद्धानन्द जी ये सभी महा पुरुष आर्य समाजी थे। आज राष्ट्र को कुछ लोग विदेशी शक्तियो के सहारे कमजोर करने के उद्देश्य से गठ बन्ध कर रहे है। अत्याचार कर रहे है, भाति भाति के षडयन्त्रो से लोगो को भयभीत कर रहे हैं। इकट्ठे होकर आप लोग उनका सामना करें। यह लोग ज्यादा देर तक टिक नही सकेंगे। आर्य समाज जैसी सशक्त सगठन के सन्मुख यह लोग टिक नही सकेंगे।

पण्डित भीम सैन जी शर्मा ने कहा आज हिन्दुओ को इस चुनौती को स्वीकार करना है। हमारे पूर्वजो ने हर सकट मे वीरता एव बुद्धिमत्ता से काम किया। हमे भी इस सकट मय समय में अपने पूर्वजो की भान्ति वीरता एव बुद्धिमत्ता का छोर पकड़ना चाहिए। तभी हम सफल होगे। जैन सभा की ओर से श्री देविन्द्र कुमार जैन ने कहा-'बरनाला सरकार केवल पथ की सरकार बन चुकी है। कुछ लोग खालिस्तान का नारा लगा रहे हैं परन्तु बरनाला सरकार ने खालिस्तान बना दिया है। सरकारी नौकरिया केवल पथ के सिखो के लिए है। आटे केवल बाहिर से आये सिखो के लिये हैं। तस्करो एव सीमावर्ती गुण्डो को इस सरकार का पूर्ण सहयोग प्राप्त है। कई मन्त्रियो की कोठियो मे तस्कर पनाह लेते है। पजाब की यह पथिक सरकार सुरक्षा पट्टी का विरोध करती है उसे पता है कि यदि यह कानून बन गया तो कुछ मन्त्रियो का धन्धा बन्द हो जाएगा, ऐसी सरकार को एक मिन्ट के लिए भी रखना नही चाहिए। मैं इस मच से भारत सरकार से अनुरोध करता हू कि यहा पर राष्ट्रपति राज लागू किया जाये सम्पूर्ण प्रान्त मिलट्री के हवाले किया जाए। तभी शान्ति हो सकती है तथा राष्ट्र को बचाया जा सकता है। मन्दिर कमेटी की ओर से श्री कैलाश चन्द्र शर्मा श्री ने भी राष्ट्रपति राज लागू करने के लिए अपनी माग रखी। उन्होने आर्य समाज को इस कार्य मे पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। और भी कई बड़े-बड़े नेताओं ने इस राष्ट्रीय अखण्डता सम्मेलन को सम्बोधित किया। जिन मे श्री मगल सैन जी वधवा, श्री श्रवणकुमार आर्य, चूनी भाई जी वैद्य (गुजरात) श्री बलराज जी भजनोपदेशक फिल्लौर, श्री ज्ञान प्रकाश जी वर्मा, श्री अमरचन्द बत्रा (राष्ट्रीय एकता कमेटी) अन्त में डा. आनन्द सुमन भूतपूर्व कुलपति मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़, पोता नवाब छतारी तथा सार्वदेशिक वैदिक प्रवक्ता दिल्ली ने अपने ओजस्वी भाषण में हिन्दुओ को करो या मरो का सन्देश दिया। उन्होने कहा लोग मुझे कहते हैं कि मैंने धर्म परिवर्तन किया है परन्तु मैं तो समझता हू मेरे पूर्वजो ने जो गलती की थी मैंने पुर्नमिलन करके उसका प्रायश्चित किया है मैंने अनेको भूले-भटको को पुन: वैदिक धर्म मे वापस लाकर उनका पुर्नमिलन किया है। जब मुगल शासन का सूर्य चढ़ती कलों में था तो उन्होंने अपनी शक्ति के जोर से, धन-दौलत के लालच से, हिन्दुओ को, मुसलमान बनाया। कुछ को हमने स्वय दूसरी जातियो मे छुआ-छूत के भेदभाव के कारण धकेला। भारत मे मुसलमान नाम मात्र को थे आज वह एक शक्तिशाली रूप मे खड़े हैं हम परिवार नियोजन अपना रहे हैं वे परिवार बढ़ा रहे हैं। भारत की उन्नति के लिए भारत मे सभी पर एक प्रकार का कानून होना चाहिए। मुसलमान चार बीविया रख सकता है हिन्दू एक। मुसलम प्रसिन्नता के कारण मुसलमानो को परिवार नियोजन मे छूट है, मै यह आपको बतला देना चाहता हू कि यदि यह इसी प्रकार चलता रहा तो एक दिन मुसलमान सारे भारत मे बहु-सख्या मे होगे। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम राष्ट्रवादी बने। यह भारत-वर्ष हिन्दू का देश है यहा पर रहने वाले, हिन्दू-मुसलमान, सिख इसाई-पादरी जैनी-बौद्ध सभी भारतवासी हैं पहले वे भारतीय हैं बाद मे मुसलमान। उन्हे भारत मे रह कर पाकिस्तान के इशारो पर चलने नही दिया जाएगा।

अखण्डता सम्मेलन से पूर्व यजुर्वेद परायण महायज्ञ आरम्भ किया गया। जिस की अग्नि श्री बोधराज भाटिया मालिक भाटिया आटो ट्रेडर्ज ने प्रज्जवलित की। उनके साथ श्री एव श्रीमती सुधीर जी भाटिया, श्री महिन्द्र प्रताप आर्य, श्री एव श्रीमती विनोद कुमार, श्री एव श्रीमती सत प्रकाश टडन यजमान बने। वेद मन्त्रो की पवित्र ध्वनि से यज्ञ शाला गूज उठी। आये हुये सभी धर्म-प्रेमियो ने बड़ी श्रद्धा से यज्ञ मे भाग लिया तथा वेद मन्त्रो से अपनी वाणी को शुद्ध किया। इसके पश्चात् आर्य समाज के सरक्षण, किशोर होजरी के मालिक ला राम जी दास ने ओ३म् के ध्वज को फहराया। सभी अधिकारियो ने उनको फूल-मालाए पहना कर अभिनन्दन किया इस प्रकार वेद सप्ताह का आरम्भ बड़े आयोजन के साथ हुआ। जिस मे लुधियाना नगर की धार्मिक एव सामाजिक सस्थाओ व सभी आर्य समाजो के सदस्यों ने भाग लिया।

यज्ञ प्रात: व साय दोनो समय होता रहा। डा बाल कृष्ण जी पी एच डी. के मनोहर एव जीवन उपयोगी, लाभदायिक प्रवचनों का लोगों पर काफी प्रभाव हुआ। श्री सतपाल जी पथिक आर्य भजनोपदेशक अमृतसर, श्री बलराज जी आर्य भजनोपदेशक फिलौर, वेद प्रचार भवन मण्डली लुधियाना, सुमधुर गायक श्री पजाब राय तथा उनकी सुपुत्री कुमारी पकज, ने अपने-अपने भजनो एव प्रवचनो से लोगों को धर्म लाभ पहुचाया। माता कौशल्या जी माता द्वारका देवी जी, बहन सत्या जी बग्गा, बहन जनकरानी जी, बहन चन्द्र कान्ता जी, बहन कमला वैद्य, बहन सीता देवी जी, माता वेद कुमारी रहमन, बहन विमला जी, माता शान्ता जी बागिया-रामकली बागिया, बच्ची ऋतु रानी, श्रीमती सत्या देवी आर्य, बहन विद्यावती जी, बहन उमा रानी परिवार सहित ये सभी माताए व बहनो ने यजमान बन कर बड़ी श्रद्धा एव लग्न से यज्ञ पूर्ण कराया श्री एव श्रीमती देवराज आर्य श्री एव श्रीमती नवनीत लाल आर्य, श्री कन्हैया लाल जी, श्री एव श्रीमती यशपाल आर्य, श्री एव श्रीमती विनोद कुमार ढींगरा, श्री एव श्रीमती विजय कुमार गुलाटी श्री मुकेश जी, श्री ससार चन्द जी, श्री एव श्रीमती रणवीर जी ढींगरा, श्री एव श्रीमती हसराज महाजन, प्रिय सजीव, श्री एव श्रीमती सुरेन्द्र कुमार आर्य, श्री दुनीचन्द जी, श्री वीरेन्द्र जी ढींगरा, श्री रविकान्त ढींगरा, श्री सुशील जी गोगिया, श्री अशोक कुमार जी गोगिया, श्री रवि कुमार जी, श्री एव श्रीमती अजय कुमार खन्ना, श्री प्रणव कुमार जी, श्री गोपाल कृष्ण जी परिवार सहित, श्री रमण कुमार, श्री एव श्रीमती ज्ञानी गुरदियाल सिंह आर्य, श्री एव श्रीमती वीरेन्द्र कुमार वधवा, श्री एव श्रीमती श्रवण कुमार आर्य, श्री एव श्रीमती विपन कुमार सूद श्री रणवीर भाटिया, श्री कर्मवीर जी गुलाटी आदि-आदि परिवार जनो ने इस बृद्ध यजुर्वेद महा यज्ञ मे यजमान पद ग्रहण किये, तथा यज्ञ की शोभा को बढ़ाया। पूर्णाहुति बड़ी सफलता से सम्पन्न हुई। लगभग 150 परिवारों को आशीर्वाद प्रदान किया गया। इसके पश्चात वेद सम्मेलन आरम्भ किया गया जिसकी अध्यक्षता पजाब के ही नहीं, बल्कि भारत के विख्यात उच्चकोटि के विद्वान प्रो सुरेश जी शर्मा ने की। अध्यक्ष महोदय का परिचय देते हुए श्री रणवीर जी भाटिया ने बतलाया कि प्रो. सुरेश जी शर्मा को भारत सरकार ने दो बार पुरस्कृत एव सम्मानित किया है प्रथम बार 1968 में उन द्वारा किया गया कविता सग्रह "आकुर" पर। दूसरी बार अभी पिछले सप्ताह ही मान्य महामानव भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी ने उन द्वारा कविता सग्रह 'मुकुल मैलानी' पर पुरस्कृत किया। 1969 में पजाब सरकार ने भी उन्हे पुरस्कृत एव सम्मानित किया।

—रणवीर जी भाटिया

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में भाषण तथा संगीत प्रतियोगिता

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस पूर्व वर्ष की भाति इस वर्ष भी पूर्ण उत्साह से मनाया जा रहा है। 1-11-86 दीपावली के दिन निर्वाण दिवस 7-30 से 10 बजे तक विशेष रूप से मनाया जायेगा। इसी उपलक्ष्य मे रविवार 2-11-86 को भाषण तथा संगीत प्रतियोगिता का विशाल आयोजन यज्ञ के पश्चात प्रात. 9-15 से 12 बजे तक किया गया है। आपसे प्रार्थना है कि प्रतियोगियो के नाम शीघ्र भेज कर कृतार्थ करें। नाम भेजने की अन्तिम तिथि 25-10-86 है।

★ भाषण के लिए विषय ★

1 हम निर्वाण क्यो मनाते है? 2. क्या महर्षि युग प्रवर्तक थे? 3. महर्षि दयानन्द जी के स्त्री जाति पर उपकार। 4 महर्षि दयानन्द जी का आर्य समाज। 5 महर्षि दयानन्द शिक्षा पद्धति। 6 स्वतन्त्रता संग्राम मे महर्षि की देन। 7 महर्षि की अन्तिम इच्छा।

● संगीत के लिए विषय ●

1 महर्षि दयानन्द निर्वाण 2 महर्षि दयानन्द जी की जीवन गाथा अथवा उपकार।

दोनो प्रतियोगिताओ मे प्रथम-द्वितीय तथा तृतीय आने वालो को सुन्दर उपहारो सहित पारितोषिक धन राशि भी दी जाएगी।

● भाग लेने के लिए नियम ●

1 प्रतियोगिता मे कोई भी भाग ले सकता है परन्तु वह किसी सस्था मे वेतन भोगी न हो। 2 प्रतियोगियो के नाम 25-10-86 तक पहुच जाने चाहिए। 3 समय की पाबन्दी अनिवार्य है। भाषण के लिए 3 मिन्ट से 5 मिन्ट 4 संगीत के लिए अधिक से अधिक 5 मिन्ट। 5 भाषण मौखिक होगा, लिखा हुआ पढना प्रतियोगिता में शामिल नही। 6 जज तीन होंगे, उनका सर्वसम्मत अथवा बहुमत निर्णय सभी को स्वीकार्य होगा। इसमे किसी प्रकार का दावा या अपील नही सुनी जायेगी। 7 सभी प्रतियोगियो को मान-पत्र दिये जायेंगे। 8 बाहर से आने वाले प्रतियोगियो तथा उनके सहयोगियो को रात मे ठहरने व उनके भोजन का प्रबन्ध होगा किन्तु पूर्व सूचना भेजना आवश्यक है। आपसे अनुरोध है कि आप इसमे स्वय सम्मिलित हो तथा अपने स्कूलो व कालेजो के सुयोग्य छात्र-छात्राओ को इस प्रतियोगिता के लिए तैयार करके नाम भेजे, संस्थाओ तथा आर्य समाजो मे प्रतियोगिता मे भाग लेने वालो के नाम भी शीघ्र भेजें।

● नोट : मन्त्री जी को कार्यक्रम मे परिवर्तन करने का अधिकार हैं।

नवनीतलाल डींगरा	बलदेव राज सेठी	श्रवण कुमार आर्य
प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य विद्या सभा के विवाद के विषय में सार्वदेशिक सभा का निर्णय और आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रस्ताव

आर्य विद्या सभा के विषय मे सार्वदेशिक सभा और आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब मे जो मतभेद पैदा हो गए थे और उनके सन्दर्भ मे सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव ने जो निर्णय दिया है—उसके आधार पर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरग सभा ने अपनी बैठक दिनाक 12 अक्तूबर 1986 मे जो प्रस्ताव पारित किया है वह आर्य जनता की जानकारी के लिए नीचे दिया जाता है।

प्रस्ताव संख्या—2

श्री सभा प्रधान जी ने सविस्तार उस बातचीत का वर्णन प्रस्तुत किया, जो देहली मे सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो के साथ उनकी 26, 27 सितम्बर 1986 को हुई थी। श्री प्रधान जी ने सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव का निर्णय भी पढ कर सुनाया और कहा कि इसके अनुसार आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के वर्चस्व को स्वीकार कर लिया गया है। यह भी मान लिया गया है कि गुरुकुल कागडी और उससे सम्बन्धित सस्थाओ की सम्पत्ति की स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब है। आर्य विद्या सभा के विधान मे आवश्यकता के अनुसार सशोधन कर दिया जायेगा। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के विधान मे भी सशोधन किया जाएगा। जो अभियोग जालन्धर मे चल रहे है, वे वापस ले लिए जाए गे और तीनो पक्ष आपस के समझौता का प्रारूप जालन्धर के न्यायालय मे पेश करके न्यायालय से निर्णय ले लिया जायेगा। नई आर्य विद्यासभा के 29 सदस्य होगे, तीनो सभाओ के 9-9 और दो सार्वदेशिक सभा के। विद्या सभा के कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा द्वारा मनोनीत किये जाए गे। सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी डा हरिप्रकाश को तुरन्त वर्तमान पद से हटा देंगे और जो निर्णय लिये गए है उनकी सारी प्रक्रिया तीन मास मे समाप्त हो जानी चाहिए।

श्री सभा प्रधान जी ने कहा कि श्री वन्देमातरम् जी ने जो निर्णय दिया है, उसके विषय म हम यह तो नही कह सकत कि हमारी सब मागे स्वीकार कर ली गई हैं, परन्तु आर्य समाज के हित को सर्वोप्रिय समझत हुए और आय समाज के सगठन को सदृढ बनाने के उद्देश्य से हमे यह स्वीकार कर लेना चाहिए।

श्री प्रधान जी ने यह भी कहा कि इस निर्णय के पश्चात् सभा का 29-6-86 के प्रस्ताव की आवश्यकता नही रहती। विशेषकर इस लिए भी कि श्री वन्देमातरम ने अपने निर्णय मे यह सुझाव दिया है कि सार्वदेशिक सभा के प्रस्ताव दिनाक 22-6 86 को भी वापस ले लिया जाये। इसलिए सभा को अपना 29 6 86 का प्रस्ताव भी वापस लेना चाहिए।

सर्वसम्मति से पारित हुआ कि .—

1 श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव का निर्णय स्वीकार है।

2 आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरग सभा का दिनाक 29 6-86 का प्रस्ताव वापस लिया जाता है।

3 सभा सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी वरिष्ठ उपप्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र जी राव व कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ जी मरवाह एडवोकेट के प्रति आभार प्रकट करती है कि उन्होने इस विवाद को समाप्त करने के लिए अपना योगदान दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब आर्य समाज के सगठन को सुदृढ और शक्तिशाली बनाने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को पहले की तरह भविष्य मे भी अपना सहयोग देती रहेगी।

सूचना

गत अक मे पीडित परिवार सहायता कोष मद्दे 2101 रु श्रीमती कमला जी आर्या (सभा उप-प्रधान) द्वारा हमे भेजी थी यह राशि उन्होने स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना की बहिनो के सहयोग से एकत्रित की है। इसके लिए सभा स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना का, समस्त दानियो का तथा बहन कमला जी आर्या धन्यवाद करती है।

महर्षि दयानन्द और सत्यार्थ प्रकाश की प्रशंसा

प्रभु विनती

रचयिता—मागे राम आर्य, प्रधान
आर्य समाज अहमदनगर (महाराष्ट्र)

ऐसा मैं क्या करू, शब्द नही मेरे पास।
दीन बन्धु मुझे ज्ञान दो, यही मेरी अरदास॥
प्रशंसा कैसे लिखू, नही बुद्धि नही ज्ञान।
फिर भी लिखने बैठेगा, धर ईश्वर का ध्यान।
बल, बुद्धि और ज्ञान का, एक वही भण्डार।
"राम" उसी से मागना, देवे बन दातार॥
ज्ञान दिया बुद्धि हुई, दिये अटूट विचार।
उसकी दया अपार से, कविता हुई तैयार॥

प्रशंसा

सत्यार्थ प्रकाश मे, लिखा सत्य का सार।
जो सज्जन पढते इसे, पावे आनन्द अपार॥
आनन्द-कन्द, लगोट-बन्द, दयानन्द ऋषि राज।
सत्यार्थ जिस ने रचा, सब ग्रन्थो का ताज॥
वो जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी था, था पूर्ण विद्वान।
अपनी प्रतिभा बुद्धि से, किया वेद व्याख्यान॥
धर्म, कर्म, बन्ध, मोक्ष का, वर्णन किया अपार।
ईश, जीव, प्रकृति का, खूब किया विस्तार॥
सब ग्रन्थन मन्थन किये, खूब निकाला सार।
सत्य असत्य शोध कर, दिया ग्रन्थ मे डार॥
सत्यार्थ ही विचारिये, उठ के प्रात काल।
आत्म शुद्धि होय तब, कटे भ्रम के जाल॥
दयानन्द महान था, महान किया जिस काम।
मगन अमृत ज्ञान का, पिला गया हमे जाम॥
अमर ग्रन्थ सत्यार्थ है, सब रत्नो की खान।
अमर ऋषि भी है मेरा, सुन लो सन्त सुजान॥
"मागे" सतगुरु हैं तेरे, दयानन्द महाराज।
जिस की दया अपार से, सुधरे सारे काज॥ —मागेराम आर्य-प्रधान

हिन्दुओं को भी सभी त्योहारों पर अवकाश हो

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर के प्रधान श्री सुभाष भाटिया का पत्र प्रधानमन्त्री के नाम

आदरणीय प्रधानमन्त्री महोदय !

नमस्कार, केन्द्रीय सरकार द्वारा सर्वजनिक एवम् इच्छक अवकाशो की जो घोषणा की है उसे पढ कर आश्चर्य हुआ कि इन अवकाशो मे होली, जन्माष्टमी, रामनवमी, जैसे राष्ट्रीय त्योहारो की समस्त भारत मे छुट्टी नहीं की गई है (सिवाय दिल्ली के) तथा महा शिवरात्रि ऋषिबोधोत्सव की बिल्कुल छुट्टी नही की गई।

प्रधानमन्त्री महोदय आपको मालूम होना चाहिए इन महत्वपूर्ण धार्मिक त्योहारो से भारत के समस्त हिन्दुओ की भावनाए जुडी हुई हैं तथा आपकी सरकार के इस अदूरदर्शी निर्णय से उनकी भावनाओ को तीव्र वेदना पहुची है।

राजीव जी एक तरफ आपने मुस्लिम, तथा इसाई समुदायो के समस्त त्योहारो की छुट्टी कर दी है जिसका समस्त भारत के जन मानस के साथ कोई सम्बन्ध नही हैं यह आपकी मुस्लिम, इसाई तुष्टीकरण तथा हिन्दू जगत के विषय मे उपेक्षा की नीति देश की एकता, अखण्डता एव सुरक्षा को कुठाराघात करने वाली है।

प्रिय महोदय कृपया अपनी इस नीति पर पुनर्विचार करें ताकि समस्त हिन्दू जगत मे व्यापक अक्रोश एव क्षोभ की जो लहर दौड गई है उसे अविलम्ब दूर किया जाए।

श्रीमान जी आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि अपने निर्णय पर पुनर्विचार करें ताकि जिन हिन्दुओ ने आपको इस महत्वपूर्ण पद पर पहुचाने मे सबसे बडी सहायता की है राहत महसूस कर सकें।

—सुभाष भाटिया-प्रधान

डी. ए. वी. फार्मेसी की दवाईयों के लिए विक्रेताओं की आवश्यकता है

जैसा कि पहले समाचार पत्रो मे दिया जा चुका है कि डी ए वी फार्मेसी जालन्धर जो कि एक सौ वर्ष पुराना आयुर्वेदिक दवाइयो का एक मशहूर संस्थान है का एक नया डिपो डी ए वी कालेज मैनेजिंग कमेटी, चित्र गुप्त मार्ग, नई दिल्ली मे खोल दिया गया है। इस उपलक्ष्य मे ऐसा निश्चय किया गया है कि दिल्ली की कालोनियो के जो भी दवा विक्रेता हैं, वे डी ए वी फार्मेसी की दवाईयों की एजैंसी ले।

इसलिए मेरी दिल्ली की कालोनियो के सब दवा विक्रेताओ (कैमिस्टो) से निवेदन है कि जो भी डी ए वी फार्मेसी की दवाईयों की एजैंसी लेना चाहे वे निम्न पते पर सम्पर्क करें।

रामनाथ सहगल, सचिव डी ए वी फार्मेसी डिपो,
डी ए वी कालेज मैनेजिंग कमेटी, चित्रगुप्त मार्ग नई दिल्ली-55
दूरभाष न 527887,524304,734614

जो दवा विक्रेता हमारी दवाईया रखेंगे, उनको उचित कमीशन एव सुविधा प्रदान की जावेगी।

—रामनाथ सहगल

आर्य समाज अहमदगढ़ की गतिविधियाँ

नए चुनाव के पश्चात पुनः वेद प्रचार पर ध्यान दिया गया 2 दिन तक जिला आर्य सभा के प्रधान महात्मा प्रेम प्रकाश जी का प्रवचन हुआ, दैनिक सत्सग में मुद्ध जी का यज्ञ शेष बाटा गया। 24-9-86 को प्रधान जी की बेटी पूजा रानी का जन्म दिवस मनाया गया। जहा पर उन्होंने आर्य युवक समाज को 71 रुपए का योगदान दिया। यज्ञ के पश्चात् सभी को जलपान करा दिया गया।

24-9-86 को अन्तरग की बैठक मे अन्य निर्णयो के अतिरिक्त आर्य समाज अहमदगढ की रजत जयन्ती मनाने का भी निर्णय किया गया। वर्ष 1987 को रजत जयन्ती वर्ष के रूप मे अधिकाधिक वेद प्रचार करके मनाया जाएगा।

—मनोहर लाल कुराना
मन्त्री

आतंक पीड़ित परिवार सहायक कोष के लिए प्राप्त राशियों की सूची

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने आतंकवाद से पीड़ित भाईयों की सहायता के लिए एक सहायता कोष आरम्भ किया है इसमें निम्न महानुभावों ने और दान दिया है। हमारी और भी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि इस सहायता कोष में अधिक से अधिक धन भेजें।

सत्यवत शर्मा
सभा महामन्त्री

(पताक से आगे)

आर्य समाज अबोहर (पंजाब) के द्वारा आतंक पीड़ित परिवार सहायता कोष में पहले भी 12340 रुपए की राशि प्राप्त हो चुकी है और अब पांचवी किश्त उन्होंने 5143 रुपए की भेजी है जो इस प्रकार है।

1	आर्य गर्ल्ज प्राईमरी स्कूल द्वारा	800-00
2	श्री बनवारी लाल वैदिक हाई स्कूल	750 00
3	फाजिल्का,अबवाली ट्रांसपोर्ट कम्पनी	501-00
4	श्री उत्तमचन्द आर्य माडल स्कूल द्वारा	274-00
5	शरणार्थी ट्रांसपोर्ट कम्पनी	251-00
6	डाक्टर श्याम सुन्दर	201-00
7	डा ए आर तलवार	201-00
8	श्री पृथ्वी राज रमेश कुमार आहूजा	101-00
9	श्रीराधचन्द मालचन्द	101-00
10	ठाकुर दास भीमसेन	100 00
11	श्री डा हर्ष बधवा	100 00
12	श्रीमती रामदेवी माता श्री मुरारीलाल वाधवा	101-00
13	श्री हजारी लाल वासीराम सराफ	100-00
14	श्री मेलाराम गोविन्दराम पसारी	101-00
15	मिस पी सिधा डा	100-00
16	न्यू फिरोजपुर, फाजिल्का ट्रांसपोर्ट कम्पनी	101-00
17	गुप्तदान	101-00
18	गुप्तदान	101-00
19	मुरलीधर	51-00
20	श्री निहालचन्द महेश कुमार	51-00
21	डा बिहारी लाल ओमप्रकाश	51-00
22	छाबड़ा वाच कम्पनी	51-00
23	गुप्ता स्वीट हाऊस	51-00
24	श्री भाली राम आर्य द्वारा	51-00
25	श्री बाबू धनराम दास जी	50 00
26	मनोहर लाल मदन लाल	21 00
27	श्री बाबू लाल शर्मा	21-00
28.	श्री दयालाल जी	31-00
29	कृतीया राम हसराज	21 00
30	डा रमन मिगलानी	21 00
31	डा. राकेश अरोड़ा	21-00
32	श्री बतरा मैडीकल स्टोर	21 00
33	श्रीरामसिंह यादव	11 00
34	श्री डा. राजकुमार गुप्ता	51-00
35	श्री दुनीचन्द हसराज फुटेला	51-00
36.	श्री जितेन्द्र कुमार सराफ	50 00
37.	श्री कुन्दन लाल सराफ	50-00
38	श्री गिरधारी लाल नागपाल	50 00
39	श्रीराम कुमार एण्ड सन्ज	50-00
40	श्री शिव कुमार शकर सोमाणी	31-00
41	श्री पवन आटो स्टोर	31-00
42	श्री मोहनलाल कर्मचन्द जसूजा	31-00
43	श्री डा भवरलाल सोमाणी	25 00
44	श्री कर्मचन्द सेतिया एण्ड सन्ज	21-00
45	श्री छाबड़ा सूटिंग मशीन	20-00
46	श्री हरिचन्द सराफ	21-00
47	श्री डा विश्वानाथ	11-00
48	श्री देशराय बूलचन्द	11-00
49	श्री गुप्तदान	10-00
		5143-00

आर्य समाज कोटकपूरा के दानियो की सूची

1	आर्य समाज कोटकपूरा	501-00
2	श्री रविराज देवड़ा	101 00
3	श्री महेन्द्रपाल मैंगी मन्त्री आर्य समाज कोटकपूरा	100 00
4	श्री अमृतलाल मैंगी द्वारा ,, ,,	100 00
5	श्री कमचन्द यशपाल देवड़ा	100 00
6	श्री वीरेन्द्र शर्मा प्रधान आर्य समाज ,,	11 00
7	श्री मिठूराम चक्रवर्ती	21 00
8	श्री दिलीप कुमार बासल	51 00
9	श्री बाबूलाल मैंगी	51 00
10	श्री महाशय केहरसिंह	21-00
11	श्री राजेन्द्र कुमार देवड़ा	51 00
12	श्री महाशय गुरदियालसिंह कटारिया	21 00

आर्य समाज मोहाली के दानियो की सूची

1	श्री ज्ञान प्रकाश राय	21-00
2	श्री विशेष कुमार	21-00
3	श्री विधिचन्द जी	21 00
4	श्री दावान सिंह जी	21 00
5	श्री गिरधारी लाल जी	21 00
6	श्री नरेन्द्र पुरी	21 00
7	श्री डा एच एल कपूर	25 00
	योग	6423 00
	सताको मे प्रकाशित राशि जो आगे छप चुकी है—	23,096 00
	कुल जोड़	29,519 00

(क्रमश)

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोए।
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होए।।

दूसरे मन्त्र मे कहा गया है— भ्राता—भाई भ्रातरम—भाई के साथ मा-द्विक्षन—द्वेष न करे, उत—और स्वसा—बहिन, स्वसारम—बहिन के साथ (द्वेष), मा—मत, न करे। सम्यञ्च—ठीक प्रकार, सव्रता—समान गुण, कर्म—स्वभाव वाले, भूत्वा—हो कर, भद्रया—मंगलकारक रीति से (परस्पर), वाचम्—वाणी, वदत—बोला करें।

यदि प्रत्येक परिवार मे उपर्युक्त मन्त्रो के निर्देशानुसार आचरण और व्यवहार प्रारम्भ हो जाये तो प्रत्येक घर स्वर्ग, सुख-धाम, आदर्श बन जाए तथा इस प्रकार के आदर्श परिवारो से निर्मित राष्ट्र सच्चे अर्थों मे वैदिक राष्ट्र बनकर ससार के कल्याण का केन्द्र स्थल और प्रेरणा-स्रोत बन जाए।

प्रान्तीय आर्य युवक दल महासम्मेलन २५व २६ अक्तूबर को पानीपत में

अब प्रान्तीय आर्य युवक दल हरियाणा का प्रथम प्रान्तीय महासम्मेलन 25 व 26 अक्तूबर 1986 शनिवार तथा रविवार को भारत के ऐतिहासिक व औद्योगिक नगर पानीपत मे आर्य कालेज (बस स्टैंड के सामने) के विशाल मैदान मे बडी धूमधाम के साथ मनाया जाना निश्चित हुआ है।

इस महासम्मेलन मे प्रान्त भर से हजारो आर्य युवक युवतिया उत्साहपूर्वक भाग लेंगे। जिसमे आर्य जगत् के मूर्धन्य सन्यासी, विद्वान् व युवक नेता भाग लेकर युवको का मार्ग दर्शन करते हुए, वर्तमान परिस्थितियो पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर समाधान करेंगे।

25 अक्तूबर शनिवार को मध्यान्ह 5000 आर्य युवक एव युवतिया एक विशाल शोभा यात्रा मे अपने सगठन का परिचय देंगे। —जगदीशचन्द्र वसु

प्रान्तीय सगठन मन्त्री

आर्य समाज किशन गंज दिल्ली का चुनाव

आर्य समाज किशनगज (मिल एरिया) दिल्ली का वार्षिक चुनाव रविवार दिनाक 1 जून 1986 को वर्ष 1986-87 के लिए पदाधिकारी और अन्तरग सदस्यो का हुआ जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी एव अन्तरग सभासद सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए।

प्रधान—श्रीमती प्रीतम देवी तुली, उप प्रधान—श्री चमनलाल मदान, उपप्रधान—श्रीमती शान्ति देवी शर्मा, मन्त्री—श्री जे पी पाठक, उपमन्त्री—श्री प्रेम प्रकाश गुप्ता, कोषाध्यक्ष—डा प्रेम कुमार गाधी, आन्तरिक लेखा परीक्षक—डा रामचन्द्र आमेठा, अन्तरग सभासद एव सरक्षक—डा एस एस कामरा, अन्तरग सभासद-श्रीमती पदमा कपूर, अन्तरग सभासद—श्री ठाकुर फूलन सिंह वर्मा, अन्तरग सभासद—श्री दौलत राम। —जे पी. पाठक

मन्त्री

आर्य युवक समाज बरनाला का सराहनीय प्रयास

आर्य युवक समाज बरनाला के युवको द्वारा बरनाला मे 21-9-86 को एक युवक सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमे पजाब की वर्तमान परिस्थितियो एव आर्य युवक सभा के सगठन को मजबूत बनाने के लिए विचार-विमर्श किया गया। बरनाला के युवकों ने यह सम्मेलन करके एक उदाहरण स्थापित किया। जिससे स्पष्ट है कि युवा शक्ति जागृत है। इस सम्मेलन मे लुधियाना, तलवाडा, अहमदगढ, तपा, सगरूर, फरीदकोट तथा अन्य स्थानो से नवयुवको ने सम्मिलित होकर वैदिक धर्म मे अपनी निष्ठा एव आस्था का परिचय दिया। इस सम्मेलन मे सम्मिलित होने वाले सभी नवयुवक बधाई के पात्र हैं।

सम्मेलन के पश्चात् आर्य युवक सभा की कार्यकारिणी की मीटिंग भी हुई, जिसमें पजाब स्तर तक के सगठन को मजबूत बनाने के लिए महत्वपूर्ण विचार-विमर्श हुआ। बरनाला के नवयुवकों द्वारा भोजन की व्यवस्था एव अन्य प्रबन्ध अति उत्तम व प्रशसनीय थे। मैं बरनाला के युवकों को बधाई देता हू। तथा अन्य स्थानो के नवयुवको से अनुरोध करता हू कि वे भी इस प्रकार के सम्मेलन, विचारगोष्ठियों का आयोजन करें।

मैं श्री सत्यव्रत जी शर्मा महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, श्री डा. राजेन्द्र जी वासल, एम. बी. बी एस, राजेन्द्र हस्पताल बरनाला, कुमारी विमला जी छाबडा, अधिष्ठाता (साहित्य विभाग) आर्य प्रतिनिधि सभा का विशेष रूप से धन्यवाद करता हू। जिन्होने अपने व्यस्त समय में से समय निकाल कर युवको का मार्ग दर्शन किया। मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी इन सभी महानुभावो का सहयोग हमे निरन्तर मिलता रहेगा। इसके अतिरिक्त पजाब की भिन्न भिन्न आर्य समाजो से जिन महानुभावो ने इस सम्मेलन के लिए शुभ कामनाए भेजी थीं, उनके प्रति भी आभारी हू।

—रोशनलाल शर्मा-सयोजक

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

ओ३म्

दीपावली के पावन पर्व

पर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आपके मंगलमय भविष्य व

दीर्घायु की कामना करती है

इस शुभ पर्व पर हमारी

बधाई स्वीकार करें।

आर्य मर्यादा वर्ष 18, अंक 30, 31
10 व 17 कार्तिक 2043 तदनुसार 26 अक्तूबर व 2 नवम्बर
86 का सम्मिलित अंक।

वार्षिक शुल्क 20/-
आजीवन शुल्क 200/-

इस अंक का मूल्य 2-00

जोत से जोत जगे

दीवाली की रात हम पहले एक दीया जलाते हैं और उस दीये से फिर कई दीये जलते हैं और फिर वह समय भी आता है जब धीरे-धीरे सब दीये बुझ जाते हैं। महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में आर्य समाज के रूप में एक दीया जलाया था । इससे वे उस अन्धकार को समाप्त करना चाहते थे, जो कई शताब्दियो से हमारे देश पर छाया हुआ था । आर्य समाज का दीया जलाने के लिए महर्षि ने अपना बलिदान दिया वह बलिदान एक प्रकार से उस दीये का तेल था जिसके सहारे वह जलता रहा । उसी से फिर पं.गुरुदत्त,पं लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द,महात्मा हंसराज, श्री नारायण स्वामी, श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द और कई और दीये जलते रहे और उनका प्रकाश सारे देश मे फैलता रहा। आर्य समाज ने इस देश की जो सेवा की है, उसके विषय में इतिहासकारो ने बहुत कुछ लिखा है । प्रायः सब यह कहते हैं कि देश के नवजागरण और नव निर्माण में आर्य समाज का सब से बड़ा योगदान रहा है। जब तक हम आजाद न हुए थे, उस समय तक आर्य समाज एक ही समय में दो भिन्न-2 क्षेत्रों में लड़ाई लड़ रहा था। राजनैतिक क्षेत्र में

भी और सामाजिक क्षेत्र में भी। उसने स्वाधीनता के संग्राम में अपनी जो आहुति दी थी, वह किसी दूसरी संस्था ने नहीं दी। न केवल आर्य समाजी जेलो मे गये थे, आर्य समाज से प्रेरणा लेकर कुछ युवक फांसी पर भी चढ गए थे। और जहा तक सामाजिक क्षेत्र का सम्बन्ध है, उसमें दलितोद्धार, स्त्री शिक्षा, हिन्दी प्रचार, गऊ रक्षा, स्वदेशी के पक्ष में अभियान इस प्रकार कई कार्य आर्य समाज ने किए थे। यह भी एक इतिहासिक तत्व है कि जो कुछ आर्य समाज ने किया था उसके कारण ही देश मे वह जागृति आई थी, जो आगे चल कर अपने देश को अंग्रेज से आजाद करवा सकी थी। 15 अगस्त 1947 को जब हमारा देश आजाद हुआ था, उस समय आर्य समाज का एक काम समाप्त हो गया था, परन्तु दूसरा शुरू हो गया था। आजादी के बाद सब से बड़ा काम देश के नए निर्माण का था। पिछले लगभग 40 वर्षों में सरकार भिन्न-2 क्षेत्रो में देश के नए निर्माण के लिए काम करती चली आई है। कुछ ऐसे काम भी उसने किए है, जिन से देश को कुछ हानि ही पहुंची है। उसकी धर्म निरपेक्षता ने साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन दिया है। और उस का परिवार नियोजन हिन्दुओ के लिए घात साबित हो रहा है। यह कहना कि थोड़ी सन्तान पैदा करो एक और बात है, परन्तु जिस ढंग से जनता को इसके लिए विवश किया जाता है और उसका जो परिणाम निकलता है, उससे हिन्दुओं को जो हानि पहुंच रही है, उसकी अवहेलना नहीं की जा सकती। मुसलमान इसकी कोई चिन्ता नहीं करते। बल्कि वे तो इसके विरोध में ही चल रहे हैं, क्योंकि वे समझ रहे हैं कि उनकी संख्या जितनी अधिक होगी, वे उतने ही अधिक संगठित होगे और राजनैतिक रूप से शक्तिशाली होंगे। इस स्थिति में आर्य समाज का कर्तव्य और भी ज्यादा हो जाता है। आर्य समाज एक ऐसी संस्था है, जिसने निष्काम भाव से देश की सेवा की है। वही समझती है कि देश को किसी नए विघटन से कैसे बचाया जा सकता है? उसने कभी भी अपने स्वार्थ के लिए कोई काम नहीं किया वह जो कुछ भी करती है, निष्काम भाव से करती है परन्तु हमें यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि अब निष्काम भाव से आर्य समाज की सेवा करने वाले

दिन प्रतिदिन कम हो रहे हैं। जब किसी संस्था का नेतृत्व शिथिल हो जाता है तो संस्था भी अपने आप शिथिल हो जाती है। मैंने शुरू में लिखा है कि महर्षि दयानन्द ने अपने बलिदान से एक ज्योति जलाई थी। वह एक ऐसा दीया था, जिसके साथ धीरे-धीरे और दीए भी जलते गए और अब हम देख रहे हैं कि पुराने दीए तो बुझ रहे हैं और नये जलते दिखाई नहीं दे रहे। यह एक ऐसी स्थिति है, जो अत्यन्त निराशाजनक है।

दीपावली की रात को हम फिर दीये जलाएंगे। दीपावली से जो प्रकाश होता है वह बहुत थोड़े समय के लिए होता है और फिर वे सब दीये बुझ जाते है और उसके साथ अन्धेरा हो जाता है। क्या आर्य समाज के जीवन में अब वह समय आ रहा है कि अब इसके जीवन में भी एक अन्धेरा हो जाएगा और उस अन्धेरा को मिटाने वाला कोई दिखाई न देगा। आज देश के सामने कई समस्यायें हैं और देश की जनता आर्य समाज की तरफ देखती रहती है कि इन समस्याओं के समाधान के लिए आर्य समाज उन्हे कोई रास्ता दिखाएगा। लेकिन हमारे नेताओं के पास इतना समय ही नहीं कि वे देश की समस्याओं पर बैठ कर विचार कर सकें और कोई नया कार्यक्रम अपने देश-वासियों के सामने रख सकें। सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द ने मान-वीय समस्याओं के विषय में बहुत कुछ लिखा है और वहां से हमें प्रकाश भी मिल सकता है। परन्तु उसके लिए कुछ ऐसे संगठित प्रयास की आवश्यकता है कि आर्य समाज के कुछ बुद्धिजीवी महानुभाव एक जगह बैठ कर देश की समस्याओं पर सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर ऐसे समाधान निकालें, जिनके द्वारा हमारा देश इस समय जिस संकट में से गुजर रहा है, हम उसमें से निकल सकें। शिवरात्रि और दीवाली ये दो ऐसे पर्व हैं, जब हम और कई दूसरे भी महर्षि दयानन्द जी को अपनी श्रद्धांजलि भेंट करते हैं। इससे अधिक हम कुछ नहीं करते। यदि हम यह ही समझने का प्रयास करें कि हमारी जो राष्ट्रीय समस्याएं हैं, या सामाजिक समस्याएं हैं उनके विषय में महर्षि क्या लिख गए है और उन्हें क्रियान्वित करवाने के लिए आर्य समाज एक अभियान

प्रारम्भ करें तो वह देश का बहुत बड़ा उपकार कर सकता है। हम कई बार कहते है कि छूतछात की बीमारी अब हमारे देश में समाप्त हो गई है। वास्तविक स्थिति यह है कि वह समाप्त नहीं हुई और उसका एक बहुत भयंकर परिणाम निकल रहा है। इसी प्रकार आज की युवक पीढ़ी जिधर जा रही है, उस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की आवश्य-कता है। हमारी विरोधी शक्तियां जिस प्रकार अपने आप को संगठित कर रही हैं, उनका हम क्या उत्तर दे सकते है। इसके लिए कोई योजना बनाने की आवश्यकता है। दहेज की कुप्रथा के कारण समय-समय पर हमारी बेटियां जला दी जाती हैं, क्या आर्य समाज ने कभी इस पर भी विचार किया है कि इसे कैसे रोका जा सकता है, तात्पर्य यह कि इस समय आर्य समाज को जो कुछ करना चाहिए वह नहीं कर रहा और ऐसा प्रतीत होता है कि जो दीप महर्षि ने जलाया था वह अब बुझ रहा है। लेकिन दीवाली की रात हम दीप से दीप जलाते है। आर्य समाज रूपी दीप जो आज भी जल रहा है, उसी के सहारे हम यदि नया प्रकाश करने और जो अन्धकार हमारे देश में फैल रहा है, उसे मिटाने की कोशिश करें तो यह सारे देश का नहीं मानव जाति का भी बहुत बड़ा उपकार होगा। इसलिए आज के दिन जब हम अपने आचार्य को श्रद्धांजलि भेंट करेंगे, तो उस दिन हमें गम्भीरता पूर्वक यह भी सोचना चाहिए कि हम उनके प्रति अपने कर्तव्य को कहा तक पूरा कर रहे हैं ? यदि अपनी इस कमी को समझ कर उसे दूर करने का प्रयास करें तो उसी स्थिति में हम अपने आचार्य को सच्ची श्रद्धांजलि भेंट कर सकेंगे।

वीरेन्द्र

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से प्रधानमन्त्री को शुभ कामनाएं

2 अक्तूबर 1986 को देहली में राजघाट पर प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी की हत्या का जो निन्दनीय प्रयास किया गया था, उसे सुन कर आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब के प्रधान जी वीरेन्द्र जी ने अपनी सभा की ओर से प्रधानमन्त्री को अपनी शुभकामनाएं भेजी थीं और उनको दीर्घ आयु के लिए प्रार्थना करते हुए यह आशा प्रकट की थी कि वे अपने देश की बहुत समय तक सेवा करते रहेंगे और देश के हित में देश का मार्ग दर्शन करते रहेंगे।

इसके उत्तर में प्रधानमन्त्री के सचिव की ओर से सभा प्रधान जी को निम्नलिखित पत्र प्राप्त हुआ है :—

"प्रधानमन्त्री जी आपकी शुभ कामनाओं के लिए हार्दिक धन्यवाद देते है। आपके पत्र के उत्तर में उन्होंने मुझे आप को यह कहने का निर्देश दिया है कि देश सेवा तो कर्तव्य एव सौभाग्य है और खतरे तो जीवन का एक अंग है।"

★
●●●

आर्य समाज लाहौर की स्थापना जिनके घर पर हुई—

खान बहादुर डा. रहीम खाँ

लेखक—डा भवानीलाल जी भारतीय
पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़

19 अप्रैल 1877 को स्वामी दयानन्द जब अविभाजित पजाब की राजधानी लाहौर पहुचे तो उन्हे रतनचन्द दाढी वाले के बाग मे ठहराया गया और बावली साहब नामक स्थान मे उनके प्रवचनो की व्यवस्था की गई। जब पौराणिको ने यहा उनके व्याख्यानो मे विघ्न उत्पन्न किया तो ब्रह्म समाज के मन्दिर मे जो अनारकली बाजार मे था, उनके उपदेश होने लगे। विरोधियो को इससे भी सन्तोष नही हुआ और उन्होंने रतनचन्द दाढी वाले को इस बात के लिए विवश किया कि वह स्वामी जी को अपने स्थान से हट जाने के लिए कहे। परिणामत: स्वामी जी को जिस व्यक्ति के यहा रहना पडा वह इस्लाम का अनुयायी होने पर भी वस्तुत: मानवता का विश्वासी था। इतिहास इसे डा. रहीम खा के नाम से जानता है। इन्ही डा रहीम खा ने स्वामी जी को अपना अतिथि बनाया और उस अकिंचन सन्यासी के निवास की व्यवस्था कर इन्सानियत के ऊचे आदर्श का नमूना पेश किया।

लाहौर से प्रकाशित होने वाले पत्र दि ब्राह्म ने इस सम्बन्ध मे लिखा था—"स्वामी जी के शुभ चिन्तको ने निवास के लिए एक दूसरे कोठी का प्रबन्ध कर दिया। यह नई कोठी इस नगर के प्रसिद्ध डा खान बहादुर रहीम खा साहब की है जिनके सौजन्य और उदारता का पाठक इस बात से भली प्रकार अनुमान कर सकते हैं कि मुसलमान होने पर भी जब लोगो ने उनसे कोठी के लिए प्रार्थना की तो उन्होंने अत्यन्त प्रसन्नता के साथ कोठी स्वामी जी के लिये प्रदान की।

वस्तुत खान साहब की यह ऐसी कृपा थी, जिसके लिए स्वामी जी के शुभ-चिन्तक सदा आभारी रहेगे। यह कोठी स्वय इतनी बडी थी और उसके आगे का चौक इतना विस्तृत था कि स्वामी जी के निवास के अतिरिक्त उनके व्याख्यान के लिए भी अत्यन्त श्रेष्ठ और उपयुक्त समझी गई।"

डा रहीम खा का विस्तृत परिचय हमे उपलब्ध नही होता, किन्तु इतिहास इस बात का साक्षी है कि विश्व के सर्वाधिक सक्रिय और सुख्यात लाहौर के आर्य समाज की स्थापना भी इन्ही डा रहीम खा की कोठी मे ही हुई थी। प लेखराम रचित श्री महाराज के जीवन चरित्र के अनुसार जब स्वामी जी डा रहीम खा साहब की कोठी मे (जो नगर के बाहर छज्जू भगत के चौबारे से लगी हुई थी) उतरे थे, उस समय उन्होने लोगो को बताया कि आय धर्म की उन्नति तभी हो सकती है जब नगर-नगर और ग्राम ग्राम मे आय समाज स्थापित हो जावे। अत 24 जून 1877 रविवार तदनुसार ज्येष्ठ सुदी 13, स 1934 वि के दिन लाहौर के वार्षिक विवरण मे स्पष्ट अकित है कि प्रथम सप्ताह की उपासना डाक्टर रहीम खा साहब की कोठी मे हुई और हवन भी हुआ और वही आर्य समाज की नीव रखी गई। यह भी उल्लेख मिलता है कि स्वय डा रहीम खा आर्य समाज लाहौर के सभासद बने थे।

इन पक्तियो के लेखक ने स्वामी दयानन्द के शौध पूर्ण जीवन चरित "नवजागरण के पुरोधा—दयानन्द सरस्वती" मे इस प्रसग मे लिखा है—"क्या यह सुखद आश्चर्य नही है कि इस बार जिस व्यक्ति ने स्वामी जी को अपनी कोठी पर रहने के लिए आमत्रित किया, वह और कोई नही, धर्म विषयक मामलो मे अत्यन्त सहिष्णु तथा उदारभावापन्न पुरुष डा रहीम खा थे। आर्य समाज प्रवर्तक के उदात्त एव मानवतावादी दृष्टिकोण को हृदयगम करने मे असमर्थ व्यक्ति इस बात का अनुमान भी नही कर सकते कि दयानन्द की प्रगाढ सत्य निष्ठा ने उन्हे आर्य धर्मेतर लोगो मे भी पर्याप्त लोकप्रिय तथा श्रद्धास्पद बना दिया था।"

जय-जय यतिवर हे दयानन्द

लेखक—कविरत्न श्री प्रकाशचन्द्र जी

जय-जय यतिवर हे दयानन्द।
हे दयानन्द ! हे दयानन्द !!

कर आर्य जाति गौरव बखान,
वैदिक युग का कर कीर्तिगान।
ऋषि सन्तति कर दी सावधान,
तुमने फिर हे आनन्द कन्द !
जय जय यतिवर हे दयानन्द !!

खल, प्रपञ्चियो के विकट टोल,
अमृत मे विष थे रहे घोल।
जय वेद धर्म की बोल खोल,
कर पोल सकल काटे कुफन्द !
जय जय यतिवर हे दयानन्द !!

गुरु देव ! तुम्हारे गुण अनेक,
मुख मे है कवि के गिरा एक।
प्रतिभा न पास विद्या विवेक,
किस विधि गुण गाय "प्रकाश चन्द" !
जय जय यतिवर हे दयानन्द !!

श्रीराम व उनका राम राज्य

लेखक—श्री धर्मवीर जी शास्त्री विद्यावाचस्पति
जीतपुर (मेरठ)

आदर्श राज्य की जब चर्चा चलती है तो राम राज्य को सादर स्मरण किया जाता है। भारत की आजादी से पूर्व महात्मा गांधी ने भी राम राज्य का अपना लिया था वे चाहते थे जब भारत को आजादी मिलेगी तो हम राम राज्य स्थापित करेंगे। कराची काग्रेस मे स्वाधीन भारत की चर्चा करते हुए उन्होने जो विचार व्यक्त किए थे उनमे राम राज्य की पूर्ण रूपरेखा व्यक्त की गई थी ऐसी क्या विशेषता थी राम राज्य मे इस लिए हम बाल्मीकि रामायण का वह उदाहरण प्रस्तुत करते हैं जिसमे राम राज्य का वर्णन है—

न पर्यदेवन विधवा न च व्यालकृत भयम् ।
न व्याधिज भय चासीत् रामे राज्य प्रशासति ॥

जब तक राम का राज्य रहा तब तक न कोई स्त्री विधवा हुई न किसी मनुष्य को साप ने काटा, न कोई रोगी था।

निर्दस्यु रभवल्लो को नानार्थ कश्चिदस्पृशत ।
न च स्म वृद्धा बालाना प्रेत कार्याणि कुर्वते ॥

श्रीराम के राज्य मे डाकू चोरो का भय नही था, दूसरो के धन का लोग छूते तक न थे लेना तो दूर रहा, वृद्ध बालको का प्रेत कार्य नही करते थे अर्थात् थोडी आयु में मृत्यु नही होती थी।

सर्वं मुदित मेवासीत् सर्वा धर्मपरोऽभवत् ।
राममेवानु पश्यन्तो नाम्याहिंसन परस्परम् ॥
नित्य मूला नित्य फलास्तरवस्तत्र पुष्पिता ॥
काम वर्षी च पर्जन्य सुख स्पर्शश्च मारुत ॥

श्री राम के राज्य में सभी लोग सदा प्रसन्न और सभी धर्म परायण थे, श्री राम उदास होंगे, ऐसा विचार करके किसी को दु:ख न देते थे। उनके राज्य मे कन्दमूल फल बहुत अधिक होते थे वृक्ष हमेशा फलते-फूलते रहते थे ठीक समय पर वर्षा होती थी वायु सुख देने वाली सदा बहती रहती थी।

ब्राह्मणा: क्षत्रिया: वैश्या: शूद्रो लोभ विवर्जिता: ।
स्व कर्मस्तु प्रवर्तन्ते तुष्य: स्वैरव कर्मभि: ॥

वा रा. युद्ध 12—19—100-103-104

ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य शूद्र किसी को भी लोभ न था अपने-2 काम करते हुए सन्तुष्ट रहते थे। राम राज्य की चर्चा करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी इस प्रकार लिखते हैं :—

दैहिक दैविक भौतिक तापा, राम राज्य नहि काहुहि व्यापा। सब नर करहि परस्पर प्रीति चलहि स्वधर्म निरत श्रुति नीति ॥ श्रीराम के राज्य में दैहिक दैविक भौतिक ये तीनों दु:ख किसी को व्याप्त नही थे। सभी मनुष्य आपस में प्रेम से रहते थे और वेदो में बताई हुई नीति (मर्यादा) में तत्पर रहकर अपने-2 धर्म का पालन करते थे।

अल्प मृत्यु नहि कवनिऊ पीरा, सब सुन्दर सब विरुज शरीरा ॥
नहि दरिद्र कोऊ दु:खी न दीना, नहि कोउ अबुध न लच्छन हीना ॥

श्रीराम के राज्य में छोटी अवस्था मे मृत्यु नही होती थी और न किसी को कोई पीड़ा होती थी सभी के शरीर सुन्दर और नीरोग थे न कोई दरिद्र (गरीब) था न दु:खी था और न दीन था। न कोई मूर्ख था न ही शुभ लक्षणों से कोई हीन था।

ऐसा था श्री राम का राज्य। ऐसे राज्य को कौन नहीं चाहेगा। सभी चाहेगे। इसी राम राज्य का सपना महात्मा गांधी ने स्वतन्त्र भारत के लिए देखा था पर क्या आधुनिक भारत में वे गुण हैं जो राम राज्य में थे? नही। आज वे गुण हमारे भारत मे नही हैं। तीनों तरह के दु:ख आज यत्र-तत्र देखने को मिलते हैं न कोई शरीर से स्वस्थ है न मन में खुशी है और न समय पर वर्षा होती है अत: भौतिक ताप भी मानव को घेरे हुए हैं। आपस में प्रेम नहीं, भाई-भाई के खून का प्यासा है अल्प समय में मृत्यु हो जाती है, डाकू चोरों का भय सर्वत्र व्याप्त है। ठगी, भ्रष्टाचार का बोलबाला है। किसी को किसी पर भरोसा नहीं है। वस्तुओ मे मिलावट है। ईमानदारी और इन्सानियत हमसे कोसों दूर हो चुकी है ऐसे समय में राम राज्य की कल्पना सिर्फ कल्पना बनकर रह गई है।

विचारणीय प्रश्न यह है श्रीराम का राज्य इतना क्यों अच्छा था क्या कारण था कि प्रजा परस्पर प्रेम से रहती थी कोई चोर नहीं था, डाकू नहीं था। किसी

को किसी से भय नहीं था। इसके लिए इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि जहा प्रजा का सहयोग था वहा श्रीराम मे भी वे गुण विद्यमान थे जो आदर्श राजा मे होने चाहिए। क्योकि यह कहावत सत्य है "यथा राजा तथा प्रजा" जैसा राजा होता है उसकी प्रजा भी वैसी ही हो जाती है। श्रीराम मे ऐसे गुण क्या थे उनका हम सक्षेप मे सिर्फ कुछ घटनाओ के रूप मे वर्णन करना उपयुक्त समझते हैं लेकिन जरा ठहरे, पहले हम उनकी बोल-चाल तथा व्यवहार की बात लिखना चाहेगे श्रीराम की बोल चाल कैसी थी—

न च नित्य प्रशान्तात्मा मृदु पूर्वं च भाषते।
उच्यमानोऽपि परुषन्नोत्तरं प्रातिपद्यते ॥

श्रीराम हमेशा ही शान्त रहते थे। बहुत मधुर भाषा बोलते थे अगर कोई कुछ बात कह देता था तो उस को कडवी बात का जवाब नही देते थे।

उनके व्यवहार के बारे मे लिखा है—

कदाचिदुप कारेण कृतेनैकेन तुष्यति।
न स्मरत्यपकाराणा शतमप्यात्म वत्तया ॥

यदि कोई व्यक्ति श्रीराम के साथ एक भी उपकार का काम कर दे तो वे इतने मात्र से ही सन्तुष्ट हो जाते थे। उनको हानि पहुचाने के उद्देश्य से कोई सौ बार भी विपरीत काम करता तो वे अपने आत्मिक बल के कारण उसकी परवाह नहीं करते थे।

श्रीराम की विद्वता के बारे मे बाल्मीकि महर्षि ने लिखा—

सर्वं विद्या व्रत स्नातो यथा तत् साङ्गवेदवित्।
इष्वस्त्रे च पितुः श्रेष्ठो बभूव भरताग्रज बा रा अयो (पूर्ण 9।20)

श्रीराम सब विद्याओ को पढकर तथा ब्रह्मचर्य व्रत को पूरा करके विधिवत् स्नातक हुए। छ अङ्गो सहित वेद को भी पढा। बाण और अस्त्र शस्त्र सचालन मे अपने पिता से भी बढ गये।

धर्मं, कामार्थ तत्वज्ञ स्मृतिर्मान प्रतिभावान्।
लौकिक समयाचारे कृत कल्पो विशारदः ॥

श्रीराम ने धर्म, अर्थ और काम के रहस्यो को भली-भाति जान लिया उनकी अनोखी स्मरण शक्ति थी, शास्त्रीय गूढ तत्वो को और दूसरो के विचारो को वे बहुत जल्दी समझ लेते थे। लौकिक धर्म तथा समयोचित आचार-व्यवहार को अच्छी तरह समझते थे और मर्यादा अपने आचारण मे लाते थे।

श्रीराम की वीरता उदारता और व्यक्ति के स्वभाव तथा व्यवहार को परखने की क्षमता आदि देखकर उनके बारे मे यह प्रसिद्ध था।

द्वि शरन्नाभि सधतेहि स्थापयति नाप्रितान।
प्रिर्ददति न चार्थिम्यो रामो द्विर्नाभि भाषते ।।

शत्रु का सहार करने के लिए श्रीराम दो बाण नही चढाते अर्थात् एक बाण से ही अपने शत्रु को समाप्त कर देते हैं। अपनी शरण आये की योग्यता को देखकर एक बार ही उचित स्थान पर उसकी नियुक्ति कर देते हैं श्री राम याचक को एक बार मे ही निहाल कर देते हैं। तथा श्रीराम जो एक बार कह देते हैं उसमे परिवर्तन नही होता।

इस श्लोक मे व्यक्ति को परखने की क्षमता का जिक्र है आईए एक घटना की तरफ ध्यान करे।

रावण से अपमानित होकर विभीषण जब श्रीराम के दल मे उनसे मिलने आया तो सभी का विचार था कि यह शत्रु का भाई है यह हो सकता है हमारे दोष जानने के लिए आया हो। लेकिन श्रीराम इस बात से सहमत नही थे उन्होने कहा बगैर मिले यह कैसे कहा जा सकता है कि उसके मन मे क्या है साथियो मे फिर भी विरोध करते हुए कहा कि मिलने पर बातो से भी उसका क्या पता चलेगा बाहर से मीठी-2 बाते करता रहेगा और मन घात बनाए रखेगा अत उसे यहा मत आने दो लेकिन श्रीराम ने जो उत्तर दिया वह उनकी इस योग्यता को बताता है कि वे मनुष्यो के कितने पारखी थे कितनी उनमे सौजन्य भावना थी तथा वे कितने नीतिवान थे उन्होने कहा—

आकारश्छाद्यमानोऽपि न शक्यो विनिगूहितम्।
बलाद्धि विवृणोत्येव भावमन्तर्गतं नृणाम्।। 6-17-64

कोई कितना भी अपना आकार छिपाने को कोशिश करे फिर भी नही छिपा सकता क्योकि अन्दर के विचार बलपूर्वक आकर आकृति पर प्रकट होते रहते हैं।—यह कितनी मनो वैज्ञानिक बात उन्होंने कही। श्रीराम विभीषण से मिले नमस्ते के बाद हाथ पकड कर कहा—आओ लकेश। बैठो! जब साथियो ने कहा कि ये लकेश नही उनके भाई हैं तो श्रीराम ने कहा—मैंने सोचकर समझ कर ही लकेश शब्द से पुकारा है। अमर्यादित और चरित्रहीन व्यक्ति को राज्य करने का कोई अधिकार नही होता। अत आज से हमारी नजर में लका के सिंहासन का अधिकारी रावण नहीं बल्कि विभीषण है।

श्रीराम ने यह बात अपनी नीति कुशलता होने के नाते कहीं वे अपने कथन की प्रति क्रिया विभीषण पर देखना चाहते थे इसी पर उसकी वास्तविक भावना जानी जा सकती थी और विभीषण पर उस नीति पूर्ण वाक्य का पूरा असर हुआ और वह कहने लगा कि मैं अपने भाई रावण के अत्याचारों से तंग आ गया हूं दुराचार पूर्व व्यवहार सत्परामर्श देने पर भी नहीं छूटते बल्कि कोई नेक सलाह भी उसे अच्छी नही लगती है। अत: इस अत्याचार से प्रजा को बचाने के लिए और रावण के नाश के लिए मैं आपके सहयोग में पूरी शक्ति लगा दूंगा।

श्रीराम इस प्रतिक्रिया से बहुत खुश हुए और दोनों ने अपने वचनों का पालन बड़ी ईमानदारी से किया।

ऐसी परख थी उनकी व्यक्ति की और वे व्यक्ति को परखने पर सही स्थान पर उसकी नियुक्ति कर देते थे। यही कारण उनकी विजय का ही बना।

श्रीराम के जहां अनेक गुण थे वहां उनका सबसे बड़ा गुण था कि वे मर्यादा पालक थे अत: उन्हे मर्यादा पुरुषोत्तम के नाम से जाना जाता है।

श्रीराम पिता जी से वनो की ओर प्रस्थान करने की आज्ञा मांगने जब उनके पास जाते हैं तो उनके पिता ने कहा—

अहं राघव कैकेयी वरदानेन मोहितः।

अयोध्यायां त्वमे वाद्य भव राजा निगृह्य माम् ॥

हे राम मैं कैकेयी को वरदान देकर उसके मोह में फंस गया हूं तुम मुझे पकड़ कर जेल मे डाल दो और अयोध्या के राजा बन जाओ।

पिता जी की ऐसी बात सुन कर श्रीराम जो जवाब देते हैं वह जहां उनकी पितृ भक्ति को साबित करता है वहा यह भी साबित करता है कि वे मर्यादा हीन नही होना चाहते थे। एक मर्यादा है पिता के दिए वरदान का पालन कराने में सहयोग दे। जेल में पिता को डालना तक मर्यादा हीन कार्य है। एक आदर्श पुत्र होने के नाते उन्होंने जवाब दिया—

भवान् वर्ष सहस्राय पृथिव्या नृपते पति।

अहं त्वरण्ये वत्स्यामिन मे राजस्य कीक्षिता ॥

वा. रा. अयो. 34|27-21

पिता जी आप हजारों वर्ष तक राजा बन कर पृथ्वी पर शासन करें मैं तो अब वन में ही जाकर निवास करूंगा मुझे राज्य की आकाक्षा नही हैं।

वे चाहते तो उस समय राजा बन सकते थे लेकिन उस समय ऐसा कार्य मर्यादा से हीन था और वे तब न राजा बने न ही पिता को पकड़ कर जेल में डाला। जैसा कि मुगल शासन के दौरान औरंगजेब ने अपने पिता को कैद में डाल दिया तथा स्वयं गद्दी पर बैठ गये थे। ऐसा सब कुछ उन्होंने मर्यादा का ख्याल रखते हुए ही किया। अत: प्रारम्भ से ही मर्यादा पालन थे।

ऐसे ही श्रीराम ने एक पत्नी व्रतनि भाया वेद शास्त्रों की आज्ञा है। एक पुरुष की एक ही पत्नी होनी चाहिए। श्रीराम ने वेद की इस मर्यादा का पालन किया वन मे सूर्पनखा विवाह का प्रस्ताव लेकर आती हैं तरह-2के प्रलोभन देती है और अपने साथ विवाह करने की प्रार्थना करती है लेकिन श्रीराम ने उसे स्वीकार नहीं किया बाली वध को वह घटना भी श्रीराम के मर्यादा पालक होने का सजीव प्रमाण है। जब बाली ने अपने मरने का कारण राम से जानना चाहा तो श्रीराम ने उत्तर दिया—

तदेतत् कारण पश्य यदर्थ त्व मया हतः ।

भ्रातुर्वर्तसि भार्यायां त्यक्त्वा धर्म सनातनम् ॥

देखा मैंने तुम्हे जिस कारण से मारा है वह यह है कि तुमने मर्यादा का उल्लघन करके अपने छोटे भाई की पत्नी को अपने अधिकार मे किया हुआ है।

अस्य त्व धरमाणस्य सुग्रीवस्य महात्मनः ।

रुमायी वर्तसे कामात्स्नुषाया पाप कर्मकृत् ॥ 8।18।19

इस सज्जन सुग्रीव की पत्नी को बलपूर्वक अपने अधिकार मे करके कामातुर होकर तू ऐसा पाप का काम कर रहा है जो अपनी पुत्र बधु के साथ दुराचरण के समान है।

इसी तरह वनवास के प्रारम्भ के दिनो मे जब भरत उन्हे लेने पहुचा तो वे यह कह कर इन्कार कर देते हैं।

कथमन्ये करिष्यन्ति पुत्रेभ्य: पुत्रिण: स्पृहाम् ॥

जो पिता अपने वचन का पालन करने के लिए इस ससार से चला गया उसका पुत्र मैं यदि 14 वर्ष पूर्ण किये बिना लौट जाऊ तो—ससार के अन्य पिता अपने पुत्रो से यह आशा कैसे कर सकेंगे कि उनके पुत्र आगे ससार मे उनके पद चिन्हो पर चल कर उनके प्रण को निभायेंगे। ये सभी उदाहरण उनकी मर्यादा पालना के तथा अन्य श्रेष्ठ गुणो के हैं। श्रीराम परम ईश्वर भक्त थे। आदर्श, भाई, आदर्श पिता, आदर्श पति, आदर्श राजा थे। उनका भाईयो के प्रति प्रेम भी कितना प्रसिद्ध है यह सभी जानते हैं। प्रेम टिका है त्याग पर यदि त्याग नही स्वार्थ है तो प्रेम खत्म हो जाता है तो श्रीराम ने प्रेम के मूल त्याग का उदाहरण प्रस्तुत किया। इन्ही कारणो से श्रीराम इतने लोक प्रिय हो सके। और जब व्यक्ति इतना लोक प्रिय हो जाए तो अनुशासन के स्थान पर स्व अनुशासन लोगो मे स्वय आ जाता है। अत: उनका राज्य सर्वोत्तम था। परमात्मा करे हम मे तथा हमारे नेताओं में वह बुद्धि वह सोमर्थ्या आये जिससे हमारा देश फिर से—उसी राम राज्य की तरफ बढ़ सके।

कोटि-कोटि दीप जल उठे

लेखक—श्री राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ प्र)

नष्ट हो घनान्धकार राष्ट्र का,
हो प्रशस्त पथ नए विकास का,
ज्योति पुज्य चिर अतीत का—
बने पुनीत स्रोत नव प्रकाश का ।

कोटि-कोटि दीप जल उठे,
मातृभूमि पुण्य सीसबल उठे,
दानवी प्रवृत्ति फैलती बसुन्धरा—
आज रक्त'आर्य'पुत्र का मचल उठे

शुद्ध हो, प्रबुद्ध हो विचार राष्ट्र का,
पर हितार्थ हो सभी प्रचार राष्ट्र का,
हम करें सतत प्रयास सुदृढ भाव से—
दिव्य-नव्य-सौम्य सा श्रृंगार राष्ट्र का ।

अन्ध जाल नष्ट कर नया विहान हो,
राष्ट्र शक्ति सिंह नाद कर,महान हो,
सत्य धर्म पुण्य ज्योति ले प्रभामयी—
सत्य संस्कृति पुन: गुंजायमान हो ॥

त्याग की मशाल लें, बढ़े युवक,
धर्म हेतु प्राण लें, बढ़े युवक,
बाल सूर्य के प्रकाश सा—
प्रगति भूमि पर अजेय से बढ़े युवक ॥

दीपमाला का सन्देशवाहक

लेखक

प्रा. श्री भद्रसेन जी होशियारपुर

भारतीय पर्वों मे दीपमाला का एक प्रतिष्ठित स्थान है। पूर्व शब्द प्रसन्नता (पोरे-गाठ के आधार पर) सगठन, एकता के भाव को दर्शाता है। तभी तो किसी पर्व पर सर्वत्र एक साथ उत्साह और एकता की भावनाए दृष्टिगोचर होती हैं। जैसे वृक्ष मे सचरित रस वृक्ष के सभी अशो को हरा-भरा रखता है, ऐसे ही पर्व के द्वारा पर्व से जुडे हुओ मे उमग, उत्साह और समानता की भावना आती है।

दीपमाला पर सर्वत्र सफाई (पवित्रता) और प्रकाश की रूपरेखा दिखाई देती है। क्योकि गन्दगी और अन्धकार रोग, दुख, भय, आलस्य के ही कारण बनते हैं। अन्धकार मे कुछ भी दिखाई नही देता, तब भय, ठोकर और कुछ न कर सकने का रूप ही सामने आता है। प्रकाश मे प्रत्येक पदार्थ स्पष्ट दिखाई देता है और न ही भय और ठोकर लगती है। अत: प्रकाश प्रसन्नता, आशा और सफलता का सन्देश देता है। अन्धकार शब्द अन्धेरा और अन्धेर के लिए भी प्रयुक्त होता है। तभी तो अन्याय, अत्याचार, बेईमानी, धोखा और गलत करने पर कहते हैं, क्यो अन्धेर मचा रखा है। अत: एव उपनिषत्कार 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की प्रार्थना सिखाते हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से दीपमाला के साथ अनेक महापुरुषो का सम्बन्ध भी जुडा हुआ है। ये सब प्रकाश बन कर आज भी प्रेरणा के स्रोत हैं। अत: दीपमाला इस दृष्टि से भी प्रेरणा के दीपो की माला ही है। इन सभी महापुरुषो मे से महर्षि दयानन्द सरस्वती का सारा जीवन और विचार प्रकाश के अनुरूप ही सन्देशवाहक हैं। ब्रह्मर्षि स्वामी विरजानन्द जी दण्डी की प्रेरणा पर ही महर्षि ने आर्ष ज्ञान की ज्योति को जगमगाने की दीक्षा ली थी और इसी ज्योति को

सदा प्रज्वलित रखने के लिए आर्य समाज की स्थापना की।

महर्षि दयानन्द के सारे विचार प्रकाश की तरह स्पष्ट और हर बात की सचाई को सामने लाते हैं। किसी रूप मे भी किसी को भुलावे, भ्रम, शक, धोखे मे नही डालते। महर्षि की सारी विचारधारा, भुलावे, भ्रम, धोखे रूपी अन्धकार से निकाल कर हर बात की सचाई को स्पष्ट करती है। महर्षि की विचारधारा की दृष्टि से हमारा ध्यान सब से पहले **'एकेश्वरवाद'** पर जाता है। महर्षि की मान्यता है, कि इस जग का बनाने, चलाने और सभालने वाला ईश्वर ही है। जगत का सारा रूप और व्यवस्था एक ही ईश्वर को सिद्ध करती है। ईश्वर के कार्य, गुण और स्वभाव अनेक होने से ईश्वर के अनेक नाम है। नाम अनेक होने से ईश्वर अनेक नही हो जाते। यही कुछ समझाने के लिए सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास को पहला स्थान दिया गया है। वस्तुत: सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम समुल्लास **'वेद की कुञ्जी'** है। प्रथम समुल्लास की इस भावना को समझे बिना वेद की शैली को समझना सर्वथा कठिन है। दीपमालावत महर्षि का यह पहला और सर्वोत्तम प्रकाश रूप है। इस सचाई को **'वेद की कुञ्जी' प्रथम समुल्लास'** पढ कर ही समझा जा सकता है। देखिए इस रचना को प्रकाशित कराने के लिये कौन आगे आता है।

जैसे प्रकाश मे प्रत्येक पदार्थ स्पष्ट दिखाई देता है, ऐसे ही महर्षि ने मानव समाज और जीवन को सरल, स्पष्ट बनाने के लिए एक सुसगत पथ दर्शाया है। **'महर्षि दयानन्द प्रदर्शित सुसंगत पथ'** की एकेश्वरवाद की तरह दूसरी प्रमुख बात है—**'मानव जाति की एकता'** मानव शरीर की रचना प्रक्रिया, कार्य पद्धति, रूप, आकार और भावना सभी की एक सी है। अत: सारी मानव जाति एक ही है, तथा कथित भेदभाव से परस्पर घृणा, ईर्ष्या, द्वेष ही पनपता है, जो कि एक दूसरे से दूरी को बढाता है। अत: मानव जाति की एकता को स्वीकार करने से ही परस्पर स्नेह, सद्भाव, सहयोग को बढाया जा सकता है। जैसे प्रकाश सभी के लिए एक सा है, ऐसे ही मानव जाति भी अपने आप मे एक सी है। अत: एव महर्षि ने जीवन और धर्म के हर व्यवहार मे मानव जाति की एकता को स्वीकार करने का सन्देश दिया है। सारी मानव जाति मे प्राप्त होने वाली शरीर रचना, कार्य पद्धति, रूप-रग और भावना की समानता न मानने के कारण ही आज मानव-मानव को परस्पर भाषा, धर्म, क्षेत्र, लिंग के नाम से लडाया जा रहा है।

दीपमाला पर जगमगाने वाला प्रत्येक प्रकाश जैसे पथ और पदार्थ को स्पष्ट करता है। ऐसे ही दीपमाला के सन्देशवाहक महर्षि दयानन्द की विचार-धारा का प्रत्येक पहलू जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए एक सुसगत पथ को दर्शाता है। **'महर्षि प्रदर्शित सुसंगत पथ'** का तीसरा पहलू है—धर्म=अच्छे आचरण का नाम है। महर्षि की यह दृढ धारणा है कि धर्म एक अत्यन्त आवश्यक और उपयोगी है। भारतीय शास्त्रो मे धर्म शब्द कर्मकाण्ड, विश्वास, स्वभाव आदि अनेक अर्थों मे आता है, पर धर्म का असली अर्थ—आचरण हैं। तभी तो मनु महाराज ने 'आचार परमो धर्म.' और धर्म के धृति, क्षमा, दम आदि दश लक्षणो को बताता है। जोकि सभी के लिए समान रूप से आचरण की अनिवार्य बाते है। इस को विस्तार से लेखक ने **'सरल सुखी जीवन'** मे स्पष्ट किया है। धर्म के आचरण अर्थ को सामने रखते हुए ही महर्षि ने अपनी रचनाओ मे स्थान-स्थान पर आचरण की ओर सभी का ध्यान आकर्षित किया है। जैसे कि (पूर्व पक्ष) तुम्हारा मत क्या है ? (उत्तर) वेद अर्थात् जो-जो वेद मे करने और छोडने की शिक्षा की है, उस-उस का हम यथावत् करना-छोडना मानते हैं।" तृतीय समुल्लास।

महर्षि प्रदर्शित सुसगत पथ की एक और कडी हैं, सभी महापुरुषो का सम्मान। अर्थात् जिस भी महापुरुष ने मानव समाज के जिस भी क्षेत्र मे योगदान दिया है। उस योगदान के अनुरूप उस का सम्मान करना चाहिए। इस लेख मे अति सक्षिप्त रूप मे **'महर्षि दयानन्द प्रदर्शित-सुसंगत पथ'** के कुछ सूत्रो की ओर सकेत किया है। **'महर्षि दयानन्द प्रदर्शित-सुसंगतपथ'** पर पूर्ण प्रकाश तो इस रचना के प्रकाशित होने पर ही पाठको के सामने आ सकता है। देखिए कौन आर्य समाज इस सुसगत पथ को प्रकाशित करने के लिए आगे आती है। जिस से महर्षि के ये विचार दीप दीपमाला बन कर जगमगा सकें। वस्तुत ये ही तत्व आर्य समाज के आधार भूत मूलमन्तव्य हैं, जिनका पूरा रूप आर्य जनता के सामने आना चाहिए।

अर्पित युग का कोटि नमन्

ले,—श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ. प्र.)

वैदिक सस्कृति का जिसने फिर, वसुधा पर उद्धार किया,
कष्ट अनेकानेक सहे, पर जगती का उपकार किया,
नव्य चेतना नव जागृति का, कण-कण मे भर स्पन्दन—
मध्य चक्र मे फसी तरणि, मानवता को फिर पार किया,
काल जयी ऋषि दयानन्द की, ऋणी धरा है तथा गगन।
व्रती-तपस्वी के चरणो मे, अर्पित युग का कोटि नमन ॥

मानवता का मच दिया, वेदो की अलख जगायी,
अमा निशा को गहन तमिस्रा, तुमने यती ! भगायी,
जीवन की ले शक्ति अपरिमित, जगे यहा के जन-जन—
'जागो ! जागो ! आर्य जनो हे !, ऋषि ने किरण दिखायी,
ज्योतिर्मान हुआ जग सारा, जाग उठा भू कन-कन।
व्रती-तपस्वी के चरणो मे, अर्पित युग का कोटि नमन ॥

दिया तुम्ही ने भारत को ऋषि ! स्वतन्त्रता सदेश,
सद्यत्नो से दिव्य तुम्हारे ! गौरव अन्वित हुआ स्वदेश,
त्याग तथा बलिदानो का पथ, तुमने सहज दिखाया—
हुआ अग्रसर अन्धजाल को तोड मधुरमय देश,
दया-धर्म के, सत्य अहिंसा के खिल उठे सुमन !
व्रती-तपस्वी के चरणो मे, अर्पित युग का कोटि नमन् ॥

प्राची से फूटी जागृति की, नयी ऊषा अरुणायी,
तिमिर-ज्योति की, सत्य-असत्य की भीषण हुई लडाई,
हुआ जयी आलोक, सत्य, शुचि धर्म दिव्य वेदो का—
हसने लगी अभय हो, भारत पुत्रो की तरुणाई,
देती नव सन्देश सत्य का, निकली स्वर्णिम सूर्य किरन।
व्रती तपस्वी के चरणो मे, अर्पित युग का कोटि नमन ॥

पावन पथ वेदो का भू पर, हुआ प्रकाम्य प्रशस्त,
तिमिराच्छादित परम्पराए, हुई अनय की अस्त,
नव आशा, अभिलाषाओ की, लहरी नई तरगें—
सत्य-शिवम्-सुन्दरतापूरित, बही वायु अलमस्त,
परहित मे अर्पित कर डाला, जिसने तन-मन-धन।
व्रती-तपस्वी के चरणो मे, अर्पित युग का कोटि नमन् ॥

दीपावली और दयानन्द

लेखक

श्री अमरनाथ आर्य एम.ए
उप-प्रधान आर्य समाज
तलवाड़ा टाऊनशिप

मानव के समुचित विकास हित, मस्तिष्क के साथ-साथ, • हृदय-विकास की भी आवश्यकता पडती है। इस लिए हमारे ये त्योहार और पर्व, हृदय-विकास मे विशेष सहायक हैं। मानव मे ये सरलता और परोपकार की भावनाए भरते हैं।

त्योहार मानवीयता का प्राण है। अत प्रत्येक ऋतु अपने साथ कोई न कोई त्योहार अवश्य लाती है। जिस से जीवन की नीरसता व जडता दूर होती है, तथा अपनी संस्कृति और महापुरुषो के प्रति हमारी आस्था बढती है और जीवन मे उमगो की सरिता प्रवाहित होती है। ये मानव मे मनोरजन के साथ प्रेरणा और आशा के साथ विश्वास भी जमाते हैं।

निरुक्तानुसार, पर्व हमे मानवीय-गुणो से पूर्ण करते है। हमारी सकुचितताओ को समाप्त कर, हमे प्रसन्न करते हैं। गन्ने की पोरियो सदृश, जीवन मे सरसता और मिठास के साथ सुदृढता प्रदान करते हैं तथा उन्नत-पर्वत-शिखरो सदृश, गौरव व ज्ञान से हमारा मस्तिष्क ऊ चा करते है।

पर्व हमारी सस्कृति की उज्ज्वलता के प्रतीक हैं। ये सास्कृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक और धार्मिक आदि चार प्रकार के होते हैं। अत: दीपावली हमारा राष्ट्रीय और सास्कृतिक पर्व है।

इस ऋतु मे देश, धन-धान्य से पूर्ण होता है। दो फसले काट ली जाती हैं और एक बीज दी जाती है। फलत. जनमानस मे प्रसन्नता व्याप्त होती है और समय की डोली जब त्योहारो के साये से गुजरती है, तो ये मानव-जीवन को आनन्द-सौरभ से आप्लावित कर उत्साह और प्रेरणा से भर देते हैं।

एक विचारानुसार इसका सम्बन्ध, राम द्वारा लका विजय के बाद अयोध्या वापस आने पर नगर-वासियो द्वारा—दीपमाला जगाकर उनका स्वागत करने से भी माना जाता है।

परन्तु आर्य समाज इसे 'ऋषि-बलिदान दिवस' के रूप मे मानता है। जिसका अर्थ है—**असत्य पर सत्य की, अज्ञान पर ज्ञान की परतन्त्रता पर स्वतन्त्रता की और विदेशीपन पर स्वदेशीपन की भावना की विजय ! चू कि, युगो पूर्व जो काम रावण को मार कर राम ने सम्पन्न किया था, 19 वीं शताब्दी मे वैसा ही काम, महर्षि-दयानन्द ने अज्ञान् और परतन्त्रता के रावण को मार कर किया।**

राम के पास भी सत्य का हथियार था और देव दयानन्द ने भी वैचारिक-क्रान्ति आन्दोलन, सत्य के बल पर ही चलाया था। जिस मध्य उन्हे, बार-बार जहर पीना पडा और आखिर सत्य पर मिटने वाले उस 'परम ह स' ने अपने को सत्य-वेदी पर न्यौछावर करके, सत्यनिष्ठो मे अपना नाम अमर कर दिया।

महर्षि मे जितने गुण थे, उनका आधार भी—सत्यनिष्ठा ! इसी लिए उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश लिखा और आर्य समाज के चौथे नियम मे घोषणा की कि "सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।"

महाभारत मे आया है—'सत्य स्वगस्य सोपान । भाव-सत्य स्वर्ग की सीढी है। अत ऋषिवर ने सत्य की परिभाषा देते हुए कहा—"जो सत्य है, उसको सत्य और जो मिथ्या है, उसको मिथ्या ही प्रतिपादित करना, मैंने सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है।"

और आगे हम पाते है कि उनके प्रत्येक कार्य से यह सिद्ध होता गया कि—'सत्यमेव जयते, नानृतम सत्येन पन्था विततो देवयान ।'

अर्थात् —सत्य की जय होती है, असत्य की नही, और दिव्य जीवन का मार्ग सत्य से बना है।

उद्देश्य जितना पवित्र होगा, बलिदान उतना ही महान होगा। इस तरह, अहर्निश ससार का हित चाहने करने वाला वह निर्लेप महात्मा, दिवाली की शाम को जबकि सूर्य डूब रहा था और अमावस की अंधियारी रात्रि को प्रकाशित करने हित गगन मे असख्य सितारे और जमीन पर कोटि दीपक जगमगा रहे थे, तो वेद ज्ञान का वह सूर्य, जो पाच हजार साल बाद भारत-क्षितीज पर उदय हुआ था, अपनी-सुषमा बिखेर कर धीरे से अस्त हो गया और यह बात है, 1883 की दिवाली की।

पर यह ससार बडा विचित्र है। कईयो ने दयानन्द को पहचाना और कईयो ने नही। जिन्होने उन्हे नही पहचाना, उन्होने उस पर ईट और पत्थरो की बौछारें की, साप बिच्छु फैंके, पग पग पर विरोधता और स्थान-स्थान पर व्यवधान खडे किये। परन्तु जिन्होंने उस वेद-वेत्ता को पहचाना—उन्होने सजल नेत्रो से श्रद्धाजलियो की झडी लगा दी और हजारो नर श्रेष्ठो ने अपने श्रद्धा

सुमन बिखेरे। प्रसिद्ध दार्शनिक अरविन्द घोष ने उन्हें अपनी श्रद्धांजलि इन शब्दों में भेंट की—"मुझे यदि मेरी सम्पूर्ण आयु के बदले, स्वामी दयानन्द के पुनीत चरणों में बैठकर उनसे एक बात करने के लिए कुछ क्षण मिल जाएं, तो मैं इस को महंगा सौदा नही समझूंगा।"

परन्तु बहुत कम लोग जानते हैं कि ऐसा दिव्य-पुरुष दयानन्द संसार में अपनी क्या निशानी छोड़ गया है? यह जानने के लिए हम अजमेरान्तर्गत ऋषि-उद्यान स्थित प्रदर्शनी भवन में जब प्रविष्ट होते हैं—तो हमारी दृष्टि एक 'शो-केस' पर पड़ती है। जिसमें महर्षि प्रणीत गोकरुणानिधि आदि ग्रन्थ सज्जित हैं। जिन पर महर्षि ने अध्ययन के दौरान चिन्ह लगाए हैं। साथ ही कुछ ग्रन्थो की पाण्डुलिपिया भी शोभित हैं। सत्यार्थ प्रकाश के एक पाण्डुलिपि-पृष्ठ पर ऋषि द्वारा एक पंक्ति काट कर पुन: लिखी गई है। देखने मे उनका हस्ताक्षर बडा प्रभावशाली और सुन्दर है।

अगले 'शो-केस' में उनकी कुछ प्रयोगिक वस्तुए इस प्रकार हैं:—(क) पहले एक जोड़ी छोटी-2 काष्ठ-पादुकाए सजी हैं। जिससे ज्ञात् होता है कि भारी भरक सवा छ: फुट ऊंचे बलिष्ट-स्वामी जी के पैर छोटे-2 थे। (ख) एक तुम्बी और एक तांबे का,—ये दो कमण्डल हैं। (ग) फिर महाराज जोधपुर प्रदत्त एक बहु-मूल्य दुशाला रखा है। (घ) साथ ही पीतल की एक आचमनी और रासायनिक औषधियो के प्रमाणार्थ पीतल का एक तराजू शोभित है। (ङ) विभिन्न आकार के दो चम्च हैं, जिन्हे वे दैनिक यज्ञ मे प्रयुक्त करते थे। (च) पीतल की दो दवातें और समय जानने हित एक रेत-घड़ी और एक जेब घडी है। (छ) फिर एक छोटी कैंची तथा काटा निकालने की एक छोटी चिमटी भी है, जो उनकी अनवरत लम्बी यात्राओ मे उनके बडे काम आती होगी। (ज) और फिर हैं छोटे-बड़े छ: चाकू। जिन्हे महर्षि ने यथार्थ मानव-नाड़ी ज्ञान जानने हित, शव-परीक्षा में प्रयुक्त किया था।

उपर्युक्त वस्तुएं हमारी जातीय सम्पत्ति बन गई है। क्योकि उनका जीवन परोपकार की एक विराट् योजना थी। ऐसे पुरुष के बलिदान पर जनमानस का प्रतिनिधित्व करते हुये किसी ने अपने भाव-सुमन यूं प्रस्तुत किए है:—

सूर्य सोने को गया, लाखों सितारों को जगा कर।
एक दीपक बुझ गया लाखों चिरागो को जगा कर॥

आज दीपावली मनाने का लाभ तभी है जब हम महर्षि के बताए मार्ग पर चल कर मानवता का भला कर जाएं। उनके चरणों में हमारी यही श्रद्धांजलि है:—

गिने जाएं मुमकिन है सहरा के जर्रे। समुद्र के कतरे फलक के सितारे॥
मगर तेरे अहसां दयानन्द स्वामी। है कैसे सम्भव गिने जाएं सारे॥

दार्शनिक देव दयानन्द

लेखक—श्री पृथ्वीराज जिज्ञासु
एम. ए. संस्कृत, दीनानगर

महर्षि दयानन्द सरस्वती के आगमन से पूर्व इस देश की दशा अत्यन्त शोचनीय थी। पराधीनता के पाश मे जकडी हुई थी, प्यारी भारत माता। भारत की इस दुर्दशा का मूल कारण था हमारा गलत दार्शनिक चिन्तन। इस दार्शनिक चिन्तन ने हमे भाग्यवादी, प्रमादी एवम् आलसी बना दिया था। महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवे समुल्लास मे लिखते है :—

सृष्टि से ले के पाच सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल पर सर्वोपरि एकमात्र राज्य था। अन्य देश मे माण्डलिक अर्थात् छोटे-छोटे राजा रहते थे, क्योकि कौरव पाडव पर्यन्त यहा के राज्य और राज शासन मे सब भूगोल के सब राजा और प्रजा चले थे ? क्योकि यह मनुस्मृति जो सृष्टि की आदि मे हुई है उसका प्रमाण है।

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन: स्व स्व चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्या सर्व मानवा:।

महर्षि आगे लिखते हैं :—

अब इसके सतानो का अभाग्योदय होने से राजभ्रष्ट होकर विदेशियो के पादाक्रान्त हो रहे हैं।

इसका मूल कारण क्या था ? क्योकि हम इतने अपमानित और पददलित हो रहे थे। यह था प्रश्न जो महर्षि के हृदय को कोह रहा था। महर्षि देव दयानन्द ने इस बात का पूर्ण विश्लेषण किया और अन्त मे इस निष्कर्ष पर पहुचे कि ऐसी परिस्थिति बनने का मूल कारण हमारी मिथ्या चिन्तनधारा है। क्योकि मनुष्य का जैसा चिन्तन होता है वह वैसे ही बन जाया करता है। उसके क्रिया-कलाप तद्रूप हो जाते हैं। उस समय प्रचलित चिन्तन धाराओ में अद्वैतवाद, क्षणभगुरवाद, शून्यवाद तथा इस्लाम एवम् ईसावाद का बोलबाला था।

जिनके कारण हम पंगु हो चुके थे। हमने या तो सब कुछ ईश्वर पर छोड़ दिया था अथवा ईश्वर के अस्तित्व को नकार चुके थे। पूर्ण ऊहा-पोह के उपरान्त ऋषि ने हमे वेद निर्दिष्ट चिन्तन धारा की ओर मोड़ा, जिसे कि त्रैतवाद के नाम से अभिहित किया जाता है। यह एक सजीव एवम् वैज्ञानिक चिन्तन है। मनुष्य को कर्म स्वातन्त्रय की प्रेरणा मिलती है इससे वह मलूकदास की तरह यह नही कहता—

अजगर करे न चाकरी, पछी करे न काम।
दास मलूका कह गए, सब के दाता राम॥

तथा न ही वह तुलसी दास की तरह "कोऊ नृप होऊ हमे का हानि" की रागिनी अलापता है।

त्रैतवाद एक यथार्थवादी एवम् वैज्ञानिक चिन्तन है। इसके अनुसार तीन पदार्थों को अनादि माना जाता है।

1. प्रकृति——यह सत् है।
2 जीव ——यह सत् और चित है।
3. ब्रह्म ——यह सत्—चित् और आनन्द है।

इन तीनो मे से किसी के अस्तित्व को नकारा नही जा सकता। यह ब्रह्माण्ड इन तीनो की सत्ता के कारण ही अस्तित्व मे आता है।

आओ अब हम इन तीनो का अलग-अलग वर्णन करते हैं।

1. प्रकृति :—प्रकृति क्या है उसके विषय मे साख्य दर्शन लिखता है :— सत्वरजतमसा साम्यावस्था प्रकृतिः। यह प्रकृति कार्य रूप जगत् का मूल उपादान कारण है। इस प्रकृति का मूल उपादान कारण दूसरा नही है। इस मूल उपादान प्रकृति के बिना कार्य रूप जगत की उत्पत्ति नही हो सकती क्योकि— "नावस्तुनोवस्तु सिद्धि (साख्य) तथा नासतो विद्यते भाव: नाभावो विद्यते सत: (गीता) कार्य को देखकर कारण का अनुमान किया जाता है। अत: इसे देख कर हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि इस त्रिगुणात्मक अचेतन कार्य का कारण भी त्रिगुणात्मक एवम् अचेतन ही होगा। प्रकृति जड है अत: इसमें चेतना नही है, यह अचेतन है। अत: इसके उपभोग के लिए किसी अन्य की आवश्यकता है, "सघात: परार्थ परत्वे।" वह भोक्ता है जीव।

जीव—जीव प्रकृति का भोक्ता एक चेतन तत्व है। यह अपने कर्मानुसार भिन्न योनियो को प्राप्त करता है जीव अजर एवम् अमर है। इसकी न तो कभी

किसी अन्य पदार्थ से उत्पत्ति होती है तथा न ही नाश होता है :—

न जायते म्रियते वा न विपश्चित नाय कुतश्चित न बभूव कस्श्चिर अजो नित्य: शाश्वतोऽय पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरोरे । (कठोपनिषद्)

वासासि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्नति नरोपराणि । तथा शरीराणि विहाय जीर्णाणि अन्यानि सयाति नवानि देही ।। (गीता)

जीव कर्त्तव्य कर्मों मे स्वतन्त्र और ईश्वर की व्यवस्था मे परतन्त्र है । जो यह स्वतन्त्र न हो तो उसको पाप पुण्य का फल प्राप्त कभी न होता । जीव अल्पज्ञ एवम् अल्प सामार्थ्य वाला है । यह सर्वज्ञ एवम् सर्व शक्तिमान ब्रह्म नही हो सकना ।

जन्म—जन्म का अर्थ है अपने मूक उपादान कारण से प्रादुर्भूत होना ।

मृत्यु—मृत्यु का अर्थ है अपने उपादान कारण मे लीन होना ।

जीव का जन्म एवम् मृत्यु नहीं होती । जन्म और मृत्यु शरीर की होती है ।

जीव का चरम लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है, परन्तु मोक्ष की प्राप्ति बिना विवेक ख्याति के असम्भव वैदिक हमे ससार से पलायन की शिक्षा नही देता ' यह प्रवृत्ति एवम् निवृत्ति दोनो का पक्षधर है ।

ब्रह्म (ईश्वर) —ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार सर्व शक्तिमान न्यायकारी, अजन्मा, अभय, नित्य, पवित्र, सृष्टिकर्ता है । ईश्वर कभी जन्म नही लेता । यह जीवो को उनके कर्मानुसार फलो की व्यवस्था करता है तथा सृष्टि का सचालन करता है । वह न्यायकारी है तथा दयालु भी है । ईश्वर के बिना सृष्टि का एक पत्ता तक नही हिल सकता । ईश्वर का अस्तित्व एक वैज्ञानिक सत्य है ।

अत स्पष्ट है कि ऋषि दयानन्द एक यथार्थ-वादी दार्शनिक थे । आपने अपने चिन्तन मे ऊल जलूल बातो को कोई स्थान नही दिया । त्रैतवादी दर्शन आज के युग मे जबकि मानवता कराह रही है तथा दानवता दनदना रही है एक प्रकाश स्तम्भ बन सकता है ।

महर्षि दयानन्द का नवयुवकों को सन्देश

लेखक—श्री रोशनलाल शर्मा संयोजक आर्य युवक सभा
पंजाब 751 सिविल हस्पताल रोड़, लुधियाना

छूत-छात त्याग का अछूता उपदेश दिया,
भद्दी भेद-भावना के भूत को भगा गया।
बैर को बिसार पुण्य-प्रीति का पढाया पाठ,
हृदयो को प्रेम के पीयूष मे पगा गया ॥
झूठे देवी-देवो के प्रपञ्च से छुडाके एक—
ईश की उपासना मे सब को लगा गया।
देश हित साध के दिवाली को सदा के लिए,
आप सो गया पै ऋषि जग को जगा गया ॥

क्रान्त-दर्शी, योगी, दयानन्द भारत की पवित्र धरती पर जिस समय पैदा हुए, उस समय का इतिहास हम सब भारतीयो के लिए शर्म की बात थी। जिस देश मे एकेश्वर की जगह अनेकेश्वर-पूजा, विधवाओ का करुण-क्रन्दन, बाल-विवाह जैसी भयकर कुरीतियो ने घर कर रखा था, उसी देश को ऋषि ने उन्नति के मार्ग पर ले जाने के लिये तन, मन, धन की बाजी लगाकर, आज हमे बहुत सी कुरीतियो से मुक्त कर चुके हैं।

ऋषि ने हमे 'स्वराज्य' का नारा दिया और मन, वाणी कर्म से एक होकर इस कार्य को आगे बढाया। ऋषि आदर्श भारत की कल्पना सजोकर आगे बढे थे यही कारण है कि 1855 से 1860 तक के समय की इनकी चुप्पी जानकार

व्यक्तियों को झिझोड कर रख देती है। यह वही समय था जब क्रान्ति वीर नाना कानपुर मे क्रान्ति की तैयारी कर रहा था। दयाराम (ऋषि दयानन्द) भी उन दिनो वही थे क्योकि मगल पाण्डेय नामक सैन्य ने उनसे आर्शीवाद मागा था। (राज का इतिहास)

ऋषि के सपनो का भारत एक ऐसा भारत था जो पूर्ण वैदिकता से युक्त था। परन्तु शोक ! महाशोक ! कि अपने ही लोग उन्हे सहन नही कर सके—प चमूपति के शब्दो मे—जहर भी पिलाई अपनो ने,खन्जर भी चलाए अपनो ने, अपनो के ये एहसा क्या कम हैं, गैरो से शिकायत क्या होगी।

अब समय आ गया है कि मेरे देश के नवयुवक भी ऋषि के कार्य को आगे बढाए। नवयुमको से मिलकर प्रसन्नता का आभास अवश्य होता है, क्योकि सच्चरित्र और लगनशील युवक वैदिक मर्यादाओ को अक्षुण्ण रखने मे समर्थ हो सकते हैं। मैं तो आर्योपदेशक ओम् प्रकाश के शब्दो मे कहना चाहता हू—

"भारत सन्तान जाग ! देश की युवा शक्ति अपने को पहचान ! देश मे फैलती जा रही विघटन की विषैली-दुर्भावना, उभर रही साम्प्रदायिकता और साम्प्रदायिकता और दलगत दुर्दमनीय भेदक भावना तुम्हे चैलेंज दे रही। अपने रहते हुए क्या इन्हे इसी प्रकार उभरने और देश का नाश करने दोगे ?"

जिस प्रकार ऋषि दयानन्द दीवाली के दिन अपने हृदय पर भारत के असह्य दु.ख-पीडा को लेकर चले गये। उसी प्रकार हमे भी उनकी प्रेरणा आगे बढने के लिए प्रेरित कर रही है। मार्ग मे कठिनाइया अवश्य आएगी। पर उनको झेलते हुए हम बुझे हुए घरो मे दीपो की अवली जलाकर ऋषि का कार्य एव अपना कर्त्तव्य पूरा कर सकेंगे तो मैं यह दीवाली (ऋषि निर्वाण दिवस)मनाना सफल समझू गा।

स्वामी दयानन्द की महानता

यहा महर्षि दयानन्द के सम्बन्ध मे विभिन्न विद्वानो द्वारा समय-समय पर प्रकट की गई सम्मतियो का सकलन किया गया है, जिससे उनकी महत्ता का दिग्दर्शनमात्र हो सकता है—

★ दयानन्द का चरित्र मेरे लिए ईर्ष्या और दु ख का विषय है।

महर्षि दयानन्द हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियो मे, सुधारको मे और श्रेष्ठ पुरुषो मे एक थे।

उनके जीवन का प्रभाव हिन्दुस्तान पर बहुत अधिक पडा है।

—महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गान्धी

★ मेरा सादर प्रणाम हो उस महान् गुरु दयानन्द को, जिसकी दृष्टि ने भारत के आध्यात्मिक इतिहास मे सत्य और एकता को देखा और जिसके मन ने भारतीय जीवन के सब अगो को प्रदीप्त कर दिया। जिस गुरु का उद्देश्य भारत वर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति मे लाना था, उसे मेरा बारम्बार प्रणाम है।

मैं आधुनिक भारत के मार्ग-दर्शक उस दयानन्द को आदर-पूर्वक श्रद्धा-जलि देता हू, जिसने देश की पतितावस्था मे सीधे व सच्चे मार्ग का दिग्दर्शन कराया।

—डा रवीन्द्रनाथ ठाकुर

● वह दिव्य ज्ञान का सच्चा सैनिक, विश्व को प्रभु की शरण मे लाने वाला योद्धा, और मनुष्य व सस्थाओ का शिल्पी तथा प्रकृति द्वारा आत्मा के मार्ग मे उपस्थित की जाने वाली बाधाओ का वीर विजेता था और इस प्रकार मेरे समक्ष आध्यात्मिक क्रियात्मकता की एक शक्ति-सम्पन्न मूर्ति उपस्थित होती है। इन दो शब्दो का, जोकि हमारी भावनाओ के अनुसार एक दूसरे से सर्वथा भिन्न है, मिश्रण ही दयानन्द की उपयुक्त परिभाषा प्रतीत होती है। उसके व्यक्तित्व की व्याख्या की जा सकती है—एक मनुष्य, जिसकी आत्मा मे परमात्मा है, चर्म चक्षुओ मे दिव्य तेज है और हाथो मे इतनी शक्ति है कि जीवन-तत्व से अभीष्ट

स्वरूप वाली मूर्ति गढ सके तथा कल्पना को क्रिया में परिणत कर सके। वह स्वय दृढ चट्टान थे। उनमे दृढ शक्ति थी कि चट्टान पर घन चलाकर पदार्थों को सुदृढ व सुडौल बना सके। प्राचीन सभ्यता मे विज्ञान के गुप्त भेद विद्यमान हैं, जिनमे से कुछ को अर्वाचीन विद्याओ ने ढूढ लिया है, उनका परिवर्तन किया है और उन्हे अधिक समृद्ध व स्पष्ट कर दिया है, किन्तु दूसरे अभी तक निगूढ ही बने हुए हैं। इसलिए दयानन्द की इस धारणा मे कोई अवास्तविकता नही है कि वेदो मे विज्ञान-सम्मत तथा धार्मिक सत्य निहित हैं।

वेदो का भाष्य करने के बारे मे मेरा विश्वास है कि चाहे अन्तिम पूर्ण अभिप्राय कुछ भी हो, किन्तु इस बात का श्रेय दयानन्द को ही प्राप्त होगा कि उसने सर्वप्रथम वेदो की व्याख्या के लिए निर्दोष मार्ग का आविष्कार किया था। चिरकालीन अव्यवस्था और अज्ञान-परम्परा के अन्धकार मे से सूक्ष्म और मर्म-भेदी दृष्टि से उसी ने सत्य को खोज निकाला था। जगली लोगो की रचना कही जाने वाली पुस्तक के भीतर उसके धर्म पुस्तक होने का वास्तविक अनुभव उन्होने ही किया था। ऋषि दयानन्द ने उन द्वारो की कुन्जी प्राप्त की है, जो युगो से बन्द थे और उसने पटे हुए झरनो का मुख खोल दिया।

. ऋषि दयानन्द के नियम-बद्ध कार्य ही उनके आत्मिक शरीर के पुत्र है, जो सुन्दर, सुदृढ और सजीव है तथा अपने कर्ता की प्रत्याकृति हैं। वह एक ऐसे पुरुष थे जिन्होने स्पष्ट और पूर्ण-रीति से जान लिया था कि उन्हे किस कार्य के लिए भेजा गया है। —श्री अरविन्द घोष

● ऋषि दयानन्द ने भारत के शक्ति-शून्य शरीर मे अपनी दुर्धर्ष शक्ति, अविचलता तथा सिंह पराक्रम फूक दिए है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती उच्चतम व्यक्तित्व के पुरुष थे। यह पुरुष-सिंह उनमे से एक था जिन्हे यूरोप प्राय: उस समय भुला देता है जबकि वह भारत के सम्बन्ध मे अपनी धारणा बनाता है, किन्तु एक दिन यूरोप को अपनी भूल मान कर उसे याद करने के लिए बाधित होना पडेगा, क्योकि उसके अन्दर कर्मयोगी, विचारक और नेता के उपयुक्त प्रतिभा का दुर्लभ सम्मिश्रण था।

दयानन्द ने अस्पृश्यता व अछूतपन के अन्याय को सहन नही किया और उससे अधिक उनके अपहृत अधिकारो का उत्साही समर्थक दूसरा कोई नही हुआ। भारत मे स्त्रियो की शोचनीय दशा को सुधारने मे भी दयानन्द ने बडी उदारता व साहस से काम लिया। वास्तव मे राष्ट्रीय भावना और जनजागृति के विचार

को क्रियात्मक रूप देने मे सबसे अधिक प्रबल शक्ति उसी की थी। वह पुनर्निर्माण और राष्ट्र-सगठन क अत्यन्त उत्साही पैगम्बरो मे से था।

—फ्रेच लेखक रोम्या रोला

● स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू धर्म के सुधार का बडा कार्य किया, और जहा तक समाज-सुधार का सम्बन्ध है, वह बडे उदार हृदय थे। वे अपने विचारो को वेदो पर आधारित और उन्हे ऋषियो के ज्ञान पर अवलम्बित मानते थे। उन्होंने वेदो पर बडे-बडे भाष्य किये, जिससे मालूम होता है कि वे पूर्ण अभिज्ञ थे। उनका स्वाध्याय बडा व्यापक था।

—प्रो एफ मैक्समूलर

● आर्य समाज समस्त ससार को वेदानुयायी बनाने का स्वप्न देखता है। स्वामी दयानन्द ने इसे जीवन और सिद्धान्त दिया। उनका विश्वास था कि आर्य जाति चुनी हुई जाति, भारत चुना हुआ देश और वेद चुनी हुई धार्मिक पुस्तक है ।"

—ब्रिटेन के (स्व) प्रधानमन्त्री रेमजे मैकडानल्ड

※ स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुयायी उन्हे देवता-तुल्य जानते थे, और वह निस्सन्देह इसी योग्य थे। वह इतने विद्वान और अच्छे आदमी थे कि वे प्रत्येक धर्म के अनुयायियो के लिए सम्मान-पात्र थे। उनके समान व्यक्ति समूचे भारत मे इस समय कोई नही मिल सकता। अत प्रत्येक व्यक्ति को उनकी मृत्यु पर शोक करना स्वाभाविक है।

—सर सैयद अहमदखा

※ स्वामी दयानन्द सरस्वती उन महापुरुषो मे से थे, जिन्होने आधुनिक भारत का निर्माण किया और जो उसके आचार सम्बन्धी पुनरुत्थान तथा धार्मिक पुनरुद्धार के उत्तरदाता हैं। हिन्दू-समाज का उद्धार करने मे आर्य समाज का बहुत बडा हाथ है। रामकृष्ण मिशन ने बङ्गाल मे जो कुछ किया, उससे कही अधिक आर्य समाज ने पजाब और सयुक्त प्रान्त मे किया। यह कहना अतिश-योक्तिपूर्ण न होगा कि पजाब का प्रत्येक नेता आर्य समाजी है। स्वामी दयानन्द को मैं एक धार्मिक और सामाजिक सुधारक तथा कर्मयोगी मानता हू। सगठन कार्यों के सामर्थ्य और प्रसार की दृष्टि से आर्य समाज अनुपम सस्था है।

—श्री सुभाषचन्द्र बोस

स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं, मैंने ससार मे केवल उन्ही को गुरु माना है। वह मेरे धर्म के पिता है और आर्य समाज मेरी धर्म की माता है। इन दोनो की गोद मे मैं प‹ा। मुझे इस बात का गर्व है कि मेरे गुरु ने मुझे स्वतन्त्रतापूर्वक विचार करना, बोलना और कर्त्तव्य-पालन करना सिखाया तथा मेरी माता ने मुझे एक सस्था मे बद्ध होकर नियमानुवर्तिता का पाठ दिया।

— पजाब केसरी ला लाजपतराय

★ महर्षि दयानन्द भारत-माता के उन प्रसिद्ध और उच्च आत्माओ मे से थे, जिनका नाम ससार के इतिहास मे सदैव चमकते हुए सितारो की तरह प्रकाशित रहेगा। वह भारत-माता के उन सपूतो मे से है, जिनके व्यक्तित्व पर जितना भी अभिमान किया जाए थोडा है। नैंपोलियन और सिकन्दर जैसे अनेक सम्राट एव विजेता ससार मे हो चुके हैं, परन्तु स्वामी उन सबसे बढ कर थे।

—खदीजा बेगम एम ए

स्वामी दयानन्द ही पहले व्यक्ति थे, जिन्होने "हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियो के लिए" का नारा लगाया था। आर्य समाज के लिए मेरे हृदय मे शुभ इच्छाए हैं और उस महान् पुरुष के लिए, जिसका आप आर्य आदर करते हैं, मेरे हृदय मे सच्ची पूजा की भावना है। —श्रीमती एनी बीसेण्ट

स्वामी दयानन्द नि:सन्देह एक ऋषि थे। उन्होने अपने विरोधियो द्वारा फैंके गये ईंट-पत्थरो को शान्तिपूर्वक सहन कर लिया। उन्होने अपने मे महान् भूत और महान् भविष्य को मिला दिया। वह मर कर भी अमर है। ऋषि का प्रादुर्भाव लोगो को कारागार से मुक्त करने और जाति-बन्धन तोडने के लिए हुआ था। ऋषि का आदेश है—आर्यावर्त, उठ जाग, समय आ गया है, नये युग मे प्रवेश कर, आगे बढ।

—पाल रिचर्ड (प्रसिद्ध फ्रेंच लेखक)

स्वामी दयानन्द के उच्च व्यक्तित्व और चरित्र के विषय मे नि सन्देह सर्वत्र प्रशसा की जा सकती है। वे सर्वथा पवित्र तथा अपने सिद्धान्तो के अनुसार आचरण करने वाले महानुभाव थे। वह सत्य के अत्यधिक प्रेमी थे।

—रेवरेण्ड सी एफ एण्ड्रूज

ऋषि दयानन्द ने हिन्दू-समाज के पुनरुत्थान मे इतना अधिक हाथ बटाया है कि उन्हे 19 वी शताब्दी का प्रमुखतम हिन्दू समझा जायेगा।

—श्री तारकनाथ दास एम. ए. पी. एच. डी. (म्यूनिच)

तमसो मा ज्योतिर्गमय

लेखक—कवि श्री कस्तूरचन्द "घनसार"
कवि कुटीर पीपाड़ शहर (राज.)

अविद्या का अन्धकार बराबर, छाया भारत देश रहा।
उस तमसा मे निशि के राजा, करते चले थे क्लेश रहा ॥
विद्या की उषा नही पनपी, नही वैदिक रवि प्रकटाया।
धर्म-कर्म सद् विद्या सुखदा, लोप हुई जग भरमाया ॥
वेद प्रकाश हीन सब भारत, जिसमे पोपा-पाखण्डी।
भरमादी थी सारी जग को, गुरुडमो की लगी मण्डी।"
वर्ण व्यवस्था बिगडी चली सब, मानव-मानव ठुकराये,
नियम-धर्म सब भिन्न-भिन्न हो, गुरुडमी सब कर पाये ॥
अस्तित्व न रह पाये थे, पाहन ईश्वर कर बैठे।
कैसे ? वैदिक ज्ञान प्राप्त हो, झूठे मद मे थे—ऐंठे ॥
घोर-अन्याय अन्धेरा घर-घर, कौन ? कह ये दीपाली।
केवल दीप जलाये बैठे, वही दिवाली—उजाली ॥
इधर चढी तमकार रूप धर, घर-घर धसगी आ करके।
उधर दयानन्द, दिव्य दीप ले, खडे हुए थे जा करके ॥
अन्धकार में चमतकार था, योग-दीप, की ज्योति रही।
दिखलाई ब्रह्मचारी योगी, तेज रूप की ज्योति रही ॥
"तमसो मा ज्योतिर्गमय" इस तर्फ जाना सकेत किया।
तब समझो ये आई दिवाली, दीप दिखाय सन्देश दिया।
वेद मार्तण्ड जब से उगा, तब से अविद्या-भाव चली।
घर-घर **"आर्य ज्योतिरग्रा"** ये अनुपम ऐसी ज्योति जली ॥
क्षणिक दीप सी ज्योति जिसमे, दीपाली कर जान रखी।
वही अन्धेरी ! जिसमे दुखदा, गौरवता में मान रखी ॥
लाखो कोसो दूर पडे थे, जैसा बन-मन मान लिया।
उच्च वर्ण की ठेकेदारी, झूठा मन अभिमान किया ॥

वेदादेश न माना जिसने, मनमाने बन पन्थवादी ।
भ्रम-कर्म भ्रान्ति अविद्यासी, खूब बढा दी थी व्याधी ।।
अन्तरिक्ष लोप हुई है सारी, लौट कभी नही आवेगी ।
दयानन्द ने दीप जलाया, कभी बुझ नही पावेगी ।।

वैदिक दीप जले घर-घर मे, सभी बराबर हो प्रकाश ।
जभी दिवाली समझें साची, घर-घर विद्या-लक्ष्मी वास ।।
करे नमस्ते मिले परस्पर, विज्ञ वरो को देवे मान ।
आर्योपदेश सुने जिन द्वारा, 'धनसार' मिले सद् सुखदा ज्ञान ।।

प्रान्तीय भाषण प्रतियोगिता

आर्य विद्या परिषद् पजाब के तत्वावधान मे शनिवार 22 नवम्बर 1986 को प्रात: 11 बजे आर्य माडल हाई स्कूल गौशाला रोड फगवाडा मे प्रान्तीय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता मे समा-सम्बन्धित स्कूलो के अतिरिक्त विशेष निमत्रित स्कूल भी भाग ले सकेंगे। इस प्रतियोगिना मे चलविजयोपहार के अतिरिक्त तीन व्यक्तिगत पुरस्कार भी दिए जायेंगे। शामिल होने वाली टीमो के सदस्यो के नाम सभा कार्यालय मे पहुचने की अन्तिम तिथि 10नवम्बर 1986है। भाषण प्रतियोगिता के लिए निम्नलिखित विषयो का चयन किया गया है :—

1. क्रान्ति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द
2 आर्य समाज की मान्यताए
3. आर्य समाज द्वारा नारी उद्धार
4. अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द
5. शिक्षा क्षेत्र मे आर्य समाज का योगदान
6· धर्मवीर प. लेखराम
7. महर्षि दयानन्द की राष्ट्रीय विचारधारा
8. समाज सुधार और आर्य समाज

—व्यवस्थापक

हमारा संगठन

लेखक

स्वर्गीय पण्डित गंगा प्रसाद उपाध्याय

आजकल चारो ओर से आवाज आ रही है हिन्दू जाति कमजोर है। दूसरे ही नही किन्तु हिन्दू लोग भी यही कहते हैं। किसी हिन्दू से कभी जाकर पूछ लो वह यही कहेगा कि हमारी जाति मे बल नही। हम कुछ नही कर सकते। जो जाति-अभिमान अन्य जातियो मे पाया जाता है उसका हिन्दू जाति मे चिन्ह ही नही मिलता। कोई हिन्दू घर मे बैठा हुआ कभी अपने मन मे यह नही कहता कि मैं एक उच्च और सम्मान-युक्त जाति का व्यक्ति हू, मुझे ससार आदर की दृष्टि से देखेगा। यही कारण है कि हिन्दू नित्य 'प्रति गिरते है। विदेशो मे लोग इनसे घृणा और अपमान करते हैं। अपने देश मे जो चाहे इनको मार लेता है। जो चाहे इनके अधिकारो को पैरो से कुचल डालता है। सैकडो वर्षों से सहते-सहते इनका यह स्वभाव हो गया है कि जब इन पर आपत्ति आती है तब आख मीच कर सिर नीचा कर लेते हैं, मानो ससार मे ईश्वर ने इस जाति को पिटने के लिए ही बनाया है।

यह गिरावट कब से आरम्भ हुई यह कहना कठिन है। परन्तु इसमे सन्देह नही कि, "जब बडे-बडे विद्वान्, राजा, महाराजा, ऋषि-महर्षि लोग महाभारत युद्ध मे बहुत से मारे गये और बहुत से मर गये तब विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार नष्ट हो चला। ईर्ष्या, द्वेष, अभिमान आपस मे करने लगे। जो बलवान हुआ वह देश को दाब कर राजा बन बैठा वैसे ही सर्वत्र आर्यावर्त्त देश मे खण्ड-खण्ड राज्य हो गया। पुन. द्वीप द्वीपान्तर के राज्य की व्यवस्था कौन करे ! जब ब्राह्मण लोग विद्याहीन हुए तब क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रो के अविद्वान् होने मे तो कथा ही क्या कहनी। (सत्यार्थ प्रकाश समु. 10)

इस प्रकार शनैः शनैः यह अवस्था हुई कि आज नैतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक किसी बात मे भी हिन्दू लोगो की उन्नति प्रतीत नही होती।

शारीरिक, सामाजिक, तथा आत्मिक सभी प्रकार का बल इनसे जाता है। और जो कुछ शेष है उससे कुछ लाभ नही उठाया जाता। इस प्रकार नित्य प्रति अधोगति को प्राप्त होते हैं।

वास्तविक रोग क्या है ? हम देखते है कि आज भी हिन्दू जाति मे बहुत से लखपति और करोडपति है। राममूर्ति जैसे शारीरिक बल के रखने वाले भी सस्कृत, फारसी, अगरेजी आदि भाषाओ के विद्वानो की कमी नही। सायस के जानने वाले जगदीशचन्द्र बोस और डाक्टर राय ससार मे प्रसिद्ध हुए। महर्षि रवीन्द्रनाथ-टैगोर जैसे कवियो की इतना बहुतायत है कि इन्हे यूरोप के रणक्षेत्रो मे ब्रिटिश राज्य के विरोधियो के छक्के छुडा दिये। सिख, गोरखा और राजपूत पलटनो की वीरता किसी जाति की वीरता से कम नही फिर क्या कारण है कि हिन्दू जाति ऐसी निर्बल कही जाती है, और लोग इसको पीट लेते हैं। हिन्दुओ के पडोसी भाई भी इनको बडा निर्बल समझते हैं। यही कारण था कि मलाबार मे सैकडो हिन्दुओ के गले धड से अलग हो गए और मुलतान आदि स्थानो मे इन पर अत्याचार हुए परन्तु दूसरे प्रदेशो के हिन्दुओ ने दो आसू तक न बहाये। यह नित्य प्रति दूसरो का मुह तकते रहते है कि कोई इनकी सहायता करे तो इनकी रक्षा हो। पडोसी इनको निर्बल देखकर मनमानी शर्तें लगाते हैं और अवसर पाकर इनका गला भी दबोच देते हैं। यह विचारे फिर सिर झाड कर कहने लगते है कि शायद अबकी बार हमारे पडोसी हमारी दीन दशा पर ध्यान देकर हमारी रक्षा करेंगे। इनके विरुद्ध दूसरे को भडका देना बहुत आसान है क्योकि यह विचारे तो कुछ कर ही नही सकते। इसका मुख्य कारण देखना चाहिए।

इसमे सन्देह नही कि इनके पास धन है। बल विद्या है, विज्ञान है। परन्तु एक चीज जो जाति की उन्नति और शक्ति के लिए जरूरी है उससे यह सर्वथा शून्य है। कल्पना कीजिए कि अमूल्य और सुन्दर मोती आपके पास हो। परन्तु जब तक एक तुच्छ धागा उनमे पिरोया नही जाता उस समय तक वे मोती किसी के गले का हार नही बन सकते। उनमे चमक है दमक है वे सच्चे मोती है। परन्तु उनको जब तक एक सूत मे पिरोया नही जाता उस समय तक उनसे कोई प्रयोजन सिद्ध नही होता। इसी प्रकार हिन्दू जाति ऐसी अलग-अलग बिखरी है कि न तो उसके धन से ही कुछ काम निकलता है, न विद्या से, न शक्ति से। यदि किसी मनुष्य का सिर बडा मजबूत हो, हाथ बडे और पुष्ट हो, पैरो मे

ओज हो और यदि उन सब को काट कर अलग-अलग कर दिया जाए तो ऐसे मनुष्य को कोई जीवित नही कह सकता। उससे तो वही आदमी अधिक बलवान् होगा जिसके अङ्ग चाहे बलहीन ही क्यो न हो परन्तु वह एक दूसरे से मिले हो।

हिन्दुओ का यही हाल है। जितने अङ्ग हैं वे सब एक दूसरे से अलग हैं। प्रथम तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार वर्ण जो सामाजिक अवस्था को सुधारने के लिए थे अलग-अलग हो गए और आपस मे लडने लगे। फिर एक-एक जाति मे सैकडो जातिया हैं। बीसियो प्रकार के ब्राह्मण, बीसियो भाति के क्षत्रिय, बीसियो तरह के वैश्य। सब एक दूसरे अलग, न परस्पर विवाह कर सके न एक दूसरे का छूआ खाना खा सके। रोटी बेटी का सम्बन्ध उनमे नही। इनमे से हर एक यही कहता है कि हम सबसे ऊचे है,और जातिया हमसे नीच हैं। कान्यकुब्ज ब्राह्मणो के लिये अन्य ब्राह्मण नीच हैं,सनाढयो केलिए सिवाए सनाढयो के कोई उच्च ही नही। कायस्थो की बारह जातिया,क्षत्रियो मे पचासो भाग रहे,शूद्र उनको तो सभी नीच कहते है। सुनार नीच,लोहार नीच,धोबी नीच,कुर्म्मी नीच,चमार नीच, भगी नीच। जिस जाति के प्रत्येक अङ्ग के नीच होने के लिए उसके शेष अङ्गो की गवाही हो उसको अगर बाहर के नीच कहे तो आश्चर्य ही क्या हैं। फिर एक प्रान्त के रहने वाले ब्राह्मण दूसरे प्रान्त के ब्राह्मणो से अलग, बङ्गाली ब्राह्मणो को सयुक्त प्रान्त के ब्राह्मणो से कोई प्रयोजन नही। महाराष्ट्र ब्राह्मणो के लिए उत्तर के सभी ब्राह्मण भ्रष्ट हैं। उत्तर मे ब्राह्मण शूद्रो को छूते नही। इस प्रकार कई करोड अछूत हो गये। मद्रास प्रान्त वाले एक पैर और आगे हैं। यहा ब्राह्मण चमार को छूने से भ्रष्ट होता है। मद्रासी ब्राह्मण वहा की नीच जातियो की छाया मात्र से अशुद्ध हो जाता है। मलाबार के अछूत जाति के भिखारी सडक पर कपडा बिछा कर अपने को खेतो मे छिपा लेते हैं कि उनकी आकृति से बडी जाति वाले पतित न हो जाए और भीख देने वाले कपडो पर दूर से भीख फेक देते हैं। जब तक ये जाए और भिखारी आवे उस समय तक कौए उनके अन्न के दाने चुनकर उड जाते हैं। जिस देश का यह हाल हो, उसके लिए यह कहना कि यहा एक हिन्दू जाति बसती है भ्रम मात्र है। वस्तुत: यहा कौन अपने को हिन्दू बताता है? आप किसी से पूछे कि तुम कौन हो? वह उत्तर देगा "मैं ब्राह्मण हू" या मैं "क्षत्रिय हू" या "वैश्य हू"। कोई यह नहीं कहेगा कि "मैं हिन्दू हू"। किसी मुसलमान से पूछो "तुम कौन हो ?" वह पूछते ही कहेगा "मैं मुसलमान हू।" उनमे भी शेख, सय्यद-पठान होते हैं। परन्तु उनका सब से पहला भाव यह

होता हैं कि हम मुसलमान है। यह भाव उनको एक दूसरे से मिलाता है। परन्तु हिन्दुओ के मन का मुख्य भाव उनको दूसरे से अलग करता है। इस प्रकार जहा दूसरी जातियो मे एक धर्म, एक धर्म पुस्तक, एक उपास्य देव, एक देश सेवा-भाव समस्त व्यक्तियो को एक सूत्र मे बाधता है वहा हिन्दुओ मे इन भावो का अभाव है। जिस मन्दिर मे ब्राह्मण चढ सकता है वहा उसी हिन्दू जाति के चमार को जाने का निषेध है। जिस धर्म पुस्तक पर उच्च ब्राह्मण और क्षत्रियो का आधार है अर्थात् वेद, उसके सुनने का भी शूद्रो का अधिकार नही। इसी को कहते है सगठन का न होना। और सगठन के न होने मे ही हिन्दुओ पर समय-समय पर विपत्तिया आई है।

इतिहास बताता है कि एक हजार वर्ष व्यतीत हुए जब मुहम्मद गोरी ने हिन्दुओ पर आक्रमण किया तब हिन्दू निर्बल न थे। पृथ्वीराज और जयचन्द दोनो ही शक्तिशाली थे। परन्तु कमी थी हिन्दू सगठन की। इसलिए जयचन्द्र और पृथ्वीराज ने शत्रु की ओर ध्यान न देकर एक दूसरे की शक्ति का नाश किया और अन्त मे दोनो नष्ट हो गये। जब शैवो का मन्दिर टूटा तो वैष्णवो ने हर्ष मनाया। जब वैष्णव मारे गये तब शिव के पूजको ने कहा "अच्छा हुआ यह वैष्णव इसी दण्ड के अधिकारी थे"। जब जैनियो पर विपत्ति आई तब शैवो और वैष्णवो दोनो ने नास्तिको के नाश पर खुशी मनाई, इस प्रकार एक सगठन के न होने से शक्ति वाले हिन्दू एक-एक करके पीट लिये गये।

अभी मालावार मे जब मोपलो ने आक्रमण किया तब जब वे शूद्रो पर आक्रमण करते तो नम्बोदरी ब्राह्मण उनको अछूत समझ कर उनके बचाने की चेष्टा न करते। जब मोपले ब्राह्मणो के घर मे घुसे तो शूद्र अछूतो को उनके घर मे घुसने की आज्ञा न थी। इस प्रकार क्या शूद्र क्या ब्राह्मण सभी एक ही तलवार के घाट उतर गये परन्तु अब भी वहा के हिन्दुओ मे यह बुद्धि न आई कि किसी प्रकार सब को एक सूत्र मे बाधा जाए।

जीवित जातियो की दशा देखो यदि आस्ट्रेलिया के अग्रेजो पर कोई विपत्ति आवे तो अफ्रीका और इगलैंड के अग्रेज इसको अपने ही विपत्ति समझ कर उसका निवारण करते हैं। टर्की के मुसलमानो को कष्ट हो तो भारत वर्ष के समस्त मुसलमानो को कष्ट होता है और वह एक स्वर होकर उठ बैठते हैं। यदि एक गाव व नगर के एक मुसलमान पर कोई आपत्ति आवे तो समस्त नगर के मुसलमान उठ खडे होते हैं। परन्तु क्या हिन्दुओ मे भी यह बात है, कदापि नही। हिन्दुओ मे प्रत्येक पुरुष अपनी ही उन्नति का उपाय करता है। दूसरो से उनको

कुछ प्रयोजन नहीं गंगा तट पर लाखों हिन्दू मुक्ति पाने के लिए इकट्ठा होते हैं। पर एक हिन्दू चाहता है कि पहले मैं ही डुबकी लगाकर मुक्ति पा जाऊं परन्तु उसे अपनी जाति वालों के लिए कुछ भी ध्यान नही, मुक्ति लेने के लिये एक हिन्दू दूसरे को कुचल कर डुबकी लगाने को तैयार है। परन्तु मुसलमानों की मस्जिदो को जाकर देखो। हर शुक्र को बड़े-छोटे सब मिलकर नमाज पढ़ते और एक ही धर्म भाव से प्रभावित दिखाई पड़ते हैं। हिन्दुओ में यदि एक राजा साहब देवी देवता के दर्शन करने आ जाएं तो विचारे लोगों को मन्दिर मे घुसने की भी आज्ञा न हो, उपास्य देव के सामने भी छुटाई और बड़ाई नहीं छूटती। परन्तु मुसलमानो में कहावत है कि औरङ्गजेब जिस मस्जिद में नमाज पढ़ता था उसमें सभी पढ़ सकते थे और यदि उसे आने में देर हो जाती तो वह पीछे ही खड़ा निमाज पढ़ता था। यही बातें हैं जिन्होंने मुसलमानो को एक पुष्ट जाति बना रखा है और हिन्दू लोग नित्य प्रति निर्बल हो रहे हैं। प्रत्येक मुसलमान जानता है कि कुरान हमारी धर्म पुस्तक है, मुहम्मद साहब हमारे धर्म प्रदर्शक हैं। परन्तु हिन्दुओ में एक रोग है इनके शिक्षित पुरुषों में अपने धर्म का विश्वास नहीं। वह तो नाम मात्र हिन्दू है। मुसलमान का प्रत्येक पढ़ा लिखा कुरान शरीफ पढ़ता है परन्तु हजार में एक हिन्दू ने भी वेदों के दर्शन नहीं किए। एक मन्त्र याद नहीं संध्या कभी नहीं करते उनकी स्त्रियां जो कुछ पूजा पाठ कर दें, वही उनकी हिन्दू होने का चिन्ह है। मुसलमानों के धर्म में कई पुस्तकें हैं जिनको पढ़े लिखे मुसलमान पढ़ते हैं परन्तु कुरान को सभी पढ़ते हैं। वे समझते हैं कि कुरान शरीफ उसके धर्म का आधार है। यह शिया और सुनी में एकता का भाव पैदा करती हे। "कुरान" और "मुहम्मद" में बिजली की शक्ति है जो समस्त मुसलमानों में जोश पैदा करती है। उनके बच्चो को बचपन से धार्मिक शिक्षा दी जाती है। हर मसजिद के साथ एक मक्तब है जहां एक मौलवी कुरान पढ़ता है। बड़े-बड़े बेरिस्टर और अंग्रेजी पढ़े अन्य पुरुष अपने बालकों को पहले कुरान ही पढ़ाते हैं। परन्तु हिन्दुओं के क्लर्क भी धार्मिक शिक्षा को व्यर्थ समझते हैं। उनके बालक सीधे अंग्रेजी पढ़कर बी. ए, एम. ए. की सनद को ही मोक्ष का 'पास-पोर्ट' समझते हैं और यदि प्रोफैसर या बैरिस्टर हो गये तो उनको न तो धर्म पुस्तक पर विश्वास, न चोटी जनेऊ पर विश्वास, न ईश्वर के होने पर विश्वास। उनके लिए शेक्सपियर वेदों से कई गुणा महान् है। असबर्ट बाल का जो महत्व है वह विचारी चोटी को कहां प्राप्त है? इस प्रकार हिन्दू जाति अविश्वासी

जीवो का एक समूह है और इसलिए इनका सगठन तितर-बितर हो गया है। इनके फिलास्फर भी विचित्र ही हैं और उन्होने हिन्दुओ को और निर्बल कर दिया है। बहुत से तो ससार को स्वप्न ही समझते है। फिर स्वप्न देखने वाले पुरुष जागते हुओ का अनुकरण कैसे करे। महात्मा हसराज जी ने कैसा ठीक कहा है—

"मध्यकाल के दार्शनिक विचारो ने, सत्य धर्म के लोप होने पर गलत धार्मिक विचारो ने, सामाजिक बुराइयो के प्रभावो ने, एक सहस्र वर्ष की गुलामी की रीतियो और स्वभावो ने आर्य जाति के अन्दर सकोच का भाव पराकाष्ठा तक उत्पन्न कर दिया है। हमारी जाति विस्तार के स्थान मे सकुचित होने की नीति की अनुयायिनी है। हम धर्म को फैलाना नही चाहते, दूसरो को अन्दर प्रविष्ट नही करते, बल्कि अपनी स्त्रियो और पुरुषो को निकाल कर दूसरो मे शामिल कराते हैं। हमे इस बात की परवाह नही कि हमारी जाति की विधवाए कहा जाती हैं। यह देखकर प्रसन्न हैं कि वे हमारे ग्राम या नगर को छोडकर हमारी दृष्टि से परे दूसरो का घर बसाती है। हमारे अनाथ लडके या लडकिया व विधवाए ईसाइयो के अनाथालयो और स्कूलो मे पालित होकर यदि अपनी शारीरिक और मानसिक दशा सुधारते हुए ईसाई धर्म मे प्रविष्ट हो जावे तो हम ईसाइयो को शाबासी देने के लिए उद्यत हैं। अपनी घटती हुई आबादी से हमको चिन्ता नही। यदि वैदिक धर्म मध्य एशिया से खारिज होकर केवल भारत की चारदीवारी के अन्दर बन्द हो तो इसके लिए हमारे दिल मे क्यो तडप उत्पन्न नही होती। निदान हिन्दू धर्म की सम्मिलित दशा पर विचार करने का भाव हमारे अन्दर नही है हम अपने विषय मे और अपने परिवार के विषय मे खूब सोच सकते हैं इसलिए अपनी बिरादरी या धार्मिक सम्प्रदाय के विषय मे भी कभी-कभी चिन्ता करते हैं परन्तु इससे बाहर जाना हम अपना कर्त्तव्य नही समझते। वेद मे तो यह आज्ञा है कि सारे जगत् को आर्य बनाओ, परन्तु जब आर्य धर्म को अफगानिस्तान, काश्मीर या पजाब या सिन्ध या पूर्वी बगाल और मालाबार मे धक्का लगा, तो हमारे नेताओ ने इकट्ठ होकर हिन्दूपन के लिये खडे होकर युद्ध करना कर्त्तव्य नही समझा और इस समय भी जब ईसाई लोग पहाडो या जगलो के मूढ हिन्दुओ को जरायम पेशा जातियो को और नीच जातियो को अपनी-अपनी श्रेणी मे प्रविष्ट कर रहे है तब हम उन घटनाओ को इस तरह से सुनते हैं जैसे हमारा उनसे कोई सम्बन्ध नही है। उनको हिन्दुओ

के रूप में स्थिर रखने का यत्न करना तो कतिपय धार्मिक मतवालों का काम है। हिन्दुओं से यह आशा रखना कि वे मुसलमानों और ईसाइयों को अपने अन्दर लीन करने के उपाय सोचें, कठिन बल्कि असम्भव है । न हम धर्म के फैलाव का पक्ष लेकर सब हिन्दुओं के विषय में पहले विचार करते थे और न अब करते हैं। जब तक दृष्टि से हम चिन्तन करना नही सीखेंगे, हम हिन्दुओं के रूप में कभी उन्नति नहीं कर सकते और न हमारा संगठन ही दृढ़ हो सकता है। थोड़े से नेताओं के सिवाय, हिन्दू नेताओं के दिमाग में धर्म के लिये कोई जगह ही नहीं है।" इन सब की एक मात्र औषधि यही है कि हिन्दुओं में संगठन उत्पन्न किया जाए। महात्मा हंसराज जी की राय में 'हिन्दू संगठन के लिए जो सभा बने उसके यह उद्देश्य होने चाहिएं—

1. हिन्दू समाज को सब श्रेणियों में प्रेम का भाव उत्पन्न करके उनको दैशिक दृष्टि के समतल पर लाना। उनके अन्दर कोई भेद नही होना चाहिए।

2. सार्वजनिक कामो में हिन्दुओं के दृष्टिकोण के विचार से विचार करने का स्वभाव डालना।

3. भारतवर्ष के सम्मिलित नैतिक काम मे भाग लेना नैतिक सार्वजनिक काम के लिए प्रयत्न करना और साथ ही इस बात का ध्यान रखना कि वह नैतिक काम हिन्दू भावों को कुचलने वाला न हो।

4. गो रक्षा के प्रश्न को हल करने का यत्न करना।

5. हिन्दू समाज पर समष्टि रूप में जो आक्रमण हों उनका प्रबन्ध करना।

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए एक हिन्दू संस्था की आवश्यकता होगी, इस का काम यह होना चाहिए कि वह अपने विचारों को बलपूर्वक भिन्न-2 रीतियों से सर्वसाधारण में फैलाने और उन उपायों को काम में लावे जिनसे उनको सफलता प्राप्त हो, लोगों में सच्चे विचार फैलें। हिन्दुओं में परस्पर प्रेम, एकता और साम्राज्य के विचार बढ़ें वे साथ मिल कर काम करना और अपनी रक्षा करना सीखें। न गवर्नमैंट के साथ वैर, न मुसलमानों के साथ इनका किसी प्रकार का द्वेष हो और न ही इनसे डर कर के अपने आत्मा का हनन करने के लिए तैयार हों। दूसरे के स्वत्व न छीनें परन्तु अपने स्वत्व की रक्षा के लिए हर एक प्रकार से तैयार रहें। यह संस्था गवर्नमैंट की कौंसिलों में और कांग्रेस की

वेदी पर हिन्दू जाति की आवश्यकताओ को पेश कर सकती है और उसको बता सकती है कि एक हिन्दू का जन्म ससार मे केवल ठोकरे खाने के लिये नही है ।

हिन्दू सगठन को वे लोग सफल नही बना सकते जिनके अन्दर त्याग का भाव और श्रद्धा का भाव नही, जो लालच से या झूठ से गवर्नमेंट को अभिवादन पत्र देने के लिए तैयार हो,परन्तु उत्साह और निर्भयता से अपने आन्तरिक भाव को गवर्नमेंट के सामने बतला नही सकते । नही हिन्दू-सगठन को वे लोग सफल बना सकते है जो इस बात पर अभिमान करते हो कि हम पहले हिन्दुस्तानी फिर हिन्दू हैं, अपने हिन्दूपन को या तो अपने अन्दर से बिल्कुल निकाल चुके हैं, या निजी और दैशिक आवश्यकता के अर्थ इतना दबा चुके है, कि उनके अन्दर भाव का फूलना-फलना कठिन है। ये दोनो श्रेणिया इस अभागी हिन्दू जाति के लिए भय का कारण होगी । यह बल पूर्वक हिन्दू मत के लिए आवाज नही उठा सकती । इस काम के लिए त्यागी, उत्साही, साहसी, समझदार, अनुभवी कार्यकताओ की आवश्यकता है जो निज का स्वार्थ धन का प्यार, यश की कामना और वैर विरोध के घातक जलवायु से अपने आप को स्वतन्त्र रखकर अर्जुन की नाई केवल अपने लक्ष्य को ही देखे । उनका यह कर्त्तव्य होगा कि हिन्दू जाति की सब श्रेणियो को अपने उद्देश्य के लिए प्रयुक्त करे, हम बहुधा इस बात को भूल जाते है कि सोसायटी का प्रत्येक सभासद् यदि वह अपने यथोचित स्थान पर रखा जावे तो सम्मिलित अवसर के लिए लाभप्रद प्रमाणित हो सकता है। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए हमें छोटे और बडो की सब की आवश्यकता है। बूट के नीचे की कील शानदार कलगी से कुछ कम लाभ-दायक नही । अपने-अपने स्थान पर दोनो लाभप्रद है। मुसलमान इस नियम को हमारी अपेक्षा बेहतर समझते हैं। उनकी सोसायटी के सहयोगी और असह-योगी मिया फजलहुसैन और मौलाना शौकतअली दोनो इस्लाम की उन्नति मे प्रयत्नशील । वे एक दूसरे को कौसते नही। परन्तु हिन्दू नेता भिन्न-भिन्न पक्षो में काम करते हुए हिन्दूपन को न केवल दृढ नही करते बल्कि एक दूसरे को द्रोही कहते हैं। परमात्मा हमारी बुद्धियो को प्रकाशित करे।"

महर्षि दयानन्द का व्यक्तित्व

(दक्षिण भारत के समाचार पत्रो की दृष्टि मे)

(1) बाबू सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी प्रधान इण्डियन नैशनल काग्रेस अपने पत्र "बगाली" दिनाक 3-11-1883 मे लिखते हैं —

"हम यह कहने से नही रुक सकते कि स्वामी दयानन्द कोई साधारण पद का धार्मिक आचार्य था। चाहे उस के और हमारे धार्मिक विश्वासो मे भेद है, तो भी हमारा विश्वास है कि वह बहुत ही उच्च शक्तियो वाला सत्य वक्ता अध्यापक था। चाहे वह योगी था, जिसने ससार को छोड दिया तो भी व्यवहारिक बुद्धि उसे इतनी प्राप्त थी कि वैसी विरले मनुष्यो को प्राप्त है। उन की मृत्यु से सभी देशवासियो को दुख हुआ है। भारत वासी उनकी विद्या पर सदा अभिमान करते रहेगे, और प्रेम से उन्हे स्मरण करते रहेगे।"

(2) इण्डियन मैंसिजर कलकत्ता 11-11-1883

"आज तक कोई पुरुष ऐसा पैदा नहीं हुआ, जो इस देश के मिथ्या विश्वासो को इस से अधिक घृणा करता हो । जैसा कि महात्मा दयानन्द करता था । जिसने ऐसे साहस और धैर्य से परमात्मा के उस सच्चे भगत ने अपनी उत्तम प्रार्थना मे अपने नौबल मिशन को उत्पत्ति कर्त्ता की इच्छा पर छोड दिया है । ईश्वर करे ! कि हमारे सारे कार्यों मे उस की प्रार्थना की स्प्रिट आ जाए" ।

(3) इण्डियन इम्पायर कलकत्ता 4-11-1883

"ऋषि दयानन्द" अपने समय का सब से बडा सुधारक था । भारतीय इसकी विद्या, विचित्र शक्ति और दृढ अन्त करण की सदा याद रखेगे ।

4. बंगाल पब्लिक ओपिनियन कलकत्ता 8-11-1883

"स्वामी दयानन्द की मृत्यु से सारे हिन्दू जगत् मे अन्धेर सा छा गया है । ऋषि दयानन्द हमारे देश के भूषण और हमारे मान के दादा थे ।"

5. हिन्दू पैट्रियार कलकत्ता 8-11-1883

हम बडे खेद से भारत के एक सस्कृत विद्वान् महर्षि दयानन्द की मृत्यु का समाचार लिखते हैं वे बहुत ही ऊचे दर्जे के वेदज्ञ थे । वे सस्कृत बोला करते थे, . ।"

6. लिबरल कलकत्ता 11-11-1883

"पण्डित दयानन्द का मत चाहे कुछ ही क्यो न हो, पर वह हमारी सहानुभूति का पात्र था । वह अपने बल से हम से अपनी प्रशसा करवाता था । चाहे उस ने पश्चिमी विद्यायो को न सीखा था तो भी उस के विचार अद्वितीय थे और वह अपने आप इस के स्वभाव से टपकते थे ।"

7. इंग्लिश क्रानिकल बांकीपुर 5-11-1883

"स्वामी दयानन्द सस्कृत का बडा विद्वान था और आर्यन फिलासफी की हरेक शाखा का पूरा-2 जानने वाला उत्तम वक्ता, और बडा मिलिनसार था । उस मे एक महान् आचार्य के सब गुण विद्यमान थे ।

8. हिन्दू आबजर्वर मद्रास 8-11-1883

"स्वामी दयानन्द सस्कृत का एक प्रसिद्ध विद्वान था । सशोधन के मैदान मे शुद्ध अन्त:करण से काम करने वाला था । उस की मृत्यु से देश को बडी हानि हुई है ।

6 "थिङ्कर" मद्रास

"स्वामी दयानन्द एक लासानी विद्वान् था उसकी मृत्यु से देश भर मे हाहाकार मच गया है।

10. "इण्डियन स्पीकर" बम्बई

"हम स्वामी दयानन्द को भारत का एक स्तम्भ मानते हैं। गुजरात देश ने ऐसा प्रबल सुधारक पैदा नही किया जैसा कि स्वामी दयानन्द था। जो लोग उसे स्वामी शकराचार्य के साथ **स्थान** देते है वे कुछ अधिक नही करते। ईश्वर पर असाधारण विश्वास और आयु भर के अपने उद्देश्य की दृढता से उस ने हम को इतना लाभ पहुचाया कि एक वश का कई वशो तक धन्यवाद का अधिकारी हो गया।

ईसाइयत और पश्चिमी सभ्यता के मुख्य हमले से हिन्दुस्तानियो को सावधान करने का सेहरा यदि किसी व्यक्ति के सिर बाधने का सौभाग्य प्राप्त हो तो स्वामी दयानन्द की ओर इशारा किया जा सकता है। 19 वी सदी मे स्वामी दयानन्द जी ने भारत के लिए जो अमूल्य काम किया है, उससे हिन्दू जाति के साथ-साथ मुसलमानो तथा दूसरे धर्मावलम्बियो को भी बहुत लाभ पहुचा है।

—पीर मुहम्मद यूनिस

स्वामी दयानन्द सरस्वती राष्ट्रीय, सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से भारत का एकीकरण चाहते थे। भारतवासियो को राष्ट्रीयता के सूत्र मे ग्रथित करने के लिए उन्होने देश की विदेशी दासता से मुक्त करना आवश्यक समझा था।... ...

—श्री रामानन्द चटर्जी (सम्पादक 'माडर्न रिव्यू')

जब भारत के उत्थान का इतिहास लिखा जायेगा तो नगे फकीर दयानन्द सरस्वती को उच्चासन पर बिठाया जायेगा।

—सर यदुनाथ सरकार

मेरी सम्मति मे स्वामी दयानन्द एक सच्चे जगत् गुरु और सुधारक थे।

—मि फौक्स पिट्
(जनरल सैक्रेटरी मोरल एजूकेशन लीग लण्डन)

मेरा गुरु वही है

गुजरात से जो आया, योगी ऋषि कहलाया।
ब्रह्मचारी बन के जिस ने था हिन्द को जगाया॥
मेरा गुरु वही है, मेरा गुरु वही है।
भारत के बन्धनो की जजीर जिस ने तोडी।
उलटी जो वह रही थी गगा की लहर मोडी॥
मेरा गुरु वही है, मेरा गुरु वही है।
जिस ने स्वदेश भक्ति भारत को आ सिखाई।
गैरो के बन्धनो से हिन्दी को दी रिहाई॥
मेरा गुरु वही है, मेरा गुरु वही है।
शूद्र को जिस ने आ के था वेद ज्ञान बख्शा।
दलितो को, बेकसो को, था जिसने मान बख्शा।
मेरा गुरु वही है, मेरा गुरु वही है।
दैरीहरम[1] से जिसने आजाद कर दिया था।
वहादानियत[2] की मैं से दिलशाद कर दिया था।
मेरा गुरु वही है, मेरा गुरु वही है।
अमरीका, जर्मनी ने सिक्का है जिस का माना।
अहले जहा ने जिस को अपना गुरु है माना॥
मेरा गुरु वही है, मेरा गुरु वही है।
वह भगवी झण्डी वाला, वह ज्ञान ध्यान वाला।
ऋषियो की ज्ञानवाला, जिस ने किया उजाला॥
मेरा गुरु वही है, मेरा गुरु वही है।
ऐ वर्क जो फ़िरश्ता था, देवता ऋषि था।
योगेश्वर दयानन्द हादी[3] वह महर्षि था॥
मेरा गुरु वही है, मेरा गुरु वही है।

1 मन्दिर व मस्जिद
2 प्रभु भक्ति का नशा
3 मार्ग दर्शक

—प्रिंसीपल मेरा राम वर्क
करनाल

शंखासुर नाशक महर्षि दयानन्द

लेखक—स्व श्री म बाबूराम जी गुप्त
लुधियाना के अनमोल विचार

पुराण आदि ग्रन्थो की कल्पित कथा कहानियो मे देवासुर सग्राम की वावत चिरकाल से सुनते चले आए है। कभी देव विजयी होते है तो कभी असुरो का जोर बढ जाता है। फिर अवतारो की सृष्टि चलती है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने रावण पर विजय पाई तो कृष्ण महाराज ने भी कई असुरो और दैत्यो पर विजय पाई। हिन्दू जाति इन निर्मूल कहानियो की इतनी अभ्यस्त हो गई है कि ज्ञान रहित होने पर उसने कल्पना कर ली कि वेद को शखासुर नामक असुर पाताल मे ले गया है। अब वेद कहा ? लेकिन धन्य मेरे मर्यादा नरोत्तम महर्षि दयानन्द आपने एक कल्पित असुर का विनाश किया। उससे वेद छीन कर सब को वेद दर्शन करवाया।

शाहजहापुर मे प लक्ष्मी दत्त शास्त्री मूर्ति पूजा पर शास्त्रार्थ करने आए, तो स्वामी जी ने कहा कि अपनी पक्ष पुष्टि के लिए कोई वेद का प्रमाण दीजिए। शास्त्री जी बोले—'महाराज वेद कहा से लाऊ ? वेद तो शखासुर पाताल ले गया है। तब हसते-हसते वेद निकाल कर ऋषि ने कहा कि देखो कि हमने तुम्हारे आलस और प्रमाद के शखासुर का नाश कर दिया है और यह वेद जर्मनी से मगवा लिए है। शास्त्री महाशय तो क्या ऋषि ने ससार को वेद-दर्शन करा कर निहाल कर दिया।

ऋषि के आगमन से पूर्व लोग वेद का नाम तक भूल गए थे। जब शखासुर उसे पाताल ही ले गया तो अब कौन उससे लडने जाए ? ऋषि दयानन्द ने वेद सम्बन्धी जो प्रयास किया। उसका शताश भी मुझे आ जाए तो तभी उनका अनुयायी कहला सकता हू। जरा वेद सम्बन्धी खोज और ऋषि का वेद प्रेम और उसके लिए परिश्रम तो देखिए।

सवत् 1928 जब स्वामी जी ने वेद मगवाए।

सवत् 1933 जब स्वामी जी ने वेद भाष्य का आरम्भ किया। वे चारो वेदो का भाष्य करना चाहते थे। मगर उनकी इच्छा के साथ हमारा दुर्भाग्य जुडा हुआ था। और अकाल मृत्यु के कारण यह भाष्य अधूरा रहा।

स्वामी जी ने यह भी प्रयत्न किया कि उनका वेद भाष्य यूनिवर्सिटी के कोर्स मे लगाया जाए। इसके लिए स्पउ लाट साहिब से मिले।

बम्बई मे श्री स्वामी जी एक ऐसे चतुर्थवेदी ब्राह्मण से, भेट होने पर बडे प्रसन्न हुए। जिसको चारो वेद कठस्थ थे। वेदो वाले के दिल मे वेद और ब्राह्मण के लिए बडा मान था। जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि—'देखो तुम सुना करते थे कि ब्रह्मा चार मुख है वही चुमुखी ब्रह्मा तुम्हारे सामने खडे है। स्वामी जी ने इस चतुर्वेदी पडित का इतना सन्मान किया कि उस समय वहा होने वाले यज्ञ मे उनको ब्रह्मा के आसन पर बिठाया। मैं और आप आए साल ऋषि का दिन मनाते है। मगर वेद के लिए क्या करते है ? कभी-कभी यह प्रश्न बहुत कष्ट देता है कि वेद प्रचार कैसे होगा है ?

आर्य समाज का वार्षिक उत्सव मनाया जा रहा था। भजनोपदेशक महाशय खडताल की ताल पर बडे जोश के साथ भजन की टेक से भूमिका बाधने लगे—'वेद प्रचार कैसे होगा ऐसी गाढी पी गए ?'—उन दिनो के जानदार जलसो की शान ही और थी। तब आर्य समाजो के अधिकारी व उपदेशक नि:सन्देह उत्सव मनाते थे। और आज तो वे उत्सव ही नही। उत्सव मनाए नही जाते भुगताए जाते है। आज तो वह उपदेशक भजनीक कामयाब समझता जाता है जो सख्या के लिहाज से अधिक जलसे भुगताए। तब उपदेशक बोलते नही थे, गर्जते थे। मैं सोचता हू कि क्या आर्य समाज की वेदी से पुन वह गर्ज सुनी जाएगी कि नही। जब हमने हल्की पी हुई थी वे तब कहते थे वेद प्रचार कैसे होगा ? ऐसी गाहढी पी हुई गए। अब जब कि गाहढी पी कर मूर्छित से हो रहे है, कोई हमे हल्की-सी थपकी मार कर हल्की पिए हुए वालो की तरह भी नही जगाता। कई लोग कहते सुने गए हैं कि आर्य समाज का प्रचार काफी हो चुका है। अब दूसरे वह काम करने लग गए हैं जो आर्य समाज करता था। अब आर्य समाज को अपने कार्य का ढग बदल देना चाहिए। मैं सोचता हू वेद और आर्य समाज का प्रचार तो रहा एक तरफ लाखो करोडो भारतीय भी अभी तक आर्य समाज के नाम से अनभिज्ञ हू। बहुत से लोगो ने अभी आर्य समाज को समझा ही नही।

और शायद हम में से बहुत से आर्य समाजियों ने भी। महात्मा मुन्शीराम जी ने एक दफा लाहौर के वार्षिकोत्सव पर अपने प्रवचन में एक प्रमाण दिया था कि मेरे पास थोड़े दिन हुए एक आर्य समाजी सज्जन का पत्र आया। उसने लिखा कि यहां हम लोग राजी खुशी हैं। आपकी राजी खुशी स्वामी दयानन्द जी महाराज से नेक चाहते हैं।

यह कह कर महात्मा जी ने आर्य जनता को बड़ी झाड़ डाली कि उन्होने अभी तक आर्य समाज को समझा ही नही और अब इतना समय बीत जाने पर भी लोगों ने आर्य समाज को समझा हो,' इसमें सन्देह-सा ही है। अब भी बहुत से लोग आर्य समाज का काम विधवा विवाह और शुद्धि का इसके सिवाए और कुछ नहीं समझते हैं। वेद प्रचार का काम तो शायद ही कोई समझता हो। अगर आप किसी आर्य समाज के अधिकारी सेवक है तो आपको सैंकड़ों इस किस्म के आदमियों से और उनके विचित्र प्रश्नों से वासता पड़ा होगा। अभी कुछ दिन हुए मुझे एक पत्र मिला।

श्री मान्यवर मन्त्री जी, आर्य समाज लुधियाना, नमस्ते !

प्रार्थना है कि आप लोगों की सभा में यदि कोई स्त्री विधवा हो या शादी कराने के योग्य हो तो आप शीघ्रातिशीघ्र वापसी डाक उत्तर दें। स्त्री युवावस्था में हो। विवाह पर जो खर्च हो, वह इसी जवाबी कार्ड पर लिख देना। इत्यादि।

ऐसे एक क्या अनेक पत्र आते हैं। जो इस बात का जीवित प्रमाण हैं कि लोगो ने अभी तक आर्य समाज को समझा ही नही। अथवा हमने उनको समझाया ही नही। अभी कल की बात है कि एक लाला जी मिले, उनके एक मिलने वाले अपने एक विवाहित युवक का पुन: विवाह करना चाहते हैं। मैंने कहा कि वह तो यह पाप करने लगे हैं। उत्तर मिला कि...वह तो अब आर्य समाज मे भी विवाह करने के लिए उद्यत है। आर्य समाज मे ? मुझे यह सुन कर बड़ा दु:ख हुआ। मैंने आवेश में कहा...तुमने आर्य समाज को समझ ही क्या रखा है ? परन्तु उसी समय विचार आया कि इस बेचारे का क्या दोष है ? दोष तो मेरा है। दोष तो हम गाढ़ी पीने वालों का है। बहुत से सज्जनों ने आर्य समाज के नाम का अनुचित लाभ उठा कर कई प्रकार के आश्रम और संस्थाएं खोल दी हैं। बाहर आर्य समाज की छाप और अन्दर एक प्रकार का ढोंग और दुकानदारी। वेद प्रचार होता तो आज यह अवस्था न होती। दावा तो सारे संसार को आर्य बनाने का और अमल है यह ? और फिर मुकाबला है उनसे जो अपने धर्म की खातिर सांसारिक बातों की परवाह तक नहीं करते। जरा अपने मुस्लिम भाईयों की हिम्मत का एक उदाहरण देखिए......।

बड़ी देर से इच्छा थी कि देवबन्द के इस्लामी गढ अर्थात् दारूल उलूम देवबन्द को कभी देखा जाए । ईश्वर कृपा से मुझे वहां 70-72 घण्टे ठहरने का अवसर मिला। मैं वहां दो दिन जाता रहा। उसे देख कर मैं बड़ा प्रभावित हुआ। उसके मैदान में खड़े होकर मुझे आर्य समाज की संस्थाएं फीकी सी मालूम होने लगी। मैं वहां खड़े-खड़े वेद के लिए अपनी श्रद्धा और कुरान के लिए उनकी आस्था दोनों की तुलना करने लगा। विचार आया कि आर्य समाज के नेता, और उसके गुरुकुलों और कालेजो के संचालक. व प्रबन्धक, एक बार यहां आकर देखे तो सही कि यहां क्या हो रहा है ? केवल कुरान और हदीस के के लिए इतना प्रयत्न यह दीवाने कर रहे हैं। वड़ी-2 दूर से आकर कुरान की एक-एक आइत का अध्ययन करते और इन पर घण्टो विचार करते है। मैं वहां एक-एक श्रेणी मे गया । उनके पठन-पाठन के ढंग और रिहायश व खानपान और उनके स्थान को देखा। आठ वर्ष का कोर्स है। और हजारो की संख्या मे विद्यार्थी उपस्थित हैं। भारत के हर प्रान्त के विद्यार्थी तो आपको मिलेंगे ही परन्तु इसके अतिरिक्त काबुल कंधार बजीर स्थान, काशगर वदकशां, बुखारा और चीन तक के विद्यार्थी आप वहां देखेंगे । जापान से भी वहा आए हुये विद्यार्थी। धार्मिक विषयों पर ये बड़ी गम्भीरता से वार्तालाप करते हैं। और एक-एक कुरान की पंक्ति पर काफी समय तक बातचीत करने की योग्यता रखते हैं। आर्य समाज के पास ऐसी कोई संस्था नहीं। केवल दयानन्द उपदेशक विद्यालय था। श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के समय कुछ काम भी हुआ। परन्तु जो ठोस काम देवबन्द में हो रहा है। वह और ही ढंग का है। वर्तमान नेताओं की इससे अवश्य शिक्षा लेनी चाहिए।

ऋषि निर्वाण उत्सव मनाने वालो---ऋषि ने अंतिम समय कहा था कि दरवाजे खोल दो। क्या हम दरवाजे बन्द करके घुट कर न मर जाएंगे ? आओ आप और मैं सब अपने अन्दर के दरवाजे खोले अपने वाहर के दरवाजे खोलें। वेद प्रचार के साधनों पर विचार करें। अधिक संस्थाओ के स्वर्णपाश से निकलें। एक खालिस वेद विद्यालय निर्माण करें। यहां वेद की खोज करने वाले मतवाले हर समय उपस्थित हों। फिर वही सचमुच द्विवेदी, त्रिवेदी और चतुर्वेदी दिखाई दें जिनके वेद कंठस्थ हों। ऋषि निर्वाण के दिन गम्भीरता से विचारो। वेदों वाले ने भारत के आलस और प्रमाद के शंखासुर का नाश करके वेद के दर्शन करवाए थे। महर्षि का यह प्रयत्न न जाने पाए। बोलो ! शंखासुर नाशक वेद रक्षक वेद प्रचारक जाति उद्धारक महर्षि दयानन्द की जय।

महर्षि दयानन्द की जय

लेखक—श्री पं सत्यपाल 'पथिक' सिद्धान्त शास्त्री

महर्षि दयानन्द की जय

उलट पलट नटखट झटपट

फट बढता गया अभय—महर्षि दयानन्द की जय

बड़े-बड़े दुर्गों को तोड़ा।

और तूफानो का मुह मोडा।

नतमस्तक हो चरण चूमती रहती सदा विजय। महर्षि......

जहा भी उस ने पैर जमाया।

नही किसी से गया उठाया।

सारी दुनिया मिल कर भी न बदल सकी निश्चय। महर्षि. .

जो हत्यारा सम्मुख आया।

श्री चरणो मे शीश झुकाया ॥

दयानन्द से दया मागते बड़े-बड़े निर्दय । महर्षि..... .

बेशक अपनी जान गवाई।

भारत मा की लाज बचाई।

रहू "पथिक" उसके गुण गाता जब तक मिले समय।

महर्षि दयानन्द की जय

दुःख निवारण

संक्षिप्त लघु कथा

महात्मा बुद्ध के चेले (शिष्य) मुनि उप गुप्त नगर की दीवार के समीप भूमि पर ही बिना वस्त्र बिछाए लेट रहे थे। दीपक बुझ चुके थे। सब ओर दरवाजे बन्द हो चुके थे। सितारों को अगस्त मास की अन्धेरी रात ने अपने पहलु में छिपा लिया था।

किसी की पायजेवों की झंकार ने उनकी निद्रा भंग कर दी। यह एक नर्तकी थी ! जवाहारात के जेवरों से लदी हुई आसमानी रंग की मनमोहक पोशाक मे सुसज्जित, जवानी की तरंगो से तरंगित प्रसन्नता की मदिरा में गुम।

उसने दीपक झुका कर नीचे प्रकाश डाला तो मुनि उपगुप्त के अद्वितीय रूप लावण्य को देख कर मन्त्र मुग्ध हो गई। और बोली...हे युवक मुझे क्षमा कर। मेरे साथ चल। मेरे हृदय के सिंहासन पर बैठ कर सुशोभित हो। मैं आपकी सेवा करूंगी। यह मिट्टी का विस्तर आपकी शान के अनुरूप नहीं।

मुनि ने उत्तर दिया।

हे सुन्दरी ? अपने घर जा। अभी समय नही आया। जब समय आयेगा। मैं स्वयं ही तुम्हारे पास चला आऊंगा।

सहसा अन्धेरी रात्रि बिजली की चमक से झिलमिला उठी। आकाश मे बादल गरज उठे। फिर घटाटोप अन्धेरा छा गया। नर्तकी भयभीत होकर कांपने लगी।

वसन्त ऋतु आई। वृक्षों की शाखाए फूलो के बोझ से भूमि को चूमने लगी। बांसुरी की मन प्रसन्न करने वाली तानें शीतल वायु के साथ दूर से उड़ान भरती हुई आने लगी। नगर वासी फूलों का त्योहार बनाने वनो को चले गए।

नगर की खामोशी पर पूर्णिमा का चांद आसमान पर ताक रहा था। ऐसे समय नवयुवक ऋषि उप गुप्त एकांत में टहल रहा था। वृक्षों पर प्यार की मारी कोयलें दर्द से बेचैन हो कर करूणा जनक स्वर में कूक रही थीं। उपगुप्त

(शेष पृष्ठ 55 पर)

गुरु और शिष्य

तपोनिधि महात्मा हंसराज जी के अनमोल विचार

महर्षि दयानन्द लिखते है कि मानव की उन्नति के लिए तप और विद्या दो जरूरी अग है। तप जो विद्या के बिना किया जाता है। सुखदायक नही बन सकता। और विद्या जो तप के बिना हासिल की जाती है, वह पूरा फल नही दे सकती। ऋषियो ने इसीलिए यह नियम रखा था कि विद्यार्थी तपस्वी हो। वाल्काल से ही प्रसन्नता के साथ कष्ट सहन करने का स्वाभाव उसमे अवश्य आ जाना चाहिए। इन्द्रियो पर सयम उसकी शिक्षा मे शामिल था। गुरु की आज्ञा पालन और सेवा की शिक्षा उसे दी जाती थी। परिणाम यह था कि विद्यार्थियो मे सहनशीलता, सादगी, सेवा एव आज्ञा पालन के भाव पैदा होते थे। यदि आज कल के अग्रेजी शब्द का प्रयाग करू, तो यह कहू कि विद्या के साथ अनुशासन (डिसीप्लिन) एक आवश्यक वस्तु समझा जाता था। निरुक्त मे इसी विचार को अलकृत भाषा मे प्रकट किया गया है। विद्या विद्वान को कहती है कि तू मुझे उस विद्यार्थी को मत देना जिसमे श्रद्धा व विनय न हो। महर्षि दयानन्द की महत्ता का एक कारण यह भी था कि उनके हृदय मे अपने गुरु स्वामी विरजानन्द के लिए पूरी श्रद्धा थी। एक बार विरजानन्द जी ने इन पर हाथ उठाया। ऋषि ने हाथ जोड कर कहा—मेरा शरीर कठोर है आपके हाथ कोमल हैं। मुझे आज्ञा दो कि मैं आपके हाथ दवा कर कुछ सेवा करू यदि विद्यार्थी के अन्दर श्रद्धा और सेवा का भाव न हो, तो उसकी विद्या सफल नही हो सकती। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में दोष है कि पढाने वालो के लिए पढने वालो के दिलो मे श्रद्धा का अभाव है। उसका एक यह कारण भी है कि अध्यापक वर्ग का चरित्र इतना ऊचा नही, जितना होना चाहिए। दूसरा यह है कि विद्यार्थी फीस देते

हैं और उनका यह विचार है कि अध्यापक वर्ग की वेतन हमारी फीस से निकलती है। तीसरा यह कि हमारे अन्दर ही ऐसी श्रेणियां उत्पन्न हो गई हैं, जो स्कूलो, कालेजों व गुरुकुलो मे हड़तालें करवा कर विद्यार्थियों को अध्यापको के खिलाफ चमकाती रहती हैं। और इसी तरह पर अपना प्रभाव बढ़ाने का यत्न करती हैं। इन श्रेणियो के नेता यह विचार करते हैं कि हम विद्यार्थी को स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ा रहे हैं। वे यह नही सोचते कि ऐसा करने से संस्थायें नष्ट हो जाएगी। हमारे युवको का चरित्र भी बिगड़ेगा। और इनकी आत्माए निर्बल हो जाएगी। आज के युग में ऋषि दयानन्द प्रणीत गुरु शिष्य प्रणाली को अपनाए बिना न सन्तान योग्य बन सकती है और न तपस्वी बन सकती है। बिगड़े हुए इस वातावरण को ठीक करने के लिए शिक्षा शास्त्रियों को पुनः विचार करना चाहिए। महर्षि के इन शब्दों पर पूरा ध्यान देना चाहिए कि तप जो विद्या के बिना किया जाता है, वह सुखदायक नही बन सकता। और विद्या जो तप के बिना प्राप्त की जाती है, वह पूरा फल नही दे सकती।

(53 पृष्ठ का शेष)

नगर में से चलते हुए दीवार के पास जा खड़े हुए। दीवार को अन्धकार भरी छाया मे उसके सामने कौन पड़ी हुई थी ? यह भयंकर बीमारी का शिकार मालूम होती थी। उसका शरीर जख्मो से भरा हुआ था। नगर वालो ने उसकी बीमारी से भयभीत होकर उसे नगर से बाहर निकाल दिया था। आखिर यह थी कौन ? जिस पर प्रभु का कहर टूटा——यह वही सुन्दरी चन्द्रमुखी नर्तकी थी।——उप गुप्त उसके निकट आया और उसका सिर उठा कर अपनी गोदी में रखा। उसके मुंह में पानी डाला। उसके घावों पर मरहम का फाहा रखा।

आह ! हे दया के देवता तुम कौन हो ? उस देवी ने कष्ट से कुछ अनुभव करते हुए कहा।

मैं उपगुप्त हूं। अपने वचन का पालन करने के लिए आ पहुंचा हूं। उस समय वस्तुतः तुमको मेरी वास्तविक जरूरत न थी। जब तुम को मेरी असल जरूरत पेश आई। मैं आ पहुंचा।

महाकवि रविन्द्रनाथ टैगोर

महर्षि दयानन्द को समझो

लेखक—श्री म चिरंजीव जी प्लीडर

ऋषि को जनता के सामने आए, पर्याप्त समय बीत चुका। परन्तु अभी तक उनको यथार्थ रूप मे समझा नही गया। पश्चिमी सभ्यता के भगत उन्हे पुरानी लकीर का फकीर कहते है। मूर्ति पूजको ने धर्म का शत्रु, शास्त्रो का बैरी और ईसाईयो का पिट्ठु कहा। मुसलमान उन्हे कट्टर विरोधी जानते थे। भक्ति मार्ग के अनुयायी उन्हे शुष्क फिलासफर कहते रहे। कुछ लोगो ने उन्हे तगदिल होने का फतवा देते रहे। विज्ञान के अभिमानी उनको पीछे धकेलने वाला समझते रहे। ऐसी स्थिति मे आपकी अवस्था पर यह शेर फिट आता है।

जाहिद तग नजर ने मुझे काफिर जाना।
और काफिर ने यह समझा कि मुसलमान हू मैं॥

जाहिद का अर्थ हैं भक्ति करने वाला। ऋषि को दुरुस्त अर्थो मे समझने के लिए ओपरी नजर सफल नही हो सकती। इसके लिए सूक्ष्म दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। ऋषि का जीवन, शिक्षा, रचनाए और उनके कार्य उनका आचार व्यवहार, सब कुछ जनता के सामने है। और खुली किताब है। जरा गहरी नजर से छानबीन करो। फिर अन्य कौमी सुधारको, विचारको के साथ मुकाबला करो। ऋषि के समय का वातावरण देखो। फिर पता चलेगा कि उनका काम कितना कठिन था। धर्म का स्थान मजहब ने लिया था। और मजहब का चेहरा डराबना हो चुका था। उनकी करतूतो से मजहब घृणास्पद हो गया था। बचपन की शादी जोरो पर थी।। विधवाओ की चीखो पुकार से कलेजा मुह को आता था। स्त्री जाति को शुद्र और पावो की जुती समझा जाता था। शुद्रो का सर्वथा तिरस्कार था। वेद का नाम कोई नही जानता था। उसके स्थान पर इधर-उधर के गपौडे हाके जाते थे। परमात्मा को जवाब देकर, दरिया, पर्वत, वृक्ष, मडी-मसान आदि पूज्य हो गए थे। करोडो मनुष्यो को नीच समझ कर उनसे कुत्तो से भी बुरा व्यवहार किया जाता था। मजहब के ठेकेदारो ने दुकान खोल रखी थी।

और स्वय ईश्वर होकर लोगों को लूटते थे। मुक्ति मोल विकती थी। पुराणों की जहरीली शिक्षा से अपने पराए हुए जाते थे।

सुन-सुन पुराणो की कथा ऐसे बेजार हुए।
कि खुद ईसाई हुए जाके मुसलमान बने ॥

विज्ञान और फिलोसफी के सामने ला-जवाब होकर कई नास्तिक हुए। हमारे पेशवा, गिरि, पुरी, गोकलीया, मोनी, शोमी, शाकतिक और वाम मार्गी बने हुए थे। गर्जेकि—

हो गए कितने ही पाखण्डी, घमण्डी, दण्डी,
बन गया धर्म मगर मकरो-दगा की मण्डी।

न वेद रहा और न धर्म। न कर्म न विद्या, न ज्ञान, और न कोई विशेषता हाथ पर हाथ रख कर सब कुछ गवा बैठे। पश्चिमी सभ्यता के साथ, बोलचाल बदली, खुराक बदली, पुशाक बदली जहां तक कि परमात्मा भी बदल गया।

मावूद बदल गए. सजदे बदल गये, विश्वास बदल गया।
शिक्षा भी बदली, और वह विद्या बदल गई।
गायत्री मन्त्र बदला, व सन्ध्या बदल गई।

मावूद का अर्थ, जिसकी वन्दना की जाए अर्थात् ईश्वर और सजदे के अर्थ है, शीश झुकाना। वही आर्यवर्त जो संसार का गुरु था, जिसकी ज्ञान गंगा में नहा कर आध्यात्मिक रोगी नि:रोग होते थे। अब एक अन्धेर नगरी बन रहा था। न शिक्षा न उद्योग, समुद्र पार जाना पाप। यहां के वासी घड़ियाल बजाने वाले, पानी भरने वाले, गुलामी के फन्दे को गले में डाले बुजुर्गों को भला-बुरा कहने वाले। कफन के लिए भी दूसरो के मुहताज, दाने-दाने को तरसते हुए गली का रोडा बने हुए थे। भारत माता भी निराश होकर प्रभु से प्रार्थना कर रही थी।

मेरे भी फेर दे दिन ऐ, जमाना फेरने वाले।
सुना है तेरी कुदरत में गए दिन फिर भी फिरते है।

ऐसे समय में मेरे गुरु ने जन्म लिया। जब आपने सुधार के क्षेत्र में कदम रखा तो बजाए सहायता मिलने के सब ओर से उन्हें हातोत्साह करने का यत्न किया गया परन्तु आप रणभूमि में डट गए। सारा संसार एक ओर लंगोट बन्द साधु दयानन्द एक और। न कोई यार न मददगार। अकेले ही प्रभु का आश्रय लेकर प्रचलित गंगा की धारा को उल्टा बहाने लग गया। सब से पहले उसने जो उपकार किया, वह यह था कि जीवन यात्रा के लिए प्रभु ने वेद रूपी प्रकाश

दिया है, वही और केवल वही ईश्वरीय ज्ञान है और उसके अतिरिक्त न कोई ईश्वरीय ज्ञान है और न हो सकता है। ऋषि दयानन्द के उपकारों को गिनती में नहीं लाया जा सकता। उसका दूसरा बड़ा काम वेद मन्त्रों के शुद्ध अर्थ करके महीधर, सायनाचार्य और मैक्समूलर इत्यादि महानुभावो के किए गए वेद अर्थों को अनर्थ सिद्ध करना था। उन्होते घोषणा की कि वेद शुद्ध विज्ञान का भण्डार हैं और प्रभु की हर वस्तु पर जैसे मनुष्य मात्र का अधिकार है, वैसे वेद भी सारी मानव जाति के लिये है । जिस तरह सूर्य, चांद, हवा, पानी, राजा से लेकर रंक तक सब के लिए मुफ्त हैं। इसीलिए वेद भी मनुष्य मात्र की सम्पदा है। यह किसी की जद्दी मिरास नहीं। आपने फरमाया कि संसार में सुख प्राप्त करने का एक ही उपाय है धर्म का पालन करना मजहब का अर्थ है रास्ता। जो ठीक भी हो सकता है और गलत भी। रास्ते कई हो सकते हैं। मगर धर्म मानव मात्र के लिए एक ही हो सकता है। जिस तरह आग पानी, पशु-पक्षी सब अपने-अपने धर्म का पालन कर रहे और यूं ही वह धर्म को छोड़ देते हैं निकम्मे हो जाते हैं। इसी तरह मनुष्य का फर्ज है कि वह धर्म का पालन करो। रक्षा किया हुआ धर्म इन्सान की रक्षा करता है। मारा हुआ धर्म इन्सान को मार देता है दुनिया में आकर इन्सान का कर्तव्य है। परन्तु क्या कर्तव्य है कि भक्ति ही करे या युद्ध करे या सब से अलग हो जाए या मार खाने के लिए एक गाल को आगे कर दे। मुझे कोई वताए कि जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त में कैसे जीवन व्यतीत करूं ? सन्तान ही पैदा करता चला जाऊं ? चाहे वह कंगाल हो ? समाज के लिए बोझ हो, या फिर मैं अकेला ही रहूं। माता-पिता, भाई-बहिन, दोस्त दुश्मन राजा, प्रजा के साथ किस तरह वर्ताव होना चाहिए। क्या सारी आयु सांसारिक झमेलों में ही गुजार दूं या केवल भक्ति ही भक्ति करता मर जाऊं ? मुझे लोग या परलोक की तैयारी के वास्ते कोई सम्भव उपाए बता दीजिये। परन्तु इसका उत्तर निःसन्देह नकारात्मक होगा। यथार्थ मार्ग पूछना हो तो मेरे गुरु से पूछें जिसने चार वर्ण और चार आश्रम बता कर हर किसी के मानव के लिये जीवन व्यवस्था का पूर्ण प्रबन्ध कर दिया है। जिस पर चलने से न केवल आजकल की भूख, बेकारी, और सरमायादारों के अत्याचार और निर्धनों की चीखो-पुकार की समाप्ति हो जाती है। प्रत्युत संसार की यात्रा भी आसानी से तय हो सकती है। मोक्ष के द्वार भी उसके लिये खुल जाते हैं। ऋषि दयानन्द को समझने के लिये उसके जीवन का गहराई से अवलोकन कीजिए।

आतंक पीड़ित परिवार सहायता कोष

पजाब मे गत लगभग 5-6 वर्षों से ला एण्ड आर्डर की स्थिति शोचनीय बनी हुई है। उग्रवादियो के द्वारा निर्दोष लोगो की निर्मम हत्याए भी रोज के रोज हो रही है। जिसके परिणामस्वरूप परिवारो मे किसी माता का बेटा, किसी नारी का पति, किसी बहन का भाई और किन्ही बच्चो के पिता उग्रवाद का शिकार हो गए। ऐसे कई परिवार है जिनको कोई भी सहायता आज तक नही मिल सकी, न सरकार की ओर से न किसी अन्य सस्था की ओर से। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी और मन्त्री श्री सरदारी लाल जी ने पिछले दिनो 23 अगस्त को आतक पीडित गुरदासपुर जिले के फतेहगढ चूडिया क्षेत्र का आर्य समाज के अधिकारियो के साथ दौरा किया और वहा ऐसे आतक पीडित परिवारो से बातचीत की। ऐसे पीडित परिवारो को आर्य समाज द्वारा सहायता दिये जाने के लिए "आतक पीडित परिवार सहायता कोष" के नाम से एक फण्ड चालू किया गया है। जिसके सम्बन्ध मे सभी आर्य मर्यादा प्रेमी पाठको ने श्री सभा प्रधान जी की अपील आर्य मर्यादा के 14 सितम्बर 1986 के अक मे अवश्य पढी होगी। सभा मे इस फण्ड के लिए धन आना प्रारम्भ हो गया है जिसमे दानदाताओ की सूची "आर्य मर्यादा" मे प्रकाशित कर दी जाती है। आज तक हमारे पास जो दान प्राप्त हुआ है। वह 42166 रु 30 पैसे हो गया है जिसमे कतिपय आर्य समाजो और व्यक्तिगत रूप से आर्य जनो ने दिल खोल कर सहायता की है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से भी 5000 रु की राशि इस फण्ड मे प्राप्त हुई है। इस दिशा मे आर्य समाज अबोहर का योगदान अति सराहनीय और अनुकरणीय है जिसने 11 किश्तो मे अब तक हमे 20309 रु की राशि भेजी है। कई आर्य समाजो ने इस फण्ड मे अभी तक अपना खाता नही खोला। मैं आशा करता हू कि जिन-जिन आर्य समाजो ने और आर्य जनो ने इस फण्ड मे अभी तक दान नही दिया वे इस

ओर ध्यान देकर जल्दी ही अपनी सात्विक कमाई में से अवश्य आहुति डालेंगे। जो राशि हमे प्राप्त हुई है इसका वितरण पीड़ित परिवारों में शीघ्र ही करने की व्यवस्था भी की जा रही है।

पहली किश्त के रूप में तीस हजार रुपए की राशि फतहगढ़ चूड़ियां (जिला गुरदासपुर) के 6 आतंक पीड़ित परिवारों में पांच-पांच हजार रुपया प्रति परिवार 19 अक्तूबर को आर्य समाज मन्दिर फतेहगढ़ चूड़ियां मे पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज एवं सभा के मन्त्री गण द्वारा बांटी गई है।

सूची—

35000 रुपए निम्न प्रकार से बाटी गई :—

1.	श्रीमती सुदेश रानी धर्मपत्नी श्री राज्यपाल	5000-00
2.	श्रीमती दर्शना रानी धर्मपत्नी श्री कुन्दनलाल मोदी	5000-00
3.	श्रीमती शकुन्तला रानी धर्मपत्नी श्री जनकराज	5000-00
4.	श्रीमती कौशल्या देवी धर्मपत्नी श्री मंगलदास	5000-00
5.	श्रीमती आशारानी धर्मपत्नी श्री राम लुभाया स्याल	5000-00
6.	श्रीमती कृष्णा वन्ती धर्मपत्नी श्री बनवारी लाल कालिया	5000-00
7.	श्रीमती लीला वन्ती धर्मपत्नी श्री ब्रह्म सेवक कालिया	5000-00
		35000-00

दानदाताओं का मैं हार्दिक धन्यवाद करता हूं और जिन्होंने अभी तक अपना शुभ दान फण्ड में नही दिया उनको शीघ्राति शीघ्र आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में दान भेजने का सानुरोध प्रार्थना करता हूं। आतंकवाद का दमन करने के लिए अभी तक प्रभावशाली व्यवस्था नहीं की जा सकी है। अतः इस फण्ड में राशि दानदाता भेजते ही रहे, ताकि जब तक शान्ति का वातावरण पंजाब में स्थापित नहीं हो जाता तब तक आर्य समाज के द्वारा आतंक पीड़ित परिवारों की सहायता निरन्तर जारी रहे।

—ब्रह्मदत्त शर्मा
सभा महामन्त्री

आज कहां हो

वेद सुधा बरसाने वाले,
ओम् के गीत सुनाने वाले,
आर्य जाति बनाने वाले,
वीर दयानन्द आज कहा हो ?

चले गए हो कौन से देस,
बदल लिया है कैसा भस,
दिल मे उठ रही है ठस,
1
आखो से आज क्यो निहा हो ?

भूले क्या भारत की फिजाए,
तुझ को भायी कैसी हवाए,
कैसी हवाए कैसी घटाए,
2 3
कौन सी जा यह नगमा कुना हो ?

दिल की कथा किसे सुनाए,
विपता अपनी किसे बताए,
घाव अपने किसे दिखाए,
कोई तो अब अपना यहा हो ?

तुम आओ, तो हिन्दी बदले,
उठें, जागे, देखे, सम्भल,
विपताए कुछ देर तो दम ले,
पैदा इक नया जहा हो ।

1 छिपे हुए 2 स्थान 3 प्रवचन

—पुष्पलता

धन्य हे महर्षि

लेखक— श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

स्वामी जी 20 मई सन् 1868 के दिन फिर कर्णवास आये और अपनी कुटिया मे आसन जमाया। स्वामी जी अत्यन्त निर्भय थे। यदि वह निर्भय न होते तो सुधार के काम मे हाथ ही न डालते। सुधार का कार्य शेरो का है, गीदडो का नही। जो मनुष्य लोक-निन्दा से, किसी पागल के आक्रमण से या किसी शक्तिशाली के शस्त्र से डरता है, वह सदियो से जमी हुई कुरीति रूप काई को उखाडने का प्रयत्न नही कर सकता। कुरीति और रूढि के कटीले जङ्गलो को तर्क और सुबुद्धि के कुठार से वही काट सकता है जिसके हृदय मे वाणी या वाण का भय नही है। स्वामी दयानन्द ने सदियो से प्रचलित अन्ध विश्वासो और रूढियो के खण्डन का बीडा उठाया था, उन्होने कुछेक महन्तो और पुरोहितो और और टीकाधारियो द्वारा कुचले हुए जनता के अधिकारो को फिर से लगाने और अधिकारियो को सौंपने का सकल्प किया था। यदि ऋषि शेर न होता, तो भारत भर के सम्प्रदायाचार्यों को न ललकार सकता।

कर्णवास मे स्वामी जी की निर्भयता का एक दृष्टान्त घटित हुआ। बरेली के रईस राव कर्णसिंह गङ्गा स्नान के लिए कर्णवास आये। कर्णसिंह वृन्दावन के वैष्णवाचार्य रङ्गाचार्य के शिष्य थे और तिलक छाप लगाते थे। स्वामी जी प्रसिद्धि सुनकर वह उनके स्थान पर पहुचे। कर्णसिंह की प्रकृनि बहुत उग्र थी। उसने सुना था कि स्वामी जी तिलक-छाप का खण्डन करते है, इसलिए पहले से ही उसके क्रोध का पारा चढा हुआ था। स्वामी जी ने आदरपूर्वक पास के आसन पर बैठने के लिए कहा। कर्णसिंह ने उत्तर दिया कि 'हम वही बैठेगे, जहा तुम बैठे हो।' इस पर स्वामी जी ने जिस शीतलपाटी पर वह बैठे थे,, उसका कुछ भाग खाली कर दिया। यहा तो झगडा न बढा। झगडा पैदा करने पर तुला हुआ कर्णसिंह निराश हुआ, तब नया ढग प्रारम्भ हुआ। राव साहिब बोले कि तुम

गङ्गा जी को नहीं मानते ?" स्वामी जी ने कहा कि 'जितनी गङ्गा जी हैं उतनी मानते हैं ।

कर्णसिंह—'कितनी ?"

स्वामी जी—'हम लोगों की गङ्गा जी तो कमण्डलु ही हैं ।'

इस पर कर्णसिंह ने गङ्गा स्तुति पर कुछ श्लोक पढ़े ।

स्वामी जी—"यह सब तुम्हारी गप्प है। वह केवल पीने का पानी है, उससे मोक्ष नही हो सकता, मोक्ष तो केवल कर्मो से होता है, तुमको पोपों ने बहकाया है ।" फिर स्वामी जी ने उसके माथे पर तिलक छाप देखकर कहा—

'तुमने क्षत्रिय होकर मस्तक पर यह भिखारियों का चिन्ह क्यों धारण किया है ?'

कर्णसिंह—'हमारे स्वामी के सामने आपसे बातचीत भी न होगी, तुम उन के सामने कीड़े के तुल्य हो, तुझ से उनके जूते उठाते है ।'

स्वामी जी ने हसकर उत्तर दिया 'कि अपने गुरु को शास्त्रार्थ के लिए बुलाओ, यदि उनमें आने की सामर्थ्य न हो तो हम वहां चलें ।'

इस पर क्रोध में आकर कर्णसिंह बेतुकी कहने लगा और स्वामी जी को धमकाने लगा। धमकी में आने वाले व्यक्ति दूसरे ही होते है। स्वामी जी ने धमकी के उत्तर मे चक्राङ्कित सम्प्रदाय का बड़े बल से खण्डन किया और अन्त में कहा कि 'तुम क्षत्रिय हो' जो रामलीला मे लौंडो का स्वांग भरवा, महापुरुषो की नकल उतरवा उनको नचवाते हो, अगर तुम्हारी बहन-बेटी को कोई नचवावे तो तुम्हें कैसा बुरा लगे ?' यह सुन कर कर्णसिंह की आखें लाल हो गई, नथुने फड़कने लगे और हाथ तलवार की मूठपर गया। कर्णसिंह का एक पहलवान आगे बढ़ कर स्वामी जी पर हाथ डालने लगा । ब्रह्मचारी दयानन्द ने एक झटके से पहलवान को दूर फेंक दिया और सिंह के सदृश गरज कर कर्णसिंह से कहा—

'अरे धूर्त ! यदि लड़ना है तो जयपुर और धौलपुर के राजाओ से जा लड़ो और यदि शास्त्रार्थ करना है तो अपने गुरु रङ्गाचार्य को वृंदावन से बुलवा लो ।

इतने में वहां उपस्थित जनता में से ठाकुर कृष्णसिंह आदि राजपूत लट्ठ लेकर खड़े हो गए और कर्णसिंह को ललकारने लगे । कायर कर्णसिंह अपने पहलवानों को साथ लेकर वहां से चला गया ।

बहुत से लोगो ने स्वामी जी से प्रार्थना की कि इस घटना की सूचना पुलिस मे की जाए। स्वामी जी ने स्मरणीय उत्तर दिया। आपने कहा कि 'यदि वह अपने क्षत्रियत्व को पूरा न कर सका तो हम क्यो अपने सन्याम धर्म से पतित होवें, सन्तोष करना ही हमारा परम धर्म है।' इसके पीछे भी कर्णसिंह कई नीच उपायो से अपना क्रोध शान्त करने का यत्न करता रहा। स्वामी जी को मारने के लिये उसने कुछ बदमाश भेजे। योगी का हुङ्कार सुन वह इस प्रकार बदहवास भागे कि गिर कर मरते-मरते बचे। कर्णसिंह ने कुछ वैरागियो को भी स्वामी जी के मारने के लिये तैयार करना चाहा, पर किसी की हिम्मत न पडी। आखिर बात बढ गई, स्वामी जी के भक्त राजपूतो ने लटठ लेकर कर्णसिंह के बगले को घेर लिया और निकल कर लडने के लिये ललकारा। कर्णसिंह के श्वसुर ठाकुर मोहनसिंह ने भी उसे समझाया कि यदि खैर चाहते हो तो यहा से भाग जाओ। कायर कर्णसिंह दूसरे रोज कर्णवास से भाग गया, और घर जाकर पागल हो गया। मणि और काच की प्रतिद्वन्द्विता मे मणि ने मणिता प्रकट कर दी और काच ने काचता। शेर की खाल ओढ कर सियार केसरी नही बन सकता, जो हृदय से शेर है वही असली शेर है। स्वामी दयानन्द हृदय के शेर थे।

कर्णवास से आसन उठा स्वामी दयानन्द चाशनी, ताहरपुर और अहार होते हुए अनूपशहर पहुचे। जहा गये, वहा मूर्ति-पूजा, मृतक-श्राद्ध और फलित ज्योतिष आदि का खण्डन किया।

अनूपशहर मे स्वामी जी लगभग चार मास तक रहे। जिन लोगो ने उस समय उन्हे देखा था, वह देर तक भी उस मूर्ति को न भूल सके। लम्बा कद, सुडौल शरीर, चौडी छाती, सुन्दर और प्रभावशाली चेहरा, शेर की आख को झपका देने वाली आखे, उन्नत और विशाल मस्तक—यह बनावट जिसने एक बार देख ली वह उसे कैसे भूल सकेगा ? उस समय एक कौपीन ही स्वामी जी का परिच्छद था। सर्दी हो या गर्मी—आधी हो या पानी—यही परिच्छद शरीर की रक्षा के लिये काफी था। प्रातः काल ब्राह्म मुहूर्त मे उठ कर नित्यकर्म से निवृत्त हो कर स्वामी जी समाधिस्थ हो जाते और घण्टो तक ध्यानावस्थित रहते। उसके पश्चात् एकत्र हुई प्रजा को धर्म का उपदेश देते। जो भिक्षा आ जाती, उसी से निर्वाह कर लेते। उपदेश प्रतिदिन ही होता। पण्डित लोग अपने बुद्धिबल की परीक्षा के लिए आते। उनमे से कोई शहर से

बाहिर ही रुक जाते, जो शहर में आते वह सामने आकर शास्त्रार्थ करने की अपेक्षा दूर से गाली-प्रहार को ही बहादुरी समझते । जो सामने आ जाते, वह प्रत्युत्पन्न-बुद्धि, युक्तियुक्त भाषण और ब्रह्मचर्य के ओज से प्रदीप्त आंखो के सामने या तो सिर झुकाते या शीघ्र ही कोई बहाना बना कर सरकने का उपाय ढूंढते । प. हीरावल्लभ और प. टीकाराम मूर्तिपूजक थे । कई बार स्वामी जी से भिड़े भी, परन्तु अन्त मे शिष्य बन गये और मूर्तियों को गङ्गा में प्रवाहित कर दिया । उनकी देखा-देखी अनेक गृहस्थो ने भी मूर्तिपूजा को त्याग कर पूजा की सामग्री भागीरथी के पवित्र प्रवाह के अर्पण कर दी ।

मूर्तियो का जल-प्रवाह उन लोगो से न सहा गया, जिनकी उदरपूर्ति का साधन ही मूर्ति-पूजा था । ब्राह्मण लोग नाराज हो गए और पराजित कायरो के हथियारो से कार्य लेना आरम्भ किया । स्वामी जी को एक ब्राह्मण ने पान मे जहर दे दिया । स्वामी जी को पता चल गया और उन्होने न्योली कर्म द्वारा विष को शरीर से निकाल दिया । यह घटना वहां के तहसीलदार सैयद मुहम्मद को पता लग गई । वह स्वामी जी का बड़ा भक्त था । उसे ब्राह्मण की दुष्टता पर बड़ा क्रोध आया । ब्राह्मण को उसने गिरफ्तार कर लिया और यह जानने के लिए कि उसे क्या दण्ड दिया जाए, स्वामी जी के निकट आया । स्वामी जी उससे बोले तक नही । वह आश्चर्यित हुआ और रुष्टता का कारण पूछने लगा । स्वामी जी ने उस समय जो उत्तर दिया, वह उनके सारे जीवन की चाबी है और प्रत्येक हृदय मे अंकित करने योग्य सन्देश है । उत्तर निम्नलिखित था :—

'मैं संसार को कैद कराने नहीं आया हूं वरन् कैद से छुड़ाने आया हूं । यदि वह अपनी दुष्टता को नहीं छोड़ता तो हम अपनी श्रेष्ठता को क्यों छोड़ें ?'

स्वामी जी आज्ञा से तहसीलदार ने उस ब्राह्मण को रिहा कर दिया ।

गुरुकुल कांगड़ी
च्यवन
प्राश
उत्तम, स्वादिष्ट, रसायन
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
हरिद्वार
गुरुकुल चाय
पायोकिल
भीम सेनी सुरमा
ब्राह्मी रसायन
स्मरण शक्ति के लिए
द्राक्षासव
सिद्ध मकरध्वज
स्वास्थ्य के लिए
गुरुकुल कांगड़ी
फार्मेसी की औषधियों
का सेवन करें

टैलीफोन 74250 | रजि. नं. पी.जे.एल 55
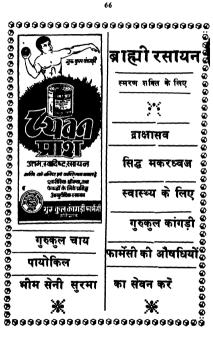
वर्ष 18 अंक 32, 26 कार्तिक सम्वत् 2043 तदानुसार 9 नवम्बर 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

ईश्वर के विविध नाम और मंगलाचरण

लेखक—श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम ए एल टी
डी ए. वी कालेज गोरखपुर

सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर ओ३म् का विभाजन 9 नामो मे किया और उन नामों में जड और चेतन ससार की सब अवस्थाओ और शक्तियो का समावेश हो जाता है। इसलिए इन अवस्थाओ और इन शक्तियो की दृष्टि से 'ओ३म्' की व्याख्या 9 शब्दो द्वारा पूर्ण हो जाती है अत: उपर्युक्त वर्गीकरण पूर्ण वर्गीकरण प्रतीत होता है और इसीलिए 'ओ३म्' शब्द का जाप करने का विधान किया गया है। इससे परमेश्वर के 'पुरुष' रूप का पूर्णज्ञान होता है।

परन्तु 'ओ३म् शब्द की व्याख्या के रूप मे किये गए स्वामी जी के वर्गीकरण को देख कर स्वाभाविक प्रश्न उत्पन्न होता है कि विराट्, अग्नि आदि नाम परमेश्वर से भिन्न अर्थों के वाचक क्यो नही ? ब्रह्माण्ड पृथिवी आदि भूत, इन्द्रादि देवता और वैद्यक शास्त्र मे शुण्ठ्यादि औषधियो के ये नाम है या नही ? और यदि ये नाम पृथ्वी आदि भूतो औषधिया इत्यादि के हो तो परमेश्वर के कैसे हुए ?

स्वामी जी ने इसका उत्तर बडे सरल और रोचक ढग से दिया है। उन्होंने बताया कि यह शब्द परमात्मा के अर्थ के वाचक भी हैं। क्योकि एक वस्तु के अनेक नाम और एक नाम की अनेक वस्तुए हुआ करती हैं। परन्तु बात करते हुए, बडे-बडे शास्त्रो एव ग्रन्थो का अध्ययन करते हुए हमे प्रकरण का ध्यान रखना चाहिए। यदि हम आकाक्षा, आसक्ति और प्रकरण का ध्यान रखे बिना अर्थ करेंगे तो सभ्य समाज मे उपहास के पात्र बन जाएगे। अपने कार्यों मे भी हमे असफलता मिलेगी जैसे 'सैन्धव' शब्द दो अर्थों का वाचक है। 'सैन्धव' शब्द का अर्थ नमक भी है और सैन्धव शब्द का अर्थ घोडा भी। यदि कोई व्यक्ति अपने सेवक से भोजन करते समय 'हे भृत्य त्वं सैन्धवमानय' कहे अर्थात् हे भृत्य तू सैन्धव ला कहे और वह सैन्धक (नमक) के स्थान पर सैन्धव (घोडा) लाकर खडा कर दे तो हम अवश्य ही उस भृत्य को मूर्ख समझेंगे। पर यदि इसके विपरीत गमन समय मे लवण और भोजन समय मे घोडे को लावे तो उसका स्वाभाविक परिणाम यह होगा कि उसका स्वामी उससे क्रुद्ध होकर कहेगा कि तू मूर्ख है, तुझे तनिक भी बुद्धि नही, जरा सी बात नही समझता कि गमन समय मे घोडा और भोजन के समय नमक लाना चाहिए। इसी प्रकार अग्नि आदि शब्दो का भी हमे प्रसगादि के द्वारा ठीक अर्थ करना चाहिए। परन्तु प्रसगादि का यह भी तात्पर्य नही कि हम अग्नि का अर्थ जल और जल का अग्नि के लिए प्रयोग प्रारम्भ कर दें। ऐसी दशा मे अब प्रश्न उठता है कि अग्नि आदि शब्द परमात्मा के नाम के वाचक कैसे हैं।

ठीक है, वैदिक शब्दो का अर्थ खोजने के लिए हमे इधर-उधर अधिक भटकने की आवश्यकता नही। उसके लिए हमे वेदो के पास जाना चाहिए। वैदिक शब्दो के कोष तो वेद स्वय ही हैं। वेदो मे अनेक ऐसे प्रमाण आते हैं जिन से अग्नि आदि शब्द परमात्मा के यथार्थ रूप मे प्रयुक्त हुए हैं। उदाहरण के लिये निम्न मन्त्र देखे जा सकते हैं :—

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो
दिव्य: स सुपर्णो गरुत्मान।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं
यमं मातरिश्वानमाहु ॥

जो एक अद्वितीय वस्तु ब्रह्म (परमात्मा है उसके ही इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, सुपर्ण, यम गरुत्मान और मातरिश्वा आदि सब नाम हैं —

इसी प्रकार एक और मन्त्र देखिये :—

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद् वायु
तदु चन्द्रमा।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आप.
स प्रजापति ॥

अर्थात् वह परमात्मा ही अग्नि, आदित्य, वायु, चन्द्रमा, शुक्र, ब्रह्म, आप और प्रजापति है।

इस प्रकार 'इन्द्र सूर्यमरोचयत्' प्राणस्य नमो यस्य सर्वमिद वशे इत्यादि अनेको प्रमाणो से यह बात सिद्ध की जा सकती है कि वेद मे यह बात स्पष्ट रूप से पाई जाती है कि अग्नि आदि नाम भौतिक पदार्थों और परमात्मा के भी है। इसी बात को ध्यान मे रखते हुए स्वामी जी ने यह बताया है कि किस शब्द द्वारा हम परमेश्वर के किस गुण को, किस शक्ति को याद करते है। वास्तव मे परमेश्वर के अनन्त गुण, कर्म और स्वभाव है इसलिए उसके अनन्त नाम भी हो सकते हैं। उनके ज्ञान के लिए हमे वेदादि शास्त्रो का विधिवत अध्ययन करना चाहिए। यदि हम उनका पूरा-पूरा अध्ययन करेंगे तो हमे पूरा ज्ञान हो सकेगा अन्यथा ज्ञान के बिना सशयो मे पडे रहेंगे। परिणाम होगा, सशयात्मा विनश्यति' अर्थात् हम अपना नाश स्वय कर लेंगे।

इस प्रकार सरस्वती, नारायण, विष्णु आदि परमेश्वर के अनन्त गुणो के आधार पर अनन्त नाम तथा उनकी व्युत्पत्तिया प्रदर्शित करने के बाद मगलाचरण सम्बन्धी प्रश्न उपस्थित हुआ है। प्रश्न यह है कि यदि सभी नाम परमेश्वर के है तो हम जब नया कार्य शुरू करें तो उसके प्रारम्भ मे मगलाचरण करे या न करे ?

स्वामी जी ने उस शका का निवारण करते हुये लिखा है कि "मगलाचरण शिष्टाचारात् फल दर्शनाच्छ्रुतितश्चेति' यह साख्य शास्त्र का वचन है। इसका भाव यह है कि जो न्याय, पक्षपात रहित, सत्य, वेदोक्त ईश्वर की आज्ञा है उसी का यथावत् सर्वत्र और सदा आचरण करना मगलाचरण कहलाता है। इसलिए ग्रन्थ के आदि मध्य और अन्त मे मगलाचरण करन का तो यह अभिप्राय होगा कि इन स्थानो पर तो मगलाचरण हो अन्यत्र चाहे कुछ भी हो। इसलिए हमे न केवल आदि मध्य और अन्त मे अपितु सर्वत्र ही मगलाचरण करने का लक्ष्य रखना चाहिए। और जब सर्वत्र मगलाचरण होगा तो उस दशा मे किसी विशेष स्थान पर मगलाचरण करने का कोई विशेष प्रश्न ही नही उठता।

अब रहा प्रश्न यह कि जब परमेश्वर के अनन्त नाम है तो नारायण, सरस्वती शिव आदि भी है। इसलिए ग्रन्थो मे "सीतारामाभ्या नम:" "राधाकृष्णाभ्या नम" "नारायणाय नम:" "सरस्वत्यैनम" "दुर्गायैनम" इत्यादि लेख देखने मे आते है इनका ग्रन्थ या कार्य के प्रारम्भ मे प्रयोग उचित है या अनुचित।

इन नामो से कही-कही परमेश्वर का नाम भी होता है परन्तु यह मानवीय पुरुषो के भी नाम हैं और इन पुरुषो को परमेश्वर मानकर प्रयुक्त करने से, असत्य प्रयोग होने के कारण प्रारम्भ से अमगल का कार्य हो जाता है अत इन का प्रयोग ठीक नही। ऋषि ग्रन्थो मे भी यह प्रयोग नही है। वहा 'ओ३म्' या 'अथ' ही देखने मे आते हैं। जैसे—

'अथ शब्दानुशासनम् अथेत्ययं शब्दोऽधिकारार्थ प्रयुज्यते। व्याकरण महाभाष्य।

'अथ योगानुशासनम्, 'अथेत्यधिकारार्थ' योग शास्त्र'। ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत' छान्दोग्योपनिषत्। 'ओमित्येदक्षरमिदं सर्वं तस्योपाख्यानम्। माण्डूक्य उपनिषद्।

इस प्रकार प्रथम समुल्लास म स्वामी जी ने सक्षेप से ईश्वर के नामादि के विषय मे लिखा है। 'ओ३म्' को परमात्मा का सर्वोत्कृष्ट नाम बतलाया है तथा मगलाचरण का किसी विशेष स्थान की अपेक्षा सर्वत्र प्रतिपादन किया है।

मेरी विदेश यात्रा लंदन (इंगलैंड)

लेखक—श्री आशुराम आर्य

28 जून को श्वेत एयर वेज से मैं श्रीमती जी के साथ सायं 3-30 बजे लंदन के वायुयान केन्द्र हीथरो पहुंच गया। जहां पुत्री, सन्तोष, सकृता प्यारे अशोक जी और अरविन्द जी परिवार सहित आये हुये थे। यहा के लोगो का उत्तम व्यवहार अत्यन्त अनुशासन मधुर वाणी और कम बोलना, अधिकतर लड़की के बने हुये घरों में सब और शौचालय, स्नानागार और सीढियों पर भी सुन्दर-सुन्दर कालीन बिछे हुये और इन्हें सुन्दर स्वच्छ बनाए हुए। प्रत्येक घर के भाग मे फूलो के गमले पाकशाला भोजनशाला बाथरूम आदि सब जगह पर रखे हुए बाहर और पीछे के प्रांगण (लान) भी गुलाब के फूलो से भरे हुए तथा हरि-हरि घास के पलाट आदि इन सब से पूरा घर एक गुलाब वाटिका ही मालूम देता है। बाल युवा वृद्ध स्त्री, पुरुष सभी सुन्दर पहरावा रखते है और सर्वथा चुस्त। ताकि तेज-2 चलने भाग-दौड़ और अपने सभी कामो को अपने हाथो करने के लिए, कार्यालयो मे ठीक समय पर पहुंच कर अतीव यकसूई से काम मे तत्परता, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए दोनो हाथो मे बडी छोटी अटैचियां कन्धो पर बडे-2 थैले, बैग, पीठ पर बंधा बिस्तर आदि खाना-पकाना घर की सफाई माली का काम खुरपा, कस्सी, कुल्हाडी, बाढ़ काटने की कैंची, घास काटने की मशीन आदि सभी घरों में होती हैं। जिन से स्वयं काम करते हुए यह लोग सभी स्वस्थ सुन्दर और खुश रहते हैं वहा इंगलैंड सरकार के प्रजा रक्षण और भरसक सहायता से इंगलैंड के लोग सदा हर्ष और उल्लास से भरे रहते हैं।

बच्चे के गर्भ में आने को घडी से लेकर 16 वर्ष की आयु तक अपूर्व सहायता सरकार मां और बच्चे दोनों को देती है। चार-पांच वर्ष की आयु में शिक्षा आरम्भ होने पर बच्चों को स्कूल में शिक्षा पुस्तकें सभी स्टेशनरी कलम-दवात, कापी, पैंसिल आदि मुफ्त प्रातः दूध, दोपहर को खाना, सायं छुट्टी के समय चाय आदि देकर ही घर भेजते हैं। हस्पतालों मे दवाई मुफ्त टीके और आप्रेशन टैस्ट आदि सब मुफ्त 65 वर्ष लम्बी कार्य की अवधी फिर पैंशन और 60,65 वर्षों के सभी स्त्री-पुरुषों को बसों के पास मुफ्त और विद्यार्थियों को भी। वृद्ध स्त्री, पुरुष आदि इधर-उधर समाज संस्था बाग-बगिचों और बड़ी-2 सुन्दर विशाल पार्कों में आते-जाते भ्रमण करते हुए आप को खुश-खुश हंसते खेलते दिखाई देते हैं। इस कारण इनकी आयु भी लम्बी होती हैं। हर घर में एक दो कारें होती हैं जितने कार्यरत हो बेटा-बेटी, माता-पिता आदि जब वे एक दूसरे से मीलो दूर हो तो अलग-2 गाड़ियां होती हैं या बसों पर गमन आगमन होता रहता है। बसों टयूबो, अंडर ग्राऊंड (भूमिगत) रेलवे और ऊपर भूमि पर चलने वाली ब्रिटस रेलवे का ऐसा उत्तम सुप्रबन्ध व्यवस्था है कि हर दो चार मिन्ट पर प्रत्येक ट्रासपोर्ट मिल जाती हैं इत्यादि ऐसा सब होने पर वहां राजा प्रजा खुशहाल न हो तो कहां होंगे। इसलिये इंगलैंड का राज्य नैशनल हैल्थ सोशल स्क्योरिटी के नाते-जगत भर में प्रसिद्ध हैं।

यह सब विस्तृत विवरण दैनिक पत्रो में भेजा है वहा देख लीजिएगा यहां तो थोडा दिग् दर्शन कराया है और आर्य समाज का वैदिक धर्म प्रचार।

लंदन आर्य समाज—वेद धर्म प्रचार

6 जुलाई को मैं लंदन की आर्य समाज में जो ईलिंग रोड़ पर सुन्दर भवन पर निर्मित है व्याख्यान के लिये गया जहा पर भारत से गुरुकुल कागड़ी के वाईस्चांस्लर आई. ए. एस. आर्य पुरुष श्री बलभद्र कुमार जी आहूजा और प्रिंसीपल जैन जी दिल्ली से पधारे हुए थे हम तीनों का स्वागत अधिकारियों ने करते हुए मेरे उर्दू वेद भाष्य की भरपूर प्रशंसा की। पहले भी पांच वेद सैट ऋग और यजुर्वेद पुत्री सुकृता द्वारा भेजे थे और भी लोगों ने कुछ लिये। वेद उर्दू भाष्य क्यों किया इसका विवरण और वेद मन्त्र व्याख्यानादि के और भरसक धन्यवाद के पश्चात् जलपानादि से सब का स्वागत किया गया जो कि प्रथा है कि जो यजमान बनेंगे जिसे होस्ट कहते हैं वही जलपान वा प्रीति भोजन देते हैं। किसी के बेटे-बेटी का जन्मदिन हो या अपने प्यारे पूज्यों का स्मृति दिवस आदि उपलक्ष हों तो वे आकर यजमान बन यज्ञ करते और यह सब देते हैं और समाज को दान भी। थाली फिरती है तो काफी पौंड दान पात्र में आ जा जाते हैं। लगभग डेढ़ दो सौ स्त्री पुरुषो की उपस्थिति हो जाती है।

इस समाज की रीढ की हड्डी तो प्रो. सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज है और लग्नशील मन्त्री श्री अमरनाथ विरधर, प्रधान श्री धर्मवीर जी, श्रीमती सावित्री छाबड़ा, दयावती कपूर, वेदवती शर्मा, आदि सब मिल-जुल कर प्रेम प्यार से सेवा कर रहे है। सा. सत्सग 2-30 बजे आरम्भ हो कर सायं 6 बजे सम्पन्न होता है।

लैस्टर में—

13 जुलाई को लैस्टर का प्रोग्राम होने से हम 11-7-86 की शाम को यहा आ गये। क्योंकि इंगलैंड में 5 दिन काम के होते है और सामाजिक कार्यक्रम मिलना-जुलना घर का राशन कपड़ा आदि क्रय-विक्रय, दुख-सुख आदि में आना जाना यह सभी काम शुक्रवार को सायं से रविवार रात्रि तक ही होते रहते है 5 दिन तो यहां के बाल-बच्चे बूढ़े जवान सभी अपने घरो और कार्यालयों में मशीन की तरह जुड़े हुये रहते हैं। यहां चण्डीगढ़ के मान्य आर्य समाजी परिवार चौ. सन्तराम जी जो आ. स. सैक्टर 7 चण्डीगढ़ के साथ रहते है उन की पुत्री कमलेश श्री गुरबख्श राय का घर है जो मेरा प्यारा परिवार है वे सभी बाल बच्चो सहित कोच अड्डे पर लेने आये हुये थे। 125 मील की यात्रा लंदन से 2-30 घण्टे में कोच बस से की। यहां की कोच बसें हमारी डीलक्स आदि से बहुत बेहतर हैं और अत्यन्त सुखदायक हैं। लैस्टर लंदन के उत्तर में 2-30 लाख को जनसंख्या का नगर है जहां अफ्रीका से आये हुए गुजराती भाईयों ने इसे व्यापार का केन्द्र बना दिया है। यहां की इनकी मारकीट लंदन के साऊथ हाल जैसा मिनी-गुजरात ही मालूम होता है। इन्होंने एक मन्दिर सुन्दर बनाया हुआ है जहां सभी अपने विवाह आदि सामाजिक कृत्य भी करते हैं जहां तहां गुजराती बाल वृद्ध देवियों की भीड़ ही आपको दिखाई देगी पुराना नगर गोरों के बाजार आदि अलग हैं जहां अधिक उनकी बस्ती दिखाई देती है। इंगलैंड में लंदन को साउथहाल की मारकीट पंजाबियों को नं. 1 है तो लैस्टर के गुजरातियों को नं. 2 पर।

हम अपने प्यारे परिवार में रहते और सत्संग आदि करते कराते 2 दिन यहां रहे जहां प्रातः सायं हवन सन्ध्यादि नित्य कर्म होता रहा। प्रिय कमलेश गुरबख्श जी के पुत्र राहुल और पुत्री अनुराधा आई श्री सोमनाथ ऊषा जी इन के पिता सिरीराम जी माता जी इन सब ने बड़ी श्रद्धा उत्साह और प्रेम से सेवा की और सत्संगों में भाग लिया। पिता जी इनके बंटवारे के समय लाहौर से शिमला आ गए थे जहां इनकी सर्विस नियुक्त हुई। वैसे यह नवांशहर दोआबा (जालन्धर) के रहने वाले हैं किसी तरह से जल्दी ही पंजाब की सरकारी नौकरी से इन्होंने मुक्ति पाकर इधर आ गये अपनी भी नौकरी अच्छी ढूंढ ली और दोनों पुत्रो को भी लगवा दिया दोनों को अलग [illegible] कोठियां हैं और गाड़ियां भी [illegible] हैं इस प्रकार हम रविवार की साय को वापसी की टिकटों पर लंदन बेटी सन्तोष अमृता के घर आ गये।

—साऊथ एम्पटन—

20 जुलाई को मेरा व्याख्यान साऊथ ऐम्पटन के वैदिक सोसायटी मन्दिर में था। यह नगर भी समुन्द्र के किनारे पर बड़ा नगर है जो लंदन से 80 मील की दूरी पर है। प्रायः पौने एक घण्टे कोच में लगते हैं। यहां ही गत वर्ष मेरी दूसरी पुत्री सुकृता का विवाह प्रिय अरविन्द जी के साथ हुआ था। जिस का पाणीग्रहण पुत्री संतोष और प्यारे अशोक जी ने किया था और सम्पूर्ण व्यवस्था भी। हम तो जा नहीं सके थे केवल दिल्ली से अपनी पुत्री स्वराज्य को ही भेज दिया था। उसी मन्दिर में ही मेरा व्याख्यान [illegible], जिसके इन्चार्ज श्री महेश [illegible] और उनकी धर्म पत्नि श्रीमती कमलेश जी तन-मन-धन से और सुदृढ़ संलग्नता से करने में प्रतिदिन तत्पर रहते हैं। यह परिवार भी जालन्धर से 12 वर्ष से आया हुआ सम्पन्न है। माता स्वर्ण देवी और प्रधान श्री जीवन प्रकाश जी चोपड़ा भी पंजाब से बहुत देर से आकर हिन्दू संगठन के इस मन्दिर में श्रद्धापूर्वक सेवा में तत्पर हैं और उनकी धर्म पत्नि दर्शना जी भी। इन सब की इच्छा पर वेद भाष्य का सैट भी भेंट दिया। उन्होंने सवा पांच पौंड गायत्री प्रचार समिति कोष में दिये। यहां पर श्री श्री ललित कुमार पत्नी सीमा के साथ यजमान बने उनकी पुत्री प्रीति का मुंडन संस्कार था। उन्हीं की ओर से ही भोजन हुआ सब ने प्रीतिपूर्वक सारे समारोह में भाग लिया।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

आर्य समाज को राजनीति का अखाड़ा न बनाओ

आर्य समाज और राजनीति इस विषय पर सम्भवतः उसी समय से ही विवाद चल रहा है, जब से आर्य समाज की स्थापना हुई है। महर्षि दयानन्द के जीवन में यह प्रश्न नहीं उठा था, उस समय आर्य समाज नया-नया बना था और हमारी राजनीति ने यह रूप धारण न किया था जो कि उसने आज कर लिया है। पिछले लगभग 50 वर्ष से हम यह सोचते चले आ रहे हैं कि आर्य समाज को राजनीति में सक्रिय भाग लेना चाहिए या नहीं ? कई आर्य महासम्मेलनों में यह प्रश्न उठाया गया। परन्तु हम आज तक किसी निर्णय पर नहीं पहुंच सके मैं इसे भी आर्य समाज की एक शिथिलता समझता हूं। यह एक ऐसा विषय है, जिसका प्रभाव आर्य समाज पर भी पड़ रहा है। स्वाधीनता से पहले आर्य समाजी अधिकतर कांग्रेस में सम्मिलित हो गये थे और देश के स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया करते थे। इसलिए उनका झुकाव कांग्रेस की तरफ ही रहता था। यही कारण था कि अंग्रेज भी यह समझता था कि कांग्रेस की सब से बड़ी शक्ति आर्य समाज है और आर्य समाजी उस पर गर्व किया करते थे। आजादी के बाद स्थिति बदल गई, हमारे देश में कई राजनैतिक पार्टियां बन गई और उसी के साथ यह प्रश्न भी उठ खड़ा हुआ कि आर्य समाजी किस पार्टी के साथ रहें। किसी न किसी कारण आज तक इसका कोई निर्णय नहीं हो सका। यह सुझाव भी दिये गये कि आर्य समाज को अपना एक राजनैतिक दल बना लेना चाहिए। इस समय सारे देश में आर्य समाज की चार हजार के लगभग शाखाएं हैं। जिस राजनैतिक दल की इतनी शाखाएं हो जाएं वह बहुत शक्तिशाली बन सकता है। परन्तु हमारे नेता आज तक इस विषय में कोई निर्णय नहीं ले सकें। इसका यह परिणाम है कि कुछ आर्य समाजी कांग्रेस में हैं, कुछ लोकदल में हैं और कुछ भारतीय जनता पार्टी में। आर्य समाजियों का यह आपस का तनाव आर्य समाज के संगठन पर भी कोई अच्छा प्रभाव नहीं डालता और उसके कारण कई प्रकार की भ्रान्तियां पैदा हो रही हैं। प्रायः देखा गया है कि जब आर्य समाज के उत्सव या सम्मेलन होते हैं तो हम कई राजनैतिक नेताओं को वहां बुलाते हैं। कोई व्यक्ति किसी सम्मेलन में आकर अपने विचार जनता के सामने रख जाए तो उस पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती। वह उसी समय होती है, जब राजनैतिक नेताओं को वह महत्व दिया जाता है जिसके वे योग्य नहीं होते और वह महत्व केवल इसीलिए दिया जाता है कि उनका किसी दल विशेष से सम्बन्ध है। आर्य समाज एक बहुत प्रभावशाली और शक्तिशाली संस्था है। उसे अपने विषय में जनता में यह भावना पैदा न करनी चाहिए कि यह किसी राजनैतिक दल की दुमछल्ला बन रही है। केवल दो ही ऐसे राजनैतिक व्यक्ति हैं, जिन्हें आर्य समाज के किसी विशेष सम्मेलन का उद्घाटन करने के लिए बुलाना चाहिए, राष्ट्रपति या प्रधानमन्त्री। अधिक से अधिक किसी प्रदेश के राज्यपाल को बुलाया जा सकता है। ये तीन व्यक्ति वे हैं, जो वास्तव में जनता के प्रतिनिधि समझे जाते हैं और किसी राजनैतिक दल विशेष के प्रतिनिधि नहीं समझे जाते। प्रधानमन्त्री किसी दल विशेष के नेता ही होते हैं, परन्तु जब वे प्रधानमन्त्री बन जाते हैं तो सारे देश के प्रतिनिधि बन जाते हैं। यही कुछ हम प्रदेश के मुख्यमन्त्रियों के विषय में भी कह सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि आर्य समाज के किसी सम्मेलन या उत्सव में किसी राजनैतिक नेता को उसका उद्घाटन या उसकी अध्यक्षता करने के लिए बुलाना हो तो वे बहुत ऊंचे स्तर के ही होने चाहिए। छोटे-मोटे मन्त्रियों या दूसरे राजनैतिक नेताओं को बुला कर आर्य समाज के किसी सम्मेलन का उद्घाटन कराना आर्य समाज जैसी महान् संस्था का अपमान है। हमारे अन्दर कुछ ऐसी हीनता की भावना पैदा रही है कि हमारे ही नेता छोटे-2 मन्त्रियों के आगे पीछे घूमने में अपना सौभाग्य समझते हैं। प्रधानमन्त्री आर्य समाज के किसी सम्मेलन या उत्सव में बहुत कम आते हैं। राष्ट्रपति आ जाते हैं। इनके अतिरिक्त और कई आते रहते हैं, जिन्हें कोई पूछता नहीं। आर्य समाज के पास बड़े-2 उच्चकोटि के संन्यासी और प्रकाण्ड पंडित भी हैं। क्यों न आर्य समाज के सम्मेलनों या उत्सवों का उद्घाटन केवल अपने संन्यासियों द्वारा करवाया जाये। जब हम राजनैतिक नेताओं को बुलाते हैं, खास कर उन्हें जो विवादास्पद हों, तो यह आर्य समाज की प्रतिष्ठा को आघात पहुंचता है। यह भी देखा गया है कि हमारे सम्मेलनों में मन्त्री भी प्रायः वही आते हैं, जो एक प्रकार से चले हुए कारतूस समझे जाते हैं। आर्य समाज की गणना देश की महान संस्थाओं में होती है, क्यों न हम अपना स्तर भी इतना ऊंचा रखें कि कि जब हम किसी व्यक्ति को निमन्त्रित करें तो वह इसमें आना अपना गर्व समझें। आज स्थिति बहुत बदल गई है, मन्त्री चाहे किसी की सरकार के हों या किसी भी पार्टी के जनता में अब उनके लिए कोई आदर या सन्मान नहीं है। जब वे हमारे किसी सम्मेलन में आते हैं, तो वे कोई विशेष आकर्षक नहीं होते। जिसके कारण और लोग भी आ सकें। परन्तु यदि कोई संन्यासी या आर्य सिद्धान्तों का प्रकाण्ड पण्डित आये जो लोग उन्हें सुनने के लिए इस लिए आते हैं कि उनके प्रति लोगों को श्रद्धा होती है। मुझे याद है 50-60 वर्ष पहले जब हमारे पास कोई मन्त्री नहीं हुआ करते थे, तो उस समय भी आर्य समाज के वार्षिक उत्सव में 30-30 और 40-40 हजार लोग इकट्ठे हो जाया करते थे। आज हम स्वयं अपने सन्मान और प्रतिष्ठा को समाप्त कर रहे हैं, जब उन व्यक्तियों को आर्य समाज के उत्सवों में बुला लेते है, जिनके लिए जनता के दिल में कोई सन्मान नहीं होता।

इस समस्या का एक और पक्ष भी है, जिस पर विचार करने की आवश्यकता है। जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है आर्य समाजी इस समय तीन राजनैतिक दलों में बंटे हुए है, कांग्रेस, लोक दल और भारतीय जनता पार्टी। जब हम किसी एक राजनैतिक दल से सम्बन्धित व्यक्तियों को बुलाते हैं, तो दूसरे दलों को उस पर शिकायत पैदा होती है। इस कारण कई लोग आर्य समाज से दूर हो जाते हैं और कई एक दल के मुकाबला में दूसरे दल के लोगों को बुला लेते हैं। इसीलिए मैंने लिखा है कि आर्य समाज को राजनीति का अखाड़ा न बनाएं। पिछले दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की शताब्दी मनाई गई, वहां आर्य समाज के बड़े-2 नेता, आदरणीय संन्यासी और उच्चकोटि के विद्वान् पहुंचे हुए थे। परन्तु उस शताब्दी सम्मेलन का उद्घाटन उस व्यक्ति से करवाया गया जिसने पंजाब के हिन्दुओं का बेड़ा गर्क कर दिया। मुझे समझ नहीं आती कि हम कई बार ऐसे लोगों के पीछे क्यों भागते फिरते हैं, जिनके कारण आर्य समाज की प्रतिष्ठा को बटा लगता है। उत्तर प्रदेश में कई बहुत पुराने आर्य समाजी है। महाराजा रन्जयसिंह बहुत पुराने आर्य समाजी भी है और उस प्रान्त में उनका विशिष्ट स्थान भी है. क्यों न उनसे उद्घाटन करवाया गया ? यदि किसी राजनैतिक नेता से करवाना था, तो प्रान्त के मुख्यमन्त्री से करवाया जा सकता था या किसी और ऐसे मन्त्री से जिसका आर्य समाज से सम्बन्ध हो। उसी सम्मेलन में पंजाब की स्थिति पर विचार करने के लिए भी एक सम्मेलन किया गया। लेकिन शताब्दी सम्मेलन का उद्घाटन उस व्यक्ति से करवाया गया जिसको आज पंजाब का एक-एक हिन्दू रो रहा है। मेरा कहने का अभिप्राय यह है कि हमें अपने किसी निजी स्वार्थ के कारण आर्य समाज को राजनीति के दंगल में नहीं खींचना चाहिए। यह एक कटु तथ्य है कि आज प्रधानमन्त्री हो या कोई और वह किसी आर्य समाजी नेता की कोई परवाह नहीं करते। हमारे नेता उनके आगे पीछे बहुत घूमते हैं, लेकिन दूसरी तरफ से कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिलता। इसका यह परिणाम हो रहा है कि कई लोग यह भी कहते है कि क्या अब आर्य समाज के पास कोई ऐसा व्यक्ति नहीं, जिसके हाथों से वह अपने किसी सम्मेलन का उद्घाटन करवा सके ? और ये मन्त्रियों के पीछे भागते फिरते हैं। हमने आज तक निरंकारियों, नामधारियों, राधा-

(शेष पृष्ठ 4 पर)

वैदिक साहित्य का एक और स्त्रोत

पिछले कुछ समय से मैं आर्य मर्यादा मे वैदिक साहित्य के विषय में लिख रहा हूं। मै आर्य जनता का ध्यान इस असन्तोषजनक स्थिति की ओर दिलाना चाहता हूं कि हमारा जो साहित्य प्रकाशित होता है उसके द्वारा आर्य समाज का वह प्रचार नहीं होता, जो पहले हुआ करता था। मैंने यह भी लिखा था कि आर्य समाज के प्रचार का एक महत्वपूर्ण साधन छोटे-2 ट्रैक्ट हुआ करते थे। बड़ी-2 पुस्तकें आजकल बहुत महंगी होती हैं और जनसाधारण वह खरीद नहीं सकते। यदि खरीद भी लें तो पढ़ते नहीं, क्योंकि उनमें से कुछ पुस्तकें ऐसी होती हैं, जो उच्च-कोटि के बुद्धिजीवी ही समझ सकते हैं। यदि हम आर्य समाज के प्रारम्भ के इतिहास को देखे तो पता चलेगा कि उन दिनों छोटे-2 ट्रैक्ट बहुत प्रकाशित हुआ करते थे और उनके द्वारा आर्य समाज का बहुत प्रचार होता था। अब भी हम यदि उसी प्रकार का प्रचार चाहते हैं तो साहित्य भी उसी प्रकार का हमें प्रकाशित करना पड़ेगा। मैंने आचार्य रामप्रसाद जी और आदरणीया बहिन मीरायति द्वारा प्रकाशित साहित्य के विषय मे पहले लिखा था। अब वैदिक साहित्य के एक ओर स्त्रोत की ओर भी आर्य जनता का ध्यान दिलाना चाहता हूं। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति श्री बलभद्र कुमार जी हूजा ने श्री सघड़ विद्यासभा ट्रस्ट नाम से एक न्यास बना रखा है। समय-समय पर उसकी ओर से छोटी-छोटी पुस्तके प्रकाशित होती रहती हैं। ये अधिकतर श्री हूजा जी के पूज्य पिता स्वर्गीय श्री गोवर्धन जी शास्त्री की स्मृति में गोवर्धन ज्योति नाम से प्रकाशित होती हैं। इस समय तक ऐसी 13 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है, उनमे महर्षि दयानन्द का राजनैतिक दर्शन महर्षि दयानन्द का शिक्षा दर्शन, विशिष्ट वेद मन्त्रो का सग्रह, मन्त्र शतक और मणिमाला शतकम् नाम की कई पुस्तकाएं प्रकाशित की जा चुकी है। इनका वास्तविक उद्देश्य छोटी-2 पुस्तको के द्वारा आर्य समाज की विचारधारा को जनसाधारण तक पहुंचाना है। यह ट्रस्ट इस दिशा मे बहुत महत्वपूर्ण और प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। रामलाल कपूर ट्रस्ट भी इस दिशा मे काम करता है और उन्होने भी कई पुस्तकें प्रकाशित की है। वे अधिकतर विद्वानो और बुद्धिजीवियों के लिए होती हैं। हमे ऐसी पुस्तको की आवश्यकता है जो जनसाधारण पढ़ सके और पढ़ा सकें। श्री सघड़ विद्यासभा ट्रस्ट जयपुर जिस प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित कर रहा है, उसके द्वारा थोड़ी शिक्षा वाले व्यक्ति भी कुछ न कुछ जानकारी प्राप्त कर सकते है। स्वर्गीय श्री गोवर्धन जी शास्त्री बहुत समय तक गुरुकुल कांगड़ी मे अध्यापक रहे हैं। उनकी प्रेरणा से ही उनके सुपुत्र श्री बलभद्र कुमार हूजा आर्य समाज और वैदिक विचारधारा के प्रचार के लिए समय-समय पर इस प्रकार की छोटी-छोटी पुस्तकें प्रकाशित करते रहते हैं और जो विद्वान् ऐसी पुस्तकें लिखते हैं, यह ट्रस्ट उन्हे भी सम्मानित करता है और उन्हे कुछ दक्षिणा भी देता है और भी कई ऐसे ट्रस्ट हैं, जो जनसेवा के लिए स्थापित किए गए हैं। वे भी इस दिशा में बहुत महत्वपूर्ण कार्य कर सकते हैं। हमें यह समझ लेना चाहिए कि प्रचार का साधन अब कई प्रकार का हो गया है। यदि हमने अपना प्रचार करना है तो वे सब प्रकार के साधनों का प्रयोग करना पड़ेगा। छोटी-बड़ी पुस्तको के अतिरिक्त अब वीडियो के द्वारा भी बहुत कुछ हो सकता है। यदि आर्य समाज के बड़े-2 विद्वानो के भाषणों के कैसेट बनवाये जायें और वे बांटे जायें तो उससे भी प्रचार हो सकता है। आर्य समाज के सामने जहा कई और समस्यायें हैं, प्रचार प्रणाली भी एक बहुत बड़ी समस्या है। उस पर गम्भीरतापूर्वक हमें विचार करना चाहिए और वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए अपनी प्रचार प्रणाली में ऐसा संशोधन करना चाहिए कि हम अधिक से अधिक लोगों तक अपने विचार पहुंचा सकें।

—वीरेन्द्र

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारियों की सेवा में

श्रीमन्न सादर नमस्ते !

आपने आर्य मर्यादा मे उस विश्व शान्ति महायज्ञ के विषय मे पढा होगा, जो पिछले दिनो स्त्री आर्य समाज मोगा के तत्वावधान मे मोगा मे हुआ था। यह एक बहुत बड़ा यज्ञ था और इसका प्रभाव सारे मोगा पर बहुत अच्छा रहा। मोगा से बाहर से भी कई महानुभाव इस यज्ञ मे सम्मिलित होने के लिए वहा गये थे। यह सारा यज्ञ स्त्री आर्य समाज मोगा के सत प्रयत्नो से ही हुआ था। हमारी बहिनें घर-घर जाकर महिलाओ को इस यज्ञ मे आने का निमन्त्रण देती रही हैं। इस प्रकार बहुत बड़ी सख्या मे मोगा के परिवार इस यज्ञ मे अपनी आहुति डालने के लिए आये थे।

इस यज्ञ को देख कर हमे यह भी विचार आया कि इस प्रकार के यज्ञ दूसरे शहरो मे क्यो नही हो सकते। आज के दूषित और आतंकित वातावरण मे, बडे-2 उत्सव करना तो कठिन होगा, परन्तु हम समाज मन्दिरो मे ऐसे यज्ञ तो करवा सकते हैं। यदि प्रत्येक आर्य समाज अपने-अपने भवन मे ऐसे यज्ञ करवाये तो उस क्षेत्र के सैकड़ो व्यक्ति उस यज्ञ मे अपनी आहुति डालने के लिए वहा पहुंच जाएगे। इस प्रकार हमारा प्रचार भी हो जाएगा और जनता के साथ सम्पर्क भी पैदा हो जाएगा। ऐसे समय मे हम अपना साहित्य भी जनता मे बाट सकते हैं।

सब से अधिक कठिनाई यज्ञ करवाने वालो की होती है, वे नही मिलते। कई स्थानो पर ऐसे व्यक्ति भी मिल जाते हैं, जो स्वय यज्ञ करवा देते हैं। यदि कही ऐसे व्यक्ति न हो और सभा को इसकी सूचना दी जा सके तो हम उसका कोई प्रबन्ध करवा देगे। परन्तु यह सूचना हमे 15 दिन या 3 सप्ताह पहले मिलनी चाहिए। आशा है आप इस ओर विशेष ध्यान देंगे। एक और सुझाव भी हम देना चाहते हैं, अब कई ऐसे आर्य समाजी है, जिनकी आयु 90 वर्ष के लगभग है। ऐसे सब व्यक्तियो को जिनकी आयु 80-85 से ऊपर हो गई हमे सम्मानित करना चाहिए और यह प्रार्थना करनी चाहिए कि वे अपने एक सौ वर्ष पूरे करे। यदि आप कोई ऐसा समारोह अपने आर्य समाज मन्दिर मे आयोजित करे तो आपके क्षेत्र मे कुछ दूसरे व्यक्ति भी ऐसे हो जो इस आयु के हो, उन्हें भी बुला कर सम्मानित कर दे। इसका एक परिणाम यह होगा कि दूसरो के साथ हमारा सम्पर्क भी बढ़ेगा और लोग समझेंगे कि आर्य समाज एक ऐसी सस्था है जो प्रत्येक के हित की बात सोचती है। जब आप किसी को सम्मानित करें तो उस समय प्रत्येक को सत्यार्थ प्रकाश की भी एक प्रति भी भेंट कर दे।

आशा है आप हमारे इन सुझावो पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे और इन्हे क्रियान्वित करने का प्रयास करेंगे। इस सम्बन्ध मे आप जो भी समारोह करें या यज्ञ करें उसकी सूचना हमारे कार्यालय मे अवश्य भेज दे।

वीरेन्द्र	कमला आर्या	ब्रह्मदत्त शर्मा
प्रधान	उप-प्रधान	महामन्त्री

(3 पृष्ठ का शेष)

स्वामियों किसी के भी सम्मेलन का उद्‌घाटन या अध्यक्षता करते किसी राजनैतिक नेता को नहीं देखा। उनके अपने विशिष्ट नेता ही अपने सम्मेलन की अध्यक्षता करते हैं। और वे जो कहते हैं, उनके अनुयायी उसके अक्षर-अक्षर को स्वीकार करते हैं। हमारे सम्मेलनों में कई प्रकार के लोग आते हैं और कई ऐसे भी होते हैं जिनका आर्य समाज से कोई सम्बन्ध नहीं होता।

मेरे विचार में देश में जो स्थिति पैदा हो रही है, उसे सामने रखते हुए आर्य समाज को ही गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए कि राजनैतिक के साथ उसका सम्बन्ध किस रूप में रहना चाहिए ? राजनैतिक समस्याओं पर हमें स्वयं बैठ कर विचार करना चाहिए और हो सके तो हमारे नेता सारे आर्य जगत् का राजनैतिक विषयों पर नेतृत्व करें। उसका परिणाम बहुत अच्छा रहेगा और उसके द्वारा हमारा संगठन भी शक्तिशाली बनेगा। जब तक हम दूसरों के पीछे भागते रहेंगे, आर्य समाज की न तो कोई शक्ति बनेगी, न उसका कोई प्रभाव बनेगा और राजनैतिक दल उसे अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए अपने काम में लाते रहेंगे। अब भी आर्य समाज के नेताओं को बैठ कर इस विषय पर विचार करना चाहिए और आर्य जनता को ऐसी दिशा दिखानी चाहिए जिसके अनुसार चलते हुए वह देश की राजनीति पर अपना प्रभाव जमा सके।

वीरेन्द्र

आर्य समाज के वर्तमान संदर्भ में आर्य युवक

लेखक—श्री रामशरण दास जी प्रधान
आर्य युवक सभा बरनाला

वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या,
जिस राह में बिखरे शूल न हों।
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या,
जब धारा ही प्रतिकूल न हो।

आर्य युवक उल्टी धारा के हृदय को चीर कर अपना मार्ग प्रशस्त करते हैं। आर्यों का इतिहास इस बात को बता रहा है। कुछ समय तक सोये रहने वाले शेर अब फिर उठने के लिए मजबूर हुए हैं। पंजाब की वर्तमान परिस्थितियां आर्य युवकों को झिझोड़ कर कह रही हैं क्या अब भी आप सोए रहेंगे। नही, ऐसा कदापि नही हो सकता। समयानुसार प्रान्तीय स्तर पर आर्य युवको का गठन, सभा के महामन्त्री एव प्रधान श्री वीरेन्द्र जी द्वारा हर तरह की सहायता का आश्वासन आर्य सन्यासियो द्वारा कुशल निर्देशन युवको को आगे बढने मे एक प्रकाश स्तम्भ का कार्य करेंगे।

हमारे धर्म ग्रन्थ यह नही कहते कि किसी निर्दोष को सताया जाये। परन्तु जो व्यक्ति दोषी हैं उन्हे नजरन्दाज करना भी इतिहास की एक बहुत बडी भूल होगी। जिसे बाद की पीढियां कभी माफ नही करेंगी। हर आर्य नवयुवक का कर्तव्य है कि वह अपने कर्तव्य को समझ कर आए। स्थानीय समाजो के पदाधिकारी भी युवको को आगे लाए और उन्हे कार्यभार सौंपे।

मुझे यह सब इस लिए लिखना पड रहा है कि कई समाजो पर दो-चार वृद्ध आकर हवन करने के पश्चात् समाजो की एक सप्ताह के लिए ताला-बन्दी कर देते हैं। मैं इस लिये भी यह चेतावनी देना चाहता हू कि आप लोग ज्यादा से ज्यादा 10-20 सालो के साथी हैं, इसके बाद यह संस्थाए विधर्मियो के हाथ मे चली जाएगी। और ऋषि का सपना आपके साथ स्वर्ग को चला जाएगा। मैं यह बिल्कुल नही कहता कि आप कार्य भार दूसरे नौजवानो को सौंपे। आप अपने ही बच्चे समाज मे लाए उन्हे विचारधारा प्रदान कराए, और ऋषि का कार्य उन्हे ही सौंप कर जाए।

आज जब इन स्थितियो मे मैंने अपनी लेखनी उठाई है तो समाज एव युवा सगठन के मध्य मे आने वाली परेशानियो को मैं खुले रूप मे सब के सामने लाना चाहता हू। मेरे मन मे वृद्धो के प्रति पूर्ण सम्मान है परन्तु उन की वर्तमान कार्य पद्धति से मैं एव युवक बिल्कुल असन्तुष्ट है। युवक जब आगे बढे है तो उन्हे पता है कि सबमे पहले उन्हे अपनो से संघर्ष करना पडेगा। शायर के शब्दो मे—

"क्यो गैरो का जिकर करते हो।
हमने तो अपने ही अजमाए हैं॥

परन्तु कर्मवीर आर्य युवको के यहा असम्भव शब्द बिल्कुल नही है। मैंने प्रारम्भ मे ही कहा था कि सीधी धारा पर सभी नाव चला लेते हैं उल्टी धारा पर नाव चलाना आर्य युवको का कार्य है। समय के साथ हम कैसे आगे बढते हैं यह तो समय ही बतलाएगा।

आर्य समाज भठिण्डा द्वारा पुरस्कार वितरण समारोह

आर्य हैपी मण्डल स्कूल बठिण्डा का पुरस्कार वितरण समारोह गत मास श्री कस्तूरी लाल जी मन्त्री पर्यटन विभाग पंजाब की अध्यक्षता मे मनाया गया। उत्सव बडा सफल रहा। बच्चो के कार्यक्रम को देख कर श्री कस्तूरी लाल जी मन्त्री पर्यटन विभाग ने 5000 रुपये विद्यालय को दान दिये। तथा अन्य महानुभावो ने इस अवसर पर निम्नलिखित दान दिया।

श्री अमरनाथ जी	501-00
श्री मेहरचन्द जी	251-00
श्री चिरञ्जीलाल जी	101-00
श्री रोशनलाल जी	50-00

—वजीरचन्द-प्रधान

सुरक्षा पट्टी बनाई जाए

यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि पाकिस्तान हमारे देश मे अस्थिरता का वातावरण पैदा कर, उसके विकास को अवरुद्ध कर देना चाहता हू, कुछ सिर-फिरे देशद्रोही आतकवादियो को प्रशिक्षण देकर पाकिस्तान भारत के निर्दोष हिन्दुओ का खून बहा रहा है। ऐसा करके पाकिस्तान सिखो के लिए अलग राष्ट्र का रास्ता साफ कर 'बगला देश' के निर्माण का बदला लेना चाहता है। यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण एव हास्यास्पद है कि जिन सिखो का निर्माण हमारे धर्म गुरुओ ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए किया था, उन्ही मे से कुछ लोग महान् गुरुओ के उपदेशो व आदेशो को भूलकर निर्दोष हिन्दुओ की हत्या कर रह है। पाकिस्तान की भारत विरोधी हरकतो को रोकने के लिए भारत-पाक सीमा पर सुरक्षा पट्टी का निर्माण करना आज एक राष्ट्रीय आवश्यकता है। सीमा सुरक्षा पटटी बनाने से ही पाकिस्तानी गतिविधिया पर प्रतिबन्ध लगाया जा सकता है। बरनाला का उतना ही समर्थन करना चाहिए कि जितना राष्ट्रहित मे हो। केन्द्रीय सरकार को चाहिए कि वह पजाब समझोते को ताक पर रखकर, सर्वप्रथम शान्ति एव सुरक्षा की व्यवस्था करे।

—

नई शिक्षा नीति की सार्थकता

भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात ही शिक्षा पद्धति मे आमल-चूल परिवर्तन की बाते चल रही थी। इस सम्बन्ध मे समय समय पर कई आयोग भी बनाए लेकिन कोई विशेष प्रगति नही हो सकी. जबकि श्री राजीव गाधी जी प्रधानमन्त्री बने तो नई शिक्षा नीति की चर्चा जोरो से हुई क्योकि हमारे युवा प्रधानमन्त्री के हृदय मे यह भावना है कि अच्छी शिक्षा पद्धति ही अच्छे नागरिको का निर्माण कर सकती हैं। इसी आधार पर नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत सारे देश मे केन्द्रीय विद्यालयो की तरह नए विद्यालय खोलने की योजना बन रही है। नए विद्यालयो के खुल जाने से समस्या का समाधान नही होगा। आज आवश्यकता इस बात की है कि जो विद्यालय पहले से चल रहे है और उनमे करोडो विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे है, उन्ही मे क्रान्तिकारी सुधार किया जाए। भवनो का निर्माण हो, बैठने पढने के पर्याप्त साधन हो, निष्ठावान, अध्यापक हो, नैतिक व धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था हो, बच्चो को प्रारम्भ से ही राष्ट्रीयता, कर्त्तव्य निष्ठा, सेवा, मानवता, साम्प्रदायिक सदभावना, नैतिकता का पाठ पढाया जाए। बच्चो को चरित्रवान बनाया जाए अध्यापको को राजनीतिक गतिविधियो मे भाग लेने, ठेकेदारी करने पर प्रतिबन्ध लगाया जाए। भारतीय सस्कृति व सभ्यता को शिक्षा पद्धति का अभिन्न अग बनाया जाए।

विदेशी सहायता पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगे

यह अत्यन्त दुर्भाग्य का विषय है कि भारत मे कार्यरत कुछ सगठन शैक्षिक सामाजिक राजनैतिक कार्यकलापो के लिए विदेशो से आर्थिक सहायता प्राप्त करते है। इस आर्थिक सहायता पर भारत सरकार का कोई नियन्त्रण नही है। एक सर्वेक्षण के अनुसार ऐसे 488 सगठन है। इन सगठनो मे से अधिकाश को अरब देशो से अकूत धन मिलता है और वह धन यह सगठन अपने घोषित उद्देश्य की पूर्ति मे न लगा कर धर्मान्तिरण जैसे घोर निन्दनीय व देशद्रोह पूर्ण कार्यों में खुले आम व्यय करते हैं। इस धन से धन देने वाले देश की संस्कृति, सभ्यता तथा वहा के महानुरुषो का भी प्रचार किया जाता है और भारतीय सस्कृति, भारतीय महापुरुषो के प्रति समाज मे घृणा की भावना भरी जाती है। यह सगठन भारत मे साम्प्रदायिक विद्वेष फैलाकर दगे भी कराते हैं जिससे देश मे आन्तरिक अशाति व अस्थिरता बनी रहे। यह सारे सगठन खुले रूप मे सहायता तो लेते ही है कुछ सगठन चोरी-छिपे भी सहायता प्राप्त करते है। भारत सरकार को चाहिए कि किसी भी सगठन को मिलने वाली विदेशी सहायता पर पूर्ण तथा कठोर प्रतिबन्ध लगाए, नही तो आने वाले दिनो मे यह विदेशी सहायता हमारी राष्ट्रीय एकता व अखण्डता पर भयावह सकट उत्पन्न कर देगी। —राधेश्याम आर्य एडवोकेट

बृहद् यजुर्वेद यज्ञ

आर्य समाज शक्तिनगर अमृतसर द्वारा बृहद यजुर्वेद यज्ञ का आयोजन 10 नवम्बर से 16 नवम्बर तक श्रीजैमिन जी शास्त्री एम ए की अध्यक्षता मे किया जा रहा है। श्री सत्यपाल पथिक के भजन होगे। प्रतिदिन प्रात:7 से साढे 9बजे तक यज्ञ, भजनव व्याख्यान पूर्णाहुति व उपदेश रविवार16नवम्बर86को प्रात: साढे 7बजे से साढे 11 बजे तक होगे।

मा राम रखा मल-मन्त्री

अरब देशों में हिन्दुओं के साथ दुर्व्यवहार

भारत सरकार की घोषणा के अनुसार हमारा देश धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है और हम "सर्वधर्म समभाव" की भावना मे अटूट विश्वास रखते हैं। यहा हर धर्म, सम्प्रदाय, वर्ण और जाति के लोगो को अपने ढग से रहने की पूर्ण स्वतन्त्रता है। इसके विपरीत हमारे तथा कथित मुस्लिम मित्र राष्टो मे हमारे देश के हिन्दू नागरिको के साथ गुलामो से भी बदतर व्यवहार किया जाता है। उन्हे व्यक्तिगत रूप से भी अपने धार्मिक कृत्यो के लिए छूट नही है। इतना ही नही अपने साथ अपनी धार्मिक पुस्तको का रखना और उन्हे एकान्त मे पढना भी वहा कानूनी अपराध है। इस्लामी धार्मिक असहिष्णुता का इससे बढ कर उदाहरण दुनिया मे शायद ही कही और मिले।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने एक प्रैस विज्ञप्ति मे बताया कि कुछ दिन हुए हमे सउदी अरब से श्री रामकुमार भारद्वाज का पत्र प्राप्त हुआ था जो अपनी नौकरी के सिलसिले मे वहा गए थे। वे आजकल जेल मे बन्द हैं। उनका अपराध सिर्फ इतना है कि वे अपने साथ सत्याथ प्रकाश की एक प्रति ले गए थे। खाली समय मे पढने के लिए उनके ही एक मुसलमान मित्र साथी न ‍सकी शिकायत ऊपर के अधिकारियो से कर दी। परिणाम स्वरूप श्री भारद्वाज जेन म बन्द कर दिए गए, क्योकि अरब मुस्लिम राष्टो मे इस्लाम के आतरिक्त किसी भी अन्य धम का प्रचार करना अथवा उससे सम्बन्धित पुस्तक रखना, पढना अथवा पढाना कानूनन अपराध है।

श्री स्वामी जी ने कहा कि जब मामला हमने भारत सरकार के विदेश मन्त्रालय के सामने उठाया तो वहा म भी इसी आशय का उत्तर प्राप्त हुआ। वैसे सऊदी अरब स्थित भारतीय दूतावास के द्वारा श्री भारद्वाज की रिहाई का प्रयत्न किया जा रहा है, ऐसा भारत सरकार ने सकेत किया है।

श्री आनन्द बोध सरस्वती ने गहरा दुख प्रकट करते हुए कहा कि ऐसे मुस्लिम राष्ट जिन्हे हमारी भाषा, धम और सस्कृति व साहित्य के प्रति इतना विद्वेष है, कहा तक हमारे मित्र कहलाने के अधिकारी है? और हमा ी सरकार तेल के लालच मे कब तक उन्ह गल लगानी ‍हेगी? लगता ‍ै कि हमारे राज नेताओ की अस्मिता और आत्म सम्मान नही रहा और साथ ही उनका विवेक भी समाप्त हो गया है, जो मित्र और अमित्र की पहचान कर सक।

आर्य माडल हाई-स्कूल, फगवाड़ा की छात्राएं विजयी

विजय दशमी के अवसर पर श्री प्रताप धम प्रचारिणी सभा, कपूरथला द्वारा एक अन्तर विद्यालय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन स्थानीय एम डी एस डी हाई स्कल मे किया गया। इसमे ग्यारह विद्यालयो ने भाग लिया। आय माडल हाई स्कल, फगवाडा की छात्राओ कु ज्योति पाठक एव कु सुषमा जोशी के दल को सवश्रेष्ठ पाया गया तथा "सोहनलाल चल विजयोपहार" से सम्मानित किया गया। विद्यालय के प्रधानाचाय श्री एम आर भाटिया और प्रबन्धक श्री मनोहर लाल चोपडा जी के साथ।

लुधियाना में वैदिक रीति से मुण्डन एवं नामकरण संस्कार सम्पन्न

आय समाज अग्र नगर म विगत दिनो को एक विशाल वैदिक सत्सग का आयोजन किया गया जिसमे वैदिक रीति से आय समाज के मन्त्री श्री सतपाल जी अग्रवाल, के पौत्र मन एवम तनु सुपुत्र श्री बी के गुप्ता के मुण्डन एवम नाम करण सस्कार कराया गया। इस अवसर पर प्रो वेद व्रत जी वेदालकार ने यज्ञ सम्पन्न कराया। वेद प्रचार भजन मण्डली लुधियाना ने अपने मनोहर प्रभु भक्ति के भजनो से जनता को मन्त्र मुग्ध कर दिया। श्री किरपा राम जी आय, श्री यशपाल जी आय, श्री पजाब राय जी, श्री सत्य प्रकाश जी गुप्ता, श्रीमती राजेश्वरी जी ने सुन्दर भजन सुनाए। श्री ज्ञान प्रकाश जी वमा ने सुन्दर रुबाइयो के द्वारा अपना कायक्रम प्रस्तुत किया। श्री सतपाल जी शास्त्री पुरोहित आय समाज फील्ड गज लुधियाना ने भी बच्चो को आर्शीवाद देते हुए अपने विचार जनता के सामने रखे। श्री रोशनलाल शर्मा सयोजक आर्य युवक सभा पजाब ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि यदि हम वास्तव मे वैदिक संस्कृति को जीवित रखना चाहते है तो हमे ऋषि द्वारा बताए मार्ग पर चलते हुए संस्कारो को अपनाना चाहिए।

इस अवसर पर जिला आय सभा की अन्तरग सभा की बैठक हुई, जिसमे आय समाज के विशिष्ट व्यक्ति सम्मिलित हुई। इस अवसर पर श्री सत्यानन्द जी मुञ्जाल उप प्रधान सावदेशिक सभा भी विशेष रूप से सम्मिलित हुए। शान्ति पाठ के साथ कायवाही सम्पन्न हुई।

श्री सतपाल अग्रवाल ने आये हुए अतिथियो के लिए जल पान एवम भोजन का सुन्दर व्यवस्था की था। यह आयोजन अपने आप म प्रचार की दृष्टि से अनुपम था। श्री अग्रवाल जी बधाई के पात्र हैं, हमे भी उनका अनुकरण करना चाहिए ताकि अधिक से अधिक वेद प्रचार हो सके।

महर्षि की निर्भयता

शाहपुर से जब ऋषि जोधपुर आने को तैयार हुए, तब लोगो ने उन्हे रोका और उनसे कहा कि वहा के लोग बहुत निष्ठुर प्रकृति के है, तब उन्होने कहा कि 'यदि लोग हमारी अगुलियो की बत्तिया बनाकर जला दें, तो कोई चिन्ता नहीं। मैं वहा जाकर अवश्य सत्योपदेश करूंगा"। इसी प्रकार का एक प्रसग अजमेर का है वहा तीन दिन तक इसाई पादरियो से इसाई-मत पर बहस होती रही। किसी बात पर चिढ कर पादरी शूलब्रेड ने स्वामी जी से कहा कि ऐसी बातो से आपको कभी कारावास की सजा भुगतनी पड जाएगी। स्वामी जी ने गम्भीरता से मुस्कराते हुए कहा कि—"सत्य के लिए जेल जाना कोई लज्जा की बात नहीं है। धर्म पथ पर आरूढ होकर मैं ऐसी बातों से सर्वथा निर्भय हो गया हू। प्रतिपक्षी लोग यदि अपने प्रभाव से ऐसा कष्ट दिलाएगे, तो वहा कष्ट सहते हुए मेरे चित्त में शोक की कोई तरग भी उत्पन्न न होगी, वहा मैं अपने प्रतिपक्षियो की अकल्याण कामना भी कभी नहीं करूंगा। पादरी जी ! मैं लोगो को डराने से सत्य को नहीं छोड सकता। ईसा को भी लोगो ने फासी पर लटका ही तो दिया था।"

आतंक पीड़ित परिवार सहायक कोष के लिए प्राप्त राशियों की सूची

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने आतंकवाद से पीड़ित भाईयो की सहायता के लिए एक सहायता कोष आरम्भ किया है इसमें निम्न महानुभावो ने और दान दिया है। हमारी और भी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि इस सहायता कोष में अधिक से अधिक धन भेजें।

ब्रह्मदत्त शर्मा
सभा महामन्त्री

(गतांक से आगे)

गतांक में प्रकाशित राशि जो आगे छप चुकी है—	29,519-00
1. श्री एस. के. गुप्ता	101-00
2. डाक्टर पी. एल. सचदेवा	101-00
3. श्री आर. सी. नैयर	51-00
4. श्री जी. एस. कौशल	51-00
5. श्री आर. एस. मित्तल	51-00
6. श्री पवन कुमार	51-00
7. श्री बलबीर सिंह	51-00
8. श्री ओ. पी. भगत	51-00
9. श्री एम. दीवान	51-00
10. श्री आर. एल. श्री निवासन	50-00
11. श्री डी. आर. महाजन	50-00
12. श्री विनोद महाजन	50-00
13. श्री एम. एल. गुलेरिया	25-00
14, श्री हरविलास बैन्स	21-00
15. श्री एम. के. भारद्वाज	21-00
16. मेजर हरगोविन्द	21-00
17. श्री मनमोहन सचदेवा	21-00
18. श्री राजेन्द्र सिंह	21-00
19. श्री हरिसिंह	21-00
20. श्री आर. एस. दत्ता	21-00
21. श्री राज कुमार मारकण्डा	21-00
22. श्री के. डी. डोगरा	21-00
23. श्री सुखदेव वाटवा	21-00
24. श्री राजेन्द्र कुमार	21-00
25. श्री सुखदेव पाल जी	21-00
26. श्री एम. आर. वर्मा	20-00
27. श्री पी. के. गुप्ता	20-00
28. श्रीमती सन्तोष कुमारी गुप्ता	20-00
29. श्री. आर. के. गुप्ता	20 00
30. श्री किशोरी लाल शर्मा	20-00
31. श्री रामचन्द्रन	20-00
32. श्री ए. एन शर्मा	20-00
33. श्री धर्मपाल जी	20-00
34. श्री विजय पाल	15-00
35. श्री हरीराम	15-00
36. श्री राकेश सकोरिया	11-00
37. श्री राम मूर्ति	11-00
38. श्री एस. के. गोयल	11-00
39. श्री एम. एस. बवेल	11-00
40. श्री बी. के. कुन्द्रा	11-00
41. श्रीमती राज कुमार	11-00
42. श्री करतार सिंह	11-00
43. श्री विश्वामित्र	11-00
44 श्री प्रेम रत्न	11-00
45. श्री. सोहलिना कौशल	11-00
46. श्री राजेन्द्र पाल	11-00
47. श्री बलदेव सिंह	11-00
48. श्री धर्मपाल	10-00
49. श्री के. के. शर्मा	10-00
50. श्री जय कश्यप	10-00
51. श्री रामेश सूद	10-00
52. श्री त्रिलोकी नाथ	10-00
53. डाक्टर बी के, शर्मा	10-00
54. श्री रामरखामल	10-00
55. श्री राकेश कुमार भल्ला	10-00
56. कुमारी सविता भुरगई	10-00
57. श्री शान्ति कपूर	10-00
58. श्री मनोहर लाल	10-00
59. श्री एच. एल. भारद्वाज	10 00
60. श्री आर. एस. धनकर	10-00
61. श्री एफ. सी साही	10-00
62. श्री किशोरी लाल	10-00
63. श्री किशोरी लाल	10-00
64. मै. नीलम हार्डवेयर	10-00
65. कुमारी शैली केसर	6-00
66. श्री जगदीशसिंह	5-00
67. श्री बालमुकन्द	5-00
68. श्री शकरचन्द	5-00
69. श्री बी. के. शर्मा	5-00
70. श्रीमती चमेली रानी	5-00
कुल योग	31018-00

क्रमशः

आर्य समाज तिलकनगर में वीर बन्दा वैरागी जयन्ती

आर्य समाज तिलकनगर नई दिल्ली—मे दिनांक 19-10-86 रविवार को वीर बन्दा का जन्म दिवस मनाया गया। यह कार्यक्रम डा सुन्दरलाल कथूरिया (दिल्ली विश्वविद्यालय) के सान्निध्य मे हुआ। 12 वर्ष तक के बच्चो की भाषण प्रतियोगिता हुई जिसमे प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले को आकर्षक एवं अन्य को सान्त्वना पुरस्कार दिये गये। श्री मनोहरलाल 'रत्नम्' ने काव्य पाठ किया। अध्यक्ष ने धर्म के स्वरूप पर विस्तृत चर्चा करते हुए वीर बन्दा वैरागी को आपत्कालीन धर्म का महान् नायक एव पालक बताया। समस्त कार्यक्रम आकर्षक एव रोचक रहा।

—जगदीश नागपाल-मन्त्री

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द का वार्षिक चुनाव मे श्री सुभाष भाटिया सर्व सम्मत से प्रधान चुने गये तथा सभा ने उन्हे आर्य समाज के पदाधिकारियो वैदिक गर्ल्ज हायर सैकण्डरी स्कूल अमृतसर व श्रद्धानन्द महिला महाविद्यालय की प्रबन्ध समिति के मनोनयन के भी अधिकार दिये । श्री सुभाष भाटिया ने निम्नलिखित पदाधिकारियो का चयन किया ।

प्रधान—श्री सुभाष भाटिया, महामन्त्री—श्री वीरेन्द्र देवगण, कोषाध्यक्ष-श्री कुलदीप शर्मा, उप प्रधान—श्री वैद्य बाबूराम शर्मा, उप प्रधान—श्री निहाल चन्द जी चौदा, उप प्रधान—श्री इन्द्रजीत जी भाटिया, उप-प्रधान—श्री ओम प्रकाश शर्मा, मन्त्री—श्री राजा राम शर्मा, मन्त्री—श्री प्रवीण महाजन, मन्त्री—श्री लक्ष्मीकात श्रीधर, मन्त्री—श्री राजपाल सुरी, आर्य वीर दल अधिष्ठाता—श्री दीपक शर्मा, पुस्तकालय अध्यक्ष राज कुमार शोरी और निरीक्षक श्री पवन कुमार गुप्ता,

अन्तरङ्ग सदस्य —श्री ओंकार नाथ जी बहल, श्री लखपत राय मदान, श्री जसवन्त डोगरा, श्री अशोक महाजन, श्री सवमित्र रामपाल, श्री केवल कुमार सहगल ।

विशेष आमन्त्रित :—

श्री सुरेश कुमार आर्य, श्री राम लुभाया बाल्मीकि, श्री जगदीश डोगरा, श्री आदर्श भाटिया, श्री सुभाष नारग, श्री ओम प्रकाश भाटिया, श्री चन्द्र मोहन, श्रीमती समन वाला शर्मा, श्री द्वारकानाथ विद्यालंकार, श्री शशी भनोट, श्री चन्द्र कातान्धर, श्रीमती सन्तोष शमा ।

—सुभाष भाटिया
प्रधान

वैदिक गर्ल्ज हा.सै. स्कूल अमृतसर की प्रबन्ध समिति का चुनाव

वैदिक गर्ल्ज हायर सैकण्डरी स्कूल अमृतसर की निम्नलिखित प्रबन्धक समिति का चयन किया गया —

प्रधान—श्री सुभाष भाटिया ।
मन्त्री तथा प्रबन्धक सदस्य—श्री ओंकारनाथ बहल ।
श्री वीरेन्द्र देवगण,
श्री इन्द्रजीत भाटिया ।
श्री राजपाल सूरी
श्री वैद्य बाबूराम शर्मा ।
श्री जसवन्त डोगरा ।
श्री ओम् प्रकाश शर्मा ।
श्री राजाराम शर्मा ।
श्री हीरानन्द स्वामी
शिक्षा विद्या-श्री लक्ष्मीकान्त श्रीधर
पी टी ऐ—श्री सरदारी लाल महाजन ।
प्रिंसीपल—सुश्री चन्द्र कान्ता धर ।
अध्यापिका—श्रीमती प्रेम खन्ना ।
,, श्रीमती राज गुप्ता ।
जिला शिक्षा अधिकारी अमृतसर ।

—सुभाष भाटिया
प्रधान

आर्य समाज बम्बई का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज बम्बई की 111 वा वार्षिक सर्वसाधारण सभा सम्पन्न हुई जिसमे आगामी वर्ष के लिए निम्नलिखित पदाधिकारी सर्व सम्मति से निर्वाचित हुए ।

प्रधान—श्री जगन प्रसाद गौतम
उप प्रधान—श्री गणपतराय आर्य
उप-प्रधान—श्री देवेश्वर शर्मा
मन्त्री—श्री करसनदास राणा
उप-मन्त्री—श्री चमनलाल चादना ।
कोषाध्यक्ष—श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय

आर्य समाज बम्बई
मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ ।

टेलीफोन 74250 | जि. नं. पी.जे.एल 55

वर्ष 18 अंक 33 3 मघर सम्वत् 2043 तदानुसार 16 नवम्बर 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

पुनीत वाणी बोलिए

सक्तुमिव तितउना पुनन्त यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत ।
अत्रा सखाय सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि ॥

—ऋ 10-71-2

(सक्तु इव तितउना पुनन्त) यत्र धीरा (मनसा) वाच अक्रत ।
अत्र सखाय सख्यानि (जानते) भद्रा एषा लक्ष्मी निहिता अधि वाचि ॥

1 (सक्तु) सत्तू को (इव) जिस प्रकार (तितउना) चलनी (छालनी) से (छानते हैं, शोधते हैं)।

2 वैसे ही (यत्र) जहां (धीरा) धीर जन (वाच) वाणी को (मनसा) मन से (पुनन्त) पुनकर शोधकर (अक्रत) उच्चारण किया करते हैं।

3 (एषां) इनकी (वाचि अधि) वाणी के अन्दर (भद्रा लक्ष्मी) भद्रालक्ष्मी (निहिता) निहित (होती है।)

4 (अत्र) यहां (सखाय) मित्र (सख्यानि) मित्रताओं को (जानते) हैं, समझते हैं, पहचानते हैं।

सक्तु का प्रयोग यहां उपलक्षण से खाद्य और पेय पदार्थों के लिए हुआ है। चलनी में छानकर पदार्थों का सेवन किया जाता है। सत्तू, आटा, दूध, घी, आदि पदार्थों को चलनी में छानकर सेवन करने से स्वाद तथा रोचकता आ जाती है और खाने में कण्ठ, तालु, जिह्वा आदि में पीड़ा नहीं होती।

किसी भी पदार्थ का सेवन उसे अच्छी प्रकार शोधकर करना चाहिए। बिना शोधे पदार्थ का सेवन वर्जित है। जो शोधकर पदार्थ का सेवन करते हैं, वे शोधित पदार्थ जहां स्वादु, रोचक और प्रिय प्रतीत होता है, वहां वह सुपथ, सुपोषक और स्वास्थ्यप्रद भी सिद्ध होता है। एक एक कण को बीन कर प्रथम गेहूं के कणों को साफ किया जाता है। जो के कण अथवा ओखली में छर कर छाज से पुने जाते हैं। पुनने के पश्चात् गेहूं पीसे जाते हैं। पिसे हुए आटे को फिर चलनी में छाना जाता है। छानकर भूर अलग की जाती है। छाने हुए आटे की शुद्धता के साथ रोटियां बनाई जाती हैं। इस प्रकार बनाई गई रोटियां स्वादु, सुपच और पौष्टिक होती हैं।

इसी प्रकार जहां धीर जनवाणी को मन से पुनकर उच्चारण करते हैं, वहां इन बोलने वालों की वाणी पर लक्ष्मी निवास करती है। वही मित्र मित्रताओं को जानते, समझते और पहचानते हैं।

जो नर नारी अपनी वाणी को अपने मन से शुद्ध और सुशोभित करके शब्दों का उच्चारण करते हैं, वे धीर कहाते हैं, यह बात इस मन्त्र से स्पष्ट ध्वनित हो रही है। मन से वाणी का शोधन और सुशोधन किया जा सकता है, यह संकेत भी इस मन्त्र से मिल रहा है। यह बताने की आवश्यकता नहीं कि शुद्ध और शोभनीय मन के द्वारा ही वाणी का शोधन और सुशोधन हो सकता है, मलिन मन के द्वारा नहीं। अशुद्ध, अशोभनीय मन के द्वारा तो वाणी की मलिनता और अशोभनीयता ही होती है।

अपने मन को पुनकर शुद्ध और शोभनीय बनाना और फिर पुनीत मन से वाणी को शुद्ध व शोभनीय करके सदा पुनीत, पावन और प्रिय वचनों का ही उच्चारण करना कोई सरल साधना नहीं है। यह बड़ी धैर्य साध्य साधना है। यह साधना बड़े तप और समय की अपेक्षा रखती है। किन्तु मानव और मानवता के हित में यह साधना है नितान्त साधनीय और सर्वथा वाञ्छनीय।

जहां धीर जन अपने मन से अपनी वाणी को छानकर शुद्ध और सुन्दर शब्दों का उच्चारण करते हैं, वहां उनकी वाणी में भद्रा लक्ष्मी अन्तर्निहित हो जाती है। अभ्युदय और निःश्रेयस, लोक और परलोक, भौतिक और आत्मिक दोनों प्रकार की सम्पदाओं से युक्त लक्ष्मी को भद्रा लक्ष्मी कहते हैं। लक्ष्मी नाम शोभा और ऐश्वर्य का है। सचमुच, जहां धीर जन परस्पर शुद्ध, शिष्ट, शालीन, सुन्दर और समाधान-कारक वाणी का प्रयोग करते हैं, उस समाज में उभय सम्पदाओं का सम्पादन होता है। वहां साक्षात शोभनीयता सुशोभित होती है वहां शोभा और सौन्दर्य का निवास होता है। वहां सुख, शान्ति, आनन्द, उल्लास हर्ष, विनोद प्रियता और निश्चिन्तता का आप्लावन होता है।

जहां धीर जन अपने पवित्र मन से वाणी को शोधकर शुद्ध और सुन्दर शब्दों का प्रयोग करते हैं, वहां मित्र जन मित्रताओं को जानते निर्वाहते हैं और सखिया सखित्व को पहचानती निर्वाहती हैं। शुद्ध और सुन्दर वचनों के प्रयोग से मित्रता और सख्यता की स्थापना होती है, मैत्री भाव बढ़ता है, मित्रता में स्थायित्व आता है, परस्पर की सख्यता में अभिवृद्धि होती है। जो मित्रता और सख्यता के तत्त्व को जानते हैं, वे धीर न सतकर्मा और सावधानी के साथ सदा परस्पर बड़े तुले शुद्ध पवित्र सुन्दर और सुष्ठु शब्दों का प्रयोग करते हैं।

खाद्य और पेय के समान ही वाणी के द्वारा उच्चारित शब्द भी स्वादिष्ट होते हैं। शुद्ध स्निग्ध मन से जिन शब्दों का उच्चारण किया जाता है, वे शब्द हृदयग्राही और बड़े ही स्वादिष्ट होते हैं। कुटिल मन से जिन शब्दों का उच्चारण किया जाता है, वे शब्द अप्रीतिकर और अस्वादिष्ट होते हैं। स्वादिष्ट शब्दों से समाज में पारस्परि-कता की वृद्धि होती है। अस्वादिष्ट शब्दों से समाज में पारस्परिकता का विच्छेद होता है। जहां पारस्परिकता होती है, वहां सुखैश्वर्य की वृद्धि होती है और मैत्री सम्बन्ध स्थिर रहते हैं। जहां पारस्परिकता नहीं होती, वहां दुःख दारिद्र्य की बेलें फलती फूलती हैं और कटुता तथा वैर विरोध का फैलाव होता है।

आज प्रत्येक क्षेत्र में वेद के इस सन्देश को पहुंचाने और कार्यान्वित करने कराने की बड़ी आवश्यकता है। प्रत्येक परिवार, समाज और संस्था में यह सन्देश हृदयङ्गम किया जाना चाहिए। इस शिक्षा के व्यापक व्यवहार से ही सर्वत्र सबके परस्पर के सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण होंगे। इससे वैर विरोध और कटुता का निराकरण होगा और प्रेम भाव की स्थापना होगी।

आधुनिक समाचार पत्रों तथा सार्व-जनिक कार्यकर्ताओं के लिए यह एक दिव्य सन्देश है। बड़े-बड़े सन्यासी विद्वान, नेता और सम्पादक वाणी की इस वैदिक साधना से राष्ट्र और संसार का बड़ा हित सम्पादन कर सकते हैं। वक्ता जो शब्द बोले और लेखक जो शब्द लिखे, अपने शब्दों को मन से सोच कर और नाप तोल कर बोलें और लिखें। वे अपने लेखों और भाषणों में सत्य, शालीन, शिष्ट, हित साधक और समाधानकारक शब्दों का ही प्रयोग करें। इसी से सर्वत्र सुव्यवस्था की स्था-पना होगी और सबका सब विधि कल्याण होगा।

—'तपोभूमि से साभार'

जन्म-मरण की उलझन—११

स्वर्ण अवसर

लेखक—प्रा श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य
साधु आश्रम (होशियारपुर)

संगीत प्रिय जी के मधुर भजन के बाद आज के प्रवचन को प्रारम्भ करते हुए मर्वप्रिय जी ने कहा—सत्सग मे आने वाले प्रिय सज्जनो ! आपको स्मरण ही है कि इस 'जन्म-मरण की उलझन' के अनेक पहलुओ पर विचार करते हुए एक मन्त्र के दो चरण हमारे सामने आए हैं, कि इस ससार के सभी पदार्थ अस्थायी हैं और हमारी यह काया भी नश्वर है। ये दोनो स्थितिया हमारे सामने अनेक पहलू उजागर करती हैं। इन्ही स्थितियो को सामने रख कर ही साधुजन एक आख्यान सुनाते हैं, कि एक राजा था, जो जनता को सुख-समृद्धि के लिए या जनता को सुरक्षा, न्याय, समता, स्वतन्त्रता देने के लिए राज्य को नही समझता था।

राजा प्रजा रञ्जनात, प्रवनता प्रकृति हिताय पार्थिव
प्रजा न रञ्जयेद्यस्तु राजा रक्षादिभिर्गुणै ।
अजागलस्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम ॥
पचतन्त्र राजन्दुधुक्षसि यदि क्षितिधेनुमेना, तेनाद्य वत्समिव लोकममु पुषाण ।
तस्मिश्च सम्यगनिश परिपुष्यमाणे, नानाफल फलति कल्पलतेव भूमि ॥
नीति 46 ॥

राजन् ! दुहना चाहते हो यदि तुम इस गौ को पृथ्वी रूप ।
प्रजा रूप इस बछडे का तो पालन करो सदा हे भूप ॥
भली-भाति से होने पर ही पालन इसका प्राण समान,
कल्पलता के सदश भूमि यह विविध फलो का देगी दान ॥ गोपालदास गुप्त

अपितु उसकी दृष्टि मे राजा की सेवा, शुश्रूषा, आनन्द, मेले के लिये ही राज्य व्यवस्था होती है। अत राजा देश का नर शार्दूल, भूपति, नृपति, नरपति है, जैसे कि शेर जगल का सर्वेसर्वा होता है। न कि महीप, भूप, भूपाल, नरपाल, जनपालक। इसीलिये वह कभी भी प्रजा की सुख-समृद्धि और विकास के लिए उस क्षेत्र के विशेषज्ञो की समिति बनाकर उनके निर्णयो के अनुसार कोई कार्य करने की नही सोचता , क्योकि वह तो ठहरा-राजा के रूप मे दूसरा भगवान या साक्षात् ईश्वर (राजा पर दैवतम तथा मनु 6 4-7 आदि स्मृति शास्त्रो मे राजा के अन्दर अग्नि, इन्द्र आदि देवो का अश माना गया है। यूरोप के जिन देशो मे राजतन्त्र का जितना भी अश है, उस मे देव भावना है। अत उस के प्रति विद्रोह, अविश्वास निन्दनीय है तथा 'महती देवता ह्येषा नर रूपेण तिष्ठति मनु 6 8, चार्वाक दर्शन मे राजा को साक्षात ईश्वर माना गया है।

राज्य व्यवस्था कितनी भी अव्यवस्थित क्यो न हो, जनता जान-माल से असुरक्षित होकर कितना कष्ट क्या न भोगे ? उसे इसकी कोई परवाह न थी। उसे तो केवल एक ही चिन्ता सवार रहती थी, कि किस प्रकार अधिक से अधिक धन माल इकट्ठा करके अपनी खुशिया मनाई जाए।

एक बार राजा को एक शौक सूझा और उसने हर वर्ष एक व्यक्ति को महामूर्ख की उपाधि से विभूषित करने का निश्चय किया। अत प्रतीक स्वरूप एक सुन्दर छडी तैयार कराई। राजा ने अपने गुप्तचरो को आदेश दिया, कि कोई ऐसा व्यक्ति ढूढा जाए, जो इस दुनिया में रहते हुए भी दुनिया से अनोखा हो। बहुत दिनो की पर्याप्त खोज के बाद राजा के पास आकर एक अधिकारी ने सन्देश दिया, कि महाराज ! हमने आपके आदेश के अनुरूप दिन-रात कर के बहुत ढूढा, पर आपकी बताई कसौटी के अनुकूल और तो कोई नही मिला। हा, नगर में प्रात एक व्यक्ति आता है, जिस ने केवल बहुत साधारण से दो वस्त्र पहने होते हैं। वह प्रतिदिन मिलते-जुलते भावो वाले गीत के कुछ बोल-बोलता हुआ गलियों मे अलख जगाता है। जिसके एक गीत के बोल ये हैं—

"ये महल दुमहले यही रहेंगे, ना सग तेरे कुछ जाएगा।
मुट्ठी बाध के आया मूर्ख, हाथ पसारे जाएगा।
नेकी-बदी बस तेरा, एक अनमोल खजाना रे ॥
नादान न कर पापो पे गुजर।
एक रोज यहा से जाना रे ॥

न जान कि मेरे पापों पर, कोई देखने वाली नजर नहीं।
इस हत्यारे अन्धकार मे, तुझे ही अपनी खबर नहीं॥
मालिक की नजरो मे मूर्ख, आसान नहीं छुप जाना रे।
माटी का यह रूप रग, माटी में मिल जाना रे ॥
नादान न कर पापों पे गुजर।
इक रोज यहा से जाना रे ॥

मिट्टी बन गई तेरी काया, कभी न जिस पर धूल लगी।
पडा रहा पापी तेरा, यह अनमोल खजाना रे।
नादान न इतना सोच सका, इक रोज यहा से जाना रे।
पानी का बुल-बुला तेरी जिन्दगी, ससार मुसाफिर खाना रे ॥
नादान न कर पापो पे गुजर।
इक रोज यहा से जाना रे ॥

छीन के खुशिया मासूमो की, कब तक तू मुस्काएगा।
सास बिरानी के बिरते पर, अमर नही हो पाएगा।
हत्या चोरी लूट का माल, यही सारा लूट जाना रे।
नादान न कर पापो पे गुजर।
इक रोज यहा से जाना रे ॥

नागरिको ने प्रतिदिन निःस्वार्थ भाव से गाने वाले गायक के सादे वेश को देख कर अच्छे से अच्छे कीमती वस्त्र देने का प्रयास किया। परन्तु वह किसी से भी किसी प्रकार का उपहार नही लेता। अनेको ने अनेक बार अनुनय-विनय-पूर्वक भोजन का निमन्त्रण दिया। परन्तु उसने कभी स्वीकार नही किया। वह नगर से बाहर निर्जन वन मे एक घास-फूस की झोपडी मे वर्षों से रह रहा है।

अनेक धनियो ने वन मे एक कुटिया बनवा कर देने की इच्छा प्रकट की। कुछ ने पलग बिस्तर देना चाहा, पर उसका एक ही दृढ उत्तर रहता। मुझे इन चीजो की बिल्कुल जरूरत नही है और फिर कभी भूल कर भी कुछ देने की इच्छा से इधर न आना। उसने अपनी झोपडी के आस-पास स्वय मेहनत से कुछ अन्न, फल, सब्जिया बोई हुई हैं। उनका ही केवल आहार करता है। किसी से भोजन तक भी नही लेता। अपनी मेहनत का रूखा सूखा खाकर ही पर सेवा तथा अपने अध्ययन, मनन, ध्यान और खेती मे मस्त रहता है। कभी-कभी रास्ते की सफाई करते हुए और आस-पास वृक्ष लगाते हुए दीखता है। पास मे ही रास्ता होने से देर-सवेर से आने वाले हर व्यक्ति को यथा-योग्य सेवा शुश्रूषा की सुविधा देता है। हमे तो दुनिया से यही अनोखा दिखाई देता है, जो कि आप की कसौटी पर बहुत कुछ पूरा उतरता है।

राजा ने एक निश्चित दिन उस व्यक्ति को भरे दरबार मे उपाधि और छडी से सम्मानित किया। उस दिन के बाद वह व्यक्ति महामूर्ख के नाम से (राजा की ओर से) पुकारा जाने लगा। कुछ समय के पश्चात् अपने असयम के कारण राजा बहुत अधिक बीमार हो गया। 'भक्षितेऽपि लशुने न शान्तो व्याधि' के अनुसार ज्यो-ज्यो इलाज किया गया, पर राजा की हालत बिगडती चली गई, स्थिति यहा तक पहुच गई, कि किसी भी स्थिति मे राजा के बचने की आशा न रही। तब जग दिखाई के लिए शिष्टाचारवश लोग राजा को पूछने के लिए विशेष रूप से आने लगे।

राजा की इस स्थिति की सूचना जब महामूर्ख समझे जाने वाले के पास पहुची, तो एक दिन अपनी छडी के साथ वह राजा के पास पहुचा। हाल-चाल पूछने के बीच जब राजा ने कहा बस अब तो चलने की तैयारी है। उस महामूर्ख समझे जाने वाले ने बड़े भोलेपन के साथ एकान्त देख कर पूछा, राजन ! कहां आप जा रहे हैं, वहां कितने दिन के लिये जा रहे हैं और वहा से कब लौटेंगे ? तथा आप के साथ इन रानियो, सेविकाओ, मन्त्रियो, दरबारियों में से कौन-कौन जा रहा है ?

(क्रमश)

सम्पादकीय—

सन्यासी का संकल्प

आर्य समाज को अपने संन्यासियों पर गर्व है। हमारे देश में साधुओं संन्यासियों की कमी नहीं है। कहने को तो लोग कहते हैं कि हमारे देश में 50 लाख साधु हैं। यह कहना तो कठिन है कि वास्तव में कितने हैं। इसमें सन्देह नहीं कि लाखों हैं। हरिद्वार, वाराणसी, ऋषिकेश, प्रयाग, नासिक, केदारनाथ, बद्रीनाथ और ऐसे दूसरे स्थानों पर हम जाएं तो कई प्रकार के साधु वहां मिलते हैं। कई ऐसे भी हैं जो साधु तो बन गए हैं, साथ ही मठाधारी भी हैं। उन्होंने अपने-अपने मठ बना रखे हैं। उनके द्वारा उन्हें प्रत्येक प्रकार के ऐश्वर्य के सब साधन मिल जाते हैं और फिर भी वे अपने आपको साधु या संन्यासी कहते हैं।

आर्य समाज के साधुओं, संन्यासियों की स्थिति उनसे बिल्कुल विपरीत है। ये लोग वास्तव में साधु होते हैं। संन्यासी वही हो सकता है, जिसे न पुत्रेषणा हो, न वित्तेषणा और न लोकेषणा। ऐसे संन्यासी तो आर्य समाज में मिल जाते हैं, जिनकी लोकेषणा समाप्त नहीं होती। लेकिन कोई संन्यासी नहीं जो पुत्रेषणा या वित्तेषणा का शिकार होकर संन्यासी भी रहे और बाकी भी सांसारिक काम करते रहें। मेरी सदा ही यह धारणा रही है कि आदर्श संन्यासी यदि कहीं मिल सकते हैं तो आर्य समाज में। इसके यह अर्थ नहीं कि आर्य समाज के बाहर जितने संन्यासी हैं, वे सब ढोंगी हैं, परन्तु इसमें भी सन्देह नहीं कि बहुत बड़ी संख्या आज ऐसे साधुओं और संन्यासियों की है, जो वास्तव में ढोंगी हैं। जिनका हृदय एक संन्यासी का हृदय नहीं और जिन्होंने न इस उद्देश्य से संन्यास लिया है कि उन्होंने घर-बाहर छोड़कर निष्काम भावना से जनता की और समाज की सेवा करनी है। कई ऐसे भी संन्यासी हैं जो केवल अपना चोला बदल लेते हैं, लेकिन उनके दिल में कोई अन्तर नहीं आता। ऐसे ही व्यक्तियों के लिए उर्दू के विख्यात कवि इकबाल ने लिखा था—

जो मैं सर बसजदा हुआ कभी तो जमीन से आने लगी सदा।
तेरा दिल तो है सनम आशयाना, तुझे क्या मिलेगा नमाज में।

अर्थात् तेरा दिल तो किसी और तरफ है। नमाज का ढोंग करके तू क्या लेगा। यही कुछ कई साधुओं के विषय में भी कह सकते हैं।

परन्तु आर्य समाज के संन्यासी एक भिन्न श्रेणी में गिने जाने चाहियें यह तो हो सकता है कि उनमें से भी कोई ऐसे हों जिन्होंने केवल चोला बदला हो, परन्तु हमारा कोई भी संन्यासी ऐसा नहीं, जिसमें वह दोष व अवगुण हों जो हमें प्रायः दूसरे साधुओं में मिल जाते हैं। आर्य समाज के इतिहास में हम जितने बड़े 2 साधुओं के विषय में पढ़ते हैं, उन सब ने अपना जीवन धर्म प्रचार और समाज सेवा के लिए अर्पित कर रखा था। इसलिए मैंने शुरू में ही लिखा है कि हम अपने संन्यासियों पर गर्व कर सकते हैं। ऐसे ही संन्यासियों में एक श्री स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती हैं। जो आज कल चम्बा में काम कर रहे हैं। वहां उन्होंने एक दयानन्दमठ स्थापित किया है, जिसमें वे लड़कों और लड़कियों को संस्कृत पढ़ाते हैं। एक फार्मेसी भी वहां चल रही है और साथ ही वे आर्य समाज की सेवा भी करते हैं। जिस स्थान पर उन्होंने दयानन्द मठ बनाया है, किसी समय यह यह एक खण्डर था, अब वहां धीरे-धीरे एक आश्रम बनता जा रहा है। रावी के किनारे शान्त वातावरण में यह चम्बा व उसके पास के क्षेत्रों के लोगों के लिए एक बहुत बड़े आकर्षण का विषय है। श्री स्वामी जी ने जनता की जो सेवा की है, उसके कारण चम्बा में सब लोग उनका आदर और सन्मान करते हैं, यह दयानन्द मठ दीनानगर के दयानन्द मठ की एक शाखा है और श्री स्वामी सुमेधानन्द जी को भी सारी प्रेरणा श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से मिलती है।

जिस बात की ओर मैं आर्य समाज का ध्यान दिलाना चाहता हूं, वह यह कि श्री स्वामी सुमेधानन्दजी ने पिछले दिनों एक संकल्प किया है बहुत देर से वे चम्बा व दूसरे कई स्थानों में यज्ञ करवाया करते थे। यज्ञ प्रणाली और पंचमहायज्ञ के विषय में अनुसन्धान करते हुए उन्होंने पुत्रेष्टि यज्ञ के विषय में भी कुछ जानकारी प्राप्त की और अब उन्होंने यह संकल्प किया है कि वे अपना जीवन पुत्रेष्टि यज्ञ के प्रचार में व्यतीत करेंगे। स्वामी जी महाराज का कहना है कि हमारे देश का भविष्य बहुत ही धूमिल रहेगा, यदि हम नई सन्तान को चरित्रवान् और बलवान् बनाने का प्रयास न करेंगे। इसके लिए वे यह यह आवश्यक समझते हैं कि अपने देश की युवा पीढ़ी को समझाया जाए कि वह अपनी नई सन्तान किस प्रकार से ऐसी पैदा कर सकते हैं, जो बड़ी होकर देश, धर्म और समाज की सेवा कर सकें। स्वामी जी का कहना है कि परिवार नियोजन की जो योजना हमारी सरकार ने बना रखी है, उससे हमारे देश को और विशेषकर हिन्दू जाति को बहुत हानि पहुंचेगी। हमें सन्तान की संख्या को अवश्य सीमित रखना चाहिए, परन्तु जो भी सन्तान पैदा करें, वह ऐसी होनी चाहिए जो चरित्रवान् हो और जो अपने आपको धर्म और देश के लिए समर्पित करने को तैयार हों। इसके लिए आवश्यक है कि हम अपनी नई पीढ़ी को यह समझाएं कि अपने विवाह के पश्चात् उन्हें किस प्रकार से संयम से काम लेते हुए ऐसी सन्तान पैदा करनी चाहिए, जो आगे चलकर अपने जीवन को सार्थक बना सकें। इसके लिए प्रचार की आवश्यकता है, साहित्य प्रकाशित की आवश्यकता है। युवकों को बिठाकर उन्हें समझाने की आवश्यकता है। तात्पर्य यह कि अब आर्य समाज को देश की एक नई और ऐसी पीढ़ी तैयार करने में लग जाना चाहिए जो कुछ समय के पश्चात् अपने आचरण से देश का सारा वातावरण बदल सकें। श्री स्वामी जी महाराज की यह निश्चित धारणा है कि यदि हमने अपनी युवा पीढ़ी की ओर ध्यान न दिया तो हमारा देश अवनति के ऐसे गढ़े में जा गिरेगा, जहा से निकलना उसके लिए कठिन हो जाएगा। इसलिए स्वामी जी ने यह संकल्प किया है कि वह अपना बाकी का जीवन अब इसी काम में लगाएंगे। उनका कहना है कि यदि हम इस ओर लग जाएं तो देश का वातावरण ही बदल सकता है, केवल बातें करने या उपदेश देने से यह काम न होगा। इसके लिए एक विधिवत् अभियान चलाना पड़ेगा और स्वामी जी अपना सारा जीवन उसके लिए लगाने को तैयार हैं।

दयानन्द मठ, चम्बा के वार्षिक अधिवेशन में श्री स्वामी सुमेधानन्द जी ने अपने इस संकल्प को बार-बार दोहराया है और जो व्यक्ति उस समय वहां बैठे थे, उन सबसे सहयोग के लिए प्रार्थना की।

जो कुछ मैंने चम्बा में देखा है वह मैंने आर्य मर्यादा के पाठकों के सामने रख दिया है। मैंने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से श्री स्वामी सुमेधानन्द जी को अपने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया है। हमारी सभा इस महान् कार्य में उनकी जो भी सेवा कर सकेगी और जो भी सहयोग दे सकेगी, अवश्य देगी। आशा है कुछ समय के पश्चात् स्वामी जी की सारी योजना हम आर्य जनता के सामने रख सकेंगे। स्वामी जी आर्य समाजों में जाकर इस विषय में अपने विचार जनता के सामने रखने को भी तैयार हैं। उन्होंने जो संकल्प लिया है उसे सफल बनाना केवल उनका ही काम नहीं, सारी आर्य जनता का एक कर्तव्य भी है।

—वीरेन्द्र

50 वर्ष पहले का आर्यसमाज

आर्य समाज मे जो शिथिलता अब आ रही है, उस का एक कारण यह भी है कि हम उस के गौरवमय अतीत की तरफ ध्यान नही देते। हमारे नेतागण अपना ढोल तो पीटते हैं, परन्तु हम से बहुत पहले जो आर्य समाज के नेता हो चुके हैं, और उन्होंने आर्य समाज के लिए जो कुछ किया था और उन के प्रयत्नो से आर्य समाज जो कुछ बन गया था, यह जनता के सामने नही रखते। इसलिए हमारी नई पीढी को भी आर्य समाज मे वह दिलचस्पी नही हो रही, जो होनी चाहिए। यही कारण है कि आर्य समाज का क्षेत्र सीमित होता जा रहा है

50 वर्ष पहले आर्य समाज की गतिविधिया उस समय के आर्य समाजी पत्रो में प्रकाशित हुआ करती थी। पजाब मे साप्ताहिक "प्रकाश" ने आर्य समाज के प्रचार के लिए एक विशेष योगदान दिया था। उस की 50 वर्ष पहले की फाईल को देख कर हम कुछ अनुमान लगा सकते हैं कि हमारे पूर्वज क्या थे और हम क्या है? मैं चाहता हू कि पजाब की आर्य जनता को 50 वर्ष से पहले की आर्य समाज के विषय मे भी कुछ बताया जाए, साप्ताहिक प्रकाश की कुछ फाईलें मुझे मिली हैं उन्हें देख कर बहुत कुछ पता चल जाता है। मैं चाहता हू कि विशेष घटनाए

(शेष पृष्ठ 6 पर)

स्वामी दयानन्द के प्रशंसक

स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती

लेखक—डा भवानीलाल जी भारतीय
पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ

काशी के सुप्रसिद्ध शास्त्रार्थ मे मूर्तिपूजा के पक्षपोषक स्वामी विशुद्धानन्द पौराणिक पण्डितो के प्रमुख प्रवक्ता के रूप मे उपस्थित थे। इनका जन्म उत्तर-प्रदेश के सीतापुर जिले के बाडी नामक ग्राम मे एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार मे हुआ था। इन के पिता का नाम प समलाल शुक्ला था। स्वामी विशुद्धानन्द का जन्म नाम बशीधर था और ये 1820 ई मे जन्मे थे। युवा होने पर ये निजाम की सेना मे भर्ती हो गए और सैनिक की वृत्ति स्वीकार कर ली। किन्तु स्वल्प काल पश्चात ही नौकरी से त्याग पत्र देकर यह उत्तराखण्ड भ्रमण के लिए निकल पड़े। इनका अध्ययन कानपुर के निकट बिठूर मे राघवेन्द्राचार्य नामक एक पण्डित के समीप रह कर हुआ। काशी मे इन्होने अहल्या बाई घाट के निवासी गौड स्वामी नामक एक सन्यासी से चतुर्थाश्रम की दीक्षा ली और विशुद्धानन्द सरस्वती नाम को धारण किया। 1916 वि मे गौड स्वामी के निधन के उपरान्त यह उनकी गद्दी के अधिकारी हुए। गौड स्वामी का यह मठ और यह गद्दी सासारिक ऐश्वर्यो से परिपूर्ण थी। काशी की पाण्डित्य परम्परा के लेखक प बलदेव उपाध्याय के अनुसार स्वामी विशुद्धानन्द लक्ष्मी के कृपापात्र रहे। उनका सचमुच दरबार लगा करता था। द्वार पर चोबदार अपनी ड्यूटी बजाता था। कोई भी आगन्तुक बिना उन की आज्ञा के प्रवेश नही पा सकता था। स्वामी जी स्वय राजसी ठाठबाट से घिरे रहते थे। हथुआ के राजा कृष्ण प्रताप शाही ने उन्हे कीमती शैया पर बैठ तथा सोने चादी के बतनो से घिरा हुआ देखा था। स्वामी विशुद्धानन्द के ऐश्वय और वैभव की तुलना मे अकिचन कौपीनधारी दयानन्द के परिव्राजक परमहस रूप मे देखना और परखना अधिक समीचीन होगा।

यह हम लिख चुके है कि स्वामी दयानन्द से हुए काशी के शास्त्राथ मे स्वामी विशुद्धानन्द पौराणिक पक्ष के प्रमुख वक्ता के रूप मे विद्यमान थे। उस अवसर पर इन्होने गवपूवक स्वामी जी से कहा था कि यदि उन्हे समस्त शास्त्र उपस्थित (कण्ठस्थ) नही है तो वे काशी मे शास्त्राथ के लिए आए ही क्यो? परन्तु स्वामी दयानन्द द्वारा धम का स्वरूप एव लक्षण पूछने पर स्वामी विशुद्धानन्द सन्तोषजनक उत्तर नही द सके थे। काशी शास्त्राथ को बिना किसी निणय पर पहुचाये अधूरा ही समाप्त करा देने के लिए भी स्वामी विशुद्धानन्द को ही उत्तरदायी मानना होगा क्योकि जिस समय स्वामी दयानन्द प माधवाचार्य द्वारा दिये गए पत्रो को लेकर उन पर विचार कर ही रहे थे कि स्वामी विशुद्धानन्द उठ खड हुए और यह कह कर जाने लगे कि उन्हे विलम्ब हो रहा है। प सत्यव्रत सामश्रमी लिखित काशी शास्त्राथ के विवरण मे लिखा है कि स्वामी विशुद्धानन्द हर हर महादेव बोलते हुए उठ खडे हुए तथा शास्त्राथ को समाप्त कर दिया।

मूर्तिपूजादि विषयो मे स्वामी दयानन्द के प्रबल प्रतिद्वन्द्वी होने पर भी स्वामी विशुद्धानन्द स्वामी दयानन्द की शास्त्रदर्शिता उन के धर्म सशोधक कार्य की महत्ता तथा लोकहित के प्रति उनकी निष्ठा को भली भान्ति जानते थे। 1936 वि के कुम्भ मे पौराणिक प चतुभु ज और प श्रद्धाराम फिल्लौरी ने एक षडयन्त्र कर स्वामी जी को शास्त्रार्थ के लिए आहूत किया। उन्होने तीस पण्डितो के हस्ताक्षरो से युक्त एक पत्र श्री महाराज की सेवा मे भेज कर उन से अनुरोध किया कि वे मायादेवी के पास के जूना अखाडा मे आव और विद्वानो से विधिवत शास्त्राथ करे। शास्त्राथ तो एक बहाना था। पण्डितो ने यह विचार कर रखा था कि जब स्वामी दयानन्द उनके स्थान पर आ जाव तो पत्थर मार कर उनका सिर फोड दिया जाएगा, यद्यपि स्वामी दयानन्द को अपनी शारीरिक हानि की भी कुछ परवाह नही था, किन्तु वे सोचते थे कि जो लोकोपकार का कार्य वे कर रहे है, प्राण चले जाने पर तो वह अधूरा ही रह जाएगा। स्वामी दयानन्द ने सनातनी पण्डितो के उक्त पत्र के उत्तर मे स्पष्ट लिख दिया था कि यदि स्वामी विशुद्धानन्द यह कह दे कि पण्डित गण उनकी (स्वामी दयानन्द की) अपेक्षा वेदो को अधिक समझते हैं तो वे उन्हे ही मध्यस्थ मान कर शास्त्रार्थ करने के लिए तैयार हैं। जब स्वामी विशुद्धानन्द को सारी बातें ज्ञात हुईं तो उन्होंने प्रथम तो प चतुर्भुज तथा प श्रद्धाराम को वर्णनातीत अश्लील गालियां दी और कहा कि दयानन्द के समक्ष वे वेदो का अक्षर भी नही जानते, उन्होने शास्त्रार्थ मे मध्यस्थता स्वीकार करने से भी इन्कार कर दिया और एक पत्र स्वामी जी को भेजा जिसमे उन्होने स्पष्ट लिखा कि वे चतुर्भुज तथा फिल्लौरी जैसे धूर्तों की सभा मे हरगिज न जाएंगे और कि वे स्वय भी मध्यस्थता भी नही करेंगे। इस प्रकरण से स्वामी दयानन्द के प्रति विशुद्धानन्द का हार्दिक भाव स्पष्ट हो जाता है।

स्वामी दयानन्द भी स्वामी विशुद्धानन्द के पाण्डित्य के कायल थे। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि यदि उनके जैसे व्यक्ति धम सशोधन और लोकहित के कार्य मे प्रवृत्त हो जाए तो देश को ऊचा उठाने मे अधिक समय नही लगेगा। इसी अभिप्राय से उन्होंने स्वामी विशुद्धानन्द के समीप मिर्जापुर निवासी प मोतीराम गौड को भजा और कहलाया कि सत्य धम के प्रचार मे उन्हे स्वामी दयानन्द का साथ देना चाहिए। जब प मोतीराम ने स्वामी विशुद्धानन्द के समीप जा कर यह चर्चा चलाई तो प्रथम तो उन्होने स्वीकार किया कि काशी मे इतने विद्वान हैं किन्तु वेदाधवित कोई नही हैं। हा उन्होने इतना अवश्य माना कि काशी के विद्वानो मे अकेला प गणेश श्रोत्रिय वेदो को जानता है। परन्तु उन्होने यह भी कह दिया कि श्रोत्रिय भी स्वामी दयानन्द से मिला हुआ है।

जब प मोतीराम ने स्वामी विशुद्धानन्द के समक्ष प्रस्ताव रखा कि वे और स्वामी दयानन्द दोनो ही सरस्वती उपाधिकारी सन्यासी हैं। अत दोनो को मिल कर सत्य धम का प्रचार करना चाहिए। इस पर स्वामी विशुद्धानन्द ने स्पष्ट कह दिया कि सत्य पर आरूढ होने की बात करना तो सरल है किन्तु गगा के प्रवाह को बदलना कठिन है। उनका अभिप्राय था कि मर्तिपूजादि प्रचलित परम्पराओ को समाप्त करना सहज नही है। अन्तत उन्होने यह भी स्वीकार कर लिया कि यदि वे परम्परा के विरुद्ध चलने लग तो सब मनुष्य उन के विरोधी हो जाएंगे। इस प्रसग मे उन्होने अपने राजसी वैभव और ठाठबाट की ओर सकेत करते हुए स्पष्ट कहा कि यदि वे भी दयानन्द की भान्ति सत्य सत्य कहने लगे तो लोग जो भिक्षा देते हैं, वह भी नही देगे और कहेंगे कि विशुद्धानन्द तो स्वामी दयानन्द के अनुयायी हो गए हैं। स्वामी दयानन्द की हार्दिक भावना को यहां समझना आवश्यक है। उन्होंने प. मोतीराम को स्पष्ट कह दिया कि स्वामी विशुद्धानन्द का यह भय व्यर्थ है कि लोग उन्हें क्या कहेंगे अथवा धन के जीवन यापन की सुविधाएं भी छिन जाएगी। उन्होंने तो यहा तक कहा कि यदि विशुद्धानन्द उन के साथ हो जायें तो वे स्वय उन के अधीन रह कर धर्म का प्रचार करने के लिए तैयार हैं। देशाटन भी वे स्वय ही करेंगे और स्वामी विशुद्धानन्द को तो केवल काशी मे रह कर उन के लोकहित के इन कार्यों को अपना सहयोग देना होगा। किन्तु गौड स्वामी के मठ का अपार ऐश्वर्य भोगने वाले स्वामी विशुद्धानन्द को यह प्रस्ताव भला कैसे रास आता। उन्होने स्वामी दयानन्द को लक्षित कर कहा—वह तो [illegible] है, निश्शक खण्डन करता है, हम नहीं कर सकते।

जो हो यह स्वीकार करने में कोई विप्रतिपति नही है कि स्वामी दयानन्द के हृदय में स्वामी विशुद्धानन्द के प्रति आदर भाव था। तभी तो काशी निवासी राजा शिवप्रसाद की मन्त्र ब्राह्मण विषयक शकाओ का प्रमोच्छेदन के रूप मे लिखित उत्तर देना उन्होंने तभी स्वीकार किया जब उन्होंने देख लिया कि राजा महोदय ने अपने वक्तव्य को स्वामी विशुद्धानन्द से समर्पित करा लिया है। 1956 वि मे स्वामी विशुद्धानन्द का काशी मे निधन हो गया। उस समय उन की आयु लगभग 80 वर्ष की थी।

आर्य पुरोहित सभा दिल्ली (पंजी) का वार्षिक निर्वाचन

आय पुरोहित सभा दिल्ली का वार्षिक निर्वाचन आचार्य श्री हरिदेव जी सिद्धान्त भूषण की अध्यक्षता मे सर्व सम्मति से सम्पन्न हुआ। विवरण निम्न प्रकार है —

प्रधान—प प्रेमपाल शास्त्री
उप-प्रधान—प यशपाल सुधाशु
उप प्रधान—प विक्रम शास्त्री
मन्त्री—प मेघ श्याम वेदालकार
उप मन्त्री—डा रूप किशोर शास्त्री
उप-मन्त्री—प शिवराज शास्त्री
कोषाध्यक्ष—प विद्या प्रसाद मिश्र
लेखानिरीक्षक—प भारद्वाज

पाण्डेय
मन्त्री

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर का महर्षि बाल्मीकि प्रकटोत्सव

26-10-86 को महर्षि बाल्मीकि प्रकटोत्सव मनाया गया। प्रातः बृहद् यज्ञ हुआ जिस में नगर की भिन्न-भिन्न बाल्मीकि, रविदासी ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा, राष्ट्रीय सुरक्षा समिति तथा कई व्यापारिक सस्थाओ के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। रात को दीपमाला की गई।

उसके पश्चात् एक जनसभा हुई। इसकी अध्यक्षता प्रिंसीपल डी ए वी कालेज अमृतसर मान्यवर श्री धर्मवीर जी पसरीचा जी ने की। वैदिक गर्ल्ज हायर सैकण्डरी स्कूल, अमृतसर की छात्राओं ने धार्मिक गीत प्रस्तुत किए। नगर की प्रख्यात भजन मण्डली ने भजन प्रस्तुत किए। इसमे श्री निहाल चन्द जी चीवा, सम्पादक, बाल्मीकि सन्देश और उप-प्रधान, प सत्य स्वरूप जी, प ओम् प्रकाश कालिया प्रधान ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा, अमृतसर तथा अन्यो ने महर्षि जी को श्रद्धाञ्जली अर्पित की। अन्त मे नगर मे निकाली गई शोभा यात्रा मे नम्बर एक, दो और तीन पर आने वाली पार्टियो और समाज मे गीत गाने वाली पार्टियो, छात्राओ को 'ओ३म्' की शील्डें व सरापे प्रदान किए गए। शान्ति पाठ किया गया तथा यज्ञ शेष वितरित किया गया।

ऋषि निर्वाणोत्सव

1-11-86 को प्रातः बृहद् यज्ञ हुआ जिसमे 21 नवयुवको को यजमान बनाया गया। तत्पश्चात् जनसभा हुई। जिसकी अध्यक्षता पं ओम्प्रकाश जी कालिया, प्रधान ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा ने की। इस उत्सव मे वैदिक गर्ल्ज हा सै. स्कूल व श्रद्धानन्द महिला महाविद्यालय की छात्राओ और नगर की भिन्न-2 सस्थाओ व गणमान्य व्यक्तियो ने भाग लिया। छात्राओ ने देव दयानन्द जी की जीवनी और वैदिक गीत प्रस्तुत किए। श्री चमनलालजी दीवान ने ऋषि वर दयानन्दजी को श्रद्धाञ्जली अर्पित की। इस उत्सव की अध्यक्षता प ओम्प्रकाश जी कालिया ने की। समारोह की सफलता के लिए सुश्री चन्द्रकान्ताधर, प्रिंसीपल वैदिक गर्ल्ज हा सै स्कूल तथा स्टाफ ने विशेष योगदान दिया। छात्राओ के उत्साह हेतु उन्हे पारितोषिक दिए गये। समारोह की समाप्ति 'शान्ति पाठ' के पश्चात् यज्ञ शेष के वितरण पश्चात् हुई। रात को भवन पर भव्य दीपमाला की गई।

—वीरेन्द्र देवगण-महामन्त्री

आर्य समाज हनुमान रोड़, नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव का विवरण

आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का 64 वा वार्षिकोत्सव आर्य समाज के प्रागण मे गत दिनो समारोह पूर्वक हुआ जिसमें प्रसिद्ध आर्य विद्वान् प. मदन मोहन विद्यासागर के ब्रह्मत्व मे यजुर्वेदीय पारायण महायज्ञ श्रद्धा भक्ति के साथ चला रात्रि को प. जी की मनोहारी कथा हृदय को छूती रही।

वार्षिकोत्सव का प्रमुख कार्यक्रम आर्य महिला सम्मेलन से प्रारम्भ हुआ इस आर्य महिला सम्मेलन मे विदुषी महिलाओ ने भी कार्यक्रम मे भाग लिया और अपने विचारो से प्रेरित किया इस सम्मेलन मे स्कूलो से आये हुए बच्चो के कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए यह कार्यक्रम विशेष कर बच्चो के सास्कृतिक कार्यक्रम के फलस्वरूप बड़ा मनोहारी रहा।

राकेश कैला स्मारक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया इस प्रतियोगिता कार्यक्रम मे दिल्ली प्रदेश के सीनियर सैकण्डरी स्कूल के छात्र-छात्राओ के बहुत ही रोचक भाषण प्रतियोगिता हुई जिसकी अध्यक्षता बलभद्र कुमार हूजा भूतपूर्व कुलपति गुरुकुल कागडी हरिद्वार ने की। इस प्रतियोगिता का विषय था पजाब समस्या एव हिन्दू सिख एकता। फिर दोपहर बाद द्वितीय सत्र मे महाविद्यालयो एव विश्वविद्यालयो के छात्र छात्राओ की प्रोफैसर वाचस्पति उपाध्याय अध्यक्ष दक्षिण परिषद् दिल्ली विश्वविद्यालय की अध्यक्षता मे धर्म एव सम्प्रदाय (मजहब) क्या एक ही है। इस विषय पर जबरदस्त भाषण प्रतियोगिता हुई। इस प्रतियोगिता मे विभिन्न कालेजो एव विश्वविद्यालयो से लगभग 50 प्रतियोगियो ने भाग लिया। आर्य समाज के प्रधान श्री राममूर्ति कैला द्वारा अपने स्वर्गीय पुत्र श्री राकेश कैला की स्मृति में करायी गई।

वार्षिकोत्सव के अन्तिम दिन यजुर्वेदीय पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति के साथ यज्ञ कार्य सम्पन्न तथा यज्ञोपरान्त प्रो. रत्नसिंह, प मदनमोहन विद्या सागर जी के विशेष प्रवचन हुए इसके पश्चात् श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अध्यक्षता मे राष्ट्रीय एकता सम्मेलन प्रारम्भ हुआ जिसमे पूज्य स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती, श्री कुलानन्द भारत कार्यकारी पार्षद शिक्षा विभाग दिल्ली प्रशासन, श्री रामचन्द्र विकल ससद सदस्य, श्री शिवकान्त उपाध्याय डा महीप सिंह, श्री सोमनाथ एडवोकेट सुप्रीमकोर्ट श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय इत्यादि विद्वान् एव नेताओ ने भाग लिया। इस सम्मेलन मे राष्ट्रीय एकता से सम्बन्धित गवेषणापूर्वक विचारो को प्रस्तुत करते हुए अन्त मे सभी विद्वान् इस निर्णय पर पहुचे कि देश की अखण्डता को बनाया जाना नितान्त अनिवार्य है और अपने देश के टुकड़े होने से बचाना सभी लोगो से सौहार्दपूर्ण व्यवहार करना आवश्यक है।

—सरदारी लाल वर्मा
उप-प्रधान

श्री रोशनलाल शर्मा प्रधान आर्य युवक सभा पंजाब का

आर्य मर्यादा को सराहनीय योगदान

श्री रोशनलाल जी शर्मा प्रधान आर्य युवक सभा पजाब ने 'आर्य मर्यादा' के लुधियाना से 25 नए ग्राहक बनाए है और इनका वार्षिक शुल्क भी भेजा है। यह शर्मा जी का प्रशसनीय व सराहनीय योगदान है। 'आर्य मर्यादा' के सभी पाठको एव आर्य समाजो के अधिकारियो से प्रार्थना है कि वे भी शर्मा जी की तरह आर्य मर्यादा के अधिकाधिक ग्राहक बना कर हमे भेजे। आर्य मर्यादा हिन्दी साप्ताहिक का वार्षिक शुल्क 20 रुपये है तथा आजीवन शुल्क 200 रुपये है।

—ब्रह्मदत्त शर्मा
सभा महामन्त्री

आर्य समाज सुजानगढ़ चेरिटेबल ट्रस्ट की एक और महान् उपलब्धि

आर्य जनता को जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य समाज स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर ट्रस्ट द्वारा ग्राम भासीना तहसील सुजानगढ़ जिला चुरू (राजस्थान) मे होम्योपैथिक औषधालय आरम्भ किया गया है। होम्योपैथिक औषधालय का उदघाटन श्री सत्यनारायण लाहोटी मैनेजिंग ट्रस्टी द्वारा सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि श्री गणपतराम शर्मा सरपच कसूम्बी, अध्यक्ष श्री शन्नो देवी शर्मा एव प विद्या प्रकाश देव शर्मा के आचार्यत्व मे यज्ञ, सत्सग भजन व उपदेश द्वारा उदघाटन सम्पन्न हुआ। भासीना ग्राम के आसपास के ग्रामो के ग्रामीण एव सुजानगढ़ शहर के कई गणमान्य व्यक्ति समारोह मे सम्मलित हुए। भासीना औषधालय के व्यवस्थापक श्री मानाराम चौधरी भूतपूर्व सरपच भासीना नियुक्त किये गये हैं। आर्य समाज सुजानगढ़ चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा एक होम्योपैथिक औषधालय आर्य समाज भवन सुजानगढ़ मे पहले से ही चालू है।

आचार्य विश्वश्रवा जी आंखों की चिकित्सा के लिए अमेरिका में

आचार्य जी की आखे पर्याप्त समय से खराब थी। भारत के अनेक चिकित्सालयो मे तथा प्राईवेट नेत्र विशेषज्ञो से चिकित्सा कराई गई, कोई लाभ नही हुआ। दोनो आखो से देखना बन्द हो गया। यह सूचना प्राप्त होने पर मैंने पिता जी (आचार्य जी) को चिकित्सार्थ अपने पास न्यूयार्क (अमेरिका) बुला लिया है।

अत इन दिनो ग्रन्थो का लेखन प्रकाशन तथा पत्रो का उत्तर देना आदि सभी कार्य बन्द रहेगा। आचार्य जी के भारत वापस जाने पर सब कार्य पूर्ववत प्रारम्भ हो जाएगे। आर्य जनता की सूचनार्थ निवेदन है।

—प्रोफैसर डा वेदश्रवा
पुत्र—श्री आचार्य विश्वश्रवा व्यास
न्यूयार्क विश्वविद्यालय, 120 फोस्टर रोड, होपवेलजे सी टी न्यूयार्क 12533 यू, एस, ए,

आवश्यकता है

आर्य समाज बरनाला मे एक योग्य पुरोहित की आवश्यकता है जो पुरोहित के कार्य के साथ साथ बच्चो को नैतिक शिक्षा का भी ज्ञान करवा सके वेतन योग्यता एव अनुभव के आधार पर दिया जाएगा। —यश भाटिया

आर्य समाज हबीब गंज (अमरपुरा) लुधियाना का ऋषि निर्वाण दिवस मनाया गया

1-11 86 को प्रात 7-30 बजे से 11-30 बजे तक आय समाज हबीब गज (अमरपुरा मे) ऋषि निर्वाण दिवस बडी धूमधाम से मनाया गया। यज्ञ की ब्रह्मा आदरणीय बहिन कमला जी आर्या ने 7 30 बजे यज्ञ आरम्भ करवा दिया। यजमान श्री ज्ञानचन्द जी भक्त, श्री धमपाल जी भक्त, श्री महाशय चरणसिह जी ज्ञानी परिवार सहित, श्रीमती धम देवी आर्या, श्रीमती विद्यावतीजी चावला, श्रीमती बेअन्ती देवी जी शर्मा, श्रीमती राजरानी जी कुमार श्रीमती अमरजीत कौर जी थी। आदरणीय बहिन कमला जी आर्या ने वेदमन्त्रो की सुन्दर व्याख्या द्वारा यज्ञ पूण करवाया। आये हुए सभी बहिन भाईयो तथा बच्चो ने आहुति डाली। यजमानो के आर्शीवाद के पश्चात समारोह की कायवाही आरम्भ हुई।

समारोह की प्रधानता बहिन कमला जी आर्या उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने की। सव प्रथम श्री कृपाराम जी आय ने प्रभु भक्ति के भजन तथा महर्षि को श्रद्धाञ्जली के भजन सुनाए। श्री रोशनलाल जी शर्मा सयोजक आर्य युवक सभा पजाब ने उनका साथ दिया। उसके पश्चात आर बी प्राइमरी स्कूल (आर्य समाज हबीब गज), दयानन्द माडल स्कूल की छात्राओ ने मधुर भजन सुनाये। इस समय आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के नये उप प्रधान श्री दीवान राजेन्द्र कुमार जी समारोह मे पधारे। आर्य समाज हबीब गज अमरपुरा के प्रधान श्री आशानन्द जी आर्य ने उनका स्वागत किया तथा परिचय करवाया।

आर्य समाज हबीब गज के अधिकारियो, आर्य समाज जवाहर नगर के प्रधान, आय समाज किदवई नगर के प्रधान, आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार के अधिकारी, आर्य समाज बाग बजाञ्चिया के प्रधान, शहर के नागरिको, जिला सभा के अधिकारियो ने मालाए डालकर उनका स्वागत किया। माता शकुन्तला जी मण्डल ने उन्हे आशीर्वाद दिया। दीवान राजेन्द्र कुमार जी ने आर्य समाज के अधिकारियो का धन्यवाद किया तथा महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को श्रद्धाञ्जली भेंट की।

बहिन राजेश्वरी देवी जी, श्री ज्ञान प्रकाश जी वर्मा, बहिन कुलवन्तो देवी जी आर्य, श्री रामप्यारा लाल जी आय, न गीतो द्वारा महर्षि स्वामी दयानन्द जी को श्रद्धाजली दी। डा मलचन्द जी भारद्वाज, श्री आशान द जी आय, श्री दीवानचन्द जी तूफान ने महर्षि दयानन्द जी सरस्वती को श्रद्धाञ्जली अर्पित करते हुए जनता से प्राथना की कि उनके बताये हुए माग पर चल कर ही अपने कर्त्तव्य को पूरा कर सकते हैं। इस सकट के समय मे आय समाज को आगे आने के लिए भी कहा। अन्त मे बहिन कमलाजी आर्या ने महर्षि स्वामी दयान द सरस्वती जी को श्रद्धाञ्जली भेंट की तथा महर्षि के बताये हुए मार्ग पर विशेष कर देवियो को चलने की प्ररणा दी। 11 30 बजे श न्ति पाठ तथा यज्ञ शेष वितरण किया गया तथा कार्यवाही समाप्त हुई।

श्रीमती भजन कौर सिलाई मशीन ग्रहण करते हुए श्री ज्ञानी गुरदयाल सिंह आर्य एव श्री रोशनलाल शर्मा सयोजक आर्य युवक सभा पजाब भेंट करते हुए।

वेद प्रचार भजन मण्डली लुधियाना अपना कायक्रम प्रस्तुत करती हुई।

लुधियाना आर्य युवक सभा द्वारा पारिवारिक सत्संग—सम्पन्न

आय युवक सभा लुधियाना द्वारा मैसज के एल पूनम निटवेयर्स सुन्दर नगर लुधियाना में 19-10-86 को एक पारिवारिक सत्सग आयोजित किया गया। प सूयपाल जी विद्यावाचस्पति एम एम ने सम्पन्न कराया। ईश्वर ने हमे मानव चोला दिया है, इस लिए हमे उस एक प्रभु की भक्ति ही करनी चाहिए। इस अवसर पर वेद प्रचार भजन मण्डली के प्रभु भक्ति के भजन हुए। श्री रामरखा जी, श्री कृपाराम जी आय, श्री यशपाल जी आर्य, ने भी प्रभु भक्ति के भजनो से जनता का मन मोह लिया। इस अवसर पर श्रीमती भजन कौर को एक सिलाई मशीन भी भेंट की गई। श्री रोशनलाल जी शर्मा सयोजक आय युवक सभा पजाब ने युवकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज जिस प्रकार का वातावरण है उसमे वेद प्रचार की अति-आवश्यकता है। आज के भौतिक युग मे युवक समय निकाल कर समाज म फैली कुरीतिया के लिये सघष कर रहे वह साधु के पात्र हैं। अन्त मे ज्ञानी गुरदयाल सिंह आय उप प्रधान आय समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना ने यजमान परिवार श्री कसर सिह, श्री रोहताश, श्री देव राज तथा सभी युवको का आय समाज की गतिविधियो पर प्रकाश डालते हुए धन्यवाद किया। आयुष्मान सत्य सिंह ने अपने जन्म दिवस के उपलक्ष्य मे 101 रु वेद प्रचार के लिए दिया। इसी प्रकार श्री केसर सिंह ने 101 रु तथा और भी बहुत से दानी महानुभावो ने अपनी पवित्र कमाई में से दान दिया। इस सारे कार्यक्रम का प्रबन्ध श्री सुरेन्द्र कुमार जी आर्य, उप-मन्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार द्वारा किया गया।

—सुरेश चड्ढा

आर्य समाज भवन दुजार में औषधालय का उद्घाटन

ग्राम दुजार तहसील लाडनू जिला नागौर (राजस्थान) मे सुजानगढ़ के जाने माने सामाजिक एवम् धार्मिक कार्यकर्ता श्री सत्यनारायण जी साहोटी (सप्रति आर्य समाज सुजानगढ चेरिटेबल ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी) के सतत सत्प्रयत्न अथक परिश्रम, एव सतत प्रेरणा के परिणामस्वरूप अग्रवाल समाज-भूषण कलकत्ता प्रवासी सुजानगढ निवासी लब्ध प्रतिष्ठ दानवीर श्रेष्ठी शिवप्रसाद जी बगड़िया द्वारा श्री धर्मार्थ होम्योपैथिक औषधालय ग्राम दुजार का सचालन उन के द्वारा प्रतिष्ठित धार्मिक ट्रस्ट "शिवा बगडीया चेरिटेबल ट्रस्ट" द्वारा होम्योपैथिक औषधालय 24 अगस्त 1986 भाद्रपद कृष्ण 5 स 2043 रविवार को प्रारम्भ किया गया।

(3 पृष्ठ का शेष)

आय जनता के सामने रखी जाए। इसलिए अगले सप्ताह से आय मर्यादा मे "50 वष पहले का आय समाज इस शीषक से कुछ समाचार प्रकाशित किए जाएगे, जिन मे पजाब के भिन्न-2 स्थानो की गतिविधियो के समाचार प्रकाशित किये जाएगे। इस प्रकार आज के आय समाजी 50 वष पहले के आय समाज को देख सकेगे और अपने उस गौरवमय अतीत को देख कर अपने प्रभावशाली भविष्य का निर्माण कर सकेगे।

पिछले दिनो आय मर्यादा का जो ऋषि निर्वाण दिवस विशेषांक प्रकाशित हुआ था, उस मे भी इस प्रकार के कई लेख दिए गये थे और एक विशेषांक अब श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस पर प्रकाशित किया जायेगा। उसकी तैयारी अभी से शुरू कर दी गई है। आय समाजो को चाहिए कि अभी से उसके लिए सभा को लिख द कि उन्हे कितनी प्रतिया उस अक की चाहिए ताकि उसके अनुसार वह विशेषांक भी प्रकाशित किया जा सके।

हमारी सभा ने वैदिक मणिमाला नाम से आय समाज क नियम और ऋग्वेद का सगठन सूक्त सुन्दर कागज पर प्रकाशित करवाया है। प्रत्येक साप्ताहिक सत्सग की समाप्ति पर आय समाजी सगठन सूक्त का पाठ किया करते है। मैं आय समाज के अधिकारियो से निवेदन करना चाहता हू कि उन्ह यह वैदिक मणिमाला अधिक से अधिक सख्या मे मगवा कर अपने पास रखनी चाहिए और यथा सम्भव यह अपने सदस्यो मे बाटनी भी चाहिए। एक प्रति का मूल्य एक रुपया है।

वीरेन्द्र

आर्य संस्कृति के रक्षक योगीराज श्रीकृष्ण

ब्रह्मचर्य पालन में महान् तप

लेखक—श्री मांगे राम आर्य, प्रधान
आर्य समाज अहमदनगर (महाराष्ट्र)

महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है कि सत्य और असत्य को विचार के ही सब काम करने चाहिए। इसी के अनुसार यह लेख प्रकाशित किया जाता है। पाठक गण स्वयं निर्णय करें कि जो कुछ श्री ओम् प्रकाश ने लिखा था और जो कुछ श्री मांगे राम आर्य लिख रहे हैं— [illegible] में वास्तविकता क्या है।

—सम्पादक

साप्ताहिक "आर्य मर्यादा" जालन्धर अंक 21-22 दिनांक 24 तथा 31 अगस्त 1986 मे उपरोक्त लेख श्री ओम् प्रकाश जी वानप्रस्थी, भठिण्डा लिखित, प्रकाशित हुआ है। इस लेख मे आदरणीय वानप्रस्थी जी ने श्रीकृष्ण महाराज के "ब्रह्मचर्य पालन में महान तप" का उल्लेख किया है। वह लिखते है कि "श्री कृष्ण जी ने 48 वर्ष की आयु मे रुक्मणी जी से विवाह किया। विवाह के बाद भी पति-पत्नी को पुत्र की प्राप्ति के लिये 12 वर्ष तक इकट्ठे रहते हुये ब्रह्मचर्य पूर्वक के दामन मे तपस्या करना बड़ा भारी संयम का सूचक है। उन्होने जीवन पर्यन्त एक विवाहित श्रीमती रुक्मणी जी को पत्नी के रूप मे रखा" यह विवाह के उपरान्त 22 वर्ष तक अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करने वाली [illegible] बात मैं असत्य प्रतीत होती है [illegible] यहा पर शंका को अवकाश मिलता है क्योंकि शादी करने के बाद ब्रह्मचर्य पालन करना वाजबी नहीं और न ही कोई धर्म शास्त्र इसकी आज्ञा देता है [illegible]ादी तो की ही तब जाती है जब मनुष्य पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन कर चुकता है और उसकी आयु शास्त्रानुसार पूर्ण परिपक्व हो जाती है। और उसे शादी के दिन ही या किसी विशेष अवस्था में दूसरे दिन ही गृहस्थ भोगने का धर्म शास्त्र उल्लेख करते हैं। इसके बारे मे आप महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत संस्कार विधि का अवलोकन करें। सत्यार्थ प्रकाश का चौथा समुल्लास भी देखें। यदि योगीराज श्री कृष्ण महाराज अपने आपको शादी के काबिल नहीं समझते थे और उनके ब्रह्मचर्य पालन में कमी थी तो उन्हें विवाह न करके और 12 [illegible] के उपरान्त 12 वर्ष ब्रह्मचर्य धारण करने वाली घटना सत्य विदित नही होती क्योंकि आपके लेखानुसार श्रीकृष्ण महाराज ने 48 वर्ष पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करके वेदानुसार विवाह किया। वेद और मनु स्मृति मे ब्रह्मचर्य की सीमा 48 वर्ष निर्धारित की है जिसका उल्लेख प्रात: स्मरणीय देव दयानन्द ने स्थान-स्थान पर अपने पवित्र ग्रन्थो मे किया है। इस से सिद्ध होता है कि 48 वर्ष पर शादी करके आगे ब्रह्मचर्य नही हो सकता। गृहस्थाश्रम विवाह होते ही आरम्भ हो जाता है। सो श्री कृष्ण ने शादी के उपरान्त 12 वर्ष अखण्ड, ब्रह्मचर्य का पालन किया, मिथ्या ही है और मानने योग्य नही। यदि इस विषय मे कोई महाभारत का प्रमाण रूप श्लोक भी होगा तो वह प्रक्षिप्त ही मानना पड़ेगा क्योंकि महाभारत मे बहुत अधिक श्लोक मिलावटी है। श्री कृष्ण जी ने 48+12=60 वर्ष की आयु होने पर एक पुत्र प्रद्युम्न उत्पन्न किया जो वेद और मनु स्मृति की मर्यादा का उल्लंघन करता है। हमारे धर्म शास्त्र 50 वर्ष की आयु श्री मनु महाराज ने गृहस्थ आयु निर्धारित की है, उससे आगे सन्तानोत्पत्ति करने का आदेश नहीं देते हैं। फिर योगीराज कृष्ण महाराज तो पूर्ण विद्वान थे क्यो धर्म शास्त्र की मर्यादा को तोड़ा। यहा वही पौराणिको वाली बात उत्पन्न होती है जबकि पुराण मे कृष्ण महाराज पर लांछन लगाये गये हैं। सत्य और असत्य का निर्णय करें। मेरी शंका का समाधान करें।

इसके आगे मैं श्रीकृष्ण महाराज के विषय में एक और शंका लिखता हूं। [illegible] कहा जाता है और पढ़ने में भी आया है कि महाभारत युद्ध के समय श्रीकृष्ण जी की आयु 125 वर्ष थी परन्तु न तो उन्होंने वानप्रस्थ की दीक्षा ली और न ही सन्यास ग्रहण किया। क्या यह वेद और मनु स्मृति के विरुद्ध नही है? क्या उन्हें एक विद्वान् योगी के नाते धर्म शास्त्रों की मर्यादा पालन नहीं करनी चाहिये थी? क्या कृष्ण जी पर वेद और मनुस्मृति के सिद्धान्त लागू नहीं होते थे? मेरे इन प्रश्नों का समाधान करें। मैं आभारी हूंगा।

डोली बना दी तूने

रचयिता—प्रा सारस्वत मोहन 'मनीषी' एम ए

एक जगल मे नई, बस्ती बसा दी तूने।
वक्त पत्थर पे ऋषि जोंक लगा दी तूने॥

लोग मानें या न मानें, था करिश्मा कोई।
अर्थिया जितनी चली, डोली बना दी तूने॥

सच तो यह है कि किया, काम निराला ऐसा,
आग पानी मे ऋषि, जैसे लगा दी तूने॥

रात किया दिन को हिरन, ऐसे नशे से नफरत।
जिसका टूटे न नशा, ऐसी पिला दी तूने॥

तेरी निष्ठा का कोई, मूल्य चुकाये कैसे।
[illegible]

चाद, सूरज व सितारे, थे सभी कैद जहा।
ऐसे अम्बर मे पुन धूप उगा दी तूने॥

जिनके पावो मे न पायल थी न बिंदिया मुख पर।
ऐसी अबलाओ की फिर माग सजा दी तूने॥

ढूढ इतिहास देखा, न मिला तुम जैसा।
अपने कातिल को ऋषि ऐसी सजा दी तूने॥

भूल पाएगी न सदिया भी 'मनीषी' तुम को।
गर्दन गर्व की पैरो मे झुका दी तूने॥

आर्य समाज समालखा मण्डी (करनाल) का वार्षिक उत्सव धूमधाम से सम्पन्न

आर्य समाज समालखा मण्डी जिला करनाल का वार्षिक उत्सव स्थानीय [illegible] मण्डी मे बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। प बिहारी लाल जी आर्य द्वारा ध्वजारोहण के उपरान्त पण्डाल से विशाल शोभा यात्रा शुरू हुई जो कस्बे के मुख्य-मुख्य मार्गों से होती हुई 5 बजे साय पण्डाल मे ही समाप्त हुई। इस शोभा यात्रा मे कस्बे एवम आस पास के ग्रामीण अचल की आर्य जनता के साथ क्षत्रीय आर्य शिक्षण सस्थाओ न भी उत्साहपूर्वक भाग लिया।

तीनो दिन प्रात काल वैदिक विद्वान प रणवीर जी शास्त्री जी के ब्रह्मत्व मे यज्ञ सम्पन्न होता रहा। समारोह मे शास्त्री जी के अतिरिक्त सर्वश्री आचार्य देव व्रत गुरुकुल कुरुक्षेत्र, सुरेश कुमार शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, प्रो वेद सुमन डी ए वी कालेज करनाल प्रभृति विद्वानो तथा सर्व श्री शोभाराम प्रेमी, चौ नत्था सिंह, प ताराचन्द वैदिक तोप, बहन कलावती आचार्या कन्या गुरुकुल भैणियार (महेन्द्रगढ) तथा तेजपाल जी की भजन मण्डलियो ने उत्सव में सम्मिलित विशाल जन समुदाय को शाश्वत वैदिक मान्यताओ से परिचित करवाकर उन पर चलने की प्रेरणा प्रदान की।

●●●

आर्य समाज फगवाड़ा का वार्षिकोत्सव

गत दिनो स्थानीय आर्य समाज गोशाला रोड की ओर से 25 26 अक्तूबर को आर्य समाज का वार्षिक उत्सव आय माडल हाई स्कूल के प्रागन मे दो दिन बडी धूमधाम से मनाया गया और नगरवासियो मे बडे उत्साह से दोनो दिन इस उत्सव मे भाग लिया।

25-10 86 की प्रात सवा आठ बजे श्री इन्द्रजीत जी घई महासचिव सनातन धर्म कन्या महाविद्यालय एव कमला नेहरू कालेज का आय माडल हाई स्कूल के बैण्ड से स्वागत किया गया। 8-30 बजे से 10 बजे तक आय जगत के प्रसिद्ध विद्वान प भू दव शास्त्री जी आयुर्वेद मातण्ड जी ने यज्ञ करवाया तथा यज्ञ की व्याख्या की। श्री ओमप्रकाश जी वर्मा रेडियो सिगर यमुनानगर और स्वामी मीरायती जी ज्वालापुर वालो ने आर्य समाज के सिद्धान्तो की व्याख्या की इसके पश्चात शूगर मिल फगवाडा के जनरल मैनेजर श्री हरिपाल जी कौशिक की अध्यक्षता मे सगीत प्रतियोगिता हुई जिसमे इलाका फगवाडा के सभी स्कूलो के विद्यार्थियो ने भाग लिया और सम्मेलन के पश्चात् सभी ने ऋषिलगर किया।

26-10 86 को प्रात 8-30 से लेकर 10-15 तक यज्ञ तथा उसकी व्याख्या प भू देव शास्त्री जी ने की तत्पश्चात फगवाडा क प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सुदशन जी उप्पल की अध्यक्षता मे महर्षि स्वामी दयानन्द श्रद्धाजली सम्मेलन हुआ जिसमे श्री ओम प्रकाश जी रेडियो सिगर, प भू देव शास्त्री स्वामी मीरा यति, बहन लक्ष्मी कान्ता चावला स्वामी सत्यानन्द परिव्राजक ने महर्षि दयानन्द जी को श्रद्धाजलि भेट की। बाद मे अध्यक्ष महोदय ने अपने विचार रखे एव सभी नगरवासियो का धन्यवाद किया।

बाद दोपहर स्त्री सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता कुमारी निर्मल कोहली प्रिंसीपल कन्या महाविद्यालय फगवाडा ने की। इसमे स्वामी मीरायती जी, बहन कमला आर्या उप प्रधाना आय प्रतिनिधि सभा पजाब प्रो लक्ष्मीकान्त चावला, बहन दमयन्ती देवी जी ने युगल स्त्रियो मे बढ रही दहेज प्रथा एव अन्य बुराईयो की निन्दा की अन्त मे प्रिंसीपल बहन जी ने अपने विचार रखे एव सभी का धन्यवाद किया।

अन्त मे आर्य समाज की तरफ से प्रिंसीपल भाटिया जी ने सभी लोगो का धन्यवाद एव शान्ति पाठ के पश्चात कार्यवाही समाप्त हुई, दोनो दिन ऋषि लगर का विशेष प्रबन्ध था।

—अमृतलाल गुलाटी
प्रधान

आर्य समाज फील्डगंज का वार्षिक निर्वाचन

19-10-86 रविवार को साप्ताहिक सत्सगोपरान्त हुआ जिसमे सर्व सम्मति से श्री सत्यपाल जी सूद प्रधान निर्वाचित किए गये। सर्व सम्मति से उन्हें शेष अधिकारियो के मनोनयन का अधिकार दे दिया गया।

सरक्षक—श्री चन्द्र प्रकाश जी आनन्द, प्रधान—श्री सत्यपाल जी सूद, उप-प्रधाना—श्रीमती सावित्री देवी जी, श्रीमती दर्शना जी गान्धी, श्री चानन राम जी, मन्त्री—श्रीमती कौशल्या देवी जी, प्रचार मन्त्री—श्रीमती कमला रानी जी, कोषाध्यक्ष—श्री मुलखराज जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री सत्यपाल जी शास्त्री, उप-मन्त्री—श्री कौशल देव जी।

—अन्तरंग सदस्य—

उपरिलिखित अधिकारी तथा—

श्री रामस्वरूप जी, श्रीमती लक्ष्मी देवी जी, श्रीमती सावित्री देवी जी (डी ए वी) श्रीमती जानकी देवी जी (यज्ञ प्रबन्धिका), श्रीमती शान्ती जी (यज्ञ प्रबन्धिका)।

—सत्यपाल सूद
प्रधान

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि. नं. पी.जे.एल 55

वर्ष 18 अक 3 8 मार्गशीर्ष सम्वत् 2043 तदानुसार 23 नवम्बर 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अक 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

दुर्गुण त्याग से ही सुख मिलता है

ले. -श्री प जगदीश चन्द्र बसु आर्योपदेशक

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानी पराऽसुव,
यद् भद्र तन्न आ सुव ।

यह मन्त्र ऋग्वेद के 5वें मण्डल 82 सूक्त का 5वा मन्त्र है। 19वीं शताब्दी के महान् क्रान्तिकारी, आर्य समाज आन्दोलन के प्रवर्तक, वेदोधारक, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज को यह मन्त्र बहुत प्यारा था। उन्होने इस वेद मन्त्र को अपने यजुर्वेद के सभी चालीस अध्यायो के आरम्भ मे भाष्य करने से पूर्व इस मन्त्र को उद्धृत कर उस परम पिता परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करके ही अपना वेद भाष्य आरम्भ किया है।

अर्थ

हे सकल जगत के उत्पत्तिकर्ता समग्र-स्वयं युक्त परमात्मन कृपा करके आप हमारे सम्पूर्ण दुर्गण दुर्व्यसन तथा दु खो और दु खो के कारण सब पापो को दूर कर दीजिए और कल्याणकारक जो गुण, कर्म, स्वभाव और ज्ञान उपासनादि उत्तम-उत्तम पदार्थ हैं। उन सब को हमे प्राप्त कराईए। जिसस हम सच्चे धार्मिक तेरे पुत्र-पुत्रिया उपासर बाबर अपने मनुष्य जीवन को सफल कर सकें।

व्याख्या

यह मानव शरीर अत्यन्त दुर्लभ है। भगवान की अपार कृपा व दया से यह मानव जीवन मिला है। सासारिक मानव इसकी कीमत नहीं जानते वे इन सासारिक सुखो मे इतने डूब जाते हैं कि उन्हे पता ही नही, मेरे इस अमूल्य जीवन का वास्तविक लक्ष्य क्या है और वह यह भी नही जानते कि मैं कहा से आया। इस शरीर को प्राप्त करके क्या करना है तथा कहा जाना है? क्योकि एक न एक दिन इस उत्तम चोले (शरीर) को त्यागना है, ससार मे अनेक महा पुरुष, वीर बहादुर राजे-महाराजे, सन्त महात्मा, ऋषि-महर्षि आये और चले गये। यह ससार सदा से एसा ही चला आ रहा है और सदा ऐसे ही चलता रहेगा। यह सृष्टि क्रम है। हमने कितनी बार जन्म लिया और मर कुछ कह नही सकते, प्रभु की यह विचित्र सृष्टि रचना है हम अल्पज्ञ हैं हमारा ज्ञान भी अल्पज्ञ है परमात्मा सवज्ञ है उसका ज्ञान भी सवज्ञ है अत हम सब कुछ नही जान सकते। किसी कवि ने कहा है कि—

> यहा बडे बडे महाराज हुए,
> बलवान् हुए विद्वान् हुए।
> धनवान हुए पर मौत के पजो से,
> केवल कोई दुनिया मे आके
> बचा न रहा।

हमने भी एक दिन अवश्य ही जाना है जाने से पूर्व हम अपने अमूल्य जीवन को पहचानें, जीवात्मा, परमात्मा तथा शरीर को ठीक प्रकार से जानने का प्रयत्न करें। यह कब होगा, जब हम अपने जीवन से सम्पूर्ण बुराईयो को काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहकार अभिमान, छल, कपट, ईर्ष्या, पारस्परिक द्वेष आदि दुर्गुणो को त्याग कर उत्तम-उत्तम सदगुणो को धारण करें। वेद भगवान का यह सबसे बडा प्रथम व मुख्य उपदेश है। इसी उपदेश को धारण करने से मानव जीवन सफल होगा। हमे अनेको वर्ष हो गये हैं यह कहते-2 कि छोड देवें, छल, कपट को मानसिक बल दीजिए। परन्तु हमने अभी तक अपने जीवन से उक्त बुराईयो को नही छोडा, महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज की गिरावट का यही मूल कारण है। हम नकली फसली आर्य समाजी तो हैं परन्तु सच्चे अर्थों मे हम आय नही बने, पारस्परिक द्वेष लडाई-झगडा, कथनी-करनी मे बडा अन्तर, श्रद्धा प्रेम का अभाव प्राय सर्वत्र दिखाई देता है। जीवन निर्माण का सबसे उत्तम सरल मार्ग यही है कि हम सम्पूर्ण बुराईयो को त्यागते हुए उस परम पिता परमात्मा की कृपा से व दया प्राप्ति के लिए हम सच्ची उपासना व आराधना कर। हम सासारिक सुखो को भोगते हुए भी उस परमेश्वर की आराधना करें। हम सासारिक सुखो को भोगते हुए भी उस परमेश्वर की आराधना कर सकत है। दिन मे प्रात -साय तनिक समय निकाल कर उस प्रभु का धन्यवाद करना। श्रद्धा, विश्वास, प्रेम, लग्न, भक्ति, इन साधनो से मनुष्य प्रभु के निकट पहुचने मे सफल हो सकता है।

प्रार्थना का मूल है श्रद्धा और विश्वास प्रभु परम सहृद हैं हमारी प्रत्येक बात को सुनते व समझते हैं। हम पर उनकी असीम स्नेह सुधा सदा बरसती रहती है। वे तो हमारे अपनी ही हैं ससार के माता पिता, बन्धु, सखा, मित्र सगे सम्बन्धी आदि छोडकर चले जाते हैं। परन्तु वह माता पिता, बन्धु, सखा सर्वव ही हमारे साथ रहते हैं। वह कभी भी हमे नही छोडते, सदा हमारी रक्षा कर सुख-शान्ति तथा आनन्द मे रखते हैं। समार का मानव किंचित हमारा कुछ उपकार करता है। हम हाथ जोडकर उसका बार बार धन्यवाद करते हैं। लेकिन कभी हमने विचार किया है कि उस परम पिता परमेश्वर ने हमारी उपर कितने 2 महान् उपकार किये हैं। सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश नाना प्रकार के लोक-लोकान्तर नाना प्रकार की धन-सम्पत्तियां फल फूल, पहाड, समुद्र दिन-रात आदि बनाकर अपने सहज स्वभाव से हमे प्रदान किया है। यदि उपरोक्त पदार्थों की रचना न करता तो क्या यह हमारा जीपन चल सकता था? कदापि नही और आत्मिक उन्नति के लिए तथा मानव जीवन की समस्त समस्याओ के समाधान हेतु तथा सुख-शान्ति व विशेष परमानन्द की प्राप्ति के लिए सृष्टि के आरम्भ मे चारो वेदो का ज्ञान चार ऋषियो (अग्नि, वायु, आदित्य व अगिरा ऋषि) के अन्त करण प्रदान किया इसलिए उस सच्चिदानन्द परमेश्वर का प्रात -साय सध्या के रूप मे धन्यवाद करना चाहिए। यह हमारा परम कर्त्तव्य है। इस परम कर्त्तव्य से हमें विमुख नही होना चाहिए। इसी से हमारे जीवन का कल्याण सम्भव है। इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह मानव चोला प्राप्त हुआ है। यदि हम इससे विमुख हो गए तो नाना दु खो मे, कष्टो-क्लेशो एव विपदाओ मे डूबकर इस लोक से परलोक को विगाड लगे। आओ हम उस प्रभु के प्यारे पुत्र एव पुत्रियो मे दुर्गुणो को छोडकर उत्तम 2 सदगुणो को धारण कर प्रभु के प्यारे बन।

ओमीत्योम्

मनुष्य को मनुष्य से सघर्ष करने की अपेक्षा स्वय की बुराईयो से सघर्ष करना चाहिए। वतमान की सबसे बडी कमजोरी यह है कि हर व्यक्ति दूसरो की बुराईयो को खोजता है। परन्तु वह स्वय की ओर नही झाकता जब तक हम स्वय का सुधार नही कर लेते हैं तब तक दूसरों के सुधार की बात करना हास्यास्पद होगा।

—

50 वर्ष पहले का आर्यसमाज

१८ फरवरी १९३४ तदानुसार ७ फाल्गुन सम्वत् १९९० को आर्य प्र. नि. सभा पंजाब के मन्त्री श्री महाशय कृष्ण जी ने लिखा था

एक देवी का दान

नौजवान आर्य समाजी शायद न जानते हों, लेकिन पुराने आर्य समाजी जानते हैं कि प्रधान सुन्दरदास के नाम से लाहौर में एक श्रद्धालु आर्य समाजी हुआ करते थे। अपना सारा समय वे आर्य समाज को अर्पण करते थे। वर्षों तक आप आर्य पुत्री पाठशाला बच्छोवाली लाहौर के आनरेरी हैडमास्टर रहे। आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में वे बड़े प्रेम से तबला बजाया करते थे। कुछ वर्ष हुए उनका देहान्त हो गया। उनकी धर्म पत्नी का आर्य समाज से वैसा ही प्रेम है, जैसा कि उनका था। पिछले दिनों जब गुरुदत्त भवन में आर्य धर्मशाला बनाने का विचार हुआ तो प० ठाकुरदत्त वैद्य ने इस देवी को प्रेरणा की कि वह अपने स्वर्गवासी पति के नाम पर धर्मशाला के लिए दान दे, चुनांचे देवी ने 5 हजार नकद दान दिया। इस पर धर्मशाला का कार्य आरम्भ किया गया और पहली मंजिल साढ़े सात हजार की लागत पर तैयार हो गई। लेकिन एक मंजिल काफी नहीं समझी गई। यह विचार किया जा रहा था कि दूसरी मंजिल कैसे पूरी की जाए। जबकि देवी जी धर्मशाला को देखने के लिए आई, ईमारत को देखकर वे बहुत प्रसन्न हुईं और उन्होंने यह इच्छा प्रकट की कि वे ऊपर की मंजिल के लिए पांच हजार रु० दान देंगी। तीन हजार रुपया वे नकद दे चुकी हैं। इससे दूसरी मंजिल का काम शुरू कर दिया गया है। एक दो महीनों तक सारी धर्मशाला बनकर तैयार हो जाएगी।

देवी के इस सच्चे दान की जिस कदर महिमा की जाए कम है। यह महिमा इसलिए ज्यादा है कि देवी के पास कुछ ज्यादा धन नहीं है। न ही उनका कोई कमाने वाला है। फिर भी जो कुछ उनके पास था वह उन्होंने आर्य समाज के अर्पण कर दिया। उन्हें यह तसल्ली होनी चाहिए कि उन्होंने अपने पति की एक यादगार कायम कर दी है। जब तक गुरुदत्त भवन है, यह धर्मशाला रहेगी और जब तक यह धर्मशाला है उनके पति की याद कायम रहेगी। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से इस दान के लिए देवी का धन्यवाद करता हूं और इस शुभ संकल्प के लिए उन्हें बधाई देता हूं।

आर्य समाज बगदाद और ईराक (अरब) के समाचार

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस 24 दिसम्बर को मिस्टर नानकचन्द गुलशन की अध्यक्षता में आर्य समाज मन्दिर डब्ल्यू एण्ड बी कैंप हिनाडी छावनी (बगदाद) में मनाया गया। जलसा की कार्यवाही तीन बजे हवन-यज्ञ से शुरू हुई। उसके बाद वेद, पाठ और भजन हुए। मिस्टर गुलशन ने स्वामी श्रद्धानन्द जी की जिन्दगी के हालात और उनके कामों, अछूतोद्धार संगठन और शुद्धि वगैरा पर रोशनी डाली और उनके पद्-चिन्हों पर चलने को कहा। इसके बाद मिस्टर मनशाराम बी ए. ने एक भाषण दिया। फिर मिस्टर एस खान ने एक लैक्चर अंग्रेजी में दिया, जलसा की कार्यवाही शान्ति पाठ के बाद आठ बजे खत्म हुई।

आर्य समाज फतहगढ़ के समाचार

63 रुपये भूचाल फण्ड के लिए आर्य समाज ने इकट्ठे किये, जिनमें से 50 रुपया 8 आने महात्मा हंसराज की और 12 रुपये 8 आने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (लाहौर) को रवाना किए गए।

—लाजपतराय
सहायक मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

मान्यवर महोदय,

सादर नमस्ते।

युवक शक्ति का संगठन किसी भी संस्था की प्रगति के लिए अत्यन्त आवश्यक है। हमारे देश का वातावरण आज ऐसा है कि सब संस्थाओं में युवक आगे आ रहे हैं। आर्य समाज ने जो प्रगति इस समय तक की है, वह बहुत कुछ युवकों के सहारे की है। इस सारी स्थिति को देखते हुए कुछ समय हुआ जब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा ने अपने प्रान्त में आर्य युवक सभा के संगठन का निर्णय लिया। पंजाब में आज जो स्थिति पैदा हो रही है उसको सामने रखते हुए भी यह आवश्यक हो गया है कि हम अपनी युवक शक्ति का संगठन करें। प्रत्येक आर्य समाज में एक युवक सभा होनी चाहिए। इस समय प्रान्तीय युवक सभा लुधियाना में काम कर रही है और उसके अधीन कई दूसरे नगरों में भी युवक सभाएं बन रही हैं। हम चाहते हैं कि आपकी आर्य समाज में भी एक आर्य युवक सभा होनी चाहिए। हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि आने वाले 6 मास के अन्दर प्रत्येक आर्य समाज में एक आर्य युवक सभा स्थापित हो जाए। यदि आर्य कुमार सभाएं भी बन सके तो वे भी बनाई जाएं। इसमें सभा की ओर से आप जो भी सहयोग हम से मांगेंगे, आपको मिलेगा। इस विषय में आगे कार्यवाही करने के लिए यदि आप चाहें तो आर्य युवक सभा के संयोजक श्री रोशनलाल जी शर्मा से पत्र-व्यवहार कर लें। उनका पता निम्नलिखित है—

—आर्य युवक सभा पंजाब, आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना।

आशा है आप इस विषय में शीघ्र ही सक्रिय होकर अपनी आर्य समाज में एक युवक सभा शीघ्रातिशीघ्र बनाने का प्रयास करेंगे, ताकि सब आर्य समाजों में युवक सभाएं बन जाएं और आर्य युवकों का एक ऐसा संगठन तैयार हो जाए, जिसके द्वारा आर्य समाज का प्रचार भी हो सके और जो स्थिति पंजाब में बन रही है, उसमें हम अपनी रक्षा भी कर सकें।

भवदीय
वीरेन्द्र
सभा प्रधान

आर्य प्र. नि. सभा पंजाब के कार्यालय के लिए आवश्यकता है

1 सभा कार्यालय के लिए एक ऐसे कुशल व्यक्ति की आवश्यकता है जो हिन्दी में पत्र-व्यवहार कर सकें और कम से कम ग्रेजुएट अवश्य हो। कार्यालयाध्यक्ष का काम भी कर सके, साथ ही हिन्दी में खाता, रोकड़ आदि रखने की क्षमता हो। आर्य समाजी होना आवश्यक है। प्रार्थना पत्र में आयु, योग्यता और अनुभव के प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपियां भी साथ भेजी जाएं। कम से कम जो वेतन लेना चाहें, वह भी लिख दें। सेवा निवृत व्यक्ति जिनकी आयु 60 वर्ष से अधिक न हो, अपना आवेदन पत्र भेज सकते हैं।

2 वेद प्रचार विभाग के लिए तीन उपदेशकों की आवश्यकता है, जो आर्य सिद्धान्तों को अच्छी प्रकार जानते हों और जिन्हें व्याख्यान व प्रवचन करने का अभ्यास हो। इसके अतिरिक्त और भी जो योग्यता का अनुभव हो, वह भी लिख दी जाए और इसके साथ ही तीन व्यक्ति जो आर्य समाज की विचारधारा के अनुसार भजन गा सकते हों, और शास्त्रीय संगीत के ज्ञाता हों। सभी अपनी आयु, शिक्षा, योग्यता और अनुभव के प्रमाण पत्र भी आवेदन के साथ भेजें।

वेतन और दूसरी सुविधाएं योग्यतानुसार दी जाएंगी। आवेदन पत्र 15-12-80 तक निम्न पता पर भेजें।

—ब्रह्मदत्त शर्मा, महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन
चौक किशनपुरा, जालन्धर।

सम्पादकीय—

आर्य समाज के लिए दो नई चुनौतियां

आर्य समाज एक धार्मिक राष्ट्रीय संस्था है। इसलिए राष्ट्र में जो कुछ होता है, उसके विषय में वह अपना दृष्टिकोण जनता के सामने रखता रहता है और उसे प्रायः स्वीकार भी किया जाता है। परन्तु कई बार हम स्वयं अपनी शिथिलता के कारण कुछ समस्याओं की ओर ध्यान नहीं देते, इसका परिणाम देश के लिए भी और आर्य समाज के लिए भी अत्यन्त हानिकारक होता है। कुछ ऐसी ही समस्याएं अब फिर हमारे सामने आ रही हैं, जिनके विषय में आर्य समाज को न केवल अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करना चाहिए। परन्तु उसका अधिक से अधिक प्रचार भी करना चाहिए। मैं इसे देश का दुर्भाग्य समझता हूं कि हमारी सरकार कई बार समस्याओं की गहराई में जाने का प्रयास नहीं करती। इसलिए स्पष्ट रूप से देश का नेतृत्व नहीं कर सकती। 1947 में देश का जो विभाजन हुआ था, वह न होता, यदि गांधी जी और दूसरे नेता सर्व-धर्म-सम्भाव की अपनी मान्यता को दूसरों पर ठोंसने का प्रयास न करते। गांधी जी बार-बार यही कहते थे कि हिन्दू मुस्लिम भाई-भाई हैं। परन्तु अन्त में उसका जो परिणाम निकला वह हमारे सामने है। देश की आजादी के बाद पं. जवाहरलाल और दूसरे नेताओं ने धर्म निरपेक्षता का जो लक्ष्य अपने देशवासियों के सामने रखा था उसका परिणाम भी कोई बहुत अच्छा नहीं निकला। आज दो ऐसी समस्याएं हमारे सामने हैं, जिन पर मेरे विचार में आर्य समाज को गम्भीरतापूर्वक सोचकर अपने देशवासियों का नेतृत्व करना चाहिए।

धर्म निरपेक्षता क्या है? इसका आज तक स्पष्टीकरण नहीं हुआ। कोई कहता है कि सब धर्म एक जैसे हैं, कोई कहता है कि धर्म के नाम पर भिन्न-2 जातियों में भेदभाव नहीं होना चाहिए, कोई कहता है कि धर्म को राजनीति से अलग रखना चाहिए। इस प्रकार भिन्न-2 प्रकार के विचार जनता के सामने आते रहते हैं। उसका एक परिणाम यह हो रहा है कि हमारा जो वास्तविक धर्म है, हम उससे दूर जा रहे हैं। जन-साधारण को यह भी मालूम नहीं कि धर्म क्या है? धर्म और साम्प्रदायिकता इन दोनों को आपस में मिला दिया जाता है। आजकल के पाश्चात्य विचारधारा से प्रभावित कई व्यक्ति कह देते हैं कि धर्म आपस में लड़ाता है। इससे बड़ा झूठ और कोई नहीं हो सकता। धर्म नहीं लड़ाता, साम्प्रदायिकता लड़ाती है। परन्तु राजनैतिक कारणों से सरकार साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन देती है। कांग्रेस देश की सबसे सक्रिय राजनैतिक पार्टी है। उसने केरल में एक साम्प्रदायिक पार्टी मुस्लिम लीग से समझौता कर लिया है और पंजाब में अकाली दल से कर लिया है, इस पर भी कहा जाता है कि हमें साम्प्रदायिकता से दूर रहना चाहिए। मुस्लिम लीग का भी अपना धर्म है और अकालियों का भी अपना। सिखों और हिन्दुओं में इतना अधिक मतभेद नहीं, जितना कि हिन्दुओं और मुसलमानों में है। जिस व्यक्ति ने इस्लाम का अध्ययन किया है, वह जानता है कि उसमें कई ऐसी बातें कही जाती हैं, जो हिन्दुओं की विचारधारा से बिल्कुल भिन्न-2 हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि हिन्दू उन्हें स्वीकार करने को तैयार नहीं और यदि हम उनसे अपने मतभेद बताएं तो कहा जाता है कि हम साम्प्रदायिक हैं। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज जैसा कोई और राष्ट्रवादी मिलना कठिन है। एक पागल मुसलमान ने उनकी हत्या कर दी। उसके पश्चात् कांग्रेस के नेता उन्हें राष्ट्रवादी नहीं मानते। इसी प्रकार की और भी कई बातें कही जा सकती हैं, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि साम्प्रदायिक को प्रोत्साहन दे कर जो वास्तविक धर्म है और जिस पर कोई ऊंगली नहीं उठाई जा सकती उसके साथ भी अन्याय किया जाता है।

मेरा कहने का अभिप्राय यह कि धर्म निरपेक्षता के नाम पर आज हमारे धर्म को इस ढंग से पेश किया जा रहा है कि कई लोग धर्म से दूर जा रहे हैं और राजनैतिक परिस्थितियों के कारण वे अपने आपको हिन्दू या आर्य कहलाने में भी कई बार शर्म अनुभव करते हैं। हमारे देश में मुसलमानों की संख्या भी बढ़ती जा रही है, ईसाईयों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। उसका भी परिणाम हमारे लिए आगे चल कर बहुत घातक हो सकता है। कौन नहीं जानता कि इस्लाम के प्रचार के लिए अरब देशों के पास बेअन्त रुपया है, उसे वे हमारे देश में भी प्रयोग कर रहे हैं। हमारे दलित वर्ग को रुपया से खरीदने का प्रयास हो रहा है और एक बहुत बड़ा षडयन्त्र चल रहा है कि भारत में आने वाले 20-25 वर्षों में किसी प्रकार हिन्दुओं की संख्या कम हो जाए, और दूसरे सम्प्रदायों की संख्या बढ़ जाए, विशेषकर मुसलमानों की।

यह एक ऐसी स्थिति है, जिसकी ओर आर्य समाज को विशेष ध्यान देना चाहिए। हमारी सरकार को इस में कोई रुचि नहीं कि हिन्दू कितने रहते हैं या मुसलमान कितने हो जाते हैं। वह यह नहीं समझ रही कि जब तक मुसलमान अल्पसंख्या में है वे सरकार की तरफ देखते रहेंगे। जिस दिन वे बहुसंख्यक हो गए और अरब देशों से उन्हें प्रोत्साहन मिलता रहा उस दिन वे आंखें फेर लेंगे। इसलिए आर्य समाज का जो कि एक विशुद्ध राष्ट्रवादी संस्था है, का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह इस समस्या पर गम्भीरता पूर्वक विचार कर के अपने देशवासियों का मार्ग प्रदर्शन करे। यदि हम हाथ पर हाथ रखे बैठे रहे तो धर्म निरपेक्षता के नाम पर हमारी युवा पीढ़ी को एक ऐसे मार्ग पर डाल दिया जाएगा कि आगे चल कर अपने धर्म से बिल्कुल विमुख हो जाएगी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को इस विषय में देश का नेतृत्व करना चाहिए। अभी थोड़ा समय ही हुआ जब मैंने यह सुझाव भी दिया था कि आर्य समाज बुद्धिजीवियों को बिठा कर वर्तमान परिस्थितियों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए और एक ऐसा कार्यक्रम बनाना चाहिए जो हम अपने देश की जनता के सामने रख सकें। जब कोई समस्या हमारे सामने आ जाती है, तो हम कह देते हैं कि सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ना चाहिए। इसमें सन्देह नहीं कि सत्यार्थ प्रकाश हमारे लिए एक प्रकार का प्रकाश स्तम्भ है। उसे पढ़ने से हमारी कई समस्याओं का समाधान हो जाता है। परन्तु हमें यह न भूलना चाहिये कि सत्यार्थ प्रकाश एक सौ वर्ष पहले लिखा गया था। कई समस्याएं उस समय न थीं जो आज हैं। धर्म निरपेक्षता की समस्या न थी, जैसी कि आज है। आर्य समाज में बुद्धिजीवियों की कमी नहीं। बड़े-2 विद्वान् यहां बैठे हैं, क्यों न वे सब देश की वर्तमान परिस्थिति पर विचार कर के आर्य समाज का दृष्टिकोण जनता के सामने रखें। उसमें धर्म निरपेक्षता के प्रश्न पर भी विचार किया जा सकता है और उसके जो दुष्परिणाम हमारे सामने आ रहे हैं, उन्हें रोकने के लिए क्या पग उठाने चाहिए, इस पर भी विचार किया जा सकता है कोई संस्था जो समय के अनुसार अपने दृष्टिकोण पर विचार नहीं करती और उसका स्पष्टीकरण नहीं करती, वह धीरे-2 लोगों की दृष्टि से ओझल हो जाती है। धर्म निरपेक्षता का प्रश्न आज एक गम्भीर रूप धारण कर रहा है। हिन्दू यदि सब जगह पिट रहे हैं, तो इसका कारण भी यह ही है। न मुसलमान धर्म निरपेक्षता में विश्वास रखते हैं, न इसाई न सिख। पंजाब में पंथ के नाम पर जो कुछ हो रहा है, वह भी हम देख रहे हैं। "राज करेगा खालसा" कल तक सिखों का एक जयघोष था आज उसे क्रियात्मक रूप दिया जा रहा है। और हिन्दू आपस में बंटे हुए हैं, कुछ आर्य समाजी है, कुछ सनातनधर्मी हैं, कुछ जैनी हैं। धार्मिक दृष्टिकोण से हम सब को एक मंच पर न ला सकेंगे, परन्तु आपस का तालमेल तो किसी प्रकार से होना चाहिए। जब हिन्दुओं पर कोई आक्रमण होता है तो आक्रमणकारी यह नहीं देखते कि वह आर्य समाजी है या सनातनधर्मी है, वे तो हिन्दू के विरुद्ध ही अपनी कार्यवाही करते हैं। इसलिए देश को बचाने के लिये, धर्म को बचाने के लिए और अपनी संस्कृति को बचाने के लिये आर्य समाज को इस विषय में अपने देशवासियों का नेतृत्व करना चाहिए।

मैंने ऊपर संस्कृति का नाम भी लिया है। हमारी वास्तविक संस्कृति है क्या और वह हमें क्या सिखाती है? इस विषय में भी कई प्रकार की भ्रान्तियां हैं। देहली में आजकल सांस्कृतिक मेला हो रहा है। उसे देख कर यह प्रश्न पैदा होता है कि क्या हमारी संस्कृति केवल नाच और गाना ही है या कुछ और भी। इस पर अगले अंक में अपने विचार प्रस्तुत करूंगा।

—वीरेन्द्र

आध्यात्मिक एवं आधिभौतिक उन्नति का

अनोखा संगम-हवन यज्ञ

ले —श्री यशपाल जी आर्य बन्धु
आर्य निवास चन्द्रनगर मुरादाबाद

देव यज्ञ वैदिक ऋषियो का एक अभूतपूर्व अनोखा आविष्कार है। ऐसा आविष्कार जो विज्ञान सम्मत भी है और आध्यात्म सम्मत भी। अर्थात् देव यज्ञ आध्यात्मिक और आधिभौतिकता दोनो का एक अदभुत अनोखा संगम दृष्टि-गोचर होता है। इसीलिए इस आधिभौतिक एव आध्यात्मिक उन्नति का सर्वोत्कृष्ठ साधन माना गया है। प्राचीन ऋषियो ने देवयज्ञ की महिमा को भली भान्ति समझा था और उसमे होने वाले उपकारो को जाना था। इसीलिए नित्य दिन में दो-दो बार इस के करने का विधान किया था। जब तक यज्ञ का प्रचलन रहा, देश सुखो से पूरित एव दु खो से रहित था।

इस यज्ञ को स्वग प्राप्ति हेतु दिव्य नौका कहा गया है। इसीलिए यज्ञ अकेले नही सपत्नीक करने का विधान है। तात्पर्य यह कि यज्ञ मे पति पत्नी दोनो के सम्मिलित होने की अनिवार्यता है। यहा तक कि यदि इन दोनो मे से एक, उपस्थित न हो सके तो दूसरे के लिए यह आवश्यक एव अनिवार्य था कि वह दोनो की आहुति डाले। और यदि दोनो समय नही कर सकता तो फिर एक ही समय मे दोनो समय के आहुतिया दी जाए। तात्पर्य यह कि यज्ञ हमारे जीवन से इतना जुडा हुआ था कि वह कभी छोडा नही जा सकता था। उस मे लखन का कही भी कोई अवकाश नही था

शतपथ ब्राह्मण मे एक रोचक सम्वाद आया है जिससे यज्ञ की अनिवार्यता का आभास होता है। इसम महर्षि याज्ञव-ल्क्य से जो प्रश्न किए गए और उन्होने उन के जो जो उत्तर दिए, वे अत्यन्त रोचक हैं। "आज्याहुतयो ह्यादेवा एता देवानाम्" इस शतपथ वाक्य के अनुसार यज्ञ के लिए घृत और दूध आदि की ही आवश्यकता हुवा करती है। किन्तु यदि कभी ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाव कि जब घृत, दूध आदि न मिले तो यज्ञ कैसे किया जावे? उपरोक्त सम्वाद मे यही प्रश्नोत्तर रूप मे कहा गया है। प्रश्नोत्तर इस प्रकार है —

प्रश्न—यत्पयोनस्यात् केन जुहुयात, अर्थात् यदि दूध न हो तो किस से हवन करें ?

उत्तर— व्रीहियवाभ्यामिति — धान और जौं से करें।

प्रश्न—व्रीहियवौ नस्याता केन जुहुयात् ? यदि धान और जौं न हो तो किस से होम करे ?

उत्तर—या अन्या ओषधयइति, जो और औषधि हो उन से करे।

प्रश्न—यद या औषधयो न स्यु केन जुहुया इति ? यदि अन्य औषधि भी न हो नो किस से होम करे ?

उत्तर—या आरण्या औषध्य इति। जगल के अन्न स करे।

प्रश्न—यदि आरण्या औषधयो नस्यु केन जुहुया इति ? जो जगल के अन्न भी न हो तो किस से होम करे ?

उत्तर— वानस्पत्यनेति— वनस्पति द्वारा करे।

प्रश्न—यदि वानस्पत्य नस्यात केन जुहुयात् ? यदि वनस्पतिया भी न हो तो किस से करे ?

उत्तर—अदभिरिति, जल से करे।

प्रश्न—यदापोनस्यु केन जुहुया इति यदि जल भी न हो तो किस से करें है ?

उत्तर—नाव इह तर्हि किच ना सीदथैतद हुतैव सत्य श्रद्धायामिति। यदि कुछ नही हो तो बिना आहुति दिया हुआ ही सत्य की श्रद्धा मे आहुति दे। श प 11-244

उपरोक्त प्रश्नोत्तर इस बात का प्रमाण हैं कि यज्ञ एक अनिवार्य कृत्य है। साथ ही इस बात का भी यह द्योतक है कि यज्ञ केवल आधिभौतिक क्रिया-कलाप अथवा कर्म काण्ड मात्र ही नही अपितु यह आध्यात्मिकता का भी दिव्य भावना अपने मे समेटे हुए है। अन्यथा सत्य की श्रद्धा मे आहुति देने की बात का क्या प्रयोजन था ? स्पष्ट है कि यज्ञ केवल अग्नि मे घृत आदि का होमना ही नही अर्थात् यह केवल भौतिक जल वायु आदि की भी शुद्धि का कारण ही नही अपितु यह एक आध्यात्मिक साधना भी है। यदि ऐसा न होता तो यज्ञ में वेद मन्त्रो के पाठ का विधान ही क्यो किया जाता ?

हवन यज्ञ मे मन्त्र पाठ का प्रयोजन बतलाते हुए महर्षि लिखते हैं कि—"दो काम यदि एक ही समय में हो तो उन्हें करना चाहिए, ऐसा उद्देश्य कर प्राचीन आर्य लोगो ने जब हाथों को होमादिक द्रव्यो की व्यवस्था करने में लगाया तब मुह खाली न रहे, परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना मुह से होती रहे, इसीलिए पहिले के ऋषि लोग वेद मन्त्र कहते थे और ब्राह्मण लोगो ने कण्ठस्थ वेद आज तक किया, इसलिए वेद विद्या भी अबतो बनी रही है। फिर यह भी था कि वेद पाठ करने से परमेश्वर की भक्ति होती थी जिससे विचार शक्ति भी उत्पन्न होती थी। दूसरा ऐसा भी विचार है कि जो हाथो से प्रयोग होता है, उस के जो मन्त्र उस समय कहे जाते हैं, उन से कुछ भी सम्बन्ध नही रहता, इससे मन्त्रोच्चार कर्म के उद्देश्य से नही होता, किन्तु परमेश्वर की स्तुति मुह से होती रहे। यही प्रधान उद्देश्य है और कोई कोई मन्त्र ऐसे भी हैं जिनमे होम के लाभ कहे गए है। साराश यह कि वेद मन्त्रो को कहने से वेद की रक्षा ही मुख्य प्रयोजन है। (पूना प्रवचन, यज्ञ सस्कार विषयक प्रवचन) यही बात प्रकारान्तर से महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास मे भी कही है। वहा लिखा है कि—

प्रश्न—मन्त्र पढ के होम करने का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर—मन्त्रो मे वह व्याख्यान है कि जिससे होम करने के लाभ विदित हो जावें और मन्त्रो की आवृत्ति होने से कण्ठस्थ रहे। वेद पुस्तको का पठन-पाठन और रक्षा भी होवे।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के वेद विषय प्रकरण मे महर्षि एक शंका का समाधान करते हैं। शका और उस का समाधान इस प्रकार है—

प्रश्न—होम करने का जो प्रयोजन है, सो तो केवल होम से ही सिद्ध होता है, फिर वहा वेद मन्त्रो के पढने का क्या काम है ?

उत्तर—उन के पढने का प्रयोजन कुछ और ही है।

प्रश्न—वह क्या है ?

उत्तर—जैसे हाथ से होम करते, आख से देखते और त्वचा से स्पर्श करते हैं। वैसे ही वाणी से वेदमन्त्रो को पढते हैं। क्योकि उन के पढने से वेदो की रक्षा ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना होती है। तथा होम से जो-जो फल होते हैं, उनका स्मरण भी होता है, वेद मन्त्रो के बारम्बार पाठ करने से वे कण्ठस्थ भी रहते हैं और ईश्वर का होना भी विदित होता है कि कोई नास्तिक न हो जाय, क्योंकि ईश्वर की प्रार्थनापूर्वक ही सब कर्मों का आरम्भ करना होता है। सो वेद मन्त्रों के उच्चा-रण से यज्ञ में तो उस की प्रार्थना सर्वत्र होती है। इस लिए सब उत्तम कर्म वेद मन्त्रो से ही करना उचित है।

इतना ही नही महर्षि तो यहा तक कहते है कि "सूक्ष्म तत्व से वेद मन्त्र के पठन से ईश्वर का सत्कार होता है, इसी लिए प्राचीन आर्य लोगो ने होम के स्थल मे मन्त्रो की योजना की है। इसी तरह यज्ञशाला को देवायतन अथवा देवालय कहा है।" (पूना प्रवचन)

जल वायु की शुद्धि तथा वर्षा का यज्ञ से घनिष्ट सम्बन्ध है। आज जो वायु आदि के प्रदूषण की समस्या है, उस का एक मात्र समाधान हवन यज्ञ ही है। इस सम्बन्ध मे केवल एक तथ्य का उल्लेख ही पर्याप्त समझता हू। भोपाल की कुख्यात गैस दुर्घटना से हवन यज्ञ के द्वारा किस प्रकार दो आर्य परिवार अपने को सुर-क्षित रख सके, यह देख कर हवन यज्ञ के प्रति अगाध श्रद्धा और विश्वास उत्प-न्न होता है। वैदिक क्राति नामक पत्रिका के जून 198 के अक में उसका उल्लेख हमे उपलब्ध हुआ है, जोकि मूलत 7 अप्रैल 1985 के हिन्दू पत्र से लिया गया है। इस मे श्री एस एल कुशवाहा तथा श्री एम एल राठौर का विवरण दिया है कि जब 3 दिसम्बर 84 की रात को सब लोग उठ-उठ कर भाग रहे थे। ये लोग अपने अपने घरो मे हवन यज्ञ करने बैठ गए। और 20 मिनट के थोडे से समय मे अपने परिवार को मिक गैस के विषैले प्रभाव से बचा लिया। यहा भागने वाले मौत के मुख में चले गए। वहां बैठ कर हवन यज्ञ करने वाले सर्वथा सुरक्षित रहे। इससे बढकर हवन यज्ञ के लाभ और भला क्या हो सकते हैं। इस पर भी यदि इसे कोई न अपनाये तो दोष किस का है ?

इस प्रकार अन्त मे हम यही कहेंगे कि यदि एक ही क्रिया से आध्यात्मिक और आधिभौतिक दोनों प्रकार की उन्नति हम चाहते हैं तो फिर हवन यज्ञ को अपनाना ही होगा। हवन यज्ञ एक ऐसी क्रिया है जिस में आध्यात्मिकता और आधिभौतिकता दोनो ही उन्नतिया छिपी हैं। अभ्युदय एव निःश्रेयस की सिद्धि यज्ञ द्वारा ही सम्भव है। अतः यज्ञ का प्रचलन एव प्रचार अवश्यमेव होना चाहिए।

———

मेरी विदेश यात्रा लंदन (इंगलैंड)

लेखक—श्री आशुराम आर्य

(9 नवम्बर से आगे)

यहां भी 11 बजे प्रातः यज्ञ आरम्भ हुआ सब ने प्रीति पूर्वक सारे समारोह में भाग लिया। यहा प्रातः 11 बजे आरम्भ होता है और भोजन के साथ 2-30 बजे समाप्त होता है यहा हम पुत्री सुकृता के घर भी कुछ दिन रहे इनके लिए हवन कुण्डादि यज्ञ पात्र सब ले गए थे विवाह के दिन से सन्ध्या भजन गायत्री पाठ आर्य भक्तिविनय का स्वाध्याय तो करते थे परन्तु हवन कुण्ड न होने से हवन नही करते थे अब उसी दिन से प्रतिदिन दोनो समय हवन सन्ध्या बडी श्रद्धा से दोनो करते हैं।

शायद ही कोई घर लन्दन या इगलैड मे होगा आर्य जहा दो बार नित्य कर्म होता हो पर ये दोनो तो सकल्प करके उस पर कटिबद्ध हो गए। ईश्वर का अति धन्यवाद है जिस की प्रेरणा से हो रहा है। हम तो सभी बेटियो के लिए सदा ही सकल्प कराते रहे हैं परन्तु इन की तत्परता विलक्षण ही है।

—वेल्ज में—

27 जुलाई के कार्यक्रम के लिए हम स्व डा देवीचन्द के वैदिक धर्मी पुत्रों डा प्रबोध, डा तृप्ता, और प्रमोद डा नीना जी के निमन्त्रण पर 25 जुलाई को साय को इन के घर नीथ मे आ गए जहा पोर्ट टलबर्ट पर हमे कोच से उतार कर इन्होंने स्वागत किया। इनकी धार्मिक आर्य माता डा निर्मल जी जो कि चण्डीगढ के सी एम सी में सेवारत है और जिन की आज्ञा सुरक्षा और आर्य सस्कारो मे यह बेटे बेटिया पाल पोस कर योग्य हुए। बडी पवित्रता और नम्रता से वेल्ज की सुन्दर घाटियो पहाडियो और झरनो के बीच अपने कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर होते हुए सरकारी हस्पतालों मे सेवारत है। इन के घर नीथ मे पुत्र मुकुल और आलोक और खल-नैबली मे डा, प्रबोध जी के घर सत्सग आदि करते हुए और पर्वत मालाए और इटलाटिक सागर के सुन्दर तटो का भ्रमण करते हुए 25 को जाकर 27 की रात्री को वापस लन्दन आ गये। इगलैंड का यह प्रान्त वेल्ज 200 मील पर है जो 4 घण्टो मे कोच पहुचाती है।

3 अगस्त पाचवें सप्ताह मेरा वेद धर्म प्रचार 39 ग्राफटन टैरिस हिन्दू सैंटर लन्दन मे हुआ जहा आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक श्री हरबश लाल हस पुरोहित हो कर सलग्नता से सेवा में तत्पर हैं। यहां भी मुल्तान और पजाब से आये हुए अनेक आर्य भाई-बहनों के दर्शन हुए पुराने महारथी अमृतसर के शिक्षा विशारद और लन्दन मे भी बडी ख्याति प्राप्त और कारपोरेशन के कौंसलर श्री मदनमोहन काक्षिया जी प्रधान हैं श्री कृष्णा जी रैले बडे योग्य मन्त्री हैं। इन्होंने मेरे उर्दू, वेद भाष्य की बहुत ही जोरदार प्रशसा की जितने मेरे पास शेष वेद थे सब ले लिये। अफसोस यह रहा कि मान्य श्रीमान कालिया जी उर्दू, फारसी के बड विद्वान् हैं उनकी प्रबल इच्छा होने पर भी यजुर्वेद की प्रति मैं न दे सका क्योकि मेरे पास एक ही रह थी और अभी मैंने अमेरिका जाना था विवशता थी। यह हिन्दू सैंटर ही आर्य समाज लन्दन की पुरानी गतिविधियो का केन्द्र रहा है जो अब अपना भवन होने पर ईलिङ्ग आरगायल राड पर चला गया है। इस सत्सग मे मोरिशस के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री स्व सर राम गुलाम की पत्नी भी आई हुई थी जब मैंने अपनी मौरिशस यात्रा की बात अपने प्रवचन मे कहीं तो वह बहुत प्रसन्न हुई और मिली। प्यारे डा प्रशान्त जी वेदालकार और उनकी धर्म पत्नी श्रीमती प्रो सरोज दीक्षा से भी यहा भेंट हुई इनका प्रवचन भी हुआ। यह सत्सग अब मास मे एक बार प्रथम रविवार होता है।

आर्य परिवारों मे—

यहा आकर अपने प्यारे आर्य परिवारो से भी निमन्त्रण आने लगे। चण्डीगढ आर्य समाज सैक्टर35 के कार्य कर्ता श्री राज कुमार महाजन के भाई श्री कान्ति चन्द्र गुप्ता श्रीमती स्वदेश के घर पालमर्स ग्रीन 26 मे गये जहा प्रिय पुत्र सदीप सक्षम पुत्री अनीता आशिमा सब से मिल कर प्रसन्नता हुई।

104 ऐवन्यु पार्क नार्थ लन्दन मे कृष्णा चण्डीगढ के प्रसिद्ध एडवोकेट स्व श्री चिरञ्जीव लाल विद्यावती अग्रवाल की पुत्री और इन के पति श्री रामसिह जी जो लन्दन के समाजी कार्यकर्ता हैं कि घर आकर पुत्री रोमिला किरन, विपन आदि सब को मिले। अम्बाला के श्री कृष्ण मुरारी जी कपूर श्रीमती दयावती कपूर जो कि यशस्वी आर्य परिवार है चण्डीगढ की श्रीमती आर्य प्रिया की बहन है। साउथहाल मे रहते है प्रसिद्ध स्त्री आर्य समाज की सस्थापक देवी सावित्री छाबडा जिनके घर पर प्रो सुरेन्द्र नाथ भारद्वाज जी और इनकी श्रीमती निर्मल जी भी पधारे हुए थे। आर्य देवी श्रीमती वेदवती शर्मा उनके पुत्र देवेन्द्र जी वधु लीलावती पौत्र राजन मजु आदि सभी के साथ मिल बैठे यह केनिया से आये हुये हैं। मेरे प्यारे श्री सतेन्द्र बौरी डा सुरेन्द्र बौरी प्रिय मल्ली, ऊषा जी पुत्री वैशाली पुत्र सुमित, निलेश जी यह स्व डा. अमर नाथ लीलावती जी का परिवार है माता लीलावती तो अब चण्डीगढ मे है पुत्री लता जो और इनके पति श्री कृष्ण स्वरूप मेहरा जी अमेरिका है। इन सभी घरो मे सन्ध्योपासना हवन यज्ञ भजन उपदेश आदि सत्सग होता रहा और इन सब ने हमारे सत्कार और सेवा भोजनादि मे कोई कमी नही। प्रिय सतेन्द्र जी के स्व पुत्र राजेश का जन्म दिवस यज्ञ कराया। जहा बहुत लोग आये हुये थे सबका धन्यवाद किया।

आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर का प्रशंसनीय कार्य

आर्य समाज शक्तिनगर अमृतसर हमारे प्रदेश की उन सक्रिय आर्य समाजो में से एक है, जो वैदिक धर्म के प्रचार का एक बहुत बडा केन्द्र है। इसके अधिकारी समय-समय पर ऐसे कार्यक्रम चलाते रहते हैं जिनसे आर्य समाज की प्रतिष्ठा और सम्मान जनता की दृष्टि मे बढ जाता है। 10 नवम्बर से 16 नवम्बर तक श्री जैमिनी जी शास्त्री की अध्यक्षता मे वहा बृहद् यजुर्वेद यज्ञ किया गया। उस की पूर्णाहुति 16 नवम्बर को डाली गई। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के आदेशानुसार आर्य समाज शक्तिनगर अमृतसर ने अपने उन पुराने आर्य समाजियो को सम्मानित किया, जिन्होने अपना जीवन आर्य समाज की सेवा मे व्यतीत किया है। उनमे से कोई अब 90 वर्ष का हो गया है, कोई 80 वर्ष का उनमे से प्राय सब ने अपने बचपन से ही आर्य समाज की सेवा प्रारम्भ की थी थी और अब तक किसी न किसी रूप मे वे सेवा करते चले आ रहे हैं। उनमें से कई शारीरिक रूप मे शिथिल हो गए है, चल नही सकते, सुन नही सकते, फिर भी आय समाज मे उनकी श्रद्धा किसी भी प्रकार कम नही हुई। आर्य समाज शक्तिनगर ने उस दिन उन सबको सम्मानित किया।

मेरे विचार मे अपन वृद्धजनो को सम्मानित करने की प्रथा बहुत प्रभाव शाली है, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने अपनी सब आय समाजा को यह आदश दे रखा है कि वे अपने-अपने भेत्र मे वृद्धजनो को जब उनकी आयु 80 वष मे ऊपर हो जाए तो उन्ह अपनी आर्य समाज मन्दिर म बुलाकर सम्मानित किया जाए। लुधियाना के एक बहुत पुराने आर्य समाजी श्री काशीराम जी चावला का मुझे पिछले दिनो पत्र आया। उन्होने लिखा कि उनकी आयु अब 99 वर्ष की हो गई है और उन्हे पूरी आशा है कि वे अपनी शताब्दी पूरी करेंगे। साथ ही उन्होने मुझे वेद प्रचार के लिए कुछ राशि भी भेज दी। इससे अनुमान लगा सकते है कि जिन महानुभावो ने अपना सारा जीवन आर्य समाज की सेवा मे व्यतीत किया है उनमे आर्य समाज के लिए आज भी कितनी तडप है। श्री काशीराम जी चावला के पत्र को समक्ष रखते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरग सभा ने यह प्रस्ताव पारित किया है कि जिस दिन चावला जी अपनी शताब्दी पूरी करें उस दिन उन्ह भी सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया जाए। उसी के साथ सभा न सब आर्य समाजो को यह आदेश दिया कि वे अपने-अपन क्षेत्र म जो वृद्धजन है, जिनकी आयु 80-85 से ऊपर है, उन्हे अपनी आर्य समाज मे बुलाकर सम्मानित किया जाए। यह आवश्यक नही कि वे केवल आर्य समाजी हो, और भी व्यक्ति जिन्होने जनता की सेवा की हो हमे उन्ह भी सम्मानित करना चाहिए। इस प्रकार आर्य समाज का प्रचार भी होगा और जनता मे आर्य समाज की अपनी प्रतिष्ठा भी बढेगी।

आर्य समाज शक्तिनगर अमृतसर ने एक बहुत अच्छा उदाहरण दूसरी आय समाजो के लिए भी पेश किया है, जिसक लिए मैं उनक अधिकारियो को बधाई देता हू। इस अवसर पर उन्होने आय प्रतिनिधि सभा पजाब का वद प्रचार के लिए 3 हजार रुपया का दान भी दिया, उससे लिए मैं उनका आभारी हू। इसी आर्य समाज के एक भतपूव प्रधान स्वर्गीय श्री जगदीशराज जी के सुपुत्र ने भी 2100 रुपये सभा को दिये। उनका भी धन्यवाद। और हम आशा करते है कि श्री जगदीशराज जी के सुपुत्र अपने पिता जी की तरह आय समाज की सेवा करते रहेंगे।

—वीरेन्द्र

प्रतियोगिता चित्रों की जुबानी

कुमारी अनु सेठी (आय महिला कालेज) सगीत मे प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए। पुरस्कार वितरण कर रहे हैं—श्री ज्ञानचन्द जी आर्य। साथ बैठे हैं—सर्वश्री अजय वत्तरा, मदन मोहन चड्ढा, रणवीर भाटिया, महिन्द्र प्रताप आय (अध्यक्ष प्रतियोगिता प्रधान आय युवक सभा)।

ओ३म का झण्डा लहराते हुए श्री देवराज आर्य साथ खडे हैं—सर्वश्री ज्ञानी गुरदियाल सिह आय, महिन्द्र प्रताप आ[illegible] [illegible]शनलाल शर्मा मतवानचन्द [illegible] [illegible]पाल आय, [illegible]म कुमार।

शोक प्रस्ताव

आय समाज की धार्मिक सभा सत्सग [illegible]-11-86 रविवार के पश्चात लुधियाना नगर क [illegible] स्वतन्त्रता सेनानी, निर्भीक नता, ओजस्वी वक्ता डा कालीचरण शर्मा की जघन्य हत्या पर रोष प्रकटन के लिए एक शोक सभा हुई। शोक सभा मे पजाब की बिगड्ती हुई परिस्थितियों को शीघ्र सुधारने का सरकार से अनुरोध किया तथा सभा आयजनों ने इस दुखद घटना की घोर निन्दा की। परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की शान्ति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया उनके परिवार को इस असह्य दुख से हुई क्षति को ईश्वर से सहन करने की प्रार्थना की गई।

अपील

स्व महाशय कृष्ण जी के नेतृत्व मे हैदराबाद सत्याग्रह मे जिन आर्य बन्धु ने भाग लिया हो और वह औरगाबाद जेल मे रहे हो, कृपया व सूचित करें, ताकि मैं अपने पैंशन फार्म पर उनकी पुष्टि करवा सकूं।

—हरिकृष्ण लाल कुन्द्रा, मकान न 126 127 रैण बसेरा, दशहरा ग्राऊंड बस्ती नौ जालन्धर शहर 144002

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में निर्वाण दिवस सम्पन्न

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना मे महर्षि निर्वाण दिवस बड़े समारोह से सफलतापूर्वक मनाया गया। 13 से 31 अक्तूबर 1986 तक विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के पश्चात् महर्षि की जीवनी पर प सुरेन्द्र कुमार शास्त्री तथा श्री सूर्यपाल एम ए के प्रभावशाली व्याख्यान होते रहे। शनिवार 1-11-86 निर्वाण दिवस उत्साह से मनाया गया, जिसमे लुधियाना नगर के विख्यात विद्वानो ने अपनी 2 श्रद्धाजलि महर्षि को अर्पित की। जिनमे सर्वश्री डा बालकृष्ण जी पी एच डी रामस्वरूप विज, ज्ञानी गुरदियालसिह जी आर्य तथा रणवीर भाटिया आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। लुधियाना की सुप्रसिद्ध वेद प्रचार भजन-मण्डली ने श्री रोशनलाल शर्मा के नेतृत्व मे मधुर एव मनोहर भजनो द्वारा महर्षि को श्रद्धाजलि अर्पित की। अगले दिन प्रान्तीय भाषण एव सगीत प्रतियोगिता का विशाल आयोजन किया गया जिसमे कालेजो तथा स्कूलो के छात्र तथा छात्राओ की 20 टीमो ने भाग लिया तथा भाषण प्रतियोगिता मे 25 विद्यार्थियो ने सम्मिलित होकर अपनी अपनी कला एव प्रतिभा का प्रदर्शन किया। लगभग 125 प्रतियोगियो की शोभा को बढ़ाया तथा महर्षि का गुणगान किया। सभी प्रतियोगियो को वैदिक साहित्य एव मान पत्र प्रदान किए गए। यज्ञ की अग्नि ज्ञानी गुरदियालसिह जी आर्य ने प्रज्वलित की ओ३म् का झण्डा श्री देवराज जी आर्य ने लहराया। विजेताओं तथा प्रतियोगियो को पुरस्कार एव मान-पत्र श्री ज्ञानचन्द जी आर्य ने वितरण किए। प्रतियोगिता की अध्यक्षता युवा कार्यकर्ता श्री महिन्द्र प्रताप आर्य ने की, सर्वश्री रामलाल जी सूद, डा एस बी बामिया, मा लक्ष्मणदास प्रतियोगिता के जज थे। प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा—कालेज ग्रुप में भाषण प्रतियोगिता मे प्रथम कुमारी शालनी आर्य महिला कालेज, द्वितीय कु सीमा धवन एस डी पी कालेज, तृतीय—कु कविता खुल्लर गवर्नमेंट कालेज [illegible] मे प्रथम अनु सेठी आर्य महिला कालेज द्वितीय—पकज आर्य, आर्य महिला कालेज तृतीय, सरोज कुमार आर्य (हिसार) स्कूलों के ग्रुप मे भाषण में प्रथम—प्रिय मुनीश्वर के बी. एम, स्कूल) द्वितीय—प्रिय सुनील (आर एस माडल स्कूल) तृतीय कु मीनू अरोड़ा (बी सी एम. माडल स्कूल) सगीत मे प्रथम—कुन्दन विद्या मन्दिर जी टी रोड द्वितीय—बी सी एम माडल स्कूल तृतीय आर, एस, माडल स्कूल ऋषि लगर के पश्चात प्रतियोगिता समाप्त हुई।

—बलदेवराज सेठी मन्त्री

पण्डित रामकिशोर वैद्य का वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश

निज कर्त्तव्य कर्म के पालन करने के ही कारण।
पण्डित रामकिशोर वैद्य ने किया तृतीय आश्रम धारण॥
पूज्य अमर स्वामी जी से लई वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा।
अब सन्यास आश्रम हेतु देनी होगी सफल परीक्षा॥

गृहस्थ आश्रम पण्डित जी ने सदा नियम अनुकूल निभाया।
सन्त अमर स्वामी गुरुवर से नाम महात्मा का पद पाया॥

तृतीय आश्रम मे प्रचार का इससे अधिक मिलेगा अवसर।
श्रवण मनन चिन्तनादि से भी उन्नति होगी उत्तरोत्तर॥

यम नियमो के पालन से कचन सम निखार आयेगा।
होंगे दूर क्लेश सब जीवन मे आनन्द अपार आयेगा॥
तुम हो धन्य, धन्य वैद्य जी विरक्त पथ तुमने स्वीकारा।
होगा जन कल्याण तुम्हारे श्रुति सम्मत कृतित्व के द्वारा।

शुभ कामना 'स्वरूपानन्द' उन्नति आर्य समाज करो तुम।
निज सद्गुण गुण से सदैव सबके हृदय पर राज करो तुम॥
निरखो जीवन के शत बसन्त दिग्दिगन्त होवे यश उज्ज्वल।
अभिलाषा है, हे ऋषि भक्त तुम आश्रम जीवन करो सफल।

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग दिल्ली

आंधियों में दीपक जलाओ साथियो !

ले—सारस्वत मोहन 'मनीषी' प्राध्यापक स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग डी ए. वी कालेज अबोहर

दिल से अन्धेरो को भगाओ साथियो ।
आंधियो मे दीपक जलाओ साथियो ।
तेल की तलाश मे न जाओ साथियो !
बातियो को खून मे डुबाओ साथियो ।

वायदा करो तो पूरा होना चाहिए । माग भर दी तो नहीं रोना चाहिए ।
यदि आग लगी आपके पडौस मे । चैन की न नीद कभी सोना चाहिए ।
बेटी न किसी की भी सतानी चाहिए । टी वी फ्रिज हेतु न जलानी चाहिए,
इतनी समझ हमे आनी चाहिए । लडकी न लकडी बनानी चाहिए ।

डोलिया न अर्थिया बनाओ साथियो ।
उतना ही खाओ जो कमाओ साथियो ।

प्यास न बुझा सके वो पानी नही है । विश्व भूल जाए वो कहानी नही है,
रुकने का नाम तो रवानी नही है, हार मान बैठे वो जवानी नही है ।
नीतिहीन बातें सब छोड दीजिए, टूटी हुइ माला फिर जोड दीजिए ।
बादलो से अमृत निचोड लीजिए कसो की कलाईया मरोड दीजिए ।

गिरे हुए दीन को उठाओ साथियो ।
एकता के बीज को बचाओ साथियो ।

लक्ष्य पै न पहुचे वो तीर नही है, खून पीता हो जो वो अमीर नही है ।
सत्य बेचता हो वो फकीर नही है, झूठ बोलता हो वो कबीर नही है ।
प्यार के बिना तो जिन्दगी अनाथ है, साथ छूट जाए वो भी कोई साथ है ।
व्यर्थ मे झुका रहे वो कैसा माथ है, उन्नति का नाम नही फुटपाथ है ।

प्रेम की फुहार मे नहाओ साथियो ।
वेदना को वदना बनाओ साथियो ।

जनता को लूटे वो सिपाही नही है, लिखने से मकरे वो स्याही नही है ।
रास्ते को दोष दे वो राही नही है, प्यास को बढाए वो सुराही नही है ।
साच को यहा कभी भी आच नही है, आच मे जले वो कोई साच नही है ।
पत्थर तो पत्थर है काच नही है, पक्षपाती जाच कोई जाच नही है ।

फैशन की पूरिया न खाओ साथियो ।
पुरखो के पुण्य को बचाओ साथियो ।

दिल से अन्धेरो को भगाओ साथियो, आंधियो मे दीपक जलाओ साथियो ।
तेल की तलाश मे न जाओ साथियो, बातियो को खून में डुबाओ साथियो ।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार
आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार १९८७

ज्ञातव्य है कि सघड विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर द्वारा 1200 रुपये का आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार प्रति वर्ष गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय द्वारा दिया जाता है। गत छ वर्षों मे यह पुरस्कार प्रो रामप्रसाद वेदालकार, आचार्य एव उपकुलपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय डा भवानी लाल भारतीय अध्यक्ष महर्षि दयानन्द अनुसन्धान पीठ पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ तथा सयुक्त मन्त्री परोपकारिणी सभा अजमेर, श्री विश्वनाथ विद्यालकार, आचार्य सत्यकाम विद्यालकार, प भगवदत्त वेदालकार आचार्य प्रियव्रत वेद वाचस्पति तथा लाला सन्तराम जी को वेद प्रचार तथा सामाजिक सवाओ के लिए प्रदान कि ा गया।

चयन सम्बन्धी नियम –

1 आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार उन्हीं सज्जनो एव सभाओ को दिया जा सकेगा जो वेद, उपनिषद, दर्शनशास्त्र आदि आर्ष साहित्य का प्रचार एव प्रसार जन-सामान्य तक करे ।

2 उक्त विषय पर शोध करने वाले व्यक्ति सस्थान भी उक्त पुरस्कार पाने के अधिकारी हो सकते हैं ।

3 उक्त विषयो पर सगीत काव्य तथा नाटक रचकर अथवा नाटक को रगमच पर दिखलाने वाले व्यक्ति या नाटक मण्डली भी इस पुरस्कार के लिए आमन्त्रित किए जाते है।

4 उक्त विषयो पर आकाशवाणी या दूरदर्शन पर प्रचार एव नाटक आदि के माध्यम से जनसामान्य को उदात्त वैदिक भावना से आप्लावित करने वाले व्यक्ति या सस्था को उक्त पुरस्कार पाने हेतु सम्मिलित किया जा सकेगा।

5 उक्त विषयो पर ग्राम-ग्राम मे जाकर मैजिक लालटेन, पुतली प्रदर्शन अथवा भजनो द्वारा प्रचार करने वाले व्यक्ति या मण्डली, सभा भी उक्त पुरस्कार पाने हेतु अथवा प्रार्थी हो सकते हैं, हो सकती है।

6 आधुनिक युग मे विज्ञान और आध्यात्मिकता का समन्वय करने हेतु अथवा सन्तुलित व्यक्तित्व के विकास हेतु योग की उपयोगिता सम्बन्धी सरल साहित्य जो सामान्य जनमानस को प्रभावित कर सके, लिखने अथवा प्रकाशित करने वाले [illegible] और प्रकाशक [illegible] पुरस्कार पाने वालो मे सम्मिलित किया जा सकता है।

7 उक्त पुरस्कार चयन नियमो को परिवर्तन एव परिवर्द्धन करने का अधिकार [illegible] विद्या सभा [illegible] जयपुर को होगा।

आप से निवेदन है कि यदि आपकी दृष्टि मे कोई महानुभाव अथवा सस्था आगामी वर्ष के लिए इस पुरस्कार के योग्य हो तो उसका पूर्ण विवरण पत्र मे निम्न पतो पर 31-12-86 तक भेजने की कृपा करे।

1, श्रीमती मावित्री कथरिया उपसचिव, सघड विद्या सभा टस्ट, सी 21 ए, ज्ञान मार्ग [illegible] जयपुर।

2 श्री वीरेन्द्र अरोडा कुलसचिव, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार।

—वीरेन्द्र अरोडा कुलसचिव

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में वैदिक संस्कार करवाने के लिए सुविधा उपलब्ध

काफी समय से नगरवासियो को यह शिकायत थी कि वैदिक सस्कार करवाने के लिये आर्य पुरोहित नही मिलते। इस कठिनाई को दूर करने के लिए तथा परिवारो मे सत्सग व हवन यज्ञो की परिपाटी फिर से आरम्भ करने के लिए आर्य समाज के अधिकारियो ने इस समाज मे दो पुरोहित वेद प्रचार के लिए रखे हैं।

1 प. सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री

2 प सूर्यपाल जी विद्यावाचस्पति एम ए हिन्दी एम ए सस्कृत (पार्ट1-)

किसी भी आर्य समाज को या व्यक्ति को वैदिक सस्कार करवाने के लिए पुरोहित की आवश्यकता हो तो वह आर्य समाज मे आकर कार्यालयाध्यक्ष को मिले इस के अतिरिक्त पारिवारिक सत्सग करवाने के लिए, आर्य समाजो के उत्सवो मे सगीत, भजन करवाने के लिए वेद प्रचार भजनमण्डली की सेवाए उपलब्ध हैं। इसके लिए वेद प्रचार भजन मण्डली के अध्यक्ष श्री रोशन लाल जी शर्मा को मिलें या आर्य समाज के कार्यालयाध्यक्ष को मिलें।

—बलदेवराज सेठी-मन्त्री

लुधियाना में विवाह समिति का गठन

आधुनिक सामाजिक कुरीतियो को ध्यान म रखते हुए और उनको दूर करने के लिए कुछ निष्ठावान आर्य सज्जनो ने एक 'नि शुल्क विवाह सेवा समिति' का केवल सेवा भाव से लुधियाना शहर मे गठन किया है। इस समिति के सस्थापक कर्मठ महात्मा रामधन जी एव सरक्षक सत्यानन्द जी मुजाल, मालिक हीरो साईकल आदि सुयोग्य व्यक्ति हैं। इस का कार्यालय परिसर आर्य समाज जवाहर-नगर लुधियाना मे खाला गया है। जहा से प्रात साढे 9 बजे से 11 बजे तक आवेदन पत्र भरने के वास्ते मिल सकते हैं अथवा डाक द्वारा भी मगवाए जा सकते हैं। समिति सब कार्य निःशुल्क करेगी, परन्तु फार्म की कीमत केवल पाच रुपये, डाक खर्च आदि के वास्ते रखी गई है। यह समिति जहा अविवाहित युवक युवतियो के रिश्ते गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार कराने का यत्न करेगी। वहा विधवा-विधुर तलाकशुदा आदि सज्जनो के रिश्तो का प्रबन्ध भी करने का प्रयास करेगी, इसके लिए अलग फार्म बनाया गया है।

—पशोरीलाल गुलाटी
सयोजक

वृहद् यजुर्वेद यज्ञ

आय समाज शक्तिनगर अमृतसर मे 10 नवम्बर स 16 नवम्बर 1986 तक वृहद् यजुर्वेद यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री जैमिनी जी शास्त्री एम ए ने की। इसके अतिरिक्त विख्यात भजनोपदेशक श्री सत्यपाल जी 'पथिक' के मनोहर भजन हुए एव अन्य गुरुकुलो के ब्रह्मचारी पधारे।

सोमवार 10 नवम्बर स 15 नवम्बर तक प्रातः 7 बजे से 8 30 बजे तक यज्ञ 8-30 से 9-30 बजे तक भजन एव व्याख्यान। पूर्णाहुति 16 नवम्बर रविवार को प्रात. 7-30 बजे स 11-30 बजे तक हुए। प्रीति भोज 12 बजे दोपहर।

—मन्त्री

आर्यसमाज नया नंगल में वेद सप्ताह व वार्षिक उत्सव

आर्य समाज नया नगल का 26वा वार्षिक उत्सव विगत मास में बडे समारोह से मनाया गया। कार्यक्रम प्रात: आर्य समाज के पुरोहित प, जीवानन्दजी ने एक सप्ताह साम वेद का विशेष यज्ञ सम्पन्न कराया पश्चात् ओमप्रकाश आर्य ने यज्ञ पर उपदेश दिए।

महिला सम्मेलन मे बाहिर से पधारे हुए विद्वानो ने समाज और राष्ट्र के उत्थान मे महिलाओ का योगदान विषय पर अपने विचार रखे। दयानन्द पब्लिक स्कूल के बच्चो ने सुन्दर कार्यक्रम दिया, जिसमे राष्ट्रीय व धार्मिक प्रेम की झलक देखने को मिली। ओ३म् ध्वजारोहण तथा दयानन्द पब्लिक स्कूल के भवन की आधारशिला की रस्म का कार्य नेशनल फर्टीलाईजर लिमिटेड के महाप्रबन्धक ने अपने कर-कमलो द्वारा किया। कार्यक्रम प, आर्य जी के अतिरिक्त नया नगल आर्य समाज के सस्थापक श्री कृष्णलाल जी आर्य प्रधान हिमाचल प्रतिनिधि सभा श्री भगवानदेव चैतन्य सम्पादक 'आर्य कल्पना' तथा भजनोपदेशक, श्री हरिश्चन्द्र जी ने अपने ज्ञानवर्धक प्रवचनो और मनोहर भजनो से सबको आनन्दित किया इस उत्सव मे कुल मिलाकर एक हजार से अधिक व्यक्तियो को आर्य समाज की विचारधारा जानने का सुअवसर मिला।

विगत वर्षों की तरह वेद सप्ताह बडे उल्लास से मनाया गया। श्री दयाराम जी शास्त्री (भूतपूर्व मन्त्री अनारकली आर्य समाज दिल्ली) ने पारिवारिक सत्सग मे ज्ञानवर्धक व प्रभावकारी प्रवचन दिये। इस प्रकार स लोगो मे वेदो के प्रति बडी श्रद्धा जागरूक हुई।

—सूरज बुध मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि. न. पी.जे एल 55

वर्ष 18 अंक 36, 15 मार्गशीर्ष सम्वत् 2043 तदानुसार 30 नवम्बर 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

प्रभु कृपा के भागी बनो

लेखक—वे शा श्री स्वामी वेदानन्दतीर्थ सरस्वती

त्व तमग्ने अमृतत्व उत्तमे मर्तं दधासि श्रवसे दिवे दिवे।
यस्तातृषाण उभयाय जन्मने मय कृणोषि प्रय आ च सूरये॥
—ऋ 1।31।7

अग्ने—सब को आगे ले जाने वाले! सब की उन्नति करने वाले प्रभो!
त —जो
उभयाय जन्मने—दोनो जन्मो (की उत्कृष्टता) के लिए
तातृषाण —अत्यन्त अभिलाषी है
त मर्तं त्वम्—उस मनुष्य को तू
उत्तमे—सर्वश्रेष्ठ
अमृतत्वे—मोक्ष के निमित्त
दिवे+दिवे—प्रतिदिन
श्रवसे—स्वाध्याय के लिये
दधासि—लगा देता है
च सूरये—और ज्ञानी के लिये
मय प्रय —आनन्द और सुख
आ कृणोषि—सब ओर से करता है

मनुष्य और पशु में विवेक शक्ति के कारण भेद है। अन्यथा खान-पान, निद्रा-मैथुन आदि प्रवृत्तिया दोनो मे समान हैं। मनुष्य चारो ओर दृष्टि डालता है। वह देखता है कि कोई सुखी है, कोई दु खी है, कोई धनी है, कोई दरिद्र है। कोई सर्वांगसुन्दर है, किसी के अंग ही पूरे नही, वरन वह कुरूप है। इस विषमता से वह चिन्ता मे पड जाता है। श्रवण, मनन और चिन्तन से उसे निश्चय होता है कि यह शरीर मात्र नहीं है, वरन् उसे शरीर से अतिरिक्त एक चेतन आत्मा का बोध कराती है। उसे प्रतीत होता है कि प्राणियो की यह विषमता इन के अपने कर्मों के कारण है। इस तत्व का निश्चय होते ही उसे यह भी ज्ञान होने लगता है कि शरीर अवश्य अनित्य है। जन्म, मौत्यु और बुढ़ापा ही इसके स्वाभाविक धर्म हैं। शरीर के नाश होने पर भी कोई ऐसा पदार्थ शेष रह जाता है जो इस शरीर से पृथक है। अन्यथा कृतहान और अकृताभ्यागम दोष आयेंगे। मरने से पूर्व जो भले बुरे कर्म किए, उनका फल मिला नहीं और यह प्राणी चल बसा। किए कर्म का फल न मिलना कृतहान कहलाता है। कोई सुखी उत्पन्न हुआ है, कोई दु खी। आत्मा कोई है नही, जिसने पूर्व कोई कर्म किए हो, तो यह सुख दु ख भेद व्यवस्था कैसे सम्भव है? किसी कर्म के बिना सुख-दु ख मिलना अकृताभ्यागम कहाता है। कृतहान और अकृताभ्यागम को स्वीकार कर लिया जाए तो ससार की कार्यकारण व्यवस्था ही टूट जाए। अत विवश होकर मानना पडता है कि शरीर के अतिरिक्त कोई आत्मा है और वह नित्य है। अर्थात् इस शरीर के मिलने से पूर्व भी वह था। पूर्व के किए कर्मों का फल उसे वर्तमान शरीर मिला है। इस शरीर मे किए कर्मों के फल भोगने के लिए उसे इस शरीर के बाद दूसरा शरीर मिलगा, क्योकि यह शरीर के पीछे भी बना रहता है। आत्मा के इस तत्व का बहुत थोडो को ज्ञान होता है। यम ने ठीक ही कहा है—

श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्य,
शृण्वन्तोपि बहवो यन्न विद्यु।
आश्चर्यो वक्ता कुशलोऽस्य लब्धा-
ऽऽश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्ट:॥
—कठो 2।7

बहुतों को यह तत्व सुनने को भी नहीं मिलता। अनेक इसे सुनते हुए भी नही समझ पाते। इसका उपदेश करने वाला दुलभ है। इसको पा लेने वाला सचमुच कुशल है, चतुर है। किसी कुशल से शिक्षा पाकर इसका जानने वाला तो दुलभ ही है।

आत्मा की नित्यता और उसके कारण होने वाले आत्मा के अनेक जन्मो के सिद्धान्त को कोई विरला भाग्यवान ही जान पाता है। जिसको यह तत्व ज्ञात होता है, वह व्याकुल हो उठता है। उसे अपनी वर्तमान दशा तथा भावी दशा से असन्तोष और क्षोभ आ घरते हैं। वह अपना और भविष्य सुधारना चाहता है, और इसके लिए निरन्तर पुरुषार्थ करता है। ऐसे मनुष्य के सम्बन्ध मे ही मन्त्र मे कहा गया है

यस्तातृषाण उभयाय जन्मने

जो दोनो जन्मो के (सवारने सुधारने के) लिए अत्यन्त तृषावान है।

ऐसा जन मानो व्याकुल हुआ भगवान् से कहता है

अपां मध्ये तस्थिवांस तृष्णाविद जरितारम्। मृडा सुक्षत्र मृडय॥
ऋ 7।88।4

जल के बीच में सदा रहने वाले तेरे भक्त को प्यास ने आ घेरा है। दु ख से बचाने वाले! कृपा कर, दया कर।

ससार मे भगवान व्यापक है। इसके अन्दर भी है, बाहर भी है। अर्थात ससार भगवान् मे रह रहा है। अत भक्त का यह समझना ठीक ही है कि वह भगवान में रह रहा है। आनन्दकन्द सच्चिदानन्द में रहने वाले को आनन्द की इच्छा का उत्पन्न होना ऐसा है, जैसा जल में रहने वाले को जल की इच्छा सताए। जिस मनुष्य मे ऐसी तडप पैदा हो जाए, उसे

त त्वमग्ने अमृतत्व उत्तमे मर्तं दधासि श्रवसे दिवे-दिवे।

सबकी उन्नति करने वाला प्रभु उस मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ मोक्ष प्राप्ति के निमित्त प्रतिदिन स्वाध्याय (आत्म-चिन्तन) मे लगा देता है।

दिन रात स्वाध्याय (आत्मानात्मविवेचन) करने से मनुष्य का ज्ञान बढता है वह सूरि (ज्ञानी) बन जाता है। उस

मय कृणोषि प्रय आ च सूरये

सूरि विद्वान के लिए भगवान आनन्द और सुख श्रय और प्रय, लौकिक और पारलौकिक सुखो का सविधान कर देता है।

इस मन्त्र मे एक सूक्ष्म तत्व की ओर सकेत किया गया है कि जो केवल वर्तमान जन्म सुधार में लगा है, ऐसा मनुष्य परलोक से विमुख होकर स्वार्थ परायण होकर पापाचरण मे भी लग सकता है और इस प्रकार अपना अनिष्ट कर सकता है और जो केवल परलोक साधन मे ही लगा है, वर्तमान की उपेक्षा करता है, सम्भव है वर्तमान की उपेक्षा करने से वह अपने करणोपकरणो देह इन्द्रियादि की ही हानि कर बैठें और इस प्रकार परलोक साधन से भी रह जाए। वेद ने इसलिए दोनो जन्मो के सुधारने की बात कही है। धर्म भी यही है। जैसा कि महर्षि कणाद ने वैशेषिक दर्शन मे कहा है

यतोऽभ्युदयनि श्रेयससिद्धि स धर्म।
1।1।2

जिससे लोकोन्नति और मोक्ष सिद्ध हो उसे धर्म कहते हैं।'

अर्थात केवल परलोक साधन में लग कर इस लोक की उपेक्षा करने वाला धार्मिक नहीं है। धार्मिक होने के लिए दोनो जन्मों के सवारने सुधारने की आवश्यकता है। वैदिक धर्म की इन विशेषताओ को सदा सामने रख कर तदानुसार आचरण करना चाहिए। तात्पर्य यह है कि जो दोनो उन्नतियो के लिए व्याकुल होकर उन की प्राप्ति के लिए जी-जान से यत्न करता है, वह प्रभु कृपा का भागी हो सकता है।

—0—

18 फरवरी 1934 दयानन्दाब्द 110 8 फाल्गुण सम्वत् 1990

वेद प्रचार के लिए अपील का जवाब

"प्रकाश" ने वेद प्रचार फण्ड को मजबूत करने के लिए जो अपील की थी, उसे पढ कर निम्नलिखित चिट्ठी सभा के दफ्तर में मौसूल हुई है।

"श्रीमान मन्त्री जी, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, लाहौर, नमस्ते आपने प्रकाश द्वारा अपील की थी कि इस साल आगे से सवाई रकम वेद प्रचार फण्ड के लिए आनी चाहिए। मैं जनवरी 1928 से पाच रुपया माहवार वेद प्रचार फण्ड के लिए देता रहा हू। मैं आपकी आज्ञा का पालन करता हुआ प्रतिज्ञा करता हू कि जनवरी 1934 से सवा छ रुपया माहवार आय प्रतिनिधि सभा पंजाब की सवा में भेजा करूगा। 25 रुपए मनीआडर द्वारा भेजता हू, जो कि सवा छ रुपया माहवार के हिसाब से जनवरी, फरवरी, मार्च और अप्रैल चार मास के लिए हैं और इसी तरह आईन्दा भी चार चार माह के 25 रुपए भेजता रहूगा। मेरी प्रतिज्ञा नोट करें। यह मामूली सी रकम है और भारी काम के लिए कुछ भी नहीं है, मगर कहा तो आर्य समाजी सज्जन को वैदिक धर्म के झण्डे तले लाने के दावे ने रहे हैं और कहा पूज्य नेताओ और महात्माओ की अपील रूपी आवाज का कुछ असर नहीं होता। मैं एक बिल्कुल मामूली शख्स हू, लेकिन प्रतिज्ञा करता हू और परमात्मा को हाजर नाजर समझ कर वायदा करता हू कि मैं हर तरह अपील का यथा शक्ति पालन करूगा और यहा तक कि अपनी आमदनी व खच सामने रखूगा और जो आज्ञा होगी, उसका पालन करूगा। आर्यो! आओ दृढ निश्चय करें कि हम किसी भी नेता या महात्मा को दोबारा अपील का मौका नहीं देंगे और उनकी आज्ञा सिर माथे पर उठाएगे।

शान्ति स्वरूप
ओवरसीयर
कठूटाघाट
जिला बिसानमपुर (सी पी)

ग्राम प्रचार और ग्रामोफोन

ग्राम प्रचार मे एक खास दिक्कत पड़ती है कि बिला किसी रोचक कार्य-वाही के लोग जमा नहीं होते ताकि उन्हे उपदेश दिया जाए। मैं विचार करता हू कि एक ग्रामोफोन खरीद लू। उसके जरिये लोग काफी तदाद में जमा हो जाया करेंगे। फिर मैं लैक्चर के द्वारा उपदेश कर सकूगा। मैं देहात के लायक लैक्चर तो दे सकता हू, मगर आवाज ठीक न होने की वजह से गा नहीं सकता। वरना हरमोनियम से काम लेता। मैंने चन्द दुकानो पर मालूम किया तो पता चला कि आर्य समाज के भजनो के रिकार्ड अभी तैयार नहीं हुए। अगर वे और गज़लो वगैरा के रिकार्ड से भी लोग जमा हो जायेंगे। लेकिन आर्य समाज के रिकार्डों से तो और अधिक काम होने का ख्याल है। ग्रामोफोन की खरीदारी मे खच भी कम होगा और बाहर जाने पर बोझ भी ज्यादा नहीं उठाना पड़ेगा।

नत्थू सिंह
हैडमास्टर
वरनैकुल मिडल स्कूल,
पूर्णपुर (जिला पीलीभीत)

परोपकारिणी सभा ध्यान दे

परोपकारिणी सभा ने जो कीमती सेवाए की हैं, उनके लिए वह आर्य जनता की तरफ से शुक्रिया की मुस्तहीक है, मगर ऋषि के ख्यालात फैलने से काम का मैदान और भी बड़ा हो गया और आवश्यकतायें भी ज्यादा हो गई हैं। चूकि ये आर्य समाजी अधिक अमीर नहीं होते। आम, मर्ज, खासकर "मौं मुख्तलिफ" लिखवार वाले बिना सुधार होना नामुमकिन है। साथ कि वैदिक धर्मियों के लिए आर्याभिविनय खास आकर्षण रखती है और लोग उसे मतिदिन पढ़ते यदि ऐसा होता तो यह नामुमकिन था कि आर्याभिविनय इतनी थोड़ी तादाद में छपी होती। परन्तु इस समय मैं परोपकारिणी सभा से कुछ कहना चाहता हू, क्योकि लोगो की सहूलियत के लिए उसे कुछ तबदीली करनी पड़ेगी। इस भक्ति की पुस्तक को जरा और ज्यादा खूबसूरत और मोटे टाईप में प्रकाशित करना चाहिए। अगर कीमत में सस्तापन ला सकें तो और भी अच्छा है, ताकि लोग इसे आसानी से खरीद सकें। कुल एक सौ आठ मन्त्रो को अलग मोटे टाईप में छपवाया जाए। जो बिल्कुल वेद मन्त्र ही हों। व्याख्या न हों। क्योंकि आर्याभिविनय मूल उससे याद करने वाले भाईयो को सहूलत होगी 108 वेद मन्त्रो को याद कर लेना कोई बड़ी बात ही नहीं, जब कि प्राचीन आर्य लोग चारो वेदो को कण्ठस्थ कर लिया करते थे, तो यह 108 मन्त्र याद कर लेना नामुमकिन नहीं है। हा याद करने वालो को मोटा टाईप चाहिए और साफ कोड। गीता प्रेस वालो ने मूल गीता कई तरह की छपवाई है एक पाकेटसाईज मे है। अगर आर्याभिविनय मूल छप जाए तो सम्भव है कि कई श्रद्धालु भाई पाठ करने और याद करने वाले निकल आए। इसलिए कहता हू कि परोपकारिणी सभा इधर ध्यान दें।

गणेशदत्त प्रधान
आर्य समाज जामपुर

पंजाब के पुराने आर्य-मुन्शी केवल कृष्ण

लेखक—डा भवानीलाल जी भारतीय

उर्दू भाषा के कवि तथा स्वामी दयानन्द के प्रति गहन आस्था रखने वाले मुन्शी केवल कृष्ण के पिता का नाम मुन्शी राधाकृष्ण था। इनका जन्म आश्विन पूर्णिमा 1885 वि (1828 ई) मे हुआ था। इनके पूर्वज पटियाला राज्य के छत बिनूड नामक ग्राम मे रहने लगे थे। किन्तु मुसलमानी शासनकाल मे वे रोहतक मे रहने लगे थे। जन्मना कायस्थ होने के कारण मुन्शी जी का मास-भक्षण, मदिरापान, यहा तक कि वेश्यागमन से भी कोई परहेज नहीं था। जिस समय स्वामी दयानन्द का पंजाब मे आगमन हुआ तो उस समय मुन्शी जी शाहपुर मे मुन्सिफ के पद पर कार्यरत थे। स्वामी जी के उपदेशो के प्रभाव से इनके सभी दुर्व्यसन छूट गये और ये आर्य समाज के दृढ अनुयायी बन गये। वे कई वर्षों तक आर्य समाज गुजरांवाला के प्रधान चुने जाते रहे। आपके भाई मुन्शी नारायण कृष्ण तथा पुत्र मुन्शी कर्तकृष्ण भी आर्य समाज के अनुयायी थे। डी ए वी कालेज लाहौर की स्थापना के साथ आपने कालेज निधि में पर्याप्त राशि सहायता रूप मे प्रदान की। आपका निधन 15 दिसम्बर 1909 ई को हुआ।

मुन्शी जी उर्दू के सफल कवि थे। प्रारम्भ मे तो वे उर्दू काव्य की परम्परा का अनुकरण करते हुए शृंगार रस की ही कविताए लिखते थे, परन्तु आर्य समाज मे प्रविष्ट हो जाने के पश्चात् आपने शान्त रस की काव्य रचना करने मे ही अपनी कवि प्रतिभा का उपयोग किया था। आपकी रचनाओ का विवरण इस प्रकार है —

सन्ध्या मजूम (सन्ध्या का उर्दू पद्यानुवाद) कई सस्करण प्रकाशित हुए।

आर्याभिविनय मजूम—आर्याभिविनय का उर्दू पद्यानुवाद नवम्बर 1902 ई में प्रकाशित।

सगीत सुधाकर—यह मुन्शी जी का काव्य सग्रह है। उर्दू में उनका तख-ल्लुस "उफ" तथा हिन्दी में "केवल" रहता था।

भजन मुक्तावली—1901 ई. मे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा प्रकाशित।

उस्तादे शायरी—काव्य रचना के नियम बताने वाला ग्रन्थ। 1925 ई. मे चतुर्थ सस्करण छपा।

विचार पत्र

राजे सरबस्ता

"तुम्हारे सदाकत या मकबूल कलाम"

अन्तिम तीन पुस्तकें आर्य समाज के उस विवाद से सम्बन्धित हैं जिस में मांसाहार के औचित्य अथवा अनौचित्य से एक भीषण गृह-कलह का सूत्रपात कर दिया था।

सम्पादकीय—

अब आर्य समाज का कार्यक्रम क्या हो ?

आर्य समाज की स्थापना हुए 110 वर्ष हो गए हैं। इस अवधि में किसी दूसरी धार्मिक या सामाजिक संस्था ने देश के इतिहास पर अपनी छाप इस तरह न बिठाई होगी जिस प्रकार आर्य समाज ने। 1857 का गदर असफल हो गया था उसे हम स्वतन्त्रता की प्रथम लड़ाई भी कहते हैं इसलिए गदर के असफल होने के बावजूद देश की जनता में ऐसी जागृति उत्पन्न हो गई थी जिसके परिणामस्वरूप लोग बेचैन थे कि अब आगे क्या होगा ? इस जागृति का लाभ केवल दो संस्थाओं ने उठाया था—पहले आर्य समाज ने और बाद में कांग्रेस ने। आर्य समाज 1875 में कायम हुआ था और कांग्रेस 1885 में। परन्तु जो कुछ 1885 में हुआ था उसकी बुनियाद आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने दस वर्ष पहले रख दी थी जब उन्होंने कहा था कि "दूसरों का राज चाहे कितना अच्छा क्यों न हो वह स्वराज्य से अच्छा नहीं हो सकता।" एक बार महर्षि के कुछ विरोधी उन्हें समाप्त करने का षड्यन्त्र कर रहे थे तो उस समय के एक अंग्रेज गवर्नर ने महर्षि से कहा कि कुछ लोग उनके विरोधी हैं और उन्हें क्षति पहुंचाना चाहते हैं। इसलिए सरकार उन्हें गिरफ्तार करना चाहती है। महर्षि ने उससे पूछा कि गिरफ्तार करके वह क्या करेंगे ? उसने कहा कि उन्हें कैद कर दिया जाएगा। महर्षि ने उत्तर दिया कि मैं तो लोगों को कैद से छुड़ाने आया हूं कैद कराने नहीं आया।

निष्कर्ष यह है कि महर्षि दयानन्द का उद्देश्य पूर्णतया स्पष्ट था कि वह अपने देशवासियों को स्वतन्त्र करना चाहते थे। राजनीतिक परतन्त्रता से भी, धार्मिक कट्टरपंथी और सामाजिक परतन्त्रता से भी। इसी उद्देश्य के लिए उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। यही कारण था कि आर्य समाज इतनी शीघ्र सम्पूर्ण देश में फैल गया। आज उसकी देश-विदेश में लगभग चार हजार शाखाएं हैं और आर्य समाजी जहां भी हों स्वतन्त्र रूप से सोच सकते हैं और स्वतन्त्र रूप से ही काम कर सकते हैं। इसके परिणाम स्वरूप कई लोग उनके विरोधी भी हो जाते हैं। फिर भी आर्य समाज आज यह दावा कर सकता है कि अपने विचारों की स्वतन्त्रता के लिये जितना बलिदान उसने दिया है किसी और संस्था ने न दिया होगा। उसके कई बड़े बड़े नेता मौत के घाट उतार दिए गए और जहां तक देश की स्वतन्त्रता का प्रश्न है गांधी जी के नेतृत्व में जितने आर्य समाजी जेलों में गए थे किसी अन्य धार्मिक या सामाजिक संस्था के न गए होंगे। आर्य समाज ने केवल जेलों में कैद होने के लिए ही अपने कार्यकर्त्ता न दिये वे फांसी पर चढ़ने के लिए भी दिए थे। रामप्रसाद बिस्मिल और भगतसिंह जैसे शहीद आर्य समाजी परिवारों में ही उत्पन्न हुए थे।

जिस समय भगतसिंह आठ वर्ष के थे और उनका यज्ञोपवीत संस्कार हुआ था तो उनके दादा सरदार अर्जुनसिंह ने उस समय यह प्रार्थना की थी कि उन का पोता बड़ा होकर अपने देश के काम आए, अन्त में वही हुआ।

निष्कर्ष यह कि यह वह संस्था है जिसने धर्म, राजनीति और समाज-सुधार तीनों क्षेत्रों में कार्य किया है। केवल काम ही नहीं किया, इतिहास पर अपनी छाप भी बिठाई है। आर्य समाज ने जो कुछ भी किया है उसका अलौकिक श्रेय तो उसके प्रवर्तक महर्षि दयानन्द को ही मिलना चाहिए। वह कुछ कार्य किया गए और उनके बाद उनके अनुयायियों ने उसके लिए प्रयास किया। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा हंसराज जी, लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द और अन्य अनेक धार्मिक और राजनीतिक नेताओं ने बहुत कुछ महर्षि दयानन्द के पद-चिन्हों पर ही चलने का प्रयास किया था।

किसी भी संस्था की उन्नति एवं विकास का निर्भर उसके प्रवर्तक पर होता है। जैसा उनका व्यक्तित्व हो और जैसी उनकी शिक्षाएं हों उसी के अनुसार वह संस्था चलती है। महर्षि दयानन्द क्या थे ? इसका कुछ अनुमान कुछ उन लोगों की राय से लगाया जा सकता है जिन्होंने उनके कार्य को देखकर उनके सम्बन्ध में अपनी राय कायम की थी। प्राय हम अपने सम्बन्ध में अपने ही लोगों की राय प्रस्तुत करते हैं और उसी के आधार पर अपनी राय कायम करते हैं। परन्तु महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि प्रस्तुत करने वाले तो कई अन्य देशों के लोग भी थे। अत उनके सम्बन्ध मे फ्रांस के प्रसिद्ध साहित्यकार रोमारोला ने लिखा था—

"स्वामी दयानन्द सरस्वती उच्चतम व्यक्तित्व के पुरुष थे। यह पुरुष सिंह उनमें से एक था जिन्हें यूरोप प्राय उस समय भुला देता है जबकि वह भारत के सम्बन्ध में अपनी धारणा बनाता है किन्तु एक दिन यूरोप को अपनी भूल मान कर उसे याद करने के लिए बाधित होना पड़ेगा क्योंकि उसके अन्दर कर्मयोगी, विचारक और नेता के उपयुक्त प्रतिभा का दुर्लभ सम्मिश्रण था।

दयानन्द ने अस्पृश्यता व अछूतपन के अन्याय को सहन नहीं किया और उससे अधिक उनके अपहृत अधिकारों का उत्साही समर्थक दूसरा कोई नहीं हुआ। भारत में स्त्रियों की शोचनीय दशा को सुधारने में भी दयानन्द ने बड़ी उदारता व साहस से काम लिया। वास्तव में राष्ट्रीय भावना और जनजागृति के विचार को क्रियात्मिक रूप देने में सब से अधिक प्रबल शक्ति उसी की थी। वह पुनर्निर्माण और राष्ट्र-संगठन के अत्यन्त उत्साही पैगम्बरों में से था।"

महर्षि दयानन्द बारे फ्रांस के प्रसिद्ध दार्शनिक रोमारोलां ने जो कुछ कहा था वह ऊपर मैं लिख चुका हूं। इसी प्रकार के विचार ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री रेमजे मैकडानल्ड ने पेश किये थे जब उन्होंने कहा था कि —

"आर्य समाज समस्त विश्व को वेदों का अनुयायी बनाने का स्वप्न ले रहा है। स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज को जीवन और सिद्धांत दिए हैं। उनका विश्वास था कि आर्य जाति एक महान जाति और भारत एक महान् देश एवं वेद एक महान् धार्मिक ग्रन्थ है।"

जर्मनी के एक विख्यात शिक्षाविद प्रो मैक्समूलर ने लिखा था—

"स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू धर्म के सुधार का बहुत काम किया था। जहां तक समाज सुधार का सम्बन्ध था वह बहुत उदार हृदय थे। वह अपने विचारों को वेदों के अनुसार और ऋषियों के ज्ञान पर आधारित मानते थे। उन्होंने वेदों पर कई बड़ी-बड़ी पुस्तकें भी लिखी थीं उनका अध्ययन बहुत व्यापक था।"

एक और फ्रेंच साहित्यकार पाल रिचर्ड ने भी इनके सबंध मे लिखा था —

स्वामी दयानन्द निश्चय ही एक ऋषि थे। उन्होंने अपने विरोधियों द्वारा फेंके गए ईंट पत्थरों को हंसते माथे से सहन किया था। वह महान् अतीत और महान भविष्य का प्रतिनिधित्व करते थे। वह लोगों को हर प्रकार के बन्धनों से स्वतन्त्र कराना चाहते थे।'

महर्षि दयानन्द बारे कहा जाता है कि वह मुसलमानों के विरोधी थे। किन्तु मुसलमानों को उनके लिए कितनी श्रद्धा थी इसका कुछ अनुमान हम इस बात से लगा सकते हैं जो उनके देहान्त के बाद मुसलमानों के तत्कालीन सर्वोपरि नेता सय्यद अहमद खां ने दिया था। उन्होंने कहा था —

"स्वामी दयानन्द के अनुयायी उन्हें एक देवता मानते थे। इसमें सन्देह नहीं कि वह ठीक ही एक देवता थे। वह इस प्रकार योग्य और उच्चकोटि के नेता थे कि उनके विरोधी भी उनका सम्मान करते थे। उन जैसा व्यक्ति सारे देश मे इस समय कोई नहीं मिल सकता। उनके देहान्त से लोगों को दु ख होना स्वाभाविक ही है।"

इसके अतिरिक्त गान्धी जी, विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर लाला लाजपतराय, श्री सुभाषचन्द्र बोस और दूसरे अनेक बड़े बड़े नेताओं ने उन्हें श्रद्धांजलियां पेश की हैं। (क्रमश)

—वीरेन्द्र

जन्म-मरण की उलझन—११

स्वर्ण अवसर

लेखक—डा. श्री भारतेन्द्र जी वर्णेन्द्रवर्मा
— साधु आश्रम (होशियारपुर)

(16 नवम्बर से आगे)

राजा ने हंसते हुए कहा, कोई भी नहीं ? राजन् ! तब तो जहां जाना है, वहां के लिए आपने सारी तैयारी कर ही होगी ? आप तो राजा हैं, आपके पास बहुत कुछ है। अत आपने अच्छे-अच्छे सामान को साथ ले जाने के लिये कई ट्रक सामान लदवा लिया होगा ? राजा ने चौंकते हुए कहा—इसीलिए तो तुम्हें महामूर्खता की छड़ी दी गई है। मुझे इतना नहीं पता, कि यहां से कुछ भी साथ नहीं जाता। यहां का सब कुछ यहीं रह जाता है। राजा का उत्तर सुनकर महामूर्ख ने और भी कौतूहल के साथ पूछा, राजन ! इतना तो आप कम से कम बता दीजिए, आप कहां जा रहे हैं ? आशा है यह तो आप को पता ही होगा और उसके लिए तदानुकूल आपने सारी तैयारी कर ली होगी।

राजा ने एक ठण्डी आह भरते हुए कहा—इसका तो किसी को भी कुछ नहीं पता, कि मर कर कोई कहां जाता है ? पर दुःख तो यह है कि राजापन के अभिमान मे रहने के कारण मैंने कभी ऐसा सोचा भी नही था, फिर उसकी तैयारी की तो बात ही क्या ? तब उस महामूर्ख समझे जाने वाले ने आत्मविश्वास के साथ उस महामूर्खता की छड़ी को राजा के हाथ में थमाते हुए कहा—

राजन ! ऐसी स्थिति मे आप से बढ़ कर और कौन महामूर्ख होगा, कि जिसको यह भी पता नहीं कहां जाना है ? जबकि ये रानियां, दरबारी, सारा सुख-सुविधा का सामान नहीं रहना है, फिर भी सदा उन्हीं में ही डूबा रहा। हर प्रकार के अच्छे साधन और अवसर प्राप्त करके भी आगे की कोई तैयारी न कर सका। तब आप से बढ़ कर और कौन महामूर्ख हो सकता है ? इसलिए अपनी इस अमानत (छड़ी) को अपने पास ही सम्भाल कर रखिए। इसके सब से अच्छे पात्र तो आप ही हैं। जो सब कुछ प्राप्त करके भी अभागा ही बना रहा और अपने आपके लिए कुछ भी न कर सका। सम्भवत इसी स्थिति को सामने रख कर अपने भावों को चित्रित करते हुए हिन्दी कवि श्री हरिवंश राय बच्चन ने अपनी कविता 'पथ की पहचान' में कहा है —

"पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।
पुस्तकों में है नहीं, छापी गई इसकी कहानी।
हाल इस का ज्ञात होता, है न औरों की जबानी ॥
अनगिनत राही गए, राह से, उन का पता क्या है
पर गए कुछ लोग इस पर, छोड़ पैरो की निशानी।
यह निशानी मूक होकर, भी बहुत कुछ बोलती है।
खोल इस का अर्थ, पन्थी, पन्थ का अनुमान कर ले।।
है अनिश्चित किस जगह पर, सरित, गिरि, गह्वर मिलेंगे।
है अनिश्चित किस जगह पर, बाग, वन सुन्दर मिलेंगे।
किस जगह यात्रा खत्म हो, जायेगी, यह भी अनिश्चित।
है अनिश्चित कब सुमन कब, कण्टकों के शर मिलेंगे ॥
कौन सहसा छूट जाएंगे, मिलेंगे कौन सहसा।
पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले॥

इस आख्यान के अनुसार इस कविता की कुछ पंक्तियों को कहने के बाद श्रोताओं पर दृष्टि डालते हुए सर्वप्रिय जी ने कहा—सज्जनो ! इस आत्मिक अवसर पर आप सब के लिए हम भी सोचें कि क्या हम भी कहीं उसी राजा की तरह तो नहीं बन रहे। इस कर्म भूमि में मानव जैसे सुन्दर चोले को प्राप्त करके हम पुण्य-कर्म करने का प्रयास करते भी हैं या केवल साधारण बातों में व्यर्थ में समय गंवाते जा रहे हैं। यह संसार एक मुसाफिरखाना है और हम सब यात्री की भान्ति 'चार दिन के मुसाफिर' बन कर आए हैं। यहां रहकर हम 'चोले इसमें से बदल-बदल कर' की बात को भी याद रखें। इसीलिए श्रीमद्भगवद्गीता में कृष्ण ने कहा है—शरीर और आत्मा का मेल-जोड़ शुभ-कर्मों से पूर्व (मोक्ष) एवं (सांसारिक) आत्मिक सुख की प्राप्ति का एक बहुत बड़ा साधन है।

(श्रीमद्भगवद्गीता-श्लोक 2, 18
पुरुषार्थ चतुष्टय में धर्म के साथ अर्थ और काम भी है।
वैशेषिक दर्शन में, यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्म 1,1,9
तथा अन्य अनेक शास्त्रों में धर्म के दो रूप माने गए हैं।

जहां हम अपनी योग्यता से वर्तमान और भविष्य को सुन्दर बना सकते हैं। इन दोनो को उज्ज्वल बनाने का यह जीवन एक अनोखा अवसर है। इसी लिए महात्मजन एक कथानक सुनाते हैं —

किसी राज्य में एक राजा नियुक्त प्रजा का पालन करता था। उसके राज्य की सीमा पर एक बड़ी नदी बहती थी। जिस के पार एक भयंकर विशाल वन था। उस राजा का यह नियम था, कि वह जिस व्यक्ति को राज्य कार्य के लिए प्रधानमन्त्री पद देता था, उस को पांच वर्ष के पश्चात नदी के पार छोड दिया जाता था। इस प्रकार अनेक मन्त्री बने और अन्त मे रोते चले गए। एक बार एक विचारशील ने पूर्व मन्त्रियो की स्थिति पर विचार करके प्रधानमन्त्री पद के लिए प्रार्थना पत्र दिया। स्वीकृत होने पर प्रधानमन्त्री के कार्य को प्रारम्भ कर दिया। उस विचारशील व्यक्ति ने अपनी नीति निपुणता एवं योग्यता से राजा और प्रजा दोनो का ही मन जीत लिया। कार्यकाल के पूर्ण होने पर विदाई का दिन आया, जनता उसके प्रेम पाश में बन्ध कर कृतज्ञतावश विदाई देने आई। जाते समय पूर्व मन्त्रियो की तरह इस प्रधानमन्त्री को उदास निराश न देख कर राजा ने उस से इसका कारण पूछा, तब उस विचारशील ने कहा—मैंने नियमपूर्वक प्रधानमन्त्री के काम को करते हुए इस शर्त को नही भुलाया था। मैंने यहां प्रधानमन्त्री पद के अवसर का लाभ उठाकर राज्य की सुख समृद्धि के लिए योजनाबद्ध कार्य किया, वहां भविष्य का ध्यान रखते हुए नदी के पार उस घनघोर जंगल में भी एक सुन्दर आधुनिक सुविधा सम्पन्न नगर बसा दिया है। अत शोकाकुल तो वह हो, जिसका भविष्य धूमिल हो। मैंने तो स्वकार्यकाल मे ही भविष्य का प्रबन्ध कर लिया था। अत बड़ी प्रसन्नता के साथ आप सब से विदा ले रहा हूं।

ठीक इसी प्रकार इस जीवन को प्राप्त करके इस स्वर्ण अवसर का लाभ उठाते हुये हमें जीवन के सामयिक विकास के साथ अग्रिम जन्म उत्तम रूप मे प्राप्त करने के लिए भी यथा सम्भव प्रयास करना चाहिए। इसीलिए वेद ने सचेत करते हुए मन्त्र के तीसरे चरण मे कहा है—'गोभाज इत किल असथ—अर्थात इस सुन्दर पार्थिव शरीर, इन्द्रिय, मन, बुद्धि आदि अनोखे साधनों को रखने वालो ! क्या कभी इन अनोखे साधनो के सद उपयोग का भी प्रयास किया है ? या केवल स्वार्थ साधने या अभिमान के नशे में चूर रहते हो। तभी तो संस्कृत के कवि ने सावधान करते हुए कहा है—

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे, नारी गृहद्वारे सखा श्मशाने।
देहश्चितायां परलोक मार्गे, कर्मानुगो गच्छति जीव एक ॥

ये हर तरह के धन जमीनो (बैंको) में, विविध प्रकार के पालतू पशु पशुशालाओं में, प्यारी प्रियतमा पत्नी घर के दरवाजे तक, बन्धु बान्धव तथा परिचित जन श्मशान तक और यह बड़े चावो से पाला पोसा शरीर चिता तक ही साथ देता है। आगे तो केवल सीप से निकले मोती की तरह नित्य आत्मा अपनी करनी के साथ ही जाता है। तभी तो कहा है —

नामुत्र हि सहायार्थं पिता माता च तिष्ठत ।
न पुत्रदारा न ज्ञाति धर्मस्तिष्ठति केवल ॥ मनु 4,242॥

परलोक मे सहायता के लिए न तो माता पिता, पुत्र पत्नी सहायक बनते हैं और न ही जाति के लोग। हां, केवल धर्म (अपनी करनी) ही सहायक होकर साथी बनता है।

एक प्रजायते जन्तुरेक एव प्रलीयते ।
एकोऽनुभुङ्क्ते सुकृतमेक एव च दुष्कृतम ॥243॥

मानव अकेला ही पैदा होता है और मरता है, अकेला ही अपने अच्छे-बुरे (किए) का फल भोगता है।

मृतं शरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठसमंक्षितौ ।
विमुखा बान्धवा यान्ति धर्मस्तमनुगच्छति ॥244॥

लकड़ी, मिट्टी के टुकड़े की तरह मृत देह को चिता मे छोड कर बन्धु-बान्धव लौट जाते हैं, अकेला धर्म ही आत्मा का साथ देता है।

अर्थानर्थान् हीनवरस्य यूंकते वसानि झाणिनश्च शरीरमाकृत् ।
हाम्य....... यह पश्चात्मूज पुण्येन पापेन च वेष्टमान । महा उद्योग 40,16

मरे हुए के धन को दूसरे बांटते हैं और उस के शरीर रूप रस, रक्त आदि धातुओं को पक्षी तथा अग्नि ठिकाने लगाते हैं। यह केवल अपने किए अच्छे पुण्य और बुरे (पाप) के साथ ही दूसरे शरीर की ओर जाता है।

आर्य समाज के वर्तमान संदर्भ में आर्य युवक

लेखक—श्री रामशरणदास गोयल प्रधान
आर्य युवक सभा बरनाला

★

"उठेंगे तूफा तो कर देंगे वर्षा,
अभी हमने उठने की ठानी नहीं है।"

आर्य युवक जब उठने की ठानेंगे तो दुनिया की कोई ऐसी हस्ती नहीं है जो उन्हें बढ़ने से रोक सके। मैं आर्य युवकों से निवेदन करना चाहता हूं कि उठने का समय आ गया है। यदि ऐसे समय पर भी आप लोगों ने अंगड़ाई नहीं ली तो आने वाली पीढ़ी आप पर थूकेगी और कहेगी हम उन पूर्वजों का नाम भी नहीं लेना चाहते जो हमारी सभ्यता और संस्कृति पर कलंक थे।

पंजाब की इन भीषण स्थितियों से जो आजकल मौजूद हैं। जहां लोहा लेने का संकल्प लेना है वहीं पर हमें कुछ अपनों से भी बच कर रहना है। दुश्मन से तो आप सतर्क रहे ही परन्तु आन्तरिक शत्रु हमें आगे बढ़ने पर रोक लगाए थे। शायर के शब्दों में—

"क्यों गैरों का जिकर करते हो,
हमने तो अपने ही आजमाए हैं।
लोग चलते हैं कांटों से बच कर,
हमने फूलों से भी घाव खाए हैं।

लोगो याद रखो!

आर्य युवकों को यदि ऐसा महसूस हुआ जिससे आर्य समाज की प्रतिष्ठा को क्षति पहुंचती होगी तो वे मर्यादा को तोड़ सकते हैं। घटना सन 1946 की है। जब श्री त्यागी जी के साथ लगभग 100 आर्य वीर बंगाल में मुसलमानों से हिन्दुओं की रक्षा के लिए गए थे। वहां पर आर्य वीरों ने एक देवी का ऐसा क्षत विक्षत शरीर देखा जिस पर लीगी गुण्डों ने छुरों से बावन घाव किए थे। आर्य वीरों का मन्यु जागृत हो गया, और सांय को पहाड़ी रास्ते पर एक लीगी गुण्डे को देख कर आर्य वीर प्रह्लादराय का खून खौल उठा और अपने पिस्तौल से उस पर वार किया। देखते ही देखते वह यम लोक पहुंच गया। जब स्वामी जी ने मर्यादा उलंघन का कारण पूछा तो आर्य वीर ने उत्तर दिया कि एक तरफ तो आप हमारा मन्यु जागृत कराते हो और दूसरी तरफ हमसे यह चाहते हो कि हम मर्यादा में रहें। ऐसा कभी नहीं हो सकता।

ऐसा मुझे इसलिए कहना पड़ रहा है कि कई आर्य संस्थानों में अनार्य-विचारधारा वाले, शराबी, मांसाहारी, घरों में अवैदिक कार्यक्रम इत्यादि विशेषणों से युक्त लोग हैं जो स्वयं कुछ नहीं करते परन्तु हमें जरूर रोकते हैं। मैं पंजाब के सभी आर्य युवकों को बलिदानी इतिहास की ओर संकेत देना चाहता हूं ताकि एक सबक के साथ आर्य समाज में नव चेतना लाई जा सके। जिस कौम ने बलिदानी रास्ता अपना कर कार्य किया है वे आज बुलन्दी पर हैं, और हमारा समूचा इतिहास ही इस बात की गवाही देता है —

"चरण चूम लेगी स्वयं आके मंजिल,
आदमी में बढ़ने की हिम्मत चाहिए।"

भाषण प्रतियोगिता के परिणाम

महर्षि निर्वाण पर्व के अवसर पर स्थानीय आर्य पुत्री पाठशाला गिदड़बाहा में भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। इस अवसर पर माननीय कस्तूरी लाल राज्य-मन्त्री पंजाब ने महर्षि को श्रद्धांजलि अर्पित की व 6100 रुपए स्कूल को दिए, जिसमें से प्रत्येक प्रतियोगी को 50 रुपए प्रति के हिसाब से पुरस्कार भी मिलेगा, प्रतियोगिता परिणाम इस प्रकार रहे—प्रथम—कुमारी सविता, द्वितीय—कु. वन्दना, तृतीय—कु. कान्ता।

हाई स्कूल स्तर—प्रथम—प्रवेश कुमार आर्य, द्वितीय—मुकेश गोयल, तृतीय—किरण रानी

कालेज स्तर—प्रथम—कु. मधु।

—अशोक आर्य गिदड़बाहा

भू-दानी लाला साधुराम जी भी नहीं रहे

लाला साधु राम जी का जन्म फरवरी 1919 में हुआ। वे अपने पिता के इकलौते पुत्र थे जिसके कारण विवाह 13 वर्ष की अल्पायु में हुआ। 15 वर्ष की अवस्था में इनके पिता जी का स्वर्गवास हो गया और परिवार व व्यापार का सारा बोझ इनके कन्धों पर आ पड़ा।

उन्होंने अपने घरेलू दायित्व के साथ सामाजिक दायित्वों को भी निभाया। मा. पूर्णचन्द जी की प्रेरणा से उन्होंने आर्य स्कूल के लिए 4 बीघे के लगभग जमीन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को दान दी। जिससे आर्य समाज तपा की स्थापना हुई। आज आर्य समाज तपा की तीन शिक्षण संस्थाएं एस एन आर्य हाई स्कूल, आर्य गर्ल्ज कालेज व स्वामी श्रद्धानन्द माडल स्कूल बड़े सुचारु रूप से चल रही हैं।

लाला जी गत तीस वर्षों से निरन्तर आर्य स्कूल के मैनेजर चले आ रहे थे। 25 अक्तूबर 1986 की रात्री के साढ़े 9 बजे हृदय गति रुक जाने के कारण लाला जी का स्वर्गवास हो गया। उनके निधन से स्कूल व समाज को बड़ा धक्का लगा। उनके शोक दिवस पर उनके बड़े सुपुत्र श्री हरभगवान दास जी ने अपने पिता जी की स्मृति में निम्न संस्थाओं को इस प्रकार दान दिया।

1 आर्य समाज तपा को 20,000 रु भवन निर्माण हेतु।

2 501 रु आर्य प्राईमरी स्कूल को बच्चों के टाट वास्ते।

3 501 रु स्वामी श्रद्धानन्द माडल स्कूल तपा।

4 501 रु गौशाला तपा

5 501 रु आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन निर्माण हेतु।

6 51 रु आर्य मर्यादा साप्ताहिक पत्र आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब।

व 2100 रु प्रत्येक वर्ष ग्रान्ट के रूप में आर्य समाज तपा को लाला जी की पुण्य तिथि पर देने का वचन दिया है। समाज उनकी पुण्य तिथि पर प्रतियोगिताएं करवाएगा।

इस प्रकार इस परिवार की पूर्व व वर्तमान सेवाओं को देखते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने उनके बड़े सुपुत्र श्री हरभगवान दास जी को एस एन आर्य हाई स्कूल तपा का मैनेजर नियुक्त किया है।

—चन्दराम आर्य,
मन्त्री

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग सम्पन्न

आर्य युवक सभा लुधियाना द्वारा हबीबगंज अमरपुरा में श्री ज्ञानचन्द जी भगत, उप प्रधान आर्य समाज, हबीबगंज के निवास स्थान पर किया गया। श्री सूर्य पाल जी विद्यावाचस्पति, एम ए. ने यज्ञ सम्पन्न कराया। वेद प्रचार भजनमण्डली के भजनोपदेशक श्री किरपा राम जी आर्य, श्री रामरखा जी, श्री यशपाल जी आर्य, श्री सुरेश जी पाण्डेय, श्री सतपाल जी ने भजनों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

श्री रोशनलाल शर्मा, संयोजक आर्य युवक सभा, पंजाब ने कहा कि इस प्रकार का सत्संगों का आयोजन होना चाहिए, क्योंकि आज वेद प्रचार की बहुत आवश्यकता है। श्री रणबीर जी भाटिया ने यजमान परिवार को वैदिक साहित्य भेंट किया।

—महेन्द्र प्रताप आर्य
मन्त्री

वेद प्रचार में सहयोग देकर नकद पुरस्कार प्राप्त करें

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना ने वेद प्रचार के प्रसार को बढ़ावा देने के लिए पारिवारिक सत्संगों की परिपाटी आरम्भ की है। साथ आर्य समाज की ओर से शीघ्र ट्रैक्ट तथा एक मासिक पत्रिका प्रकाशित करने का निश्चय किया है। ताकि वैदिक साहित्य को लोगों में बांटा जा सके। पत्रिका में आर्य समाज की गतिविधियों के समाचार, धार्मिक सामग्री, नवयुवकों को आकर्षित करने के लिए महापुरुषों की जीवनियां दी जाएंगी। इस पत्रिका का नाम रखने के लिए आप के नाम पर सुझाव आमन्त्रित हैं। जिन महानुभावों का नाम पत्रिका के लिए हमारी अन्तरंग सभा को स्वीकृत होगा—आर्य समाज की ओर से प्रशस्ति पत्र एवं नकद धन राशि दी जाएगी। नाम नवीन हो तथा वैदिक साहित्य के अनुकूल हो।

—[illegible] सैठी
मन्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना

जिला आर्य सभा लुधियाना के तत्वावधान में स्वागत समारोह का आयोजन

16-11-86 रविवार प्रातः 10 बजे से 1 बजे बाद दोपहर तक आर्य महिला कालेज लुधियाना में एक समारोह का आयोजन किया गया जिस में लुधियाना के प्रसिद्ध उद्योगपति एवं आर्य नेता दीवान राजेन्द्र कुमार पार्टनर दीवान निट्वेयर्ज लुधियाना का उनके आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप-प्रधान तथा गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के व्यवसाय ... के अध्यक्ष नियुक्त किए जाने पर शानदार स्वागत किया गया।

महिला कालेज के प्रांगन में प्रातः 10 बजे पं. सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री ने यज्ञ कराया। यज्ञ के यजमान श्री मोहनलाल जी शास्त्री एडवोकेट सपरिवार, श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा सपरिवार श्री सुखवन्तराय जी सूद सपरिवार थे, यज्ञ की पूर्ण आहुति के बाद समारोह की कार्यवाही कालेज के हाल में आरम्भ हुई, समारोह की अध्यक्षता श्री मोहनलाल शास्त्री एडवोकेट ने की। सबसे पूर्व श्री आशानन्द आर्य ने दीवान राजेन्द्र कुमार का परिचय कराते हुए उनकी वैदिक धर्म में निष्ठा और आर्य समाज के कार्य को लग्न से करने की सराहना की, साथ ही आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के माननीय प्रधान श्री वीरेन्द्र जी एम ए का धन्यवाद किया कि उन्होंने लुधियाना के एक योग्य व्यक्ति को एक ऊंचे स्थान पर नियुक्त कर के लुधियाना के आर्यों का गौरव बढ़ाया है, जिला की सब आर्य समाजों—स्त्री आर्य समाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं, दयानन्द मैडिकल कालेज, प्रतिष्ठित व्यापारियों, नगर के सब माननीय नागरिकों ने दीवान राजेन्द्र कुमार जी को पुष्प मालाएं डाल कर उन का हार्दिक स्वागत किया। बहन कमला जी आर्य तथा अन्य बहनों ने आशीर्वाद तथा शुभ कामनाएं भेंट करके उनका स्वागत किया, जिला सभा के अधिकारियों ने हारों द्वारा उन का स्वागत किया, श्री अयोध्याप्रसाद जी मल्होत्रा ने जिला आर्य सभा की ओर से उन्हें अभिनन्दन पत्र पढ़ कर भेंट किया, बहन कमला जी आर्या उप-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, डा मूलचन्द जी भारद्वाज पी एच डी. मन्त्री जिला आर्य सभा, श्री एम एल आनन्द प्रिंसीपल आर्य कालेज, श्री सरदारी लाल जी कपूर पूर्व एम एल ए चैक ओम्प्रकाश जी इन्दु कमलाकर, श्री जगदीश चन्द्र जी, श्री महेन्द्र पाल जी सयाल उप-प्रधान आर्य समाज माडल टाऊन, श्री ओम् प्रकाश जी टण्डन प्रिंसीपल आर्य स्कूल ने अपने भाषणों में जहां दीवान राजेन्द्र कुमार जी का स्वागत किया वहां उन्हें अपील की कि वह अपने पूज्य पिता स्व. दीवान रामशरण दास जी की तरह आर्य समाज का कार्य करते हुए पंजाब में आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ावें, उत्तर में दीवान राजेन्द्र कुमार जी ने इस का स्वागत के लिए सभा का आभार प्रकट किया। और कहा कि जो आशाएं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने और आप सब भाई बहनों ने लगाई हैं उनको आप के सहयोग से पूरा करने का यत्न करूंगा।

अध्यक्ष श्री मोहनलाल जी शास्त्री एडवोकेट ने दीवान जी को आशीर्वाद दिया और उन्हें विश्वास दिलाया कि आर्य समाज के कार्य में वह उन्हें पूर्ण सहयोग देंगे, अन्त में जिला आर्य सभा के प्रधान श्री महेन्द्रपाल जी वर्मा ने समारोह में पधारने वाले बहन भाईयों का धन्यवाद किया और आशा प्रगट की कि वह सब जिला आर्य सभा के सब कार्यों में अपना योगदान देंगे, उस के पश्चात सब ने मिल कर भोजन किया। प्रीति भोजन का प्रबन्ध श्री ओम्प्रकाश पासी—श्री सुखवन्तराय सूद—श्री ओमप्रकाश टण्डन ने अति उत्तम किया हुआ था।

—आशानन्द आर्य
महामन्त्री

आर्य कन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्र नगर का १९ वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर दिल्ली का 19 वां वार्षिकोत्सव श्रीमती प्रभात शोभा जी की अध्यक्षता में हर्षोल्लास के साथ सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमें राजधानी की प्रमुख आर्य समाजों की प्रतिनिधि बहनों ने भाग लेकर अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

सर्वप्रथम अथर्ववेद यज्ञ की पूर्णाहुति यज्ञ, प्रार्थना, और ... श्रीमती शास्त्री देवी अग्निहोत्री और आशा ने दिया। ध्वजारोहण श्रीमती रानी ... के ... गुरुकुल की छात्राओं का सांस्कृतिक कार्यक्रम अत्यन्त रूप से रोचक तथा ... हुआ।

—प्रकाश आर्य-प्रधान

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में—

पद्मश्री प्रो. मेहरा द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में 25 सितम्बर को डा सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार की अध्यक्षता में 'देशज औषध पौधों का संरक्षण एवं नृवंशीय वानस्पतिक दृष्टान्त' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र चला। सर्वप्रथम कुलपति श्री आर सी शर्मा ने देशभर के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं अनुसंधान संस्थाओं से आये वैज्ञानिकों का बड़े उदार शब्दों के साथ स्वागत किया। इस संगोष्ठी का उद्घाटन भाषण विश्वविख्यात वनस्पति शास्त्री पद्मश्री प्रो पी एन मेहरा ने दिया। प्रो मेहरा ने उनके द्वारा किए गये उच्चकोटि के शोधकार्य की स्लाइडों को चित्र पट पर दिखाते हुए बताया कि किस प्रकार परख नली में चुटकी भर मीडियम पर एक कोशिका या थोड़ से ऊतक से अनेकों पौधे बना कर औषधीय पौधों का या उनके द्वारा प्राप्त किए जाने वाले पदार्थों के अभाव का संकट दूर किया जा सकता है। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी अनुसंधान परिषद नई दिल्ली ने किया। संगोष्ठी का समापन 26 सितम्बर की सायं को हुआ व इसके संयोजक डा पुरुषोत्तम कौशिक ने बताया कि संगोष्ठी पूर्णतया सफल रही और स्थानीय एवं बाहर से आने वाले प्रतिनिधियों को विचार विमर्श करने का अवसर मिला तथा कुछ बड़े लाभकारी निष्कर्ष सामने आये।

राजकीय आयुर्वेदिक कालिज गुरुकुल कांगड़ी के प्राचार्य डा के सी वर्मा ने इस बात पर बल दिया कि इस विषय पर अधिक जानकारी प्राप्त करने व शोध के लिए यह संस्था आवश्यक नेतृत्व देकर बड़ा महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। सरकार को औषधीय पौधों के परिरक्षण एवं चिकित्सा में उनके उपयोग के लिए कुछ विशेष योजनाओं के निमित्त अनुदान देना चाहिए ताकि भारत के हर व्यक्ति को सुगमतापूर्वक अधिक स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हो सकें।

—पुरुषोत्तम कौशिक

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी का २४ से २६ अक्तूबर तक आयोजित रजत जयन्ती समारोह सम्पन्न

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी का 24 से 26 अक्तूबर 1986 तक आयोजित रजत जयन्ती समारोह लक्सा रोड, वाराणसी में आयोजित किया गया। रजत जयन्ती समारोह के उपलक्ष में राष्ट्रीय शान्ति के लिए 1-10 86 से 26-10-86 तक चतुर्वेदपारायण यज्ञ तथा वेद कथा का आयोजन किया गया।

शोभा यात्रा का नेतृत्व गुरुकुल की अध्यक्षा, डा पुष्पावती, सभा के यशस्वी मन्त्री श्री नेतराम शर्मा, डा जगन्नाथ, सरदारी लाल वर्मा, श्री प्राणनाथ भई, प्रद्युम्न लाल तलवाड़, श्री सतपाल भाटिया आदि महानुभावों ने किया। शोभा यात्रा बहुत प्रभावशाली थी।

25-26 को महिला सम्मेलन, आर्य महा सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन के सुन्दर आयोजन रखे गये, जिसमें विदुषी बहनों, गुरुकुल की छात्राओं, आर्य विद्वानों ने आर्य समाज के संगठन, उपलब्धियां, भावी कार्यक्रम और वर्तमान युग में आर्य समाज की उपादेयता पर प्रकाश डाला। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन के अवसर पर एक प्रस्ताव भी पारित किया गया, जिसमें साऊदी अरब में धार्मिक ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर रोक हटाने तथा इस पुस्तक के स्वाध्याय करने पर गिरफ्तार श्री ... कुमार भारद्वाज को रिहा करने के लिए भारत सरकार तथा अरब सरकार से मांग की गई। समारोह के अवसर पर आर्य समाज के संन्यासी, वैदिक विद्वानों, कर्मठ तथा उत्साही कार्यकर्ताओं को भी सम्मानित किया गया।

—डा धर्मपाल
महामन्त्री

आर्य समाज अग्र नगर में महर्षि निर्वाणोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज अग्र नगर लुधियाना मे 1-11-1986 को ऋषि निर्वाणोत्सव मनाया गया। प सूयपाल जी विद्या वाचस्पति, एम ए, पुरोहित कार्यालया ध्यक्ष, आय समाज, महर्षि दयानन्द बाजार, (दाल बाजार लुधियाना) तथा प्रो वेदव्रत जी वेदालकार ने यज्ञ सम्पन्न कराया। इस अवसर पर श्री शौकीन जी जट, रेडियो कलाकार, वेद प्रचार भजन मण्डली लुधियाना एव टैगोर पब्लिक स्कूल लुधियाना के बच्चो ने भजनो एव गीतो का कायक्रम प्रस्तुत किया। कु अमित कौर, कु आरती गुप्ता, आयुष्मान अजय गुप्त ने महर्षि के जीवन पर अपना भाषण दिया। प सूयपाल जी, प्रो वेद व्रत जी वेदालकार श्री रोशन लाल शर्मा, सयोजक आय युवक सभा पजाब ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के चरणो मे अपनी श्रद्धाजलि भेट करते हुए, महर्षि द्वारा दर्शाए माग पर चलने के लिये जनता को प्रेरित किया।

—सतपाल अग्रवाल
मन्त्री

वेद प्रचार दिवस धूमधाम से सम्पन्न

करोल बाग दिल्ली आर्य महिला मण्डल के तत्वावधान मे आर्य समाज करोल बाग के सौजन्य से वद प्रचार दिवस बडी श्रद्धा और निष्ठा से शुक्रवार 7 नवम्बर 1986 को सम्पन्न हुआ। मण्डल की प्रतिनिधि बहनो के अतिरिक्त अन्य प्रमुख स्त्री आर्य समाजो की बहनो ने भी इस सम्मेलन मे भाग लिया।

यज्ञ का सचालन आशा बहन ने किया। झण्डा अभिवादन श्रीमती शाती देवी मल्लिक के करकमलो द्वारा हुआ। ओ३म की व्याख्या सुशीला जी ने सारगर्भित शब्दो मे की।

—प्रकाश आर्या
प्रधान

लुधियाना में आर्य युवक सभा की स्थापना

आर्य युवक सभा की स्थापना हेतु आर्य समाज फील्ड गज लुधियाना मे एक समारोह का आयोजन 26-10-86 रविवार किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री रोशनलाल शर्मा सयोजक, आर्य युवक सभा पजाब ने की। समारोह की कायवाही यज्ञ से प्रारम्भ हुई। इस समारोह मे लुधियाना के नवयुवको ने भाग लिया। वेद प्रचार भजन मण्डली लुधियाना ने अपने प्रभु भक्ति एव देश भक्ति के गीतो द्वारा युवको को राष्ट्र हित के लिए काय करने हेतु प्रेरणा दी। इस अवसर पर श्री रणवीर जी भाटिया, श्रीमती शान्ता जी गौड, श्री दीवान चन्द जा तूफान, श्री सूयपाल जी शास्त्री, श्रीमती बाला जी, श्रीरामसरूप जी विज, श्रीमती सावित्री देवी जी ने युवको को सम्बोधित किया। श्री रोशन लाल शर्मा ने आर्य युवक सभा की स्थापना की घोषणा करते हुए श्री अनिल जी निझावन को प्रधान एव श्रीराम सरूप जी विज को मन्त्री नियुक्त किया। श्री शर्मा जी ने यह जिम्मेवारी युवकों को सौंपते हुए अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हमे महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा दिखाए मार्ग पर चलते हुए वैदिक धर्म के प्रचार एव प्रसार के लिए तन, मन, धन, से कार्य करना चाहिए।

आज जिस सकट के दौर से हमारा देश गुजर रहा है, उस सकट से युवा शक्ति ही उसे उभार सकती है। इसलिए राष्ट्र के प्रति हमें अपने कर्त्तव्य का पालन दृढता से करना चाहिए। श्री सतपाल श्री सूद एव श्री नवनीत लाल जी ढींगरा ने नव निर्वाचित अधिकारियों का स्वागत किया।

—सुरेश चन्द्र
सयोजक, जिला लुधियाना

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250

रजि. नं. पी.जे.एल 55

वर्ष 18 अंक 36 22 मार्गशीर्ष सम्वत् 2043 तदानुसार 7 दिसम्बर 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे(वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

आपस में तुम सबसे प्रेम करो

लेखक—श्री पं जगतकुमार जी शास्त्री, 'साधु सोमतीर्थ'

※

सहृदयं सांमनस्यम्—अविद्वेषं कृणोमि व
अन्योऽन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या ॥

अथर्व 3-30-1

शब्दार्थ—मैं (वः) तुमको (सहृदयम्) सहृदय (सांमनस्यम्) विचारशील और (अविद्वेषम्) द्वेष रहित (कृणोमि) करता हू। (अन्य' अन्यम्) परस्पर एक दूसरे को (अभिहर्यत) सहयोग देकर उन्नत करो (इव) जैसे कि (अघ्न्या) अहिंसनीया गाय (अपने) (जातम्) नव जात (वत्सम्) बछड़े को (उन्नत करती है।)

भावार्थ—ईश्वर उपदेश देता है कि हे मनुष्यो मैं तुमको सहृदय, बुद्धिमान् और द्वेष रहित बनाता हू। तुम सब आपस मे सहयोग करो और एक दूसरे की उन्नति में अपनी उन्नति समझो आपस में तुम सब ऐसा प्रेम करो, जैसा कि गाय अपने नवजात बछड़े से करती है।

—प्रवचन—

सहृदय बनो। सम्वेदनशील बनो। दूसरो के सुख-दुःख और हानि-लाभ को भी अपने ही सुख-दुःख और हानि-लाभ के समान समझो। यदि किसी प्राणी को कष्ट देख कर, समर्थ होने पर भी, उस के कष्ट-निवारण का विचार मनुष्य के हृदय मे पैदा नहीं होता, और सहायता के लिए उसका हाथ आगे नहीं बढता, तब तो उस मनुष्य को सर्वथा हृदयहीन ही समझो। ऐसा मनुष्य निन्दनीय तो है ही। वह तो मनुष्य कहलाने का अधिकारी भी नहीं है।

सहृदयता तो प्रत्येक मनुष्य का एक आवश्यक और आत्मिक कर्त्तव्य है। सहृदयता के विशेष प्रतिपादन के लिए किसी लम्बे, गम्भीर शास्त्र विवेचन या तर्क-वितर्क की आवश्यकता नहीं है। एक सहृदय सज्जन का कथन है —

> काटा लगे किसी के
> तड़पते हैं हम "अमीर।"
> सारे जहा का दर्द
> हमारे ही दिल में है।

सन्त तुलसीदास के वचन हैं—

> सन्त, विटप, सरिता, गिरि, धरनी।
> पर हित-हेत सबन की करनी।
> सन्त हृदय नवनीत समाना।
> कवि न कहा, पर कहा न जाना।
> निज परिताप द्रवेहि नवनीता।
> पर-दुःख द्रवेहि सन्त सुपुनीता ॥

ओ अन्यायी!

> काटा किसी को मत लगा,
> किस बात पर फूला है तू।
> चार दिन की जिन्दगी पर,
> किस लिए भूला है तू ॥

बुद्धिमान बनो। इसलिए कि—

> बुद्धिर्यस्य बलं तस्य,
> निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम् ?

जिसके पास बुद्धि है, बलवान् भी वही है। जो बुद्धिहीन है, उसके पास बल कहा से आया ?

बुद्धि उत्तम, निर्मल, सात्विक और यज्ञ-मयी होनी चाहिए। यूं तो चोर और डाकू भी बुद्धिमान होते हैं, परन्तु उनकी बुद्धि दुष्ट-बुद्धि होती है। दुष्ट बुद्धि से प्रभु सबको बचाये। दुष्ट-बुद्धि तो कभी भी, और किसी के लिए भी वांछनीय नही है।

> कुछ भिक्षुक आये हैं द्वार।
> मांग रहे हैं हाथ पसार।
> प्रभुवर! दो प्रज्ञा का दान।
> सबका सब विधि हो कल्याण।

द्वेष-रहित बनो। किसी की उन्नति और वृद्धि को देखकर जलो मत। अच्छे कामो मे प्रतिस्पर्धा करो। अच्छे कामो को अधिकाधिक और सबसे बढ चढ कर करना बुरा नहीं है। परन्तु स्मरण रहे, दूसरो के द्वारा किये जा रहे शुभ कार्यों मे किसी प्रकार की बाधा कभी भूल कर भी न डाली जाए। शुभ कर्मियो को देखकर प्रसन्नता प्रगट करो। सहयोग का हाथ आगे बढाओ। यदि सहयोग न दे सको, तो विरोध भी न करो।

परस्पर मिल-जुल कर उन्नति करो। और, एक-दूसरे की उन्नति मे अपनी उन्नति समझो याद रखो कि यह सहयोगी जीवन-प्रणाली बहुत उत्तम, हितकर, प्रशसनीय और सभी प्रकार से अनुकरणीय है। यदि किसी को कभी किसी सघर्ष मे उलझना ही पड जाये, तो अन्तिम उपाय के रूप मे ही वह सघर्ष करना चाहिए। और स्वकीय पक्ष के सहयोग, सदभाव, एकरूपता एव एक-ध्येय-निष्ठा की वृद्धि करके, उस सघर्ष मे यथाशीघ्र ही पूर्ण विजय को प्राप्त करना चाहिए।

रूठे हुए स्वजनो को प्रयत्नपूर्वक यथाशीघ्र ही मना लेना चाहिये।

> रूठें सजन मनाइये,
> जो रूठें सौ बार।
> रूठ हुय जोडिये,
> जैसे मुक्ता-हार ॥

'प्रेम' यह एक बहुत प्रचलित शब्द है। प्रेम का स्वरूप और तत्व अत्यन्त गम्भीर है। प्रेम तो सात्विकता, पवित्रता, निश्छलता, स्वार्थ-हीनता, कर्त्तव्य-परायणता, परोपकार, त्याग, तप और बलिदान के सकल्पो का एक अद्वैत सम्मिश्रण है। ससार में बहुत थोड़े मनुष्य ऐसे होंगे, जो प्रेम को यथावत् पहिचानते होंगे। प्रेम-धर्म का प्रतिपालन और प्रेम पन्थ का अनुगमन तो और भी अधिक कठिन है। धन्य हैं, वे मनुष्य जिनके जीवन में सर्वभूत हित का विकास होता है। सच्चे प्रेमी तो बस वे ही हैं। प्रेम की यथार्थ परिभाषा बताना हमारे वश मे नही।

> प्रेम न बाडी ऊपजे,
> प्रेम न हाट विकाये।
> राजा परजा जेहि रुचे,
> सीस देई लेई जाये ॥

ससार के विभिन्न क्षत्रो और जीवन के विभिन्न प्रसगो मे प्रेम के अनेको रूप दृष्टिगोचर होते हैं। प्रेम के नाम पर यहा अधिकाश मे तो स्वार्थ के सौदे ही हो रहे है। पति पत्नी का विशुद्ध प्रेम वह, जिसमे सहयोग हो, वासनाओ की दुर्गन्ध न हो। मित्रो का विशुद्ध प्रेम वह है, जिसमे सदभावना हो, स्वार्थों और सकीर्णताओ की जलन न हो। विशुद्ध प्रेम का श्रेष्ठ उदाहरण तो माता के पवित्र चरित्र मे ही प्राय चरितार्थ होता है। पशु-पक्षी जगत में भी माता की प्रेम-साधना के सुन्दर-सुन्दर उदाहरण बाहुलता से पाये जाते हैं। कोई प्रेम का पाठ पढना चाहे, तो किसी माता से पढे।

अपने-अपने 'मैं' को 'हम' के रूप मे परिवर्तित करो। परिवार बनाओ। समाज बनाओ। नगर बसाओ। राष्ट्र की सस्थापना करो। सम्पूर्ण वसुधा को एक ही सविशाल कुटुम्ब के रूप मे देखो और परिणत करो। दृष्टिकोण को विशाल बनाओ एव अपने-अपने हृदय उदार। उदार चरिताना तु वसुधैव कुटुम्बकम।

अपने-अपने व्यक्तिगत जीवन की सुख-सुविधाओ को बहुजन हिताय त्याग दो। अपने अपने हृदय मे समाज गत जीवन के लिए प्रगाढ प्रेम को धारण करो। और, करो सब शक्ति के लिए तन, मन, धन सहित अपना-अपना आत्मसमर्पण। समष्टिगत जीवन मे घुल मिलकर रहना सीखो, चलना सीखो। किसी को अपना बना लो। यह न कर सको तो किसी के बन जाओ।

> न कुछ हम हस के सीखे हैं,
> न कुछ हम रोके सीखे हैं।
> जो कुछ थोडा-सा सीखे हैं,
> किसी के होके सीखे हैं ॥

—

11 मार्च 1934 दयानन्दाब्द 110, इतवार 28 फाल्गुण सम्वत् 1990

गुरुकुल यात्रीयों की सेवा में निवेदन

गुरुकुल विश्वविद्याल कांगडी का उत्सव इस बार इस्टर की छुट्टियों में 30,31 मार्च और पहली और दूसरी अप्रैल 1934 को होगा। आशा है कि पहले की तरह आप भाई और बहनें सहस्रो की सख्या में इस धार्मिक मेला पर पधारेंगे। परन्तु क्या आप इस मेला पर धार्मिक भाव से ही आना चाहते हैं संन्यासी महात्माओं के उपदेश श्रवण करने तथा पवित्रता प्राप्त करना चाहते हैं तो हमारा निवेदन है कि आप सादगी के भेष में और पवित्रता के ही सामान के साथ पधारें। हम चाहते है कि कम से कम इन तीन चार दिनों के लिए आप शुद्ध खद्दर के ही कपडे पहन कर आयें। परन्तु यदि इस बार यह सम्भव नहीं, तो कम से कम विदेशी वस्त्र पहन कर तो हरगिज न आएं। बहनों से विशेषकर प्रार्थना है कि वे स्वदेशी और सादा वस्त्रो मे ही आने की कृपा करें। गरीबों को भोजन देने वाले पवित्र खद्दर का वस्त्र ही गुरुकुल जैसी भूमि में शोभा देता है!

गुरुकुल के ब्रह्मचारी खादी ही पहनते है और तपस्या का सादा जीवन बिताने के लिए गुरुकुल मे निवास करते हैं। इसीलिए इस तपोभूमि मे पधारते हुए जहां आप अपनी भावनाओ को पवित्र रखने का ध्यान रखें, वहां यह भी जरूर ध्यान रखें कि इस धार्मिक यात्रा के योग्य ही कपड़े पहन कर आप इस पुण्य भूमि में पधारें। विदेशी वस्त्रो की मलीनता को छोड कर ही आप गुरुकुल की पवित्र भूमि में पधारे।

आपके दर्शनाभिलाषी
मुख्याधिष्ठाता
तथा आचार्य
गुरुकुल कांगड़ी

हिसार में वैदिक धर्म का प्रचार

21, 22 फरवरी 1934 को प. प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति ने दो व्याख्यान आर्य समाज मन्दिर हिसार मे दिये। जनता पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा। लोग पं. जी के और भी व्याख्यान सुनने के इच्छुक थे।

आर्य समाज सिरसा का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सिरसा का वार्षिकोत्सव 23, 24 फरवरी 1934 को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। 23 फरवरी को नगर कीर्तन हुआ। 24 फरवरी को प्रात:काल हवन यज्ञ के बाद 11 यज्ञोपवीत संस्कार हुए। उसके बाद पं. रामचन्द्र जी सिद्धान्त शिरोमणी का उपदेश हुआ।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का सलाना जलसा बड़ी काम्याबी के बाद खत्म हो गया। 28 फरवरी 1934 को थानेसर शहर में नगर कीर्तन किया गया। आर्य समाज के कई प्रसिद्ध भजनीकों ने इसमे हिस्सा लिया। चौ. तेजसिंह जी, छज्जुसिंह जी प्रेमी, महाशय दुर्गादत्त जी और महाशय फकीरचन्द जी के भजनों को लोगों ने बहुत पसन्द किया। पहली मार्च 1934 को सुबह के वक्त स्वामी कर्मानन्द जी का बड़ा सारगर्भित उपदेश हुआ और बाद में ब्रह्मचारियों ने श्लोकों के साथ संस्कृत में भाषण दिया। शाम को पं. रामचन्द्र जी देहलवी का निहायत प्रभावशाली व्याख्यान वेदों के महत्व विषय पर हुआ और लाला देश बन्धु जी गुप्ता डायरेक्टर तेज का "संसार की तरक्की में धर्म का स्थान" इस विषय पर व्याख्यान हुआ। रात को ब्रह्मचारियों ने लाठी तलवार मुंगली और बैण्ड के साथ लीदम के व्यायाम दिखाये। इस में भी लोगों ने बहुत दिलचस्पी ली।

गुरुकुल रायकोट का सलाना जलसा

गुरुकुल रायकोट का सलाना जलसा 26,27,28 फरवरी को और यकम मार्च 1934 को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। 26 फरवरी की रात के वक्त कवि सम्मेलन हुआ। जिसके प्रधान स्वामी केशवानन्द जी संचालक हिन्दी सेवा साहित्य सदन थे। 27 फरवरी को ब्रह्मचारियों की संस्कृत विद्या विनोदनी सभा का अधिवेशन हुआ, जिसके प्रधान पं. प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब थे। ब्रह्मचारियों ने, संस्कृत में गीत गाये और संस्कृत में उनके भाषण हुए। आखिर में प्रधान जी ने लोगों की सहूलियत के लिए हिन्दी में अपने विचार प्रस्तुत किये। अन्त में श्री स्वामी गंगागिरि जी आचार्य गुरुकुल ने बाहर से आये हुए सब सज्जनों का धन्यवाद किया और जलसा की कार्यवाही निर्विघ्न समाप्त हुई।

मनफूल शर्मा
सहायक मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल रायकोट (लुधियाना)

महर्षि दयानन्द ने कहा था—

—एक गाय के शरीर से दूध, घी, बैल, गाय उत्पन्न होने से एक पीढ़ी में चार लाख 75 सहस्र छ: सौ मनुष्यों को सुख पहुंचता है, ऐसे पशुओं को न मारें, न मारने दे। —स. प्र. दशम समु.

—जितने आरोग्यकार और बुद्धिवर्धकादि गुण गाय के दूध में और बैलों में होते हैं, उतने भैंस के दूध और भैंसे आदि में नहीं हो सकते। इसलिए आर्यों ने गाय सर्वोत्तम मानी है। —गो करु.

—गौ आदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है। क्योंकि जब पशु न्यून होते हैं, तब दुग्धादि पदार्थ और खेती आदि कार्यों की भी घटती होती है! —गो करु.

—जितने ग्रन्थ पक्षपाती, क्षुद्रबुद्धि, कम विद्या वाले, अधर्मात्मा असत्यवादियों के लिखे, वेदार्थ से विरुद्ध और युक्ति-प्रमाण रहित हैं उनको स्वीकार करना योग्य नहीं है। —ऋ. भू

—ऋषि प्रणीत ग्रन्थों को इसलिए पढना चाहिए कि वे सब बड़े विद्वान् सब शास्त्रवित् और धर्मात्मा थे और अनृषि जो अल्प शास्त्र पढे हैं, और जिनका आत्मा पक्षपात सहित है, उनके बनाए हुए ग्रन्थ भी वैसे ही हैं— —स. प्र. तृतीय समु.

—जिस घर में स्त्रियों का सत्कार होता है, उसमें विद्या युक्त पुरुष हो के देव संज्ञा धराके आनन्द से क्रीडा करते हैं, और जिस घर में स्त्रियों का सत्कार नहीं होता वहां सब क्रिया निष्फल हो जाती है। —स. प्र. चतुर्थ समु.

—धर्म न्यायाचरण, ब्रह्मचर्य, सत्य भाषण आदि है, और असत्य भाषण अन्याय, आचरणादि पाप है, और सब से प्रीति पूर्वक परोपकारार्थ वर्तना शुभ चरित्र कहाता है। —स. प्र. द्वादश समु.

—इन लोगो ने चौका लगाते-लगाते, विरोध करते-कराते सब स्वातन्त्र्य, आनन्द, राज्य, विद्या और पुरुषार्थ पर चौका लगाकर, हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं। —स. प्र. दशम् समु.

—सब सभासद् और सभापति इन्द्रियों को जीतने अर्थात् अपने वश में रख के सदा धर्म मे वर्तें और अधर्म से हटे-हटाए रहें। इस लिए रात-दिन नियत समय में योगाभ्यास भी करते रहें क्योंकि जो जितेन्द्रिय नही हैं, वह अपनी इन्द्रियों (जो मन, प्राण और शरीर प्रजा है) को जीते बिना बाहर की प्रजा को अपने वश में स्थापन करने को समर्थ कभी नहीं हो सकता। —स. प्र. षष्ट समु.

—देखो! कोई भी योगी आज तक ईश्वरकृत सृष्टि नियम को बदलने हारा नहीं हुआ है, और न होगा। जैसे अनादि सिद्ध परमेश्वर ने नेत्र से देखने और कानों से सुनने का प्रबन्ध किया है, इस को कोई भी योगी बदल नहीं सकता। अत: जीव ईश्वर कभी नहीं हो सकता। —स. प्र. अष्टम समु.

—'शरीरेषु: शारीर: धारी जीव ब्रह्म नहीं है, क्यों कि ब्रह्म के गुण, कर्म, स्वभाव, जीव में नहीं घटते। —स. प्र. एकादश समु.

—हे मनुष्यो! तुम लोगों को चाहिए कि इस जगत् में मनुष्य का शरीर धारण कर विद्या, उत्तम शिक्षा, अच्छा स्वभाव, धर्म योगाभ्यास और विज्ञान, का सम्यक् ग्रहण करके मुक्ति सुख के लिए प्रयत्न करो यही मनुष्य जीवन की सफलता है, ऐसा जानो। —यजु. 35।32

सम्पादकीय—

अब आर्य समाज का कार्यक्रम क्या हो?—2

इस लेखमाला के पिछले लेख में दिए गए विद्वानों के विचारों से हम अनुमान लगा सकते हैं कि आर्य समाज के प्रवर्त्तक का व्यक्तित्व कितना महान् था। इसी के कारण आर्य समाज ने भी बाद में इतनी उन्नति की थी। उन्होंने आर्य समाज के माध्यम से अपने देशवासियों के सामने जो कार्यक्रम रखा था वह उस समय की सबसे बड़ी पुकार थी। लोगों ने उसे अपना लिया था। और जब स्वतन्त्रता के पश्चात् हमारे देश का नया संविधान तैयार हुआ तो उसमें वह सब कुछ शामिल कर लिया गया जिसका आर्य समाज निरन्तर प्रचार करता रहा था। उसका विशेष जोर इस बात पर था—

1. छूत-छात खत्म की जाए।
2. हिन्दी को देश की राष्ट्रभाषा बनाया जाए।
3. महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार दिए जाएं।
4. गो-हत्या बन्द की जाए।
5. बच्चों के लिए शिक्षा अनिवार्य घोषित की जाए।
6. शिक्षा प्रणाली में सुधार किया जाए और सब को एक जैसी शिक्षा दी जाए। इसके लिए गुरुकुल शिक्षा पद्धति को प्राथमिकता देने पर बल दिया गया।
7. स्वदेशी को प्रोत्साहन दिया जाए।

इसके अतिरिक्त अपने राजनीतिक दृष्टिकोण की व्यवस्था करते हुए आर्य समाज ने कहा था—

1. देशके शासक का चुनाव होना चाहिए। पारिवारिक शासन का रिवाज समाप्त होना चाहिए।

2. देश में लोकतन्त्रीय शासन स्थापित किया जाना चाहिए। सत्ता की बागडोर किसी एक व्यक्ति के हाथ में नहीं होनी चाहिए।

3 भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए जरूरी है कि जो व्यक्ति भ्रष्टाचार का दोषी पाया जाए उस का पद जितना बड़ा हो उसे दण्ड भी उतना अधिक मिलना चाहिए। किसी भी व्यक्ति को चाहे वह कितना भी बड़ा हो, इस मामला में माफ नहीं करना चाहिए।

आर्य समाज ने लगभग 75 वर्ष अपने देशवासियों को जगाने के लिए जो आन्दोलन चलाया था उसका परिणाम अन्ततः यह हुआ कि जब हमारे देश का नया संविधान तैयार हुआ तो आर्य समाज की यह सभी मांगें मान ली गई। इस लिहाज से आर्य समाज यह श्रेय ले सकता है कि इसने न केवल देश को स्वतन्त्र कराने में बल्कि इसके नवनिर्माण में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इसके साथ आर्य समाज के इतिहास का एक अध्याय समाप्त हो गया। दूसरा शुरू हो गया। अब यह देखने की जरूरत है कि इसका नया अध्याय किस तरह लिखा जा रहा है। इसी के साथ इसे यह भी देखना है कि इसके निरन्तर संघर्ष से देश ने जो कुछ प्राप्त किया है उस पर पूरी तरह अमल भी हो रहा या नहीं?

इस लेखमाला के विगत लेख में मैंने आर्य समाज के विगत एक सौ दस वर्ष के इतिहास का उल्लेख करते हुए लिखा था कि किस तरह इस संस्था ने पहले देश की स्वतन्त्रता के लिए अपना बलिदान दिया और स्वतन्त्रता के पश्चात् इसके नवनिर्माण में भी प्रमुख योगदान दिया। अपने जिस कार्यक्रम को लेकर आर्य समाज अंग्रेजों के समय में संघर्ष करता रहा लगभग वह सब बातें स्वतन्त्रता के बाद सिद्धान्त रूप में हमारे देश के नेताओं ने स्वीकार कर ली और उन्हें हमारे देश के संविधान में शामिल कर लिया। कोई दूसरी धार्मिक अथवा सामाजिक संस्था इस विषय में इतना श्रेय नहीं ले सकती जितना कि आर्य समाज। और इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि अपने देश के लिए इतना कुछ करने के बाद भी उसने आज तक इसकी कोई कीमत नहीं मांगी। न तो इसने कभी किसी चुनाव में इसने अपने उम्मीदवार खड़े किए हैं। न किसी मन्त्रिमण्डल में अपने लिए जगह मांगी है। हम पंजाब में देख रहे हैं कि अकाली दल एक शुद्ध धार्मिक पार्टी है लेकिन वह धर्म की आड़ में अपने राजनीतिक अधिकारों के लिए लड़ रहा है। और इस लड़ाई में उसने पंजाब की ईंट से ईंट बजा दी है।

सारांश यह कि पहले देश की स्वतन्त्रता के लिए और उसके बाद उसके नवनिर्माण के लिए आर्य समाज से जो कुछ हो सका है उसने किया है। लेकिन उसका काम यहीं समाप्त नहीं हो जाता। अब उसका यह भी कर्त्तव्य है कि वह यह देखे कि जो कुछ उसने लेकर दिया है उस पर अमल भी हो रहा है या नहीं। सरकार ने यह तो मान लिया कि छूतछात समाप्त होना चाहिए लेकिन यह भी देखने की जरूरत है कि वह हो भी रहा है या नहीं। पंजाब एक ऐसा राज्य है जहां छूतछात की बीमारी सबसे कम है और वह इस लिए कि पजाब मे आर्य समाज का प्रचार सब से अधिक रहा है। जहां-जहां भी आर्य समाज पहुंचा है वहां छूतछात समाप्त हो गया। जहां वह नहीं पहुंच सका वहां अभी छूतछात है और यह आर्य समाज का काम है कि वह यह देखे कि वह वहां भी समाप्त हो।

देश के संविधान में यह भी मान लिया गया है कि हिन्दी देश की राजभाषा है। क्या वह राजभाषा बनी है? क्या वास्तविकता यह नहीं कि अंग्रेजी को आज भी अधिमान दिया जा रहा है? हम किसी और की बात क्या करें हमारे पंजाब में ही हिन्दी को समाप्त करने का प्रयास हो रहा है इसी तरह गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगाने का प्रश्न है। सरकार ने यह मांग भी स्वीकार कर ली है लेकिन क्या उस का पूरी तरह से पालन हो रहा है? इसी तरह नारी शिक्षा का प्रश्न है। लड़कियों को पढ़ाने पर अब किसी को आपत्ति नहीं है। दूरवर्ती क्षेत्रों में भी लड़कियों के स्कूल खुले हुए हैं लेकिन क्या उन्हें वही शिक्षा दी जा रही है जो उन्हें मिलनी चाहिए। और क्या वर्तमान शिक्षा का लाभ हो रहा है या हानि इसी तरह के और भी कई प्रश्न हैं जो विचारणीय हैं जिन पर गम्भीरता से सोचना चाहिए कि जिस उद्देश्य को लेकर ये सब कुछ किया गया था क्या वह पूरा हो रहा है या नहीं? जहां नहीं हो रहा वहां आर्य समाज को फिर अपनी आवाज उठानी चाहिए। आर्य समाज का सारा जीवन संघर्षमय रहा है। यदि उसे फिर संघर्ष करना पड़े तो उसे संकोच नहीं करना चाहिए। सबसे पहली आवश्यकता यह है कि उसके नेता बैठ कर गम्भीरता से सोचें कि जिस उद्देश्य के लिए आर्य समाज की स्थापना की गई थी वह पूरा हुआ है या नहीं? यदि नहीं हुआ तो कहां कमी रह गई है और उस कमी को कैसे पूरा करना है? यह कोई साधारण काम नहीं है। इसका अभिप्राय है कि आर्य समाज को एक नए संघर्ष के लिए तैयार होना पड़ेगा। उसके लिए उसे ऐसे नेताओं की जरूरत होगी जो संघर्ष करने को तैयार हों। आज तो आर्य समाज के नेता हाथ पर हाथ रखे बैठे हैं। यदि इसी तरह बैठे रहे तो सौ वर्ष की कमाई पांच-सात वर्ष में समाप्त हो जाएगी इसलिये अब समय है कि जो हालात इस समय देश में पैदा हो रहे हैं, उन्हे सामने रखते हुए आर्य समाज अपना नया कार्यक्रम बनाये। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि विगत एक सौ वर्ष में हालात बहुत कुछ बदल गये हैं। लोगों का सोचने का ढंग बदल गया है। हमारे ही देशवासी कई नए तरह के आंदोलनों और विचारधाराओं से प्रभावित हो रहे हैं। प्रचार का ढंग भी बदल गया है। नई-नई तरह का साहित्य तैयार हो रहा है। और उसका प्रभाव हमारे युवा वर्ग पर भी पड़ रहा है। यह कहां तक ठीक है और उसका जो गलत प्रभाव है उसे किस तरह दूर कर सकते हैं इस पर भी विचार करने की आवश्यकता है। सारांश यह कि अब हमें यह समझ कर आगे चलना चाहिये कि आर्य समाज की स्थापना 19वीं शताब्दी में हुई थी। अब हम बीसवीं शताब्दी में से जा रहे हैं और हमने 21वीं शताब्दी का कार्यक्रम बनाना है।

—वीरेन्द्र

आज हम कहां खड़े हैं–६

आर्य समाज का धर्म पक्ष प्रामाण्यवाद–2

ले—श्री पण्डित सत्यदेव जी विद्यालंकार
शान्ति सदन 14514 सेंट्रल टाउन जालन्धर

(गतांक से आगे)

जो वायु सुगन्ध्यादि द्रव्य के परमाणुओ से युक्त होम द्वारा आकाश मे चढ के वृष्टि जल को शुद्ध कर देता है और उससे वृष्टि भी अधिक होती है। क्योंकि होम करके नीचे गर्मी अधिक होने से जब भी ऊपर अधिक चढता है। शुद्ध जल और वायु के द्वारा अन्नादि औषधि भी अत्यन्त शुद्ध होती है।

5 होम मे वेद मन्त्रो के पढने से वेदो की रक्षा, स्तुति प्रार्थना और उपासना, तथा होम का जो फल है उसका स्मरण होता है। वेद मन्त्र के स्थान पर किसी और शब्दो के उच्चारण मे यह प्रयोजन सिद्ध नही होता। क्योंकि ईश्वर का वचन जैसा भ्रान्ति रहित होता है अन्य का वैसा नही हो सकता।

6 विशिष्ट प्रकार के कुण्ड के बनाने से अग्नि तीव्र होती है तथा आहुति किए द्रव्यो का सूक्ष्म रूप धारण करना शीघ्र होता है।

भिन्न-2 प्रकार की वेदियो की रचना से रेखा गणित का भी ज्ञान होता है।

पात्रो तथा अन्य सहायक वस्तुओ का चयन उपयोगिता की दृष्टि से करना चाहिए।

7 होम न करने से पाप भी होता है। मनुष्य के शरीर मे दुर्गन्ध उत्पन्न होती है। इससे वायु तथा जल की अशुद्धि होती है। इस अशुद्धि मे रोगोत्पत्ति होने से प्राणियो को दुःख होता है। यह पाप है। उसके निवारणार्थ उतना ही अथवा उससे भी अधिक वायु जल की शुद्धि आवश्यक है। इससे पूर्व कृत पाप की निवृत्ति होती है।

ऋषि प्रदत्त विचारो का यह सक्षिप्त रूप है। इससे यह स्पष्ट है कि ऋषिवर यज्ञ की उपयोगिता एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ससार के कल्याण के लिए है यह सिद्ध कर रहे हैं। यज्ञ करने वाला किसी स्वर्गादि लोक को प्राप्त करता है, इसके लिए नही। इस दृष्टिकोण से पौराणिक साहित्य द्वारा प्रतिपादित वह द्वारा कल्पित ससार नष्ट होता है जिस मे भिन्न-2 यज्ञो से भिन्न-2 लोको की प्राप्ति और वहा जाने वाले अनन्त चमत्कारिक सुखो की उपलब्धि का माया जाल का ताना बना तैयार किया गया है।

ऋषि द्वारा प्रतिपादित यज्ञ एक विज्ञान है जिससे वातावरण की अशुद्धि, रोगादि का प्रसार इनका सूक्ष्म विश्लेषण होना चाहिए और तदनुरूप ही यज्ञीय द्रव्यो और साधना का प्रयोग होना चाहिए।

एक उदाहरण मे मैं अपनी बात स्पष्ट करना चाहता हू। आर्य मर्यादा के 2-2-86 अक मे श्री यशपाल आर्य बन्धु का एक लेख "विघ्न नाशक यज्ञ" इस शीर्षक से है। उन्होने भोपाल गैस काण्ड द्वारा हुए वायु प्रदूषण के प्रतिकार मे किए एक महान् यज्ञ की प्रशसा की है। यज्ञ श्री शकराचार्य के निर्देशन मे हुआ। "उसमे 24 लाख, दस हजार, चार सौ आहुति देनी थी। 25 क्विन्टल घी तथा अन्य सामग्री का प्रयोग होना था। व्यवस्था मे सब मिला कर दान-दक्षिणा भी 6 लाख के लगभग रुपए का व्यय होना है।" श्री आर्य बन्धु जी का कहना है कि इससे ऋषि दयानन्द के यज्ञ की वृद्धि होगी।

मैं इस यज्ञ को अन्ध श्रद्धा का प्रदर्शन अधिक समझता हू। भोपाल मे जो कार्बाइड गैस के फैलने से पर्यावरण मे भयानक अशुद्धि आई वह एक विशेष प्रकार की अशुद्धि थी। उसका वैज्ञानिक विश्लेषण नही हुआ। उसके दूर करने के लिए कौन-2 से पदार्थ कितनी मात्रा मे चाहिए, इसकी खोज नही की गई। केवल वेद पाठी ब्राह्मण बुलाकर खूब अधिक मात्रा मे घी और सामग्री का उपयोग किया गया। पुष्कल दक्षिणा भी दी गई। यह वैज्ञानिक परीक्षण है या पोप लीला ?

रोग, जलवायु की अशुद्धि यह व्यापक अस्पष्ट शब्द है। इनका वर्गीकरण चाहिए, विश्लेषण चाहिए तब यज्ञ निदान का उपयोग होगा। यज्ञ क्या अमृतधारा या त्रिफला है जिसे हर बीमारी मे दिया जा सकता है।

आर्य समाज मे भी एक याज्ञिक सम्प्रदाय बन गया है। वे भिन्न-भिन्न उत्सवो में वर्षा के लिए, कल्याण के लिए, रोग निवारण के लिए, धन समृद्धि के लिए अपने आप ही चुने हुए मन्त्रो से यज्ञ कराते हैं। जहा तक मेरा ज्ञान है किसी सार्वदेशिक या प्रतिनिधि सभा ने इनको प्रमाणित नही किया है। आर्यसमाज के क्षेत्र मे योग, यज्ञ और वेद इन तीनो का प्रयोग श्रद्धा के केन्द्र के रूप मे अधिक किया जाता है। विश्व के सामने हम इनकी उपयोगिता अभी तक सिद्ध नही कर पाए। हमारी सरकार अनेक प्रकार के प्रदूषणो के लिए, अनेक प्रकार के रोगो के फैलाव के लिए, मनुष्यो, पशुओ तथा अन्न क्षेत्र मे होने वाली अनन्त विकृतियो के लिए लगातार साधन उपलब्ध करा रही है। किसी आर्य विद्वान् ने उसके सम्बन्ध मे कोई समाधान पेश किया हो ऐसा किसी समाचार पत्र मे प्रकाशित नही हुआ। यज्ञ की उपयोगिता को सिद्ध करने के लिए आवश्यक है कि इसकी भी अन्य उपायो की तरह वैज्ञानिक जाच पडताल हो। केवल श्रद्धा केन्द्र मान कर इसका प्रचलन असम्भव तो नही पर कठिन अवश्य है।

असम्भव इसलिए नही क्योंकि प्रत्येक धर्म ने अपन-2 क्षेत्र मे ऐसे अनेक श्रद्धा केन्द्र बनाए हैं जिन्हे जाचा परखा जा ही नही सकता। तीर्थों का स्नान, पवित्र ग्रन्थो का पाठ, धर्म चिन्हो का धारणा, समाधिया, मकबरो की पूजा—य सब श्रद्धा मात्र क ही केन्द्र हैं। और धडल्ले से चल रहे हैं।

क्या आर्य समाज को भी इनका आसरा लेना पडेगा ?

यज्ञ के विषय मे मान्य श्री वेदश्रमी जी का नाम न लिया जाए, यह हो ही नही सकता। उनका यज्ञ सम्बन्ध मे अनेक वर्ष का लगातार परिश्रम साध्य शोध कार्य चल रहा है। उनके विचार समय-समय पर समाचार पत्रो मे आते रहते हैं। मैंने उनके लेख, 25-3-84 के 'आर्य जगत' मे "भेषज यज्ञ प्रक्रिया" शीर्षक देखा। 21-4-85 के आर्य जगत् मे "वेद और ऊर्जा के सशोधन" पढा। 2 6 85 के "आर्य जगत" मे "व्यक्ति और समष्टि" को सुखी बनाने वाला यज्ञ विज्ञान" तथा अभी अभी 1 5 6-86 के "आर्य मर्यादा" मे "यज्ञ-चिकित्सा विज्ञान" (भाग—2) देखा। और भी बहुत से लेख देखे। इन पर कुछ विचार अवश्य करना चाहिए।

ऊर्जा के सम्बन्ध में उनके विचार हैं—

1. सृष्टि के पदार्थों में अनेक रूप से ऊर्जा है। पर यह ऊर्जा आई कहा से ? इसका वर्णन "अघमर्षण" मन्त्र मे है। परमात्मा ने अपनी अनन्त ऊर्जा सामर्थ्य से ऋत—गति तथा सत्य—स्थिरता को उत्पन्न किया। दोनो प्रकार की ऊर्जाओं की गति से एक और प्रकार की ऊर्जा उत्पन्न हुई जिसे "रात्रि" कहा गया। यह रात्रि नासदीय सूक्त की "नासदासीन्नोसदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमापरो यत्" अव्यक्त रूप रात्रि है। इस 'रात्रि' नामक ऊर्जा से 'समुद्र' और 'अर्णव' दो स्थितिया उत्पन्न हुई। इन्हे नासदीय सूक्त मे कुहक—कुहरा और आभक्त—जल की गम्भीर अवस्था कहा।

नोट :—यहा यह ध्यान रखना चाहिए कि ऋषिवर दयानन्द ने 'अघमर्षण' मन्त्र मे ऋत—ज्ञानमय सत्य, सत्य व्यवहारमय सत्य, रात्रि प्रलय रात्रि, समुद्रः अर्णव—जलो से पूर्ण समुद्र अन्तरिक्ष इस प्रकार अर्थ किए हैं। एक अन्य स्थान पर ऋत—वेद शास्त्र, सत्य-त्रिगुणात्मक प्रकृति, रात्रि—हजार चतुर्युगी प्रमाण प्रलय रात्रि, समुद्र—अर्णव—महा समुद्र यह अर्थ दिए हैं।

इनका श्री वेदश्रमी जी के अर्थों से कैसे समन्वय किया जाए ?

2 मूल रूप से एक ही ऊर्जा है। सशाधन भिन्न-2 हैं। यजु 32 1 मे समष्टि ऊर्जा को अग्नि, वायु, आदित्य, चन्द्र आदि कहा है। यज्ञो से ऊर्जा की उत्पत्ति होती है यज्ञ प्रक्रिया द्वारा ऋतुओ का समरण अथवा सन्तुलन अग्नि तत्व से आहुति क्रियाओ द्वारा तथा मन्त्र ध्वनि द्वारा किया जाता है। विश्व मे व्याप्त ऊर्जा के पदार्थ मे ऊर्जा का असन्तुलन है उसके निराकरण के लिए मन्त्र और उसके छन्द की व्याप्ति या प्रभाव क्षेत्र का ज्ञान होना चाहिए। गायत्री मन्त्रो की ध्वन्यात्मक ऊर्जा का यज्ञाग्नि मे आहुति पूर्वक कार्य करने से पृथिवी मण्डल अथवा उसके पदार्थों पर प्रभाव पडता है। त्रिष्टुप् छन्द के मन्त्रो से उत्पन्न ध्वनि ऊर्जा का यज्ञाग्नि मे आहुति पूर्वक प्रयोग से अन्तरिक्ष मण्डल पर अनुकूल प्रभाव पडता है। जगती छन्द के मन्त्रो से क्रिया करने पर उसका द्युलोक मे अनुकूल प्रभाव पडता है। वेद के यज्ञ विज्ञान मे समस्त विश्व क्रमशः छन्दो से सगठित एव नियमित है।

(क्रमशः)

स्वामी दयानन्द के भक्त—

स्वामी अच्युतानन्द सरस्वती

लेखक—डा भवानीलाल जी भारतीय
पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़

वेदो के विद्वान् तथा स्वामी दयानन्द से अद्वैतवेदान्त पर शास्त्र चर्चा करने वाले स्वामी अच्युतानन्द का जन्म 1853 ई में सरगोधा (पाकिस्तान) जिले के कुञ्जाव नगर मे हुआ था। आप जन्मना क्षत्री थे। तीव्र वैराग्य के कारण आपने 16 वर्ष की आयु मे 1869 ई मे गृह त्याग दिया और निरन्तर सात वर्ष तक सच्चे गुरु की खोज मे भटकते रहे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने इनके जीवन परिचय मे लिखा है कि आप प्रथम निर्मला पथ मे दीक्षित हुए। उस समय इनका नाम साधु दयासिह था। दीक्षित होने के पश्चात् ये सस्कृत पढने लगे। कुछ समय अमृतसर मे पढ कर पुन: काशी चले गये। यहा आपने व्याकरण और वेदान्त का गम्भीर अध्ययन किया। स्मृति साहित्य का विशिष्ट अनुशीलन करने से आपके विचार बदल गये और आपने अनुभव किया कि स्मृतियो मे सन्यास आश्रम का ही विधान है। इसके अतिरिक्त अन्य नामो मे जो साधु पुकारे जाते हैं वे नाम न तो वैदिक हैं और न स्मृति। यह सोच कर आपने निर्मला पथ से सन्यास की दीक्षा ली और अच्युतानन्द गिरि का नाम धारण किया।

कालान्तर मे अपनी विद्या और तप के बल पर इन्हे मण्डलेश्वर का पद प्राप्त हुआ और ये पाच वर्ष तक इस गद्दी पर आरूढ रहे। मण्डलेश्वर काल मे इन्होने समस्त देश का भ्रमण किया प्रथम काशी से चल कर कलकत्ता आये और वहा से जगन्नाथपुरी जाकर गोवर्धन मठ मे ठहरे। तत्पश्चात् रामेश्वर गए और केरल होते हुए मैसूर राज्यान्तर्गत शृगेरी मठ मे निवास किया। पुन: बम्बई, गुजरात तथा काठियावाड का भ्रमण किया। द्वारिका के शारदा मठ मे कुछ काल तक ठहर कर कच्छ राज्य की राजधानी भुज गये। तदनन्तर सिंध प्रान्त का भ्रमण किया और हरिद्वार हो कर बद्रीनाथ तक की यात्रा की।

स्वामी दयानन्द से स्वामी अच्युतानन्द की भेंट 1935 वि मे हरिद्वार के कुम्भ के अवसर पर हुई। दोनो मे वेदान्त विषयक वार्तापाप हुआ। 1925 ई. मे स्वामी दयानन्द की जन्म शताब्दी के अवसर पर आयोजित एक सम्मेलन में स्वामी अच्युतानन्द ने श्री महाराज विषयक अपने सस्मरण सुनाये थे। शताब्दी विवरण के सम्पादक ने इस प्रसग में लिखा है—"स्वामी अच्युतानन्द जी स्वय स्वामी दयानन्द से टक्कर लेने वालो मे से एक थे परन्तु अब वे अपनी महन्त की गद्दी का परित्याग किये हुए आर्य सन्यासी हैं। स्वामी जी से स्वामी दयानन्द ने 'एकमेवाद्वितीयम् ब्रह्म' पर शास्त्रार्थ किया था। जिस पर महर्षि ने इसकी व्याख्या की थी कि यह वाक्य अद्वैतपरक नही है, वरन् 'अद्वितीय के समान ब्रह्म की अद्वितीयता मात्र का द्योतक है। ब्रह्म के समान इसका कोई महान् शक्ति वाला प्रभु (स्वामी) नही है, यही इसका अर्थ है।"

1935 वि से पूर्व भी स्वामी अच्युतानन्द की स्वामी दयानन्द से काशी मे 1927 वि मे भेंट हुई थी। इस प्रथम बार के साक्षात्कार का विवरण स्वामी अच्युतानन्द ने स्वय आर्य मित्र के जन्म शताब्दी अक मे इस प्रकार लिखा था—

"उस समय श्री स्वामी जी महाराज तख्तपोश पर किन्तु नग्न एक भगवा कौपीन धारण किये बैठे थे। आठ-दस बगाली युवको को स्वामी जी सस्कृत भाषा मे उपदेश कर रहे थे। मैंने जब श्री स्वामी का दर्शन कर हाथ जोड कर प्रणाम किया तो पूर्ण ब्रह्मचर्य के प्रभाव से हृष्ट-पुष्ट और महा विद्वान् के मुख से ललित सस्कृत भाषा सुन कर मैं दग रह गया। विचारने लगा कि नंगा साधु प्रसन्न वदन इस प्रकार सस्कृत बोलता हुआ पहले कभी देखा सुना भी नही। श्री स्वामी जी के बडे-बडे विज्ञापन मैंने देखे जिनमे लिखा हुआ था कि काशी के पण्डितो, आओ, मूर्ति पूजा जो वेद विरुद्ध काम है इस विषय मे मुझ से शास्त्रार्थ कर लो, तुम्हारी धूर्तता से काम नही चलेगा।" मैंने भी स्वामी जी से पूछा कि महाराज मनुष्य का कल्याण कैसे होता है? उन्होंने उत्तर दिया कि परमात्मा के ज्ञान से।

प्रश्न—परमात्मा का ज्ञान कैसे प्राप्त हो?

उत्तर—ज्ञानियों के सत्सग से, झूठी पाषाण पूजा से कभी ज्ञान प्राप्त नही हो सकता। अभी तुम बालक हो, सस्कृत विद्या व्याकरण आदि पढो, तुम उस विद्या द्वारा परमात्मा के स्वरूप को जान जाओगे।" तब मैं काशी मे व्याकरण न्यायादि पढता रहा। उस समय स्वामी जी ने काशी मे एक सस्कृत विद्या पाठशाला स्थापित की थी जिसमे काशी के महा विद्वान् प. शिवकुमार शास्त्री, प जवाहर दास उदासी साधु और एक सन्यासी जिनका नाम अभी स्मरण नही है, यह तीनो पढाते थे। पाठशाला का सब खर्च भी स्वामी जी दिया करते थे। उस पाठशाला मे मैं भी कई मास तक पढा। पुन 1936 वि के हरिद्वार के कुम्भ म भी स्वामी जी महाराज के दर्शन हुए। मैंने भी स्वामी जी से दो बार वाद-विवाद भी किया जो अत्यन्त प्रसन्नता का हेतु था। कई बार और नगरो मे भी मैंने स्वामी जी के दर्शन किए।"

1935 वि के कुम्भ मे सम्मिलित होने के पश्चात् स्वामी अच्युतानन्द बद्रीनाथ गए और वहा से लौट कर अनेक स्थानो का भ्रमण करते हुए जोधपुर पहुचे। जोधपुर राज्य के तत्कालीन प्रधानमन्त्री एव प्रशासक महाराणा प्रतापसिह से उनके आत्मीय सम्बन्ध थे। स्वामी अच्युतानन्द को आर्य समाज की ओर आकृष्ट करने का श्रेय प गुरुदत्त को है। प गुरुदत्त से उनकी भेंट 1888 ई मे लाहौर मे हुई। उस समय स्वामी जी शाह आलमी गेट पर किसी कोठी मे ठहरे हुए थे। आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान प गुरुदत्त उनसे उपनिषदो का अध्ययन करने लगे। दोनो के बीच विचारो का आदान-प्रदान होता रहा। अन्तत: प गुरुदत्त के विचारो ने चमत्कार दिखाया और स्वामी अच्युतानन्द अपनी मण्डलेश्वर की गद्दी तथा अद्वैतवाद की विचारधारा को त्याग कर स्वामी दयानन्द के दृढ अनुयायी एव त्रैतवाद के पोषक बन गए। इसके पश्चात् वे आजीवन आर्य समाज का ही प्रचार करते रहे। जब स्वामी अच्युतानन्द प्रथम बार आर्य समाज मे आये तो अधिकारियो ने आपको उच्च स्थान पर बैठने की प्रार्थना की। आपने उत्तर मे कहा, "यदि मुझे उच्च स्थान पर ही बैठना होता तो मैं यहा आर्य समाज मन्दिर मे क्यो आता। मैं तो मण्डलेश्वर था और शतश सन्यासी एव गृहस्थ प्रतिदिन मेरी चरणवन्दना करते थे। उस समय मैं मण्डलेश्वर के उच्च आसन पर बैठता था। किन्तु अब तो मुझे एक साधारण आर्य सन्यासी के रूप म आर्य समाज मन्दिर मे बैठना अभीष्ट है।" स्वामी प्रकाशानन्द और स्वामी विशुद्धानन्द को आपने सन्यास की दीक्षा दी। कालान्तर मे आपने लुधियाना मे शान्ति आश्रम नामक एक भव्य आश्रम की भी स्थापना की। स्वामी अच्युतानन्द ने व्याख्यानमाला शीर्षक सस्कृत सुभाषितो का एक सुन्दर सग्रह तैयार किया था। इसमे 52 विषयो पर सस्कृत साहित्य की सुन्दर सूक्तिया सग्रहीत की गई है। आपने चारो वेदो से 100-100 मन्त्रो का सग्रह कर चार सुन्दर शतको की भी रचना की। इनके अनेक सस्करण प्रकाशित हुए और स्वाध्याय प्रेमियो ने उन्हे अपनाया। स्वामी दयानन्द रचित आर्याभिविनय की शैली पर स्वामी अच्युतानन्द ने साम तथा अथर्ववेद के मन्त्रो का प्रार्थना परक अर्थ लिखा था जो पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ। 30 सितम्बर 1881 ई को 88 वर्ष की अवस्था मे लुधियाना मे इनका निधन हुआ।

———

आर्य समाज की गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए सुझाव

गत दिनो सगरूर जिला आर्य सभा की बैठक आर्य समाज मालेरकोटला मे श्री प्रेमप्रकाश जी वानप्रस्थी, जिला प्रधान सभा की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई।

आर्य समाजो के प्रतिनिधियो ने आर्य समाजो की गतिविधियो को बढाने एव जिला सभा के कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए सुझाव भी दिए।

कु विमला छाबड़ा ने सुझाव दिया कि जिला सभा शिवरात्रि के अवसर पर सत्यार्थ प्रकाश और वेद मन्त्रो की परीक्षाओ का आयोजन करे एव भाषण प्रतियोगिताए करवाई जाए।

श्रीमती कैलाश आर्या मालेरकोटला ने सुझाव दिया कि प्रत्यक आर्य को पाचो यज्ञ अवश्य करने चाहिए।

श्री महाशय लक्ष्मणदास जी और श्री निरञ्जीलाल जी धूरी, श्री अशोक कुमार जी सगरूर, श्री चान्दराम जी तपा श्री मनोहर लाल जी अहमदगढ तथा दूसरे महानुभावो ने आर्य समाज की उन्नति के लिए अनेको सुझाव दिए जिन पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया गया।

—विमला छाबडा
मन्त्री
जिला सभा

—

समाचार और विचार

एक महान् अनुकरणीय व सराहनीय कार्य

१८ वयोवृद्ध भजनोपदेशक सम्मानित व पुरस्कृत

देश के कई आर्य समाजो ने आर्य समाज के विद्वानो, सन्यासियो एव नेताओ के अभिनन्दन की परम्परा डाल कर एक अनुकरणीय व स्तुत्य कार्य किया है। परन्तु आर्य समाज के वयोवृद्ध व असहाय प्रचारको व भजनोपदेशको के सार्वजनिक अभिनन्दन की ओर आज तक किसी ने ध्यान नही दिया था। इस कमी को दूर करने के लिए आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के तत्वावधान मे उसके वार्षिकोत्सव पर 18 वयोवृद्ध आर्य भजनोपदेशको व प्रचारको को सम्मानित किया गया।

समारोह की अध्यक्षता पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी ने और कार्यक्रम का सयोजकत्व प्रो रत्नसिंह ने किया। प्रारम्भ मे आर्य समाज "अनारकली" के प्रधान श्री शान्तिलाल सूरी व मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने सभी भजनोपदेशको का मालाओ द्वारा स्वागत किया। स्वामी सत्यप्रकाश जी ने प्रत्येक भजनोपदेशक को एक शाल व एक सहस्र रुपया भेंट किया। इसी अवसर पर एक श्रद्धालु सज्जन श्री राधेश्याम अग्रवाल ने, जो इससे पहले कभी आर्य समाज मे नही आए थे, प्रत्येक भजनोपदेशक को 150-150 रु भेंट किए।

इस दृश्य से भाव-विभोर होकर पटेल नगर की एक आर्य महिला श्रीमती चेतनदेवी ने प्रत्येक भजनोपदेशक को अपनी ओर से 50-50 रु भेंट किए।

इस समारोह के लिए और भजनोपदेशको के सम्मान के लिए स्वय पुराने भजनोपदेशक महारथी 80 वर्षीय श्री आशानन्द जी ने बीस हजार रु खर्च किए। उन्होने आगामी 5 वष तक इसी प्रकार बीस-बीस हजार रु देने का सकल्प प्रकट किया। श्री सूरी और श्री सहगल ने उनका अलग से माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया।

इस अवसर पर श्री शिवकुमार शास्त्री, श्री क्षितीश वेदालकार और श्री शान्ति लाल सूरी ने अपने विचार प्रकट किए। अन्त मे स्वामी सत्यप्रकाश जी ने सुझाव दिया कि दिल्ली की आर्य समाजें मिलकर दो लाख रुपए की स्थिर निधि स्थापित करें जिसके ब्याज से प्रतिवर्ष बीस आर्य विद्वानो, प्रचारको व लेखकों को सम्मानित किया जा सके।

आर्य समाज के इतिहास मे यह अनुपम व अपूर्व कार्यक्रम था। अपने जीवन के लगभग पचास कीमती वर्षों तक निरन्तर आर्य समाज की सेवा करने वाले वैदिक धर्म का प्रचार करने वाले इन सम्मानित महानुभावो के नाम इस प्रकार हैं :—

श्री जबरसिंह (मगोलपुरी, दिल्ली) श्री मामचन्द (सिकन्दराबाद), श्री प्रभुदयाल प्रभाकर (जीद), श्री अभयमुनि वानप्रस्थ (नागौर-राजस्थान), श्री महेशचन्द्र सगीतरत्न (चण्डौली, अलीगढ) श्री तुलसी देव सगीत रत्न (साकेत नई दिल्ली) श्री मनोहरलाल ऋषि (जनकपुरी नई दिल्ली), श्री नरपत सिंह (झीना, बिजनौर) स्वामी सेवकानन्द (रादौर, कुरुक्षेत्र) श्री मगलदेव आर्य (मेवात) श्री मुनिदेव (गाजियाबाद)।

जो व्यक्ति अस्वस्थता के कारण नहीं आ सके उनके नाम निम्न हैं :—

श्री धर्मपाल (सुजानपुर, पठानकोट) श्री हजारीलाल (मजीठा, अमृतसर), श्री अमरनाथ प्रेमी (फिज्जूपुरा, धारीवाल) श्री बलराज आर्य (फिल्लौर-पजाब), श्री धनीराम (ग्राम-हेमराज, गुरदासपुर), श्री वेदमित्र ठाकुर (बालिया, भरूच), श्री रामनाथ आर्य (कृष्ण नगर, मोरिण्डा)।

— रामनाथ सहगल
मन्त्री

श्री गजानन्द जी आर्य परोपकारिणी सभा अजमेर के मन्त्री निर्वाचित

ऋषि मेला अजमेर के शुभावसर पर दिनाक 9-11-86 को श्रीमती परोपकारिणी सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन माननीय स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। उपस्थिति अभूतपूर्व थी। अर्थात् कुल 23 सदस्यों मे से 21 उपस्थित थे। दिवगत सभा मन्त्री श्री श्रीकरण जी शारदा के स्थान पर सर्व सम्मति से स्व यशस्वी दानवीर श्री सासमल जी आर्य के सुपुत्र कलकत्ता निवासी श्री गजानन्द जी आर्य मन्त्री निर्वाचित हुए।

—कविराज धर्मसिंह कोठारी

सम्पादक के नाम पत्र

अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल की बहन शास्त्री देवी की सुध लें

आदरणीय सम्पादक जी !

इस पत्र के द्वारा भारत की प्रबुद्ध जनता का ध्यान राजीव गाधी के उन खोखले नारो की ओर दिलाना चाहता हू, जिनके द्वारा वे अपने आपको राष्ट्रवादी और देश भक्त सिद्ध करने की कोशिश करते हैं। मैं आपके पास उस पूज्य वीरागना बहन शास्त्री देवी जी के पत्र की प्रति भेज रहा हू जो वीर शिरोमणी प रामप्रसाद बिस्मिल की छोटी बहन है। उसकी आयु लगभग अस्सी वर्ष की होगी। जवानी मे बहन शास्त्री देवी ने अपने भाई रामप्रसाद बिस्मिल को हथियार अपनी टागो से बाध कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुचाने मे सहयोग किया था। वह जीवित शहीद है। स्वतन्त्र भारत मे देश भक्तो की क्या दशा है ? इसका प्रत्यक्ष प्रमाण इस पत्र के पढने से स्वय मिल रहा है। दो चार दिन पहले सरकार ने हैदराबाद के 48 वर्ष पहले सत्याग्रह मे भाग लेने वाले आर्य समाजियो को पेंशन की घोषणा की है। यह कितना बडा दिखावा और ढग है। कौन नही जानता कि अब शायद ही कोई ऐसा सत्याग्रही जीवित हो जिस ने इस सत्याग्रह में भाग लिया था। आज तक कितनी ही बार पत्र-पत्रिकाओं में इस प्रकार की करुण कहानियां छपी हैं, किन्तु फिर भी इन सत्ताधारियो के कानो पर जू क्यो नही रेंगती ? यह मेरी समझ मे नहीं आता।

मैं राष्ट्रवादी सस्थाओं एव व्यक्तियो से एक प्रार्थना करता हू कि वे उस्मान नगर, नई दिल्ली मे तडप रही बहन शास्त्री देवी के अन्तिम क्षणो को सुख से बिताए जाने के लिए उनकी अवश्य ही सहायता करें। बहन जी को सम्भवत: इस कहानी का पता नही है, [illegible] गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की लहलहाती हुई पाच सस्थाओं को भ्रष्ट सरकार ने मिट्टी मे मिला दिया। यदि हम पर यह आपत्ति नही होती तो बहन जी की हम अकेले ही आवश्यकता से अधिक सहायता कर देते।

—स्वामी शक्तिवेश

बहन शास्त्री देवी जी के पत्र की प्रतिलिपि

श्रीमान् भाई जी सादर नमस्ते !

सविनय निवेदन है कि आपसे प्रार्थना करती हू कि दो साल से आपने मेरी कोई चिन्ता नहीं की। आशा करती थी कि आप लोग सच्चे ही आर्य हैं जो बहिन जी कह कर बोलते थे। आर्य धर्म अनाथ गरीब की रक्षा करना दीन-दुःखी की पुकार सुनना कि उन्हे बिल्कुल ही भूल जाना, मैंने श्री रामचन्द्र विकल जी के मुख से सुना था कि बहिन जी के लिए कुछ जरूर सोचू गा। मगर दो साल से बहुत ही सुनाई की, अब प्रार्थना करती हू कि कोई पत्र से ही लिखने का कष्ट कीजिए, मैं अधिक ही शारीरिक कष्ट से दुःखी हू सरकार से बहुत प्रार्थना की कि किसी अस्पताल के लिए लिख दें ताकि इलाज हो सके कोई सुनाई नहीं मैं पैसा नही मांगती, फकत इलाज के लिए राजीव गाधी को लिखा तो जवाब आया कि किसी सरकारी अफसर के हस्ताक्षर हो, डाक्टर के भी हस्ताक्षर हो, तमाम सनाकर्ते मागी हैं, मैं किसी को कहा तलाश करू जो सनाख्त करें, मैं टाग से बिल्कुल बैठ गई हू, पूत बहू भी चार माह से पता है। घुट-घुट कर आहें भर रहा है उसी के लिए इलाज की कोशिश बहुत की मगर बाहर एजेन्सी से दवा देने को लिख दिया। राममनोहर लोहिया अस्पताल मे दो महीना भाग दौड की अब मैडीकल को लिखा वहा कहा कि मार्च मे आना अब तो सरकार बहुत गरीबों की सहायता करती है। वोटो के लिए। मुझ सा गरीब और कोई दुनिया में होगा जो मरीज-2 कर जीवन बिता रही हू विश्वास न हो तो इन्क्वारी करके देख सकते हैं। मैं अधिक अपराधी हू गलती भी हो कृपया क्षमा कीजिए।

—शास्त्री देवी
उसमनगर दिल्ली

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज सरहिन्दी गेट पटियाला के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है जो प्रचार भावना से अधिक से अधिक सेवा के लिए तत्पर हो। वेतन योग्यतानुसार।

—प्रधानमन्त्री
आर्य समाज सरहिन्दी गेट
पटियाला

आर्य विद्या परिषद् पंजाब द्वारा

प्रान्तीय भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्य विद्या परिषद् पंजाब के तत्वावधान मे 22 नवम्बर 86 को आर्य माडल हाई स्कूल फगवाडा मे प्रान्तीय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस चतुर्थ प्रान्तीय भाषण प्रतियोगिता मे पंजाब प्रान्त के विभिन्न आर्य स्कूलो के छात्र एव छात्राओं ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता की अध्यक्षता और विद्या परिषद् पंजाब के रजिस्ट्रार श्री धर्म प्रकाश जी दत्त ने की। प्रतियोगिता के निर्णायक पद को भी प्रो पी डी शर्मा, प्रो सत्यदेव सरल तथा प्रो सरला भारद्वाज जी ने सुशोभित किया।

इस प्रतियोगिता मे प्रथम चल विजयोपहार बी सी एम आर्य माडल स्कूल लुधियाना की छात्राओ ने जीता प्रथम चल विजयोपहार जीतने वाली टीम की दोनो प्रतियोगियो को कु मीनू अरोडा और कु सोनिया विग को शील्ड के अतिरिक्त चल विजयोपहार विजेता पुरस्कार व्यक्तिगत रूप मे दिए गए। आर्य गर्ल्ज सीनियर सै स्कूल मोगा की छात्रा कु रजनी ने प्रथम व्यक्तिगत पुरस्कार जीता। आर्य माडल हाई स्कूल फगवाडा की छात्रा कु सुषमा जोशी ने द्वितीय व्यक्तिगत पुरस्कार प्राप्त किया। देवराज गर्ल्ज-हा सै. स्कूल जालन्धर की छात्रा कु रेणु कमल को तृतीय व्यक्तिगत पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रतियोगिता मे भाग लेने वाले सभी प्रतियोगियो को प्रोत्साहित करने के लिये वैदिक साहित्य तथा प्रमाणपत्र दिए गए। रजिस्ट्रार श्री धर्म प्रकाश दत्त जी ने सभी प्रतियोगियो को आर्य विद्या परिषद् पंजाब की ओर से पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र प्रदान किए। समस्त कार्यक्रम मनोरंजक एव उत्साहवर्धक रहा।

आर्य माडल हाई स्कूल फगवाडा के प्रिंसीपल श्री एम आर भाटिया ने अपने स्कूल के प्रधान तथा मैनेजर तथा स्टाफ के सहयोग से प्रतियोगिता मे पधारे महानुभावो के लिए अल्पाहार तथा सायकालीन चाय आदि का बहुत ही अच्छा प्रबन्ध किया। स्कूल के स्टाफ ने भी अपना सराहनीय योगदान दिया। समारोह के अन्त मे रजिस्ट्रार श्री धर्म प्रकाश जी दत्त ने स्कूल के प्रिंसीपल, पदाधिकारियो, निर्णायक महोदयो तथा स्कूल के स्टाफ का प्रतियोगिता को सफल करने के लिए सराहनीय सहयोग के लिए धन्यवाद किया।

—वीरेन्द्र शर्मा
व्यवस्थापक

आर्य समाज कठुआ में वेद प्रचार

आर्य समाज कठुआ में गत दिनो वेद प्रचार बडी धूमधाम से किया गया। जिसमे जम्मू से महात्मा गोपाल भिक्षु जी और श्री विद्याभानु शास्त्री जी के साथ "कालीदास, देवीदास" भजन-मण्डली ने भाग लिया और पंजाब से इस अवसर पर श्री विजय कुमार शास्त्री के साथ प धर्मपाल जी ने वेद प्रचार और स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

—अञ्चल सिंह
मन्त्री

भगवती कन्या गुरुकुल जसात

जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि कन्याओ की आर्ष शिक्षा दीक्षा के लिए हरियाणा के गुडगावा जनपद मे एक गुरुकुल का शुभारम्भ किया गया है जिसकी स्थापना मे वयोवृद्ध मनीषी नेता, वैदिक यतिमण्डल (दीनानगर) के अध्यक्ष सन्यासिवर्य श्री स्वामी सर्वानन्द जी का आशीर्वाद है।

इस विद्यालय मे प्रथमा से आचार्य पर्यन्त सस्कृत परीक्षाओ का प्रबन्ध है, जिन्हे महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से मान्यता दिलाने का प्रावधान है। कथित गुरुकुल श्रीमद्दयानन्द आर्ष विद्यापीठ झज्जर से सम्बद्ध है।

दुग्ध और भोजन शुल्क सौ रुपए मात्र मासिक है। सौ रुपए ही प्रवेश शुल्क है। मध्यमा से आचार्यान्त परीक्षाओ के प्रपत्र पूरित किए जा रहे हैं। विलम्ब शुल्क से बचने और इस वर्ष को भी सार्थक करने के लिए सजग रहिये। शीघ्र सम्पर्क करिए।

पहुच मार्ग —रेवाडी-झज्जर बस मार्ग से पाल्हावास, नूरगढ मोड।
रेल से दिल्ली वा रेवाडी इछापुरी स्टेशन

—आचार्य सुमेधा कामजित्

महर्षि दयानन्द के भक्त, प्रशंसक तथा सत्संगी

स्वामी जी के सम्पर्क मे आने वाले उन पच्चास भक्तो और सत्संगियो के जीवनवृत्त तथा महर्षि से उनके सम्बन्धो की विवेचना करने वाला यह अद्भुत शोध ग्रन्थ अभी हाल ही मे प्रकाशित हुआ है। दुर्लभ चित्रो से सुशोभित इस ग्रन्थ का मूल्य मात्र 20 रुपये है किन्तु 20 रुपये मनीआर्डर से निम्न पते पर भेज कर आप इसे बिना डाक व्यय दिये प्राप्त कर सकते हैं—

—डा भवानीलाल जी भारतीय,
जी-3 पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

शुद्धि समाचार

हिन्दू शुद्धि सरक्षणीय समिति हरियाणा कार्यालय आर्य समाज मन्दिर समालखा(करनाल)ने दि 14 11 86 को आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्वावधान में गाव दिनोद व चायग मे यज्ञ हवन किया गया सेवानन्द सरस्वती महामन्त्री हिन्दू शुद्धि समिति हरियाणा की अध्यक्षता में यवनो नटो (वादियो) ने वैदिक धर्म ग्रहण किया और वैदिक धर्म का प्रचार किया गया स्वामी सेवानन्द ने कहा कि मुसलमानो से सतर्क रहना चाहिए और गाव के लोगो ने शुद्ध हुए परिवारो को इज्जत दिलायी और रोटी बेटी का सम्बन्ध किया गया। इस कार्य मे मांगे राम उपदेशक भालोट, और स्वामी आत्मानन्द जी ने सहयोग दिया।

साहित्य परिचय

यज्ञ महाविज्ञान (यज्ञ सम्बन्धी 17 लेखो का संग्रह)

श्री प वीरसेन वेदश्रमी वेद विज्ञानाचार्य वेद सदन महारानी पथ-इन्दौर (म. प्र) ने यज्ञ महिमा पर कई पुस्तकें लिखी हैं। अब उनकी एक नई पुस्तक "यज्ञ महा विज्ञान" प्रकाशित हुई है। जिसमें यज्ञ विज्ञान सम्बन्धी 17 लेखो का संग्रह है।

प्रस्तुत पुस्तक में आचार्य श्री वेदश्रमी जी ने सर्वसाधारण की सुगमता से जानकारी के लिए अग्निहोत्र का अवलम्बन करके यज्ञ विज्ञान के सभी पहलुओं पर बड़े ही सरल रूप में प्रकाश डाला है।

यज्ञ से ही विश्व मे विविध शान्ति सम्भव है। विश्व स्वास्थ्य के लिए यज्ञ एक जीवनोपयोगी साधन है। यज्ञ से आंधी, तूफान, बाढ सूखा वृष्टि एव अनावृष्टि तथा रोगो आदि पर शीघ्र नियन्त्रण पाया जा सकता है इत्यादि विषयों पर इस पुस्तक में विस्तार से प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक की पृष्ठ संख्या 170 है इसका मूल्य 35 रुपये रखा गया है। धर्म प्रेमी बन्धु इस उपयोगी पुस्तक को अपना कर लेखक का उत्साह सम्वर्धन करें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का चुनाव सम्पन्न

प्रधान—श्री कृष्णलाल आय
वरिष्ठ उप प्रधान—प विद्याधर
उप प्रधान—श्री शशी मित्तल,
श्रीमती चादरानी शर्मा
महामन्त्री—श्री भगवान देव चेतन्य
उप-मन्त्री—श्री राम कृष्ण गौतम,
श्री सोहन लाल जमवाल
कोषाध्यक्ष—श्री अरुण सूद
प्रचार मन्त्री श्री गोबिन्द राम आय
वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी ब्रह्मानन्द
श्री कृष्णचन्द्र आय—प्रान्तीय सचालक आय वीर दल
श्री रामफल सिंह आय—सह सचालक आय वीर दल

अन्तरग के सदस्य —

स्वामी सुमेधानन्द (चम्बा), सेठ धमदास (बिलासपुर), श्री हरजिन्द्र सिंह बिलासपुर, श्री अशोक कुमार कुल्लू, श्री ज्ञान प्रकाश आय—शिमला, श्री चमन लाल आय—शिमला, श्री रोशन लाल बहल—शिमला, श्री रामानन्द—शिमला, श्री बलदेव राज कपूर—अम्ब, श्री वेद प्रकाश आय—लठियानी, श्री सोहन लाल आय—दहरा, श्री बाला राम आय राजगढ़, श्री देवेन्द्र रावल सुन्दरनगर स्वामी सुबोधानन्द, डा बालकृष्ण चम्बा—सन्तोषगढ, श्री भगवती प्रसाद पन्त चम्बा।

प्रतिष्ठित सदस्य —

डा जीवन लाल जी—मण्डी, श्री केवल राम भ्राता—मण्डी, श्री राजपाल कागडा, श्री ताराचन्द पुरी—ऊना, श्री केदारनाथ शर्मा—सुन्दरनगर।

—भगवानदेव चेतन्य
महामन्त्री

गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला झाल (मेरठ) विजयी

उत्तर प्रदेश आय प्रतिनिधि सभा ने गत अक्तूबर मास मे लखनऊ मे अपने अपने शताब्दी समारोह पर अन्त्याक्षरी का भी आयोजन किया था। जिसमे मन्त्रान्त्याक्षरी श्लोकान्त्याक्षरी एव सूत्रान्त्याक्षरी का कायक्रम निर्धारित था।

सूत्रान्त्याक्षरी मे तीन पक्ष सम्मिलित हुए एव तीनो ही बराबर रहे। श्लोकान्त्याक्षरी मे समयाभाव के कारण जय पराजय का निणय नही हो सका। मन्त्रान्त्याक्षरी मे अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी गुरुकुल एटा को 12 से परास्त कर गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ विजयी एव प्रथम रहा।

—आचार्य

आर्य समाज संगरूर में वेद प्रचार

आर्य समाज मन्दिर सगरूर मे ऋषि निर्वाण दिवस लाजपतराय आर्य कन्या विद्यालय के प्रागण मे बडी धूम-धाम से मनाया गया, जिसमे विद्यालय की छात्राओ ने "सास्कृतिक कार्यक्रम" प्रस्तुत किया व श्री धर्मवीर जी शास्त्री ने ऋषि के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए "ऋषि का स्त्री जाति पर उपकार" पर अपना प्रवचन दिया।

सभी भाग लेने वाली छात्राओ को महाशय मोतीराम जी प्रधान द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए। उत्सव में काफी मात्रा मे आर्य जन उपस्थित थे। आर्य समाज भवन पर दो दिन दीपमाला की गई।

—अशोक आर्य
मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा नवहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250

रजि. नं. पी जे.एल 55

वर्ष 18 अंक 37 29 मार्गशीर्ष सम्वत् 2043 तदानुसार 14 दिसम्बर 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे(वार्षिक शुल्क 20 रुपये).

सर्व-रक्षक प्रभु

लेखक—श्री हरिशरण सिद्धातालंकार'

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय स्याम पतयो रयीणाम् ।।

ऋग्वेद 10 121.

प्रजापते—प्रजा के रक्षक प्रभु ?
एतानि, तानि—इन, (और) उन
अर्थात समीप और दूर वर्तमान
विश्वा—ससार मे प्रविष्ट
जातानि—(भिन्न-2 योनियो मे)
प्रादुर्भूत हुए (प्राणियो की)
त्वत्, अन्य —(तेरे से भिन्न कोई
भी और)
न परिबभूव—रक्षा करने वाला
नही है।
यत कामा —जिस 2 पदार्थ की
कामना वाले (होकर हम)
ते जुहुम —तेरी आराधना करते हैं।
तत, न अस्तु—वह, हमे, प्राप्त
होता है।
वयम्—हम (उत्तमकर्म तन्तु का
विस्तार करने वाले)
रयीणाम—धनो के
पतय —मालिक, (न कि दास)
स्याम—हो

सूचना

वय शब्द का कोषान्तगत अथ वेञ् तन्तुसन्ताने धातु से बना कर किया गया है।

1. मन्त्र का ऋषि

इस मन्त्र का ऋषि 'हिरण्यगर्भ प्राजापत्य' शब्द से स्वार्थ में ष्यत् करके बना हुआ यह प्राजापत्य शब्द प्रजापति के अर्थ को ही बलपूर्वक कह रहा है। हिरण्यगर्भ का अर्थ है ज्ञानमय । एव इस मन्त्र के ऋषि का अभिप्राय हुआ "ज्ञानमय प्रजापति, जो कितना भी-ज्ञानी होता है, वह उतना ही प्रजारक्षण कर सकने वाला होता है। ज्ञान व रक्षकत्व... हितचिन्तकता में समानुपात-सम्बन्ध है। परमेश्वर पूर्ण-ज्ञानी है सो पूर्ण रूप से प्रजारक्षक है।

2. प्रजापते

वस्तुत तो ठीक-2 परमेश्वर ही प्रजापति कहलाने के योग्य है। हे प्रजापते, तेरे से भिन्न कोई भी इस ब्रह्माण्ड में प्रविष्ट व प्रादुर्भूत हुए प्राणियो को पालने वाला नहीं है। तू ही ठीक-ठीक इनकी फिक्र चिन्ता व ध्यान करने वाला है। (परि भू—फिक्र करना) तेरे से भिन्न जितने भी रक्षक हैं—फिक्र करने वाले हैं, उन सब का फिक्र करना थोडे बहुत स्वार्थ को लिए हुए होता है। माता-पिता पुत्र की फिक्र करते हैं चूकि उनको उसकी बालसुलभ चेष्टाओ से आनन्द मिलता है तथा उन्हे आशा होती है कि वार्धक्य मे वह उनका सहारा बनेगा। एक अध्यापक विद्यार्थी के हित का ध्यान करता है चूकि उसे उसका पारिश्रमिक मिलना होता है—यही हेतु वैद्य के रोगी के फिक्र करने मे है।

इसके अतिरिक्त, जितने भी ससार मे बन्धु-बान्धव, रिश्तेदार हैं, उन सबका साथ सामयिक होता है। अधिक से अधिक श्मशान में चिता पर जलाने तक वह सीमित है, उसके बाद उन का सम्बन्ध समाप्त हो जाता है। मित्रो का स्नेह भी अन्ततोगत्वा यही तक है। अर्धांगिनी होते हुए भी भार्या का सम्बन्ध भी इस समय के बाद नहीं रह जाता। परन्तु उस प्रजापति से तो जन्म-जन्मान्तरो मे भी सदा जीव की फिक्र की ही जाती है। उस प्रभु की रक्षा समय से सीमित नहीं है।

यह भी बात है कि तेरे से भिन्न अन्य सहायक—रक्षक लोग अपने ज्ञान की न्यूनता के कारण उतनी ठीक 2 फिक्र कर भी नही सकते जितनी कि करनी चाहिए। कई बार वे मोहवश भले के लिए करते हुए भी वस्तुत बुरा ही कर बैठते हैं। ज्ञान की न्यूनता लाभ के स्थान मे हानि का कारण हो जाती है। उनकी दया क्रूरता प्रमाणित होती है। परन्तु हे प्रजापते तू तो हिरण्यगभ — ज्ञानघन—ज्ञान ही ज्ञान है। तेरा ज्ञान निरपेक्ष है, पूर्ण है। अतएव प्रजामात्र का तेरा हितचिन्तन भी पूर्ण है। तू वस्तुत ही प्रजापति है, प्राणिमात्र का रक्षक है।

3. यत् कामा

जैसे एक पिता के कई बालक होते हैं, वे यदि भिन्न-2 पदार्थों की कामना से पिता के समीप पहुचते हैं, तो पिता उनकी एकदम अन्यान्य कामना को छोड कर सभी कामनाओ को पूरा करने का यत्न करता है। खिलौने के इच्छुक को खिलौना, गेंद के चाहने वाले को गद, पेन्सिल की कामना वाले को पेन्सिल, पुस्तक की आवश्यकता वाले को पुस्तक तथा वस्त्र के मागने वाले को वस्त्र देता है। ठीक उसी प्रकार प्रभो आप भी हम सब प्राणियो को, आयु, प्राण, प्रजा कीर्ति, द्रविण व ब्रह्मवचस आदि काम्य पदाथ प्राप्त कराते हैं। स्वग स्वाराज्य व पारमेष्ठ्य आदि की कामना वाले हो कर जब हम तेरे देह-स्वरूप किसी देवता की उपासना करते हैं, तो उस समय वह काम्य पदार्थ आप ही तो प्राप्त कराते हैं। (कामैस्तैस्तैर्हृत ज्ञाना प्रप द्यन्तेऽन्यदेवता गीता 7।- 20। लभते च तत कामान् मयैव विहितान्हि तान 7।22।

हाथ पैर हिलाना तो आवश्यक है। बस हम पुरुषार्थ करते हैं तो आप हमारी इच्छा को अवश्य पूर्ण कर देते हैं। यह तो आपने एक सामान्य नियम बना दिया है कि 'कृत' मैं दक्षिणे हस्ते, जयो मे सव्य आहित.,—पुरुषार्थ करो कार्यसिद्धि अवश्य होगी। अकर्मण्य को तो फल प्राप्त करना कोई दया नही है प्रत्युत उसे और अधिक आलसी बना देना है। 'कमण हस्तौ विसष्टौ'—काम करने के लिए ही आपने हाथ दिये है, और इस प्रकार स्पष्ट सकेत कर दिया है कि 'कम कर तो मैं तेरी कामना को अवश्य पूण करू गा' आप सचमुच हमारे पिता हैं, हम आपके पुत्र है। आप हमारी न्याय कामनाओ को पूण करने वाले हैं।

4 जुहुमः

ससार मे सामान्यत सब प्राणी सकाम हृदय से ही विविध देवताओ की आराधना के उद्योग मे लगे हुए हैं। हे प्रभो! वे सब देव भी तेरे ही तो शरीर है, सो उन देवो की उपासना की परम्परा तेरी ही उपासना होती है। कामना को पूण करने वाला तो तू ही होता है। उस-2 देव मे सुख प्राप्त कराने की शक्ति तूने ही रखी होती है।

विविध देवो की उपासना द्वारा विविध फलो को पाकर भी मनुष्य अन्ततोगत्वा अनुभव यही करता है कि इनसे उसको तृप्ति का अनुभव नही होता। तृप्ति का अनुभव तो दूर रहा, होता तो यह है कि उन काम्य पदार्थों की तृष्णा और आधक बढ जाती है। मनु के शब्दो मे उपभोग से कामना शान्त न होकर, घृत की आहुति से अग्नि की तरह, और अधिक प्रबुद्ध हो उठती है। (न जातु काम कामानामुपभोगेन शाम्यति। हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते) वे काम्य पदाथ हमारे सुख का साधन क्या बनते है। वे तो हमारे क्षय का हेतु हो जाते हैं। भर्तृहरि के शब्दो मे "भोगा न भुक्ता" वयमेव भुक्ताः"—हम भोगो को नही भोगत, अपितु हम ही भोगों के शिकार बन जाते हैं। तृष्णा को बढा कर हमारी अशान्ति के वे मूल होते हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

18 फरवरी1934 दयानन्दाब्द110 इतवार 7फाल्गुन सम्वत् 1990

आर्य समाज रावलपिण्डी के प्रधान पर वैहशयाना हमला

कुछ अरसा हुआ रावलपिण्डी आर्य समाज गुरुकुल विभाग के उप-प्रधान लाला बजीरचन्द जी एडवोकेट हाईकोर्ट ने रावलपिण्डी के कुछ मुसलमान युवको को आर्य समाज मन्दिर मे जुआ खेलने से रोका और उनके जुआ खेलने के दाने नाली मे फेंक दिए। तीनो मुलजमो ने प्रधान जी पर वैहशयाना हमला कर दिया और उन्होंने गन्दी गालिया दी और जख्मी कर दिया। इस पर उन मुलजमो का चालान हुआ। प्रधान जी रावलपिण्डी मे लोकप्रिय और उच्च आचार के व्यक्ति होने के कारण बहुत प्रसिद्ध हैं। इसलिए शहर मे सनसनी फैल गई। रावलपिण्डी के सिटी मैजिस्ट्रेट मिया अब्दुल समद ने तीनो को तीन तीन साल की कैद और रिहाई के बाद 500 रुपये की जमानत नेक चलनी दाखिल करने की सजा दी है।

बिहार प्रान्त के लिए रिलीफ कमेटी की अपील

लाहौर 10 फरवरी पण्डित ठाकर दत्त जी शर्मा भूचाल पीडित क्षेत्र का दौरा करने के बाद लौट आए है, उन्होने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के सामने अपनी रिपोर्ट मे देहात मे तुरन्त और ठोस सहायता पहुंचाने के लिए विशेष रूप से सभा का ध्यान दिलाया है। सभा ने सहायता का काम तीव्रगति से चलाने के लिए एक उप समिति बना दी है जिसके प्रधान ठाकुर दत्त जी शर्मा अमृत-धारा और मन्त्री प ज्ञानचन्द जी आर्य सेवक मुकरर हुए हैं यह कमेटी आल इण्डिया आर्य समाज रिलीफ सोसायटी की सहायता के लिए बनाई गई है और यह सोसायटी बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी की स्वीकृति प्राप्त कर चुकी है। पजाब भर की समाजो के नाम धन एकत्रित करने के लिए सरकुलर जारी कर दिए हैं और सभा मे धन भी आ रहा है। पण्डित ठाकुर दत्त जी ने 500 रुपया दिया है जब तक सहायता का काम जारी रहेगा तब तक 200 रुपया मासिक देते रहेंगे। राय बहादुर बदरीदास प्रधान और महाशय कृष्ण जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने 400 और 200 रुपए दिए हैं। आर्य समाज लुधियाना ने 1000 रुपया एकत्रित किया है और 250 रुपए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पास, 750 रुपए आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के पास भेज दिए। सभा की तरफ से कार्यकर्ताओ का एक जत्था 28 जनवरी को भूचाल पीडित क्षेत्र में गया था।

गुरुकुल विश्वविद्यालय काँगड़ी का वार्षिकोत्सव

स्वयं सेवको की आवश्यकता है

गुरुकुल विश्वविद्यालय कागडी का 32 वा वार्षिक उत्सव 30 मार्च से 2 अप्रैल 1934 तक मनाया जाएगा। इस अवसर पर प्रबन्ध के लिए स्वयसेवको की आवश्यकता है सब आर्य समाजो व आर्य भाईयो की सेवा मे निवेदन है कि वह पाच व अधिक स्वयंसेवक भेज कर सहायक हों। स्वयंसेवको के नाम की सूचना अपनी-अपनी आर्य समाजो के द्वारा आनी चाहिए।

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगडी

आर्य समाज डलहौजी का समाचार

ला पूर्णचन्द जी प्रधान आर्य समाज व म्यूनिसिपल कमीश्नर डलहौजी के घर 4 फरवरी 1934 को ईश्वर की कृपा से पुत्र रत्न उत्पन्न हुआ।

स्वामी दयानन्द के महाराष्ट्रीय भक्त

महात्मा ज्योति बा (जोतीराव) फुले

लेखक—डा भवानीलाल जी भारतीय

महाराष्ट्र मे सामाजिक जागृति के सूत्रधार ज्योति बा फुले का जन्म 1827 ई मे हुआ था। प्रा, कुशलदेव न इवलकर के अनुसार यद्यपि वे स्वामी दयानन्द से आयु मे तीन वर्ष छोटे थे, किन्तु सामाजिक क्षेत्र मे उन्होंने बहुत पहले ही प्रवेश कर लिया था। जिस वर्ष मे स्वामी दयानन्द ने सन्यास की दीक्षा ली, उसी वर्ष में महात्मा फुले ने पुणे मे कन्याओ के शिक्षण के लिए पाठशाला की स्थापना की थी। वे आधुनिक भारत मे स्त्री शिक्षा के जनक के रूप मे सम्मानित किये जाएगे क्योकि उन्होंने ही कन्याओ के शिक्षण के लिए सर्वप्रथम पाठशाला की स्थापना की थी। महात्मा फुले जातिगत सकीर्णता तथा पाखण्डो के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने श्रमिक एव कृषक वर्ग के उत्थान के लिए उस युग मे अनेक आन्दोलन चलाये जब कि श्रम सगठन तथा मजदूर आन्दोलन के बारे मे कोई जानता तक नही था। फुले एकेश्वरवाद मे विश्वास रखते थे किन्तु स्वामी दयानन्द की भांति वे वेद प्रामाण्य के सिद्धान्त से सहमत नही थे। उनका शास्त्रीय ज्ञान भी सीमित ही था।

जिस समय महादेव गोविन्द रानाडे के आमन्त्रण पर स्वामी जी पूना आये उस समय महात्मा फुले भी उसी नगर मे विद्यमान थे। महात्मा फुले के मराठी जीवनी लेखक धनजय कीर के अनुसार स्वामी दयानन्द के सम्मान मे जब पुणे में रानाडे तथा उनके साथियो ने एक शोभा यात्रा का आयोजन किया तो उसमे फुले भी उपस्थित थे। शोभा यात्रा के आयोजकों को यह आभास हो गया था कि पौराणिक समुदाय इस कार्यक्रम मे येन-केन प्रकारेण विघ्न उपस्थित करेगा। सम्भवतः ज्योति बा फुले तथा उनके अनुयायियो के साहस और शक्ति का अनुमान कर महादेव रानाडे ने यह ठीक समझा होगा कि यदि ज्योति बा तथा उनके साथी शोभा यात्रा मे सम्मिलित होंगे तो वे समारोह की सुरक्षा की दृष्टि से उप-युक्त होंगे। फुले भी स्वामी दयानन्द के समाज एवं धर्म सशोधन विषयक अनेक मुद्दो से पूर्ण सहमति रखते थे अतः वे 5 सितम्बर 1875 को निकाली गई इस शोभा यात्रा मे उत्साह पूर्वक सम्मिलित हुए। प्रा हरिदत्त वेदालकार के अनुसार स्वामी दयानन्द के एक ओर न्यायमूर्ति रानडे और दूसरी ओर महात्मा फुले चल रहे थे।

महात्मा ज्योति बा फुले के जीवन पर आधारित एक मराठी फिल्म के निर्माता आचार्य प्रहलाद केशव अत्रे ने स्वामी दयानन्द की शोभा-यात्रा में महात्मा फुले की उपस्थिति को प्रमुखता देकर प्रदर्शित किया है। प्राध्यापक कुशलदेव के अनुसार पुणे की पेठ जूनागज नामक बस्ती में स्वामी दयानन्द को आमन्त्रित किया गया था। सम्भव है कि दलित जातियो के बालकों की इस पाठशाला मे स्वामी जी को महात्मा फुले की प्रेरणा से ही आमन्त्रित किया गया होगा। तथापि न तो स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्रो में कहीं फुले का उल्लेख मिलता है और न फुले ने अपने साहित्य मे ही स्वामी जी की चर्चा की है। मराठी लेखक तथा स्वामी दयानन्द के प्रबल आलोचक विष्णु शास्त्री चिपलूणकर ने फुले द्वारा स्थापित सत्य शोधक समाज की चर्चा स्वामी दयानन्द की सहयोगी सस्था के रूप में की है। फुले का निधन 1890 ई. मे हुआ।

सम्पादकीय—

पंजाब और आतंकवाद

आज सारे देश में पंजाब के आतंकवाद की चर्चा होती है। बल्कि भारत से बाहिर भी दूसरे देशों में कई बार पंजाब की घटनाओं पर चिन्ता प्रकट की जाती है। गत दिनों मुक्तसर के पास 15 व्यक्ति और अब होशियारपुर जिले के खुड्ड गांव (दसूआ) के समीप एक ही समुदाय के 25 बस यात्रियों की निर्मम हत्या पर सारे देश में चिन्ता प्रकट की जा रही है। हत्यारे इतने निर्दयी हो गए हैं कि अब छोटी आयु के बच्चों और स्त्रियों को भी गोली का निशाना बनाने लग गए हैं। डाकुओं की तरह हत्यारे दिन-दिहाड़े लूट-पाट करते रहते हैं और उसके बाद गोली मार जाते हैं। कौन कहां गोली का निशाना बन जाएगा इसका कुछ भी पता नहीं। हत्यारे सरेआम घूमते रहते हैं और मौका पाकर वारदात कर जाते हैं।

पंजाब के ऐसे वातावरण को देख कर व धमकी भरे पत्रों से तंग आकर जो उन्हें अक्सर मिलते रहते हैं कुछ लोग पंजाब छोड़ कर चले गए हैं और कुछ समय पाकर धीरे-धीरे जा रहे हैं। यह स्थिति अत्यन्त सोचनीय और विचारणीय है। पंजाब की आग की चिन्गारियां अब पंजाब से बाहिर भी आने लगी हैं। कहा जा रहा है कि स्थिति को सम्भाला जा रहा है। पंजाब को गड़बड़ वाला क्षेत्र घोषित कर दिया गया है। सेना की अतिरिक्त टुकड़िया बुलवा ली गई हैं। परन्तु क्या इस प्रकार से आतंकवाद पर काबू पा लिया जाएगा? पंजाब में फिर शान्ति स्थापित हो सकेगी, यह नहीं कहा जा सकता। क्योंकि सरकार की नीति सदा ढिल-मिल नीति रही है। सरकार की पकड़ जनता पर ढीली पड़ती जा रही है। सरकार की सभी नीतियां विफल हो रही हैं। श्रीमती इन्दिरा गांधी के बाद जनरल वैद्य और दूसरे नेताओं की हत्याओं से भी सरकार ने कोई सबक नहीं लिया। अब बसों से उतार कर निर्दोष बेकसूर हिन्दुओं की हत्याएं की जा रही हैं परन्तु फिर भी सरकार कोई ठोस कदम नहीं उठा रही शायद सरकार समझती है कि अभी कुछ नहीं हुआ।

मैंने पंजाब में आतंकवाद के जन्म को देखा वह किन परिस्थितियों में हुआ। उसको किसने जन्म दिया, किस ने दूध पिलाया और किसने उसे पाला-पोसा और वह कैसे बढ़ा, यह भी सब कुछ देखा है। अब वह जवान हो गया है और शक्तिशाली रूप में सामने आ गया है इसे भी देख रहा हूं। यह वही कहानी है जैसे एक व्यक्ति के आंगन में एक किकर का पौधा ऊग आया जब वह घूम रहा था चलते-2 उस किकर के पेड़ के कोमल-2 कांटे उसके पांव में चुभे। उसने नीचे देखा परन्तु उसके कोमल-2 कांटों को देख कर कहने लगा तुम मेरा क्या बिगाड़ सकते हो। उसने उसे अनदेखा कर दिया और कुछ समय के बाद वह पेड़ बड़ा हो गया। अब उसके कांटे कोमल नहीं रहे बड़े नोकिले और जहरीले हो गए। अब जब वह घूमने निकला तो कांटों ने पैरों को छलनी कर दिया अब वह चिल्लाया परन्तु अब तो वह बहुत मजबूत पेड़ बन चुका था। जब वह छोटा पौधा था तब तो वह उसे एक झटके से उखाड़ सकता था अब नहीं,हां जड़ से काट सकता है उसके लिए भी उसे ताकत भी चाहिए और कुल्हाड़ा भी तभी उसे काटा जा सकता है।

यही स्थिति किसी रोग की,बुराईयों की और आतंकवाद उग्रवाद आदि की है। इन्हें भी यदि पैदा होते ही कुचल दें तो यह समाप्त हो जाते हैं यदि इन्हें कुछ समय के लिए छोड़ दिया जाए और उनकी ओर ध्यान न दिया जाए तो यह भी विकराल रूप धारण कर लेते हैं। यही कुछ पंजाब के आतंकवाद के जन्म के समय भी हुआ। जब धर्म के नाम पर निरंकारी और अकाली वर्करों की खूनी भिड़न्त हुई, उसके बाद, निरंकारी चीफ, निरंकारी वर्करों की हत्यायें की गई, सरकार मौन रही, फिर लाला जगतनारायण और दूसरे नेताओं की हत्यायें होने लगी। कातिलों के होंसले और बढ़े जब सरकार कातिलों को पकड़ कर फिर किन्हीं नेताओं के दबाव व प्रभाव में आकर छोड़ने लगी। पहले दो चार आतंकवादी थे परन्तु जब देखा गया कि उग्रवादियों और आतंकवादियों का सम्मान हो रहा है और सरकार उनसे डरने लगी है तो उनकी संख्या बढ़ने लगी। अब लगभग पांच वर्ष से लगातार सारा पंजाब आतंकवाद की आग में झुलस रहा है। कांटों की चुभन से सभी दु:खी हो रहे हैं। आज आतंकवाद उग्रवाद जवानी पर है। कीकर का पेड़ बड़ा हो चुका है परन्तु आज भी इसे कोई काटना नहीं चाहता समाप्त करना नहीं चाहता। कभी-2 पंजाब सरकार या भारत सरकार इसके पत्तों को या टहनियों, शाखाओं को काटने लगती है। परन्तु वह फिर ऊग आती है। यह पेड़ अब इतना मजबूत है कि यदि तने से भी इसको काट दिया गया यह फिर भी दोबारा ऊग आएगा।

यदि सरकार सच्चे दिल से चाहती है कि पंजाब से या भारत से आतंकवाद समाप्त हो तो उसको इस पेड़ को जड़ से उखाड़ना पड़ेगा। तेज और शक्तिशाली कुल्हाड़ा तने पर नहीं जड़ों पर चलाना पड़ेगा। केवल, कुचल देंगे, पकड़ लेंगे, आतंकवाद को समाप्त कर देंगे। इस प्रकार के थोथे नारों से, ब्यानों से होने वाला कुछ नहीं, जब तक सख्ती से कोई ठोस कदम नहीं उठाया जाएगा। अभी भी समय है राष्ट्र के नेताओं को दल बन्दी की नीति को छोड़ इमानदारी से राष्ट्र रक्षा के लिए जुट जाना चाहिए और आतंकवाद पर काबू पा लेना चाहिए। यदि यही स्थिति रही तो बाद में इस पर काबू पाया जाना और भी कठिन हो जाएगा और देश बर्बाद हो जाएगा।

—सह-सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

श्रीमान् जी सादर नमस्ते!

जैसा कि आपको मालूम है कि अमर बलिदानी श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस 23 दिसम्बर 1986को है इसी दिन उनकी हत्या की गई थी। उससे पहले 19 दिसम्बर को श्री रामप्रसाद जी बिस्मिल को फांसी दी गई थी। वह भी महर्षि दयानन्द के श्रद्धालु और आर्य समाज के अनन्य भक्त थे। और कहा करते थे कि वह जो कुछ भी बने हैं, आर्य समाज की कृपा से। वहीं से प्रेरणा लेकर उन्होने अपना जीवन अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए न्योछावर कर दिया।

मेरा आपसे निवेदन है कि आप रविवार 21 दिसम्बर 86 को अपनी आर्य समाज मे साप्ताहिक सत्संग के समय बलिदान दिवस मनाए। उस दिन अपने धर्म और देश के लिए अपना बलिदान देने वाले शहीदो को श्रद्धांजलि अर्पित की जाए। हम अपने शहीदो को प्राय: भूल जाते हैं। इससे बड़ी कृतघ्नता और कोई नही हो सकती। इसलिए आप 21 दिसम्बर को अवश्य बलिदान दिवस मनाए। और जिन-जिन महापुरुषो ने देश और [illegible] लिए अपना बलिदान दिया है, उन्हें स्मरण करते हुए अपनी श्रद्धांजलि उन्हे भेंट करें। आर्य समाज का इतिहास ऐसे शहीदो की गौरवमय गाथाओ से भरा पड़ा है, जिन्होंने धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राण दिए हैं। उन सब को भी उस दिन हमे याद करके देश की नई पीढ़ी को उनके पद् चिन्हो पर चलने की प्रेरणा लेनी चाहिए। आशा है आप इस ओर विशेष ध्यान देंगे और बलिदान दिवस को सफल बनाने का प्रयास करेंगे। यह आवश्यक नही कि केवल आर्य समाजी ही इस उत्सव मे सम्मिलित हो, दूसरे धर्मावलम्बी भाईयो को भी ऐसे अवसर पर बुलाना चाहिए। सिखो को भी बुलाना चाहिए कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उनके लिए क्या कुछ किया था। अपने उत्सव की कार्यवाही आर्य मर्यादा मे प्रकाशनार्थ अवश्य भेजें।

वीरेन्द्र	हरबंसलाल शर्मा	ब्रह्मदत्त शर्मा
सभा प्रधान	सभा कोषाध्यक्ष	सभा महामन्त्री

जन्म-मरण की उलझन—१२

जीवन का उद्देश्य

लेखक—प्रा श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य
साधु आश्रम (होशियारपुर)

पिछली बैठक के विचारो को सामने रख कर सगीत प्रिय जी ने मानव चोले की महिमा का एक मधुर गीत गुन-गुनाया और दूसरे गीत मे इस स्वर्ण अवसर का सदुपयोग करने वाले कुछ विशेष व्यक्तियो का गुणगान किया। मच पर आसन ग्रहण करने के अनन्तर सर्वप्रिय जी ने 'अश्वत्थे वो—मन्त्र के एक-एक शब्द को सस्वर पढ़ने हुए चौथे चरण। **'यत्सनवथ पुरुषम्'** का सगीतमय गान किया। तब आज के प्रवचन का प्रारम्भ करते हुए कहा—

मानव जीवन या इस जन्म के अनाश्र अवसर के उद्देश्य की ओर ध्यान दिलाते हुए ही मन्त्र ने कहा है—'यत सनवथ पुरुषम' अधिक से अधिक पूर्णता को प्राप्त करने का प्रयास करो। वस्तुत हमारा जीवन एक नाटक या खेल के समान है। नाटक का पात्र (अभिनेता) रोते-हसते हुये भी भीतर स न रोता है, न हसता है। वैसे नाटक के पात्र दो तरह के होते है, एक तो व जो केवल गाल बजाते है, हाथ मटकाते है, पर जिन के मन पर कुछ भी प्रभाव नही पडता। उनकी सामान्य मनोवृत्ति दृश्य के साथ तादात्म्य (मेल) नही बैठाती अत वह सफल खिलाडी नही। सफल पात्र नही हो सकता है, जिसकी बाह्य वृत्ति और सामान्य मनोवृत्ति दृश्य के अनुरूप होती है। वह सचमुच रोता है, हसता है, पुनरपि उसके रोने—हसने पर भी उस की आन्तरिक विशेष मनोवृत्ति न रोती न हसती है। वह केवल इतना विचार करता है, कि मेरा खेल अच्छा हो।

खेल मे एक अच्छा खिलाडी जैसे खेल खेल के लिए खेलता है। वह अपने साथियो से सहयोग करता है। अपने नायक की आज्ञा का पालन करता है। वह खेलाने वाले के निर्णय का आदर करता है। वह जीतने के लिए अनुचित ढग नही अपनाता, बिना झुझलाहट के अपनी हार को स्वीकार करता है। इस प्रकार वह हर तरह से अच्छे व्यवहार का प्रदर्शन करता है और जीत-हार को शान्ति के साथ सहता है, नियम भग नही करता। खेल को उतने क्षेत्र, समय तक समझता है। सदा के लिए नहीं। इसी प्रकार जीवन को भी खेल समझ कर, सुख-दु:ख को शान्ति के साथ सहना चाहिए और उसे तात्कालिक मान कर, सुख प्राप्ति एव दु ख निवृत्ति का उपाय करना चाहिए। जीत (सुख) मे अहकार करना तथा अहकारवश दूसरो पर अत्याचार करना और हार (दु ख) मे घबराना, उदास निराश हताश होना और आत्महीनता अनुभव करके अन्याय सहना उचित नही है।

अत जीवन को नाटक या खेल समझ कर उस मे हर प्रकार की कुशलता और सफलता प्राप्त करने मे ही पूर्णता कही जा सकती है। क्योकि कहा भी है, कि- परिवर्तिनि ससारे मृत को वा न जायते। जातस्तु गण्यते सोऽत्र य. स्फुरेच्च श्रियाधिक— पचतन्त्र 1,28

इस परिवर्तनशील ससार म मर कर अनेक पुन पैदा होते है। पर उत्पन्न होना उसी का ही है, जो किसी क्षेत्र मे विशेष प्रगति करता है। जैसेकि—
जातस्य नदी तीरे तस्यापि तृणस्य जन्म साफल्यम्।
यत्सलिलमज्जनाकुलहस्तावलम्बन भवति ॥1,27

नदी के किनारे उगे उस तिनके का भी जन्म सफल हो जाता है, जो कि डूबते हुए का सहारा बनता है।

यस्मिञ्जीवति जीवन्ति बहव सोऽत्र जीवतु।
वयासि किन्न कुर्वन्ति चञ्च्वा स्वोदर पूरणम् ॥

जिस के जीने से बहुत सारे जीवन का लाभ उठाते हैं, उसी का जीवन सफल है अन्यथा कौए भी जैसे—कैसे अपना पेट पाल लेते हैं। इसी का समर्थन करते हुए शकराचार्य ने अपनी प्रश्नोत्तरी मे कहा है—'धन्योऽस्ति को ? यस्तु परोपकारी—अर्थात् वही धन्य है, उसी का जीवन सफल है, जो दूसरो का भला करता है।

जब कोई व्यक्ति हर प्रकार के शोषण, अन्याय से मुक्त होकर सुख, शान्ति, आनन्द को प्राप्त करता है, तभी वह कुछ अशो मे अपने आप को पूर्ण एव तृप्त अनुभव कर सकता है। जैसे किसी खेल मे जब एक खिलाडी को खेलने का अवसर प्राप्त होता है, यदि वह वहा अपनी निपुणता एव योग्यता प्रस्तुत करता है, तो उस से उस को जहा सफलता' प्रशसा, प्रोत्साहन प्राप्त होता है, वहा भविष्य मे भी उस का अवसर सुरक्षित होता है। जैसे कि—क्रिकेट मे उच्च स्तर पर जब पहला अवसर कपिल, रविशास्त्री, शिवराम कृष्णन आदि को मिला, तब उन्होने इस अवसर का लाभ उठाते हुए केवल सभी से प्रशसा ही प्राप्त नही की, अपितु भविष्य के लिए खेल मे अपना स्थान भी सुरक्षित बनाया। ठीक इसी प्रकार का मानव जीवन के माध्यम से हमे एक ऐसा स्वर्ण अवसर प्राप्त होता है, कि इस मे जहा हम सामयिक जीवन को पूर्ण विकसित बनाने मे समर्थ हो सकते है, वहा अपने इस जन्म के शुभ कर्मो से से भावी जन्म को भी अच्छे रूप मे सुरक्षित कर सकते है। इसी मे ही किसी के जीवन के उद्देश्य की सार्थकता कही जा सकती है। अत मानव जन्म के रूप मे अपना व्यक्तित्व के विकास का एक स्वर्ण अवसर है।

मानव जन्म की सफलता का एक सरल साधन है—सेवा, जिस को प्रत्येक प्रकार का व्यक्ति अपनी स्थिति के अनुसार अपना सकता है। दूसरो के दुख म तन-मन-धन और सदभाव सद्वचन से सहायता करना ही किसी की सेवा है या जिस की जैसी जरूरत है, उस की उस जरूरत को यथा शक्ति, यथायोग्य सहायता देकर पूर्ण करना भी किसी की सेवा है। दूसरो के कष्ट, क्लेश, पीडा को दूर करना और आपत्ति मे किसी के काम आना, किसी मानव की शुभ कर्म रूपी—मूल पूजी है। जिससे वह अपने पुण्य यश का अर्जन करता है। जो न केवल समाज की समृद्धि का साधन है, अपितु कर्ता के भावी जन्म का भी मूल है। क्योकि 'परोपकार पुण्याय—पापाय परपीडनम्, कि दूसरो के भले का नाम ही पुण्य है और दूसरो को दुखी करना ही पाप है। पुण्य से ही अच्छा फल प्राप्त होता है। कर्मफल की व्यवस्थानुसार परहित सदृश शुभ कर्मो से ही शुभ फल प्राप्त होता है। तभी तो कहा है—परहित सरस धर्म नहीं भाई—तुलसी। क्योकि दूसरो की सेवा से शान्ति, सन्तोष, यश, धर्म जैसे अनेक प्रकार के मेवे प्राप्त होते हैं। अत' सेवा किसी के जीवन की सफलता और कृतकृत्यता का सरल, सच्चा साधन है, क्योकि सेवा किसी के जीवन को जहा सार्थक बनाती है, वहा इससे सेवक का जीवन ऊचा और पवित्र भी बनता है।

मानव समाज की जरूरतो की विविधता के कारण सेवा का क्षेत्र बहुत विशाल है। पर किसी की सेवा तभी चरितार्थ हो सकती है, जब किसी व्यक्ति के दिल मे दूसरो, दुखियो, पीडितो के प्रति प्रेम, दया, करुणा, सहिष्णुता और सहयोग की भावना होती है। सेवा करने के लिए व्यक्ति मे तप, त्याग, कष्ट सहन और धैर्य होना चाहिए। त्याग, कष्ट सहन और धैर्य जिस मे जितने अधिक होते हैं, वह सेवा के क्षेत्र मे उतना ही अधिक सफल होता है। एक सेवक को बहुत कुछ सहना और सुनना पडता है। इसीलिए सेवा को एक कठिन कर्म भी कहा जाता है। जैसे कि—

मौनान्मूक प्रवचनपटुर्वाचिको जल्पको वा।
धृष्ट पार्श्वे वसति च सदा दूरतश्चाप्रगल्भ।
क्षान्त्या भीरु र्यदि न सहते प्रायशो नाभिजातु,
सेवाधर्म परमगहनो योगिनामप्यगम ॥ नीति 58

मौन रहे तो मूक कहावे, प्रवचनपटु तो मुखर महान्।
पास रहे तो धृष्ट कहावे दूर रहे तो अति अनजान।
सहनशील तो भीरु कहावे, जो न सहे कुलहीन अधीर।
योगिजन को भी अति दुर्गम सेवा धर्म परम गम्भीर ॥
गोपालदास गुप्त

सेवामूर्ति के रूप मे माता का स्थान सर्वोपरि है, जिस मे सेवा का पूर्ण रूप देखा जा सकता है। इसीलिए सेवा की साक्षात् मूर्ति के रूप, मे सभी के हृदयो मे माता के लिए अगाध श्रद्धा होती है।

वस्तुत मानव जैसे अनमोल चोले को प्राप्त करके हमे सोचना चाहिए, कि हमने अपने जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए उस के पथ पर कुछ प्रस्थान किया है, या केवल हेरा-फेरी मे ही जीवन की इतिश्री मान कर बैठ गए हैं। मौत का चक्र हमे सावधान करता है, कि जिस उद्देश्य से यह मानव देह मिला है। जल्दी से जल्दी उस लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करें। न जाने किस घटना के कारण कब मौत आजाए और तब हम केवल हाथ मलते ही न रह जाए, कि हमने अभी कुछ इसका लाभ ही नही उठाया।

(क्रमश:)

मेरी विदेश यात्रा लंदन (इंगलैंड)–2

लेखक—श्री आशुराम आर्य चण्डीगढ

※

ब्रिटिश ब्राड कास्टिङ्ग कम्पनी पुरानी और प्रसिद्ध विश्व की समाचार एजेंसी है जिस का केन्द्र लन्दन में हमारे भारत भवन के पास एक पुरानी और विशाल सुन्दर भवन 'बुश' में स्थापित है। मेरी यह हार्दिक इच्छा थी कि जब मैं वेद धर्म के सन्देश को भारत से बाहर के विश्व को सुनाने के लिए निकला हू और यदि अपने देश में इस सन्देश को टैलीविजन पर दे सकता हू तो विश्व प्रसिद्ध बी बी सी में क्यों नहीं। प्रबन्ध कर लिया गया। श्रीमती सुधा और प्यारे मान्य प्रो बिसारिया जी के सहयोग से 8 अगस्त का दिन निश्चित हो गया। मैं गया और चौकी पहरे तलाशी आदि पश्चात हाल में पहुंचा तो स्वागत काऊटर पर बैठी एक भद्र देवी ने कहा कि टैलीफोन घुमाइये आपकी प्रतीक्षा हो रही है। इतने में प्रिय सुधा जी जो बेनी सन्तोष अमता की सहेली है वह आ गई और मुझे हिन्दी सैक्शन में ले गई जहा विभागाध्यक्ष डा बिसारिया जी स्वागतार्थ बाहर आये तो मिलते ही कहा कि आपको तो हम ने चण्डीगढ़ में हर जगह पाया है। यही कुछ मैंने कहा उनके दर्शन करके पहले आप चण्डीगढ़ में भारत सरकार का ओर से पब्लिसिटी डायरेक्टर थे और पजाब यूनिवर्सिटी तथा टैगोर थ्येटर में ड्रामे आदि प्रोग्राम कराया करते थे।

मेरे दो कार्य क्रम रिकार्ड किये गए एक में वेदों के उर्दू भाष्य और वेद ज्ञान दर्शन के सम्बन्ध में भेट वार्ता के साथ सामवेद गान और साम के मन्त्रों का कुछ अर्थ पाठ। क्योंकि अपने जो वेदों के भाष्य छपने के तीन भाषाओं में संस्कृत उर्दू और हिन्दी में नाम। केवल उर्दू में नहीं। उस लिए बिसारिया जी की इच्छा थी कि सामवेद जो तीनों भाषाओं में आ रहा है। उस में से आप हिन्दी भाग अवश्य सुनाए अतः उनकी इच्छा अनुसार सामवेद मन्त्र गान के साथ हिन्दी में सुनाया गया अर्थ पाठ भी।

अगले दूसरे प्रोग्राम में ऋग्वेद और यजुर्वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ भी अर्थ सहित सुनाया गया। इन दोनों कार्यक्रमों में रिकार्ड करने के पश्चात जल पानादि सत्कार के साथ भूरि भूरि प्रशसा और धन्यवाद देते हुए उन्होंने बाहर आकर विदा किया। मैंने कहा यह सब धन्यवाद उस परमेश्वर पिता का है जिस की वेदवाणी के अत्यन्त प्रेम ने मुझे आप तक पहुंचा दिया है।

इण्डिया आफिस लाइब्रेरी

लन्दन की यह प्रसिद्ध लायब्रेरी जिसे विदेशी आक्रमणकारियों की लूट-पाट से बचाकर भारत का महान् और प्राचीनतम साहित्य अमूल्य कोष अंग्रेजी हुकूमत ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना लेकर अपना राज्य रहते भारत से ले आती रही है। यह लाखों पुस्तकें बड़े-बड़े विशालकाय ग्रन्थों से लेकर छोटी-छोटी अनुपम किताबें एक अरब सतानबे करोड़ उन्तीस लाख पच्चास हजार वर्षों की प्राचीन मानव सृष्टि के अदभुत सभ्यता और वैदिक सस्कृति के अध्ययन के लिए सम्पन्न देश देशान्तरों के विद्वान लोग अनुसधान के लिए इसमे आकर कई कई सप्ताह मास ठहर कर पढते रहते है। जो 9बजे प्रात से साय 6बजे महन्त विश्राम आरविन हाउस फिरोज रोड पर बुश के साथ विक्टोरिया की मूर्ति के साथ खुली रहती है। मेरे प्यारे भाई राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने यह कह रखा था कि आप जब लन्दन जाए तो इण्डिया आफिस लायब्रेरी में अवश्य जाये। यहा की एक लायब्रेरी के इन्चार्ज श्री मित्तल जी और बहन ऊषा त्रिपाठी की सहायता से मेरा प्रवेश इस में हो गया। और उर्दू विभाग के अध्यक्ष श्री सलीम करेशी जी ने जिस प्यार और अत्यन्त आदर से मुझे अपनाया एक भारतीयता नाते मैं उसे कभी नही भूल सकता। सब प्रथम यह जानकर और देख कर वेदों के उर्दू भाष्य को गद्-गद प्रसन्न होते हुए और शत-शत बधाई देते हुए यह कहा कि हमारी लायब्रेरी के लिये वेद मुकद्दस का यह उर्दू भाष्य एक अनुपम नया सरमाया है। सिर माथे पर लगाया और कहा कि इस का बिल दे दीजिए।

आर्य समाज का प्रसार

10 अगस्त को फिर आर्य समाज आरनाईल रोड ईलिङ्ग में मेरा दूसरा व्याख्यान हुआ। इस दिन भी किसी आर्य पुरुष की पुण्य स्मृति में यज्ञ हुआ और उनके परिवार जो यजमान बने थे सत्सग के पश्चात प्रीति भोजन भी उन्होंने दिया। आर्य भाई बहनों की काफी रौनक थी आज भी आय समाज के प्रधान श्री धर्मवीर पुरी और मन्त्री श्री अमरनाथ गिरधर ने उर्दू वेद भाष्य की सराहना करते हुए फिर मेरा स्वागत किया और अपनी भेंट रूप में सत्कार भी किया श्रीमती सदगन्ना कौशल आदि ने भी। साऊथ ऐम्पटन से मेरे प्यारे जमाता श्री अरविन्द जी और बेटी सुकृता भी विशेष रूप से केवल मेरे प्रवचन श्रवण की प्रबल इच्छा से आए।

इन देशों में सप्ताह के पांच दिन में कोई धर्म प्रचार कथा वार्ता और सत्सग की बात तो हो नहीं सकती सोमवार से शुक्रवार तक एक मशीन की तरह लोग चलते रहते है। अवकाश बिना नहाये धोये प्रातः 7 बजे से घर के सभी सदस्यों का निकलना आरम्भ होकर वापिस पाच बजे से आना होता है। फिर घर का सभी प्रबन्ध भोजन सफाई बच्चों की देख भाल भोजन बनाना खाना घरेलु वस्तुओं की आवश्यकताओं के लिए मारकीट जाना वस्त्र आदि धोना बाल्कि आदि की देखभाल और कुछ नहाना धोना भी यह सभी कार्य शाम को तौर कर ही किए जाते हैं प्रातः तो नहाते भी नहीं हैं हा कुछ लोग शाम को आकर नहा लेते हैं फिर टी वी पर मनोरंजन करते हुए सो जाते हैं प्रातः फिर वही यान्त्रिक जीवन आरम्भ हो जाता है।

दो नई आर्य समाजें

17 अगस्त के रविवार को श्रीमती दयावती कपूर श्री कृष्ण लाल कपूर के निमन्त्रण पर साऊथाल की नई समाज में मेरा वेद उपदेश था जिस का नाम अभी इन नये आय बहन भाईयों ने सनातन वैदिक समाज रखा है यहा पर जालन्धर लुधियाना और देहली के अनेक भाई बहनों से भेंट हुई। सब श्री जगमोहन जी बलदेव महता, जगदीश अग्रवाल श्री गुप्ता जी और कुन्दन लाल चौधरी जी बड़े उत्साह और जोश के साथ काम करना चाहते हैं और मन्दिर के लिए कोई मकान खरीदना भी। पर अभी तो किसी सज्जन पुरुष के श्रद्धा से दिए हुए एक कमरे में सत्सग लगा रहे हैं। आज के यज्ञ के यजमान बहन दयावती श्री कृष्णलाल कपूर थे जिन्होंने बड़े आदर और श्रद्धा से यज्ञ किया। अम्बाला छावनी से यह यजमान परिवार है जिन के यहां अम्बाला में भी बहुत वर्ष पहले यजुर्वेद का पारायण यज्ञ भी कराया था इस सत्सग में मेरे प्यारे आर्य पण्डित विरीश कौसला भी आये हुए थे मिलकर और यह सुन कर अत्यन्त हर्ष हुआ कि उन्होंने एक नई आर्य समाज विडिल सैक्टर में खोली है जो अभी प्रति दूसरे सप्ताह सत्सग लगाती है। साऊथाल का यह सत्सग प्रात 11 बजे से 1 बजे तक होना था इसलिए इससे से निपट कर आय समाज विडिल में जाने के लिए तैयार हो गए और प्रिय कुन्दन लाल चौधरी की गाड़ी में कपूर परिवार और हम बैठ गए। मार्ग में चलते ? उन्होंने एक रचना सुनाई जिस में भारतीय परिवारों की समस्या का एक रूप प्रवास के इन देशों में सामने आता। [illegible] कि मैं एक अ[illegible] हू इस नाते मैं आप को भारतीय बच्चों के आचार विचार की अवस्था का एक उदाहरण देता हू कि [illegible] किनने [illegible] । [illegible] एक भारतीय मा अपने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (बमा [illegible]) [illegible] मे मिलो [illegible] कि वचान [illegible] 18 वाम [illegible] समय [illegible] आय समाज मन्दिर आ गए और [illegible] [illegible] [illegible] सपरह [illegible] अमेरिका [illegible] उनका स्वागत और [illegible] दिन [illegible] कल के सभा [illegible] [illegible] लैक्चर [illegible] उनके लैक्चर [illegible] बहुत पसन्द किया। [illegible] विशेष कर देविया थी जिन्होंने अंग्रेजी भाषा न समझने के कारण उपरामता प्रगट की जो स्वाभिक थी हमारे आचार्य महर्षि दयानन्द तो स्वदेश भाषा के तो महान समर्थक और महान प्रवर्तक ही थे पर आगे आकर हमारे देश के नेता महात्मा गांधी ने तो कह दिया अपनी सभाओं में अपने लोगों में परस्पर विदेशी भाषा बोलना एक पागलपन है हा यदि हमारी सभाओं में कुछ मूल निवासी में सदस्य बनाये गये हैं न वे आते है फिर विदेशों में वैदिक धर्म प्रचार का क्या अर्थ है। यह तो ठीक है कि हजारों मीलों की दूरी अपने धर्म और सस्कृति की रक्षा के लिए हमारे सत्सग और सम्मेलन होते रहते हैं जो यहा के आर्य बहन भाईयों का प्रशसनीय कार्य है किन्तु इस वेद धर्म का प्रसार विदेशों में तो नही हो रहा जब तक कि यहा के मूल निवासियों में प्रचार न हो। इस पर तो विचार करना ही होगा। इसमें पूर्व प्रधान प भारद्वाज का प्रवचन भी हुआ था।

(क्रमश)

समाचार और विचार

टोरन्टो (कनैडा) में विशाल आर्य समाज मन्दिर की योजना

अमेरिका के न्यूयाक म प्रधान आर्य समाज श्री पुरषोत्तमराम कपूर मन्त्री श्री जिज्ञासु जी श्री भण्डारी जी, करनार सिह बबर, ब्रह्मचारी डा सन्तोष, और रामलाल जी आदि जहा प्रचार मे अग्रसर है वहा वाशिगटन मे श्री कृष्ण स्वरूप जी महरा और मैरी लैण्ड म श्रीमती उमा सैनी श्री केशव जी पुरे परिवार के साथ दिन रात वेद धम प्रचार मे जुट रहे है। श्रीमती सुभाष श्याम महाजन और इनके बडे भाई गायन आचार्य ज्ञानी महाजन जो इनके सहायक है, वेनी उमा सैनी वाशिगटन यूनिवर्सिटी भाषा विभाग मे प्रोफैसर है, इन्होने हवन सन्ध्या भजन आदि की व्याख्या हिन्दी अग्रेजी मे एक सुन्दर पुस्तक के रूप मे तैयार करके वहा के भारतीय परिवारो की एक बडी आवश्यकता को पूरा कर दिया है।

शिकागो मे श्रीकृष्ण अग्रवाल, श्री गणपत राम महाजन, श्री भगत जी और वीरेन्द्र जी के प्रयत्नो से शीघ्र ही आर्य समाजो का निर्माण हो जाएगा। ऐसी प्रेरणा अपने व्याख्यानो मे देकर मैंने कनैडा देश मे प्रवेश किया जहा टोरन्टो मे आर्य समाज के अग्रसर कार्यकर्ता श्री अमरचन्द ऐरी प्रधान और मन्त्री सुर्दशन बेरी, बलदेव राज गुप्ता आदि सब मिल कर एक विशाल आर्य समाज मन्दिर बनाने की योजना पर कटिबद्ध हैं जिसके लिए 35 लाख रुपये से 2 एकड भूमि खरीद ली है। इसी तरह मिसीसागा मे आर्य समाज का प्रथम वार्षिक उत्सव वहा की कारपोरेशन की मेयर कैनेडियन दबी की अध्यक्षता मे मनाया गया जिसने अपने अध्यक्षीय भाषण मे आर्य समाज के सावभौमिक प्रसिद्ध दस नियमो को पढ कर आर्य समाज और उसके सस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द को भरपूर श्रद्धाञ्जलि भट की। टोरन्टो आर्य समाज के साप्ताहिक सत्सगो और निरन्तर दो सप्ताह के पारिवारिक सत्सगो मे मेरे बीस व्याख्यान हुए जिस से वैदिक धर्म प्रचार की धूम मच गई। वापसी पर फिर न्यूयाक आर्य समाज मे दो व्याख्यान दिये वहा से प्रस्थान कर लन्दन आर्य समाज मे 19 अक्तूबर को मेरा अन्तिम प्रवचन हुआ। इस समाज के नये चुनाव मे फिर प्रो सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज प्रधान और श्री धर्मवीर पुरी और दूसरे साथियो के साथ नई प्रचार योजनाओ के साथ आर्य समाज के प्रसार मे तत्परता स बढ रहे हैं। बहन सावित्री चोपडा जी तो देवियो मे वेद पाठ के सत्सगो से वेद धर्म प्रचार का एक ठोस कार्य कर रही है। परमेश्वर इनको बल प्रदान करे।

कुछ टैलीफोन जानकारी के लिए दे रहा हू ताकि सब को सुविधा हो।

लन्दन आर्य समाज 01-864-409 बरमिंघम, प्रधान गोपाल चन्द्र 021-553 2191।

न्यूयार्क मन्त्री 718-445-5999 प्रधान 718-479 0152 वाशिगटन 703-573-1751।

मैरी लैण्ड आर्य समाज (यू एस ए) 301 762-8980।

शिकागो महाजन313-281 3601 टोरन्टो प्रधान 416-291-1949।

—आशुराम आर्य वेद धर्म प्रचारक
1594 7 सी चण्डीगढ 160019

सम्पादक के नाम पत्र

दीपावली कार्ड के लिए धन्यवाद

आदरणीय प्रधान जी!

सादर नमस्ते!

दीपावली के शुभ अवसर पर आप का भेजा अत्यन्त सुन्दर कार्ड मिला। एतदर्थ आप सभी लोगो को धन्यवाद। मैं अपनी ओर से और बिहार के सभी आर्य, सदस्यो की ओर से आप सभी भाईयो और बहनो के सुख शान्ति और आनन्द के साथ सर्वांगीण विकास निमित्त परम पिता परमात्मा मे प्रार्थना करता हू।

आप सभी लोगो का शुभचिन्तक
—डा दुखन राम

हिन्दू पर्व समिति द्वारा

पंजाब—केसरी लाला लाजपतराय का बलिदान दिवस मनाया गया

नव गठित "हिन्दू पर्व समिति तिलकनगर क्षत्र के तत्वावधान" मे एक गोष्ठी पजाब केसरी लाला लाजपतराय की पुण्य स्मृति मे दिनाक सोमवार 17 नवम्बर 1986 को गीता भवन, तिलकनगर नई दिल्ली—18 मे आयोजित की गई। इसका सन्निध्य श्री खैरायती लाल सच्चर, प्रसिद्ध समाज सेवी ने किया। काव्य पाठ श्री मनोहर लाल "रत्नम्" मन्त्री दिल्ली साहित्य समाज ने किया। डा चन्द्र मोहन चमोली, प्रधान, दिल्ली साहित्य समाज ने बताया कि लाला जी पर ग्रन्थ कम उपलब्ध हो पाते हैं। अत भविष्य मे ऐसे छोटे-2 ग्रन्थ छाप कर जनता को इस प्रकार के महापुरुषो की जानकारी दी जानी चाहिए। वीर भान वीर सम्पादक "हेरावाल एव सखो सरवर पत्रिका" ने पिछले इतिहास को दोहराते हुए बताया कि लाहौर मे महात्मा गाधी ने ही लाला लाजपतराय द्वारा चलाये "लोक सेवक मण्डल" का 1921 मे लाजपत भवन मे उद्घाटन किया था, और लाला जी एक मेधावी छात्र थे, छात्रवृत्ति पाकर मैट्रिक के पश्चात् गवर्नमैंट कालेज लाहौर मे पढते रहे और पजाब हाईकोर्ट की प्रैक्टिस को छोडकर आर्य समाज डी ए वी. कालेज की सेवा के अतिरिक्त स्वतन्त्रता आदोलन मे कूद पडे थे। माण्डले जेल से वापिस आने पर इस काम को आपने तीव्र गति से जारी रखा। जब जापान से अमरीका पहुचे तो 1914-19 का प्रथम महान् युद्ध आरम्भ हो गया और ब्रिटिश सरकार ने उनको भारत नही आने दिया। जब वापस लौटे तो 1928 को साईमन कमीशन का विरोध करते हुए जख्मी हो गए और 17 नवम्बर 1928 को शहीद हुए। श्री विष्णुगुप्त शास्त्री ने भी उनकी वन्दना के शब्द पढ कर सुनाए, जो मातृ भूमि को सम्बोधित करके लाला लाजपतराय ने कहे थे।

अन्त मे सरक्षक श्री ओम् प्रकाश महलानी एव श्री लेखराज ग्रोवर ने सब महानुभावो का धन्यवाद करते हुए शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम समाप्त किया।

उनके द्वारा प्रदर्शित राह पर हमें अब भी चलने की आवश्यकता है।

—वीर भान वीर
सयोजक

वेद में अनित्य इतिहास नहीं

25-11-86 को आर्य समाज, 22-ए, चण्डीगढ मे आयोजित विश्व वेद परिषद् की बैठक मे वाराणसी से पधारी मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल की प्राचार्या डा पुष्पावती जी ने बताया कि वेदो मे नित्य इतिहास है, अनित्य इतिहास नही। नित्य इतिहास के रूप मे महर्षि ने सृष्टि उत्पत्ति का विवरण दिया है। वास्तव मे यही नित्य इतिहास है। सृष्टि की उत्पत्ति प्रक्रिया प्रत्येक कल्प मे एक जैसी ही रहती है। उत्पत्त्यनन्तर मे सृष्टि क्रम उन्ही नियमो से चलता है जैसे कि पहले चला था और अब भी चला रहा है। इतिहास की नित्यता का यही स्वरूप है।

इतिहास का अर्थ है इति-ह-आस अर्थात् यह वृत्त ऐसा है। इतिहास में सब तथ्य प्रामाणिक होने चाहिए। वेद में वर्णित सृष्टि प्रक्रिया पूर्णतया वैज्ञानिक नियमो (ऋत व सत्य) पर आधारित है। अत: यह प्रामाणिक तथ्यो मे युक्त है। तथा 'यथा पूर्वमकल्पयत्' के अनुसार प्रत्येक सृष्टि के आदि, मध्य व अन्त मे आवृत्ति होती है और होती रहेगी। इसीलिए यह नित्य है। वेद मे नित्य इतिहास के मन्तव्य के आधार पर ही हम वेद से लाभ एव व्यवहारोपयोगी ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, अत: वेद मे नित्य इतिहास की मान्यता सर्वथा समीचीन व स्वीकरणीय है।

—आशुराम आर्य
महामन्त्री

आर्य समाज शास्त्री नगर जालन्धर का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर शास्त्री नगर आ बस्ती गुजा, जालन्धर का वार्षिकोत्सव 24-11 86 से 30-11 86 तक बड़े समारोह से मनाया गया। प्रतिदिन प्रातः हवन यज्ञ 8 से 9 बजे तक होता रहा। तत्पश्चात प श्रीराम जी भजनोपदेशक के सुन्दर तथा मनोहर भजन होते रहे तथा मान्य प निरञ्जनदेव जी इतिहास केसरी महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के सुन्दर एव प्रभावशाली व्याख्यान होते रहे। यज्ञ की पूर्णाहुति 30-11-86 को पड़ी। प वेद प्रकाश जी उपदेशक ने ब्रह्मा के रूप से कार्य किया और प निरञ्जनदेव जी ने यजमानो को आशीर्वाद दिया।

उत्सव 29व30-11-86 दो दिन तक बड़ी धूमधाम से चलता रहा। उच्च कोटि के विद्वानो तथा भजनोपदेशको द्वारा जनता को बहुत लाभ हुआ। प धर्मदेव आर्य सहायक वेद प्रचाराधिष्ठाता ने 30-11-86 को प्रभावशाली व्याख्यान दिया।

इस उत्सव मे भिन्न-2 स्कूलो के छात्रो ने सगीत प्रतियोगिता में भाग लिया। आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ मिलटन माडल स्कूल बस्ती गुजा, गे लार्ड माडल स्कूल बस्ती गुजा, जे के एण्ड जिल के स्कूल बस्ती नौ के बच्चो ने बढ-चढ कर भाग लिया। आर्य कन्या हाई स्कूल की मुख्याध्यापिका श्रीमती हर्ष अरोडा तथा मिलटन माडल स्कूल की मुख्याध्यापिका ने बहुत सहयोग दिया।

आर्य समाज शास्त्री नगर की ओर से विधवाओ तथा निर्धन स्त्रियों को हमारी आर्य समाज के प्रधान श्री रामलुभाया जी नन्दा (मैनेजर आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ) ने रजाईया तथा कम्बल बांटे। आर्य समाज की ओर से क्षेत्र के निर्धन लोगो को सरकार की ओर से कर्जे के रूप मे धन दिलवाया गया तथा उनकी मदद की गई, ताकि वे अपना कारोबार चला सकें।

रविवार दिनाक 30 नवम्बर 86 को उत्सव के पश्चात विशाल ऋषिलगर का आयोजन किया गया जिसमे लगभग 1000 लोगो ने भोजन किया। यज्ञ शेष शुद्ध देशी घी से बनाया गया तथा ऋषि लगर में अन्य पकवानो के साथ खीर का भी प्रबन्ध किया गया। इसमें हमारी आर्य समाज के जहा सभी सदस्यो का पूरा सहयोग रहा वहा हमारे प्रधान श्री रामलुभाया नन्दा जी के ही प्रयासों से यह सफल रहा।

आर्य समाज शास्त्री नगर की ओर से वेद प्रचार विशेष के रूप मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को 1500 रुपये दिए गए। यह राशि प धर्मदेव आर्य स अधिष्ठाता को भेंट की गई। यह 1500 रुपये की राशि श्री रामलुभाया जी नन्दा ने आर्य समाज की ओर से भेंट की।

हमारी आर्य समाज की प्रगति एव सफलता आपके आर्शीवाद एव सहयोग से है और इसमे हमारी आर्य समाज के प्रधान श्री रामलुभाया जी नन्दा का पूरा पूरा प्रयास है। ऐसे प्रधान प्रभु करे अन्य आर्य समाजो को भी मिलें ताकि आर्य समाज का अधिकाधिक प्रचार हो सके। हम सब सदस्य एव अधिकारी श्री नन्दा जी के नेतृत्व मे उनको पूरा सहयोग देते रहे।

—ज्ञानचन्द नन्दा
महामन्त्री

[●]

आर्य समाज हबीब गंज अमरपुरा लुधियाना की ओर से पारिवारिक सत्सग

आर्य समाज हबीब गंज लुधियाना की ओर से समय-समय पर पारिवारिक सत्सग किये जाते हैं जिससे मोहल्लो, मे यज्ञ तथा वैदिक धर्म का प्रचार होता है। 16-11-86 को भक्त ज्ञानचन्द जी के घर पर सत्सग हुआ था। 30-11-86 रविवार को हबीब गंज अमरपुरा में श्री बचनसिंह जी भक्त के घर में एक विशाल पारिवारिक सत्सग का आयोजन किया गया। यज्ञ कुमारी कमलेश आर्य ने कराया। श्री बचनसिंह भक्त तथा उनके सभी सम्बन्धी परिवारों ने यज्ञ मे शामिल होकर बड़े प्रेम और श्रद्धा से यज्ञ मे आहुति डाली। प्रभु भक्ति के भजनो के पश्चात् श्री आत्मानन्द आर्य अधिष्ठाता आर्य वीर दल पजाब ने यज्ञ की महिमा तथा पारिवारिक सत्सग के लाभ बताते हुए कहा कि अगर हम अपने परिवार को सुखी बनाना चाहते हैं तो अपने घरों मे यज्ञ तथा सत्सग करायें, सभी परिवारों ने अपने घरो में सत्सग कराने की इच्छा प्रगट की। शान्ति पाठ तथा यज्ञ शेष के पश्चात् कार्यवाही समाप्त हुई।

—रविन्द्र आर्य-उपमन्त्री

बेरोजगारी

लेखक श्री सुरेश कुमार जी, लैक्चरार
ग सीनियर स्कूल मलोड हमीरपुर (हि प्र)

★
★★

मेरी तदबीर, मेरा जनू सब ठहरे हुए हैं इस तरह।
राही कोई राह पे सुस्ता रहा हो जिस तरह॥
दलीलो मे कुछ कशमकश का है सिलसिला।
किसी लिबास की उधड़-बुन हो जिस तरह॥
इक पल उम्मीद का दूसरा असमजस मे यू।
अभी बरसात थी, अभी धूप हो जिस तरह॥
यू बैठा रहता हू लेकर खामोशी को मैं।
पाव मे बेड़िया और हाथ खाली हो जिस तरह॥
वक्त लेगा करवट जरूर यह सोचकर चल कुमार।
हर मुश्किल से हो के दरिया का गुजर जिस तरह॥

इन्दिरा कालोनी लुधियाना मे पारिवारिक सत्सग सम्पन्न

26-11-86को आर्य युवक सभा लुधियाना की ओर से श्री सुभाष जी शर्मा के निवास स्थान इन्दिरा कालोनी, लुधियाना में पारिवारिक सत्सग [illegible] प सूर्य प्रकाश जी, विद्यावाचस्पति एम ए पुरोहित, आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना ने यज्ञ सम्पन्न कराया, नव दम्पति श्रीमती एव श्री सुरेश जी यजमान बने। श्री किरपाराम जी आर्य ने प्रभु भक्ति के भजनो का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। श्री रोशनलाल जी शर्मा सयोजक आर्य युवक सभा पजाब ने इस अवसर पर पारिवारिक सत्सगो के महत्व पर प्रकाश डाला। आजकल परिवारो मे वातावरण बनाने के लिए यह आवश्यक है कि इस प्रकार के आयोजन [illegible] आयोजन होने चाहिए। प सूर्यपाल जी ने अपने प्रवचन मे कहा कि हमे एक ईश्वर की पूजा करनी चाहिए तथा धार्मिक कार्यो मे अधिक से अधिक समय लगाना चाहिए शांति पाठ के साथ कार्यवाही समाप्त हुई। यज्ञ शेष सभी को वितरण किया गया।

—सुरेश चन्द्र सयोजक

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

5 धन पतय स्याम

हमारे वे सेवक नहीं रहते, हम उन के सेवक बन जाते हैं। धन को अधिकाधिक सचित कर उसकी उपासना हमारा काम हो जाता है। हम क्या धन के मालिक रहते हैं, धन ही हमारा मालिक हो जाता है। हम उसके स्वतन्त्रता शून्य दास से होते हैं, हमारा सारा धर्म कर्म समाप्त हो जाता है। जिस किसी भी प्रकार धन का सचय ही हमारा काम होता है। चौबीसो घण्टे इसी काम मे जाते हैं। न पारिवारिक ? सुख न आत्मिक उन्नति न चित्त की शान्ति और न अन्य कोई सुख। बस रुपया ही हमारी रट होती है, उसी की सेवा में सारी आयु बीत जाती है। उस समय उसके पालन में हमें कुछ अनुभव होता है। उसके [illegible] का आभास होने लगता है।

6. [illegible]

हे प्रभो ! इस अनर्थ के मार्ग के आक्रमण से आप ही हमे बचा सकते हैं, आप ही हमारे पथ प्रदर्शक हैं (धनिमू—म धन के ससार के साथ मेरे मे किये जाने वाले सग्राम म मुझ अर्जुन के रथ के सारथि कृष्ण आप ही है। आप ही वस्तुत सब प्राणियो को चलाने वाले उनको रास्ता दिखलाने वाले हैं। आप ही उन्हे घुमा रहे हैं। (भ्रामयन सब भूतानि यन्त्रारूढानि मायया) आप कृपया मेरे शरीर रूपी रथ को तो इस प्रकार रास्ते पर ले चलने की कृपा कीजिए कि "मैं सदैव धन का मालिक होऊ, और वह मेरा दास। मैं उसका स्वतन्त्रतापूर्वक उत्तम कार्यों मे उपयोग करू, न कि उसका दास बन कर उसके सचय" वृद्धि व सेवन मे फसा रहू।

ससार में सभी अनर्थ इस स्वामी और दास भाव के उलटने के ही तो परिणाम हैं। मनुष्य यदि स्वामी बना रहे और कभी दास न बन जाए, तो धन उसका कभी अपकार—विनाश भी न कर सके। कोई भी व्यक्ति तब उसे अन्यान्य मार्ग से जोड़ने का प्रयत्न न करे। धर्म का ह्रास व अधर्म का प्राबल्य न हो। परिणामत ससार मे सुख का राज्य हो जाये।

प्रान्तीय आर्य युवा महासम्मेलन सौल्लास सम्पन्न युवा शक्ति राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के लिए कार्य करे

—रामचन्द्र विकल

नयी शाखाओ की स्थापना, ग्रामीण क्षेत्रो मे वेद प्रचार, सदस्यता सम्पर्क अभियान, आर्य समाजो से सक्रिय सहयोग पर बल, युवा उदघोष आजीवन सदस्य बनाने का निश्चय व स्वामी श्रद्धानन्द सचित्र टैक्ट का विमोचन।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान मे आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग के सभागार मे आयोजित 'प्रान्तीय आर्य युवा महासम्मेलन" रविवार 16 नवम्बर 1986 को श्री हीरालाल चावला की अध्यक्षता मे सौल्लास सम्पन्न हुआ। सासद श्री रामचन्द्र विकल ने युवको से अपना स्वास्थ्य सुन्दर बनाने हेतु योगासन करने पर बल दिया। उन्होने कहा कि युवा शक्ति ही राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के लिए सही अर्थों मे काम कर सकती है, इसके लिए सच्चरित्र व देश भक्त युवको का निर्माण आर्य समाज को करना है। श्री विकल ने श्रीराम के व स्वामी श्रद्धानन्द के सचित्र टैक्ट का भी विमोचन किया तथा श्री चन्द्रमोहन आर्य को उनके परिश्रम के लिए बधाई दी।

महासम्मेलन के अध्यक्ष श्री चावला ने युवको के सर्वांगीण विकास के लिए आह्वान किया उन्होने परिषद को बधाई देते हुए हर सम्भव सहयोग का आश्वासन दिया। श्री चावला ने 500 रु का सहयोग पुरस्कार हेतु भी दिया। ध्वजारोहण करते हुए डी ए वी प्रबन्धकर्त्री सभा के सगठन सचिव श्री दरबारी लाल ने कहा कि युवा शक्ति ही राष्ट्र की कर्णधार है, आज देश विषम परिस्थितियो से गुजर रहा है, राष्ट्र के नवनिर्माण मे युवको को अपना कर्त्तव्य निभाना है।

युवा सम्मेलन को डा धर्मपाल आर्य ब्र रामस्वरूप, प्रो वेदसुमन वेदालकार, श्री धर्मवीर व श्री शिवराम आर्य, श्री राजपाल आर्य, ने भी सम्बोधित किया। श्री विजयानन्द आर्य(फिरोजपुर) श्री राजेश कुमार "राज" श्री विनय आर्य का मधुर संगीत कार्यक्रम हुआ। अन्त मे आशीर्वाद स्वामी धर्ममुनि जी (बहादुरगढ) ने दिया। सचालन श्री अनिल आर्य ने किया।

श्री क्षितीश वेदालकार, ब्र रामदेवी आर्या, कु विभा आर्या, श्री रामलाल मलिक, श्री एम एल गुप्ता, बहिन रूपरेखा आदि अनेक गणमान्य आर्य नेता उपस्थित थे।

महासम्मेलन के प्रारम्भ मे योगासन, लाठी, तलवार, बाक्सिंग, जूडो-कराटे, शरीर सौष्ठव आदि का सुन्दर व्यायाम प्रदर्शन आर्य युवको द्वारा दिखाया गया।

परिषद के शिक्षको, विशेष कर्मठ कार्यकर्ताओ एव प्रतिभाशाली सदस्यो को पुरस्कृत किया गया। श्री रामनाथ सहगल जी ने महासम्मेलन की सफलता के लिए आभार व्यक्त किया।

—धर्मपाल आर्य
कार्यालय सचिव

आर्य समाज कलकत्ता का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज कलकत्ता का 101 वां वार्षिकोत्सव दिनाक 20-12 86 से 28-12 86 तक समारोह पूर्वक स्थानीय दयानन्द पार्क (मुहम्मद अली पार्क) मे समायोजित होगा। इस अवसर पर विशाल शोभा यात्रा, विविध सम्मेलन एव सौ दिव्सीय यज्ञ का कार्यक्रम है। इस अवसर पर स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती (इलाहाबाद) प्रो अनूप सिंह (देहरादून), आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री (देहरादून), ब्रह्मचारी आर्य नरेश (हरियाणा), कुवर महिपाल सिंह (बलिया) एव श्रीमती सावित्री देवी शर्मा (बरेली) के आने की स्वीकृति मिल चुकी है।

इस अवसर पर सर्वसाधारण की उपस्थित प्रार्थनीय है।

—श्री नाथदास गुप्त

—0—

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 रजि. नं. N.W/J L 55

वर्ष 18 अंक 38, 14 पौष सम्वत् 2043 तदनुसार 28 दिसम्बर 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे(वार्षिक ुल्क 20 रुपये)

पुत्र पिता का अनुगामी हो

ले —श्री पण्डित जगतकुमार शास्त्री 'साधुसोमतीर्थ'

ओ३म्

अनुव्रत: पितु: पुत्रो, मात्रा भवतु संमना ।
जाया पत्ये मधुमतीं, वाचं वदतु शान्तिवाम् ॥

अथर्व 3-30-2

शब्दार्थ—(पुत्र) पुत्र (पितु:) पिता के (अनुव्रत:) अनुव्रत—अनुगामी (और) (मात्रा) माता के प्रति (संमना.) सम्मान भाव रखने वाले (भवतु) भवतु—होवें। (जाया) पत्नी (पत्ये) अपने पति के लिये (मधुमतीम्) शहद जैसी मीठी और (शान्तिवाम्) शान्तिप्रद (वाचम्) वाणी (वदतु) बोले।

भावार्थ—प्रत्येक पुत्र अपने पिता का अनुगामी और अपनी माता के प्रति उत्तम विचार रखने वाला हो। प्रत्येक पत्नी अपने पति के प्रति और प्रत्येक पति अपनी पत्नी के प्रति मधुर एव शान्तिप्रद वार्तालाप तथा व्यवहार करे।

प्रवचन

प्रत्येक पुत्र को अपने पिता का अनुव्रती होना चाहिए। उसे चाहिए कि वह अपने पिता के अधूरे-2 कार्यो को पूर्ण करे। अधूरे अनुसन्धानो और अधूरे प्रयोगो को पूर्ण करे। इसी प्रकार उसे चाहिये कि उसके पूर्वज अर्थात् पितर—गुरुजन जिन जिन उत्तम नियमो, सिद्धान्तो, मर्यादाओ, पदार्थो, प्रदेशो और उपायो आदि-2 को खोज चुके है, उन उनका सरक्षण, प्रतिपालन, यथोचित, उपसेवन और परिमार्जन निरन्तर करता रहे। जो अज्ञात नियम, सिद्धान्त, तत्त्व, पदार्थ, प्रदेश और उपाय आदि हैं, उनका परिज्ञान, आलम्बन अनुसन्धान आदि भी प्रयत्न पूर्वक करता रहे। इस प्रकार खोज और परिशीलन करते हुए प्रत्येक पुत्र सत्य का जिज्ञासु, प्रेमी, पोषक, विधायक और व्रती बना रहे।

पिता, पितामह, प्रपितामह, ज्ञान-प्रदाता, ज्येष्ठ-भ्राता आदि गुरुजनो और पुत्र वा अनुज आदि अनुव्रतो से किसी प्रकार का द्वेष करना, अथवा उत्तम नियमो और मर्यादाओ को तोड़ना या ढोंगी और छली-प्रपची बन कर जीवन बिताना, किम्वा किसी भी प्रकार का अनुचित व्यवहार करना किसी भी पुत्र के लिये ठीक नही है। ऐसे अनुचित व्यवहारो के परिणाम तो सदा ही बुरे होत है। उचित तो यही है कि प्रत्येक पुत्र अपन गुरुजनो का अनुव्रती बने। प्रत्येक शिष्य अपने आचार्य का अनुगमन करे।

'पुत्र' शब्द का अर्थ बहुत सुन्दर और बारम्बार मनन करने योग्य है। जो पवित्रता का उद्धारक है, उसे 'पु' कहते हैं। यह त्राता अर्थात तारक है, उसे 'त्र' कहते है। इस प्रकार 'पुत्र' यह शब्द एक समस्त पद है, जो कि 'पु' और 'त्र' इन दो पदो के योग से बना है। पु+त्र—पुत्र।

जो अपने माता-पिता, गुरु-कुल, वंश और देश को पवित्रता प्रदान करता हैं और इन्हे दुःखवादो से बचाता है, ससार सागर से पार लगाता है, उसे पुत्र कहते हैं। वही 'पुत्र' नाम का सच्चा अधिकारी है। पुत्री का अर्थ भी पुत्र जैसा ही है। पुत्र और पुत्री मे केवल लिंग-भेद ही है, अर्थ भेद नही। प्रत्येक मनुष्य को उचित है कि वह देखे—आत्म—निरीक्षण करे कि वह 'पुत्र' नाम का अधिकारी है, या नही ?

सत्य की खोज, सत्य के ग्रहण और सत्य के सरक्षक की दृढ प्रतिज्ञा को 'व्रत' कहते हैं। भूखा रहने का नाम व्रत नही। जो व्रत पिता, माता और गुरुजनो का है, वही पुत्र, पुत्री, शिष्य और शिष्या आदि सन्तान-परम्परा का भी होना चाहिए। यदि कोई पुत्र अपने पिता आदि के व्रत से भिन्न व्रत ग्रहण करना चाहे, तो ऐसा करने का कोई शास्त्रीय अत्यन्त निषेध नही है, परन्तु वह अन्य व्रत उच्चतर हो। उत्कर्ष की आशा तो सभी पुत्र-पुत्रिया आदि से की ही जाती है।

पितृ वर्ग की उत्तम मान-मर्यादा के विरुद्ध आचरण तो सन्तान को कभी भूल कर भी न करना चाहिए। हा, यदि सन्तान उनसे भी बढ कर पुण्य और यश प्राप्ति के कार्य करे, तब तो सभी के लिए प्रसन्नता की बात है। अपनी-अपनी सन्तान को विद्या आदि शुभ गुणो स विभूपित हाता हुआ देखकर पितृ वर्गो और गुरुजना को सबसे अधिक प्रसन्नता होती है। श्रेष्ठ माता पिता तथा गुरुजन अपनी सन्तान की उन्नति को देख कर जलते वा कुढ़त नही। उनको तो अपनी सन्तान से पराजित होने पर भी सुख ही मिलता है।

कुसग और दोषपूर्ण शिक्षा-दीक्षा के प्रभाव से जो युवक यवतिया अपने माता-पिता आदि गुरुजनो के प्रति विरुद्ध और उदण्डतापूर्ण व्यवहार किया करते हैं, उसकी तो सर्वत्र निन्दा ही होती है। ऐसे व्यवहारो पर एक कवि का कटाक्ष देखिये—

हम ऐसे कु न कि ाबे,
का व न जप्ती समझ हैं।
कि जि का प न बेटे,
वा ा ख न्ती समझते हैं।

वही यदि सन्तान के अनुचित लालन पालन की बात है—

ब हो का औलाद मे,
मा बाप के अनतार की।
ह न ु का पिया,
ता ाम है सरकार की॥

जब माता पिता आदि गुरुजन स्वय अयोग्य हो, तब सन्तान की समुचित शिक्षा-दीक्षा कौन करे ? ऐसी स्थिति मे सुयोग्य सन्तान की आशा कैसे की जाये। सन्तान सुयोग्य तो तभी होता है, जब कि माता-पिता आदि गुरुजन भी सुयोग्य होते हैं। प्रत्येक वृक्ष अपने फलो से पहिचाना जाता है। अयोग्य सन्तान को देख कर तो माता-पिता आदि की अयोग्यता का ही परिचय मिलता है।

अयोग्य माता पिता आदि की सन्तान सदा अयोग्य ही होती हो, अथवा सुयोग्य माता पिता आदि की सन्तान सदा सुयोग्य ही होती हो, ऐसा कोई अटल नियम नही है। सन्तान के अयोग्य वा सुयोग्य होने के और भी कई कारण होते हैं। कभी कभी तो अयोग्य माता-पिता आदि की सन्तान भी सुयोग्य होती ही है। इसी प्रकार सुयोग्य माता पिता आदि की अयोग्य सन्तान भी देखने मे आती है। कहावत है 'कभी कभी आको के आम जन्म लेते है, और आमो के आक।'

प्रत्येक पत्नी को अपने पति से सदैव मधुर और स्निग्ध व्यवहार ही करना चाहिए। दोना आपस म मधुर सम्भाषण करे। मीठी वाणी मे जादू का-सा प्रभाव होता है। वाणी ही मनुष्य को घोडे पर बैठा देती है, और उसे वही गधे पर भी बैठा देती है। दाम्पत्य-जीवन की सफलता की कुजी तो मधुर बोली ही है।

कागा किसका धन हरे,
कोयल किस को दे।
मीठे वचन सुनाये कर,
जग अपना कर ले।

—— ——

18 फरवरी 1934 दयानन्दाब्द 110 इतवार 7 फाल्गुण सम्वत् 1990

दयानन्द मथुरादास कालिज मोगा

कोई शख्स मोगा गए बिना डा. मथुरादास जी के नाम का सही अन्दाजा नहीं लगा सकता। डाक्टर जी 1902 में पहले पहल मोगा में शफाखाना में गए थे। इस तरह उन्हें वहा गए 33 साल हो गए हैं। इस अरसा में उन्होंने वहा एक शानदार हस्पताल बना दिया है जिसमें हजारों मरीज आंखों के ईलाज के लिए जाते हैं। डाक्टर साहब की यह भी एक यादगार है। उनकी एक यादगार और भी है, मेरी मुराद दयानन्द मथुरादास कालेज मोगा से है। मैं मोगा कई बार जा चुका हूं लेकिन 12 फरवरी शिवरात्रि के दिन रायबहादुर बदरीदास एम ए प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब और पण्डित विशम्बरदास जी उप-प्रधान के साथ फिर मैं मोगा गया। लाहौर से आठ बजे सबह मोटरकार पर सवार होकर हम साढ़े 10 बजे के करीब मोगा पहुंचे। जिस वक्त हम वहा पहुंचे कालेज के हाल में दयानन्द बोधोत्सव मनाया जा रहा था। प्राध्यापक और विद्यार्थी भारी तादाद में मौजूद थे। मैंने भी इस अवसर पर एक छोटा सा भाषण दिया। जलसा से उठकर हम सब ने कालेज और उसके बोर्डिंग हाऊस। मिडल स्कूल और उसके बोर्डिंग हाऊस और पुत्री पाठशाला की इमारतें देखी। यह इतनी बडी और शानदार हैं कि बहुत कम संस्थाओं की होंगी। इन पर कम से कम अढाई लाख रुपया खर्च हो चुका है। यह सारी रकम डाक्टर साहेब के पुरुषार्थ से जमा हुई है। इसमें उनके अपने दान की भी एक बहुत बडी रकम शामिल है। वह सिर्फ मांगना ही नहीं जानते, देना भी जानते हैं। इसका नतीजा यह है कि उन्होंने मोगा में एक शानदार कालेज और शानदार पुत्री पाठशाला कायम कर दी है पुत्री पाठशाला मिडल तक है और उसमें इस वक्त साढ़े 300 लड़कियां पढ़ती हैं। यह नहीं कि इतना कुछ करने के बाद डाक्टर साहेब की तबीयत भर गई हो। उनकी उमगें बहुत बुलन्द हैं और वह अभी बहुत कुछ करना चाहते हैं। इस लेख को समाप्त करते हुए मैं फिर अपने इन इलफाज को दोहराता हूं कि आप में से किसी शख्स ने डा. मथुरादास के काम का ठीक अनुमान लगाना हो तो वह एक बार मोगा जाए, वहा जाकर उसे मालूम होगा कि कोई शख्स अपने दुनियावी फर्ज पूरे करता हुआ अपने धर्म और समाज के लिए कितना काम कर सकता है, यदि उसकी पक्की धुन और सच्चा त्याग हो। आर्य पुरुषों से सिफारिश करूंगा कि वह एक बार दयानन्द कालेज मोगा को जरूर देखें।

—कृष्ण (महाशय कृष्ण)

आर्य समाज अमृतसर का समाचार

आर्य समाज मन्दिर बाजार पशमवाला ने बिहार रिलीफ फण्ड के लिए चार सौ रुपया जमा किया है। लाला जगन्नाथ प्रधान समाज ने 50 रुपये और लाला कर्मचन्द सराफ ने एक सौ रुपया दिया है।

आल इण्डिया आर्यन एजुकेशन कान्फ्रैंस

9 फरवरी को आल इण्डिया आर्यन एजुकेशन कान्फ्रैंस की वर्किंग कमेटी की मीटिंग में जो लाला देवीचन्द्र जी की प्रधानता में हुई में पास किया गया है कि देश की सब आर्य समाजी शिक्षण संस्थाओं से कहा जाए कि वह इस संस्था के साथ अपना सम्बन्ध स्थापित करें। इसका विधान बनाने के लिए एक समिति बनाई गई है।

धूरी मण्डी में नया आर्य समाज

धूरी मण्डी में नया आर्य समाज कायम हो गया है उसने ऋषि बोधोत्सव बड़ी शान से मनाया है। अब आर्य समाज का विचार है कि अपना सालाना जलसा मनाए। अधिकारियों का चुनाव निम्न प्रकार हुआ —प्रधान लाला बाबूराम मन्त्री श्री साधूराम जी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

श्रीमान् जी सादर नमस्ते!

दो विशेष और महत्वपूर्ण बातों की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहते हैं! पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों के कारण आर्य समाजों के उत्सव नहीं हो सकते। इस कारण सभा से आर्य समाजों का सम्पर्क बहुत कुछ टूट रहा है। हमने बहुत प्रयास किया कि दूसरे प्रान्तों के उपदेशक पंजाब में आकर कुछ प्रचार करें। परन्तु उसके लिए कोई तैयार नहीं हो रहा। यह स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। परन्तु हम सब विवश हैं। इस समय कुछ भी नहीं कर सकते। सभा ने और आर्य समाजों से सम्पर्क रखने के लिए यह निर्णय लिया गया है कि आगे से प्रत्येक मास के अन्तिम सप्ताह में सभा की ओर से मासिक समाचार नाम का एक बुलेटिन सब आर्य समाजों को भेजा जाया करेगा। उसमें पंजाब की विशेषत: और देश की समस्याओं के विषय में आर्य समाज का दृष्टिकोण दिया जाएगा। आप उस बुलेटिन को अपने सत्संग में पढ़ कर सुना दिया करें। यदि आप यह चाहें कि अधिक संख्या में आपको भेजे जाएं तो 15 जनवरी तक सभा के कार्यालय को सूचित कर दें कि आप यह कितनी संख्या में चाहते हैं। यह केवल एक या दो पृष्ठ का बुलेटिन होगा। पहले 2-3 मास तो यह आर्य समाजों को निशुल्क दिया जाएगा। परन्तु आगे चल कर उस पर जो भी व्यय होगा उसके अनुसार आर्य समाजों से उतनी राशि ले ली जाएगी। इस का एक ही अभिप्राय है कि आर्य समाज का जो दृष्टिकोण हमारे उपदेशकों या दूसरे विद्वानों के द्वारा समय-समय पर जनता के सामने रखा जा सकता है। उसे हम इस बुलेटिन के द्वारा सब आर्य समाजों को भेज दिया करेंगे। वे आगे उनका जैसे भी चाहें, प्रचार कर सकते हैं। आप इस विषय पर विचार करके सभा कार्यालय को लिख दें कि आप को ऐसे कितने बुलेटिन चाहिए।

आर्य समाजों में प्रचार के लिए हमने देहली के एक विद्वान् उपदेशक श्री प. चिन्तामणि से बात की है। वे शनि और रविवार को पंजाब में प्रचार के लिए आने को तैयार हैं। जिस आर्य समाज को उनकी आवश्यकता हो, वह सभा के कार्यालय को सूचित कर दिया करें। हम उसके अनुसार उन का कार्यक्रम बना दिया करेंगे। आने वाले ऋषिबोधोत्सव के लिए उनका कार्यक्रम बना दिया गया है। इसके अतिरिक्त यदि शनि और रविवार को जो भी आर्य समाज उन्हें बुलाना चाहे, वह कम से कम 15 दिन पहले हमें सूचित कर दिया करें ताकि हम उसके अनुसार उनका कार्यक्रम बना दें। हम यह भी प्रयत्न कर रहे हैं कि कुछ और उपदेशक भी हमें मिल जायें, यदि मिल गये तो हम सब आर्य समाजों को सूचित कर देंगे।

वीरेन्द्र	हरबंसलाल शर्मा	ब्रह्मदत्त शर्मा
सभा प्रधान	सभा कोषाध्यक्ष	सभा महामन्त्री

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

पर आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार), लुधियाना में 21-12 86 से 28-12-86 तक श्रद्धाजलि समारोह आयोजन किया जा रहा है। सम्माननीय श्रीयुत कस्तूरी लाल जी, पर्यटन मन्त्री पंजाब सरकार मुख्य अतिथि होंगे।

28-12 86 श्रद्धाजलि समारोह

यज्ञ—9 से 10 बजे प्रातः

श्री मगलसेन जी बधवा, भूतपूर्व प्रधान, यज्ञ की पवित्र अग्नि प्रज्वलित करेंगे।

ध्वजारोहण—10-15 बजे प्रातः श्री विलायती राम जी अपने कर कमलों द्वारा करेंगे।

सम्मेलन—10 15 बजे प्रातः 12-30 बजे दोपहर तक।

ऋषि लंगर—12 30 बजे दोपहर

आपसे प्रार्थना है कि देश पर बलिदान होने वाले शहीदों के प्रति श्रद्धा के सुमन अर्पित करने के लिए परिवार सहित सम्मिलित हों।

—बलदेव राज सेठी
मन्त्री

सम्पादकीय—

सम्पूर्ण क्रान्ति का प्रयोजक आर्य समाज

स्वर्गीय श्री जयप्रकाश नारायण जी ने सम्पूर्ण क्रान्ति का नारा लगाया था परन्तु उसका वास्तविक रूप क्या होना चाहिए यह वह अपने जीवन में न बता सके। इस लिए उनका नारा केवल एक नारा ही रहा उसे कोई रचनात्मक रूप न मिल सका। और भी कई देश के नेताओं ने समय-समय पर क्रान्ति के नारे लगाए हैं, किसी ने राजनैतिक क्रान्ति के और किसी ने धार्मिक क्रान्ति के, परन्तु हमारे इतिहास में केवल एक उदाहरण मिलता है जब किसी एक ही व्यक्ति ने सम्पूर्ण क्रान्ति का केवल नारा ही न लगाया हो परन्तु उसे क्रियान्वित करने के लिए स्वयं भी प्रयास किया हो और साथ ही एक ऐसी संस्था भी खड़ी कर दी हो जो सम्पूर्ण क्रान्ति के ध्येय को पूरा करने के लिए अपनी सारी शक्ति लगा दे। महर्षि दयानन्द सरस्वती को यह श्रेय प्राप्त है कि उन्होंने सम्पूर्ण क्रान्ति का लक्ष्य अपने देशवासियों के सामने रखा और उसे क्रियात्मक रूप देने के लिए आर्य समाज की स्थापना की। उनकी सम्पूर्ण क्रान्ति का क्या रूप था? उसके द्वारा वह अपने देश में क्या परिवर्तन लाना चाहते थे। इस का कुछ अनुमान हमें उनकी अमर कृति सत्यार्थ प्रकाश से मिल जाता है।

इस ग्रन्थ में हमें हमारी धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक तीनों प्रकार की समस्याओं का समाधान मिल जाता है। यदि मैं यह कहता हूं कि महर्षि दयानन्द सम्पूर्ण क्रान्ति के प्रवक्ता थे तो केवल इस लिए कि उन्होंने उन सब समस्याओं का समाधान हमारे सामने रखा था जो किसी भी समाज में एक क्रान्ति ला सकते हैं। सत्यार्थ प्रकाश केवल एक धार्मिक ग्रन्थ ही नहीं है इस में सामाजिक समस्याओं पर भी लिखा गया है और राजनैतिक समस्याओं पर भी सम्पूर्ण क्रान्ति के लिए इन तीनों समस्याओं का समाधान आवश्यक है यदि स्वामी जी महाराज केवल धार्मिक क्रान्ति चाहते तो सत्यार्थ प्रकाश में छठा समुल्लास सम्मिलित करने की आवश्यकता न थी, न ही बाल-विवाह, विधवा-विवाह और इस प्रकार की सामाजिक समस्याओं के विषय में कुछ लिखने की आवश्यकता थी। वह वेद के आधार पर अपने देशवासियों को धार्मिक क्रान्ति का रास्ता दिखा सकते थे, परन्तु वह सामाजिक व्यवस्था में संपूर्ण क्रान्ति लाना चाहते थे। इस लिए उन्होंने मनुष्य जीवन की प्रत्येक समस्या पर अपने विचार इस ग्रन्थ में दिए हैं। और यदि आज भी हम उनके दृष्टिकोण का भारत बनाना चाहते हों तो देश की कई समस्याओं का समाधान हमें मिल सकता है। जब श्री जयप्रकाश नारायण ने सम्पूर्ण क्रान्ति की बात कही थी तो उनका यह विचार था कि मनुष्य जीवन के भिन्न-2 पक्ष एक दूसरे के साथ जुड़े होते हैं और उनका एक दूसरे पर प्रभाव पड़ता है। जब तक मनुष्य की सब समस्याओं का समाधान न ढूंढा जाए उस समय तक कोई भी क्रान्ति सफल नहीं हो सकती। हम यदि राजनैतिक क्रान्ति ले आएं और हमें यह पता न हो कि उसे क्रियान्वित कैसे करना है तो उसके लाने से कोई लाभ नहीं। गान्धी जी भी यही कहा करते थे कि उनकी अहिंसा केवल राजनीति तक ही सीमित नहीं रह सकती वह मनुष्य जीवन के प्रत्येक पक्ष पर प्रभावित होती है। इसी लिए वह कहा करते थे कि वह मन-कर्म और वचन से अहिंसा चाहते हैं।

महर्षि दयानन्द का जन्म इन सब से बहुत पहले हो चुका था। जिस युग में वह पैदा हुए थे कोई व्यक्ति क्रान्ति की बात न करता था फिर भी महर्षि ने सम्पूर्ण क्रान्ति का स्वप्न लिया तो केवल इस लिए कि वह अपने समाज का सारा ढांचा ही बदल देना चाहते थे हमारा देश, धर्म प्रधान देश समझा जाता है। जनसाधारण पर धर्म का बहुत प्रभाव रहता है चाहे वह धर्म कोई भी हो। कई लोग धर्म को समझते भी नहीं फिर भी धर्म के नाम पर उत्तेजित हो जाते हैं। धर्म के ही नाम पर पाखण्ड चलता है, धर्म के ही नाम पर गुरुडम चलता है। इसी लिए महर्षि ने समझा कि पहले धार्मिक क्रान्ति लाने की आवश्यकता है ताकि जन-साधारण धर्म के वास्तविक रूप और उसके उद्देश्य को समझ सके, परन्तु धार्मिक क्रान्ति का प्रयास करते हुए उन्होंने यह भी अनुभव किया कि सामाजिक क्रान्ति की भी आवश्यकता है और जब वह इसके लिए आन्दोलन कर रहे थे तो उन्होंने यह भी अनुभव किया कि जब तक देश स्वाधीन नहीं हो जाता न धार्मिक क्रान्ति हो सकती है न सामाजिक। इसी लिए उन्होंने कहा था कि 'दूसरों का राज्य चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो स्वराज्य से अच्छा नहीं हो सकता।' इस प्रकार उन्होंने सम्पूर्ण क्रान्ति का मन्त्र अपने देशवासियों को दिया और उसको सार्थक रूप देने के लिए आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज महर्षि दयानन्द की सम्पूर्ण क्रान्ति को किस प्रकार एक रचनात्मक रूप दे सकता है इस पर आगामी अंक अपने विचार प्रस्तुत करूंगा।

—वीरेन्द्र

महर्षि दयानन्द के भक्त प्रशंसक और सत्संगी

माननीय श्री प्रो. भवानी लाल जी भारतीय को यह श्रेय प्राप्त है कि उन्होंने महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर जो साहित्य प्रकाशित किया है किसी और ने नहीं किया। समय-2 पर जो कुछ वह लिखते रहते हैं उसे देख कर ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने अपने आपको महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के लिए समर्पित कर रखा है, वह इतिहासकार हैं परन्तु ऐसा इतिहास नहीं लिखते जो इधर-उधर से कुछ घटनाओं को इकट्ठा करके एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित कर दें। जिस विषय पर उन्होंने पुस्तक लिखनी हो, उसकी गहराई मे जाने का प्रयास करते हैं। और पूरे स्वाध्याय के पश्चात् उसके सब पक्ष पाठको के सामने रख देते हैं। यही कारण है कि इन के द्वारा लिखित पुस्तकें आर्य समाज के पुस्तकालय में एक विशेष स्थान की अधिकारी बन गई हैं।

उनकी नई पुस्तक है महर्षि दयानन्द के भक्त प्रशंसक और सत्संगी इस में उन्होंने पच्चास ऐसे व्यक्तियों के विषय में लिखा है जिनका किसी न किसी रूप में महर्षि दयानन्द जी के साथ कोई सम्पर्क था। उनमे हिन्दू भी थे, मुसलमान भी थे, सिख भी थे। इस पुस्तक को पढ़ कर जहां उन व्यक्तियो के विषय में जानकारी मिलती है वहां महर्षि दयानन्द जी के जीवन के भिन्न-2 पक्ष भी हमारे सामने आते हैं। यह पुस्तक एक प्रकार से आर्य समाज के इतिहास का एक बहुमूल्य ग्रन्थ है। श्री स्वामी सत्य प्रकाश जी ने इसी पुस्तक के विषय में अपने विचार इन शब्दों में प्रस्तुत किए हैं :—

"आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् दयानन्द पीठ पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ के अध्यक्ष प्रो. भवानी लाल जी भारतीय ने एक बहुमूल्य-वान पुस्तिका "महर्षि दयानन्द के भक्त प्रशंसक और सत्संगी" हमारे साहित्य को भेंट की है इस लघु ग्रन्थ का प्रणयन उनकी अनोखी सूझ का परिणाम है। यह पुस्तक उनकी अन्य रचनाओ के समान ही यशस्वी हो ऐसी मेरी कामना है। उनको साधुवाद और बधाईयां। लेखक का अपना एक निराला दृष्टिकोण है वह इतिहासज्ञ भी हैं और आलोचक भी। जो कुछ वह लिखते हैं अधिकार पूर्वक और अपनी ललित शैली में।"

जो कुछ श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज ने लिखा है उसके पश्चात् इस पुस्तक के सम्बन्ध में और कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं रहती। यह एक ऐसी पुस्तक है जो प्रत्येक आर्य समाज के पुस्तकालय में रहनी चाहिए। इसी के साथ जितनी आर्य समाज की शिक्षा संस्थाएं हैं उनमें भी यह पुस्तक रहनी चाहिए। इसका मूल्य 20 रु. है और यह स्वामी सत्यप्रकाश प्रतिष्ठान सबोमपुर बिरो (उत्तर प्रदेश) से मिल सकती है।

वीरेन्द्र

महर्षि दयानन्द की दिग् विजय

लेखक—श्री योगेन्द्रपाल जी सेठ अड्डा होशियारपुर-जालन्धर

महर्षि दयानन्द ने अपने युग मे अपनी विचारधारा को फैलाने के लिए जीवन भर सघर्ष किया। यदि हम उन सब का अध्ययन करें तो पता चलता है कि वह एक सुधारक विचारधारा थी। जो वह सर्व समाज की सर्व कुरीतियो को वैदिक शिक्षा के आधार पर सुधारना चाहते थे। वह सुधार चाहे किसी भी धर्म, पन्थ या मजहब से सम्बन्धित था। इस के लिए उन्हें जीवन भर सघर्ष करना पडा, उन पर ईन्टे और पत्थर भी मारे गए, विष भी दिया गया, निमन्त्रण देकर अपने घर ठहराने वालो ने, उनके खण्डन मण्डन से तग आकर उन को घर से बेघर भी कर दिया परन्तु उस निडर सत्यवादी ने अपने विचारो मे कोई परिवर्तन न किया। इसी कारण उन्हे अपना बलिदान देना पडा तथा अन्य जिन्होंने सत्यता से इस मार्ग को अपनाया, दुष्टो ने उन्हे भी नही बक्शा, उन्हे भी जामे शहादत पिला दिया।

परन्तु सृष्टि का यह नियम है परिश्रम से किया हुआ कार्य अवश्य फल देता है। महर्षि दयानन्द के युग म कुरआन, बाईबिल, अजील के जो भाष्य मिलते थे, जिन पर स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश मे अपनी समीक्षा लिखी है परन्तु आज उन धर्मावलम्बियो ने जो नए भाष्य किए हैं, स्वय ही उनकी समीक्षा की है और अपने धार्मिक ग्रन्थो का अर्थ वेदानुरुप करने का यत्न किया है। इसी प्रकार रामायण, महाभारत, पुराण इत्यादि धर्म ग्रन्थो मे जो कुछ उस युग मे लिखा हुआ होता था आज उस मे सुधार लाया जा रहा है। भाष्य को आधुनिक विज्ञान को ध्यान मे रखते हुए साथ मे समीक्षा लिखी जा रही है। गोरखपुर तथा रामकृष्ण-मिशन द्वारा जो नई पुस्तकें छपनी हैं। उन मे कुछ सीमा तक तर्क को ध्यान मे रखा जाता है। उन ग्रन्थो के अध्ययन से पता चलता है कि कुछ सीमा तक उन्होने महर्षि के सुधार को अपना लिया है।

मक्तबा अलहसानात रामपुर वालो ने 1977 मे "कुरान मजीद" का भाष्य हिन्दी तथा अग्रेजी मे छपा था, मैं उसमे से कुछ उदाहरणार्थ समीक्षा लिखता हू आप स्वय तुलना करना।

उस मे 126 पृष्ठ पर लिखा है,

"हर एक को अपने किए का फल पाना है और जो बुराई समोओगा उस का बुरा नतीजा उसी को भगतना होगा।" हम भी स ध्या म यही कहते हैं। धास्मान द्वाष्म्य वय द्विष्मस्त वो जम्भेदध्म ।

जब किए हुए कर्मों का फल ही मिलता है, तो किसी बचोले की तो आवश्यकता न रही।

कुरान मे पृष्ट 487 मे लिखा है—

"यह आयत कुरान की उन आयतो मे से है जिन से यह ज्ञात होता है कि मृत्यु के बाद ऐसा नही होता कि मनुष्य का कोई अस्तित्व ही शेष न रहे बल्कि मृत्यु वास्तव मे शरीर से आत्मा के वियुक्त हो जाने का नाम है। शरीर से अलग हो जाने के बाद भी आत्मा अपने व्यक्तित्व के साथ जीवत रहती है, (देहि नित्यवध्योय देहे सर्वस्य) यह आत्मा सब के शरीर मे सदा ही अवध्य है।

क्या पुर्नजन्म का ही यह सिद्धान्त है, जिस के लिए प. लेखराम जी ने कई बार मुसलमानो से शास्त्रार्थ किया था, परन्तु वही बात आज समीक्षा के रूप मे कुरआन मजीद मे लिखी है। मौलाना अब्दुल कलाम आजाद ने जो कुरआन का भाष्य लिखा है, उन्होने भी तर्क और विज्ञान को विशेष रूप म ध्यान मे रखा है।

13 अक्तूबर 1985 के टाईम्ज आफ इण्डिया म एक ईसाई लेखक 'ईयान बिलसन' द्वारा लिखित एक पुस्तक 'दि ऐवीडैंस' का कुछ भाग उस मे छपा है, उस मे लिखा है कि रिफर्मेशन से पूर्व बाईबल को साधारण लोग नहीं पढते थे। उनको इसे पढने पर पाबन्दी थी, केवल पादरी या चर्च के प्रचारक ही पढते थे। इस का अधिकाश भाग जो चमत्कारो पर निर्भर है केवल लोगो का विश्वास लाने के लिए चर्च मे पढा जाता था तथा लोग उसे सुनना ही अपना धर्म समझते थे। परन्तु सुधार आने पर लोगो ने इन चमत्कारो सम्बन्धी तर्क की दृष्टी से प्रश्न किये तो वह निरुत्तर हो गए। आजका नवयुवक विज्ञानिक दृष्टि से बाईबल के चमत्कारो का खुले आम विरोध करता है। 'इयान बिलसन लिखता है, "ईसा ने रोगियो के रोग दूर किये, "उस का भाव यह है कि मानसिक रोगियो के मन को प्रबल किया ज्ञान के अन्धो को ज्ञान देकर उन्हे प्रकाश देकर उनका अन्धापन दूर किया, उनको शुभ विचार देकर उन विचारो के मोड को दूर किया, उनके जीवन मे गति देकर उनके लगडेपन का इलाज किया और वह भले चगे हो गये। ईयान बिलसन ने इस बात का भी खडन किया कि कुमारी मेरी ने शिशु को जन्म दिया था, उसने लिखा यह असत्य है वास्तव मे उसके किसी के साथ सम्बन्ध थे, उस का नाम पेन्थरा था वह एक रोमन सिपाही था, उस से जिसस पैदा हुआ था। मेरी ने पुन: विवाह करवाया और जिसस के अन्य भाई पैदा हुए। अपने इस कथन की पुष्टि मे ईयान बिलसन ने कई लेखको के लेख के उदाहरण दिये। जिसस की मृत्यु पश्चात् पुन: जन्म लेने के सम्बन्ध मे वह लिखता है, कि सूली पर उस की मृत्यु नही हुई होगी, और उसने योग साधना द्वारा चार दिन कबर मे काट कर पुन अपने साथियो की सहायता से कबर से बाहर आ गया होगा।

एक और उदाहरण मैं आप को एक समाचार पत्र के आधार पर देता हू। कैप्टन देवरत्न आर्य ने एक पत्र मुझे 21-10-85 को भेजा था, जिस मे वह लिखते हैं कि उन्होने "राजस्थान पत्रिका" मे 5-10-85 मे छपे एक लेख की फोटो कापी मुझे भेजी, जो लेख जैन-धर्म के एक कट्टर अनुयायी श्री क च कलिश का लिखा हुआ था, जिस मे वह वेद का गुण-गान करते हैं, इस लेख का शीर्षक है, वेद ही शिक्षा नीति का आधार हैं, "इसी से देश का दुर्भाग्य है और अध पतन हुआ कि जिस वेद को ज्ञान का उद्गम माना जाता है उसी को भुला दिया गया। हमारी दुर्गति भी इसी लिए हुई कि हमने अपने स्वरूप को ही भुला दिया और नाना प्रकार के क्षुद्र मत-मतान्तर पन्थ, सम्प्रदाय आदि के स्वार्थ मे, ज्ञान को नष्ट कर दिया, "वेद एक विद्या है, उत्कृष्ट कोटी का ज्ञान है, विज्ञान है। ज्ञान और विज्ञान दोनो का इस मे स्रोत है।"

अब मैं आपको अपने लेख के शीर्षक की ओर ले चलता हू, जिसे मैं महर्षि की 1986 की दिग्-विजय कहता हू। आप को ज्ञात ही होगा कि गत दिनो आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री रामाराव ने एक कानून के द्वारा आन्ध्र प्रदेश के सब मन्दिरो का प्रबन्ध वहा के पुजारियो से छीन कर, एक सुधारक कमेटी को सौंप दिया, जैसे जम्मू कश्मीर के राज्यपाल ने किया। परन्तु यह तो सुधार के कार्य हैं, मैं इस को इतना महत्व नही देता। मैं आपको और बात बताना चाहता हू।

5 नवम्बर 1986 को टाईम्ज आफ इण्डिया मे एक लेख श्री प्रभाकरराव का छपा है, उसमे दक्षिण भारत के मन्दिरो मे से आन्ध्र के मन्दिरो के बारे पूरा ब्योरा लिखा है कि किस प्रकार से इन का प्रबन्ध करना है। इस सम्बन्ध मे जो सब से महत्वपूर्ण है वह यह है, कि अब यह सभा जो नये मन्दिरो के लिए पुजारी रखेगी, वह पूजा-अर्चना करने वाले किसी भी जाति के हिन्दू हो सकते हैं, यदि वह विद्वान् पुरोहित कार्य मे निपुण, शिक्षत हो, वह शूद्र वैश्य और क्षत्री भी हो सकते है। इससे पूर्व जो लोगो का धन बटोर कर उनको परलोक में धन देने के लिये जो हुडिया दी जाती थी वह सब बन्द कर दी गई हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह सब परिवर्तन तथा निश्चय श्री स्वामी शकराचार्य श्रीनगरी तथा कान्चीपुरम की पुष्टि से हुआ है। रामा कृष्ण मिशन के मुखिया श्री स्वामी रगानाथन ने तो यह सुझाव भी दिया है कि इन मन्दिरो के पुजारियो का चयन सब धर्मों से किया जाए। इस सारे कार्य को करने तथा सब की स्वीकृति प्राप्त करने के लिये सरकार ने एक रिटायर्ड मुख्य न्यायाधीश श्री काण्डिहा की नियुक्ति की है।

इस सब परिवर्तन की पुष्टि दक्षिण भारत के प्रसिद्ध धार्मिक नेता श्री स्वामी राघवेन्द्र स्वामी तथा श्री सुजेन्द्रा तीर्थ स्वामी तथा प्रसिद्ध धार्मिक नेता श्री सत्यसाई बाबा पुट्टापार्थी ने भी की है।

आन्ध्र प्रदेश मे कुल 32044 छोटे बडे मन्दिर हैं, इन मे तिपति का मन्दिर सारे भारत मे प्रसिद्ध और धनपति है। मन्दिर के पास 70 करोड रुपए नकद तथा 27 करोड का सोना है। 129 परिवार इस मन्दिर के चढावे के हिस्सेदार थे। जिन्हे लगभग डेढ करोड रुपये वार्षिक चढावा चढता था। इन सब मन्दिरो की लगभग 85 करोड रुपये वार्षिक आय है, 3,43000 एकड भूमि है।

महर्षि दयानन्द के कार्य को तेलगू-देशम सरकार ने कर दिया। यह मन्दिर ही हैं जिन के कारण हमारे करोडो भाई हम से अलग हो गए। इन मन्दिरो की सम्पत्ति से हम अपने पिछडे भाईयो को पुन. अपने गले लगा सकते हैं। यह क्रान्तिकारी कार्य यदि सारे देश मे सब मन्दिरो पर लागू हो जाए तो अपने देश में हिन्दू जाति का कायाकल्प हो जाएगा, पिछडे भाई अपने गले लग जाएगे। महर्षि दयानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा वैदिक धर्म का जयघोष चारो ओर होगा।

हिन्दुओ जागो

स्वयं को पहचानो, अपने धर्म को जानो, अपनी गौरवमयी संस्कृति एवं अतीत की ओर ध्यान दो।

निम्न कुछ एक गौरवमय तथ्यो को स्वयं हृदयंगम करो, अपनी सन्तानों को कराओ, ताकि 'हिन्दू' होने एवं कहलाने में गर्व की भावना जागृत हो।

1 हम आर्य (हिन्दू) ही वास्तव में भगवान की आदि सन्तान हैं। भगवान ने इसी नाते आदि काल मे वेद ज्ञान हमें ही दिया। मनु महाराज, श्रीराम, श्री कृष्ण के वशज होने का गर्व भी हमे ही प्राप्त है।

2 हमारी आर्य संस्कृति ससार मे प्राचीनतम है। हमारे ज्योतिष पचांगो में इसकी आयु (1972949085) करीब 2 अरब वर्ष है।

3 आदि काल मे (करीब दो अरब वर्ष पूर्व) हम आर्यो को ही "वेद" ज्ञान स्वय भगवान ने चार ऋषियो के द्वारा ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, के रूप मे, हमारे मार्ग दर्शन के लिए प्रदान किया।

4 हम आर्यो ने ही ससार को सभ्यता सिखाई, धर्म मर्यादा सिखाई। स्वच्छन्द जगली जीवन छुड़ा विवाहादि की प्रथा चलाई।

5 हम आर्यों का सारी सृष्टि पर, महाभारत काल तक अविछिन्न चक्रवर्ती राज्य रहा। महाभारत अनुसार 5000 वर्ष पूर्व अर्जुन ने अमरीका के शासक की पुत्री उलूपी से विवाह किया था। उसी उलूपी के गर्भ से अर्जुन का प्रतापी प्रसिद्ध वीर पुत्र बभ्रुवाहन हुआ।

6, गणित विद्या, हम आर्यो ने ही ससार भर को सिखलाई। इसी कारण अरबो (मुसलमानो) ने इसे "हिन्दसे" अर्थात् "हिन्दोस्तान से आए" का नाम दिया।

7 चिकित्सा औषध आयु सम्बन्धी ज्ञान, भी हम आर्यों की ही देन है। हमारा आयुर्वेद वेदो का ही उपाग है। अत यह ही इस ज्ञान विज्ञान का आदि स्रोत है।

8 हम आर्यों ने ही ससार को वनस्पतियों, अनाजो, दालो आदि का बीजना, खाना सिखाया। आग जलानी भी सिखाई।

9 रामायण, ससार भर में गृहस्थ एव सामाजिक मर्यादाओ की उच्चतम क्रियात्मक रूप में शिक्षा, उपदेश देने वाला केवल मात्र एक ही ग्रन्थ है। किसी अन्य के पास ऐसा महान् ग्रन्थ नहीं है।

10 भगवती-गीता, भगवान कृष्ण द्वारा प्रतिपादित, क्रियात्मक परम सुख उपजाने वाला, ज्ञान और कर्म का तत्व दर्शाने वाला ग्रन्थ गीता हम आर्यों ने ससार को दिया है। दार्शनिक दृष्टि से ससार भर मे इसके साथ कोई अन्य ग्रन्थ नहीं।

11 हम आर्यों की सभ्यता से पूर्व योरुप, अमरीका, एशिया आदि भू-भागो मे लोग जगली थे। कच्चा मास खाते, गुफाओ मे रहते थे। फलत अब भी आज तक, अधिक मास भक्षण आर्यावर्त (भारत वर्ष) को छोड कर अन्य सब भू खण्डो मे व्याप्त है। भारत मे मूलत लोग इसी कारण निरामिष भोजी हैं। कारण कि यहा आर्यत्व का प्रचलन रहा है।

12 ससार की सर्व प्रथम ईश्वर प्रदत्त भाषा "सस्कृत" है। यही कारण है कि केवल यह भाषा ही हर दृष्टि से सर्व दोष रहित परिपूर्ण है। जबकि अन्य सब भाषाए दोष युक्त एव अपूर्ण हैं। इसे "देव-भाषा" का नाम इसीलिए दिया गया है कि यह मनुष्य कृत नही अपितु ईश्वर प्रदत्त है।

13 ससार भर के भाषा वैज्ञानिको ने अब सिद्ध कर दिया है कि ससार की सब भाषाए इसी सस्कृत का अपभ्रंश रूप हैं। इस नाते इसी की सन्तान हैं।

14. ससार के कुछ एक प्रसिद्ध धर्म और उनकी आयु —

1 आर्यों की आयु करीब दो अरब वर्ष
2 यहूदी — तीन हजार वर्ष
3 ईसाई — दो हजार वर्ष (1985)
4 मुसलमान— केवल 1400 वर्ष।

सावधान —

हिन्दुओ, आप भले ही किसी भी राजनैतिक सगठन से सम्बन्धित हो, कोई भी व्यवसाय दुकानदारी अथवा नौकरी करते हो "हिन्दू" होना न भूलिये। हिन्दू, हितो, मान एव गौरव को बराबर ध्यान मे रख कर ही, कोई कार्य करें।

प्रकाशक —
केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर।

नोट —कोई भी सस्था अथवा व्यक्ति इसे प्रकाशित कर सकता है।

उसको जीवन कह सकते

लेखक—श्री प्रा रमाकान्त दीक्षित कानोडियो की गली डा मुरारी लाल मार्ग, भिवानी 125021 (हरियाणा)

न रुक पाये, न झुक पाये, उसको जीवन कह सकते।

तुम को मार भगाता जो,
नया सवेरा लाता जो,
सभी तरफ से घिर कर भी,
काटो मे मुस्काता जो,
निज मजिल पर चले बिना, नही चरण जो रह सकते।
न रुक पाये, न झुक पाये, उसको जीवन कह सकते॥

पर हित मे जो रमता है,
जो न बर्फ सा जमता है,
मचल मचल जो निर्झर सा,
नहीं कभी भी थमता है,
अडिग सैंकडो शिला खण्ड, जिसके आगे बह सकते।
न रुक पाये, न झुक पाये, उसको जीवन कह सकते॥

जो झेले सभी कसाले,
ऊच-नीच देखे-भाले,
आगे बढ सबसे पहले,
तोडे जो भ्रम के जाले,
उससे आडम्बर के ऊचे पर्वत ढह सकते।
न रुक पाये, न झुक पाये उसको जीवन कह सकते॥

साधना शिविर सम्पन्न

वेद सस्थान दिल्ली मे 10 से 16 नवम्बर 86 तक साधना शिविर सानन्द हुआ। स्थानिक साधको के अलावा, उत्तर प्रदेश गुजरात पजाब, बिहार, महाराष्ट्र, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश आदि राज्यो से 30 से अधिक नर-नारी इसमे पधारे। 15 नवम्बर को सस्थान के सस्थापक स्वामी विद्यानन्द "विदेह" का 88 वा [illegible] स्वामी दीक्षानन्द की अध्यक्षता मे मनाया गया। इस अवसर पर विदेह [illegible] सकलन 'वेदमाता' का हिमाचल [illegible] फतहसिंह ने किया। शिविर [illegible] और विजयपाल सत्यानन्द वेदवागीश के के ब्रह्मत्व मे हुए। डा फतहसिंह ने "वेद और इतिहास पुराण" विषय पर छ प्रवचन दिए। सस्थानाध्यक्ष, डा अभयदेव शर्मा ने ऋग्वेद 10, 150 का अध्यापन किया। डा महावीर ने "वेदाहमेत" मन्त्र की व्याख्या मे पाच प्रवचन किए। दोपहर मे महिला सत्सग रात्रि में सार्वजनिक प्रवचन [illegible] हुए।

[illegible] ज्ञानप्रभ
मन्त्री

आर्य समाज पठानकोट का सराहनीय कार्य

आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट मे तीसरा शीत-ऋतु सगत दिवस 23-11-86 को मनाया गया। जो कि बहुत सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। जिस मे 19-11-86 से 23-11-86 तक विशेष "महा गायत्री यज्ञ" का आयोजन किया गया और साथ-साथ श्री [illegible] "पथिक" जी के भजनोपदेश भी होते रहे। 23-11-86 रविवार को पूर्णाहुति के बाद गरीबों को स्वेटर, शाल, कम्बल तथा जूते वितरण किए गए। उपस्थिति सन्तोषजनक थी।

—लालचन्द-प्रधान

आर्य युवक सभा बरनाला द्वारा आयोजित भाषण प्रतियोगिता का विवरण चित्रों द्वारा

भाषण प्रतियोगिता के अध्यक्ष श्री रोशनलाल शर्मा, सयोजक आय युवक सभा पजाब मुख्य अतिथि श्री एस एस ढीगरा को सम्मानित करते हुए।

भाषण प्रतियोगिता के अध्यक्ष श्री रोशनलाल शर्मा, मुख्य अतिथि श्री एस एस ढीगरा एव श्री भाटिया जी के साथ।

चल विजयोपहार के विजेता केन्द्रीय विद्यालय बरनाला के छात्र श्री एस एस ढीगरा, मुख्य अतिथि, श्री पवन जी शिगला एव श्री रामसरण दास गोयल प्रधान आय युवक सभा बरनाला के साथ।

अपार जन समूह भाषण प्रतियोगिता का आनन्द लेते हुए।

बरनाला आर्य युवक सभा द्वारा— आवाज और अन्दाज प्रतियोगिता सम्पन्न

स्थानीय आय युवक सभा द्वारा गाधी आय हाई स्कूल बरनाला मे विगत दिवस "महर्षि दयानन्द अन्त स्कूल भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस आवाज और अन्दाज परीक्षण कायक्रम की अध्यक्षता पजाब के आय युवक नेता व आय युवक सभा पजाब के सयोजक श्री रोशनलाल शर्मा ने की। बैंकरज क्लब बरनाला के महासचिव श्री एस एस ढीगरा मुख्य अतिथि के रूप मे शामिल हुए। इस प्रतियोगिता म सगरूर पटियाला, बरनाला तपा भदौड, गिदडबाहा व कोटकपूरा आदि के लगभग 16 स्कूलो के 40 छात्रो ने भाग लिये। निश्चित 8 विषयो मे से किसी एक विषय पर बोलने के लिए प्रत्येक बच्चे को 4 से छ मिनट तक का समय दिया गया। उन आठ विषयो मे से तीन आय समाज व महर्षि दयानन्द से सम्बन्धित, दो राजनैतिक, दो सामाजिक व एक विषय व्यग्यात्मक था। इस अवसर पर बोलते हुए श्री रोशनलाल शर्मा ने आय युवक सभा बरनाला के कार्यों की भूरि भूरि प्रशसा की और कहा कि आय युवक सभा बरनाला ने बहुत ही कम समय मे दो बहुत ही बड़े सम्मेलन आयोजित किए हैं। इससे पूर्व इसने पिछले मास पजाब प्रान्तीय आर्य युवक सम्मेलन आयोजित किया था। जो कि एक अभूतपूर्व आयोजन था। उन्होंने युवको को आर्य समाज की ओर प्रेरित करने के लिए आर्य युवक सभा बरनाला से आग्रह किया कि वे बजुर्गों के आशीर्वाद व मार्गदर्शन मे निरन्तर इसी प्रकार प्रचार व प्रसार कार्यों मे कदम बढाते रहे।

इससे पूव आर्य युवक सभा बरनाला द्वारा श्री रोशनलाल शर्मा व मुख्य अतिथि श्री एस एस ढींगरा का भावभीना शानदार स्वागत किया गया। मुख्य अतिथि श्री ढींगरा ने अपने प्रति युवक सभा द्वारा दिखाए गए सम्मान के लिए आभार व्यक्त किया एव अपनी ओर से सभा को 1100 रुपए भेंट किए। प्रतियोगिता मे केन्द्रीय विद्यालय बरनाला ने "चलविजयोपहार" अर्जित किया जबकि गुरुदेव चौधरी कन्द्रीय विद्यालय बरनाला ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। सरकारी हाई स्कूल बरनाला के श्री राजीव व सजय क्रमश द्वितीय व तृतीय घोषित किये गए। आर्य समाज व ऋषि से सम्बन्धित विषयो में से एक पर सर्वोत्तम बोलने पर बरनाला क श्री सजय को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस सारे सफल कायक्रम का श्रेय सभा के सुयोग्य प्रधान श्री रामसरण दास गोयल, योजनाध्यक्ष श्री पवन सिंगला संयोजक, श्री सतीश सिंगवानी व टीम के अन्य सभी सदस्यों की कड़ी मेहनत व लगन को जाता है। सयोजक श्री सतीश सिंगवानी के प्रभावशाली व शानदार मच संचालन की सराहना की जा रही थी।

—सतीश गुप्ता-मन्त्री

बरनाला आर्य युवक सभा द्वारा—

बरनाला के ६० वर्ष से ऊपर के आर्य महानुभावों का सम्मान

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी के आदेशानुसार स्थानीय आर्य युवक सभा द्वारा बरनाला के 60 वर्ष से ऊपर के आर्य महानुभावों का विमत दिवस महर्षि दयानन्द भाषण प्रतियोगिता के अवसर पर सम्मान किया गया। जिन महानुभावों को यहां सम्मानित किया गया उनके नाम इस प्रकार हैं।

(1) श्री मधुसूदन लाल जी शोरी

(2) श्री महाशय कर्मवीर जी

(3) ,, ,, इन्द्रसेन जी

श्री पं. बनारसी दास जी व श्री महाशय हुक्म चन्द जी भी इस सूचि में शामिल थे लेकिन वे किन्ही कारणवश नहीं पहुंच सके अत: उन्हें किसी अन्य समारोह में सम्मानित किया जाएगा।

इस समारोह की अध्यक्षता श्री रोशनलाल जी शर्मा, प्रधान आर्य युवक सभा पंजाब ने की। अपने कर कमलों से उन्होने बड़ी विनम्रता से इन महानुभावों का सम्मान किया। इस अवसर पर अन्यों के अतिरिक्त जिला संगरूर आर्य सभा के अध्यक्ष महाशय लक्ष्मण दास जी। प्रिंसीपल बहन बिमला छाबड़ा जी, प्रिंसीपल यश भाटिया जी व अन्य आर्य महानुभाव विशेष रूप से शामिल हुए। पंडाल में व नगर में आर्य युवक सभा बरनाला के इस अभूतपूर्व पग की भीनी-भीनी प्रशंसा की जा रही थी।

—सतीश गुप्ता
मन्त्री

आवश्यक द्रष्टव्य

सर्व सज्जनो को सूचित किया जाता है कि "निर्णय के तट पर" (शास्त्रार्थ संग्रह) का प्रथम व तृतीय भाग प्रकाशित कराने की योजना बनाई गई है। तृतीय भाग जिसमे शेष शास्त्रार्थ जो प्रथम व द्वितीय भाग में नहीं आ पाये उनको संग्रहीत किया जायेगा। यह सामग्री भी अत्यन्त प्राचीन व अप्राप्य सामग्री ही होगी, जिसमें पं. आत्माराम जी अमृतसरी, पं. रामचन्द्र जी देहलवी, प. बिहारी लाल जी शास्त्री, पं. ओम् प्रकाश जी शास्त्री, पं. रामदयालु जी शास्त्री, स्वामी दर्शनानन्द जी, पं. बुद्धदेव जी विद्यालंकार, प. गंगा प्रसाद जी उपाध्याय, स्वामी ब्रह्ममुनी जी, महात्मा अमर स्वामी जी, प. आर्य मुनि जी, श्री इन्द्र जी विद्यावाचस्पति, पं. शिव शर्मा जी, महात्मा हंसराज जी, लाला मुन्शीराम जी आदि-2 अनेकों विद्वानों के शास्त्रार्थों की अप्राप्य सामग्री आ सकेगी।

पुस्तक का प्रारुप द्वितीय भाग की तरह ही होगा, पेज भी 400 के लगभग होंगे। जिसका मूल्य छपने पर 125 रुपए प्रति भाग होगा परन्तु जो सज्जन छपने से पूर्व अपना पैसा भेजेंगे उन्हें मात्र 60 रुपए प्रति भाग की दर से दिया जावेगा।

आप अभी केवल अपना आर्डर बुक करा दें, पैसा (पुस्तक के प्रैस मे जाने पर) लिया जावेगा अभी कोई पैसा न भेजें। छपने के बाद मात्र पोस्टेज खर्च ग्राहक को देना होगा। अपना नाम व पता साफ-2 हिन्दी या कैपिटल अंग्रेजी शब्दों में पिन कोड नं. सहित लिखें।

इस महान् कार्य मे जो भी सज्जन आर्थिक सहयोग देना चाहे, अवश्य दें। ताकि यह कार्य सुगमता पूर्वक पूरा हो सके। बैंक ड्राफ्ट 'अमर स्वामी प्रकाशन विभाग 1058 विवेकानन्द नगर गाजियाबाद—201001' के नाम निम्न पते पर भेजें एवं इसी पते पर अपनी प्रतियां बुक करावें, किस-किस भाग की कितनी-कितनी कापी आपको चाहिये। चैक स्वीकार नही होगे।

नोट—: सभी आर्य भाईयों से मेरा पुन: अनुरोध है कि इस डूबती हुई सम्पत्ति को पुर्नजिवित करने में हृदय खोल कर सहयोग दें।

वैदिक धर्म का—
"अमर स्वामी सरस्वती"

आर्य समाज हबीब गंज लुधियाना में समारोह सम्पन्न

गत दिनों आर्य समाज हबीब गंज लुधियाना में ऋषि निर्वाण उत्सव मनाया गया। इस अवसर पर लिए गए चित्रों द्वारा विवरण

श्रीमती कमला आर्या उप-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री प. बलराज जी श्री दीवान राजेन्द्र कुमार जी तथा श्री वेद प्रकाश महाजन मच पर बैठे हैं श्री दीवान जी महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि भेंट करते हुए

उत्सव के अवसर पर सामने बैठी हुई आर्य जनता

श्रीमती कमला आर्या महर्षि को श्रद्धाञ्जलि भेंट करते हुए साथ मे स्टेज पर बैठे हैं श्री आशानन्द आर्य मन्त्री जिला आर्य सभा लुधियाना।

आर्य समाज बस्ती बाबा खैल जालन्धर का वार्षिक चुनाव

गत दिनो आय समाज बस्ती बाबा खैल जालन्धर का वार्षिक चनाव निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान—श्री दयान चन्द जी
उप प्रधान—श्री सतपाल जी
मन्त्री—श्री दशन लाल जी
उप-मन्त्री—श्री ओमप्रकाश जी
कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश जी
उप कोषाध्यक्ष—श्री जोगेन्द्रपाल जी
प्रचार मन्त्री—श्री सुरन्द्रपाल जी
पुरोहित—श्री रतनलाल जी
स्टोरकीपर—श्री अमीचन्द जी
एजैन्डा मास्टर—श्री बनारसी दास जी
अडीटर—श्री मनोहर लाल जी

अन्तरग सदस्य

श्री बचन लाल जी, श्री अमरनाथ जी, श्री हवेली राम जी, श्री बिशम्बर दास जी, श्री मगलदास जी, श्री राजपाल जी, श्री देसराज जी, श्री साई दास जी, श्री चिमन लाल जी, श्री हसराज जी, श्री राज कुमार जी।

—दर्शन लाल-मन्त्री

लुधियाना में आर्य युवक सभा पंजाब की एक और यूनिट की स्थापना

किदवाई नगर और अमरपुरा के क्षेत्र मे युवको के साथ आय युवक सभा की स्थापना हेत विचार-विमश किया गया। जिसके फलस्वरूप 30-11-1986, रविवार को श्री हसराज जी महाशय, भूतपूव प्रधान आर्य समाज, किदवाई नगर, लुधियाना की अध्यक्षता मे युवको की एक मीटिंग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री रोशनलाल शर्मा, सयाजक आय युवक सभा पजाब, को यवको को सम्बोधित करने के लिए विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया। सवप्रथम श्री भरतसिंह जी पुरोहित ने श्री शर्मा जी का परिचय कराया। श्री हसराज जी एव श्री रोशनलाल शर्मा का युवको ने स्वागत किया। इस अवसर पर आर्य युवक सभा के 25 नए सदस्या ने सदस्यता ग्रहण की। आर्य युवक सभा की स्थापना के पश्चात् यूनिट के निम्न अधिकारियो का सर्वसम्मति से चुनाव किया गया —

प्रधान—श्री गरीब दास, उप-प्रधान—श्री रतन लाल, मन्त्री—श्री उत्तम चन्द, उपमन्त्री—श्री जगदीशलाल, प्रचार मन्त्री—श्री कन्हैया लाल, कोषाध्यक्ष—श्री मनजीत सिंह, कार्यालय सचिव—राजेश कुमार।

अन्तरग सदस्य—

श्री रामनाथ, श्री सुदेश कुमार, श्री पुरुषोत्तम लाल, श्री गुलजारी लाल, श्री राजेन्द्र कुमार।

नव निर्वाचित अधिकारियो का श्री रोशनलाल शर्मा, सयोजक आर्य युवक सभा पजाब ने स्वागत किया। श्री शर्मा जी ने युवको को सम्बोधित करते हुए आर्य युवक सभा के उद्देश्य, गतिविधियो पर प्रकाश डाला। उन्होने कहा कि आज पजाब मे जो परिस्थितिया बनी हुई हैं, उनमे सगठन की अत्यधिक आवश्यकता है। सगठन के द्वारा ही हम एक दूसरे के दु ख सुख मे सम्मिलित हो सकते हैं। हमे एक दूसरे से व्यक्तिगत सम्पर्क पैदा करना चाहिए। आज जिस स्वतन्त्रता को प्राप्त करने के लिए अनेक भारतीय वीरो ने अपने प्राणो की आहुति दी, उस स्वतन्त्रता को कायम रखने के लिए युवको की जिम्मेवारी है तथा हमे इस जिम्मेवारी को निभाने के लिए हर सम्भव प्रयास करना चाहिए। अपने अध्यक्षीय भाषण मे श्री हसराज जी ने सामाजिक, धार्मिक कुरीतियो को दूर करने के लिए एव राष्ट्रीय समस्याओ को हल करने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती एव आर्य समाज के योगदान की सराहना की। उन्होने युवको को हर सम्भव योगदान देने के लिए विश्वास दिलाया। शान्ति पाठ के साथ कार्यवाही समाप्त हुई। श्री भरतसिंह जी पुरोहित ने जलपान का प्रबन्ध किया।

—सुरेश चड्ढा
सयोजक

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 रजि. न. ✓ N W J L 55

वर्ष 18 अंक 39. 21 पौष सम्वत् 2043 तदानुसार 4 जनवरी 1987 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

पुरुषार्थी बनो

लेखक—श्री अमित प्रताप ... मा हाटा, पो नबो... देवरिया

कृतं मे दक्षिणे ... सव्य आहित ।
गोजिद् भूया... धनंजयो हिरण्यजित् ॥

अथर्व 07-50-8

मेरे दाएं ... पुरुषार्थ है और मेरे बाए हाथ में विजय है। मैं गाय, धन और स्वर्ण ... जीतने वाला होऊ। अर्थात् पुरुषार्थ के द्वारा सभी "श्री" भी मुझे प्राप्त होवें।

पुरुषार्थ जीवन का आधार है, सुख का मूल है। पुरुषार्थ ही एक ओर कर्म है, तो दूसरी ओर विजय है। जहा पुरुषार्थ है, वहा सफलता अवश्यम्भावी है। अतएव मूल में निर्देश है कि मेरे एक हाथ में पुरुषार्थ है और दूसरे हाथ में विजय या सफलता। मनुष्य जीवन में क्या बनना चाहता है, उसका उसे सर्वप्रथम निर्णय करना है। लक्ष्य निर्धारित होते ही उसे पुरुषार्थ रूपी अस्त्र लेकर आगे बढना है। विघ्नरूपी शत्रुओं को नष्ट करना है। विघ्नों और शत्रुओं पर घात होते ही सफलता उनके पैरो में आ पडती है, आत्म समर्पण करती है। यही जीवन की सफलता का रहस्य है। ससार की ऐसी कोई वस्तु नही, जो पुरुषार्थ के द्वारा सुलभ नहीं, चाहे वह पशु धन वैभव हो, विद्या हो, शक्ति हो, धन-धान्य हो, मुक्ता रत्न या स्वर्ण आदि हो यहा तक कि मोक्ष या निर्गुण नक उनके लिए दुर्लभ नहीं है। पुरुषार्थ के मन्त्र को अपने जीवन मे उतारने वाला कभी न दुखित होता है और न कभी अपना साहस ही छोडता है। उसके लिए सर्वत्र विजय ही है।

पुरुषार्थ जीवन है। पुरुषार्थी की सहायता परमात्मा करता है। देवता पुरुषार्थी को चाहते हैं। ससार भी पुरुषार्थी को ही चाहता है। निष्क्रिय, अकर्मण्य और आलसी को न देवता, न ससार, न परमात्मा ही चाहता है। अकर्मण्य पुरुष वस्तुत: ससार के लिए भार है। वह अपने लिए भी भार है और परिवार के लिए भी। अतएव कहा गया है कि देवता पुरुषार्थी को ही चाहते हैं, अन्य किसी को नही, संस्कृत का सुभाषित है कि—

उद्यम साहस धैर्य बुद्धि: शक्ति पराक्रम ।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देव सहायकृत ।

उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि शक्ति और पुरुषार्थ ये 6 गुण जहा रहते हैं, वहा परमात्मा भी सहायता करता है। पुरुषार्थी के साथ समाज चलता है। पुरुषार्थी ही समाज और राष्ट्र का निर्माण करते हैं। वे ससार का कल्याण करता है। पुरुषार्थी आलस्य का त्याग तथा निरन्तर अपने कर्त्तव्य में तत्पर रहना समृद्धि का मूल है। सफलता का रहस्य है। पुरुषार्थ और स्वावलम्बन का महत्व बताते हुए ही अग्रेजी की कहावत है—"गौड हैल्पस दोज हू हैल्प दैमसैल्वस"।

ससार में सुस्त और निकम्मे आदमी किसी प्रकार की कोई उन्नति नहीं कर सकते। जो लोग ढीले-ढाले, आलसी काम चोर और प्रमादी होते हैं, वे सदा दीन-हीन और दरिद्र होते हैं। वे सब प्रकार के धन उन्ही को प्राप्त होते हैं, जो प्रत्येक कर्म के करने में सदा सबसे आगे रहते हैं, जो सदा सतर्क और सावधान रहते हुए अवसर पर आगे बढते हैं, वे ही उचित अवसर पर उचित लाभ भी पाते हैं। आगे बढने के लिए स्वावलम्बन अथवा पुरुषार्थ आवश्यक है। दूसरे के आश्रित रहने वाले अपने कार्य के लिए दूसरो का मुख ताकने वाले दूसरे के सहारे रहने वालो में न तो उत्साह होता है न साहस और पुरुषार्थी का तो बिन्दु तक नहीं दिखाई देता है। इस लिए ज्ञान के साथ-साथ परिश्रम को कभी नहीं छोडना चाहिये। कथा सुनिये-

एक व्यक्ति था, बहुत निर्धन। बडा परिवार था। खाने-पीने, पहनने, रहने में कष्ट होता था। जब कष्ट बहुत बढ गया, तो उन लोगो ने सोचा कि किसी दूसरे स्थान पर चल कर व्यापार या नौकरी करें। अगले दिन ग्राम से चल पडे। रास्ते में रात हो गयी। एक वृक्ष के नीचे डेरा दिया और पिता ने बेटे से कहा, "जाओ, पास के वन से कुछ लकडिया ले आओ ताकि आग तो जलाए।" इस तरह सभी लडको ने सभी सामग्री ला दी। चूल्हा भी बन गया। परन्तु खाने के लिए कोई सामग्री न थी। यह देख कर उस पेड पर रहने वाला पक्षी हसा और बोला, "अरे भोले लोगो सब कुछ तुम ले आये, परन्तु खाने को तो कुछ है नही, पकाओगे क्या और खाओगे क्या ?" बडा लडका बोला, "ठहर तुझे पकडेगे और भून कर खाए गे।" पक्षी डर कर बोला, "मत मत खाना मेरे साथ चलो मैं तुम्हे कुछ दू।" सब चले उसके पीछे-पीछे। वह रुका और बोला, "इस स्थान को खोदो।" उन सभी को हीरा मिला और घर आए। उसके पडोसी ने यह दशा देखी और तब पूछा, "अरे तुम एक ही रात मे इतने धनी हो गय।" वे भले लोग सब कह सुनाये। वे भी उस पेड के नीचे गये। पिता ने कहा कि जाओ मेरे पुत्रो ! खाना पकाने की सामग्री लाओ। पर कोई नही सुना तो वहा न चूल्हा बना, न लकडी आयी, न जल, न आग और न खाना पका। पक्षी हसा और बोला, "अरे तुम लोग विचित्र हो। कैसे खाना पकेगा, जब कुछ नही है तो।" एक बालक बोला, "तुम्हे खाऊगा।" पक्षी पुन हसा और बोला, "आराम से बैठो। जो खाने वाला था वह गया। तुम मे एकता नही है।"

यह है एकता और पुरुषार्थ न रहने का परिणाम जो लोग परिवार मे मिल कर रहते हैं, उन्हे निश्चिन्त रूप से सम्पत्ति मिलती है, सुख मिलता है। जो मिल कर नही रहते उन्हे, असफलता के अतिरिक्त कुछ नही मिलता।

याद रखने की बात है कि समृद्धि का मूल-मन्त्र एकता और पुरुषार्थ है। वेद कर्म करने का उपदेश देता है और उपनिषद् गीता, मनुस्मृति आदि भी। यह सभी ग्रन्थ पुरुषार्थ के साथ एकता और सगठन की शिक्षा दे रहे हैं। पर इन शिक्षाओ को जीवन मे न उतारने के कारण हमारे देश का ह्रास चरम सीमा पर पहुच गया है। एकता और पुरुषार्थ मे ऐसी शक्ति है कि इनके द्वारा मनुष्य जीवन मे निरन्तर आगे ही बढता चला जाता है। सम्पूर्ण ऐश्वर्यों को जीत लेता है। अत "चरैवेति चरैवेति— "चले चलो, चले चलो।

अत आप मातृभूमि की रक्षा के लिए पुरुषार्थी बनो, देश भक्त और बलिदानी बनो, परिश्रमी और तपस्वी बनो, बुद्धिमान, मेधावी बनो, उदार और सेवा भावी बनो, विद्वान् और परोपकारी बनो।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

इतवार 20 पौष सम्वत् 1993 तदानुसार 3 जनवरी 1937

दयानन्द मठ

समाचार मिला है कि स्वामी वेदानन्द जी ने डिंगा में दयानन्द मठ के नाम से एक साधु आश्रम खोल दिया है। जहां साधुओं को मुफ्त भोजन दिया जाएगा और उन को शिक्षा दे कर इस योग्य बनाया जाएगा कि वह आर्य समाज की प्रचार द्वारा सेवा कर सकें। अगर स्वामी वेदानन्द जैसा विद्वान अपने साधु आश्रम का नाम दयानन्द मठ रख सकता है तो इस नाम पर आपत्ति उठाना अनुचित है। बाकि रहा यह सवाल की स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी वह रूपया जो उन्होंने दयानन्द मठ के लिए जमा किया है आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के हवाले कर दें। इस का जवाब तो स्वामी जी ही दे सकते है। मैं समझता हूं कि अगर एक की बजाए दो मठ हो जाएं तो क्या हर्ज है। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने यह निश्चय कर रखा है कि वह अमृतसर में दयानन्द मठ खोलेंगे। अमृतसर साधुओं का गढ़ है। वहां साल भर में हजारों साधु आते जाते रहते है। स्वामी जी उन साधुओं से सम्पर्क पैदा करना चाहते है और यदि सम्भव हुआ तो उन्हें आर्य समाज की तरफ खींचना चाहते हैं। इस समय उन्हे खींचने का कोई जरिया नहीं। जिस वक्त दयानन्द मठ कायम हो जाएगा तो साधु भी स्वयं वहां आया जाया करेंगे। एक ही प्रकार की दो संस्थाओं में इसलिए भी हानि नहीं कि यह साधुओं के लिए है। जिन्होंने भिक्षा कर के ही खाना है। गृहस्थियों की स्थिति में तो सोचने की आवश्यकता होती है कि एक की बजाए दो मठ जारी किए जाएं या न। मैं स्वामी वेदानन्द जी को बधाई देता हूं कि उन्होंने दयानन्द मठ कायम कर के आर्य समाज की एक आवश्यकता को पूरा किया है। साथ ही उन से प्रार्थना करता हूं कि इस मठ के विषय में विस्तार से सारी स्थिति आर्य जनता के सामने रखें ताकि उन्हें सन्तोष हो।

—कृष्ण (महाशय कृष्ण)

पंजाब प्रान्तीय आर्य वीर सम्मेलन सियालकोट

24 से 27 दिसम्बर तक चार दिन सियालकोट में पंजाब प्रान्तीय आर्य वीर सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन प्रि. राजेन्द्र कृष्ण कुमार की अध्यक्षता में हुआ। पंजाब की भिन्न 2 आर्य समाजों के प्रतिनिधि इसमें सम्मलित हुए। सम्मेलन में कई एक महत्वपूर्ण निश्चय किए गए जिनमें एक यह भी है कि पंजाब भर में आर्य वीर दल स्थापित किए जाएं। यह आन्दोलन अब सफल होता दिखाई दे रहा है। इसके लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से नियत किए गए दलपति लाला हरदयाल जी बी ए अवकाश प्राप्त इन्सपैक्टर आफ स्कूलजपूरी लगन से प्रयास कर रहे हैं। यद्यपि सर्दी के दिन थे और शहर के लोग चुनाव के काम में लगे हुए थे, फिर भी यह अधिवेशन सफल समझा जाता है क्योंकि बाहिर से आर्य वीर दल के प्रतिनिधि उत्साह से सम्मलित हुए थे। परन्तु उपस्थिति अधिक न थी। स्थानीय लोग बहुत कम संख्या में आए। इसकी जहां सम्भवतः एक वजह यह थी कि सर्दी और चुनाव के दिन थे वहां दूसरा कारण यह भी था कि बुजुर्गों ने युवकों के उत्साह का पूरी तरह स्वागत नहीं किया और न उनकी विशेष सहायता की, फिर भी महाशय अमरनाथ जी मन्त्री आर्य समाज का उत्साह सराहनीय है। जिनके सहारे युवकों ने अपने कन्धों पर इतना बोझ उठाने का साहस किया। अगले वर्ष इस सम्मेलन का दूसरा जलसा करनाल में होगा।

—कृष्ण (महाशय कृष्ण)

आखरी पर्दा भी गिर गया

आर्य विद्या सभा के सम्बन्ध में जो विवाद बहुत देर से चल रहा था। वह अब पूर्णतया समाप्त हो गया और हम कह सकते हैं कि एक दुखान्त नाटक का आखरी पर्दा भी गिर गया। सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव जी ने इस के विषय में अपना जो निर्णय दिया था। उसने अब जालन्धर के एक न्यायालय के आदेश का रूप धारण कर लिया है और उस के साथ जालन्धर में जो मुकद्दमे चल रहे थे वह सब समाप्त हो गए। सार्वदेशिक सभा ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब और उस के प्रधान के विरुद्ध जो प्रस्ताव पारित किया था। वह भी अब समाप्त हो गया है। अन्तिम निर्णय के अनुसार —

1 एक नई विद्या सभा बनाई जाएगी। जिस में पंजाब, हरियाणा और देहली की प्रतिनिधि सभाओं के 9-9 प्रतिनिधि और सार्वदेशिक सभा के दो प्रतिनिधि होंगे।

2 आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रधान पहले तीन वर्ष इस विद्या सभा का प्रधान रहेगा।

3 आवश्यकता अनुसार विद्या सभा का नया विधान बनाया जाएगा।

4 गुरुकुल कांगड़ी और उससे सम्बन्धित संस्थाओं की जो सम्पत्ति है उस की स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब रहेगी। जब तक और कोई सर्वसम्मत प्रबन्ध न किया जा सकेगा।

5 डा. हरिप्रकाश को गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता के पद से तुरन्त हटा दिया जाएगा।

मैं समझता हूं कि इस फैसला के बाद आपस के विवाद का कोई कारण नहीं रहता। गुरुकुल कांगड़ी और उस से सम्बन्धित संस्थाओं को सुचारू रूप से चलाने के लिए जिस आपस के सहयोग की आवश्यकता थी। वह भी अब इस फैसले के बाद सम्भव हो सकेगा। इस विवाद को समाप्त कराने में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जी, वरिष्ठ उपप्रधान श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव जी, कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ जी मरवाह और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कानूनी मन्त्री श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा ने जो प्रयास किया है इस के लिए मैं इन सब का आभारी हूं। हम भी मुकद्दमेबाजी में पड़ना नहीं चाहते थे। परिस्थितियों ने हमें विवश कर दिया था और आज मैं कह सकता हूं कि :—

बड़ा मजा उस मिलाप में है।
जो सुलह हो जाए जंग हो कर॥

वीरेन्द्र

वर्ष 1987 मंगलमय हो

एक वर्ष के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा वर्ष निरन्तर हमारे जीवन में जुड़ता जा रहा है। वर्ष बीतता है नव वर्ष नव उमंगें लेकर हमारे सामने आ जाता है। 31 दिसम्बर को वर्ष 1986 समाप्त हुआ और प्रथम जनवरी से वर्ष 1987 आरम्भ हो गया है।

हम नव वर्ष वैसे तो नव सम्वत् से ही मानते हैं, परन्तु अक्सर हमारे बहुत से भाई प्रथम जनवरी को भी अपने मित्रों को बधाई पत्र भेजते हैं कि यह आने वाला नव वर्ष आपके लिए मंगलमय हो।

आर्य मर्यादा का यह अंक वर्ष 1987 का प्रथम अंक होगा। इस अवसर पर हम अपने सभी पाठकों के लिए मंगल कामना करते हैं कि यह वर्ष 1987 उनके लिए मंगलमय हो।

समय बड़ी तेजी के साथ भाग रहा है। हमें भी जीवन में तेजी के साथ चलना चाहिए। वेद भी कहता है "कालो अश्वो वहति" समय घोड़े की चाल से चलता है। इसलिए हमें भी अपने कदम तेजी से आगे बढ़ाने चाहिए ताकि हम समय के साथ चलते हुए जीवन में आगे बढ़ सकें।

—सह-सम्पादक

सम्पादकीय—

सम्पूर्ण क्रान्ति का प्रयोजक आर्य समाज–2

इस लेखमाला के पिछले क्रम मे मैंने लिखा था कि स्वर्गीय श्री जयप्रकाश नारायण ने सम्पूर्ण क्रान्ति का विचार तो अपने देशवासियो को दिया था परन्तु वह उसे क्रियान्वित न कर सके। ऐसे और भी कई उदाहरण हैं कि कई बड़े-2 विद्वान् और महापुरुष अपने विचार और कई नई योजनाए अपने देशवासियो के सामने रखते हैं। परन्तु अपने ही जीवन मे उसे क्रियान्वित होते नहीं देख सकते। हम महात्मा गान्धी की विचारधारा पर दृष्टिपात करें तो इसी परिणाम पर पहुंचेंगे कि जो कुछ उन्होने अपने देशवासियो को दिया था, उनके जाने के पश्चात् वह सब समाप्त हो गया। और तो और उनका ही नाम लेने वाले कांग्रेसी खद्दर तक भी अब पहनना पसन्द नहीं करते। उन्होंने नशाबन्दी के विरोध मे एक बहुत बड़ा आन्दोलन चलाया था। उसके लिए महिलाओं से शराब की दुकानो के बाहिर धरने लगवाए थे। परन्तु आज कांग्रेस मे शराब पीने वालो की सख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और उसे कोई रोकता नहीं। कहने का अभिप्राय यह कि बहुत कम ऐसे प्रसिद्ध व्यक्ति हुए है जिनके देहान्त के बाद उनके बताए हुए मार्ग पर चलने का उनके ही अनुयाईयो ने कोई प्रयास किया हो। कई बार वह उससे उल्टे भी चलते हैं। आजकल पजाब मे आतकवाद जोरो पर है क्या कोई कह सकता है कि दसो गुरुओ मे से किसी ने भी इस प्रकार के आचरण की अनुमती दी हो। श्री गुरु नानक देव जी तो शान्ति और सदभावना के अग्रदूत समझे जाते थे। आज उनका ही नाम लेने वाले उनकी शिक्षाओं और मान्यताओ के विरुद्ध जा रहे हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती बहुत सौभाग्यशाली थे कि जो प्रचार उन के जीवन मे आर्य समाज का न हुआ था वह उनके बाद हुआ है। उन्होने 1875 मे एक बीज बोया था वह बढ़ता 2 इतना बड़ा हो गया है कि अब उसकी हजारो शाखाए हैं। विदेशो मे भी कई स्थानो पर आर्य समाजें चल रही हैं। देश मे आज हम जो समाजिक और राजनैतिक जागृति देखते हैं उसका श्रेय भी बहुत कुछ आर्य समाज को ही है। कोई भी इतिहासकार जब पिछले एक सौ वर्ष का देश का इतिहास लिखने लगता है, तो वह यह लिखे बिना नहीं रह सकता कि जिन सस्थाओ ने देश मे नई धार्मिक, समाजिक और राजनैतिक जागृति पैदा की है उनमे आर्य समाज का विशेष महत्व यह रहा है कि उसने अपने आपको केवल धार्मिक गतिविधियो तक ही सीमित नहीं रखा वह समाजिक क्षेत्र मे भी सक्रिय रहा है और राजनैतिक क्षेत्र मे भी। देश मे कोई दूसरी ऐसी सस्था नहीं है जिसने तीनो क्षेत्रो मे काम किया हो। इस पर आर्य समाज जितना भी गर्व करे कम है।

पर तु आज स्थिति कुछ बदल रही है। चारो तरफ के वातावरण को देख कर अपनी आखें और कान बन्द करके बठे रहने से कोई लाभ न होगा। महर्षि दयानन्द भी हमे यही कह गए थे कि सदा जागते रहना इसीलिए तो कहा है कि—

"जो जागत है सो पावत है।
जो सोवत है सो खोवत है॥

हम जब अपने चारो तरफ देखते हैं तो उस बट वृक्ष को जिसका नाम आर्य समाज है, उसकी कुछ शाखाए सूख रही है, अपने आपको धोखा देने से कोई लाभ न होगा वास्तविक स्थिति यह कि आर्य समाज मे शिथिलता आ रही है। हम पिछले एक सौ वर्ष मे जहा तक पहुचे हैं अब हमारा कदम आगे नहीं बढ़ रहा। नई-2 समस्याए हमारे सामने खड़ी हो रही हैं। देश का वातावरण दूषित हो रहा है। ऐसी स्थिति मे यह सोचने की आवश्यकता है कि अब आर्य समाज क्या करें? वह कौन सी नई समस्यायें हैं जिनका समाधान ढूढने की आवश्यकता है। आज हम अपने देशवासियों को क्या नया सन्देश दे सकते हैं, हम इस पर विचार नहीं कर रहे। यह मैं आज की स्थिति का सबसे निराशाजनक पक्ष समझता हू, परन्तु हाथ पर हाथ रखने से भी काम न चलेगा कुछ न कछ तो करना ही पड़ेगा। वह क्या हो सकता है। इस पर आगामी अक मे अपने विचार पाठको के सामने रखूगा।

—वीरेन्द्र

आर्यों का आदि देश

आर्यों का आदि देश कौन सा है यह बहुत देर से एक विवादस्पद विषय बना हुआ है। पाश्चात्य इतिहासकारो ने जानबूझ कर यह भ्रान्ति फैलाने का प्रयास किया है कि आर्य बाहिर से आए थे और इस देश के आदि निवासी कोई और थे। जब तक अग्रेज हमारे देश मे रहे हमारे बच्चो को वही शिक्षा दी जाती थी जो वह चाहते थे। उन के द्वारा लिखी गई पुस्तकें स्कूलो और कालेजो मे पढाई जाती थी। इसका परिणाम यह हुआ कि हमारे ही भाई कहने लग गए कि हम तो इस देश के आदि वासी नहीं हैं। महर्षि दयानन्द जी ने इस भ्रम को समाप्त करने का कुछ प्रयास अवश्य किया, इसके विषय मे उन्होने सत्यार्थ प्रकाश मे भी लिखा था फिर भी यह विवाद चलता रहा है, क्यो कि इस भ्रम को दूर करने के लिए जो कुछ हमे करना चाहिए था हमने नहीं किया। आर्य समाज के अतिरिक्त किसी दूसरी सस्था ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। इसलिए आर्य समाज के विद्वान समय-2 पर इसके विषय मे कुछ लिखते रहते हैं।

श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने 'आर्यों का आदि देश' नाम की एक छोटी सी पुस्तिका लिखी है जिसमे उन्होने यह प्रमाणित किया है कि आर्य बाहिर से न आए थे, इसी देश के रहने वाले हैं और यहीं उन्होने अपने धर्म और अपनी मान्याताओ का प्रचार किया था। इस पुस्तिका के विषय मे श्री स्वामी जी ने अपने विचार इन शब्दो मे व्यक्त किए हैं।

"वेद मे आये आर्य और दस्यु शब्द गुणवाचक हैं जाति वाचक नहीं। इन शब्दो के वास्तविक अर्थों को न जान कर अथवा जानबूझ कर पाश्चात्य विद्वानो ने यह सिद्ध करने का यत्न किया कि आर्य नाम से पुकारे जाने वाले लोग भारत के मूल निवासी नहीं हैं। यहा के मूल निवासी इस देश के असली मालिक वह लोग है जिन्हे आज आदिवासी या पिछड़ी जातिया कहा जाता है। यह कल्पना हमे अपमानित करने और आपस मे लड़ाने के लिए की गई। वेद मन्त्रो के काल्पनिक अर्थ कर के यह भी कहा गया कि आर्य लोग आदि वासियो से ही नहीं लड़ते थे आपस मे भी उनका युद्ध होता था। दक्षिणात्यो के मन मे उत्तर भारतियो के प्रति घृणा उत्पन्न करने के लिए यह भी सिद्ध करने का यत्न किया गया कि उत्तर भारतीय आर्य विदेशी आक्रान्ता है जिन्होने बाहिर से आकर यहा के मूल निवासियो पर तरह-2 के अत्याचार किए और विजयी होकर इस देश की धरती पर बलात अधिकार कर बैठे।"

जो कुछ मैंने ऊपर स्वामी जी की पुस्तिका से उधृत किया है उसी से पता चल जाता है कि इसमे उन्होने आर्यों के आदि देश के विषय मे क्या कुछ लिखा है। श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी की गणना आर्य समाज के उन विद्वानो और बुद्धिजीवियो मे की जा सकती है जो हमारी समस्याओ पर सोच भी सकते है और हमारा मार्ग दर्शन भी कर सकते हैं। अपनी इस पुस्तक मे उन्होने इस प्रश्न के भिन्न 2 पक्ष पाठको के सामने रखे हैं और साथ ही जो शकाए उत्पन्न हो सकती हैं उनका समाधान भी किया है। प्रत्येक आर्य समाजो को यह 36 पृष्ठ की छोटी सी पुस्तिका अवश्य पढ़नी चाहिए। इसका मूल्य भी केवल दो रुपए रखा गया है और इसे वैदिक यतिमण्डल दयानन्द मठ दीनानगर (पजाब) ने प्रकाशित किया है। यह आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से भी मिल सकती है। यह एक ऐसी पुस्तक है जो प्रत्येक आर्य समाज और आर्य समाज की प्रत्येक आर्य शिक्षा सस्था मे रहनी चाहिए। अपने बच्चो को पढा कर अपने देश की वास्तविक स्थिति उनके सामने रखनी चाहिए।

वीरेन्द्र

आज हम कहां खड़े हैं–६

आर्य समाज का धर्म पक्ष

प्रामाण्यवाद–2

ले—श्री पण्डित सत्यदेव जी विद्यालकार
शान्ति सदन 145।4 सेंट्रल टाऊन जालन्धर

(7 दिसम्बर से आगे)

यजु 32 1। मन्त्र का अथ ईश्वर परक किया है। अग्नि—ज्ञान स्वरूप, आन्त्यि प्रलय समन सब को ग्रहण करने वाला इत्यादि शब्दो का अथ ईश्वर परक किया है।

गायत्री, त्रिष्टुप, जगती छन्दो के मन्त्रो से यज्ञ के द्वारा पृथिवी मण्डल, अन्तरिक्ष मण्डल तथा द्युलोक पर प्रभाव की बात तो कही गई है, पर इसको सिद्ध कैसे किया जाए। अन्तरिक्ष लोक और द्युलोक की इयता सीमा क्या है। वहा तक प्रभाव को सिद्ध करने के साधन क्या अभी तक बने हैं, यह स्पष्ट नही।

क्या ऋषि दयानन्द ने मन्त्रो और छन्दो के ध्वन्यात्मक प्रभाव को माना है। सामान्य अध्ययन स तो यही पता चलता है कि ऋषिवर मन्त्रा के विचारो पर आचरण को ही मुख्यता देत हैं। तुलसी रामायण के प्रमी रामायण के छन्दा के ध्वन्यात्मक प्रभाव को मानत है, मुसल मान कुरान की आयना के, सिख गुरु ग्र थ साहित्र की वाणी के तथा ईसाई बाइबल क वचना के ध्वन्यात्मक प्रभाव की बान क ८ है। पर इन सब को सिद्ध नही किया जा सकता। किस धम का मानने वाला अपने धम ग्र थ म कितनी श्रद्धा रखना है इसका ही सब प्रभाव है। मन्त्र या वाणी के शब्द चेतन नही जड है। उच्चारण करने वाला चेतन है। प्रभाव उसके मन का है, मन्त्र, छन्द या वाणी का नही।

कम स कम इस विषय पर और विचार अपेक्षित है।

3 आय मर्यादा के 1।3।86 तथा 15।6।86 के अको मे "यज्ञ चिकित्सा विज्ञान" शीषक से 2 लेख हैं। इन मे रोगी की चिकित्सा के लिए औषधि भावित जल का आचमन, सिद्ध घृत का दीपक जलाना, विशिष्ट सामग्री प्रयाग, यज्ञ शप धन का भिन्न अगो पर मलना यज्ञ धमपान आदि से रोगी को लाभ होगा एसा कहा गया है। मन्त्रोच्चार म लग और स्वरोच्चार से भी रोगी को लाभ गा। ऐसा स्पष्ट किया गया है।

इस विषय मे इतना ही कहा जा सकता कि सामान्य प्रक्रिया का वणन है। गोग ना अन न है। उनको पहिचान, उनका मूल विवचन, औषधियो का चयन, उनके मिश्रण, उपयोग, अनुपात यह सब आयुर्वेद का विषय है। यज्ञ की कुछ सामग्री के और घी के प्रयोग से कितना लाभ अपेक्षित हो सकता है। यह सब तो अनुमान का विषय है। आयुर्वेद क देशी विदेशी इतने रूप विकसित हो चुके है उनमे यज्ञीय चिकित्सा विज्ञान का क्या महत्व सम्भव है? आजकल के युग म चिकित्सा क क्षत्र म व्यय का भी बहुत महत्व है। प्राय रोगी के लिए सस्त और तात्कालिक प्रभाव डालने वाले औषध उपलब्ध है। बड रोगो और लम्बी बीमारियो के लिए बहुत उपयोगी उपकरण तथा उपचार प्रयोग मे आते हैं। प्रत्येक दवाई का कैमिकल एनलेसिस होता है। ओषध का केवल उपयोगी भाग औषध के रूप मे प्रयुक्त होता है। सम्पूण जड पत्ती छाल फूल नही। याज्ञिक चिकित्सा विज्ञान मे ईधन लकडी (अयन्त इध्म आत्मा), घृत घी (समिधाग्नि दुवस्यात घृतैर्बोध्यता तिथिम), द्रव्य आहुति, (अस्मिन न हव्या जुहोतन)। इन सबसे यज्ञाग्नि प्रदीप्त और बलवान होता है। इस यज्ञ का फल है प्रजा सन्तान, पशु, ब्रह्म वचस तथा आद्य अन्न।

द्रव्य के सम्ब ध म ऋषि दयानन्द ने चार पदाथ स्पष्ट किए सुगन्धित, मधुर, पुष्टिकारक तथा रोग नाशक। अब यदि इन सकेतो के आधार पर वैज्ञानिक दृष्टि स ढाचा खडा किया जाए तो लाभ प्रत्यक्ष हो सकता है। उदाहरण के लिए वृष्टि के लिए यज्ञ करना है। यज्ञ कुण्ड का निर्माण, ईधन का प्रकार और मात्रा घृत का रूप और मात्रा, आहुति द्रव्यो का चयन तथा उनकी मात्रा, आहुति मात्रा, इन सब का निश्चित रूप मे संग्रह और निश्चय चाहिए।

इस सब के बाद वैज्ञानिक रूप से यह परीक्षण तब सफल और उपादेय माना जाएगा जब निश्चित प्रणाली से 100 या 50 यज्ञ किए जाए और उनमे से 70 या 80 प्रतिशत परीक्षण सफल हो फिर उनके व्यय और लाभ का लेखा जोखा होगा।

मन्त्रो का चयन और उनके प्रभाव का आकलन इस प्रक्रिया का सबसे कठिन काम होगा। वृष्टि लाने के और भी अनेक उपाय प्रयोग मे आते हैं। उनकी तुलना मे यह काय कम व्यय साध्य होना चाहिए तभी इस साधन को स्वीकार किया जा सकेगा। यही बात रोग निवारण तथा प्रदूषण निवारण के सम्बन्ध मे भी कही जा सकती है।

यदि इसका यह रूप नही विकसित होगा तो यज्ञ कार्य भी उन अनेक कार्यों मे सम्मिलित हो जाएगा जिनका आधार केवल अन्ध श्रद्धा है। हिन्दू समाज मे तो यज्ञ केवल श्रद्धा का केन्द्र और आधार है। केवल एक धार्मिक कृत्य है। ऋषि दयानन्द ने इसे एक वैज्ञानिक, तर्क सगत आधार देने का बडा प्रयत्न किया। आय समाज इस काय को आगे ले जाने का प्रयत्न अवश्य कर रहा है। कितनी सफलता मिली है यह विद्वानो को ज्ञात ही है।

योग भी सदा से लोगो की श्रद्धा का केन्द्र रहा है। योगी शब्द से ही ऐसे भक्त पुरुष का रूप सामने आता है, जिसकी सुन्दर जटाए है, दाढी भी काली सफेद लहरा रही है। शरीर पर एक उपवस्त्र है और एक अधोवस्त्र। योगाचाय लोग प्राय आसनो, तथा यौगिक प्रक्रियाओ नेति धोति आदि पर बहुत बल देते हैं तथा प्रदर्शन करते हैं। ऋषि दयानन्द ने तो इन पर बल नही दिया। वे तो लगभग अन्त समय तक शरीर साधन के लिए दौड, भ्रमण तथा व्यायाम का उपयोग करते थे। ऋषि दयानन्द की विचार पद्धति मे योग के अष्टागो का प्रारम्भ प्राणायाम से होता है। फिर शेष अग चलते हैं।

एक बात समझने की भी है कि जल नाक, मलमार्ग तथा आन्तो की सफाई के लिए नेजल डूश, अनीमा, पम्प आदि उत्कृष्ट साधन मिल जाते हैं तो फिर नेति धोति तथा न्योली क्रिया के सीखने मे परिश्रम और समय का व्यय क्यो किया जाए। पातञ्जल योग शास्त्र मे आसन के सम्बन्ध मे केवल "स्थिर सुखमासनम्" ऐसा निर्देश है। इसका अभिप्राय यह है कि आसन उसे कहते हैं जिस से मनुष्य स्थिरता तथा आराम से अधिक देर बैठ सके। आसन तथा नेति धोति आदि क्रियाओ का सम्बन्ध हठयोग से जिसका प्रसार पीछे चलकर हुआ। ऋषिवर ने उपासना प्रकरण मे स्पष्ट ही लिख दिया है अपनी सुविधा के अनुसार बैठने का ढग अपना ले। योग के नाम से आसनो का, मुद्राओ का, तथा षड अगो का जो विस्तार और महत्व आजकल योगाचार्य प्रचारित करते हैं, ऋषि दयानन्द उनमे से किसी को भी नही स्वीकार करते।

आसन एक व्यायाम का प्रकार है, एक प्रकार की शरीर मोडने और तोडने की कला है। अन्य व्यायामो की श्रेणी मे यह भी एक है। इसी दृष्टि से इसका प्रयोग और प्रचार होना चाहिए। योग के नाम के साथ जुडी हुई श्रद्धा का दुरुपयोग नही होना चाहिए। आर्य समाज मे भी कई साधु वेशधारी सज्जन इनका प्रचार करते है।

एक बात बडी विचित्र लगती है। योग और यज्ञ के आचार्य प्राय अमीरो के आस पास ही घूमते दिखाई देते हैं। थोडा सा प्रारम्भिक प्रचार करने के बाद आचार्यों को आश्रय बनाने की चिन्ता सताने लगती है। तब धनवान ही आश्रय बन जाते हैं। सम्भवत गरीबो का, सामान्य जन समाज का न तो योग से कोई सम्बन्ध है और न यज्ञ से, यज्ञ मे तो यजमान बनने के लिए अच्छी फीस देनी पडती है। योग और यज्ञ की अमीरो के मनोरजन और लाभ का साधन बनाना समाज के लिए घातक परिणाम उत्पन्न कर सकता है। भारत मे योग एक तमाशा बन गया है। योगाचार्य के महत्व की पहचान उसके अत्याधिक आधुनिक आश्रय, मोटरकार, चेले चेलियो से राजनीतिक नेता और उनकी पत्नियां, इन सब से होती हैं। प्राचीन काल के सन्त महात्मा अपनी परमकुटियाए शहरो से दूर बनाते थे। लोग उनके पास जाते थे वे लोगो के पास अपना कोई परिचय पत्र नहीं भेजते थे। पर अब तो आश्रम का महत्व ही उसके बडे नगर मे होने से है।

सम्भवत जिस योग के पीछे हम पागल हुए फिरते हैं वह योग ही नहीं है योग ने हम को छोड दिया है या हम ही योग को भूल गए हैं। ऋषि दयानन्द की दृष्टि म तो वेद, योग और यज्ञ तीनो ही मानव मात्र के कल्याण के साधन हैं।

———

जन्म-मरण की उलझन—१२

जीवन का उद्देश्य

लेखक—प्रा श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य
साधु आश्रम (होशियारपुर)

(14 दिसम्बर से आगे)

तभी तो श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर ने लिखा है—"मृत्यु की मोहर जीवन के सिक्के को विशेष मूल्य प्रदान करती है। ताकि हम जीवन से वह सब प्राप्त कर सकें, जो कि सचमुच मूल्यवान है।" मृत्यु की मोहर हमारे जीवन के सिक्के को उसी प्रकार विशेष मूल्यवान बनाती है, जैसे कि डाकखाने की मोहर, जब हम डाकखाने मे ब्याज के लिए पास बुक जमा कराते हैं, तो उस के बदले मे मिलने वाली चिट को हस्ताक्षर के साथ मोहर मूल्यवान बना देती है। इसी भाव को सामने रख कर श्री भर्तृहरि जी ने कहा है—जब तक शरीर स्वस्थ है, जब तक बुढापा नही सताता और इन्द्रिया शक्तियुक्त हैं तथा जीवनचर्या ठीक प्रकार से चल रही है। इन्ही दिनो ही विचारशील को अपनी भलाई और जीवन की पूर्णता के लिए विशेष यत्न करना चाहिए, अन्यथा घर मे आग लग जाने पर जैसे कुआ खोदना या खोदने के लिए सामग्री जुटाना बेकार है। वैराग्य शतक—82—

> यावत्स्वस्थमिद कलेवर गृह यावच्च दूरे जरा,
> यावच्चेन्द्रिय शक्तिरप्रतिहता यावत्क्षयो नायुष।
> आत्मश्रेयसि तावदेव विदुषा कार्य प्रयत्नो महान।
> सदीप्ते भवने तु कूपखनन प्रत्युद्यम कीदृश ॥

ठीक वैसे ही प्राण पछी के उड जाने पर अब गीता और विशेष पुराण का पाठ सुनाने और उस की पवित्रता, सद गति के लिए यज्ञ, दान, पुण्य, ब्रह्म भोज का क्या लाभ ? दूसरो की सहायता करना बहुत अच्छी बात है, पर इस का अनुपस्थित आत्मा की पवित्रता से क्या सम्बन्ध ?

जैसे ससार मे शास्त्रों का कोई पार नही, उन की सख्या असंख्य हैं, कोई भी सारे शास्त्रो को पढ नही सकता। अत हस की तरह अपनी रुचि और योग्यता का ध्यान रखते हुए तदनुकूल शास्त्रों को छांटा जाता है।

पंचतन्त्र कथामुख—

> अनन्तपार किलशब्दशास्त्रम,
> स्वल्प तथायुर्बहवश्च विघ्ना।
> सार ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु,
> हसैर्यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात् ॥

वैसे ही ससार में जीवन के कार्य क्षेत्रो की कोई सीमा नही है, परन्तु आयु सीमित है और उस पर उस को झपने वाले विघ्न पग पग पर हैं। अत जैसे हस फीके को छोड कर सार को अपनाता है, वैसे ही जीवन की सफलता के लिए अपनी रुचि के अनुरूप किसी भी क्षेत्र मे कोई साध साधने मे जुट जाना चाहिए। अन्यथा 'चिड़ियो ने चुग जब खेत लिया, तो फिर पछताए अब क्या होवत है, के अनुसार यदि समय पर ध्यान न दिया, तो बाद मे पछताने से कोई लाभ न होगा, अर्थात फिर हाथ मे कुछ न लगेगा। इसीलिए विचारको ने सावधान करते हुए क्या ही मार्मिक शब्दो मे कहा है—

> 'गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्म माचरेत।'

अर्थात मृत्यु का ध्यान रखते हुए सदा अच्छाई का आचरण करे, क्योकि सभी के शरीर मरणधर्मा हैं और धन भी सदा रहने वाला नही है। यतो हि सब के सिर पर मृत्यु सदा सवार रहती है, अत हमेशा ही अच्छाई मे जुटे रहना चाहिए।

> अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वत।
> नित्य सन्निहितो मृत्यु कर्त्तव्या धर्म सचय ॥

एतदर्थ होश सभालते ही भले काम शुरू कर देने चाहिए, पता नही किस की कब मौत हो जाए, क्योकि जीवन अनिश्चित है।

> युवैव धर्मशील स्यादनित्य खलु जीवितम।
> को हि जानाति कस्याद्य मृत्युकालो भविष्यति ॥

अत जो पराये उपकार करने मे लगे रहते है, वे नर नारी धन्य हैं — सत्यार्थ प्रकाश समु 3, पृष्ठ 48। 'सच तो यह है कि इस अनिश्चित क्षणभगुर जीवन मे पराई हानि करके लाभ से स्वय रिक्त रहना, अन्य को रखना मनुष्यपन से बाहिर है' सत्यार्थ प्रकाश, अनुभूमिका—4।

इस लिए मानव जैसे अनमोल चोले को प्राप्त करके प्रत्येक को ऐसे कार्य अवश्य करने चाहिए, जिससे याद करने वाले कह सकें, कि—

> हस के जिया कोई,
> कोई रोके जिया।
> मगर जिन्दगी पाई उसने,
> जो कुछ हो के जिया।
> अथवा
> यू फूल तो गुलशन मे खिलते हैं हजारो ही।
> हो जिस मे भरी खुशबू मरना तो उसी का है ॥

किसी-किसी के जीवन को देख कर कभी कहना न पड —

यह भी क्या जीवन है, पैदा होना और मर जाना अन्यथा, फिर पछताने मे पड कर किसी को यह गुन गुनाने के लिए विवश होना पडेगा—

> मेरा जीवन काम न आया,
> जैसे सूखे पेड की छाया।

जो मानव जीवन जैसे अनोखे अवसर को प्राप्त करके भी उस का लाभ नही उठाए। ऐसो को ही ध्यान मे रख कर सम्भवत कबीर ने कहा है—

> बडा हुआ तो क्या हुआ,
> जैसे पेड खजूर।
> पछी को छाया नही,
> फल लागे अति दूर ॥

क्योकि जो जीवन किसी के काम नही आता, अर्थात जो कभी किसी का भला नही करता, वस्तुत उसी जीवन का ही चित्रण करते हुए कहा है—

> रात गवाई सोय कर,
> दिवस गवाए खाए।
> हीरा जन्म अमोल था,
> कौडी बदले जाए ॥

इस सारे विवेचन का भाव यह है, कि मानव जीवन की सफलता जीवन को उत्कृष्ट बनाने, पर उपकार करने मे है, क्योकि—

> जीविते यस्य जीवन्ति विप्रा मित्राणि बान्धवा।
> सफल जीवित तस्य आत्मार्थे को न जीवति ॥

जिस के जीने पर समझदार, मित्र और बान्धव जीते हैं अर्थात उनको लाभ होता है उसी का जीना सार्थक है वैसे अपने आप के लिए तो कीड मकौड भी जी लेते हैं। ईमानदारी मे सच्चा सुच्चा जीवन व्यतीत करने और किसी के दुख दूर करने से ही मानव जीवन सफल होता है। तभी कहा है—

> न कामये राज्य नापुनर्भवम।
> कामये दु खतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम ॥

मैं न तो राज्य की इच्छा रखता हू और न ही बार बार जन्म मरण के चक्र से बचने के लिये मोक्ष चाहता हू। अपितु मैं तो केवल यही चाहता हू कि दु खी प्राणियो के दु ख दूर करने मे अपना जीवन लगा सकू।

आज के प्रवचन का समापन करते हुए सर्वप्रिय जी ने कहा—सज्जनो! पजाब मे जो छ वर्ष से बेदजनक वातावरण बना हुआ है, उस के कारण अनेक तरह की राजनीतिक, सामाजिक, प्रशासनिक और दार्शनिक आशकाए एक विचारशील के मन मे उभरती हैं। उन मे से दार्शनिक समस्याओ को सामने रख कर 'जन्म मरण की उलझन' के अनेक पहलुओ पर पिछले प्रवचनो मे हमने विचार किया है और इसी प्रसग मे यजुर्वेद के एक मन्त्र पर कुछ क्रमश विवेचन किया। आज की बैठक को समाप्त करने से पहले इस मन्त्र के अर्थ को एक बार फिर दुहरा लें—

> अश्वत्थे वो निषदन पर्णे वो वसतिष्कृता।
> गोभाज इत किलासथ यत्सनवथ पुरुषम ॥ 12 79॥

दुनिया वालो! तुम्हारी इस दुनिया के किसी पदार्थ का कोई भरोसा नही, कि वह कल रहेगा या नही, क्योकि ये सारे भौतिक पदार्थ नाशवान हैं और पत्त की तरह गिरने वाले शरीर मे तुम्हारा बसेरा है। हे आख कान एव पार्थिव पदार्थों का भोग करने वालो! इस मानव चोले को प्राप्त करके इसे सफल बनाने का यत्न करो।

एक अन्य मन्त्र मे इन्हीं भावो को इस रूप मे कहा है—

> वायुरनिलममृतमथेद भस्मान्त शरीरम।
> ओम क्रतो स्मर क्लिबे स्मर कृतम स्मर ॥ यजु 40,

हम सब की आत्मा अजर अमर है, यह न तो धरती की चीजो की तरह जलती है और न ही गलती या सूखती है। परन्तु हम सब का शरीर एक दिन आग मे जल कर राख हो जाता है। इस लिए इस सुदर जीवन को देने वाले भगवान को कभी तो याद करो और सोचो उसने तुम्हें [illegible] सुन्दर जीवन तथा जगत दिया [illegible] को प्राप्त करके तुमने आज तक क्या कमाया है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

विस्मय का विलीनीकरण

लेखक—श्री करसनदास लुहार 'निरंकुश'
अनु डा. कमल पुंजाणी

—इक्कीसवीं शती में—

जब बीसवीं शताब्दी का लेखा-जोखा किया जाएगा तब हमें पता चलेगा कि जितना हमने पाया है, उससे कहीं अधिक हम खो चुके हैं। हमारी अस्मिता खो गई है, हमारी सम्वेदना खो गई है, हमारा विस्मय खो गया है। ये बिलुप्तिया निस्सदेह चिन्तनीय है।

विस्मय की विलुप्ति के प्रति चिन्तित होकर पश्चिम के एक विचारक ने लिखा है—"बारूद के ढेर पर बैठी हुई मानव जाति की मुझे इतनी चिन्ता नहीं है जितनी कि उसके हृदय से बिलुप्त होते हए विस्मय की है।"

निश्चय ही, हमारे भाव-रक्त से विस्मय की त्वचा विलुप्त हो रही है, हम सम्वेदनहीन हो रहे है, फिर भी हम कहते हैं कि हम जी रहे है, लेकिन क्या यह जिन्दगी है?

एक तत्वचिन्तक ने मनुष्य को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है—1 जो जिन्दा है। 2 जो मर चुके है और 3 जो न जिन्दा हैं न मरे हुए है। हमारी गिनती तीसरी श्रेणी में की जाती है। हमारा शरीर तो जीवित है, पर हमारी सवेदनाए मर चुकी है। अब हमें वृक्ष में वृक्ष नहीं दिखाई देता, उस में हमे मेज, कुर्सी, पलग आदि फर्नीचर का सामान ही नजर आता है। न अब हम उसकी डालियों का डोलन ही देख सकते है, न उसके पर्णों की मर्मर ध्वनि ही सुन सकते है। न जाने किसने हमारी आखो का अपहरण कर लिया है, न जाने क्यो हमारे कर्ण पीले पर्णों की तरह गिर रहे है।

विस्मय अर्थात् आश्चर्य आखो से लेकर अन्तरमन तक की भाव भूमि को रस-सिक्त करने में समर्थ है, किन्तु हमारी पाठशालाओं में विश्व के सात आश्चर्यो की जानकारी देकर 'आखे आश्चर्य' को नष्ट कर दिया जाता है। प्रसिद्ध आलोचक डा गुणवन्त शाह का मन्तव्य है कि—"**हमारी पाठशालाएं केवल एक ही कार्य करती है और वह है बच्चो के विस्मय भाव को विलीन करना।**"

शिशु की आखें 'विश्व का आठवा आश्चर्य' है। सुविख्यात दार्शनिक स्टाइरिफ का तो यहा तक कहना है कि—"बालक की आखो में लाखो अजायबघर तैरते है।" बात बिल्कुल सही है। शैशवावस्था का दूसरा नाम ही विस्मयावस्था है। एक जमाना था, जब नक्षत्र खचित आकाश में चमकते हुए गोल-मटोल चन्द्रमा को देख कर शिशु का भोला मन अनेक जिज्ञासाओ से भर जाता था। वह अपने दादा से पूछता था —

"दादा जी,
क्या हम
इस चादा मामा को
'भगवान की जेब से
गिरा हुआ
चादी का रुपया,
नही कह सकते ?"

और आज मल्टीस्टोरी बिल्डिंग मे डेरी के दूध से पोषित सभ्यता सम्पन्न शिशु अपनी मम्मी से जो विचित्र प्रश्न करते है, उनकी झलक श्री भपेन्द्र सेठ की निम्नाकित पक्तियो म देखी जा सकती है: —

"मम्मी,
क्या हम
दूध की इस बोतल को
'दूसरी मम्मी'
नही कह सकते ?"

महानगरो की यान्त्रिकता बच्चो के विस्मय को बडी तेजी से विलीन कर रही है। महानगर के निवासी प्राय कलेण्डर की कनारो मे ही घूमन फिरते है। उन्हे वसन्त वर्षा के वैभव-सौदर्य का कोई पता नहीं होता। वे तो कभी-कभार खिडकी से बूदा बादी देख कर ही सतोष पा लेते है। फुहार मे भीगने का उनके पास समय नहीं होता।

भौतिक सुख-सुविधा की दौड मे हम अपनी ही अवलियो से अलग हो गए हैं। अब हमारी अगुली कौन पकडेगा? हमने विदेशी सभ्यता के अन्धानुकरण मे अपने आसपास औपचारिकता का एक ऐसा जाल बिछा दिया है जिसमे छुटकारा पाना कठिन है। हमारे घरो की दीवारो में 'मम्मी-पप्पा,' 'अकल आन्टी, बाय बाय, 'टा टा' आदि विदेशी शब्द ही गूजते रहते है और दफ्तरो मे 'यसमर, 'ओ के', 'थेंक्यू, 'सारी, 'गुड मोर्निंग, 'गुड आफ्टरनून आदि खोखले शब्द ही कानो पर टकराते है। सारा परिवेश सवेदन हीन हो गया है। इस पर किसी को आश्चर्य नही होता।

कवि कलाकार विस्मय की रक्षा मे महत्वपूर्ण योगदान दे सकते है, पर आज कल वे भी व्यवसाय और व्यसन के चक्कर मे पड गए हैं। तब कौन बचाएगा। हमारे विस्मय को, हमारी सवेदना को? हम सोते सोते खोखले बन गए है, खाली हो रहे हैं॥

(312, श्रीनाथ जी फ्लैट्स यूनिक शापिंग सैंटर के पीछे जामनगर)

आर्य भावना

लेखक—कवि श्री कस्तूर चन्द घनसार"
कवि कुटीर पीपाड़ शहर (राज)

आर्य विद्वान् वही है सच्चा, आर्य भावना भरते।
आर्य गहस्थ वही है जानो, आर्य कर्म नित करते।
भूले हुए वर्ष कई गुजरे, अब तक बने न राही।
बना गये ऋषि वेद-पथ को, करते हैं लापरवाही।

विश्व सुधारिक भावना ले कर, चलते वैदिक नेता।
ओज, तज, बल, विद्यापूरण, सद्विचार निकेता।
आर्य कर्म बली ब्रह्मचारी, समष्टि-हरि निहारे।
समता सब के साथ व्यवहारिक जन कल्याण विचारे।

सब की चहे विकासोन्नति, आर्य परिवार बनाने।
यज्ञ कर्मी-उत्कृष्ट भावयुत, दम्पत्ति आर्य कहावे।
धर्म एक ही कर्म एक ही, एक ही वेद हमारे।
एक ही सन्ध्या नियम-नीति सद, एक ही ओम् पुकारे।

एक ही वेद-पथ सद समझें, छोडें भिन्न साम्प्रदाए,
पन्थ अनेक एकता बाधक, राग औ द्वेष बढाए।
छिन्न भिन्न हो मानव विचलित भिन्न भावो की टोली।
भांति-भांति के देव बनाये, भले वैदिक बोली।

एको विश्वस्य भुवनस्य राजा, भूले है सब उनको।
मन मान, माने है ईश्वर, वेद-ज्ञान नहीं जिनको।
सभी मे आर्यवर्त हमारा, अप्रकाश हुआ है।
आया एक दयानन्द, स्वामी, वेद प्रकाश किया है॥

पाहन पुजारी बन कर बैठ, जड, सजू जटता धारी।
पोप-पाखण्डी निज स्वार्थ हित, वैदिक बोध विसारी।
चले भेद पन्थवादी बनने, पाखण्ड कला रही है।
इधर नीच-ऊच की जलती, ज्वाला खूब रही है।

मानवता का पता नही था, रहे गुमामी करते।
दानवता का रहा कोप था, दीन द्रव्य को हरते॥
अविद्या-आच्छादित मे भारत थे, न प्रकाश मे आया।
उसी समय देव दयानन्द, ले वेदो को है आया॥

समाचार और विचार

लुधियाना में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

21-12-86 रविवारको जिला आर्य सभा की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस इन्डस्ट्रीयल एरिया ए, गरीबो की झुग्गी-झोपडियो के पास खुले मैदान मे बडे समारोह से मनाया गया। प्रात 9 बजे एक विशाल और सुन्दर पण्डाल मे यज्ञ आरम्भ हुआ। यज्ञ को लुधियाना के प्रमुख विद्वानो श्री बालकृष्ण शास्त्री, श्री सुरेन्द्रपाल शास्त्री, श्री सत्यपाल शास्त्री, श्री सूर्यपाल शास्त्री ने सम्पन्न कराया। यज्ञ के यजमान जिला आर्य सभा के प्रधान श्री महेन्द्रपाल वर्मा सपरिवार झुग्गी झोपडियो के प्रधान चौ कर्मचन्द सपरिवार श्रीराम कुमार, श्री सोहन लाल ओबेराय, श्री मगलसेन वधवा, श्रीमती पुष्पावती मुन्झाल, श्रीमती शशि पासी श्रीमती कुलवन्ती आर्या, श्रीमती धर्मदेवी आर्या, श्रीमती स्वदेश गुप्ता, श्रीमती शशि आर्या, श्रीमती सत्यवति बजाज थी। इस यज्ञ मे जहा झुग्गी झोपडियो के बहन भाई बच्चे बड उत्साह से शामिल हुए। वहा नगर के हर भाग से आय बहन-भाई, कारो, वैनो, ट्रान्सियो, स्कूटरो, टागो, साइकलो द्वारा यहा पहुचे यज्ञ की पूर्ण आहुति मे सैकडो बहन भाईयो ने भाग लिया। यज्ञ के पश्चात श्री खुशबख्तराय जी सूद मालिक सिम्पलेक्स होजरी ने ओ३म का झण्डा लहराया, जय घोषो के मध्य जिला आय सभा, नगर की सब आय समाजो के अधिकारियो प्रतिष्ठित नागरिको, व्यापारियो ने उन्हे फूलो के हारो से लाद दिया, आदरणीय बहन कमला जी आर्या, बहन शान्ता जी गौड वानप्रस्थ, बहन कौशल्या देवी, बहन पुष्पा मन्झाल, बहन सन्तोष रहेजा, बहन शकुन्तला मण्ब्ल, बहन विद्यावती आय ने अपने भाई को आशीर्वाद दिया। उसके पश्चात समारोह की कार्यवाही प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सत्यानन्द जी मुन्झाल उप प्रधान सार्वदेशिक सभा दिल्ली की प्रधानता मे आरम्भ हुई, मच का सन्चालन जिला आर्य सभा के महा सचिव श्री आशानन्द आय ने किया।

नगर की सब आय समाजो—स्त्री आर्य समाजो, शिक्षण सस्थाओ ने इसे सफल बनाने मे पूरा सहयोग दिया, स्त्री आर्य समाज, आय समाज माडल टाऊन, स्त्री आय समाज, दाल बाजार, आय समाज और स्त्री आर्य समाज साबुन बाजार, आर्य समाज और स्त्री आय समाज फील्डगज, आर्य समाज और स्त्री आय समाज जवाहर नगर, आर्य समाज हबीबगज अमरपुरा, आर्य समाज कदवाई नगर, आर्य समाज बाग बजाञ्चिया, आर्य समाज सराभा नगर, आय समाज फोकल पुआइन्ट ने इस समारोह मे बढ चढ कर भाग लिया। इस समारोह को सफल बनाने मे श्री राजेन्द्र कुमार, श्री खुशबख्त राय सूद, डा मूलचन्द भारद्वाज, श्री ओम् प्रकाश पासी, श्री आयोध्या प्रसाद मल्होत्रा, श्री श्रवण कुमार बत्रा, श्री सुरिन्द्र कुमार आर्य, श्री बलदेव राज सेठी, श्री, श्री अनिल कुमार आर्य, चौ कर्मचन्द, राम कुमार, मा प्रवीन कुमार—आत्मप्रकाश अरोडा और नगर की सब स्त्री आर्य समाजो की बहनो ने पूरा सहयोग दिया। यज्ञ का सारा प्रबन्ध दो राजेन्द्र कुमार तथा आयोध्या प्रसाद मल्होत्रा का था।

— आशानन्द आर्य—महामन्त्री

(5 पृष्ठ का शेष)

यह तन तेरा तरुवर है, नेकी एक क्षीर सागर है,
इस तरुवर के फल खा जा रे, दुनिया से जाने वाले।
यह धन यौवन ससारी है, दो दिन की फुलवारी,
कोई खुश रग फूल खिला जा रे, दुनिया से जाने वाले।
तुझ से धन अन्त छूटेगा, जाने किस राह लुटेगा,
इसे परहित हेत लगा जा रे, दुनिया मे आने वाले।
जग सेवा है सुख-देवा, कर दीन दुःखी की सेवा,
यश पाना है तो पा जा रे, दुनिया से जाने वाले।
यह कचन काया तेरी, हो अन्त राख की ढेरी,
इस से जो बने बना जा रे, दुनिया मे जाने वाले॥

—जीवानन्द के—इसी गीत के साथ आज का सत्सग पूर्ण हुआ।

भिन्न-भिन्न आर्य समाजों में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

1 आय समाज बस्ती बावा खैल जालन्धर म 19,20,21 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। श्री प निरञ्जन देव जी, श्री प धर्मदेव जी सहायक अधिष्ठाता वेद प्रचार, श्री सरदारी लाल जी आय रत्न मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, श्री प किशनचन्द जी, श्री प मनोहरलाल जी, श्री प रामनाथ जी यात्री, श्री बूटाराम जी तथा अन्य कई बन्धुओ ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाञ्जलिया भेट की।

2 आर्य समाज जालन्धर छावनी की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द जी के जन्म स्थान तलवन मे 21-12 86 को बलिदान दिवस मनाया गया और उन्हे श्रद्धाजलि भेट की गई।

3 आर्य समाज सगरूर मे 21-12 86 को स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा राम प्रसाद जी बिस्मिल का बलिदान दिवस मनाया गया। महाशय मोतीराम तथा निरञ्जन दास जी गुप्त ने श्रद्धाजलिया अर्पित की।

4 आर्य समाज बस्ती गुजा जालन्धर मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस 23 12-86 को मनाया गया। श्री प धर्मदेव जी स वद प्रचार अधिष्ठाता ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

5 आर्य समाज शास्त्री नगर बस्ती गुजा जालन्धर म21-12-86 को अमर-हुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी, अमर शहीद वीर रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्लाखा, रोशनसिंह लाहडी आदि क के जीवन बारे उपस्थित जनता को बताया गया। स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन बार विद्वानो ने सविस्तार जनता को बताया। बहुत अच्छा प्रभाव लोगो पर पडा।

6' आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के आदेशानुसार आर्य समाज बटाला मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस और 18 दिसम्बर को श्री रामप्रसाद बिस्मिल जी के प्राणात किए जाने का दिवस बडी श्रद्धा तथा उत्साह से मनाया गया।

7 21-12-86 को आर्य समाज दीनानगर मे स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस बडी धूमधाम से मनाया गया। भिन्न-भिन्न वक्ताओ न स्वामी जी तथा शहीद राम प्रसाद बिस्मिल के जीवन पर प्रकाश डाला।

8 दिनाक 23 दिसम्बर विश्व वेद परिषद् चण्डीगढ के तत्वावधान मे अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का60 वा बलिदान दिवस आर्य समाज सैक्टर 22 मे मनाया गया जिस मे श्री आशुराम आर्य चौ रूपचन्द एडवोकेट प इन्द्रराज शर्मा, श्री बनारसी दास और बहन प्रेम-देवी ने अमर हुतात्मा स्वामी जी को श्रद्धाजलि भेट की।

आर्य समाज पीपाड़ नगर का चुनाव

पीपाड आर्य समाज का नवनिर्वाचन विक्रम सवत 2043 मार्गशीष सुदी 9को श्री बशीलाल जी वर्मा की अध्यक्षता मे हुआ जिसमे निम्न प्रकार पदाधिकारी सर्वसम्मिति से चुने गए।

प्रधान—श्री वशीलाल आय
उप-प्रधान—श्री हसराज जी आर्य
मन्त्री—श्री शकरलाल जी आय
उप-मन्त्री—श्री चम्पालाल आर्य
सगठन-मन्त्री—लादुराम जी आर्य
कोषाध्यक्ष—रामरखा जी आर्य
पुस्तकाध्यक्ष—श्री मदनलाल जी आर्य
सहायक—श्री पूनम चन्द जी आर्य
लेखा निरीक्षक—श्री वशीलाल जी वर्मा
प्रचार मन्त्री—कवि कस्तूर चन्द जी 'बनसार'
सहायक—श्री प्यारे लाल जी आर्य
आर्य वीर दल के नगर नायक—श्री विजय कुमार जी आर्य।

आर्य वीर दल के शाखा नायक—श्री करवा राम आर्य।

कार्य कारिणी के सदस्य

श्री अनन्दाराम जी आय
श्री भवर लाल जी आर्य
श्री जय किशन जी सानी
श्री हीरालाल जी जडिया
श्री मदनलाल जी आर्य
श्री मागी लाल जी आर्य
श्री भवरलाल जी आर्य (माहश्वरी)
श्री बृजवल्लभ जी आर्य।

— शकरलाल आर्य
मन्त्री

आर्य समाज बस्ती दानसमन्दा का उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बस्ती दानसमन्दा जालन्धर का वार्षिकोत्सव 22 से 28 दिसम्बर तक बड़े समारोह से मनाया गया, रविवार 28 दिसम्बर का प्रात यज्ञ के मुख्य यजमान श्री प हरवशलाल जी शर्मा कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब बने, ध्वजारोहण भी उन्ही के कर-कमलो द्वारा हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता श्री ससार चन्द जी म्यूनिसिपल कमीशनर ने की। इस अवसर पर श्री प निरञ्जनदेव जी, श्री प धर्मदेव जी, श्री सरदारी लाल जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री प मनोहरलाल जी, श्री प रामनाथ जी यात्री, श्री डा ज्ञान चन्द, श्री बूटाराम जी, श्री रत्नलाल जी, शास्त्री नगर और आर्यनगर की भजन मण्डलियो तथा अन्य गायक बहनो ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपनी श्रद्धाजलि भेंट की। अन्त मे जादू की आईटमे दिखाई गई और उसके बाद बृहद् ऋषि-लगर हुआ। इस उत्सव मे जालन्धर की सभी आर्य समाजो ने भाग लिया।

—फकीर चन्द

देहरादून में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

रविवार 21 दिसम्बर को ऋषिकेश तथा वीरभद्र में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। देहरादून नगर आर्य समाज के लगभग सवा सौ सदस्य दो विशेष बसो से ऋषिकेश पहुचे। वहा का आर्य समाज के सदस्यो ने आगे बढ़ कर देहरादून मार्ग पर इन का स्वागत सत्कार किया और चाय तथा अल्पाहार से सबका आतिथ्य किया वहा से एक शोभा यात्रा ऋषिकेश नगर के बाजारो मे होती हुई आश्रम मे पहुची। जनम मे लोगो ने ओम् ध्वज हाथो मे ले रखे थे और भजन गाते और जय घोष करते हुए चल रहे थे। शोभा दर्शनीय थी।

वैदिक आश्रम ऋषिकेश मे सभा हुई जिसकी अध्यक्षता आर्य समाज देहरादून के प्रधान तथा आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ के अन्तरग सदस्य श्री यशपाल आर्य ने की। श्रीमती सुशीला शर्मा के भजन-गायन से सभा आरम्भ हुई। मुख्य वक्ता श्री देवदत्त बाली प्रधान जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा ने विस्तार से स्वामी श्रद्धानन्द जी के चरित्र पर प्रकाश डाला।

—देवदत्त बाली

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वेद की एक सूक्ति है, "प्रमृणिहि शत्रून्" शत्रुओ को कुचल डालो। जो शत्रु तुम्हारी मातृ भूमि पर आक्रमण करने के लिए कुदृष्टि उठाए उन दुष्टो की दोनो आखो को फोड डाल। उनके हृदय को विदीर्ण कर डाल। उनकी जीभ काट डाल और उनके दातो को धूल मे मिला दो। जो आततायी तथा अत्याचारी तुम्हारी सीमा मे घुसने की चेष्टा करे उनके पैरो को काट दे। जो तेरी मातृभूमि के ऊपर अपने शस्त्रों से आक्रमण करने की तैयारी करे, उसके हाथ तोड डाल। तेरी जबा पर यही गीत रहे—

जिसने तुझ को अपमानित कर दुष्ट, दृष्टि से ताका उसका सुख हम भस्म करेंगे, बन कर दीप—सलोना।

रण-भेरी का नाद सुन कर अपने वीर पुरुषों का ध्यान कर शिवा जी और महाराणा प्रताप को स्मरण कर राष्ट्र को बचाने के लिए सन्नद्ध हो जाओ—"रण भेरी बज चुकी जवानो मा ने तुम्हे पुकारा। दुर्गा बन कर चलो देवियो लेकर तेज दुधारा।"

हे रणधीर नव जवान तेरी ही शक्ति और पुरुषार्थ पर राष्ट्र को नाज है। अत तुम जागो और राष्ट्र को सर्वत. सबल बनाओ। एक ऋषि के शब्दो मे—

हे मगलमय इस धरती पर करो अवतरित नन्दन कानन, हे ज्योतिर्मय आनन।
नित्य आभा से चमका दो धरती का आंगन॥

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 रजि. नं. N.W/J L 55

वर्ष 18 अंक 40 28 पौष सम्वत् 2043 तदानुसार 11 जनवरी 1987 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

सु-तारक साधनो से आनन्द की प्राप्ति

लेखक—श्री विक्रमादित्य 'वसन्त'
बी 64, राजाजीपुरम् लखनऊ

य इद्ध आ-विवासति सु+म्नम् इन्द्रस्य मर्त्यं ।
द्यु+म्नाय सु-तरा अप, ।

ऋग्वेद 6-60-11, सामवेद 1150

(ब. मर्त्य) जो मरणधर्मा (इन्द्रस्य सु-म्नम्) आत्मा के सु-आनन्द को (इद्ध । (आत्मा-रूप) अग्नि मे (आ विवासति) पूर्णतया सेवन करता है (वह) (द्यु-म्नाय) दिव्य आनन्द के लिए (सु-तरा अप) सु-तारक कर्मों को (प्रवाहित करता है) ।

प्रस्तुत मन्त्र मे आनन्द प्राप्ति का बडा सरस और सरल उपाय बतलाया गया है ।

प्रत्येक इच्छा और उसकी पूर्ति के लिए किया हुआ यत्न जिस सुख के लिए होता है उसके मूल मे आनन्द की अपरोक्ष कामना होती है। मानव स्वभाव आनन्द काम है। कोई भी मानव दु ख, अशाति और क्लेश नही चाहता। फिर भी दु ख से उनकी निवृत्ति नही है। अनादि काल स ससार मे तुमुल 'हा हा' कार होता चला आया है। यह कभी समाप्त नहीं होगा। समस्याओ की उलझनें मानव को उलझाती रही हैं और उलझाती रहेगी। बुद्धिमान पुरुष उलझनो के जाल म फस कर उनसे निकलने का माग खोजता है और आन द प्राप्ति की आर, सफल बाधाओ को परे हटाते हुए, बढता जाता है।

आनन्द प्राप्ति की प्रथम सीढी है आत्मज्ञानी होना, अर्थात् आत्मविस्मृति की स्थिति से निकल कर आत्मजागरित होना। जीवन की श्रेष्ठता का बोध तभी होगा जब आत्मा अपने स्वरूप से अवगत होगा। 'न वि जानामि यदि वेदम् अस्मि, मैं क्या हू, यह मैं नही जानता हू। ऐसा अबोध तो केवल दीन, हीन और भीरु होगा। नश्वर, विकारमय और परिवर्तनशील शरीर को जब सर्वस्व समझ लिया जाता है तो यह स्थिति आत्मविस्मृति है। जो आत्मा के पृथक अस्तित्व को अनुभव करत है, जिन्हे यह प्रत्यक्ष बोध है कि जड शरीर मे जो गति है, वेग है वह आत्मा है जो वेदानुसार (वायुर अन इलम अ मृतम अथेद भस्मान्त श रीरम । यजुर्वेद 40 15), आत्मा को अजर और अमर जानत ह जब कि शरीर भस्मान्त है वे ही ज्ञान के प्रकाश मे देख पात है कि आत्मा की अतृप्त तृषा जब तक तृप्त नही होगी तब तक व्याकुलता बनी रहेगी।

वतमान के अस्त-व्यस्त, असतुलित और अशात जीवन का मूल कारण है, अज्ञानजन्य आत्मविस्मृति। इससे जीवन की बहुमुखता सिमट कर भोगवाद पर केन्द्रित हो गई है। भोग की तीव्रता ने बुद्धि को इन्द्रियो की स्वार्थमय तृप्ति मे लगा दिया है। यह भ्राति है कि आनन्द भोगो की इच्छाओ की पूर्ति मे है। सत्य तो यह है कि आनन्द इच्छाओ की निवत्ति मे है। इच्छा के अभाव मे आनन्द की अनुभूति होती है। इस सत्य का दर्शन कराते हुए मन्त्र मे कहा गया है कि दिव्य आनन्द के लिए आत्मा के प्रकाश मे सु-तारक साधनाओ को साधा जाए।

2—सु-तारक साधनाए स्वाथ के लिए न हो कर परमार्थ के लिए होती हैं। परमार्थी ही अपनी इन्द्रियो का दमन और मन का शमन करता है। स्वार्थ पूरित एक इच्छा असख्य इच्छाओ को जन्म देती है जिनसे मन अशात और मस्तिष्क उत्तेजित रहता है। मानव अकर्मा नही रह सकता। बिना इच्छा के कर्म नही होता। अत उसे असख्य इच्छाओ से निवृत्त होने के लिए एक महती विशाल इच्छा का मजाना होगा।

उत नो वाज सातये पवस्व बृहतीर् इष ।
द्यु-मद् इन्दो सु-वीर्यम्
ऋ 9 13 4 सा 1190)

वाज स नि के लिए हमे विशाल आकाक्षाओ को मजाना है जो हम प्रदीप्त सु वीर प्रदान कर । भावना क लिए आ म नविन चाहिए। जीवन की उपयोगिता उस दिव्य कम म है जो सब हित के लिए किया जाता है। शरीर को बनाए रखने स सम्बद्ध नैसर्गिक इच्छाओ से भिन्न इच्छाए जब योग के बिन्दु पर आ कर कन्द्रित हो जाती है तो जीवन यज्ञ बन जाता है और प्रत्येक कम श्रेष्ठता का प्रतिपादक होता है।

प्रत्येक क्रिया की एक प्रतिक्रिया होती है। दुष्कर्म की प्रतिक्रिया ग्लानि है, तो सुकर्म का फल आनन्द है। सदिच्छा की पूर्ति के लिए किया गया कर्म सुकर्म ही होगा। और जहा सुकर्म होगा वहा आनन्द होगा।

3—प्राचीन ऋषियो ने जीवन को 'सादा जीवन और उच्च विचार' के आदश मे ढाल कर मानव को आनन्द-सेवी बनाया था। उस आदर्श को छोड देने मे आज मानव आनन्द से वचित हो गया है। नितान्त दुराचारी, यौवन मे ही शरीर स जजर, अज्ञानी, विटामिनो के इन्जेक्शन । और टानिको का आश्रित, छली कपटी मनुष्य चाहे जितना समृद्ध हो जाए, वह उस आनन्द की तीव्र अनुभूति तो क्या, कल्पना तक नही कर सकता जो एक परमार्थी को परमात्म-भाव से मिलती है।

मानसिक एव ऐन्द्रिक धरातल पर आनन्द का अवतरण आर्य जीवन की विशिष्टता थी। आसनस्थ हो कर समावस्था मे जब शब्द, विचार, गति, आकृति, वण, चक्र और शरीर की शून्यता का अभ्यास किया जाता था और जब वीत राग अद्वय स्थिति को मानव पहुचता था तो वह पूण आनन्द का सेवन करता था। उसकी आध्यात्मिक उपलब्धिया केवल उस तक सीमित नही रहती थी। वेद मे इन पूण आनन्द-सेवियो के लिए कहा ह,

यो विश्वा दयते वसु, होता मन्द्रो जनानाम् ।
मधोर् न पात्रा प्रथमान्य् अस्मै, प्रस्तोमा यन्त्व् अग्नये ॥
(सामवेद 44)

अग्नि जो सर्वस्व दानी है, जनो को आनन्दित करता है, श्रेष्ठतम कर्म करने के लिए उन्हे प्रेरित करता है। ऐसे अग्रणी को उसकी भगवत्-स्तुतिया वैसे बढाती हैं, मानो, मधु के पात्र व्यापनशील बनते जाते हो।

जीवन का परम लक्ष्य आनन्द है। आनन्द का पुट जीवन के प्रत्येक पक्ष के साथ है। जीवन की प्राणवत्ता, परिपूर्णता ही आनन्द है। इसकी उपलब्धि का एक ही उपाय है कि आत्मज्ञानी हो कर सु तारक कर्मो को करना।

(वेद सविता)

इतवार 27 पौष सम्वत् 1993 तदानुसार 10 जनवरी 1937

आर्य नगर का मेला

29 दिसम्बर को मैं दूसरी बार आर्य नगर गया। कुछ वर्ष हुए जब मैं पहली बार वहां गया था और उसका जो प्रभाव मुझ पर हुआ था वह अभी तक वैसा ही है। उस समय मैं यह विचार लेकर आया था कि आर्यों की यह बस्ती जिसके लिए स्वर्गीय लाला गंगाराम जी ने इतना कष्ट उठाया और इतना त्याग किया है वह कायम रहना चाहिए। पहली बार मैं दर्शक के रूप में गया था इस बार एक अधिकारी के रूप में क्योंकि इन दिनों मैं आर्य मेघ उद्धार सभा सियालकोट का प्रधान हूं। पहली बार मैं गया था अपनी एक इच्छा पूरी करने के लिए। इस बार मैं गया अपने एक कर्तव्य को पूरा करने के लिए। मैं दो दिन वहां रहा और इस इच्छा को प्रकट करके वापस आया कि यह बस्ती आर्य समाज के लिए मकफूज रहनी चाहिए मैं यह भी समझता हूं कि अगर आर्य समाज चाहे तो इससे बहुत लाभ उठा सकता है। यदि कोई त्यागी और सज्जन जो कुछ पढ़ा लिखा भी हो और जानता हो कि मनुष्य के मन को किस तरह से ठीक मार्ग पर लाया जा सकता है वहां बैठ जाए तो वह आर्यों की एक नई बस्ती तैयार कर सकता है।

आर्य मेघ उद्धार सभा के अधिकारी और उसकी अन्तरंग के सदस्य प्रतिवर्ष इन दिनों वहां जाते तो हैं परन्तु वह आर्य नगर की अवस्था को देखने और हिसाब किताब की पड़ताल के लिए जाते हैं। यह पहला अवसर है कि वहां एक मेला भी किया गया। लेकिन यह मेला किसी निराली किस्म का था इश्तहार में लिखा गया कि आर्य नगर का पहला वार्षिकोत्सव होगा। लेकिन हमने उसे दूसरे उत्सवों की तरह नहीं मनाया व्याख्यान और भजनों पर जोर न दिया। हमने वह काम किए जिसका सम्बन्ध जनता के दिन प्रतिदिन के जीवन से सम्बन्ध रहता है और जिससे उन्हें लाभ भी हो सकता है। पहला दिन खेलों के मुकाबलों में व्यतीत किया गया और भी कई किस्म के मुकाबले किए गए। आर्य नगर की सारी आबादी वहां मौजूद थी और उसने खेलों में खूब दिलचस्पी ली रात के वक्त संगीत सम्मेलन हुआ जो नौ बजे से 12 बजे तक चलता रहा। उसमें कोई बाहिर का रागी शामिल न हुआ। जितने भी रागी थे सबके सब आर्य नगर के थे। उनके संगीत को सुन कर मैंने समझा कि मनुष्य प्रत्येक स्थान पर अपनी दिलचस्पी का सामान पैदा कर लेता है। संगीत साधारण न था बहुत अधिक मनोरंजक था। क्योंकि उन लोगों की अपनी भाषा में था इसलिए वह बहुत खुश हुए। दूसरे दिन दोपहर को एक बजे कार्यवाही शुरू हुई। सबसे पहले आर्य नगर में जलूस निकाला गया उसमें नगर के सब नर नारी शामिल थे। पुरुषों ने बसन्ती रंग की पगड़ियां पहनी हुई थीं और स्त्रियों ने बसन्ती रंग के दुपट्टे ओढ़े हुए थे जलूस नए आर्य समाज मन्दिर पर जाकर समाप्त हुआ। यह मन्दिर बहुत बड़ा और शानदार है। जब मैंने इसे पहले दिन देखा तो यह शिकायत की कि इस जगह इतना बड़ा हाल बनाने की क्या जरूरत थी। उस पर उस समय तक ग्यारह हजार रुपया खर्च आ चुका था। दूसरे दिन मुझे पता चल गया कि मेरा अनुमान ठीक न था। जब जलूस आर्य समाज मन्दिर में पहुंचा तो सबसे पहले ओ३म का झण्डा लहराने की रसम अदा की गई। पं० चमूपति जी ने यह शुभ कार्य किया और इस अवसर पर एक प्रभावशाली व्याख्यान दिया। मेघ उद्धार सभा का निश्चय है कि आर्य समाज मन्दिर में जो हाल बनाया गया है उसका नाम गंगाराम मैमोरियल हाल हो।

— कृष्ण (महाशय कृष्ण)

वृत पालन की प्रतिज्ञा

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं ।
तन्मे राध्यताम् इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि ॥
यजु 1-5

पदार्थ—(अग्ने) हे अग्ने स्वरूप परमेश्वर (व्रतपते) आप व्रतों के पालक वा रक्षक हैं। मैं इस (व्रतम) व्रत को धारण करके उस पर (चरिष्यामि) चलूंगा। (तत) उस व्रत के पालन करने में मुझे (सकेयम) सामर्थ्यवान बनाईये (तत) उस व्रत में (मे) मुझे (राध्याताम) पालन करने में सफल वा समृद्ध कीजिये (इदम) अब इस व्रत में (अहम) मैं (अनृतात) असत्य को छोड़ कर (सत्यम) सत्य को ही (उपैमि) अनुष्ठान पूर्वक ग्रहण वा धारण करता हूं॥

भावार्थ—हे अग्नि स्वरूप परमेश्वर आप अनन्त शक्ति और ज्ञान के असीम भण्डार हैं। और आप सभी व्रतों के पालक वा रक्षक हैं। आज मैं असत्य को छोड़ने और सत्य को धारण करने का व्रत ग्रहण कर रहा हूं। आप इस व्रत के पालन करने में मुझे सफल वा समृद्ध कीजिए। जिससे मैं इस व्रत का अनुष्ठान पूर्वक पालन दृढ़ता से कर सकूं॥

व्याख्या—कोई भी मनुष्य केवल याचना करने से ही अपने अभीष्टों की प्राप्ति नहीं कर सकता। अपितु अपने मनोर्थों को प्राप्त करने के लिये उसे सतत पुरुषार्थ करना पड़ता है। तभी इष्ट सिद्धि हुआ करती है। प्रार्थना के द्वारा हम अपने इष्ट देव परमेश्वर से जो कुछ मांगते हैं। वह हमारी प्राप्ति का लक्ष्य बन जाता है। उस लक्ष्य की प्राप्ति वा पूर्ति के लिये हमें ईश्वर की व्यवस्था के अन्तर्गत सतत पुरुषार्थ करना पड़ता है। तभी उसकी प्राप्ति सम्भव हुआ करती है। महर्षि दयानन्द जी ने अपने मन्तव्य अमन्तव्य प्रकाश में भी प्रार्थना के सम्बन्ध में यही लिखा हुआ है कि प्रार्थना का अर्थ अपने पूर्ण पुरुषार्थ के पश्चात उसकी प्राप्ति के लिए ईश्वर से सहायता वा सफलता की याचना करना है। इस वेद मन्त्र से भी यही प्रेरणा मिलती है कि केवल व्रतों (सत्य नियमों) के ग्रहण वा धारण करने से ही इष्ट सिद्धि सम्भव नहीं हुआ करती अपितु उन व्रतों (नियमों) का दृढ़ता से परिपालन करने में और उन व्रतों के पालन करने को अपने आचरणों का अभिन्न वा अटूट अंग बना लेने से ही इष्ट सिद्धि हुआ करती है।

इस वेद मन्त्र के शब्दों से यही प्रेरणा मिलती है कि हे अग्नि स्वरूप परमेश्वर जिस प्रकार आप अपनी व्यवस्था और सृष्टि नियमों का दृढ़ता वा कठोरता से परिपालन कर रहे हैं। उसी प्रकार आप मुझे भी ऐसा सामर्थ्य प्रदान कीजिये कि मैंने जो अनृत को (असत्य) को त्याग कर केवल सत्यानुरूप ही अपने आचरण को दृढ़ता से स्थिर बनाये रखने का दृढ़ निश्चय किया है। अर्थात व्रत लिया है। मैं भी अपने सत्याचरण को दृढ़ता वा कठोरता के साथ सदैव स्थिर बनाए रखूं। और इस सत्य पालन के सम्भावित और अवश्यम्भावी परिणामों और फलों से अपने इस जीवन को इसके राध्यों (ऐश्वर्यों) से सम्पन्न बना सकूं। साधकों को यह तथ्य कभी नहीं भूलना चाहिए कि व्रतों के केवल धारण कर लेने से ही नहीं अपितु उनके (व्रतों के) निरन्तर शाश्वत रूप से ही पालन करने से अर्थात् उनके दृढ़तापूर्वक अनुष्ठान से ही इष्ट सिद्धि हुआ करती है। अब यहां विचारणीय बात यह है कि जिस सत्य को धारण वा ग्रहण करने का यह उक्त व्रत हमने लिया है। उसका विशुद्ध स्वरूप और उसके लक्षण क्या हैं? इन लक्षणों के आधार पर हम उस ग्रहणीय सत्य को धारण करके अपना भद्र वा पवित्र जीवन बना सकें।

इस परम और विशद्ध सत्य के लक्षण विद्वानों ने इस प्रकार माने हैं। यथा

(क) सत्य वही है जो ईश्वरीय ज्ञान (वेद) के अनुरूप हो। अर्थात श्रुति स्मृति के अनुरूप हो।

(ख) जो ईश्वर के सृष्टि नियमों और उसकी व्यवस्था के अनुसार हो।

(ग) जो तीनों कालों अर्थात भूतकाल, वा वर्तमान काल और भविष्यतकाल में समान ही रहे।

(घ) जो वास्तविकता के अनुरूप हो।

(ङ) जो स्वपक्ष, विपक्ष और निर्पक्ष में तथा सभी अवस्थाओं में समान रूप में रहे।

(च) जो अपने अन्तःकरण अर्थात् मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार के पूर्ण अनुकूल हो।

—व्रतपाल साधक सक्षियाणा

सम्पादकीय—

सम्पूर्ण क्रान्ति का प्रयोजक आर्य समाज—3

स्वर्गीय श्री जयप्रकाश नारायण ने सम्पूर्ण क्रान्ति का विचार देते हुए कहा था कि—

सम्पूर्ण क्रान्ति हमारा नारा है।
भावी इतिहास हमारा है॥

वह तो अपने जीवन में सम्पूर्ण क्रान्ति के स्वप्न को सार्थक न बना सके। महर्षि दयानन्द भी अपने जीवन में उस स्वप्न को साकार न बना सके जो उन्होंने आर्य राष्ट्र का देखा था। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि उनके जाने के बाद उनकी उत्तराधिकारी आर्य समाज ने बहुत कुछ किया है और इतिहास इसका साक्षी है। जितने भी बड़े इतिहासकार हैं वह यह स्वीकार करते हैं कि इस देश को स्वतन्त्र कराने मे और इसके सामाजिक जागरण मे आर्य समाज का बहुत बड़ा योगदान रहा है और जब कभी यह चर्चा होती है कि वह कौन-2 सी संस्थाएं हैं जिन्होंने इस देश के नव निर्माण मे अपना योगदान दिया है तो आर्य समाज का नाम प्रायः विशेष रूप से लिया जाता है।

परन्तु अब परिस्थितिया कुछ बदल रही हैं। नई-2 समस्याएं हमारे देशवासियो के सामने आ रही हैं और जो संस्था उन समस्याओं का कोई समाधान अपने देशवासियो के सामने रख सकेगी वह फिर इतिहास मे अपने लिए जगह बना जाएगी। इसीलिए मैं बार-2 कह रहा हू कि आर्य समाज के नेताओ को बैठ कर इन सारी परिस्थितियो पर विचार करना चाहिए। 1975 में जब आर्य समाज की शताब्दी मनाई गई थी वह एक समय था जब आर्य समाज एक नया कार्यक्रम अपने देशवासियो के सामने रख सकता था। किसी न किसी कारण से कुछ न किया गया। उसके पश्चात् अगला अवसर उस समय आया जब 1983 ऋषि निर्वाण शताब्दी मनाई गई। वह भी अवसर हाथ से निकल गया और हमने कुछ न किया। आज कई दूसरी संस्थाएं आगे निकल रही हैं। जिन पाखण्ड, गुरुडम, छूत-छात और इस प्रकार की सामाजिक कुरीतियो के विरुद्ध आर्य समाज ने एक सौ वर्ष तक संघर्ष किया था और उन्हें कुछ समाप्त भी कर दिया था अब वह फिर सिर उठाने लगी है। ऐसी स्थिति में कुछ तो करना चाहिए। इस सन्दर्भ मे मेरा सुझाव है कि आर्य समाज के 15-20 बुद्धिजीवी एक स्थान पर दो चार दिन बैठ कर सारी स्थिति पर विचार करें और फिर अपना एक कार्यक्रम तैयार करके आर्य जनता के सामने रखें। यह भी हो सकता है कि उस कार्यक्रम पर विचार करने के लिए सार्वदेशिक सभा कोई एक बड़ा आर्य सम्मेलन बुला ले और वहा इस पर विचार किया जाए। परन्तु वह सम्मेलन एक दिन का नहीं हो सकता। दो या तीन दिन चले, और सारे कार्यक्रम पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाए। इस सन्दर्भ हमें इस कठिनाई को भी न भूलना चाहिए कि भिन्न-2 प्रान्तो की भिन्न-2 समस्याएं हैं। कुछ ऐसी समस्याएं अवश्य हैं जो सारे देश के लिए कठिनाई पैदा कर रही हैं, परन्तु कुछ वह भी हैं जो भिन्न-2 प्रान्तो तक सीमित है। इन मे छूत-छात की समस्या है। पजाब जैसे प्रान्तों मे वह इतनी गम्भीर नहीं जितनी दक्षिण भारत मे। जिसे हम पाखण्ड कहते हैं वह भी दक्षिण भारत मे अधिक दिखाई देता है। दूसरी तरफ यह भी वास्तविकता है कि उत्तर भारत मे कर्मकाण्ड को वह महत्व नहीं दिया जाता जो दक्षिण भारत मे। सामाजिक क्षेत्र मे सबसे बड़ी समस्या दहेज की बन रही है, कोई कारण नहीं कि इस दिशा में आर्य समाज जनता का नेतृत्व न करे। एक और समस्या जिस पर बुद्धिजीवी ही विचार कर सकते हैं वह यह कि धर्म निरपेक्षता क्या है और हमारे देश में इसे अब जो महत्व दिया जा रहा है वह कहां तक उचित है और उसके कारण लोगों में धार्मिक भावना कुछ कम हो रही है उसे कैसे रोका जाए?

समस्याएं कई हैं और यदि कोई ऐसा सम्मेलन हो जहां इन पर विचार किया जा सके तो जो लोग उसमें सम्मलित होंगे वह अपने-2 क्षेत्रों की समस्याएं सामने रखेंगे और उन पर विचार करके भारत की जनता के सामने वह समाधान रखा जा सकेगा। इसका कोई और परिणाम हो या न, यह तो होगा ही कि हमारे देशवासी यह समझेंगे कि आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जो देश के विषय में सोच सकती है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह अपने स्वार्थ के लिए कुछ नहीं करती। आर्य समाज किसी चुनाव में अपने प्रत्याशी खड़े नहीं करता वह जो कुछ भी करता है दूसरों के लिए करता है। यही कारण है कि उसे इतना महत्व दिया जाता है।

मैंने अपने विचार पाठको के सामने रख दिए हैं। मैं चाहता हूं कि इस पर और महानुभाव भी सोचे यदि वह अपने विचार आर्य मर्यादा में प्रकाशित कराना चाहें तो हमें प्रसन्नता होगी। अब समय आ गया है कि आर्य जगत् में फिर से यह विचार शुरू हो कि देश की बदलती हुई परिस्थितियों में आर्य समाज को क्या करना चाहिए। हाथ पर हाथ रखें कर बैठने से काम न चलेगा। आर्य समाज को कुछ न कुछ करना होगा नहीं करेगा तो मिट जाएगा। उसका एक हितैषी और सेवक होते हुए चेतावनी दे रहा हू। कह नहीं सकता कि इसका कोई परिणाम निकलेगा या नहीं परन्तु मुझे यह सन्तोष तो रहेगा कि मैने अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया है दूसरे आर्य समाजी अपना कर्त्तव्य कैसे पूरा करते हैं। यह देखने की बात है।

—वीरेन्द्र

आर्य समाज के प्रचार का एक प्रशंसनीय रूप

आर्य मर्यादा के पाठक साक्षी हैं कि कुछ समय हुआ मैंने आर्य समाज की वर्तमान प्रचार प्रणाली की चर्चा करते हुए लिखा था कि हमारा साहित्य आजकल उस प्रकार से प्रकाशित नही हो रहा जैसे पहले हुआ करता था। बड़ी-बड़ी पुस्तकें प्रकाशित होती है जो महगी भी होती हैं और जिन्हे जनसाधारण पढ भी नही सकता। मैंने यह भी लिखा था कि शुरू मे आर्य समाज का प्रचार करने के लिए छोटे-2 ट्रैक्ट प्रकाशित किए जाते थे जिन्हे जन-साधारण बडी आसानी से पढ सकते थे। वह हाथो-हाथ बिक जाते थे जो व्यक्ति उन्हे खरीदता था उन्हे पढता भी अवश्य था। एक तो वह महगे न होते थे दूसरे थोडे पृष्ठो मे किसी विशेष विषय का सारा सार दे दिया जाता था। कई व्यक्ति केवल उन ट्रैक्टो को पढ कर ही आर्य समाजी बने थे। अब वह प्रथा कुछ समाप्त हो रही है।

इस पर मुझे कई पत्र आए जिनमे बताया गया कि आज भी छोटे-छोटे ट्रैक्ट प्रकाशित होते हैं। आदरणीय बहन मीरायति जी ने भी एक पत्र लिखा था और अपने कुछ छोटे-2 ट्रैक्ट भी भेजे थे। इसी प्रकार कुछ और सस्थाओ ने भी मुझे लिखा था। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा के सरक्षण मे उनके पूज्य पिता जी की स्मृति मे गोवर्धन ज्योति के नाम मे कुछ ट्रैक्ट प्रकाशित होते रहे हैं जिनके द्वारा बहुत प्रचार हुआ है। अब मुझे अहमदाबाद के समीप एक स्थान सहीजपुर बोधा की आर्य समाज ने बहुत से ट्रैक्ट भेजे हैं। यह सिन्धी भाषा मे भी हैं, गुजराती में भी है, उर्दू मे भी हैं। बहुत छोटे 2ट्रैक्ट जो कोई भी व्यक्ति आसानी से पढ़ सकता है और जिसके द्वारा उसे आर्य समाज के इतिहास और उसके सिद्धान्तो के विषय मे बहुत जानकारी मिल सकती है। इन ट्रैक्टों का मूल्य केवल एक रुपया और कईयो का केवल पच्चास पैसे रखा गया है। जो ट्रैक्ट प्रकाशित किए गए हैं उनमे कुछ के नाम इस प्रकार हैं। यज्ञोपवीत का महत्व, पितृ यज्ञ (श्राद्ध), सत्संग गुटका, श्राद्ध करना चाहिए या नही, सगठन, धर्म शिक्षा, मनुभव और इस प्रकार के और भी कई ट्रैक्ट है। इस आर्य समाज ने इस वक्त तक पच्चास-साठ के लगभग ऐसे ट्रैक्ट प्रकाशित किए हैं। इसमे कोई सन्देह नही कि यह आर्य समाज इन ट्रैक्टो के द्वारा जो प्रचार कर रहा है वह अत्यन्त सराहनीय है और इसके लिए मैं इस समाज के अधिकारियो को बधाई देता हू, आर्य समाज के प्रचार का यह ही एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा हम एक छोटे से छोटे व्यक्ति की झोपड़ी और बड़े से बड़े व्यक्ति के महल तक पहुच सकते हैं। यदि सब आर्य समाजें या प्रान्तीय सभाए इस प्रकार के छोटे-छोटे ट्रैक्ट प्रकाशित करके लोगो मे बाटने का प्रयास करें तो आर्य समाज का बहुत प्रचार हो सकता है। आर्य समाज सहीजपुर बोधा ने हमारा जो मार्ग प्रदर्शन किया है। इसके लिए मैं उसके अधिकारियो का धन्यवाद करता हू।

वी०

एक आर्य समाजी की नजर में—

साहिबे कमाल गुरु गोबिन्दसिंह

हमारे सिख भाई आर्य समाज को अपना विरोधी समझते हैं लेकिन वे भूल जाते हैं कि कोई समय ऐसा नहीं आया जब सिखों पर कोई मुसीबत आई हो और आर्य समाजियों ने उनकी सहायता न की हो। गुरु के बाग का मोर्चा हो या शहीद गंज गुरुद्वारा का मामला हो, आर्य समाजियों ने अपनी सेवाएं सिख भाइयों को सौंप दी थी और उनका पूरी तरह साथ देते रहे हैं। यह इसलिए भी कि आर्य समाज के सिद्धान्त और खालसा पन्थ के सिद्धान्त आपस में बहुत कुछ मिलते हैं। हम यह भी दावा कर सकते हैं कि सिद्धान्त रूप से जितने सिख आर्य समाज के निकट हैं किसी और के नहीं होंगे। दोनों एक ही ईश्वर की पूजा करते हैं। दोनों ईश्वर को निराकार मानते हैं। दोनों जन्म के आधार पर छूत-छात को नहीं मानते। इसी तरह और भी कई बातें हैं जिन पर दोनों की राय एक है। केवल एक भाषा के प्रश्न पर कुछ मतभेद हैं। वह भी केवल इसलिए कि अकाली हिन्दी को सहन नहीं करते। हालांकि हिन्दी गुरु गोबिन्द सिंह जी की मातृभाषा थी अकाली अंग्रेजी को स्वीकार करने को तैयार है हिन्दी को नहीं। आर्य समाज पंजाबी के विरुद्ध नहीं है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तो यह भी कहा था कि एक व्यक्ति अधिक से अधिक जितनी भाषाएं पढ़ सकता हो उसे पढ़नी चाहिए। इसलिए आर्य समाज पंजाबी के विरुद्ध नहीं हो सकता। लेकिन वह हिन्दी का दामन छोड़ने को तैयार नहीं है और जब तक अकालियों की हिन्दी के विरुद्ध यह संकीर्णता जारी रहेगी, पंजाब की भाषायी समस्या हल नहीं होगी। अकाली यह भूल जाते हैं कि जब वे हिन्दी का विरोध करते हैं तो वह अपने दसवें पातशाह का अपमान करते हैं क्योंकि हिन्दी उनकी मातृभाषा थी। और उन्होंने अपना बहुत सा साहित्य हिन्दी में लिखा था।

लेकिन आज तो मैं अकालियों की एक और गलतफहमी दूर करना चाहता हूं। चूंकि वह प्राय कहते रहते हैं कि आर्य समाजी सिख धर्म के विरुद्ध हैं मैं श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी के बारे में एक आर्य समाजी के विचार प्रस्तुत करने लगा हूं। जिससे उन्हें पता चलेगा कि आर्य समाजी श्री गुरु गोबिन्दसिंह को कितनी श्रद्धा से देखते हैं।

मेरी नजरों से एक पुस्तक गुजरी है जिसका शीर्षक है "साहिबे कमाल गुरु गोबिन्दसिंह" इसे गुरुमति साहित्य ट्रस्ट अमृतसर ने प्रकाशित किया है। यह पुस्तक आज से 80 वर्ष पहले एक आर्य समाजी श्री दौलत राय ने लिखी थी अब इसे अमृतसर के उस ट्रस्ट ने प्रकाशित किया है। सम्भवत इसे इंग्लैंड के सिखों ने भी प्रकाशित किया है। गुरु महाराज की जो महानता इस आर्य समाजी ने अपनी इस पुस्तक में प्रस्तुत की है वह किसी सिख ने भी इससे पहले प्रस्तुत नहीं की। अत इस पुस्तक के बारे में इस ट्रस्ट के एक पदाधिकारी ने अपने विचार इन शब्दों में प्रस्तुत किए हैं —

"स्वामी दयानन्द के अनुयायी लाला दौलत राय इस पुस्तक में इस बात का रोना रोते हैं कि सिख कौम ने गुरु गोबिन्दसिंह को पहचाना नहीं और भारतवासी हिन्दू समाज ने उनकी बिल्कुल कदर नहीं की, खालसा कौम आजकल भी वही कुछ कर रही है जिसको गुरु गोबिन्दसिंह जी ने अपने सारे परिवार का बलिदान करके रोका था आज से 80 वर्ष पूर्व लाला दौलत राय के इन शब्दों में कितनी निष्पक्षता, साहस और सत्य है।"

और फिर आगे चल कर इसी तरह की और ... लिखा गया है —

"यदि कोई सिख लेखक गुरु जी की तुलना हिन्दू अवतार के साथ करके उनको ऊंचा सिद्ध करता तो हिन्दू समाज उसे पक्षपात समझता और इस बात को स्वीकार करने के स्थान पर ... किन्तु ... और साहस के साथ लाला दौलत राय ने श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी को उच्च से उच्च और मानवता का अवतार लोकतन्त्र का सर्वोत्तम ज्ञाता और मानवता का कल्याणकारी प्रदर्शित किया है। यह केवल दौलत राय की लेखनी की ही करामात है।"

यह पुस्तक बाद में इंगलैंड में भी प्रकाशित की गई। वहां के एक पत्रकार सरदार गुरचरण सिंह खालसा ने इसके बारे में अपने विचार निम्नलिखित शब्दों में प्रस्तुत किए :—

"जिस दृष्टिकोण में प्रसिद्ध आर्य समाजी लेखक लाला दौलत राय ने गुरु गोबिन्दसिंह जी के जीवन को लोगों के सम्मुख आज से 80 वर्ष पहले रखा, उसमें असाधारण विशेषता है। यह ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, और साहित्यिक पक्ष से अद्वितीय है।"

आगे चल कर फिर सरदार गुरचरण सिंह लिखते हैं —

"आज से 80 वर्ष पूर्व जब सिखों ने अपने दस गुरुओं का इतिहास लिखने की कोशिश शुरू नहीं की थी और उस समय तक पंजाबी के अतिरिक्त किसी और भाषा में गुरु इतिहास नहीं लिखा गया था और सिखों के अतिरिक्त इतिहासकारों ने विशेषत मुसलमान तथा अंग्रेज इतिहासकारों ने अपने-अपने दृष्टिकोणों से लिखा था। वे गुरु गोबिन्दसिंह जी के जीवन को सत्य और सही ढंग से प्रस्तुत करने में पूर्णत असफल रहे थे।"

ऐसे समय में लाला दौलतराय ने शहीद पिता के सुपुत्र और शहीद पुत्रों के पिता महाबली गुरु गोबिन्दसिंह जी का जीवन आवेषपूर्ण शब्दों में लेखनी बद्ध किया। नि सन्देह उन्होंने गुरु जी के जीवन को एक ऐसे भारतीय हिन्दू के दृष्टिकोण से देखा जिसकी आंखों के समक्ष विगत 700 वर्षों का पतन प्रत्यक्ष दृष्टिमान था। जिसकी दृष्टि के समक्ष गजनवियों, गौरियों, गुलामों, खिलजियों तुगलकों, सय्यदों, पठानों, तुरकों और मुगलों द्वारा किए गए धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक अत्याचारों की घटनाएं इस प्रकार गुजर रही थी जैसे वे उनके जीवन काल में घटी हों। उन्होंने गुरु गोबिन्दसिंह जी के जीवन को एक आवेषपूर्ण पुस्तक के रूप में लिखा। यद्यपि वे स्वयं कट्टर आर्य समाजी थे, परन्तु आपके जीवन पर कलगीधर पिता गुरु गोबिन्दसिंह के जीवन और उपदेशों की गहरी छाप थी। उनके चमत्कारी जीवन से वे बहुत प्रभावित थे।"

अपने विचारों की और व्याख्या करते हुए सरदार गुरचरणसिंह खालसा ने लिखा है —"क्योंकि लाला दौलतराय एक श्रद्धावान हिन्दू थे इसलिए उनकी दृष्टि में गुरु गोबिन्दसिंह जी हिन्दू राष्ट्र के रक्षक, हिन्दू धर्म और संस्कृति के पुनर्जन्मदाता महान आत्मा थे। उन्होंने खालसा के रूप में पूर्ण और शुद्ध आर्य वैदिक धर्म का प्रकाश देखा लाला दौलतराय ने हिन्दुओं की शताब्दियों की पराधीनता का कारण उन गलत सामाजिक प्रथाओं, गलत धार्मिक परम्पराओं, छूत-छात ऊंच नीच और विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों में बट जाने में देखा जब हिन्दू अपने पुरातन गौरव को भूल चुके थे उनमें देश भक्ति राष्ट्र पूजा की भावना जगाकर उच्च की थी विदेशी आक्रमणकारियों के सम्मुख डट जाने का साहस समाप्त हो चुका था अपने धर्म और धार्मिक स्थानों की रक्षा करने का बल जाता रहा था अपनी बेटियों और बहनों की रक्षा करने की हिम्मत मिट चुकी थी वे अपनी संस्कृति और सभ्यता को भूल चुके थे उस समय गुरु गोबिन्दसिंह जी के रूप में एक महान ज्योति का प्रकाश हुआ। लाला दौलतराय के शब्दों में उन्होंने प्राचीन हिन्दू सभ्यता का पुनर्जन्म किया और एक निर्जीव राष्ट्र में नवजीवन का संचार किया। गुरु जी ने राष्ट्र की उदासीनता, निर्बलता एवं हीन भावना और निर्लज्जता के भाव दूर करके नया साहस और बल प्रदान किया जिसके फलस्वरूप शताब्दियों से आततायियों के आगे झुकते चले आए लोग तलवारें हाथ में लेकर गर्दनें उठा कर और छातियां तानकर उनके सामने डट गए।"

पाठकगण । मैंने आपके समक्ष लाला दौलत राय की पुस्तक के बारे में कुछ सिख भाईयों के जो विचार हैं वे प्रस्तुत किए हैं। लाला दौलतराय ने यह पुस्तक क्यों लिखी और उन्हें गुरु गोबिन्दसिंह जी के प्रति कितनी श्रद्धा थी यह अगले लेख में प्रस्तुत करूंगा।

—वीरेन्द्र

स्वतन्त्रता सेनानी श्री शान्ति प्रकाश जी प्रेम का ७३ वां जन्म दिवस सम्पन्न

आर्य समाज सावनी आदि पचपुरी मंडल के प्रधान स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, कर्मठ समाज सेवी, श्री शान्ति प्रकाश जी प्रेम, प्रभाकर का 73 वां जन्म दिवस दिनांक 12 12-86 को आर्य समाज मन्दिर 'पचपुरी मंडवाल में श्री गजयसिंह जी कण्डारी ज्येष्ठ प्रमुख विकास खण्ड बीरोंखाल मंडवाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर श्रीमती नीमादेवी धर्म पत्नी श्री शान्ति प्रकाश प्रेम ने आर्य समाज पचपुरी को 101 रुपये का सात्विक दान दिया।

—वासुदेव बिमल—मन्त्री

देश भक्त स्वामी स्वतन्त्रानन्द

लेखक—श्री पृथ्वीराज जिज्ञासु एम ए संस्कृत दीनानगर

एक जर्मन लेखक मिस्टर हन्स कोहन ने अपनी पुस्तक हिस्टी आफ नैशनलिज्म इन दि ईस्ट मे लिखा है। आर्य समाज ने भारतवर्ष की राजनैतिक शक्ति को जगाने में एक महत्वपूर्ण भाग लिया है। इसने राष्ट्रीय भावनाओ व राष्ट्रीय आत्मविश्वास को बल प्रदान किया है तथा भारतीयो को अपनी सहायता आप करने का ढग सिखाया है। सरस्वती नामक पत्रिका मे मार्च 1964 को एक लेख मे आर्य समाज के सम्बन्ध मे ये शब्द प्रकाशित हुए थे। आर्य समाज की राष्ट्रीयता कट्टर और उग्र है। उसमे उदारवादी आदर्शों की छुआछूत भी नही। आर्य समाज ने भारत के स्वाधीनता समर मे बढ चढ कर भाग लिया। यदि स्वाधीनता समर के इतिहास का निष्पक्ष दृष्टि से अध्ययन कर तो हम यह पाए मे कि स्वाधीनता सग्राम के 80 प्रतिशत सेनानी आर्य समाजी ही थ।

सबसे पहले स्वाधीनता के सम्बन्ध मे बात करने वाले युग प्रवर्तक एवम आर्य समाज के संस्थापक महर्षि देव दयानन्द ही थे जिन्होने सत्यार्थ प्रकाश मे स्पष्ट शब्दो मे लिखा कोई कितना भी कहे परन्तु स्वकीय राज्य बरे से बुरा होने पर भी अच्छे से अच्छे परकीय राज्य से भी अच्छा है। देश भक्त ऋषि का अनुयायी स्वतन्त्रानन्द अपने देवता के इन शब्दो पर पर भला पुष्प क्यो न अर्पण करता। स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने देश की स्वाधीनता के लिए अनेको यातनाए सहन की। अपनी मातृ भूमि उन को जी जान से प्यारी थी। विदेशी शासन से जननी को मुक्त कराने के लिए स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने राष्ट्रीय स्वाधीनता सग्राम मे सक्रिय भाग लिया।

1930 मे गान्धी जी ने राष्ट्रव्यापी आन्दोलन चलाया। इसका आरम्भ डाडी यात्रा से किया गया। आन्दोलन उग्र रूप धारण कर गया। सहस्रो नागरिक जेलो मे बन्द कर दिए गए। पजाब के सभी नेता यथा डा सत्यपाल किचलू आदि पकड लिए गए। सत्याग्रह को चलाने के लिए कोई भी व्यक्ति आगे नही आ रहा था। उस विकट परिस्थिति मे स्वतन्त्रानन्द आगे निकले। काटो का मुकुट वीर सन्यासी के सिर पर रखा गया। बडी योग्यता से आपने सत्याग्रह का सचालन किया।

1930 के आन्दोलन मे जब जेलो मे सत्याग्रहियो पर अत्याचार किए जाने लगे तो जनता मे रोष फैला। लाहौर मे गोल बाग, मोरी द्वार के बाहर एक विराट सभा की गई, इस सभा के अध्यक्ष पूज्यपाद श्रद्धेय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ही थे। नागरिक व मानवीय अधिकारो के नाम पर अग्रेज सरकार से इन अत्याचारो को बन्द करने की माग की गई। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने अपने भाषण मे एक क्रान्तिकारी बात कही जो अब तक किसी भी राष्ट्रीय नेता के मुख से नही सुनी गई थी। आपने कहा हम विदेशी सरकार से ये अत्याचार बन्द करने की माग करते हैं। हमारे सत्याग्रहियो के साथ वही व्यवहार किया जाए जो अन्तराष्ट्रीय नियमो के अनुसार एक सरकार को दूसरी सरकार के बन्दी बनाए गए सैनिको से करना चाहिए। ये सत्याग्रही जनता की सरकार के सैनिक हैं। अत इनके साथ इनकी प्रतिष्ठा के अनुसार ही व्यवहार होना चाहिए।

पूज्य स्वामी जी महाराज की इस सिंह गर्जना से सरकार चौंक उठी। सरकार जान गई कि इस भगवा वेश धारी साधु के हृदय मे क्रान्ति की ज्वाला धधकती है। सरकार ने स्वामी महाराज को पकडने का निश्चय कर लिया। उक्त भाषण के उपरान्त अगले ही रविवार आप आर्य समाज मन्दिर शाहालमी लाहौर से सत्सग के पश्चात लौट रहे थे तो दिन के 11 बजे आपको शाहालमी बाज़ार से गुजरते हुए बन्दी बना लिया गया।

पुलिस आपको हथकडी लगाने लगी तो आपकी कलाई पर हथकडी न लग सकी। ध्यान रहे कि स्वामी जी महाराज के शरीर का भार तीन मन से भी अधिक था कद 6 फुट 1 इन्च था तथा पाव के जूते का नाप एक फुट था। पुलिस ने दो हथकडिया मिलाकर लगाई तथा टागे पर बिठा कर टागा दौडा कर लाहौर की कोतवाली मे स्वामी जी को ले जाया गया। लाहौर कोतवाली के जिस कमरे मे स्वामी जी महाराज को रखा गया उसके बाहर कोतवाली के आगन मे लोहे का बडा जगला था। स्वामी जी महाराज उसमे मस्ती से घूमते थे जैसे शेर पिजरे मे। सरकार की नीति के अनुसार शीघ्र ही आपको जेल भेज दिया गया।

1942 मे काग्रेस ने भारत छोडो आन्दोलन छेड दिया। देश मे दो भावनाओ मे टक्कर हो गई थी। राष्ट्रवादी विचारो के लोग काग्रेस के नेतृत्व मे पूरे दल-बल के साथ भारत जननी को मुक्त कराने के लिए सघर्ष कर रहे थे अहिंसात्मक रूप मे भी सग्राम हो रहा था और हिंसात्मक प्रयत्न भी किए जा रहे थे।

राष्ट्रवादी आन्दोलन के साथ साथ ही देश मे मुस्लिम साम्प्रदायिकता भी उग्र रूप धारण करके देश के विभाजन के लिए विध्वसक रूप से देशवासियो को चुनौती दे रही थी। काग्रेस के लखनऊ अधिवेशन मे काग्रेस व मुस्लिम लीग ने एक समझौता किया था। यह समझौता ही देश विभाजन की नीव था। साम्प्रदायिकता को मान्यता देकर काग्रेसी नेताओ ने राष्ट्र वध के लिए लीगियो को प्रोत्साहन देकर घोर पाप किया। उस समय अदूरदर्शी काग्रेसी नेताओ ने महान युग द्रष्टा लोकमान्य बाल गगाधर तिलक की एक न मानी। लोकमान्य ही एक नेता थे जिन्होने उस समझौता का विरोध किया।

1942 43 मे ही अपने अपने भाषणो मे यह कहना आरम्भ कर दिया था कि लडाई आने वाली है इस लडाई के लिए तयार हो जाओ नही तो मारे जाओगे। लडाई से तुम बच नही सकते। यह लडाई टल नही सकती सगठित हो जाओ नहीं तो पिट जाओगे। और मिट जाओगे। स्वामी ने कहा कि आर्य आर्य समाज अपने को बलशाली बनाए नही तो इसका अपमान होगा अपयश होगा 1942 मे लाहौर आर्य समाज का वार्षिक उत्सव था उसके कार्यक्रम मे अन्तिम व्याख्यान स्वामी जी का था। अपने व्याख्यान मे स्वामी जी महाराज ने स्पष्ट शब्दो मे कहा था लडाई तुम्हारे द्वार पर आ गई है तैयार हो जाओ नही तो घाटे मे रहोगे।

स्वामी जी महाराज ने हरियाणा का दौरा किया। आप रोहतक के प्रमुख ग्राम भापडौदा मे गए। वहा आपने कहा कि आपके घर का कोई न कोई व्यक्ति सेना मे है आपको उन्हे कहना चाहिए कि अपने देशवासियो पर गोली न चलाए।

दूरदर्शी स्वतन्त्रानन्द ने परिस्थितियो का प्रवाह देख कर राष्ट्रवादी शक्तियो व जन साधारण को चेतावनी दी थी कि महा विनाश की वेला आ रही है। दिव्य द्रष्टा साधु ने 1940 41 मे मे ही भाप लिया था कि पजाब का अस्तित्व सकट मे है। मुस्लिम लीग की गुण्डापन की प्रवृत्तिया भी रुक सकती हैं यदि राष्ट्रवादी अपने आपको सबल बनाए

स्वाधीनता के उपरान्त आज फिर देश मे प्रान्तीयता की क्षुद्र भावना बढ रही है। इसकी पूर्व सूचना भी दिव्य द्रष्टा स्वतन्त्रानन्द ने दे दी थी। वह दिन देश के लिए दुर्भाग्य का दिन था जब हमारे मस्तिष्क मे भाषा के आधार पर प्रान्तो की रचना का विचार आया। हम देख रहे हैं इस भूल के कारण एक्य भावना को धक्का लगा है देश के विभिन्न प्रान्तो मे नदियो के जल पर झगडे खडे हो गए खालिस्तान गोरखा लैंड आदि की माग खडी हो रही है। राजनैतिक नेता इन झगडो को हवा देने के कारण उलझाने का यत्न कर रहे है। दूरदर्शी स्वामी स्वतन्त्रानन्द ने इस गलती के परिणाम को पहले ही भाप लिया था। उन्होने इसके विरुद्ध कई लेख लिख कर देश को सावधान किया था। अपने कई समाचार पत्रो एवम् पत्रिकाओ मे देशवासियो को सुझाव दिया कि राज्य प्रबन्ध की दृष्टि देश को केवल पाच भागो मे विभक्त किया जाना चाहिए। स्वामी जी ने अपने लेखो मे भारत के रेलवे की प्रबन्ध व्यवस्था का उदाहरण दिया था भारत का रेलवे प्रबन्ध इस दृष्टि से अनुकरणीय है रेलवे की भाति ही सारे देश के राज्य प्रबन्ध की दृष्टि से उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम मध्य भाग मे बाट देना चाहिए। स्वामी जी ने देश हित की दृष्टि से सघात्मक शासन पद्धति के स्थान पर एकात्मक शासन पद्धति को अच्छा माना है। स्वामी कहा करते थे कि हम भारतीय के रूप मे सोचना चाहिए न कि पजाबी गुजराती और बगाली के रूप मे। इन दश का कल्याण इसी मे है और हम इस देश की पावन वसुन्धरा के हैं। अब समय आ गया है। हम आर्यों को अब कुछ करना चाहिए और क्षुद्र प्रान्तीयता की भावना के मर्दन हेतु सघर्ष का बिगुल बजा देना चाहिए। यह तभी सम्भव हो सकेगा जब हम हिन्दू नामधारी राजनैतिक सगठन बना लेगे और इस सकट का निवारण करना आर्य समाज का परम धर्म है हमारा आर्य समाज यदि स्वतन्त्रानन्द बन कर कार्य क्षेत्र मे उतर आए तो कुछ भी असम्भव नही।

आओ स्वामी जी के जन्म दिन पर हम यह सकल्प ले कि प्रान्तवाद भाषावाद के कोढ को दूर करने के लिए प्राण पन से जुट जाए। राष्ट्र की आत्मा हिन्दू को जाग्रत करें। तो फिर हम देखेंगे —

वही प्रेम गंगा यहा फिर बहेगी,
जो ससार की ताप माला हरेगी।
कहेगा जगत फिर इक स्वर मे सारा,
यही हिन्दू राष्ट्र गुरु है हमारा।

जिला आर्य सभा लुधियाना की गतिविधियां

21-12-86 को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर जिन दानियो ने जिला आर्य सभा को एक सौ रुपए तक दान दिया। उनकी सूची निम्न है।

श्री नगेश हौजरी द्वारा आयोध्या-प्रसाद मल्होत्रा 3100 रु श्री सत्यानन्द मुन्जाल हीरो साईकल 2100 रुपए, श्री दीवान राजेन्द्र कुमार डी सन्ज हौजरी 1100 रुपए, श्री सुभाष डाईग मिल्ज 1000 रु पजाबी डाईग मिल्ज 1000 रु कोहेनूर वूलन मिल्ज 500 रु पैड मोक कम्पनी 500 रु सी रोज इन्डस्टी 200 रु श्रीमती नारायनी 101रु आय समाज फान्ड गज 101 रु आय समाज किदवाइ नगर 101 रु श्रीमती सन्तोष रहजा 100 रु श्रीमती इन्दिरा मोहनी वमा 100 रु श्री महेन्द्रपाल स्यार 100 रु धम पत्नी श्री स्वरूप नारायण बजाज 100 रु श्रीमती पुष्पा जी मुन्जाल 100 रु श्री खुशबख्तराय सूद 500 रु. श्रीमती निर्मला देवी 101 रु फुटकर राशि327 रु कुल राशि—11230 रु

जिला आर्य सभा के आधीन झुगी-झोपडियो मे चल रहे स्कल के विद्यार्थियो को प्रसिद्ध आय नता श्रीरामजी दास जी अग्रवाल ने 40 गम स्वैटर प्रदान किए। 31 12 86 को स्वय लाला रामजी दास तथा उनकी पत्र वधु "वन्दना" सुधा और पाते विनीत ने स्कूल म आकर बच्चा को गम स्वेटर पहनाए 18-1-87 रविवार को जिला आय सभा की ओर से माडलटाउन आय समाज म एक विशाल समारोह का आयोजन किया जा रहा है।

आशानन्द आर्य
महामन्त्री

लुधियाना में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

झुगी झोपडियो के आय स्कूल लुधियाना की छात्रा कथा, आर मन ज के 10 नियम सुना रही है सामने श्री सत्य द मुन्जाल, श्री कृपाराम और आशानन्द आर्य बैठ हैं।

स्कूल के बच्चे अपने गीतो द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धान्जलि अर्पित कर रहे हैं। जिला सभा के प्रधान जी महेन्द्रपाल वर्मा और श्री आशानन्द जी महामन्त्री आदि बैठे दिखाई दे रहे हैं।

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर में समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के आदेशानुसार गत दिनो स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। इस उत्सव की अध्यक्षता स्वामी सगुणानन्द जी दीनानगर मठ वालो ने की। प्रात वृहद् यज्ञ हुआ। उसके पश्चात् कार्यक्रम शुरू हुआ।

इसमे वैदिक गर्ल्ज हा सैकण्डरी स्कल, अमृतसर की छात्राओ ने श्रद्धानन्द बलिदान और उनकी जीवनी पर गीत, भाषण प्रस्तुत किए। इसके अतिरिक्त दीवान, चमनलाल जी, श्री निहाल चन्द जी, उपप्रधान व सम्पादक महर्षि बाल्मीकि सन्देश ने भी स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान पर अपने विचार प्रस्तुत किए। अन्त मे स्वामी सगुणानन्द जी ने महापुरुष के जीवनी के बारे मे अपना ओजस्वी भाषण दिया।

इस उत्सव पर समाज द्वारा सर्वश्री प द्वारकानाथ जी विद्यालकार और महाशय रुलिया राम जो कि वरिष्ठ व बुजुर्ग सदस्य हैं उनको वैद्य बाबूराम जी शर्मा व प्रधान जी ने दो शालें व एक एक ओ३म् की शील्ड अर्पित की। उत्सव मे बोलने वाली छात्राओ को नकद व साहित्य (वैदिक) प्रोत्साहन हेतु दिया गया। मच सचालन डा राजाराम जी शास्त्री ने किया। यज्ञशेष वितरण क पश्चात उत्सव की सभा विसर्जित हुई।

— वीरेन्द्र देवगण
महामन्त्री

झुग्गी झोपडियो मे खोले हुए आय स्कूल मे श्रीरामजी दास अग्रवाल की पुत्र वधु "वन्दना" सुधा चालीस बच्चो को गर्म स्वेटर बाटत हुए।

श्री लाला राम जी दास जिला सभा के प्रधान श्री महेन्द्र पाल तथा महामन्त्री आशानन्द आर्य के साथ बैठे हैं।

वेद और विज्ञान

लेखक—श्री रोशनलाल शर्मा संयोजक आर्य युवक सभा पंजाब 751 सिविल हस्पताल रोड़, लुधियाना

वेद शब्द का धात्वर्थ है ज्ञान ! साधारण शब्द वेद नही कहलाता है। ईश्वरीय ज्ञान या ईश्वरीय वाणी को ही वेद के नाम से विशेषता दी जाती है। भारतवर्ष के हर साहित्यकार ने वेदो को ही प्रमाणिक माना है। स्वय वेदो के साक्षी से लेकर शतपथ ऐतरेय, गोपथ ब्राह्मण मे-तैत्तिरीय, छान्दोम्य, बृहदारण्यक केन, ईश, कठ, मुण्डक आदि उपनिषदो मे, न्याय, सख्य, योग, वेदान्त पूर्व मीमासा दर्शनो मे, रामायण तथा महाभारत महाकाव्यो मे एव लगभग अठारह पुराणो मे सर्वत्र वेद की ही महिमा गाई गई है और वेद को ही प्रमाणिक माना जाना चाहिए।

वेदो की उत्पत्ति के विषय मे महर्षि दयानन्द जी सरस्वती अपने अमर ग्रन्थ 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' म लिखते है। "ईश्वर के ज्ञान की भी अपेक्षा सब मनुष्यो को है। क्योकि सृष्टि के आरम्भ मे पढने और पढाने की कुछ भी व्यवस्था नही थी तथा विद्या का कोई भी ग्रन्थ नही था ! उस समय ईश्वर के किये वेदोपदेश के बिना, विद्या के नही होने से कोई भी मनुष्य ग्रन्थ की रचना नही कर सकता था। क्योकि सब मनुष्यो को सहायकारी ज्ञान मे स्वतन्त्रता नही है और स्वाभाविक ज्ञान मात्र से विद्या की प्राप्ति किसी को नही हो सकती, इसलिए ईश्वर ने सब मनुष्यो के हित के लिए वेदो की उत्पत्ति की" भारत के जितने भी महान् विचारक, आचार्य और ऋषि मुनि हुए हैं, सभी वेदो की प्रामिणकता को सर्वज्ञ परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान मानते है, जो कि सष्टि के आरम्भ मे मनुष्यो के मार्ग दर्शन और कल्याण के लिए अग्नि आदि ऋषियो पर प्रकट किया।"

मनुष्य समाज की शिक्षण, रक्षण, व्यापार कृषि और श्रम व्यवस्था को ठीक रखने के लिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र वर्ग गुण कर्म, स्वभाव के अनुसार व्यवस्था, तीन लोक—द्यौ: अन्तरिक्ष और पृथ्वी का ज्ञान और प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन की चारो अवस्थाओ को नियमानुसार रखना ये सब बाते वेद से ही सिद्ध होती हैं। वेद मे जो कहा गया है, वह त्रैकालिक सत्य है। वह भूतकाल के लिए भी सत्य था। आगे के लिए भी सत्य है, भविष्य के लिए भी सत्य रहेगा। वेद मे जो कुछ भी कहा गया है, वह मानव मात्र के लिए है। वेद मे मनुष्य को सम्बोधन किया गया है, उसमे किसी देश जाति या विशेष रग के मनुष्य को सम्बोधित नही किया गया है। वेद सारी मनुष्य जाति को परमात्मा के पुत्र मानता है "श्रृवन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा:" (ऋग् 10।13।1) वेद इसलिए धरती के सब मनुष्यो को भाई-भाई मानता है। इस प्रकार वेद किसी देश विशेष मे रहने वालो का धर्म ग्रन्थ न होकर सारी मनुष्य जाति का धर्म ग्रन्थ है। इसलिए वैदिक सस्कृति सार्वभौम सस्कृति है,भारत ने वेदो की रक्षा की है,इसलिए गौण रूप मे इसे भारतीय सस्कृति कह दिया जाता है। वास्तव मे वैदिक सस्कृति विश्व की सस्कृति है, क्योकि यह सस्कृति मानव मात्र को उन्नत करना चाहती है।

वेदो को केवल भारतीय ऋषि मुनि ही सर्वश्रेष्ठ नही मानते हैं, बल्कि वेदो की श्रेष्ठता के सम्बन्ध मे पाश्चात्य विद्वानो की सम्मति भी देखनी चाहिए। फ्रास के प्रसिद्ध विद्वान् बर्नफ ने लिखा है :—

"हम भारत से आने वाली अत्यन्त तेज रोशनी से अपनी आखे मूद नही सकते हैं। भारत की फिलोसफी के बिना कोई भी सच्ची और पवित्र फिलोसफी नही हो सकती। हमे उनके कानून, धर्म और फिलोसफी और साहित्य का अध्ययन करना चाहिए।"

फ्रास के प्रसिद्ध विद्वान् जकालयट ने अपनी पुस्तक "बाइबल इन इण्डिया" मे लिखा है :—

"वेद ईश्वर की वाणी है, वह सिद्धान्तो का सिद्धान्त है। जितने भी ईश्वर प्रेरित (इहलाम) कहे जाते हैं। उनमे केवल वेद ही ऐसा ईश्वर प्रेरित ज्ञान कहा जा सकता है, जो पूर्ण रूपेण विज्ञान के साथ मेल खाता है।" इसी प्रकार की भावना पैरिस के विद्वान् लार्ड [illegible] ने भी प्रकट की थी।"

दृढ़ संकल्प

कविवर—श्री 'प्रणव' शास्त्री एम ए महोपदेशक

तुम करो सङ्कल्प ऐसा आज दृढ।
भारती आगन कभी बटन न पाये ॥

बैठ पश्चिम मे सपेरा बीन ले कर प्रशिक्षित नाग मण्डल छोडता।
विष विभाजन का उगलते जा रहे, एकता के तार को है तोडता ॥

मातृ भू की यह भुजा गौरवमयी।
आज फिर दुर्भाग्य से कटन न पाय ॥

हो न भारत शक्तिशाली यह कभी, है विदेशी छलभरी यह भावना।
नित्य ही लडते रहे गुरु ग्रन्थ गीता, वैरियो की पूर्ण होव कामना ॥

एकता की तरुण तरणीधार मे।
डूब जाए यह कही, उठने न पाए।

आज अपने ही पराये हो, निडर बीज विष के ये विपले बो रहे।
जल रहा है सामने नन्दन महा किन्तु,मानो मौन अब भी सो रहे ॥

तुम बनो फौलाद की दीवार तभी।
कारवा स्वतन्त्य का लुटने न पाये ॥

गोविन्द गुरु,बन्दा विरागी की शहादत भेन्टन तुमम यहा फिर आ रही।
रणजीत नलुआ के तगने तीर के, गौरव की वीणा फिर से गा रही ॥

राष्ट्र चिन्हो का मिट्टी शचि निकर।
ध्यान रखना ये जरा मिटने न पाये ॥

फिर बुलाता है तुम्हे यह प्यार स े सुनो जलियावाला बाग भी।
पथ प्रदर्शित कर रही है,लाजपत भगतसिह की चिता की आग भी।

आतक का अवरोध करन के लिए,
बढ गया हो जो कदम हटन न पाय ॥

(शास्त्री सदन, रामनगर कटरा आगरा—6 (उ प्र)

उपरोक्त प्रसिद्ध विद्वा ने बाईबल और कुरान की अत्यधिक उपेक्षा करके वेद और वैदिक ज्ञान को ही सर्वोपरि ईश्वरीय ज्ञान स्वीकार किया था, क्योकि उनको यह अनुभव हो चुका था कि ईसाई और इस्लामी मजहबो मे वैज्ञानिक विषयो के बारे मे बात करने वालो को वे अपना शत्रु समझते थे। 1633 मे गैलेलियो नामक प्रसिद्ध वैज्ञानिक को इस बात का प्रचार करने पर कि "पृथिवी गोल है और सूर्य के चारो ओर घूमती है।" दस वर्ष के कारागार की सजा दी थी। जबकि ऋग्वेद जो विश्व का सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ है उसमे पृथिवी का सूर्य के चारो ओर घूमने का वर्णन इस प्रकार है :—

"आप गौ. पृश्निरक्रमीदसदनमातर प्रर पितर च प्रयन्त स्व।"
अर्थात् यह पृथिवी जल को प्राप्त हुई आकाश मे चारो ओर घूमती है और सूर्य के चारो ओर भी घूमती है।"

इस प्रकार वेद मे जितनी भी बाते है, सभी विज्ञान के अनुकूल हैं। उनकी शिक्षा मे धर्म और विज्ञान मे परस्पर द्वेष नही है, बल्कि वे एक दूसरे के पूरक हैं। इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा कि "वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है, वेद का पढना, पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" इस प्रकार सभी धर्म ग्रन्थो की कसौटी वेद है। अत: हमे वेदानुकूल आचरण करना चाहिए और वेदो की शिक्षा को अपना कर अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए।

अग्रनगर लुधियाना में पारिवारिक सत्संग सम्पन्न

आर्य युवक सभा एवं आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना के सहयोग से आर्य समाज अग्र नगर द्वारा श्री एम एम अग्रवाल प्रधान आर्य समाज अग्रनगर के निवास स्थान पर बृहद पारिवारिक सत्संग किया गया। सत्संग के आरम्भ में यज्ञ प सूर्यपाल जी विद्यावाचस्पति एम ए पुरोहित आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर श्री रोशनलाल शर्मा, सयोजक आर्य युवक सभा पजाब ने पारिवारिक सत्संग के द्वारा वेद प्रचार का कार्य तेज करने के लिए प्रेरित किया।

श्री एम एम अग्रवाल तथा आर्य समाज के अधिकारियों ने अग्रनगर के निवासियों से व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क करके इस सत्संग में आमन्त्रित किया जिसका परिणाम था कि उपस्थिति इतनी अधिक थी कि यह सत्संग अपने आप में एक सम्मेलन था। शान्ति पाठ के साथ कार्यवाही समाप्त हुई।

—सतपाल अग्रवाल
मन्त्री

आर्य समाज रानी का तालाब फिरोजपुर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

23 दिसम्बर को आर्य समाज गुरुकुल विभाग फिरोजपुर शहर में श्री स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर चारों वेदों के शतकों से यज्ञ हुआ। श्री चमनलाल जी श्री हवन लाल जी श्री जीवनसिंह जी ने स्वामी जी को श्रद्धाजलिया अर्पित करते हुए उनके जीवन पर प्रकाश डाला।

—मोहनलाल
मन्त्री

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एकता के रूप में मनाया गया

राष्ट्रीय एकता के प्रणेता, वीर स्वतन्त्रता सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस आज देश व विदेशों में धूमधाम से मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर 23-12 86 को दिल्ली में एक विराट शोभा यात्रा प्रतिवर्ष की भांति स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार से प्रात 10 बजे प्रारम्भ होकर चावडी बाजार नई सडक चांदनी चौक होती हुई दोपहर 3 बजे लाल किला मैदान में विराट सभा में परिणत हो गई।

लगभग 5 किलोमीटर लम्बे जलूस की अगवानी अनेक राष्ट्रीय नेता व सन्यासी, पैदल व सजे हुए हाथी-घोडों पर कर रहे थे। इसमें दिल्ली व आस पास के हजारों लोगों व 100 शिक्षण संस्थाओं के छात्र छात्राओं ने बैण्ड लेजियम आदि के साथ बडे उत्साह से भाग लिया। जलूस के सारे मार्ग को सजा कर व बच्चों को जल आदि वितरित कर विभिन्न संस्थाओं ने सबका स्वागत किया।

मन्त्री
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

आर्य समाज भगतसिंह नगर जालन्धर में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में 23-12-86 को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। श्री मुलखराज प्रधान आर्य समाज ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्हें श्रद्धांजलि भेंट की।

—रणजीत आर्य
मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250

रजि. नं. N.W/J.L.55

वर्ष 18 अंक 41. 5 माघ सम्वत् 2043 तदानुसार 18 जनवरी 1987 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

संसार का आधार क्या है ?

लेखक—डा सुद्युम्नाचार्य, व्याकरणाचार्य, एम ए. (लब्धस्वर्णपदक), डी फिल.

आधुनिक वैज्ञानिक युग मे इस प्रश्न का कोई विशेष मूल्य प्रतीत नहीं होता। आज साधारण व्यक्ति भी यह बता सकता है कि यह पृथिवी सूर्य के आकर्षण के द्वारा एक निश्चित पथ पर निरन्तर गति कर रही है। पर यह जानना रोचक है कि इस उत्तर को भली प्रकार समझ पाने के लिये इस विश्व को हजारो वर्षों की प्रतीक्षा करनी रही है। इस महान् प्रयत्न के पश्चात् इसे ठीक प्रकार जान पाना सम्भव हो सका है।

सामान्यतया यह प्रश्न तथा इसका उत्तर 'खम्भे' को रूपक बनाकर प्रस्तुत किया जाता रहा है। अथर्ववेद के एक सूक्त में बार-बार बड़े विस्तार से यह पूछा है कि वह खम्भा बताओ, जिस पर समस्त विश्व टिका है। उसका एक प्रसिद्ध मन्त्र इस प्रकार है—

यत्र लोकाश्च कोशाश्चापो ब्रह्म जना विदु।
असच्च यत्र सच्चान्त स्कम्भ त
ब्रूहि कतम स्विदेव स ।।
अथर्व 10।7।10।।

यहा सहज ही लोक-लोकान्तरो के आधारभूत खम्भे को पूछा है। इसी प्रकार अन्य अनेक मन्त्रो मे विश्व के अन्य पदार्थों के खम्भे के विषय मे जिज्ञासा प्रकट की है।

यह अचरज है कि अन्य प्रमुख धर्म ग्रन्थो मे भी विश्व के आधार के लिए खम्भे के रूपक का ही प्रयोग किया है तथा इस विषय म इसी रूप मे प्रश्न पूछा है। उदाहरण के लिए बाइबिल का यह उद्धरण प्रस्तुत किया जा सकता है—

क्योकि पृथिवी के खम्भे यहोवा के है, उसने उन पर जगत् धरा है। (सैमुएल 2।8)

इसी प्रकार कुरान मे भी इस प्रकार का वचन देखा जा सकता है—

वह आसमान बगैर खम्भो के खड़ा है और जमीन में पहाड़ को डाल दिया, तुम्हें लेकर जमीन झुक न पड़े। (कुरान पा. 21 सूरे लुकमान रु. 1)

इन सब मे यह माना गया कि इन लोक-लोकान्तरो को टिकाने के लिए खम्भे जैसी किसी वस्तु का होना आवश्यक है। जिस प्रकार मकान की छत को खड़ा करने के लिए खम्भा लगाया जाता है, उसी प्रकार इस विश्व को गिरने से बचाने के लिए खम्भे की जरूरत है। पर ऐसा कोई खम्भा दीखता तो नहीं। अत प्राय: सभी धर्म ग्रन्थो ने यह माना कि यह विशाल खम्भा अदृश्य है। इस प्रकार किसी आकार को धारण किये बिना ही उसने अपनी शक्ति मे सब को थाम रखा है। अथर्व वेद के उसी सूक्त मे इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा है कि वास्तव मे इन्द्र की शक्ति ही खम्भा बन कर सबको धारण किये हुए है-स्कम्भ त्वा वेद प्रत्यक्षमिन्द्रे सर्व समाहितम्। अथर्व 10।7।29।।

पर क्या धर्म शास्त्रो का इतना उत्तर वैज्ञानिको को सन्तोष दे सकता था। वस्तुत. वैज्ञानिको तथा सामान्य मनुष्य के मन मे यह प्रश्न बना ही रहा कि कोई वस्तु चाहे कितनी ही शक्तिशाली क्यो न हो, वह किसी पदार्थ को स्पर्श किये बिना कैसे आकर्षित कर सकती है। खम्भा छत को स्पर्श करके ही उसे अपने मे टिकाता है। कोई इजन अपने पीछे पचासो डिब्बो को चैन के द्वारा छू कर ही उन्हे खीच पाता है। पर यहा इन्द्र की शक्ति कितनी ही महान् क्यो न हो, वह किसी आकार वाली वस्तु से स्पर्श के बिना किसी को किस प्रकार टिका सकता है।

सचमुच न्यूटन के आगमन से पूर्व विज्ञान के क्षेत्र मे यह प्रमुख प्रश्न रहा है कि सूर्य आदि बिना किसी माध्यम के किसी ग्रह आदि को किस प्रकार खीच सकता है। न्यूटन के ही समकालीन प्रमुख दार्शनिक जान लाक के सामने यह प्रमुख प्रश्न था। उसकी मान्यता थी कि कोई पदार्थ किसी अन्य पदार्थ से टकराए बिना उसमे गति पैदा नही कर सकता। साथ ही यह भी कि कोई प्राकृत पदार्थ दूर से दूसरे को प्रभावित नही कर सकता। जान लाक महोदय ने न्यूटन को पत्र लिखा था कि 'मेरी समझ मे नहीं आता कि किस तरह कोई पदार्थ किसी अन्य पदार्थ के सम्पर्क मे आए बिना उसे प्रभावित कर सकता है।

पर विज्ञान के क्षेत्र मे न्यूटन महोदय की यह महती उपलब्धि रही कि जो हमें समझ में नही आता उसे उन्होंने अपने तर्क, प्रमाणो से सिद्ध कर दिखाया यह सिद्ध हो गया कि निराकार होकर भी विभिन्न तरगें चलकर अन्य पदार्थों को प्रभावित करती हैं। बाद मे यह भी अचरज भरा तथ्य सिद्ध हुआ कि विद्युच्चुम्बकीय तरगें निर्वात मे भी, एकदम शून्य आकाश मे महावेग से चलकर दूरस्थ पदार्थ को प्रभावित करती हैं। वास्तव मे सूर्य द्वारा अन्य लोको को आकर्षित करने का यही आधार है। बाद मे लाक महोदय ने कहा था कि जो कुछ हमारी समझ से परे है, वह भी परमात्मा की शक्ति से बाहर नही। वास्तव मे यह वैदिक सिद्धान्त की ही विजय थी, जिसे न्यूटन के सिद्धान्त तथा अन्य वैज्ञानिको के सैकड़ो प्रयोगो के पश्चात् ही भले प्रकार समझा जा सका था।

इस प्रसग मे वेद मे यह भी कहा गया है कि बैल ने पृथिवी को धारण किया है। वह मन्त्र इस प्रकार है—

नैतावदेना परो अन्यदस्त्युक्षा स
द्यावापृथिवी बिभर्ति। ऋ 10।31।8।

यहा पर सहज ही उक्षा अर्थात् बैल को द्यावापृथिवी को धारण करने वाला बताया है। कुछ विद्वानो ने यौगिक निर्वचन का सहारा लेते हुए उक्षा का अर्थ सूर्य तथा अन्तत ईश्वर किया है। पर वेदो में ही अथर्ववेद मे मानो उक्षा के बैल अर्थ का ही समर्थन करते हुए यह मन्त्र कहा गया है—

अनड्वान् दाधार पृथिवीमुतद्याम्
अनड्वान् दाधारोर्वन्तरिक्षम्।
अथर्व 4।11।1।।

यहा स्पष्ट ही अनड्वान् अर्थात् बैल को द्युलोक तथा पृथिवी लोक को धारण करने वाला बताया है। यहा यौगिक निर्वचन के आधार पर भी अनड्वान का बैल अर्थ ही करना होगा। क्योकि (अनस्+वान् के अनुसार) अनस् अर्थात् गाडी ढोने वाला बही होता है।

वस्तुत: इन्ही मन्त्रो को आधार बनाकर पुराणो मे यह कल्पना मुखर हुई कि पृथिवी बैल की पीठ पर अवस्थित है।

पर इस प्रकार की धारणा निश्चय ही वैज्ञानिक मान्यता से बहुत दूर है। वैज्ञानिक तर्कों तथा प्रयोगो के सामने इस प्रकार की कल्पनाओ का कोई मूल्य नही हो सकता। ऐसी दशा मे इन वेद वचनो का किस प्रकार समर्थन किया जावे।

विचार से यह विदित होता है कि इन मन्त्रो मे अलकार का प्रयोग किया गया है। प्राचीन काल मे उक्षा अथवा बैल का प्रयोग शक्ति के प्रतिमान के रूप मे होता रहा है। रामायण आदि मे अनेक बार शक्तिशाली पुरुष के लिए 'नरर्षभ' का प्रयोग होता है। उसका अर्थ (नर+ऋषभ के अनुसार) बैल मनुष्य नहीं, अपितु बैल के समान महाशक्तिशाली मनुष्य है। इस प्रकार शक्तिशालिता की पराकाष्ठा कहने के लिये किसी को उक्षा या बैल कहने की परम्परा थी।

प्रस्तुत प्रसग मे भी वेद मन्त्र मे शक्ति की सर्वोच्चता कहने के लिए उक्षा का प्रयोग किया है। वेद के काव्यमय होने के कारण उसमे रूपक, अतिशयोक्ति आदि सभी अलकारो का प्रयोग किया गया है। अतिशयोक्ति अलकार मे उपमेय का पूरी तरह निगरण हो जाता है। इस प्रकार यहा 'शक्ति' को लुप्त करके केवल उक्षा या बैल का प्रयोग किया है।

इससे सिद्ध है कि पुराणो मे वेद के आधार पर बैल के सहारे पृथिवी को बताना तर्कसगत नही है। सच तो यह है कि जिस प्रकार 'स्कम्भ त ब्रूहि' के प्रसग मे 'इन्द्र' नामक शक्ति को उसका आधार बताया है, उसी प्रकार यहा भी उक्षा या अनड्वान् नाम लेकर भी एक विशेष आकर्षण शक्ति को ही इस विश्व का आधार बताया है।

सम्पूर्ण विद्याओ के भण्डार वेद मे इस प्रकार का वैज्ञानिक विवरण होना अतीव हर्ष का विषय है।

आर्य समाज की एक विभूति—

आचार्य देव प्रकाश जी

लेखक—श्री भोलानाथ जी बिलावरी,
प्रधान, केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर

※

आर्य जगत के अनमोल रत्न परम त्यागी एव तपस्वी आचार्य देव प्रकाश जी का जन्म धर्मकोट बग्गा, तहसील बटाला, जिला गुरदासपुर के एक सम्पन्न मौलाना सैयद खानदान के मुन्शी मुहम्मद शफी, जो एक सरकारी स्कूल मे मुख्याध्यापक थे, के घर 1889 तदनुसार 1946 विक्रमी मे हुआ था। आपका बचपन का नाम अब्दुल लतीफ था।

आपके ननिहाल चितौडगढ (फतेहगढ) मे थे। आपकी माता का नाम हुसैन-बीबी और पत्नी का नाम सुकीना था। शुद्धि के बाद हिन्दू नाम सुशीला देवी रख गया था। आचार्य देव प्रकाश की ससुराल गाव जौडा छितरी जो गरदासपुर से करीब 4 मील की दूरी पर है।

★आचार्य जी के जन्म स्थान एव परिवार सम्बन्धी जानकारी ज्ञानी राम सिंह जी, जो अखिल भारतीय दयानन्द सालवेशन मिशन के प्रमुख प्रचारक भी रह चुके हैं और वर्तमान मे आचार्य देव प्रकाश समिति के प्रमुख प्रचारक हैं, के सौजन्य से प्राप्त हुई है।

अब्दुल लतीफ (चरित्र नायक) का लालन पालन अपनी ननिहाल मे ही हुआ। आपके सग मामा वही के एक कश्मीरी मुसलमान थे।

आचार्य देव प्रकाश जी की सन्तान केवल एक पुत्री है जो एम ए तक उच्च शिक्षा प्राप्त है। इसका विवाह गुरुकुल कागडी के प्राध्यापक जो माया सम्पन्न हैं उसका बडा सुपुत्र 'सुधाकर' जो गुरुकुल का स्नातक है वह इतना बलिष्ट है कि वर्तमान मे 'आधुनिक भीम' के नाम से प्रसिद्ध है। वह आश्चर्य जनक शारीरिक करतब भी प्रदर्शित करता है जैसे दो मोटर एक साथ रोकना, सगल तोडना, पीतल की थाली को कागज की तरह फाडना, हृदय गति रोकना इत्यादि।

शिक्षा

आचार्य जी की प्राथमिक शिक्षा फतेहगढ चूडिया के मिडल स्कूल मे हुई इसके साथ ही आप एक मौलवी से कुरान भी पढते थे।

आर्य सस्कारो की जागृति

देव प्रकाश जी का एक सहपाठी ब्राह्मण युवक जिसका नाम मुन्शीराम था उस पर आर्य समाज के सस्कार थे अत दोनो मे प्राय आर्य और इस्लामी सिद्धान्तो पर वाद विवाद चलता रहता था। एक बार मुन्शीराम ने प्रश्न किया "कि आपके मुसलमानी मत मे सृष्टि कितने दिनो मे बनी ?" इन्होने उत्तर दिया "7 दिन मे।" मुन्शीराम ने फिर पूछा कि "सूर्य कितने दिन मे बना ?" इन्होने कहा कि "चौथे दिन।" इस पर मुन्शीराम ने फिर प्रश्न किया "यदि सूय चौथे दिन बना तो पहले दिन का ज्ञान कैसे हुआ। क्योकि दिन तो सूर्य के उदय होन से बनता है।" अब हमारे चरित्र नायक जो कि अब तक अब्दुल लतीफ थे को कोई उत्तर न आया। इस घटना स इनका मन बदल गया और आय धम तथा इस्लामी साहित्य के गहन अध्ययन की जिज्ञासा उत्पन्न हुई। इसी जिज्ञासा ने इन्हे उच्चकोटि का धर्म अन्वेषक एव शास्त्रार्थी बना दिया। ऐसे समय मे आपको स्वामी दर्शनानन्द जी के ग्रन्थ पढने को मिल तथा सत्यार्थ प्रकाश भी पढने का सुअवसर मिला। बस फिर क्या था मानो इनकी काया ही पलट गई। अत आप सच्चे मन से पक्के ऋषि भक्त हो गए। आपका सवेदनशील हृदय होने से आपको मास भक्षणादि स भी घृणा हो गई।

सामाजिक बहिष्कार

आचार्य जी की मुस्लिम बिरादरी मे मासाहार की प्रथा थी। विवाहादि उत्सवो तथा त्यौहारो मे यह प्रथा पूरी तरह व्याप्त थी अत ऐसे अवसरो मे सम्मिलित होने का आप त्याग कर दिया करते थे। इससे बिरादरी के लोग आपसे अत्यन्त रुष्ट हो गए। परिणामत आपका पूण सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया परन्तु इसका आप पर कोई असर न हुआ।

व्यवसाय —

आपके पिता जी की मृत्यु आपकी 14-15 वर्ष की आयु मे ही हो गई थी। परिवार के निर्वाहार्थ स्वीकार का व्यवसाय आपने अपना लिया। साथ ही साथ धार्मिक अनुसन्धान का स्वभाव भी बना रहा।

विद्या [illegible]

देव प्रकाश जी ने [illegible] के [illegible] फारसी की पढी [illegible] विद्या प्राप्ति की खूब [illegible] जो पिता जी के स्वर्गवास होने के पश्चात् भी निरन्तर बनी रही। आपने अमृतसर में आकर मौलवी फाजिल, मुन्शी फाजिल तथा अरबी दर्शन व साहित्य आदि में दक्षता कई मौलवियो से प्राप्त की। अब तक आप इतने योग्य हो गए थे कि मौलवी फाजिल पढने वाले छात्रो को आप सफलतापूर्वक पढा सकते थे। कुछ काल के बाद श्रीमद्‍ दयानन्द अरबी सस्कृत विद्यालय, अमृतसर मे खोलकर स्वय आचार्य पद पर आसीन हो शिष्यो को निष्ठापूर्वक पढाने लगे। आपके सुयोग्य शिष्यो में प साधुराम शास्त्री बी ए, प त्रिलोक चन्द जी शास्त्री महोपदेशक, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब एव वैदिक स्कालर, प गगाराम जी ब्रह्म महाविद्यालय लाहौर भी थे।

आर्य समाज के क्षेत्र में

सर्व प्रथम आपने फतेहगढ मे आर्य समाज की स्थापना की। तीन वर्ष मे ही फतेहगढ के आसपास देहाती कस्बो मे जैसे रमदास, खाल, वनी के बागर, डेरा बाबा नानक, धर्मकोट, रधावा आदि मे आर्य समाज की खूब धूम मचा दी।

अमृतसर मे स्थाई निवास —

सन् 1908 ई के पश्चात आप फतेहगढ से अमृतसर अपनी पत्नी और पुत्री सहित आ गए। अब तक आपका सम्बन्ध लाहौर के आर्य नेताओ से भी हो चुका था। यहा आप आर्य युवक समाज के मन्त्री निर्वाचित हो गए। इसी निमित्त आपका उत्साही, ध्येयनिष्ठ युवको से सम्बन्ध हो गया। इनमे विशेष उल्लेखनीय ज्ञानी पिण्डी दास, लाला किशन चन्द भाटिया, प रामनारायण शर्मा, चौधरी हसराज दत्त, श्री मुन्नी-लाल जी खन्ना, डा मनोहर लाल जी चोपडा, श्री भक्त दुर्गादास जी, श्री लालचन्द मेहरा, श्री हुकमचन्द गुप्ता, प रुद्रदत्त प्रधान आर्य समाज लक्ष्मणसर श्री धर्मपाल बी ए भूतपूर्व प्रधान केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर, लाला रामगोपाल जी शालवाले जो वर्तमान मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं, श्री लालचन्द खन्ना, श्री रूपलाल मेहरा, प कहन चन्द शर्मा, श्री रोशन-लाल बहल महामन्त्री, धर्म प्रचार समिति, अमृतसर, प देवराज, प साधुराम एम ए आदि अनेको सज्जनों से सम्बन्ध हुआ।

अमृतसर में आर्य समाज की धूम

आर्य युवक समाजों के आवश्यक अंग मे एक धर्म-विचार सभा थी जो [illegible] अधिकारियों के अतिरिक्त [illegible] किया करते थे [illegible] तथा [illegible] के पश्चात् आचार्य देव प्रकाश जी का व्याख्यान [illegible] हुआ करता था और विपक्ष के शंका वाले प्रश्नो का समाधान कर दिया जाता था। इन्ही दिनो अमृतसर मे शास्त्रार्थ की खूब धूम मच गई। अनेको शास्त्रार्थ अहमदि, ईसाईयों, पौराणिकों तथा सनातनियो के साथ हुए। जिनमें सदा विपक्षिया को मात खाना पडती थी।

आर्य युवक समाज के वार्षिक उत्सवो पर भारत भर से उपदेशक, साधु, सन्यासी तथा शास्त्रार्थ महारथी पधारा करते थे। युवको मे इतना उत्साह, विशेष कर हमारे देव प्रकाश जी मे हुआ करता था। उत्सवों की समाप्ति पर भी अमृतसर के विभिन्न बाजारो और चौराहो पर प्रचार कार्य कई 2 दिनो तक चलते रहते थे। इन उत्सवो की शोभा-यात्रा (जलूस) पर बाल्मीकि तथा अन्य पिछडी जाति के भाईयों को विशेष रूप से आमन्त्रित किया जाता था। तथा ऋषि लगर मे उनके साथ खान-पान का भी सम्मिलित आयोजन होता था। इस प्रकार अमृतसर मे आचार्य देव प्रकाश जी ने खूब धूम मचा रखी थी। सारा वातावरण आयमय हो जाया करता था।

अकाल पीडितो की सहायता

प्रथम विश्व महायुद्ध की समाप्ति पर खाद्यान्न के मूल्यो मे भारी वृद्धि हो चुकी थी। जिसके कारण साधारण गृहस्थी परिवार पालन की समस्या काफी जटिल हो गई। आटा एक रुपए का तीन सेर बिकने लगा। चारो तरफ हाहाकार मच गया। इस समय आचार्य देव प्रकाश जी आर्य युवक समाज के मन्त्री थे। आपकी देख-रेख मे धनवानो से दान लेकर 66 सेर की गुत्थियां भर कर सायकाल रेढ़ियो पर लाद कर अमृतसर के गली कूचो मे वितरण किया करते थे। यह कार्य कई बार उत्साही आर्य युवको को आधी रात तक करना पडता था। इस प्रकार हजारो मन आटा देव प्रकाश जी के परिश्रम से लोगों मे बाटा जाता।

(क्रमश)

सम्पादकीय—

दो महान् व्यक्तियों में मतभेद

यह लेख मैं साप्ताहिक प्रकाश दिनांक 25 फरवरी 1934 से लेकर आर्य मर्यादा के पाठकों की भेंट कर रहा हूं। मैं चाहता हूं कि पाठकगण अपने इतिहास की पिछली तरफ भी देखें ताकि उन्हें पता चल सके कि हमारे देश में क्या कुछ होता रहा है और हमारे ही नेताओं में कई बार जो मतभेद पैदा हो जाते थे वह किस प्रकार के होते थे। महात्मा गान्धी और गुरु देव रविन्द्रनाथ टैगोर के बीच इस प्रश्न पर मतभेद हुआ कि बिहार में जो भूकम्प 1934 में आया था उसका कारण क्या था। इस पर उस समय के साप्ताहिक प्रकाश के सम्पादक और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री स्वर्गीय श्री महाशय कृष्ण जी ने जो लेख लिखा था वह नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है—

"महात्मा गान्धी और श्री रविन्द्रनाथ टैगोर इस समय भारत वर्ष की महान् विभूतियां हैं दोनों आस्तिक हैं और इसके अतिरिक्त दोनों का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध मित्रता की सीमा तक पहुंच चुका है। परन्तु बिहार के भूकम्प के विषय में दोनों में मतभेद हो गया है। वह भी ऐसे विषय पर जो बहुत गम्भीर है। यदि श्री रविन्द्रनाथ टैगोर आस्तिकवादी न होते तो इस मतभेद को और दृष्टि से देखा जाता। परन्तु गुरु वर टैगोर गान्धी जी से किसी भी रूप में कम आस्तिक नहीं हैं। इसलिए यह विषय कुछ अधिक आश्चर्यजनक हो गया है। बिहार के भूकम्प पर गान्धी जी ने कहा था कि हम अछूतों पर जो अत्याचार कर रहे हैं परमात्मा की तरफ से हमें भूकम्प के रूप में यह सजा मिली है।

श्री टैगोर ने इस पर आपत्ति की है और कहा है कि "छूत-छात और भूकम्प का आपस में कोई सम्बन्ध नहीं है। भूकम्प के विशेषकारण होते हैं, जो वैज्ञानिकों ने हमारे सामने खोल कर रख दिए हैं। कविवर की भावना कुछ भी हो परन्तु उनका तात्पर्य सही है कि अगर उस पर विचार करें तो उसमें कुछ न कुछ सच्चाई दिखाई देती है। परन्तु महात्मा जी ने महा कवि की इस आपत्ति का जो उत्तर दिया है उसकी अवहेलना भी नहीं की जा सकती। गान्धी जी अपना और महाकवि जी का आपस के सम्बन्ध का जिकर करते हुए लिखते हैं —

"शान्ति निकेतन के कवि मेरे लिए गुरुदेव हैं जैसे कि वह इस महान् संस्था के दूसरे वासियों के लिए। मैंने और मेरे साथियों ने वहां शरण ली थी जब हम दक्षिण अफ्रीका से वापिस आए थे। गुरुदेव और मैंने बहुत शीघ्र ही अपने आपस के दृष्टिकोण का भेद देख लिया था। परन्तु इसके कारण हमारे आपस के प्रेम में कोई अन्तर नहीं आया। मेरी तरफ से बिहार की इस मुसीबत को छूत-छात के पाप के साथ जोड़ने के विषय में गुरुदेव के वक्तव्य से भी इसमें कोई अन्तर न आएगा। यदि वह समझते हैं कि मेरा विचार ठीक नहीं है तो उनका भी यह अधिकार है कि उसके विरुद्ध अपने विचार प्रस्तुत करें। उनके लिए मेरे दिल में जो आदर और सम्मान है उसके कारण उनकी बात को किसी दूसरे की आपत्ति से अधिक महत्व दूंगा परन्तु उनके वक्तव्य को तीन बार पढ़ने के बाद भी मैंने जो कुछ पहले लिखा था उसमें कोई परिवर्तन नहीं आया।

जब मैंने पहले पहल तनावलों में भूकम्प की मुसीबत को छूत-छात के साथ मिलाया था तो मैंने अपने दिल की बात कही थी। मैंने वही कुछ कहा जो मेरा विश्वास है। मेरे लिए भूकम्प तो परमात्मा की न तो दिल लगी थी और न अन्धी ताकतों के मिलाप का परिणाम। हम परमात्मा के जो कानून हैं उन्हें न ही जानते, न हमें मालूम है कि उन्हें कैसे क्रियान्वित किया जाता है। एक बहुत बड़े विज्ञानिक या धार्मिक व्यक्ति का ज्ञान रेत के एक कण की तरह है। परमात्मा मेरे जीवन की हर हरकत पर हुकूमत करता है मेरा यह पक्का विश्वास है कि उनकी इच्छा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। प्रत्येक सांस जो मैं लेता हूं उसकी अनुमति के बिना नहीं ले सकता। वह और उसका कानून एक हैं। वह सच्चाई है, प्रेम है, कानून है। मेरा गुरुदेव के साथ इस विषय में मतभेद है कि ईश्वर का जो न्याय है वह किसी पर दया नहीं करता और परमात्मा भी अपने कानून में किसी प्रकार का हस्ताक्षेप नहीं करते। हम पर जो मुसीबत आती है उसका एक कारण यह भी है कि परमात्मा की अपनी व्यवस्था है, मुझे उसके विषय में कई बार पूरा ज्ञान नहीं होता। [illegible] यह सब एक ईश्वर से [illegible] की दी हुई सजा होती है। मैं यह भी समझता हूं कि इन सब मुसीबतों का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में मनुष्य के अपने आचरण से भी होता है। इसलिए मुझे अन्दर से महसूस आई कि भूकम्प छूत-छात के पाप के लिए एक दैवी कहर है। कई लोग कहते हैं कि भूकम्प के कारण छूत-छात के विरुद्ध मेरा प्रचार है उनका यह अधिकार है कि वह यह कह सकते हैं। मेरा अपना ऐसा विश्वास तपस्या और आत्म शुद्धि के लिए एक निमंत्रण है। मैं यह भी समझता हूं कि हमें प्रकृति के जो नियम हैं उनके विषय में भी पूरा ज्ञान नहीं है और यद्यपि मैं परमात्मा की सत्ता का प्रमाण पेश करने के योग्य नहीं हूं फिर भी मैं इसमें विश्वास रखे बिना नहीं रह सकता। बिहार पर जो मुसीबत आई है मैं उसे छूत छात से सम्बन्धित प्रमाणित करने में असमर्थ हूं परन्तु यह अवश्य समझता हूं कि इन दोनों का आपस में सम्बन्ध है। यदि मेरा यह विश्वास निराधार भी निकले तो फिर भी इससे मुझे और मेरे जैसे विचार रखने वालों को लाभ ही होगा क्योंकि हम अपनी शुद्धताई की ओर ज्यादा ध्यान देंगे। मैं जानता हूं कि जो कुछ मैं यह कह रहा हूं, कई लोग मेरी बात नहीं मानेंगे परन्तु मैं यह भी समझता हूं कि मेरा जो विश्वास है यदि मैं सबके सामने इसकी घोषणा नहीं करता तो मैं झूठा और बुजदिल हूंगा। इसलिए जो मेरा दिल कहता है जिस बात पर मुझे विश्वास है मैंने कह दिया और यह जानते हुए भी कह दिया कि गुरु देव टैगोर मुझ से सहमत नहीं हैं।"

पाठकगण एक अत्यन्त गम्भीर विषय के सम्बन्ध में देश के दो महान् नेताओं के विचार हमने आपके सामने रख दिए हैं। इससे आप यह तो अनुभव कर सकते हैं कि बड़े लोग कई बार आपस में घनिष्ट सम्बन्ध रखते हुए भी पूरी इमानदारी से एक दूसरे से मतभेद भी रख सकते हैं यदि वह मतभेद न रखें तो वह इमानदार भी न कहे जा सकें। यह उनके उच्च चरित्र का ही परिणाम है कि वह आपस के सम्बन्धों से अपने विचारों को प्रभावित नहीं होने देते।

—वीरेन्द्र

निर्णय के तट पर

श्रद्धेय अमर स्वामी जी सरस्वती का आर्य समाज मे एक विशेष स्थान है। वह केवल सन्यासी ही नहीं महान् विचारक भी हैं और अपना सारा जीवन उन्होंने आर्य समाज की सेवा में ही व्यतीत किया है। वह शास्त्रार्थ महारथी भी हैं और उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर एक बार यह भी कहा था कि—

"पुराने आर्य समाजियो ने अपने घरो को उजाड कर आर्य समाज को बनाया था। आजकल के आर्य समाजी, आर्य समाज को उजाड कर अपने घरो को बना रहे हैं।"

जो कुछ स्वामी जी महाराज ने आर्य समाज की वर्तमान स्थिति के विषय मे लिखा है वह कहा तक ठीक है। इस विषय मे अपने चारो तरफ की परिस्थितियो से आखे मूदना उचित नही होगा। इसलिए जो कुछ श्री अमरस्वामी जी ने कहा है, उस की अवहेलना नही की जा सकती। गाजियाबाद मे स्वामी जी का अपना एक आश्रम है और वहीं 'एक अमर स्वामी प्रकाशन विभाग' है। इस प्रकाशन विभाग ने "निर्णय के तट पर" नाम से पुराने शास्त्रार्थ महारथियो के शास्त्रार्थ सग्रहीत किए हैं। इस पुस्तक का द्वितीय भाग मुझे देखने को मिला है। इस मे निम्नलिखित महानुभावो के शास्त्रार्थ सग्रहीत किए गए हैं। श्री महर्षि दयानन्द जी सरस्वती, स्वामी दर्शनानन्द जी, प लक्ष्मी दत्त आर्य मुसाफिर, प इन्द्र जी विद्या वाचस्पति, प गणपति शर्मा, प रामचन्द्र जी देहलवी, प बुद्धदेव विद्यालकार प शान्ति प्रकाश जी। इन सब के शास्त्रार्थ या तो सनातन धर्मी पण्डितो के साथ होते रहे या मुसलमानो, मौलवियो तथा ईसाईयो पादरियो के साथ। "निर्णय के तट पर" के दूसरे भाग मे इन सब के शास्त्रार्थ के विषय मे बहुत कुछ पढ़ने को मिलता है। इस पुस्तक का सब से बड़ा महत्व मेरी दृष्टि मे यह है कि आर्य समाज की मान्यताओ पर इस के विरोधियो ने समय समय पर जो आपत्तिया की हैं, उन का उत्तर इस पुस्तक मे मिल जाता है। इस पुस्तक को पढ़ने के पश्चात् प्रत्ये

(शेष पृष्ठ 4 पर)

एक आर्य समाजी की नजर में—२

साहिबे कमाल गुरु गोबिन्दसिंह

"लाला दौलत राय की जिस पुस्तक का मैं पहले उल्लेख कर चुका हूं" उसके बारे मे कुछ सिखो की जो राय है वह भी पहले प्रस्तुत कर चुका हूं लेकिन एक पत्रकार गुरचरणसिंह खालसा ने इस पुस्तक के बारे में कुछ और भी लिखा है वह भी नीचे प्रस्तुत करता हू। उनका कहना है कि —

"गुरु जी के समय हिन्दू समाज की जो दयनीय दशा थी उसका उल्लेख लाला दौलत राय ने इन शब्दो मे किया है। "वह छोटे-छोटे सम्प्रदायों और उन से आगे और छोटे टोलो में बट गए थे जिससे उनका राष्ट्रीय बल सब का सब नष्ट हो गया और एकता की लडी ऐसी बिखरी कि उनका अस्तित्व ही टिम-टिमाते दिए की लौ का रूप धारण कर गया। औरगजेब की अत्याचारी तलवार के तूफान से सम्भव था कि ऐसा टिमटिमाता दीप सदा के लिए बुझ जाता। लेकिन गुरु गोबिन्द सिंह जी ने अपना हाथ उस पर रख कर उसे बुझने से सदा के लिए बचा लिया। गुरु जी ने उन हिन्दूओ की काया पलट दी, जिन्होंने सात सौ वर्ष तक इस्लाम की गुलामी के नीचे असख्य दु ख और अपमान सहे थे। वे इतने लम्बे समय मे अपने सारे वीरता के करतब इस हद तक भूल चुके थे कि वे अपनी स्त्रियो बहु-बेटियो और बहनो को टके-टके मे बिकती देख कर भी चुप्पी साध बैठे थे। वे अपने इमाकों और जायदादो से सदा के लिए हाथ धो बैठे थे। उनके पवित्र मन्दिरो, पूज्य देवियो और देवताओ को उनके अपने पवित्र पशुओ के रक्त से लीपा और नहलाया जाता था परन्तु उनके कानो पर जू तक नही रीगती थी उनका धर्म और उनकी मान मर्यादा मुसलमानो के जूतो मे रुलती थी और उनकी दया का आकाक्षी था। वे अपने घरो मे घुस बैठे थे और चूहो की तरह पहाडो की बिलो मे जा छुपे थे। उनके बुझे साहस मुरझाए हुए चेहरो और मुर्दा दिलो मे गुरु साहेब ने ऐसी रूह फू की और वह गर्मी तथा जोश पैदा किया कि एक-एक सिख सैकडो मुसलमानो की ताकत को तुच्छ समझने लगा। देश और कौम पर शहीद होने तथा धर्म की रक्षा के लिए शहीदी का जाम पीने को सिख अपना सौभाग्य समझने लगे। गुरु गोबिन्दसिंह ने बिल्लियो को बाघ बनाया और नामर्दों को "मर्द मैदान।"

यह थे विचार एक सिख पत्रकार के लाला दौलतराय की पुस्तक के बारे मे। अब जरा लाला जी के अपने विचार भी देखिए कि उन्होने यह पुस्तक क्यो लिखी है उनका कहना है कि —

"यद्यपि मुझे अपने असामर्थ्य का ज्ञान था परन्तु फिर भी दो बातो ने मुझे यह पुस्तक लिखने के लिए तैयार किया। पहली यह कि कोई ऐसी विस्तार सहित लिखी हुई पुस्तक नही थी जिसमे गुरु गोबिन्दसिंह जी जैसे देशभक्त तथा महान योद्धा के उद्देश्य स्पष्ट लिखे हो। कई प्रकार की प्राचीन जन्म साखिए और कुछ श्रद्धालुओ द्वारा लिखी हुई जन्म साखिया मिलती हैं, परन्तु उनकी कई बातों को सत्य मानने मे शका होती है। इस प्रकार उनके जीवन के बहुत से सच्चे समाचारो को साधारण समाचारो से पृथक करना कठिन हो जाता है और इस प्रकार जिस व्यक्ति की जीवनी लिखी जाती है उसके साथ भारी अन्याय हो जाता है। क्योकि घटा बढाकर बताने से उनके विचार और समाचार असली रग मे पेश नही किए जा सकते। गुरु गोबिन्दसिंह जी के बारे मे लिखी गई जन्म साखिया इस दोष से रहित नही थी। उनमे कई बातें ऐसी भी हैं जिन पर यदि उन पर विश्वास किया जाए तो गुरु जी के कई महान् काम भी मामूली दिखाई देने लगते हैं। इसलिए मैंने अनुभव किया है कि इस भावना से पुस्तक लिखी जाए जिससे उस महाबली के महान् कार्यों का और उच्च विचारो का अच्छी तरह से पता चल सके।"

आगे चलकर लाला जी लिखते हैं :—

"कुछ समय मेरा भी यही विचार रहा कि गुरु जी एक मामूली सुधारक से अधिक और कुछ नही थे परन्तु जब मैंने उनके जीवन के हालात और विचारो को गम्भीरता से पढा तो मेरी कितनी राय, मेरे कितने विचार, मेरे कितने अनुमान गलत सिद्ध हुए। प्रत्युत इसके उलट उस महाबली का सम्मान और प्रेम मेरे दिल मे इतना गहरा प्रभाव छोड गया कि मैंने महसूस किया कि इस महाबली के विचारों को लोगो तक पहुचाने के लिए उनको पुस्तक के रूप मे मुद्रित कर पेश किया जाए।"

पाठकवृन्द ! लाला दौलतराय ने अपनी पुस्तक में साहिबे कमाल गुरु गोबिन्द सिंह के बारे में जो कुछ लिखा है वह मैंने आपकी सेवा में प्रस्तुत कर दिया है। इसके दो कारण हैं। एक तो मैं इस गलत प्रचार का प्रतिवाद करना चाहता था कि आर्य समाजी गुरु साहेबान के विरोधी हैं। इससे बड़ा झूठ और कोई नहीं हो सकता। किसी महापुरुष के विचारों से कोई बहुत [illegible] का यह अभिप्राय नहीं कि जो उनसे सहमत नहीं है वह उनका विरोधी है। जिस उद्देश्य से गुरु गोबिन्दसिंह जी ने खालसा पंथ बनाया था उसी उद्देश्य से उनके डेढ़ सौ वर्ष बाद महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की थी और उन्होंने गुरु गोबिन्दसिंह के बारे में लिखा भी था कि वह बहुत वीर थे और उन्होंने हिन्दुओं को मुसलमान बनने से बचाया था। इसी विचारधारा से प्रभावित होकर लाला दौलतराय ने अपनी पुस्तक में यह स्पष्ट किया है कि जिस समय गुरु महाराज का जन्म हुआ था औरंगजेब के अत्याचारो से हिन्दू इतने दब गए थे कि उन्हें ऊपर उठाने के लिए किसी महाबली की आवश्यकता थी जो गुरु गोबिन्दसिंह जी ने पूरी कर दी। इसलिए इससे बड़ी शरारत और कोई नहीं हो सकती कि यह कहा जाए कि आर्य समाजी गुरु साहेबान के विरोधी हैं। उनके प्रति हम में अत्यन्त सम्मान है—उतना ही जितना किसी भी सिख को हो सकता है। हम केवल इन महापुरुषो को अपने राजनीतिक उद्देश्यो के लिए इस्तेमाल नही करते। ऐसा केवल अकाली करते हैं।

इस पुस्तक के प्रस्तुत करने का मेरा दूसरा उद्देश्य यह है कि जो अकाली आज यह कहते हैं कि वे हिन्दू नही हैं, उन्हे भी यह पता चले कि गुरु महाराज और उनसे पहले उनके पिता श्री गुरु तेगबहादुर ने जो कुछ भी किया था हिन्दुओ के लिए ही किया था। गुरु तेग बहादुर के समय मे तो अभी खालसा पथ स्थापित भी नही हुआ था और गुरु गोबिन्दसिंह हिन्दू सस्कृति के उतने ही पुजारी थे जितना कि कोई अन्य महापुरुष। इस सस्कृति को बचाने के लिए ही उन्होंने खालसा पथ सजाया था।

आज परिस्थितिया बदल गई हैं। कई सिख अपने आपको हिन्दू कहलाने से झिझकते हैं। मैं कई बार पहले भी लिख चुका हू कि जो सिख अपने आपको हिन्दू नही समझते उन्हें हिन्दू कहने पर जोर नही दिया जाए। किसी व्यक्ति को बलात् हिन्दू नही बनाया जा सकता। न बलात् हिन्दू धर्म छोडने को विवश किया जा सकता है। लेकिन एक बात उन सिखो को भी समझ लेनी चाहिए जो अपने आपको हिन्दू कहलाने मे शर्म महसूस करते हैं। वह यह नही चाहते कि वह हिन्दू बनें। लेकिन वह गुरु साहेबान को हम से नहीं छीन सकते। दसो के दसो गुरु हिन्दू थे। इसलिए वे हमारे भी गुरु हैं। उनके प्रति हमारे दिलो मे वही सम्मान है जो किसी अन्य हिन्दू महापुरुष के प्रति है। लाला दौलतराय की पुस्तक साक्षी है कि आर्य समाजी भी गुरु साहेबान का उतना ही सम्मान करते हैं जितना कोई सिख करता है। इसलिए यह स्पष्ट कर देना चाहता हू कि हमे गुरचरण सिंह टोहरा और प्रकाश सिंह बादल की आवश्यकता नही है। सुरजीत सिंह बरनाला और बलवन्त सिंह की जरूरत नही है। दर्शनसिंह रागी और ज्ञानी पूर्ण सिंह की जरूरत नही। हमे गुरुनानक देव जी, गुरु अर्जुन देव जी, गुरु तेगबहादुर और गुरु गोबिन्दसिंह जी की जरूरत है। अकाली और उनके सम-विचारक गुरु साहेबान को हमसे छीन नही सकते। बाकी कोई अन्तर नही पड़ता।

—वीरेन्द्र

(3 पृष्ठ का शेष)

आर्य समाजी भली भान्ति समझ सकता है कि आर्य समाज क्या है और उस के सिद्धान्त क्या हैं और उसकी मान्यताए क्या हैं। समय-समय पर जो विरोधी आर्य समाज पर जो आपत्तिया करते रहते हैं उन का क्या उत्तर दिया जा सकता है, वह इस पुस्तक मे मिल जाता है। यह एक ऐसी पुस्तक है जो प्रत्येक आर्य समाज को अपने पास रखनी चाहिए और जहा तक सम्भव हो सके प्रत्येक आर्य समाजी को यह पढनी भी चाहिए। यह पुस्तक हमे आर्य समाज के उज्ज्वल और गौरवमय अतीत की याद दिलाती है। जब आर्य समाज के बडे बडे विद्वान् दूसरे धर्मावल-म्बियों को ललकारा करते थे। इस पुस्तक का मूल्य 125 रुपये है और यह अमर स्वामी प्रकाशन विभाग 1058 विवेकानन्द नगर गाजियाबाद से मिल सकती है। मूल्य अधिक होने के कारण ही मैंने लिखा है कि यह प्रत्येक आर्य समाज के पुस्तकालय मे रहनी चाहिए। जिन आर्य समाजो के पुस्तकालय नहीं हैं, उन्हें भी इस पुस्तक की एक प्रति अपने पास अवश्य रखनी चाहिए और अपने सदस्यों को कहना चाहिए कि वह इसे अवश्य पढें। जो हमारे विचारो के साथ सहमत नही हैं, उन्हें भी यह पुस्तक पढनी चाहिए।

वीरेन्द्र

मेरी विदेश यात्रा
लंदन (इंगलैंड)—3

लेखक—श्री आसुराम आर्य चण्डीगढ़

※

(14 दिसम्बर से आगे)

—पाताल (अमेरिका) में प्रवेश—

इस प्रकार इंगलैंड में वेद धर्म प्रचार के पश्चात् 21 अगस्त को ब्रिटेन वायुसेवा से हम न्यूयार्क पहुंच गये वहां रात्रिवास और वर्षा होने पर भी अमेरिका में वैदिक धर्म की ज्योति जलाने वाले प धर्मनिष्ठ जिज्ञासु मन्त्री आर्य समाज न्यूयार्क गाड़ी लेकर आए हुए थे जो हमें अपने निवास गृह 43/49 स्मार्ट स्ट्रीट पर ले गये। आपकी श्रीमती जी तो स्वर्गवास हो चुकी हैं। स्वयं यह एम ए एल एल बी और चार्टर्ड अकाउन्टैन्ट होकर न्यूयार्क स्टेट में आडीटर लगे हुए हैं, जहां आप वैदिक मिशनरी और विद्वान् हैं वहा आपका गृह निवास भी आतिथ्य के लिए हर समय खुला रहता है। भारत से इतनी दूर पाताल देश अमेरिका मे आने का द्वार तो न्यूयार्क है जिस मे आर्य समाज बना कर प्रत्येक आर्य अतिथि के लिए अपना गृह द्वार खुला रखना सुगृहणी के न होने पर भी यह एक अत्यन्त सराहनीय सेवा कार्य है और महान भी। मन्त्री जिज्ञासु जी एक विशाल समृद्ध परिवार के स्वामी हैं। यह भी ईश्वर की विशेष कृपा है।

15 सन्तानें इन की हुई जिन म 6 तो परलोक वासी हो गई शेष 9 पुत्र पुत्रियां एक आध को छोड़ सभी डाक्टर हैं दामाद भी डाक्टर हैं जो अपने अपने विशाल सुन्दर भवनों मे सुखी हैं। आप एक कुशल प्रसिद्ध पुरोहित भी हैं जो न्यूयार्क स्टेट पर छाये हुए हैं। आप ने हिम्मत और साहस से मान्य आर्य पुरुष श्री पुरुषोत्तमराम कपूर प्रधान आर्य समाज ब्र डा सतीश जी प रामलाल आदि गायना के आर्य भाईयो की सहायता से 30 लाख रुपए संगृहीत कर आर्य समाज (मन्दिर) खड़ा कर दिया है जिस का न 150-22 हिल साईड है। इनके घर का फोन जो प्रत्येक आर्य अतिथि के लिए खुला रहता है का न (718) 445 5999 है। गत दिनो मई मास मे इसका उदघाटन समारोह यजुर्वेद के पारायण यज्ञ से आचार्य वैद्य ग जी और डा स्वामी सत्यप्रकाश जी ने भारत से जाकर सम्पन्न कराया और वेद सम्मेलन भी।

—आर्येंगे खत अरब से—

समाज मे दैनिक सत्संग प्रातः साढे 6 से साढे 7 बजे प्रतिदिन होता है जिस मे श्री जिज्ञासु जी और गायना समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्ता पं रामलाल जी यह दोनो ही नित्य प्रति ठीक समय पर पहुंच जाते हैं। क्योंकि हमने नित्य कर्म करना ही होता है इस लिए हम लन्दन से पुत्री सन्तोष का हवन कुण्ड शावे का साथ ही ले आए लेकिन यहा तो हम दोनो पति-पत्नी मन्त्री जी के साथ गाड़ी पर चले जाते थे जो कि इन के घर से मील दूरी पर है। 28 अगस्त को रविवार के सत्संग मे मेरे दो वेद प्रवचन दोनो समाजो मे हुए। प्रात 10 से 12 गायना आर्य समाज के सत्संग मे और सायं 4 से 6 आर्य समाज के सा सत्संग मे। दोनो के सत्संग यहा इसी नव निर्मित आर्य समाज रैम्पल मे ही होते हैं। गायना के आर्य भाई बहिने बड़ी निष्ठा से सब के सब बड़ी सख्या मे आरम्भ के समय पर पहुंच कर ही सध्या हवन यथा विधि मन्त्रो के साथ ही सभी एक स्वर मे उच्चारण करते हैं जो बहुत प्यारे सुन्दर और अत्यन्त आकर्षक होते हैं और शब्द 2 विधि 2 वाक्य 2 पूरा अनुशासन बद्ध होता है। जिसकी प्रशसा मैंने दोनो व्याख्यानो मे की कि ऐसा मुग्ध कर देने वाला आर्य समाज का पूरा सा सत्संग मैंने अपनी सारी आयु मे नही देखा हवन सध्या के अतिरिक्त प्रवचन इगलिश मे होता है क्योंकि गायना के लोग अधिकतर अंग्रेजी ही समझ सकते हैं। मेरे व्याख्यान का भी ब्रह्मचारी डा सतीश जी साथ 2 ही अनुवाद इगलिश में करते गए। साथ ही उन्होंने मेरे प्रवचन की प्रशसा भी अत्यन्त की। पर मैंने तो कहा कि यह सब प्रशसा तो ईश्वर की ही है जिसकी प्रेरणा से मेरी वाणी से ऐसा प्रभाव हुआ। वह स्वयं एक कुशल प्रवक्ता है और व्याख्यान लिखकर मेरे पश्चात् उन्होंने अपना व्याख्यान इगलिश मे ही दिया। जिससे मैं बहुत ही प्रभावित हुआ और मैंने कहा कि हमारे पुराने पूज्य वेद धर्म प्रचारक कवियों ने जो यह लिखा था कि—

"आर्येंगे खत अरब से उन में यह लिखा होगा। गुरुकुल का ब्रह्मचारी धूम-धूम मचा रहा है।

"आज मैं अपनी आंखो के सामने इस आदर्श स्वप्न का साक्षातकार देख रहा हू और खुशी से फूला नहीं समा रहा। अरब तो भारत के निकट है पर पाताल देश अमेरिका तो दस हजार मील की दूरी से भी अधिक है जो हमारे लिए अतीव गौरव का कारण है। यह ब्रह्मचारी गुरुकुल कागड़ी मे विद्याध्ययन करते रहे और हमारे प्यारे मान्य डा भवानी लाल भारतीय जी अध्यक्ष महर्षि दयानन्द पीठ चण्डीगढ़ प. विश्वविद्यालय के सहयोग से ही डाक्टरेट प्राप्त करके डाक्टर बने और आज आर्य वीर दल के सचालक भी बन कर आर्य समाज की वेद ध्वनि को अमेरिका के आकाशमण्डल मे गुंजा रहे हैं। यह बात मैं फिर लिखता हू जो मेरे आर्य हृदय की आवाज है कि प्यारे गायना के आर्य भाई-बहिनें जब अपने प्यारे रसीले भजन गीत हृदयो को खींच लेने वाले हिन्दी भाषा मे बोल सकते हैं तो हिन्दी भाषा बोल-चाल और सुनने मे क्या कठिनाई है? यह मैं समझ पाया कि यह केवल प्रमाद है या अपने पूर्वजो के प्यारे देश भारत की प्यारी भाषा से स्नेह प्यार का अभाव और इगलिश से अनुचित मोह है?

अस्तु आर्य समाज के प्रधान मृदु श्रेष्ठ गुण कर्म स्वभाव श्री कपूर जो इन के साथ श्रीराम गोपाल भण्डारी, श्री करतार सिंह बब्बर, श्री रामदेव बजाज डा अग्गा जी, ब्र डा सतीश जी, प रामलाल जी आदि और विशेष कर प जिज्ञासु जी सभी धन्यवाद के पात्र हैं जो इतनी लम्बी दूरी से आकर यहा आर्य समाज की वेद ज्योति को फैलाने मे अग्रसर हैं। आर्य वृद्ध प्रधान श्री कपूर जी तो तन मन धन से समाज को आगे ले जाने मे नित्य प्रति सलग्न हैं।

अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन मे—

21 से 27 अगस्त दोपहर तक न्यूयार्क मे निवास के पश्चात् 3 बजे ग्रेहाउड बस सेवा से 8 बजे रात्रि 5 घण्टे मे 250 मील की यात्रा बड़ी सुन्दरता और सुविधा से करके वाशिंगटन डी सी सम्पूर्ण विश्व के धन कोष के केन्द्र राजधानी में पहुंच गए वहा हमारे प्यारे मान्य श्री कृष्ण स्वरूप जी नेहरा जो अमरिका सरकार लायब्रेरी आफ कांग्रेस में सीनियर सीवल एडवाईजर हैं गाडी लेकर आए हुए थे। विरजीनिया प्रान्त के वीयेना नगर में उनका घर है जो वाशिंगटन नगर से 25 मील पर है वहा जाकर प्रियलता जी इनकी धर्म पत्नी और प्रिय पुत्री डा अर्चना शैलीनी आदि से मिले प्रिय डा अजय, डा वन्दना यह दोनो तो वहा से कुछ दूर हस्पताल की सेवा में हैं। इनके भाई सीनियर एडवोकेट और सैशन जज आदि उच्च सरकारी सर्विस मे चण्डीगढ़ रहते हैं। यहा इन के साथ मिल कर, प्रतिदिन सध्या हवन भजनादि सत्संग करते कराते अन्तिम दिन जब प्रस्थान करना था शिकागो के के लिए टेप रिकार्डर लें आए सब नित्य कर्म सध्योपासना और बृहद हवन यज्ञ भजन कीतन सभी रिकार्ड कर लिए और प्रतिदिन सध्या हवन आदि नित्य कर्म का सकल्प इन से करा लिया जिससे हम को अत्यन्त हर्ष हुआ कि ऐसे सम्पन्न घराने मे नित्य कर्म काण्ड का होते रहना एक बड़ी बात है जो शायद वाशिंगटन राजधानी क्षेत्र मे प्रथम घर परिवार हो अमेरिका जैसे धनी भोगी ऐश परस्त देश मे। यहा तो खोजने पर भी न तो समाज और न ही कोई पाच दस आर्य भाई बहिन मिले। जिन से समाज बनाया जा सके। अलबत्ता मैरी लैंड (एम डी) प्रान्त के "राकविल" नामी नगर मे एक आर्य समाज है जो एक विदुषी आर्य देवी श्रीमती उमा सैनी आर्य, श्री केशव सैनी पति पत्नी ने बनाई हुई है जो इन के घर मे ही लगता है प्रति रविवार को प्रात 11 बजे। श्री नेहरा जी के घर से भी जहा हम ठहरे हुए थे यह स्थान 30 मील पर है 31 अगस्त को रविवार यहा मेरा प्रवचन हुआ। इन की पुत्री आभा आर्य हरमोनियम बजाती है और पुत्र प्रिय विवेक तबला बजाता है। यह भी देख कर मुझ इस लिए बहुत खुशी हुई क्योंकि सिवाय सिख भाईयो के हमारे आर्य घरो मे भी इस प्रकार का वातावरण हम अभी तक नही बना पाए कि हमारे पुत्र-पुत्रियां ऐसे अपने धर्म के मिशनरी हो कि वे अपने सत्संगो मे स्वयं वाद्य- गान आदि बजाते गाते सत्संगो मे चमक पैदा कर सकें। दूसरी विशेषता यह कि श्रीमती उमा आर्य सैनी ने एक पुस्तक लिखी है।

(क्रमश)

आर्य समाज मन्दिरों का उपयोग

लेखक—श्री पं सत्यपाल जी पथिक"
1053।12 कृष्ण कोट अमृतसर

आध्यात्मिक जगत् मे इस बात की निश्चित रूप से आवश्यकता अनुभव की जाती है कि आस्तिक जनो के लिए कोई ऐसा धार्मिक स्थल अथवा भवन होना चाहिए जहां बैठ कर धामाजिक लोग सामूहिक रूप से अपने धार्मिक कृत्यो को कर सकें। यही कारण है कि ससार के सभी आस्तिक समुदायो ने अपनी-अपनी मान्यता के अनुसार उपासना गृहो का निर्माण किया तथा इन का उपयोग भी अपनी समझ के अनुसार धार्मिक कृत्यो के लिए किया तथा आज भी करते हैं। सभी सम्प्रदायों, मतो तथा पथो मे उपासना के तरीको में जमीन आसमान का अन्तर है। प्रश्न होता है कि यदि ईश्वर एक है सर्वव्यापक व जगत् का स्वामी है तथा सभी प्राणी उस की सन्ताने हैं। (यहा विशेष कर के मनुष्यो से अभिप्राय है) तो ईश्वर के स्वरूप नाम तथा स्थान की कल्पनाए भिन्न भिन्न क्यो है? निष्पक्ष उत्तर यही होगा कि अपनी-अपनी अल्पज्ञता एव स्वार्थों के कारण ही विभिन्न मान्यताओं की कल्पना कर ली गई है। इन मत मतान्तरों मे कितनी सच्चाई तथा कितनी अज्ञानता है, उस की चर्चा करना यहा पर मेरा अभिप्राय नहीं है। वह एक अलग विषय है।

आस्तिको की विभिन्न मान्यताओ में आपसी मतभेद होने पर भी ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करना, उसकी उपासना करना आदि कुछ ऐसी मान्यताए हैं जो कि सर्वसम्मत हैं। मनुष्य समाजिक प्राणी होने के कारण धार्मिक विषय सम्बन्धी वैयक्तिक कर्त्तव्यो के अतिरिक्त कुछ समाजिक स्थलो का निर्माण भी प्रारम्भ से करता आया है। इसी के परिणामस्वरूप मन्दिर मसजिद, गिरजे तथा गुरुद्वारे आदि भवनो का निर्माण किया गया है। इन भवनो का यदि उचित उपयोग होता है तो सभी वर्गीकृत मनुष्यो का इन के प्रति श्रद्धा भाव बना रहता है। तथा जब भी इन भवनो का अनुचित उपयोग प्रारम्भ हुआ तो जन सामान्य मे इन भवनों के दुरुपयोग को लेकर आक्रोश पैदा हुआ है। आपसी झगड़े तनाव तथा वैमनस्य सवत्र देखे गए हैं। कारण स्पष्ट है कि इन धार्मिक स्थलो के साथ जन सामान्य की कुछ धार्मिक भावनाए भी जुडी हुती है। इसीलिए किसी प्रकार की अपवित्रता इन भवनो मे देखना पसन्द नहीं करते।

आर्य समाज मन्दिरो की गणना भी ऐसे ही भवनो मे एक दृष्टि से की जी सकती है। हालाकि मैं यह भी मान कर चलता हू कि वह "अन्ध श्रद्धा" जो कि उपरोक्त धार्मिक भवनो के साथ तत्सम्बन्धी जनो की होती है वह अन्ध श्रद्धा आर्य समाज मन्दिरो के साथ आर्य समाजियो की कभी नही हुई। फिर भी यह वास्तविकता है कि आर्य समाज मन्दिर भी आर्य समाज की सामूहिक उपासना यज्ञादि श्रेष्ठ कृत्यो तथा वेद प्रचार आदि गतिविधियो को साकार रूप देने के लिए ही बनाए गए हैं। इन का उपयोग अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सदा किया भी गया है। जिसका लाभ विश्व विदित है। अत यह बात निर्विवाद और स्पष्ट सिद्ध है कि आर्य समाज मन्दिरो की पवित्रता तथा सफाई आदि का विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

आर्य समाज के प्रारम्भिक काल मे समय की गम्भीर आवश्यकता को देखते हुए कुछ आर्य समाज मन्दिरो मे बच्चो की पाठशालाए स्थापित की गई। विशेष कर के पुत्री पाठशालाए। इनसे लाभ हुआ। आर्य समाज के उद्देश्यो की पूर्ति काफी मात्रा मे इन पाठशालाओं के माध्यम से हुई। अर्थात बच्चो पर प्रारम्भ से ही वैदिक विचारो की छाप लगा कर योग्य नागरिक तैयार किए। परन्तु समय के अन्तराल से अब आर्य समाज मन्दिरो मे चलने वाले स्कूल एव विद्यालय वैदिक विचारधारा के प्रसार कार्य मे शून्य तक आ पहुचे हैं। वैदिक धर्म के प्रचार की योजनाओं एव सामूहिक उपासना तथा यज्ञादि कार्यों को पहले ही गौणतर रूप दे दिया गया है। इसके फलस्वरूप आर्य समाज मन्दिर का जो [illegible] यह समाप्त हो गया है। कहीं-कहीं अपवाद रूप से ही उचित उपयोग देखने को मिलता है।

अनेक आर्य समाज मन्दिरों को राजनैतिक अखाड़ों का [illegible] बना दिया गया है। किसी पर एक राजनैतिक पार्टी वालों का प्रभुत्व है तो किसी पर दूसरी पार्टी वालो का किसी पर तीसरी पार्टी वालो का, किसी पर चौथी पार्टी वालो का एक दूसरी पार्टी की आलोचना करना ही उनके साप्ताहिक सत्संगो में मुख्य विषय होता है। वेद प्रचार की योजनाओं को तिलांजलि दे कर अथवा गौण समझ कर केवल राजनैतिक पार्टियो की बैठको को ही महत्व दिया जाता है, जो कि आर्य समाज के लिए सर्वथा हानिकारक है।

सब से बड़े और खेद की बात आजकल यह देखने में आती है कि कई आर्य समाज मन्दिर "बारात घर" बना दिये गए हैं। आर्य समाज मन्दिरो को भाड़े पर देकर रुपए कमाने का एक साधन मात्र बना कर रख दिया है। पता नही इन आर्य समाजो के अधिकारियो की समझ मे यह बात क्यो नहीं आती कि विवाह आदि पार्टियो के लिए किराए पर समाज मन्दिर को देकर आर्य समाज मन्दिर की पवित्रता कैसे बच सकती है? क्या आप नहीं जानते कि आजकल विवाह शादियो और इस प्रकार की पार्टियो में शराब का खुला प्रयोग लड़के लड़कियों, स्त्री पुरुषों के भगड़, नाच, अश्लील हरकतो और आर्केस्ट्रा आदि बाजों के साथ गन्दे गानो और भद्दे जल्सो का प्रदर्शन होता है। सिगरेट बीडी आदि के प्रयोग पर पर कोई बन्धन नहीं रहता। विवाह पार्टी समाप्त होने पर कितनी गन्दगी समाज मन्दिर में पीछे पडी रहती है क्या आप इसे नहीं देखते? क्या आपने अपनी धारणा यह बना ली है कि आर्य समाज मन्दिर का पवित्रता और सफाई से कोई सम्बन्ध नहीं हैं? रेल या बस से उत्तर कर एक उपदेशक या कोई अतिथि जब किसी रिक्शा या स्कूटर वाले को आर्य समाज मे चलने के लिए कहता है तो रिक्शा या स्कूटर वाला कहता है कि आर्य समाज का तो मुझ पता नहीं वहा एक जजघर (बारात घर) है। उपदेशक कहता है कि वहीं से चलो वही तो है आर्य समाज मन्दिर कितने दुःख की बात है। कई आर्य समाज मन्दिरो में तो जब विवाह के लिए स्थान किराए पर दिया जाता है तो यज्ञशाला में विवाह संस्कार पौराणिक पण्डित पढाते हैं। जो कि पौराणिक [illegible] अनेक प्रकार से मूर्ति पूजा तथा कई अवैदिक कार्य करवाते हैं। ये बातें आर्य [illegible] के लिए [illegible] नहीं हैं। इन का आर्य समाज सदा विरोध करता आया है। [illegible] इन कार्यों को आर्य समाज के कई भवन बनाने के लिए यह कह कर लोगों से चन्दा लिया जाता है कि आपके क्षेत्र में एक बारात घर बनाया जाएगा। जब भवन बन जाता है तो [illegible] मोटे-मोटे अक्षरों में लिख दिया जाता है "आर्य समाज मन्दिर" परन्तु जिन लोगों ने बारात घर या जज घर के नाम से चन्दा दिया होता है वे इसी रूप में उसका उपयोग भी करना चाहते हैं। समाज भी चाहते हैं। और फिर उपयोग होता है।

अन्त में सभी आर्य [illegible] एव आर्य समाजों के माननीय अधिकारियों की सेवा मे नम्र निवेदन करना चाहता हू कि सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए तन-मन-धन से पूरी लग्न और तड़प के साथ कार्य करें। तथा वैदिक मर्यादाओं की सुरक्षा हेतु जो भी सम्भव हो वे पग अवश्य उठाए। आर्य समाजो की पवित्रता तथा सफाई का भी जान से ध्यान रखें। आर्य समाज मन्दिरो को इतना सुन्दर और आकर्षक बना दें कि अन्दर घुसते ही प्रत्येक व्यक्ति का मन एकाग्र हो जाए तथा सुखद वातावरण अनुभव करे। आर्य समाज के सत्संगो में केवल आध्यात्मिक चर्चाए हो जो कि पूर्ण रूप से वेदानुकूल हो मास, शराब, सिगरेट, बीडी आदि मादक द्रव्यो को छूट करोड़ो रुपये मिलने पर भी न दी जाए। फिर हम अधिकारी बन कह सकेंगे "वैदिक धर्म की जय।"

आर्य समाज जनकपुरी दिल्ली का चुनाव

आर्य समाज पखारोड सी-ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली का वार्षिक चुनाव सवसम्मति से चुने हुए पदाधिकारी इस प्रकार हैं —

प्रधान—श्री रामकृष्ण सलोजा। उप-प्रधान—सर्वश्री विद्यासागर मदान, गुरमुखराय कुम्मल एव सोमदत्त महाजन, मन्त्री—श्री केशव देव सूद, उप मन्त्री सर्वश्री शिवकुमार मदान, नरेन्द्रचन्द्रपुरी, कृष्ण कांत बत्रा, प्रचार मन्त्री—श्री प्रतापसिंह गुप्त, कोषाध्यक्ष—श्री हरिकिशनलाल गुलाटी, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री जीवनदास बत्रा, लेखा निरीक्षक—श्री प्रेमचन्द भण्डारी।

—केशवदेव सूद
मन्त्री

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना में श्रद्धांजलि समारोह सम्पन्न

यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित करते हुए श्री मगलसेन जी बधवा, साथ बैठे हैं श्री विनोद ढींगरा, श्रीमती शशी ढीगरा, श्रीमती कृष्णा आर्या, डा मुलखराज तथा प्यारे लाल नारग आदि।

ओ३म ध्वज लहराते हुए श्री विलायती राम महता। साथ खडे हैं सर्व श्री देवराज आर्य, ज्ञानी गुरदियालसिंह आर्य, मा लक्ष्मण दास, दूसरी ओर है नवनीत लाल ढींगरा, मगलसेन बधवा, यशपाल आर्य, रणबीर भाटिया, ज्ञान प्रकाश वर्मा, दुनीचन्द, ज्ञानचन्द, बोधराज भाटिया, डा हरेकृष्ण, दीवान चन्द तूफान, प्रेम कुमार तथा श्रीमती बसन्ती देवी।

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना मे देश पर बलिदान होने वाले शहीदों को श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिए आर्य समाज मे विशेष आयोजन किया गया। 21-12 86 से 27-12 86 तक प्रात यज्ञ के पश्चात् शहीदो की वीर गाथाए सुनाई गई। प सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री तथा प सूर्य पाल एम ए ने बडी विद्वता पूर्ण देश पर बलिदान होने वाले आर्य महापुरुषो की जीवनिया प्रतिदिन सत्सग मे सुना कर महापुरुषो के प्रति अपनी-अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की। बहन शान्ता जी गौड प्रधाना स्त्री आर्य समाज ने भी श्रद्धाजलि अर्पित की। श्री रोशनलाल शर्मा सयोजक आर्य युवक सभा पजाब ने शहीद ऐ आजम भगतसिंह तथा श्री बिस्मल के प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

28-12-86 रविवार को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाते हुए प्रात विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ पर ग्यारह परिवारों ने यजमान पद ग्रहण किया। यज्ञ की अग्नि स्वतन्त्रा सेनानी भूतपूर्व प्रधान श्री मगल सैन जी बधवा ने प्रज्वलित की। ध्वजारोहण श्री विलायती राम महता जी ने अपने करकमलो से किया। यजमान पद ग्रहण करने वालो मे सर्व श्री मगलसेन बधवा, विनोद कुमार ढीगरा, शशिकान्त ढीगरा, रणबीर कुमार पाहवा, सुरेन्द्र कुमार आर्य, यशपाल आर्य, मा लक्ष्मण दास, सतीश कुमार, विश्वानाथ, वेद प्रकाश भण्डारी तथा आदर्श चड्ढा आदि उल्लेखनीय हैं। समारोह की अध्यक्षता स्वामी वेदानन्द जी रोपड वालो ने की। श्री धर्म प्रकाश दत्ता प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद, श्री योगिन्द्र पाल जी सेठ प्रधान जालन्धर श्री रामसरण दास गोयल प्रधान आर्य युवक सभा बरनाला विशेष रूप से इस सम्मेलन मे सम्मिलित हुए तथा इन्होंने अपनी-2 श्रद्धाजलिया अर्पित की।

वेद प्रचार भजन मण्डली ने अपने मधुर गीतो द्वारा स्वामी जी को श्रद्धाजलि अर्पित की। स्त्री आर्य समाज की ओर से बहन शान्ता जी गौड ने श्रद्धाजलि दी। आर्य समाज की ओर से ऋषि लगर का प्रबन्ध था। आए हुए सभी आर्य जनो ने लगर मे बैठ कर बडे आनन्द से भोजन किया। मैं उन सभी महानुभावो का धन्यवाद करता हू जिन्होने इस सारे समारोह को सफल बनाने मे सहयोग दिया। विशेष कर श्री रणवीर भाटिया, नरेन्द्र सिंह भल्ला, रोशनलाल आर्य, मदन मोहन चड्ढा, ज्ञानी गुरदियाल सिंह आर्य श्रवण कुमार आर्य।

—बलदेव राज सेठी
मन्त्री

आर्य मर्यादा के शिवरात्रि विशेषांक के लिए विज्ञापन तथा आर्डर भेजें

प्रतिवर्ष की भान्ति इस वर्ष भी आर्य मर्यादा का ऋषि-बोधोत्सव (शिवरात्रि) पर विशेषाक प्रकाशित किया जा रहा है। यह विशेषाक भी पूर्व विशेषाकों की भान्ति बहुत प्रभावशाली और उपयोगी मैटर से भरपूर होगा।

1. आपसे प्रार्थना है कि आप इसके लिए पूर्व की भान्ति विज्ञापन भेजें। विज्ञापन शुल्क पूर्ण पृष्ठ केवल 400 रु होगा। विज्ञापन किसी की स्मृति मे या व्यवसायिक दोनो रूपो मे दिया जा सकता है।

2. आप इस विशेषाक के लिए अपनी ओर से अपनी आर्य समाज की ओर से तथा अपनी शिक्षण सस्था की ओर से अधिक से अधिक प्रतियो का आर्डर शीघ्र अतिशीघ्र भेजें ताकि आपकी प्रतिया सुरक्षित कर ली जाए।

—सभा महामन्त्री

आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क प्रथम जनवरी १९८७ से ३० रु. वार्षिक

आर्य मर्यादा के सभी ग्राहको की सेवा मे निवेदन है कि प्रथम जनवरी 1987 से डाक व्यय की वृद्धि से आर्य मर्यादा का डाक व्यय पहले से तीन गुणा हो गया है। पाच पैसे प्रति से बढा कर 15 पैसे प्रति सरकार द्वारा कर दिया गया है। छपाई तथा कागज की दरें भी बहुत बढ गई हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरग सभा ने 11-1-87 को इस विषय पर विचार किया और निश्चय हुआ कि आर्य मर्यादा साप्ताहिक का शुल्क 20 रु. से बढा कर 30 रु कर दिया जाए।

यह शुल्क विवश होकर हमे बढाना पडा क्योंकि खर्च एकदम बढ गया है। इसलिए हमारी सभी ग्राहको से प्रार्थना है कि वह 1987 का शुल्क 30 रु. वार्षिक भेजने का कष्ट करें।

—सभा महामन्त्री

आर्य समाज के आन्दोलन में क्रान्तिकारी परिवर्तनों की आवश्यकता

कलकत्ता आर्य समाज के मूर्धन्य नेताओं व कार्यकर्ताओं के मध्य आर्य समाज के सुप्रसिद्ध नेता डा प्रशान्त वेदालंकार (दिल्ली) ने आर्य समाज को गतिशील बनाने के लिए उसके भावी रूप पर अपने विचार व्यक्त किए। डा प्रशान्त ने आर्य समाज के गौरवपूर्ण इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद यह ह्रास की ओर गया है। आज यह दिशाहीन है। आज देश का युवक सांस्कृतिक रिक्तता अनुभव कर रहा है, यदि आर्य समाज चाहे तो वह अपने अतीत से प्रेरणा प्राप्त कर आज भी अपने देश की गौरवपूर्ण संस्कृति से देश को सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध बना सकता है। इसी प्रकार देश की शिक्षा, भाषा समाज व राजनीति को भी ठीक दिशा देने के प्रबल विचार उसके पास हैं। पर इसके लिए उसे वर्तमान परिस्थितियों के परिवेश में नए आंदोलन को सचालित करना होगा। इसके लिए आर्य समाज के संविधान तथा उसकी वर्तमान कार्यप्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन करने होंगे।

डा प्रशान्त ने सुझाव दिया कि यदि विश्व की 5000 आर्य समाजें 10 10 बालकों को गोद लेकर उनको शिक्षित व संस्कारी बनने का काम अपने हाथों में ले लें तो 10-15 वर्षों में उस के पास 50 हजार नये युवक सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध तथा राष्ट्रीय विचारधारा से ओत प्रोत हो सकेंगे।

इस अवसर पर डा प्रशान्त ने अमृतसर या जालन्धर में एक आर्य महासम्मेलन करके पंजाब के हिन्दुओं के मनोबल को बढाने का एक प्रस्ताव भी रखा।

उन्होंने आर्य समाज को गतिशील करने के लिए प्रत्येक प्रदेश में इस प्रकार की विचार गोष्ठियां करके आर्य समाजी किन्तु आर्य समाज के वर्तमान संगठन की गतिविधियों के [illegible] लोगों को संगठन कर दिल्ली में [illegible] सम्मेलन करने का प्रस्ताव भी रखा।

गोष्ठी में प [illegible] प देवनारायण, प [illegible], श्री चांद रतन दम्मानी, श्री [illegible], श्री आनन्दवेद आर्य, श्री [illegible] आर्य, श्री नरेश, श्री सुखदेव शर्मा आदि अनेक विद्वानों ने अपने सुझाव व्यक्त किये।

सभा की अध्यक्षता श्री सीताराम जी आर्य (प्रधान कलकत्ता आर्य समाज) ने की। सभा का संयोजन श्री [illegible] आर्य (मन्त्री परोपकारिणी सभा अजमेर तथा उप प्रधान सार्वदेशिक सभा) तथा श्री आनन्दवेद आर्य (उपाध्याय आर्य प्रतिनिधि सभा पश्चिमी बंगाल तथा मन्त्री हावड़ा आर्य समाज) ने किया।

—आनन्द आर्य—संयोजक
मन्त्री—हावड़ा आर्य समाज

११०० रु. सहायता फण्ड में प्राप्त

आर्य समाज [illegible] जालन्धर के द्वारा [illegible] 1100 रुपये की राशि प्राप्त हुई। यह राशि [illegible] समाज ने अपनी ओर से प्रदान की।

श्री सत्यकाम आर्य का निधन

आर्य समाज के एक अच्छे कार्यकर्ता श्री सत्यकाम जी आर्य जो आजकल राम नगर [illegible] लुधियाना में रह रहे थे का 2-1-87 को निधन हो गया। उनके चले जाने से जहां उनके परिवार को दुःख हुआ वहां आर्य समाज को भी बहुत हानि हुई। अच्छे कार्यकर्ता धीरे-2 जा रहे हैं और नये कार्यकर्ता आगे नहीं आ रहे यह चिन्ता का विषय है।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 रजि. नं. N.W/J L 55

वर्ष 18 अंक 42. 12 माघ सम्वत् 2043 तदानुसार 25 जनवरी 1987 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

26 जनवरी 1950 का गणतन्त्र दिवस एक राष्ट्रीय पर्व बन गया

हमारे देश म कई धार्मिक पर्व मनाये जाते हैं । सभी पर्वों का अपना एक विशेष महत्व है। पर्वों के आने से पूर्व उनके मनाने की तैयारी की जाती है। होली, दीपावली, दशहरा यह तीनो पर्व धार्मिक भी हैं और ऐतिहासिक भी है। होली को प्रह्लाद के साथ जोडा जाता है और दशहरा तथा दीपावली को मर्यादा पुरुषोत्तम राम के साथ जोडा जाता है। परन्तु यह पर्व इससे भी प्राचीनकाल से मनाए जाते आ रहे है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ-साथ हमारे देश मे दो राष्ट्रीय पर्व भी 15 अगस्त 1947 और 26 जनवरी 1950 अन्य पर्वो के समान मनाए जाने आरम्भ हो गए है। भारत शताब्दियो की गुलामी के पश्चात 15 अगस्त 1947 को स्वतन्त्र हुआ। अंग्रेज भारत को छोड कर चले गए और भारतीयो के हवाले कर गए। भारत के नेताओ ने गणतन्त्र राज्य की नीव डाली। 26 जनवरी 1950 को प्रथम और अन्तिम गवर्नर जनरल श्री राजगोपालाचार्य ने नव निर्वाचित राष्ट्रपति श्री डा राजेन्द्र प्रसाद को कार्य भार सौंपा और भारतीय गणतन्त्रात्मक लोकराज्य का अपना बनाया हुआ संविधान इसी पुण्य तिथि मे आरम्भ हुआ।

1950 के पश्चात प्रतिवर्ष 26 जनवरी को भारत की राजधानी दिल्ली मे एक विशाल समारोह मनाया जाने लगा। इस वर्ष भी यह समारोह 26 जनवरी को मनाया जा रहा है। इसकी पूरी तैयारी की जा रही है। इस बार सैनिक परेड मे इस दिन आधुनिक अस्त्र शस्त्रों का भी प्रदर्शन किया जा रहा। सैनिक परेड तथा दूसरी झांकियो का भी आयोजन किया जा रहा है। शोभायात्रा की शोभा को बढाने के लिए बाहिर से लोग राजधानी मे पहुच रहे हैं।

साथ ही यह भी समाचार सुना जा रहा है कि कुछ स्वार्थी लोग इस राष्ट्रीय पर्व का बहिष्कार भी कर रहे हैं। जो एक दुर्भाग्य पूर्ण बात है।

एक प्रश्न इस पर्व को मनाते हुए हमारे सामने उठता है, वह यह कि क्या यह प्रदर्शन और समारोह जो इस दिन किया जाता है इतना ही करना पर्याप्त है या हमे इससे अधिक और भी कुछ और करना चाहिए। शोभा यात्राए जलस जलूस करे यह भी आवश्यक है। क्योकि यह दिन भारत को वर्षों की गुलामी के बाद देखने को मिला था। परन्तु इस दिन को प्राप्त करने के लिए हमने अपना बहुत कुछ गवाया है। बहुत कुछ बलिदान किया है। कितनी माताओ की गोदिया खाली हुई, कितनी ही बहनो का सिन्दूर पूछा, कितनी ही बहनो से उन के भाईयो को सदा के लिए दूर कर दिया गया।

यह स्वतन्त्रता हमे बहुत महगी पडी थी राजगुरु सुखदेव, भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, लाला लाजपत राय और इनके अतिरिक्त अनेको भारत मा के लालो ने इस आजादी के लिए अपना बलिदान दिया था। बहुत से एसे बलिदानी भी है जिनका जिक्र कहीं भी इतिहास के पन्नो म नहीं मिलता।

इस दिन जहा हम बडी-2 शोभा यात्राए निकाल, प्रदर्शन करे वहा उन शहीदो को भी याद कर जिनके बलिदान से भारत मे गणतन्त्र की नीव डाली गई। उन शहीदो बलिदानियो को श्रद्धाजलि भेंट करते हुए हमे निश्चय करना चाहिए कि हम अपने उन शहीदो के बलिदान को कभी नही भुलाएगे और इसी प्रकार देश जाति समाज के लिए अपना जीवन भी हमे देना पडे उसके लिए भी पीछे नही हटेंगे। देश के रक्षा म सावधान रहते हुए भी हमे देश की अखण्डता का व्रत लेना होगा तभी यह दिन मनाना सफल समझा जाएगा।

अमर रहे गणतन्त्र महान्

लेखक—श्री राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ. प्र)

बढो 'सपूतो' हम भारत का,
नव निर्माण करे।
जर्जर से अपने समाज म
नूतन प्राण भरे।

जगे पुनः प्यार भारत मे—
त्याग—तपस्या व बलिदान।
अमर रहे गणतन्त्र महान॥

स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर,
हुए समर्पित शीश असंख्य।
बन्धन मुक्त बनाने मा को,
चली क्रान्ति की लहर व्यापक

अमर शहीदो ने जिसके हित—
दिए विहस कर अपने प्राण।
अमर रहे गणतन्त्र महान॥

रक्षा म इसकी सन्निबद्ध,
प्रतिज्ञाओ से हम आबद्ध।
धूल चटाएगे अरिदल को—
हम हैं सजग तथा सन्नद्ध।

ऐश्वर्यो से हो पूरित सब—
खेत बाग-बन व खलिहान।
अमर रहे गणतन्त्र महान्॥

यह छब्बीस जनवरी आकर कहती है
हर बार।
मधुपान हो मिलना है जीने का
अधिकार।
हम ने क्या भला है,
अपने जीवन का इतिहास।
कितना रक्त बहाकर,
ला पाए हो यह उल्लास।
यह गणतन्त्र दिवस है।
अपनी आजादी का गीत।
दुश्मन से प्रति शोध चुका कर।
हम मनानी जीत।
हमने मसल देन है अपने पैरा से अंगार।
शूलो से बिंध कर ही
मिलता है फूलो का प्यार।

14 फाल्गुण 1990 तदानुसार ?फरवरी 1934 दयानन्दाब्द110

ग्राम प्रचार के लिए आर्य सम्मेलन

मिय कार्य मवदक म चा क कनओ ना प्रचार के विषय म विचार क न क लिए एक आर्य सम्म व 1934 रविव 0 ज न त न उज न मिय नव न म ना जा य य म म गे मम वा ओर म स्वाम ज मरारान अ र प ग ी न प ग प्रमित अ न न का अ न भज ग ज म म ज को अपन प्रति विशप रूप म भजन चा ि म य म रुचपी रखन न ी निमन्त्रण न न प न भा त क म अवसर पर दशन न किय मम्मनी क विच र म भ ठ मक

कृष्ण (महाशय कृष्ण)

म ि ज सम पज ब

आर्य समाज लुधियाना

2 फ व ी का आय सम न नायन न माम मदम्या न ऋपिबोध उत्सव अपन समाज क ाान व त व ि ज ी ा यक्ष म व न उस ग्राम म मन अ य मम ज म ि र मे प व न अ जक औ सारा मन्दिर खचाखच भ अ था न न ा त अ य य उ शाल की कन्याओ न वेद मन्त्र क उच्च ण क अ क न ान मण्डल ने विधिपूर्वक भजन कीर्तन से ज न अ न कि प राम्याल जी शास्त्री का प्र यल क व द आप ह स्कल म ि न क मशहूर वक्ता ने अपनी सुरीली स्वर म जनता को ऋषि अ न्तिम किि क पस्थित न ग ऋषि क याद मे मग्न हो गए इसके ब द प त मव ज लव न ऋषि गणगा ण करत ए प्रभावशा ा न स बन आयक या पाठशाला क तीसरी श्रेणी का क ा न ग न म न ऋ प न क य म अ न सुरीले स्वर म भजन मना र र व न अ न न क ि न ाप न खश क न न न

— म म न र म न

आर्य समाज ननकाना

न क म अ प ल फिन य सम ज की तरफ से व त अ मसम य य न क क न न किय ग ा एक बहुत बड़ा सभा न क न म ने र ि यनन्द जी के जीवन प भाषण ग म नी त मम त

आर्य समाज बटाला का वार्षिकोत्सव

बटाला 14 फरवर अ ऽम न न य ग ग व र्षिकोत्सव 23 24 25फरवरी 19 को हग स अ स पर आय म न क प्र सद्ध नता सन्यासी व बड़े विद्वान पधार ग आ म म ज की न म स अवसर पर एक स्त्री कान्फ्रेंस भी खा गई है आशा की जाती है क र म ी इसकी अध्यक्षता करगी महाशय कृष्ण जी और भाई परमानन्द जी क पधा ने का भी आशा है।

प्रयश्चित मन्त्र

यस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम ।
स्विष्टकृद् विद्यात सर्वम् स्विष्ट सुहुत करोतुम ।
इष्ट कृते सुहुतहुते सर्व प्रायश्चित्ताहुतिनाम ।
समृद्ध मिय सर्वान्न कामान्त्समर्द्धय स्वाहा इदमग्नये ।
स्विष्टकृते इदन्न मम ।। आश्वलायन गह्य सूत्र 1 10 22

पदार्थ—(यत) जो (अस्य) इस (कर्मण) कर्म के विषय मे मैंने जो (अति अरि रिचम) अधिक किया है (यद्वा) अथवा (न्यूनम) न्यून अल्प थोड़ा (इह) इस काय मे अनुष्ठान मे (अकरम) मैंने किया है (अग्न) हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर (तत) उस (स्विष्टकृत) अपने इष्ट वाछित कर्म को अपने (विद्यात) ज्ञान से (सर्वम) सम्पूर्ण कर्म को मैंने (स्विष्टम) शुभ और इष्ट कर्म जानकर (सुहुतम) याज्ञिक कर्म सम्यक (करोतु) किया है (मे) मैंने (अग्नये) हे अग्नि स्वरूप परमेश्वर (स्विष्टकृत) अपने इष्ट कर्म को जिसे मैंने (सहुतम्न) याज्ञिक कर्म जान कर किया है। उसमे न्यूनाधिक की गई भूल के लिए (सर्व प्राश्चिताहुतिनाम) पूर्ण प्रायश्चितार्थ आहुति देता हू (कामान्नाम) मेरी इस कामना को (समर्द्ध यित) पूर्ण कीजिये (सर्वान न) हमारी इन सभी (कामानन) कामनाओं को समर्द्ध य) पूर्ण कीजिए (स्वाहा) जिनके लिए यह होम किया है (इदमग्नये) स्विष्टकृत सुहुतहुते इदन्नमय) हे अग्नि स्वरूप परमेश्वर इस स्विष्टकृत आहुति के बिना मेरी कोई कामना नहीं है।

भावार्थ—हे अग्नि स्वरूप सर्वज्ञ परमेश्वर मैंने अपने ज्ञान के अनुसार अपना यह इष्ट कर्म इच्छित कर्म जिसे यज्ञ रूप मान कर अपनी बुद्धि के अनुसार किया है उसमे जाने अनजाने मे मैंने जो निश्चित मर्यादा से कम या अधिक किया है। अपना इस भूल के लिए मैं आज प्रायश्चित करता हू। आप मेरी इस कामना को पूर्ण कीजिये और मेरी सभी कामनाये मेरे सुख और समृद्धि के लिए ही हो।

इस मन्त्र की आहुति प्राय हम किसी मीठे पदार्थ से ही देना आवश्यक वा अनिवार्य मानते हैं परन्तु इस मन्त्र के किसी भी शब्द मे ऐसा करने के लिए व्यक्त नहीं किया गया।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने अपनी सस्कार विधि के सामान्य प्रकरण मे इस स्विष्टकृत आहुति के प्रति यही लिखा हुआ है कि यह आहुति घृत से अथवा भात से देनी चाहिए और इस स्विष्ट कृत आहुति का विधान दैनिक हवन यज्ञ मे नहीं है। हा सस्कारो मे या विशेष समारोहो मे अथवा बड़े यज्ञो मे ही इस का विधान है।

वस्तुत यह स्विष्ट कृत मन्त्र प्रायश्चित मन्त्र ही है इसका भाव भी यही है कि हमे अपने इष्ट कर्म करते हुए अथवा करने के पश्चात जब भी अपनी किसी भूल या सुकृत कर्म का निश्चित मर्यादा मे कुछ न्यून वा अधिक जैसी भूल का आभास हो जाये तो उस भूल वा दोष के प्रायश्चित के रूप उस भूल वा दोष के सुधार निश्चय कर लेना चाहिए। तथा भविष्य मे उस भूल की पुनरावृत्ति कदापि न करने का व्रत लेकर उसे अपने आचरण का एक अनिवार्य और अभिन्न अग बना लेना चाहिए यही इस प्रायश्चित्त का विशुद्ध स्वरूप है

महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने आर्य समाज के चौथे नियम मे जो यह लिखा है कि सत्य के ग्रहण करने मे और असत्य के परित्याग करने मे सर्वथा उद्यत रहना चाहिए अर्थात जब हमे अपने मन वाणी और कर्म के किसी भी दोष य असत्य का पता लग जाये तो उस असत्य या दोष को अपने आचरण वा व्यवहार मे से तत्काल निकाल देना चाहिए यही प्रायश्चित के बिना किसी भी मनुष्य के गुण कभी भी उभर नहीं हो सकते।

इस मन्त्र से एक यह भी प्रेरणा मिल रही है कि किसी भी कर्म के करने की जो शास्त्र मर्यादा निश्चित है उस मे कभी कुछ भी न्यूनता या अधिकता कदापि नहीं करनी चाहिए। ऐसा करने से ही उस मर्यादा की सुरक्षा तथा एक रूपता सदा बनी रह सकती है।

—सतपाल साधक लुधियाना

सम्पादकीय—

हमारा गणतन्त्र दिवस

26 जनवरी फिर आ गई और सारा देश एक बार फिर उस दिन गणतन्त्र दिवस मनाएगा । वैसे तो यह दिवस हमारे लिए पिछले 37 वर्षों से ही एक विशेष महत्व रखता चला आ रहा है परन्तु इस बार यह और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। वह इस लिए कि कुछ लोगो ने इस राष्ट्रीय पर्व के बहिष्कार के लिए एक आन्दोलन चला रखा है । राम जन्म भूमि और बाबरी मस्जिद के प्रश्न को लेकर उन्होंने मुसलमानो से कहा है कि वह गणतन्त्र दिवस के सम्बन्ध में सरकार की ओर से जो भी उत्सव मनाया जाए उस में सम्मलित न हो । हमारे प्रधानमन्त्री ने तो कह दिया कि इसे अधिक महत्व नहीं देना चाहिए, परन्तु हमे यह न भूलना चाहिए कि जब पाकिस्तान की पहली बार माग की गई थी उस समय भी हमारे कुछ नेताओं ने यही कहा था कि इसे अधिक महत्व नहीं देना चाहिए। परन्तु हमने देखा कि कुछ मुसलमानों ने पाकिस्तान का जो स्वप्न लिया था वह 1947 में साकार हो गया। कुछ भाई कहेंगे उस वक्त अंग्रेज यहा बैठा था उसने यह सारी शरारत की और मुसलमानो को भड़काया जिससे पाकिस्तान बन गया। आज कोई बाहिर की शक्ति यहां नहीं है। परन्तु हम यह भी जानते है कि कई दूसरे देश हमारे देश में विघटन डालने का प्रयास कर रहे हैं। बाहिर से रुपया भी आ रहा है और समय-2 पर कुछ लोग भी यहा आते रहते हैं जो आकर मुसलमानो को भड़काते रहते हैं। अब जब कि यह भी पता चल गया है कि पंजाब मे जो खालिस्तान का आन्दोलन चल रहा है उसके पीछे भी पाकिस्तान का हाथ है, तो हमें और भी अधिक सावधान हो जाना चाहिए।

इसलिए गणतन्त्र दिवस को हमे वही महत्व देना चाहिए जो एक स्वाधीन देश की जनता अपने किसी राष्ट्रीय पर्व को देती है। हमारे राजनैतिक मत-भेद चाहे कुछ भी हो फिर भी हमे अपने राष्ट्रीय पर्व संगठित रूप से ही मनाने चाहिएं। गणतन्त्र दिवस के इस विशेष महत्व को भी न भूलना चाहिए कि 26 जनवरी 1950 को पहली बार शताब्दियों के पश्चात् हमारे देश मे जनता का राज्य प्रारम्भ हुआ था। उस समय से लेकर आज तक हम यह तो नहीं कह सकते कि जो कुछ हम चाहते थे वैसा ही हुआ है यह अवश्य कह सकते हैं कि हम स्वाधीन हैं और किसी भी देश और जाति का इससे बड़ा सौभाग्य और कोई नहीं हो सकता कि वह स्वाधीन हो, स्वतन्त्र हो और अपने भाग्य का स्वय निर्णय कर सके। गणतन्त्र के इस पक्ष को सामने रखते हुए ही हमें अपने गणतन्त्र दिवस को मनाना चाहिए।

—वीरेन्द्र

सोमनाथ का मंदिर और बाबर की मस्जिद

दोनो का सम्बन्ध हमारे इतिहास से है। और दोनो ने इस देश की जनता की धार्मिक भावनाओ को विभिन्न रूपो मे और अलग-अलग समय पर हमारे सामने पेश किया है। हम आजाद हुए तो सोमनाथ मन्दिर की समस्या हमारे सामने थी। आज बाबर की मस्जिद हमारे लिए सिरदर्द बनी हुई है। आओ देखें कि हमारे देश के नेताओं ने सोमनाथ मन्दिर की समस्या कैसे हल की थी ? और अब बाबरी मस्जिद की समस्या कैसे हल की जा रही है।

हम 1947 में स्वतन्त्र हुए। कुछ रियासतो के शासकों ने या तो स्वतन्त्र रहने का निर्णय कर लिया या पाकिस्तान के साथ विलय करने की बातें करने लगे। निजाम हैदराबाद अपनी आजादी के सपने देखने लगा। और जूनागढ़ का नवाब पाकिस्तान के साथ विलय की बातें करने लगा। जूनागढ सौराष्ट्र मे है और यही सोमनाथ का वह मन्दिर बना हुआ है जिसे लूट कर उस का अनगिनत सोना महमूद गजनवी अपने देश ले गया था।

स्वतन्त्रता के पश्चात् रियासतो के शासको को भारत मे शामिल होने के लिए तैयार करने की जिम्मेवारी सरदार पटेल ने अपने ऊपर ली। वह रियासती विभाग के मन्त्री भी थे। इसलिए उन्होंने विभिन्न रियासतो के राजाओ-महाराजाओ और नवाबो से सम्पर्क स्थापित किया कि वह भारत के लोकतन्त्र मे शामिल हो जाए।

इसी सम्बन्ध मे जूनागढ के नवाब से सम्पर्क स्थापित करने के बाद वह उस तरफ गए तो उन्होंने सोमनाथ मन्दिर देखा। जो अत्यन्त जीर्णशीर्ण स्थिति मे था। पजाब के भूतपूर्व राज्यपाल और भारत सरकार के भूतपूर्व मन्त्री श्री एन. वी. गाडगिल भी उन के साथ थे। सोमनाथ मन्दिर को उस हालात मे देख कर सरदार ने कहा था कि यह उस समय की निशानी है जब बाहर से आए एक आक्रमणकारी ने हमारे देश को तबाह कर दिया था। उस ने हमारे मन्दिरो को भी नही छोडा। यह मन्दिर आज जिस स्थिति मे हैं यह हमारी गुलामी और राजनीतिक पिछडे पन की निशानी है। अब हम आजाद है। इस मन्दिर का पुर्ननिर्माण किया जाएगा। इसकी पुरानी गरिमा और प्रतिष्ठा बहाल की जाएगी, एक भारी जनसभा मे सरदार ने यह घोषणा की कि सोमनाथ का मन्दिर फिर बनाया जाएगा।

जब गाधी जी को इस का पता चला तो वह भी खुश हुए लेकिन साथ ही यह भी परामर्श दिया कि यह मन्दिर सरकारी खर्च पर नही बनाया जाए। जनता का मन्दिर जनता के खर्च से बनना चाहिए। सरदार पटेल इस के लिए तैयार हो गए। उन के साथ श्री एन वी गाडगिल और श्री के एम मुन्शी इन तीनो की एक समिति बना दी गई। उन्होंने यह मन्दिर बनाने के लिए पच्चास लाख रुपया एकत्रित कर लिया।

यह मन्दिर 1951 मे तैयार हो गया। तब तक सरदार पटेल का देहान्त हो चुका था। उन्होंने इसे शुरू तो कर दिया था लेकिन वह उसे अपने असली रूप मे न देख सके। प्रश्न उठा कि उसका उद्घाटन किससे कराया जाए। जो समिति उसका निर्माण करा रही थी उसने तत्कालीन राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद से निवेदन किया कि वह इसका उद्घाटन करे। वह उसके लिए तैयार हो गए। पण्डित जवाहर लाल को यह बात पसन्द नही आई। वह कहने लगे कि एक धर्मनिरपेक्ष देश के राष्ट्रपति को एक मन्दिर का उद्घाटन नही करना चाहिए लेकिन डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने अपने प्रधानमन्त्री के परामर्श को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। इस अवसर पर उन्होंने कहा मन्दिर किसी एक वर्ग अथवा सम्प्रदाय की सम्पत्ति नही है ? यहा हम भगवान की मूर्ति रख रहे है। उनके दर्शनो के लिए इस मन्दिर के द्वार प्रत्येक के लिए खुले रहने चाहिए।

और साथ ही उन्होने कहा कि किसी समय हमारे ये मन्दिर सोने चादी से भरे रहते थ। इसलिए कुछ बाहर के हमलावर आकर उन्हे लूटते रहे हैं। अब यदि यह मन्दिर फिर से खडा किया जा रहा है तो हम एक तरह से अपनी पुरानी महानता को पुनर्जीवित कर रहे हैं। यह कहते हुए भारत के राष्ट्रपति ने सोमनाथ मन्दिर मे शिवलिंग की स्थापना कर दी।

आज उसी तरह की एक और चर्चा शुरू हो गई है। अयोध्या में जहा भगवान् राम का जन्म हुआ था, मुगल बादशाह बाबर ने कभी मस्जिद बनवा दी थी। सोमनाथ मन्दिर को लूट कर उसके स्वरूप को बिगाडने का काम महमूद गजनवी ने किया था। रामजन्म भूमि के स्वरूप को बिगाडने का काम मुगल बादशाह बाबर ने किया था। बाबर ने 1526 मे उस जगह एक मस्जिद बनवा दी थी। जो आज बाबरी मस्जिद के नाम से याद की जाती है। इससे आगे आगामी लेख मे प्रकाश डालू गा।

वीरेन्द्र

आर्य समाज की एक विभूति—२

आचार्य देव प्रकाश जी

लेखक—श्री भोलानाथ जी दिलावरी,
प्रधान, केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर

※

—मुस्लिम गुण्डों का मुकाबला—

(गतांक से आगे)

मुसलमान गुण्डे काली करतूतें प्राय: करते ही रहते थे। वे प्राय हिन्दू नारियो पर बुरी दृष्टि रखते तथा उनको बलात् अपहरण करने की घटनाए भी करते ही रहते थे। श्री देव प्रकाश जी के नेतत्व मे आर्य युवक निर्भय होकर मुसलमानो के दृढ मोर्चा और उनके बहुसख्यक गली कूचो एव मस्जिदो मे जा घुसते और जीवन का मोह छोड अपहृत देवियो को जब तक प्राप्त न कर लेते वही डटे रहते थे। इस सदर्भ मे एक घटना उल्लेखनीय है।

एक दिन हमारे आचार्य देव प्रकाश जी और ज्ञानी पिण्डी दास जी बाजार कर्मों डियोढी से गुजर रहे थे तो उन्हे सूचना मिली कि आज जुम्मे की नमाज के बाद "खैरदीन की मस्जिद" मे एक हिन्दू युवती को मुसलमान बनाया जाएगा। बस फिर क्या था, वह दोनो अपना काम भूल कर मस्जिद की ओर बढे। यह जानकर एक मुसलमान लडका उनके आगे 2 दौडा गया ताकि मस्जिद मे समाचार पहुचा देवे। मस्जिद मे उस समय 10 हजार से ऊपर की उपस्थिति थी परन्तु आर्य समाज का इतना आतक छाया हुआ था कि मुसलमानो का सारा प्रोग्राम स्थगित हो गया। उस लडकी को वहा से निकाल कर दो मुसलमान टागे मे बैठा कर कही और ले जाने लगे। उसी समय निर्भीक आचार्य देव प्रकाश जी तथा ज्ञानी पिण्डी दास जी तागे के पीछे-दौडते चले गए। अन्तत कोतवाली से ढोली-आहते की ओर तागा फेर लिया गया। इससे हमारे दोनो वीरो की आखो से तागा ओझल हो गया। निराश तो हुए मगर हताश नही। दोनो अब अरोडियो वाली गली से लाघ रहे थे तो देखा कि एक छोटे से टूटे फूटे पुराने मकान के दरवाजे पर लगा ताला हिल रहा था। उन्होने मन मे अनुमान लगा लिया कि हो न हो लडकी इसी मकान मे बन्द होगी।

आचार्य देव प्रकाश जी तो बाहर खडे रहे और ज्ञानी जी ने साथ वाले मकान पर से नीचे झाक कर देखा तो कोई देवी अन्दर बैठी है। ज्ञानी जी ने आकर आचार्य जी को बताया। तब उन्होने ताला तोड कर उस देवी को अपने साथ लेकर मुन्शीराम सराफ, कटडा कन्हैया की दुकान पर बैठाया तथा उसे हर प्रकार से सान्तवना एव सहायता देने का वचन दिया। पूछने पर पता चला कि यह लडकी पटियाला के एक प्रतिष्ठित सरदार साहिब की पुत्री है। तब उन्होने पिता को तार द्वारा बुलाया और लडकी उनके हवाले कर दी गई। ऐसी बीसियो घटनाओ मे हमारे इन वीर निर्भय युवको ने सफलतापूर्वक काम किया और आर्य समाज का मुसलमानो पर आतक बनाए रखा।

साम्प्रदायिक दंगे (मुलतान एवं मालाबार)

मुलतान के धर्मान्ध मुसलमानो ने मोहर्रम के दिनो मे जब ताजिये निकाले तो एक ताजिये की चोटी पीपल के वृक्ष मे टकरा गई। बस फिर क्या था मुसलमानो ने फसाद किया तथा लूटमार शुरू कर दी। हिन्दू तथा सिखो के मकानो तथा दुकानो को भी लूटा गया, मन्दिर गुरुद्वारो को तोडा गया तथा ग्रन्थ साहिब एव अन्य धार्मिक पुस्तको को जलाया गया। मूर्तियो को विध्वस किया और कितने ही हिन्दू-सिखो की हत्या भी की गई। तब कांग्रेसियो की निद्रा भग हुई तो एक जाच कमेटी वहा भेजी गई जिस मे दुर्भाग्य से मुसलमानो को निर्दोष सिद्ध करने का प्रयास किया गया। इस से आर्य हिन्दुओ की तसल्ली न हुई तब वीर साहसी आचार्य जी को मुलतान भेजा गया उन्होंने कर्फ्यू मे भी हर प्रकार का भय मोल लेकर जाच की। तीन-चार दर्जन फोटो चित्र भी लिए जो समाचार पत्रो को प्रकाशनार्थ भेजे गये। इस प्रकार कांग्रेस की पक्षपाती रिपोर्ट को झूठ लगा हो गया। यह सन् 1921 की घटना है।

इसी प्रकार मालाबार मे मुसलमानो ने हिन्दुओ पर अपना क्रोध निकाला। हजारो हत्याए, अग्निकांड, अपहरण एव बलात्कार तथा धर्मपरिवर्तन हुए। सरकार ने इन समाचारो पर प्रतिबन्ध लगा दिया ताकि हिन्दुओ को इन समाचारो का पता ही न चले। ये दुर्घटनाएं अगस्त 1921 मे घटित हुई परन्तु इन का पता 6-7मास तक भी न हो सका। महात्मा हसराज जी को जब समाचार मिले तो वह बहुत बेचैन हुए। तब उन्होंने महाशय खुशाल चन्द जी (महाशय आनन्द स्वामी) से सम्पर्क किया। [illegible] वहा भेजा गया जिन्होंने बलात् धर्मच्युत भाई बहनो को जिनकी सख्या 2500 से 3000 तक थी पुन धर्म मे दीक्षित किया गया। मन्दिरो की मुरम्मत की गई और मूर्तियो को स्थापित किया। इधर अमृतसर मे आचार्य जी ने आर्य युवक समाज के वीरो का एक कैम्प लगा कर प्रचार आरम्भ किया। जलूस शहर के बाजारो तथा गलियो से निकाले जाते और शहर के हिन्दुओ का मालाबार के हिन्दुओ पर मुसलमानो के जुल्म ढाने की सूचनाए दी जाती तथा फण्ड के लिए अपील भी की जाती। रात को आर्य समाज लोहगढ,अमृतसर मे भी व्याख्यान इसी उपलक्ष्य में रखे जाते और धन एकत्रित किया जाता और इसे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मालाबार फण्ड मे भेजा जाता।

हिन्दू शुद्धि सभा —

अमृतसर में मुसलमानो का एक जलूस सन् 1923 मे हुआ। उसमे गांधी और कांग्रेस पर आरोप लगाया गया कि वह मुसलमानो से धोखा कर रहे हैं। और अप्रत्यक्ष रूप से हजारो मुसलमानो को काफिर बना रहे हैं। आगरा, मथुरा और भरतपुर मे धोखे से मुसलमानो को हिन्दू बनाया जा रहा है। ये समाचार जब आचार्य जी को मालूम हुए तो वह तत्काल इस समाचार की सच्चाई को जानने के लिए आगरे चल पडे। वहा जाकर छानबीन की गई तो पता चला कि शाहपुराधीश महाराज नाहरसिंह जी की अध्यक्षता मे क्षत्रिय महासभा का एक सम्मेलन 31 दिसम्बर 1922 मे हुआ जिसमे निश्चय हुआ कि इस्लामी शासन मे जो राजपूत मुसलमान बना लिए गए थे। वे यदि शुद्ध हो जाए तो राजपूत प्रसन्नता पूर्वक अपने-2 गोत्र मे मिला, रोटी बेटी का व्यवहार भी करने लगेंगे। बस इतनी बात को बढा-चढा कर मुसलमान शोर उठाने लग पडे। इस अवसर से लाभ उठाने के विचार से आगरे मे आर्य समाज की एक बैठक आचार्य जी ने आयोजित की जिसमें निर्णय किया गया कि भारत भर के आर्य नेताओं को बुलाकर उनके सहयोग और परामर्श से एक सगठन द्वारा विशाल (शुद्धि अभियान) आरम्भ कर दिया जाये। इस प्रकार चुने चुने आर्य नेता आगरे मे 17 फरवरी सन् 1923 को पहुचे जिसमें उल्लेखनीय स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा खुशहाल चन्द जी थे। सबकी सम्मति से इस नए सगठन का नाम [illegible] रखा गया। इसके प्रधान श्रद्धानन्द जी तथा हसराज जी नियुक्त हुए। आचार्य देव प्रकाश जी महामन्त्री नियुक्त हुए। उसकी पहली मीटिंग मे स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इच्छा प्रकट की कि तीन दिन में तीन हजार रुपया इकट्ठा कर नियमित रूप से कार्यालय का उद्घाटन होना चाहिए। इसी में ही आर्य समाज का गौरव और सम्मान होगा। सब चुप थे, किन्तु आचार्य जी ने साहस पूर्वक घोषणा की, "मुझे अमृतसर जाने की अनुमति दी जाए मैं तीन दिन मे ही यह राशि लेकर उपस्थित हो जाऊगा।" अमृतसर पहुचते ही आप डा सन्तराम जी अरोडा एव अन्य साथियो को मिले। अरोडा जी के प्रयत्नो से एक दिन में ही तीन हजार रुपए एकत्रित करके घर वालो को बिना बताए वापिस आगरा पहुच गये। वहा श्री सालिगराम जी के साथ मकान पर शुद्धि सभा कार्यालय खुल गया और शुद्धि का कार्य आरम्भ कर दिया गया। अब श्री बृह्मदत्त जी जिज्ञासु अमृतसर में विद्यार्थियो सहित वहा पहुच गए। महात्मा हसराज जी भी वहा आ गए। आचार्य जी का परिवार भी वहा बुला लिया गया। प विश्वबन्धु आचार्य, बृह्म महाविद्यालय के छात्रो सहित, डी .वी. कालेज की ओर से प मस्तान चन्द जी बी ए प सरस्वती नाथ, प रामगोपाल शास्त्री, प भगवत दत्त रिसर्च स्कालर, डा आत्मानन्द आदि ने भी आगरा डेरे डाल दिए। शुद्धि का कार्य बहुत जोरों से चलने लगा। वहा राजस्थान केसरी कुवर चांद करण शारदा एव प राम सहाय जी भी अजमेर से आ गए। पजाब के प्राय: सभी स्थानो से एक-एक दो-दो सज्जन सहयोगार्थ पहुच गए। इनमें विशेष उल्लेखनीय सज्जन श्री अजीत सिंह जी सत्यार्थी भी साथ देने के लिए आ गये।

(क्रमश:)

पूज्य गुरुवर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

इनका जन्म आज से 108 वर्ष पूर्व पौष मास की पूर्णमासी 1934 विक्रमी को हुआ। इस वर्ष उन का जन्मदिन मकर सक्रान्ति वाले दिन (14-1 87 ई) को था—इनका जन्म का नाम केहरसिंह था। जब इनकी पत्नी का देहान्त होगा-तब केहरसिंह ने सासारिक बन्धनो से मुक्त होने का निश्चय किया। इन पर श्री प विशनदास जी (जो इनके ननिहाल सताना ग्राम के उदासी साधुओ के प्रसिद्ध डेरा में रहते थे) के सम्पर्क से वैदिक धर्म की छाप पड चुकी थी। पत्नी के स्वर्गवास होने के कुछ समय बाद आप किसी को बताए बिना घर से निकल गए। स 1957 विक्रमी में श्री स्वा[illegible]पूर्णानन्द जी से सन्यास आश्रम की दीक्षा लेकर केहरसिंह से प्राण पुरी बन गए—आप अपने पास एक बाल्टी रखा करते थे, इसलिए आपको बाल्टी वाला साधु कह कर भी बुलाया जाता था—एक बार आप साधुओ की मण्डली मे वैसाखी के मेला पर तलवण्डी साबो (दमदमा साहिब) आए—तब तलवण्डी साबो के कुछ आर्य समाजी भाई ज्ञान गोष्टि—शका समाधान आदि की जिज्ञासा लेकर (श्री महाशय रौनकसिंह जी, श्री श्री आत्मासिंह जी, श्री म नगाही राम जी) तीनो व्यक्ति उन साधुओ की मण्डली मे आकर धर्म चर्चा करते करते एक ने प्रश्न कर दिया कि क्या भूत योनि भी होती है? कुछ साधुओ ने अपने-अपने दृष्टिकोण से जो उत्तर दिए उन से उन जिज्ञासुओ की सन्तुष्टि नही हुई—तो उन मे से एक साधु ने श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की ओर सकेत करके कहा कि उस स्वतन्त्र स्वामी के पास जा कर पूछ लो—शायद वह आपके प्रश्न का उत्तर ठीक प्रकार से दे देव। यह तीना सज्जन उठ कर [illegible] स्वतन्त्र स्वामी के पास आकर बात-चीत करके अपने-अपने घरो को चले गए। (लेखक का (मेरा) ख्याल है कि स्वतन्त्र स्वामी से ही आगे चल कर स्वामी स्वतन्त्रानन्द नाम से प्रसिद्ध हुए—उस के पश्चात् ही उन्होने आर्य समाज को अपना कार्य क्षेत्र बनाया। उपरलिखित तीन व्यक्तियो मे मेरे पूज्य पिता स्वर्गीय श्री महाशय रौनक सिंह जी भी थे। वैसाखी का मेला समाप्त होने पर मेरे पिता जी रामामण्डी आ गए। अकस्मात् किसी कार्य के लिए मेरे पिता जी (महाशय रौनक सिंह जी) भी कमालू ग्राम गए और वहां स्वतन्त्र स्वामी के पुन दर्शन हुए—पिता जी ने स्वतन्त्र स्वामी से उनके साथ रामामण्डी पधारने की प्रार्थना की—और पिता जी को अपने साथ रामामण्डी ले आए—अपने घर पर उनके ठहरने-खाने और पढने की व्यवस्था कर दी—रामामण्डी रह कर स्वामी ने स्वाध्याय भी किया और सरकारी प्राईमरी स्कूल के एक मुसलमान अध्यापक मजूरअली से इगलिश भाषा सीखी—उन दिनो उनकी युवा अवस्था थी—अत उनकी खुराक हमारे सारे परिवार जितनी थी—मेरे पूज्य माता जी बताया करती थी कि मैं कई बार मन में कहती कि यह अच्छा साधु है—कि सारे परिवार जितना अकेला खा जाता है। कुछ दिन बाद मेरे पूज्य माता जी (स्वर्गीय श्रीमती सन्ती देवी जी का देहान्त तिथि 25 10 45 ई) को जब उनके गुणो और योग्यता का पता चला तो उनके प्रति उनकी इतनी श्रद्धा हो गई कि जब तक वह जीवित (25-10 45) रही स्वामी जी महाराज के लिए अपने हाथ से सूत कात कर उस का वस्त्र बना कर (स्वामी जी का पुराना चोला स्वय लेकर) नया वस्त्र अपने हाथ का बुना हुआ उन्हे देती रही। मेरे माता-पिता तो उनके श्रद्धालु थे ही—पूज्य स्वामी जी की कृपा से उन्ही के आदेश से मेरा मुण्डन सस्कार और यज्ञोपवीत सस्कार भी स्वामी जी महाराज द्वारा कराया गया—पूज्य पिता जी ने सात बीघा भूमि बडे अच्छे मौका पर श्री पूज्य गुरु जी के पवित्र नाम से कालिज खोलने को दान दी और रामामण्डी मे श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द आर्य कालिज खोल दिया गया—अब तो वह कालिज बन्द हो गया है—श्री स्वामी जी महाराज प्राय प्रति वर्ष रामामण्डी के आस पास के क्षेत्र मे आते रहते थे—उनके इस प्रकार आते रहने से हमे नव जीवन मिल जाता था—उन्ही की कृपा से रामामण्डी की आर्य समाज किसी समय पजाब मे अपना विशेष स्थान रखती थी—मैं तो पूज्य गुरु जी को चलता फिरता आर्य समाज समझता था—जैसे हैदराबाद आर्य सत्याग्रह की सफलता के समय जब स्वामी जी महाराज हैदराबाद गए—उनके स्वागत के लिये और दर्शन के लिए वहा बडी भारी सख्या में स्त्री पुरुष आए क्योकि उनका ख्याल था कि स्वय सत्याग्रह (स्वामी जी को ही सत्याग्रह समझ रहे थे) वहा आ रहे हैं।

—ओमप्रकाश आर्य वानप्रस्थी
आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल
बठिण्डा (पजाब)

गणतन्त्र बचाओ

कविवर—श्री 'प्रणव' शास्त्री एम ए महोपदेशक

स्वराष्ट्र स्वाभिमान को बचाने के लिए।
प्यारे गणतन्त्र को बचाना चाहिए ॥
विनाश के कगार पर स्वदेश है खडा—खडा सपूत शूरवीरो को पुकारता।
बचे दिशाए शून्य सी, अनाथ रो रही, निराश है, उदास बना है निहारता ॥
प्रसुप्तवीर्य-श्रृखला को आज फिर यहा।
समग्र तेज धार से जगाना चाहिए ॥
उग्रवाद उग्रता को धारता हुआ विषाक्त बीज खण्डनो के रोज बो रहा।
सन्धियो के श्वास मे ये दिन गुजारता सविधान वत्सर विदग्ध रो रहा ॥
धैर्य का विशाल बाध टूटने न दो।
सशक्त धारणा को तो उठाना चाहिए ॥
रो रही है, व्याप्त रक्त अश्रुधार से कृपाण से जलस्थ पञ्च आपकी मही।
नित्य ही तलाश करे कौन लाश को प्रदर्शनी जहा कि लाश भरी हो रही ॥
अमानवीय कृत्यो का प्रवाह रूक सके।
शून्य हाथ पैरो को हिलाना चाहिए ॥
चेतना रही नही उजाड हो गया बाग की बहार लुटी देखते हुए।
कोकिलाए त्रस्त हो समस्त उड चली उल्लुओ का राज्य हुआ देखते हुए ॥
भाईयो? अन्धेर ये कि दूर हो सके।
कोशिशें मशाल की जलाना चाहिए ॥
चाहते हो देश जो अखण्ड हो सदा तो तजो विषाक्त कुल्ल मुल्ल नीतिया।
धार लो दृढत्व धर्म, कर्म धारणा, धीरता, सुवीरता, अदम्य गीतिया ॥
मातृ भूमि प्यार की मिसाल का नया।
रूप ये अनूप वीर बन दिखाना चाहिए ॥

—(शास्त्री सदन, रामनगर (कटरा) आगरा—6 (उ प्र)

आर्य मर्यादा के शिवरात्रि विशेषांक के लिए विज्ञापन तथा आर्डर भेजें

प्रतिवर्ष की भान्ति इस वर्ष भी आर्य मर्यादा का ऋषि बोधोत्सव (शिवरात्रि) पर विशेषाक प्रकाशित किया जा रहा है। यह विशेषाक भी पूर्व विशेषाको की भान्ति बहुत प्रभावशाली और उपयोगी मैटर से भरपूर होगा।

1. आपसे प्रार्थना है कि आप इसके लिए पूर्व की भान्ति विज्ञापन भेजें। विज्ञापन शुल्क पूर्ण पृष्ठ केवल 400 रु होगा। विज्ञापन किसी की स्मृति मे या व्यवसायिक दोनो रूपो मे दिया जा सकता है।

2. आप इस विशेषाक के लिए अपनी ओर से अपनी आर्य समाज की ओर से तथा अपनी शिक्षण सस्था की ओर से अधिक से अधिक प्रतियो का आर्डर शीघ्र अतिशीघ्र भेजें ताकि आपकी प्रतिया सुरक्षित कर ली जाए।

—सभा महामन्त्री

'कलियुगी रामायण' से हिन्दू भावनाओं को आघात : श्री वीरेन्द्र का मुख्यमन्त्री को पत्र

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने मुख्यमन्त्री श्री सुरजीत सिंह बरनाला को एक पत्र लिखा है जिसे नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

मान्यवर श्री मुख्यमन्त्री जी,

सादर नमस्ते

आपका ध्यान एक ऐसे विषय की ओर दिलाना चाहता हू जिसका समय पर समाधान न किया गया तो उसका परिणाम हमारे प्रदेश के लिए अच्छा न होगा । पजाब मे कलियुगी रामायण नाम से एक फिल्म दिखाने का प्रबन्ध हो रहा है। आप जानते हैं कि रामायण का सम्बन्ध भगवान श्री रामचन्द्र जी से था और यह ग्रन्थ महर्षि वाल्मीकि जी ने लिखा था। यह हमारे इतिहास के त्रेता युग मे लिखी गई थी। आज के कलियुग के साथ इस जोडना किसी भी प्रकार सहन नही किया जा सकता। यदि यह फिल्म पजाब मे दिखाई गई तो हिन्दुओ की भावनाओ को ठस पहुचेगी, इसलिए आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से आपसे यह निवेदन करना चाहता हू कि कलियुगी रामायण फिल्म को पजाब मे दिखाने की अनुमति न दी जाए। इसका नाम बदल कर वे कोई और दिखाना चाहे तो बात और है। रामायण कलियुग की नही हो सकती वह तो सत्युग की ही रहेगी।

आशा है आप इस सम्बन्ध मे उचित कार्यवाही करेगे ताकि पजाब के हिन्दुओ की धार्मिक भावनाओ को ठस पहुचाने का जो प्रयास हो रहा है वह न हो सके।

धन्यवाद सहित

भवदीय

वीरेन्द्र

सभा प्रधान

आर्य समाज प्रेम नगर करनाल मे रोष सभा

होशियारपुर पजाब मे 24 हिन्दुओ की निमम एव पाशविक हत्याकाड पर क्षोभ एव रोष प्रकट करने के लिए एक विशाल हगामी बठक हुई जिस मे आतकवादी आततायियो द्वारा मारे गये देश के शहीदो के प्रति श्रद्धाजलि के साथ 2 दिवगत आत्माओ की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई और हार्दिक शोक प्रकट किया गया। साथ ही पजाब मे प्रतिदिन हो रही लोमहर्षक बकसर लोगो की दुर्भाग्यपूर्ण दिल दहला देने वाली हत्याओ पर भारी क्षोभ एव रोष प्रकट किया गया। भारत सरकार से मांग की गई कि वह और मूक दर्शक न रहे। जिस प्रकार शिशपाल की सौगालिया होने पर श्री कृष्ण जी ने अपना सुदर्शन चक्र सम्भाल लिया था इसी प्रकार केन्द्रीय सरकार को भारत की अखण्डता को कायम रखने के लिए अपनी पूरी शक्ति से काम करना चाहिए ऐसा न हो कि फिर बाद मे पश्चाताप करना पड़ क्योकि अन्दर और बाहर की विघटनकारी शक्तियां देश के टुकड करने का षडयन्त्र कर रही हैं आर्य समाज एक पक्की देश भक्त संस्था है वह हर कीमत पर देश की एकता कायम रखेगी।

और सब की जनता की प्रबल माग है उसके अनुसार तुरन्त ही पजाब सरकार को बर्खास्त करके वहा का शासन फौज के हाथ मे देना चाहिए इसके अतिरिक्त और कोई उपाय कारगर नही हो सकता पजाब मे दिन दिन प्रतिदिन हिन्दुओ की हत्याए इतनी बढ गई है कि अब किसी तरह भी इस जुल्म को सहन नही किया जा सकता है मान सरकार ने यद्यपि तरत तौर पर जो कदम उठाए हैं उनसे पूरी उम्मीद नही की जा सकती कि उनसे कुछ अच्छे परिणाम सामने आए?

—रामसरण आर्य
प्रधान

श्री अजीत कुमार आर्य को मातृ शोक

श्री अजीत कुमार आर्य उप-सचालक आर्य वीर दल हरियाणा की पूज्य माता श्रीमती गार्गी देवी का देहावसान मगलवार दिनाक 3 12 86 को साय 5 00 बजे लोकनायक जय प्रकाश नारायण अस्पताल दिल्ली मे हो गया वह गत 5 दिनो से पक्षाघात से पीडित थी।

श्रीमती गार्गी देवी स्वर्गीय श्री जयपाल आर्य गन्नौर निवासी की धर्मपत्नी थी। जिन्होने सन 1937 मे हैदराबाद सत्याग्रह मे भाग लिया तथा उन्हे भारत सरकार ने हाल ही मे स्वतन्त्रता सेनानी घोषित किया है।

—सत्यपाल आर्य

प्रधान दयानन्द प्राकृतिक चिकित्सालय सोहना मार्ग पलवल

जिला आर्य सभा लुधियाना द्वारा झुग्गी झोंपडियों में आयोजित

लुधियाना समारोह का चित्रों द्वारा विवरण

श्री सत्यानन्द जी मुजाल अध्यक्षीय भाषण देते हुए साथ खड़े है श्री [illegible] जी वर्मा श्री आशानन्द जी आर्य डा मूलचन्द भारद्वाज श्री गुरदियालसिंह जी आर्य श्री मतवालचन्द जी

श्री खुशवक्तराय जी सूद (मालिक सिम्पलक्स होजरी लुधियाना) झण्डा लहराने के बाद खड़े हैं। उनके साथ श्री सत्यानन्द मुजाल श्री दीवान राजेन्द्र कुमार, श्री महेन्द्रपाल वर्मा श्री आयोध्या प्रसाद मल्होत्रा आदि खड़े हैं।

श्री महेन्द्रपाल जी वर्मा जिला सभा प्रधान तथा उनकी धर्म पत्नी श्रीमती इन्दिरा मोहनी यज्ञ करते हुए। श्रीमती [illegible] देवी आर्या आदि साथ बैठे हैं।

आर्य समाज अबोहर के समाचार

आर्य समाज अबोहर मे गत दिनो वेद प्रचार मनाने बड़ उर्योत्साह से स्वामी ज वन्नन्द जी सरस्वती की देख रख मे मनाया गया। चारो वेदो क शतको से याय व प्रात हवन किया गया। स्वामी जीवना द जी सरस्वती के मनोहर प्रवचन भी दो समय आर्य समाज मन्दिर गऊशाला रोड मे होते रहे।

इसके साथ ही रामप्रसाद जी बिस्मिल और स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस बड उत्साह से आर्य पुत्री पाठशाला मे मनाया गया। श्री बी एल वल्कि गर्ल्ज हाई स्कूल और पुत्री पाठशाला की बच्चियों ने बड उत्साह से बलिदान दिवस मे भाग लिया। कार्यक्रम बड़ा रोचक रहा। बच्चियों का उत्साह बढ़ाने के लिए श्री परमानन्द जी प्रधान आर्य समाज ने ११ रु प्रत्येक बच्चा का 10 10 रु तैयार करवाने वाली अध्यापिकाओ का पुरस्कार के रूप मे दिए। लाला नालचन्द जी नागपाल स्नातक शर्मा श्री विपन कुमार मजान मानकचन्द जी ने भी बच्चियों को पुरस्कार देकर उनका साहस बढ़ाया।

—रामशरण दास—मन्त्री

बरनाला के आर्य नवयुवकों को बधाई

मुझे यह लिखते हुए अति प्रसन्नता हो रही है कि बरनाला मे आर्य नवयुवक वेद प्रचार के कार्य को बड़ा लग्न, श्रद्धा एवम उत्साह से कर रहे हैं। श्री राम शरण दास जी गोयल एवम श्री सनाश जी भिवानी के मार्ग दर्शन मे बरनाला मे आर्य नव युवक बहुत ही सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

गत दिनो बरनाला शाखा द्वारा एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस भाषण प्रतियोगिता मे वेद महर्षि दयानन्द सामाजिक एवम व्याख्यात्मक विषयों पर बच्चो के भाषण हुए। इस प्रतियोगिता मे प्रथम द्वितीय तृतीय आने वाले बच्चो के विशेष पुरस्कार के अतिरिक्त सभी प्रतियोगी बच्चो को पुरस्कार दिए गए।

आर्य जन विशेष रूप से सम्मानित

सर्वप्रथम 1982 मे आर्य युवक सभा लुधियाना द्वारा पंजाब की सभी आर्य समाजो के प्रधान, युवा कार्यकर्ताओ तथा उन दम्पत्तियों को जिन्होंने बिना किसी दहेज के शादी की थी, विशेष रूप से सम्मानित किया था। माननीय श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने उस समारोह की अध्यक्षता की थी एवं युवको के कार्यक्रम की प्रशंसा की थी। अब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने भी यह आदेश आर्य समाजो को दिया है कि वे पुराने आर्य समाजियों को सम्मानित करे। मै समझता हू कि आर्य युवक भी इस दिशा मे पीछे नही है। आर्य युवक सभा बरनाला ने श्री मधुसूदन श्री वैद्य चन्द्रसेन जी महाशय कर्मवीर जी को विशेष रूप से सम्मानित किया। यह बहुत ही अच्छी शुरूआत है कि युवक बुजुर्गों का आशीर्वाद लेकर आगे बढ़ रहे हैं।

इस समारोह मे स्थानीय आर्यसमाज के अधिकारी एवम् सदस्य पधारे। इसके अतिरिक्त श्री एस एस ढींगरा, प्रबन्धक न्यू सैन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया, बरनाला, मुख्य अतिथि के रूप मे पधारे उन्होने अपने बहुमूल्य समय के साथ-2 1100 रुपए भी युवक सभा को दान दिए। श्री यशपाल जी भाटिया, मुख्याध्यापक, यादवी आर्य हाई स्कूल, बरनाला ने स्थान एवम सभी प्रकार का सहयोग दिया। श्री निहाल चन्द जी जिन्दल, प्रधान आर्य समाज बरनाला, कु विमला जी छाबड़ा, प्रिंसीपल, श्री लाल बहादुर शास्त्री महिला कालेज बरनाला महाशय लक्षमन दास जी, प्रधान जिला आर्य सभा, संगरूर इस उत्सव मे विशेष रूप से पधारे। बरनाला के और भी बहुत से भाई बहन इस समारोह मे पधारे थे। मैं इन सभी महानुभावो का विशेष रूप से धन्यवाद करता हू।

—रोशनलाल शर्मा
संयोजक

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि. नं. N.W/J.L.55

वर्ष 18 अंक 43. 19 माघ सम्वत् 2043 तदानुसार 1 फरवरी 1987 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या) क्यों ?

लेखक—श्री स्वामी विवेकानन्द सरस्वती आचार्य
गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोलाझाल मेरठ (उ.प्र.)

ओ३म्

धर्म की परिभाषा प्राचीनकाल मे मन्वादि महर्षियो ने जो की थी वह वर्तमान धर्म के अभिप्राय से सर्वथा भिन्न एव व्यापक थी। वर्तमान समय मे धर्म शब्द केवल सम्प्रदाय का वाचक मात्र ही रह गया है, क्योकि इसी के विषय मे इसका प्रयोग बाहुल्य दृष्टिगोचर होता है। प्राचीन धर्म शब्द मनुष्य के उन समस्त क्रिया कलापो का वाचक होता था जो उसके अशेष जीवन मे किसी न किसी रूप मे सहयोगी या कल्याणकारी होते थे। इसीलिए इसका शाब्दिक अर्थ कही साधन है तो कही पर कार्य जैसे यजुर्वेद मे "यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्" यहा धर्म शब्द साधन का वाचक है। और मनु के अनुसार "राजधर्मं प्रवक्ष्यामि" मे धर्म शब्द कार्य का वाचक है अर्थात् राजा के कार्य को कहूगा। इन उदाहरणो से नि सन्दिग्ध रूप मे यह स्पष्ट हो गया कि वर्तमानकाल की भांति धर्म शब्द प्राचीनकाल मे सम्प्रदाय का पर्यायवाची नही था। अत: जो भी कार्य या साधन मनुष्य के लिए उपादेय थे उनको महर्षि गण धर्म शब्द से अभिहित करते थे। क्योकि वे जानते थे कि मनुष्य धर्म भीरु होता है। धर्म के शासन मे मनुष्य को सुख एव प्रसन्नता से चलाया जा सकता है। जो कार्य कर बैठता है।

ससार मे समाज या राष्ट्र को अनुशासन मे चलाने के लिए धर्म एक बहुत बड़ा अस्त्र है, इस का उपयोग कर्ता के ऊपर निर्भर करता है कि वह सद् या असद् कार्य करने के लिए कर रहा है। धर्म के नाम पर इस वर्तमान युग मे भी लाखो करोडो भोले भाले लोगो को ही नहीं, किन्तु बुद्धिजीवि वर्ग को भी इकट्ठा किया जा सकता है, और किया भी जा रहा है। इस से यह और भी स्पष्ट हो जाता है कि धर्म एक ऐसा शब्द है जो मनुष्य की आन्तरिक स्थितियो से सम्बन्धित है और वह इस के साथ इतना अनुस्यूत है कि इस शब्द को किसी प्रकार भी अपने जीवन मे छोडना नही चाहता। वर्तमान समय मे एक समाज दूसरे समाज को परास्त करने के लिए इसका दुरुपयोग करता है। किन्तु हमारे ऋषि मुनि मनुष्य के अभ्युदय मे जो साधन या कार्य सहायक होते थे उनको धर्म और जो पतन एव अनिष्टकारी होते थे उन्हे अधर्म मानते थे।

प्रात काल से सायकाल तक और साय से प्रात तक जो भी कार्य भोजन वसन, स्नान, कर्म मनुष्य के लिए लाभदायक हैं ये धर्म और जो हानिकारक है वे अधर्म। जैसे सात्विक भोजन, अध्ययन, अध्यापन, परस्पर सात्विक सहयोग पुरुषार्थ धर्म है, तो मद्यपान द्युतादि को [illegible] है। यही मनु आदि महर्षियो ने निश्चय किया है।

हमारी वैदिक परम्पराओ मे सन्ध्या को अत्यधिक महत्व दिया गया है और मनु महाराज ने तो यहा तक लिखा है कि—

> "नोपासते य पूर्वान् नोपासते यश्च पश्चिमाम्।
> स शूद्रवद् बहिष्कार्य सर्वस्माद् द्विजकर्मण:।

अर्थात् जो व्यक्ति प्रात काल और सायकाल सन्ध्या नही करता वह समस्त कर्मों से बहिष्कृत करने योग्य है। सन्ध्या का इतना महत्व अन्तत मनु ने क्यो दर्शाया ? इसका कारण स्पष्ट है कि मनुष्य अपने जीवन मे चतुर्मुखी विकास करे। इसके लिए उस को आवश्यकता होती है शक्ति की, बिना शक्ति के वह अपना विकास नही कर सकता। शारीरिक शक्ति के विकास के लिए उचित पथ्यकारी भोजन और व्यायाम की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार मानसिक शक्ति के विकास के लिए चिन्तन, मनन निदिध्यासन (ध्यान) की आवश्यकता होती है। शारीरिक शक्ति के विकास की अत्यधिक आवश्यकता होती है। शारीरिक शक्ति से पूर्ण विकसित मनुष्य मानसिक दृष्टि से यदि अविकसित है या अर्ध विकसित है तो वह ससार मे कुछ भी अपना या पराये का लाभ नही कर सकता। शारीरिक शक्ति से अविकसित या अर्ध विकसित मनुष्य अपनी विकसित मानसिक शक्ति के बल पर बड़े-2 कार्यों का सम्पादन तथा दूसरो का कल्याण करता देखा जाता है। मानसिक शक्ति के विकास का इतना महत्व होने के कारण ही मनु ने सन्ध्या पर इतना बल दिया। क्योकि सन्ध्या कुछ धर्मभीरु मनोविनोदी व्यक्तियो के मनोविनोद का साधन नही किन्तु उन के विकास का साधन है। सन्ध्या का अभिप्राय यह है कि मनुष्य के विकास का वह साधन जो उसे मानसिक रूप से समुन्नत बनाता हो। भला जो व्यक्ति इस साधन का समाश्रयण नही लेता वह अपना मानसिक विकास कैसे कर सकेगा और मानसिक के बिना कैसे सक्रिय हो कर जीवित रह सकेगा।

अहर्निश सकल्प विकल्पो के द्वारा मनुष्य अपनी शक्ति सतत क्षीण करता रहता है। यदि इन सकल्प विकल्पो को रोक कर किसी अन्य महाशक्ति के चिन्तन मे लगा दिया जाए तो मन की शक्ति सहस्रो गुणा बढ जाती है और उसे अपरिमित शक्ति प्राप्त होती है। तो सन्ध्या का सीधा-साधा यही अभिप्राय है कि मनुष्य के विकास का वह साधन जिस को अपना लेने से मनुष्य अनन्त शक्तियो का भण्डार बन जाता है। इसलिए यदि कोई व्यक्ति सन्ध्या नही करता है तो वह क्रोध का पात्र नही किन्तु दया का पात्र है, क्योकि जानबूझ कर अकारण भोजन न करके अपने आपको शक्तिक्षीण बना देने वाला व्यक्ति कोई बुद्धिमान नही कहा जा सकता। उसी प्रकार सन्ध्या (सम्यग् ध्यान) नही करने वाला व्यक्ति अपने आपको क्षीण शक्ति बना देता है। क्योकि अनन्त शक्ति सम्पन्न परमेश्वर का ध्यान द्वारा आत्मसात् कर वह अपने को शक्ति सम्पन्न नहीं बना रहा है, निकट ही अजस्र जल स्रोत के सदा प्रवाहित रहने पर भी वह पिपासाकुल है और पिपासा के कारण दुर्बल निस्तेज हो रहा है।

शास्त्रो मे सन्ध्या को ब्रह्म यज्ञ भी कहते हैं। ब्रह्म का सीधा-साधा और प्रसिद्ध अर्थ बड़ा है "सर्वेभ्यो बृहत्वात् ब्रह्म"। ब्रह्मयज्ञ का अर्थ 'ब्रह्मणो यज्ञ: ब्रह्म यज्ञ है। "आत्मान वर्द्धयित विकासयित यज्ञ: ब्रह्मयज्ञ" अर्थात् अपनी शक्तियो के विकास, वर्धन एव सम्वर्धन करने के लिए जो अनुष्ठान किया जाता है उसका ही नाम ब्रह्मयज्ञ है। इस ब्रह्म यज्ञ के द्वारा मनुष्य अपनी शक्ति का सम्वर्धन करने के लिए परम ब्रह्म की उपासना करता है। उपासना की सफलता तभी समझी जाती है जब उपासक उपास्य के गुणो को अपने अन्दर धारण कर ले। हमारी वर्तमान ब्रह्मयज्ञ पद्धति के मन्त्रो मे इसका स्पष्ट दर्शन होता है। हम ईश्वर के सृष्टि निर्माण की अनन्त शक्तियो का ध्यान करते हुए सभी दिशाओ मे अनेक रूपो मे उस की सरक्षण शक्ति का ध्यान करते हुए सूर्यादि ग्रहो को उसकी महिमा का प्रकाशन करने वाला जान कर उस की असीमित शक्ति का ध्यान कर आह्लादित होते हैं और अन्त में समर्पण के द्वारा अपने अभिमान का नाश कर उसकी न्याय व्यवस्था को पूर्ण रूपेण स्वीकार कर उस का सखित्व प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। जब हम इस ब्रह्मयज्ञ के द्वारा परम ब्रह्म की सम्प्राप्ति कर लेंगे तो उसकी शक्तियो के स्रोत से हमारा भी सम्बन्ध

(शेष पृष्ठ 7 पर)

व्याख्यान माला—८

अथ ब्रह्मचर्यम्

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स अधिष्ठाता गुरुकुल करतारपुर(पंजाब)

(14 दिसम्बर से आगे)

आयुस्तेजो बलं वीर्यं प्रज्ञा श्रीश्च महायशः ।
पुण्यञ्च प्रीतिमत्वं च हन्यतेऽब्रह्मचर्यया ॥21॥

ब्रह्मचर्य का न सेवन करने से आयु, तेज, बल, वीर्य, बुद्धि, लक्ष्मी, महान यश, पुण्य और प्रेम नष्ट हो जाते हैं।

ब्रह्मचर्य परोधर्मः स चापि नियतस्त्वयि ।
यस्मात्तस्मादहं पार्थ रणेऽस्मिन्विजितस्त्वया ॥22॥

हे अर्जुन ! ब्रह्मचर्य ही श्रेष्ठ धर्म है वह तेरे अन्दर विद्यमान है इसी कारण तुमने मुझे इस युद्ध में जीत लिया है। अर्थात् मैं तुम्हारा प्रतिपक्षी हो गया हूं।

असिद्धं तं विजानीयान्नरं ह्यब्रह्मचारिणम् ।
जरामरणसंकीर्णं कायक्लेश समन्वितम् ॥23॥

जो ब्रह्मचारी नही है उस पुरुष को सिद्धि रहित, बुढ़ापे और मृत्यु से युक्त तथा शरार के क्लेश से परिपूर्ण समझना चाहिए। ब्रह्मचर्य का जिसने अपने जीवन से पालन नही किया उसका जीवन असफल समझना चाहिये। निश्चय ही ऐसा मनुष्य बुढ़ापे तथा मृत्यु के अत्यन्त सन्निकट होता है और मानसिक रोगो के साथ-साथ शारीरिक रोगो से सदा घिरा रहता है अथवा यो कहिये कि ऐसा मनुष्य-मनुष्य नहीं अपितु एक प्रकार से चलता फिरता शव ही होता है।

ब्रह्मचर्यं शरीरस्य साधनं हि परं मतम् ।
ब्रह्मचर्य विहीनानां जीवनं हि निरर्थकम् ॥24॥

ब्रह्मचर्य शरीर का श्रेष्ठ साधन माना गया है, ब्रह्मचर्य से रहित पुरुषो का जीवन निरर्थक है।

आहार शयनब्रह्मचर्य्यैर्युक्तया प्रयोजितं ।
शरीरं धार्यते नित्यमागारमिव धारणैः ॥25॥

अच्छी तरह प्रयुक्त किये गये आहार, शयन तथा ब्रह्मचर्य शरीर को वैसे ही धारण करते हैं जैसे घर के वासी घर को धारण करते है।

इन्द्रियाणां तु सर्वेषां यद्येकं क्षरतीन्द्रियम् ।
तेनास्य क्षरति प्रज्ञा दृतेः पात्रादिवोदकम् ॥26॥

सभी इन्द्रियो मे यदि एक इन्द्रिय भी विपरीत आचरण करती है। उससे इस पुरुष की बुद्धि इस प्रकार क्षरित हो जाती है जिस प्रकार टूटे बर्तन से पानी क्षरित हो जाता है।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीवसर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥27॥

जब मनुष्य अपनी इन्द्रियो को इन्द्रियो के विषयो से इस प्रकार अपने अन्दर सकुचित कर लेता जैसे कछुआ अपने अगो को, तब उसकी बुद्धि स्थिर होती है।

इन्द्रियाणां निरोधेन रागद्वेषक्षयेण च ।
अहिंसया च भूतानाममृतत्वाय कल्पते ॥28॥

इन्द्रियो के निरोध से, राग, द्वेष के न रहने से, तथा अहिंसा द्वारा मनुष्य अमर होने के योग्य बनता है।

मरणं बिन्दुपातेन जीवनं बिन्दुधारणात् ।
तस्मादति: प्रयत्नेन कुरुते बिन्दुधारणम् ॥29॥

वीर्य की एक बूंद का भी व्यर्थ जाना मानो मृत्यु के समान है तथा इस की रक्षा जीवन धारण करने के तुल्य है। इसलिए यदि पुरुष प्रयत्न से वीर्य की रक्षा करता है।

यावद्बिन्दुः स्थितो देहे तावन्मृत्योर्भयं कुतः ।
एवं संरक्षयेद्बिन्दुं मृत्यु जयति योगवित् ॥30॥

जब तक वीर्य का एक कण भी शरीर मे विद्यमान है तब तक मृत्यु का भय कहा इसीलिए इस वीर्य को जीवन का स्रोत समझ कर इसकी रक्षा करनी चाहिए। योगी भी इस की ही रक्षा करता है। और मृत्यु को जीतता है।

शुक्रं तस्माद्विशेषेण रक्षन्नारोग्यमिच्छति ॥
धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलकारणम् ॥31॥

इसीलिए विशेष कर वीर्य की रक्षा करता हुआ मनुष्य स्वास्थ्य चाहता है क्योकि स्वास्थ्य ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का मूल कारण है।

चित्तायत्तं नृणां शुक्रं शुक्रायत्तञ्च जीवितम् ।
तस्माच्छुक्रं मनश्चैव रक्षणीयं प्रयत्नतः ॥32॥

मनुष्यो का वीर्य चित्त के आधीन है और जीवन वीर्य के आधीन है इसीलिए वीर्य और चित्त की प्रयत्न पूर्वक रक्षा करनी चाहिए।

यशो ध्रुवं ब्रह्मचर्यं पुरुषार्थस्य साधनम् ।
ब्रह्मचर्य प्रभावेण नरः प्राप्नोति गौरवम् ॥33॥

निश्चय ही ब्रह्मचर्य यश है और पुरुषार्थ का साधन है। ब्रह्मचर्य के प्रभाव से ही मनुष्य गौरव को प्राप्त होता है।

दमस्तेजो वर्धयति पवित्रं दम उत्तमम् ।
विपाप्मा वृद्धतेजास्तु पुरुषो विन्दते महत् ॥34॥

इन्द्रिय निग्रह तेज को बढ़ाता है यह पवित्र एव उत्तम है पुण्यात्मा पुरुष जब बढ़े हुए तेज वाला बनता है तब यह महान् तत्व को प्राप्त होता है।

दमः पवित्रं परमं माङ्गल्यं परमं दमः ।
दमेन सर्वमाप्नोति यत्किञ्चिन्मनसेच्छति ॥35॥

इन्द्रिय निग्रह ही परम पवित्र और परम मंगलदायक है साधक मनुष्य इन्द्रिय निग्रह द्वारा ही जो कुछ मन से चाहता है वह सब प्राप्त करता है।

द्विविधो ब्रह्मचारी स्यादाद्यो ह्युपकुर्वाणकः ।
द्वितीयो नैष्ठिकश्चैव तस्मिन्नेव व्रते स्थितः ॥36॥

ब्रह्मचारी दो प्रकार का होता है, पहला उपकार करने वाला होता है। और दूसरा नैष्ठिक होता है जो उसी ब्रह्मचर्य व्रत मे स्थिर रहता है।

वेदस्वीकरणे हृष्टो गुर्वधीनो गुरोर्हितः ।
निष्ठां तत्रैव यो गच्छेन्नैष्ठिकः स उदाहृतः ॥37॥

जो वेदो के ज्ञान को अपने अन्तःकरण मे धारण करने पर स्वय को प्रसन्न अनुभव करता है तथा गुरु के आधीन रहता हुआ, गुरु का हित चाहता है तथा जिसकी निष्ठा व श्रद्धा वेद ज्ञान की प्राप्ति तथा गुरु के प्रति अक्षुण्ण बनी रहती है उसी को नैष्ठिक ब्रह्मचारी कहते हैं।

हीनान्नवस्त्रवेषः स्यात्सर्वदा गुरुसन्निधौ ।
उत्तिष्ठेत्प्रथमं चास्य चरमं चैव संविशेत् ॥38॥

नैष्ठिक ब्रह्मचारी अन्न और वस्त्र वेष से रहित होकर सदा गुरु के समीप रहे और गुरु से पहले जागे और गुरु के सो जाने पर सोवे।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

सोमनाथ का मन्दिर और बाबर की मस्जिद—2

जिस समय सोमनाथ के मन्दिर का निर्माण हो रहा था तो पाकिस्तानी समाचार पत्र लिख रहे थे कि यदि यह मन्दिर बन गया तो पाकिस्तान एक और महमूद गजनवी पैदा कर देगा जो इस मन्दिर को भी तोड देगा। इन सब घटनाओ का पडित नेहरु पर भी प्रभाव था। उसके इरादो का व उनकी धर्म-निरपेक्षता यह अनुमति नही देते थे भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष देश के राष्ट्रपति एक मन्दिर का उद्घाटन करे इसलिए उन्होने भरसक प्रयास किया किया कि डा राजेन्द्र प्रसाद न जाए लेकिन राजेन्द्र प्रसाद बाबू एक धार्मिक विचारो के व्यक्ति थे। उन्होने कहा कि मेरी धर्म निरपेक्षता मुझे इस मन्दिर का उदघाटन करने से नही रोकती। यदि कल को मुझ किसी अन्य धर्म के पूजा स्थल का उदघाटन करने के लिए कहा जाएगा तो मैं वह भी करूगा। मैं समझता हू कि असली धर्म मिलाता है, लडाता नही और जब उन्होने उदघाटन किया तो कहा कि हम ने अपने इस मन्दिर की प्राचीन गरिमा को पुन बहाल करके अपना एक कर्त्तव्य पूरा किया है जो कुछ सरदार पटेल डा राजेन्द्र प्रसाद और अन्य तत्कालीन नेताओ ने सोमनाथ मन्दिर के बारे मे कहा था उस के दृष्टिगत बाबरी मस्जिद के बारे मे जो विवाद आजकल चल रहा है वह अत्यन्त खेदजनक है। जब सोमनाथ मन्दिर के निर्माण का प्रश्न तत्कालीन केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल मे उठा था तो पण्डित जवाहरलाल ने उसका अवश्य विरोध किया था। मौलाना आजाद ने कहा था कि यह जैसे है इसे वैसे ही रहने दिया जाए। उस पर यह भी कहा गया कि यदि यह ऐसे ही रहने दिया गया तो यह लोगो को याद दिलाता रहेगा कि कभी महमूद गजनवी यहा आया था और उसने इस मन्दिर की यह हालत बना दी थी। इस तरह मुसलमानो के विरुद्ध एक शिकायत बनी रहेगी। यदि यह मन्दिर फिर से बना दिया जाए तो लोग धीरे-धीरे अतीत की घटनाओ को भूल जाए गे।

पाठकगण ! सोमनाथ मन्दिर दूसरी बार कैसे बनाया गया, सक्षेप मे इसकी कहानी मैंने आपके समक्ष रख दी है। उसके आधार पर बाबरी मस्जिद के बारे मे विवाद आजकल चल रहा है।

स्वतन्त्रता के बाद चार वर्ष के भीतर सोमनाथ का मन्दिर किस तरह फिर से खडा कर दिया गया था इसकी सक्षिप्त सी कहानी मैं इसी क्रम के पिछले लेख मे प्रस्तुत कर चुका हू। यह सब कुछ करने वाले हिन्दू साम्प्रदायिक न थे अपितु उस समय के देश के महान नेता थे। एक राष्ट्रपति थे, दूसरे उप प्रधानमन्त्री थे। उस समय हम नए-नए स्वतन्त्र हुए थे। पाकिस्तान बने अभी चार वर्ष ही हुए थे और देश के विभाजन की रक्तिम कहानी अभी लोगो को याद थी और उस समय तक कोई शाहबुद्दीन भी पैदा न हुआ था।

आज परिस्थितिया पूर्णतया बदल गयी हैं। हम न केवल 1947 की रक्तिम कहानी को भूल चुके हैं अब कई शाहबुद्दीन भी पैदा हो गए हैं। आज हमारे पास कोई राजेन्द्र प्रसाद और वल्लभ भाई पटेल भी नही है। केन्द्रीय सरकार पहले से भी बहुत कमजोर है। इसीलिए कोई बाबर को मस्जिद का प्रश्न खडा कर देता है, कोई गोरखालैंड मागता है और कोई खालिस्तान के स्वप्न लेने लगता है।

यदि सरकार मे साहस नही कि वह इन परिस्थितियो का मुकाबला कर सके तो देश की जनता को तो पता होना चाहिए कि वास्तविकता क्या है ? सरकार की भी वास्तविक शक्ति देश की जनता होती है। इसलिए इसे सभी हालात की जानकारी होनी चाहिए। इस विचार से मैंने गत अक में सोमनाथ मन्दिर की कहानी पाठको के सम्मुख रखी थी। आज बाबरी मस्जिद के सम्बन्ध मे वास्तविक घटना प्रस्तुत कर रहा हू।

हमारे इतिहास की कुछ एक घटनाए अकाट्य हैं। एक यह कि भगवान राम का जन्म आयोध्या में महाराज दशरथ के घर हुआ था। उनकी माता का नाम कौशल्या जी था और यह सब कुछ त्रेता युग मे हुआ था। त्रेता युग को वास्तव में कितने वर्ष हुए हैं इस सम्बन्ध में विश्वास से कुछ कहना कठिन है परन्तु इसमे सन्देह नहीं कि कई हजार वर्ष हो चुके हैं। कोई इसे आठ हजार वर्ष कहता है, कोई दस हजार वर्ष। रामायण को लिखने वाले महर्षि वाल्मीकि थे। उन्होंने ही भगवान राम के जन्म की कहानी लिखी थी जिसके अर्थ हैं कि महर्षि वाल्मीकि भगवान राम से भी पहले हुए थे उन्हे मालूम होगा कि जब भगवान श्रीरामचन्द्र जी महाराज का जन्म हुआ तो आयोध्या मे क्या हुआ था। ?

दूसरी घटना जो इस सम्बन्ध मे हमे स्मरण रखनी चाहिए वह यह कि मुगल राज्य के सस्थापक शहनशाह बाबर ने हमारे देश पर हमले तो पहले भी किए थे परन्तु 1526 म लकर 1530 तक उसने इस देश पर शासन किया था। इसी मध्य उसने अयोध्या मे भगवान राम की जन्म भूमि पर बने मन्दिर को तुडवा कर उसी के मलवा से वहा एक मस्जिद बना दी थी जो बाबरी मस्जिद के नाम से याद की याद की जाती है।

भगवान राम की जन्म भूमि आयोध्या मे उनकी याद मे यह मन्दिर कब बनाया गया था इस सम्बन्ध मे विश्वास से कछ कहना कठन है। परन्तु कहते हैं कि बाबर से लगभग एक हजार वर्ष पूव हमारे देश पर महाराज विक्रमादित्य जो चन्द्र गुप्त विक्रमादित्य के नाम से भी प्रख्यात थ, शासन किया करते थे। रामजन्म भूमि का यह मन्दिर इससे भी पहले बना हुआ था। जब विक्रमादित्य ने इसे देखा तो उस समय तक यह खस्ता स्थिति मे था। महाराजा विक्रमादित्य ने इसे नए सिरे से बनवाया और इसमे भगवान राम की मूर्ति की स्थापना की गई। जब मुगलो ने हमारे देश पर हमले करने प्रारम्भ किए तो वह जगह-जगह मूर्तियो को तोडने लगे। इसी सम्बन्ध मे बाबर ने राम जन्म के इस मन्दिर को तोड कर इस पर उसी जगह एक मस्जिद भी बना दी। हिन्दू उसे सहन करने को तैयार न थे। इसलिए हिन्दुओ और मुसलमानो के बीच इस पर अधिकार जमाने के लिए सघर्ष होता ही रहता था। इस पर अकबर ने उस मस्जिद के भीतर ही एक छोटा सा मन्दिर बनवा दिया और हिन्दुओ को वहा पूजा करने का अधिकार दे दिया। इसके बावजूद हिन्दुओ और मुसलमानो मे यह टकराव चलता रहा और कई हिन्दू और मुसलमान इसमें मारे गए।

जब वाजद अलीशाह अवध का शासक था तो हिन्दूओ ने उसके दरबार मे भी याचना की और कहा कि उन्हे इस मन्दिर मे पूजा करने की अनुमति दी जाए इस पर वाजद अलीशाह ने फर्मान जारी किया कि—

हम इश्क के बन्दे हैं मजहब से नही वाकिफ,
गर काहबा हुआ तो क्या ? बुत खाना हुआ तो क्या ?

1864 मे फिर यहा झगडा हुआ और अग्रेज ने यह जगह अपने अधिकार मे ले ली। 1857 के गदर के समय भी हिन्दुओ और मुसलमानो दोनो की ओर से यह प्रयास होता रहा कि यहा कोई झगडा न हो। उस जमाना मे बाबा रामचरण दास और अमीर अली नाम के दो व्यक्तियो ने इस प्रश्न पर हिन्दुओ और मुसलमानो का समझौता कराने का प्रयास किया। अग्रेज को यह पसन्द न था उसने इन दोनो को विद्रोह के आरोप मे पकड कर फासी पर लटका दिया।

निष्कर्ष यह कि बाबरी मस्जिद का किस्सा वास्तव मे 1526 के बाद शुरू हुआ जब बाबर ने हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया और फिर अपना राज्य स्थापित करके राम जन्मभूमि के मन्दिर को एक मस्जिद बनाकर एक नया विवाद शुरू कर दिया। उस समय से लेकर आज तक यह विवाद किसी न किसी रूप में चल रहा है।

1947 में हम स्वतन्त्र हो गए। मुसलमानो ने इस स्वतन्त्रता से लाभ उठा कर फिर उस स्थान पर कब्जा करने का प्रयास किया। हिन्दुओ ने उस का विरोध किया। इसी टकराव मे जब परिस्थितिया बिगडने लगी तो उस समय के फैजाबाद के जिलाधीश श्री के के नैय्यर ने धारा 145 के अन्तर्गत उसे अपने अधिकार मे ले और वहा पूजा करने के लिए एक पुजारी तैनात कर दिया, परन्तु उस का प्रबन्ध अपने हाथ मे रखा तथा उस मन्दिर पर ताला लगा दिया गया कि कोई व्यक्ति अन्दर न जा सके ताकि कोई झगडा न हो। इस सम्बन्ध में आगामी लेख मे प्रकाश डालू गा।

—वीरेन्द्र

आर्य समाज, और पंजाब समस्या तथा उसका हल

लेखक—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष वैदिक सस्थान नजीबाबाद (उ प्र)

बात 17 नवम्बर सन् 1965 की है। उस दिन करनाल की आर्य केन्द्रीय सभा वहा के रामलीला भवन मे लाला लाजपतराय दिवस मना रही थी। सभा की अध्यक्षता कर रहे थे आचार्य श्री रलाराम जी विधायक और वक्ताओ मे थे सर्व श्री प्राध्यापक उत्तम चन्द जी 'शरर' योगीराज सूर्यदेव, ओम् प्रभा जैन स्वास्थ्य मन्त्री पजाब और मैं।

'शरर' जी के पश्चात् सूर्यदेव जी बोले और उन के पश्चात् मेरा नाम अध्यक्ष महोदय ने घोषित किया तो केन्द्रीय सभा करनाल के अध्यक्ष श्री डा गणेशदास जी अतरेजा ने मच पर आकर मेरा परिचय दिया। जब मैं बोलने खड़ा हुआ तो श्री ओम् प्रभा जी ने अपने पीछे रखे मोटे तकिये को घुमाया और मेरी ओर मुह कर के बैठ गई।

मैंने पजाब केसरी लाला लाजपतराय को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए पजाब की तात्कालीन स्थिति की चर्चा की और कहा, "पजाब निवासिओ, इस समय लाला जी के प्रति सच्ची श्रद्धाजली होगी उन के इस खण्डित पजाब को और खण्डित होने से रक्षा करना। क्योकि साम्प्रदायिक तत्वो ने सिर उठाया हुआ है। इस खण्डित प्रदेश को और भी खण्डित करने के लिए और भारत सरकार अपनी अदूरदर्शी नीतियो स इन देशद्रोही तत्वो को प्रोत्साहन दे रही है। यहा तक कि इस महाअनिष्टकारी देशद्रोहात्मक पजाबी सूबे की माग पर विचार करने के लिए ससदीय और मन्त्री मण्डलीय दो समितिया बना कर पजाबी सूबे की माग को मान्यता प्रदान कर चुकी है।

उस समय मैंने यह भी कहा था कि जवाहर लाल नेहरू जिस साम्प्रदायिक माग को ठुकरा चुके थे, उन की प्रियदर्शिनी पुत्री ने इन समितियो को बना कर उसी माग को स्वीकार कर लिया है। इसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव यह पड़ेगा कि अन्य अलगाववादी भी सिर उठाने लगेंगे।

मैंने और जब ओम् प्रभा जी भाषण करने खड़ी हुई तो वह भड़क उठी और कहने लगी, योगीराज जी और स्वामी जी—दोनो ही हमारे पूज्य हैं, गुरु हैं। दोनो ने भारत सरकार की आलोचना की है। स्वामी जी तो बहुत आगे बढ गए है। इतना कहते-कहते वह कुछ अधिक आवेश मे आ गई और फिर कुछ अधिक न कह कर दो-तीन मिनट मे ही यह कहते हुए हट गई कि यह दोनो समितिया बहुत सोच समझ कर बनाई गई हैं। उस के पश्चात् एक मिनट भी ठहरे बिना वह मच से उठ कर चली गयी। क्रोधावेश मे वह उक्त बात कह तो गयी किन्तु उन्हे लगा कि यहा मेरी भड़ास का उत्तर अवश्य दिया जाएगा और इसीलिए वह मच छोड कर तुरन्त ही सभा-स्थल से चली गयी। उस के पश्चात्, 'पुण्य-लोक' मासिक मे मैने पजाब की समस्या पर सम्पादकीय भी लिखा था।

सन 1965 मे पजाबी सूबे की माग पर ससदीय और मन्त्री मण्डलीय समितिया बना कर और 1966 मे पजाबी सूबे का निर्माण कर सोलह वर्ष बाद सन् 1982 मे श्रीमती इन्दिरा देवी जी को यह अनुभव हुआ जो उन्होने 'माई ट्रुथ' पुस्तक लिख कर उस मे स्वीकार किया है कि "पजाबी सूबा बना कर मैंने भूल की थी।"

अकालियो की इस मनोवृत्ति को आर्य समाज ने अपनी दूर दृष्टि से बहुत पहले ही समझ लिया था। सन् 1957 मे इसीलिए आर्य समाज को पजाब मे सत्याग्रह करना पडा था। भारत के तात्कालिक प्रधानमन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरू और गृहमन्त्री श्री गोविन्द बल्लभ पन्त ने आर्य समाज के नेताओ को विश्वास मे लेकर सत्याग्रह स्थगित करवाया और फिर वचन भग का पाप कर के आर्य समाज के साथ धोखा किया, जिस के परिणाम स्वरूप अकालियो का साहस बढा। मास्टर तारासिंह ने सन् 1961 मे पजाबी सूबे के आवरण में खालिस्तान की माग को लेकर अमृतसर के गुरुद्वारे में अनशन किया तो आर्य सन्यासी स्वामी रामेश्वरानन्द ने प्राणो की बाजी लगाकर भारत सरकार के हाथ मजबूत किए और मास्टर तारासिंह के अनशन का प्रभाव नष्ट कर खालिस्तान बनने से रोका।

सन् 1966 मे यद्यपि सन्त फतहसिंह के अनशन के विरोध मे आर्य सन्यासी श्री स्वामी सत्यानन्द जी ने उस समय अनशन किया था किन्तु स्वामी सत्यानन्द जी की पूर्व घोषित तिथि से एक सप्ताह पूर्व ही श्री यज्ञदत्त शर्मा का अनशन प्रारम्भ करा दिया था और बाद में 'यज्ञदत्त के प्राण बचाओ' पोस्टर दिल्ली मे लगा कर अटल बिहारी बाजपेयी, इन्दिरा जी के पास पहुच गए तथा यज्ञदत्त के आमरण अनशन को प्राण बचाओ अनशन मे परिवर्तित कर आर्य समाज की पीठ मे छुरा घोपा और पजाब के हिन्दुओ को भूखे भेड़ियो के हवाले करा दिया।

जब सर्व श्री वीरेन्द्र जी, यश जी और लाला जगत नारायण जी भारत सरकार की जेल से मुक्त हो कर आए तो आर्य समाज मन्दिर दीवान हाल दिल्ली मे 'पजाब रक्षा समिति' की बैठक हुई। स्वामी सत्यानन्द जी के अनशन को समाप्त कराने का मैंने उस बैठक मे विरोध किया था। मैंने कहा था कि हम तेरह सन्यासियो के नाम अनशनकारियो की सूची मे हैं, कुछ को मरने तो दो, देखें कब तक केन्द्र सरकार नही पिघलती है।

उस समय लाला जगत नारायण जी हाथ जोड कर खड़े हुए और बोले, स्वामी जी अब तो पजाबी सूबा बन ही गया और हमे वहा रहना है, हमे वहा रहने दो। लाला जी के इन शब्दो को सुन कर मैं चुप हो गया, करता भी क्या जब पजाब के लाला जगत नारायण जी जैसे नेता और पत्रकार का यह विचार था तो हमारी बात तो यह कह कर उड़ा दी जाती कि पजाब के हिन्दू तो सन्तुष्ट हैं। यह दिल्ली और उत्तरप्रदेश के लोग बावेला मचा रहे हैं। वीरेन्द्र जी से तो हम आशा कर सकते थे कि वह पजाब रक्षा समिति की मागो का समर्थन अपने समाचार पत्रो मे करेंगे किन्तु लाला जगत नारायण जी लिखते पजाबी सूबे के समर्थन मे तो कोई अच्छा परिणाम नही निकल सकता था। वीरेन्द्र जी की मुखाकृति उस समय पढने योग्य हो रही थी किन्तु वह मौन रहे। यश जी भी सर्वथा मुरझाए सम्भवत: किसी अनिष्ट की आशका से मौन ही रहे।

पजाब की वर्तमान दुरव्यवस्था की पृष्ठभूमि को मैंने उपर्युक्त शब्दो में सुन और पढ कर नही अपितु स्वानुभूति के आधार पर व्यक्त किया है। पंजाब की समस्या को मैं बहुत निकट से इसलिए देख पाया क्योंकि सन् 1957 से ही इससे सम्बन्धित रहा हू। सन् 1957 मे पजाब मे आर्य समाज को हिन्दी रक्षा के लिए 'भाषा स्वातन्त्र्य सत्याग्रह' करना पड़ा था। राजस्थान से सत्याग्रही जत्थे और धन भिजवाने का सम्पूर्ण दायित्व मुझ पर ही था। पजाब हिन्दी रक्षा समिति का भी सक्रिय सदस्य रहा हू।

यदि भारत का केन्द्रीय नेतृत्व पजाब की समस्या का हल न निकालना चाहे तो दूसरी बात है अन्यथा पंजाब ही नही कश्मीर का भी हल साथ ही साथ हो सकता है और इस से भारत के जन्मजात शत्रु पाकिस्तान से भी भारत की पश्चिमीय सीमा पूर्णत: सुरक्षित हो सकती है। केवल राष्ट्रीयता के प्रति समर्पित तथा निष्ठावान् होने की आवश्यकता है।

समस्या का हल

भूल की कश्मीर मे राष्ट्रपति शासन समाप्त कर के। इस से कश्मीर घाटी मे पाकिस्तान के घुसपैठियो तथा जासूसो को न रोका जा सकता है और न समाप्त किया जा सकता है। वहा पर राष्ट्रपति शासन आत्यावश्यक था। पजाब मे भी राष्ट्रपति शासन लागू कर पाकिस्तान की सीमा से लगे क्षेत्र को सेना के हवाले कर दिया जाए और उस के पश्चात् राष्ट्रपति शासन काल मे ही कश्मीर की पृथक् स्थिति बनाये रखने वाली धारा 370 को समाप्त कर हरियाणा, पजाब, हिमाचल तथा जम्मू-कश्मीर को मिला कर एक ही 'पश्चिमोत्तर प्रदेश' बना दिया जाए। समस्त राष्ट्र भक्त को एक मन और एक जुट हो कर उसी के लिए भारत सरकार पर प्रभाव डालना चाहिए। यदि इसी के लिए प्रयत्न नही किया गया तो आज न सही कुछ समय बाद सही, पजाब खालिस्तान बनेगा और इस प्रकार कश्मीर भी हाथ से जाएगा। अतिविस्तरेण किमधिकलेखेन।

श्री स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती का देहावसान

आर्य जगत को यह जानकर अति दुख होगा कि आर्य समाज के प्रसिद्ध मूर्धन्य नेता पूज्य स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती का 22-1-87 दिन वीरवार को उधमपुर (जम्मू) मे निधन हो गया। स्वामी जी कुछ समय से रूग्ण चल रहे थे। उनका अन्तिम शोक दिवस महर्षि दयानन्द मठ वेद मन्दिर हन मोहल्ला जालन्धर मे 1 2 87 रविवार के दोपहर दो बजे से 4 30 बजे तक मनाया जाएगा स्वामी जी के चले जाने से आर्य समाज की एक ऐसी क्षति हुई जिसकी पूर्ति असम्भव है। स्वामी जी ने अपने जीवन मे बहुत महान कार्य किए है।

उन्होने अपना जीवन आचार्य राम देव के नाम से आरम्भ किया था बाद मे सन्यास लेने पर स्वामी सत्यानन्द जी के नाम से प्रसिद्ध हुए। इनका जन्म अप्रैल 1899 में हुए 22 1-87 को 88 वर्ष की अवस्था मे उनका निधन हो गया।

सन् 1932 मे उन्होने गुरुकुल जेहलम की स्थापना की थी और 1947 तक वहा आचार्य पद पर कार्य करते रहे। सन 1938 मे उन्होने 78 अन्य व्यक्तियों के साथ हैदराबाद सत्याग्रह मे भाग लिया और डेढ वर्ष का कारावास भुगता। सन् 1942 मे महात्मा गान्धी जी द्वारा चलाए गए भारत छोड़ो आन्दोलन मे भाग लिया और एक वर्ष का कारावास भुगता।

सन् 1947 के बाद पाकिस्तान बन जाने पर जालन्धर आकर इन्होंने महर्षि दयानन्द मठ (वेद मन्दिर) हन मोहल्ला जालन्धर की स्थापना की जो कि इस समय वेद प्रचार का एक अच्छा केन्द्र बना हुआ है।

जालन्धर आने पर वह आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के अच्छे सहयोगी रहे और बाद मे सभा के प्रधान चुने गए।

स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती ने वैदिक साधनाश्रम यमनानगर अम्बाला मे उन्हें अपना उत्तराधिकारी बनाया जहा कई वर्षो तक सफलता के साथ उसे चलाते रहे।

सन 1952-53 की जनगणना के सम्बन्ध मे आपने कार्य किया और आपको इस सम्बन्ध मे जेल भी जाना पडा। 1954 मे हिन्दी आन्दोलन मे तीन बार जेल गए और पजाब विभाजन के विरुद्ध आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली मे अनशन किया।

जम्मू मे स्वामी जी ने बक्शी नगर समाज का स्वय सचालन किया और उधमपुर मे वेद मन्दिर का निर्माण कराया।

इस प्रकार उन्होने अपने इस 88 वर्ष के जीवन में आर्य समाज की महान सेवा की और सारा जीवन ही आर्य समाज के लिए लगा दिया।

उनके निधन से आर्य समाज की जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति असम्भव है। हम आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से उन्हे श्रद्धाजलि भेन्ट करते हुए परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी तरह त्याग भाव से कार्य करने का समर्थ सभी आर्य बन्धुओं को प्रदान करें।

—रणवीर शर्मा-महामन्त्री

महाशय धर्मपाल जी आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित

दिल्ली की 200 आर्य समाजो तथा शिक्षण सस्थाओ के सगठन आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य का वार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव)आज मध्याह्न 3-00 बजे आर्य समाज मन्दिर हनुमान रोड मे सम्पन्न हुआ, जिसमे दिल्ली की आर्य समाजो के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। चुनाव सारा ही शान्तिपूर्वक तथा सोहार्दयपूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ। चुनाव मे सर्वसम्मति से महाशय धर्मपाल जी प्रधान तथा श्री राजेन्द्र दुर्गा जी महामन्त्री निर्वाचित हुए। बाकी कार्यकारणी सभा अन्तरग सभा के गठन करने का अधिकार भी उपर्युक्त दोनो महानुभावो को सौंपा गया।

—राजेन्द्र दुर्गा
महामन्त्री

लुधियाना में विश्व शान्ति गायत्री महायज्ञ

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना मे माघ सक्रान्ति 14 जनवरी से फाल्गुण सक्रान्ति 1987तक प्रतिदिन2 30 बजे से 4 30 बजे तक विश्व शान्ति गायत्री यज्ञ हो रहा है। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी सुमेधानन्द जी हैं, साथ ही यज्ञ अध्वर्युपद पर बहन शान्ता जी अग्रवाल ने ग्रहण किया। यज्ञाग्नि प्रचण्ड बहन वेदवती जी सरक्षिका स्त्री आर्य समाज ने अपने कर कमलो से की। इस महायज्ञ मे सम्मलित होकर यज्ञ प्रेमी बहन पुण्य के भागी बनें।

—शान्ता गौड (वानप्रस्थ) प्रधान

माता यशोदा देवी का निधन

'वेदवाणी' के सम्पादक विख्यात वैदिक विद्वान श्री पण्डित युधिष्ठिर जी मीमासक की धर्म पत्नी श्रीमती यशोदा देवी का निधन 11 जनवरी 1987 को हो गया। स्वर्गीय माता जी की अवस्था सत्तर वर्ष से अधिक थी और वे कैंसर रोग से ग्रस्त थी। 13 जनवरी1987को आर्य समाज करोल बाग मे शोक सभा हुई और पाणिनी महाविद्यालय बहालगढ (सोनीपत) मे विशेष यज्ञ के पश्चात उन्हे श्रद्धाजलिया अर्पित की गई।

आर्य मर्यादा के शिवरात्रि विशेषांक के लिए विज्ञापन तथा आर्डर भेजें

प्रतिवर्ष की भान्ति इस वर्ष भी आर्य मर्यादा का ऋषि बोधोत्सव (शिवरात्रि) पर विशेषाक प्रकाशित किया जा रहा है। यह विशेषाक भी पूर्व विशेषाको की भान्ति बहुत प्रभावशाली और उपयोगी मैटर से भरपूर होगा।

1. आपसे प्रार्थना है कि आप इसके लिए पूर्व की भान्ति विज्ञापन भेजें। विज्ञापन शुल्क पूर्ण पृष्ठ केवल 400 रु होगा। विज्ञापन किसी की स्मृति मे या व्यवसायिक दोनो रूपो मे दिया जा सकता है।

2. आप इस विशेषाक के लिए अपनी ओर से अपनी आर्य समाज की ओर से तथा अपनी शिक्षण सस्था की ओर से अधिक से अधिक प्रतियों का आर्डर शीघ्र अतिशीघ्र भेजें ताकि आपकी प्रतियां सुरक्षित कर ली जाए।

—सभा महामन्त्री

आर्य विद्वानों के समक्ष दो विचारणीय प्रश्न

लेखक—श्री मागे राम आर्य, प्रधान
आर्य समाज अहमदनगर (महाराष्ट्र)

प्रश्न 1. सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास मे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आठ वसुओ मे जो सृष्टि (मनष्यादि) स्वीकार की है। इन आठ वसुओ मे से एक चन्द्रमा भी है। आजकल के भौतिक वैज्ञानिक दो तीन बार चन्द्रमा पर पहुच कर, वहा का वातावरण देख कर वापस पृथिवी पर आ चुके हैं यह सब को विदित है। उन वैज्ञानिको ने घोषणा की है कि चन्द्रमा मे आक्सीजन नही है और वहा पर किसी प्रकार की जीव सृष्टि भी नही है। इससे महर्षि के लेख पर कुछ शका पैदा होती है। इसलिए आर्य समाज के प्रकाण्ड वेद वेत्ता विद्वान् इस विषय मे सत्य और असत्य का निणय वेदादि शास्त्रा द्वारा लेवे जो अति आवश्यक है।

इसी विषय से सम्बन्धित यह भी भी उल्लेखनीय है कि श्री प्रिय रत्न जी आर्य (स्वामी ब्रह्म मुनि जी परिव्राजक) ने अपनी पुस्तक "वैदिक ज्योतिष शास्त्र" के चन्द्रमा प्रकरण मे लिखा है कि—"चन्द्रमा मे ज्वालामुखी हैं या हिमसहति और जल स्रोत मण्डल यह तो न किसी ने देखा और न देख ही सकता है। श्री विद्वान् लेखक का इस प्रकार लिखने का अभिप्राय स्पष्ट दिखाई देता है कि चन्द्रमा तक किसी मनुष्य की पहुच नही यानी "चन्द्रमा पर कोई नही जा सकता।" परन्तु आज कल के आधुनिक वैज्ञानिको (अमेरिकादि) ने चन्द्रमा पर पहुच कर स्वामी ब्रह्म मुनि जी के लेख को असत्य सिद्ध कर दिखलाया है। वैज्ञानिको ने चन्द्रमा मे जल का अभाव बतलाया है और वहा से चन्द्रमा की मिटटी अपने साथ लेकर आए हैं।

प्रश्न—2 सृष्टि तथा वेदोत्पतिकाल की दो अलग-अलग आयु मानी गई हैं। आज तक के समयानुसार पृथिवी रचना काल का समय 1,97,29,41,086 व्यतीत होकर यह 87 वर्ष चल रहा है। मनुष्य और वेदोत्पत्ति का समय 1,16,08,53,086 पूर्ण होकर यह 87 वष चल रहा है। इस विषय मे देखे सत्यार्थ प्रकाश अष्टम समुल्लास और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का वेदोत्पत्ति विषय। इन दोनो कालो का अन्तर आज के समयानुसार 1,20,96,000 वर्ष बनता है। यह जड सृष्टि और चेतन सृष्टि रचना के अनुसार आज तक के हिसाब का अन्तर है। इससे प्रतीत होता है कि ईश्वर ने जड सृष्टि (पृथिवीदि) रचने के बहुत काल (वर्ष) पश्चात् चेतन सृष्टि (मनुष्यादि) तथा वेदोत्पत्ति की रचना की। अनुमानत कितने वर्ष बाद ईश्वर ने मनुष्यादि सृष्टि का प्रादुर्भाव किया। इस विषय मे आर्य विद्वान जड सृष्टि और चेतन सृष्टि का अन्तर बतलाने की कृपा करे। यह अन्तर क्यो और कैसे हुआ जबकि जड सृष्टि तैयार बनी पडी थी। वह परमात्मा अपनी सर्व शक्तिमानता से एक ही समय सर्व सृष्टि जड और चेतन की रचना करता है, फिर यह अन्तर क्यो दोनो सृष्टियो का रचनाकाल एक ही होना चाहिए। आर्य जगत् के विद्वानो से विनती है कि वह इस विषय मे अपने विचार प्रकट कर। इन प्रश्नो मे यदि मेरी कोई भूल हो तो मैं क्षमा चाहूगा क्योकि भूल मनुष्य का स्वाभाविक गुण है क्यो कि वह अल्पज्ञ है।

बलिदान

कविवर—श्री 'प्रणव' शास्त्री एम ए. महोपदेशक

बलिदानो की अमर कहानी।
कभी नही मिट पाती है।
बलिदानो की गाथाओ को।
धरती हस हस गाती है॥1॥

वन्दनीय जो बीज धरा की गोदी मे सो जाता है।
गर्मी का सहयोग प्राप्त कर गलकर अङ्कुर हो जाता है।
उस अङ्कुर पर फूल फलो की।
नयी फसल उग आती है।2।

सदा बचाने औरो को ही जिसने जीना सीखा है।
शैल शिला पर मर मिटने का अनुपम एक तरीका है।
मेंहदी रङ्ग-रगीला लाती।
ज्यो-ज्यो पिसती जाती है।3।

घृत, शाकल्य, कपूर बिहसते आते अम्बरशालो में।
नाच-नाच कर समिधाए चढती हैं अग्नि ज्वालाये।
तब अनमोहक सुरभि सजीली।
चतुर्दिशा महकाती है॥4॥

प्रण के लिए प्राण का देना कोई मुश्किल बात नही है।
राष्ट्र स्वत्व मे रक्त बहाने से बढकर सौगात नही है।
वीरो की यह भव्य भावना।
गङ्गा सी लहराती है।5।

बलिदानो की परम्परा मे स्वार्थ भाव का लेश नही।
आत्मसमपर्ण मे होता है, किञ्चित भी तो क्लेश नही।
यह तो निर्भय त्याग-याग की।
राग-रागिनी गाती है।6।

बलिदानी बागो मे आता है, पतझर का राज नही।
वीराङ्गनी रानी का सजता है, गीतो का साज नही।
वहा सदा शृङ्गार सजीली।
बसन्ती मुसकाती है।7।

—(शास्त्री सदन, रामनगर (कटरा) आगरा—6 (उ प्र)

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के स्नातकों के पंजीकरण हेतु सूचना

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की शिष्ट परिषद् तथा शिक्षा-पटल के लिये स्नातक प्रतिनिधियो के निर्वाचन हेतु अधोहस्ताक्षरी गुरुकल कागडी विश्वविद्यालय के उन स्नातको से पजीकरण हेतु प्रार्थना पत्र आमन्त्रित करता है, जिन्हें इस विश्वविद्यालय से स्नातक, स्नातकोत्तर अथवा पी एच डी उपाधि प्राप्त किए 5 वर्ष हो चुके हो।

अत: वर्ष 1982 तक उपाधि प्राप्त महानुभाव निम्न प्रपत्र अपने पजीकरण हेतु शुल्क 5 रुपए सदस्यता शुल्क वार्षिक 2 रुपये तथा सदस्यता शुल्क आजीवन 25 रुपये मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा पोस्टल आर्डर सहित विज्ञाप्त की तिथि से एक माह के अन्दर अधोहस्ताक्षरी के नाम प्रेषित करें। उक्त शुल्क अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय मे नकद भी जमा कराया जा सकता है। फार्म भर कर भेजें।

— डा वीरेन्द्र अरोडा
कुल सचिव

आर्य समाज गोविन्दगढ़ जालन्धर की गतिविधियां

13-1-87 को श्रीमती राज अरोडा कोषाध्यक्ष स्त्री आर्य समाज गोविन्दगढ जालन्धर के पौत्र का नामकरण उनके निवास स्थान पर किया गया। जिसमे प धर्मदेवार्य जी ने हवन यज्ञ के पश्चात् अपने मनोहर प्रवचन से सबको लाभान्वित किया और सबने मिलकर बच्चे को आशीर्वाद दिया। स्त्री आर्य समाज गु गोविन्दगढ की ओर से लोहडी का पर्व सायकाल आर्य समाज में मनाया गया।

14 जनवरी से महागायत्री यज्ञ प्रारम्भ हुआ है बसन्तोत्सव 3 फरवरी को मनाया जाएगा। 2 फरवरी 87 से 8 फरवरी 87 तक स्त्री आर्य समाज का वार्षिकोत्सव भी प्रारम्भ होगा। महागायत्री यज्ञ करने का समय प्रतिदिन 2-30 से 4 बजे सायकाल का रखा गया।

—कृष्णा कोछड़
मन्त्री

समाचार और विचार

आर्य समाज तलवाड़ा में समारोह

आर्य समाज तलवाड़ा टाउनशिप में गत दिनों आर्य युवक सभा तलवाड़ा की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया गया। इस समारोह की अध्यक्षता श्री रोशनलाल जी आर्य सयोजक आर्य युवक सभा पजाब ने की सब से पहले यज्ञ किया गया। उसके बाद बच्चो का प्रोग्राम हुआ जिसके अन्तागत नन्हे मुन्ने बच्चो ने सुन्दर 2 भजन, वेद मन्त्र, और स्वामी जी के जीवन पर विचार दिये। प्रोग्राम मे हिस्सा लेने वाले प्रत्येक बच्चे को आर्य युवक सभा तलवाड़ा द्वारा ईनाम देने का प्रबन्ध था श्री रोशनलाल जी आय आर्य श्री अश्वनी कुमार जी सयोजक तलवाड़ा शाखा द्वारा सब बच्चो को ईनाम दिये गये।

वेद प्रचार मण्डली लुधियाना न बहुत ही सुन्दर और ईश्वर भक्ति के भजन सुना कर लोगो के दिना को मुग्ध कर दिया। आय भजन मण्डली तलवाड़ा के यवको श्री जगतसिंह जी, सखदेव जी, तबला मास्टर पटाका द्वारा बहुत ही क्रान्तिकारी और देश भक्ति क भजन पेश किए गए। श्री प सूयपाल जी शास्त्री लुधियाना, श्री अमरनाथ जी आर्य उप प्रधान आर्य समाज तलवाड़ा, श्री रोशनलाल जी आर्य सयोजक आय युवक सभा। श्री मनोहर लाल जी आय, ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाजलिया अर्पित की।

अन्त मे आय युवक सभा तलवाड़ा की ओर से श्री रोशनलाल जो आय ने अपने पवित्र हाथो से माता विद्यावती जी को सम्मानित किया। विद्यावती जी इस समय 55 वष की हैं। जो तलवाड़ा आर्य समाज मे यहा से 7 किलोमीटर दूर हाजीपुर से प्रत्येक शनिवार और इतवार को चाहे सर्दी हो वर्षा हो आकर हवन करती है और प्रत्येक सत्सग मे आती है। उनकी आय समाज म श्रद्धा विश्वास और प्रेम को देखते हुए उन्हे सम्मानित किया गया। आय युवक सभा तलवाड़ा क नौजवा। श्री अश्वनी कमार सयोजक, श्री वीरेन्द्र और शिवकुमार कपिल देव, कम-कुमार न बहुत ही अच्छी तरह सार प्रोग्राम चलाने मे मेहनत और लग। स कार्य किया।

—मनोहरलाल आय

डी.ए.वी. नैतिक शिक्षा संस्थान नई दिल्ली का उद्घाटन समारोह

रविवार एक फरवरी 198" को प्रात 11 00 प्रात आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर माग नई दिल्ली मे डी ए वी नैतिक शिक्षा सस्थान का का उदघाटन समारोह सम्पन्न होगा। समारोह की अध्यक्षता आय प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो वेद व्यास जी करेंगे। और आय समाज के यशस्वी स यासी पूज्य अमर स्वामी जी महाराज उद्घाटन करेंगे। इस अवसर पर दिल्ली के समस्त आय समाजो के अधिकारी गण व विशिष्ट व्यक्ति तथा स्थानीय डी ए वी स्कूलो के प्राचाय व धर्मशिक्षक उपस्थित रहेंगे।

—रामनाथ सहगल
मन्त्री

स्वर्गीय स्वामी स्वातन्त्र्यानन्द जी महाराज का जन्मदिन

पौष मास की पूर्णिमा (14 1 87 को आर्य वानप्रस्थ आश्रम बठिण्डा मे स्वर्गीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म दिन मनाया गया। इस अवसर पर श्री ओम् प्रकाश जी आर्य वानप्रस्थी ने अपने पूज्य गुरुदेव जी के जीवन की शिक्षादायक घटनाओ को बताते हुए उनके तप त्याग और आर्यसमाज के प्रति बलिदानी जीवन की प्रशसा की। उन को एक प्रकार की चलता फिरता आर्य समाज बताया—रामामण्डी (बठिण्डा) क्षेत्र में जब भी आते थे—उनके आने से आर्य परिवारो को नया उत्साह एव सेवा की बड़ी प्रेरणा मिलती थी।

—ओमप्रकाश आर्य वानप्रस्थी

अम्बाला छावनी में शान्ति यज्ञ सम्पन्न

वैदिक प्रचार मण्डल 72 बी गोविन्द नगर की ओर से खुले मैदान मे शान्ति यज्ञ पारिवारिक सत्सग बड़े उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर ओजस्वी वक्ता प देवव्रत जी के विचारो तथा प प्रेम दत्त जी के भजनो को उपस्थित भाई बहनो ने बड़े ध्यान से सुना। समारोह के अध्यक्ष श्री प्रदीप कासनी, प्रशासक नगरपालिका ने मण्डल को इस आयोजन पर बधाई देते हुए युवको को धर्म मे तथा राष्ट्र के कार्यों मे हिस्सा लेन की प्ररणा दी।

मन्त्री महोदय ने इस अवसर पर प्रशासक महोदय को सत्यार्थ प्रकाश भट किया तथा उस पढने का आग्रह भी किया। जिसे प्रशासक जी ने पढने का आश्वासन दिया कहा कि मण्डल को मेरा सहयोग बराबर मिलता रहेगा। मन्त्री ने मण्डल की रूप रेखा बताते हुए मण्डल के सदस्य बनकर देश धर्म की एकता एव वैदिक सस्कृति के प्रचार मे मण्डल को सहयोग दने का आग्रह किया किया। इस अवसर पर सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि इस मे सिख परिवारो ने सनातनी परिवारो ने आय समाजी परिवारो आदि ने हिस्सा लिया तथा कायक्रम की सराहना की।

मण्डल प्रत्यक रविवार को 3 बजे से 5 बजे साय किसी न किसी परिवार मे पारिवारिक सत्सग का आयोजन करता है।

—वेदमित्र हापुड वाले

आर्य समाज सदर बाजार दिल्ली का शताब्दी समारोह

आय समाज सदर बाजार दिल्ली म आगामी अप्रैल मास सन 1987 मे अपना शताब्दी समारोह एवम स्मारिका (इतिहास) का विमोचन करने जा रहा है। सभी आर्य सन्यासी गण, शास्त्रार्थ महारथी, आय विद्वानो एवम् भजनोपदेशको से साग्रह निवेदन है कि उपरोक्त आय समाज से सम्बन्धित जिन किसी भी महानुभावो क पास सस्मरण हो, वो कृपया फरवरी मास सन 1987 तक मन्त्री जी आय समाज सदर बाजार दिल्ली के पास भेजने कष्ट करें।

—वैद्य इन्द्रदेव
मन्त्री

(प्रथम पष्ठ का शेष)

जुड़ जाएगा और हम एक सशक्त जीवन्त हो जाएग।

आईये हम अपने जीवन मे ब्रह्मयज्ञ की उपासना के द्वारा परम ब्रह्म को प्राप्त कर ब्रह्म (महान) बन जाए। (सन्दभ—1 "स वा एष महानजन ब्रह्म भवति व एव वेद" वृहदा उप अ, 45 बा 4,25) क्योकि वह परमात्मा है हम आत्मा है, वह परम ब्रह्म है हम ब्रह्म हैं। हमारे इस मनष्य जीवन की साथकता उस परमपिता के गणो को धारण करने मे ही है। हम तभी उस पिता के पुत्र कहलाने के सच्चे अधिकारी होंवे। (2—त्व हि न पिता वसो त्व माता शतक्रतो वभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे ॥ साम उत्त प्रपा 4 2 13 2, स न पितेव सुनवेऽग्ने ऋ 1 1 9) और इस प्रकार हम उसको अपने मे धारण कर धार्मिक बन सकते हैं।

गोनियाना मण्डी में मकर संक्रान्ति पर्व पर हवन यज्ञ तथा प्रचार

गत दिनो मकर सक्रान्ति पव पर श्री जगदीश राय जी मन्त्री आर्य समाज गोनियाना (बठिण्डा) ने अपने परिवार मे श्री ओम् प्रकाश जी आर्य वानप्रस्थी अधिष्ठाता आर्य वानप्रस्थ आश्रम बठिण्डा को बुला कर अपने घर हवन यज्ञ कराया और इस अवसर पर श्री जगदीश राम जी ने एक सिंटस मेट्र आर्य वानप्रस्थी आश्रम बठिण्डा को दान दिया, उसी दिन श्री ज्ञान चन्द जी सपुत्र श्री रामजी दास जी गोनियाना ने अपने नए मकान में गृह प्रवेश सस्कार पर हवन यज्ञ कराया।

—ओमप्रकाश आर्य वानप्रस्थी
वानप्रस्थ आश्रम बठिण्डा

मकर संक्रान्ति पर्व समारोह

आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर जालन्धर मे मकर सक्रान्ति 14 जनवरी 1987 बुद्धवार प्रात 8 बजे से 10 बजे तक बडी धूमधाम से मनाइ गई जिसमे यजुर्वेद की पूर्णाहुति 9 बजे प्रातः डाली गई। जिस मे श्री नरेश जी शास्त्री आचार्य गुरुकुल करतारपुर ने यजमानो को आर्शीवाद देने के पश्चात मकर सक्रान्ति पर प्रकाश डाला और करतार पुर के ब्रह्मचारी द्वारा भजन श्रद्धा से हुआ। उसके पश्चात रेवडियो का प्रसाद बाटा गया।

—मुलखराज आर्य

शुद्धि के लिए ५०० रु. भेजा

आर्य समाज सिविल लाईन लुधियाना की ओर से 500 रुपये उत्कल आर्य समाज को शुद्धि के कार्य के लिए भेजा। उत्कल मे शुद्धि का कार्य जोरो से चल रहा है। उनका भेजा हुआ परिपत्र समाज म पढकर सुनाया। इस पर सभी सदस्यो ने 500 रु भेजना स्वीकार किया।

—वैद्य वेणी सा. शास्त्री
मन्त्री आर्य समाज

आर्य समाज झाझर बुलन्दशहर का स्थापना दिवस

आर्य समाज झाझर गाव जिला बुलन्दशहर के प उदय श्रेष्ठ धर्माचार्य की अध्यक्षता मे आर्य समाज का प्रथम स्थापना दिवस विशेष यज्ञ, सगीत, प्रवचन व प्रीतिभोज सहित सम्पन्न हुआ। वर्ष 1987 के लिए निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए

स सरक्षक—प उदय श्रेष्ठ, प्रधान—श्री रामसिंह आर्य, मन्त्री—श्री महेशचन्द्र रहेर कोषाध्यक्ष श्री भदई राम लेखानिरीक्षक—प क्षत्रपाल आर्य पुस्तकालयाध्यक्ष श्रीमती चन्द्रवती आर्य वस्त्रभण्डाराध्यक्ष , भगवानी देवी आर्य। महेशचन्द्र मन्त्री

राष्ट्रीय पर्वों तथा संविधान के अपमान करने वालों को भारतीय नागरिकता से पृथक कियाजाए

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने भारत के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी जी से यह माग की है कि श्री सैय्यद शाहबुद्दीन तथा उनके अन्य सहयोगी जिन मुस्लिम नेताओ ने मुसलमानो को गणतन्त्र दिवस के बहिष्कार का फतवा दिया है, उनके विरुद्ध कठोर कानूनी कार्यवाही तथा उनकी लोकसभा की सदस्यता समाप्त की जानी चाहिए। श्री तिवारी ने कहा कि भारत की एकता एव अखण्डता को बनाये रखने के लिए आवश्यक हो गया है कि क्षेत्र वाद, जातिवाद भाषावाद, भाषा व धर्म के नाम पर जो शक्तिया भारत को विभाजित करना चाहती है उनके विरुद्ध आर्य समाज जन जागरण अभियान प्रारम्भ करेगा। पजाब, बगाल, आसाम और कश्मीर में धर्म, जाति, पार्टी और भाषा के नाम पर भारत को खण्डित करने का जो कुचक्र चल रहा है उसे आर्यजन कभी सफल नहीं होने देंगे। साथ ही जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर तथा अन्य नेताओ से माग की है कि श्री शाहबुद्दीन जैसे लोगों को पार्टी से तुरन्त निकाला जाए अन्यथा जनता पार्टी के नेताओं का घेराव किया जायेगा।

—मनमोहन तिवारी
मन्त्री

सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि. न. NWJL55

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र।

वर्ष 18 अक 44, 26 माघ सम्वत् 2043 तदानुसार 8 फरवरी 1987 दयानन्दाब्द 161 प्रति अक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

परमात्मदेव सत्यमेव अग्रणी है?

लेखक—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष
वैदिक सस्थान नजीबाबाद (उ प्र)

स न पितेव सूनवे ऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा न स्वस्तये ॥ ऋ 1।1।9॥

वेदो में अग्नि शब्द का प्रयोग अत्यधिक हुआ है। ऋग्वेद का तो प्रारम्भ ही अग्नि शब्द से हुआ है तथा उसके प्रथम सूक्त का नाम ही अग्नि सूक्त है। प्रस्तुत मन्त्र उक्त सूक्त का ही है। वेद के अन्य शब्दो की भाति अग्नि शब्द के अनेक अर्थों मे से एक अर्थ ईश्वर भी है। प्रस्तुत मन्त्र मे अग्नि शब्द से ईश्वर ही को सम्बोधित किया गया है।

'अग्रणी भवति' आगे चलने वाला होता है। 'वा अग्रे अग्र नयति' जो आगे-आगे अर्थात आगे और आगे निरन्तर तथा उत्तरोत्तर आगे ही आगे ले जाता है, आगे ले जाने वाला होता है वह अग्नि कहाता है।

परमात्मदेव सत्यमेव अग्रणी है, है न—'ईशावास्यमिद सर्वम्, इद सर्व ईशावास्यम्' इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मे ईश्वर का वास है। सम्पूर्ण क्या? सर्व किम? कि इदम् सर्वम? यह सम्पूर्ण क्या है? समस्त जगत विश्व ब्रह्माण्ड 'यत्किञ्च जगत्या जगत्' जगत्या पृथिवी पर या जगती अर्थात् सृष्टि में 'यत्किञ्च' जो कुछ भी 'जगत्' गतिशील है। इस ससार में जो कुछ भी है और वह सब जिस प्रकार की भी गतिविधि में स्थित है, उस सम्पूर्ण में ईश्वर बसा हुआ है।

है कोई ऐसा स्थान जहा ईश्वर न हो। जब प्रत्येक स्थान पर वह है और आपके पहुचने के पहले ही उपस्थित है तो हुआ न अग्रणी। आदि सृष्टि में ही उस प्रभु ने ज्ञान को, शाश्वत सत्य को, ज्ञान के भण्डार शाश्वत सत्य के कोष वेद को मानव के हितार्थ, उसके उन्नत होने के लिए आदिकाल के महा-मानव चार ऋषियो के हृदय में प्रकट कर दिया। इसी कारण से वह आगे, उन्नति की ओर ले जाने वाला है।

"अन्चु गति पूजनयो" (अग,अगि, इण) यह गत्यर्थक धातु है, इनसे अग्नि शब्द बनता है। 'गतेस्त्रयोऽर्था, ज्ञान, गमन प्राप्तिश्चेति पूजन नाम सत्कार' गति के तीन अर्थ हैं—ज्ञान, गमन और प्राप्ति तथा पूजन नाम है सत्कार का। "यो ऽञ्चति अच्यते ऽगत्यङ्गत्येति वा सोऽयमग्नि" जो ज्ञान स्वरूप सबको जानने प्राप्त होने और पूजा करने योग्य है, वह परमेश्वर अग्नि है। सामान्यतया यदि विचार किया जाए तो यह कहा जा सकता है कि जिस प्रकार भौतिक अग्नि स्वय प्रकाशित होने से ससार को प्रकाशित करता है और यथा प्रकाश मे, प्रकाश के द्वारा समस्त पदार्थों का ज्ञान होता है तद्वत परमात्मा अपने प्रकाश से प्रकाशित है अर्थात स्वय प्रकाश स्वरूप है, ज्ञान स्वरूप है और सारे ससार का ज्ञानदाता, प्रकाश प्रदाता होने से अग्नि है। वही पूजा करने आराधना, उपासना करने के योग्य है।

(स) वह प्रभु, वही ज्ञान का भण्डार और ज्ञानदाता अग्निस्वरूप प्रभु भक्त भगवान को पुकार रहे हैं, वह अपने एकमात्र और सर्वोच्च आश्रयदाता पर विश्वास रखते हैं। भक्तो का आल-म्बन, उनका आश्रय हो ही कौन सकता है उस प्रभु के अतिरिक्त, यदि कोई अन्य सहायक होता है तो वह भी प्रभु कृपा से ही। परमात्मा के सहस्रों हाथ हैं उसके हाथ हमारे हाथो जैसे नही होते। उसके हाथ तो उस परम कृपालु परमात्मदेव की कृपा के ही हाथ होते हैं। वह स्वय शरीर धारण कर हाथ पैर वाला बनकर सहायता करने नही आता अपितु अपनी सर्वव्यापक शक्ति द्वारा अन्त प्रेरणा करके मानवो को ही सहायक बना देता है। अनेक बार प्रत्यक्ष देखा जाता है कि जो मनुष्य अत्यन्त क्रूर स्वभाव के होते है वह भी किसी व्यक्ति विशेष के लिए अत्यन्त कृपालु व दयालु बन जाते हैं। उनके भी पाषाण हृदय मोम बन जाते हैं पिघल जाते हैं। अनेक बार तो महा शत्रुता रखते हुए कुटिल स्वभाव के व्यक्ति भी प्रतिद्वन्दी के प्रति भी अकस्मात दयार्द्र होते पाये जाते हैं। अत्यन्त क्रूर तथा हिंसक स्वभाव वाले पशु भेड़ियो को स्व स्वभाव के विरुद्ध मानव शिशुओ का पालन करते हुए पाया गया है। यह सब उस परम पावन प्रभु की परम कृपा ही तो है। इसी कृपा की आशा मे प्रभु के इस परम कृपालु स्वभाव के विश्वास पर ही तो वैदिक भक्तो ने प्रभु को पुकारा है। उन्होने कहा है हे प्रभो! आप अपने ज्ञान भण्डार और ज्ञानदाता होने से अग्नि स्वरूप हो हम आपसे आपके शरणागत होकर यह याचना करते हैं कि आप (न) हमारे लिये (सूनवे पिता इव) पुत्र के लिए पिता जैसे—ठीक इसी प्रकार (सूपायन भव) सुख के लिये पदार्थों की प्राप्ति कराने वाले हो जाए।

पुत्रो के लिये पिता अपना सब कुछ अर्पित कर देता है। अर्पित ही नही करता अपितु पिता का सब कुछ होता ही पुत्र के लिए है। पिता का तो जीवन मरण सभी कुछ सन्तान के लिये होता है। पिता स्वय को आपत्ति मे डालकर भी पुत्र के लिए, पुत्र की आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए, पुत्र के पालन और पोषण के लिए धन कमाता है। पिता ही जो ठहरा 'पित पा रक्षण — पा' धातु से पिता शब्द बनता है। 'पा' धातु का अर्थ है पालन और रक्षण करने वाला। महर्षि यास्क के शब्दो मे "पाता-पिता पोषयिता रक्षयिता वा" पालन-पोषण और रक्षण करने से पिता कहलाता है। पुत्र के [illegible] तथा रक्षणार्थ पिता सम्पूर्ण शक्ति [illegible] मनसा [illegible] होकर साधन सग्रह करता है। पिता की इच्छा होती है कि चाहे कितने भी कष्ट भोगने पड़े किन्तु उसकी सन्तान सुखी रहे। वह स्वय रूखी सूखी खाकर फटे कपडो मे रहते हुए भी सन्तुष्ट रहता है किन्तु पुत्र को अच्छे से अच्छे तथा सुन्दर से सुन्दर और मूल्यवान से मूल्यवान वस्त्र पहन कर स्व सौभाग्य को सराहता और प्रसन्नता मे फूला नही समाता है। कितनी उच्च और पवित्र है यह भावना, जो उस व्यक्ति मे होती है जिसे पिता शब्द से पुकारा जाता है। पिता शब्द परमात्मा के लिए ठीक ही प्रयुक्त हुआ है। वैदिक भक्तो की कामना है कि ऐसी ही भावना प्रभु की भी हमारे प्रति हो।

भक्तो की कामना उचित ही है उन्होने इतने सुन्दर शब्दो मे अपनी कामना व्यक्त की है कि जिनसे सुन्दर शब्द दूसरे नही हो सकते। प्रभु तो स्वय ही पिता है एक दो दस बीस अथवा किसी वर्ग विशेष के नही अपितु सारे ससार के विश्व जगत के और केवल मानवमात्र के ही नही अपितु प्राणी मात्र के पिता ही हो, सो बात भी नही, वह तो पिताओ के भी पिता हैं तब फिर उन जैसे पावन देव के लिये सूनवे पिता इव पुत्र के लिए पिता जैसे शब्दो का प्रयोग अत्युत्तम और सार्थक है। हो भी क्यो नहीं वैदिक भक्तो के द्वारा प्रभु से प्रार्थना करते समय इसी प्रकार के शब्दो का प्रयोग शोभा देता है।

प्रभु से मांग है कि आप पिता की भाति (सूपायन भव) सुख के हेतु पदार्थों की प्राप्ति कराने वाले हो। परमात्मा तो समस्त ससार के स्वामी हैं। ससार की समस्त सम्पत्ति उन्ही की है। वह लक्ष्मीपति हैं, लक्ष्मीपति, लक्ष्मी अर्थात् सम्पत्ति के स्वामी। जब समस्त सम्पत्ति के स्वामी तो प्रभु हैं तो मांगे किससे?

(शेष पृष्ठ 7 पर)

अमृत की खोज में

लेखक—प्रा श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य
साधु आश्रम (होशियारपुर)

अमृत नगर से एक मील की दूरी पर बाईपास के समीप एक छोटा सा उद्यान है। जिस के मध्य में एक प्रांगण और कुछ कमरे हैं। यह स्थान विवेक वाटिका के नाम से प्रसिद्ध है। इस के प्रबन्धक विवेकशील जी हैं, जिन्होंने चार वर्ष पूर्व स्थानीय कालेज से अवकाश प्राप्त किया था। आप इतिहास, समाज शास्त्र और संस्कृत साहित्य में निष्णात हैं। कार्यमुक्त होने से पूर्व आपने कुछ सहयोगियों के सहयोग से आश्रम की योजना प्रारम्भ की थी। यहां का औषधालय, वाचनालय एवं पुस्तकालय जहां जनता की सेवा में तत्पर हैं, वहां यहां के तीनों निवासी अपने ध्यान, स्वाध्याय और आश्रम के कार्य को करते हुए जनता को हर प्रकार का सहयोग देने के लिए तैयार रहते हैं। कुछ सत्संगी बन्धुओं के अनुरोध पर स्वाध्याय के साथ सत्संग की भी नियमित योजना आरम्भ की गई।

एक दिन सत्संग से पूर्व एक सज्जन ने महात्मा जी से कहा, मैं आज एक पत्रिका पढ़ रहा था, उस में अमृत पर एक लेख था, जिसमें अमृतपान से देवों के अमर होने की चर्चा थी। तभी श्रवण प्रिय ने कहा—हां, मन्दिर में एक दिन पण्डित जी ने पुराणों की समुद्रमन्थन वाली कथा सुनाई थी, जिस में इसका विस्तृत वर्णन था। तब सत्संग प्रिय ने विवेक जी से प्रार्थना की, कि आगामी सत्संगों में इसी पर ही विचार चर्चा चलाई जाए तो क्या ही अच्छा हो। इस में आप यह समझाने की कृपा करें, कि यह अमृत क्या है। जिस के सेवन से कोई अमर बन जाता है। इस जिज्ञासा को ध्यान में रखकर महात्मा जी ने आज का प्रवचन प्रारम्भ किया।

हमारे साहित्य में स्थान स्थान पर अमृत की चर्चा मिलती है, उस को बार बार पढ़ने पर भी अनेकों की जिज्ञासा बनी रहती है और नाना तरह के प्रश्न उनके मन में उभरते हैं। जिन का समाधान खोजने के लिए हमें सर्वप्रथम अमृत शब्द को समझना चाहिए। न+मृत को अमृत कहते हैं और मृत का अर्थ है—मरा हुआ या जो मर जाए, नष्ट हो जाए टिका न रहे। अतः अमृत का सीधा सा अर्थ हुआ जो न मरे नष्ट न हो, टिका रहे और यही अर्थ अमर का भी है। इस का एक अभिप्राय यह भी निकलता है, कि जिस के बिना कोई मर जाए नष्ट हो जाए, टिका न रहे, उसको भी अमृत कहते हैं क्योंकि विष और अमृत परस्पर विरोधी शब्द हैं। मौत के साधन को या किसी की मौत का कारण बनने वाली वस्तु को विष कहते हैं। अतः जीवन तथा जीवन दायक वस्तु का नाम भी अमृत है। इस सारी भावना को सामने रख कर आप में से कुछ सज्जन पहले अपने विचार रखें। अन्त में उन सब विचारों की अगले सत्संग में मीमांसा करेंगे।

महात्मा जी के निर्देश पर सर्वप्रथम रसप्रिय ने कहा—अमृत शब्द का सरल सा अर्थ यह हुआ, कि जिसके बिना कोई मर जाए। हम प्रायः पढ़ते हैं कि गर्मी में सैंकड़ों जल के बिना मर जाते हैं। अतः एव जल को जीवन और अमृत के नाम से भी याद किया जाता है और यज्ञ आरम्भ करते हुए, जल हथेली पर लेकर कहते हैं 'अमृतोपस्तरणमसि' इस के पश्चात् कुछ और सज्जनों ने क्रमशः कहा—जल की तरह ही भोजन, वस्त्र, भवन आदि भौतिक सुविधाओं के बिना प्रतिवर्ष अनेकों मर जाते हैं। साहित्य में अन्न आदि के लिए अमृत शब्द का प्रयोग किया गया है। ये मृत-स्थिति से दूर रखने के कारण ही अमृत कहे जाते हैं।

दूसरे सत्संग को शुरू करते हुए एक दिन विवेकशील जी ने कहा, कि हम प्रायः देखते हैं, कि अन्न से बने हुए खाद्य पदार्थों की अपेक्षा दूध से बने हुए खाद्य पदार्थ और दूध से बने हुए और उन की अपेक्षा भी घी से बने खाद्य पदार्थ तथा स्वयं घी अधिक दिन टिकता है। यही बात इनके खाने पर तज्जन्य रस आदि पर भी लागू होती है। अतः साहित्य में दूध तथा घी को अमृत कहा गया है और स्वाद, रूप तथा लाभ की दृष्टि से 'क्षीरमन्नभोजनम्' की उक्ति किस ने नहीं सुनी। इसी दृष्टि से ही गीता की उपमा 'दुग्धामृत' से दी गई है। दूध आदि से कायाकल्प की जहां आयुर्वेद में चर्चा है, वहां मृत की एक उत्तम औषधि के रूप में बताया गया है। आयुर्वेद की चिकित्सा पद्धति में सोने से बल, पुष्टि और दीर्घ आयु देने वाली वहां अनेक प्रकार की औषधियां तैयार की जाती हैं। वहां भौतिक दृष्टि से भी सोना एक विशेष धातु के रूप में प्रसिद्ध है और इसीलिए सारे देशों की मुद्राओं के मानदण्ड का आधार भी सोना ही है, तभी तो साहित्यकार सुवर्ण को अमृत के रूप में बताते हैं।

भारतीय दर्शनों में रसेश्वर के नाम से एक दर्शन है, जिसमें पारे को विशेष विधिपूर्वक सेवन से दीर्घ आयु मिलने की चर्चा है। वेद एवं वैदिक वाङ्मय में सोम को अनेक स्थानों पर अमृत कहा है तथा इस के पान से अमर होने की चर्चा है। ऐसे ही जो व्यवहार, बातें, सत्य वैयक्तिक और सामाजिक जीवन तथा व्यवस्था को बनाए रखते हैं, उन तत्त्वों को भी 'सत्ये हि अमृतमाश्रितम्' 'वेला अमृत गया, आदि साहित्यिक वचनों में अमृत कहा गया है।

तीसरे सत्संग का उपसंहार करते हुए एक दिन विवेक जी ने कहा—अब तक के विवेचन से यह सिद्ध होता है, कि अमृत की परिभाषा के अनुसार जो भी किसी के टिकाव का कारण होता है, उस को अमृत कहा जाता है। इस सारे की समीक्षा से पहली बात तो यह सामने आती है, कि जहां संसार में जल आदि के अभाव में सैंकड़ों मर जाते हैं, वहां इन के होते हुए भी अनेकों मर जाते हैं। अतः ये सब भौतिक पदार्थ आंशिक रूप से ही अमृत हैं।

महात्मा जी ने चौथे सत्संग का श्रीगणेश करते हुए कहा, पूरी तरह से अमृत तो आत्मा ही है, क्योंकि अमृत की परिभाषा आत्मा पर ही पूरी तरह से लागू होती है। इसीलिए सभी शास्त्रकार स्थान स्थान पर संकेत करते हुए कहते हैं, कि इस अजर-अमर आत्मा को न तो कोई किसी प्रकार का शस्त्र काट सकता है, न ही अग्नि से यह जलता है और न ही किसी प्रकार की वायु इस को सुखा सकती है, अर्थात् यह किसी भी ढंग से नष्ट नहीं होती।

महात्मा जी ने समझाया, कि आत्मा की सत्ता केवल काल्पनिक नहीं है। प्रत्येक शरीर का व्यवहार और अनुभव जहां इस की सत्ता को सिद्ध करते हैं, वहां अनेक दर्शनों में बड़ी सुन्दर युक्तियों से आत्मा की सत्ता समझाई गई है। दर्शनों और उपनिषदों में आत्मा के स्वरूप को भी सोदाहरण स्पष्ट किया गया है।

अमृत की चर्चा का उपसंहार करते हुए विवेकशील जी ने कहा, कि अमृत की पूर्ण परिभाषा परमात्मा पर ही पूर्णतः चरितार्थ होती है। पर हम ने इस चर्चा को अमृत के पान से होने वाली अमरता के आधार पर ही प्रारम्भ किया था। जिस का भाव है कि अमृतपान के पहले के अमर नहीं थे। अतः प्रसंग के अनुसार यहां जीवात्मा की ही चर्चा है। यह ठीक है कि अपने स्वभाव से जीव भी अजर-अमर है। अतः प्रस्तुत प्रसंग में शरीरधारी आत्मा को अपनी अनुभूति एवं आत्मज्ञान करना ही अमृत चर्चा का मूल अभिप्राय है। जिस की ओर संकेत करते हुए ही याज्ञवल्क्य ने मैत्रेयी से कहा था—आत्मा वा अरे और इस की प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए ही महर्षि मनु ने 'विद्यातपोभ्यां भूतात्मा' का संकेत किया है। विद्या और तप जिस रहस्य का यहां निर्देश करते हैं, वही योग भाष्य एवं सत्यार्थ प्रकाश में उद्धृत 'स्वाध्यायाद् योगमासीत' में है। अध्यात्मशास्त्रों की सूक्तियों की ओर संकेत करते हुए महात्मा जी ने कहा—वस्तुतः मानव जीवन की सफलता इसी में ही है, कि अपने आप को समझा जाए। यह केवल चर्चा का विषय नहीं, अपितु अनुभव करने की बात है, तभी तो उपनिषद् के ऋषि ने कहा था—'नानुध्यायाद् बहून् शब्दान् वाचोविग्लापनं हि तत्'—शब्दों के जाल में ही उलझा नहीं रहना चाहिये यह तो सब वाणी की ही थकावट होगी। संक्षेप रूप से बताई गई इस 'अमृत की खोज' को 'दैनिक प्रार्थना तथा सत्संग' ने छपवा दिया है। अतः विस्तार से जानने की इच्छा वाले वहां से पुस्तक मंगवा सकते हैं।

—

नामकरण संस्कार सम्पन्न

स्थानीय आर्य युवक सभा-बरनाला के प्रधान श्री मुन्ना लाल जी सामसन्धवाला योगेश के निवास पर गत दिवस उनके सुपुत्र का नामकरण संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से यज्ञ द्वारा सम्पन्न हुआ। प. सूर्यपाल शास्त्री एम ए लुधियाना ने संस्कार कराया। जिला आर्य सभा संगरूर के संरक्षक त्याग मूर्ति महात्मा प्रेम प्रकाश जी विशेष रूप से आशीर्वाद देने के लिए पधारे।

—हरीश गुप्ता
मन्त्री

[illegible]

सोमनाथ का मन्दिर और बाबर की मस्जिद—3

यह मुकद्दमा एक फरवरी 1986 तक चलता रहा। उसी दिन शाम के चार बज कर 40 मिनट पर जिला न्यायाधीश ने अपने निर्णय को सुनाते हुए इस मन्दिर के ताले खोलने की अनुमति दे दी। सरकार ने सभी प्रबन्ध पहले ही कर रखे थे। इसलिए पुलिस भी वहां भारी संख्या में मौजूद थी। ज्यों ही यह फैसला सुनाया गया हजारों लोग इस मन्दिर के गिर्द जमा होने लगे। वह नाचते थे, गाते थे और भगवान राम की जय के नारे लगाते थे। कुछ ही क्षणों में सम्पूर्ण अयोध्या का वातावरण बदल गया। ऐसा प्रतीत होने लगा कि सदियों से सोया अयोध्या फिर जाग उठा है।

इस मन्दिर ने आम लोगों की भावनाओं को किस तरह जागृत किया था इसका कुछ अनुमान एक उदाहरण से लगाया जा सकता है। अयोध्या में कोई 6 हजार के लगभग छोटे-बड़े मन्दिर हैं परन्तु सबसे अधिक महत्व राम जन्म-भूमि के मन्दिर को दिया जाता है। 37 वर्ष पूर्व जब इस मन्दिर पर पहली बार ताला लगाया गया तो एक नौजवान सन्यासी ने उसके बाहर आकर अपनी कुटिया डाल ली, वहीं रहने लगा और केवल फल खाता था। प्रातः शाम उस मन्दिर की ओर मुंह करके भगवान राम की पूजा करता और उसने कहा कि जब तक यह मन्दिर हिन्दुओं को वापस नहीं दिया जाता वह अन्न ग्रहण नहीं करेगा। 37 वर्ष हो गए हैं उसने अन्न ग्रहण नहीं किया। अब उसके बाल भी सफेद हो गए हैं, वह बूढ़ा होने लगा है परन्तु भगवान राम का भक्त है। अपना शेष जीवन उसी मन्दिर के बाहर गुजारना चाहता है। किसी से पैसा नहीं मांगता न कुछ और लेता है। केवल राम नाम का जाप करता है।

शहाबुद्दीन और उस जैसे अन्य लोग क्या समझें कि राम जन्म भूमि हिन्दुओं के लिए कितना महत्व रखती है। इसके सम्बन्ध में जो बहस अब प्रारम्भ की गई है कि वह इस प्रकार आधारहीन और निरर्थक है।

किसी समय में बाहर से आए कुछ आक्रमणकारियों ने हमारे मन्दिरों को गिरा करके उन पर मस्जिदें बना दी थीं तो क्या हम उन्हें इसलिए स्वीकार करें कि यह सब कुछ इस्लाम के नाम पर किया गया था? प्रश्न केवल सोमनाथ मन्दिर का ही नहीं जिसे महमूद गजनवी ने कई बार लूटा था और इसके सोने के दरवाजे भी उखाड़ कर ले गया था। न ही यह प्रश्न केवल राम जन्म भूमि का है जिसके स्थान पर बाबर ने मस्जिद बना दी थी। हम यह भी जानते हैं कि बनारस के विश्वनाथ मन्दिर और मथुरा के केशव मन्दिर के स्थान पर भी मस्जिदें बनाई गई थीं। केवल यह ही नहीं औरंगजेब तो इससे भी आगे गया था। उसने गुरु तेगबहादुर को दिल्ली में बुला कर उन्हें शहीद किया था। उनके साथ भाई मतिदास और भाई दयाल दास के साथ जो पाशविक व्यवहार किया गया था उसे हम कैसे भूल सकते हैं। गुरु गोबिन्द सिंह जी के साहबजादों को दीवार में चिनवाने वाले आखिर कौन थे? और गुरु गोबिन्द सिंह को दो पठानों से मरवाने वाले कौन थे? लाहौर में गुरुद्वारा शहीद गंज को एक मस्जिद का रूप देने वाले कौन थे?

निष्कर्ष यह कि मुगलकाल के कुछ ऐसे चिन्ह आज भी मौजूद हैं जिन्हें देख कर हिन्दुओं को अपने पतन का समय स्मरण हो जाता है। बाबर, औरंगजेब, महमूद गजनवी, मुहम्मद गौरी यह सब इस देश की सन्तान न थे, बाहर से आए थे और इस्लाम के नाम पर कुछ ऐसे अत्याचार कर गए थे जिन्हें आज याद करके इस्लाम का वह रूप हमारे सामने आता है जो अत्यन्त भयानक है और जिसे देख कर यह विचार उत्पन्न होता है कि यदि इस देश में इस्लाम के सभी चिन्ह मिटा दिए जाएं तो इस्लामी दौर में हमारे देश में जो कुछ हुआ था उसे हम शायद भूल सकें।

हम यह भी जानते हैं कि इस देश में मौलाना अब्दुल कलाम आजाद भी हुए थे, खान अब्दुल गफ्फार खां भी हुए थे। मुख्तार अहमद अन्सारी और रफी अहमद किदवई भी हुए थे। कहीं देश भक्त रफीक किचलू जैसे देश भक्त भी हुए थे। इनके वारिसों में कोई ऐसी बात नहीं करता जैसी कि बाबर, औरंगजेब के वारिस कर रहे हैं। स्वतन्त्रता के तुरन्त बाद जब सरदार पटेल सोमनाथ का मन्दिर बनवाने लगे उस समय भी किसी मुसलमान ने इसके विरुद्ध शिकायत न की थी आज बाबर और औरंगजेब के वारिस राम जन्म भूमि पर बनाई गई मस्जिद का रोना रो रहे हैं।

जो परिस्थितियां अब उत्पन्न हो गई हैं उनके इस पक्ष को समझने की आवश्यकता है कि जो मुसलमान इस देश में पिछले सौ डेढ़ सौ वर्ष से रह रहे हैं उनके साथ हमारा कोई झगड़ा नहीं है वह अपने धर्म की जैसे भी रक्षा करना चाहते हैं कर सकते हैं। इस समय हमारे देश में भी इनकी संख्या सात-आठ करोड़ के लगभग है। न वह यहां से निकल सकते हैं न हम इन्हें निकाल सकते हैं। परन्तु इतिहास को झुठलाया नहीं जा सकता। यह एक ऐतिहासिक वास्तविकता है कि इस्लाम इस देश में अरब से आया था। कोई सात सौ वर्ष पूर्व मुहम्मदबिन-कासिम नाम का एक व्यक्ति अरब से यहां आया था वह अपने साथ इस्लाम को भी लाया था। इसके बाद 1857 तक इस देश में विभिन्न रूपों में इस्लामी शासन चलता रहा है। यहां बाबर भी हुआ, औरंगजेब भी हुआ, शाहजहां भी हुआ, अकबर भी हुआ, और अन्त में बहादुरशाह जफर भी हुआ। यहां कुछेक मुसलमान शासकों ने तलवार के बल पर इस्लाम को फैलाने का प्रयास किया था और इसी सिलसिला में हमारे मन्दिरों को गिराकर उनके स्थान पर मस्जिदें बनाने का प्रयास भी किया। आज यदि कोई व्यक्ति यह कहे कि इन सभी घटनाओं को भुला दिया जाए तो यह सम्भव न होगा। इतिहास बदला नहीं जा सकता। जो लोग कहते हैं कि भूल जाओ कि बाबर या औरंगजेब ने क्या किया था। वह कल को कहेंगे कि गुरु तेग बहादुर के बलिदान के लिए कौन जिम्मेवार था यह भी भूल जाओ, यह न होगा।

आज यदि बाबर और औरंगजेब के वारिस यह चाहते हैं कि जो कुछ इन अत्याचारियों ने किया हम उसे भूल जाएं तो यह भी सम्भव नहीं। यह हमारी परतन्त्रता के दौर की निशानी है। इन्हें सहन नहीं किया जा सकता। सोमनाथ मन्दिर का निर्माण करते समय सरदार पटेल ने ठीक ही कहा था कि यदि यह मन्दिर नए सिरे से बना दिया जाए तो लोग धीरे-धीरे भूल जाएंगे कि कभी यहां कोई महमूद गजनवी भी आया था और उसने सोमनाथ मन्दिर को गिरा दिया था और इसके सोने के दरवाजे उखाड़ कर ले गया था। वह तो बाद में महाराजा रणजीतसिंह ने वापस लिए थे। इसी तरह यदि राम जन्म भूमि पर एक शानदार मन्दिर भगवान राम की याद में बनवा दिया जाए तो लोग धीरे-धीरे भूल जाएंगे कि बाबर कौन था और उसने अयोध्या में आकर क्या किया था।

हिन्दुओं का मुसलमानों से कोई झगड़ा नहीं है, न इस्लाम से कोई झगड़ा है। झगड़ा केवल उन लोगों से है जो अपने आपको बाबर और औरंगजेब के उत्तराधिकारी समझते हैं और गड़े मुर्दे फिर उखाड़ना चाहते हैं। यह लोग इस्लाम के शत्रु हैं अपनी कार्य पद्धति से यह हिन्दुओं में इस्लाम के विरुद्ध घृणा उत्पन्न कर रहे हैं। मौलाना आजाद भी तो मुसलमान थे। वास्तविकता यह है कि इन से बड़ा मुसलमान पिछले एक शताब्दी में इस देश में और कोई उत्पन्न नहीं हुआ। उन्होंने कुरान शरीफ पर जो पुस्तक लिखी थी, न इन से पहले कोई लिख सका था न शायद इनके बाद लिख सके। इन्होंने भी कभी यह प्रश्न न उठाए थे जो अब उठाए जा रहे हैं। मैं एक और मुसलमान नेता का उल्लेख भी करना चाहता हूं वह थे सर सैय्यद अहमद खां। उन्होंने अलीगढ़ में मुस्लिम विश्वविद्यालय की नींव रखी थी जो आज हमारे देश में इस्लामी शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र है। सर सैय्यद अहमद खां ने भी अपने समय में ऐसी कोई समस्या न उभारी थी। उन्होंने तो एक बार कहा था कि हिन्दू और मुसलमान सुन्दर दुल्हन के दो सुन्दर नेत्र हैं। यदि एक आंख भी फूट जाए तो दुल्हन का रूप ही बिगड़ सकता है।

निष्कर्ष यह है कि पुराने मुसलमानों का सोचने का ढंग और था। मुगल शासनकाल के समय जो कुछ हुआ था लोग उसे भी भूल रहे थे। परन्तु वर्तमान समय में दो कुछुन्द्र उत्पन्न कर दिए, एक का नाम मुहम्मद अली जिन्ना था और दूसरे का सैय्यद शहाबुद्दीन है। मुहम्मद अली जिन्ना जिसे कुछ पाकिस्तानी कायदे-आजम भी कहते हैं इस्लाम से बिल्कुल अपरिचित था उसने इस्लाम के नाम पर पाकिस्तान का "फितना" खड़ा कर दिया और अब शहाबुद्दीन एक और "फितना" खड़ा कर रहा है। अभी समय है जबकि इन लोगों पर यह स्पष्ट कर दिया जाए कि जिन लोगों ने बाहर से आकर हमारे देश पर शासन किया था। हमारे मन्दिरों को तोड़ा था, हमारे धार्मिक ग्रन्थों को जलाया था। हम उन्हें लुटेरे और डाकू समझते हैं। जो मुसलमान इस देश में पैदा हुए और इसे ही अपनी जन्म भूमि और पुण्य भूमि समझते हैं और जिनका यह विश्वास है कि,—

"खाके वतन का मुझको, हर जर्रा देवता है।"

उन्हें हम अपना भाई समझते हैं और उन्हें हर समय अपने गले से लगाने को तैयार हैं। शहाबुद्दीन जैसे लोगों को इस वास्तविकता को समझ लेना चाहिए बाबर और औरंगजेब की जो भी निशानियां हमारे देश में नजर आ रही हैं उन्हें समाप्त कर दिया जाए तो उचित है।

आजादी-ए-जमहूर का आया है जमाना,
जो नक्श-ए-कुहन तुमको नजर आए मिटा दो।

वीरेन्द्र

मानव जीवन का कायाकल्प

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातस्सोममुत रुद्रं हुवेम। ऋ. 7-41-1

पदार्थ—(प्रात) प्रातःकाल के समय मे (अग्नि) प्रकाश स्वरूप परमेश्वर वा ज्ञान वा सामर्थ्य तथा (प्रात) प्रात काल के समय मे (इन्द्रम) ऐश्वर्य आदि जीवनोपयोगी पदार्थों को (हवामहे) पुकारते हैं (प्रात) प्रात काल मे (मित्र) सर्वहितकारी ईश्वर सखापन को (वरुणा) सर्वश्रेष्ठ उत्तमता को (प्रात) प्रात काल मे (अश्विनी) सूर्य, चन्द्र वा प्राण अपान को (प्रात) प्रात काल मे (भग पूषण) पुष्टि कारक ऐश्वर्य को (ब्रह्मणस्पति) ब्रह्म निष्ठा को (प्रात) प्रात समय मे (सामम) पूर्ण शान्त वातावरण वा मानसिक शान्ति को (उत) और (रुद्र) रुद्र रूप परमात्मा को पाप कर्मों वा दूषित गुणो और रोगो को दूर करने के लिए (हुवम) पुकारते हैं अर्थात उसका ध्यान करते हैं।

भावार्थ—हम इस प्रात समय में ज्ञान स्वरूप परमेश्वर तथा सब समर्थ प्रभु को ऐश्वर्य आदि जीवनोपयोगी सभी पदार्थों के लिए पुकारते हैं। और प्रात काल मे सर्वहितकारी ईश्वर के सखापन को तथा जीवन की श्रेष्ठता वा उत्तमता को तथा प्रात समय में अपनी प्राण वा अपानरूपी शक्ति को तथा अपने पुष्टिकारक धन ऐश्वर्यों को और अपनी ब्रह्म निष्ठा और प्रात काल की ही शुभ वेला मे पूर्ण शान्त मन होकर अपने पाप कर्मों और दुःखो को तथा अपने रोगों वा दोषो का परित्याग करने के लिए कृतसंकल्प होते हैं।

व्याख्या—इस वेद मन्त्र मे ईश्वर ने सब मनुष्यो को अपने दिव्य जीवन का निर्माण करने के लिए कुछ विशेष गुणो को दृढ़ता से धारण करने और कुछ दुःख देने वाले दोषो आदि को बलपूर्वक दूर करने का उपदेश दिया है। यदि हम धारण करने योग्य गुणो को यथा समय यथोचित रीति से धारण करते हैं और अपने जीवन के दुर्गुणो को बलपूर्वक अपने जीवन से बाहर निकाल देते हैं। तो निस्सन्देह हमारे जीवन का दिव्य निर्माण अवश्यम्भावी होगा। और हमारा यह दिव्य जीवन हमारे लिये तथा अन्य सब के लिए सुखद वा कल्याणकारी बन सकता है और हम मानव जीवन के परम ध्येयों (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) को प्राप्त कर सकने मे सफल वा सक्षम सिद्ध हो सकते हैं।

किसी भी मनुष्य के दिव्य जीवन का निर्माण स्वत नहीं हुआ करता अपितु इसके लिए विशेष साधना करनी पड़ती है। अथर्व वेद के इस निम्न मन्त्र मे भी यही भाव व्यक्त किया गया है। यथा श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्त ऋतेश्रित अथर्व 12 5-1 अर्थात श्रम और तप से ही जीवन की महानता और उत्कृष्टता का निर्माण हो सकता है। वा शक्ति सत्य नियमो के परिपालन मे ही निहित है।

ऋग्वेद के इस उपरोक्त वेद मन्त्र में दिव्य जीवन के निर्माण के लिए जिन विशेष गुणों को धारण करने और जिन रुद्र रूपी दुर्गुणो का परित्याग करने का उपदेश दिया गया है। वह इस प्रकार है।

अग्नि, इन्द्र, मित्र, वरुण, अश्विना, पुष्टि युक्त, पुष्टि कारक ऐश्वर्यों की प्राप्ति ब्रह्मनिष्ठा आदि इन सभी गुणो को धारण करना अत्यावश्यक वा अनिवार्य है और इन गुणो को धारण करने के साथ 2 रुद्र रूपी दुर्गुणो का शान्त वातावरण मे और शान्त मन से ध्यान करके इनका पूर्ण रूपेण परित्याग करना चाहिए। अब इन सभी गुणो और दुर्गुणो पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए। यथा "प्रात काल" उस समय को कहा जाता है। जो उषाकाल के तुरन्त पश्चात् सूर्य के प्रकाश से आरम्भ होता है या किसी कार्य के आरम्भ करने का समय "अग्नि" ज्ञान, प्रकाश और कार्य करने के साधन को कहा जाता है। "इन्द्र" कार्य सिद्धि वा इसकी पूर्ति के लिए समस्त प्राकृतिक साधन तथा जीवनोपयोगी सभी पदार्थ। "मित्र पूर्ण हितैषी मित्र के समान सभी साधनाओ में सहयोग देने वाला तथा सभी मनुष्यो के साथ सखापन का व्यवहार करने वाला। "वरुण" का अर्थ है श्रेष्ठता, उत्तमता वा जीवन की पवित्रता। अश्विनी" का अर्थ यहा प्राण को सशक्त बनाना "भग पूषणम्" ऐसा भग अर्थात् ऐश्वर्य जीवनोपयोगी पदार्थों का समूह जो हमारे लिए सर्वथा पुष्टि कारक ही बना रहे। हमारे जीवन के लिए रोग कारक न हो "ब्रह्म निष्ठा" का भाव यही है। कि हम प्रत्येक स्थिति में ईश्वर के ज्ञान वेद और ईश्वर की व्यवस्था तथा उसके सृष्टि नियमो के प्रति सर्वथ निष्ठावान ही बने रहें और हमारा सम्पूर्ण व्यवहार ईश्वरीय ज्ञान और उसकी व्यवस्थाओ के अनुरूप ही बना रहे।

—व्रतपाल साधक लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्थापना

महर्षि दयानन्द प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द जी महाराज की आज्ञा से वैदिक धर्म प्रचार मे संलग्न हुए तो वैदिक धर्म प्रचार को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए प्रान्त 2 मे आर्य प्रतिनिधि सभाओ की स्थापना भी होती चली गई। लाहौर पंजाब की राजधानी थी। आजकल दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, कूरटियर का भू-भाग पंजाब में समझा जाता था तथा सिन्ध भी।

महर्षि जी पंजाब मे सबसे पूर्व लुधियाना पधारे वो अलखधारी जी का नगर था। अलखधारी जी ने लिखा था कि जिस भी व्यक्ति को वैदिक धर्म पर सन्देह हो, या कोई शंका हो तो वह महर्षि दयानन्द सरस्वती की शरण मे जाकर शंका समाधान कर सकता है। उसकी मुराद अवश्य पूरी होगी। वह शंका निवृत्त होकर ऋषि दयानन्द से अवश्य अनुगृहित होगा।

प. लेखराम सैदपुर जिला जेहलम के निवासी थे, पेशावर मे अपने चाचा पं. गण्डाराम के साथ रहते और वही पर सरकारी सर्विस मे संलग्न थे। उनकी धार्मिक पिपासा शान्त न होने के कारण उन्होंने गुरुवाणी पढ़ी, कुरान पढ़ा अन्ततः वह मुसलमानो के निकट होने की धुन में थे कि कृत्रियात अलखधारी मे पढ़ा कि जिस किसी को भी अपने धर्म पर शंका है का समाधान करा सकता है।

प. लेखराम ने यह पढ़ा और सरकार से अवकाश लेकर अजमेर जाकर ऋषि दयानन्द से मिले। शंका समाधान के अनन्तर प. लेखराम ऋषि के हो गए। महर्षि जी ने अष्टाध्यायी दी और शंका निवृत्त होकर पेशावर लौटे तथा समाज की स्थापना कर दी जिसके वे स्वयं प्रधान थे।

इधर जब महर्षि जी लुधियाना पधारे तो पंचनद की भूमि ऋषि दयानन्द के वैदिक नाद से गुञ्जायमान हो उठी।

बम्बई मे सरदार विक्रमसिंह ने महर्षि जी के व्याख्यान सुने थे। वह अपनी दो घोड़ो की बग्गी पर व्याख्यान सुनने आते थे। एक दिन ऋषि जी से ब्रह्मचर्य का बल दिखाने की प्रार्थना की तो ऋषिवर ने उत्तर दिया कि किसी अवसर पर आपकी इच्छा पूर्ति कर दी जाएगी। सरदार जी दो घोड़ों की बग्गी पर घर जाने लगे तो कोचवान ने घोड़ो को चाबुक लगाये किन्तु घोड़े पूर्ण बल लगा कर भी बग्गी खींच न सके। कोचवान चाबुक लगा रहा था। घोड़े भी सरपट दौड़ जाना चाह रहे थे। किन्तु बग्गी हिल जुल कर आगे न बढ़ सकी, तब सरदार विक्रमसिंह ने पीछे मुड़ कर देखा तो आश्चर्य चकित हो उठे कि महर्षि दयानन्द सरस्वती लंगोट धारी ने बग्गी को पीछे हाथो से पकड़ कर रोक रखा था।

सरदार जी प्रसन्न मुद्रा मे कहने लगे कि आपके ब्रह्मचर्य का बल देख लिया और प्रार्थना की कि जब आप पंजाब पधारें तो जालन्धर मे अवश्य मेरी कोठी पर निवास करें। महर्षि जी ने उनकी इच्छा भी पूर्ण की और लुधियाना प्रचार के अनन्तर जालन्धर पधारे। वहीं सरदार जी की कोठी पर प्रचार का क्रम जारी हुआ। वहीं एक शास्त्रार्थ भी हुआ। मुसलमानो ने भी ऋषिवर की विजय का लोहा माना। वह कोठी अब आर्य समाज मन्दिर है।

महर्षि दयानन्द जी कोई डेढ़ वर्ष पंजाब मे रहे लुधियाना, जालन्धर, अमृतसर, गुरदासपुर, लाहौर, गुजरांवाला, वजीराबाद, गुजरात, जेहलम, रावलपिण्डी और मुलतान पधारें। इन सब स्थानो पर आर्य समाज की स्थापना होती चली गई। लाहौर शिक्षा का केन्द्र था। प. गुरुदत्त विद्यार्थी जैसे योग्य युवक आर्य समाज के झण्डे तले एकत्र हो गए। इधर जालन्धर में महात्मा मुन्शीराम जी ने तो अपनी शानदार कोठी तक आर्य समाज को दान में दे दी। जालन्धर में कन्या महाविद्यालय की नींव भी रखी गई। देवराज जी का सहयोग महात्मा मुन्शीराम जी को निरन्तर प्राप्त रहा। इन दोनो ने जगत के विरोध को कठोरता से सहन करते हुए आर्य समाज को चार चांद लगा दिये।

लाहौर में प. गुरुदत्त जी के सतत् प्रयत्नों से आर्य समाज की आधारशिला रखी गई। कालान्तर में वहीं लाहौर में सभा कार्यालय भी बना। इसी बीच दो सभाओं का आयोजन हुआ। एक सभा कार्यालय आर्य समाज अनारकली और दूसरी ओर सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

वीरता प्रधान हरियाणा महर्षि दयानन्द के वैदिक नाद के तत्वावधान में आगे बढ़ा और भारत राष्ट्र का सरमौर बन कर गुरुकुलों और वैदिक पाठशालाओं की उच्च शृंखला के साथ हिमालय के उच्च शिखरो का साम्मुख्य करने लगा।

आज ऋषि के वैदिक विचारो का सर्वोच्च स्थान किसी प्रदेश को दिया जाए तो वह हरियाणा है जहां गुरुकुलों और वैदिक पाठशालाओं का जाल बिछा हुआ है।

सहस्रो पाठशालाए, आर्य स्कूल तथा अनेकानेक गुरुकुल, पुत्री पाठशालाएं तथा कन्या गुरुकुल इस आर्य भूमि की शान हैं।

हरियाणा की एक नासूर भी कष्टदायक है और वह है मेवात। मेवात आर्य जाति की भूल तथा मेवात के प्राचीन हिन्दुओं की सन्तति है। यह इसका हमारे देखते-देखते स्वतन्त्र भारत मे विधर्मियों की गोद में चला गया है।

—प. शान्तिप्रकाश शास्त्रार्थ महारथी

व्याख्यान माला—८

अथ ब्रह्मचर्यम्

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स. अधिष्ठाता गुरुकुल करतारपुर(पंजाब)

(पिछले से आगे)

नीचं शय्यासनं चास्य सर्वदा गुरुसन्निधौ।
गुरोस्तु चक्षुर्विषये न यथेष्टासनो भवेत् ।39।

नैष्ठिक ब्रह्मचारी का आसन व बिस्तर सदा गुरु के समीप परन्तु नीचे होता है तथा गुरु के आंखो के सामने न होने पर भी अपने मनचाहे आसन वाला न बने। अर्थात् अपने गुरु के आसन पर भूल कर भी न बैठे।

नोदाहरेदस्य नाम परोक्षमपि केवलम् ।
न चैवास्यानुकुर्वीत गति भाषितचेष्टितम् ।40।

गुरु के पीछे भी गुरु का नाम न ले, उनके चलने-फिरने तथा भाषण की चेष्टाओं का भी अनुकरण न करे। अर्थात् नकल न उतारे।

अनाश्रमी न तिष्ठेत दिनमेकमपि द्विज ।
आश्रमेण विना तिष्ठन् प्रायश्चित्तीयते हि स ।41।

मा तथा गुरु के गर्भ से क्रमश दो जन्म ग्रहण करने वाला यह ब्रह्मचारी बिना आश्रम के एक दिन भी न रहे आश्रम के बिना रहता हुआ वह ब्रह्मचारी प्रायश्चित के योग्य होता है। अर्थात् नैष्ठिक ब्रह्मचारियो को सदा आश्रमो में ही रात्री बिताना उचित है न कि गृहस्थियो के घरों मे।

आश्रमेषु यथोक्तेषु यथोक्तं ये द्विजातय ।
वर्तन्ते संयतात्मनो दुर्गाण्यतितरन्ति ते ।42।

जो द्विजादि यथोक्त आश्रमो मे यथोक्त विधि से अपने मन इन्द्रियो को एक कर रहते है वे निश्चय ही दुर्गो—कठिनाईयो को पार कर जाते हैं।

एवं चरति यो विप्रो ब्रह्मचर्यमविप्लुतः ।
स गच्छत्युत्तमं स्थानं न चेह जायते पुन ।43।

जो ब्राह्मण इस प्रकार सुस्थिर ब्रह्मचर्य का आचरण करता है वह उत्तम स्थानी को प्राप्त होता है तथा जन्म मरण के चक्र से मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त होता है।

चित्तायत्तं धातुबद्धं शरीरं नष्टे चित्ते धातवो यान्ति नाशम् ।
[illegible] रक्षणीयं स्वस्थे चित्ते बुद्धय. संभवन्ति ।44।

यह शरीर चित्त के आधीन तथा वीर्य से बन्धा हुआ है, चित्त के नष्ट हो जाने पर [illegible] भी नष्ट हो जाती है इसीलिये चित्त की सदा रक्षा करनी चाहिए क्योंकि स्वस्थ चित्त में ही तथा स्वस्थ बुद्धियां—विचार होते हैं।

मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत द्राघीय आयु. प्रतरं दधाना ।
आप्यायमाना प्रजया धनेन शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः ।45।

हे यज्ञशील मनुष्यो मृत्यु के पाश को परे हटाते हुए लम्बी आयु को अधिक दीर्घ तथा धारण करते हुए जब तुम चलो तब प्रजा से और धन से वृद्धि को प्राप्त होते हुए अन्दर और बाहर से शुद्ध और पवित्र रहो।

(क्रमशः)

राष्ट्रीय एकता के लिए आर्य समाज का सन्देश

देशवासियो! दिल पर हाथ रख कर बताओ ?

1 क्या आप देश की एकता व उन्नति के लिए जी रहे हो ?
2 क्या आप राष्ट्र की संस्कृति सभ्यता तथा धर्म के उत्थान के लिए जी रहे हो।
3. क्या आप देश मे बस रहे आदिवासी, गरीब और पिछडे हुए लोगो की उन्नति के लिए जी रहे हो ?
4. क्या आप अपनी आत्मिक उन्नति से युक्त बौद्धिक शारीरिक विकास के लिए जी हो रहे हो।

शराब, मांस, अण्डा, बीडी, सिगरेट, फैशन, नावल, सिनेमा, होटल तथा क्लबों मे वृथा ही स्वस्थ-जीवन को खराब करने वालो (उपरोक्त चारो प्रश्नो का उत्तर 'न' मे देने वालो) की इस राष्ट्र को क्या आवश्यकता है ? यदि है तो इसलिए।

प्रण करते हैं संस्कृति की शाम नहीं होने देंगे।
वीर शहीदों की समाधि बदनाम नहीं होने देंगे॥
जब तक रग मे एक बूंद भी गर्म लहू की बाकी है।
भारत की आजादी को गुमनाम नहीं होने देंगे॥

(गीत गया से साभार)
—मन्त्री आर्य समाज बगा

गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास का रजत जयन्ती समारोह

वैदिक संस्कृति और भारतीय परम्परा को अक्षुण रखने के लिए पवित्र ब्राह्मणी नदी के तट पर आधुनिक तीर्थ स्थल इस्पात नगरी राउरकेला के निकट तपस्वी स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती के तत्वावधान मे गुरुकुल वेदव्यास विगत 25 वर्षों से उडीसा मे सतत कार्यरत है। वर्तमान मे यह संस्थान संस्कृत विद्यालय संस्कृत महा विद्यालय दयानन्द शिशु भवन (अनाथालय) वेदमन्दिर, दातव्य औषधालय, वैदिक पुस्तकालय तथा वाचनालय आदि के द्वारा उडीसा के उत्थान मे निरन्तर सहयोग कर रहा है।

सभी आर्य सज्जनो को यह जान कर अपार हर्ष होगा कि यह संस्थान 16 फरवरी से 1 मार्च तक अपना रजत जयन्ती समारोह, मनाने जा रहा है। इस अवसर पर उडीसा के राज्यपाल आदि देश के अनेक गणमान्य नेता एव विद्वान पधार रहे हैं। विशाल शोभा यात्रा, वेद पारायण यज्ञ, वेद सम्मेलन, संस्कृति सम्मेलन आदि विभिन्न सम्मेलन तथा यज्ञशाला का उदघाटन एव महा विद्यालय भवन का शिलान्यास इस समारोह के विशेष आकर्षण के केन्द्र रहेंगे।

सभी आर्य सज्जनो से निवेदन है कि तन-मन-धन से सहयोग कर इस समारोह को सफल बनाए।

—आचार्य देवव्रत, अधिष्ठाता
गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास
राउरकेला।

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर जालन्धर की एक शोक सभा में श्री स्वामी सत्यानन्द जी को श्रद्धाञ्जलि भेंट करते हुए श्री मुलखराज जी आर्य ने कहा कि स्वामी एक महान् व्यक्ति थे उन्होंने हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी आदोलन में बहुत सराहनीय कार्य किया था।

—रणजीत आर्य
मन्त्री

शोक समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के महामन्त्री श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा के बहनोई श्री बलबीर कुमार शर्मा का 60 वर्ष की आयु मे 26-1-87 को सांय चण्डीगढ मे हृदयगति रुक जाने से स्वर्ग वास हो गया है। परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे और सारे परिवार को इस असह्य दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

आर्य समाज व राष्ट्र के शरीर पर घाव

लेखिका—डा. पुष्पावती आचार्य मातृ मन्दिर
कन्या गुरुकुल, वाराणसी

आज आर्य समाज व राष्ट्र का तन घायल है, उस पर अनेक घाव हैं— अलगाववाद के विदेशी षड्यन्त्रो के, उग्रपन्थ, ईसाई मिशनरियों एंव यवन आतंकवाद के विषय 26-12-86 को मेरा लोहरदगा के वार्षिक उत्सव पर जाना हुआ। लोहरदगा में आदि वासियो के बीच दौरा हुआ—धरला, भरगाव, चाकी आदि गावो के आदिवासियो से मिली। मेरे साथ चन्द्रभूषण एव महावीर नामक दो उत्साही तरुण थे। आदि वासियो की विपन्न दशा देखकर किसी भी सहृदय को स्तब्ध ही रह जाना पड़ता है। उनके पास न तो शिक्षा के साधन हैं, न बाढ से सुरक्षा के उपाय न किसी का आध्यात्मिक पथ प्रदर्शन उनके बच्चे इस भयकर सर्दी मे भी नग्न अर्धनग्न अवस्था मे खेल रहे थे। अनेक महिलाओ व बालिकाओ के केशो की जटाए बनी हुई थीं। कुछ तो बड़े चाव से आए कुछ उदासीन हो दूर ही बैठे रहे। उनका मुख्य धन्धा कृषि है। वह भी दैव पर निर्भर है। केवल वर्षा ही सिंचाई का साधन है वहा पर वर्षा न होने पर वे बिल्कुल बर्बाद हो जाते हैं। उनका कहना था कि न तो सामान्य जनता, न ही सरकार न बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा उनकी बात सुनती है। उनमे से कुछ लोग बाहर के शहरो मे आजीविका उपलब्ध कर लेते हैं। उनकी अवस्था कुछ अच्छी थी।

आदिवासी अभी भी सरल प्रकृति व विश्वास पूर्ण हृदय के हैं। आर्य समाज पर उन्हें कुछ भरोसा है, पर आर्य समाज भी उनकी ओर पूरी तरह ध्यान नहीं दे पाया है उधर आर्य समाज के एक दो प्रचारक अवश्य हैं, जिन्होंने इतना भर कार्य किया है कि आदिवासियों के कुछ बच्चो को एटा, आगरा, बरेली आदि की आर्य सस्थाओ में प्रविष्ट करा दिया, जहा उन्हे मिडल या हाई स्कूल तक की शिक्षा मिल जाती है। ऐसे शिक्षा प्राप्त कुछ युवक भी वहा मिले, परन्तु उनके भविष्य निर्माण की कोई गारटी नही होती। वे शिक्षित होकर भी उसी धूमिल जीवन पथ पर खड़े थे, जिसका वर्तमान व भविष्य अनिश्चितता के अन्धकार से आच्छादित रहता है।

हरितिमा व प्राकृतिक सम्पदा से भरपूर इस वन्य प्रदेश के निवासियो की यह दुर्दशा और वह भी इस बीसवी शताब्दी के अन्तिम चरण में देख कर कोई भी रो तक दे सकता है। उनकी समस्याए हैं स्थानीय स्तर पर शिक्षा प्रसार की, लघु उद्योग धन्धो का विस्तार, एव धार्मिक पथ प्रदर्शन, कोई-कोई गाव तो बरसात मे पानी से भर जाता है और पूरी वर्षा ऋतु भर उसका अन्य गावो व नगरो से सम्बन्ध टूटा रहता है वहा पुल का बनना अत्यावश्यक है। यह जागृत कहे जाने वाले लोगो के लिए चुनौति व उनके ह्रास विलास पर कटु व्यग्य है। आदिवासियो के सिर पर पलने वाले तथा उनका शोषण करके ऊची-2 अट्टालिकाओ मे विलासिता का अट्टहास करने वाले लोगो को उन की कठिनाइयो का तनिक ध्यान नही है। बल्कि एक जागरूक महिला ने बताया कि स्थानीय साधन सम्पन्न सुखी व्यापारी वर्ग आदिवासियो मे जागृति लाने के प्रयत्न का समर्थन नही करेंगे। न ही सहयोग देंगे। क्योंकि इनमें मनमाना दाम वसूल करके तो ये पूजीपति बने हैं। उनमे जागृति आने से इनकी पूजी को धक्का लगेगा। यह सुन कर मैं और भी सन्न रह गई। अपने स्वार्थ के लिए मनुष्य कितना क्रूर निर्मम व हृदयहीन बन सकता है। ऊपर से ऐसे लोग भी धार्मिकता व सौजन्य का जामा पहन कर माथा गर्व से ऊचा कर चलते हैं। पर जिस दिन कभी प्रकृति के मूक पुत्र ये आदिवासी जागृत हो गए और अपने शोषक वर्ग की काली करतूतो को पहचान सके, तब ! तब क्या होगा ? एक भीषण भूकम्प से इस शोषक वर्ग की सारी सत्ता भूसात् न हो जाएगी।

ईसाई मिशनरियो को हम कोसते हैं, पर इससे क्या होना है। वे मौन रूप से अपना काम निश्चिन्तता पूर्वक कर रहे हैं। मुझे बताया गया कि ईसाई मिशनरी सबसे पहले इनके गावों में एक विद्यालय व चिकित्सालय खोल देते हैं, इनकी कठिनाई के समय इन्हे अन्न वस्त्र देते हैं सूखे की स्थिति मे नलकूप बनवा देते हैं और फिर गिरजाघर स्थापित कर देते हैं। उनकी तुलना में आर्य या हिन्दू क्या करते हैं। हिन्दू नामधारी तो उनकी ओर ताकते तक नहीं। आर्यों को भी उनके पास जाने की फुर्सत नहीं। प्रचार के नाम पर एक-दो आर्य प्रचारक हैं जो कभी-2 वहां जाते हैं और उनके कुछ बच्चों को बाहर की आर्य संस्थाओं मे भेज देते हैं जहां केवल प्रभावशाली ज्ञान के अतिरिक्त कोई औद्योगिक प्रशिक्षण उन्हे नही दिया जाता। वहां से पढ़ कर आकर भी वे वैसे ही किंकर्तव्य विमूढ़ रहते हैं जैसे उनके अन्य ग्रामवासी रहते हैं। न ही उनमें मिशनरी भावना जगाई जाती है। कोई-2 आर्य प्रचारक भी उनका अपने ढंग से शोषण करते हैं। ऐसी अवस्था में ईसाई प्रचारक सफल क्यो न हो ? बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा भी विवादित अवस्था का अभिशाप भोग रही है। उन्हें अपने अस्तित्व की ही चिन्ता पड़ी है, इधर क्या ध्यान देगी। लोहरदगा आर्य समाज भी अति विपन्न अवस्था में है, कुछ करने मे असमर्थ है। वह तो मेरे ग्राम भ्रमण की व्यवस्था भी नहीं कर पाया।

ऐसी अवस्था मे क्या किया जाए ? यह एक ज्वलन्त प्रश्न है। क्या देश के अन्य आर्य जन तथा आर्य प्रतिनिधि सभाए प्रान्तवाद का विचार करके मौन रहकर इस विस्तृत आदिवासी क्षेत्र को ईसाई मिशनरियो का खिलौना बनता देखते रहेंगे।

उनकी समस्याए इतनी विकट नहीं हैं जो हमारी सामर्थ्य से बाहर हो। वहा लघु उद्योग धन्धे का विस्तार किया जाना चाहिए। इनमें अनुदान भी प्रयाप्त मात्रा मे मिल जाता है। गांव में छोटे-2 विद्यालय खोले जाने चाहिए और आर्य संस्थाओं का पढ़ने पर उचित आयोजन होना चाहिए। विद्यालयों को सरकारी मान्यता हो जाने पर सरकारी अनुदान मिल जाता है, भवनों पर अधिक व्यय की अपेक्षा नहीं। हवन सामग्री की अनेक कीमती जड़ी-बूटियां यहीं उपजती हैं। वह ग्राम भी सामान्य हवन के लिए प्रयत्न है। वे लोग खाली में 5-5 पैसे डाल कर उसकी आपूर्ति कर सकते हैं। उनको उन्नत कृषि करने की विधि सिखा दी जाए तो उनकी कृषि समृद्ध हो सकती है। पर इतना भी करे कौन ! इस के लिए भी कुछ त्यागी तपस्वी कार्यकर्ताओं की आवश्यकता तो है ही। उन के साथ गर्मी-सर्दी सहने वाले कार्यकर्ता चाहिएं। क्या अभी तक आर्य समाज ने दो चार कार्यकर्ता भी तैयार नहीं किए। तो-हमारी उपलब्धि क्या है। यह स्मरण रखें कि केवल साधन सम्पन्न सुखी लोगो के बीच धर्म प्रचार से काम नहीं चलेगा, इस विपन्न वर्ग की सेवा के लिए अब तैयारी की आवश्यकता है, नहीं तो और अनेक उपपन्थों की चुनौतियो के प्रतिकार के लिए तैयार हो जाना चाहिए। इन चुनौतियो का किसी न किसी दिन हमें समुचित उत्तर देना ही होगा।

मातृ मन्दिर के प्रावधान में आदिवासी कल्याण समिति का गठन हो रहा है। देखें कितने धर्म प्रेमी, देश भक्त व सहृदय ऋषि भक्त तथा देशवासी तन, मन, धन का सहयोग देने को आगे आते हैं।

शुद्धि समाचार

श्री सतीश कुमार जी पहले मुसलमान बन गए थे, आर्य वैदिक धर्म में दीक्षित हो गए हैं। शुद्धि का संस्कार आर्य समाज सैक्टर 16 डी में प. दयाराम शास्त्री जी द्वारा धूमधाम से सम्पन्न हुआ। मन्त्री

वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज को क्या करना चाहिए

लेखक—श्री पृथ्वीराज जिज्ञासु एम ए संस्कृत दीनानगर

श्री वीरेन्द्र जी द्वारा लिखित लेख "सम्पूर्ण क्रान्ति का प्रणेता आर्य समाज" की तीनो किश्तें पढ़ी। लेख बड़ा ही सार गर्भित था। वास्तव में आर्य समाज सम्पूर्ण क्रान्ति का अग्रदूत है। इसने भारत के अनेक क्षेत्र को प्रभावित किया है। मेरी धारणा तो यह है कि अगर देव-दयानन्द भारत मे न आते तो हम कम-से कम 500 वर्ष और स्वाधीनता की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। यदि गान्धी जी को राष्ट्र-पिता कहा जाता है तो महर्षि देव दयानन्द राष्ट्र पितामह थे। महर्षि ने ही सर्व प्रथम स्वराज्य का उद्घोष राष्ट्र को दिया। यदि स्वाधीनता के इतिहास को निष्पक्ष हो कर पढ़ें तो हम यह पाए मे कि स्वाधीनता समर के 80 प्रतिशत सेनानी या तो आर्य समाजी थे अथवा आर्य समाज से प्रेरित थे। परन्तु आज देश का दुर्भाग्य है कि आर्य समाज रूपी आन्दोलन शिथिल होता जा रहा है। क्या कारण है इसका इस पर विचार करने की आवश्यकता है। संसार मे वही संस्थाए जीवित रहती हैं जो समय की नब्ज पर हाथ रख कर चलती हैं। आज की युवा पीढ़ी आर्य समाज से पूर्णतया विमुख होती जा रही है। क्यो ! क्या कारण है कि आर्य समाज जैसी क्रान्तिकारी संस्था की देश में कोई गणना नहीं। यदि समय रहते इस पर विचार न किया गया तो वह दिन दूर नहीं जब आर्य समाज का नाम लेने वाला भी इस देश मे कोई न रहेगा। हमने बाल-विवाह को बन्द किया, विधवा विवाह आरम्भ किए। यह अतीत की बातें हैं। अब इनका ढोल पीटने की कोई आवश्यकता नहीं। आज देश के सामने नई समस्याए हैं। नए-नए रोग राष्ट्र को चिपटे हुए हैं जो इसे घुन की तरह खा रहे हैं। राष्ट्र टूट रहा है। प्रान्तीयता पनप रही है। राष्ट्र की आत्मा हिन्दू जाति को मिटाया जा रहा है। साम्प्रदायिकता बढ़ रही है। देश मे आतंकवाद फैल रहा है स्थान-स्थान पर कत्ले-आम हो रहा है। हिन्दू जाति को अपने पूर्वजों की संस्कृति से विमुख किया जा रहा है। भारत देकर तथा [illegible] कोई खालिस्तान की मांग करता है तो कोई आर्यावर्त को, [illegible] कोई [illegible] मुगलस्थान बनाना चाहता है तो कोई हमे [illegible] की बेड़ों में शामिल करना चाहता है। लेकिन हमारी सरकार तथा कथित धर्म निरपेक्षता की नीति पर चलकर मौन साधे बैठी है। मेरे विचार में सभी समस्याओं का मूल कारण यह तथा कथित धर्म निरपेक्षता का शिकार केवल हिन्दू जाति ही बनती है। सभी राज-नीतिक दलो का प्रकोप हिन्दू जाति पर ही होता है। मुसलमान तो धर्म निरपेक्षता को बिल्कुल मानने को तैयार नही, क्योंकि वे कुरान की आयतो के कायल हैं जिसमें लिखा है —

वमय्यब्तगि गैरल् इस्लामिदीनन फलय्युकबल मिन्हु, वहुव फिल आखिरति मिनल् खासिरीन।

(सू 31 रु 91 आ 58)

अर्थात —जो शख्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन को तलाश करे तो खुदा के यहा यह दीन मकबूल नही और वह आखिरत मे जियाकारो म होगा, खुदा ऐसे लोगो को क्यो हिदायत देने लगा जो तौरात की पेशीन गोइयो से पैगम्बर आखिरुज्जमा पर ईमान लाए, पीछे लगें कुफ्र करने तथा मुहम्मदुर्रसूलल्लाहि, वल्लजीनमअहू अशिद्दाऊ अलल कुफ्फारि रुहमाऊ बैनहुम। (सू 481 रु 41 आ 29

अर्थात् —मुहम्मद खुदा के भेजे हुए पैगम्बर हैं, और जो लोग उनके साथ हैं काफिरो के हक मे बड़े सख्त हैं मगर आपस मे रहम दिल।

ऐसी आयतो को मानने वाले के लिए सरकार की धर्म निरपेक्ष नीति की क्या कीमत है।

इसी प्रकार बाईबल भी पीछे नहीं है। वह यह कहती है कि सारा संसार पापी है और जो ईसा पर ईमान ले आता है उसके सभी गुनाह बख्शे जाते हैं।

इसी प्रकार हमारे खालसा भाई भी यह मानते हैं '—जब लग खालसा रहे न्यार तब लग तेज देऊ मैं सारा, जब यह चले विप्रन की रीति; तब न करू इसकी परतीति. तथा

राज करेगा खालसा, खालसे दीक्षा चढ़दिया कला, खालसा [illegible] बोल-बोला जहा वहा खालसा [illegible] तहा तहा रछिया रियायत।

इन परिस्थितियो में तथा कथित धर्म निरपेक्षता की [illegible] जाना, आत्म छलना [illegible] राष्ट्रीय एकता की कल्पना करना [illegible] के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

———

अग्रत्वात्मदेव सत्यमेव अग्रणी है

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

और क्या देगा कोई। जब किसी का अपना है ही कुछ नही सब उस प्रभु का ही है, जब सब उसी के दर के भिखारी हैं, तो सासारिक लोगों से दुनियादारो से क्या मागे।

ममता से क्या मागना। भिखारी के द्वार पर अलख जगाने मे क्या लाभ। वैदिक भक्त उसी द्वार पर, उस लक्ष्मी पति के ही द्वार पर मागते हैं क्योंकि वह जानते हैं कि वही सच्चा दाता है, और न लेने की पवित्र भावना से देता है, उसे चाहिए भी क्या उसके तो भण्डार भरपूर हैं। उसकी सम्पत्ति उस के धन का कोष उसका भण्डार तो अक्षय है—अक्षय—जो कभी क्षय को क्षरण को विनाश को प्राप्त नही होता। विनास ही क्या। उसमे तो कभी भी कमी नही आती। सुख के हेतु समस्त पदार्थ समस्त सुख साधन, सुख भोग रूप समस्त सामग्री उसके भण्डारो मे भरी पडी है।

(न स्वस्तये सचस्व) हमारा कल्याण के लिये मेल कराईये बड़े पते की बात कही है वैदिक भक्तो के चाहे कितनी भी सुख सामग्री पास हो, चाहे सम्पत्ति के भण्डार भरे पड़े हो किन्तु बिना मेल के कल्याण नही हो सकता। सदा सर्वदा भय का साम्राज्य बना ही रहता है। अनेकता, वैर, विरोध सदैव कष्टप्रद ही होता है अतएव मेल का होना अत्या-वश्यक है। मेल संसार के सारे सुखो का हेतु—संसार की समस्त भोग्य सामग्री से भी बढ़ कर है अतः भक्तो ने अन्य सुख साधनो के साथ साथ मेल कराने की भी माग प्रस्तुत की है। यदि मेल कराने की माग इस प्रार्थना में सम्मिलित न होती तो प्रार्थना ही अधूरी रह जाती यही तो है वेद का वेदत्व और यही है वैदिक भक्तो की उत्कृष्टता।

वाह रे वैदिक भक्तो ! प्रार्थना क्या है। अमूल्य मोतियो की लड़ी है। हे ज्ञानस्वरूप प्रभो ! जिस प्रकार पिता-पुत्र के प्रति सुख के साधनो को जुटाता है, उसी प्रकार आप भी हमको समस्त सुख के हेतु पदार्थ प्राप्त कराईये तथा हमारा परस्पर मेल कराईये अर्थात हम पर ऐसी कृपा कीजिए कि हम सदैव मेल मिलाप पूर्वक रहते हुए सासारिक सुख समृद्धि का उपयोग करते रहे।

हे तेज रूप भगवन,
हमको तेजस्वी कर दो।
अग्नि स्वरूप तुम हो,
हम मे प्रकाश भर दो॥
जैसे निकट मे रहकर,
पालन पिता है करता।
तुम भी उसी के सदृश,
रक्षण हमारा कर दो॥
'न' स्वस्तये सचस्व'
करवा के मेल हम मे
कल्याणकारी भगवन,
कल्याण सबका कर दो॥
हे ईश ! यह विनय है,
तुमसे हमारी हरदम।
अपने सभी गुणो को,
हममे भी नाथ भर दो।

———

श्री सरदारी लालजी को मातृ शोक

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री, आर्य समाज भार्गव नगर जालन्धर के प्रसिद्ध कार्यकर्ता सभा पंजाब के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न की माता जी का 3-2 87 को निधन हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से 3 2-87 को दोपहर 2-30 बजे किया गया। अन्तिम शोक दिवस बुधवार 11-2-87 को उनके निवास स्थान भार्गव नगर जालन्धर मे दोपहर बाद मनाया जाएगा।

परमात्मा दिवगत आत्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान करे और शोक संतप्त परिवार को सान्त्वना व धैर्य प्रदान करे।

पंजाब सहायता समिति द्वारा विस्थापितों में कम्बल वितरित

पंजाब सहायता समिति द्वारा आज मंगोलपुरी कैम्प दिल्ली में 100 कम्बल, ज्वालापुर कैम्प में 31 कम्बल तथा ज्वालापुरी रिलीफ कैम्प में 72 कम्बल वितरित किए गए। प्रत्येक विस्थापित परिवार को एक-एक कम्बल दिया गया। कम्बल वितरित करने वालों में आर्य समाज की ओर से श्री रामनाथ सहगल, सनातन धर्म सभा की ओर से श्री मनोहरलाल कुमार और भारतीय जनता पार्टी के श्री केदारनाथ साहनी, श्री विजय कुमार मल्होत्रा तथा श्री मदनलाल खुराना थे। सभी कैंप में विस्थापितों ने अपनी समस्याएं भी उन को बताईं। समिति के सदस्यों ने उन समस्याओं के निवारण का आश्वासन दिया। पंजाब सहायता समिति के एक प्रतिनिधि मण्डल ने दिल्ली के उपराज्यपाल से मिलकर विस्थापितों की समस्याएं उनके सम्मुख रखीं उस समय उन्होंने प्रतिनिधि मण्डल को विश्वास दिलाया कि—विस्थापितों की समस्याएं जल्दी से जल्दी दूर की जाएंगी।

इस समय पंजाब सहायता समिति का मुख्य कार्यालय आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग नई दिल्ली में है। पंजाब सहायता समिति की बैठकों में पंजाब से आए विस्थापित प्रतिनिधि भी बुलाए जाते हैं। जिससे कि वे अपनी आवश्यकताएं बैठक में रख सकें तथा उन आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके।

मेरा भारतवासियों से निवेदन है कि वे पंजाब के विस्थापितों की कम्बल रजाई, कपड़ों एवं नकद राशि से जो भी सहायता करना चाहें वह पंजाब सहायता समिति के कार्यालय आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग नई दिल्ली—1 के पते पर भिजवा सकते हैं।

—रामनाथ सहगल
मन्त्री

गुरुकुल आश्रम आमसेना का 19वाँ वार्षिक महोत्सव

प्रभु की असीम अनुकम्पा से आगामी 6,7,8 फरवरी 1987 तदनुसार शुक्रवार, शनिवार, रविवार माघ शुक्ल अष्टमी, नवमी, दशमी को अत्यन्त समारोह के साथ गुरुकुल का उन्नीसवां वार्षिक महोत्सव मनाया जा रहा है। इस शुभावसर पर पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, श्री स्वामी विश्वमित्रानन्द जी (हिराकुद), श्री महात्मा प्रेम प्रकाश जी (पंजाब), श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री, उपमन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्र सभा, माता कौशल्या देवी प्रधान मध्यप्रदेश आर्य सभा, श्री पं देवपाल जी दीक्षित (बिहार), श्री पं सुरेन्द्रपाल जी भजनोपदेशक (नागपुर), श्री पं शिवधर जी भजनोपदेशक (बिहार), श्री पं इन्जीनियर प्रियव्रत दास जी मन्त्री उत्कल आर्य सभा (भुवनेश्वर), श्री विशिकेशन जी शास्त्री, श्री पं गोविन्द प्रसाद जी, आदि विद्वान्, साधु सन्यासी पधार रहे हैं।

—ईश्वरराम साहू
मन्त्री

आर्य समाज, वैदपुर बोधा (अहमदाबाद) द्वारा संचालित कार्य

★वेद प्रचार ⊙पुस्तकालय ⊙पुस्तक प्रकाशन विभाग (गुजराती-सिंधी) दैनिक सत्संग प्रातः 6-30 से 8 00 ⊙महिला सत्संग बुधवार शाम 4-30 से 6-30 ⊙साप्ताहिक अधिवेशन रविवार शाम 4-30 से 6-30 ⊙हवन यज्ञ की सामग्री आदि की व्यवस्था। ★योग्य विद्वान् पण्डितों द्वारा संस्कारों के कराने की व्यवस्था ★पुस्तक बिक्री विभाग (हिन्दी गुजराती-सिंधी-मराठी व अंग्रेजी भाषा में साहित्य ●विशेष अवसरों पर विद्वानों के प्रवचन ⊙शुद्धि, अनाथ रक्षण ⊙गुरुकुल कांगड़ी की आयुर्वेदिक औषधियों की बिक्री।

मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि. नं. N.W/J.L.5 5

। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र ।

वर्ष 18 अंक 45. 4 फाल्गुन सम्वत् 2043 तदानुसार 15 फरवरी 1987 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

जैसा कि आप जानते हैं कि आर्य समाज सक्रिय राजनीति मे प्राय भाग नहीं लेता। अपनी गतिविधिया धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र तक ही सीमित रखने का प्रयास करता है। परन्तु कई बार ऐसी घटनाए सामने आ जाती हैं जिनकी तरफ से आखें मूद कर बैठना आर्य समाज के लिए कठिन हो जाता है। पजाब मे आज भी कुछ ऐसी परिस्थितिया पैदा हो रही हैं, जिनकी तरफ आपकी आर्य समाज का ध्यान दिलाने के लिए यह परिपत्र भेजा जा रहा है। आशा है आप इसके अनुसार कार्य कर के आर्य समाज के सगठन और शक्ति का पूरा प्रदर्शन करेंगे।

(1) आपने समाचार पत्रो मे यह तो पढ लिया होगा कि पिछले दिनो पांच सिंह साहेबान ने सब अकाली दलो को तोड कर एक नया अकाली दल बनाने की घोषणा की है और उसके पश्चात् जो घोषणा पत्र प्रकाशित किया गया है उसे पढ कर ऐसा प्रतीत होता है कि पजाब को खालिस्तान बनाने की एक विधिवत योजना चलाई जा रही है। अकालियो के आन्तरिक विवाद में पड़ने की हमे कोई आवश्यकता नही। परन्तु हम किसी भी सस्था को यह अधिकार देने को तैयार नहीं कि वह पंजाब के अल्पसख्यक हिन्दुओ के हितो की अवहेलना करते हुए अपनी ही विचारधारा के अनुसार पजाब मे नया राजनैतिक ढांचा बनाने का प्रयास करें। जो कुछ सिंह साहेबान ने कहा है उसे पढ कर ऐसा प्रतीत होता है कि वे समझते हैं कि पजाब मे केवल उन्हें या उनके अनुयायीयो को ही रहने का अधिकार है और वे पजाब मे जैसी राज्य व्यवस्था बनाना चाहे बना सकते हैं। अपनी घोषणा मे उन्होंने यह भी लिखा है कि वे आनन्दपुर प्रस्ताव के अनुसार पजाब में राज्य व्यवस्था चाहते हैं। यह एक ऐसी स्थिति है जिसे आर्य समाज किसी भी अवस्था मे स्वीकार नहीं करेगा। जो कुछ आज पजाब मे हो रहा है, उससे अनुमान लगाया जा सकता है कि जब आर्य समाज ने 1966 में पंजाबी सूबे की स्थापना का विरोध किया था तो आर्य समाज का दृष्टिकोण पूर्णतया उचित और देश के हित में था। परन्तु हमारे शासको और नेताओं ने उस समय हमारी बात न मानी और उसका परिणाम आज हमारे सामने है। अब अकाली पजाबी सूबा से भी आगे जाना चाहते हैं। आज पजाबी सूबा में जो व्यवहार हिन्दुओ के साथ हो रहा है। इसके पश्चात् जो परिस्थितिया पैदा होंगी, उनमे उनके साथ क्या व्यवहार होगा। इसे समझना कठिन न होना चाहिए।

इन परिस्थितियो को देखते हुए और जो घोषणा पत्र सिंह साहेबान ने अब प्रकाशित किया है, उस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने के पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब यह अनुभव करती है कि पजाब की वर्तमान समस्याओ का केवल एक मात्र समाधान महा पंजाब है। यदि पजाबी सूबा न बनाया जाता तो न चण्डीगढ का झगडा पैदा न होता, न नहरी पानी का, न आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव सामने आता और न अकालियो की ओर से देशद्रोही मार्गें पेश की जाती। आज केवल पजाब के लिए ही सकट पैदा नही हो रहा, सारे देश के लिए हो रहा है। पजाब एक सीमान्त प्रदेश है, इसलिए यहा की स्थिति और भी गम्भीर है। इन सारी परिस्थितियो को देखते हुए अब समय आ गया हैं, जब कि पजाब के हिन्दू अल्पसख्यक एक बार फिर यह माग करें कि जो पंजाब पहली नवम्बर 1966 को था वही फिर बना दिया जाए। इसके अतिरिक्त पजाब की समस्याओ का कोई और समाधान नही है। भारत सरकार इस समय अत्यन्त कमजोर और शिथिल सरकार दिखाई दे रही है, वह पजाब मे कुछ भी करने को तैयार नहीं और उसकी अकर्मण्यता का ही परिणाम है कि सिंह साहेबान ऐसी बातें करने लग गये हैं जो आगे चल कर देश के लिए बहुत बडा सकट पैदा कर सकती हैं। उन्होंने स्पष्ट रूप से कह दिया है कि सिख एक अलग कौम है और वह अपने लिए एक विशेष प्रकार का विधान मागती है। यदि सिंह साहेबान की बात मान ली जाए तो पजाब मे हिन्दुओ के लिए रहना असम्भव हो जाएगा। इसलिए अब समय आ गया है जब पजाब के अल्पसख्यक हिन्दुओ को अपने सगठन को शक्तिशाली बना कर भारत सरकार से यह माग करनी चाहिए कि पजाब को फिर वही रूप दे दिया जाए जो पहली नवम्बर 1966 को था। उसके साथ चण्डीगढ, नहरी पानी और दूसरे जितने विवाद आज हमारे सामने है, वे समाप्त हो जाए गे।

इसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप रविवार 22 फरवरी को अपनी आर्य समाज मे साप्ताहिक सत्सग के पश्चात् "महा पजाब दिवस" मनाये। और उसमें निम्नलिखित प्रस्ताव पारित करें :—

आर्य समाज का यह साप्ताहिक सत्सग पांच सिंह साहेबान द्वारा प्रकाशित घोषणा पत्र को गम्भीरता और देशद्रोही सकीर्णता को दृष्टि मे रखते हुए और उनकी विचारधारा और उनकी मागो का कल को जो परिणाम निकल सकता है, उस पर विचार करने के पश्चात इस परिणाम पर पहुचा है कि पजाब की वर्तमान समस्याओ का एक मात्र हल महा पजाब है। जो कुछ सिंह साहेबान इस समय कर रहे हैं या कह रहे हैं, उसके कारण आगे चल कर पजाब मे कई एसी परिस्थितिया पैदा हो सकती है जिनके कारण देश की एकता और स्वाधीनता के लिए भी सकट पैदा हो सकता है। आर्य समाज की यह निश्चित धारणा है कि भारत सरकार को अब हाथ पर हाथ धर कर नही बैठना चाहिए और सक्रिय रूप से पजाब की स्थिति पर नियन्त्रण करने के लिए कोई ठोस पग उठाना चाहिए। अकालियो की जिन भावनाओ से प्रेरित हो कर पजाबी सूबा बनाया गया था, वह सब निरर्थक साबित हो रही हैं और उनके कारण ऐसी विघटनकारी शक्तियो को प्रोत्साहन मिल रहा है जो देश के लिए अत्यन्त घातक साबित हो सकती हैं। आज पंजाब में आतकवाद और उग्रवाद जो रूप धारण कर रहा है, उसकी अवहेलना भी नहीं की जा सकती इसलिए देश के हितो को सामने रखते हुए यह अत्यन्त आवश्यक है कि पजाब का क्षेत्र बढाया जाए और इसमे जो देश प्रेमी शक्तिया हैं उन्हें अधिक शक्तिशाली बनाया जाए। इसका केवल एक साधन है, वह यह कि पजाब को उसी प्रकार का प्रान्त बनाया जाए, जैसा कि यह पहली नवम्बर 1966 को था। उसके साथ जितनी समस्यायें आज खडी हो रही हैं, वे अपने आप समाप्त हो जायेगी। इसलिए आर्य समाज भारत सरकार से सविनय निवेदन करना चाहता है कि उसे तुरन्त इस दिशा मे पग उठाना चाहिए और उसे क्रियान्वित करने के लिए आर्य समाज अपनी पूरी शक्ति और सगठन के साथ सरकार को अपना सहयोग देगा।

इस प्रस्ताव की प्रतिलिपिया निम्नलिखित को भेज दी जाए —

1 महामहिम राष्ट्रपति महोदय,
राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली।
2 माननीय श्री प्रधान मन्त्री जी,
भारत सरकार नई दिल्ली,
3 माननीय श्री गृहमन्त्री जी,
भारत सरकार नई दिल्ली,
4 माननीय श्री राज्यपाल जी,
पजाब सरकार, पजाब राजभवन चण्डीगढ

कृपया आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के कार्यालय को सूचित करने का कष्ट करें कि इस विषय मे आपने जो भी कार्यवाही की हो।

(2) मैं आपका ध्यान एक और विशेष बात की ओर भी दिलाना चाहता हू हमे समय समय पर कई ऐसे परिवारो विशेष कर महिलाओ की ओर से सहायता के लिए पत्र आते रहते हैं, जिनके निकट सम्बन्धी मारे गए हैं। हम इस समय तक लगभग पच्चास हजार रुपया सहायता के रूप में दे चुके हैं। इसमें सब आर्य समाजो ने अपना हमे जो योगदान दिया था, उसके लिए हम आपके आभारी हैं। परन्तु यह माग दिन प्रति दिन बढती जा रही है। इसलिए आपसे प्रार्थना है कि अपनी आर्य समाज की ओर से इस सहायता कोष के लिए जो कुछ भी आप दे सकते हैं, सभा के कार्यालय मे भिजवाने का कष्ट करें। अधिकतर सहायता वे बहिनें माग रही हैं, जिनके कमाने वाले उनसे छीन लिए गए हैं। उनकी सहायता करना हमारा कर्त्तव्य है।

भवदीय

—वीरेन्द्र सभा प्रधान

21 फाल्गुण 1990 तदानुसार 4 मार्च 1934 दयानन्दाब्द110

अमेरिका में वैदिक धर्म प्रचार

श्री पण्डित अयोध्याप्रसाद जी बी ए रिसर्च स्कालर ने नीचे लिखा पत्र शिकागो (अमेरिका) से अपने एक मित्र को लिखा है। श्री अयोध्या प्रसाद जी ने अमेरिका मे वैदिक धर्म का किस लग्न से काम किया है, इस का कुछ दिग्दर्शन नीचे लिखी चिटठी से हो जाएगा। पत्र इस प्रकार है —

"विश्व धर्म सम्मेलन की बैठक समाप्त हो गई है। मैं इस मे बराबर भाग लेता रहा हू और अच्छी प्रकार प्रसिद्धि प्राप्त कर ली है। इस सम्मेलन की अन्त रग सभा का सभासद भारतवर्ष की तरफ से मैं चुना गया हू। इसलिए मेरी इच्छा है कि जहा तक अधिक समय लगा सकू अमेरिका निवासियो के बीच व्यतीत करु और वैदिक धर्म का प्रचार करु। यहा लोगो के दिलो मे भारतवर्ष और भारत की सभ्यता के लिए बडी श्रद्धा है और वह इस विषय पर किसी भारतीय से बडी उत्सुकता पूर्वक जानकारी चाहते हैं। मेरे इतने ही दिनो के सम्पर्क से कई स्त्री पुरुष हिन्दू धर्म के पक्के अनुयायी बन गए हैं और उन्होने मास आदि खाना छोड दिया है। इसी प्रकार और भी कई व्यक्ति हमारे धर्म के विषय मे मुझ से पूछते रहते हैं। और हमारे धर्म के विषय मे अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं।"

— कृष्ण (महाशय कृष्ण)

बिहार प्रान्त के लिए लुधियाना के आर्य भाईयों का प्रेम

बिहार प्रान्त मे जो भू चाल आया है और उस से लोगो पर जो आपत्ति आई है। वह किसी से छुपी नही। आर्य सामाजिक पुरुष उन की सहायता मे लगे हुए हैं। आर्य सार्वदेशिक सभा दिल्ली और आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब अपने पीडित भाईयो की पूरी सहायता कर रही है। ईश्वर का धन्यवाद है जिस की कृपा से आर्य समाज लुधियाना के नर-नारियो ने दिल खोल कर चन्दा दिया है और अपने कर्त्तव्य का पालन किया है। पहले प्रयास मे सवा ग्यारह सौ रुपया इकत्रित हुआ अभी और प्रयास हो रहा है और भी अधिक धन इकटठा किया जाए और शीघ्र ही वहा पहुचा दिया जाए। दान देने वालो मे से स्त्री आर्य समाज लुधियाना ने 400 रुपए, आर्य हाई स्कूल के स्टाफ ने 182 रुपए और इस प्रकार और भी कई महानुभावो ने इस के लिए रुपया दिया है। सभा उन की अति आभारी है।

—कृष्ण (महाशय कृष्ण)

व्याख्यान माला—६

स्वाध्याय और उसका महत्व

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स. अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर(पंजाब)

(गताक से आगे)

ओ३म् मिमीहि श्लोकमास्ये पर्जन्यइव ततन ।
गाय गायत्रमुक्थ्यम् ॥1॥ ऋग्वेद—1-38-14

हे विद्वान् मनुष्य, तू (आस्ये) अपने मुख में (श्लोकम्) वेद की शिक्षा से युक्त वाणी को (मिमीहि) निर्माण कर और उस वाणी को (पर्जन्य इव) जैसे मेघ वृष्टि करता है वैसे (ततन) फैला और (उक्थ्यम) कहने योग्य (गायत्रम) गायत्री छन्द वाले स्तोत्ररूप वैदिक सूक्तो को (गाय) पढ तथा पढा।1।

—(महर्षि दयानन्द भाष्य)

ओ३म् पाहि नो अग्न एकया पाह्युत द्वितीयया।
पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जाम्पते पाहि चतसृभिर्वसो।2।
ऋग्वेद—18-60-9

(अग्न) हे सर्वगत ? (ऊर्जाम पते) हे बलाधिदेव, महाबलप्रद, ईश ! (न) हम जीवो को (एकया) मधुरमयी वाणी से (पाहि) रक्षा कर (तिसृभि: गीर्भि) लौकिकी, वैदिकी और आध्यात्मिकी वाणियों से (पाहि) हमारी रक्षा कर। (वसो) हे वासदाता सर्ववासी देव (चतसृभि) तीन पूर्वोक्त तथा एक देवी इन चारो वाणियो से हमको पाल।2। —(महर्षि दयानन्द वेद भाष्य)

ओ३म् सखायो ब्रह्मवाहसेऽर्चत प्र च गायत ।
स हि न प्रमतिर्मही ॥3॥ ऋग्वेद—6-45-4

हे (सखाय) मित्रो ! आप लोग (ब्रह्मवाहसे) वेद और ईश्वर के विज्ञान प्राप्त कराने के लिए जिसका (प्र अर्चत) अत्यन्त सत्कार करो (गायत च) और प्रशसा करो जिससे (न) हम लोगो के लिए (प्रमति) अच्छी बुद्धि (मही) और बडी वाणी दी जाती है। (स हि) वही जगदीश्वर और विद्वान् हम लोगो से उपासना और सेवा करने योग्य है।3। —(महर्षि दयानन्द वेद भाष्य)

ओ३म् तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋच सामानि यज्ञिरे ।
छन्दासि यज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥4॥
ऋग्वेद 10-90-9

(सर्वहुत) सब कुछ को सृष्टि रचना रूप सर्व मेघ मे हुत करने वाले, (यज्ञात) पूज्य एव जगत को योजनाबद्ध करने वाले (तस्मात) उस परमेश्वर से (ऋच) (सामानि) साम मन्त्र (अज्ञिरे) उत्पन्न होते हैं। (छन्दासि) अथर्ववेद के मन्त्र (तस्माद) उससे (यज्ञिरे) उत्पन्न होते हैं और (यजु) यजुर्वेद (तस्माद्) उससे (अजायत) उत्पन्न होते हैं ॥4॥ —(महर्षि दयानन्द वेद भाष्य)

ओ३म् पावमानी स्वस्त्ययनीस्ताभिर्गच्छति नान्दनम्।
पुण्याश्च भक्षान् भक्षयत्यमृतत्वं च गच्छति ॥5॥
सामवेद 5-2-83

(पावमानी) पवित्र कर देने वाली ये वैदिक शिक्षाए (स्वस्त्ययनी) निश्चय रूप से कल्याणी है। मनुष्य (ताभि) इन शिक्षाओ के द्वारा (नान्दनम्) परलोक तथा इहलोक के कर्त्तव्याकर्त्तव्य को जानकर विशेष आनन्द को (गच्छति) प्राप्त कर लेता है इसी के फलस्वरूप (पुण्यान् भक्षान्) पुण्य भोगो को (भक्षयति) भोगता है और अन्त मे (अमृतत्वम् च) मानव जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष सुख को (गच्छति) प्राप्त होता है। अर्थात् वेद शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य मुक्ति के मार्ग को जानकर मुक्ति प्राप्त करने में समर्थ है। अत: इस कल्याणी वेदवाणी का चिन्तन मनन सभी को नित्य प्रति करना चाहिए।

(क्रमश:)

सम्पादकीय—

पंजाब में आर्य समाज का भविष्य

पंजाब में जो स्थिति पैदा हो रही है उसका प्रभाव किसी न किसी रूप मे सब पर ही पड रहा है। राजनैतिक पार्टियां भी प्रभावित हो रही हैं सामाजिक और धार्मिक संस्थाए भी। आर्य समाज इन परिस्थितियो से अपने आपको अलग नही कर सकता वह चाहे या न फिर भी किसी न किसी रूप में वह प्रभावित अवश्य होगा और हो रहा है। अब हम पहले की तरह अपने वार्षिकोत्सव बाहिर खुले मैदानो मे नहीं कर सकते न पहले की तरह अपनी शोभा यात्राए निकाल सकते हैं। उग्रवादी वैसे तो सारे प्रान्त के ही विरोधी बने हुए हैं। जो उन्हें मिलता है और जिसके साथ उनका विरोध हो उसे वह गोली मार देते हैं। सरकार इस समय तक स्थिति को सम्भालने मे पूर्णतय विफल रही है। जहा तक हमारी सभा का सम्बन्ध है अब हमारे पास केवल दो उपदेशक हैं और दो ही भजनोपदेशक हैं हमने बहुत प्रयास किया कि दूसरे प्रान्तो से कुछ उपदेशक पजाब आकर हमारी समाजो मे आकर कुछ प्रचार करें लेकिन कोई अच्छा उपदे[illegible]आने को तैयार नही होता। हम उपदेशको को क्या कहे बड़े-बड़े नेता भी पजाब में नही आते। हमने प्रान्तीय सभाओ की पत्रिकाओ में विज्ञापन भी दिए कि हमें योग्य उपदेशको और भजनोपदेशको की आवश्यकता है। हम से जो भी उचित वेतन कोई मागे हम देने को तैयार हैं इस पर भी कोई योग्य विद्वान् बाहिर से आने को तैयार न हुआ। हम यह भी देखते हैं कि जब हमारी सभा की अन्तरग सभा की कोई बैठक होती है तो प्राय वही सदस्य उसमे आते हैं जो सायकाल चार-पाच बजे तक अपने घरो को वापिस जा सकें। इसके अतिरिक्त यदि कोई और बैठक हम करना चाहे तो सदस्य और भी बहुत कम आते हैं।

अब हमारे प्रचार के दो ही साधन बाकी रह गए हैं। एक साहित्य और दूसरा यज्ञ। पिछले दो तीन मास मे कई स्थानो पर बड़े प्रभावशाली यज्ञ हुए पहले मोगा मे हुआ फिर अमृतसर में हुआ। अब लुधियाना मे एक बड़े यज्ञ की तैयारियां हो रही हैं। यज्ञ मे स्थानीय लोग बहुत बड़ी सख्या मे आ जाते हैं। मोगा में जो यज्ञ हुआ था उसमें तो लगभग सारा शहर ही पहुच गया था। ऐसे अवसर पर साहित्य वितरण से हम अपना कुछ न कुछ प्रचार कर लेते हैं। आज यदि पंजाब में आर्य समाज फिर भी कुछ सक्रिय है तो बहुत कुछ उन यज्ञो के कारण जो कई स्थानों पर हो जाते हैं या कुछ साहित्य द्वारा हम अपनी विचार धारा दूसरे लोगो तक पहुचा सकते हैं। बड़े-2 सम्मेलन करने का समय अब पजाब मे समाप्त हो चुका है। कल को स्थिति क्या बनती है इसके विषय मे अभी कुछ [illegible]ना कठिन है आज तो हम इतना ही कह सकते हैं कि केवल आर्य समाज का ही नही सारे पजाब का भविष्य अत्यन्त धूमिल और निराशाजनक दिखाई दे रहा है।

ऐसी स्थिति मे आज फिर पजाब में आर्य समाज के कर्णधारो को यह सोचना पड़ेगा कि वह क्या करें? एक बात बिल्कुल स्पष्ट है कि जो कुछ हो रहा है या कल को हो सकता है। उसे देखते हुए भी आर्य समाज के दरवाजे तो बन्द नहीं किए जा सकते। आर्य समाज का अपना एक इतिहास है उसकी अपनी कुछ परम्पराए हैं। आर्य समाज ने अपने एक शताब्दी के जीवनकाल मे बड़ी 2 कठिनाईयो का मुकाबला किया है जो ज्योति हमारे पूर्वजों ने जलाई थी वह तो जलती ही रहेगी उसके लिए हमे चाहे कितना ही बलिदान करना पड़े। इस लिए हमें गम्भीरता पूर्वक सोचना चाहिए कि जिन परिस्थितियो मे से हम गुजर रहे हैं उनमें हमें अब क्या करना चाहिए? आर्य समाज एक प्रभावशाली सस्था है जिसका एक विशेष व्यक्तित्व है। वह केवल नारेबाजी से नही चलती प्रत्येक समस्या पर गम्भीरता पूर्वक विचार करती है। समस्या धार्मिक हो, सामाजिक हो या राजनैतिक हो। पंजाब की सबसे बड़ी समस्या आज राजनैतिक है। उसके कारण धार्मिक और सामाजिक गतिविधियो पर भी कुछ प्रतिबन्ध लग रहा है यह प्रतिबन्ध सरकार की तरफ से इतना नहीं जितना परिस्थितियों के कारण और परिस्थितियां ऐसी हैं जिनकी अवहेलना नहीं की जा सकती। मैं चाहूगा कि पजाब के आर्य सज्जन इन परिस्थितियों पर विचार करके अपने सुझाव सभा को भेजें कि हमें क्या करना चाहिए। आर्य मर्यादा के इसी अक में सभा की ओर से जो विज्ञप्ति आर्य समाजो को भेजी गई है वह भी प्रकाशित की गई है। यह भी एक विषय है जिस पर हमें सोचना चाहिए। आर्य समाज अपने आपको प्रान्त के राजनैतिक वातावरण से दूर नहीं ले जा सकता। इसी में रहते हुए हमें राजनैतिक समस्या का भी कोई समाधान ढूढना चाहिए वह क्या हो सकता है इस पर आगामी अक में अपने विचार पाठकों के सामने रखूगा।

वीरेन्द्र

सन्ध्या अग्नि-होत्र

सन्ध्या और अग्निहोत्र पर समय समय पर कई प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित होती रहती हैं। बड़े-बड़े विद्वानो ने अपने विचार पुस्तक के रूप मे इस विषय पर दिए हैं और मैं समझता हू कि शायद ही कोई ऐसा परिवार होगा जिस मे सन्ध्या और अग्निहोत्र की क्या व्यवस्था होनी चाहिए इस विषय मे कोई न कोई पुस्तक न हो। ऐसी पुस्तकें सभाओ ने भी प्रकाशित की हैं, आर्य समाजो ने भी की हैं और कई व्यक्तियो ने भी की है। इन के द्वारा कुछ न कुछ प्रचार तो होता ही है परन्तु कई बार यह कठिनाई भी होती है कि विद्वानो मे ही मतभेद पैदा हो जाता है। वेद मन्त्रो के अर्थों पर भी हो जाता है और कर्म काण्ड पर भी हो जाता है। इसी कारण कई बार लोग बहुत दु खी हो जाते है कि किस की बात सुने किस की बात मानें किस की न मानें।

अब सन्ध्या अग्निहोत्र नाम से एक नई पुस्तक प्रकाशित हुई है। इस के लेखक वेदो के प्रकाण्ड पण्डित और आर्य समाज के विख्यात विद्वान् श्री प सत्यकाम जी विद्यालंकार हैं। मेरे विचार मे ऐसी पुस्तक इस से पहले प्रकाशित नही की गई। आज का युग कला का युग है और प्रकाशन की भी एक कला है। लोग जब कोई पुस्तक खरीदने लगते हैं तो वह उस के कागज उस के छपाई और उस के रूप रंग को देखते हैं। अग्रेजी की पुस्तकें अब इसीलिए अधिक प्रचलित हो रही हैं क्योंकि वह आधुनिक प्रकाशित कला के अनुसार प्रकाशित की जाती हैं। हमारी पुस्तकें इस स्तर की नही होती। इसीलिए वह अधिक बिकती भी नहीं। आजकल के पढ़े लिखे लोग उन्हे अपने पास रखना नही चाहते। इसीलिए उनकी वह बिक्री नहीं होती जो होनी चाहिए।

श्री प सत्यकाम जी विद्यालंकार आर्य जगत के धन्यवाद के पात्र हैं कि उन्होंने इस कमी को पूरा कर दिया है। सन्ध्या अग्निहोत्र के नाम से जो पुस्तक उन्होने प्रकाशित की है वह कई रगो मे प्रकाशित की गई है। मन्त्रो के साथ चित्र दिए गए हैं और प्रत्येक मन्त्र का हिन्दी और अग्रेजी मे अनुवाद दिया गया है और इस की प्रस्तावना मे सन्ध्या और अग्निहोत्र के महत्व को बताया गया है। साथ ही यह भी लिखा गया है कि सन्ध्या और हवन कैसे किया जाता है। अग्निहोत्र का लक्ष्य क्या है, प्रत्येक मन्त्र का अर्थ और महत्व दिया गया है और अन्त मे वह गीत भी दिए गए हैं, जो यज्ञ के समय हम प्राय गाते हैं।

मैंने इस विषय पर और भी कई पुस्तकें देखी हैं परन्तु मेरे विचार मे ऐसी कोई और पुस्तक अभी तक प्रकाशित नही हुई है। यह पुस्तक प्रत्येक आर्य परिवार मे, प्रत्येक आर्य समाज मे और प्रत्येक आर्य शिक्षण सस्था मे रहनी चाहिए। इस का मूल्य केवल 25 रुपए है। जो मेरे विचार के अनुसार कुछ अधिक नही, क्योकि ऐसी पुस्तक जिसकी ऐसी सुन्दर छपाई हो। आजकल 25 रु मे नही मिलती। मैं पजाब की सब आर्य समाजो से यह निवेदन करता हू कि यह पुस्तक वह अपने पास मगवा कर रखें। हम अपनी सभा की ओर से इस की कुछ प्रतियां मगवा रहे हैं। जिन आर्य समाजो को इस पुस्तक की आवश्यकता हो, वह सभा के कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से ले सकते हैं। और जो हमे 25 रुपए के हिसाब से जितनी प्रतियों के लिए पैसे भेज देगा उतनी प्रतियां उसे भेज दी जाएगी।

—वीरेन्द्र

आर्य समाज और उसकी शुद्धिकरण रीति और नीति

लेखक—श्री मागे राम आर्य, प्रधान
आर्य समाज अहमदनगर (महाराष्ट्र)

आर्य समाज योगेश्वर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की स्थापित की हुई विशुद्ध वैदिक सस्था है। यदि हम इसे आर्य विद्वानो की सभा (समाज) कहे तो इस मे अतिशयोक्ति न होगी। आर्य समाज का कार्य मुख्यत्या वेद का प्रचार और प्रसार करना है। इस के अतिरिक्त कुरीतियो का खण्डन और सत्य का मण्डन सत्य शास्त्रो के अनुसार करना। सभी सम्प्रदायो की आलोचना और वैदिक धर्म की समालोचना सत्य और वैदिक धम की समालोचना सत्य और असत्य के निर्णय के लिए निर्भ्रान्त और सावभौम है। वैदिक धर्म किसी व्यक्ति विशेष पर आधारित नही है। इसके अतिरिक्त सभी मतमतान्त्र और सम्प्रदाय किसी न किसी व्यक्ति पर आधारित हैं,ईश्वर प्रतिपादित नही परन्तु वेद ईश्वर का निज ज्ञान है, जो नित्य है। इस मे सन्देह नही।

आर्य समाजी (आर्य समाज) अपने आपको "हिन्दू" नही मानते। वह अपने आपको "आर्य" कहते हैं। वह अपने आपको ऋषि दयानन्द का अनुयायी मान्ते हैं और इसी लिए वह अपने नाम के सामने अन्त मे "आर्य" शब्द लगाते हैं जो श्रेष्ठता का सूचक है और जगत गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की देन है। महाभारत काल से लेकर महर्षि दयानन्द के आगमन तक यह आर्य शब्द लुप्त प्राय ही रहा। वेदो का भी नाम मात्र शेष था कोई नही जानता था कि इन में कौन सा ज्ञान भरा हुआ है। विदेशी इन्हे गडरियो के गीत बताते थे। देव दयानन्द ने एक प्रकार से वेदो का पुन उद्धार किया और इन्हे अपौरुषेय ईश्वरीय ज्ञान बता कर सब के समक्ष रखा। वेदो से "आर्य" शब्द ढू ढ निकाल कर उसे सुसगत और उपयुक्त जानकर आर्य समाज रूपी वट वृक्ष (सस्था) की स्थापना की और इस श्रेष्ठ, सभ्य और विद्वत सभा के दस सुनहरी नियम भी बनाए। इन दस नियमो मे से प्रथम के तीन नियम तो आर्य समाज की आधार शिला हैं और शेष सात नियम उस के कर्त्तव्य अकर्त्तव्य का बोध कराते हैं। यह दस नियम वेदानुकूल सत्य पर आधारित हैं।

अब हमें यह विचारना है कि हमारे गुरु दयानन्द ने "आर्य" शब्द को ही पकड कर क्यो आर्य समाज की स्थापना की क्या विशेषता है इस "आर्य" शब्द मे जो उन्हे दिखाई पडी ? क्यो नही भारत मे प्रचलित "हिन्दू" शब्द को ले कर "हिन्दू समाज" बनाया ? इस का असली भेद मैं लिखता हू, ध्यानपूर्वक पढिये और विचारिये आर्य शब्द हमारी वैदिक सस्कृति का है जिसके अर्थ सभ्य, सज्जन, श्रेष्ठ आदि होते है, और हिन्दू शब्द अरबी या फारसी विदेशी भाषा का है जिसके अर्थ काला, काफिर चोरादि होते हैं। इसलिए महान दयानन्द कैसे विदेशी भाषा के 'हिन्दू" शब्द को जिस के अर्थ "आर्य" शब्द से बिल्कुल उल्टे हो,प्रयोग मे कैसे ला सकते थे। उन्होने तो इस शब्द का कडा खण्डन और बहिष्कार किया है। इस विषय मे देखे "उपदेश मजरी" का महर्षि का व्याख्यान न 4 और 8, ऋषि तत्व वेता और दूरदर्शी होते हैं। वह वेद मर्यादा का कभी उलघन नही करते। वह वेद पथ को छोड कर असत्य मार्ग का अनुसरण नही करते। शास्त्र मर्यादा के अनुसार सब कार्य करते है। ऋषि लोग कभी असत्य नही कहते और मनुष्य सब झूठ बोलते हैं। यही आप्त पुरुष और साधारण मनुष्य मे भेद है। इसलिए योगेश्वर दयानन्द ने, जो वेदो के मर्म को जानते थे, वेदो के प्रकाण्ड विद्वान थे, वेदो से "आर्य" शब्द को ले कर, उसे सुन्दर, सार्थक और पवित्र जान कर "आर्य समाज" विद्वानो की सस्था की स्थापना की जो बिल्कुल उपयुक्त है। इस मे कोई त्रुटि नही।

अब प्रश्न उठता है कि जब हम ऋषि दयानन्द के अनुयायी अपने आपको कहते हैं और मानते हैं। उन्हीं की शिक्षाओ और आदेशो के अनुसार चलते और कार्य करते हैं। उन्ही की स्थापित की हुई सस्था से तालुक रखते हैं और ऋषि की मान्यताओ का दम भरते हैं, तो हम हुए "आर्य" क्योकि ऋषि ने हमें आर्यत्व का जामा पहनाया। फिर मेरी समझ में नही आता कि आर्य समाजी क्यों हिन्दू व हिन्दुत्व के पीछे पडे हैं और क्यों इसका दम भरते हैं। यह तो ऋषि दयानन्द की विचारधारा के प्रतिकूल है। जिस हिन्दू, हिन्दू धर्म और हिन्दुस्तान का देव दयानन्द ने विरोध और बहिष्कार किया, इसे त्याज्य बतलाया, फिर क्यो नही आर्य समाजी इसे तिलाजली देते। आर्य समाजी विद्वत् मण्डल अभी तक यह निर्णय नही कर पाया कि हम आर्य हैं या हिन्दू। इस पर आर्य समाज के कर्णधार सोच विचार करें और अन्तिम निर्णय लेवें, तभी एक रास्ता मिलेगा। यह दो घोडे की सवारी खतरनाक होती है, यह हमारे विद्वानो को ध्यान मे रखना चाहिए। इसी दो घोडे की सवारी ने आर्य समाज को रसातल मे पहुचा दिया है जो काग्रेस और हिन्दू महासभा के साथ मिलने के कारण हुआ, इस मे शक नही।

इसके उपरान्त मैं शुद्धि विषयक अपने विचार प्रकट करता हू। आजकल शुद्धि नाम मात्र को हो रही है। आर्य समाज ने भी ईसाईयो की तरह रोटी, कपडा, औषधि और भरण-पोषण के निमित कुछ पैसा दे कर ईसाईयो और इतर जातियो की शुद्धि आरम्भ की हुई है जो उडीसा प्रान्त मे चल रही है। ऐसी शुद्धिया देर तक स्थाई रूप मे कम ही टिकती हैं क्योकि आर्य समाज के पास पुष्कल धन हमेशा देने के लिए नही है और कुछ समय व्यतीत होने पर वह शुद्धि शुदा वापस अपने पिछले मत को ग्रहण कर लेते है। तो इस प्रकार की शुद्धि फलीभूत नही होती। शुद्धि को सार्थक और टिकाऊ—बनाने के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाने चाहिए, जो कारगर हो सकते हैं। इनके अपनाए बिना आर्य समाज का वृद्धि कार्य आगे नही बढ सकता और न ही उस के आर्य परिवार की सख्या वृद्धि हो सकती है। फिर आप ही विचारिये कि 'आर्य समाज का यह नारा "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" कभी पूरा हो सकता है, असम्भव है। हमने टिकट लिया है कलकत्ता जाने वाली गाडी का और भूल से बम्बई जाने वाली गाडी मे चढ गये तो कैसे कलकत्ता पहुच जाएगे। यही आर्य समाज की दिशा है।

1 शुद्धि कार्य वेद प्रतिपादित होना चाहिए। ठीक रीति से मुण्डन आदि करा कर, यज्ञोपवीत दे कर, सब आर्य सिद्धांत समझा कर, मद्य, मास, अण्डा और मादक द्रव्यो से परहेज करवा कर, सत्य वैदिक सिद्धात समझा कर उन्हें पवित्र "वैदिक धर्म" मे प्रवेश(दीक्षित)करावे, न कि गगा जल का छींटा देकर "हिन्दू धर्म" मे मिलावें क्योकि हिन्दू कोई धर्म नहीं है, यह हमारे धर्म शास्त्रो में कहीं वर्णित नहीं है। यह तो एक पौराणिक पद्धति का चूं चूं का मुरब्बा है, यह बेपेंदी का लोटा है, सिद्धान्तहीन है, जो सार्थक नहीं। यह खली की बेल है, जो त्याज्य है।

2 सभी शुद्धि शुदा प्रेमी बन्धुओ के नये नाम करण होने चाहिए और हर एक के नाम के साथ अन्त मे पवित्र "आर्य" शब्द जोडा जाना चाहिए जो परम आवश्यक है। इस शब्द का अर्थ भी सबको समझा देना चाहिए। हर व्यक्ति से प्रतिज्ञा पत्र भरवा लेना चाहिए कि हम अपनी इच्छा से इस पवित्र वैदिक धर्म को स्वीकार करते हैं क्योकि यह सार्वभौम और सार्वत्र ईश्वरीय धर्म है। ऐसा करने से वह शुद्धि शुदा बन्धु दृढ प्रतिज्ञ होगा।

3 आर्य परिवार सघ (वैदिक भाई) की स्थापना की जाए और शुद्धि शुदा आर्य नर और नारियो को इस आर्य परिवार सघ का अनिवार्य सदस्य बनाकर उन्हे आर्य बराबरी में शामिल करके उन से आगे के लिए रोटी, बेटी, रिश्ते नाते का व्यवहार चालू किया जाए जिससे वह दृढ आर्य बन जाए, सभी जाति-पाति के भेदभाव को दूर करके बिना किसी झिझक के उन से शुद्ध मेल-जोल का व्यवहार स्थापित किया जाए और उन्हे अपने पिछले मत मे वापस जाने की नौबत न आवे। यदि इतना हो गया तो आर्य समाज की शुद्धि नीति सार्थक और फलीभूत होगी और आर्यों की सख्या मे स्थाई वृद्धि होगी। इसमे सशय नहीं।

अन्त मे मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, भारतीय शुद्धि सभा और प्रान्तो की आर्य प्रतिनिधि सभाओ व आर्य समाज से सम्बन्धित सभी सस्थाओं के कर्णधारो से आग्रह पूर्वक नम्र विनती करता हू कि वह अपने प्रान्त के हर जिले मे जहा आर्य समाज स्थापित है, वहा "आर्य परिवार सघ" की स्थापना करें और शुद्धि शुदा बन्धुओ को आर्य परिवार सघ" मे शामिल करके उसका सभासद् बनावें और उनसे रोटी बेटी का व्यवहार चालू करें। इस प्रकार आप आर्य समाज की वेदी से छुआ-छूत और जाति पाति के बेढगे भूत को समाप्त करने मे सफल होंगे। ऐसा करने से हम मे एकता आएगी और हमारा आर्यत्व जागेगा और धीरे-धीरे हम वर्ण व्यवस्था स्थापित कर सकेंगे। दूसरे सभी वर्गों को भी "आर्य परिवार सघ" में शामिल करें, जिससे हमारी सख्या मे बढौतरी हो सके। यदि आप सच्चे दयानन्द के अनुयाई हैं और उन्हें अपना गुरु मानते हैं तो इसके करने में कोई कसर न उठा रखें। यह बडे उपकार का कार्य है।

आर्य समाज की एक विभूति—३

आचार्य देव प्रकाश जी

लेखक—श्री भोलानाथ जी दिलावरी,
प्रधान, केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर

(25 जनवरी से आगे)

दो लाख मलकानों की शुद्धि —

राजा महाराजाओ का भी काफी सहयोग मिलने लगा। इनमे उल्लेखनीय शाहपुराधीश महाराजा नाहर सिंह, अमेठी के राजकुमार श्री रणजय सिंह भी थे। महाराजा एटा, महाराजा मैनपुरी एव अनेक छोटे राजा, ठाकुर, चौधरी भी वहा मलकाना राजपूतो की शुद्धि समारोह मे उपस्थित हुए और शुद्ध हुए [illegible]नो के साथ बैठकर भोजन किया तथा हुक्के गुडगुडाते रहे। इस प्रकार यह शुद्धि आन्दोलन अत्यन्त सफल रहा। इसी के साथ वृन्दावन मे भी एक विशाल शुद्धि सम्मेलन किया गया जिसमें अनेक आर्य नेता एव राजा महाराजा सम्मिलित हुए। इस हिन्दू शुद्धि सभा द्वारा आगरा, मथुरा, वृन्दावन, भरतपुर, बयाना, अलीगढ, बुलन्दशहर, पलवल, कोसी, फरीदाबाद, बल्लभगढ, मरठ, एटा, इटावा, मैनपुरी, कासगज, फरुखाबाद बलिया, गोरखपुर, बहराइच बिजावर, बदायू, सुलतानपुर, अमेठी, अवध के ठिकाने, कुर्री सिधौली, शिवगढ आदि-आदि स्थाना से दो लाख मे अधिक मलकाने राजपूतो की शुद्धि की गई।

सन् 1925 ई मे महर्षि दयानन्द की जन्म शताब्दी मथुरा म अभूतपूर्व समारोह से मनाई गई। इस अवसर पर भी आचार्य देव प्रकाश जी ने "हिन्दू शुद्धि सभा" की ओर से प्रचारार्थ एक बडा कैम्प लगाया और दिन रात एक करके इस कार्य को सफल बनाया। आप जब मलकाने राजपूतो की शुद्धि के कार्य मे लगे हुए थे तब जहा कही भी आप को मलकानो का पता चलता तो आप उन्हे ढूढ कर भी शुद्धि सभा के कार्यालय मे ले आते और शिष्टाचार रूप मे उन्हे भोजनादि करा कर ही वापिस जाने देते। आचार्य जी जितने वर्ष भी आगरे मे रहे उन्हे कभी भी तीन घण्टे से अधिक सोने का समय नही मिला। इस विशाल आन्दोलन मे 300 से अधिक कार्यकर्त्ता थे जो आचार्य देव प्रकाश जी की देख-रेख मे कार्य करते थे।

राजद्रोह के अभियोग —

ज्ञानी पिण्डीदास जी ने जो उन दिनो आर्य युवक सभा के प्रधान थे 1922 मे "आर्य-प्रैस" नाम का एक छापा खाना अमृतसर मे खोला। यह अमृतसर मे पहला हिन्दी छपाई का प्रैस था। इसमे आचार्य प देव प्रकाश जी को प्रिन्टर नियुक्त कर लिया गया। उन्ही दिनो भिवानी (हिसार) के एक पुस्तक विक्रेता ने एक छोटी सी पुस्तक छपवाई। प्रकाशक की दुकान बन्द हो गई और लेखक भाग गया। इस पुस्तक का विषय "मजबूर-पचास" था। जिसका विषय अग्रेजी शासको के विरुद्ध युद्ध करने की धारा 124 ए के अन्तगत आता था। इस कारण उन के विरुद्ध एक अभियोग चल पडा। जिसके कारण आचाय देव प्रकाश जी के प्रिन्टर होने के नाते वारण्ट गिरफ्तारी जारी हो गए। इन दिनो वह शुद्धि के काय मे आगरा मे लगे हुए थे। उन्हे अभियोग का पता चल गया और वह लाहौर चले आए। यह अभियोग प श्री कृष्ण मैजिस्ट्रेट की अदालत मे चलता रहा। सौभाग्य से श्री कृष्ण न्यायाधीश डी ए वी कालेज लाहौर के पुराने विद्यार्थी थे जो महात्मा हसराज जी के शिष्य थे ? इस कारण मैजिस्ट्रेट महोदय ने १00 रु जुर्माना का दण्ड दिया, जो आर्य समाज के सदस्यो ने मिल कर भुगतान कर दिया तथा आचाय जी पहले की भान्ति शुद्धि का कार्य बडे जोर-शोर से करते रहे।

आपकी विश्वास पात्रता

एक दिन एक मुसलमान डिप्टी सुपरिटैन्डैन्ट पुलिस मकान पर आए उनके पास 40 50 तोले सोना था और आचाय जी क सामने डाल कर कहा "महाशय जी मेरी पुत्री का विवाह होने वाला है। आप इसे रख लें और इसके आभूषण बना दीजिए।" आचार्य जी बोले "मैं तो बाहर जा रहा हू अत. मैं यह सेवा नहीं कर सकूगा।" डी एस पी साहब ने कहा "कोई बात नहीं, जब आवेंगे तब ही बना देना। आपके अतिरिक्त अन्य किसी पर हमें विश्वास नही है।" यह कह कर पुलिस आफिसर सोने की पोटली छोड कर चला गया। यह एक ऐसा उदाहरण है जो आचार्य जी की ईमानदारी की धाक था जो अपने तो अपने पराये के प्रति भी दर्शाता है।

मीरपुर कोटली मे हिन्दुओं पर अत्याचार—

जब जम्मू कश्मीर की रियासत मे मीरपुर और कोटली नाम के दो नगरा के मुसलमानो ने वहा के हिन्दुओ पर अमानुषिक अत्याचार किये तब भी नर नाहर आचाय महात्मा हसराज जी की आज्ञा स वहा पहुचे और पीडितो की सहायतार्थ अन्न तथा धन बाटा गया और उनके दु ख क्लेशो का निवारण किया।

बिहार का विनाशकारी भूकम्प—

बिहार के कई क्षेत्रा मे सन 1934 मे भूचाल ने प्रलय का दृश्य उपस्थिति कर दिया। वहा भी महात्मा हसराज जी के आदेशानुसार आचाय सेवार्थ चले गए। सीतामढी नगर को इन्होने केन्द्र बनाकर जिस उत्तम रीति से वहा पीडितो की सेवा की उसे बिहार प्रान्त का बच्चा बच्चा जानता है। प्रतिदिन आप बीसियो मील चक्कर कही कही कमर तक गहरे पानी म घुसकर, कही रेतीले क्षत्रो को पार कर दूर दूर तक बिखरे हुए पीडितो की जरूरतें पूरी करते फिरते थे। इनके साथ डी ए वी कालेज लाहौर के कई विद्यार्थी भी होते थे। आपने वहा 506 कुए भी साफ करवाय ताकि जल सकट दूर हो सके। 421 ग्रामो मे 40 50 हजार रुपए के नवीन वस्त्र आदि भी वितरित किए। जिनके मकान गिर गये थे उनके लिए नए आवास निर्मित करवा दिए। इन सब अभूतपूर्व सेवाओ से प्रसन्न होकर अपना आभार प्रदर्शित करने के लिए जनता ने सार्वजनिक रूप से आचाय जी का सम्मान किया और मुद्रित अभिनन्दन पत्र भी प्रस्तुत किया।

अभी यह कार्य समाप्त ही हुआ था कि महात्मा हसराज जी ने इन्हे सूचित किया कि उस सीतामढी क्षत्र मे बाढ ने पुन प्रलय का दृश्य उपस्थित कर दिया। अत आप पुन वहा चले जावें। बाढ से इस क्षेत्र मे सडक और रेल की पटरिया अस्त व्यस्त हो गई थी। अत आचार्य जी को जलपोत द्वारा वहा जाना पडा। चारो ओर पानी ही पानी था। कई स्थानो पर पैदल भी चलना पडा। इस प्रकार आप बडी कठिनाई से सीतामढी पहुचे। जब तक उन लोगो को पूरी तरह राहत नही मिली तब तक वहा डटे रहे।

भीलो मे शुद्धि कार्य—

आगरे मे ही आपको सेठ जुगल किशोर बिरला का पत्र महात्मा हसराज जी द्वारा इनको मिला जिसमे सूचित किया गया था कि अकाल पीडित पाच हजार भील हिन्दू धर्म छोड, ईसाई हो गए हैं और अगणित सख्या मे निकट भविष्य मे उनके पतित होने की पूरी आशका है। अत आप तुरन्त पहुचिये। आदेश पाते ही आचाय महोदय सीधे रतलाम पहुचे। वहा से रावटी चले आये। वहा पहुच कर आचार्य जी ने नगर निवासियो एव राज्य कर्मचारियो से भेंट की। वहा जाते ही उन से पता चला कि दो वर्ष म अनावृष्टि के कारण भीलो के पास खाद्य वस्तुओ का नितान्त अभाव है। यदि इनकी उदरपूर्ति का प्रबन्ध हो सकता है तो काम आरम्भ कर दीजिए। हम भी आपकी यथा सम्भव सहायता करेगे। आप इस काय को करने के लिए राजकीय मन्दिर मे बैठ गए और गगा जल मगवा लिया। बृहद यज्ञ का अनुष्ठान किया और काय आरम्भ करने के विचार से जल मे तुलसी पत्र डाल लिए। जिन भीलो की शुद्धि करनी होती उन्हे तीन तीन आचमन कराते, नाम पते लिखकर और यज्ञ कराने के बाद एक एक भील को एक-एक मन अन्न दे देते। आपने महात्मा हसराज जी को तार दिया कि शुद्धि का काय आरम्भ कर दिया गया है। लोग धडाधड शुद्ध हो रहे है। मक्की उधार ले ली है। पाच हजार रुपये तार द्वारा भेज दीजिए। आपने शुद्धि के काय मे रात दिन एक कर दिया। सेठ जुगल किशोर बिरला जी ने भी अपना आदमी रावटी मे भेज दिया जो कि आचाय देव प्रकाश जी क कहेनुसार अनाज खरीद कर उन्हे देता रहा। इस प्रकार एक हजार परिवारो को निरतर मक्की की सहायता दी जाती रही। इन भीलो ने ईसाईयो से सहायता लेना बन्द कर दिया। निरतर चार मास म भील परिवारो को 40 हजार रुपए की मक्की वितरित की गई। आचाय जी द्वारा मक्की वितरण का यह प्रभाव दूर दूर तक भील प्रदेशो मे फैल गया। कुशलगढ और बासवाडा रियासतो मे भी हजारो भील शुद्धि हो गए। इस प्रकार कोई भी भील ईसाई नही बन पाया। सारा क्षत्र शुद्ध हो गया। परन्तु झबुआ के हिन्दू राजा दलीप सिह ने अपनी रियासत मे भीलो की शुद्धि की अनुमति नही दी और आचार्य जी को अपने राज्य से निकाल दिया।

आचाय जी ने रावटी, कलजरा, बासवाडा मे भी छात्रावास एव स्कूल खोले।

(क्रमश)

श्रीसन्तराम जी बी.ए. से संबन्धित एक संस्मरण

जातपात पं. पुरोहित और सरकार

सन 1930 के आसपास की बात है। उस समय समाज-सुधार और भार तीयता को उजागर करने वाले पत्र थे। "क्रान्ति"भविष्य"विशाल भारत"माडर्न-रिविन आदि। मन मे इनके लेख पढने और समझने जैसी बुद्धि अभी विकसित हुई नही थी। पर, क्रान्ति मे छपने वाले कारटून सारे भावो को समझा देते थे। अपरिणत बुद्धि मे बात बैठ जाती थी। तीर्थों पर स्नान के अशोभनीय दृश्यो, अनमेल विवाह की खराबियो, छुआछूत, नशा, जातपात सम्बन्धी रोचक कारटूनो ने मेरे मन पर गहरी छाप छोडी है। क्रान्ति के सम्पादक रहे हैं—सन्तराम बी ए

निजाम राज्य (हैदराबाद स्टेट) मे बन्सीलाल श्यामलाल भाइयो की जोडी ठीक एसा ही आन्दोलन यहा चला रही थी। ये जोडी उपरोक्त सुधारो की कट्टर पक्षधर और सफल प्रचारक थी। बहुत सारे युवक इसके अनुयायी बने और जात-पात तोड कर विवाह किए। श्री सन्तराम से इसका सम्पर्क था या नही, मुझे पता नही, इतना जानता हू कि दिल्ली, पजाब के प्रमुख आर्यों से इसका सम्पर्क था।

इन्ही कारणो से मेरा विवाह भी जात-पात तोडकर हुआ। मैंने अपनी चारो सन्तानो का विवाह जात-पात तोड कर किया है। जात पात को मैं सब से बडा शत्रु मानता हू। उन विवाहो मे मैं शरीक ही नही होता जो जात बिरादरियो मे रचे जाते हैं। जात-पात के मिटाने की यह तीव्र भावना मुझ मे भाई बन्सीलाल तथा सन्तराम जी की 'क्रान्ति'और सत्यार्थ प्रकाश से आई है। इन सब का मैं ऋणी हू।

आज छुआछूत, अनमेल विवाह जैसी बुराईया समाज मे नही हैं। खान-पान रहन-सहन के भेद भी मिट गए हैं। इसका श्रेय श्री सन्तराम जी को जाता है।

बेटी व्यवहार के मामलो की हद तक जात-पात अभी भी बाकी ह। जात-पात को टूटने से बचाते चले आ रहे हैं —

1 पौराणिक पडित पुरोहित—निज स्वार्थ के लिए।
2 सामाजिक सुधारवादी कार्यकर्ता—अपनी वाह-वाही के लिए।
3 केन्द्र व प्रान्तीय सरकारें—राजनैतिक लाभ के लिए।

सरकारें जात पात तोडने के लिए प्रलोभन भी दे रही हैं—सुधारवादियो को खुश करने के लिए ऐसा ही कुछ हाल है आर्य समाज का,आय समाज सिद्धान्त रूप मे जात पात को नहीं मानता पर बेटी व्यवहार जात बिरादरियो ही मे करता चला आता है क्योकि उसके सदस्य जात बिरादरी के भूत से डरते हैं। परीक्षा की घडी मे आय समाजी अपने सिद्धान्त को आसानी से छोड देता है। ऐसा फसली आय समाजी सस्कार तो वैदिक विधि से करवाता है। यह बताने के उद्देश्य से कि सिद्धान्त विरोधी उसके काम मे पडितो का सहयोग उसे प्राप्त है। अत आर्य समाज के पडित पुरोहित फसली आर्यों के सस्कारो को सम्पन्न कराना छोड द। सरकारें भी जात पात को दी गई मान्यताओं को रद्द कर दे। तब ही जातपात का भूत भागेगा। देश और समाज का उद्धार होगा।

—भगाराम वानप्रस्थी तोपखाना मार्ग हैदराबाद

आर्य समाज शान्ताक्रुज बम्बई का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज शान्ताक्रुज बम्बई का 42 वा वार्षिकोत्सव 18 जनवरी से 26 जनवरी तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ से प्रारम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पूजनीय स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने यज्ञ सम्पन्न कराया तथा प्रतिदिन प्रात व साय स्वामी महाराज के प्रवचन होते रहे। पूर्णाहुति के अवसर पर अपार जन समूह उपस्थित था।

इस अवसर पर आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् सन्यासी स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती, स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती के निरन्तर सात दिनो तक प्रवचन होते रहे। तथा श्री गुलाब सिंह राघव दिल्ली, के सुमधुर भजन हुए।

दिनाक 25-1-87 को वेद सम्मेलन समारोह सम्पन्न हुआ जिसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध वैज्ञानिक सन्यासी स्वामी सत्य प्रकाश जी सरस्वती ने की। इस अवसर पर बोलते हुए पूज्य स्वामी जी महाराज ने कहा वेद सृष्टि के आदि का ज्ञान है, इस विषय में अभी भी बहुत सा अनुसन्धान करना बाकी है जो अभी तक किसी ने नहीं किया। वेद में प्रत्येक वस्तु का ज्ञान बीज रूप मे विद्यमान है। इसका विस्तार कैसे हो इस विषय में विचार करना होगा। इसके लिए वेद का पढ़ना उससे सम्बन्धित ग्रन्थो का अध्ययन किए बिना वहा तक पहुचना कदापि सम्भव नहीं है। यह काम आर्य समाज को ही करना होगा। इसके बिना और कोई करने वाला नहीं है।

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने बताया कि वेद पढ कर ही विश्व के रहस्य को समझा जा सकता है जिसने बिना वेद पढे कुछ प्रयत्न किया है वह केवल ससार की वस्तुओ तक ही सीमित रहा है। इससे आगे क्या है इस रहस्य को तो वेद ही बता सकता है।

१० दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर

आर्यवन विकास फार्म-रोजड़, पोस्ट :—सागपुर
जिला —साबरकांठा (गुजरात) पिन—383307

महोदय !

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि यहा आर्य वन विकास फार्म मे चैत्र कृष्णा 6 से चैत्र शुक्ला 1 तदनुसार 21 मार्च से 30 मार्च 1987 प्रात काल तक एक 10 दिन के योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसमे माताए भी भाग ले सकती हैं। 30 मार्च दोपहर से उत्सव का कार्यक्रम प्रारम्भ होगा जो 31 मार्च दोपहर तक चलेगा।

शिविरार्थियो को योग-दर्शन के सूत्रों का अध्यापन तथा क्रियात्मक योगसाधना सिखाने के साथ-साथ यम नियम-आसन-प्राणायाम—प्रत्याहार--धारणा—ध्यान-समाधि, विवेक वैराग्य-अभ्यास, जप-विधि, ईश्वर समर्पण, स्वस्वामि-सम्बन्ध (ममत्व) को हटाने जैसे अनेक सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला जायेगा। शिविर शुल्क 150 रुपए होगा।

—स्वामी सत्यपति परिव्राजक

देहरादून में पारिवारिक सत्संग

वैदिक सत्सग समिति, देहरादून द्वारा वेद प्रचार कार्यक्रम के अन्तर्गत स्थानीय चक्खूवाला मे एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ वेदमन्त्रो के सम्वेत स्वरो से, वायु जलशोधक रोग कृमि नाशक यज्ञ से किया गया। जिसके अनन्तर यज्ञ के महत्व पर चर्चा की गई। वेद की पृष्ठ भूमि म राष्ट्रीय एकता, अखण्डता एव राष्ट्रोन्नति पर वार्तालाप भी हुआ।

कार्यक्रम में सर्वश्री शिवनाथ आर्य प्रमसिंह वर्मा एव मनमोहन आर्य सहित स्थानीय व्यक्ति सम्मलित हुए।

—मन्त्री

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज माडल टाउन पठानकोट का वार्षिक चुनाव '8 1 87 को साप्ताहिक सत्सग के पश्चात् सम्पन्न हुआ जिसमे सुभाष चन्द्र जी मित्तल सर्व सम्मति से समाज के प्रधान चुने गए। पश्चात् उन्होने सभा में दिए गए अधिकार के अनुसार निम्नलिखित अधिकारियो को मनोनीत किया।

महामन्त्री- श्री बलदेव राज मडुकवी
उप-प्रधान—डा हरिचन्द
उप-प्रधान—श्रीराम मूर्ति वर्मा
कोषाध्यक्ष—श्री सतपाल सैनी
प्रचारमन्त्री—श्री आदर्श वर्मा
उपमन्त्री—श्री विजय कुमार

—महामन्त्री

पंजाब में संस्कृत को बन्द न किया जाए

आय समाज मोहाली ने अपन रविवार दिनाक 1-2-87 मे, साप्ताहिक सत्सग के पश्चात विशेष बैठक मे सर्व सम्मति से पारित प्रस्ताव द्वारा पजाब सरकार से माग की है कि आठवी-दसवी की पजाब एजुकेशन बोर्ड की परीक्षा मे सस्कृत भाषा विषय को वैकल्पिक विषय के रूप मे रखने की यथा-पूर्व स्थिति बहाल कर उदारता का परिचय दें।

एक अन्य प्रस्ताव मे गैर-सरकारी स्कूलो के साथ-2 सरकारी स्कूलो मे भी हिन्दी को माध्यम की छूट का दर्जा देने की माग की गई।

—विशेष शर्मा
मन्त्री—आर्य समाज मोहाली।

मानव और दानव की भेद-रेखा

लेखक—प्रिंसीपल रामदेव शास्त्री,
एम ए बी टी पठानकोट

**ओ३म् अक्षण्वन्त कर्णवन्तः सखाय मनोजवेषु असमा बभूवु।
आदघ्नास उपकक्षास उत्वे स्नात्वा इव उत्व ददृशे ॥**

शब्दार्थ—(अक्षण्वन्त) दो आखो-वाले,(कर्णवन्त)—दो कानो वाले(सखाय) समान(मनोजवेषु)मन के वेगो मे(असमा) असमान (बभूवु)हुए, (आदघ्नास) बाध तक की बाहवाले,(उपकक्षा)—कक्ष तक की गहराई वाले, (उत्वे)अथवा निश्चय से (स्नात्वा इव)—नहाये हुए के समान-(ददृशेन) देखे गए।

मन्त्र का पूर्वार्ध प्रथम दो चरण एक अटल सत्य की प्रस्तावना करते हैं। यह उपमेय वाक्य है। उत्तरार्ध अर्थात् तृतीय तथा चतुर्थ चरण पहले तथा दूसरे चरण की साजसज्जा अर्थात उपमान वाक्य हैं।

वेद काव्य के इस अश में मानवो और दानवो के भेद सूत्र को पकड़ा गया है। मनुष्यो तथा राक्षसो की दो ही आखें हैं, और दो ही कान। यहा यह दो इन्द्रिया पूरे इन्द्रिय सघात की उपलक्षण मात्र हैं। दानव, मानव या कोई और विद्या सब आखो वाले, कानो वाले और इसी तरह सब इन्द्रियो मे सखा-भाव वाले अर्थात् समान हैं। परन्तु मन के जवो—वेगो मे असमान हैं। राक्षस की भी दो आखें और मानव की भी दो। दोनो के कान भी दो ही हैं। शायद किसी के मन मे राक्षसो के लम्बे-लम्बे दातो या किसी अन्य अग की असामानता का भाव हो, परन्तु वह कल्पना मात्र है और भ्रम है। राम तथा रावण मे कोई [illegible]न्द्रिक भेद नहीं।

राम रावणयो नहि कछ भेद।
[illegible]पस मनोगति करहि प्रभेद।

मन्त्र के दूसरे चरण मे सुन्दर उपमान द्वारा इस तथ्य की पुष्टि की गई है। लोग भिन्न-भिन्न प्रकार के तालाबो या नदियो में स्नान करते हैं। सामान्य आकार प्रकार मे इन जलाशयो मे कोई बड़ा भेद नहीं होता। थोड़ा बहुत भेद हो भी तो उसकी ओर कोई सकेत नहीं करता। भेद तो जल की गहराई या प्रवाह की तीव्रता मे होता है। कुछ तालाब उथले, कुछ मे बगल तक पानी किन्ही की शरीर के कक्ष भाग तक की गहराई होती है। अन्य की गहराई इतनी अधिक होती है कि लोग डुबी लगाकर द्वारा स्नान का आनन्द लाभ करते हैं।

राम और रावण की मानसिक गतियो जिन पर उन के नैतिक जीवन तथा आचरण की नीव रखी जाती है—का भेद देखिये। रावण कामी था, भोग विलास के गर्त में फसा जघन्य प्राणी और राम आदर्श सयमी। कामुक रावण साध्वी सीता को बलात हर ले गया। साम-दाम दण्ड भेद के सभी उपाय जब सीता जी को राज महिषी बनाने मे निरर्थक सिद्ध हुए तो एक वर्ष की अवधि की चेतावनी दाम दी। एक वर्ष बीत गया और जब मनोकामना पूरी होती दिखाई न दी तो मानसिक पीड़ा से छटपटाने लगा। महारानी मन्दोदरी ने दुख का कारण जानते हुए कहा, आप छद्मवेश धारण मे माहिर हैं, फिर राम का भेस बना कर अपनी इच्छा पूरी कर लो। रावण ने व्यथित हृदय से हिताभिलाषिनी पत्नी के व्यग्य का उत्तर दिया। मैं क्या करू, जब राम का रूप धारण करता हू तब मुझ मे काम नही रहता तुलसी जी ने सुन्दर शब्दो मे इस मनोगति के भेद को दर्शाया है।

जहा राम तहा काम नही,
जहा काम तहा राम।
कहु तुलसी कैसे रट रवि, रजनी
इक ठाव ॥

यही बात तो इस मन्त्र के पूर्व भाग मे कही गई है। राम के भाई बन्धु हनुमान जैसे सेवक सयमी हैं और रावण सहित उस के सब सगी साथी राक्षस है कामी हैं। इन्द्रियो तथा शरीर की रचना दोनो वर्गों की समान है। और तो और राम और रावण दोनो नामो की राशि भी एक है। भेद केवल मानसिक प्रक्रियाओ तथा उन पर आधारित आचार व्यवहार का है।

भर्तृहरि जी ने इस मानसिक प्रक्रिया के भेद पर प्रकाश डालते हुए मनुष्यो के चार भेद इस प्रकार किये —

एके सत्पुरुषा परार्थघटका स्वार्थं
परित्यज्य ये,
सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृता
स्वार्थाविरोधेन ये।
ते अमी मानुषराक्षसा परहित
स्वार्थाय निघ्नन्ति ये,
ये निघ्नन्ति निरर्थक परहित ते के
न जानीमहे ॥

कुछ सत्पुरुष ऐसे हैं जो बिना स्वार्थ परहित सम्पादन करते हैं। दूसरी प्रकार के वे सामान्यजन जो स्वार्थ अविरोध पर ही परहित सिद्ध करते हैं। तीसरे राक्षसी तबीयत वाले स्वार्थ के लिए दूसरो के हित का हनन करते हैं। चौथे प्रकार के निरर्थक ही दूसरो के हित का नाश करते है। ऐसे लोगो को कौन सा नाम दिया जाय, समझ मे नहीं आता।

न्यायदर्शन के वात्स्यायन भाष्य मे इन मनो गतियो के भेद पर प्रकाश डालते हुए कहा है —

मनस—नदी उभयता वाहिनी।
पापाय आपि वहति पुण्याय अपि।
यदा निम्नगा तदा पापकारिणी,
ऊर्ध्वगामिनी तु पुण्याय।

मन की नदी का प्रवाह पाप के लिए भी और पुण्य के लिए भी। जल को ऊर्ध्वगामी बनाने के लिए विशेष यत्न की आवश्यकता है। नल, बल, जल ऊपर चढ़ अन्न नीच को नीच।

आओ हम प्रतिदिन एकान्त क्षणो मे मनन किया करें —

प्रत्यहमवेक्षतनर चरितमात्मन।
किन्नु मे पशुभि तुल्य किन्नु मे
मानवै सह ॥

मेरे मन की गति का प्रवाह किस धरातल पर है। मैं पशु कितना बन गया हू और मानवता मुझ मे कितनी है।

रायकोट मे आर्य युवक सभा गठित

आर्य समाज रायकोट के सरक्षण मे युवको का भारी एकत्र हुआ। जिसमे आर्य युवक दल के कार्यक्रम पर श्री सतीश कुमार जी कौडा मन्त्री आर्य समाज ने प्रकाश डाला। उन्होने पारिवारिक सत्सग करके पुरातन आर्य परिवारो को जो या तो हम से नाराज ही कर या वैसे ही समाजो मे आना छोड गए हैं को आग्रह कर के समाजो में लाने के लिए भावी कार्यक्रम रखा। जिस का बीडा आर्य युवक सभा ने उठाया है। इस कार्यक्रम के लिए श्री अशोक कुमार जी शर्मा एफ सी आई को प्रधान मनोनीत कर दिया गया है उसके बाद निम्नलिखित अधिकारी मनोनीत किए।

श्री अशोक कुमार जी शर्मा,
एफ सी आई रायकोट।
मन्त्री—श्री अशोक कुमार जी,
कनौजिया मुहल्ला जोशिया रायकोट
सह मन्त्री—श्री धनपतराय जी,
महल्ला अग्रवाल रायकोट
कोषाध्यक्ष—श्री सुशील कुमार जी
महल्ला नेबा वाला चौक रायकोट

—अशोक कुमार
मन्त्री आर्य युवक सभा रायकोट

पुस्तक की आवश्यकता है

बहन मीरावति जी म यामिन आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर को पुस्तक "दु खी दिल की पुरदर्द दास्तान" जिसके लेखक स्वामी श्रद्धानन्द जी है की आवश्यकता है जिस भाई के पास यह पुस्तक हो वह बहन मीरावति जी को ज्वालापुर भेज दे अथवा पता दे कि यह पुस्तक कहा से मिल सकती है वह इस पुस्तक का मूल्य व अन्य खर्च भेज देंगी।

—महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब

शुद्धि समाचार

आर्य समाज मन्दिर [illegible] जिला करनाल। दिनांक 26 1-87 को साय के 4 बजे गुडागाव (रामनाथ पुर) मे यज्ञ हवन किया गया और ईसाई लोगो ने अपनी स्वेच्छा से वैदिक हिन्दू धर्म ग्रहण किया और प्रतिज्ञा की कि हम वैदिक हिन्दू धर्म का पालन करेंगे। आर्य समाज के प्रधान सलखिया महेश राम आर्य, भीष्म देव जी की उपस्थिति मे स्वामी सेवानन्द सरस्वती महामन्त्री हिन्दू शुद्धि सरक्षणि समिति हरियाणा ने शुद्धि सस्कार कराया और अपने भाषण मे कहा कि जब तक इस देश मे हिन्दू है तो तिरगा झण्डा रह सकता है और विदेशो का जो षडयन्त्र है वो हमारे राष्ट्र को गुलाम बनाने का है और जब अग्रेज भारत मे राज करता था उस वक्त ये जो आदिवासी क्षेत्र है इसमें कोई भी शिक्षा का केन्द्र नही था और न आने जाने का साधन था आजादी के पश्चात ये सारा काम किया गया है। और इसमे भाग लने वाले स्वामी आत्मानन्द और वानप्रस्थी चन्द्रमणी आदि नेताओ ने उपदेश दिए। यह शुद्धि धनसिंह आर्य और स्वामी सेवानन्द के प्रयत्नो द्वारा की गई और शुद्धि समिति की ओर से कपडा वितरण और प्रसाद बाटा गया। उक्त शुद्धि कार्यक्रम मे सहदेव, शिवलाल, बलराम, अयोध्या प्रसाद आर्यों की तथा ग्राम के आदिवासियो की भीड थी यह कार्यक्रम सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे किया गया।

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज माडल टाऊन पठान-कोट मे श्री सुभाष चन्द्र जी मित्तल की अध्यक्षता मे एक शोक सभा हुई जिसमे आर्य समाज के महान् सन्यासी स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के निधन पर शोक व्यक्त किया गया। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

—बलदेव राज यदुवंशी
मन्त्री

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर में गणतन्त्र दिवस

26-1-87 को प्रातः बृहद्यज्ञ हुआ जिसमे लगभग 51 यजमान बने। उसके पश्चात् राष्ट्रीय ध्वज "तिरगा झण्डा" मान्यवर डा बलदेव राज जी चावला प्रधान राष्ट्रीय सुरक्षा समिति अमृतसर ने लहराया। श्रद्धानन्द महिला महा-विद्यालय व वैदिक गर्ल्ज हा सै स्कूल जो कि आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द द्वारा सचालित है की छात्राओं ने राष्ट्रीय गान प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् समारोह डा बलदेव राज चावला जी की अध्यक्षता मे शुरू हुआ। उसमे उपरोक्त दोनो शिक्षण सस्थानो की छात्राओ ने देश भक्ति व गणतन्त्र के उपलक्ष्य मे गीत सुनाये। इनके इलावा श्री निहाल-चन्द जी चीदा, उप-प्रधान आर्य समाज व सम्पादक बाल्मीकि सन्देश, प्रधान ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा अमृतसर श्री ओम्-प्रकाश जी कालिया, प्रिंसीपल श्रीमती सन्तोष शर्मा, श्रद्धानन्द, महिला महा-विद्यालय अमृतसर व प्रिंसीपल कुमारी चन्द्रकान्ता आर वैदिक गर्ल्ज हा सै. स्कूल, अमृतसर ने इस शुभ अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। अन्त में प्रधान श्री भाटिया, आर्य समाज, बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर के भाषण के उपरान्त डा बलदेव राज जी चावला प्रधान, राष्ट्रीय सुरक्षा समिति, अमृतसर ने गणतन्त्र दिवस के अतिरिक्त पजाब की हालत पर विचार व्यक्त किए।

—वीरेन्द्र देशबन्धु
महामन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

बालक मूलशंकर को ईश्वरीय ज्ञान

वह रात फिर एक बार आई जिसने एक बालक मूलशंकर को ऐसा जगाया कि वह जीवन भर सो नहीं सका। शिवरात्रि व्रत के व्रती मूलशंकर के दो नेत्र तो इस रात पहले ही खुले हुए थे जबकि उनके पिता तथा श्रद्धालु व पण्डितगण सो गये थे। उन्होंने अपनी आंख ज्योंही बन्द की उन्हें गहरी नींद आ गई परन्तु जब मूलशंकर अपनी आंखों पर पानी के छींटे मार कर दोनों नेत्रों से शिव पिंडी को निहार रहा था उसी समय शिव पिण्डी पर चढ़े एक चूहे को देखकर उसका तीसरा नेत्र (ज्ञान के नेत्र) भी खुल गया यह तीसरी आंख जो शिवरात्रि के दिन उनकी खुली थी वह जीवन भर फिर खुली ही रही और इस तीसरी आंख ने ही मूलशंकर से उन्हें महर्षि दयानन्द बना दिया।

—सह सम्पादक

यह अंक सं० 46 तथा 47 दिनांक 22 फरवरी तथा 1 मार्च 1987 तदनुसार 11 तथा 18 फाल्गुन सम्वत् 2043 का सम्मिलित अंक है।

सोने वालो जाग उठो !

शिवरात्रि फिर आ गई,प्रत्येक वर्ष हम अपना यह धार्मिक पर्व मनाते हैं। मैं इसे एक राष्ट्रीय पर्व भी कहता हूं क्योंकि उस रात जो कुछ हुआ था उसके कारण ही आगे चल कर राष्ट्र में एक नई चेतना पैदा हुई थी। हमारे बच्चे कई बार बहुत सार गर्भित बातें कह देते हैं। हम उनकी तरफ यह समझ कर ध्यान नहीं देते कि कहने वाला एक बच्चा है परन्तु वही बच्चे कई बार बड़ी बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता की बातें कर जाते है और ऐसा प्रतीत होता है कि कोई और शक्ति उनसे यह सब कुछ कहलवा रही है। आज जब कि हम शिवरात्रि की उस रात को याद करते हैं जब छोटे से बालक मूलशंकर ने ए ः मूर्ति पर चढ़ते हुए एक चूहे को देखा और उसके दिल में यह विचार उठा कि यह तो भगवान शिव है जिसकी वह पूजा कर रहा है और यह चूहा उसके ऊपर कैसे चढ़ गया जब कि भगवान शिव के विषय में कहा जाता है कि वह तो सर्व शक्तिमान है। इस छोटी सी घटना ने उस बच्चे को झंझोड़ दिया और वह सोचने लगा कि यह सब कुछ है क्या ? और इसका रहस्य क्या है ? उसी छोटे बच्चे की छोटी सी बुद्धि ने उसे कहा कि जिस शिव की तुम पूजा कर रहे हो वह वास्तव में शिव नहीं है ? वह तो एक पत्थर है और फिर दूसरा प्रश्न उठा कि असली शिव कहां है ? क्यों न मैं पहले उसका पता लगाऊं ? असली शिव को ढूंढने के लिए मूल शंकर अपने घर से निकल गया वही मूल शंकर महर्षि दयानन्द बन गए और उन्होंने अपने देश में ही नहीं सारे संसार में एक नई वैज्ञानिक क्रान्ति पैदा कर दी। यह ठीक है कि मूल शंकर उसी समय दयानन्द नहीं बन गए। उसके लिए उन्हें बहुत परिश्रम करना पड़ा था आपने गुरु दण्डी स्वामी विरजानन्द जी के चरणों में बैठ कर उन्होंने इस रहस्य को समझा कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है,फिर उन्होंने स्वयं वेद पढ़े और इस परिणाम पर पहुंचे कि मनुष्य मात्र का कल्याण केवल वेद के द्वारा ही हो सकता है।

शिवरात्रि की इस छोटी सी घटना ने कितना व्यापक रूप धारण कर लिया। हमारे जीवन में ऐसी प्रतिदिन कई घटनाएं घटती रहती हैं हम यदि उन्हें समझने का प्रयास करें तो उसमें से हमें बहुत कुछ मिल सकता है और भी कई महा पुरुष हुए है जिनके जीवन में ऐसी छोटी-2 घटनाएं उनका मार्ग प्रदर्शक बन गई। परन्तु वही व्यक्ति उन घटनाओं से कुछ सीख सकते हैं जो कुछ सीखना चाहते है और जो जागते रहते हैं और देखते रहते हैं कि उनके चारों तरफ क्या हो रहा है। शिवरात्रि की रात को हमारे जो देशवासी शिव की पूजा करते हैं उन्हें भी यह समझ लेना चाहिए कि केवल आंखें बन्द करके

बैठने से पूजा नहीं होती। शिवरात्रि का सन्देश केवल यह ही है कि जो व्यक्ति केवल अपनी बाहिर की आंखों से ही नहीं अन्दर की आंखों से भी देखने का प्रयास करता है वही उस रहस्य को प्राप्त करता है। जो रहस्य हमें कई बार समझ में नहीं आता और यह केवल एक व्यक्ति के लिए ही नहीं सारे राष्ट्र के लिए आवश्यक है कि वह हर समय जागते रहें और अपने चारों तरफ की परिस्थितियों को देखते रहें। समय-2 पर प्रत्येक राष्ट्र के सामने कई प्रकार की समस्याएं पैदा होती रहती है। जो राष्ट्र सोए रहते हैं वह अपने लिए स्वयं एक मुसीबत खड़ी कर लेते हैं परन्तु जो जागते रहते हैं, देखते रहते हैं और प्रत्येक प्रकार की कठिनाईयों का मुकाबला करने के लिए संघर्ष करने को तैयार रहते हैं वही संसार में अपने अस्तित्व को सुरक्षित रख सकते हैं। हमारे देश में आजकल जो हो रहा है उसे देख कर कई बार चिन्ता होने लगती है कि देश का क्या बनेगा कई साम्प्रदायिक और विघटनकारी शक्तियां सिर उठा रही हैं और देश में रहने वाले कई लोग हमारी प्राचीन और राष्ट्रीय मान्यताओं को भी चुनौती दे रहे हैं। इसलिए शिवरात्रि के इस पावन पर्व पर हम सब को यह संकल्प करना चाहिए कि जिस प्रकार छोटे से बालक मूलशंकर ने रात को जाग कर एक बहुत बड़ी चुनौती को स्वीकार किया था उसी प्रकार हम भी जागते रहेंगे और हमारे धर्म और हमारे राष्ट्र को जो चुनौतियां मिल रही है उनका उत्तर देने के लिए, अपने धर्म अपनी संस्कृति अपनी परम्पराओं और अपने राष्ट्र की सुरक्षा के लिए, हम से जो भी बलिदान मांगा जाएगा हम देने को तैयार रहेंगे,

आर्य समाज एक क्रान्तिकारी संस्था है इसे जब कभी कोई चुनौती दी गई है इसने उसे स्वीकार किया है। इसने जो भी संघर्ष किया है उसमें यह सफल रही है। यह केवल इसलिए कि अपने प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के पदचिन्हों पर चलने का प्रयास करते हुए आर्य समाज सदा जागता रहता है यही कारण है कि जब कोई और नहीं बोलता तो आर्य समाज बोलता है। जब कोई और कुछ करने को तैयार नहीं होता आर्य समाज करता है। शिवरात्रि के इस पावन पर्व का यही एक सन्देश है जो हम अपने देशवासियों को दे सकते हैं और वह यह कि सोने वालो जाग उठो। अब सोने का समय नहीं है देश पर कई प्रकार की विपत्तियां आ रही हैं। उन सब को रोकने के लिए और अपने धर्म तथा राष्ट्र की रक्षा के लिए, हमें कटिबद्ध हो जाना चाहिए। यही शिवरात्रि का सन्देश है।

—वीरेन्द्र

इस अंक के विषय में

आर्य मर्यादा के इस शिवरात्रि अंक में पाठक गण कई उन दिवंगतात्माओं के लेख पढ़ेंगे जिन का आर्य समाज के इतिहास में एक विशेष स्थान है। हमारा यह प्रयास रहता है कि समय-समय पर हम आर्य जनता के सामने अपने पूर्वजों के विचार प्रस्तुत करते रहें। इनसे हम सब को बहुत प्रेरणा मिलती है। इस लिए कई पुराने लेख आर्य समाज की पत्रिकाओं से लेकर इस अंक नें इस लिए दिए गए हैं कि इन लेखों को पढ़ कर हमें नई प्रेरणा मिले और हम उसी प्रकार अपने राष्ट्र धर्म और समाज की रक्षा करें जैसे कि हमारे पूर्वज करते रहे हैं हमें आशा है कि पाठक गण इन लेखों को पसन्द करेंगे और भविष्य के लिए भी अपने सुझाव हमें भेजेंगे हम चाहते हैं कि आर्य मर्यादा आर्य समाज की एक ऐसी पत्रिका बन जाए जिसके द्वारा देश की सब समस्याओं के विषय में आर्य समाज का दृष्टिकोण जन साधारण तक पहुंचे। इसके लिए आर्य जनता का सहयोग हमारे लिए अत्यन्त लाभकारी हो सकता है और उसके द्वारा हम आर्य समाज की विचारधारा अपने देश की जनता तक पहुंचा सकेंगे।

—वीरेन्द्र

दयानन्द का विराट् रूप

लेखक—स्व. श्री महाशय कृष्ण जी, पूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आज से 50 वर्ष पूर्व 1934 में 'प्रकाश' के सम्पादक और आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता स्वर्गीय महाशय कृष्ण जी ने महर्षि दयानन्द के सम्बन्ध में जो विचार दिए थे उनको उपयोगी समझते हुए यहां दिया जा रहा है। —सह-सम्पादक

मैं सोचता हू कि दयानन्द को किस रूप मे पेश करू मेरे सामने उनका विराट् रूप है। और वही मुझे सबसे प्यारा लगता है। वह रूप एक परिव्राजक, ससार उद्धारक और विश्व प्रेमी का है। सन्यास धारण करते हुए हरेक मनुष्य को तीन त्याग करने पडते हैं अर्थात् लौकेषणा, पुत्रेषणा, और वित्तेषणा का त्याग। सन्यास आश्रम मे कदम रखते हुए ही एक व्यक्ति न केवल परिवार न केवल जाति, प्रत्युत देश के सम्बन्धो से भी स्वतन्त्र हो जाता है। वह किसी जाति-विशेष या देश विदेश से सम्बन्धित नही रहता। बल्कि वह मनुष्य मात्र से भी बढ कर प्राणी मात्र का हो जाता है। सच्चा सन्यासी वह है कि जिसके हृदय मे सारे देश के लिए स्थान हो उसके लिए न अपना हो न पराया। वह ससार मात्र को प्रेम की दृष्टि से देखता हो। दयानन्द का यह विराट् रूप है और इसे उन्होंने खूब निभाया। बतौर एक पथ प्रदर्शक के उन्होंने किसी जाति विशेष की उन्नति को अपना लक्ष्य नही बनाया। आर्य समाज के नियम निर्धारित करते हुए उन्होने कहा कि 'ससार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है।' आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य उन्होने किसी जाति या देश का उद्धार नही बताया। इस तरह उन्होने शायद आर्य जाति के नवीन इतिहास मे पहली बार ससार को यह बताया कि वैदिक धर्म मनुष्य मात्र के लिए है। वेद ईश्वर का ज्ञान है और वह मनुष्य मात्र के लिए है। ऋषि के प्रादुर्भाव से पहले यह समझा जाता था कि वैदिक धर्म केवल उन लोगो के लिए है, जो हिन्दू परिवार मे पैदा हुए हैं। ऋषि ने बताया कि यह भारी भूल है। वेद सारे ससार के हैं किसी जाति विशेष का उन पर विशेष अधिकार नही। उन्होंने प्रचार किया और अपने आचरण से बताया कि वह ससार की प्राचीनतम पुस्तक है। सृष्टि के आदि मे चार ऋषियो के हृदय मे उनका ज्ञान हुआ। और ससार मात्र के पथ प्रदर्शन के लिए यह ज्ञान दिया गया।

वैदिक धर्म का यह विशाल रूप ऋषि दयानन्द से पहले किसी ने उपस्थित नही किया। आप उनकी पुस्तको को पढ जाइये। उनमे आपको यही विशाल रूप नजर आएगा दयानन्द के दिमाग मे यह नही आ सकता कि किसी धर्म को जाति या देश तक सीमित किया जा सकता है। इसलिए जहा उन्होने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका मे यह लिखा कि मुझे भारत वर्ष के मतमतान्तरो से कोई विशेष प्रेम नही। जिस तरह मैं दूसरो की आलोचना करता हू, इसी तरह उनकी भी। वहा इस पुस्तक की समाप्ति पर उन्होने परमात्मा से प्रार्थना की है कि सत्य सनातन वैदिक सिद्धान्त सर्वत्र भूगोल मे शीघ्र प्रवृत्त हो जाए। सत्यार्थ प्रकाश को ऐसे सुन्दर शब्दो के साथ समाप्त किया गया है कि उन्हे बार-बार पढने को जी चाहता है। अनायास ही इस मस्तिष्क की दाद देने को जी चाहता है, जिसमे ऐसे विशाल विचार निकले हैं। इसके अतिरिक्त और भी अनेक स्थानो पर ऋषि ने यही प्रगट है कि वह जाति और देश के पक्ष से बहुत ऊचे हैं।

मैं ऋषि दयानन्द के इस विराट् रूप को नमस्कार करता हू। मैं उनके इस विशाल हृदय और मस्तिष्क को प्रणाम करता हू। मुझ तो इनका यही रूप सबसे प्रिय लगता है और इसलिए इसे ससार के सामने पेश करता हू। मैं यदि आर्य समाज मे हू तो इसीलिए। अगर हम इस पर उनके किसी और रूप को अधिमान देते हैं तो हम अनधिकार चेष्टा करते है। और उनके साथ अन्याय करके उन्हे उनके उच्च पद से गिराते हैं। हमारा कोई अधिकार नही है कि ऋषि को अपने जैसा सकुचित बनाने का यत्न करे। आओ हम सब मिल कर उनके इस विराट् रूप की जय मनाए। और उनकी आज्ञा को शिरोधार्य मानते हुए सारे ससार को आर्य बनाने का यत्न करें।

ऋषि दयानन्द रोमन, रोलैंड की दृष्टि में

लेखक—स्व. महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज

रोमन रोलैंड ने परमहंस रामकृष्ण के जीवन चरित्र में एक अध्याय ऐसा दिया है, जिसमे उसने हिन्दोस्तानी जाति बनाने वालों के संक्षिप्त विवरण दिए है। इस अध्याय में आर्य समाज के बारे मे लिखा है :—

एक विशुद्ध भारतीय समाज, जिसमे लेश मात्र भी पश्चिम का स्थान नहीं है। उसका संस्थापक एक महान् व्यक्ति (सरस्वती) था। उसने स्वामी जी के बारे मे निम्न बातें लिखी हैं :—

1. ऋषि दयानन्द का महत्व—

"वह पुरुष सिंह के समान था। जिसको योरुप के लोग जब भारत के बारे में विचार करते हैं, तो उसे भूल जाते हैं। परन्तु वे विवश होगे उसको याद रखने के लिए। क्योंकि ऋषि दयानन्द में ऐसे गुणो का समावेश था, जिसका एक व्यक्ति में होना कठिन होता है। वह विचारक और कर्मयोगी होने के अतिरिक्त जन्म से ही नेतृत्व की क्षमता रखता था।" ब्रह्म समाज के बारे मे उन्होने केशव चन्द्र जी का नाम लेकर लिखा है कि उन्होंने अपना नाम यीशुदास रख लिया था। वे ईसा को अपने हृदय का अत्यन्त प्रकाशमान रत्न और अपनी आत्मा का भूषण समझा करते थे।

इसीलिए जब उनका देहान्त हुआ तो इंडियन क्रिश्चियन समाचार में लिखा था कि ईसाई चर्च अपने एक बहुत बड़े साधु की मृत्यु का मातम करता है। रोमन रोलैंड ने केशव बाबू के अनेक पत्रो की नकलें इस बात को प्रमाणित करने के लिए अपनी पुस्तक में दर्ज की हैं। उनसे स्पष्ट है कि केशव जी का झुकाव ईसाईयत की ओर था। परन्तु ऋषि दयानन्द के लिए उसके लिखे शब्दो का भाव इस प्रकार है—

"दयानन्द ने अकेले ही देश के आक्रमणकारियों के विरुद्ध अपना झण्डा बुलन्द किया। और ईसाई पन्थ के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की। उसकी भारी और तीक्ष्ण तलवार ने उसे दबा दिया।"

ऋषि दयानन्द ने जो वेद पढने का अधिकार मनुष्य मात्र को दिया वह रोमन रोलैंड की दृष्टि में एक स्वर्ण युग का आरम्भ था। किसी व्यक्ति ने भी इतनी निर्भीकता के साथ अछूतो के अधिकार दिए जाने की वकालत नही की।

रोमन रोलैंड लिखता है कि—"ऋषि दयानन्द ने स्त्रियो की दयनीय अवस्था को उन्नत करने के लिए व सुधारने के लिए बड़े दिलेरी के साथ निर्भीक होकर उन कुरीतियो के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ किया, जो स्त्री जाति को नीचा रखने के लिए भारत मे प्रचलित थी।"

रोमन रोलैंड को एक स्थान पर ईसाइयो का प्रबल खण्डन करते हुए ऋषि दयानन्द के लिए सन्देह हो गया कि उनके अन्दर ईसाईयो के लिए प्रतिशोध की भावना थी। परन्तु यह उनका भ्रम है। क्योंकि दिल्ली के प्रसिद्ध दरबार के अवसर पर जब मुसलमानों ने स्वामी दयानन्द जी से प्रार्थना की थी कि आप और हम दोनों मिल कर ईसाइयों का खण्डन करें। तब उन्होने साफ-साफ कह दिया था कि हम तीनों को मिल कर विचार करना चाहिए और जो सत्य हो, उसे ग्रहण करना चाहिए। इसका प्रमाण चान्दापुर के सर्व धर्म सम्मेलन में भी मिलता है।

ऋषि दयानन्द एक महापुरुष थे

लेखक—स्व श्री राजगोपालाचार्य (भारत के प्रथम गवर्नर जनरल)

भारत के प्रथम गवर्नर जनरल श्रीयुत चक्रवर्ती राज गोपालाचार्य 11 मई 1934 में गुरुकुल कुरुक्षेत्र पधारे। आप को वहा अभिनन्दन पत्र दिया गया। नीचे आप के भाषण का सार दिया जा रहा है। जो आप ने अभिनन्दन पत्र के उत्तर मे दिया था,

आज अपने आप को आप महानभावो के बीच मे पा कर मेरा हृदय खुशी से भर रहा है। मर स्वागत के लिए एक ब्रह्मचारी ने सस्कृत मे भाषण दिया और दो सज्जनो ने हिन्दी और अग्रेजी मे अपने विचार दिए। मैं सस्कृत के शुद्ध उच्चारण को सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ हू, अब तक यही समझा जाता था कि दक्षिण भारत के लोग ही सस्कृत का शुद्ध उच्चारण कर सकते है। परन्तु आज गुरुकुल के पजाबी बालक के मुख से सस्कृत का ऐसा शुद्ध उच्चारण सुन कर मै आश्चय चकित रह गया।

जब मेरी प्रशसा मे दूसरे भाषण किए जा रहे थे, तो मैं अपने आप मे नही था। मै नही जानता कि उस समय मे किस असली ओर नकली दुनिया मे सैर कर रहा था। मेरे सम्बन्ध मे जो प्रशसा के शब्द कहे गए, काश मैं उन से युक्त होता। भाषण का वह श्लोक मुझे बहुत ही रोचक लगा, जिस मे यह कहा गया था —

"कि प्रशसा रूपी कन्या सदैव क्वारी ही रहती है। कारण, बुरे आदमियो को वह पसन्द नही करती और जो अच्छे आदमी है, वह उसे पसन्द नही करते। परन्तु आप ने मेरी प्रशसा कर के स्वय इस पर आचरण किया अत: आप ने जो मेरी प्रशसा की है, वह क्वारी ही रही। (अट्टहास)

प्रिय ब्रह्मचारियो! जब मैंने आप को पीली धोती पहने हुए देखा, तो मुझे अपने बचपन के उस दिन की याद आ गई। जब मेरा उपनयन सस्कार हुआ था और मुझे यज्ञोपवीत दिया गया था। लेकिन उस समय मुझे जो धोती पहनाई गई थी, वह विदेशी सूत की थी। और बनी हुई बेशक खड्डी पर ही थी। परन्तु जो यज्ञोपवीत पहनाया गया था वह मेरे पिता जी ने स्वय हाथ से तकली पर काते हुए सूत से बनाया था। सौभाग्य से आप को सब वस्त्र स्वदेशी ही पहनने के लिए दिए जाते हैं। दुर्भाग्य से आजकल यज्ञोपवीत सस्कार की एक प्रथा ही रह गई है। सस्कार के पश्चात् बालको को ऐसे स्कूलो मे पढने के लिए भेज दिया जाता है। जहा इन को ब्रह्मचर्य के नियमो का पालन बिल्कुल नही कराया जाता, आप बडे सौभाग्यशाली हैं कि आप ऐसे शिक्षणालय मे शिक्षा पा रहे हैं। जिस मे शिक्षा के साथ साथ सदाचार और ब्रह्मचर्य की ओर भी पूरा ध्यान दिया जाता है। इस के अतिरिक्त प्राचीन शिक्षा पद्धति के अनुसार शिक्षा दी जाती है। मनु स्मृति मे शिक्षा के बारे मे बहुत कुछ लिखा है।

आज आप के प्रसन्न और स्वस्थ चेहरो को देख कर मेरा मन कहता है कि क्या ही अच्छा होता यदि मेरे बालक भी आप के साथ रह कर शिक्षा हासिल कर रहे होते। नीम के वृक्षो से घिरी हुई यज्ञशाला और आश्रम के सुन्दर स्थान को देख कर मैं सोचता हू कि क्या ही अच्छा होता कि यदि मे यहा मैं एक अध्यापक होता। प्यारे ब्रह्मचारियो! आप सचमुच ही सौभाग्यशाली हो जो ऐसी उत्तम पाठशाला मे शिक्षा प्राप्त कर रहे हो। आप अभी बालक हैं इस आयु मे आप को जो कुछ पढाया जा रहा है, उसे ध्यान से पढना चाहिए। जो कुछ आज कल सीख सकते है। वह बडे होने पर नही सीख सकते। बल्कि बडे हो कर पछताना पडता है कि हम ने विद्यार्थी

(शेष पृष्ठ 8 पर)

अपने युग के महान् सुधारक

लेखक—श्री स्व. स्वामी सत्यानन्द जी महाराज

ऋषि दयानन्द अपने युग का महान् सुधारक था। उस काल में आर्य जाति दुर्बल थी। लोगों में बड़ा भारी बिगाड़ आ गया था। वे वंशों और गोत्रों को ही जाति मानने लग गए थे। सारे भारत में एकता का भारी अभाव था। लोग विचारों में अति निर्बल थे। अपने धार्मिक विचारो को दूसरे मतों के आक्रमण से बचाना और अपने विचारों के सामने रखने का साहस करना, हिन्दुओं में उस समय कहीं भी नहीं था। दिनोंदिन जाति दुर्बल होती जा रही थी। ऐसे काल मे एक स्वामी दयानन्द ही थे जिन्होंने सुधार का सूत्रपात किया।

सर्वमुखी सुधार—श्री स्वामी जी का सुधार सर्वमुखी था। लोग शास्त्रों के नाम से बीसियों ग्रन्थों को प्रमाण मानते थे। और उन के नाम की दुहाई देकर दिन प्रतिदिन सिकुड़ते चले जाते थे। श्री स्वामी जी ने अनेक ग्रन्थों के घने जंगल में से जनता को निकालने का पूरा यत्न किया।

विचार की स्वतन्त्रता—उस ने वेदों को ही प्रमाण रूप बता कर संस्कृत के सारे साहित्य से, आचार्यों की सब टीकाओं से, पंडितों की सब व्याख्याओं से और भाष्यकारों की सारी साम्प्रदायिकता से लोगों को स्वतन्त्र हो जाने की घोषणा की। ऐसा प्रतीत होता है कि स्वामी जी विचारों की स्वातान्त्र्यता के सामने महापुरुषों के मतों को एक प्रकार की रोक ही मानते थे। उन के बौद्धिक और सामाजिक विकास में उन्हें बाधा समझते थे।

वेदों पर अटल विश्वास—बहुत से ऐसे सुधारक होते हैं, जिन्होंने अपने बल से लोगों को अन्य आचार्यों के मतों से, मन्तव्यों से, कथनों से और लेखों से स्वतन्त्र कर देने की पूरी चेष्टा की। परन्तु ऐसे सुधारक बहुत ही थोड़े हुए हैं कि जिन्होने लोगों को अपने वचनों का भी दास नही बनाया। स्वामी जी महाराज उसी दूसरी प्रकार के सुधारक थे। उन्होंने अपने लेखों का मन्तव्य बनाने के लिए कभी भी, कहीं भी कुछ नही किया। वह सदैव वेद पर ही विश्वास लाने के लिए बल देते रहे। वह शास्त्रकर्ता न बन कर प्रचारक ही कहलाए। इस कारण उन का सुधार बड़ा उदारता पूर्ण सुधार है।

---

7 पृष्ठ का शेष

जीवन में इस ओर ध्यान क्यों नहीं दिया। आपका भविष्य बनाने के लिए जिन कठोर नियमों का पालन कराया जा रहा है। उन का आप को बड़ी प्रसन्नता से पालन करना चाहिए। प्रात: उठने का अभ्यास करना चाहिए। प्रात: उषा काल की सुन्दरता देखना लाभदायक है। ऐसे भी बहुत से व्यक्ति है, जो प्रात: देर तक सोए रहते हैं। उन्हें यह भी पता नही कि प्रात:काल के समय आकाश का रंग लाल या पीला अथवा नीला होता है? प्रात: उठने की आदत इसी आयु में ही डाल सकते हैं फिर नही, आप के कुलपति स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज एक महामानव थे। नागपुर कांग्रेस के अधिवेशन के अवसर पर वे मेरे साथ ही थे। मेरे बालक को नमूनिया हो गया था, उस समय उन्होंने तथा उन के साथियों ने जिस प्रेम व लग्न से सहायता की, उसे मैं आजीवन नही भूल सकता। उस समय उन्होने एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया था कि कांग्रेस अपने आधीन एक ऐसा सघ खोले, जिस के पास बहुत सा धन हो, और वह दलितोद्धार का काम करे। उस समय उन की वह इच्छा पूरी न हुई। आज दुर्भाग्य से वे हमारे बीच में नही हैं। यदि होते तो उनकी आत्मा अवश्य आज अछूतोद्धार सघ के काम को देख कर खुश होते। मुझे बताया गया है कि महात्मा गांधी ने जब से असहयोग आन्दोलन का सिद्धान्त जारी किया, उससे पूर्व ही यह गुरुकुल इसी सिद्धान्त पर ही चल रहे हैं। किसी भी तरह की सरकारी सहायता स्वीकार नही की गई। ऋषि दयानन्द एक महापुरुष थे। उनका स्थापित किया हुआ समाज देश सेवा का बहुत बड़ा कार्य कर रहा है और उस ने बहुत बड़ा काम किया है। देश को आर्य समाज से बहुत लाभ पहुंचा है।

याद आता है ऋषि दयानन्द

लेखक—स्व. श्री आचार्य रामदेव जी भू.पू. आचार्य गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार

श्री आचार्य रामदेव जी का आज से50 वर्ष पूर्व लिखा यह लेख आज भी उतना ही उपयोगी है जितना उस समय था "प्रकाश उर्दू" से पाठकों के लाभार्थ यह लेख लिया गया है। सं.

जब हम भारत वर्ष में देखते हैं कि अध्यापकों तथा विद्यार्थियो के सम्बन्ध व्यापारिक हैं। अध्यापक कालेज से बाहर अपने विद्यार्थियों को पचास रुपए घण्टा लिए बिना पाठ का एक शब्द भी नही बतलाया और विद्यार्थी कालेज से बाहर प्रोफैसर को नमस्ते भी कह दें तो समझते हैं कि उस पर उन्होने दया की है। विद्यार्थी हड़ताल करते हैं। प्रोफैसर क्षमा याचना करते है। अध्यापक निर्दयता से विद्यार्थियो को पीटते हैं। सरक्षकों को न्यायालय की शरण लेनी पड़ती हैं। तो उस समय याद आ जाता है ऋषि दयानन्द जिसने स्पष्ट रूप से कहा था कि—केवल ब्राह्मण को ही पढ़ाने का अधिकार होना चाहिए और ब्राह्मण वह होता है, जो विद्वान् हो जो निर्धनता को जानबूझ कर स्वीकार करता हो और जिस मे प्रेम दया और सयम कूट-कूट कर भरे हो।

2

फौजें लड़ती हैं। लड़ाई के पश्चात् विजयी सेनाएं विजित सेना की बहुबेटियो की दुर्गति करती हैं। लूट-खसूट मचाती हैं। प्रजा इनके अत्याचारो से तंग आकर दुहाई मचाती है। सरकार तक मामला पहुंचता है। कोर्टमार्शल होता है। लीग आफ नेशनज को अपीलें की जाती हैं। अशान्ति बढ़ती है, विद्रोह होते हैं। खून बहाया जाता है। तब याद आता है ऋषि दयानन्द जिस ने यह आदेश किया था कि सिर्फ क्षत्री ही सैनिक होने के योग्य हैं और क्षत्री वह होता है, जो प्रजा के कष्टों पर मरहमपट्टी करके उनकी रक्षा करें। जो घाव बन उनको सीने से लगाए। ऊंगली बन कर उनके सीने की धड़कन को देखे और उसके आधार पर उनकी उचित चिकित्सा करें।

3

आजकल दुनियां में बेईमानी का राज्य है। साधारण दुकानदार से लेकर बड़ी-बड़ी कम्पनियों के डायरेक्टरों तक, अपने स्वार्थ के लिए दूसरों के खून को चूसना और दूसरों की जेब कतरना अपना धर्म समझते हैं। जब कि दुकानदारी के अर्थ ही झूठ और धोखाधार हो गया है। तो याद आता है ऋषि दयानन्द। जिसने कहा था कि वैश्यों को व्यापार और खेती करने का पूर्णाधिकार है। वेद में वैश्य को पेट से उपमा दी है। जो दिल और फेफड़ों के साथ मिलकर सारे भोजन को खून में परिवर्तित करके और शुद्ध करके शरीर के सब अंगों तक पहुंचा देता है। अपने लिए उचित मात्रा ही रखता है। यदि पेट, खाना अपने पास रख ले और रक्त में परिवर्तित न करें, तो उसके आप्रेशन की आवश्यकता बढ़ जाती है। और वह श्रेष्ठ अर्थात् आर्य न रह कर 'दस्यु' अर्थात् बिगड़ा हुआ रूप बन जाता है। चाहे कोई बेलैंसशीट मे गड़बड़ करे, झूठे लाभ दिखा कर अथवा कम्पनी के हजारों रुपए कई ढंगों से अपनी जेब में रख कर चोरी करता है या चार पैसे किसी की जेब से निकाल कर ले जाता है, तो वह दस्यु या चोर है, है, आर्य या भद्र पुरुष नही है। इसलिए वैश्य नही है।

4

जब हम भारत वर्ष में हरिजन आन्दोलन की ओर ध्यान करते हैं, जब हम देखते हैं कि करोड़ों व्यक्तियों को,

जिनमें से कबीर और नामदेव जैसे ईश्वर भक्त पैदा हुए हैं, लोग उन्हें अछूत समझते है। उनके हाथ का छुआ हुआ खाना नहीं खाते। उनको अपने कुओं से पानी नहीं भरने देते। उन पर हर तरह के सामाजिक अत्याचार करते हैं। किन्तु जब मुसलमानों के डण्डे पड़ते हैं तो बहू-बेटियों की रक्षा उन्हीं के द्वारा करवाते हैं, तो याद आते हैं ऋषि दयानन्द जिसने स्पष्ट रूप से लिखा है कि शूद्र उसे कहते हैं, जिसे पढ़ने-पढ़ाने से कुछ न आए। जिसका मस्तिष्क कोई काम न कर सके। जो केवल शरीर से काम कर सके। सेवा भी ऐसी जिसमें अक्ल का दखल न हो। जो जूते झाड़ तो सके पर बना न सके। आटे की बोरी उठा तो लाए लेकिन कुलफी, आलू छोले बना न सके। जो लाहौर के औजार उठा तो सके लेकिन एक साधारण चौकी तक बना न सके। भला कैसे हम डा. अम्बेदकर को जो एक सफल बैरिस्टर हैं, शूद्र कह सकते हैं ? धर्म पर जान देने वाले जो किसी अवस्था में भी मुसलमान होना स्वीकार नहीं करते। क्या ऐसे भाईयों को शूद्र कहा जाए ? और आठ रुपए मासिक के लिए दुखियों को सताने वाले सिपाही को हम क्षत्री कह सकते हैं ?

5

जर्मनी में हम देखते हैं कि हिटलर अपनी शक्ति के जोर से लोगों को यह मानने व प्रचार करने पर विवश करता है कि भगवान यशुमसीह यहूदी नही थे और इस प्रकार इतिहास और सत्य की हत्या करता है जो उसको वोट नहीं देते उनको जेल का मार्ग दिखाता है तो याद आता है ऋषि दयानन्द। जिसने सत्यार्थ प्रकाश में साफ लिखा है कि विधान बनाने मे मुख्य भाग ब्राह्मणों का होना चाहिए। न्यायालय में न्याय करने में ब्राह्मण होने चाहिए। क्षत्री राजा को ब्राह्मणों पर आधारित कौंसिलों के आधीन होना चाहिए। सेनापति चाहे क्षत्री हो, परन्तु युद्ध मन्त्री अवश्य ब्राह्मण होना चाहिए। लड़ाई लड़ें चाहे क्षत्री, परन्तु किसी देश से एकता व लड़ाई का निर्णय ब्राह्मण ही करें। यदि क्षत्री राजा भी कोई दोषी हो, तो ब्राह्मण न्याय द्वारा दण्डित करे। विधान सब की सम्मति से बनने चाहिएं। यदि किसी को यह अधिकार देना भी हो, तो वह ब्राह्मण या सन्यासी को देना चाहिए न कि हिटलर जैसे योद्धा को।

6

जब हम रूस में देखते हैं कि बड़े-बड़े विद्वानों को केवल इसलिए देश से बाहर किया जाता है कि वे यह मानते हैं कि संसार में जहां मजदूरो के अधिकारो का स्थान है, वहां पूंजीपतियो की भी कोई उपयोगिता है। और अमरीका में हम देखते हैं कि दस-दस डालर में एक-एक वोट बिकती है तो याद आता है ऋषि दयानन्द जिन्होंने यह आज्ञा दी थी कि वैश्य लोग क्षत्री राजा के और प्रधानमन्त्री ब्राह्मण के आधीन रहने चाहिए। इनको किसी को स्वयं दण्ड देने का अधिकार नहीं होना चाहिए। यह अधिकार ब्राह्मण की आज्ञा से क्षत्री को ही है। वैश्यों और शूद्रों,—शूद्रो और वैश्यों के परस्पर झगड़ों का निपटारा ब्राह्मण ही कर सकते हैं। जिनको अपना स्वार्थ कुछ नहीं होता।

7

जब हम देखते है एक स्त्री और पुरुष का सम्बन्ध पाश्विक नहीं इसके भी नीचे गिर रहा है। पुरुष स्त्री को योग्य पदार्थ समझ रहा है विवाह सन्तान के लिए नहीं केवल विषय वासना की पूर्ति के लिए है तो याद आ जाता है ऋषि दयानन्द जिन्होने कहा था कि ब्रह्मचर्य ही संसार को सम्भाले हुए है। और जहां ब्रह्मचर्य की आंधारशिला दृढ़ नही वहां गृहस्थ का भवन खड़ा नहीं किया जा सकता और न ही वानप्रस्थ अथवा सन्यास के मीनार इस पर सुशोभित हो सकते हैं।

8

जब हम देखते हैं सम्बन्ध विच्छेद जोरों पर है कई हिन्दू देवियां भी तलाक का अधिकार मांग रही हैं तीन-तीन चार बच्चों वाले पुरुष और स्त्रियां भी दूसरे विवाह के लिए अधीर नजर आते है। तो याद आ जाता है ऋषि दयानन्द जबकि विवाह का उद्देश्य आत्मिक, धार्मिक और मानसिक सम्बन्ध दृढ़ करना और सन्तान को उत्पन्न करना है और उस सन्तान को सुशिक्षित भी करना है न कि एक भूखे आदमी की तरह स्थान-स्थान के मजे चखना और खाना बदोषों की तरह जगह-जगह घूमते फिरना है।

(शेष पृष्ठ 37 पर)

शिव का मार्ग

लेखक—प्रा श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य
साधु आश्रम (होशियारपुर)

चौदह वर्षीय मूलशकर अपने पिता जी के साथ शिवपुराण की कथा सुनने पहुचा। वहा उसके व्रत की महिमा से प्रभावित होकर व्रत रखने का सकल्प किया। शिव मन्दिर मे रात को जो घटना घटी, उस ने मूल के मन मे हल-चल मचा दी। अपने मन की गाठ से प्रेरित हो कर इक्कीस वर्षीय मूल ने सच्चे शिव के दर्शनार्थ गुरु की खोज शुरू की और चौदह वर्ष की दौड़-धूप के बाद मथुरा मे ब्रह्मर्षि स्वामी विरजानन्द जी दण्डी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त किया। तीन वर्ष बाद महर्षि ने गुरु आज्ञानुसार आर्ष ज्ञान का जनता मे प्रचार और अपनी शिव-साधना शुरू की। शिव तथा उसके जितने पर्याय हैं, उन सब का अर्थ है—कल्याण, भला। अत महर्षि ने जन-जन की भलाई के लिए सारे साहित्य का स्वाध्याय और सामाजिक स्थिति का विचार कर जीवन के कल्याण का एक रास्ता स्पष्ट किया। जो कि शास्त्र सम्मत तथा तर्क के अनुरूप होने से हर तरह से शिव का ही मार्ग है।

ससार मे दो तरह के मार्ग होते हैं, जिनको हम सगत, असगत, शिव-अशिव के नाम से स्मरण कर सकते हैं। जो मार्ग आने जाने के लिए सरल, सपाट, सक्षम और सुरक्षित होता है, उसको शिव मार्ग कहते हैं। जो नगर, गाव योजना बद्ध रूप से बने होते हैं, उनके मार्ग सगत या शिव होते हैं। पर बिना किसी योजना के पहले से बसे हुए मुहल्लो, गावो, कस्बो, नगरो के मार्ग अधिकतर अशिव, असगत होते हैं।

आने-जाने के मार्ग की तरह जीवन के भी दो तरह के रास्ते होते हैं। शिव मार्ग या सुसगत जीवन की दृष्टि से सुरक्षा सेना और पुलिस की व्यवस्था सुनिश्चित और ससगत होती है, क्योकि वह आधार-भूत मूल भावना को सामने रख कर बनाई जाती है। सारे प्राचीन साहित्य को सामने रख कर जीवन के सुसगत जीवन पथ पर जब हम विचार करते हैं तो महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रदर्शित जीवन पथ जीवन्त और सुसगत सिद्ध होता है। इस जीवन पथ, शिव मार्ग की यह एक बहुत बड़ी खूबी है, कि यह जहा शास्त्र सम्मत है, वहा वह तक सगत भी है।

इसका एक स्पष्ट उदाहरण है—विवाह प्रक्रिया। इस के सम्बन्ध मे सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास मे महर्षि ने विस्तार पूर्वक विवेचन किया है। इस के लिए जहा वेदादि शास्त्रो के प्रमाण दिए हैं, वहा युक्ति एव तर्क से भी विचार किया है। उदाहरण के लिए यह एक उद्धरण ही पर्याप्त होगा—"आठ, नौ और दशवे वर्ष पर्यन्त विवाह करना निष्फल है, क्यो कि सोलहवें वर्ष के पश्चात् चौबीसवें वर्ष पर्यन्त विवाह होने से पुरुष का वीर्य परिपक्व, शरीर बलिष्ठ, स्त्री का गर्भाशय पूरा और शरीर भी बल-युक्त होने से सन्तान उत्तम होते हैं। (समु 4, पृ 76 स्वामी वेदानन्द सम्पादित)।

इसका दूसरा उदाहरण पारस्परिक अभिवादन का लिया जा सकता है। जब जब व्यक्ति दूसरे से मिलता है, तो आपस मे मिलने पर स्वाभाविक रूप से आदर की भावना उभरती है। जिससे परस्पर प्रसन्नता, सम्मान और अपनापन आता है। अतः एव सभी देशो, धर्मो, वर्गों मे आदर के अभिवादन के

लिए कोई शब्द और शारीरिक चेष्टा आदि अनेक रूप प्रचलित हैं। एतदर्थ महर्षि दयानन्द का विचार है—"बड़ों को मान्य दें, उनके सामने उठकर उन्हे उच्चासन पर बैठावें, प्रथम "नमस्ते" कहे।"

समु 2, पृ 36

दिन रात मे जब जब प्रथम मिलें वा पृथक् हो तब तब प्रीतिपूर्वक "नमस्ते" एक दूसरे से करें। समु 4, पृ 81 अभिवादन के लिए नमस्ते का प्रयोग अवसर के अनुरूप, तर्क सगत, शास्त्र सम्मत और आधारभूत मूल भावना से हर तरह मेल खाता है।

सुसगतपन की कसौटी का तीसरा उदाहरण है— सामूहिक नाम आर्य व्यवहार मे सुविधा की दृष्टि से प्रत्येक का अपना-अपना नाम होना है। प्रत्येक का जहा अपना-अपना वैयक्तिक नाम होता है, वहा सामूहिक दृष्टि से भी प्रत्येक समूह का एक नाम होता है। जिस-2 दृष्टि से आपस मे एकता होती है, उस-उस दृष्टि से एक सामूहिक नाम भी होता है, जैसे कि धर्म, राजनीति, देश की दृष्टि से सामूहिक नाम प्राप्त होते हैं। ऐसे ही वर्ण—कारोबार, यूनियन के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, फौजी, दुकानदार आदि नाम हैं। इन समूहो का भी एक सामूहिक नाम होना चाहिए। महर्षि दयानन्द का सिद्धान्त है, कि हमारा सामूहिक नाम आर्य है। क्योकि हमारा जितना भी मान्य साहित्य है, उस मे आर्य शब्द का सर्वत्र प्रयोग मिलता है। इसका यह प्रयोग इतना अधिक प्रभावपूर्ण, सार्वभौमिक, सार्वकालिक तथा सार्वजनिक है, कि किसी भी देश का नागरिक जहा-कहीं इसका प्रयोग कर सकता है। प्रयोग करने वाले के जीवन की प्रत्येक प्रगति, आकाक्षा और भावना को आर्य शब्द पूरी तरह से अभिव्यक्त करता है। नमस्ते की तरह आर्य शब्द से भी स्पष्ट होता है, कि महर्षि के निर्देश शास्त्र सम्मत और तर्क सगत हैं।

इन सामान्य बातों की तरह जब हम जीवन के मूलभूत तत्वो के सम्बन्ध मे विचार करते हैं, तो पता चलता है, कि महर्षि दयानन्द ने जीवन के सर्वांगीण विकास और निखार के लिए भी एक सुसगत जीवनपथ दर्शाया है। जो कि एकेश्वरवाद, मनुष्य जाति की एकता, धम, धर्म— अच्छे आचरण का नाम है और सभी महापुरुषो का सम्मान है। सुसगत जीवन के ये आधारभूत मूल तत्व है, आइए इन पर कुछ सक्षिप्त सा विचार करें।

एकेश्वरवाद—इस का अर्थ है, एक ईश्वर की मान्यता। हमारे चारो ओर पृथिवी, जल, अग्नि, वायु आदि अनक प्राकृतिक पदार्थ है। जो कि हम जैसे किसी मनुष्य ने नही बनाए। इन प्राकृतिक पदार्थों की रचना, व्यवस्था किसी के करने से ही होती है। उनकी व्यवस्था बताती है, कि इसका कोई न कोई कर्ता, धर्ता और नियामक है और वही ईश्वर है। ईश्वर के प्राकृतिक कार्य सभी स्थानो पर एक रूप मे ही हो रहे हे तभी तो सभी जगह अन्न, फल, फूल खनिज, धातुए एक रूप मे ही मिलती है। यह एक रुपता एव समान व्यवस्था अपने उत्पादक, व्यवस्थापक की एकता को ही सिद्ध करती है।

इसी प्रकार सभी प्राणियो की अपनी अपनी जाति के अनुरूप शरीर रचना, अग सस्थान और उन का कार्य एक सा ही है। प्रदेश का सामान्य सा ही प्रभाव होता है। यह एक रूपता भी अपने कर्ता की एकता को ही सिद्ध करती है। शास्त्रो मे एक जगत् कर्ता, धर्ता, सहर्ता का वर्णन प्राप्त होता है। हा, वहा प्रकरण के अनुरूप उसके गुण, कम, स्वभाव को बताने के लिए भिन्न-भिन्न नामो का सकेत मिलता है, पर उन नामो का नामी एक ही है। इस के विशेष विवेचन के लिए 'वेद की कुञ्जी—प्रथम समुल्लास' पढ़िए।

ईश्वर के एक होने से उस के सर्वज्ञ, सर्वेश्वर, सर्व शक्तिमान्, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी आदि गुण चरितार्थ होते हैं तथा ऐसे गुणयुक्त ईश्वर को मानने

से ही उसकी कर्मफल व्यवस्था पर विश्वास जमता है। इसी विश्वास पर कोई सदा शुभ कर्मों मे जुटा रहता है। भक्ति द्वारा ईश्वर के साथ अपना निकट सम्बन्ध अनुभव करने से ही आत्मिक शक्ति और शान्ति मिलती है।

मानव जाति की एकता—सभी मनुष्यो के शरीर, अग सस्थान एव उन का कार्य एक सा ही है। भौगोलिक दृष्टि से रूप, रग का बहुत कम ही अन्तर होता है। सभी के हृदयो मे सुख, शान्ति की एक सी ही भावना होती है। सभी के खून का रग लाल और आत्मा सब की अजर-अमर ही है। अत प्रदेश, रग के भेद के आधार पर भेदभाव नही करना चाहिए। एक मानव से दूसरे मानव मे शिक्षा योग्यता आदि के कारण ही अच्छे-बुरेपन का अन्तर होता है।

मानव समाज मे स्त्री—पुरुष मे भी सामान्य सा ही भेद होता है। इतने भेद स कोई ऊचा नीचा नही हो जाता है। वस्तुत ये दोनो समाज के महत्वपूर्ण अग हैं और दोनो का अपना अपना महत्व है। दोनो को समान रूप से एक दूसरे के सहयोग, सदभाव की आवश्यकता होती है। एक के बिना दूसरा अधूरा है।

अत. मानव जाति की एकता, समानता के कारण सब को समान रूप से प्रगति एव प्रगतिदायक शिक्षा, धर्म आदि का समान अवसर और अधिकार प्राप्त होना चाहिए। सब को सब से स्नेह सौहार्द सहयोग का व्यवहार मिलना चाहिए। ऐसा वही हो सकता है, जहा सब मे समानता की भावना होती है। ऐसा व्यक्ति फिर किसी से सामाजिक उच्चता नीचता और जन्मना स्पृश्यता—अस्पृश्यता का भेदभाव नही करता।

धर्म—अच्छे आचरण का नाम है—शिव-माग का तीसरा मूलमन्तव्य है—सदाचार, धर्म। धर्म वस्तुत अच्छे आचरण का नाम है और आचरण को अच्छा बनाने के लिए ही धर्म की अपेक्षा है। नि:सन्देह शास्त्रो मे धर्म शब्द अनेक अर्थों मे आता है, पर धर्म का मुख्य अर्थ है—सत्य, ईमानदारी, स्नेह, सहयोग आदि। ये वे गुण हैं, जिन को अपने स्वभाव का अग बनाने से व्यक्ति, परिवार, समाज सुखी, व्यवस्थित होते हैं। धर्म प्रेरणा द्वारा व्यक्ति के स्वभाव को सुन्दर बनाता है। वह व्यक्ति पर कुछ थोपता नही, अपितु स्वभाव का अग बनाता है।

जैसे कि सामाजिकता के नाते हमारे आपस मे माता, पिता, पुत्र, भाई, बहिन, मित्र आदि के रूप मे सम्बन्ध हैं। आपस के सम्बन्ध के अनुरूप आचरण करने से ही सामाजिक सम्बन्ध जहा सुन्दर बनते हैं, वहा परस्पर सहयोग, स्नेह भी मिलता है। अत एव इस व्यवहार एव सम्बन्ध को भी धर्म कहते हैं। कर्मकाण्ड, विश्वास, सिद्धान्त, स्वभाव और आचरण आदि धर्म के अनेक अर्थ हैं। पर इन मे से 'आचार: परमो धर्म' मनुस्मृति 1,108 के अनुसार आचरण सब से मुख्य अर्थ है और तभी मनु 6,72 मे धृति, क्षमा, सत्य, सयम आदि आचार की बातो को धर्म की पहचान बताया है। धर्म का यह आचार पक्ष ही ऐसा है, जिस के सम्बन्ध मे सभी धर्म एक मत हैं तथा सभी इन को स्वीकार करते हैं। विस्तार के लिए 'सरल-सुखी जीवन' देखिए।

सभी महापुरुषो का सम्मान—ससार मे समय-समय पर अनेक विशेष व्यक्ति हुए, जिन्होंने मानव जाति को सुखी, विकसित बनाने के लिए सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षणिक, साहित्यिक, राजनीतिक और भौतिक विज्ञान आदि के क्षेत्र मे विशेष कार्य किया। अपने समय और स्थान पर जिसने जिस भी क्षेत्र मे जैसा योगदान दिया, वह अपने योगदान के अनुरूप सभी के सम्मान का पात्र है, क्योकि उन व्यक्तियो का योगदान ही आज के विकसित रूप को यहा तक पहुचाने मे सहयोगी बना। जैसे कि जार्ज

(शेष पृष्ठ 22 पर)

बोधाष्टक

लेखक—कवि श्री कस्तूरचन्द "घनसार" कवि कुटीर पीपाड़ शहर (राज.)

बह गए सब एक ही रस्ते, कोविद विज्ञ विवेकी।
होते हुए मेधावी तत्वद्, विद्या, बोध सुनेकी॥
निराकार—आकार न जाना, पाहन, पूजक बन के।
हो कर विवद—मति के नेना, माना ईश्वर मन के॥1॥

विस्मित बात रही हम देखो, निर्णय कर नही पाये।
ईश्वर क्या ? होता है पाहन शिव ठहराये॥
वो शिव रचैया जग के कैसा ? देश, काल को माना।
अपरिच्छिन्न 'वही व्यापक ईश्वर' अविचल, अखण्ड बखाना॥2॥

मनुष्याकार प्रतिमा, पत्थर बना रखा शिव स्वामी।
वही हमारा शङ्कर प्यारा, बना लिया सुख धामी॥
"न तस्य प्रतिमा अस्ति" है ये, झूठा बाद चलाया।
अभी न खोजं शिव की कर पाये, कदम-कदम चल आया॥3॥

वही यामनी, थी उस शिव की, मूलशङ्कर जो पाई।
गये प्रसाद खिलाने हेतु, उत्कण्ठा दरशाई॥
जो कर आये शङ्कर पूजा, वही रीति कर आगे।
बम्ब ! बम्ब ! भोले शङ्कर स्वामी, रहे बोलते जागे॥4॥

होता क्या ? शिवरात उसी में, पूजा कर सब सोये।
मूलशङ्कर, शङ्कर के दर्शन, हेतु पन्थ सब जोये॥
शङ्कर नही कहा ? से आवे, उहा पोह उर लागी।
नीद भूख प्रमादिकता नही, विरह ज्वाला उर जागी॥5॥

प्रात काल चले फिर घर को मातु कहा—"कहा ? ठहरे।"
बोले शङ्कर—"शङ्कर के हित' लगा रखा था पहरे॥
चूहा, देखा भोजन खाते, शिव शङ्कर नही आये।"
माता बोली—"है तू भोला, वही तो शङ्कर कहाये॥6॥

उसी रात को बोध हुआ था, तमसा गई विलाई।
चले खोजने घर से निकले, सम्पत्ति सब बिसराई॥
मठ, मन्दिर, बन, पुर, गिरि, सागे, खोज-खोज कर हारे।
बहा नही विश्राम खोज हित, ग्रन्थ अनेक निहारे॥7॥

गये मथुरा विरजानन्द के—पास रहे वे जाके।
त्यागे सर्व ग्रन्थ जो पहले, पढे हुए थे ताके॥
वैदिक विद्या वही पढाई, ईश्वर सच्चा पाया।
हुआ वेश में ज्ञानोज्वाला, अविद्या तिमिर बिलाया॥8॥

महर्षि दयानन्द
ज्वलन्त प्रतिभा

लेखक—श्री धर्मवीर जी विद्यालंकार
आचार्य उपदेशक महाविद्यालय टंकारा

आज शिवरात्रि-पर्व है। सम्पूर्ण भारत मे यह पर्व अत्यन्त उल्लास और श्रद्धा से आयंजन (सभी सम्प्रदायो के हिन्दू मात्र) मनाते हैं। आज से 149 वर्ष पूर्व एक चौदह वर्षीय बालक व्रत-उपवास पूवक यह पर्व मना रहा था। उस ने आज के दिन जो कुछ पाया, उस के लिए 19 वर्ष तक अथक परिश्रम किया। वह बालक, महर्षि दयानन्द के रूप मे आज से 113 वर्ष पूर्व सन 1883 के दीपावली पर्व से क्षितिज मे अपूर्व ज्योति के रूप मे आज भी हमारा मार्ग दर्शन कर रहा है। श्रद्धा, तप, विद्या, निष्ठा, योग और ब्रह्मचर्य के मूर्तस्वरूप का आज के दिन स्मरण, आज की पवित्र वेला मे परम कल्याणकारी है।

साधारणतया आज का सन्यासी अशिक्षा, आर्थिक विपन्नता के कारण दु खो से छुटकारा पाने मे असमर्थ हो सन्यासग्रहण करता है। परन्तु महर्षि दयानन्द की परिस्थितिया इस से सर्वथा विपरीत थी। सौराष्ट्र (काठियावाड) मे मौर्वी राज्य के प्रभु सत्ता सम्पन्न दिवान श्री करसन जी लाल जी तिवारी के घर ग्राम टकारा मे सन् 1824 के फाल्गुण मास ('वेद सविता' मासिक अजमेर के दिसम्बर 1986 के अक मे प्रकाशित समाचार के अनुसार महर्षि का जन्म भाद्रपद शुक्ला 9 है, ऐसा शोध हुआ है।) मे उज्जवल ज्योति के रूप मे प्रादुर्भूत हुए। "होनहार बिरवान के होत चिकने पात"। बचपन मे ही कठिन शास्त्र पढ लिए। यजुर्वेद कण्ठस्थ कर लिया शिवरात्रि व्रत-उपवास पूर्ण निष्ठा से किया। अर्धरात्रि तक सभी सो गए, पर बालक मूलशकर आखो को ठण्डे जल से धोता रहा और जागता रहा। पिता, गुरु, पुजारी जगाए गए और सो गए पर वह ऐसा जागा कि आजन्म जागा और आजन्म ही सम्पूर्ण मानव-जाति को जगाता रहा। उसने जो पाया, उस से जगत् का महान् उपकार हुआ। ईश्वर के सत्यस्वरूप को पा ही लिया।

प्यारी बहिन, हितैषी चाचा की मृत्यु के अवसर पर मृत्यु पर विजय पाने का जो सकल्प किया। उसे पूरा कर दिखाया। 17 बार विषपान कराया गया। सन् 1883 की दीपावली पर्व के दिन उस-ब्रह्मचर्य से प्रदीप्त, सुशिक्षा से सुशोभित, सुविद्या से प्रकाशित, प्रचण्ड ज्वलन्त ज्योति महर्षि दयानन्द ने मृत्यु पर विजय पाने का सुन्दर, प्रभाव शाली दृष्टान्त प्रस्तुत किया। सायकाल 6 बजे भूमि को गोबर से लिपवाया गया। उस पवित्र स्थान पर बैठ सस्वर, सुमधुर कण्ठ से ऋचाओ का भक्तिपूर्ण निष्ठा से, समर्पित भावना से मनोहारी पाठ किया। फिर लेटे। तीन बार बोले, "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो।" वह दिव्य आत्मा इस नश्वर शरीर को छोड कर चल दिया। उस समय उन के चेहरे पर दारुण रोग के कष्ट के चिन्ह नही थे। अपितु स्वच्छ, सात्विक, पवित्र दिव्य आभा के दर्शन हुए। जिसे देख कर प गुरुदत्त विद्यार्थी के हृदय की समस्त आशकाए शरदभ्र की भान्ति विलीन हो गई।

नवयुवक, विद्वान् एव जिज्ञासु मूलशकर ने सुख सम्पन्न माता-पिता के मोह को, सुख सम्पति के लालच को छोडा। पर्वत की उपत्यकाओ मे, बीहड सुनसान वनों में, हिमालय की बर्फीली चोटियो पर, हिंसक पशुओं से घिरी कन्दराओ मे, ग्रामो मे, नगरो मे, मन्दिरों मे, मेलों मे,

जहां जो भी विद्वान्, साधु, सन्त, महात्मा सन्यासी मिला उसे गुरु धारण किया। उस से जो कुछ ज्ञान, योगसाधना मिली, उसे भूखे की तरह तुरन्त आत्मसात् किया। सैकड़ों जटिल ग्रन्थ पढ़े। विभिन्न सम्प्रदायों के धर्म-ग्रन्थों का गहरा अध्ययन किया। तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र, शल्य क्रिया सीखे। योग विद्या का सफल अभ्यास किया। परन्तु सन्तोष तभी मिला जब परम गुरु स्वामी विरजानन्द दण्डी के चरणों में, अपूर्व निष्ठा एवं तप से गहन विद्याभ्यास किया।

योग विद्या में निष्णात, वेद विद्या से प्रदीप्त, निर्विकल्प समाधि के अभ्यस्त की समाधि हजारों वर्षों के अनन्तर टूटती है। यह दयानन्द समाधिस्थ हो गया, तो वेदों का उद्धार कौन करेगा। भारत को परतन्त्रता और दुःखों की अतिशयता से कौन छुड़ाएगा। दक्षिणा के लिए लौंग की खाली हाथ में लिए उपस्थित निष्ठावान् शिष्य स्वामी दयानन्द से प्रज्ञाचक्षु, भविष्य को गहराई तक देखने वाले गुरु स्वामी विरजानन्द दण्डी बोले—"प्रिय दयानन्द! तुम से भौतिक दक्षिणा नहीं चाहिए। जाओ, वेदों के उस सत्यार्थ का प्रकाश फैलाओ, जो तुम ने यहां पाया है।" समाधि के सात्विक घनीभूत परम आनन्द का परित्याग कर गुरु दक्षिणा रूप मे किए सकल्प-व्रत का सम्यक् पालन अनुरूप शिष्य ने आजन्म निभाया।

अनेक ईश्वरो की उपासना, अन्ध विश्वास और अशिक्षा से भ्रमित भारतवासी कुरीतियो के जाल में फंसे दारुण दुःख भोग रहे थे। अविद्या, कुशिक्षा, कुसग, कुसंस्कार, मिथ्याभिमान से विघटित समाज और ईर्ष्या-द्वेष कलह से अविवेकी बने। समाज पर अंग्रेजी शासन का दुर्दान्त अन्यायपूर्ण व्यवहार, बाल विवाह, विधवाओं का नारकीय जीवन, नारी मात्र का क्रन्दन, मृतक श्राद्ध, वर्ण व्यवस्था के नाश से भारतवासी असहाय और किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो चुके थे। परस्पर द्वेष-ईर्ष्या-कलह फूट से भारत छोटे-छोटे राज्यों मे विभक्त हो असंगठित हो रहा था। कूटनीतिज्ञ अंग्रेज के क्रूर पंजे दिनोंदिन मजबूत हो रहे थे। राजाओं को भोग में, शिकार में, विलास में, मद्य मांस वैश्यागमन में बड़प्पन के झूठे जाल में फंसाकर असहाय निर्बल, निरुत्साही और पुत्र समान प्रिय प्रजापर क्रूरतापूर्वक अन्याय करने वाला अंग्रेजो ने बना दिया था।

"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मना।
स्वं-स्वं चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्याम् सर्वमानवा:॥"

विश्व के गुरु भारत राष्ट्र की निकृष्टतम अधोगति देख निर्मोही सन्यासी दयानन्द बहुत रोया, जो नव युवक सांसारी मूलशकर अपनी प्यारी बहिन की मृत्यु पर दो आंसू न रोया। शेर की सन्तान के स्वाभिमान को जगाने का संकल्प किया और गुरु विरजानन्द की दूरदर्शिता को सराहा।

इस पतिततम अवस्था से उद्धार का एकमात्र सहारा एक ईश्वर है और ईश्वरोक्त उदात्त कल्याणकारिणी पवित्र वेदवाणी का सुमगल ज्ञान है। राष्ट्र को सगठित करने के लिए एक ईश्वर, एक धार्मिक ग्रन्थ वेद की स्थापना ही एकमात्र साधन है।

बंगाल की खाडी से अरबसागर तक, पेशावर से विन्ध्याचल तक गगा-यमुना-नर्मदा के तटवर्ती तीर्थ-स्थलो छोटे-छोटे ग्रामों, बड़े-बडे नगरो वेद की पवित्र ऋचाओं को स्वामी दयानन्द, मधुर कण्ठ से गम्भीर स्वर मे तन्मय हो गाने लगे। सत्य अर्थ के प्रकाश मे जनजीवन उठ खडा हुआ। स्थानीय छोटे 2 विद्वानो को समझाया, धुरन्धर पण्डितो से शास्त्रार्थ किया। प्रकाण्ड विद्वानो की विश्व-विख्यात नगरी काशी मे वेदों की दुन्दुभि बजाई। हरिद्वार के कुम्भ मेले पर "पाखण्ड-खण्डिनी-पताका" फहराई। ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, केशव चन्द्र सेन आदि समाज-सुधारको ने दिल खोल कर स्वागत किया। अमेरिका के थियोसोफिष्ट कर्नल अल्काट उन से मिलने भारत आए। जर्मनी के विद्वान् मैक्समूलर ने स्वामी जी की प्रतिभा का लोहा माना। प्रखर किरणों वाले सूर्य के समान वेद के प्रकाश मे पाप, अविद्या, अन्ध-विश्वास, कुरीतियो, रूढ़ियों के बादल छिटक कर दूर हट गए। निर्मल आकाश में वेद रूपी सूर्य की ऋचाएं रूपी किरणें चमकने लगीं।

दु:ख दारिद्रय शोक त्रिविधसताप दूर हुए। जन-जन सुखी और आनन्दित हुआ।

वेदोद्धारक—19 वी शताब्दी मे वेदो के नाम से बहुत गलत बातो का प्रचार हो रहा था। 'वैदिकी हिंसा-2 न भवति' कह कर यज्ञ मे मूक प्राणियो की हत्या को वेद के नाम से किया जा रहा था। तो भारतवासी बुद्ध ने उसे मानने से इन्कार कर दिया था। इसी प्रकार से अन्य बहुत पाखण्ड वेद के नाम से हो रहे थे। क्योकि उन्हे पढता कोई नही था।

1—अत: स्वामी जी ने सभी को वेद पढने का अधिकार दिया। 'स्त्री शूद्रौ नाधीयताम्' के उत्तर मे यजुर्वेद की ऋचा उद्धृत की—

"इमा वाच कल्याणी मावदानि जनेभ्य.।

ब्रह्मराजन्याभ्या शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय

वेद 'जनेभ्य' कह कर सन्तुष्ट नही हुआ। 'जन' शब्द के अन्तर्गत जिन का ग्रहण है, उन्हे स्पष्ट किया अगली पक्ति मे। अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, घर की महिलाए व भृत्य तथा अतिशूद्र। फिर कहा कि—

"इम मन्त्र पत्नी पठेत।

ब्रह्मचर्येण कन्या युवान विन्दते पतिम्॥"

पढी लिखी कन्या ही मन्त्र पाठ कर सकेगी। विद्याध्ययन से ही तो ब्रह्मचर्य पूर्ण होगी। माता विदुषी होगी, तो सन्तान सच्चरित्र होगी।

2—यह प्रमाणित किया कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। स्वत. प्रमाण है। मानवमात्र के कल्याण की भावना से ओत-प्रोत है।

3—घन पाठ, जटापाठ आदि मे वेदो का शुद्ध पाठ स्थापित किया।

4—वैदिक शब्दो के अर्थ व्याकरण एव निरुक्त से निश्चित किए। यौगिक अर्थों को मान्यता दी। रुढि अर्थों का निराकरण किया।

5—वेदो के भाष्य किए जो युक्तियुक्त, विज्ञान सम्मत और सृष्टि क्रम के अनुकूल है।

6—वेद मे सभी विद्याओ आत्मा, परमात्मा, प्रकृति धर्म, आचरण, कर्त्तव्यकर्म, शिल्प, विज्ञान, चुम्बकत्व, विद्युत, ताप आदि भौतिक और रासायनिक सिद्धान्तों, वायुयान आदि के निर्माण को प्रतिपादित एव प्रकाशित किया।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द वेदो के प्रकाण्ड विद्वान् एव उद्धर्ता हुए।

ईश्वर—एक ईश्वर की स्थापना की। वह निराकार है। सृष्टि उत्पत्ति, स्थिति प्रलय का नियामक है। यजुर्वेद की ऋचा है —

"स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविर शुद्धमपापविद्ध कविर्मनीषी परिभू. स्वयम्भू याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतिभ्य: समाभ्य:।"

यह निराकार ईश्वर है, जिसे विद्वान् लोग मस्ती मे अनेक नामो से पुकारते हैं:—

"तदेवाग्निस्तदादित्य तद्वायुस्तदु चन्द्रमा।

तच्छुक्र तद्ब्रह्म स आप. स प्रजापति.॥"

इन्द्र मित्र वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यस्स सुपर्णो गरुत्मान्।

एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति, अग्नि यम मातरिश्वानमाहु:॥ ऋ, 1. 164. 1

एक ईश्वर की स्थापना का मुख्य उद्देश्य है। विघटित विभिन्न मतावलम्बियो को सगठित कर एक सुदृढ राष्ट्र की स्थापना।

हम सभी आपस मे भाई-भाई हैं। क्योकि उसी ईश्वर के ही पुत्र हैं.—

शृण्वन्तु सर्वे अमृतस्य पुत्रा.।

शिक्षा प्रणाली— (क) सर्व प्रथम महर्षि ने स्त्री शूद्रो तक को विद्या पढने के अधिकार का डट कर प्रचार किया। हमारी कुरीतियो और अन्धविश्वास के कारण नारियो की शिक्षा बन्द कर दी गई थी। उन के दारुण दु:ख का कारण महिलाओ और पुरुषो की अशिक्षा थी। मुसलमान उन्हें मुसलमान बना रहे थे और ईसाई ईसानुगामी। धनवानो की लडकिया ईसाइयो के विद्यालयो में पढ़ कर बालपन से भारत विरोधी सस्कार पाल रही थी। अत: सुशिक्षा का प्रचार आवश्यक था।

(ख) सुशिक्षा भारतीय शिक्षा पद्धति अर्थात् गुरु-कुल शिक्षा पद्धति ही सम्भव है। महर्षि ने इस पद्धति उस के सिद्धान्त, गुरु-शिष्य का पवित्र सतत ब्रह्मचर्य, उनके कर्म, कर्त्तव्य, स्वभाव एव पाठ्यक्रम का विशद विवेचन किया। अक्षरज्ञान से लेकर, आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक शिक्षा मे आत्मा परमात्मा-प्रकृति विज्ञान ज्योतिष, पृथिवी से ले कर द्युलोक पर्यन्त पदार्थों की विद्या आयुर्वेद, धनुर्वेद (राजनीति) गन्धर्व विद्या आदि को गुरुकुलीय पाठ्यक्रम मे समाविष्ट किया। 20 वर्ष का पाठ्यक्रम बनाया। यह तो उन्ही के प्रकाण्ड पाण्डित्य और ज्वलन्त प्रतिभा का प्रभाव था कि वे बिना अंग्रेजी पढे ही, समस्त विद्याओ के ज्ञान (वेद द्वारा) पर अधिकार रखते थे।

स्वामी श्रद्धानन्द ने उन के अवसान के 17 वर्ष बाद इसे मूर्तरूप प्रदान किया।

(ग) महर्षि ने बताया कि सुशिक्षा एव सुविद्या पाने के लिए ऋषिकृत ग्रन्थो का ही अध्यापन होना चाहिए। ऋषि निर्भ्रान्त हैं। उन के ग्रन्थो प्रतिपादित विद्या स्वच्छ निर्मल है। मनुष्य कृत ग्रन्थो मे गलतिया सम्भव हैं। उन से भ्रम एव अविद्या प्राप्त होती है। यह अविद्या सब दु:खो का मूल कारण है।

धर्मोद्धारक- भारतवासी धर्म परायण हैं। धर्म पालन प्राणो से भी प्रिय है। जो भी नियम हैं, वे धर्म हैं। सामाजिक, वैयक्तिक, आर्थिक सभी प्रकार के नियम धर्म हैं। गत 2000 वर्षों स भारतवासी नियमो के (धर्म के) स्वरूप को भूल गए। उन के चिन्हो को ही धर्म समझने लगे। इससे अनेक भ्रान्तियां, मतभेद, विवाद उत्पन्न हुए, ईसाइयो और मुसलमानो ने इनका मजाक करना ही था। आर्य निरुत्तर रहे, चाहे उस पर दृढ रहे। (आज तो हमारी दृढता भी समाप्त हो गई है।) ऐसे विकट समय में महर्षि ने धर्म के स्वरूप प्रतिपादन हेतु स्मृति को उद्धृत किया—

धृति-क्षमा-दमो-अस्तेयं शौच-मिन्द्रियनिग्रह।
धीर्विद्या-सत्य-मक्रोधो दशक धर्म लक्षण ॥

ये दस गुण धर्म के चिन्ह हैं। लक्षण अर्थात् डैफी-नेशन तो हैं। 'धार्यते इति' जिस नियम के पालन से व्यक्ति, समाज, राष्ट्र मे स्थिरता आती है। फिर महा-भारत का उद्धरण दे कर मूढ मनुष्य भी आसानी से ग्रहण करे और पालन कर सके। वह बताया —

श्रूयतां धर्म-सर्वस्व श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मान' प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत् ॥

अर्थात् जो अपने को प्रिय लगे वैसा दूसरो से—आचरण करें।

इस के अतिरिक्त कणादमुनि ने कहा —

यतोऽभ्युदय नि श्रेयस्सिद्धि स धर्म।

अर्थात सासारिक समग्र उन्नति ऐसी हो कि मोक्ष भी मिल जाए जिस से वह धर्म है। सासारिक आत्मिक सभी पदार्थों के गुण-कर्मों का तत्त्वज्ञान और तदनुसार आचरण को धर्म बताया।

स्वामी जी ने इसे सरल करते हुए प्रतिपादित किया, धर्मानुसार अर्थात प्रीतिपूर्वक, यथायोग्य सत्यासत्य का विचार कर बरतना।

धर्म का सत्यार्थ प्रकाश करते हुए महर्षि ने पुरातन आर्यों, मुसलमानो और ईसाइयो को शास्त्रार्थ मे हरा कर विधर्मी बनते जा रहे, अथवा बन गए आर्यों को बचाया और भारत राष्ट्र की रक्षा की नींव डाली, जिसे स्वामी श्रद्धानन्द जी ने पल्लवित किया।

गोरक्षक— भारत कृषि प्रधान देश है। आज भी कृषि की उपज अधिक होने पर या कम होने पर अन्य सभी वस्तुओ के बाजार मे क्रमश वृद्धि या अवनति देखते हैं। महर्षि ने भारत का अर्थ शास्त्र कृषि को समझा और गो-कृष्यादि रक्षिणी सभा की स्थापना की। गो की उपयोगिता और रक्षा सवर्धन की अनिवार्यता के विषय मे 'गोकरुणा निधि' पुस्तक लिखी। उन के भावपूर्ण और आर्थिक उन्नति को दर्शाने वाले तथ्यो के प्रति क्रमश कर्नल ब्रुक्स, भारत का वायसराय, महारानी विक्टोरिया निरुत्तर हो गए। महारानी ने विवशता दर्शायी कि आस्ट्रेलिया से मगाया गो-मास महगा पड़ता है। महर्षि का उत्तर था— 'वह महगाई भारत से ली जाए। गोवश की रक्षा की जाए।' पर अंग्रेज सरकार भारत को आर्थिक

दृष्टि से लगडा बनाना चाहते थी। तब महर्षि ने गोरक्षा का प्रचार किया। भारत मे सैकडो बडी-बडी गौ शालाए खुली। उस समय भारत, लका, बर्मा की सम्मिलित भूमि भारत थी। आबादी थी 20 करोड। महर्षि ने 5 करोड व्यक्तियो के हस्ताक्षर अग्रेज सरकार को भेजे थे।

दुख है कि आज स्वतन्त्र भारत को भारतियो की सरकार गोवश वध के प्रति अत्यधिक उत्साहित है। इसी पर श्री विनोबा भावे बलिदान हो गए।

समाज-सुधारक—सामाजिक सुधारो नारी उत्थान को प्राथमिकता दी। माता को विद्याध्ययन का अधिकार देना प्रथम आवश्यकता है। माता विदुषी तो सन्तान विद्वान् एव चरित्रवान होती है। राष्ट्र का भविष्य बालको पर है। बाल विवाह, सती-प्रथा, भ्रूण हत्याए आदि कुरीतियो का प्रबल विरोध किया। विधवा विवाह एव आवश्यकतानुसार नियोग का समर्थन शास्त्रानुसार किया। समुद्र यात्रा को हितकारी बता कर आर्थिक उन्नति एव विस्तृत ज्ञान का साधक बताया।

दलितोद्धारक— आर्थिक एव सामाजिक दृष्टि से छोटे माने जाने वाले समुदाय को सर्वप्रथम विद्यार्जन का अधिकार वेद प्रामाण्य से सिद्ध किया। उन के शिल्प कला, उद्योग के अवसर हेतु भारतियो को विदेशो से प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित कर भेजा।

सस्कृति रक्षक—भारतीय सस्कृति का मूल वर्णाश्रम व्यवस्था मे निहित्त है। वाम-मार्गियो, जैनियो आदि के कारण और पौराणिको के पाखण्ड के कारण, इस्लाम और इसाईयत द्वारा मजाक किए जाने के कारण प्राणि मात्र की समानता रूपी हितभावना के छल के प्रसार के कारण भारतियो की वर्ण और आश्रम व्यवस्था के प्रति आस्था समाप्त हो चुकी थी। शास्त्रो के प्रामाण्य से उसके लाभ व विरोध से हानिया समझाई। जन्मगत वर्ण (जाति) व्यवस्था को शास्त्र एव वेद विरुद्ध सिद्ध किया।

चारो वर्णों का निर्धारण-शिक्षा के आधार पर आचार्य करता है। माता-पिता के रक्त के गुणो के कारण ब्राह्मण की सन्तान थोडे श्रम से ब्राह्मणत्व को, क्षत्रिय की सन्तान क्षत्रियत्व को और वैश्य की सन्तान वैश्यत्व को अर्जित कर सकती है। अगर यह कभी मिथ्याभिमान के पद में जघन्य वर्ण का कार्य करेंगे तो इन्हे जघन्य वर्ण मिल जाएगा। अगर शूद्र उत्तम कर्म सम्पादन करेगा तो वह ब्राह्मणत्व को भी प्राप्त कर सकता है:—

शूद्रो ब्राह्मणतामेति, ब्राह्मणश्चैमि शूद्रताम्। मनु।

तथा

धर्मचर्यया जघन्या वर्ण.पूर्वं पूर्वं वर्णमापद्यते जाति-परिवृत्तौ।

अधर्मचर्यया पूर्वो वर्णो जघन्य जघन्य वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ॥ आपस्तम्ब।

वर्तमान परिस्थिति मे इन का वर्गीकरण निम्न प्रकार से होगा —

1 अध्ययन-आध्यापन तथा शोधकर्ता ब्राह्मण वर्ण
2 देश को रक्षा करने वाले क्षत्रिय „
3 व्यापार वाणिज्य-कृषि कर्म करने वाले वैश्य „
4 सभी वर्णों का सहकार करने वाले शूद्र „

कहलाएगे।

यह वर्गीकरण सामाजिक दृष्टि से है। मनुष्य का व्यक्तिगत दृष्टि से जो वर्गीकरण किया गया है। उसे आश्रम व्यवस्था कहते हैं। इस मे प्रत्येक मनुष्य की आयु 100 वर्ष मान कर उसे चार भागो मे विभाजित किया है।

ब्रह्मचर्य—आयु के प्रथम 25 वर्ष का काल ब्रह्मचर्य है। इस मे बालक वीर्यरक्षण करता हुआ और गुरु के सतत निरीक्षण मे विद्या ग्रहण के साथ साथ चरित्र निर्माण करता है। वे ही पूर्ण ब्रह्मचारी जब गृहस्थ मे प्रवेश करते हैं तो उत्तम नागरिक, विद्वान्, कर्म के प्रति उत्साही देश-धर्म संस्कृति के जागरुक प्रहरी सिद्ध होते है। आज इस के बिना देश एव व्यक्ति मात्र की निरन्तर अधोगति हो रही है। व्यक्ति शरीर से बलिष्ट नहीं कमजोर है। मन भी दृढ नहीं, निश्चय में देर अथवा भय है। आत्मा विद्या से, ज्ञान से प्रकाशित नहीं। परिणामत: कोई भी निर्णय न्यायोचित नहीं। ब्रह्मचर्य जीवन, शिक्षा अर्जन करने का समय है। चारो आश्रमो की नींव है।

कुछ मतवादियो ने गृहस्थाश्रम की घोर निन्दा की है। इसे नारकीय जीवन बताया है। परिणामत भारतीय जीवन के प्रति उदासीन और अकर्मण्य हो गए। सोमनाथ का मन्दिर लुटा। भारत देश ही परतन्त्र हो गया। ब्रह्मचर्य के अभाव से शरीर मे स्फूर्ति, मन मे उत्साह और आत्मा मे आनन्द का अभाव हो गया। साधु-सन्तो न गृहस्थाश्रम को निकृष्ट कहा तो महर्षि दयानन्द ने सर्वोत्कृष्ट —

यथा नदीनद. सर्वे समुद्र यान्ति सस्थितिम्।
तथैवाश्रमिण सर्वे गृहस्थ यान्ति सस्थितिम्॥

गृहस्थ ही सभी आश्रमियो का आर्थिक दृष्टि से आधार है।

वानप्रस्थाश्रम— वानप्रस्थाश्रम मे मनुष्य अर्थोपार्जन को छोड पुन विद्योपार्जन करता है। साथ ही ब्रह्मचारियो को विद्याध्यापन कराता है। अनुभवी व्यक्तियो द्वारा अध्यापन कार्य से परिपक्वता एव पूर्णता का समावेश होता है। विद्यार्थी यहा उत्तम प्रकार से विद्याग्रहण करते है, वहा शिक्षा का व्यय भार भी नगण्य होता है। आज के प्रगतिशील अध्यापक की आवश्यकताए पूर्ण करने के कारण शिक्षा पर आर्थिक बोझ बढ गया है। साथ ही युवको के ज्ञान मे परिपक्वता नही। यह समाज की सुव्यवस्था है।

सन्यास—सन्यास आश्रम मे व्यक्ति सम्पत्ति की तनिक भी चिन्ता नही करता। न ही आर्थिक, न सामाजिक दायित्वो का वहन करता है। उस का चिन्तन एव राष्ट्र कार्य एव समाज को समर्पित होने से वह सब का भला करने में प्रसन्न रहता है। समाज की बुराईयो को निर्भीकता एव नि स्वार्थ भाव से परोपकार की दृष्टि से दूर करता है। इस आश्रम मे निकम्मे, आलसी एव विद्या विहीन लोगों के प्रवेश से समाज का निरन्तर पतन हो रहा है।

महर्षि जी ने इन की स्थापना पर बल दिया, ताकि राष्ट्र सर्वतोमुखी समग्र उन्नति कर सके। यह उन के गहरे चिन्तन का परिणाम था।

शुद्र राष्ट्रीयता के उद्दाम उद्घोषक, मुसलमानो और अग्रेजो दासता मे पिसते चले आ रहे भारतीयो के निराश हृदय को झकझोरते हुए महर्षि दयानन्द ने स्वतन्त्रता का उदघोष निर्भीकतापूर्वक किया। अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे लिखा है कि पिता जैसे सन्तान पर नि स्वार्थ उपकार भावना से पालना करता है, ऐसी भावना वाले विदेशी शासन से अपना बुरा शासन भी उत्तम है। कलकत्ता मे गवर्नर के प्रश्न के उत्तर मे स्पष्ट कहा कि मैं ईश्वर से सदा ही प्रार्थना करता हू कि भारत से अग्रेजी शासन शीघ्र समाप्त हो। इस हेतु उन्होने श्याम जी कृष्ण वर्मा तैयार किया।

1 सर्व प्रथम भारतीय राज्य व्यवस्था के स्वरूप को बताया।

(क) राज सचालन राज्यार्य सभा, विद्यार्य सभा और धर्मार्य सभा द्वारा होता है।

(ख) राजा का चुनाव प्रजा करती है।

(ग) राजा सभाधीन, सभा राजाधीन, राजा और सभा प्रजाधीन और प्रजा राजसभाधीन रहे।

(घ) एक को स्वतन्त्र अधिकार न देना चाहिए। अकेला राजा स्वाधीन हो, उन्मत्त हो कर प्रजा का नाश करता है।

(ङ) राजा, अधिकारी, प्रजा के कर्त्तव्यो की, कर नीति दण्डनीति की विशद व्याख्या सत्यार्थ प्रकाश मे की।

2 फिर इन सिद्धान्तो का जनता मे तथा राजाओ मे प्रचार ही नही किया। अपितु राजाओ को शिक्षित करना आरम्भ किया। विदुरनीति, चाणक्य नीति पढाना आरम्भ किया। राजधर्म प्रजा पालन बताया। ब्रह्मचर्य पालन आरम्भ कराया तथा मद्यपान, मास-भक्षण द्यूत वेश्यागमन, क्रूरता आखेट छुडवाए। राजाओ की दैनिक दिनचर्या बना कर दी। राजा लोग उस पर आचरण करने लगे। राजा और प्रजा दोनो आनन्दित हुए। राजा पराक्रमी, उत्साही, स्वावलम्बी, आत्माभिमानी हुए, प्रजा स्वामिभक्त हुई। सब ने अपने को पहिचाना और भारत स्वातन्त्र्य के लिए उठ खडे हुए।

(शेष पृष्ठ 24 पर)

दया का सागर : दयानन्द

लेखिका :—आर्या मौरांयति जी आर्यवानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर (उ प्र)

महर्षि दयानन्द जी का जीवन हंस जैसा निर्मल और कमल फूल की तरह सुवासित था। उन्होने बाल्यकाल से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक जितने भी काम किए वह ससार के महापुरुषो से निराले ही किए। जब हम गम्भीर दृष्टि से विवेचन करते हैं तो हमे उन का जीवन सूर्य जैसा तेजस्वी और चन्द्रमा जैसा शान्त और शीतल प्रतीत होता है। वह क्या थे इस को तो वही मनुष्य समझ सकता है जिस की अन्तरात्मा पवित्र हो। दयानन्द को समझने के लिए मनुष्य का हृदय शुद्ध, पवित्र और मस्तिष्क प्रखर होना आवश्यक है। जिस प्रकार मनुष्य समुद्र मे मोती निकालने के लिए उस के नीचे जा कर डुबकी लगाने से ही मोती प्राप्त किए जा सकते हैं। इसी प्रकार से प्रत्येक मनुष्य को एकान्त मे बैठ कर साधना द्वारा चिन्तन करने से दयानन्द रूपी रत्न की जानकारी प्राप्त हो सकती है। दयानन्द, दयानन्द ही थे।

उन के मुकाबले का आज तक कोई हुआ ही नही तो किस से उपमा दी जाए। वह महान गुणो के भण्डार थे, वह योगी थे, वह तपस्वी थे, वह ऋषि थे, वह युगद्रष्टा थे, वह क्रान्तिकारी थे,वह दीन अनाथ,विधवाओ के सच्चे हितैषी थे, वह सत्यवादी थे, वह साधक थे, वह योगी थे, वह देश हितैषी थे इतना ही नही वह समाज सुधारक थे, वह प्रभु की बनाई हुई सृष्टि। प्रभु के बनाए हुए पशु पक्षियो का दर्द भी उन के हृदय मे था। कहा तक लिखा जाए हमारे पास इतनी शक्ति ही कहा है जो उन के सम्पूर्ण गुणो का वर्णन कर सके।

फिर भी हमे प्रयत्न तो करना चाहिए कि दयानन्द रूपी रत्नागार मे से कुछ रत्न मोती हीरे मणिक जो भी चिन्तन कर के विचार की मथनी से मथकर निकाल सकें तो निकालें और अपने जीवन को मालामाल करने के लिए भरसक प्रयत्न करें।

दयानन्द तू सचमुच ही दया का समुद्र था। यदि समुद्र न होता तो किसी दु खी अनाथ के ऊपर दया करता, किसी से दयालुता पूर्ण व्यवहार करता। परन्तु समुद्र ता लबालब भरा रहता है इसलिए तू हमेशा हमेशा दया मे भरपूर ही रहा। अनुप शहर मे पान मे विष देने वाले के ऊपर दया न करता तो उस को जेल भिजवा देता।

वृन्दावन मे विरोधी लोगो के ईट पत्थर बरसाने पर तूने दया दिखा कर मुस्करा दिया और यह कहा कि जो कुछ इन के पास था। वह ले आए वरना अपने भक्तो को यह भी तो कह सकते थे कि तुम भी जवाब मे पत्थर मारो परन्तु ऐसा करने से दया निर्दयता मे बदल सकती थी। फिर दयानन्द नाम कैसे सार्थक होता। फिर दया के समुद्र की शोभा ही क्या रह जाती पर धन्य तू देव दयानन्द सचमुच ही तू दया का सागर था।

मथुरा मे वैश्या आकर कन्दनसम जीवन को कलकित करने का प्रयास करने लगी। परन्तु वहा पर भी तो दया के समुद्र थे अथाह दया की बुन्दे बरसा बरसा कर वैश्या को चरणो मे गिरने के लिए विवश कर दिया। यह कोई मामूली बात थी। यह कोई छोटी घटना न थी यदि आज दया का भण्डार अपना खजाना न खोलता तो सदा सदा के लिए उस पुरातन काल के ऋषि की तरह दूषित हो जाता। जैसा कि विश्वामित्र जी के विषय मे

सुनते आए हैं। क्या वे वेश्या से अछूते रह गए थे। नही नही वह अपने साधना के पथ को भूल कर विषम पथ के अनुगामी हो गए थे और सब लोग जानते है कि उन्होंने शकुन्तला को जन्म दिया था। तभी तो लाखो वर्षों के पश्चात् भी इन के जीवन पर कलक का टीका दिख ही जाता है।

परन्तु देव दयानन्द ने शरीर की सफद चादर पर जरा भी काला धब्बा नही लगने दिया और अपने भूषित जीवन को सुभूषित कर दिया।

एक दिन मेरा ऋषि हजारो लोगो मे अपनी मीठी और ओजस्वी वाणी से लोगो के मानस पटल की काई को धोने के लिए बोल रहा था। अपनी मधुर वाणी को विराम दिया ही था तो एक नन्हे शिशु ने उन के मस्तक पर पत्थर मारा और उस पत्थर से दयानन्द के माथे से खून की धारा बह निकली। परन्तु दया के समुद्र ने खून की धारा की तनिक भी परवाह न की, प्रेम की धारा बहाते हुए कहा—क्यो पकड़ते हो इस अबोध बालक को, तुरन्त पूछा क्या चाहिए तुझे वह डर रहा था, काप रहा था, भय से बोल नही पा रहा। परन्तु दयानन्द ने दया के हाथ को आगे बढ़ा कर उसे प्यार देते हुए यह कहा कहो दयानन्द से क्या चाहते हो। उसने कहा क्षमा दो। मेरा दोष नही। लड्डू देने का लालच दे कर मुझ कहा गया कि आप के पत्थर मारा जाए।

दयानन्द ने कहा, तो हो सकता है वे लाग तुझे लड्डू दें या न दें। परन्तु मेरे से तो लेते ही जाओ। यह लो पाच रुपए इन के लड्डू ले कर स्वय भी खाना और अपने साथी मित्रो को भी देना।

धन्य दयानन्द तेरी दया। तेरे पास अटूट दया का भण्डार था तभी तो जीवन भर बाटता रहा। तेरे जीवन की लीला समाप्त ही दया के साथ हुई। क्या अवस्था है जगन्नाथ पापी ने दूध मे काच घोल कर पिला दिया। सारे शरीर मे जलन हो रही है, रोम रोम छलनी हो गया परन्तु दया से भरपूर दयानन्द को न अपने कष्ट की चिन्ता न शरीर से मोह केवल चिन्ता है तो इस बात की है कि कही जगन्नाथ पकड़ा न जाए। अच्छा जगन्नाथ जरा इधर आओ। क्या करू। बस यही कि तुम भाग जाओ। कैसे भागना होगा। मेरे पास तो रुपए भी नही यात्रा का खर्च कहा से दूगा। अच्छा यह बात है तो लो यह थैली इस मे रुपए हैं। इस से आपका काम चल जाएगा।

आज इस काम को कर के दयानन्द ने महर्षि की पदवी को प्राप्त कर लिया। अपने दयानन्द नाम को तो सार्थक किया ही था परन्तु आज विश्व के इतिहास मे सुनहरी अक्षरो मे लिखे जाने वाले काम करने का सौभाग्य भी प्राप्त कर लिया। ससार के लोगो को यह दिखा दिया कि तुम भी अपने जीवन को सुरभित करना चाहते हो तो मेरी तरह सुख दुख की परवाह न कर के मान अपमान की चिन्ता किए बिना कर्म क्षेत्र मे उतर कर भूले भटके लोगो को मार्ग दिखाओ। तभी विश्व का कल्याण होगा अन्यथा नही हो सकता।

—

(13 पृष्ठ का शेष)

स्टीफैंसन द्वारा आविष्कृत इन्जन आज के विकसित

जिस महापुरुष ने जितने तप तप कर जैसे कैसे कष्ट सह कर जितनी शिक्षा, योग्यता अर्जित की तथा अपनी अर्जित योग्यता से सयमपूर्वक मानव जाति के हित का जैसा कार्य किया। वह तदनुरूप सत्कार के योग्य है। वस्तुत, जनता को जितना लाभ हुआ यह बात जहा महत्व की है, वहा सेवा करने वाले ने कितने सयम से सेवा की, यह एक विशेष महत्व की बात है। क्योकि विकार के अवसर आने पर भी जो अपने आपको भ्रष्ट नही होने देते, वे और भी अधिक महत्वपूर्ण हैं। तभी तो कहा है– विकार है तो 'सति न विक्रियन्ते, येषा चेतासि त एव धीरा.। हा, प्रतीक्षा कीजिए यह प्रारूप किस के सहयोग से पुस्तक रूप में आता है।

—

लो । आ गई शिवरात

लेखक:—श्री यशपाल ७ी आर्यबन्धु आर्य
निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद

डेढ सौ वर्ष पूर्व टकारा के एक छोटे से शिवालय मे एक छोटे से चूहे ने जो उछल-कूद मचाई थी। वह दिशाओ को एक नया दिशा-बोध एक नई क्रान्ति दे गई। तभी कविवर सौमित्र ने कहा था कि—

'एक मूषक ने जगाया उग्र ऊहापोह, जन्म के सग क्रान्ति लाया सत्य का विद्रोह'

वस्तुत: यह घटना ऐसी थी कि जिस से समस्त दिशाओ ने एक तीव्रतर सुधारात्मक नवीन मोड लिया। दिनकर का यथार्थ कथन है कि—परिवर्तन जब धीरे-धीरे आता है तो उसे सुधार कहते है, किन्तु वही जब तीव्र गति से पहुच जाता है तो उसे क्रान्ति कहते हैं। यह घटना एक तीव्रतर परिवर्तन का कारण बनी। वस्तुत: चूहे वाली इस छोटी सी घटना पर सुधार का जो भव्य भवन खडा किया, उसी का नाम आर्य समाज है, जिसे एक धधकती ज्वाला का नाम दिया गया है जो कि महर्षि दयानन्द के हृदय मे प्रादुर्भूत हुई थी।

बालक मूलशकर अपने पिता के साथ शिवालय मे शिव की पूजा के लिए समुपस्थित था। धीरे-धीरे सभी सो गए। यहा तक कि मन्दिर का पुजारी भी सो गया। किन्तु वह निष्ठावान् बालक निरन्तर जागता रहा, क्यो कि उसे बताया गया था कि शिव के मन्दिर मे सो जाने से शिव जी रूठ जाते हैं। अत. शिव जी न रुठे, इसी उद्देश्य से वह बालक जागता रहा। तभी एक चूहा बिल मे से निकला और शिव की पिण्डी पर चढ कर मिठाई खाने लगा। बालक मूलशकर के मन मे एक जिज्ञासा जगी, कि यह कैसा शिव है कि जो अपने ऊपर से एक छोटे से चूहे को भी नही भगा सकता। तब उस ने पिता को जगाया और अपनी शका व्यक्त की। पिता ने झिडक दिया, कि ऐसे अनास्था भरे शब्द नही कहा करते। पर सत्यान्वेषी बालक कब मानने वाला था। जब उसे पता चला कि सच्चे शिव नही, अपितु उस के प्रतीक मात्र हैं, तो उसने निश्चय किया कि वह सच्चे शिव को खोज के रहेगा और इस प्रकार बालक मूलशकर का जागरण एक ऐसा जागरण बन गया कि जो उसे सदा-सदा के लिए जगा गया। तभी कवि ने कहा कि—

"तुम जगे ऐसे कि फिर सोए नही पल भर,
प्रात: लाया रात भर का जागरण ऋषिवर।"

और सत्य तो यह है कि इस जागरण के बाद वह कभी सो ही नही पाया। मानो—

"इक तकमीले ख्वाब की खातिर,
उम्र भर जगता रहा कोई।"

महर्षि स्वय ही नही जगे, जग को भी जगा गए। तभी कोटि-कोटि कण्ठ एक साथ गा उठे—"सोतो को कर गया फिर बेदार वो मस्ताना जोगी।" और "धन्य है तुम को ऐ ऋषि, तूने हमे जगा दिया। सो सो के लुट रहे थे हम, तूने हमे बचा लिया।" किन्तु आज लगता है कि ऋषि के अनुयायी सो गए हैं तभी जाति के लाल लुट रहे हैं। कोई यवन कोई ईसाई हो रहा है। आज कहां है लेखराम ? आज कहा है श्रद्धानन्द जो शुद्धि का चक्र चलावे।

दु:ख है जिसे राष्ट्र का पुरोहित बन कर अपना और जगाना था, वही आज आलस्य और प्रमाद की निन्द्रा से अभिभूत है। वरना कविवर सौमित्र को यह क्यो कहना पडता कि—

समय दे रहा है चुनौती पर चुनौती,
देखता हू पीछे आ रहे हैं लोग।
कैसा पहरा चौकीदारो का,
बाग बरबाद किये जा रहे हैं लोग
आज चमन लुट रहा है, वतन लुट रहा है। फिर आर्य जाति जग क्यो नहीं रही। किन्तु वास्तविकता यह है कि—
जर्रे जर्रे से वतन की यह सदा आती है।
आर्यों होश मे आओ वरना कजा आती है॥
और—
नही चेतोगे तो मिट जाओगे ऐ। हिन्दोस्ता वालो।
तुम्हारी दास्ता तक न रहेगी दास्तानो मे॥
आज की शिवरात्रि का यही सन्देश है कि—
मिलाओ शुद्ध दिल से शुद्ध करके सबके जिगरो को।
तेरे तूरे नजर नजरो से पिन्हा होते जाते हैं॥
पता नही कविवर कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर की यह चेतावनी हम क्यो भूल गये कि—
नेशन की इमारत कही मिसमार न हो जाये।
गुलशन मे कही देखना पुरखार न हो जाये॥
जल्दी से जात पात के बन्धन को तोड दो।
यह मुल्कमे शुद्धि कही बेकार न हो जाये॥
उल्फत दिखाओ ऐसी अछूतो से कि कोई।
ईसाई यवन बनने को तैयार न हो जाये॥
आज की शिवरात्रि का यही सन्देश है।
कविवर सौमित्र के शब्दो मे—
आज की शिवरात फिर सन्देश लाई है।
और ऐसी रात को शत-शत बधाई है॥
हर मनुज बोले, यही वर मागता हू मैं।
आ गई शिवरात तो लो जागता हू मैं॥
शक्ति दो प्रभुवर! कलुष सब त्यागता हू मैं।
हर शिवालय से कहे तम भागता हू मैं॥
कामना जागे किसी मे तो यही जागे।
मागना चाहे मनुज तो बस यही मागे॥
कोख दो तो मूलशकर मातृ जैसी दो।
जन्म दो तो पुण्य भू गुजरात जैसी दो,।
प्रात दो, ऋषिबोध के उस प्रात. जैसी दो।
रात दो तो फिर उसी शिवरात जैसी दो॥

— —

(20 पृष्ठ का शेष)

3 स्वदेशी वस्तुओ के सेवन के लिए बल देते।

4 एक ईश्वर, एक भाषा, एक सस्कृति के लिए प्रेरणा देते। अपने ग्रन्थ हिन्दी मे लिखे।

आदित्य ब्रह्मचारी एव उत्कृष्ट योगी—महर्षि दयानन्द ससारी जनो को बन्धन से छुड़ाने आए थे। दया और सहिष्णुता की पराकाष्ठा होती है, जब वे पान मे विष देने वाले को राज के बन्धन से छुड़वा देते हैं। पत्थर गालियो, सर्पों के प्रहार को मुस्कराते हुए सहते हैं। प्राण घातक विष देने वाले जगन्नाथ को भगा देते हैं।

वे उच्चकोटि के योगी थे। 16 बार विष को यौगिक क्रियाओ द्वारा शरीर से बाहिर निकाला।

निर्भीक आदित्य ब्रह्मचारी थे। शरीर से बलिष्ठ थे, दो दुष्ट व्यक्तियो ने उन्हे समाधिस्थ अवस्था मे उठाया। नदी में कूद, डुबोना चाहा। महर्षि ने उन्हें इतने बल से जकड़ा कि वे छुड़ा न सके। वे स्वय डूब गए और महर्षि नदी से बाहिर आ गए।

राव कर्ण सिंह ने स्वामी जी पर तलवार से वार किया। स्वामी जी ने उन का हाथ स्फूर्ति और इतने बल से पकड़ा कि राव कर्णसिंह के हाथ से तलवार छूट गई, गिरी तलवार को स्वामी जी ने दूसरे हाथ से उठाया। राव कर्ण सिंह पर वार नही किया। जमीन पर पटका, दो टुकड़े हो गए।

ब्रह्मचर्य का उपहास करने वाले सेठ की चलती दो घोडो की बग्घी को पहिए से पकड कर रोक दिया। पीछे देखा तो स्वामी ब्रह्मचर्य के उपहास पर मुस्करा रहे थे।

उचित शब्दो का चयन, शैली मे प्रसाद गुण, वाणी का माधुर्य, हृदय से निकले दूसरे के हृदय को प्रभावित करने के भाव सभी को मोह लेते थे। तेजोपूर्ण, ओजस्वी घोषणाओ से कायर पुरुष भी कुछ करने को सन्नद्ध हो जाता था। पत्थर दिल पिघल जाते थे। गहरे तक हवा हो जाते थे।

उस युग प्रवर्तक, क्रान्तिकारियो के जन्मदाता, परम तेजस्वी आदित्य ब्रह्मचारी, ज्वलन्त प्रतिभा को शतश प्रणाम है। महर्षि के ही शब्दो मे—

विद्या विलासमनसो धृतिशीलाशिक्षा:।
सत्यव्रता: रहित-मान-मलापहारा,॥
ससार दु:ख दलनेन विभूषिता: ये।
धन्या: नरा: विहितकर्म परोपकारा.॥

महर्षि दयानन्द और स्वदेश भक्ति, उन्हीं के अपने शब्दों में—

1. स्वदेशी राज्य ही सर्वोत्तम ?

कोई कितना ही यत्न करे, जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह से रहित, अपने-पराये के पक्षपात से शून्य, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा करने वाला, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं। (सत्यार्थ प्रकाश, 8वां समुल्लास)

2. भारत की पराधीनता का चित्रण

अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य से, प्रमाद से, परस्पर के विरोध से अन्य देशों में राज्य करने की कथा तो क्या कही जाए, आर्यों का तो इस समय आर्यावर्त्त में भी अखण्ड, स्वाधीन और निर्भय राज्य नहीं है। जो कुछ है भो तो वह भी विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहा है। जब दुर्दिन आता है, तब देश-वासियों को अनेक प्रकार के दुःख भोगने पड़ते हैं। (सत्यार्थ प्रकाश 8 वां समुल्लास)

3. राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता

परन्तु भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक्-पृथक् शिक्षा, अलग-अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। बिना इनके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है। इसलिए जो कुछ वेदादि शास्त्रों में व्यवस्था वा इतिहास लिखे हैं, उसी को मान्य करना भद्र पुरुषों का काम है। (सत्यार्थ प्रकाश 8वां समुल्लास)

4. आर्यावर्त्त सर्वोत्तम देश है

यह आर्यावर्त्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। इसीलिए इस भूमि का नाम सुवर्ण भूमि है। क्योंकि यही सुवर्ण आदि रत्नों को उत्पन्न करती है। जितने भूगोल में देश हैं वे सब इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है। वह बात तो झूठी है, परन्तु आर्यावर्त्त सच्चा पारसमणि है जिससे लोहे-रूपी दरिद्र विदेशी छूने के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं। (सत्यार्थ प्रकाश 11वां समुल्लास)

5. चक्रवर्ती राज्य की स्थापना

हे ईश्वर। हमारी सहायता कीजिए, जिससे सुनीतियुक्त होकर हमारा स्वराज्य बहुत ही बढ़ जाए घोड़े आदि श्रेष्ठ पशुओं से और चक्रवर्ती राज्य के ऐश्वर्य से हमारे काम को पूर्ण कीजिए। हमें चक्रवर्ती राज्य और साम्राज्य धन सुख प्रदान कीजिए। हम अन्योऽन्य की प्रीति से परम बल और पराक्रम से निष्कण्टक चक्रवर्ती राज्य भोगें। (आर्याभिविनय)

6. स्वदेश भक्ति सर्वोपरि है

(ब्राह्म समाज और प्रार्थना समाज के प्रति) जो कुछ ब्राह्म समाज और प्रार्थना समाजियों ने ईसाई मत में मिलने से थोड़े मनुष्यों को बचाया और कुछ-कुछ पाषाणादि मूर्ति पूजा को हटाया, अन्य जाल ग्रन्थों के फन्दे से भी कुछ बचाया इत्यादि अच्छी बातें। परन्तु इन लोगों में स्वदेश भक्ति बहुत न्यून है। ईसाईयों के आचरण बहुत से लिए हैं। खान-पान, विवाह आदि के नियम भी बदल दिए हैं। अपने देश की प्रशंसा वा पूर्वजों की बड़ाई करनी तो दूर रही, उसकी पेट भर निन्दा करते हैं व्याख्यानों में ईसाई आदि अंग्रेजों की प्रशंसा भर-पेट करते हैं। ब्रह्मादि महर्षियों का नाम भी नहीं लेते। प्रत्युत ऐसा कहते हैं कि बिना अंग्रेजों के सृष्टि में आज पर्यन्त कोई भी विद्वान् नहीं हुआ, आर्यावर्त्तीय लोग सदा मूर्ख चले आए हैं, इनकी उन्नति कभी नहीं हुई। (सत्यार्थ प्रकाश 11वां समुल्लास)

श्रेष्ठ पुरुषों की अरदास

अखण्ड व्यापक साजना , सकल रिहा भरपूर ।
ज्ञानी पावे निकट ही , मूर्ख जाने दूर ।
पार ब्रह्म परमात्मा , पूर्ण जगत् रचा ।
पूर्ण से पूर्ण भया , बचा सो पूर्ण था ।
वेद प्रभु के सत्य हैं , पूर्ण इन का ज्ञान ।
आदि से पूर्ण रचे , निश्चय कर के जान ।
ईश्वर के बिन जग नहीं , नहीं वेद बिन ज्ञान ।
श्रद्धा से जो सिमरते , निश्चय हो कल्याण ।
शरण पकड़ तू वेद की , पार उतारा होय ।
जिन ढूंढया तिन् पाया , जन्म-मरण दुख खोय ।
ओ३म् नाम पुल अमर है , चढ़े सो उतरे पार ।
शुद्ध हृदय से ध्याइये , निश्चय हो छुटकार ।
सब मनुष्यो को हुक्म है , नित्य प्रति वेद पढ़ें ।
राम, कृष्ण, दयानन्द का , जीवन चित्त धरें ।
राज करेंगे वेद जन , पापी रहे न कोय ।
बजे नगारा वेद का , विजय धर्म की होय ।
तू सांचा मेरे साहिबा , सांचे तेरे वेद ।
जिस आस तेरे दरबार की , कभी न पावे खेद ।
भला करो सब का पिता , हम सब तेरे दास ।
मन उपजे सद् भावना , भक्तों की यह अरदास ।

क्या हमें भी आत्म-बोध होगा

लेखक—श्री सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री लुधियाना

मूलशंकर के हृदय में शिव मन्दिर की एक छोटी सी घटना ने जीवन में उथल-पुथल मचा दी। अपने पूज्य पिता जी के शंका निवारण न कर सकने पर बालक के मन पर अन्धकार की घटा छा गई। वह जीवन में खिन्न सा रहने लगा। इतने में उस की प्यारी बहिन तथा चाचा की मृत्यु से मन पथ के भीतर और भी अन्धकार छा गया। पहले तो उस अबोध बालक के मन पर सच्चे शिव को पाने की तड़प थी। अब बालक के मन में मृत्यु पर विजय पाने की तड़प भी जाग उठी। शिव की खोज करने पर मृत्यु पर विजय पाने के लिए मार्ग ढूंढ़ने की प्रबल इच्छा बलवती हुई। कोई उपाय न सूझा। अन्धकार और भी गहरा होता गया। मन की अशान्ति बढ़ती गई। अन्धकार एवं शान्ति एक साथ नहीं रह सकते। मूलशंकर को घर का सुख, माता-पिता का प्यार तथा धन ऐश्वर्य की लालसा शान्ति न दे सकी। मोह ममता के बन्धन ढीले होते गए और एक दिन सब टूट गए, रेत की दीवार कब तक खड़ी रह सकती थी। मूलशंकर घर से निकल पड़ा। मन का अन्धकार दूर करने के साधन की खोज में। उस ने अपने मन मन्दिर की ज्योति जलाने के लिए सिर धड़ तक की बाजी लगा दी। प्रकाश किसी भी कीमत पर मिले सस्ता है। स्थान-स्थान पर गया। सब दुनिया मठ मन्दिर देखे। जंगल पहाड़ छाने, भयकर नदियां पार की, गुफाएं खोजी, कहीं किसी भी स्थान पर वह ज्योति नही मिली। जिससे मन के बुझे दीप को जला सके। साधु महात्मा मिले। उन की शरण पकड़ी, यह सोच कर की ज्ञान की ज्योति जलेगी, पर वह तो सभी निकले जुगनू। भला जुगनू कभी मन की ज्योति जगा सकेगा। मन की ज्योति न जली। अन्धकार मिटाने पर तुला रहा। उस समय बालक ने बड़ी दौड़ धूप की। कई सन्त, महात्माओं से सम्पर्क वार्तालाप किया—पर सही मार्ग कोई न दर्शा सका। पर उस दौड़ धूप का बड़ा हाथ यह हुआ कि मूलशंकर शुद्ध चैतन्य बन चुका था। दीया विद्यमान् था, उस में अब, तेल व बत्ती भी पड़ चुकी थी, कसर थी एक जलती हुई ज्योति की जिस से इस दिये की ज्योति प्रज्जवलित हो सके। वह जलती ज्योति दयानन्द को मथुरा की एक कुटिया में मिली। पुण्यात्मा स्वामी विरजानन्द के रूप में। प्रभु की लीला, बाहर के नेत्र बन्द हैं और भीतर के खुले। उन का प्रकाश उन के फटे नेत्रों से झलक रहा था। दयानन्द ने पांव पकड़े। प्रज्ञाचक्षु ने समझ लिया कि सुपात्र है। विद्या का अधिकारी है। दयानन्द पर दया आई, जोत से जोत जल उठी।

जोत जली खूब जली, अन्धकार ग्रस्त भारत और अन्धकारमय भारतवासियों के हृदय में सब प्रकाशमान् होने लगा। देश और जाति के भाग्य खुले। इस जोत के प्रभाव से एक बार पुनः ज्वलन्त देवी प्रकाश हुआ। जो न केवल भारत के अपितु सारे संसार के अविद्यान्धकार और दुःख के विनाश की ओर प्रेरित हुआ। इस लघु लेख में सभी आर्य बन्धुओ, ऋषि भक्तों से मैं यही निवेदन करूंगा कि कई वर्षों से शिवरात्रि को मनाते चले आ रहे हैं, पर जितना कार्य महर्षि देव दयानन्द जी ने अकेले किया। उतना हम सभी नहीं कर पा रहे हैं। जो मिशनरी भाव के व्यक्ति उस समय थे या ऋषि के बाद भी जिन्होंने अपना सर्वस्व लगा कर आर्य समाज की सेवा की वह अब कहीं दिखाई नहीं देते।

इस दिन मानव मात्र आर्य को शान्तभाव से आत्म-निरीक्षण करना चाहिए और अपनी त्रुटियों को दूर करके सगठन को सुदृढ़ बनाने तथा महर्षि के मिशन को पूरा करने का व्रत लेना चाहिए। सच्चे शिव की अराधना का यही बड़ा फल होगा। ऋषि की साधना रंग लाएगी। सारा ससार वेदानुयायी बन कर ऋषि की जय-जयकार करेगा।

–अमर बोध–

(कविवर—"प्रणव" शास्त्री एम ए. महोपदेशक)

धन्य धन्य गुजरात भूमि है, धन्य धन्य है, टंकारा।
धन्य धन्य है, बाल 'मूल' की अमर बोध मय ध्रुव धारा ॥

नही ज्ञात किस जगह अस्त हो सूर्य सत्य का सोता था।
धर्म बिचारा दीन-हीन सा इधर-उधर ही रोता था।
मत मिथ्या का मोह निरन्तर अन्धकार ही बोता था।
जिससे ईर्ष्या, द्वेष, घृणा क साम्राज्य था विस्तारा ।1।

गई गर्त मे प्रभु की पूजा, पूजी जाती प्रतिमाए।
भोग रही थी विषम वेदना भारत की प्रिय प्रतिभाए॥
हीरा, मोती छोड जौहरी थे पाषाणो मे भरमाए।
जीवन की साफल्य सुधा का सूख चला मानस प्यारा ।2।

वर्णाश्रम की वरद व्यवस्था मानो रूठी-रूठी थी।
ऋषि मुनियो की मधुर मान्यता हो गई सारी झूठी थी।
सामाजिक सौदर्यकरण को नष्ट सजीवनी बूटी थी।
घोर निराशा कुहरे मे था धैर्य फिरा मारा-मारा ।3।

नन्दन वन मे आग लगी थी विहग बन्धु थे अकुलाने।
लता, वृक्ष, कलिकाए झुलसी झुलसे पत्ते परवाने।
शोभा के शृङ्गार स्वय ही मन ही मन म शरमाते।
किंकर्तव्यविमूढ हुआ था बासन्ती मौसम सारा ।4।

दयानन्द की लहरो ने कुछ जादू ऐसा कर डाला।
हरियाली छा गई बाग मे और छा गया उजियाला।
मतवालो की फसलो पर भी यहा पड गया था पाला।
होने लगे अचानक देखो बुद्धिवाद के पौबारा ।5।

लगी नाचने रम्य ऋचाए अर्घो की भर-भर प्याली।
दर्शन, सूत्र समोद सजाते प्रभु-दर्शन-अर्चन की थाली॥
उपनिषदो की कलित कोकिला कूक रही थी मतवाली।
मानो ऊषा अरुण-प्रियाने सन्ध्या को था ललकारा ।6।

प्रहरी कञ्चन भवन राष्ट्र के सहसा ही सब जागे उठे।
पारतन्त्र्य के प्रबल पाश में लगा स्वय ही आग उठे।
पन्थाई, पाखण्डी सारे हार मान कर भाग उठे।
मानव की उन्नति का गूंजा "प्रणव" गगन मे जयकारा ।7।

विश्व का सब से बड़ा महापुरुष

महर्षि दयानन्द सरस्वती

लेखक:—श्री पं. निरञ्जन देव जी इतिहास केसरी सभा महोपदेशक

पाठकवृन्द ! आप ने अनेक महापुरुषों की जीवन गाथाएं पढ़ी और सुनी होंगी। किसी को कम और किसी को अधिक कहना, मानना और जानना उचित प्रतीत नही होता। फिर भी कोई कुछ कहे। मैं इस लोकाचार की परवाह नहीं करूंगा। मेरा हृदय पुकार 2 कर कहता है कि संसार भर के महापुरुषों में महर्षि दयानन्द की शान निराली है। अन्य महापुरुषों में किसी में एक गुण है तो किसी में दूसरा। कोई प्रभु भक्त है, तो विद्वान् नहीं, कोई विद्वान् है तो योगी नहीं, कोई योगी है तो सुधारक नही, कोई सुधारक है तो दलेर नहीं, कोई दलेर है तो ब्रह्मचारी नहीं, कोई ब्रह्मचारी है तो सन्यासी नहीं, कोई सन्यासी है तो वक्ता नहीं, कोई वक्ता है तो लेखक नही, कोई लेखक है तो सदाचारी नहीं, कोई सदाचारी है तो परोपकारी नही, कोई परोपकारी है तो कर्मठ नहीं, कोई कर्मठ है तो त्यागी नहीं, कोई त्यागी है तो देशभक्त नहीं, कोई देशभक्त है तो वेद भक्त नही, कोई वेदभक्त है तो उदार नहीं, कोई उदार है तो शुद्ध आहार नही, कोई शुद्ध आहारी है तो योद्धा नहीं, कोई योद्धा है तो सरल नहीं, कोई सरल है तो सुन्दर नहीं, कोई सुन्दर है तो बलिष्ठ नहीं, कोई बलिष्ठ है तो दयालु नहीं, कोई दयालु है तो संयमी नहीं। परन्तु यदि आप सभी गुण एक ही स्थान पर देखना चाहें तो देव दयानन्द को देखो। निष्पक्ष हो कर देखो ! हृदय की आंखे खोल कर देखोगे तो मेरे इस कथन की पुष्टि किए बिना नहीं रह सकोगे। उनका भौतिक शरीर और चरित्र देख कर कट्टर से कट्टर विरोधी नतमस्तक हो कर उन के भक्त बन जाते थे। आप का शरीर 6 फुट लम्बा था। कद भारी, सुडौल, और आकृति मनमोहिनी थी। बाल मुंडे हुए होते थे। एक चादर ऊपर लेते थे एक अर्ध धोती नीचे का पेहरावा था, वे गौर वर्ण थे। भूमि पर पद्मासन से बैठना पसन्द करते थे। उनका उठना, बैठना चलना फिरना आदि सब क्रियाएं देखने वालो को भाती थी। उन के मुख मण्डल पर तप, तेज, उदारता, गम्भीरता, धैर्य, अनुग्रह और आर्शीवाद निवास करते थे। आवाज रसीली और सुरीली थी। उच्चारण साफ और शुद्ध होने के अतिरिक्त प्रवचन इस ढंग से करते थे कि श्रोता मुग्ध हो जाते। उन के रसीले नेत्रों मे प्रेम, कृपा, आकर्षण, रस और माधुर्य था। वे भाषण के समय प्रमाणों की झड़ी लगा देते थे। उन की वेद विद्या, तर्क शैली और स्मरण शक्ति को देख कर बड़े-बड़े विद्वानों के पित्ते पानी होते थे। उन की प्रकृति कोमल सरल और निष्कपट थी। वे मेल मिलाप में बड़े सभ्य थे। किसी की बुराई न सुनते थे न करते थे। उन के दिल में सांसारिक चमक दमक की कोई हवस न थी, ऐसे थे महर्षि ! आनन्द कर देव दयानन्द।

बाल ब्रह्मचारी, परोपकारी, महर्षि दयानन्द का जन्म 1824 ई. में टंकारा (गुजरात)में कर्षन जी तिवाड़ी ब्राह्मण के घर हुआ था। 1838 ई. मे शिवरात्रि के दिन शिव जी की विशेष पूजा के लिए वे शिवालय में पधारे। उस समय आप की आयु केवल 14 वर्ष की थी। अर्धरात्रि

के समय आपने क्या देखा कि शिव जी की मूर्ति पर चूहे उछल कूद कर रहे हैं। हैं ! यह क्या ? त्रिशूलधारी शिव अपनी रक्षा क्यो नही करते ! तत्काल पिता को जगाया, सब कुछ बताया और दिखाया, फिर पूछा कि क्या माजरा है ? शिव जी की यह दुर्दशा क्यो हो रही है। पिता जी ने कहा कि बेटा ! यह तो शिव जी की मूर्ति है। असल शिव तो कैलाश पर्वत पर रहते हैं। मन ही मन मे इस बालक ने निश्चय कर लिया कि नकली शिव को छोड, असली शिव की खोज करुगा और अवश्य करुगा। तत्पश्चात् उस ने शिवालय मे कभी कदम न रखा। घर के अन्दर दो मौतें हुई ! एक बहिन की और एक चाचा की। अब नवयुवक मूल (तत्कालीन नाम) इस सोच मे पड गया कि मृत्यु क्या है ? इस से कैसे छुटकारा हासिल किया जाए ? पठन पाठन के साथ साथ वैराग्य की तीव्र आंधी ने मूल के मन को व्याकुल कर दिया। मृत्यु से मुक्ति और प्रभु से मिलाप, बस यही दो चीजें उस के जीवन का उद्देश्य बन गई थी।

सन 1846 की बात है। माता पिता मूल के विवाह के चक्कर मे थे। आयु 22 साल की हो चुकी थी परन्तु मूल, मूल कर भी गृहस्थ मे आने वाले न थे। उन का वैराग्य चरम सीमा को पहुच गया था। उन्होंने एक दिन साय समय यह कहते हुए कि 'फिर कभी घर न लौटूगा' वासना समूह की पूर्णाहुति दे दी, और घर से निकल खडे हुए। घर से तो और भी कई महापुरुष निकले परन्तु इस महापुरुष की तरह नही। शेष तो घर का मोह छोड न सके परन्तु धन्य है देव दयानन्द ! जिन्होने माता-पिता के पूर्ण प्रेम को, सज्जन मित्रो के सरस स्नेह को, और सब से बढ कर जवानी के खिले बसन्त को सर्वथा त्याग दिया। वे घर से इसलिए निकले कि सर्वथा स्वतन्त्र हो कर मृत्यु महारोग से छुटकारा पाए और अमर जीवन प्राप्त करें।

नवयुवक मूल ने स्वामी परमानन्द से सन्यास लेकर दयानन्द सरस्वती नाम पाया। 1846 से लेकर 1860 तक घोर तपस्या की। 1860 ई से 1863 तक मथुरा मे प्रज्ञाचक्षु, एव क्रान्तिकारी, गुरु स्वामी विरजानन्द जी महाराज से आर्ष ग्रन्थो की शिक्षा पाई। 1866 से लेकर 187० तक मूर्ति पूजा खण्डन आदि का कार्य जोर शोर से आरम्भ किया। 10 अप्रैल 1875 को आर्य समाज की स्थापना की, आर्य समाज की स्थापना के पश्चात् महर्षि लगभग साढे आठ वर्ष जीवित रहे। इतने थोडे समय मे महर्षि की निर्मल कीर्ति समुद्र पार जा पहुची। एक भी महापुरुष ऐसा नही हुआ जिस का कीर्ति नाद इतने थोडे समय के अन्दर सारे ससार मे सुना गया हो।

30 अक्तूबर 1883 ई के दिन साय 6 बजे अजमेर नगर मे महर्षि दयानन्द ने परलोक गमन किया। आज सारे भारत मे शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो, जिस ने महर्षि दयानन्द के दर्शन किये हो और अभी तक जीवित हो। आज से 15-20 वर्ष पहले ऐसे महापुरुषो के दर्शन कही-कही हो ही जाते थे। जिन्होने महर्षि के दर्शन किए और प्रवचन सुने थे। 1943 ई मे मैं दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय गुरुदत्त भवन लाहौर मे प्रविष्ट हुआ। मुझे बडा सन्ताप रहता था और अब भी रहता है कि मेरा जन्म ऋषि काल मे न हुआ। काश ! मुझे उन के दर्शनो का सौभाग्य प्राप्त होता। उन के प्रवचन सुनता ! स्पष्ट है, कि यह व्याकुलता व्यर्थ है और व्यर्थ थी। अन्त मे पूज्य गुरु स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ (तत्कालीन आचार्य उ वि) से प्रार्थना की कि यदि कोई ऐसे सज्जन लाहौर पधारे, जिन्होने महर्षि को अपनी आखो से देखा हो तो मुझे उन से अवश्य मिलाने की कृपा करें। स्वामी जी महाराज ने स्नेह पूर्वक उत्तर दिया कि 'मुझे ध्यान रहेगा'।

ईश्वर ने मेरी सुनी। अचानक ही एक दिन स्वामी जी ने मुझे याद किया। उन के पास एक वृद्ध सज्जन बैठे थे। स्वामी जी ने आदेश दिया कि पूछ लो, जो कुछ पूछना है। इन्होने महर्षि के दर्शन किए हैं। मेरी उत्सुकता बढी, परन्तु इतने मे वह सज्जन उठ खडे हुए। कहने लगे, कि मैं रुक नही सकता। मेरी गाडी निकल जाएगी। मेरी आशा निराशा मे बदल गई और मैं मौन

हो गया। मेरी उदासी और स्वामी जी के संकेत को समझ कर उस महात्मा ने मुझे कहा कि मैं आप के लिए इतना कर सकता हूं कि स्टेशन जाने के लिए यहीं से तांगा न ले कर शाह आलमी गेट तक पैदल चलूं और आप वहां तक मेरे साथ चलते-चलते जो पूछना चाहें, पूछ लें। स्वामी जी महाराज ने इस प्रस्ताव को पसन्द किया और शाह आलमी गेट तक मुझे उन के साथ जाने की आज्ञा दे दी। चलते-चलते मैंने जो प्रश्न किए और उस महात्मा ने जो उत्तर दिए, वह निम्न प्रकार हैं—

प्रश्न : आपने ऋषि के दर्शन कब किए, कहां किए और उस समय आपकी आयु क्या थी ?

उत्तर : मैंने ऋषि जी के दर्शन तब किए, जब वह पंजाब पधारे। सर्व प्रथम वह लुधियाना उतरे (30 मार्च 1877 ई.) मेरी आयु उस समय 12-13 वर्ष की थी।

प्रश्न : स्वामी जी महाराज के भाषण कहा होते थे ? प्रवचन बैठ कर करते थे या खड़े हो कर।

उत्तर : जटमल की हवेली में, उस समय स्वामी जी महाराज खड़े हो कर भाषण देते थे। पीछे खड़े जन समूह को हाथ के संकेत से बैठ कर सुनने का आदेश देते थे।

प्रश्न : क्या आप उन के भाषण समझते थे। और यह भी बताए कि महाराज के व्यक्तित्व से आप कहां तक प्रभावित हुए ?

उत्तर : यद्यपि भाषण सरल भाषा में होते थे परन्तु पूरी तरह समझना मेरे लिए कठिन था। फिर भी अपनी बुद्धि अनुसार मे बहुत कुछ समझा। मैं महाराज से इतना प्रभावित हुआ कि मैं उन के निकट से दर्शन करने के लिए व्याकुल हो उठा।

प्रश्न : क्या आप की यह इच्छा पूर्ण हुई ?

उत्तर : जी हां ! मैं उन के निवास स्थान के चक्कर काटता रहा, कि अवसर मिले, भीड कम हो तो मैं आगे बढ कर उन के चरण छू लूं। मुझे कहीं से भी भेंट करने के लिए फूल प्राप्त न हुए थे। फिर भी फूलों के स्थान पर मैं शीशम और बेरी आदि के पत्ते तोड़ कर ले गया था। दोपहर के समय रश कम हुआ। मैं हिम्मत कर के आगे चला गया। फूलों के स्थान पर वही वृक्षो के पत्ते उन के चरणों में रख कर प्रणाम किया। महर्षि मेरे भाव को समझ कर हंस पड़े और बड़े ही मीठे शब्दों में मुझे कहा, कि बालक ! तुम क्या चाहते हो ? मैं उन के प्रभाव तले दब कर खड़े का खड़ा रह गया और कुछ भी न बोल सका। तब उन्होंने पुन: अपने प्रेम भरे शब्द दुहराये मेरा उत्साह कुछ बढ़ा और मैंने प्रार्थना की कि "आप मुझे आर्य समाद बना दें" (आप मुझे आर्य समाजी बना दीजिए) स्वामी जी मेरे भाव को समझ कर बड़े प्रसन्न हुये।

प्रश्न : फिर क्या हुआ ? (मैंने बड़ी बे-सबरी से पूछा)

उत्तर : फिर क्या हुआ ? क्या बताऊं ! यह कह कर वे वृद्ध सज्जन चलते 2 खड़े हो गए। उन्होंने पीछे मुड़ कर मेरी ओर देखा। उन की आखों में अनोखी चमक थी। बड़े ही गर्व के साथ उन्होंने मुझे कहा कि विद्यार्थी भाई ! मैं बड़ा सौभाग्यशाली हूं कि आप मेरे पीछे केवल इसलिए चले आए हैं कि मैंने ऋषि के दर्शन किए हुये हैं परन्तु केवल दर्शन नहीं प्रत्युत उस महापुरुष ने मेरी प्रार्थना सुन कर सस्नेह मेरी पीठ पर अपने दाएं हाथ से तीन बार थपकी दी और साथ ही फरमाया, "बालक ! तुम तो स्वयं बने बनाए 'आर्य वीर' हो। मेरी पीठ पर ऋषि का हाथ ! मानों हनुमान की पीठ पर राम का हाथ ! अर्जुन की पीठ पर श्री कृष्ण का हाथ ! यह कह वे महात्मा रोमांचित हो उठे ! फिर बोले, पढी लिखी जनता पर उन का बे-हद प्रभाव पड़ा। इतने में शाह आलमी गेट आ गया, अब मुझे वापिस लौटना था और तब भी मैंने दो प्रश्न पूछ ही लिए।

प्रश्न : महाराज, अपना शुभ नाम तो बताते जाएं ?

उत्तर : मुझे लब्भू राम 'नय्यड़' कहते हैं शेष फिर कभी। अब मुझे जल्दी है।

प्रश्न : महाराज ! मैंने आप को बड़ा कष्ट दिया परन्तु यह अवश्य बता जाएं कि ऋषि के आर्शीवाद का क्या परिणाम निकला ? क्या आप सचमुच 'आर्य वीर' हैं

उत्तर : कृपया इस सम्बन्ध में अपने गुरु स्वामी वेदानन्द जी महाराज से जानकारी लें। मेरा कहना उचित नहीं।

पूज्य स्वामी वेदानन्द जी महाराज ने बताया कि उक्त महात्मा ला. लब्भू राम नय्यड सचमुच ही "आर्य वीर" हैं। लुधियाना में आर्य समाज के काम को प्रगति देने में आप का विशेष हाथ है। (साबुन बाजार समाज के आप कर्त्ता धर्त्ता थे। स्वामी श्रद्धानन्द और गुरुकुल कांगड़ी के प्रति आप की अगाध श्रद्धा थी। आप ने लाखों रुपया गुरुकुल के लिए दान प्राप्त किया था।

बोध का है पर्व आया

लेखक—श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ, प्र.)

आज फिर से, देख लो,
यह बोध का है पर्व आया ।
जागरण का नाद इस ने,
अवनि तल पर है गुंजाया ।

था इसी शिवरात्रि ने ऋषि—
वर दयानन्द को जगाया ।
इस धरा पर वेद का फिर,
दिव्य सा अमृत बहाया ।

भूमि मण्डल पर पुनः—
वैदिक ध्वजा थी लहराई ।
बज उठी थी धर्म की,
भव्य मधुमुत शहनाई ।

वेद के पथ का पथिक,
फिर से बना यह विश्व था ।
तुंग शिखरों पर प्रगति के,
फिर चढ़ा धर्मश्व था ।

ऋषि दयानन्द के हृदय में,
जो जगी नव शक्ति थी ।
वेद के प्रति, राष्ट्र के प्रति,
जग उठी जो भक्ति थी ।

जग उठे शिवरात्रि पर,
वह शक्ति कोटिक जनमनो में—
विश्व का उपकार करने की—
जगे नव ज्योति कण में ।

दिव्य सा सन्देश लेकर,
आ गई संकल्प वेला ।
विश्व में आर्यत्व भरने,
तुम बढ़ो,! निर्भय, अकेला ।

सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में स्पष्टीकरण

लेखक—श्री उमाकान्त उपाध्याय, 28 डी, नयनचन्द दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता—6

कलकत्ता से प्रकाशित "दामाल" नामक बंगला साप्ताहिक (2-1-1987 ई.) में सामाजिक एवं धार्मिक सम्प्रीति और सद्भावना का बहाना बनाकर साम्प्रदायिक विद्वेष और गम्भीर उत्तेजना फैलाने का प्रयास किया गया है। आर्य समाज और महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के युगान्तरकारी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में झूठे आक्षेप और मिथ्या बातें प्रकाशित की गई हैं। ध्यान देने योग्य बात यह है कि इस ग्रन्थ-रत्न का बीस-बाईस बाईस भाषाओं में अनुवाद हो चुका है और आज तक करोड़ों प्रतियां संसार के कोने-कोने में बिक चुकी हैं। यह ग्रन्थ स्वतन्त्रता-संग्राम के दिनों में रामप्रसाद बिस्मिल और भगतसिंह जैसे अनेक क्रान्तिकारियों का प्रेरणा-स्रोत रहा है। सम्पूर्ण संसार के तमाम उत्कृष्ट विचारकों ने इस ग्रन्थ-रत्न की उन्मुक्त प्रशंसा की है। दामाल के सम्पादक को अपने संकुचित साम्प्रदायिक दकियानूसी विचारों के कारण यह ग्रन्थ सम्प्रीति सद्भावना विरोधी लगता है। जबकि महर्षि स्वामी दयानन्द ने स्वयं मनुष्यों में साम्प्रदायिक जड़ता को मिटाकर मनुष्य मात्र में सम्प्रीति और सद्भावना के विस्तार के लिए यह ग्रन्थ लिखा है।

महर्षि स्वयं लिखते हैं—

"जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने मे प्रवृत्त होता है, इसीलिए वह सत्य मत को प्राप्त नही हो सकता। इसीलिए विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश या लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।"

"मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है, परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नही रखी है और न किसी का मन दुखाना या किसी की हानि पर तात्पर्य है, किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जान कर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।"

सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका से उद्धृत

"यही सज्जनों की रीति है कि अपने व पराये दोषों को दोष और गुणों को गुण जान कर गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग करें। और हठियों का हठ दुराग्रह न्यून करें करावें, क्योंकि पक्षपात से क्या-क्या अनर्थ जगत् मे न हुए और न होते हैं। सच तो यह है कि इस अनिश्चित क्षणभंगुर जीवन में पराई हानि कर के लाभ से स्वयं रिक्त रहना और अन्य को रखना मनुष्यपन से बहि: है।"

—सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास की अनुभूमिका से उद्धृत।

दामाल के सम्पादक अपने साम्प्रदायिक विचारों के कारण इतिहास के तथ्यों को झुठलाने का प्रयास करते हैं, सत्यार्थ प्रकाश 1882 ई. (1939 विक्रमाब्द) में प्रकाशित हुआ था। दामाल के सम्पादक चालाकी से इसे 1939 सन् लिखते हैं। 104 वर्ष पुरानी पुस्तक को

नवीन सिद्ध करने का यह घृणित प्रयास सर्वथा निन्दनीय है एव महर्षि दयानन्द के भक्तो को ठेस पहुचाने के उद्देश्य से किया गया है।

दामाल के सम्पादक का यह कथन कि सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशित होने पर अंग्रेज सरकार ने इसे जब्त किया था सर्वथा मिथ्या एव साम्प्रदायिक सघर्ष को भडकाने वाला है। अंग्रेज सरकार ने सत्यार्थ प्रकाश को कभी भी जब्त नही किया था। सत्य से घबराने वाले हीला हवाला तो सदा ही करते रहते हैं, हा 1943 ई मे सिन्ध प्रदेश लीगी सरकार ने सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवे समुल्लास को जब्त करने की साम्प्रदायिक विद्वेषमयी घोषणा अवश्य की थी किन्तु जिस प्रकार मुस्लिम लीग साम्प्रदायिक विद्वेष विक्षोभ एव देश के विभाजन के लिए निंदित रही है, उसी प्रकार सम्पूर्ण देश के हिन्दू-मुसलमान कांग्रेसी एव गैर कांग्रेसी सभी नेताओ ने सिन्ध की मुस्लिम लीगी सरकार की तीव्र भर्त्सना एव निन्दा की। हजारो आर्य समाजी अपनी प्राणप्रिय पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा के लिए सत्याग्रह पर उतारु हो गए। सत्याग्रही जत्था महात्मा नारायण स्वामी के नेतृत्व मे कराची पहुचा भी पर किसी को गिरफ्तार नही किया गया और मुस्लिम लीगी सरकार का जब्ती का आदेश बनावटी एव बन्दर घुडकी से अधिक नही सिद्ध हुआ। उल्लेखनीय है कि सारे ससार मे जहा भी विचार स्वतन्त्रता है,वहा सर्वत्र सत्यार्थ प्रकाश बडे आदर और सम्मान से पढा जाता है।

यह ठीक है कि पिछले दो-चार वर्षो मे देश के विभाजन के जिम्मेदार, देश की एकता के शत्रु मुस्लिम लीगी फिर उसी पुरान राग को अलापने लगे हैं। सरकार उनके साम्प्रदायिक, विघटनकारी, अराष्ट्रीय हौसलो को पस्त करने मे नरमी बरत रही है। इस नरमी का लाभ उठाकर कुछ साम्प्रदायिक एव विचार स्वतन्त्रता से घबराने वाले मुसलमानो ने दगा करने के षड्यन्त्र का हौसला बुलन्द किया था और पुलिस को झूठी सूचना देकर सत्यार्थ-प्रकाश को एक जब्त पुस्तक बताया था। पुलिस अधिकारियो ने बिना अधिक छानबीन किए साम्प्रदायिक, झगडालू, दगाई तत्वो को सतुष्ट करने के लिए आर्य समाज के पण्डाल से सत्यार्थ प्रकाश की पुस्तकें उठा ली थी। किन्तु जब पुलिस कमिश्नर को वस्तु स्थिति से परिचित कराया गय तो उन्होने पुलिस की इस कार्यवाही पर दुःख प्रकाश किया एव आदेश दिया कि पुलिस स्वय सम्मान सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियां पण्डाल मे वापस दे आए। साम्प्रदायिक सद्भावना के विरोधी कुछ मतान्ध मुसलमान पुलिस के कान भरते रहे किन्तु पुलिस ने उन्हे टका-सा-जवाब दे दिया और सत्यार्थ प्रकाश की सैकडो प्रतियां, कई भाषाओ मे मुहम्मद अली पार्क मे नौ दिनो व्यापी वृहत् उत्सव मे बिना किसी रोक-टोक के निरन्तर बिकती रही और पुलिस ने पूरी शान्ति और सुव्यवस्था रखी।

दामाल के सम्पादक एक विचित्र-सा सुझाव देते हैं कि इस्लाम सम्बन्धी कोई भी साहित्य सैंसरबोर्ड से सैंसर होकर ही कर ही प्रकाशित होना चाहिए। यह साम्प्रदायिक सुझाव केवल इस्लाम सम्बन्धी पुस्तको के बारे मे ही क्यो हो ? या तो बौद्ध, जैन, ईसाई, हिन्दू, मुसलमान सबकी सबसे सम्बन्धित पुस्तको को सैंसर किया जाए, अन्यथा यह प्रस्ताव अपने आप मे पूरा साम्प्रदायिक है।

दामाल के सम्पादक सरकार को 23 दिसम्बर के लिए आगाह करते है, वस्तुतः 23 दिसम्बर सन् 1926 ई को एक मतान्ध और साम्प्रदायिक मुसलमान ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को गोली मार उनकी हत्या कर दी थी। 23 दिसम्बर स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस है और यह मतान्ध साम्प्रदायिक लोगो के छटपटाने से बन्द नही हो सकता। यह बलिदान दिवस प्रतिवर्ष मनाया जाता है। और प्रतिवर्ष मनाया जाएगा, दामाल के सम्पासक को सरकार को सचेत करने के बजाए उन मतान्ध, हिंसक, झगडालु हत्यारे लोगो को उदारता और सहनशीलता, साम्प्रदायिक, सद्भाव और सम्प्रीति की सलाह देनी चाहिए, जिन्होने आर्य समाज के कई नेताओ की मतभेद के कारण हत्या कर दी और आर्य समाज बडी दृढता से अपनी सहनशीलता का परिचय देता हुआ, केवल बौद्धिक उत्तर देता रहा है। तथा किसी प्रकार के झगडे फसाद और हिंसा मे विश्वास नही करता। लगता है दामाल के सम्पादक का साम्प्रदायिक आवरण सर्वथा हट गया है और वे अपने को उग्र, झगडालू, साम्प्रदायिक लोगो के पक्षधर बना रहे हैं।

हम दामाल जैसे साम्प्रदायिक पत्रो से अधिक सावधानी की आशा करते हैं और चाहते है कि वे स्वय साम्प्रदायिक सम्प्रीति और सद्भावना का ईमानदारी से प्रयास करें।

हैं बड़े एहसान दयानन्द के

लेखक—श्री रणवीर जी भाटिया लुधियाना

भूल नहीं सकते फरमान दयानन्द के हम पर हैं, बड़े एहसान दयानन्द के।
लाखों लोगों की बिगड़ी बनाई थी, छुआछूत की लानत खत्म करके।
अधिकार दिया फिर समानता का इस बात पर, कुर्बान दयानन्द के—भूल नहीं......

शिवरात को व्रत रखा सब भगतो ने, पर सच्चा व्रती बना मूल शंकर।
डगमगाने लगे सभी आधी रात को जो भगत थे सच्चे शिवानन्द के।
फिर गहरी निद्रा में भगत सो गए जब चले ठण्डी हवा के झोंके।
पर नींद कहां मूलशकर की आंखो मे दर्शनाभिलाषी थे शिवानन्द के-भूल नही...

फिर चूहों की सेना ने किया हमला चढ गए वह सब शिव मूर्ति पर।
मजे से खाने लगे सभी ओर से प्रसाद जो चढ़ाया था वहां भगतो ने।
मूल शंकर ने जब यह देखा तब एक घोर तूफान उठा उसके मस्तिक मे।
यह कैसा शिव शक्ति का देवता है जो कमजोर है आगे इन चूहों के—भूल नही.....।

बोध हुआ फिर मूल शकर को यह सच्चा शिव देवता है ही नहीं।
यह पत्थर है, केवल पत्थर है, तोड़ दिया व्रत सामने शिव मूर्ति के।
सच्चे शिव की तलाश मे फिर घूमा मूल शंकर घनघोर जंगलों में।
नदी पहाड़ों पर किया तलाश समीप पहुच न सके सच्चे भगवान के—भूल नही...

ज्ञान की ज्योति मिली विरजानन्द से जब पहुंचे वह मथुरा मे।
शिक्षा पाई वहां पूर्ण वेदों की जिस राह दिखलाये सच्चे मार्ग के।
वेदों का डंका बजाया सारे भारत में विदेश भेजा 'श्याम' दुलारे को।
मैक्समूलर ने भी माना यह कि नहीं है बराबर विद्वान् दयानन्द के—भूल नही......।

शुद्धि सुधार का फिर कार्य किया स्थापित कर के उन्होने आर्य समाज।
एक क्रान्ति फैला दी सारे भारत मे बलहारी जाएं हम दयानन्द के।
विलासी राजो को किया सीधा धार्मिक भाव किये उन में पैदा।
धर्म की होने लगी फिर जय-जय कार हर ओर चर्चे हुए दयानन्द के—भूल नही...

स्वामी जी की बढती हुई ख्याती देख वायसराए भी पहुंचा उनके पास।
अंग्रेजी राज की बरकत है यह सब, स्वामी जी करो चर्चे अंग्रेजी राज के।
निर्भय वह स्वामी दयानन्द था, वायसराये को भी लताड़ दिया।
तुम कहते हो प्रचार करो व्याख्यानो में,मैं स्वप्न लेता हूं स्वराज्य के—भूल नहीं......।

यह मठ सम्पत्ति कुछ भी नहीं, मैंने यह सब कुछ लेकर है क्या करना।
तुम सोचो उत्थान भारतवासियों का, रहते हैं अन्दर जो मेरे हृदय के।
मैंने किसी को सजा क्या दिलानी खोल दो जंजीर इस दोषी की।
स्वयं बदलेगा मानव फिर 'भाटिया' जब छूटेंगे बंधन अज्ञानता के-भूल नहीं...।

आज के परिप्रेक्ष्य में-

शिवत्व का प्रतीक-शिव

लेखिका:—डा पुष्पावती जी आचार्या मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी

शिवरात्रि के दिन जिस शिव का सम्बन्ध है, उसकी ओर भी ध्यान देना आवश्यक है। यदि ध्यान दिया होता तो शायद आज आर्य जाति दलित व दस्युओं के अत्याचारो से प्रताड़ित न हो पाती।

शिव के इस प्रतीक मे दो तीन वस्तुए ध्यान देने योग्य हैं। शिव विष पी गए, शिव के सिर मे (जटाओ मे) गगा है। माथे पर अर्ध चन्द्र है और शिव के तीन नेत्र हैं और शिव जब आवश्यक समझते हैं रौद्र रूप धारण कर महा प्रलय भी करते हैं।

इतने उपकरण मिल कर शिवरूपी अवयवी का निर्माण करते हैं। और जीवन मे शिवत्व के आधान की प्रक्रिया की व्याख्या करते है।

विष पीकर शिव बनना यह शिवत्व के आधान की प्रक्रिया है। विष क्या है? यह त्याग तपस्या का प्रतीक है। शिव प्रतीक भी यही निदर्शित करता है कि जो कष्टो को सहन कर, जीवन की विषमताओ को हजम कर सकता है। वही शिव अर्थात् मगल का अधिकारी बन सकता है। शिव की निर्भीकता भी दर्शनीय है। वह श्मशान मे अपने गणो के साथ रहता है। ये गण शिव के रौद्र रूप हैं कभी शिव अकेला भी रहता है। यह इतना सयमी है कि कामदेव को जला कर भस्म कर दिया और त्यागी इतना कि भभूत ही वस्त्र रूप मे लपेटे रखता है।

शिव के ये सब अवयव उन गुणो को भी सूचित करते हैं कि शत्रु दमन के लिए आवश्यक हैं। शत्रु दमन के लिए त्याग, तपस्या एव सयम का जीवन मे अवश्यमेव समावेश अपेक्षित है जिन व्यक्तियो व समुदायो मे ये गुण नही रहते वे नष्ट हो जाया करते हैं।

शिवत्व (मगल कल्याण) मे आवश्यक शर्त है। गगा की (पवित्रता की) उदभूमि यह उसी के भाग्य मे है जो त्याग तपस्या एव कठोर जीवन का अभ्यस्त है। अर्थात् प्रकृति की दासता (विलासिता) से जो ऊपर उठा है, वही शिवत्व का अधिकारी है, उसी मे वास्तविक निर्भीकता का प्रतिपालन होता है और वही दुष्टदलन अथवा शत्रुहनन मे सफल होता है।

जो कायर व विलासी है, वह अपनी ही दुर्बलताओ का शिकार बना रहता है, वह शत्रु पर विजय क्या पाएगा। आज आर्य जाति का तेज क्षीण हो रहा है। वह दस्यु दल मे आतकित है, इसके ऊपर चारो तरफ आक्रमण के प्रयास हो रहे हैं और यह केवल रो पीट कर कुछ आश्वासन पाकर चुप हो जाती है। कायर लोगो का यही स्वभाव बन जाना है। स्पष्ट रूप से कायरता को स्वीकार न करने वाले कायरता का प्रच्छन रूप मे स्वागत करते या पालते हैं, कही भक्ति की आड मे, कही दया के आवरण मे अपने कायर भाव को छिपाते हैं। यह घोर आत्म हनन है। आत्म हन्ता क्या जिएगा, जीवन का क्या आनन्द लेगा?

आज दस्युदल स्पष्ट ललकार कर क्रोध मे आखें लाल कर स्पष्ट चुनौती दे रहा है और उपद्रव मचा रहा है, हत्या, लूट-पाट का बाजार गर्म है। शिव के पुजारी काल्पनिक वीरता के कुछ गीत गा गा कर सन्तुष्ट हो रहे हैं।

मौखिक अयघोषों व प्रस्तावों तक ही हमारे प्रतिकार की इतिश्री हो जाती है।

मेरा अभिप्राय यह नहीं कि हम भी आतताई के समान ही निर्दोषों रक्त की धारा बहाएं पर इतना तो कर लें कि हमें आततांई छू न सकें, हमारी प्रतिष्ठा पर हाथ न डाल सकें, हमारे अंग स्वरूप हमारे भाई बहनों की हत्या न कर सकें।

इसके लिए पहले हमें अपने जीवन की धारा को मोड़ना होगा। थोथे नारे वाद पर आधारित हमारे नेतृत्व को यथार्थ की ठोस भूमिका पर लाना होगा। पद लिप्सा व धन लिप्सा से मुंह मोड़ना होगा, जीवन को त्याग व संयम की कठोर भित्ति पर खड़ा करना होगा। ब्रह्मचर्य का नाश इस देश में कितना भयावह रूप धारण कर रहा है।

लेख के विस्तार भय से मैं अधिक कुछ न कह कर वेद मन्त्रों से कुछ उद्धरण देती हूं। उनके प्रकाश में ही हम अपने कर्त्तव्य (करणीय) को पहचान लें, तो शिवरात्रि ऋषि का पवित्र बोध दिवस मनाना सफल हो जाए।

य. वे 1।8—'ओ३म् धूरसि, धूर्व, धूर्वन्तम्, धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति, तं धूर्व यं वयं धूर्वाम:। इसका अर्थ है तुम नाशक रूप हो। जो नाश कर रहा है, उसका नाश करो, जो हम से द्वेष करता है, उसका नाश करो, जिस का हम नाश करना चाहते है, उसका नाश करो...

य. वे. 1।29,—तं वधान देव सवित. परमस्या पृथिव्याम् शतेन पाशैन योऽस्मान् द्वेष्टि, यं वयं द्विष्म:,

—तम तो मा मोक्—

अर्थ—हे सविता देव, परम पृथिवी में उसकी सैकड़ो पाशों से बांध दो, जो हम से द्वेष करता है, या हम जिससे द्वेष करते हैं। और उसको (कभी) मुक्त न करना। एक स्थान पर कहा है—'रक्षसां ग्रीवा अपि कृन्तामि। वेदार्थ की विविध प्रक्रिया होते हुए भी इस का व्यावहारिक पक्ष में सीधा सा अर्थ है कि हमें राक्षसो (दुष्टों) का नाश करना है। ये केवल कारी प्रार्थनाएं ही नहीं है, अपितु परम प्रतापी जगन्नियन्ता परम रूद्र का अपने विश्व राज्य के नागरिकों को स्पष्ट आदेश है कि शत्रु का हनन करो। किसी भी कीमत पर शत्रु (आततांई) को पनपने मत दो। यही शिव का प्रलयंकारी स्वरूप है।

आर्य को शिव भक्त को कभी भी दस्यु से पराजित व पराभूत होना रूचिकर नहीं होता, और फिर अपने ही घर में हमें तो विश्व भर के दलित नागरिकों को ऊपर उठाना है अपने को शोषित करने का अवसर देने का तो प्रश्न ही नही उठता। आज शिवरात्रि अपने भक्तों से यही मांग करती है।

केवल सरकार पर निर्भर होने से काम नहीं चलेगा। स्वच्छ व दृढ संकल्पी हृदय में चुम्बकीय शक्ति होती है। इस मे सब शक्तियां खिंची चली आती हैं। इन शक्तियों के बल पर व्यक्ति बड़ी से बड़ी बाधाओं व कष्टों के सहन मे भी समर्थ होता है, तथा दुष्ट दलन में भी सक्षम हो जाता है। शिव का प्रतीक इसी तथ्य की ओर इंगित करता है। ऋषि जीवन में शिवत्व जागरण की यही प्रक्रिया रही है। आज आर्य जाति को यही प्रक्रिया अवश्यमेव अपनानी होगी अन्यथा शिवाराधन शवाराधन हो जाएगा। जिसका परिणाम होगा चिर मृत्यु, चिर विनाश।

— —

(10 पृष्ठ का शेष)

9

आज जब कि संसार भर में अध्यापन कार्य एक व्यापार बन गया है और कहीं भी तपस्वी त्यागी और अनुभवी अध्यापक नहीं मिलते। 22 वर्ष के अध्यापक 19 वर्ष के लड़कों के गुरु बन जाते हैं। और उनके सम्बन्ध बिगड़ जाते हैं......तो याद आ जाता है ऋषि दयानन्द जिन्होंने कहा था कि पचास वर्ष की आयु में सबको कमाना छोड़ कर सिर्फ पढाने का काम ही अपने जिम्मे लेना चाहिए।

10

आज जब कि कौमें परस्पर लड़ रही है। देश-देश से लड़ रहा है। और केवल पाशविक साधनों के अतिरिक्त उनकी परस्पर एकता कराने का कोई साधन नजर नही आता। चीन और जापान के युद्ध ने लीग आफ नेशन के भ्रम को समाप्त कर दिया है। तो याद आता है ऋषि दयानन्द जिसने यह स्वर्णिम सिद्धान्त बतलाया कि जब तक अन्तर्राष्ट्रीय नेता उत्पन्न नही होता तब तक राष्ट्रो में झगड़ों का निर्णय बिना तलवार के नहीं हो सकता और सन्यासी वही होते हैं, जिनके लिए न कोई देश होता है और न कोई जाति। वह सारे विश्व को अपना राष्ट्र समझते हैं और भूगोल मात्र को अपना देश।

ऋषि दयानन्द का कमाल

लेखक—श्री छाजूराम शर्मा शास्त्री विद्यावाचस्पति दिल्ली

देखो ऋषि दयानन्द ने कैसा किया कमाल, अविद्या अन्धकार के तोड दिए सब जाल।
तोड दिये सब जाल शीश पाखण्ड का फोडा, चौदह कला तमचा जब ऋषिवर ने छोडा।
बता वेद का भेद लगाया ज्ञान का कोडा, विरोधियो का मुखडा मिथ्या मत से मोडा।
ज्ञान मार्ग मे स्वास्थ ने अटकाया रोडा, बुद्धिजीवियो को ऋषि ने आकर झकझोडा।

ईर्षा-वैर विरोध सब झूठ कपट अरु दम्भ, कुरीतियो का देश मे हुआ यहा आरम्भ।
हुआ यहा आरम्भ बढ रहे पोप पुजारी, उदरपूर्ति के हेतु मूर्तिपूजा की जारी।
ज्योतिषियो का खूब चला व्यापार यहा पर, ठगविद्या का फैला कारोबार यहा पर।
सदा-सदा को ग्रह-पीडा से मुक्त किये हम, निर्भय होकर स्वाभिमान से युक्त जिए हम।

नारी जाती यहा पर सदा सहती थी दुख द्वन्द, आकर ऋषि दयानन्द ने काटे उनके फन्द।
काटे उनके फन्द उचित अधिकार दिलाए, अबला सबला बनी वेद मधुसार पिलाए।
शिक्षित बन कर लगी लोक परलोक बनाने, प्रचलित यहा दहेज प्रथा पर रोक लगाने।
विधवा-सधवा बनी नित्य नए मगल गावे, दयानन्द ऋषि बोध पर्व प्रतिवर्ष मनावे।

पर सेवा उपकार सत्य का मार्ग बताया, धर्म अहिंसा प्रेम भक्ति का सार जनाया।
पुराणियो को काशी मे जा कर धमकाया, शास्त्रार्थ कर पोपो के दिल को दहलाया।
वेद प्रमाणो को ऋषि ने जाकर दिखलाया, सारे मिथ्या विश्वासो का किया सफाया।
ईसा मूसा-जैन बौद्ध और सभी पुरानी, जो भी आकर भिडा पडी थी मुह की खानी॥

वर्ष सैकडो तक रहे हम सब ही परतन्त्र, किसे ध्यान था देश यह होगा कभी स्वतन्त्र।
होगा कभी स्वतन्त्र हमारी उन्नति होगी, आयेंगे ऋषिराज दयानन्द यहा पर योगी।
ब्रह्मचर्य का बल पौरुष प्रत्यक्ष दिखाया, नवयुवको को स्वाधीनता का पाठ पढाया।
देकर निज बलिदान देश आजाद कराया, वेदो की रक्षा हित आर्य समाज बनाया॥

दयानन्द की दया से हम सब हुए निहाल।
"छाजूराम" ऋषिराज ने कैसा किया कमाल॥

शिव संकल्प जिसने इतिहास बदल दिया

लेखक—श्री कृष्णदत्त जी एम ए बी. एड, हैदराबाद

शिवरात्रि का आर्य समाज मे अपना ऐतिहासिक महत्व है। इस को "बोध रात्रि" कहा जाता है। आर्य समाजी इस त्योहार को दयानन्द जन्म दिवस भी मानते हैं, यद्यपि स्वामी दयानन्द जी का जन्म शिवरात्रि के दिन नही हुआ था। स्वामी जी का जन्म सन 1824 मे हुआ था और शिवरात्रि की घटना सन 1838 मे हुई, जबकि स्वामी जी 14 वर्ष की किशोरावस्था मे थे। सन् 1838 की शिवरात्रि के त्यौहार पर गुजरात के टकारा नामक एक ग्राम के शिवालय मे भक्त इकट्ठा हुए थे। इस त्यौहार पर भक्त लोग दिन मे उपवास करते हैं और रात शिवालय मे जागरण कर क गुजारते हैं। स्वामी दयानन्द के बचपन का नाम मूलशकर था। उन के पिता अम्बाशकर कट्टर शिवभक्त थे। उन्होने मूलशकर को शिव जी से सम्बन्धित अनेक चमत्कार कथाए सुना रखी थी। 14 वर्ष की आयु मे मूलशकर ने माता पिता से यह इच्छा दर्शायी थी कि वे भी शिवरात्रि पर उपवास रखेंगे और शिवालय मे जागरण करेंगे। मूलशकर को यह समझा दिया गया था कि ऐसा करने वालो को शिव जी दर्शन देते हैं। हाथ मे डमरु होगा, गले मे रुद्राक्ष की माला होगी और बडा नाग गर्दन के चारो और लिपटा हुआ होगा। सिर पर बडी जटा होगी, जिस के एक ओर जटा के बीच से पवित्र गगा की धारा निकल रही होगी। ऐसी ही कल्पनाओ को मस्तिष्क मे सजोए हुए मूलशकर ने पिता के साथ शिवालय मे प्रवेश किया। हर क्षण शिव जी के विचित्र रूप के दर्शन की आशा मे मूलशकर बैठा हुआ था। गाना-बजाना हुआ, पूजा अर्चना हुई। आधी रात बीत गई। भक्तो मे से कोई ऊघ रहा था, कोई लेट गया था, कोई सो रहा था, कुछ ही देर मे सभी सो गए, यहा तक कि मूलशकर के पिता भी सो गए। मन्दिर मे सन्नाटा छा गया। लेकिन मूलशकर की आखे शिव जी की मूर्ति पर टिकी हुई थी। मन्दिर के टिमटिमाते हुए दीपक के प्रकाश मे मूलशकर किसी खोज मे था। वह तो जैसे अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ रहा था, अज्ञान से ज्ञान की ओर अग्रसर हो रहा था।

शिवालय मे फैली हुई स्तब्धता और शान्त वातावरण से लाभ उठा कर बहुत से जीव जन्तु, कीट-पतगे अपने-अपने आश्रय स्थानो से निकल पड़े और पेट भरने की चिन्ता मे घूमने फिरने लगे। चूहे भी बिलो से बाहर आ गए। एक चूहा उछलता-कूदता मूर्ति की ओर बढा। घूम फिर कर मूर्ति पर चढ गया। वहा रखे हुए चढावे के खाद्य पदार्थों को खाने लगा। मूलशकर ने जब यह दृश्य देखा तो स्तब्ध सा हो गया। प्रश्नो की बाल-मस्तिष्क मे बौछार हो गई। 'क्यो' और 'कैसा' के प्रश्नो ने बालक के मन को आलोडित कर दिया। मस्तिष्क मे प्रश्नों का तूफान उठा। भक्त प्रह्लाद के मस्तिष्क मे ऐसे ही प्रश्न उठे थे। गौतम के दिमाग मे ऐसे ही सन्देह उभरे थे। स्वामी रामतीर्थ के मन मस्तिष्क मे शकाओ की ऐसी ही आधी हलचल मचा रही थी। स्वामी विवेकानन्द भी ऐसी ही समस्याओ से उलझे थे। राजा राम मोहन राय भी ऐसे ही प्रश्नो से बैचेन हो गए थे। इसी प्रकार के प्रश्नो और समस्याओ को हल करने के लिए संसार के महापुरुषो ने ससार मे वैचारिक क्रान्ति पैदा

की। इसीप्रकार की वैचारिक क्रान्ति ने मानव के भविष्य को सवारने का प्रयत्न किया, देशवासियो के कल्याण की कौशिश की, समाज को सन्मार्ग पर लाने के लिए अपने-अपने ढग से एडी चोटी का जोर लगाया।

बालक मूलशकर के मस्तिष्क मे भी प्रश्नो का तूफान उठा था। घटना अत्यन्त क्षुद्र थी, किन्तु चूहे वाले उस दृश्य को देखने वाली आखे महान् थी। उस दृश्य को महसूस करने वाला दिल व दिमाग श्रेष्ठ था। बालक ने पिता को जगाया और अपने सन्देहो शकाओ को उन के सामने रखा। बालक की शकाओ का निवारण क्या होना था ? पिता ने यह कह कर मूलशकर को खामोश करने की कोशिश की—"बेटा ! यह तो शिव जी की मूर्तिमात्र है। सच्चे और असली शिवजी तो कैलाश मे रहते हैं। ये असली शिव थोडे ही है।" पिता ने समझा कि बालक का समाधान हो गया, लेकिन बाल-मस्तिष्क मे एक नया सकल्प उभरा, उस के विचार-सागर मे नई लहरें उमरने लगी। मूलशकर यह सकल्प कर के वहा से निकल कर घर आ गया, "मैं तो असली शिव का ही दर्शन करूगी। यह एक किशोरावस्था के बालक की कोरी कल्पना नही थी, एक बच्चे का खिलवाड नही था, मात्र कह कर भूल जाने का कोई काल्पनिक विचार नही था, बल्कि एक शुद्ध पवित्र और महान् हृदय से निकला हुआ ऐसा सुदृढ और कल्याणकारी सकल्प था जिसको व्यावहारिक रूप देने मे मूल शकर ने वैवाहिक जीवन मे प्रवेश करने से इन्कार कर दिया, सासारिक सुख-सुविधाओ को सदा के लिए तिलाजलि दे दी, मा-बाप के प्यार दुलार और सगे-सम्बन्धियो के प्रेम से मुख मोड लिया, जमीन जायदाद और धन-दौलत से अपने आपको स्वेच्छा पूर्वक वचित कर लिया और एक दिन चुप-चाप घर से निकल पडा—सदा-सदा के लिए कभी न लौटने के दृढ सकल्प के साथ। घर से निकल कर नगर-नगर, डगर डगर की खाक छानी बनो और जगलो के चक्कर काटे, पहाडो और घाटियो को लाघा, कितने ही योगियो, साधुओ ज्ञानियो, सन्यासियो के पास पहुचे। किस लिए ? केवल शिवरात्रि के किए हुए इस सकल्प की पूर्ति के लिए कि "मैं सच्चे शिव के दर्शन करू गा।" लेकिन कही भी, किसी ने भी उन्हे सच्चे शिवजी के दर्शन नही करवाए और न उससे सम्बन्धित सच्चा ज्ञान ही दिया। अन्तत नर्मदा के तट पर मथुरा, नगरी मे गुरु विरजानन्द जी महाराज की सेवा मे बैठकर स्वामी दयानन्द ने सच्चे शिव का वास्तविक ज्ञान प्राप्त किया और महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कार्य क्षेत्र मे प्रवेश किया। गुरु विरजानन्द जी ने जो आदेश दिया था उस को पूर्ण करना स्वामी जी ने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। शिष्य को विदा करते हुए स्वामी दयानन्द जी को गुरु ने आदेश दिया था—'बेटा ! जो लिखा पढा सफल कर, देश का सुधार और उपकार कर, सत्यशास्त्रो का उद्धार कर, मत मतान्तरो की अविद्या को मिटा और वैदिक धर्म जो लोप हो गया है उसको फिर फैला। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गुरु के इस आदेश की पूर्ति मे अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। आर्य समाज की स्थापना की, जनता मे चेतना और जागृति पैदा की, वैदिक धर्म का प्रचार किया, वेदो का जन भाषा हिन्दी मे पहली बार भाष्य किया, हजारो व्यक्तियो के जीवन को सुधारा, नास्तिको को आस्तिक बनाया समाज के उपेक्षित और तिरस्कृत दलित वर्ग के उद्धार का मार्ग प्रशस्त किया। मत-मतान्तरो की समाप्ति के लिए स्वामी जी ने लिखा है—"सब सज्जनो को श्रम उठा कर इन सम्प्रदायो को जड मूल से उखाड डालना चाहिए जो कभी उखाड डालने मे न आवे, तो अपने देश का कल्याण कभी होने का नही। राष्ट्र की स्वाधीनता के महत्व और गुलामी की विभीषिका को असदिग्ध और स्पष्ट शब्दो मे जनता के सामने रखते हुए लिखा, "कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियो का राज्य भी

(शेष पृष्ठ 42 पर)

सत्यव्रती मूलशंकर

लेखक—प. श्री धर्मदेव जी आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष

26 फरवरी को फिर सभी स्थानो पर सारे भारत मे शिवरात्रि का पर्व मनाया जा रहा है। इस दिन बहुत से बन्धु व्रत रखते हैं। निराहार रहते हैं। स्नान आदि करके शुद्ध पवित्र होकर शिव मन्दिर मे जाकर रात्रि भर शिव अर्चना करते हैं। यह क्रम बहुत प्राचीन काल से चल रहा है। इसी क्रम मे शिव भक्त कर्षन जी तिवारी ने आज से 148 वर्ष पूर्व अपने पुत्र मूलशकर को शिवरात्रि का व्रत रखने के लिए प्रेरित किया। मूलशकर एक प्रतिभावान बालक था। पिता ने जो आज्ञा दी उसने उसे स्वीकार कर लिया और लोगो की तरह उसने भी व्रत रखा, वह भी मन्दिर मे गया और व्रती तो थोडी देर के बाद नीद का आनन्द लेने लग गए परन्तु मूल जाग रहा था क्योकि वह सत्यव्रती था जो जागने का पूजा का व्रत उसने लिया वह कोई ढोग नही था कोई दिखावा मात्र नही था उसने तो सत्य हृदय से व्रत लिया था। भला वह कैसे सो सकता था। जब नीद आने लगी उसने पानी के छीटे मारे और फिर दृढ होकर बैठ गया। उसका व्रत केवल पूजा पाठ तक ही सीमित नही था वह तो शिव के दर्शन करना चाहता था। परन्तु आधी रात को एक चूहा निकला और शिवजी महाराज पर उछल कूद करने लगा। उस निर्मल हृदय ने झट समझ लिया कि यह शिव नही है। अब उसने व्रत लिया है। शिव दर्शन का अब वह क्या करें। एक दिन वह सत्यव्रती शिव दर्शन के लिए मा की ममता, पिता का प्यार और सुख के सब साधनो को लात मार कर वह शिव की खोज मे निकल पडा।

जिन ढूंढा तिन पाया,
गहरे पानी पैठी ॥

एक दिन उसने सच्चे शिव को प्राप्त कर लिया यह सब व्रत का ही प्रभाव था। यदि मूलशकर व्रत न रखता तो वह सच्चे शिव को प्राप्त नही कर सकता था उसने परमात्मा से प्रार्थना की कि हे "अग्ने व्रतपते व्रत चरिष्यामि—इद अहमनृतात् सत्यमुपैमि" अग्नि-स्वरूप प्रकाश के पु ज प्रभु मैं आपकी कृपा से अपने व्रत को निभाने मे सफल होऊ। मैं असत्य को छोड कर अब सत्य को ही प्राप्त करूगा।

यह था मूल शकर का व्रत केवल उपवास नही बल्कि एक दृढ धारणा शिव प्राप्ति की। शिवरात्रि अब भी आ रही है। व्रत भी बहुत से लोग रखेंगे, परन्तु अब व्रत रखने वाला मूलशकर नही है। शिवरात्रि तो फिर भी आई और आती रहेगी। परन्तु सत्यव्रती आज उस जैसा कहा है। शिवरात्रि तो प्रतिवर्ष आती है परन्तु उसके बाद व्रत रखने वाला और कोई मूल शकर अभी तक शिव मन्दिर मे नही गया।

लोग व्रत लेते हैं और तोड देते हैं परन्तु मूलशकर एक ऐसा व्रती था जो व्रत ले लिया फिर चाहे कितना भी सकट क्यो न आ जाए, परन्तु व्रत नही टूट सकता। एक दिन उसने सच्चे शिव को पा लिया और वह मूल शकर से शुद्ध चैतन्य और फिर स्वामी दयानन्द बन

गया। मूलशकर के बाद दयानन्द ने भी जो व्रत गुरु के चरणो मे बैठ कर लिया कि मैं वेदो का प्रचार करूगा, इस सत्य व्रत को भी उन्होने प्राणो की चिन्ता न करते हुए अच्छी प्रकार से निभाया।

आज भी व्रत रखा जाता है एक समय का भोजन छोड दिया जाता है फल आदि खाने की कोई मनाही नही खूब खाये जाते हैं और कहने को यह व्रती हैं।

परन्तु मूल शकर ऐसा व्रती नही था वह तो सत्य व्रती था। इसलिए उसने उस सत्य के बल पर वह सब कुछ पा लिया जो वह पाना चाहता था। यदि मानव कुछ करना चाहे तो उसे कौन रोक सकता है। वह सब कुछ कर गुजरता है। यह ठीक है व्रत के पालन मे कुछ कठिनाईया आती हैं कई बार जीवन भी सकट मे पड जाता है परन्तु सत्य व्रती अपने रास्ते से पीछे नही हटता मूलशकर और फिर महर्षि दयानन्द के जीवन मे व्रत का पालन करते हुए कौन सी कठिनाई नही आई, परन्तु कोई भी कठिनाई उनका रास्ता नही रोक सकी। उनके कदम जो शिवरात्रि की रात को आगे बढे थे वह फिर आगे बढते ही रहे। उनके पवित्र हृदय मे जो जोत जगी थी वह फिर जगती ही रही। उनका जो ज्ञान का तीसरा चक्षु शिवरात्रि को रात को खुला था वह फिर खुला ही रहा और उस चक्षु से उसने सच्चे शिव को भी निहार लिया तथा ससार के मानवो के सकट को भी निहार लिया। उसे अब पूर्ण बोध प्राप्त हो गया था। जो बोध उसे आज की रात प्राप्त हुआ उसने शिवरात्रि पर्व को बोध पर्व बना दिया। तभी तो सभी आर्य बन्धु शिवरात्रि पर्व ऋषिबोध पर्व के रूप मे मनाते हैं।

आर्य बन्धुओ हम तो शिवरात्रि नही ऋषि बोध पर्व मना रहे हैं ऋषि को तो इस दिन बोध हो गया था उस के बाद देश, जाति, समाज सेवा का व्रत लेकर वह मैदान मे डट गए थे। क्या आज के दिन हम भी देश, जाति और समाज की रक्षा का व्रत लेकर वर्तमान सकट की स्थिति मे देश, जाति और समाज की रक्षा के लिए कुछ करेंगे या यू ही पर्व मना कर चुप हो जाएगे ?

(40 पृष्ठ का शेष)

पूर्ण सुखदायक नही है।" इसी प्रकार सन् 1872 73 में जब स्वामी जी प्रचार करते हुए भागलपुर से कलकत्ता पहुचे थे और श्री केशवचन्द्र सेन और एक विदेशी पादरी के प्रयत्न से स्वामी जी उस समय के वायसराय लार्ड नार्थ ब्रुक से मिलने गये थे, तब बातचीत के प्रसग मे स्वामी जी ने स्पष्ट शब्दो मे कहा था, "मैं प्रतिदिन प्रात. साय भगवान से प्रार्थना करते हुए यह मागता हू कि वह दयालु भगवान मेरे देश को विदेशी शासन से शीघ्र ही मुक्त करें।"

तात्पर्य यह कि आज से 148 वर्ष टकारा के शिवालय मे शिवरात्रि को 14 वर्ष के किशोर मूलशकर ने सच्चे शिव के दर्शन करने का जो सकल्प किया था वह कितना शुभ, महान्, मगलकारी और कल्याणकारी था, उसकी हमने इस लेख मे एक झाकी मात्र दिखाने की कोशिश की है। उस सकल्प ने भारत के इतिहास को बदल दिया, आर्य जाति का स्वरूप परिवर्तित कर दिया। अन्त मे हम उर्दू के एक कवि की पक्तिया उद्धृत करना पर्याप्त समझते हैं —

क्या कहे हम स्वामी के एहसान क्या क्या।
कौम के वास्ते उसने किये सामान क्या क्या।
पाक दामन नेक चरित्र साफ बातिन मर्द था।
आलिम व आमिल था इन्सानो मे एक मर्द था॥
गिने जाए मुमकिन हैं सहरा के जर्रे।
समन्दर के कतरे फलक के सितारे॥
दयानन्द स्वामी मगर तेरे एहसा।
न गिनती मे आयें कभी हम से सारे॥

महर्षि का विलक्षण कार्य और हमारा कर्त्तव्य

लेखक—श्री पं० ओम प्रकाश जी आर्य महोपदेशक

युग प्रवर्त्तक महान् महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के शुभागमन एवम् कार्यकाल से पूर्व आर्य जाति अपने उज्ज्वल अतीत को भुला कर प्रति विभ्रम उत्पन्न करने वाले वेद विरुद्ध मत मतान्तरो के अध अन्धड मे पूरी तरह फस चुकी थी। ऋषि मुनियो की विचारधारा तथा उन के रचे सत्यास्त्रो से उसका सम्बन्ध विच्छेद हो चुका था। सस्कृत के विद्वानों की कमी न थी परन्तु वे जन कल्याण और देश सुधार के किसी भी कार्य मे रुचि न लेते थे।

ईसा की नवी शताब्दी से लेकर बाहरवी शताब्दी के मध्यभाग तक सस्कृत के अनेक उद्भट विद्वान् हुए और उन्होने बडे बडे ग्रन्थ भी लिखे किन्तु विदेशियो के द्वारा हमारे समाज पर जो प्रहार हो रहे थे—उनसे समाज की रक्षा के लिये इन विद्वानो ने स्व रचित ग्रन्थो मे कही एक शब्द भी नही लिखा। महाविद्वान् आद्य शङ्कराचार्य का क्षेत्र उत्तर भारत था और मुहम्मद बिन कासिम के आक्रमण भी उत्तर भारत मे हुए किन्तु आचार्य ने उनकी कही भरत्सना नही की। करते भी कैसे ? उनकी दृष्टि मे तो सारा ससार ही मिथ्या था। धर्म का सम्बन्ध इस लोक से नही परलोक से था। अपने आप को बुद्ध मान कर पाप, पुण्य धर्म अधम, सभी भ्रम मात्र माने जा रहे थे।

वेद कण्ठस्थ करने की या कर्मकाण्ड की ही वस्तु बन कर रह गए थे अर्थ बोध या आचार सुधार के साथ किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध वेद का उस समय न माना जाता था। तान्त्रिक एवम् पौराणिको की वेद विरुद्ध शिक्षा के कारण धर्म मन्दिर साधना स्थल न रह कर मद्य मास मैथुन आदि पच मकारो के सेवन स्थल बना दिए गए थे। बौद्ध और जैन मत की अहिंसा के प्रति अशुद्ध धारणा ने भारत वासियो को सर्वथा कायर और भीरु बना दिया था। जन्माभिमानी ब्राह्मण आचार तथा आहार भ्रष्ट होने पर भी अपनी पूजा कराते थे। विद्या का प्रचार-प्रसार सर्वत्र बन्द हो चुका था। ब्राह्मणेतर योग्यतम और सदाचारी व्यक्तियो को तथा मातृशक्ति को धर्म-शास्त्र पढने और यज्ञ उपासना मे भाग लेना सर्वथा वर्जित ही न था अपितु दण्डनीय था।

जब गर्भस्थ बालक बालिकाओ के विवाह हुआ करते थे और इसके परिणाम स्वरूप लाखो विधवाओ को जन्म दिया जा रहा था। जब माता पिता की मूर्खता से निकम्मे पण्डे पुजारियो की पाप वासनाओ का शिकार अबोध बालिकाए बन रही थी। जब अनाथ रक्षा और दीन हीन पिछडे और अभावग्रस्त जन समुदाय की ओर कोई आख तक उठा कर देखने वाला न था उस समय देव दयानन्द वेद की ध्वजा हाथ मे लेकर सारे भारतीय जन समाज को ही नही अपितु ससार भर के मानवो को विद्या और अविद्या का स्वरूप बोध कराते हुए उन्होने घोषणा की कि अविद्या से बचाव और विद्या की प्राप्ति का एक मात्र उपाय वेद की शरण मे आना है। वेद मे सब विद्याओ का जिन से प्राणीमात्र का विकास और कल्याण हो सकता है बीज विद्यमान है। वेद केवल कर्मकाण्ड का ही बखान नही करते अपितु जीवन को गहन से गहन और गम्भीर से गम्भीर समस्यो का हल भी बताते हैं। वेद एकेश्वरवाद का समर्थन करते और उसकी उपासना का ठीक ढग बतलाते हैं। वेद सारे ससार को एक परिवार का रूप देते हुए ससार के मानवो एवम् अन्य प्राणियो को भाईचारे का पाठ पढाते और इस उदात्त भावना के आधार पर विश्व कल्याण और विश्व शक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

जिस स्त्री जाति को आचार्य शकर प्रभृति विद्वानो ने नरक का द्वार घोषित किया गुरु गोबिन्द सिंह जी के दशम ग्रन्थ मे स्त्रियो के चार सौ से अधिक ऐसे चरित्रो का वर्णन है जिससे स्त्री जाति को अविश्वसनीय ठहराया है। पञ्चतन्त्र की कहानियो

में भी स्त्री जाति की निन्दा करने में कोई कसर नही छोडी गई । परिणाम स्वरूप इन्हे पाव की जूती माना जाने लगा धर्म-कर्म विद्या और शिक्षा का द्वार स्त्री जाति के लिए सर्वथा बन्द हो गया। गीताकार महाराज कृष्ण के मुख से इन्हे पाप योनियाँ तक कहलाने मे भी सकोच न किया परन्तु धन्य हो महर्षिदयानन्द श्री महाराज को जिन्होंने ने ईश्वरीय ज्ञान वेद का गहन अध्ययन करके उपेक्षित स्त्री समाज को पुन उच्चासन पर आसीन कराया। स्त्रियो को पूजनीय और आदरणीय बताया। वेद मे स्त्रियो को सिर की पगडी, नित्य विज्ञान के देने वाली, ज्ञान विज्ञान की स्वामिनी बताया गया है यजुर्वेद के 35वी अध्याय का तीसरा मन्त्र इस सम्बन्ध मे विशेष माननीय है।'आ म् अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीष । पूषासि घर्मायदीष्व । महर्षि इसका अर्थ करते हैं— (अदित्यै) नित्य विज्ञान के (रास्ना) देने वाली (असि) है। (इन्द्राण्यै) परमैश्वर्य करने वाली नीति के लिये (उष्णीष) शिरोवेष्टन पगडी के तुल्य (पूषा) भूमि के सदृश पोषण करने वाली (असि) है (घर्माय) प्रसिद्ध अप्रसिद्ध सुख देने वाली यज्ञ के लिये (दीष्व) दान कर।

महर्षि ने वेद के अतिरिक्त मानव धर्म शास्त्र के अनेक प्रमाणो द्वारा भी स्त्रीजाति के गौरव गुमान को प्रतिष्ठित किया। आज शिक्षा का धर्मशास्त्र के पठन पाठन का द्वारा न केवल स्त्रिजाति के लिए अपितु सभी वर्णस्थ आबालवृद्ध नर नारियो के लिए खोल दिया गया है। यह सब महर्षि की तपस्या का सुफल है।

वेद को गडरियो का गीत कहने वाले सृष्टि के आरम्भ मे उत्पन्न होने वाले लोगो को असभ्य और जगली बताने वाले तथा आर्य बुद्धि का उपहास उडाने वाले सभी देशी विदेशी तथा कथित विद्वानो का विद्याभिमान देव दयानन्द की एक ही हुकार ने समाप्त कर दिया। विद्वानो को हठ, दुराग्रह और पक्षपात् से एवम् अन्ध परम्परा से बाहर आने का अवसर मिला।

आज वेद के प्रति भ्रान्त धारणाए लगभग समाप्त हो चुकी हैं। देशी विदेशी सभी निष्पक्ष विद्वान् वेद को ज्ञान विज्ञान का खजाना मानने लगे हैं और उन्हें एक स्वर यह कहने पर विवश होना पडा है कि सरगारम्भ के पूज्य महर्षि आज के विद्वानो से कही अधिक विद्वान् थे।

यह सब कुछ तो हुआ ऋषि के तप-त्याग और बलिदान के कारण ' प्रश्न यह है कि आज हम क्या करे ?

महर्षि ने अनार्ष ग्रन्थो का पठन-पाठन बन्द कराया और उनके स्थान पर ईश्वरीय ज्ञान वेद तथा वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थ हमे दिए। क्या हम आर्ष ग्रन्थो का विधिवत् पाठ करते और दूसरो को पढाते हैं।

महर्षि ने शिक्षा का द्वार सभी के लिए खोला था परन्तु साथ ही शिक्षा का स्वरूप भी बतलाया था क्या पढाया जाए और क्या न पढाया जाए इस का निर्देश भी अपने सद् ग्रन्थो मे किया था। क्या हम ऋषि आदेश को मानते एवम् पालन करते है ? ऋषि सहशिक्षा के घोर विरोधी थे परन्तु हम क्या कर रहे हैं।

महर्षि का सारा जार आचार आहार •ोर व्यवहार की शुद्धि पर लगा। अपने समय मे उन्होने मुन्शी इन्द्रमणि जैसे अपने सहयागी को केवल इसलिए समाज से बाहर निकलवा दिया क्योकि वह अर्थशुद्धि के मार्ग से भ्रष्ट हो गया था। क्या आज हम अर्थ शुचिता का यत् किन्चित भी ध्यान रखते हैं ?

महर्षि स्व भाषा, स्व सभ्यता, स्व सस्कृति और स्वदेश भक्ति को सर्वोपरि मानते थे परन्तु हम ने मैकाले के चरण चिन्हो पर चल कर विदेशी भाषा, वेश भूषा और खान पान अपना लिया है।

यह कमिया जो हम मे आ गई हैं सर्वप्रथम इन का दूर करना ही हमारा काम होना चाहिए इनके रहते हुए हम न स्वामी दयानन्द की समझ सकेंगे और न आर्य समाज के लिये अपने को उपयोगी बना सकेंगे। परमात्मा करे हम आत्म बोध प्राप्त करें।

॥ ओ३म् ॥

आग की लपटें—आर्य समाज

मुझ को एक आग दिखाई पड़ती है, जो सर्वत्र फैल रही है और प्रत्येक वस्तु को जलाकर भस्म कर रही है। अमेरिका के विस्तीर्ण मैदानों, अफ्रीका के बीहड़ जंगलों, एशिया की ऊंची पर्वत चोटियों और युरोप के महान् राज्यों पर मुझे उसकी लपटें सुलगती दिखाई दे रही हैं। इस अपरिमित आग को देखकर, जो निःसन्देह राज्यों, साम्राज्यो और समस्त संसार की नीति तथा व्यवस्था के सब दोषों को भस्म कर डालेगी, मैं अत्यन्त आनन्दित होकर हर्षमय जीवन बिता रहा हूं। आकाशचुम्बी पहाड़ों की चोटियां जल उठेंगी, घाटियों के सुन्दर और चमकीले नगर भुन जायेगें। प्यारे घर और उनमें बेसुध हो प्रेममय जीवन बिताने वाले हृदय मोम की तरह गल जायेंगे। पाप ऐसे अन्तर्हित हो जायेगा, जैसे कि सूर्य की सुनहरी किरणों के सामने ओस के बिन्दू अदृश्य हो जाते हैं। असीम उन्नति आशा विद्युत मनुष्य का हृदय चमक रहा है। उसकी चिनगारियां आकाश की ओर उड़ती दीख पड़ती हैं! वक्ताओं कवियों और ग्रन्थ निर्माताओं की शिक्षाओं में भी कभी-कभी उसकी लपटों की चमक दिख जाती है। आर्य समाज की भट्ठी में यह आग सनातन पुरातन आर्य धर्म को स्वाभाविक पवित्र रूप में लाने के लिए सुलगाई गयी है। भारत के एक परम योगी ऋषि दयानन्द सरस्वती के हृदय में यह प्रगट हुई थी। हिन्दु और मुसलमान उस प्रचण्ड आग को बुझाने चारों ओर से पूरे वेग के साथ दौड़े, परन्तु यह आग उत्तरोत्तर ऐसी बढ़ती और फैलती गयी कि उसको प्रगट करने वाले दयानन्द को भी उसकी कल्पना न हुई होगी। ईसाइयो ने एशिया की इस प्रचण्ड ज्योति को बुझाने में हिन्दुओं और मुसलमानों का साथ दिया, परन्तु ईश्वरीय ज्योति और भी अधिक प्रज्वलित होकर चारों ओर फैल गई। सम्पूर्ण विरोध एवं विघ्न बाधाओ की घटा इस आग के सामने न टिक सकी। रोग के स्थान में आरोग्यता झूठे विश्वास के स्थान तर्क, पाप के स्थान में पुण्य, अविश्वास के स्थान मे विश्वास द्वेष के स्थान मे सद्भाव वैर के स्थान में समता नरक के स्थान में स्वर्ग, दुःख के स्थान सुख भूत प्रेतों के स्थान में परमेश्वर एवं प्रकृति का राज्य हो जायेगा। मैं इस आग को परम मांगलिक मानता हूं। जब यह आग सुन्दर भूतल पर नवजीवन का निर्माण करेगी, तो सर्वत्र सुख और शान्ति छा जायेगी।

—एण्डरोजैकसन डैविस 'अमेरिका'

अपने प्यारे बच्चों
के स्वास्थ्य के लिये
अपना आजमाया हुआ
मोगा शहर का मशहूर
पीमार्को
शुद्ध सरसों का
तेल
प्रयोग करें।
तार "TRUTH" फोन 2239
2303

टेलीफोन 74250 रजि. नं. N.W/J.L.55

वर्ष 18 अंक 48 25 फाल्गुन सम्वत् 2043 तदानुसार 8 मार्च 1987 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आयोजित

'विशाल पंजाब सम्मेलन' लुधियाना में पारित प्रस्ताव

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में जिला आर्य सभा लुधियाना के द्वारा आर्य हायर सैकण्डरी स्कूल में 1-3 87 रविवार को विशाल पंजाब सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने की। इस सम्मेलन का उद्घाटन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने किया। उदघाटन भाषण श्री छोटू सिंह जी एडवोकेट प्रधान राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा ने दिया।

श्री स्वामी आनन्दबोध जी ने कहा कि आर्य समाज ने विशाल पंजाब मे काम किया है। जब हरटा बंबर से आरम्भ होता था। आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने देश जाति और समाज के लिए बड़े 2 बलिदान दिए हैं, जेलों मे गए हैं। फांसी के तख्तों पर चढ़े हैं काला पानी की सजाएं भुगती हैं। आज यदि कोई राजनैतिक पार्टी भारत का बटवारा करना चाहेगी तो देश की जनता उसे उखाड़ कर फैंक देगी। राष्ट्र के गद्दारों को रोकने के लिए आर्य समाज के संगठन की आवश्यकता है। पंजाब की रक्षा के लिए पंजाब के आर्य भाई जो भी निर्णय करेंगे सार्वदेशिक सभा उन्हें अपना पूरा-पूरा सहयोग देगी।

इस सम्मेलन में [illegible] प्रस्ताव पारित किए गए। इन प्रस्तावों पर [illegible] हुए श्री [illegible] ने कहा कि पंजाब में [illegible] आरम्भ किया गया तो इधर [illegible] आर्य युवक पीछे नहीं रहेंगे। [illegible]

श्री छोटू सिंह जी [illegible] ने [illegible] व उसका दर्द सारे राजस्थान मे और सारे देश भर मे होता है। जब भी देश पर आपत्ति आई आर्य समाज उसे दूर करने के लिए आगे बढ़ा। जब भी कोई परीक्षा की घड़ी आई है हम उसमें सफल हुए हैं। अब भी यदि पंजाब मे कोई संघर्ष करना पड़ा तो राजस्थान के लाखो आदमी पंजाब के हिन्दुओं के लिए जान तक देने के लिए तैयार हैं।

श्री स्वामी सुमेधानन्द जी आचार्य दयानन्द मठ चम्बा ने कहा प्रस्तावों से काम न चलेगा, अब तो कुछ करने का समय है। राजनैतिक खिलाड़ियों ने पंजाब की समस्या को पेचीदा बना दिया है। अब इसका इलाज एक ही है कि निडर हो कर इसके विरुद्ध आवाज उठाए। आर्य समाज अब राष्ट्र रक्षा के लिए आगे आए। हमारे राष्ट्र को कोई आंच नहीं आनी चाहिए। हमारे लिए जो भी आदेश सार्वदेशिक सभा का होगा। हिमाचल के आर्य बन्धु उसे सहर्ष स्वीकार करेंगे।

श्रीमती कमला जी आर्या, श्रीकृष्ण कान्त वैद, श्री तुलसीदास जी बेदवाणी, श्री नरेश स्वामी और दूसरे कई महानुभावो ने प्रस्तावों पर अपने विचार दिए।

सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने विशाल पंजाब जो पहली नवम्बर 1966 से पूर्व था कि चर्चा करते हुए सरकार से मांग की कि पंजाब और उसके साथ-साथ देश की वर्तमान समस्या का एक ही हल है और वह है 'विशाल पंजाब' इस सम्बन्ध में इन्होंने और भी विस्तार से अपने विचार देते हुए निम्न प्रस्ताव रखा।

प्रस्ताव संख्या 1

नवम्बर 1966 में जब पंजाब का बटवारा करके पंजाबी सूबा बनाया गया था, तो यह कहकर कहा गया था कि इसके पश्चात् पंजाब में कोई ऐसी समस्या नहीं रहेगी जिसके समाधान के लिए अकालियों को कोई नया आन्दोलन आरम्भ करना पड़े। उस बटवारे के फलस्वरूप ही पंजाब की बहुसंख्यक हिन्दू जनता को अल्पसंख्यक बना दिया गया था। इसी के साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी का अस्तित्व पंजाब मे समाप्त करने के लिए सरकार की ओर से एक अभियान भी प्रारम्भ कर दिया गया था। आर्य समाज ने उस समय पंजाब के बटवारे का विरोध किया था, क्योंकि जैसा कि हमारे पहले प्रधानमन्त्री स्वर्गीय पण्डित जवाहर लाल जी नेहरू कहते थे पंजाबी सूबा की मांग एक साम्प्रदायिक मांग है और यह पंजाब की किसी समस्या को समाप्त नहीं करेगी। परन्तु हमारी कोई सुनवाई न हुई और पंजाब का बटवारा कर दिया गया। इसके पश्चात 1973 मे अकालियो ने आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव पारित कर दिया और उसके साथ एक नया आन्दोलन शुरू कर दिया गया जो अब आतंकवाद और उग्रवाद का रूप धारण कर गया है। पंजाब मे पिछले पांच वर्षों में सैकड़ो निर्दोष व्यक्तियो की हत्या कर दी गई है, कई परिवार उजड़ गए हैं, कई हमारी बहनें विधवाएं बना दी गई हैं, कई बच्चे अनाथ कर दिए गए हैं और आज स्थिति इतनी अधिक गम्भीर हो गई है कि जितनी इससे पहले न थी। जिन सिंह साहेबान के जिम्मे गुरु साहेबान ने यह काम लगाया था, कि वे गुरुवाणी का प्रचार करके देश में भ्रातृभाव, सदभावना और शांति का वातावरण पैदा करेंगे, वे ही आज खालिस्तान की बातें कर रहे हैं और उग्रवाद और आतंकवाद का समर्थन कर रहे हैं। अब यह भी कोई छुपा हुआ रहस्य नहीं है कि पंजाब में जो कुछ हो रहा है, इसे पाकिस्तान की ओर से प्रोत्साहन मिल रहा है। हमारे लिए यह स्थिति और भी अधिक चिन्तनीय है कि भारत सरकार पंजाब की गम्भीर स्थिति पर नियन्त्रण करने में पूर्णतया विफल रही है और [illegible] उनके कई मन्त्री आतंकवाद और उग्रवाद को प्रोत्साहन देते रहे हैं। हम अकालियों के आतरिक विवाद मे पड़ना नहीं चाहते, परन्तु यह सम्मेलन स्पष्ट रूप से यह घोषणा कर देना चाहता है कि पंजाब की हिन्दू जनता अपने आपको अकाली राज में सुरक्षित नहीं समझती। इसकी बागडोर चाहे किसी के हाथ में हो, हमारे लिए कोई अन्तर नही पड़ता जब तक अकाली दल आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव के अनुसार एक ऐसा क्षेत्र बनाने का प्रयास करता रहेगा जिसमे 'खालसा' का बोलबाला हो, जो निर्णय पिछले दिनो सिंह साहेबान ने लिए हैं, उनसे भी यह स्पष्ट है कि पंजाब में ऐसी परिस्थितियां पैदा करने का प्रयास किया जा रहा है, जिनमें हिन्दू अल्पसंख्यको के लिए पंजाब में एक सम्मानजनक जीवन व्यतीत करना कठिन हो जायेगा।

इन सब परिस्थितियो को सामने रखते हुए यह सम्मेलन घोषणा करना चाहता है कि पंजाब के वर्तमान संकट को दूर करने का एक ही उपाय है कि पंजाब को एक बार फिर उसी प्रकार का महा पंजाब बना दिया जाए, जैसा कि यह पहली नवम्बर 1966 को था। आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव में भी हरियाणा, हिमाचल और राजस्थान के कुछ क्षेत्र पंजाब मे सम्मिलित करने की मांग की गई है। इसलिए अकाली भी हमारी विशाल पंजाब की मांग का विरोध नहीं कर सकते। प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी भी कह चुके हैं कि भाषा के आधार पर प्रान्तों का निर्माण एक भयंकर भूल थी। जो कुछ पंजाब में हो रहा है वह प्रधानमन्त्री के विचारों की सम्पुष्टि करता है। इसलिए यह सम्मेलन भारत सरकार से यह मांग करता है कि पंजाब का पुनर्गठन किया जाए। और फिर से एक ऐसा प्रान्त बनाया जाए जिसमें विघटनकारी शक्तियां और साम्प्रदायिक शक्तियां फिर

(शेष पृष्ठ 6 पर)

व्याख्यान माला—६

स्वाध्याय और उसका महत्व

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स, अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर(पंजाब)

(गताक से आगे)

ओ३म् येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा ।
तेन सहस्रधारेण पावमानीः पुनन्तु नः ।।6।।

सामवेद 5-2-85

(येन) जिस प्रकार (देवा) दिव्य गुण सम्पन्न विद्वान् (पवित्रेण) पवित्र वेद ज्ञान के द्वारा (आत्मानम् स्वय को (सदा) निरन्तर (पुनते) पवित्र करते हैं। (तेन) उसी प्रकार ये (पावमानी) पवित्र कर देने वाली वैदिक ऋचाए (सहस्रधारेण) अपनी अनेक ज्ञान विज्ञान युक्त धाराओ के सतत प्रवाह से (न.) हम मननशील जिज्ञासुओ को भी (पुनन्तु) पवित्र करे। अर्थात् हम भी निरन्तर वेदामृत के पवित्र वर्षण से स्वय को कृतकृत्य करते हुए ज्ञानवान् बने।

ओ३म् सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने ।
सरस्वतीं सुकृतो अह् वयन्त सरस्वती दाशुषे वार्यंदात् ।7।

ऋग्वेद 10-17-7

(देवयन्त.) देवत्व भाव को प्राप्त हुए यज्ञकर्ता विद्वान् (सरस्वतीम्) अन्तरिक्षस्थ वाणी के लिए (हवन्ते) यज्ञ करते है, (अध्वरे) यज्ञ के (तायमाने) विस्तारित करने पर (सरस्वतीम्) माध्यमिका वाक् के प्रति (हवन्ते) हवन करते हैं। (सुकृत) उत्तम कर्म करने वाले भी (सरस्वतीम्) इस सरस्वती के प्रति (अह्वयन्त) आह्वान करते हैं और यह (सरस्वती) माध्यामिका वाक् (दाशुषे) यज्ञ आदि करने वाले को (वार्यम्) उत्तम धन अथवा वृष्टि जल को (दात्) देती है। —(महर्षि दयानन्द वेद भाष्य)

ओ३म् यस्तित्याज सचिविदं सखायं न तस्य वाच्यपिभागो अस्ति ।
यदीं शृणोत्यलकं शृणोति नहि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम् ।।8।।

ऋग्वेद 10-71-6

(य:) जो (सचिविदम्) साथी को पहिचानने वाले (सखायम्) मित्र के तुल्य उपकारक वेद के स्वाध्याय को (तित्याज) छोड देता है (तस्य) उसका (वाचि अपि) वेद वाणी में भी (भाग:) भाग (न) नही (अस्ति) होता है। यह (यद्) जो कुछ (ईम्) भी (शृणोति) सुनता है (अलकम्) अलीक—व्यर्थ (शृणोति) सुनता है (हि) क्योकि वह (सुकृतस्य) उत्तम कर्म के (पन्थाम्) मार्ग को (न) नहीं (प्रवेद) जानता है। —(महर्षि दयानन्द वेद भाष्य)

वेद मेवाभ्यसेन्नित्यं यथाकालमतन्द्रित: ।
तं ह्यस्याहु: परं धर्ममुपधर्मोऽन्य उच्यते ।।9।।

नित्य समयानुसार आलस रहित होकर वेदो का अभ्यास करना चाहिये। उसे मनुष्य का परम धर्म समझना चाहिए क्योकि अन्य तो उप धर्म है।

वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम् ।
आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च ।।10।।

धर्म का मूल क्या है? इस विषय मे कहते हैं कि सम्पूर्ण-वेद, विद्वज्जनों के स्मृति शास्त्र और उनकी प्रकृति, साधुओ की आचार संहिता तथा आत्म सन्तोष ये धर्म के मूल हैं।

श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृति: ।
ते सर्वार्थेष्वमीमांस्ये ताभ्यां धर्मो हि निर्बभौ ।।11।।

वेद श्रुती कहलाता है और धर्म शास्त्र स्मृति कहलाता है ये दोनों आलोचना के सर्वथा योग्य नहीं होते इन दोनो से ही धर्म की शोभा होती है।

अर्थकामेष्व सक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते ।
धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुति ।।12।।

अर्थ और काम में जो लीन है उनके लिये धर्म ज्ञान का विधान तथा, धर्म की जिज्ञासा रखने वालो के लिए श्रुति—वेद ही प्रमाण है। अर्थात् धर्म का वास्तविक स्वरूप वेद मे ही मिल सकता है अन्यथा नहीं।

योऽवमन्येत ते मूले हेतु शास्त्राश्रयाद्द्विज: ।
स साधुभिर्बहिष्कार्यो नास्तिको वेदनिन्दक: ।13।

जो ब्राह्मण उन मूल तत्वो की अवहेलना करता है विद्वानो को चाहिए कि वे प्रमाण शास्त्र का आश्रय लेकर ऐसे नास्तिक और वेद निन्दक पुरुष का बहिष्कार करें।

वेदाभ्यासो हि विप्राणां परमं तप उच्यते ।
ब्रह्मयज्ञ. स विज्ञेय: षडङ्गसहितस्तु य: ।14।

वेदो का अभ्यास करना ब्राह्मणो के लिए परम तप कहा गया है लेकिन जो छः अगो सहित वेदो का अभ्यास है उसे ब्रह्म यज्ञ समझना चाहिए।

योऽन्यत्र कुरुते यत्नमनधीत्य श्रुतिं द्विज: ।
स वै: मूढो न संभाष्यो वेदबाह्यो द्विजातिभि ।15।

जो ब्राह्मण वेदो का अभ्यास न करके अन्यत्र परिश्रम करता है उस मूढ के साथ द्विजातियो को बात भी नही करनी चाहिए क्योंकि वह वेदो पर भार स्वरूप है।

नास्ति वेदात्परं नास्ति मातु: परो गुरु ।
नास्ति दानात्परं मित्रमिह लोके परत्र च ।16।

इस लोक और परलोक मे दान से बढ कर कोई मित्र नहीं, वेद से बढ़ कर कोई शास्त्र नहीं, माता से बढ कर कोई मा नही।

ग्रामस्थाने यथा शून्ये यथा कूपस्तु निर्जल: ।
यथाहुतमनग्नौ च अमन्त्रो ब्राह्मणस्तथा ।17।

वेद के मन्त्र ज्ञान से रहित ब्राह्मण ऐसा ही होता है जैसे सुनसान ग्राम, स्थान, पानी से हित कुआ, बुझी हुई आग में दी हुई आहुति।

वेद पूर्णमुखं विप्रं सुभुक्तमपि भोजयेत् ।
न च मूर्खं निराहारं षड्रात्रिमुपवासिनम् ।18।

जो ब्राह्मण वेद ज्ञान से पूर्ण है चाहे वह पहले भोजन किए हुए हो तब भी उसका भोजनादि से सत्कार करना चाहिए परन्तु छ: रात्रियो तक उपवास करने वाले वेद ज्ञान रहित मूर्ख ब्राह्मण को नहीं।

(श्लोक का तात्पर्य है कि स्वयं को ब्राह्मण बताने वाले ढकोसलाबाज को ही धर्म, कर्म मानने वाले पाखण्डियो में, गृहस्थियों को अपनी आस्था नहीं रखनी चाहिए अपितु वेद के विद्वानों मे ही आस्था रखें जिनके सत्संग से ज्ञान प्राप्ति कर कल्याण हो सके)

ऋग्यजु: पारगो यस्तु साम्नां यश्चापि पारग: ।
अथर्वाङ्गिरसोऽध्येता ब्राह्मण: पंक्तिपावन: ।19।

ऋग्वेद और यजुर्वेद का जो पूर्ण विद्वान् है, सामवेद का भी जो पूर्ण विद्वान् है, अथर्ववेद और अङ्गिरस शास्त्र का जो अध्येता है ऐसा ब्राह्मण सारी पंक्ति को पवित्र करने वाला होता है।

वेदमेव सदाऽभ्यस्येत्तपस्तप्स्यन्द्विजोत्तम: ।
वेदाभ्यासो हि विप्रस्य तप: परमिहोच्यते ।20।

उत्तम ब्राह्मण तपस्या पूर्वक सदा वेद का ही अभ्यास करे, क्योंकि वेद अभ्यास ही ब्राह्मण का श्रेष्ठ तप कहा जाता है।

(क्रमश:)

सम्पादकीय—

पंजाब में आर्य समाज का भविष्य

पहली मार्च को लुधियाना में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में जो विशाल पंजाब सम्मेलन हुआ है। उसे एक सफल सम्मेलन कहा जा सकता है। जो महानुभाव दूसरे प्रान्तो से आए थे विशेषकर इस सम्मेलन के अध्यक्ष श्री स्वामी आनन्दबोध जी और राजस्थान प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री छोटूसिंह जी, हिमाचल के आदरणीय स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज और सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री सभी का यह कहना था कि सम्मेलन सफल रहा है। इसमे सन्देह नहीं कि पजाब के कई नगरो से आर्य समाजी वहा पहुचे थे। उसी दिन लुधियाना मे एक और समारोह भी था जहा अकाल तख्त के जत्थेदार श्री दर्शन सिंह रागी पहुचे हुए थे उन्हे देखने और सुनने के लिए भी बहुत से लोग वहा आए थे, परन्तु विशाल पजाब सम्मेलन मे भी बहुसख्या में लोग सम्मलित हुए। उसका एक कारण यह भी था कि पजाब की वर्तमान परिस्थितियो के विषय मे आर्य समाज का क्या दृष्टिकोण है यह लोग जानना चाहते थे, विशेषकर आर्य समाजी क्योकि राजनैतिक पार्टिया अपने दृष्टिकोण के अनुसार परिस्थितियो की समीक्षा करती है। आर्य समाज का किसी राजनैतिक दल से कोई सम्बन्ध नही। इस लिए यह निष्पक्ष रूप से अपनी सम्मति देश की जनता के सामने रख सकती है। लोग उसे महत्व भी देते हैं। इसलिए जब कभी कोई ऐसा सम्मेलन होता है तो वह अपने नेताओ के विचार सुनने के लिए वहा पहुच जाते हैं। लुधियाना मे जो सम्मेलन हुआ था उसमें भी इसी अभिप्राय से प्रान्त के भिन्न-2 नगरों से वहा आर्य बन्धु पहुचे थे। यद्यपि हमारे आर्य नेताओ ने इसे एक सफल सम्मेलन कहा है परन्तु मैं इसे सफल नही मानता। मुझे यह कहने मे भी कोई आपत्ति नही कि मुझे कुछ निराशा हुई। यह इस लिए कि जितनी उपस्थिति वहा होनी चाहिए थी वह न हुई थी। पजाब के कई बडे-2 नगरो से एक भी आर्य समाजी वहा न पहुचा। हमने दो बार सभी को पत्र लिखे थे और हम आशा करते थे कि प्रत्येक आर्य समाज से कम से कम एक प्रतिनिधि तो अवश्य आएगा। हमने तो आर्य समाजो को लिखा था कि वह अपने कम से कम पाच प्रतिनिधि अवश्य भेजें। परन्तु कई आर्य समाजो ने एक भी प्रतिनिधि नहीं भेजा। यह इस सम्मेलन का एक निराशाजनक पक्ष है। पजाब की वर्तमान परिस्थितियो मे हम सम्भवत: यह आशा न रख सकते थे कि लुधियाना से दूर की आर्य समाजें अपने प्रतिनिधि भेजेंगी। जो कुछ आजकल पजाब मे हो रहा है। उसके कारण जो व्यक्ति किसी सभा या सम्मेलन में जाते हैं उनका पहला प्रयास यह होता है कि सम्मेलन मे सम्मलित होने के पश्चात् ऐसे समय मे वहा से चल पडें कि सायकाल होने से पहले-2 अपने घर पहुच जाए। 6 बजे के बाद तो वैसे भी बसे नहीं चलती। इसलिए जो अपने घर वापिस पहुचना चाहते हैं वह शीघ्र जाने का प्रयास करते हैं और जो दूर-2 रहते हैं वह केवल इसलिए किसी सभा या सम्मेलन मे नही आते कि सम्भवत: समय पर वह वापिस अपने घर न पहुच सकें।

इसलिए यदि आशा से कम आर्य समाजी बाहिर से लुधियाना पहुचे थे तो उसका एक कारण यह भी था। लेकिन जो मेरे लिए बात निराशाजनक थी वह यह कि कुछ लुधियाना के समीप की आर्य समाजो के प्रतिनिधि नही पहुचे। इसे मैं आर्य समाज के सगठन की एक कमजोरी समझता हू। आज की परिस्थितियो मे जब बडी छोटी सब सस्थाए अपनी शक्ति और अपने सगठन का प्रदर्शन कर रही हैं। आर्य समाज किसी से पीछे क्यो रहे। पिछले माह मे पजाब के मुख्यमन्त्री श्री सुरजीतसिंह बरनाला ने लौंगोवाल गाव में जो सम्मेलन किया था उसमें लाखों लोग सम्मलित हुए थे और इसका सारे देश मे चर्चा हुआ। आर्य समाज की ओर से ऐसा कोई प्रदर्शन अभी तक नहीं हुआ जिसमें कि इतने लोग सम्मलित हुए हो, जितने लोग लौंगोवाल गाव मे हुए। इसमे सन्देह नही कि लौंगोवाल में जो सम्मेलन हुआ था उसके पीछे पजाब की सारी राज्य सत्ता थी। श्री सुरजीतसिंह बरनाला मुख्यमन्त्री न होते तो इतने लोग लौंगोवाल मे जमा न कर सकते थे। इस लिए हम अपने सम्मेलन की उनके उस सम्मेलन के साथ तुलना नहीं कर सकते। लेकिन हमारा जो भी प्रदर्शन हो वह ऐसा अवश्य होना चाहिए जिसका प्रभाव जन-साधारण पर भी पडे। इस सम्मेलन मे हमने अपने देशवासियों के सामने पंजाब की समस्या का एक नया समाधान प्रस्तुत किया है वह है 'विशाल पंजाब'। राजनैतिक दल कभी पजाब के विषय में बात करते हैं तो वह केवल सुरजीतसिंह बरनाला के समर्थन में या राजीव गान्धी के विरोध में अपनी बात कहते हैं। हमने न तो किसी के समर्थन में न किसी के विरोध में कोई बात कही है। एक राजनैतिक दृष्टिकोण से हम यह समझते हैं कि पजाबी सूबा ने पजाब की कोई समस्या का समाधान नहीं निकाला अपितु कुछ नई समस्याए खडी कर दी हैं। इसलिए हमने यह सुझाव दिया है कि पजाब का क्षेत्र बडा किया जाए। उस स्थिति मे उसकी सारी समस्याए समाप्त हो जाएगी। यह एक नया विचार है जो आर्य समाज ने अपने देशवासियो को भी और अपनी सरकार को दिया है। परन्तु इस पर विचार कौन करेगा। इस आर्य समाज में जब तक यह शक्ति न होगी कि वह जो कुछ कहे उसे उसके देशवासी उसे सुनें और उस पर विचार करें, उस समय तक हमारे यह सम्मेलन बहुत अधिक लाभदायक नहीं हो सकते। जब ऐसे सम्मेलन होते हैं तो लोगो को यह तो पता चल जाता है कि आर्य समाज भी बुद्धिजीवियो की एक ऐसी सस्था है जो देश की समस्याओ पर विचार कर सकती है परन्तु आर्य समाज का वह प्रभाव नही है जो होना चाहिए। इसलिए वह जो कुछ कहती है उसकी तरफ उसके देशवासियो का वह ध्यान नही जाता जो जाना चाहिए। यह आज की परिस्थितियो का एक धूमिल पक्ष है। इसका निराकरण कैसे किया जाए, इस विषय मे सोचें। आर्य समाज के नेताओ का काम है। हमारे सामने तो एक ही प्रश्न है कि पजाब मे आर्य समाज का भविष्य क्या है ? आज की परिस्थितियो मे उज्जवल नहीं है परन्तु हम निराश हो कर हाथ पर हाथ रख कर बैठ भी नही सकते। गम्भीरता पूर्वक हमें इस पर विचार करना चाहिए। इस सम्बन्ध में अपने विचार आगामी अक में पाठको के सामने रखू गा, परन्तु आज मैं लुधियाना के आर्य भाईयो और बहनो का हार्दिक धन्यवाद करना चाहता हू कि उनके परिश्रम और सहयोग से हमारा यह सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया।

—वीरेन्द्र

वैदिक साहित्य का एक और संस्थान

कुछ समय हुआ जब मैंने लिखा था कि आर्य समाज का प्रचार बहुत कुछ छोटे-2 ट्रक्टों के द्वारा होता रहा है। अब उस प्रकार के ट्रक्ट बहुत कम मिलते हैं। जो कुछ मैंने लिखा था वह बहुत कुछ अपनी अनभिज्ञता के कारण लिखा था। उस लेख के पश्चात मुझे कई ऐसे पत्र आए, जिन मे उन सस्थाओ के विषय में लिखा गया था जिन्होने इस दिशा मे बहुत महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। कई ऐसे व्यक्ति भी हैं जिन्होंने स्वय इस दिशा मे महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। मैं समय-2 पर उन के विषय मे आर्य मर्यादा मे लिखता रहा हू। अब मेरे पास मथुरा की एक और सस्था सत्य प्रकाशन के लगभग 30 छोटे-2 ट्रक्ट आए हैं जिन मे आर्य समाज और महर्षि दयानन्द की विचारधारा के भिन्न-भिन्न पक्ष बडी विद्वता-पूर्वक प्रस्तुत किए गए हैं। मैं समझता हू कि इस प्रकार की छोटी-2 पुस्तकें जन साधारण मे जो प्रचार कर सकती हैं वह बडी-2 पुस्तकें नहीं कर सकती। इन का सब से बडा महत्व यह है कि यह थोडी कीमत की होती हैं, जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति खरीद सकता है। जो ट्रक्ट मुझ भेजे गए हैं, उन मे कई ऐसे हैं जिनका मूल्य 35 पैसे है। किसी का 60 पैसे है। किसी का डेढ रुपया है। कोई ट्रक्ट डेढ रुपए से अधिक का नही है। इन के द्वारा आर्य समाज का सन्देश घर-2 तक पहुच सकता है। प्रत्येक आर्य समाज को यह ट्रक्ट मगवा कर अपने पास रखने चाहिए और इन के द्वारा अपना प्रचार करना चाहिए। कुछ ट्रक्ट ऐसे हैं जिन मे भगवान कृष्ण तथा दूसरे महापुरुषो के विषय मे बहुत कुछ लिखा गया है। खास मनु स्मृति से मनु स्मृति के विषय मे भी बहुत कुछ पता चल जाता है। इन ट्रक्टो के लिखने वाले कई प्रतिभाशाली विद्वान् हैं। इसलिए आर्य समाजो के अधिकारियो को चाहिए कि वह यह ट्रक्ट मगवा कर अपने पास रखें और अपने सभासदो को पढने के लिए दें। इस से उन्हें आर्य समाज की विचारधारा और महर्षि दयानन्द जी के दृष्टिकोण के विषय में बहुत कुछ पता चल जाएगा। जैसे कि मैंने पहले भी लिखा है कि इसी प्रकार के ट्रक्ट प्रचार का एक बहुत अच्छा साधन होते हैं। इसलिए जहा भी यह मिल सकें आर्य समाजो को मगवा कर अपने पास रखने चाहिए। जिन ट्रक्टो का मैंने ऊपर वर्णन किया है उन के मिलने का पता है —सत्य प्रकाशन, वृन्दावन रोड मथुरा।

आर्य समाज की भावी रूप रेखा

(बुद्धिजीवियों के सम्मेलन की आवश्यकता)

लेखक—डा. प्रशान्त जी वेदालंकार 712 रूपनगर दिल्ली

आर्य समाज स्थापना शताब्दी 1985 मे सम्पन्न हुई और महर्षि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी 1983 मे । 1986 का वर्ष डी ए वी. शताब्दी वर्ष है, इसका महाधिवेशन फरवरी 1987 मे हो रहा है। ऋग्वेदाभिभाष्य भूमिका तथा सत्यार्थ प्रकाश रचना शताब्दिया भी सम्पन्न हो चुकी हैं। इस काल में निरन्तर अपने लेखो तथा आर्य समाज के मचो से यह प्रश्न उठाता रहा हु कि आर्य समाज के बुद्धिजीवियो की एक समोष्ठी करके आर्य समाज की भावी रूप रेखा निश्चित करली चाहिए। विशेष रूप से अजमेर मे सफल निर्वाण शताब्दी पर जब आर्य समाजियो का कुम्भ देखा, उनकी महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के प्रति आस्था और विश्वास के दर्शन किए तो मैं उक्त बात को और भी जोर-जोर से कहने लगा। पर कही इस प्रकार की विचार गोष्ठी आयोजित नही की गयी।

जब मैं आर्य समाज की भावी रूप-रेखा निर्धारित करने के लिए बुद्धि-जीवियो की समोष्ठी की चर्चा करता हु तब मैं यह मानकर चलता हु कि राष्ट्र के निर्माण मे आर्य समाज की एक महत्व पूर्ण भूमिका रही है, उसका योगदान ब्रिटिश शासन द्वारा प्रवर्तित शिक्षा-प्रणाली के समक्ष भारतीय एव गुरु-कुलीय शिक्षा प्रणाली के माध्यम से देश को वास्तविक शिक्षा देने की दृष्टि से अनुपम रहा है। अग्रेजो ने भारत पर अग्रेजी थोपनी चाही तो आर्य समाज ने स्वभाषा का नारा बुलन्द करके हिन्दी और सस्कृत की आवश्यकता पर बल दिया और यह सिद्ध किया कि भारतीय भाषाओ के माध्यम से ही राष्ट्र उन्नति कर सकता है। राष्ट्र की भावात्मक एकता के लिए महर्षि दयानन्द ने आर्य भाषा हिन्दी तथा सस्कृत पर बल दिया, उस का प्रचार और प्रसार किया। महर्षि दयानन्द ने ही स्वाधीनता का महत्व प्रतिपादित कर दिया था, 1857 के राष्ट्रीय विप्लव मे उन्होने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया था, अपनी आयु के अन्तिम तीन वर्षों मे स्वय वह राजस्थान मे रहकर राजपूत राजाओ को विदेशी शासन के विरुद्ध लोहा लेने के लिए तैयार करते रहे। बाद मे उन्ही से प्रेरणा प्राप्त कर लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, सरदार अजीतसिंह, श्री मदनलाल ढींगरा, श्री रामप्रसाद बिस्मिल, श्री मेंदालाल, डा रोशनसिंह, सरदार भगत सिंह, श्री मुख्त्यारसिंह, श्री हर बिलास शारदा तथा अन्य अनेको ने स्वाधीनता यज्ञ में अपनी-अपनी आहुतिया दी। राष्ट्र की स्वाधीनता के इतिहास मे इन का योगदान सर्वोपरि है। अस्पृश्यता निवारण, गोसवर्द्धन, स्वदेशी आन्दोलन, मद्यनिषेध, मास व धूम्रपान आदि नशीली वस्तुओ का विरोध, व्यक्तिगत जीवन मे नैतिकता व निष्ठा का प्रतिपादन आदि अनेक ऐसे कार्य थे, जिनमे आर्य समाज अग्रणी रहा और देश के पथ भ्रष्ट लोगो का मार्ग दर्शन करता रहा। उस समय का पथ भ्रष्ट युवक आर्य समाज की ज्योति से प्रकाश ग्रहण करता रहा और उसकी स्वधर्म और स्वराष्ट्र के प्रति निष्ठा बनी रही। उस की विचारधारा भारतीय बनी रहे, अपने महान् धार्मिक ग्रन्थो, अपने साहित्य की अनुपम रचनाओ, अपने गौरवपूर्ण इतिहास व अपने महान पुरुषो, अपने भौगोलिक व विविध प्रदेशो की अनुपम सम्पदाओ के प्रति उनकी आस्था उत्पन्न करके उन्होंने कभी भारतीय युवक को हतोत्साहित नही होने दिया, उसने आर्य समाज के कारण कभी सास्कृतिक रिक्तता अनुभव नहीं की।

पर स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हम ऐसा नही कह सकते। 1956-57 मे पजाब मे हिन्दी पर सकट आने पर हिन्दी रक्षा आन्दोलन चलाने पर लगा कि यह स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी देश-निर्माण व देश को ठीक दिशा देने का कार्य सम्पन्न करता रहेगा पर उस आन्दोलन की सफलता पर आज प्रश्न-वाचक चिन्ह लगा हुआ है। बाद मे भी कभी गोरक्षा आन्दोलन, कभी मद्यनिषेध कभी भाषायी विवादो में आर्य समाज के सदस्य भाग लेते रहे हैं पर कभी उस की महत्वपूर्ण भूमिका नही रही। दूसरो के नेतृत्व मे उसके उत्साही सदस्य केवल अपने मन की उत्तेजना को शान्त करते रहे, पर वे कुछ कर पा रहे हैं, ऐसा उनको कभी आभास नहीं हुआ।

यह बात नहीं कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी आर्य समाज के मचो से राष्ट्र निर्माण की बात नहीं होती रही। यह कहना भी गलत है कि आर्य समाज ने राष्ट्र को ठीक दिशा दिखाने में कमी या कोई कृपणता की हो। जब-जब राष्ट्र ने गलत दिशा में सोचा तभी आर्य समाज ने उसको चेतावनी दी। पर उसकी चेतावनी मे इतना बल नहीं रहा कि राष्ट्र के कर्णधार उसको सुन लें। भाषा-वार प्रान्तो, हिन्दू कोड बिल, शिक्षा मे भारतीय मूल्यो की अवहेलना, चीन का आक्रमण, साम्प्रदायिकता, पजाब व आसाम जैसी समस्याए, धर्मान्तरण, अस्पृश्यता-निवारण, शोषण, मद्यनिषेध आदि अनेक ऐसे प्रश्न हैं, जबकि आर्य समाज के मचो से आर्य समाजी नेता चेतावनिया देते रहे हैं, पर परिणाम नहीं रहा। इसके कई कारण थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व आर्य समाज का प्राय सम्पूर्ण नेतृत्व में कांग्रेस के साथ मिल कर स्वतन्त्रता प्राप्ति का प्रयत्न करता रहा। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी उसके नेता कांग्रेसी थे, अतः कांग्रेस की गलत नीतियो का विरोध करने में उनको व्यवहारिक कठिनाइया प्रतीत हुई। कुछ आर्य समाजी कांग्रेस की ही सहायता से लोक-सभा व राज्य सभा तथा विधान सभाओ तथा अनेक महत्वपूर्ण सरकारी पदो पर आसीन हो गए, उनमें कांग्रेस द्वारा राष्ट्र को कमजोर करने की नीतियो का विरोध करने का उतना नैतिक साहस नही। इनका लाभ कांग्रेस विरोधी राजनीति व अराजनीतिक सगठनो ने उठाने का प्रयत्न किया, पर वहां आर्य समाजी को अपने अस्तित्व को लीन करना पड़ा, परिणामस्वरूप वहां भी उसकी प्रभावी भूमिका न रह सकी। कुछ ने निर्दलीय रूप मे राजनीति मे प्रवेश किया, पर इस दलीय राजनीति में अधिक दिनों तक उनकी दाल न गल सकी। इन सबका दुष्परिणाम यह रहा कि आर्य समाजी राजनीतिक दृष्टि से विभक्त होता रहा और अन्दर ही अन्दर उसने अपने को खोखला भी अनुभव किया। ऐसा भी समय आया और सम्भवत आज भी यही स्थिति है कि प्रमुख आर्य समाजी उधर चल दिये जिधर उनको कुछ लाभ दिखाई दिया। अर्थात् राष्ट्र-निर्माण कम अपना भविष्य अधिक की नीति धीरे-2 उन्होने अपना ली। अपना सगठन कम जोर देख कर आर्य समाजियों ने अपने शैक्षणिक व दूसरी सस्थाओ के लिए सरकारी अनुदान प्राप्त करने के लिए सत्तारूढ दल के साथ तालमेल बिठाना आरम्भ किया। आर्य समाज के मचों पर सत्तारूढ दलों के नेता मुख्य अतिथि बन कर आने लगे, वे ही उनके समारोह की शोभा बनने लगे। इन लोगों को निमन्त्रित करने मे उन लोगों का आर्य समाज के सैद्धान्तिक पक्षो से कितनी समानता है? उनका चरित्र आर्य समाज के मच के उपयुक्त भी है या नहीं? आदि बातों की भी उपेक्षा होती रही। आज भी हो रही है। देखा यह गया कि निमन्त्रित नेता हमारा कितना कल्याण कर सकता है। दूसरी ओर अनेक आर्य समाज विभिन्न राजनीतिक दलो के साथ मिल कर राजनीति मे आगे बढे, पर वे आर्य समाज का उपयोग अपने स्वार्थ के लिए करते रहे और आज भी उनकी दृष्टि आर्य समाज का कार्य करने की कम, अपने स्वार्थ साधन तथा आर्य समाजी कार्यकर्ताओ व मतदाताओं का सक्रिय समर्थन प्राप्त करने की अधिक रहती है। इस समय इन्दिरा कांग्रेस, जनता पार्टी, भारतीय जनता पार्टी, लोकदल तथा अन्य दलों मे भी आर्य समाजी हैं, पर उनकी वहा आर्य समाज की दृष्टि से कोई भूमिका नहीं है।

ये सब बातें हम किसी व्यक्ति विशेष पर दोषारोपण करने के लिए नहीं लिख रहे, हम इसमे प्रत्येक आर्य समाजी को समान रूप से दोषी मानते हैं। आर्य समाज किसी व्यक्ति विशेष का नाम नही है। हमारी यह निश्चित मान्यता है कि नेतृत्व भी तभी कमजोर पड़ता है, जब उसके अनुयायियो मे कोई दम नहीं होता। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि प्रत्येक आर्य समाजी दुर्बल और सिद्धान्तहीन है। आज भी ऐसे अनेक ठोस आर्य समाजी हैं जो अपने व्यक्तिगत जीवन व सिद्धान्तो मे दृढ हैं। इनमे से अनेक उसे ठीक मार्ग पर लाने के लिए अपने हाथ पैर मार रहे हैं, उन मे से कुछ देश और आर्य समाज दोनो की दुर्व्यवस्था को देख कर चिन्तित हैं, कुछ थक कर उदासीन हो गए हैं, कुछ केवल देख रहे हैं कि आगे क्या होता है?

यह सिलसिला पुनरावृत्ति होगी कि देश ठीक दिशा मे आगे नहीं बढ पा रहा। राष्ट्रीय नेताओं में चारित्रिक दरिद्रता नहीं है। उसके दलों की नीतियां खोखली हैं। उसका कारण अवसरवादिता के सिद्धान्तों का अनुसरण है। देश में विघटन है। अनैतिकता और भ्रष्टाचार है। देश के युवक दिशाहीन होकर इधर-उधर भटक रहे हैं और उन्हें कोई भी व्यक्ति या सस्था ठीक मार्ग दर्शन नहीं कर पा रही। ऐसे समय में उन सभी सस्थाओ का दायित्व है कि वह अपने सैद्धान्तिक पक्ष व गौरवपूर्ण इतिहास को स्मरण कर राष्ट्र के सास्कृतिक खोखलेपन को दूर करें। आर्य समाज अपने सिद्धान्त व व्यवहार में स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व यह कार्य करता रहा है। अत: उसका यह काम करना और देश को ठीक दिशा देने के लिए आगे आना और भी आवश्यक है।

(क्रमश:)

आर्य समाज की एक विभूति–४

आचार्य देव प्रकाश जी

लेखक—श्री भोलानाथ जी दिलावरी,
प्रधान, केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर

(15 फरवरी से आगे)

मध्य प्रदेश में उपदेशक विद्यालय

मध्य प्रदेश में अन्य मतमतान्तरों के प्रभाव एव प्रचार, प्रसार को समाप्त करने के लिए आचार्य जी ने रतलाम में एक दयानन्द उपदेशक विद्यालय की जिसमे प्राय सब मतों के विशेष रूप से ईसाई, बौद्ध तथा इस्लाम दर्शन के प्रकाण्ड जानकर उपदेशक तैयार किए जाए ताकि वह इन भोली-भाली पिछडी जातियो को ईसाई, इस्लाम एव मजहबो से बचाकर उनमें आर्य धर्म की पवित्र भावना, जाति की रक्षा और देश भक्ति की ज्योति को जगा दें। इस उपदेशक विद्यालय के प्रथम कुलपति शास्त्रार्थ महारथी प कालीचरण जी को नियुक्त किया गया। इस प्रकार मध्य प्रदेश के सारे क्षेत्र को अन्य मत-मतान्तरो से सुरक्षित कर इसे दुर्ग सा बना दिया।

गन्धर्व जाति की शुद्धि—

मध्य प्रदेश मे एक गन्धर्व जाति है जो मुसलमान हो चुके थे। यह लोग व्यवसाय से गाने बजाने का कार्य करते थे। जब आचार्य जी को इनके सम्बन्ध में सूचना मिली तो वह भोपाल, नरसिंहगढ गए। उन दिनो भोपाल मे एक कट्टर मुसलमान नवाब की हुकूमत थी। ऐसे समय मे शुद्धि का कार्य करना भय से खाली नही था। वहा पहुच कर आचार्य जी कुछ आर्य वीर दल के सैनिकों को लेकर गन्धर्व लोगो को मिले और उन्हें शुद्ध होने के लिए तैयार किया। अन्ततः .... में एक बडा हवन-यज्ञ करके, इनके करीब 100 व्यक्तियो को शुद्ध किया। तत्पश्चात् इर्द-गिर्द के ग्रामो मे रहने वालो गन्धर्वों के नाम पते लिख कर आर्य वीर दल के एक कर्मठ उपदेशक को साथ लेकर स्वय भी उन ग्रामों मे चल दिए। कई स्थानो के गन्धर्वों को आगे ही सूचना मिल गई थी कि सब गन्धर्व शुद्ध हो रहे हैं। इस प्रकार यह लोग बडी संख्या में प्रसन्नतापूर्वक शुद्ध होने लगे। इस प्रकार 1000 से भी अधिक गन्धर्वों की शुद्धि की गई। मध्य प्रदेश में इन्होंने कई छात्रावास एव स्कूल बनाये। रतलाम में एक छात्रावास जिसमें 40-50 भील लड़के रहते थे, दूसरा छात्रावास सैलाना में, जिसमें 30 छात्र थे। तीसरा कन्या छात्रावास .... में, इसमें 29-30 छात्रा रहती थे। आचार्य जी के कार्य से प्रभावित होकर .... श्री .... और डा. .... के अन्दर अभिलाषा उत्पन्न हुई कि वह भी भीलों के उत्थान के इस कार्य में सहायक हो। इस प्रकार उन्होंने एक वनवासी सेवा मण्डल नाम की सस्था का गठन किया। इसके अन्तर्गत एक छात्रावास लडकों का सरवन मे और एक कन्याओ का सैलाना मे खोला गया। यह सन् 1958 की बात है।

बहाईयो की शुद्धि—

इन दिनो मध्य प्रदेशो मे 'बहाई' अपने प्रचार द्वारा सैकडो को बहाई मुसलमान बना रहे थे। पता लगते ही आचार्य जी उज्जैन पहुचे। इस क्षेत्र मे बहाई दो तीन वर्षों से अपना कार्य कर रहे थे। आचार्य जी ने कालेज के कुछ आर्य वीरो को साथ लिया और बहाइयो को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। जो आर्य समाज उज्जैन प्रांगण में हुआ। बहाई मौलवी आचार्य जी के सामने एक-डेढ घण्टे में ही दम तोड गए। इस अवसर पर भारी जनसख्या उपस्थित थी। परिणामत जितने लोग बहाई बन चुके थे, वह पुन. हिन्दू धर्म मे वापिस आ गए। इस पर बहाई मुसलमान बोरिया बिस्तर गोल करके उज्जैन छोड गए। आचार्य जी ने बहाइयो के सिद्धान्तो पर एक पुस्तक "यथार्थ दर्शन" नाम की भी लिखी। जिससे बहाई हलको में तहलका मच गया। आचार्य जी के प्रयत्न से करीब एक लाख व्यक्ति वापिस अपने धर्म में शुद्ध होकर आ गए। इस कार्य से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आचार्य जी को दो सन्यासी अपने खर्चे पर दिये। बहाईयो की पूर्ण समाप्ति करने में आचार्य जी को उज्जैन मे करीब 5-6 वर्ष खूब परिश्रम करना पडा।

सन्त चरणदास जी को सुझाव

झाबुआ में ईसाई लोग गया मामलेँ बनाने मे लगे हुए थे। इसी समय अमृतसर से कुछ अकाली ज्ञानी उपदेशक उज्जैन मे सिख धर्म का प्रचार करने आ धमके और बहाइयो मे प्रचार करने लगे कि देखो हिन्दू तो तुम्हे समान अधिकार नही देते, आओ गुरु जी की शरण में हम तुम्हे समान अधिकार देंगे। इसका कुछ लोगो पर अवश्य प्रभाव पडा। इस पर उन्होंने एक बडे सम्मेलन की योजना बनाई जिसमे 10-20 हजार लोगो को इकटठा सिख बनाने की योजना थी। इसके लिये उन्होंने बहाई जाति के नेता "सन्त चरणदास" जी को फसाया। इस सन्त के हजारो श्रद्धालु शिष्य थे, जो अपने गुरु का आदेश मानकर सम्मेलन म उपस्थित होने लगे। वहा सन्त जी के बिठाने के लिए एक सुन्दर ऊचा मच बनाया गया और एक हाथी भी उनके जलूस के लिए लाया गया

इस बात का पता चलते ही आचार्य जी ने सकल्प किया कि जैसे भी हो 'सन्त चरणदास' जी से अवश्य भेंट कर, अकालियों की इस योजना को विफल बनाया जाए और पन्थ सम्बन्धी वास्तविक जानकारी उन्हे कराई जाए। किसी प्रकार सन्त जी को आचार्य जी के पास लाया गया। आपका अकालियो के डेरे के समीप अन्धेरे मे ही एक पुल पर मेल हुआ। आचार्य जी ने सन्त जी का आदर सत्कार करके निवेदन किया कि महाराज इतनी आयु तक तो आप मद्यपान तथा मासाहार का बल पूर्वक निषेध करते रहे और हजारो को आपने इन घृणित पापो से बचाया भी, परन्तु सिख बनने के बाद, कल से आप मद्यमास के सेवन का प्रचार आप कैसे करेंगे? सिखो मे इन दोनो पापो से किसी मे भी घृणा नहीं। मास, शराब, सेवन की कोई बन्दिश नही। ये तथ्य आचार्य जी ने ऐसे प्रभावी ढग से प्रस्तुत किया कि सन्त जी के सुसस्कृत मस्तिष्क पर तुरन्त प्रभाव पडा। सन्त जी तुरन्त बोल उठे, क्या कह फस गया हू। इस पर आचार्य जी ने सुझाव दिया कि यह सामने रेलवे स्टेशन है, गाडी छूटने का समय निकट है। आप बिना विलम्ब उस गाडी पर चढ जाइये। पुन कभी अकालियो को मुह न लगाइये। सन्त जी को यह सुझाव जच गया और वह चुपके से रेलगाडी द्वारा अपने आश्रम में आ पहुचे। रात बाई चली गई। सन्त जी का कही पता न मिला। इस प्रकार हमारे आचार्य जी ने अपने सुदर्शन चक्र से अकालियो की योजना विफल कर दी।

आचार्य जी की उपरलिखित उपलब्धिया लगभग वर्ष सन् 1964 से 1969 के मध्य की है। आचार्य जी की सफलताओ और कार्य को देख कर अब "सार्वदेशिक सभा" ने झाबुआ मे शुद्धि कार्य के लिए सहायता देना स्वीकार कर लिया। आचार्य जी ने थादला मे भील लडको के लिए एक छात्रावास खोल दिया और जोर-शोर से काम आरम्भ कर दिया। झाबुआ मे 5 तहसीलें हैं। इनमे ईसाइयो का काम 80 85 वर्षों से चालू है। प्रत्येक तहसील मे अस्पताल, छात्रावास एव कई प्रचारक हैं। इतना होते हुए भी आचार्य जी के प्रयत्न से 3-4 हजार भीलो की शुद्धि कर ली गई। और जनजागरण के लिए बडे बडे बडे सम्मेलन हुए जिन मे एक थदला तथा दूसरा झाबुआ मे हुआ। अब ऐसा प्रबन्ध भी किया गया कि प्रतिवर्ष यह सम्मेलन होते रहे और स्कूलो की सख्या मे भी वृद्धि की जाती रहे। अब तक आचार्य जी की, आर्य समाज, हिन्दू जगत् की सेवाओ की सुगन्धि सर्वत्र फैल चुकी थी, इनके प्रति श्रद्धा का पर्याप्त वातावरण निर्माण हो चुका था। ज्ञानी पिण्डी दास जी भी आर्य जगत एव हिन्दू जगत की एक विभूति बन चुके थे। उन की सेवायें भी स्वर्णाक्षरो मे लिखने योग्य हैं। आचार्य जी और ज्ञानी पिण्डीदास जी इकटठे समस्त आर्य जगत की दिलोजान से हर सकट मे सेवा करते आ रहे थे।

ज्ञानी पिण्डी दास जी एव अन्य समाज के प्रमुख गणमान्य बन्धुओ ने आचार्य जी को अभिनन्दित करने का निश्चय किया ताकि इनकी सेवाओ के प्रति आभार व्यक्त किया जा सके। इस उद्देश्य के लिए ज्ञानी जी को, जैसे तैसे आचार्य जी को मध्य प्रदेश से वापिस बुलाने का कार्य सौंपा गया।

आचार्य जी को अमृतसर बुलाकर पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती की अध्यक्षता मे 29 अक्तूबर 1972 मे आर्य समाज लोहगढ, अमृतसर मे एक विशाल समारोह मे सम्मानित किया गया। इस अवसर पर एक थैली और अभिनन्दन ग्रन्थ भी भेंट किया गया। इस उपलक्ष्य मे आर्य समाज एव हिन्दू सस्थाओ के सैंकडो नेता गण दूर समीप से अमृतसर आए और उन्होने अपनी भावभीनी श्रद्धा के पुष्प अर्पित किये। आचार्य जी इस समय अपनी आयु के 83 वर्ष पार कर चुके थे। अभिनन्दन के पश्चात आचार्य जी फिर रतलाम (मध्य प्रदेश) चले गए और वहा आदिवासी, भील जातियो मे पूर्ववत् कार्य करने मे जुट गए।

आयुर्यज्ञेन कल्पताम् । यजु. १८-२७

पदार्थ—(आयु) जीवन अवधि या जीवन (यज्ञेन) यज्ञ से अथवा याज्ञिक कर्मों के निरन्तर करने से (कल्पताम्) समर्थ अर्थात् सशक्त और सक्षम बन जाता है।

यह यजुर्वेद के उपरोक्त मन्त्र की एक सूक्ति है।

भावार्थ—हमारा यह मानव जीवन अपने आप ही उत्तम या अधम नहीं बन जाता। अपितु जैसे कर्म हम करते हैं। अच्छे वेदोक्त कर्म अथवा दूषित निषिद्ध या वेद विरुद्ध कर्म करते हैं। तदानुसार हमारा जीवन उत्तम या अधम बन जाया करता है। यह ईश्वर का अटल नियम है।

इस उपरोक्त वैदिक सूक्ति का भाव यही है। कि यह मानव जीवन याज्ञिक कर्मों के करने से ही सशक्त शक्तिशाली और सक्षम अर्थात् कार्य करने की क्षमताओं तथा योग्यताओं वाला बन जाया करता है।

अथर्ववेद के 12-5-1 के मन्त्र मे भी ऐसा ही उपदेश दिया गया है। "श्रमेण तपसा सृष्टा ब्राह्मणा" अर्थात श्रम और तप से ही मनुष्यो का जीवन उत्कृष्ट या महान् बन सकता है।

जिन याज्ञिक कर्मों से मानव का जीवन सक्षम बन सकता है। उनका स्वरूप इस प्रकार है। यज्ञ के तीन मुख्य लक्षण माने गए हैं। देव पूजा, संगति करण और दान। देव पूजा का अर्थ है। किसी उत्कृष्ट या पवित्र उद्देश्य की पूर्ति करना किसी महान् सत्य को कार्य रूप मे परिणित करना। संगति करने का अर्थ है। किसी कार्य की पूर्ति के लिए समस्त साधनो को एकत्र करना। और दान का अर्थ है। किसी व्यक्ति को या व्यक्तियो को उनकी अभीष्ट व कल्याणकारी कार्यों मे सहर्ष या सहानुभूति पूर्वक सहयोग देना। यथा समय ही देना। अथवा किसी पवित्र और कल्याणकारी कार्य की पूर्ति के लिए जो आत्म त्याग किया जाता है। उसे भी दान ही माना जाता है।

जो कर्म ईश्वरीय ज्ञान या उसकी व्यवस्थाओ या उसके सृष्टि नियमो के अनुरूप होते हैं, और जिन के परिणाम स्वरूप किस व्यक्ति समूह का उपकार होता है। वह सब कर्म भी याज्ञिक कर्म कहलाते हैं।

याज्ञिक कर्मों के करने मे मानव की आत्मा या उसका अन्त करण तथा उस का सम्पूर्ण शरीर पवित्र हो जाता है। भगवद् गीता के अनुसार यज्ञ, दान व तप तीनो कर्म ही मानव के शरीर मन और आत्मा को पवित्र करने वाले सफल साधन माने गए हैं।

कल्पताम् शब्द का अर्थ समर्थ, सशक्त और सक्षम होना ही है। मनुष्यो की कर्म शक्ति का अर्थ है कि वह शारीरिक या मानसिक या आत्मिक दृष्टि से पूर्ण स्वस्थ या सक्षम हो। इन तीनो मे केवल आत्मिक बल ही सर्वोपरि माना जाता है। और आत्मा की शक्ति उस के विशुद्ध सत्य ज्ञान और उसकी कर्म करने की शक्ति या समर्थ मे ही है। ज्ञान और प्रयत्न ही आत्मा की दोनो मुख्य शक्तियां हैं। इन दोनो प्रकार की शक्तियो को निरन्तर बढ़ाना ही परम उत्कृष्ट साधना ही कहलाती है। आत्मा को सशक्त बनाने के लिए अर्थात् उसकी ज्ञान और कर्म करने की शक्ति को परिवृद्ध करने के लिए सत्य ज्ञान के अनुरूप ही कार्य करना महान् तप भी है या अनिवार्य साधन भी है।

ज्ञान और कर्म का सन्निध्य ही परम पुरुषार्थ कहलाता है। अर्थात् अपने उपलब्ध सत्य ज्ञान (वेदोक्त ज्ञान) के अनुरूप ही अपना सम्पूर्ण व्यवहार बनाये रखना ही जीवन को याज्ञिक बनाना ही जीवन की महान् उपलब्धि मानी गई है।

उपरोक्त यजुर्वेद के इसी मन्त्र में एक अन्य सूक्ति से याज्ञिक जीवन के स्वरूप और उसकी महत्ता को इस प्रकार व्यक्त किया गया है। "यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्" कि याज्ञिक कर्म स्वरूप से नही अपितु यज्ञ की भावना से करने से ही उत्कृष्ट हुआ करते हैं। दूसरो के उपकार की भावना को अपने व्यवहार से सार्थक बनाना अथवा जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जो यज्ञ किया जावे उस उद्देश्य की पूर्ति करना ही यज्ञ का विशुद्ध स्वरूप होता है। केवल स्थूल क्रिया को ही यज्ञ नहीं कहते ?

उपरोक्त सूक्ति मे जो आयुर्यज्ञेन कल्पताम् के अटल या अपरिवर्तनीय सत्य की अभिव्यक्ति की गई है कि जीवन केवल याज्ञिक कर्मों के करने से ही सशक्त और सक्षम हो सकता है। इस का भाव भी यही है कि जो कार्य विशुद्ध भावना से और साधनो के एकीकरण के पश्चात् पूर्णश्रम और आत्म त्याग से किये जावें वह ही पूर्ण सफल सिद्ध हुआ करते हैं। जीवन की क्षमता यही है कि हम अपने याज्ञिक कर्मों को सफल या सार्थक बनावें।

—सुतपाल साधक लुधियाना

(प्रथम-पृष्ठ का शेष)

न उठा सकें। पंजाब एक सीमान्त प्रदेश है। देश को बचाने के लिए पंजाब को बचाना आवश्यक है। इसलिए यह सम्मेलन माग करता है कि भारत सरकार शीघ्र ही पंजाब के पुनर्गठन के लिए पग उठाए और एक ऐसा सीमान्त प्रदेश बनाया जाए, जो पाकिस्तान की तरफ से भी सुरक्षित रहे और अन्दर से जो शक्तियां इसके विघटन के लिए काम कर रही हैं, वे भी सफल न हो सकें।

यह सम्मेलन यह भी स्पष्ट कर देना चाहता है कि अपने सिख बन्धुओं के साथ हिन्दुओ का कोई मतभेद या मनमुटाव नही है। परन्तु अकाली दल की साम्प्रदायिक व राष्ट्र विरोधी नीतियो को पंजाब की हिन्दू जनता अपने लिए घोर संकट का विषय समझती है। जब तक अकाली दल अपनी संकीर्ण मनोवृत्ति को नही छोड़ता। उस समय तक पंजाब मे शान्ति और सद्भावना का वातावरण पैदा नही हो सकता।

इसलिए यह सम्मेलन देश की राष्ट्रवादी और देश भक्त जनता से निवेदन करना चाहता है कि पंजाब को बचाने के लिए और देश की एकता, प्रभुसत्ता और संगठन की सुरक्षा के लिए एक विशाल पंजाब बनाने में हमारा हाथ बटाए ताकि जो कुछ पंजाब मे हो रहा है, वह शीघ्र समाप्त हो जाए और यह प्रदेश एक बार फिर उसी प्रकार प्रगति के रास्ता पर चल सके, जैसे कि यह आज से पांच वर्ष पूर्व चल रहा था। **प्रस्ताव संख्या 2**

पिछले पांच वर्षों में पंजाब मे सैंकड़ों निर्दोष व्यक्ति उग्रवादियो के हाथो मारे गए हैं। इनमे कई महिलाएं भी थी, बच्चे भी थे। जो कुछ किया गया है, वह केवल देश के हितो के विरुद्ध ही न था, मानवता और धार्मिकता के भी विरुद्ध है। कोई भी धर्म निहत्थे और निर्दोष व्यक्तियो की हत्या की अनुमति नहीं देता। परन्तु पंजाब में यह सब कुछ धर्म के नाम पर किया गया। वह धर्म जिसके प्रवर्तक शान्ति के अग्रदूत श्री गुरुनानक देव थे, उनके अनुयायी आज जगह-जगह निर्दोष व्यक्तियो की हत्या कर रहे हैं और पंजाब के माथे पर एक ऐसा कलंक लगाया जा रहा है जिसे मिटाना कठिन हो जाएगा।

यह सम्मेलन उन सब भाईयों बहिनो और बच्चो को अपनी श्रद्धांजलि भेंट करता है, जो निर्दोष मारे गए और जो उग्रवाद और आतंकवाद की कुत्सित प्रवृत्ति के शिकार हुए। यह सम्मेलन भारत सरकार से यह भी मांग करता है कि उन सबके परिवारो की केवल आर्थिक सहायता ही न की जाए, उन्हे इस योग्य बनाया जाए कि वे एक स्वाभिमानी और सम्मानित जीवन व्यतीत कर सकें। उग्रवाद और आतंकवाद प्रत्येक समाज के लिए असहनीय प्रवृत्ति है। हमें अपनी प्राचीन संस्कृति और धार्मिक भावनाओं की सुरक्षा के लिए उन शक्तियों के विरोध में खड़े हो जाना चाहिए जो पंजाब का वातावरण बिगाड़ने और देश की स्वाधीनता एकता और प्रभुसत्ता के लिए एक संकट पैदा करना चाहती हैं, जो भाई-बहनें और बच्चे इन पृथकतावादी हत्यारों के हाथों मारे गए हैं, वह भी उसी प्रकार देश की एकता और स्वाधीनता की रक्षा के लिए मारे गए हैं, जिस प्रकार 1947 में हमारे लाखों हिन्दू भाई मारे गए थे। इस सम्मेलन की यह निश्चित धारणा है कि प्रत्येक देश भक्त और धर्मप्रेमी भारतीय का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वे विघटनकारी तत्वों के विरुद्ध एकजुट होकर देश की स्वाधीनता, प्रभुसत्ता और एकता की रक्षा के लिए कटिबद्ध हो जाए। **प्रस्ताव संख्या 3**

—हिन्दी न केवल देश की राष्ट्रभाषा है, यह हमारी एकता और प्रभुसत्ता की भी प्रतीक है। इसके साथ हमारी प्राचीन संस्कृति और परम्पराएं भी सम्बन्धित हैं। इसलिए प्रत्येक देशभक्त भारतीय का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह हिन्दी के प्रचार व प्रसार के लिए अपनी ओर से पूरा प्रयत्न करें। परन्तु यह सम्मेलन अत्यन्त रोष और निराशा के साथ कहने पर विवश है कि पंजाब में हिन्दी को समाप्त करने के लिए सरकार की ओर से पूरा प्रयत्न किया जा रहा है। सरकारी कार्यालयो मे विशेषकर हिन्दी के लिए अब कोई स्थान नहीं रहा। हिन्दी पर अंग्रेजी को अधिक महत्व दिया जाता है और पंजाब मे हिन्दी का अस्तित्व ही समाप्त करने की एक योजनाबद्ध कार्यवाही की जा रही है।

अकाली दल की ओर से यह कहा जा रहा है कि सिखों का एक पृथक् अस्तित्व है और उसकी सुरक्षा के लिए पंजाबी भाषा का प्रचार और भी अधिक आवश्यक है और उसके लिए सरकार पूरा प्रयत्न कर रही है। यह सम्मेलन यह निश्चित घोषणा करना चाहता है कि हम किसी भी भाषा के विरुद्ध नहीं हैं, न हमारा पंजाबी से कोई विरोध है, परन्तु हमारा यह भी निश्चित मत है कि देश की एकता और स्वाधीनता की रक्षा के लिए हिन्दी की रक्षा और उन्नति भी आवश्यक है। इसलिए यह सम्मेलन पंजाब के सब राष्ट्रवादी और देशभक्त भाईयो और बहनो से यह निवेदन करना चाहता है कि अब हमें अपनी एकता की रक्षा के लिए हिन्दी की रक्षा करनी चाहिए। प्रत्येक घराने मे हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग होना चाहिए। अपने पत्र व्यवहार, निमन्त्रण पत्र और इस प्रकार के दूसरे सब कार्य हिन्दी में होने चाहिए। हमारी शिक्षण संस्थाओं का माध्यम हिन्दी ही रहना चाहिए। पंजाब में जो साम्प्रदायिक तत्व देश की एकता को भ्रष्ट-भ्रष्ट करने का प्रयत्न कर रहे हैं, इसका हम एक ही उत्तर दे सकते हैं कि हिन्दी का अधिक से अधिक प्रचार व प्रयोग किया जाए। हम सबको यह संकल्प करना चाहिए कि हम हिन्दी पढ़ेंगे और हिन्दी लिखेंगे और अपने दिन प्रतिदिन के व्यवहार में इसका अधिक से प्रयोग करेंगे और अपने बच्चों को हिन्दी के माध्यम से शिक्षा दिलाएंगे। हिन्दी के द्वारा ही हम पंजाब का सम्बन्ध अपने भारत के देशवासियों के साथ रख सकते हैं। इसलिए हिन्दी के प्रचार व प्रसार के लिए प्रत्येक देशभक्त व राष्ट्रप्रेमी को अपना अधिक से अधिक सहयोग देना चाहिए।

पावन वैदिक धर्म हमारा ! प्राणों से भी प्यारा है

लेखक—श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ. प्र)

दयानन्द के स्वप्नो को, साकार तुम्हे ही करना,
आतप-दुख-पीड़ा जन की, आज तुम्हे ही हरना,
बढ़े चलो ! हे दयानन्द के अनुपम वीर सिपाही—
वसुन्धरा के कण-कण मे, नवशक्ति तुम्हे ही भरना ।

बढ़ो सपूतो ! पावन वैदिक धर्म की रक्षा करनी है,
गो-गंगा की—गायत्री की, तुम्हे सुरक्षा करनी है,
बढ़े चलो ! हे दयानन्द के अनुपम वीर सिपाही—
भारत मा के स्वाभिमान की तुम्हे सुरक्षा करनी है ।

धर्म का लोप हो रहा, बढ़ता अति पाखण्ड,
दुराचार की आंधी भू पर, चलती आज प्रचण्ड,
बढ़े चलो ! हे दयानन्द के अनुपम वीर सिपाही—
सबक सिखाना दुराचारियो को, देना है दण्ड ।

भारत की धरती पर प्रतिदिन, हैं अवतार बढ़े जाते,
ठग विद्या से भोले लोगो के हैं भाग्य गढ़े जाते,
बढ़े चलो ! हे दयानन्द के अनुपम वीर सिपाही—
शोषित पीड़ित मानव के समुदाय तुम्हे हैं आज बुलाते ।

मूर्ति पूजना बन्द नही है, बढ़ता जाता क्रन्दन,
दानवता के तत्वो का है होता फिर अभिनन्दन,
बढ़े चलो ! हे दयानन्द के अनुपम वीर सिपाही—
भव्य चेतना, नव जागृति का मुखर करो स्पन्दन ।

बढ़ती है अज्ञान अविद्या, तिमिराच्छादित देश,
ढकी हुई है पशु प्रवृत्तियो से, यह भूमि विशेष,
बढ़े चलो ! दयानन्द के अनुपम वीर सिपाही—
हुआ प्रकम्पित आर्तनिनादों से है आज स्वदेश ।

शपथ तुम्हे है सत्य-धर्म की, आगे बढ़ना सत्वर,
वैदिक पथ पर चलते रहना, निर्भय बढ़े निरन्तर,
... हे दयानन्द के, अनुपम वीर सिपाही—
... जगती तल के सारे नारी-नर ।।

रजिस्ट्रेशन आफ न्यूज पेपर सेंट्रल रूल 1965 के अनुसार स्वामित्व व अन्य विवरण ब्यौरा— फार्म न 4 (रूल न 8)

साप्ताहिक आर्य मर्यादा जालन्धर

1	प्रकाशन का स्थान	———जालन्धर
2	प्रकाशन क्रम	———साप्ताहिक
3	मुद्रक का नाम	———वीरेन्द्र एम ए
	राष्ट्रीयता	———भारतीय
	पता	———साप्ताहिक आर्य मर्यादा द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर ।
4	प्रकाशक का नाम	———वीरेन्द्र एम ए
	राष्ट्रीयता	———भारतीय
	पता	———साप्ताहिक आर्य मर्यादा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर ।
	सम्पादक का नाम	———वीरेन्द्र एम ए
	राष्ट्रीयता	———भारतीय
	पता	———द्वारा साप्ताहिक आर्य मर्यादा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर ।
6	उन व्यक्तियो के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों ।	आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब गुरुदत्त भवन चौक किशनपुर जालन्धर

मैं वीरेन्द्र एम ए एतद् द्वारा घोषित करता हू कि मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं ।

ह —वीरेन्द्र
प्रकाशक
हिन्दी साप्ताहिक आर्य मर्यादा
जालन्धर ।

स्त्री आर्य समाज की ओर से लुधियाना में विशेष यज्ञ

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना में बसन्त सक्रान्ति तक विश्व-शान्ति गायत्री महायज्ञ बड़ी धूमधाम से चलता रहा ।

जिसके ब्रह्मा पूज्यपाद स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती, अध्यक्ष गुरुकुल चम्पा थे ।

लुधियाना की प्राय सभी स्त्री समाजों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया । विशेष रूप से स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार की प्रधाना ... की ... का हमें पूर्ण सहयोग मिलता रहा ।

इस महान् यज्ञ में बहन ... जी ..., श्रीमती ... जी ... श्रीमती ... जी ... श्रीमती ... जी ... श्रीमती वेद रानी जी सुद मन्त्री ने दिन-रात परिश्रम करके इस यज्ञ को सफल बनाया ।

गायत्री का पाठ श्रीमती प्रेम जी सेठी ने बड़ी श्रद्धा से पूर्ण करवाया । पूर्णाहुति के दिन ब्रह्मा जी का यज्ञ शेष बांटा गया । इस विश्व शान्ति यज्ञ की सब से बड़ी विशेषता यह रही कि हम ने निम्नलिखित चार कर्मठ बहिनों का पुस्तक एव शाल भेंट कर के स्वागत किया

श्रीमती ... जी ...
श्रीमती सीता जी ...
श्रीमती ... जी ...
कुमारी ... जी ...

—... मन्त्री ...

८००से अधिक ईसाई वैदिक धर्म की शरण में

6-7-8 फरवरी को गुरुकुल आमसेना का महोत्सव समारोह के साथ सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर अनेक साधु सन्यासी एव विद्वान पधारे थे । इस अवसर पर शुद्धि के दो कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए । पहला 7 फरवरी को गुरुकुल में 36 परिवारों के 158 ईसाईयो ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली । पुन 10 फरवरी को ... पाली (...) मे 166 परिवारों के 670 से अधिक ईसाईयो ने हिन्दू धर्म की शरण ली । दोनो कार्यक्रम उत्साहवर्धक वातावरण में सम्पन्न हुए । इस अवसर पर श्री पृथ्वीराज शास्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महात्मा श्री प्रेम प्रकाश वानप्रस्थी (धूरी) श्री ...नन्द जी (हरिद्वार) आदि ने आर्शीवाद दिया । कार्य का सचालन श्री प. ... शास्त्री ने अत्यन्त योग्यता पूर्वक किया । इस आयोजन में सार्वदेशिक सभा से आर्थिक सहायता तथा श्री प्रेम प्रकाश जी से वस्त्रो की सहायता मिली इस सारे कार्यक्रम के आयोजन का श्रेय श्री स्वामी धर्मानन्द जी आचार्य गुरुकुल आमसेना एव प्रधान उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा को है । जिनके अथक प्रयत्न से सारा आयोजन सफल हो सका ।

—वामदेव आर्य
मुख्याध्यापक

तलवाड़ा टाऊनशिप में आर्य युवकों के बढ़ते कदम

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आदेशानुसार मई 1985 में आर्य युवकों को संगठित करने का निर्णय लिया गया, जिसमें आर्य युवक सभा पंजाब की कार्य कारिणी समिति बनाई गई। इसके साथ साथ युवकों को अलग अलग शहरों में युवक सभा की शाखाएं स्थापित करने के लिए जिम्मेवारी सौंपी गई थी। युवकों के प्रयत्नों के फलस्वरूप कई स्थानों एवं आर्य समाजों में हमें शाखाएं स्थापित करने में सफलता मिली है।

इस सम्बन्ध में तलवाड़ा के युवक कैसे पीछे रह सकते हैं? गत दिनों तलवाड़ा में आर्य युवक सभा तलवाड़ा द्वारा एक समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें मुझे भी सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ। नन्हे मुन्ने प्यारे बच्चों ने वेद मन्त्रों भजनों एवं भाषणों का सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किया तथा बच्चों को पारितोषिक दिए गए।

श्रीमती विद्यावती जी सम्मानित

आर्य युवकों द्वारा एक बहुत ही अच्छे एवं सराहनीय कार्य का आरम्भ किया गया है, जो आर्यजन आर्य समाज के कार्य में अधिक से अधिक सहयोग देगा, उसे सम्मानित किया जाएगा। इस वर्ष यह सौभाग्य श्रीमती विद्यावती जी को प्राप्त हुआ। उन्हें सम्मानित किया गया। श्रीमती विद्यावती जी की आयु साठ वर्ष है वह गांव हाजीपुर की रहने वाली हैं। आपके घर से आर्य समाज लगभग 13 किलोमीटर है। आप हर शनिवार एवं रविवार को साप्ताहिक सत्संग में भाग लेती हैं।

भगत एवं पटाखा की जोड़ी—

तलवाड़ा ही में मुझे श्री भगत एवं पटाखा जी के भजन भी सुनने को मिले। मैं समझता हूं कि ये दोनों युवक बहुत ही अच्छे कलाकार हैं। तथा वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। दोनों का कार्यक्रम अति सराहनीय था। —रोशनलाल शर्मा

आर्य समाज रामपुरा कोटा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज रामपुरा कोटा के इक्कीसवें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष में दि 12-2-87 से 15-2-87 तक आध्यात्मिक जीवन प्रवचन एवं संक्षिप्त यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री रामसिंह जी गाजियाबाद, मीरावती जी ज्वालापुर, रामप्रसाद वेदालंकार गुरुकुल कांगड़ी कु महीपाल सिंह भजनोपदेशक आदि ने अपने उपदेश दिये।

प्रथम दिन दि 22-2-87 को प्रात यज्ञ एवं भजनोपदेशक के पश्चात् मध्यान्ह 1 बजे नगर में शोभा यात्रा निकाली गई जो शहर के मुख्य मार्गों से गुजरती हुई साथ आर्य समाज में आई। जिसमें नगर की आर्य समाजों के अलावा आर्य समाज झालावाड़, रावतभाटा आदि की आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने एवं आर्य शिशु शाला और मातृ सेवा सदन के छात्र-छात्राओं ने भी भाग लिया।

दि 16 2 87 को मध्यान्ह 1 बजे से 4 बजे तक अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल के जीवन चरित्र विषय पर वाक प्रतियोगिता सम्पन्न हुई, जिसमें मातृसेवा सदन स्कूल की छात्रा कल्पना अग्रवाल प्रथम तथा आर्य शिशु शाला का छात्र द्वितीय रहा। रात्रि को भजनोपदेश हुए। —रामदयाल मेहरा

शोक समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा दिनांक 11-1-87 में निम्न महानुभावों के स्वर्गवास पर उनके परिवारों से सहानुभूति प्रकट करते हुए शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

श्री मुंशी देवराज जी रामपुरा फूलमण्डि, श्रीमती परमेश्वरी देवी सोन्धी जालन्धर, श्री विष्णु मित्र जी कुलपति गुरुकुल भज्जर (हरियाणा), श्री भास्कर हुसराज जी भटिण्डा। श्री बलराज जी हाण्डा, श्री प्रमिल जी कपिला लुधियाना, श्री टेकचन्द जी शर्मा नवांशहर, श्रीमती कमला जी खन्ना (बहन श्री प्रि. बलभद्र जी मल्होत्रा पटियाला) श्रीमती विमला सोन्धी, श्री नकुलसेन सोन्धी।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति प्रदान करें और उनके परिवारों को धैर्य प्रदान करें।

—सद्दानन्द शर्मा
सभा महामन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 - रजि. नं. N.W/J.L.55

वर्ष 18 अंक 49, 2 चैत्र सम्वत् 2043 तदानुसार 15 मार्च 1987 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

विद्या का जीवन में महत्व

लेखक—श्री अमरनाथ जी आर्य तलवाड़ा टाउनशिप

विद्यां चाविद्यां च यस्तद् वेदोभ्यम् सह ।
अविद्या मृत्यु तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते ।।

वेद की झलमलाती इस ऋचा से यह सत्य झलकता है कि—
नरत्व दुर्लभं लोके, विद्या तत्र सुदुर्लभा ।

भाव—संसार में पहले तो मानव जन्म ही दुर्लभ है, परन्तु विद्यालय तो इससे भी दुर्लभ है ।

कहते हैं—परम पिता परमात्मा ने जब यह सृष्टि रच ली । पावन-पक्तियां सज गई । नदिया पर्वत-गोदी मे खेलने लगीं । वसुन्धरा ने हरियावली चादर ओढ़ली । नाना जन्तु किलोलें करने लगे । सूर्य का प्रकाश और चान्द की चान्दनी धरती-मा को आलोकित करने लगी । वायु अपनी शीतलता और पक्षी अपनी संगीत लहरी बिखेरने लगे और [illegible] रानी अपने मदमाते-यौवन व पूर्ण-वैभव के साथ जब मवल-मचल [illegible] प्रस्तुत हुई तो स्रष्टा ने उसे निहारा । उसे ये सब कुछ खाली-खाली सा लगा । उसे लगा कि यदि मैंने इस का उपभोक्ता नहीं बनाया तो सभी कुछ बेकार है ।

अतः शिल्प रचना—कौशल का कमाल दिखाते हुए विवेक शक्ति और सामर्थ्य प्रदान कर मुख्य अतिथि के रूप में मानव की जब उसने सृष्टि-मंच पर उतारा तो—मधुमास गूंज रहा था और फूलो का सौंदर्य व कोयल की कूक उसका स्वागत कर रही थी ।

मानव के भू पर पग धरते ही प्रकृति धन्या हो गई [illegible] [illegible]-विभोर । फिर, उसकी अपना विवेक [illegible] प्राप्त कर [illegible] [illegible] के बल पर कोई [illegible] बनाया । इसी लिए उसे [illegible]- मणि या 'अशरफउलमखलूकात' कहा जाता है ।

अब ऐसा अमोल जीवन यू ही न खो जाए—उसने पुत्र मानव को शब्द या वाणी के रूप में एक अनस्य वरदान दिया । जिस से वह अपने जीवन मार्ग को आलोकित कर सके । एक स्थान पर आया है—

इदम् अन्धन्तम कृत्स्न जायेत
भुवनत्रयम् ।
यद्याह्वय ज्योतिर आससारान्न
दीप्यते ।।

अर्थात्—यदि शब्द नामक ज्योति संसार मे प्रदीप्त न हुई होती तो यह सारा घोर अज्ञानान्धकार से आच्छादित रहता ।

इसी 'शब्द' ज्ञान की प्राप्ति को शिक्षा कहा जाता है । यह जीवन मे कितनी जरूरी है—इसका पता इससे लगता है कि हर भाषा ने इसके गीत गाए हैं और हर साहित्य ने इसकी प्रशंसा कहीं इसे तृतीय नेत्र और कहीं न चुराने योग्य व खरचने पर भी न घटने वाला खजाना कहा है । जो बड़े भाग्य से मिलता है । इसीलिए मानव ने आज तक के सारे ज्ञान को पुस्तकों में सुरक्षित कर लिया है ।

आओ इस पर कुछ विचार करें—मानव, संसार मे जब शिशु रूप में आता है, तो कितनी दयनीय दशा होती है उसकी । करवट तक तो बदल नहीं सकता वह केवल रो कर अपनी दशा व्यक्त करता है । समय पा कर, फिर वह चलना और बोलना आदि सीखता है । यदि भाग्य अच्छा हुआ तो स्कूल व कालेज में चला गया है । और शिक्षित हो स्वयं उन्नति कर, यथा शक्ति संसार को भी लाभ पहुंचाता है । मानव बुद्धि, क्योंकि साधारण होती है जिसे विद्या से ही बढ़ाया जा सकता है । यह सब शिक्षा का ही कमाल है । क्योंकि —

जन्मन जायते शूद्र । सस्कारात् द्विज उच्यते ।

भाव—जन्म से तो सभी अज्ञानी पैदा होते हैं । केवल संस्कारो से ही श्रेष्ठ बनते हैं और शिक्षा सब से बड़ा संस्कार है । अत मानव मात्र का यह धर्म है कि वह शिक्षित होके जीवन का लाभ उठाए ।

पर, प्रश्न पैदा होता है कि वह कौन सा लाभ है जो शिक्षा बिना नही मिलता । इसका जवाब शास्त्रों मे है । उनकी राए है कि —

काव्य यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे
शिवेतर क्षतये ।
सद्य परनिर्वृत्तये कान्तासम्मित
तयोपदेशयुजे ।।

यानी—विद्या कर्त्तव्य कर्म है और इसका उद्देश्य है-मानव जीवन की पूर्णता यह मनोरंजन के साथ-साथ दुःख से पीड़ित व थके-मादे और शोक सतप्तो को विश्राम भी देती है । यश आयु और बुद्धि को बढ़ाने वाली एवं हितकर है । व्यवहार ज्ञान और कान्तासम्मित सरसोपदेश से हमारी जीवन यात्रा को सरल, सुखद और सरस बनाती है तथा कर्त्तव्य भावना को जगा—करने और न करने योग्य कार्यों की अनूठी सूझ हमे प्रदान करती है । जिससे धर्म, अर्थ काम और मोक्षादि पुरुषार्थों की प्राप्ति होती है । जिससे मानव कृतकृत्य हो जाता है ।

संक्षेप मे कह सकते हैं कि जिस साधन से मनुष्य-जीवन स्वरूप को ठीक-ठाक जान और तदनुसार आचरण करके उत्तम फल-सुख की प्राप्ति करता है—उसे विद्या कहते हैं । जैसे नेत्र हाथ का सहायक है । उसी तरह विद्या कर्म की सहायता करती है और बुद्धि पूर्वक किया हुआ काम ही संसार में सुखदायक होता है ।

विद्वान्, वेद को अपौरुषेय स्वीकारते हुए कहते हैं—कि समस्त विद्या सारी शिक्षा का अर्थ है कि, मनुष्य वास्तव में मनुष्य बने । ऐसा मनुष्य, जो प्राणी-मात्र को बराबर, और सारे संसार को अपना परिवार समझे । तथा उसके सुख को अपना सुख और उसके दुःख को अपना दुःख ।

यह शिक्षा वर्तमान स्थितियों मे और भी महत्वपूर्ण हो गई है । अत सफल जीवन हेतु-पवित्रता, सहनशीलता धैर्य, उपकार भावना और हीन भावनाओं से ऊपर उठना भी आवश्यक है । क्योंकि पुरुषार्थहीन ही भाग्य को कोसता है । जबकि पुरुषार्थी अपना भाग्य विधाता स्वयं होता है । यूं कि शक्ति ही जीवन है और कमजोरी ही मृत्यु ! और शिक्षा, कमजोरी को भगा देती है ।

ऋषि दयानन्द ने हजारो ग्रन्थो का मनन कर, भारतीय संस्कृति और विद्या का महत्व बताते हुए भुजा उठा कर कहा कि—यही संस्कृति, विश्व संस्कृति का मूल है । जिसे वैदिक संस्कृति कहा जाता है । जिसकी मर्यादाएं महान् हैं और इसकी टक्कर का ज्ञान, अन्यत्र नही है । जिसके कारण यह देश—जगत्-गुरु और सोने की चिड़िया कहलाता था । यही चक्रवर्ती सम्राट हुए जिन्होंने विश्व-संस्कृति की नींव रखी । यही से विश्व-भर के विद्यार्थी विद्या ग्रहण करके अपने देशो मे उसका प्रसार किया करते थे । क्योंकि यह देश ज्ञान-विज्ञान केन्द्र और मानव संस्कृति का पालना है ।

प्रिय पाठको ! यह वही पुरातन संस्कृति है, जिसका जन्म आर्यावर्त मे हुआ । शैशव ऋषियो-मुनियो की गोदी मे बीता । यौवन आर्यों के भुजबल मे तथा और श्रेष्ठता प्राप्त हुई जिसे भारतीय नरेशो की छत्रछाया मे जिन्होंने इसे चरमोत्कर्ष प्रदान किया और आज की विषम स्थिति मे भी जो संसार को पुकार-पुकार कर मानव-मैत्री और शान्ति सन्देश दे रही है । इस संस्कृति को मिटाने हित खूब प्रयत्न हुए । पर इकबाल के शब्दो मे —

(शेष पृष्ठ 7 पर)

इतवार 26 चैत्र 1990 तदनुसार 8अप्रैल 1934 दयानन्दाब्द110

राजा साहेब कान्तत(जयपुर) जल्द गुरुकुल की यात्रा करेंगे

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी अब प्रतिदिन भारत वर्ष के शासकों के लिए किस प्रकार आकर्षण का पात्र बन रहा है उस पर निम्नलिखित पत्र व्यवहार प्रकाश डालता है।

श्रीमान राजा साहेब रियासत कान्तत (जयपुर) ने निम्नलिखित पत्र 25 मार्च 1934 को श्री मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी के नाम भेजा है —

"आपने मुझे गुरुकुल के उत्सव मे सम्मलित होने के लिए निमत्रित किया है इसके लिए धन्यवाद। दुख है कि समयाभाव के कारण मैं इस पुण्य भूमि के दिव्य समारोह पर नही आ सकू गा। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की प्रशसा मैं बहुत समय से सुन रहा हू। देखने का सौभाग्य अवश्य अभी प्राप्त नही हुआ पर आशा है शीघ्र ही भविष्य मे प्राप्त होगा। सस्कृत भाषा और आर्य साहित्य के पुन जीवन व प्रचार का गौरव आपकी सस्था को प्राप्त है इस कलीकाल मे ब्रह्मचर्य आश्रम की मर्यादा को स्थिर करके फिर से प्राचीन आश्रम व्यवस्था सगठित करने का प्रयत्न देश व जाति के लिए कल्याणकारक है। इस लिए इसमे हिन्दू मात्र का सहयोग आपको प्राप्त हो यह मेरी भगवान से प्रार्थना है।"

गुरुकुल विश्वविद्यालय के सम्मेलन

इस वर्ष गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के उत्सव पर निम्नलिखित सम्मेलन हुए।

1 सरस्वती सम्मेलन 2 अन्तर विश्वविद्यालय हिन्दी वादविवाद सम्मेलन। 3 अछूतोद्धार सम्मेलन। 4 श्रद्धानन्द सम्मेलन 5 सर्व धर्म सम्मेलन 6 कविता सम्मेलन 7 आर्य सम्मेलन 8 वर्ण व्यवस्था सम्मेलन 9 सगीत सम्मेलन। इनके अतिरिक्त और भी कई समारोह वहा हुए हैं जिनमे कई बड़े-2 विद्वानों ने अपने भाषण दिए थे।

गुरुकुल के स्नातक

13, 14 अप्रैल 1934 को मनाए गए गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव पर इस बार 22 नए स्नातक निकले थे। उनमे से एक स्यालकोट का था, एक देहली का था। एक मध्य प्रदेश का था, एक बगाल का था, एक यू पी का था। एक अजमेर का था, एक मुलतान का था, एक डेरागाजीखा का था, एक सूरत का था, एक कोटा का था, एक बरेली का था, एक औरगाबाद का था, एक मुरादाबाद का था और कई दूसरे शहरो के रहने वाले थे जो नए सनातक हुए उन्हे कई प्रकार के पुरस्कार भी दिए गए। —कृष्ण (महाशय-कृष्ण)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियो का चुनाव निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान—महात्मा नारायण स्वामी जी, उप प्रधान-श्री गगा प्रसाद जी। एम ए चीफ जज टिहरी तथा आचार्य रामदेव जी। मन्त्री-प्रो सुधाकर जी एम ए

कोषाध्यक्ष—लाला नारायण दत्त जी, ठेकेदार।

पुस्तकाध्यक्ष—लाला ज्ञानचन्द जी।

व्याख्यान माला—१

स्वाध्याय और उसका महत्व

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स, अधिष्ठाता गुरुकुल करतारपुर(पंजाब)

(गतांक से आगे)

धर्मेणाधिगतो यैस्तु वेदः सपरिबृंहण.।
ते शिष्टा ब्राह्मणा ज्ञेया श्रुतिप्रत्यक्षहेतव ।21।

धर्म पूर्वक जिन लोगों ने साङ्गोपाङ्ग वेद का ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन्हे वेद ज्ञान के साक्षात्कारी होने से शिष्ट ब्राह्मण समझना चाहिए।

यथोक्तान्यपि कर्माणि परिहाय द्विजोत्तम ।
आत्मज्ञाने शमे च स्याद्वेदाभ्यासे च यत्नवान् ।22।

उत्तम ब्राह्मण यथोक्त कर्मों का भी परित्याग करके आत्म ज्ञान के लिए, शान्ति के लिए, और वेदाभ्यास के लिये प्रयत्नशील हो।

संन्यसेत्सर्वकर्माणि वेदमेकं न संन्यसेत् ।
वेदसन्यासतः शूद्रस्तस्माद्वेद न संन्यसेत् ।23।

ब्राह्मण को चाहिये कि चाहे वह सभी कर्मों को छोड देवे परन्तु एक वेद को न छोड़े। क्योकि वेद से सन्यास लेने के कारण ब्राह्मण शूद्र बन जाता है। इसलिए इसका परित्याग न करें।

यज्ञानां तपसाञ्चैव शुभानाञ्चैव कर्मणाम् ।
वेद एव द्विजातीनां निःश्रेयसकर पर ।24।

यज्ञ, तप और शुभ कर्मों का ब्राह्मणों के लिये वेद ही सर्व श्रेष्ठ मंगल-कारक है।

बिभर्ति सर्वभूतानि वेद शास्त्रं सनातनम् ।
तस्मादेतत्परं मन्ये यज्जन्तोरस्य साधनम् ।25।

सनातन वेद शास्त्र सभी प्राणियो का भरण पोषण करता है। इसलिये इसे मैं श्रेष्ठ मानता हू क्योकि इस जीव को (कल्याण कारक) साधन यही है।

चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोकाश्चत्वारश्चाश्रमा पृथक् ।
भूतं भव्यं भविष्यञ्च सर्वं वेदात्प्रसिध्यति ।26।

चारो ब्रह्मणादि वर्ण, पृथिवी अन्तरिक्ष द्युलोक ये तीनो लोक और ब्रह्मचर्य आदि चारो आश्रम भूत-भविष्य और वर्तमान काल ये सब वेदो से ही सिद्ध होते हैं।

वेदाभ्यासो ब्राह्मणस्य क्षत्रियस्य च रक्षणम् ।
वार्त्ता कर्मैव वैश्यस्य विशिष्टानि स्वकर्मसु ।27।

ब्राह्मण का कर्म वेदाभ्यास, क्षत्रिय का देश की रक्षा करना और वैश्य का वार्ता—व्यवहारिक ज्ञानरूप व्यापार कर्म है इस प्रकार ये तीनों वर्ण अपने-अपने कर्मों मे अलग-अलग विशेषता रखते हैं।

वेदाभ्यासस्तपो ज्ञानं शौचमिन्द्रियनिग्रह ।
धर्म क्रियात्मचिन्ता च सात्त्विक गुणलक्षणम् ।28।

वेद का अभ्यास तप, ज्ञान अन्दर बाहर की पवित्रता इन्द्रिय निग्रह धार्मिक कृत्य और आत्म चिन्तन ये सात्त्विक स्वभाव वाले पुरुष के गुण लक्षण हैं।

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितञ्च यत् ।
स्वाध्यायाभ्यसनञ्चैव वाङ्मयं तप उच्यते ।29।

दूसरो को न दुखाने वाला वाक्य, प्रिय और हित करने वाला सत्य, स्वाध्याय का अभ्यास ये भी वाणी के तप कहलाते हैं।

(क्रमश.)

सम्पादकीय—

पंजाब में आर्य समाज का भविष्य—2

इसमें सन्देह नहीं कि आज पंजाब में आर्य समाज की स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। उसके लिए बहुत कुछ पंजाब की राजनैतिक परिस्थितियां भी जिम्मेवार हैं। मैं तो यह भी समझता हूं कि पंजाब से बाहिर भी स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। इस समय हम अपने पूर्वजों की कमाई खा रहे हैं। अब न तो हमारे पास उस उच्चकोटि के वक्ता हैं न तपस्वी त्यागी नेता हैं, जो पहले आर्य समाज के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया करते थे। इसलिए अब हमारे जो उत्सव होते हैं उनके लिये भी जनता में वह आकर्षण नहीं रहा जो पहले हुआ करता था। हमारी विफलता का एक कारण यह भी है कि जब कभी हमारा कोई बड़ा उत्सव होता है तो हमारा यह प्रयास रहता है कि किसी बड़े राजनैतिक नेता को उसमें बुलाया जाए। अगर हो सके तो उनसे अध्यक्षता कराई जाए। यह कमजोरी केवल आर्य समाज में ही है। पंजाब में तीन ऐसे बड़े-2 सम्प्रदाय हैं जिनका कुछ सम्बन्ध या तो सिख धर्म से है या हिन्दू धर्म से और उनमें से एक दो मिले जुले भी हैं। मेरा अभिप्राय नामधारी, निरंकारी और राधा स्वामी इन तीनों से है। राधा स्वामी और निरंकारी इनमें हिन्दू भी बहुत बड़ी संख्या में हैं। नामधारी केवल सिख ही हैं। लेकिन यह तीनों गुरु ग्रन्थ साहेब को अपना धार्मिक ग्रन्थ मानते हैं और बहुत कुछ सिख इतिहास की परम्पराओं के अनुसार चलते हैं। कुछ वर्ष पहले तक कई हिन्दू भी ग्रन्थ साहेब को ही अपना धर्म का ग्रन्थ समझते थे। गुरुद्वारों में जाकर मत्था भी टेकते थे। अब स्थिति कुछ बदल रही है। अब तो कई सिख भी गुरुद्वारों में जाने से घबराते हैं। हिन्दू क्या जाएंगे? फिर भी निरंकारी और राधा स्वामी इन दोनों संगठनों में आज भी हिन्दू बहुत बड़ी संख्या में हैं। इनका जब कोई बड़ा समारोह होता है तो उसमें हजारों नहीं लाखों लोग पहुंचते हैं। इन के लंगर में भी लाखों लोग भोजन करते हैं। यह सब कुछ होते हुए भी वह अपने किसी धार्मिक समारोह में किसी राजनैतिक नेता को नहीं बुलाते। नामधारी, निरंकारी या राधास्वामी इन तीनों के अपने-2 गुरु हैं। वह जो कहते हैं उसी के अनुसार उनकी सब संस्थाएं चलती हैं। उन्हें अपने गुरुओं पर इतना विश्वास और श्रद्धा होती है कि वह सब कुछ उनके लिए देने को तैयार हो जाते हैं। इन तीनों संस्थाओं के पास इस समय लाखों की नहीं करोड़ों की सम्पत्ति है। उनके सामने कभी भी यह समस्या पैदा नहीं हुई जो आर्य समाज के सामने हो रही है।

कुछ समय पहले आर्य समाज में सन्यासियों का एक विशेष स्थान हुआ करता था अब वह स्थिति भी कुछ बदल रही है। सबसे शोचनीय स्थिति विशेष कर पंजाब में यह है कि हमारे पास उस स्तर के उपदेशक और भजनीक नहीं रहे जो देश के बटवारा से पहले हुआ करते थे। मुझे आज भी याद है जब लाहौर में आर्य समाज का वार्षिकोत्सव हुआ करता था तो सारा पंजाब वहां पहुंचा करता था। दो भिन्न-2 स्थानों पर यह उत्सव हुआ करते थे। आर्य समाज बच्छोवाली का उत्सव गुरुदत्त भवन लाहौर में हुआ करता था और आर्य समाज अनारकली का उत्सव डी ए वी स्कूल में हुआ करता था और इन दोनों समाजों के उत्सवों में लाखों लोग पहुंचा करते थे और उस समय व्याख्यान देने वाले भी इसी उच्चकोटि के महानुभाव हुआ करते थे। गुरुदत्त भवन में जो उत्सव हुआ करता था उसमें आचार्य रामदेव, पण्डित चमूपति जी, पण्डित बुद्धदेव जी, श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, श्री महाशय कृष्ण जी और दूसरे कई महानुभाव हुआ करते थे और डी ए वी स्कूल में जो उत्सव हुआ करता था। उसमें महात्मा हंसराज जी, प्रिं दीवान चन्द जी, महात्मा खुशहालचन्द जो बाद में आनन्द स्वामी जी बन गए थे और कंवर सुखलाल जी जैसे उच्चकोटि के वक्ता और भजनीक हुआ करते थे। श्री स्वामी सत्यानन्द जी जब आर्य समाज में हुआ करते थे तो लाहौर में उनकी जब कथा हुआ करती थी। कभी वह रामायण की कथा करते थे, कभी उपनिषदों की, कभी किसी और विषय पर। वह कथा गुरुदत्त भवन के मैदान में हुआ करती थी। उसमें पच्चीस, तीस हजार व्यक्ति सम्मिलित हुआ करते थे। उस समय अभी लाऊडस्पीकर शुरू न हुए थे। स्वामी जी महाराज की अपनी आवाज इतनी ऊंची हुआ करती थी कि सारे लोग शान्त होकर सुना करते थे कि इतनी भीड़ होने पर भी उनकी आवाज सब तक पहुंच जाती थी। इसीलिए लोग वहां इतनी संख्या में पहुंचते थे।

आज हमारे पास कोई ऐसा वक्ता नहीं जिसके लिए लोगों में वह आकर्षण हो जो उस जमाने में हुआ करता था। एक हमारी विफलता का यह भी कारण है और यह स्थिति केवल पंजाब में ही नहीं सारे देश में है। कोई समय था कि गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव पर सारे देश से हजारों लोग पहुंचा करते थे विशेषकर पंजाब से। आज मुश्किल से सैंकड़ों पहुंचते हैं। उसका भी एक कारण यह है कि गुरुकुल भी वह गुरुकुल नहीं रहा। इस लिए जब हम अपने चारों तरफ देखते हैं तो हमें निराशा होती है। विशेष कर उन व्यक्तियों को जिन्होंने कभी आर्य समाज का विराट् रूप देखा है। क्योंकि मैंने आर्य समाज का वह रूप देखा है इसलिए मुझे अधिक निराशा होती है और इससे भी अधिक शोचनीय स्थिति यह है कि आर्य समाज की ओर से कभी यह प्रयास नहीं हुआ कि गम्भीरता पूर्वक इस स्थिति पर विचार किया जाए कि यह क्यों पैदा हुई है और इसका सुधार हम कैसे कर सकते हैं। आर्य मर्यादा के इसी अंक में आप डा प्रशान्त वेदालंकार का एक लेख आर्य समाज की भावी रूप रेखा पर पढ़ेंगे। इसका पहला भाग आर्य मर्यादा के पिछले अंक में प्रकाशित हो चुका है। इसे पढ़कर कुछ आशा की एक किरण दिखाई देती है कि आज भी आर्य समाज में कुछ ऐसे लोग हैं जो इस विषय पर सोच रहे हैं कि क्या किया जाए? प्रशान्त जी जो कुछ सोच रहे हैं वह तो सारे देश के विषय में है। मेरे सामने प्रश्न पंजाब का है। इसीलिए मैं इस विषय पर अपने विचार आर्य मर्यादा के पाठकों के सामने रख रहा हूं। मैं यह भी चाहूंगा यदि कुछ और महानुभाव भी इस विषय पर अपने विचार हमें लिख कर भेज तो हम उन्हें आर्य मर्यादा में प्रकाशित कर देंगे। इस विषय पर एक विचार गोष्ठी भी होनी चाहिए। जब कभी हम अपनी किसी अन्तरंग सभा या साधारण सभा का अधिवेशन करते हैं तो उसमें अधिक समय संस्था की समस्याओं के विषय में विचार करने पर लग जाता है। आर्य समाज के सामने क्या-क्या समस्याएं हैं। इस पर हम विचार नहीं करते। पंजाब की क्या समस्याएं हैं इन पर आगामी अंक में अपने विचार पाठकों के सामने रखूंगा। लेकिन इतना निवेदन फिर करना चाहता हूं कि मुझे हार्दिक प्रसन्नता होगी यदि पंजाब के प्रमुख आर्य समाजी हमें इस विषय में अपने विचार लिख कर भेजें ताकि एक विचार गोष्ठी आरम्भ की जा सके, हो सकता है कि इससे कोई अच्छा परिणाम निकल आए।

—वीरेन्द्र

आर्य समाज की भावी रूप रेखा

श्री प्रशान्त जी वेदालंकार ने एक अत्यन्त सराहनीय पग उठाया है जो उन्होंने आर्य समाज की भावी रूप रेखा पर विचार करने के लिए बुद्धिजीवियों के सम्मेलन की योजना प्रस्तुत की है। समय-2 पर कई आर्य समाज के विद्वान् इस अत्यन्त गम्भीर समस्या पर अपने विचार प्रस्तुत करते रहते हैं। इससे पहले आर्य समाज अजमेर के प्रधान और विख्यात शिक्षा विशेषज्ञ श्री दत्तात्रेय जी आर्य भी इस विषय में बहुत कुछ लिख चुके हैं। उन्होंने तो अपने सुझाव सार्वदेशिक सभा के सामने भी रखे हैं। डा भवानी लाल जी भारतीय भी इसका चिन्तन करते रहते हैं। श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती भी इस विषय पर कई बार अपने विचार प्रस्तुत कर चुके हैं। इस समय तक भिन्न-2 बुद्धिजीवियों ने अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। परन्तु उन्हें कोई निश्चित रूप नहीं दिया जा सका। अब श्री प्रशान्त जी वेदालंकार ने यह नया प्रयास शुरू किया है। जिसे मैं अत्यन्त सराहनीय समझता हूं। मेरा उन्हें यह सुझाव है कि इस विषय पर विचार करने के लिए किसी उपयुक्त स्थान पर आर्य समाज के प्रमुख बुद्धिजीवियों को बैठ कर कुछ दिन तक सारी समस्याओं पर विचार करना चाहिए। आपस में विचार विमर्श करना चाहिए और जिन प्रस्तावों पर वह सहमत हो जाएं उन्हें एक पंचवर्षीय योजना के रूप में आर्य जनता के सामने रखना चाहिए। उसके पश्चात् आर्य जगत् में एक ऐसा अभियान आरम्भ होना चाहिए जो पांच वर्ष तक चलता रहे। और फिर पांच वर्ष के पश्चात् बैठ कर हम सोचें कि हमने क्या खोया, क्या पाया है। यह काम सार्वदेशिक सभा के सहयोग के बिना सम्भव नहीं होगा। इसलिए सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों से भी इस विषय में बात होनी चाहिए कि यदि हम बुद्धिजीवियों की संगोष्ठी का कोई कार्यक्रम बनाते हैं तो उसे क्रियान्वित करने में सार्वदेशिक सभा अपना क्या सहयोग दे सकती है। कहा जाता है कि देश विदेश में जो आर्य समाजें हैं उनकी संख्या साढ़े चार हजार के लगभग

(शेष पृष्ठ 6 पर)

आर्य समाज की भावी रूप रेखा

बुद्धिजीवियों के सम्मेलन की आवश्यकता–२

लेखक—डा प्रशान्त जी वेदालंकार 712 रूपनगर दिल्ली

(गतांक से आगे)

हम कहते रहे हैं कि आर्य समाज को अमृतसर, दार्जिलिंग और गोहाटी मे आर्य महा सम्मेलन आयोजित करके वहा के लोगो को राष्ट्रीय धारा में लाने का एक क्रान्तिकारी कार्य आरम्भ करना चाहिए। इससे वहां रहने वाले हिन्दुओ व राष्ट्रीय भावात्मक एकता के समर्थक लोगो का मनोबल भी बढ़ेगा। इन प्रदेशो मे विशेषत भारत के सभी सीमावर्ती प्रदेशो मे आर्य सिद्धान्तो के आधार पर चलने वाली संस्थाओ की स्थापना पर हमने हमेशा बल दिया है। हमने निरन्तर यह लिखा है कि ईसाई मिशनरियो व पैट्रोडालर के बल पर मुसलमानो के कार्यों की समीक्षा करके उनके नापाक षड्यन्त्रो के विरुद्ध एक आन्दोलन करके भारत सरकार से उनके अवैध काम पर रोक लगाने का काम करना चाहिए। हमने अनेक स्थानो पर यह प्रतिपादित किया है कि वे सभी धर्म व व्यक्ति जिनकी निष्ठा भारत से अधिक कही बाहर है, उनके मतदान के अधिकार पर एक प्रश्न चिन्ह लगाना चाहिए।

आज यदि आर्य समाज के कुछ कर्णधार अंग्रेजी की ओर अधिक झुक रहे हैं, तो उसका कारण हमारी दुर्बलता है, हम सरकार से अपनी भाषा के लिए भी लड नही पा रहे। आज यदि हम गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के स्थान पर पब्लिक स्कूलो की नकल करना चाह रहे हैं तो यह भी हमारी दुर्बलता की निशानी है, क्योकि हम सरकार को देश के लिए उपयोगी किसी शिक्षा प्रणाली को प्रवर्तित करने के लिए बाध्य नही कर पा रहे और न हम मे स्वय उस प्रकार की राष्ट्र हित मे साधक शिक्षा संस्था स्थापित करने की शक्ति रह गयी है।

हमारे सदस्यो मे मद्यनिषेध का आन्दोलन चलाना तो दूर मद्यपान करने वाले लोगो का विरोध करने का भी नैतिक साहस नही है। अनेक आर्य समाजी तो मद्यपान भी करने लगे हैं। यही स्थिति सिगरेट और अन्य नशीली वस्तुओ की है। आज हम दहेज, मिथ्या-आडम्बर, स्त्री-स्वतन्त्रता, अस्पृश्यता निवारण, स्वदेश प्रेम जैसे रचनात्मक विषयो पर केवल भाषण तो देते हैं, पर राष्ट्र इसे व्यवहार मे क्यो नही ला पा रहा, इसका कारण या आत्मनिरीक्षण हम नही कर पा रहे हैं। हम सैद्धान्तिक रूप से वर्ण व्यवस्था को मानते हैं, आश्रम प्रणाली पर हमारा विश्वास है, पर व्यवहार मे ये व्यवस्थाए कितनी अव्यावहारिक हैं यह सोचने की हमने कभी आवश्यकता अनुभव नही की। हमने शैक्षणिक व सामाजिक दृष्टि से उन्नत हरिजन वर्ग को उच्च वर्ण में लाकर उनमें स्वाभिमान उत्पन्न करने के आन्दोलन भी नही चलाए। आखिर मे कब तक [illegible]कार की बैसाखी से चलते रहेंगे। जो हरिजन आज भी उपेक्षित हैं और प्रताडित हैं उनकी उन्नति के लिए हमारे क्या प्रयत्न हैं। हम मीनाक्षीपुरम मे हरिजनो के मुसलमान बनने पर या आदिवासियो को पोप द्वारा ईसाई बनाने पर जागत अवश्य हैं, पर उनमे हमारा काम नही है। यदि काम हो तो हमे मुसलमान व ईसाइयो से कोई चिन्ता न हो? इसी प्रकार वनवासी व गिरिजन क्षेत्रो मे गुरुकुलो की स्थापना करके उन्हे भी शिक्षित और संस्कारी करने का हमने प्रयत्न नही किया। हम कहते रहे हैं कि यदि विश्व की 5000 आर्य समाजें दस दस हरिजन या उपेक्षित या वनवासी या गिरिजन बालको को गोद ले लें और उन्हे अपने सिद्धान्तों के अनुसार संस्कारी करें तो आर्य समाज की युवा पीढी तैयार हो सकती है। आर्य समाज का यह कार्य ऐतिहासिक दृष्टि से एक क्रान्ति पैदा कर सकता है।

जब मैंने देखा कि आर्य समाज की कोई संस्था इस महान् कार्य की ओर ध्यान नही दे रही। तब मैंने गत मई 1986 मे कुछ लोगो को एकत्र किया। यह बैठक श्री स्वामी विद्यानन्द जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। इसमे दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रोफेसर डा कृष्णलाल, डा सत्यदेव चौधरी (भू पू प्रोफेसर पश्चिमी जर्मनी) सुप्रसिद्ध साहित्यकार पद्मभूषण श्री क्षेमचन्द्र जी सुमन, गुरुकुल कांगडी के भूतपूर्व इतिहास के प्रोफेसर वेदव्रत जी, श्री राजेन्द्र दुर्गा (मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा) तथा अनेक गणमान्य विद्वान् एव विचारक एकत्र हुए। मैंने सबके सामने अपने मन की उक्त पीडा का वर्णन किया मैंने वहा यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि बुद्धिजीवियों—प्राध्यापक, चिन्तक, विवेचक, शास्त्र अनुशीलक आदि का एक सम्मेलन बुलाकर आर्य समाज की भावी रूपरेखा पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाए। सबने मेरे इस प्रस्ताव का न केवल समर्थन किया वरन् इस प्रकार की सगोष्ठी के द्वारा आर्य समाज को गतिशील बनाने के लिए इसे बहुत आवश्यक समझा। वहा यह निर्णय लिया गया कि बड़े स्तर पर एक विचार गोष्ठी करने से पूर्व छोटे स्तर पर विभिन्न प्रान्तो मे कुछ बैठकें आयोजित की जाए। उनमे उक्त गोष्ठी की आवश्यकता पर प्रकाश डाला जाए और उन बैठको मे उपस्थित आर्य सज्जनो से इस सम्बन्ध में उनके विचारो को सुना जाए।

इसी मध्य मेरा यूरोप जाने का कार्यक्रम बन गया। मैंने यह आवश्यक समझा कि यूरोप जाने से पूर्व इस सम्बन्ध मे एक पत्र विभिन्न बुद्धिजीवियो व विभिन्न आर्य-पत्र पत्रिकाओ को भेज दिया जाए। उस पत्रक में मैंने बुद्धिजीवि सम्मेलन की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए लिखा था। हमे उन कारणों का अनुसन्धान करना चाहिए जिस कारण हमारे आर्य समाज के आन्दोलन मे शिथिलता आई है और जिन कारणों से आर्य समाज के परिवारो की सन्तान आर्य समाज से उदासीन हो रही है। मैंने लिखा कि आज अनेक ऊंचे ऊंचे पदो पर आर्य समाजी आसीन हैं, पर आर्य समाज के सगठन में वे रुचि नही रखते। आदि-आदि

यूरोप में 11 जून से 10 सितम्बर 1986 तक रहा। यूरोप मे इगलैंड तथा हालैंड मे आर्य समाज का अच्छा कार्य है। हमने फ्रास तथा इटली मे यज्ञ करके वेद मन्त्रों का यूरोपीय लोगो को अर्थ समझाया। उन सभी को वैदिक मन्त्रो मे विश्वशान्ति व विश्व बन्धुत्व का भाव उत्पन्न करने की शक्ति प्रतीत हुई। इस समय सारा विश्व किसी ऐसे सार्वभौम ज्ञान को प्राप्त करने के लिए लालायित है जो उन्हें व्यक्तिगत तनावों से हटाकर पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय व अन्त राष्ट्रीय शान्ति प्रदान कर सके। मुझे बराबर इस यात्रा मे यह लगता रहा कि आर्य समाज ही अपने कार्य का नई दिशाओ मे विस्तार करके विश्व की उक्त आवश्यकता को पूरा कर सकता है। मुझे वहा भी आर्य समाज के मंच पर बुद्धिजीवियों के सम्मेलन के द्वारा आर्य समाज की भावी रूप रेखा निर्धारित करने की आवश्यकता का निरन्तर अनुभव होता रहा।

जब मैं लौटा तो मैंने देखा कि अनेक आर्य समाजी संस्थाओं ने मेरे द्वारा भेजे गए पत्रकों का उत्तर दिया। अनेक आर्य समाजी पत्र-पत्रिकाओं ने मेरे उस पत्रक को अपने-अपने पत्रो में प्रकाशित किया। पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने आर्य मर्यादा में उस पत्रक को आधार बनाकर तीन सम्पादकीय लिखे। श्री भवानीलाल जी भारतीय (अध्यक्ष दयानन्द पीठ, पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ) ने उस विषय पर लम्बा पत्र व्यवहार किया और इसकी महती आवश्यकता अनुभव की। आर्य मित्र के सम्पादक श्री रमेशचन्द्र जी ने भी इस कार्य मे अपनी रुचि प्रदर्शित की। श्री भद्रसेन जी ने (दीनबन्धु आश्रम होशियारपुर) ने लिखा मेरी दृष्टि मे एक वास्तु कलाविद् की तरह एक विकास का आदर्श मानचित्र बनाया जाए, जिसको सभी के सहयोग से सम्पन्न किया जाए। वस्तुत इस बिना योजना के श्रम, शक्ति, समय, वित्त आर्य समाज का लग रहा है। योजना तो कुछ व्यक्ति ही मिलकर बना सकते हैं। उन्होंने इस कार्य का आरम्भ दिल्ली से करने का परामर्श दिया। श्री सत्यव्रत (मन्त्री आर्य समाज बदायू) ने लिखा—यह सत्य है कि आर्य समाज राष्ट्र का नेतृत्व कर सकता, जनमानस को प्रेरित कर सकता है। आर्य समाज की जागरूक भूमिका को अपना कर ही राष्ट्र को टूटने से बचाया जा सकता है। इसके लिए आर्य समाज मे गतिशीलता की आवश्यकता है, परन्तु भौतिक वादी बढती प्रवृत्ति, अधिकार प्राप्त करने की मनोवृत्ति और उसके गम्भीर परिणामो से जनमानस के मस्तिष्क पर अच्छी छाप नही है। शक्ति सत्ता और धन ही लक्ष्य है जो देश के लिए घातक है, हर क्षेत्र मे मर्यादा टूटती जा रही है।

सदाचार और नैतिकता मखौल बन कर रह गया है। आपके प्रयासों में हम भी सम्मिलित हैं। इस प्रकार के अनेक पत्र आए। बम्बई से डा रवीन्द्र अग्निहोत्री (राजभाषा) अधिकारी स्टेट बैंक) ने इस कार्य में उत्साह दिखाया और बुद्धिजीवियो की एक लम्बी सूची भेजी जो पूरे देश भर के बैंकों व अन्य क्षेत्रो में उच्च पदों पर कार्यरत हैं। वे सभी आर्य-समाज से सहानुभूति रखते हैं, पर आर्य समाज मे निष्क्रिय हैं। मेरे पास अनेक पत्र हैं जिनमें अनेक विद्वानों ने देश की दुर्व्यवस्था पर आंसू बहाए हैं और इस अवस्था के सुधार के लिए आर्य समाज को गतिशील बनाने के लिए अनेक सुझाव दिए हैं।

(क्रमशः)

समाचार और विचार

पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों में आर्यसमाज का प्रचार कैसे हो ?

—ओमप्रकाश आर्य वानप्रस्थी बठिण्डा

अभी तक यज्ञो के अन्दर लोगो को बडी श्रद्धा है, इस वर्ष मेरे द्वारा मानसा मण्डी मे चार दिन का, बरेटा मण्डी में तीन दिन का, मण्डी डबवाली मे सात आठ दिन का,एक एक परिवार मे यज्ञ किया गया। एक एक दिन का तो बहुत परिवारो ने बुडलाडा, रामामण्डी, तलवण्डी, गोनियाना, कालावाली आदि नगरो मे मुझ बुला कर पारिवारिक रूप में हवन यज्ञ कराया। प्रात काल जिस परिवार मे यज्ञ का प्रोग्राम होता, उस मोहल्ले वालो को निमन्त्रण देकर बुलाया जाता। सन्ध्या, हवन, भजन, प्रार्थना के बाद केवल 15-20 मिनट का उपदेश फिर उसी परिवार मे दोपहर 3 बजे के लगभग केवल देवियो का सत्सग उस में सारा एक घण्टे का कार्यक्रम-उपदेश भजन कुछ शका समाधान। रात्रि को भोजन के पश्चात् केवल उसी परिवार के छोटे बडे स्त्री पुरुष एक सवाह घण्टा के लिए बैठा कर महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द जी, अमर शहीद प लेखराम जी, गुरुवर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी आदि विद्वानो के जीवन की घटनाए बताकर उपदेश देना। मैं तो अपने साथ कुछ साहित्य और देसी औषधिया भी वितरणार्थ रखता हू, मेरा अपना लगभग आठ वर्ष के भ्रमण का अनुभव है कि इस प्रकार एक एक नगर के एक-2 मोहल्ला मे केवल एक व्यक्ति (भले ही वह विद्वान न हो) जिसे आर्य समाज के सिद्धान्तो का कुछ परिचय है—जिसे सन्ध्या हवन आता है—वो घर गृहस्थी नहीं भी छोड सकता। एक मास मे केवल चार रविवार भी इस कार्य के लिए देवे तो बडी अच्छी प्रकार अपने-अपने निकट के क्षेत्र मे बडा भारी कार्य कर सकता है और इस प्रकार के कार्य पर अधिक खर्च भी नहीं आता—मेरे विचार मे इस कार्य को सफलता मिलने में दो कठिनाईया हो सकती हैं। पहली यह कि जिन आर्य भाईयो को आर्य समाज के पद अधिकारी बने बीस चालीस वर्ष भी हो चुके, उन में से अधिक ऐसे हैं जो सन्ध्या, हवन आदि पुस्तक देख कर कराने में असमर्थ हैं, जिन को सन्ध्या—हवन आता है वह समय देने को तैयार नहीं—वानप्रस्थी बन कर प्रचार करते और केवल प्रति मास चार रविवार भी प्रचार के लिए दें तो वह बहुत कुछ कर सकते हैं) क्योकि यज्ञ के प्रति गैर आर्य समाजियो को भी बडी श्रद्धा है। दूसरी कठिनाई यह हो सकती है कि अधिक आर्य समाजो मे पद (अधिकार) के लिए जितना यत्न किया जाता है। उतना सेवा करने का यत्न किया जावे तो यह भी एक प्रकार का सुन्दर आदर्श पेश करना है,प्रचार से यह किसी प्रकार कम नही—इस कार्य के लिए कई आर्य समाजो में साप्ताहिक सत्सग के रजिस्टर मे किसी प्रकार हाजरी लग जावे—चाहे वह सदस्य यज्ञ की समाप्ति पर ही आवे क्योकि उसे वर्ष मे 13 हाजरी करके चुनाव वाले दिन अधिकारी बनना है। यह बहुत समाजो मे देखने व सुनने को मिला। ऐसी बात को देख कर जो भी कोई सुनता है—उसका सुना उपदेश और आर्य समाज के प्रति सब श्रद्धा समाप्त हो जाती है। आर्य समाज राजनैतिक अखाडा नही यह तो धार्मिक सस्था है। एक-2 सभासद को पदो के लिए न लड कर आर्य समाज का सेवक के रूप मे प्रचारक बन कर अपनी अपनी योग्यता के अनुसार अपने अपने क्षेत्र मे वहा के वातावरणानुसार स्वय प्रचार की योजना बना कर अपनी सुविधानुसार प्रचार कार्य करना चाहिए स्वय पदो की लडाई छोड कर नए सज्जनो को सेवा का अवसर देकर उनकी सहायता करनी चाहिए—बाहर के उपदेशको की भी आशा छोड कर इस शुभ कार्य मे स्वय जुट कर महर्षि दयानन्द के ऋण को उतारने का तन,मन से यत्न करना चाहिए, हो सके तो कुछ आर्य साहित्य एव कुछ साधारण देसी दवाईयो द्वारा भी प्रचार कार्य बहुत हो सकता है।

आर्य समाज मानसा में समारोह

12 फरवरी को स्वामी दयानन्द जी का जन्म दिवस आर्य समाज मन्दिर मानसा मे बडे उत्साहपूर्वक मनाया गया। प्रात. 9 बजे हवनयज्ञ के पश्चात् डी ए वी मिडल स्कूल मानसा के विद्यार्थियों द्वारा रगारग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। मुख्याध्यापिका ने बच्चों को स्वामी दयानन्द जी के विषय मे जानकारी दी। आर्य समाज के सभी सदस्यगण इस उत्सव में सम्मलित हुए।

—प्रवेश आर्या-मुख्याध्यापिका

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर के नव भवन का उद्घाटन

22 फरवरी 1987 को आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर के नव भवन का उदघाटन आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने किया। ध्वजारोहण श्री प हरवशलाल जी शर्मा सभा कोषाध्यक्ष ने किया। ऋषि बोध पर्व के उपलक्ष मे 22 फरवरी से 26 फरवरी तक प्रतिदिन कथा प्रवचन और भजन होते रहे। उत्सव मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के महामन्त्री श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा, मन्त्री श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न, श्री अश्विनी कुमार जी एडवोकेट सभा मन्त्री,श्री प निरञ्जन देव जी इतिहास केसरी महोपदेश, श्री प धर्मदेव जी सभा कार्यालयाध्यक्ष, श्री ओमप्रकाश जी भजनोपदेशक, श्रीरामनाथ यात्री भजनोपदेशक, माता शान्ता गोड वानप्रस्थ लुधियाना, श्री बूट राम जी, श्री प, मनोहर लाल जी, श्री कमलकिशोर जी मन्त्री, श्री प किशन चन्द जी तथा दूसरे और कई महानुभावो ने भाग लिया।

ऋषिलगर तथा 26 फरवरी को सारे भार्गव नगर मे शोभा यात्रा निकाली गई जिसमे हजारो लोगो ने भाग लिया रात्रि को सारे नगर मे घरो पर दीपमाला की गई।

———

काँगड़ी ग्राम से शराब का ठेका तुरन्त हटाया जाए जिलाधिकारी को प्रार्थना पत्र

आपसे हमारा निवेदन है कि आपने जो हरिद्वार के निकट शराब की दुकान खोलने की अनुमति दी है उससे समस्त ग्रामवासियो को काफी परेशानी है। क्योकि समीप मे शराब की दुकान होने से गाव का वातावरण दूषित हो रहा है। और इस दुकान को हटवाने के लिए हमारे निम्नलिखित सुझाव हैं। जिनका दुकान खोलने की अनुमति देते समय ध्यान नही रखा गया।

1 ग्राम कागडी आर्य समाज से जुडा होने के कारण पुण्य भूमि गुरुकुल कागडी के नाम से जाना जाता है, अत पुण्य भूमि मे शराब की दुकान होना अनुचित है, और आर्य समाज के नियमो के प्रतिकूल भी है।

2 हरिद्वार तीर्थ से लगभग 15 कि मी की दूरी पर दो शराब के ठेके पहले से हैं, जबकि यह दुकान 5 कि मी से भी कम दूर है, अत. इस को हरिद्वार तीर्थ से 15 कि मी दूर तो होना ही चाहिए था।

3 उ प्रदेश सरकार ने ग्राम कागडी को समन्वित ग्राम विकास योजना के अन्तर्गत चुन रखा है, परन्तु यहा यह दुकान खुलने के कारण सभी योजनाए प्रभावहीन होती जा रही हैं। अत श्रीमान जी से हमारा निवेदन है कि उपरोक्त सुझाओ को ध्यान मे रखते हुए यह शराब की दुकान अविलम्ब हटाने की कृपा करें।

—अध्यक्ष नवयुवक मगलदल

- प्रतिलिपि —

1 मान्यवर मुख्यमन्त्री जी उ प्र सरकार।

2 श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब।

3 श्री बलभद्र कुमार हूजा, अवकाश प्राप्त आई ए एस भूतपूर्व कुलपति, गुरुकुल वि वि

4 श्रीमती मीरा कुमार, ससद सदस्य क्षेत्र बिजनौर।

5 श्री सरदारी लाल जी, प्रधान आर्य समाज दिली।

ऋषिबोधोत्सव सम्पन्न

ऋषिबोधोत्सव आर्य समाज नवाशहर मे बडे समारोह से मनाया गया जिस मे द्वाबा आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल, डब्ल्यू एस आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल, आर्य बाल विद्या मन्दिर के स्टाफ और विद्यार्थियो ने भाग लिया।

हवन यज्ञ के पश्चात् स्कूल के बच्चो ने महर्षि दयानन्द पर गीत एव भजन प्रस्तुत किए। प देवेन्द्र कुमार जी सरक्षक आर्य समाज और वेद प्रकाश जी सरीन प्रधान आर्य समाज ने बच्चो को पारितोषिक दिए। समस्त आर्य बन्धुओ ने इसकी सफलता के लिए स्टाफ व प्रिंसीपल हरबसलाल तनेजा व श्री सुरेन्द्रमोहन का हार्दिक धन्यवाद किया।

बाद में ऋषि लगर का आयोजन भी किया गया उपस्थिति बहुत अच्छी थी कार्यक्रम सराहनीय एव प्रशसनीय था।

—धर्म प्रकाशदत्त-महामन्त्री

चरित्र निर्माण

मानव को चित्र की नहीं चरित्र की ही पूजा करनी चाहिए।

चरित्र का अर्थ "चाल" होता है। जिसे चाल चलन भी कहते हैं।

चाल तीन प्रकार की होती है। जिसे मनसा वाचा और कर्मणा कहते हैं। और चरित्र की परीक्षा चार प्रकार से ली जाती है, जिसे त्याग, स्वभाव गुण और कर्म कहा जाता है। यदि मानव इस परीक्षा में पास है, तो "आदर्श मानव" परन्तु इस युग मे मनुष्य का नाप तोल "चरित्र" नही पैसा है, परन्तु मनुष्य भूल जाता है कि पैसे से पुस्तक तो मिल सकती हैं। परन्तु "ज्ञान" नही मिल सकता। पैसे से पैन तो मिल सकता है परन्तु सुलेख नही मिल सकता। पैसे से वस्त्र तो मिल सकता है, परन्तु "सौन्दय" नही मिल सकता। पैसे से दवाई तो मिल सकती है, परन्तु इलाज नही मिल सकता। पैसे से भोजन तो मिल सकता है। परन्तु "भूख" नही मिल सकती। पैसे से सुख तो मिल सकता है, परन्तु शान्ति नही मिल सकती। पैसा बहुत कुछ होते हुए भी सब कुछ नही है। आज के युग मे धनवान व्यक्ति को ही बड़ा व्यक्ति कहते हैं। धनवान् के बैठे चरित्रवान का मूल्यांकन नहीं के बराबर है। चाहे इस युग मे निर्धनता निधन (मृत्यु) है, परन्तु सत्य, प्रेम और परोपकार न्याय का मार्ग ही "चरित्रवान व्यक्ति" का मार्ग हो सकता है। पैसा नहीं। क्योंकि पैसे की आड़ मे कौन सा पाप है जो आज नहीं हो रहा? आज नोट, वोट की ओट मे मानवता बेची जा रही है।

चरित्र निर्माण मे दो व्यक्ति सहायक होते हैं, अध्यापक और उपदेशक क्योंकि मानव एक सामाजिक प्राणी है और उसे समाज मे ही रहना है। समाज से ही सभाएं बनाई जाती हैं। सभा मे बैठने वाले को "सभ्य" कहते हैं, और सभ्य के चाल चलन को "सभ्यता" कहते हैं। सभ्यता को संस्कृति से अलग नहीं किया जा सकता। "संस्कृति" व्यक्ति की ही नही राष्ट्र की आत्मा होती है।

आज प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि मेरी धर्म पत्नी सीता हो, परन्तु स्वयं "राम" बनना नही चाहता। चरित्रवान बनने के लिये राम बनना ही पड़ेगा जीवन की दिनचर्या को सुबन्धित बनाना ही होगा क्योंकि सौन्दर्य शरीर का नही, 'जीवन का सौन्दर्य ही "सौन्दर्य" होता है।

चरित्रवान व्यक्ति अन्य देवियो को "माता" समझता है और दूसरो के धन को "मिट्टी"। और सबको अपने समान मानता जानता और व्यवहार करता है। चरित्रवान व्यक्ति गुलाब के फूल के समान सुगन्धी बिखेरता रहता है। अतः हमें अन्त मे यही कहना है कि—जीवन एक फूल, प्रेम उसका मधु और नम्रता उसकी 'सुगन्ध' है।

चरित्र मानव जीवन की सबसे पवित्र और मूल्यवान सम्पत्ति है।

—महात्मा प्रेमप्रकाश वानप्रस्थी धूरी

(3 पृष्ठ का शेष)

है। यह कोई साधारण संगठन नही है। इसे सक्रिय करने की आवश्यकता है। स्थानीय आय समाजें अपनी प्रान्तीय सभाओ के अधीन हैं। प्रान्तीय सभाएं सार्वदेशिक सभा के अधीन हैं। विदेशो मे जो आय समाजें हैं उनका भी सार्वदेशिक सभा के साथ सम्बन्ध है। इसलिए बुद्धिजीवियो की समोष्ठी जो भी योजना बनाए उसकी स्वीकृति सार्वदेशिक सभा से लेनी आवश्यक है। उसके लिए यदि सार्वदेशिक सभा को दो चार दिन का विशेष अधिवेशन करना पड़े उसे वह भी करना चाहिए। जब सार्वदेशिक सभा उसकी स्वीकृति दे दे तो उसे आगे क्रियान्वित कराने के लिए एक विशेष विभाग बनाना चाहिए और उसके लिए प्रर्याप्त धन भी व्यय करना चाहिये। सब आय प्रतिनिधि सभाओ से अपना 2 योगदान देने के लिए कहा जाए। कहने का अभिप्राय यह है कि जब एक नई यो॰ना बन जाए, उसे क्रियात्मिक रूप देने के लिए सारी आर्य समाजो को सक्रिय हो जाना चाहिए। इस स्थिति म इसका कुछ परिणाम निकल सकेगा। समस्या बहुत गम्भीर है। उसका समाधान ढूंढने के लिए भी बहुत अधिक परिश्रम और लग्न की आवश्यकता होगी। श्री प्रशान्त वेदालंकार ने जो प्रयास प्रारम्भ किया है वह सराहनीय है सारे आर्य जगत् का उन्हें इसमे सहयोग मिलना चाहिए।

—वीरेन्द्र

जालन्धर में प्रो. सहगल की हत्या के विरोध में डी. ए. वी. संस्थाएं बन्द

नयी दिल्ली 3 मार्च डी ए वी कालेज जालन्धर के प्रसिद्ध प्रो श्री एस. के सहगल की आतंकवादियो द्वारा हत्या के विरोध मे डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति ने पजाब के सभी डी ए वी संस्थाओ को छः मार्च तक बन्द रखने के आदेश जारी किए थे। संतप्त परिवार को 25000 रुपए अनुग्रह राशि दिए जाने की भी घोषणा की है। श्री सहगल की हत्या की सभी बुद्धिजीवियो एव आर्य नेताओ ने घोर भर्त्सना की है।

डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति ने केन्द्र तथा पजाब सरकार से मांग की है कि हत्यारों की तुरन्त खोज की जाए तथा डी ए वी संस्थाओं को पूर्ण संरक्षण दिया जाए। ज्ञातव्य है कि डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति का एक शिष्ट मण्डल गत नवम्बर मास में प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से मिला था और इस आशंका से उनको पूर्व अवगत करा दिया गया था। इससे स्पष्ट है कि, सरकार उनको संरक्षण देने में असमर्थ रही है।

—[illegible]
विशेष कार्य अधिकारी

आर्य समाज खरड़ की गतिविधियां

★ 24-2-1987 को राज्य सुरक्षा समिति के बलिदानी जत्थे के खरड़ पहुचने पर आर्य वीर दल के सदस्यो द्वारा स्वागत समारोह मे सक्रिय भाग लेने तथा आर्य सदस्यो तथा आर्य समाज द्वारा दिए गये आर्थिक सहयोग को शहर मे बहुत सराहा गया जिससे खरड़ आर्य समाज को काफी सराहा गया तथा नया बल मिला है।

★ 26-2-1987 को आर्य समाज खरड़ मे ऋषिबोध उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। हवन के तुरन्त पश्चात् उत्सव के संदर्भ में आयोजित समारोह मे आर्य वीर दल के सदस्यो तथा आर्य कन्या विद्यालय एवं आर्य कालेज फार वोमेन की छात्राओ द्वारा भाग लिया गया। और अन्त मे बाहर से आये मुख्य अतिथि श्री दिनेश्वर जी का प्रवचन हुआ और भाग लेने वाले बच्चो को इनाम दिये गये।

—सत्यपाल भटनागर
मन्त्री

आर्य वीर दल पीपाड़ शहर का चुनाव

आर्य वीर दल का चुनाव श्री सुरेश आर्य की अध्यक्षता में हुआ जिसमें निम्न पदाधिकारी सर्व सम्मति से चुने गए।

अध्यक्ष—श्री सुरेश जी आर्य, उपाध्यक्ष—श्री सत्यनारायण जी आर्य, मन्त्री—श्री जगदीश जी आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री अमराराम जी आर्य (टाक)

अन्तरंग सदस्य—श्री शिवाराम जी, श्री देवेन्द्र जी, श्री प्यारे लाल जी, श्री नरपतराज जी, श्री सोभाराम जी, श्री नेमाराम जी, श्री बचनाराम जी, श्री घनश्याम जी सोनी, श्री राधेश्याम जी सोनी, जयराम जी।

—मन्त्री

श्री वैद्य कुन्दनलाल का निधन

पजाब के आर्य समाजियों को यह सुन कर अत्यन्त दुख होगा कि आर्य समाज के एक पुराने कर्मठ सेवक लुधियाना के वैद्य कुन्दनलाल का देहान्त हो गया। वे पिछले कुछ समय से बीमार चले आ रहे थे और उनकी आयु भी अब लगभग 80 वर्ष की परन्तु सारी आयु उन्होंने आर्य समाज की सेवा में ही गुजारी। पाकिस्तान बनने से पहले वे आर्य समाज मे सक्रिय भाग लिया करते थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब और उससे सम्बन्धित कई संस्थाओं के वे सदस्य भी थे। लुधियाना की शिक्षा संस्थाओं के भी वे सदस्य रहे हैं। कांग्रेस के साथ भी उनका सम्बन्ध रहा है। सार्वजनिक सेवा में उन्हें बहुत रुचि थी, इसलिए जहां कहीं उनकी सेवा की आवश्यकता होती वे पहुंच जाया करते थे। लिखने पढ़ने मे भी उन्हें कुछ रुचि थी। परन्तु अधिकतर व अपना समय आर्य समाज की सेवा में ही व्यतीत किया करते थे। उनके जाने से आर्य समाज को तो आघात पहुंचा ही है परन्तु लुधियाना के सार्वजनिक जीवन से भी एक ऐसा व्यक्ति चला गया है, जिन्हें वहां की जनता बहुत देर तक याद [illegible]

आया होली का त्योहार

लेखक—श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ. प्र.)

सुमन खिले हैं उपवन-उपवन,
जाग उठे हैं खेत-बाग-बन,
हरीतिमा है छायी चहु दिशि—
हर्षित सा हो गया मगन,

कण-कण से उठ रहा अलौकिक—
मर्म भरा मधुरिम सा प्यार।
आया होली का त्योहार ॥

पिकी—पपीहे का मृदु गु जन,
जन गण-मन करता अनुरजन,
प्रमुदित हुआ प्रकृति का प्रागण—
हुआ प्रफुल्लित भू का कण-कण,

जागृति का है बिगुल बजा अब—
चेतनता छा गई अपार।
आया होली का त्योहार ॥

खगकुल करते मधुरस पान,
गाते अमृत स्वर मे गान,
लगवाई ले रहे हमारे—
खेत, बाग, बन व खलिहान,

भावकता से पूर्ण हुआ है—
मधु ऋतु मे सारा ससार।
आया होली का त्योहार ॥

मानवता बन गयी विजयिनी,
वृष्टि बनी धरती की पैनी,
वसुधा है शृगार किए नव—
दिखती मनमोहक मृग नयनी,

आयी है अब आज चतुर्दिक—
मृदुल मनोहर, विपुल बहार।
आया होली का त्योहार ॥

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं
हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमां
हमारा ॥
यूनान मिस्र रूमा, सब मिट गए
जहा से।
अब तक मगर है बाकी नामोनिशा
हमारा।

यह है परिणाम हमारी सत्य विद्या का। पर सत्य विद्या कठोर तपस्या से मिलती है, जो सभी सुखो का मूल होती है।

उपर्युक्त ऋचानुसार, विद्या दो प्रकार की है व्यावहारिक और आत्मिक साधारण कर्म—जैसे खेती बाडी व्यापार, साहित्य, विज्ञान और राजनीति आदि से लेकर चक्रवर्ती राज्य तक का ज्ञान व्यावहारिक विद्या से होता है। जिसका विस्तार भी बडा है और जो है भी बहुत जरूरी।

दूसरी है—आत्म विद्या। जिससे आध्यात्म ज्ञान की प्राप्ति ज्ञान की प्राप्ति होती है। ईश्वर, जीव, मन, शरीर और इस जड जगत का क्या कारण और प्रयोजन है—यह जानकारी इसी से मिलती है। इन दोनो मे फर्क यह है कि—जहा व्यावहारिक विद्या से सभी ससारिक सुखो की उपलब्धि होती है, वहा तत्व ज्ञान या मोक्ष केवल आध्यात्मिक विद्या से ही मिलता है।

आज भारत मे विद्या प्राप्ति की अनेक प्रणालिया हैं। स्कूल और कालेजो की शिक्षा पद्धति से अध्यात्म विद्या उसी भान्ति दूर रहती है जैसे सामानान्तर रेखाए। ऐसी शिक्षा पद्धति को अनार्ष-पद्धति कहते हैं। जिसमे साधारण मानव कृत ग्रन्थ पढाए जाते हैं। जिनमे शब्दाडम्बर अधिक, तत्व कम होता है। दूसरी है आर्ष-पद्धति। जिस मे वेद सहित उपनिषद, दर्शन और साहित्यादि ऋषि-प्रणीत ग्रन्थ पढाए जाते हैं। जो ज्ञान-विज्ञान की निधि हैं। उन्ही से तत्वज्ञान सम्भव है।

परन्तु आज इस अनार्ष शिक्षा पद्धति मे सिनेमा आदि चरित्र नाशक तत्वो का प्रभाव बढ रहा है। जिससे युवा पीढी अनेक व्यसनो मे फस कर दिग्भ्रान्त हो रही है। आज चिन्ता का कारण यह है कि जिस सस्कृत भाषा की श्रेष्ठता का दुनिया लोहा मानती है—नयी पीढी उस से दूर जा रही है। अत विद्वानो के समक्ष आज यह प्रश्न चिन्ह हैं कि इस उदासीनता से युवा पीढी को कैसे बचाया जाए? अत इस कडी समस्या का यही हल है कि स्कूल से कालेज तक उत्तम—आर्ष ग्रन्थो को भी साथ मे पढाया जाए तथा हमारा जो असली इतिहास है—जिस मे हमारी सस्कृति की अमर कहानी अकित है—वह पढाया जाए। जिससे कच्ची बुद्धि विद्यार्थी निज सस्कृति से परिचित हो, श्रद्धावान व जागरूक हो सकें। हर्ष का विषय है कि (आर्य समाज इस दिशा मे रचनात्मक कार्य कर रहा है।

विद्या प्राप्ति न केवल पढने-लिखने, बल्कि सुनने सुनाने और सत्सगति से भी होती है। अत आत्मोत्थान वाली गाथो को सुनना सुनाना और धर्मात्मा विद्वानों की सगति भी करनी चाहिए। इससे विद्या की प्राप्ति हो कर कल्याण का मार्ग खुल जाता है।

———

आर्य समाज बठिण्डा में ऋषिबोध उत्सव

22 से 26 फरवरी तक आर्य समाज मन्दिर बठिण्डा मे शिवरात्रि उत्सव बडी धूमधाम से मनाया गया—चारों वेदो शतक एव गायत्री मन्त्रो द्वारा 6 हवन कुण्डो मे 24 यजमानो द्वारा इकट्ठा यज्ञ किया। इस यज्ञ के ब्रह्मा श्री ओम् प्रकाश जी आर्य वानप्रस्थी, अधिष्ठाता आर्य वानप्रस्थाश्रम गुरुकुल बठिण्डा थे, मानसा मण्डी, बुढलाडा मण्डी, भुचो मण्डी, रामामण्डी, आदि शहरो के आर्य परिवारो ने भी भाग लिया। श्री बी एन चावला जी आचार्य डी ए वी कालिज ने ओम् का झण्डा लहराने की रस्म अदा की। भाषण प्रतियोगिता में कई स्कूलो के विद्यार्थियो ने भाग लिया। श्री के एस कौशी डिप्टी कमिश्नर [illegible] ने अपने हाथों से विद्यार्थियों को [illegible] दिए और स्कूल को 5000 रुपए सहायता प्रदान की दोपहर को सबने [illegible] कर प्रीतिभोज किया।

दिल्ली में ऋषिबोधोत्सव

ऋषि बोधोत्सव, बृहस्पतिवार दिनाक 26-2-87 को फिरोजशाह कोटला मैदान में समारोह पूर्वक आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान मे आयोजित किया गया। इसे सफल बनाने मे आर्य समाजो, स्त्री आर्य समाजो के अधिकारियो, कार्यकर्ताओ, स्कूलो के प्रबन्धकों, प्रिंसीपलो का मैं हार्दिक धन्यवाद करता हू जिन्होंने विशेष बसो द्वारा अधिक सख्या में पधार कर खेल-कूद तथा सास्कृतिक कार्यक्रमो मे भाग लेने वाले छात्र-छात्राओ का उत्साह वर्धन किया तथा समारोह को सफल बनाने मे अपना महत्वपूर्ण योगदान किया।

आशा है कि भविष्य मे सभा के आयोजनो, कार्यक्रमों में आप सभी महानुभावो का इसी प्रकार सहयोग सभा को मिलता रहेगा।

—रामेश्वर दुर्गा [illegible]
महामन्त्री

स्त्री आर्य समाज मुहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर का वार्षिकोत्सव

स्त्री आर्य समाज मुहल्ला गोबिन्दगढ का वार्षिकोत्सव 8 फरवरी 87 रविवार को ब्रह्मा श्री सालिग्राम पराशर जी की देख-रेख में सम्पन्न हुआ। श्री पराशर जी द्वारा ही यजमानो को आशीर्वाद दिया गया। ध्वजारोहण मा य प हरबंस लाल जी शर्मा के कर कमलो द्वारा किया गया, ध्वज गीत गोबिन्दगढ हाई स्कूल की छात्रो द्वारा गाया गया। महिला सम्मेलन मे 7 फरवरी शनिवार को विदुषी बहनो एव विद्वानो ने भाग लिया। मा श्रीमती चादरानी जी शर्मा (परवाणु) मा डा ब्रह्मवती जी नारग, (देहरादून) मा श्रीमती कमला जी आर्या उप प्रधान प्र स पजाब मा प सालिग्राम जी पराशर, श्री नरेश जी शास्त्री करतारपुर श्री नरेन्द्र जी शास्त्री(नगल) श्री प वेद प्रकाश जी ने अपने 2 विचार प्रकट किए।

8 फरवरी रविवार को मान्य श्री वीरेन्द्र जी प्रधान सभा प्र नि सभा पजाब सभ महामन्त्री श्री ब्रह्मदत्त शर्मा प सालिग्राम जी पराशर, श्री नरेन्द्र शास्त्री जी नगल, श्री नरेश जी शास्त्री करतार पुर एव बच्चे, श्रीमती चादरानी जी शर्मा श्रीमती कमला जी आर्या उप प्रधान स पजाब, प्रोफैसर श्री राम अवतार जी डी ए वी कालेज मा श्री चतुर्भुज जी मित्तल, प प्रेम देवार्य जी ने अपने अपने विचार प्रकट किए। जिससे जनता काफी प्रभावित हुई। पार्वती जैन को ऐजुकेशनल हाई स्कूल की छात्राओ ने मधुर स्वर मे ऋषिगान गाया। श्री बूटाराम जी के भी भजन हुए। तथा मु गोबिन्द गढ गुरुद्वारा की बहनो द्वारा मधुर भजन गाए गए। ऋषिलगर मे सब ने मिल कर बडी श्रद्धा से भाग लिया। उपस्थिति दोनो दिन आशाजनक रही। बसतोत्सव भी 3 फरवरी को मनाया गया। पाच सौ रुपया वेद प्रचार हेतु श्री वीरेन्द्र जी प्रधान प्र नि सभा पजाब को भेट किया गया। 12 2 87 को प्रात 8 बजे महा गायत्री यज्ञ की पूर्णाहुति डाली गई।

—कृष्णा कोछड मन्त्री

लुधियाना में विशाल सत्संग सम्पन्न

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) के वरिष्ठ उप-प्रधान श्री गुरबचन सिंह जी आर्य के घर 15-2-87 रविवार को सायं 3 बजे एक बड़े सत्सग का आयोजन हुआ। सर्व-प्रथम प सूर्यपाल शास्त्री एम ए (हिन्दी सस्कृत) ने यज्ञ सम्पन्न करवाया एवं यजमान परिवार को आशीर्वाद प्रदान किया। वेद प्रचार भजन मण्डली के मधुर भजनो ने सब का मन मुग्ध किया। स्त्री आर्य समाज दाल बाजार की ओर से बधाई गीत गाया गया। इस अवसर पर लोगो को लाने एव ले जाने के लिए आदरणीय ज्ञानी जी ने मैटाडोर का प्रबन्ध किया था जिससे यह सत्सग एक जलसा के रूप में बदल गया था। इस अवसर पर प सूर्यपाल शास्त्री ने अनुव्रत पितु पुत्रो—की सारगर्भित व्याख्या की और लोगो को बताया कि पुत्र, माता, पिता कैसे होने चाहिए। ज्ञानी जी की ओर से श्री रणवीर जी भाटिया ने सभी का धन्यवाद किया। जल पान के पश्चात सत्सग की कार्यवाही सम्पन्न हुई। स्मरण रहे कि लुधियाना में युवक सभाओ की स्थापना से ऐसे सत्सग जोर शोर से चल रहे हैं।

—सयोजक आर्य युवक सभा
सुरेश चड्ढा

आर्य समाज मंडल डाबलशिप में ऋषिबोधोत्सव

आर्य समाज मंडल डाबलशिप में (ऋषिबोधोत्सव) का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस में दिनांक 21 2-87 से 26-2-87 तक वेद सप्ताह मनाया गया। इस में सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया था।

प्रतियोगिता में प्रथम द्वितीय, तृतीय आने वाले बच्चो को विशेष पुरस्कार एव साहित्य दिया गया। सभी प्रतियोगी बच्चों को सांत्वना पुरस्कार बांटे गए।

—इन्द्र कुमार शर्मा
प्रचार मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 ｜ रजि. नं. N.W/J.L.55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 18 अंक 50 9 चैत्र सम्वत् 2043 तदानुसार 22 मार्च 1987 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

महर्षि दयानन्द और गुरु नानक देव

सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गुरु नानक देव के विषय मे जो कुछ लिखा है उस पर कई व्यक्तियो को आपत्ति है। इस विषय में कई बार सिखों की ओर से विशेष आपत्ति की गई है जो कुछ उसके विषय में कहा जा रहा है उसकी समीक्षा करते हुए विख्यात पत्रकार श्री जगतशोरी ने अपने जो विचार दिए हैं। वह इस लेख मे पाठको की जानकारी के लिए प्रस्तुत किए जा रहे हैं। हम उनके विचारो से पूर्णतया सहमत नहीं हैं, परन्तु उन्होंने एक नया दृष्टिकोण हमारे सामने रखा है। इसलिए उसे नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है ताकि आर्य मर्यादा के पाठक समस्या के इस पक्ष को भी समझ सकें। —सम्पादक

श्री जगतशोरी जी लिखते हैं कि—

"आप हिन्दुओ को हमारे गुरुओ के प्रति कोई श्रद्धा या सम्मान नहीं है। क्या आपको मालूम नही कि आपके दयानन्द ने गुरु नानक देव के विषय में क्या कहा था। वह इनका अपमान किया करते थे।"

हम इस प्रकार के विचार प्राय नित्य प्रति सुनते रहते हैं कोई कहता है। "तुम्हारे दयानन्द ने गुरु नानक देव को दम्भी कहा था" "तुम्हारे यदुनाथ सरकार ने गुरु गोविन्दसिंह को एक डाकू कहा था।"

इस प्रकार के कई प्रश्न किए जाते हैं। परन्तु जो व्यक्ति यह सब कुछ कहते हैं उन्होंने गम्भीरता से वह कुछ पढने का प्रयास नहीं किया है कि स्वामी दयानन्द या यदुनाथ सरकार ने वास्तव मे लिखा क्या था? मुझे अभी तक एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिला जिसने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा हो और फिर इस प्रकार के आरोप लगा रहा हो। जो भी मिले हैं उनमें अधिकतर वह हैं जिन्होंने यह समझने का प्रयास ही नहीं किया कि लिखा क्या गया है?

यदि हम मान भी लें कि स्वामी दयानन्द ने गुरु नानक देव को दम्भी कहा है तो यह भी समझने की आवश्यकता है कि इसका अभिप्राय क्या है। क्या इसका अर्थ यह नहीं हो सकता कि गुरु नानक ने वेदों के विषय में क्या कुछ लिखा है जबकि उन्होंने वेद पढ़े ही न थे। वह वेद पढ भी न सकते थे, क्योकि वह संस्कृत नही जानते थे। उनके अनुयायी इस विषय मे चाहे कुछ कहें गुरु नानक जी भी कभी इस बात से इन्कार न करते कि वह संस्कृत नही जानते।

यदि यह समझ भी लिया जाए कि जो कुछ स्वामी दयानन्द जी ने लिखा था वह ठीक न था फिर भी क्या यह ऐसा विषय है जिसके लिए उनके विरुद्ध इतना रोष प्रकट किया जाए। क्या दयानन्द ने केवल गुरु नानक के विषय मे ही यह लिखा है? स्थिति यह है कि उन्होंने इससे भी अधिक तीव्र शब्द कई हिन्दू महात्माओ के विषय मे भी लिखे हैं। उन्होंने हिन्दू देवी देवताओ को भी नहीं छोड़ा था और यदि हम उनके जीवन पर दृष्टिपात करें तो हम देखेंगे कि उनके जीवन मे ऐसी ऐतिहासिक घटना हुई। जिसके कारण उन्होंने बहुत कुछ वह भी कहा जिसे लाखो लोग पसन्द नही करते। सबसे महत्त्वपूर्ण घटना उनके जीवन की यह थी कि जब वह यह कहने पर विवश हुए कि यदि यह शिवलिंग अपने आपको एक साधारण चूहे से नही बचा सकता तो यह मेरी क्या सहायता कर सकेगा? यह प्रश्न एक शिवरात्रि को दयानन्द के सामने आए और उसके उत्तर मे उन्होंने जो कुछ देखा और सोचा वह कह दिया।

क्या यह एक वास्तविकता नहीं है कि संसार के जितने बड़े-2 सुधारक हुए हैं वह इसी प्रकार के प्रश्न समय-समय पर करते रहे हैं। क्या वह सब इसी स्पष्ट वादिता से नही बोलते रहे। ईसा मसीह के विषय मे कहा जाता है कि वह बड़े दयालु थे किसी दूसरे के दिल को नही दुखाते थे फिर भी उन्होंने अपने समय के कई लोगो के विषय मे कहा है कि वह झूठे हैं, मूर्ख हैं, किसी के विषय मे कहा वह अन्धे हैं और किसी को सांप कह कर पुकारा और कई व्यक्तियो को यह भी कहा कि वह एक ऐसी कब्र की तरह हैं जिसे ऊपर से सजा दिया गया है अन्दर उसके एक मुर्दे की हड्डिया और कई प्रकार की अपवित्र चीजें हैं।

गुरुओ की भाषा बहुत सरल है और उन्होंने यह प्रयास किया है कि किसी का दिल न दुखाए। इसीलिए उन्होंने जो कुछ कहा है उसका लोगो पर प्रभाव भी पड़ता है। परन्तु उन्होंने भी कई ऐसी बातें कही हैं जो उतनी ही आपत्तिजनक हैं। एक स्थान पर उन्होंने यह भी कहा है कि यदि ब्राह्मण एक विशेष व्यक्ति होता है तो वह अपनी माता के गर्भ के स्थान पर किसी और स्थान से क्यों नही निकला। क्या ब्राह्मण इस पर आपत्ति नही कर सकते कि उन की मा के गर्भ को विवादस्पद बनाया जा रहा है। एक बार जब गुरु नानक जी मक्का में अपने पैर काबा की तरफ कर के सोए तो एक मुसलमान ने उनसे कहा कि वह अपने पैर उधर से हटा लें क्योंकि उधर काबा है। गुरु जी ने कहा कि कौन सी वह जगह है जहा परमात्मा नही है। क्या मुसलमान इस पर आपत्ति नही कर सकते कि गुरु जी उनके काबा को वह महत्व नहीं दे रहे जो कि उनके पैगम्बर ने उसे दिया था? ग्रन्थ साहब में सैंकड़ो बार वेदो का जिकर आता है और उसमें अकाल पुरुष का जो वर्णन किया गया है। अर्थात् जिसका कोई समय और जिसकी कोई सीमा नही। यह वैदिक सिद्धान्तो के अनुसार नही तो क्या है? स्वामी दयानन्द ने इस पर आपत्ति की है जो यह लिखा गया है कि जिस ब्रह्मा ने चार वेद पढ़े थे वह भी मर गए और चारो वेद एक कहानी हैं और वेद कभी भी एक साधु महात्मा को प्राप्त नहीं कर सकते। क्या महर्षि दयानन्द को यह अधिकार न था कि वह भी इस पर आपत्ति न करते? यद्यपि इस प्रकार के विचार उपनिषदो मे भी लिखे गए हैं। ऐसी स्थिति मे जब दयानन्द ने यह देखा कि गुरु नानक वेदो के विषय में वह कुछ लिख रहे हैं जो दयानन्द के मतानुसार अत्यन्त आपत्तिजनक था। तो उस पर उनकी प्रतिक्रिया यदि ऐसी तीव्र थी तो इसके लिए कोई उन पर आपत्ति नही की जा सकती और क्या हिन्दुओ को भी इस पर आपत्ति नही होगी कि ग्रन्थ साहब मे यह भी लिखा गया है कि—तुर्क काने, हिन्दू अन्धे। अर्थात् मुसलमानो की तो एक आंख है और हिन्दू अन्धे हैं। क्या इससे किसी की भावना को चोट न लगेगी? और क्या यह सब कुछ पढ़ कर हिन्दू और मुसलमान दोनो न बिगड़ेंगे?

गुरुनानक ने जैनियो के विषय मे जो कुछ लिखा है वह और भी आपत्तिजनक है और यदि जैनी उस पर बिगड़ और कहे कि उनके साथ अन्याय किया गया है तो फिर क्या होगा? इसी प्रकार लाखो लोग हैं जो दुर्गा या काली की पूजा करते हैं। ग्रन्थ साहेब मे उनके विषय मे भी जो कुछ लिखा गया है वह अत्यन्त आपत्तिजनक है और जो कुछ दयानन्द ने लिखा था उससे भी अधिक आपत्तिजनक शब्द लिखे गए हैं।

यदि एक क्षण के लिए यह मान भी लिया जाए कि जो कुछ दयानन्द ने लिखा था वह तीव्र और आपत्तिजनक शब्द थे तो क्या केवल इसीलिए दयानन्द की निन्दा की जाए और बाकी उन्होंने जो कुछ किया था उस सब को अनदेखा कर दिया जाए। उन्होंने मूर्ति पूजा के विरुद्ध भी बहुत कुछ लिखा था। क्या इस प्रकार वह गुरुओं के बहुत समीप न थे। यदि यह मान भी लिया जाए जो कुछ दयानन्द ने गुरु नानक के विषय मे लिखा है तो क्या केवल इसलिए उनके विरुद्ध यह अभियान चलाया जाए,

(शेष पृष्ठ 5 पर)

आर्य समाज की भावी रूपरेखा

बुद्धिजीवियों के सम्मेलन की आवश्यकता—3

लेखक—डा प्रशान्त जी वेदालंकार 712 रूपनगर दिल्ली

(गतांक से आगे)

मैंने इस सम्बन्ध मे विभिन्न प्रदेशो मे कुछ विचार गोष्ठिया भी आयोजित की। जालन्धर मे श्री वीरेन्द्र जी से, अबोहर में प्रो राजेन्द्र जिज्ञासु तथा डा विश्वबन्धु (डी ए. वी कालिज), लखनऊ मे डा हर्षनारायण, श्री जयदेव शर्मा, तथा श्री इन्द्रचन्द्र जी से मे मिला और उक्त सगोष्ठी की रूपरेखा पर मैंने विस्तार से चर्चा की। सभी ने उसकी सफलता के लिए अपना सहयोग देने का विश्वास दिलाया। जयपुर मे श्री सत्यव्रत सामवेदी (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान) का कहना था कि यह सच है यदि अभी आर्य समाज न सभला तो सामने महान् विनाश ही विनाश है। आय समाज को राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान मे जुटना चाहिए, उसके बिना यह धम व आध्यात्मिकता का प्रचार न कर सकेगा। कलकत्ता मे श्री सीताराम जी आय(प्रधान आर्य समाज कलकत्ता) श्री गजानन्द आर्य (उप-प्रधान सार्वदेशिक सभा, दिल्ली) तथा श्री आनन्द आर्य (कोषाध्यक्ष आय प्रतिनिधि सभा बगाल) ने आय समाज कलकत्ता मे वहा के बुद्धिजीवियो की एक सगोष्ठी आयोजित की जिसमे लगभग75 उत्साही बुद्धिजीवी आर्य समाजियो ने भाग लिया। लगभग 20 व्यक्तियो ने उस गोष्ठी मे अपने विचार व्यक्त किये, जिसमे प उमाकान्त उपाध्याय, आदि प्रमुख थे, सभी ने कहा कि इस विषय पर गम्भीरता से विचार होना चाहिए। इसी प्रकार सिलीगुडी मे वहा के आय समाज के मन्त्री श्री सर्वेश्वर झा ने दो दिवसीय एक विचार गोष्ठी आयोजित की जिसमें वहा के अध्यापको, प्राध्यापको सम्पादकों, शिक्षा शास्त्रियो ने भाग लिया और अपने 2 विचार रखे। विशेष रूप से शिक्षा के माध्यम को लेकर आर्य समाज की भूमिका—इस विषय पर वक्ता बोले। यह सबने कहा कि इस प्रकार के विषयो पर वर्तमान परिस्थितियो मे एक विचार गोष्ठी के द्वारा आर्य समाज को अपनी नीति निर्धारित करनी चाहिए।

आपको स्मरण होगा कि जब बौद्ध मत में शिथिलता आने लगी थी तो धर्म सगीतिका आयोजन करके उसके शैथिल्य को दूर करने व उसकी रूप रेखा मे युगानुरूप परिवर्तन करने तथा उसे प्रभावी बनाने के लिए व्यापक योजना बनायी गयी थी। इस प्रकार की तीन सगीतिया हुई। इतिहास प्रमाण है कि शिथिल बौद्धमत सक्रिय हुआ, उसमे समयानुसार अनेक परिवर्तन हुए तथा उसका व्यापक प्रसार हुआ। आज 2500 वर्षों के उपरान्त भी उसमे जीवन है, वह ससार का एक प्रमुख मत है।

मेरी योजना यह है कि पहले बुद्धिजीवी आर्य समाजियो का एक तीन दिवसीय सम्मेलन हो, जिसमे विश्वविद्यालय के प्रोफैसर, प्राध्यापक उच्च पदो पर आसीन प्रशासनाधिकारी, सम्पादक, लेखक, अभियन्ता, चिकित्सक तथा अन्य प्रमख व्यक्ति इसमे एकत्र हो, और उस मे अपने-2 विचार व्यक्त करें। ये विचार लिखित रूप मे हो। उन लिखित निबन्धो पर प्रतिनिधि अपने विचार व्यक्त करें। बाद मे उन लिखित निबन्धो व प्रतिनिधियो के विचारो को प्रकाशित करके उन्हे प्रचारित और प्रसारित किया जाए, और कुछ समय के उपरान्त उन पर पुन विचार हो और अन्त मे सार्वदेशिक सभा, प्रतिनिधि सभाओ व प्रादेशिक सभा को वे विचार क्रियान्वित करने के लिए दिए जाए।

यह सच है कि किसी विषय पर सैद्धान्तिक विचार उतना कठिन नही है जितना कि उसको व्यवहार रूप मे लाना अत उक्त सम्मेलन मे सैद्धान्तिक विचारो के क्रियान्वयन पर भी एक सगोष्ठी आयोजित करने का विचार है।

इस सारी योजना मे विपुल धनराशि के व्यय होने का अनुमान है। हम विद्वानो को उनके लिखित वक्तव्यो पर पारिश्रमिक न भी दे सकें तो भी उनके मार्ग व्यय आदि की व्यवस्था करनी ही होगी। उनके सम्मानपूर्वक निवास आदि का प्रबन्ध जहा वह सम्मेलन हो, उस स्थान के प्रसिद्ध आय समाजी परिवारो मे किया जाए। एक मोटे अनुमान के अनुसार इस सब पर कम से कम 50 हजार रुपए व्यय होगा। इसके लिए हमे आर्य समाज को गतिशील बनाने के इच्छुक व्यक्तियो के सक्रिय सहयोग की आवश्यकता है। हम विभिन्न आर्य समाजो, प्रतिनिधि सभाओ व सार्वदेशिक सभा से भी इसमे सहयोग देने की अपील करते हैं। हमे विश्वास है कि आप शीघ्र ही धनराशि भेजकर अपने निर्णय से हमें अवगत कराएगें।

इसके लिए हमने आर्य समाज बुद्धिजीवी सम्मेलन नाम से एक संस्था का गठन किया है, धन प्राप्त होने पर उसी के नाम से एक खाता खोलकर कार्य का समुचित सचालन एक समिति करेगी। समिति के पदाधिकारियों का निर्णय शीघ्र ही एक बैठक मे किया जाएगा। उसके लिए पाठक भी अपने सुझाव भेज सकते हैं।

प्रस्तावित विचार गोष्ठी मे मुख्य रूप से तीन विषयो पर विचार होगा।

(1) भारत की शिक्षा समस्या विशेष रूप से आर्य समाज से सम्बद्ध शिक्षा सस्थाए। भारत की शिक्षा समस्या मे भारतीयता व शिक्षा के माध्यम की समस्या प्रमुख है। आर्य समाज से सम्बद्ध शिक्षा सस्थाए तीन प्रकार की हैं—(क) गुरुकुल (ख) आर्य विद्यालय एव आर्य महाविद्यालय तथा (ग) डी ए.वी सस्थाए ये सभी प्रकार की सस्थाए अपने आदर्शों से हट चुकी हैं। उसका मूल कारण भारत सरकार की शिक्षा नीति है। हम अपनी सस्थाओ का विकास अपने आदर्शों के अनुरूप न करके उसे सरकारी शिक्षा नीति के अनुसार चलाने के लिए बाध्य हो गए हैं। इसमे न उनका स्वतन्त्र विकास करने की क्षमता है और न भारत सरकार से सघर्ष कर उनको अपने अनुरूप बनाने की शक्ति है। डी. ए वी सस्थाओ का विकास हम पब्लिक स्कूलो की नकल पर कर रहे हैं। उसके अपने आदर्श तिरोहित हो चुके हैं। निबन्ध लेखक इस पर दिशा निर्देश करेंगे। इसी प्रसग मे भारतीय युवको के चरित्र निर्माण एव उनमे सास्कृतिक रिक्तता की समस्या पर भी विचार किया जाएगा।

(2) राष्ट्रीय समस्या और आर्य समाज? हमारा राष्ट्र इस समय एक ओर विघटनकारी तत्वो से जूझ रहा है। उस पर विदेशी शक्तिया दबाव डालकर उसे फिर से पराधीन करने के उपक्रम मे लगी हैं। दूसरी ओर अभारतीय एव भारतीय सस्कृति से भिन्न तत्व हावी होकर हिन्दुत्व को समाप्त करने में लगे हैं देश मे अल्पसख्यको की समस्याए भयकर रूप से हैं। सत्तारूढ दल सन्तुष्टीकरण की नीति को अपना रहा है। सविधान मे अल्पसख्यको व हरिजन वर्ग को दिए गए विशेषाधिकारों का वैदिक वर्ण व्यवस्था से क्या सम्बन्ध है? क्या आश्रम व्यवस्था देश की बेकारी समस्या को आज भी दूर कर सकती है? भारतीय स्त्री क्या आज भी घर की समाज्ञी बनने मे समर्थ है? दहेज तथा अन्य कारणों से स्त्री की दुर्दशा को दूर करने मे आर्य समाज क्या करे? आदि प्रश्नो का विवेचन दूसरे विषय के अन्तर्गत होगा।

(3) आर्य समाजों के पारस्परिक सघर्ष आर्य समाज के सविधान व कार्यक्रमों में युगानरूप परिवर्तन की आवश्यकता : आर्य समाज एक सस्था अथवा सगठन भी है और एक विचार एवं सिद्धान्त भी। आर्य समाज के सिद्धान्त सर्वथा वैज्ञानिक हैं और आज के युग में भी सर्वथा उपयोगी हैं, पर हम उनका प्रचार उतने सशक्त रूप से नहीं कर पा रहे। उसका एक कारण हमारे सगठन की कुछ दुर्बलताए हैं। हमें उन दुर्बलताओ को दूर करने के लिए उसकी कार्यप्रणाली व संविधान में कुछ अपेक्षित परिवर्तन करने होंगे जिससे उसके पारस्परिक सघर्ष समाप्त हो सके। कम से कम न्यायालय मे हमे न जाना पडे। यह भी देखना होगा कि महर्षि दयानन्द, आर्य समाज तथा आर्य सिद्धान्तो पर आस्था रखने वाली सस्थाए सगठन से परे न रहे। हमारा लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' है। व्यष्टि से समष्टि, व्यक्तिगत उन्नति से अन्त राष्ट्रीय उन्नति करना हमारा लक्ष्य है। इस महान लक्ष्य को प्राप्त करने मे हमें उपाय सझाने होगे, हमे अपने मन्तव्यो को पूरे विश्व में पहुचाना है। व्यक्तिगत चरित्र व ज्ञान के विकास के लिए अच्छे साहित्य का होना आवश्यक है। आज आर्य समाज पुस्तकालय पर ध्यान नही देते, उनका आरोप है कि लोगो को पढने मे रुचि नहीं है। इसी प्रकार आर्य समाज की अपनी कोई साहित्यिक पत्रिका नही है, ये सब प्रश्न भी नये परिपेक्ष्य मे विचारणीय हैं। प्रचार के आधुनिकतम साधनों का प्रयोग भी हमे करना होगा। जो बुद्धिजीवी हमसे दूर हो गए हैं, उन्हे अपने निकट लाने के प्रयास करने होगे। युवा वर्ग आज कई कार्यक्रम लेने के लिए तडप रहा है, उसे नए-नए कार्यक्रम देने होंगे, और भी अनेक प्रश्न हैं जिन पर विचार की आवश्यकता है। इस सम्बन्ध मे हम आर्य सस्थाओ के पदाधिकारियो के अतिरिक्त अन्य विद्वानो के विचार प्रस्तुत करना चाहेंगे।

हमने इस लेख में आर्य समाज की भावी रूपरेखा के लिए बुद्धिजीवियों के सम्मेलन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला है तथा उसकी एक सक्षिप्त रूप रेखा प्रस्तुत की है। इसके लिए मुझे पाठको के सहयोग की आवश्यकता है। पाठको से निवेदन है कि—

(1) उक्त सम्बन्ध मे अपने विचार व्यक्त करें तथा अपने सुझावो से हमे अवगत कराए, पत्र-पत्रिकाओ में भी इस सम्बन्ध मे एक विचार मच आरम्भ होना चाहिए।

(2) उक्त विचार गोष्ठी की अभी तिथि तय नही की गयी, शीघ्र ही उस की घोषणा होगी। पर उसके लिए जो प्रतिनिधि बनना चाहे अभी से सम्पर्क करना प्रारम्भ करें। सभी आर्य सस्थाओ से निवेदन है कि उक्त विचारगोष्ठी के लिए अपने यहा से अधिक से अधिक प्रतिनिधि बनाएं।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

सम्पादकीय—

पंजाब में आर्य समाज का भविष्य—3

इस विषय पर पिछले दो लेखों में जो कुछ मैं लिख चुका हू पाठक गण उसे पढ़ चुके होंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का एक अधिकारी होने के नाते जो कठिनाईयां हमारे सामने आ रही हैं उन्हें मैं समझता हूं। उनसे प्रभावित होकर ही मैंने यह लेख लिखने प्रारम्भ किए हैं। मुझे यह स्वीकारोक्ति में भी कोई सकोच नहीं कि मैं वर्तमान परिस्थितियों से अत्यन्त निराश हू। कई बार कुछ भाई यह कह भी देते हैं कि जो कुछ हो रहा है इसके दायित्व से सभा के अधिकारी भी बच नहीं सकते। मैं इस आरोप को भी स्वीकार करने को तैयार हू परन्तु अपने भाईयो और बहनों के सामने अपनी कठिनाईयां अवश्य रखना चाहता हू। यदि वह किसी प्रकार इसका कोई समाधान कर सकें तो मुझे उसकी हार्दिक प्रसन्नता होगी।

इसी क्रम के पिछले लेख मे मैंने आज से पच्चास वर्ष पहले के पंजाब में आर्य समाज का जो प्रचार हुआ करता था उसका जिकर किया था और साथ ही यह लिखा था कि उस समय यदि आर्य समाज के उत्सवो मे हजारों व्यक्ति सम्मिलित हुआ करते थे तो इसका एक कारण यह भी था कि उस समय बहुत उच्चकोटि के व्याख्याता हमारे पास हुआ करते थे। भजनीक और उपदेशक दोनो ऐसे होते थे जिन्हे सुनने के लिए दूर-2 से लोग आते थे। आज हमारे पास उस स्तर के उपदेशक नहीं हैं और पजाब की स्थिति सबसे अधिक सोचनीय है कोई समय था जब आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के पास बीसियों उपदेशक और भजनीक होते थे। पजाब सभा के भजनीक और उपदेशक दूसरे प्रान्तो में जाया करते थे। आज हमारी सभा के पास केवल दो उपदेशक हैं। हमने बहुत प्रयास किया कि किसी प्रकार हमे नए उच्चकोटि के उपदेशक मिल जाए। हमने प्राय सभी प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओ की जो पत्रिकाए निकलती हैं उन सब में विज्ञापन दिये और यह भी लिखा कि हम एक हजार रुपया मासिक तक देने को तैयार हैं। आवश्यकता हुई तो उससे भी अधिक दे देंगे। परन्तु कोई उच्चकोटि का विद्वान् आज पजाब मे आने को तैयार नहीं है। हमने सार्वदेशिक सभा को भी लिखा कि वह हमारी इस कठिनाई को दूर करने मे हमारी कुछ सहायता करें वहा से भी कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिला। इसलिए अब मैं इस परिणाम पर पहुचा हू कि हमने अपना जो प्रचार करना है उसका कोई और ढग सोचना पड़ेगा? वैसे मेरी यह निश्चित धारणा है कि सारे देश में ही स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। हमारी प्रचार प्रणाली भी बहुत पुरानी हो गई है। परिस्थितियां बदल गई हैं। जनता का सोचने का ढंग बदल गया है। अब कई प्रकार के कई नए-नए ढग बन गए हैं। जिनके द्वारा प्रचार कार्य सरल हो गया है। इसी के साथ हम चाहें या न हमे यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि अग्रेजी का महत्व दिन प्रति दिन बढ़ रहा है और सस्कृत कम हो रही है। इसी के साथ प्रादेशिक भाषाए अधिक सक्रिय रूप मे सामने आ रही हैं। पहले हमारा सारा साहित्य केवल हिन्दी या उर्दू में प्रकाशित हुआ करता था अब प्रादेशिक भाषाओ की अवहेलना नहीं की जा सकती। परन्तु पजाब मे हमारे लिए यह भी कठिनाई है कि पजाबी भाषा में आर्य समाज के साहित्य के लिखने वाले बहुत कम मिलते हैं। स्वर्गीय स्वामी निर्मलानन्द जी और स्वर्गीय श्री पृथ्वी सिंह जी आजाद दो हमारे महारथी थे जो पजाबी भी जानते थे और आर्य समाज के सिद्धान्तों के भी विशेषज्ञ थे। उन्होंने कुछ पुस्तकें लिखी भी थी परन्तु अब प्रतिदिन पजाबी भाषा मे भी कुछ परिवर्तन और सशोधन हो रहा है। पंजाब में हिन्दू पंजाबी पढ़ते तो हैं परन्तु उस प्रकार पजाबी के विशेषज्ञ नहीं मिलते जैसे कि सिख मिलते हैं और कोई ऐसा सिख नहीं मिलता जिसको आर्य समाज की विचारधारा का पूरा ज्ञान हो। इसी सन्दर्भ मे मैं पाठकों के सामने अपनी एक और कठिनाई भी रखना चाहता हू। हम बहुत देर से यह प्रयास कर रहे हैं कि सत्यार्थ प्रकाश का पजाबी अनुवाद प्रकाशित किया जाए। यह कोई आसान काम नहीं है। इसे वही व्यक्ति कर सकता है जो कि हिन्दी, सस्कृत और पजाबी तीनो भाषाए जानता हो श्री पृथ्वी सिंह जी आजाद इस दिशा में कुछ काम करके छोड़ गए हैं अब हमारी कठिनाई यह है कि इसे छपवाए कहा। न पजाब मे न देहली मे कोई ऐसा प्रैस है जहा यह ग्रन्थ प्रकाशित किया जा सके। बड़े-बड़े पजाबी प्रैस प्राय सिखों के होते हैं उनमे से कोई भी सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशित करने को तैयार न होगा। न हम चाहेंगे कि ऐसे ग्रन्थ को प्रकाशित करते समय उसमे कुछ भी ऐसा छाप दिया जाए जो हमारे सिद्धान्तो के विरुद्ध हो।

मैंने यह सब कठिनाईयां इसलिए आर्य जनता के सामने रखी हैं ताकि वह गम्भीरता से इस पर विचार करें कि पजाब मे वर्तमान परिस्थितियो मे हम आर्य समाज का प्रचार कैसे कर सकते हैं। मैं जानता हू कि कई लोग टीका टिप्पणी तो बहुत करते हैं और कह भी देते हैं कि पजाब मे कोई काम नहीं हो रहा है, मैं स्वीकार करता हू कि स्थिति सन्तोषजनक नहीं है परन्तु कोई हमे यह नहीं बताता कि हम क्या करें और क्या न करें? और न ही इस मे कोई हमारी सहायता कर रहा है। इसीलिए मैंने यह प्रश्न पजाब की आर्य जनता के सामने रखा है उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि दूसरे प्रान्तों मे रहने वाले आर्य भाई हमारे साथ अपनी पूरी-2 सहानुभूति तो अवश्य रखेंगे परन्तु इससे अधिक हमारी कोई सहायता नहीं करेंगे। अपनी सहायता हमे स्वय ही करनी पड़ेगी। वह कैसे की जाए इस पर भी हमें आपस मे बैठ कर विचार करना चाहिए। इसी लक्ष्य को सामने रखते हुए मैंने यह लिखा है कि यदि कोई महानुभाव इस विषय मे हमे अपने सुझाव दे सकें तो हम उनके आभारी होंगे। शेष आगामी अक मे लिखूंगा।

—वीरेन्द्र

आर्य वीरो भगतसिंह को न भूलो

23 मार्च को भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु का बलिदान दिवस है। राजगुरु महाराष्ट्र के थे, भगतसिंह और सुखदेव न केवल पजाब के थे बल्कि उनका आर्य समाज के साथ विशेष सम्बन्ध था। सरदार भगतसिंह, के दादा सरदार अर्जुनसिंह और पिता सरदार किशनसिंह दोनों कट्टर आर्य समाजी थे और सुखदेव के चाचा लाला चिन्तराम जी थापर भी आर्य समाजी थे। भगत सिंह और सुखदेव अपनी जवानी मे ही क्रान्तिकारी आन्दोलन की तरफ झुक गए थे। इसी लिए उन्होंने आर्य समाज मे अधिक भाग नहीं लिया था परन्तु उनके परिवारो मे आर्य समाज का जो वातावरण था उसका उन पर अवश्य गहरा प्रभाव था। आर्य समाज इस बात पर गर्व कर सकता है कि उसने राम प्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह और सुखदेव जैसे शहीद पैदा किए। जिन्होंने अपना सर्वस्व अपने देश पर न्यौछावर कर दिया। 23 मार्च को जहा सम्भव हो सके आर्य समाजो मे उस दिन इन वीरो को अपनी श्रद्धाजलि भेन्ट करनी चाहिए और साथ ही अपनी नई पीढ़ी को बताना भी चाहिए कि यह क्या थे और इन्होंने अपने देश के लिए क्या कुछ किया था। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि आज के नेता भी हमारे इन वीरों को भूल रहे हैं। इतिहास इन्हें कभी भूल नहीं सकता क्योंकि हम आजाद हुए तो केवल इनके कारण ही। और लोगो ने भी आजादी की लड़ाई मे अपना बलिदान दिया था लेकिन जो कुछ इन्होने किया वह बहुत कम लोगो ने किया। यह एक ऐसी विभूति हैं जिनके कारण आर्य समाज को इतिहास मे एक ऐसा श्रेय मिलेगा जो किसी भी दूसरी सस्था को नहीं मिल सकेगा। 23 मार्च को इनके बलिदान दिवस पर सब आर्य समाजो मे इन वीरों के बलिदान की गाथाओ की चर्चा होनी चाहिए। 22 मार्च रविवार के दिन भी आर्य समाजो मे जो सत्सग हो उनमे उन्हें श्रद्धाजलि भेन्ट की जानी चाहिए। भगतसिंह, सुखदेव, और राजगुरु तीनो हमारे ही थे। उनका गुणगान करना हमारा कर्त्तव्य है।

—वीरेन्द्र

शहीदे-ए-आजम भगतसिंह के सपनों का भारत

लेखक—श्री रोशनलाल शर्मा अध्यक्ष वेद प्रचार मण्डल लुधियाना

✻

ससार की उन्नति का इतिहास सदा ही महापुरुषो के रक्त से तैयार होता है। जिन शूरवीरो ने राष्ट्र के प्रति अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। यहा तक कि अपने प्यारे सिद्धान्तो की रक्षा के लिए, अपने प्रिय प्राणो को भी न्यौछावर करने मे सकोच नही किया, उनकी कर्तव्य परायणता ने उनके विचारो के प्रसार के लिए विद्युत से भी बढ कर काय किया है। यह एक सर्वमान्य सिद्धान्त है कि किसी भी राष्ट्र के जीवन का अनुमान उनके त्याग, तप और बलिदान के आधार पर ही किया जा सकता है। प्रत्येक जीवित राष्ट्र जीवन का प्रमाण इस प्रकार के बलिदानो के रूप मे ही प्रस्तुत किया करता है। किसी भी सत्य के प्रचारक को अपने विरोधियो के हाथो जितनी अधिक विपत्तिया सहन करनी पडती हैं, दूसरे शब्दो मे किसी भी महापुरुष ने अपने प्रचारित सत्य के पक्ष मे जितनी भी अधिक प्रबल शहादत प्रस्तुत की है उसके सत्य का उतना ही अधिक प्रसार ससार मे हुआ है। अत धन्य है भारत देश जिसके लिए अनेक महापुरुषो ने अपने प्रिय प्राणों का बलिदान करके और अपना खून बहा कर राष्ट्र के प्रति अपनी श्रद्धा की सत्यता को प्रकट किया है।

शहीद-ए आजम भगतसिंह तथा उस के साथियो ने अपने प्राणो की आहुति देकर भारत की जनता को जगा दिया। स्वतन्त्रता प्राप्ति की पिपासा प्रत्येक के हृदय मे भडक उठी। सम्पूर्ण भारत राष्ट में एक अभूतपूर्व हलचल मच गई। यदि भगतसिंह अपने महान त्याग तप और बलिदान का परिचय देकर स्वतन्त्रता के प्रति अपनी तडप की साक्षी न देते तो वह प्रबल आन्दोलन जो उनके बाद सम्पूर्ण भारत मे उठा, फैला और ग्राम-ग्राम एव घर घर मे पहुचा, कभी भी दिखाई न देता। एक देश भक्त के बलिदान ने हजारो क्या लाखो जीवन ज्योतियो का काय किया। स्वतन्त्रता आन्दोलन की अग्नि प्रचण्ड से प्रचण्डतम होती चली गई।

अमर शहीद सरदार भगतसिह

भगतसिंह ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए सघर्षमय मार्ग चुना तथा कोई भी उसे अपने मार्ग से विचलित नही कर सका। अपने विवाह के सम्बन्ध मे उसने अपने पिता जी को लिखा यह विवाह का समय नही है, देश मुझ पुकार रहा है। मैंने तन, मन तथा धन से देश सेवा का व्रत लिया है तथा यह मेरे लिए कोई नई बात नहीं है, यह तो हमारे परिवार की परम्परा है। इसलिए मुझ आशा है कि आप मुझे इस बन्धन मे नही बाधेंगे बल्कि मुझें अपने ध्येय मे सफलता प्राप्ति के लिए आशीर्वाद देंगे। लगातार एक दूसरे पत्र मे उन्होंने लिखा कि पिता जी आप सच्चे देश भक्त एव वीर व्यक्तित्व के स्वामी हैं, यदि आप इन छोटी छोटी बातो से विचलित हो गए तो एक आम आदमी का क्या होगा। आप केवल एक दादी मा की चिन्ता कर रहे हैं, किन्तु सोचिए 33 करोड की मा। भारत माता कितनी मुसीबत मे है, हमे उसको मुसीबतो से छुटकारा दिलाने के लिए अपना सब कुछ बलिदान करना पडेगा। विवाह पराधीनता की बेडियो से जकडे भारत मे हुआ तो मेरी दुल्हन मौत होगी तथा बाराती भारत के लिए मर मिटने वाले वीर योद्धा होंगे। वास्तव मे भगतसिंह जी ने देश सेवा को अपना धर्म मान लिया था। जब भगतसिह छ वर्ष के थे तो उनके पिता के मित्र महता आनन्द किशोर जी ने पूछा कि तुम्हारा धर्म क्या है, तो भगतसिंह ने जवाब दिया कि देश भक्ति। राष्ट्र सेवा।

भगतसिंह जी एक पक्के एव सच्चे देश भक्त थे किन्तु वे सभी प्रकार की साम्प्रदायिक भावनाओं से दूर थे। असैम्बली बम्ब काण्ड के केस में उन्होंने अपने कथन मे कहा कि हमें मानवता से अधिक प्रेम है तथा किसी व्यक्ति विशेष से कोई रंजिश नही है, हमारे लिए मानव जीवन इतना पवित्र है कि हम शब्दो मे वर्णन नहीं कर सकते।

8 अप्रैल 1929 को साथी दी के दत्त के साथ भगतसिंह ने उस समय बम्ब फैंका जिस समय पब्लिक सेफ्टी बिल को पास किया जा रहा था। बम्ब फैंक कर वे भागे नही, उन्होंने इन्कलाब जिन्दाबाद के नारे लगाए। उन्होंने कहा कि हम बहरो को बता देना चाहते हैं कि आप व्यक्तियो को मार सकते हैं किन्तु आप विचारधारा को समाप्त नही कर सकते हैं। इसके बाद जब उन पर मुकद्दमा चला तो उन्होंने अपने बचाव के लिए सभी रायो को ठुकरा दिया तथा कहा राजनैतिक कायकर्ताओ को अदालतो मे कानूनी लडाई की परवाह नहीं करनी चाहिए तथा वीरता से सख्त से सख्त सजा भुगतने के लिए तैयार रहना चाहिये। वे अपना व्यक्तिगत रूप से अपना बचाव न करें बल्कि राजनैतिक दृष्टिकोण से करें। इसलिए उन्होंने अपने बचाव मे कोई रूचि नहीं दिखाई। शहीद भगतसिह, सुखदेव तथा राजगुरु को फासी की सजा हुई। 23 मार्च 1931 को उन्होंने हसते-हसते फासी के फदे को चूम लिया।

अमर शहीद सुखदेव जी

भगतसिंह जी भारत का नव निर्माण करना चाहते थे। वे किस प्रकार के भारत की कल्पना करते थे, उनके पत्र के उद्धरण मे स्पष्ट हो जाता है। उनके अपने शब्दो में भारत पराधीनता की जंजीरों में जकडा हुआ है, पराधीनता ने भूख तथा बेकारी को जन्म दिया। अंग्रेजी शासन होने के कारण भारतीयों को इन्सान नहीं समझा जाता है। भारत को आजाद कराने के लिए बहुत बडी योजनाए बनानी होंगी। भारत को आजाद कराना होगा तथा एक नए भारत का निर्माण करना होगा। झोंपडियों के स्थान पर भव्य इमारतों का निर्माण करना होगा। भूखे तथा वस्त्र हीनो को भोजन एव वस्त्र देने होंगे। इसके अतिरिक्त स्वतन्त्र, समाजवाद, सम्पूर्ण प्रभुसत्ता सम्पन्न लोकतन्त्र के सिद्धान्तो के आधार पर नव भारत का निर्माण करना चाहते थे। ऐसा भारत जहा मनुष्य का मनुष्य शोषण न करे।

अमर शहीद राजगुरु जी

स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए राजगुरु जैसे वीरो ने अपने प्राणो की की आहुति दी। आज हमारे सामने एक चुनौती है जो स्वतन्त्रता प्राप्ति से भी ज्यादा अहम् प्रश्न है उस स्वतन्त्रता को कायम रखने का। आज हमें इस बलिदान दिवस पर व्रत लेना चाहिए कि हम देश की अखण्डता और एकता लिए कार्य करेंगे तथा शहीद ए-आजम ने जिस स्वाधीन भारत का सकल्प किया तथा अपने प्राणो की आहुति दी, उस नव भारत का निर्माण कर के देश के गौरव को बढाए।

आज भी देश पर सकट छाया हुआ है। परिस्थितियां विकट होती जा रही है। आज फिर ऐसे युवको की देश को आवश्यकता है जो सरदार भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु तथा अन्य क्रान्तिकारियों की तरह देश जाति और समाज के लिए अपना सब कुछ न्योछावर करने के लिए हर समय तैयार हो। आओ इस दिन देश सेवा का व्रत लें।

———

खुशी कैसे प्राप्त करें ?

लेखक—प्रिंसीपल कु. विमला जी छाबड़ा
श्री लालबहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला

हसी खुशी व यश के बिना भी क्या कोई जिन्दगी है। बिल्कुल नहीं। वह तो एक धौंकनी मात्र होती है जो दिन-रात सास लेती और छोड़ती है। इसके अतिरिक्त कुछ नहीं।

जीवन मे हसी खुशी क्यो नही मिलती इसका सबसे बड़ा कारण है भय है। हृदय मे भय का आविर्भाव होते ही मनुष्य का रग पीला पड़ जाता है, शरीर दुर्बल हो जाता है, आखो की चमक नष्ट हो जाती है और पेट के रोग व हृदय रोग हो जाता है। परिणाम स्वरूप हसी जीवन से ऐसे छूमन्तर हो जाती है जैसे तपते तवे पर पानी की बूदें।

भय एक घातक बीमारी है जो मनुष्य को दीमक की तरह खा जाती है। इससे न केवल मनुष्य की कार्य शक्ति धीरे-2 क्षय हो जाती है। अपितु हृदय दुर्बल हो जाता है और कभी-2 तो स्थिति यहा तक पहुच जाती है कि मनुष्य हृदय रोग जैसी प्राण लेवा बीमारी का शिकार हो कर इस ससार से कूच कर जाता है।

भय का सब से बड़ा कारण होता है—असत्य जब हम दूसरो से नही अपितु अपने को भी असत्य के द्वारा ठगने का यत्न करते हैं तब दो विरोधी ताकतो सत्य व असत्य की आपस मे रस्साकशी हो जाती है। उदाहरणतया जब हम समाज मे अपने को बड़ा विद्वान, धार्मी, साहसी, ईश्वर भक्त या देश भक्त दिखाना चाहते हैं परन्तु वास्तव मे हम होते नही तब परिणाम यह होता है कि अवसर आने पर हमारे हाथ पाव फूल जाते हैं और हमारा हृदय जोर-2 से धड़कने लग जाता है। जब परीक्षा में विद्यार्थियो को प्रश्नोत्तर लिखना नहीं आता तब वे भयभीत हो जाते हैं क्योकि वे चाहते यह हैं कि किसी न किसी तरीके से वे सफल हो जाए। इसलिए वे नकल मारने का प्रयत्न करते हैं। नकल मारने के समय वे दिखाना यह चाहते हैं कि उन्हे सब कुछ आता है परन्तु वास्तव में वे नकल मार रहे होते हैं। ऐसी स्थिति मे उनकी आत्मा भय के रूप में उन्हें चेतावनी देती है कि तुम असत्य पर आचरण कर रहे हो अत अब भी समय है कि सम्भल जाओ। जब वे सम्भल जाते हैं तो वे भय से मुक्त हो जाते हैं। अन्यथा अपना परिणाम घोषित होने तक भय के द्वारा हर पल हर क्षण जीते व मरते रहते हैं।

इसी प्रकार घर परिवार में अपने लेन देन, काम धन्धा व बातचीत सभी मे सत्य की आवश्यकता होती है परन्तु होता यह है कि हम भविष्य में हानि की संभावना से झूठ का आश्रय लेकर बचने का प्रयत्न करते हैं परिणामस्वरूप और अधिक हानि कर बैठते हैं। यदि आदमी भूल करने पर शुरू मे ही उसे स्वीकार कर ले तो आधी समस्या हल हो जाती है और भय भी छूमन्तर हो जाता है। अन्यथा एक असत्य को छिपाने के लिए मनुष्य अनेको झूठ बोलता चला जाता है और अन्त मे भय ग्रस्त होकर अपनी खुशी व तेज खो बैठता है। इससे उसे यश के स्थान पर निन्दा का पात्र बनना पड़ता है। उदाहरणतया युवावस्था मे लड़के लड़किया परस्पर आकर्षण के कारण एक दूसरे के निकट आ जाते हैं परन्तु मा-बाप के विचारो से मेल न खाने पर उनके विरोध से बचने के लिए अपने मा बाप से झूठ बोलते रहते हैं व हर समय भयभीत रहते हैं। इस कारण न केवल उनकी रचनात्मक शक्ति धीरे-धीरे नष्ट हो जाती है अपितु वे अपना आत्म विश्वास भी खो बैठते हैं। आत्म विश्वास से रहित व्यक्ति को न तो खुशी मिल पाती है और न ही लोग उसे प्रशसा की दृष्टि से देखते हैं। ऐसी स्थिति मे भय से मुक्ति प्राप्त करने का एक ही उपाय है वह है सिर पर कफन बाध कर असत्य के स्थान पर सत्य का वर्णन करना और उस पर गौरव अनुभव करना जैसे सत्यवादी हरिश्चन्द्र, स्वामी दयानन्द आदि महापुरुषो ने किया।

जहा सत्य होता है वहा विश्वास होता है, जहा विश्वास होता है वहा प्यार होता है, वहा ईश्वर होता है, जहां ईश्वर होता है, वहा परम आनन्द होता है।

अत यदि हम सब हसी खुशी व यश पूर्वक जीना चाहते हैं तो भय जैसे शत्रु को सत्य व ईश्वर की भक्ति से जीतने का प्रयास करना होगा। किसी कवि ने कहा है ।

"कुछ भी बन बन कायर मत बन।"

वेद मे भी कहा है—अभय मित्राद-भयममित्राद भय ज्ञातादभयम् परोक्षात्। अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम् मित्रम् भवन्तु।

अर्थ—मित्रो से निर्भय हो जाओ, शत्रुओं से निर्भय हो जाओ। ज्ञात व अज्ञात से, दिन व रात्रि से निर्भय हो जाओ तथा सारी दिशाए मेरी मित्र हो। अर्थात् निर्भयता के कारण हमारा किसी से वैर विरोध न हो। सबसे स्नेह सम्बन्ध व मैत्री बनी रहे।

कथन भी यही है। जब ईश्वर ही सर्वशक्तिमान् है तो मनुष्य से भय कैसा।

सारांश यह है कि हसी खुशी व यश प्राप्त करने का एक उपाय है सत्या चरण, दूसरा उपाय है ईश्वर की भक्ति पर विश्वास व तीसरा उपाय है परस्पर नि स्वार्थ स्नेह से ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध व अहकार का नाश होता है, हृदय मे प्रसन्नता की मन्दाकिनी बहाने के उपाय हैं अपने मे सद बुद्धि को जागृत करना। इसके लिए इन्सान को अपनी सोच बदलने की आवश्यकता रहती है। जब भी हम कोई कार्य करने लगें तब हम सोचें कि क्या मेरा यह काय प्राकृतिक दृष्टि से स्वाभाविक है? क्या मेरे इस कार्य करने से मुझे या किसी और को कोई हानि तो नही होगी? क्या इसे करने से दूसरो को खुशी मिलेगी? क्या मेरा काय सत्य और न्याययुक्त है? क्या इस काय को करने से मेरी या समाज की उन्नति होगी? यदि उत्तर 'हां' मे है तो उस काम को विरोध सह कर भी निर्भयता पूवक करना चाहिए। उससे वतमान म चाहे कष्ट झेलने पड़ें परन्तु अन्त मे खुशी व यश ही प्राप्त होता है। किसी पजाबी कवि ने कहा है —

दुनिया मनदी जोरा नू
लख लानत है कमजोरा नू।

अर्थात दुनिया शक्तिशाली व्यक्तियो को मानती है। कमजोर व्यक्ति निन्दा के पात्र होते हैं।

सत्य, सद बुद्धि व शक्ति को प्राप्त करने के लिए ईश्वर का सब शक्तिमान, सर्वव्यापक, न्यायकारी दयालु, अपना माता पिता या मित्र मानना होगा इससे एक अदभुत सहारा मिलता है, मन मे शक्ति का सचार होता है और मनुष्य निर्भय होकर प्रसन्नता पूवक सिर ऊचा उठा कर चलने के योग्य होता है। ईश्वर के प्रति प्रेम हो जाने से मनुष्य के हृदय से अहकार मिट जाता है व उसमे कोमल भाव पैदा होता है। इसी से मनुष्य को सभी प्राणियो से स्नेह होता है व सभी उसे अपने लगने लगते है। यही स्नेह, यही अपनापन ही खुशी देता है और यही खुशी ही अमर खुशी होती है।

इस अलौकिक खुशी के लिए बार 2 सुन्दर विश्वास पैदा करने की आवश्यकता रहती है और यह निरन्तर अभ्यास से ही पैदा होता है। जब-2 आत्मविश्वास डगमगाने लगे तब-2 हमे अपने भीतर अपने सर्व-शक्तिमान, न्यायकारी व दयालु मित्र ईश्वर को बुलाना चाहिए, बुरे कार्यों को करने का विचार स्थगित कर देना चाहिए, दूसरो को कष्ट पहुचाने की भावना को भगाने के लिए लिख-लिख कर फाड़ देना चाहिए। पशु-पक्षियो को प्यार करना चाहिए, उन्हें दाना खिलाने, प्रकृति का सौन्दर्य देखने और उसके बनाने वाले परमात्मा की प्रशसा करने से भी आनन्द मिलता है। आओ प्रशसा कर देखें—

'सूर्यो ज्योति-ज्योति स्वाहा' 'अग्नि ज्योतिर्ज्योति स्वाहा।' अर्थात् सूर्य का प्रकाश! वाह वाह! अग्नि का प्रकाश! वाह वाह! देखो कैसे हृदय चिन्ता व भय से मुक्त होकर खुशी से गद-गद् हो उठता है। आओ! अपने पड़ोसी अपने सेवको व अपने मित्रों के सुख व दुख बाटें, उनकी तन, मन या धन अथवा इन तीनो से सेवा करके देखें। फिर देखो हृदय मे खुशी का सागर लहराता है या नही! खुशी दूसरो को खुशी देने से मिलती है। किसी से लेने या किसी का हक छीनने से नही मिलती। कवि सुमित्रानन्दन जी लिखते हैं —

"सुन्दर विश्वासो से ही बनता है
सुखमय जीवन"

वेद मे कहा है कि खुशी एव आनन्द ईश्वर प्रेम से मिलते हैं जैसे—

'यदग्ने स्याम अहम त्वम त्वाधा स्याम अहम सुष्ठु सत्याइहाशिष।"

अर्थ—हे प्रकाश स्वरूप! मैं तू बन जाऊ, या तू मैं बन जा। अर्थात हम दोनो स्नेह से बन्ध कर ऐसे एक हो जाए कि हमारा अलग अलग अस्तित्व समाप्त हो जाए। तब तुम्हारे यह आशीर्वाद (इहाशिष) सत्य व सुन्दर (सुष्ठु) होंगे।

सत्य, सेवा, स्नेह व परमात्मा से प्रेम ही अनन्त आनन्द व खुशी दायक साधन हैं। आओ! जरा अपना कर देखें।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

और जो कुछ बाकी उन्होंने अच्छे काम किए हैं उन सब को भुला दिया जाए और दयानन्द के कारण बाकी सब हिन्दुओ की निन्दा क्यो की जाए। सुधारक एक ही हुआ करता है। उसके अनुयाईयो की भर्त्सना करना केवल इसलिए कि सुधारक ने कुछ ऐसे विचार दिए थे जिनसे कुछ लोग सहमत नही किसी प्रकार भी उचित नही है क्या यह एक वास्तविक स्थिति नहीं है कि जो कुछ स्वामी दयानन्द ने लिखा था। उसे भूल कर लाखो हिन्दू ऐसे हैं जो गुरु साहेबान और श्री गुरु ग्रन्थ साहब की उसी तरह पूजा करते हैं जिस तरह कि सिख। एक सौ वर्ष पहले यदि एक हिन्दू सुधारक ने उस समय की परिस्थितियो को सामने रखते हुए कुछ ऐसी बातें लिख दी जिन से कि हमारे सिख भाई सहमत नही हैं तो क्या इसके कारण हम हमेशा के लिए आपस मे लड़ते रहेंगे जबकि दोनो तरफ से एक दूसरे के विरुद्ध आपत्ति की जा सकती है। अब समय है कि हम एक विशाल हृदय से इन बातो पर विचार करें और जो चीजें हमें आपस में मिलती हैं उनके द्वारा एक दूसरे की भावनाओ का सम्मान करते हुए मिल कर चलने का प्रयास करें।

समाचार और विचार

लुधियाना में महर्षि बोधोत्सव के उपलक्ष में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

जिला आर्य सभा लुधियाना के तत्वावधान मे दयानन्द माडल स्कूल लुधियाना के विशाल आगन (सामने नवीड हाऊस मारकीट) मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ 22 2 87 रविवार को आरम्भ किया गया। सारे आगन को ओ३म् के झण्डो तथा वेद मन्त्रो के बैनरो से सजाया गया था, यज्ञ के ब्रह्मा भारत के ख्याति प्राप्त विद्वान् आचार्य जैमिनी जी शास्त्री एम ए दिल्ली थे, वेद पाठ करने के लिए बहन कमला जी आर्या प बालकृष्ण शास्त्री, प सत्यपाल साधक, प सुरेन्द्र कुमार शास्त्री, प सूर्यपाल शास्त्री उन को सहयोग दे रहे थे। 22 2 87 रविवार प्रात आठ बजे यज्ञ की कार्यवाही आरम्भ हुई, यज्ञमान श्री सतीश कुमार वर्मा, अलोक कुमार मलहोत्रा, अजय कुमार बत्रा, विनोद कुमार डीगरा थे। श्री जैमिनी जी शास्त्री तथा आचार्य भद्रसेन जी होशियारपुर ने यज्ञ पर अपने सुन्दर विचार रखे, प्रसिद्ध गायक श्री बलराज आर्य, आर्य समाज किदवई नगर के युवको तथा झुगी झोपडियो मे जिला आर्य सभा के तत्वावधान मे चल रहे स्कूल के छात्रो ने प्रभु भक्ति के गीत गा कर जनता को आनन्दित किया।

लुधियाना के प्रसिद्ध आर्य समाजी श्री सोहन लाल जी ओबराए मालिक ओबराए सनप्रिन्ट्स प्रधान आर्य समाज सराभा नगर ने ओ३म् का झण्डा लहराया, यज्ञ शेष के पश्चात् प्रात काल की कार्यवाही समाप्त हुई। 23-2 87 सोमवार प्रात साढे 7 बजे यज्ञ आरम्भ हुआ। यज्ञ के यज्ञमान श्री कुलदीपराय, श्री चरणजीत लाल पाहवा, श्री चान्दन राम गम्भीर, श्री हरीशचन्द्र सब सपरिवार तथा श्री रामरत्न सौंधी थे।

24 2 87प्रात साढे 7 बजे आरम्भ हुआ यज्ञमान श्री आशानन्द जी आर्य, श्री महेन्द्रपाल स्याल सब सपरिवार, दीवान राजेन्द्र कुमार तथा बहन [illegible] मल्होत्रा थी। साय इसी हाल म 3 बजे यज्ञ आरम्भ हुआ, यज्ञ के यज्ञमान श्री पूर्ण चन्द सहगल सपरिवार श्रीमती प्रकाशवती, सन्तोष जी रहेजा, पुष्पा जी मुञ्जाल, राम प्यारी जी, स्वराज जी मेहता, नीलम जी सूद, सरला जी खन्ना, सरला जी लाम्बा थी। यज्ञ के बाद बहन कमला जी आर्या के भजन हुए।

25-2-87 प्रात. यज्ञ के यज्ञमान श्री आयोध्या प्रसाद मलहोत्रा सपरिवार श्री सेनापति मलहोत्रा सपरिवार, श्रीमती कृष्णा स्याल, श्रीमती धर्म देवी आर्या, श्री वीरेन्द्र कुमार, श्री देवराज आर्य थे। यज्ञ के पश्चात् प्रो. बलराज के रसीले गीत हुए, आचार्य जैमिनी ने वेद मन्त्रो की व्याख्या की।

साय के यज्ञमान श्री चरण जी सोही, श्री राजेश जी शर्मा, श्री वीरेन्द्र जी, श्री विजयपाल जी सब सपरिवार तथा श्रीमती विद्यावती जी आर्या थी।

26-2-87 वीरवार यज्ञ की कार्यवाही प्रात आठ बजे आर्य हा सै, स्कूल मे आरम्भ हुई, दो यज्ञ कुण्ड बनाए गए। निम्न यज्ञमान बने, श्री महेन्द्रपाल वर्मा श्री अरुण कुमार सूद, श्री ओम्प्रकाश टण्डन, श्री सुरेन्द्र कुमार बधवा, श्री नरेन्द्रसिंह भल्ला, श्री बलदेवराज सेठी, ज्ञानी गुरदियाल सिंह आर्य, श्री वीरेन्द्र कुमार सब सपरिवार, तथा श्रीमती यशवती भल्ला, श्रीमती सतीश सूद, ठीक दस बजे, प्रात. यज्ञ की पूर्ण आहुति मे हजारो लोगो ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया, आचार्य जैमिनी जी शास्त्री ने सब यज्ञमान परिवारो पर पुष्प वर्षा करके तथा फल देकर आशीर्वाद दिया।

श्री राजेन्द्र कुमार, डी-सन्ज होजरी बहन कमला आर्या, श्री महेन्द्रपाल वर्मा प्रधान जिला आर्य सभा ने यज्ञमानो को आनन्द गायत्री, ऋषि गाथा, ओकार स्तोत्र पुस्तकें भेट की। उसके पश्चात् ऋषि बोधोत्सव की कार्यवाही आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के माननीय प्रधान श्री वीरेन्द्र एम ए की प्रधानता मे आरम्भ हुई। सबसे पूर्व जिला आर्य सभा के प्रधान श्री महेन्द्र पाल वर्मा ने सभा प्रधान जी का स्वागत किया। उस के पश्चात् जिला सभा के अधिकारियो नगर की सब आर्य समाजो, स्त्री आर्य समाजो, आर्य शिक्षण सस्थाओ, प्रतिष्ठित नागरिको ने पुष्प मालाए डाल कर आदरणीय, प्रधान जी का स्वागत किया। श्री बलराज जी, बहन कमला जी आर्या तथा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी एम ए ने अपने भाषण मे महर्षि दयानन्द जी के आर्य जाति पर किए गए उपकारो का उल्लेख किया विशेष रूप से स्त्री जाति को उस के विशेष और वाछनीय स्थान का मार्ग प्रशस्त करने का। अन्त मे वीर जी ने हिन्दू जाति को ऋषिवर के अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए, प्रयत्नशील रहने का आदेश दिया और कहा कि जिस प्रकार महर्षि दयानन्द सच्चे शिव की खोज में बराबर जागता रहा उसी प्रकार हमें भी संसार में वैदिक धर्म के प्रचार के लिए बराबर जागना होगा। आज के दिन हमें प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हम वास्तविक रूप में आर्य बनने का प्रयास करें।

आर्य हा सै स्कूल के प्रिंसीपल ओम्प्रकाश टण्डन, उनका स्टाफ दयानन्द माडल स्कूल का स्टाफ तथा आर्य समाज दाल बाजार, साबुन बाजार, फील्डगज, जवाहर नगर, हबीबगज, किदवई नगर, बाग अन्आलिया, झुग्गी-झोपडियां, माडल टाऊन, सराभा नगर, अग्र नगर, ऊधमसिंह नगर, सिविल लाईन्ज, पक्खम-फोकल पूआइन्ट, आर्य कालेज, महिला कालेज आर्य गर्ल्ज स्कूल, सनातन धर्म प्रचारक कालेज, आर, डी स्कूल, झुगी स्कूल ने पूरा सहयोग प्रदान किया। श्री नरेन्द्र भल्ला, श्री रविन्द्र कुमार डाईल, श्री सत्यदेव राज सेठी, श्री धर्मपाल [illegible], श्री [illegible] बत्रा, श्री [illegible] महाजन, श्री महेन्द्र पाल सिंगला, श्री देवराज आर्य, श्री [illegible] जी महाजन, श्री नवनीत लाल जी ने भी भरपूर सहयोग दिया, सायंकाल के यज्ञ की सयोजिका श्रीमती कमला जी आर्या, बहन [illegible] जी मोंगा ने बहुत सुन्दर व्यवस्था बनाए रखी, बहनो ने यज्ञ में दिल खोल कर दान दिया। श्रीमती विनोद सोही, श्रीमती रमा शर्मा, श्रीमती प्रेम सेठी, पुष्पा मुञ्जाल, सन्तोष रहेजा, सावित्री गुप्ता, स्वदेश बेरी, स्वदेश गुप्ता ने यज्ञ को सफल बनाने में काफी परिश्रम किया। ऋषि लंगर का अति उत्तम प्रबन्ध था, लगर के सयोजक श्री रामजी दास जी अग्रवाल तथा श्री मदन कुमार जी बत्रा ने बड़ी सुन्दर व्यवस्था की हुई थी।

—आशानन्द आर्या
महामन्त्री
जिला आर्य सभा लुधियाना

आर्य समाज शास्त्री नगर जालन्धर में शिवरात्रि पर्व

26-2 87 को आर्य समाज मन्दिर शास्त्री नगर पी ओ बस्ती गुजा मे ऋषि बोध उत्सव शिवरात्रि का त्योहार बड़े समारोह से मनाया गया। जिसमे श्री महेन्द्रपाल जी के महर्षि के जीवन पर बड़े सुन्दर तथा मनोहर भजन हुए। श्री लालचन्द नन्दा मन्त्री तथा प वेद प्रकाश जी के व्याख्यान हुए तथा महर्षि के जीवन पर प्रकाश डाला। समारोह के पश्चात् ऋषिलगर हुआ जिस मे लगभग 500 व्यक्तियो ने भोजन किया।

आर्य समाज मन्दिर की ओर से एक निर्धन परिवार की लडकी की शादी की गई। लडकी के पिता का नाम श्री राधे श्याम है। बरात के भोजन तथा जो भी सामान लडकी को दिया गया वह आर्य समाज की ओर से था। इस सारे कार्य का श्रेय श्री राम लुभाया नन्दा प्रधान के सिर पर है जिनके तप, त्याग तथा परिश्रम से आर्य समाज उन्नति कर रहा है। इससे पहले भी आर्य समाज मे कई शादिया समाज द्वारा की गई। मन्दिर मे निशुल्क सिलाई स्कूल भी चल रहा है।

—लालचन्द नन्दा
मन्त्री

लुधियाना में अमर शहीद पं. लेखराम शहीदी दिवस मनाया गया

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना मे प लेखराम श्रद्धाजलि दिवस बड़े उत्साह से मनाया गया विशेष यज्ञ के पश्चात् एक बड़े समारोह मे शहीद के प्रति विद्वानो ने सुमन अर्पित किए। श्रद्धाजलि अर्पित करने वालो मे सर्वश्री रणधीर जी भाटिया जिन्होंने अमर शहीद प लेखराम जी की शहादत का दृश्य कविता मे श्रद्धाजलि के रूप मे कहा तो उपस्थित धर्म प्रेमियो के हृदयो को छू गया। मदन कुमार जी ने भी भजन द्वारा, ज्ञानी गुरदियाल आर्य, रोशनलाल शर्मा, ज्ञान चन्द जी आर्य, मंगल सैन जी बधवा, प सूर्यपाल जी शास्त्री, तथा बहन कान्ता जी वोहरा ने भी अमर शहीद प. लेखराम जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

—सत्यदेव राज सेठी
महामन्त्री

अबोहर में ऋषिबोधोत्सव

आर्य समाज डी ए वी कम्पस की ओर से डी.ए.वी शिक्षा महाविद्यालय अबोहर मे ऋषि बोधोत्सव पूर्ण उत्साह से मनाया गया। श्री विजय कुमार, मिश्रा उपाधीक्षक केन्द्रीय आरक्षी पुलिस मुख्य अतिथि थे। इस समारोह के अध्यक्ष श्री महेन्द्र प्रताप असीजा एडवोकेट ने महर्षि दयानन्द की महानता पर विचार रखे एव ऋषि को योगी, सन्यासी, ब्रह्मचारी, स्वतन्त्रता सेनानी, प्रबुद्ध दार्शनिक जैसे विविधताओं का सम्मिश्रण बताया। इस अवसर पर छात्र: छात्राओं द्वारा: महाविद्यालय गायन, मन्त्रोच्चारण एवं प्रोफेसर अभिव्यक्तियों का सार्थक, प्रभावोत्पादक रहा।

—मन्त्री

बलिदानों का पथ अपनाया

लेखक—श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ, प्र)

क्रान्ति पथिक बन, जिस योद्धा ने,
बना दिया युग की तरुणायी।
जिसके शोणित से भारत की,
वर्दित हुई अमर अरुणायी।
दिया तिलाञ्जलि भौतिक को—
बलिदानो का पथ अपनाया।

निर्भय हो फासी का फन्दा,
जिसने हर्षित हो चूमा।
अपराजेय सिंह सदृश जो—
पश्चिम से पूर्व तक घूमा।
फेंका बम फिर असैंबली मे—
स्वतन्त्रता का अलख जगाया।

जिसके कार्य-कलापो से,
उड गई नीद अग्रेजो की
जिसके कारण बढी सुगहिया—
फिर से कण्टक सेजो की।
कर नेतृत्व क्रान्ति वीरो का—
बलिवेदी पर शीश चढाया।

जिसके उर था राष्ट्र भक्ति का,
गरिमा मण्डित भाव प्रवर।
बना जवानो का प्रेरक जो,
बलिदानो का सूर्य प्रखर।
'भगतसिंह' वह लाल-दुलारा—
भारत मा का मान बढाया॥

पानीपत में नई आर्य समाज की स्थापना

गत दिनो 8 फरवरी 1987 रविवार को देसराज कालोनी पानीपत मे एक विशाल कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमे पानीपत के क्षेत्र की समस्त आर्य समाजो ने तथा आर्य युवक दल के सैनिकों ने और समस्त आर्य स्त्री समाजो ने बडी सख्या मे भाग लिया। प्रादेशिक उप सभा हरियाणा के मान्य अधिकारी श्री डा गणेश दास जी आर्य मन्त्री, श्री वेदसुमन जी वेदालकार, श्री चमनलाल जी आर्य महामन्त्री प्रान्तीय आर्य युवक दल हरियाणा, श्री देवराज जी आर्य प्रधान केन्द्रीय सभा पानीपत डा दक्षन लाल जी, बहन सविता जी स्वामी निगमानन्द जी सरस्वती आदि अनेक विद्वानो ने वैदिक धम आर्य समाज के सिद्धान्तो व मन्तव्यो के सम्बन्ध मे अपने-2 विचार प्रकट किए। और वर्तमान समय मे आर्य समाज की परम आवश्यकता पर बल दिया।

इस समारोह की अध्यक्षता श्री लाला आदित्यप्रकाश जी आर्य वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रान्तीय आर्य युवक दल हरियाणा ने की। इस सम्मेलन के सयोजक श्री प जगदीश चन्द्र वसु महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा हरियाणा थे। अन्त मे सर्व सम्मति से निम्न लिखित पदाधिकारी नियुक्त किए गये।

प्रधान—सर्व श्री इन्द्रसेन चौपडा, उप प्रधान—श्री अमरसिंह जी सैनी, मन्त्री—प जगदीशचन्द्र वसु, उप मन्त्री-श्री राजकुमार जी सैनी, कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश जी।

—प जगदीशचन्द्र जी वसु
मन्त्री

दसूहा में शिवरात्रि पर्व

आय समाज दसूहा की ओर से शिवरात्रि (26-2-87) के दिन ऋषि बोधोत्सव बडी श्रद्धा एव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रात साढे पाच बजे से साढे छ बजे तक नगर के मुख्य मोहल्लो मे से प्रभातफेरी निकाली गई जिसमे आर्य समाज, स्त्री आय समाज के सदस्यो, स्कूलो के अध्यापक, अध्यापिकाओ के अतिरिक्त शहर के अनेक गण मान्य व्यक्तियो ने बढ चढ कर भाग लिया। प्रभु भक्ति के भजनो तथा जो बोले सो अभय, वैदिक धर्म की जय के नारो से आसमान गूज उठा।

तत्पश्चात डी ए वी पिण्डीदास पुत्री पाठशाला मे श्री आदश कुमार दर्शी प्रधान आर्य समाज दसूहा के सभापतित्व मे उत्सव सम्पन्न हुआ। आय समाज के पुरोहित श्री चन्द्रशेखर तथा उप प्रधान श्री अमरनाथ निराला ने अपने व्याख्यानो मे ऋषिबोधोत्सव पर प्रकाश डाला। मच का सचालन श्री मदन मोहन मन्त्री आय समाज न किया।

—आदर्श कुमार दर्शी

अमृतसर में ऋषिबोध पर्व

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द, अमृतसर में 26-2-87 को ऋषि-बोधोत्सव हेतु बृहद् यज्ञ के पश्चात बडी धूमधाम से मनाया गया। इस की अध्यक्षता स्वामी आत्मानन्द जी ने की। इसमें वैदिक गर्ल्ज हा सै स्कूल अमृतसर व श्रद्धानन्द महिला महाविद्यालय ने सुन्दर भजन व भाषण प्रस्तुत किए। प बलदेव कृष्ण जी ने अपने विचार प्रकट किए। स्कूल व कालेज की छात्राओ को नकद व वैदिक साहित्य पुरस्कार हेतु भेंट किया गया। डा देवेन्द्र प्रसाद जी द्विवेदी, विज्ञान हाल, दिल्ली ने स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर एक ओजपूर्ण विचार दिए जो कि अस्मरणीय हैं। अन्त मे स्वामी आत्मानन्द जी ने अपना प्रवचन व आशीर्वाद दिया।

शान्ति पाठ के पश्चात् यज्ञशेष वितरित किया गया और रात्रि को समाज भवन पर दीपमाला की गई।

दिनांक 25-2-87 को शोभा यात्रा में आर्य समाज के सदस्यो व वैदिक गर्ल्ज हा सै स्कूल व श्रद्धानन्द महिला महाविद्यालय की छात्राओ व स्टाफ ने बढ-चढ कर भाग लिया।

—वीरेन्द्र देवबन्धु
महामन्त्री

रोपड़ में शिवरात्रि पर्व

आर्य समाज रोपड ने महर्षि बोध उत्सव वीरवार दिनांक 26-2-87 को सोमनाथ आर्य कन्या पाठशाला भवन मे बडे उत्साह एव समारोह के साथ मनाया। महान हवन यज्ञ के पश्चात उत्सव का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। महोत्सव की प्रधानता श्रीयुत मदनमोहन जी मित्तल एडवोकेट रोपड ने की। पाठशाला के बच्चो ने ऋषि जीवन एव महा शिवरात्रि पर्व सम्बन्धी भाषण तथा कविताए सुनाई। लाला बाबूराम जी, प्रधान आर्य समाज रोपड का भाषण मुख्य था।

अन्त मे उत्सव के अध्यक्ष महोदय ने महर्षि के जीवन पर प्रकाश डाला। साथ ही उन्होंने अपनी शुभ कमाई मे से पाच सौ एक रुपया आर्य समाज रोपड को दान दिया।

—मन्त्री

दसूहा का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान—श्री आदर्श कुमार दर्शी, उप प्रधान—अमरनाथ निराला तथा श्री योगेश वर्मा, महामन्त्री प्रि एस के शर्मा, मन्त्री—श्री मदन मोहन, कोषाध्यक्ष—श्री सुभाष खजूरिया।

—मन्त्री

आर्य युवक सभा किदवई नगर (लुधियाना) द्वारा पारिवारिक सत्संग सम्पन्न

गत दिनों आर्य युवक सभा किदवई नगर (लुधियाना) द्वारा किदवई नगर आर्य समाज के प्रधान के घर मे वैदिक सत्सग का आयोजन किया गया। लुधियाना के प्रसिद्ध वक्ता प सूर्यपाल शास्त्री [illegible] ए (हिन्दी, सस्कृत) ने यज्ञ सम्पन्न [illegible] आशीर्वाद का कार्यक्रम हुआ। लुधियाना की वेद प्रचार भजन मण्डली और किदवई नगर के आय युवको ने भी ओ३म् गान विधि मे पारगत हो भजन गाए।

—उत्तमचन्द
मन्त्री

अपर परागपुर में अथर्ववेद यज्ञ

सभी आर्य बन्धुओ को सूचित किया जाता है कि हरेक वर्ष की तरह इस वर्ष भी श्री बलवीर सिंह जी अपर परागपुर हिमाचल प्रदेश के निवास स्थान पर उन की स्वर्गीय माता जी की याद मे "अथर्व वेद" पारायण यज्ञ 1 अप्रैल से 8 अप्रैल तक हो रहा है। इस मे प वेद प्रकाश टकारा वाले वेद पाठ करेंगे तथा श्री ओ३म प्रकाश जी प्रेमी भजनोपदेश भजन गायन करेंगे।

वार्षिक चुनाव

दिनांक 8-2 87 को आर्य समाज कठुआ मे समाज के सदस्यो, सभासदो, तथा अन्य आर्य प्रमी सज्जनो की बैठक श्री रूपलाल जी की अध्यक्षता मे हुई जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी वर्ष 1987-88 के लिए चुन गए।

सरक्षक—लाला रामरत्न जी।
प्रधान—डा कुलदीप कुमार जी।
उप-प्रधान—श्री अज्वल सिंह जी, श्रीमती किरण डोगरा जी।
मन्त्री—श्री जगदीश नाथ जी।
उप मन्त्री—श्री विजेन्द्र कोहली जी।
कोषाध्यक्ष—श्री बुईलाल जी।
पुस्तकाध्यक्ष—श्री धनीराम शास्त्री जी।
स्टोरकीपर—श्री सोमेश कुमार जी

अन्तरंग के सदस्य

श्रीमती उमा देवी जी श्रीमती रत्नो देवी जी, श्रीमती कैलाश महाजन जी तथा श्री रूपलाल जी।

—जगदीशनाथ गुप्ता
मन्त्री

शहीदी मेला सम्पन्न

अमर शहीद प लेखराम जी की पावन स्मृति मे हर साल की तरह इस साल भी लेखराम नगर कादिया में विशेष समारोह से मनाया गया जिस मे अमृतसर, बटाला, दीनानगर, गुरदासपुर तथा पठानकोट से अनेक आर्य भाई-बहनों ने भाग लिया। इसमें यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी आचार्य दयानन्द मठ दीनानगर ने ध्वजारोहण किया फिर एक सगीत तथा कवि दरबार हुआ उसके बाद शहीदी सम्मेलन का श्री राम किशन जी वानप्रस्थ प्रधान आर्य ज़िला सभा ने उद्घाटन किया तथा श्री सतीश जी बटाला, डा हरगोपाल जी अमृतसर, श्री वेदव्रत जी पठानकोट, श्री विजय कुमार जी शास्त्री प्रादेशिक सभा, श्री रामप्रकाश जी प्रभाकर उपप्रधान स्मारक मण्डल, डा केदार नाथ जी प्रधान स्मारक मण्डल, स्वामी सुबोधानन्द जी तथा प निरञ्जन देव जी इतिहास केसरी ने भावभीनी श्रद्धाजलिया अर्पित की।

आर्य समाज समाना में शिवरात्रि पर्व

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी आर्य समाज मन्दिर सामाना द्वारा "ऋषिबोध दिवस" बड़े हर्षोल्लास से निम्न कार्यक्रम अनुसार मनाया गया।

—यज्ञ हवनादि—

आर्य समाज सामाना द्वारा चलाए जा रहे दयानन्द माडल स्कूल के बच्चो द्वारा ऋषि-जीवनी पर गीत, कव्वाली एव भजन तथा महर्षि दयानन्द जी महाराज द्वारा किए गए उपकारो पर भाषण।

(ऋषि लगर)सहभोज, जिसमे स्कूल के बच्चो, विद्यार्थियो के माता-पिता, स्त्री समाज तथा पुरुष समाज के सभी सदस्यो ने परिवार सहित, ऋषिलगर मे भाग लिया।

—मन्त्री

तदोपरान्त खुला ऋषिलगर लगाया गया। सारा कार्यक्रम बड़ा प्रभावशाली था।

—रोशनलाल
मन्त्री

(2 पृष्ठ का शेष)

(3) यद्यपि हम आर्य समाज बुद्धिजीवी विचारगोष्ठी की सभी सूचनाएं समाचार पत्रों में देते रहेंगे तो भी आप से निवेदन है कि आप 51 रुपए भेजकर इसके सदस्य बनें। ताकि व्यापक स्तर पर पत्र व्यवहार द्वारा भी सम्पर्क किया जा सके।

(4) आप अपने नगर के उन विद्वानों के नाम एव पते भेजें जिनको कि आपकी दृष्टि में उक्त विचारगोष्ठी मे भाग लेना चाहिए। यह आवश्यक नही है कि वे किसी आर्य समाज के सदस्य ही हो, उनका आर्य समाज से परोक्ष सम्बन्ध अथवा सहानुभूति आवश्यक है।

आपकी यज्ञ में रुचि है। आप अनेक भौतिक यज्ञ सम्पन्न करते हैं। पर यह विचार यज्ञ उन भौतिक यज्ञो के उद्देश्य को और सार्थकता प्रदान कर सकता है। मुझे पूरा विश्वास है कि इस विचार यज्ञ मे भी आप अपनी आहुति डालेंगे और आर्य समाज की भावी रूप रेखा निश्चित करने मे अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाह कर पुण्य के भागी बनेंगे।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 | रजि. नं. N.W/J.L.55

वर्ष 18 अंक 51. 16 चैत्र सम्वत् 2043 तदानुसार 29 मार्च 1987 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

चैत्र सुदी प्रतिपदा से नव सम्वत् 2044 नव वर्ष का शुभारम्भ
30 मार्च 1987 को आर्य समाज का स्थापना दिवस

जिस समय भारत मे चारो ओर अन्धकार छाया हुआ था । विदेशी शासन का दमनकारी चक्र बड़े जोरो से चल रहा था । मुसलमान और ईसाई धड़ा-धड़ हिन्दुओ को विधर्मी बना रहे थे । विधवा, अनाथो और अछूतो पर तरह तरह के अत्याचार ढाये जा रहे थे । ऐसे समय मे भारत देश में एक ऐसी विभूति पैदा हुई जिसने गुरु की आज्ञा से सभी क्षेत्रो मे तहलका मचा दिया और इससे एक क्रान्ति की ज्वाला चारो ओर फैलने लगी । वह विभूति थी महर्षि दयानन्द सरस्वती । सभी प्रकार के पाखण्डो अनाचारो, अत्याचारो और गलत व्यवहारो के विरुद्ध एक आन्दोलन आरम्भ हुआ । इस आन्दोलन का नाम महर्षि दयानन्द ने "आर्य समाज" रखा ।

जब उन्होने विचार किया कि आज देश को बचाने के लिए ऐसे संगठन की आवश्यकता है कि जो मेरे बाद भी वेद प्रचार करता हुआ देश का उद्धार करता रहे तो उन्हाने चैत्र सुदी प्रतिपदा सम्वत् 1932 विक्रमी तदानुसार 7 अप्रैल सन् 1875 मे भारत की प्रसिद्ध समृद्धिशालिनी नगरी बम्बई मे डा मानिक चन्द जी की वाटिका मे प्रथम आर्य समाज की स्थापना की । आर्य समाज को स्थापित हुए एक सौ ग्यारह वर्ष हो गए हैं । इस अवधि मे आर्य समाज सारे ससार मे फैल गया, लगभग चार हजार आर्य समाजें स्थापित हो चुकी हैं और यह आन्दोल अभी जारी है और देश विदेश मे आय समाजो की सख्या निरन्तर बढती चली जा रही है ।

यह ठीक है जिस समय आर्य समाज की स्थापना हुई थी उस समय इसके कार्यों मे बड़ी तेजी थी परन्तु आज उतनी तेजी नही है । जिसका एक कारण भी है,जब कोई नदी, पहाड़ से निकलती है, तो उसका रूप छोटा और बहाव तेज होता है परन्तु मैदान मे आते-2 वह फैल जाती है और बहाव भी कछ धीमा हो जाता है,यही स्थिति आर्य समाज की है । आओ 30 मार्च को आर्य समाज स्थापना दिवस और नव सम्वत्सर 2044 को धूमधाम से मनाए । हमारा नव वष चैत्र सुदी प्रतिपदा से आरम्भ होना है न की प्रथम जनवरी से । इसी दिन हमे नव वर्ष मनाना चाहिए । हम आर्य मर्यादा के सभी पाठको और सदस्यो के लिए हार्दिक शुभ कामनाए करते है कि यह नव वर्ष सब के लिए मंगलकारी हो इसके साथ ही हम अपने सभी बन्धुओ को नव वर्ष की बधाई देते हैं ।

—सम्पादक

व्याख्यान माला—९

स्वाध्याय और उसका महत्व

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स. अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर(पंजाब)

(गतांक से आगे)

वेदाभ्यासोऽन्वहं शक्तया महायज्ञ क्रिया क्षमा ।
नाशयन्त्याशु पापानि महापातकजान्यपि ।30।

दिन-रात यथा शक्ति वेदो का अभ्यास, महान् याज्ञिक क्रिया तथा क्षमा ये सब महापतको से पैदा होने वाले पापो को शीघ्र नष्ट कर देते हैं।

अधीत्य यत्किञ्चिदपि वेदार्थधिगमे रत: ।
स्वर्गलोकमवाप्नोति धर्मानुष्ठानविद्द्विज: ।31।

धर्म अनुष्ठान को समझने वाला जो ब्राह्मण थोडा बहुत पढ लिख कर भी वेदार्थ ज्ञान प्राप्त करने मे लीन रहता है वह स्वर्ण लोक को प्राप्त होता है।

वेद शास्त्रार्थतत्वज्ञो यत्र तत्राश्रमे वसन् ।
इहैव लोके तिष्ठिन्स ब्रह्मभूयाय कल्पते ।32।

वेद और शास्त्रो के तत्वो को जानने वाला जहा भी रहे वही आश्रम की दिनचर्या करता हुआ मनुष्य इसी ससार मे प्राण धारण करते हुए ब्रह्मभाव को प्राप्त हो जाता है।

यथा जातबलो वन्हिर्दहत्यार्द्रानपि द्रुमान् ।
तथा दहति वेदज्ञ: कर्मजं दोषमात्मन: 33।

प्रबल दावाग्नि गीले वृक्षो को भी जला कर भस्म कर देती है वैसे ही वेदज्ञ ब्राह्मण भी अपने कर्मों द्वारा पैदा हुए दोषो को नष्ट कर देता है।

स्वाध्याये नित्ययुक्त: स्याद्दान्तो मैत्र: समाहित: ।
दाता नित्यमनादाता सर्वभूतानुकम्पक: ।34।

मनुष्य को चाहिए कि सदा स्वाध्याय मे लगा रहे, इन्द्रिय दमन रखे, मित्रता का भाव रखे, सावधान रहे, दाता हो परन्तु दूसरो से दान रूप कुछ न न लेवे और सब जीवो पर दया भाव रखे।

य: स्वाध्यायमधीतेब्द विधिना नियत: शुचि: ।
तस्य नित्यं क्षरत्येष पयो दधि घृतं मधु ।35।

जो नियम से पवित्र रह कर वर्ष भर विधिपूर्वक स्वाध्याय करता है, यह स्वाध्याय उसके लिए दूध, दही, घी, और मधु की नहर बहा देता है।

वेदोपकरणे चैव स्वाध्याये चैव नैत्यके ।
नानुरोधोऽस्त्यनध्याये होममन्त्रेषु चैव हि ।36।

वैदिक साधन एकत्रित करने मे, नित्य प्रति के स्वाध्याय मे और होम (हवन) करने के मन्त्रो मे, अनध्याय (छुट्टी करना) का कोई बन्धन, नही। अर्थात् नैतिक कार्यों मे अनध्याय कोई नही होता। स्वाध्याय तो नित्य प्रति करना ही चाहिए।

स्वाध्यायाद्योगमासीत् योगात्स्वाध्यायमामनेत् ।
स्वाध्याययोगसम्पत्या परमात्मा प्रकाशते ।37।

स्वाध्याय करने से योगासन दृढ करें और योग से स्वाध्याय की पुन: आवृत्ति करें। स्वाध्याय और योग रूपी धन पाने से परमात्मा का प्रकाश हो जाता है।

एकोऽपि वेदविद्धर्मं यं व्यवस्येद द्विजोत्तम: ।
स विज्ञेय: परो धर्मो नाज्ञानामुदितोऽयुतै: ।38।

अव्रतानाममन्त्राणां जाति मात्रोपजीविनाम् ।
सहस्रश: समेतानां परिषत्वं न विद्यते ।39।

वेद ज्ञाता द्विजराज अकेला भी जिस धर्म की व्यवस्था देता है, उसे धर्म (धारण योग्य) समझना चाहिए, परन्तु लाखो मूर्खों से कहा हुआ मन्तव्य धर्म नही मानना चाहिए। क्योंकि व्रतहीन, मन्त्रहीन केवल जात्यभिमान से निर्वाह करने वाले सहस्रो लोगों के इकट्ठे हो जाने पर भी उनकी बात में सत्य नही होता।

सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते ।
वार्यन्नगोमहीवासस्तिलकाञ्चनसर्पिषाम् ।40।

जल, अन्न, गौ, पृथ्वी, वस्त्र, तिल, सुवर्ण और घृत इत्यादि सब प्रकार के दानो मे से विद्या का दान विशेष करके होता है।

सर्वान्परित्यजेदर्थान् स्वाध्यायस्य विरोधिन: ।
यथा तथाऽध्यापयंस्तु साह्यास्य कृतकृत्यता ।41।

जिस प्रकार हो सके अध्यापक पढाता हुआ स्वाध्याय के विरोधी सब प्रकार के अर्थ (प्रयोजन मनोरथ साधनो) को छोड देवे ऐसा करने मे ही अध्यापक की सफलता है।

यथा काष्ठमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृग: ।
यश्च विप्रोऽनधीयानस्त्रयस्ते नाम बिभृति ।42।

जैसा लकडी का बना हाथी और चमडे का मृग आकृति मात्र होते हैं, वैसे ही जो ब्राह्मण स्वाध्याय नही करता वह ब्राह्मण भी नाममात्र का ब्राह्मण होता है।

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुतेश्रमम् ।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वय ।43।

जो ब्राह्मण वेदो का अध्ययन न करके अन्य-अन्य ग्रन्थों में परिश्रम करता है वह जीता हुआ शीघ्र ही वंश सहित शूद्र बन जाता है।

यथा षण्ढोऽफल: स्त्रीषु यथा गौर्गवि चाफला ।
यथा चाज्ञेऽफलं दानं तथा विप्रोऽनृचोऽफल: ।44।

जैसे नपुन्सक मनुष्य स्त्रियो मे फल रहित अर्थात् सन्तान करने में असमर्थ होता है, और जैसे गौ (स्त्री) गौ मे सन्तान उत्पन्न नही कर सकती और जैसे मूर्ख को दिया दान व्यर्थ होता है, वैसे ही वेद ज्ञान रहित ब्राह्मण फलहीन अर्थात् निकम्मा होता है।

गोभूतिलहिरण्यादि पात्रे दातव्यमर्चितम् ।
नापात्रे विदुषा किञ्चिदात्मन: श्रेय इच्छता ।45।

गऊ, भूमि, तिल, स्वर्ण आदि का दान आत्म कल्याण का इच्छुक विद्वान् मनुष्य सदैव पात्र अर्थात् स्वाध्यायशील सात्विक ब्राह्मण को ही दें। अपात्र में इनका दान नही करना चाहिए।

यथेरिणे बीजमुप्त्वा न वप्ता लभते फलम् ।
तथाऽनृचे हविर्दत्वा न दाता लभते फलम् ।46।

जैसे ऊसर भूमि मे बीज बो कर बोने वाला फल नहीं प्राप्त कर सकता, वैसे ही वेद ज्ञान शून्य को भोजनादि देकर दाता उसके फल को नही पाता।

या वेद बाह्या: स्मृतयो याश्च काश्च कुदृष्टय: ।
सर्वास्ता निष्फला: प्रेत्य तमोनिष्ठा हि ता: स्मृता: ।47।

जो भी स्मृति ग्रन्थ वेद विरुद्ध है और जो-जो कुत्सित ज्ञान वाले हैं उन सब को अज्ञान से, परिपूर्ण होने से व्यर्थ समझें।

श्रेयान् द्रव्यमयाद्यज्ञाद् ज्ञान यज्ञ: परन्तप ।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परि समाप्यते ।।

हे शत्रुओ को तपाने वाले अर्जुन ? धन युक्त यज्ञ से, ज्ञान यज्ञ श्रेष्ठ है क्योंकि हे अर्जुन सम्पूर्ण कर्म ज्ञान मे ही आकर समाप्त होते हैं।

नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।
तत्स्वयं योगसंसिद्ध: कालेनात्मनि विन्दति ।49।

ज्ञान के सामान इस ससार मे कोई भी पदार्थ पवित्र नही है। योग को प्राप्त हुआ सिद्ध साधक अपनी योग साधना के समय के साथ-साथ उस ज्ञान को स्वय प्राप्त कर लेता है।

———

सम्पादकीय—

पंजाब में आर्य समाज का भविष्य—4

पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज के लिए जो कठिनाईयां पैदा हो रही हैं वह मैं पिछले तीन लेखों में मैं लिख चुका हूं। मैंने उन में यह सुझाव भी दिया था कि पंजाब के प्रमुख आर्य समाजी इसके विषय में अपने सुझाव लिख कर हमें भेजें जो हम आर्य मर्यादा में प्रकाशित करा देंगे। अब भी किसी संस्था के सामने कोई समस्या आती है तो उसका समाधान आपसी बातचीत के द्वारा ही निकल सकता है। हमारे लिए एक कठिनाई यह भी हो रही है कि एक जगह मिल कर बैठने का अवसर भी हमें कई बार नहीं मिलता। हमने यह निर्णय लिया था कि 29 मार्च को पटियाला में सभा की, अन्तरंग सभा की बैठक रखी जाएगी परन्तु पटियाला में पिछले कुछ दिनों से जो कुछ हो रहा है उसके पश्चात् अब वहां अन्तरंग सभा की बैठक न हो सकेगी। यह भी देखा गया है कि जब जालन्धर में सभा के कार्यालय में बैठक रखी जाती है तो उसमें प्राय: वही सदस्य आते हैं जो सायंकाल से पहले अपने घरों को वापिस पहुंच जाएं। इसका यह परिणाम है कि अन्तरंग सभा की बैठकें भी अब उस प्रकार से नहीं हो सकती जैसे कि होनी चाहिएं। इसी स्थिति को सामने रखते हुए हमने यह फैसला किया था कि अन्तरंग सभा की बैठक केवल जालन्धर में न की जाए बल्कि दूसरे नगरों में भी की जाए। ताकि जो महानुभाव जालन्धर नहीं आ सकते वह उस में सम्मलित हो सकें और इस प्रकार आर्य बन्धुओं का सम्पर्क बना रहे। परन्तु अब उसमें भी जो कठिनाईयां पैदा हो रही हैं वह पटियाला की स्थिति से पता चल जाता है।

लिखने का अभिप्राय यह है कि पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए आर्य समाज के प्रचार का ढंग बिल्कुल बदलना पड़ेगा। मैंने कुछ समय हुआ यह सुझाव भी दिया था कि पहले हम उत्सव अधिक किया करते थे। उनके स्थान पर अब यदि यज्ञ किए जाएं तो वह भी हमारे प्रचार का एक साधन बन सकते हैं। हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि हमारे पास अब पहले की तरह उच्चकोटि के उपदेशक और भजनीक नहीं हैं। इसलिए प्रचार का नया साधन ढूंढने की आवश्यकता है। पहले अपने एक लेख में मैंने नामधारी, राधास्वामी और निरंकारी सम्प्रदायों का जिकर किया था। उनके इस प्रकार के उत्सव नहीं होते जैसे हम किया करते थे। यद्यपि वहां गुरुडम बहुत अधिक है और सब कुछ गुरु के आदेशानुसार ही होता है। हमारी समाज में यह स्थान संन्यासी ही ले सकते हैं परन्तु अभी उनकी संख्या भी बहुत कम है। इसलिए प्रत्येक आर्य समाज में वहां के अधिकारियो को आर्य समाज के प्रचार की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेनी पड़ेगी। उसके लिए यह भी आवश्यक है कि पहले उन्हें स्वयं यह पता हो कि आर्य समाज क्या है? और वह क्या चाहता है? इसके लिए कुछ स्वाध्याय की आवश्यकता रहेगी। हमारी सभा इस दिशा में विशेष पग उठाना चाहती है। हम बड़ी-बड़ी पुस्तकें तो प्रकाशित करना नहीं चाहते परन्तु छोटे-छोटे ट्रैक्ट अधिक से अधिक संख्या में प्रकाशित करके बांटना चाहते हैं हिन्दी में और पंजाबी में। पंजाब में पंजाबी भाषा के बिना हम प्रचार नहीं कर सकते। इस दिशा में भी यदि आर्य समाजें अपना सहयोग दे सकें तो यह भी प्रचार का एक बहुत बड़ा साधन बन सकता है। यदि किसी आर्य समाज के पास ऐसे पुराने ट्रैक्ट हों जिन के द्वारा जन साधारण में प्रचार हो सके तो वह हमें भिजवाएं। हमारा यह प्रयास होगा कि एक माह में एक ट्रैक्ट प्रकाशित कर दिया जाए और उसका मूल्य एक रुपये से अधिक न हो। जो आर्य समाज यज्ञ करवाना चाहती हो वह यदि हमें दो माह पहले सूचित कर दिया करें तो हम उनके लिए किसी ऐसे व्यक्ति को भेज देंगे जो प्रभावशाली यज्ञ करा सके।

कहने का तात्पर्य यह है कि पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों में हमें अपने कार्यक्रमों को अच्छी प्रकार चलाने के लिए नए-नए ढंगों के सोचने पर विचार करना चाहिएं। आर्य समाजों के अधिकारियों को भी इस पर विचार करना चाहिए केवल सभा पर ही यह दायित्व नहीं छोड़ना चाहिए। जब तक हम सब मिल कर इस रथ को चलाने का प्रयास न करेंगे यह आगे नहीं चल सकेगा। इन लेखों के द्वारा मैंने केवल पंजाब की आर्य जनता का ध्यान उन परिस्थितियों की ओर दिलाया है जो आज पंजाब में पैदा हो रही हैं परन्तु यह ऐसी स्थिति नहीं जिस पर केवल सभा के अधिकारी ही विचार करें, सब आर्य समाजियों को इस पर विचार करना चाहिए क्योंकि यह पंजाब में आर्य समाज के भविष्य का प्रश्न है।

—वीरेन्द्र

आर्य समाज स्थापना दिवस आ रहा है

आर्य समाज का स्थापना दिवस प्राय: चैत्र सुदी प्रतिपदा को मनाया जाता है। वह अब 30 मार्च सोमवार को है। इसी दिन नव सम्वत् 2044 भी आरम्भ होगा। पहले तो हम इसे एक सप्ताह भी मनाया करते थे परन्तु आज वह सम्भव न हो सकेगा। इसलिए एक दिन भी यदि हम पूरी लग्न और श्रद्धा से आर्य समाज का स्थापना दिवस मनाएं तो उसका भी बहुत अच्छा परिणाम निकल सकता है। पंजाब की सब आर्य समाजों के अधिकारियों से मेरा नम्र निवेदन है कि वह रविवार पांच अप्रैल को स्थापना दिवस मनाएं। स्थापना दिवस मनाने का वास्तविक उद्देश्य केवल यही होता है कि जनता को बताया जाए कि आर्य समाज की स्थापना कब हुई थी, किन परिस्थितियों में हुई थी? और उसने अपने एक सौ ग्यारह वर्ष के जीवन काल में क्या कुछ किया है? आज की परिस्थितियों को न देखते हुए हम अपने अतीत की तरफ देखें तो भविष्य के लिए हमें बहुत प्रेरणा और उत्साह मिल सकता है। आर्य समाज का इतिहास इतना गौरवमय है कि उसके आधार पर हम अपने देशवासियों को आर्य समाज के विषय में बहुत कुछ बता सकते हैं। यदि हम कुछ गम्भीरता से इस पर विचार करें तो वास्तविक स्थिति यह है कि जितनी आवश्यकता आज हमारे देश को आर्य समाज की है उतनी पहले कभी न थी। प्रतिक्रियावादी शक्तियां संगठित होकर अपना सिर उठा रही हैं। उनके मुकाबला में भी केवल आर्य समाज ही खड़ा हो सकता है। इस लिए आर्य समाज का स्थापना दिवस आज हमारे लिए एक विशेष महत्व रखता है। इस विषय में विस्तार से तो आर्य मर्यादा के आगामी अंक में आपके सामने सारी स्थिति रखी जाएगी। इस समय तो मेरी आर्य समाजो के अधिकारियों से यही प्रार्थना है कि वह पांच अप्रैल रविवार को आर्य समाज स्थापना दिवस बड़ी धूम-धाम से मनाएं।

—वीरेन्द्र

हमारे देश की विचित्र धर्म निरपेक्षता

लेखक—श्री दत्तात्रेय आर्य, भूतपूर्व प्राचार्य,
दयानन्द कालेज अजमेर

संसद के वर्तमान अधिवेशन मे प्रधानमन्त्री राजीव गाधी ने अपने एक महत्वपूर्ण भाषण मे कहा है कि अब समय आ गया है कि जब देश मे धर्म और राजनीति के सम्बन्ध मे व्यापक विचार विनिमय किया जाए। स्पष्ट है कि उनका यह वक्तव्य देश की वर्तमान बढती हुई पृथकतावादी प्रवृत्तियो को ध्यान मे रख कर दिया गया है जिसका सबसे दुर्भाग्यपूर्ण प्रदर्शन आज कई वर्षों से पजाब मे हो रहा है।

इस सामयिक प्रासगिकता से भी अधिक विचारणीय प्रश्न यह है कि स्वतन्त्र भारत के सविधान मे हमने जिस धर्म निरपेक्ष राजनैतिक व्यवस्था को स्वीकार किया है वह कहा तक सफल या असफल हुई है। गत कुछ वर्षों की घटनाओ से स्पष्ट है कि धर्म निरपेक्षता का यह आदर्श, सैद्धान्तिक दृष्टि से निर्विवाद होने पर भी व्यवहार मे असफल सिद्ध हुआ है।

धर्म निरपेक्षता का अर्थ

इस असफलता के दो मुख्य कारण हैं। एक यह कि हमने परम्परा गत धर्म निरपेक्षता के आदर्श को अपने देश मे एक नवीन रूप देने का प्रयत्न किया है और दूसरा यह कि पश्चिम क राष्ट्रो और विचारको की धर्म निरपेक्षता की मान्यताए जिस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि मे विकसित हुई वह हमारे देश की परिस्थितियो और विशेष कर यहा की धार्मिक और सामाजिक भिन्नताओ से मेल नही खाती थी।

शासन व्यवस्था मे धर्म निरपेक्षता के सिद्धान्त का अर्थ यह है कि राज्य का किसी एक धर्म के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। अर्थात् वह अपने प्रशासन तथा देश के राजनैतिक जीवन मे किसी धार्मिक विश्वास को न स्वीकार करेगा और नही उससे प्रभावित होगा। दूसरे शब्दो मे देश का प्रत्येक नागरिक चाहे वह किसी धर्म जाति या सम्प्रदाय का अनुयायी हो उसके साथ किसी प्रकार का पक्षपात नही किया जाएगा बल्कि सब नागरिक के राजनैतिक अधिकार समान होंगे।

भारत का सविधान जब विचाराधीन था तो उस समय देश के सिर पर मुस्लिम लीग द्वारा की गई पाकिस्तान की माग की छाया मडरा रही थी इसीलिए देश को खडित न होने देने के एक प्रयत्न के रूप मे मुस्लिम बहुल प्रान्तों को कुछ विशेष अधिकार देकर एक भारतीय राज्य [illegible] रखने का प्रयत्न किया गया किन्तु जब यह स्पष्ट हो गया कि पाकिस्तान के रूप मे देश का विभाजन अनिवार्य है तो हमारे नेताओ और विधान नेताओ ने धर्म के नाम पर पृथक निर्वाचन तथा आरक्षण आदि की अग्रेजी राज्य की परम्परा को समाप्त कर दिया।

हिन्दू मुस्लिम एकता की शर्त

अग्रेजो तथा मुस्लिम लीग की पृथकतावादी नीतियो के इस तात्कालिक निराकरण के उपरान्त भी हम एक विशुद्ध धर्म निरपेक्ष सविधान क्यो नही बना सके। इसका उत्तर हमारे राजनैतिक आन्दोलन की पृष्ठ भूमि से मिलता है। देश के स्वाधीनता सग्राम का नेतृत्व जब महात्मा गाधी के हाथ मे आया तब उन्होने सबसे अधिक बल इस बात पर दिया कि हिन्दू और मुसलमानो की एकता के बिना न हमारा देश आजाद हो सकता है और न ही हम अपनी आजादी को सुरक्षित रख सकते हैं। गाधी जी के लिए यह केवल एक नीति का प्रश्न नही था बल्कि उनके इस सर्व विदित विश्वास का परिणाम था कि ससार के सब धर्म न केवल सत्य हैं बल्कि उन सब के प्रति हमें समान आदर और सम्मान रखना चाहिए दूसरे शब्दो मे हम सर्व धर्म कह सकते है।

स्पष्ट है कि गाधी जी और उनके जिन प्रमुख अनुयायियो की प्रेरणा से हमारे सविधान की रूपरेखा निर्धारित की गई उसका आधार प्रचलित अर्थों मे धर्म निरपेक्ष राज्य न होकर एक ऐसा राज्य था जो सर्व धर्म समभाव के आदर्श को स्वीकार करता है।

धर्म निरपेक्ष या सर्व धर्म सापेक्ष

धर्म निरपेक्ष राज्य का परम्परागत अर्थ है कि राज्य न तो किसी धर्म का समर्थक है और न किसी धर्म का विरोधी है। किन्तु हमने इसके स्थान में सब धर्मों का समर्थन करना इसका अर्थ कर लिया है। यदि राज्य का किसी एक धर्म से सम्बन्ध अवाछनीय और हानिकर है तो अनेक धर्मों से इस प्रकार का सम्बन्ध स्वभावतः अनेक गुणा हानिकारक है। गत लगभग 38 वर्षों के अनुभव से भी यह स्पष्ट है कि धर्मों के प्रति निष्ठा या आदर राज्य या राजनीति में असम्भव है। किन्तु इस व्यर्थ के प्रयत्न में हमने अपने सार्वजनिक और राजनीतिक जीवन को विकृत अवश्य कर लिया है। सब धर्मों के प्रति सम्भाव व्यक्तिगत आदर्श तो हो सकता है किन्तु वह किसी राज्य या प्रशासन की नीति नहीं बन सकता। आज देश मे धर्म सम्प्रदाय और जाति के नाम पर जो अनेक सगठन पुन उभर रहे हैं वह धर्म निरपेक्षता की इसी विकृत नीति का परिणाम हैं। दुर्भाग्य से इन धर्मों में से अनेक तथा विशेष कर तथाकथित अल्पमत के धर्म प्रत्येक राष्ट्रीय और सार्वजनिक प्रश्न को अपने सकीर्ण धार्मिक और साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से देखने लगे हैं और उनकी इस प्रवृत्ति को हमारी सर्व धर्म सम्भाव की इस नीति से प्रोत्साहन मिलता है। पजाब मे अकाली दल खुले रूप से एक धार्मिक आधार पर बना राजनैतिक दल और यही कारण है कि सिखो के धार्मिक नेता और पुजारी पजाब की राजनीति को भारतीय सविधान के अनुसार नही अपितु अपनी धार्मिक मान्यताओ के आधार पर सचालित करना अपना अधिकार समझते है। वहा की अकाली सरकार भी धर्म गुरुओ के इस हस्तक्षेप को सिद्धान्त रूप से चुनौती न देकर केवल धर्म गुरुओ की कार्य प्रणाली को अप्रजातन्त्रीय तथा एक तरफा कहती है मगर उन के सर्वोपरि अधिकार को स्वीकार करती है। दक्षिण मे ईसाई धर्म का एक सम्प्रदाय राष्ट्रगीत को अपने धर्म के विरुद्ध समझता है। अनेक धार्मिक सगठन सविधान तथा राष्ट्रीय झण्डे तक का अपमान करते हैं और यहा तक कि उन्हे सार्वजनिक रूप से जलाते हैं। दो राष्ट्र के सिद्धान्त के आधार पर देश का विभाजन करने वाली मुस्लिम लीग तक को स्वतन्त्र भारत मे कानूनी मान्यता प्राप्त है। केरल मे स्वय राष्ट्रीय काग्रेस ने उसके साथ राजनैतिक समझौता करके उसे मान्यता प्रदान कर दी। शाहबानो विवाद ने यह स्पष्ट कर दिया है कि इस्लाम धम के नाम पर देश की जनता का एक बहुत बडा भाग हमारे सविधान के धर्म निरपेक्ष आदर्श को खुले आम चुनौती देता है।

इस्लाम की धार्मिक राज्य व्यवस्था

वस्तुत इस्लाम की स्पष्ट मान्यता है कि राजनीति उनके धर्म का एक अनिवार्य अग है। इसीलिए उन्हे इसी प्रकार की कोई राज्य व्यवस्था स्वीकार नही हो सकती जो उनके धार्मिक विश्वासो के प्रतिकूल हो। इतना ही नहीं विवाह, तलाक, गुजारे का भत्ता आदि जैसे प्रश्न जिनका महिलाओं के अधिकारो और समानता से सम्बन्ध है उन्हें भी वे देश के सब पर लागू होने वाले किसी कानून द्वारा नियन्त्रित करने के विरुद्ध हैं। यही कारण है कि सविधान में सबके लिए समान सिविल कोर्ट बनाने की व्यवस्था होने पर भी देश का बहुमत उसके पक्ष मे होने पर भी यह कोई अभी तक नहीं बन पाया है और अब जिस प्रस्तावित सिविल कोर्ट की चर्चा है वह भी स्वैच्छिक होगा इन उदाहरणो से स्पष्ट है कि जब राष्ट्रीय और सार्वजनिक हित के प्रश्नो तक के बारे मे धर्मों की मान्यता भिन्न है तो इन सब धर्मों को राज्य समान समर्थन और आदर कैसे कर सकता है?

अन्धविश्वासो को प्रोत्साहन

धर्म निरपेक्षता की इस विकृति का एक और दुष्परिणाम यह हो रहा है कि हिन्दू धर्म की अनेक धार्मिक और सामाजिक कुरीतिया जिन्हे हमारे राष्ट्रीय नेताओ और धार्मिक सुधारको ने देश की प्रगति और यहा तक की स्वाधीनता तक मे बाधक समझ कर दूर करने का प्रयत्न किया सब धर्मों के प्रति आदर के नाम पर वे अब पुनः उभर रही हैं। इसी प्रकार अनेक अन्धविश्वास हमारे राजनैतिक जीवन के अग बनते जा रहे हैं। तांत्रिक ज्योतिषी और धर्म गुरुओ का बढता हुआ प्रभाव इसके प्रमाण हैं। अजमेर की ख्वाजा साहब की दरगाह तो अब एक प्रकार से सरकारी तीर्थ स्थान बन गई है। राज्यो और केन्द्रो के मन्त्री और यहा तक कि स्वय प्रधानमन्त्री तक सिर रखकर इस मजार पर चादर चढाते हैं तो सर्व साधारण व्यक्तियो के अन्धविश्वास को एक नया समर्थन और प्रोत्साहन मिलता है। यदि दरगाह पर मन्नत मागने से राज नेताओ को चुनाव मे सफलता मिल सकती है तो सन्तान प्राप्ति मुकद्दमो मे सफलता, सट्टे मे लाभ आदि की मन्नतें मागने वालो को हम अन्धविश्वासी कैसे कह सकते हैं?

यह सर्व विदित है कि इस प्रसिद्ध दरगाह की जियारत या उस पर चादर चढाने का मुख्य उद्देश्य कोई न कोई मन्नत मागना होता है। यदि आज से सैकडो वर्ष पूर्व दिवगत फकीर के अवशेषो पर कोई समाधि या दरगाह आज भी ऐसा चमत्कार कर सकती है तो जीवित सन्त और भगवानो, धर्म गुरुओ द्वारा किए जाने वाले चमत्कारो को इक्कीसवीं सदी के नाम पर हम कैसे निषेध कर सकते हैं। विशेष कर जब इन चमत्कारो पर स्वय सरकार की मोहर और छाप लगायी जा रही हो और वह भी धर्म निरपेक्ष राज्य के नाम पर।

जीवन विकास की एक रूपरेखा

लेखक—प्रा. श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य
साधु आश्रम (होशियारपुर)

✻

हम अनेक बार पढते हैं, कि इस कार्य की योजना को इतने विशेषज्ञो ने इतना अधिक धन और समय लगा कर तैयार किया है। इसको पढ कर एव सुनकर कई अवाक रह जाते हैं। ऐसे ही हम अनेक बार विशेष स्थानो पर भ्रमण और दर्शन के लिए जाते हैं। उन को देखने से पूर्व या पश्चात हमारे सामने उस का माडल (मानचित्र) आता है और ब[illegible]या जाता है, कि इस मे इस [illegible]ता का सारा सार चित्रित है। इस के बनाने पर इतना समय लगा है। ऐसे ही हम मकानो के नक्शे देखते हैं। जिन पर हजारो खर्च आता है और जिनको किसी वास्तुविद ने काफी समय लगा कर तैयार किया होता है। यह सुन और देख कर आश्चर्य होता है, कि इस कागज की इतनी कीमत क्यो है और इस पर इतना अधिक समय कैसे लग गया तथा इन लकीरो मे सब कुछ कैसे चित्रित हो रहा है? किसी विशषज्ञ द्वारा जब इस का रहस्य समझाया जाता है या कोई गहराई से सोचता है, तो सारा स्वत सामने आ जाता है, कि बीज की तरह 'गागर मे सागर' कैसे भरा हुआ है।

हर व्यक्ति जहा जीना चाहता है, वहा अपने जीवन का सर्वांगीण विकास भी चाहता है। इसी लिए हर एक सदा यह प्रयास करता है, कि ऐसी कोई योजना हाथ लग जाए, जिस से मैं [illegible]नी साध पूरी कर सकू। अत एव [illegible]वन के सर्वांगीण विकास के भव्य भवन के न[illegible] की खोज मे न जाने कितने लगे हुए हैं। इस दृष्टि से जब हम विचार करते हैं, तो जिन खोजिया तिन पाइया' के अनुसार यह बात स्पष्ट होती है, कि आर्य समाज के नियम केवल इस सगठन के नियम, सिद्धान्त, विचार, मूलभूत आधार ही नहीं, अपितु इस के साथ सर्वांगीण जीवन विकास के [illegible]र्माणम सूत्र भी हैं। इन मे जीवन की हर क्षेत्र की प्रगति का एक नक्शा, [illegible]र्ण रहस्य भरा हुआ है। इन भावनाओ की भव्य झाकी लेखक कृत 'आर्य समाज के नियमो का एक अनुशीलन' से झाकी [illegible]ा सकती है। फिर भी सकेत के रूप [illegible] इस का एक चित्र यह भी है।

प्रथम नियम के शब्द सकेत करते [illegible], कि यह सगठन ईश्वर को मानता है और यह मान्यता केवल किसी परम्परा [illegible] निर्वाह या वाह-वाही के लिए नहीं [illegible], अपितु इन शब्दों में ईश्वर सिद्धि के लिए जहा तर्क, शास्त्र प्रमाण की ओर सकेत है, वहा जीवन विकास के लिए आस्तिक भावना का भी सकेत यहा दिया गया है। इस भावना का पूर्ण चित्रण और जग के बनाने पालने और समेटने वाले ईश्वर के पूरे स्वरूप का द्वितीय नियम मे एक सुन्दर वर्णन है। जिसका एक-एक शब्द जग के सर्जनहार का चरित्र चित्रण करता है और ईश्वर के स्वरूप का एक-एक पहलू जहा इस से उजागर होता है, वहा ये शब्द दार्शनिक रूप से भी एक-दूसरे पर निर्भर हैं।

प्रत्येक कार्य की सिद्धि सही ज्ञान से होती है, अत उस ज्ञान के आगार और उस की प्राप्ति के उपायो का निर्देश तृतीय नियम मे है। ज्ञान की पूर्णता व्यवहार मे आने पर ही होती है और इसी का दूसरा नाम सच्चाई है। अर्थात सत्य से ही कोई कार्य सिरे चढता या आपस मे विश्वास, परस्पर का व्यवहार स्थिर होता है। ऐसे सत्य के ग्रहण मे सवथा उद्यत रहना चाहिए। पचम नियम मे स्पष्ट सकेत है कि हमारा प्रत्येक कार्य धर्म पूर्वक होना चाहिए और धर्म की सीधी पहचान है—सचाई तथा उस को भी विचार पूर्वक ही ग्रहण करना चाहिए। षष्ठ मे जीवन की सफलता का लक्ष्य बताया है, वहा इस परोपकार रूपी जीवन के उद्देश्य को कितने प्रकार से कर सकते हैं, यह भी सकेत है।

अन्तिम चार नियमो मे सामाजिक उन्नति का पूर्ण चित्रण है। सामाजिक उन्नति एव सगठन के मूल सूत्रो को जहा सप्तम नियम मे निर्दिष्ट किया है, वहा इस सब की जड (8) विद्या की वृद्धि मे ही है। और नवम नियम मे कहा है—कोई अपने जीवन की शारीरिक, शैक्षणिक, राजनीतिक, आर्थिक, आध्यात्मिक आदि रूप मे जितनी भी उन्नति करना चाहे, उसे वह सब खुशी से करनी चाहिए, पर उसमे ही किसी को सन्तुष्ट नही हो जाना चाहिए। क्योकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अकेले की उन्नति उसे पूर्ण कृत कृत्य नही कर सकती। अत प्रत्येक को अपनी ही उन्नति मे सन्तुष्ट नही रहना चाहिए। समाज के महत्व को अनुभव करते हुए हमे सामाजिक व्यवस्थाओ का अनुशासन पूर्वक पालन करना चाहिए, हा अपने वैयक्तिक कामों मे अपनी इच्छा के अनुसार योजना कार्यान्वित की जा सकती है।

ऋषिवर दयानन्द स्वामीने

लेखक—श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ, प्र,)

ऋषियो का यह देश हमारा, पावन परम यहा की माटी,
अनुगामी होना वेदो का, यही यहा की परिपाटी,
आदिकाल मे इसी सृष्टि के, दिया ईश ने अनुपम ज्ञान,
अग्नि वायु आदित्य अगिरा, हुए प्रथमतम ज्योतिष्मान।

ब्रह्मा से लेकर जैमिनी तक, ऋषियो ने कर वेद प्रचार,
भू के हरे भरे उपवन मे, रहे खिलाते मृदु अभिसार,
रही व्यवस्था वेद-धर्म की, युद्ध महाभारत से पहले,
उसके बाद धरणि के वासी, वेदो का पथ छोड चले,

विगत सदी में एक महा ऋषि पुन पधारा भारत भू पर,
अपौरूषय वेदो के ज्योतित पथ पर स्वय अभय चल कर,
'सत्य सनातन धर्म वेद का' है, उसने उदघोष किया,
परमेश्वर की वाणी शुचितम का ऋषि ने जय घोष किया।

वेदोद्धारक वह महर्षि था, ऋषिवर दयानन्द सन्यासी,
वेदो के पावन प्रचार का, ही वह सदा रहा अभिलाषी,
ईश्वरोक्त है चतुर्वेद ही, स्वामी जी ने हमे बताया,
वेदो का भाष्य स्वभाषा, भ्राति अनेकानेक मिटाया।

फैले वेदो का प्रकाश फिर, एक यही थी उसकी इच्छा,
अनुगामी हो हम वेदो के, यही दयानन्द ने दी शिक्षा,
किया अहर्निश वेद ज्ञान का, उसने दिव्य प्रचार निरन्तर,
लगी गू जने महिमण्डल मे वेद ऋचाए स्वर्गिक सस्वर।

दे करके दृष्टान्त वेद का, पाखण्डो को था ललकारा,
फैली थी जो दुष्प्रवत्तिया उन पर कटुतम चलादुधारा,
राष्ट्रभाषा हिन्दी को ऋषि ने एक सदी पूव दुलारा,
ईश्वर जीव प्रकृति सबन्धित दूर किया कलुष सारा।

जागृत किया आर्य सुसस्कृति, कर वैदिक मत का प्रतिपादन,
स्वाथ युयुत्सालीन मतो का, छोड दिया जन ने अनुपालन,
'वेद मार्ग ही श्रेष्ठ मार्ग है, ऋषिवर ने की सिंह गर्जना,
धरती के सारे पाखण्डी, वेद ज्ञान पा हुए अनमना।

हुए प्रकम्पित जगती भर के, मिथ्या धारित मत मतान्तर,
वेदो का पावन प्रकाश पा, हुआ प्रकाशित जन जन अन्तर,
सत्यमार्ग के इस दर्शक ने, वेदाऽमृत का पान कराया,
ऋषिवर दयानन्द स्वामी ने, मानवता का पाठ पढाया।

ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर आर्य समाज नवाशहर मे यज्ञ करते हुए दिखाई दे रहे हैं। श्री वेद प्रकाश जी सरीन प्रधान, श्री धर्म प्रकाश जी दत्त मन्त्री, श्री प देवेन्द्र कुमार जी तथा श्री प्रो सरस जी।

नव वर्ष मंगलमय हो

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा सम्वत् 2044,30 मार्च सोमवार 1987

नव-सम्वत्सर के शुभ अवसर पर हमारी हार्दिक शुभकामनाएं इष्ट मित्रो, परिवार जनो सहित स्वीकार कर कृतार्थ करें।

ईश्वर से प्रार्थना है कि यह वर्ष आप सबके लिए सर्व प्रकार से स्वास्थ्य, सुख, समृद्धि तथा धर्म परायणता का वर्ष हो।

सृष्टि सम्वत् :—1,97,29,49,088
वेद सम्वत् .— 1,96,08,53,087
विक्रमी सम्वत् :—2044

बन्धुओ-बहनो,

सवत्सर ही क्यो ?

- सृष्टि प्रारम्भ चैत्र शुक्ला के प्रथम दिन अर्थात् प्रतिपदा मे हुआ था।
- आर्यों के अधिकाश सम्वत् चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से ही प्रारम्भ हुए जैसे ब्रह्म दिन, सृष्टि सम्वत्, वैवस्वताविमन्वन्तरारम्भ, सतयुगादि युगारम्भ, कलि सम्वत्, वैक्रम सम्वत्।
- आदि सृष्टि से ही आर्य जाति में नवसम्वत्सरारम्भ का पर्व मनाने की प्रथा प्रचलित है।
- नव सम्वत्सरारम्भोत्सव ससार की सब ही सभ्य जातियो मे अपनी-अपनी सस्कृति के अनुसार भिन्न-भिन्न नामो से मनाया जाता है।
- आर्य समाज का स्थापना दिवस तथा विश्व शान्ति की आधारशिला आर्य समाज के दस नियमो का निर्धारण दिवस भी चैत्र शुक्ला प्रतिपदा ही है।

राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने पर भी हम भारतीय अभी तक मानसिक एव सास्कृतिक परतन्त्रता की बेडियो मे जकडे हुए हैं। पाश्चात्य वेशभूषा, रहन सहन, अग्रेजी भाषा का वर्चस्व विद्यालयो से लेकर कार्यालयो तक इसके उत्कृष्ट प्रमाण हैं।

अग्रेजी वर्ष के प्रारम्भ मे ही शुभ कामनाये इष्ट मित्रो को भेजने मे तो हम गौरव अनुभव करते हैं पर भारतीय सम्वत के उपलक्ष मे शुभकामनाये भेजने का ध्यान भी नही आता।

अत यदि हम अपने देश, धर्म, सभ्यता और सस्कृति की रक्षा करना चाहते हैं तो हमे बदलना होगा। परतन्त्रता की परम्पराओ को त्याग कर पुन भारतीय सस्कृति के अनुरूप आचरण का दृढ सकल्प लेना होगा।

—श्री श्रीराम पथिक मानव सेवा आश्रम छुटमलपुर

आर्य समाज कालेज रोड बरनाला की गतिविधियाँ

आर्य समाज कालेज रोड बरनाला की ओर से निम्न कार्यक्रम गत दिनो सम्पन्न हुए।

15-2-87 को श्री तनसुखराम जी के निवास स्थान पर यज्ञ किया गया।

17-2-87 को आर्य समाज कालेज रोड के उप-प्रधान श्री जगदीश आर्य के भाई श्री पवन आर्य का विवाह वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। कोई बारात नही गई। न ही कोई दहेज लिया गया है। विवाह सस्कार श्री सूर्य प्रकाश जी शास्त्री लुधियाने वालो ने करवाया।

22-2-87 को श्री जगदीश राय आर्य के घर पर पारिवारिक सत्सग हुआ।

29 2 87 को आर्य समाज मदलबद मे श्री रामकृष्ण के घर पर पारिवारिक सत्सग किया।

—मन्त्री

लुधियान में सीताष्टमी पर्व

21 फरवरी शनिवार को आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना मे सीताष्टमी दोनो समाजो स्वामी श्रद्धानन्द बाजार एव महर्षि दयानन्द बाजार स्त्री समार्जो ने मिल कर बडी धूमधाम से मनाई। भगवती सीता जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए शान्ता जी गौड वानप्रस्थ ने भारतीय सभ्यता और सस्कृति अपनाने पर बल दिया। एव अपनी प्राचीन मर्यादाओ के अन्दर रह कर ही गृहस्थी, वानप्रस्थी समस्त आर्य जगत् तथा भारतीय समाज को आगे बढना चाहिए। तभी समाज मे सुख और शान्ति का वातावरण हो सकता है। इसी प्रकार से श्रीमती यशवती जी भल्ला प्रिंसीपल लाल बहादुर शास्त्री स्कूल ने भी अपने विचार इसी विषय पर व्यक्त किए।

— महामन्त्री

जिला आर्य सभा लुधियाना की ओर से धन्यवाद

गत दिनो जिला आर्य सभा लुधियाना के तत्वावधान मे ऋषिबोधोत्सव तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के तत्वावधान मे राष्ट्रीय सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इसको सफल बनाने मे जहां लुधियाना की सभी स्त्री आर्य समाजो व शिक्षण सस्थाओ,आर्य समाजो का सहयोग प्राप्त हुआ वहां विशेष रूप से श्री खुशवक्तराय जी सूद, सिम्पलेक्स मैट्रियर्ज, श्री डा मूलचन्द जी भारद्वाज एम ए,श्री दीवान राजेन्द्र कुमार, श्री ओमप्रकाश जी पाठी और श्री ओम्प्रकाश जी टण्डन ने दिन रात एक करके इन सम्मेलनों को सफल बनाया। इसके अतिरिक्त श्री आत्म प्रकाश जी अरोडा श्री राजेन्द्र कुमार जी आर्य ने भी पूरा सहयोग दिया। मैं सभी आर्य समाजों का तथा शिक्षण सस्थाओ के अधिकारियों तथा आर्य बन्धुओ का हार्दिक धन्यवाद करता हू।

—आशानन्द आर्य
महामन्त्री

आर्य समाज फगवाड़ा का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बगा रोड फगवाडा का वार्षिकोत्सव समारोह 23 फरवरी 87 से 1 मार्च 1987 तक सम्पन्न हुआ। इस समाज का यह 81 वा वार्षिकोत्सव था। प्रतिदिन प्रात सात से पौने नौ तक प भूदेव जी शास्त्री की अध्यक्षता मे हवन यज्ञ हुआ। रविवार को वार्षिकोत्सव के अन्तिम दिवस प निरजन देव जी इतिहास केसरी, प भूदेव शास्त्री श्री केवलकृष्ण सहगल, प सत्यदेव जी एवं डा एम एच भाटिया जी के मनोहर व्याख्यान हुए। ऋषिलगर के साथ उत्सव समाप्त हुआ। 26 फरवरी वीरवार को ऋषिबोध उत्सव का विशेष कार्यक्रम हुआ।

—देशबन्धु
—मन्त्री

आर्य समाज माडल टाउन लुधियाना का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज माडल टाउन लुधियाना का वार्षिक उत्सव 28-29 मार्च 1987 को मनाया जा रहा है जिस मे आचार्य विक्रम जी शास्त्री दिल्ली प क्षितीश जी वेदालकार सम्पादक 'आर्य जगत्' दिल्ली तथा प्रो. रत्नसिंह जी गाजियाबाद, बहिन कमला जी आर्या तथा प्रिंसीपल बिमला जी छाबडा पधार रहे हैं। आप सादर आमत्रित हैं।

—सत्यानन्द मुजाल-मन्त्री

दस हजार रुपए का दान

ढाबा आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल नवाशहर के लिए श्री बलदेव नाथ जी लखोइया सुपुत्र लाला सेवाराम जी लखोइया ने श्री वेद प्रकाश जी सरीन मैनेजर स्कूल और श्री हरबसलाल जी तनेजा प्रिंसीपल स्कूल की प्रेरणा से अपनी माता (ताई) जी की स्मृति मे प्रिंसीपल जी के लिए नया दफ्तर बनाने के लिए दस हजार रुपए स्कूल के लिए दान मे दिए। इससे पूर्व भी उन्होंने स्कूल मे एक कमरा बनवाया हुआ है। श्री बलदेव नाथ जी लखोइया बडे दानी पुरुष हैं। समय समय पर आय सस्थाओ के लिए इनका परिवार दान देता रहा है। स्कूल की मैनेजिंग कमेटी इनकी आभारी है और आशा करती है कि आगे के लिए भी यह दान निकालते समय स्कूल का ध्यान रखेंगे।

इनके बडे भाई श्री विद्यासागर जी लखोइया ने एक लाख रुपए की राशि से नवाशहर ढाबा मे एक ट्रस्ट बना रखा है और एक कोठी जिसका मूल्य लगभग आठ-दस लाख रुपए की है इस ट्रस्ट को दान मे दे रखी है। जिसमे एक फ्री डिसपैन्सरी और सिलाई स्कूल चल रहा रहा है। इस ट्रस्ट के सैक्रेटरी भी श्री वेद प्रकाश जी सरीन हैं और इसका कार्य बडे सुचारु रूप से चल रहा है।

आचार्य चाहिए

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा द्वारा सचालित अन्तर राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, टकारा के लिए आचार्य की तुरन्त आवश्यकता है। आचार्य पद के लिए ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का गहरा अध्ययन तथा दर्शन, व्याकरण व अग्रेजी की विशेष योग्यता आवश्यक है। प्रौढ सज्जनों को प्राथमिकता दी जायेगी।

पता—रामनाथ सहगल, मत्री, महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा,
आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली—110001

पंजाब की सभी आर्य समाजों में "महा पंजाब दिवस" मनाया गया

पंजाब भर की सभी आर्य समाजो 22-2-87 रविवार को अपने साप्ताहिक सत्संग के अवसर पर महा पंजाब दिवस मनाया गया और निम्न प्रस्ताव पारित करके—

श्री प्रधानमन्त्री जी भारत सरकार नई दिल्ली,

श्री गृहमन्त्री जी भारत सरकार नई दिल्ली,

श्री राज्यपाल महोदय पंजाब सरकार चण्डीगढ,

श्री प्रधान जी आर्य प्रतिनिधि सभा प... जालन्धर।

श्री प्रधान जी सार्वदेशिक सभा दिल्ली को इस प्रस्ताव की प्रतिलिपियां भेजी गई हैं।

पारित प्रस्ताव निम्न प्रकार हैं :—

आर्य समाज.... .. का ...ह साप्ताहिक सत्संग पांच सिंह साहेबान ...रा प्रकाशित घोषणा पत्र को गम्भीरता ...र देश-द्रोही संकीर्णता की दृष्टि मे ...ते हुए और उनकी विचारधारा और ...की मांगो का कल को जो परिणाम ...कल सकता है, उस पर विचार करने पश्चात् इस परिणाम पर पहुंचा है ...क पंजाब की वर्तमान समस्याओ का ...कमात्र हल महा पंजाब है। जो कुछ ...ह साहेबान इस समय कर रहे हैं या ...ह रहे हैं, उसके कारण आगे चल कर ...ाब मे कई ऐसी परिस्थितियां पैदा हो ...ही हैं, जिनके कारण देश की एकता ...ाधीनता के लिए भी संकट पैदा ...है। आर्य समाज की यह ...श्चित धा... है कि भारत सरकार को ... हाथ पर हाथ धर कर नहीं बैठना ...हिए और सक्रिय रूप से पंजाब की ...ति पर नियन्त्रण करने के लिए कोई ...स पग उठाना चाहिए। अकालियो की ...न भावनाओ से प्रेरित होकर पंजाबी ...ा बनाया गया था, वह सब निरर्थक ...बित हो रही हैं और उनके कारण ऐसी विघटनकारी शक्तियो को प्रोत्साहन मिल रहा है, जो देश के लिए अत्यन्त घातक साबित हो सकती हैं। आज पंजाब मे आतंकवाद और उग्रवाद जो रूप धारण कर रहा है, उसकी अवहेलना भी नही की जा सकती। इसलिए देश के हितो को सामने रखते हुए यह अत्यन्त आवश्यक है कि पंजाब का क्षेत्र बढाया जाए और इसमे जो देश प्रेमी शक्तियां हैं, उन्हे अधिक शक्तिशाली बनाया जाए। इसका केवल एक साधन है, वह यह है कि पंजाब को उसी प्रकार का प्रान्त बनाया जाए जैसा कि यह पहली नवम्बर 1966 को था। उसके साथ जितनी समस्याएं आज खडी हो रही हैं, वे अपने आप समाप्त हो जायेगी। इसलिए यह आर्य समाज भारत सरकार से सविनय निवेदन करना चाहती है कि तुरन्त इस दिशा मे पग उठाना चाहिए और उसे क्रियान्वित करने के लिए आर्य समाज अपनी पूरी शक्ति और संगठन के साथ सरकार को अपना सहयोग देगी।

निम्न आर्य समाजो के प्रस्ताव हमे प्राप्त हुए।

आर्य समाज नवांशहर, चौक प्रठिम्बा श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर, शक्ति नगर अमृतसर, स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना तथा स्त्री आर्य समाज, स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना। बस्ती गुजा जालन्धर, ऋषिकुञ्ज पक्का बाग जालन्धर शास्त्री नगर जालन्धर, बड्डा होशियारपुर जालन्धर, गोविन्दगढ जालन्धर, बोहरी चौक बटाला, बरनाला, बंगा, फगवाडा, शहीद भगतसिंह नगर जालन्धर, भार्गव नगर जालन्धर आदि आर्य समाजों ने प्रस्ताव पारित करके भेजे हैं।

———

बलिदानी जत्थे के नेता प जय कृष्ण जी शर्मा का स्वागत करते हुए, श्री बलदेव राज सेठी, साथ दिखाई दे रहे हैं। श्री ज्ञानी गुरदियाल सिंह आर्य, श्री दीवान चन्द तूफान।

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना में ऋषिबोधोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना मे शिवरात्रि महा उत्सव बडे समारोह से मनाया गया। 15 फरवरी से 26 फरवरी तक प्रात विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया जिस मे महर्षि दयानन्द की जीवनी पर प सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री तथा प सूर्यपाल जी एम ए ने बडी विद्वता-पूर्ण चर्चा की। 19-2-87 को आर्य समाज मे विशेष आयोजन किया गया। पंजाब सुरक्षा समिति का जत्था श्री जयकिशन जी शर्मा जी के नेतृत्व मे पंजाब की जटिल समस्या के समाधान हेतु दिल्ली मे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी को मिलने जा रहा है। जिस मे लगभग 150 व्यक्ति हैं वे सभी रात आर्य समाज मे ठहरे। रात आर्य समाज मे विश्राम किया। प्रात सभी यज्ञ मे सम्मिलित हुए। महर्षि बोधोत्सव के उपलक्ष्य मे चल रहे कार्यक्रम मे उन्होने न केवल भाग लिया बल्कि जत्थे का नेतृत्व कर रहे उनके नेता श्री जयकिशन शर्मा जी ने समारोह मे ऋषि के जीवन चरित्र पर ज्ञान वर्धक व्याख्यान दिया। जिसे सभी उपस्थित नर-नारियो ने बडी श्रद्धा एवं ध्यान से सुना।

वह आर्य समाज फतेहगढ चूडिया मे उच्च पद पर भी रह चुके हैं। आर्य समाज के अधिकारियो एवं सदस्यो ने उनका भावभीना स्वागत किया। रात ठहरने तथा जलपान की व्यवस्था आर्य समाज ने की, जब यह जत्था प्रात आर्य समाज से प्रस्थान करने लगा तो बाहिर विदाई देने के लिए सारा शहर उमड पडा। आर्य समाज के उत्सव मे भी काफी रौनक व उपस्थिति रही। 26 फरवरी वीरवार को इस विशेष यज्ञ की पूर्ण आहुति डाली गई।

—बलदेवराज सेठी
महामन्त्री

———

२० वां वार्षिक यज्ञ-महोत्सव

शम्भु दयाल दयानन्द वैदिक ...यास आश्रम महर्षि दयानन्द मार्ग, ...नन्द नगर, गाजियाबाद का यज्ञ ...त्सव मिति चैत्र शुक्ला 14 सोमवार से वैशाख कृष्ण 6 रविवार 2044 तदनुसार 13 अप्रैल से 19 अप्रैल 1987 ... के प्रांगण मे समारोह पूर्वक ...गा।

इस अवसर पर सर्वश्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (आश्रमाध्यक्ष) स्वामी मुनीश्वरानन्द जी त्रिवेदतीर्थ, स्वामी यज्ञानन्द जी सरस्वती, स्वामी चन्द्रदेव जी सरस्वती, प सत्यानन्द जी वेदवागीश, ब्रह्मचारी अखिलेश्वर जी वैदिक प्रवक्ता) के वेदोपदेश तथा श्री मामचन्द जी आदि संगीतज्ञो के मनोहर भजन सुनने को मिलेंगे।

—प्रेमानन्द सरस्वती
आश्रमाचार्य

———

गुम होने की सूचना

आर्य समाज बड्डा होशियारपुर जालन्धर की एक डाक पुस्तक तथा दो "संस्कार प्रमाण पत्र" सीरियल न 51 तथा 52 गुम हो गए हैं। जिस किसी को वह मिलें। कृपया आर्य समाज बड्डा होशियारपुर जालन्धर के मन्त्री या प्रधान तक धन्यवाद सहित पहुंचाने की कृपा करें।

—योगेन्द्रपाल सेठ
प्रधान

सूचना

महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास अजमेर मे आर्य सन्यासियो, आर्य विद्वानो और आर्य महानुभावो के लिए ठहरने की सुविधाएं उपलब्ध हैं। इसमे निवास हेतु पधार सकते हैं। ठहरने के लिए न्यास के नियमो का पालन करना होगा।

—मन्त्री

———

धूरी के आर्य विद्यालय और महाविद्यालय चमके

प्रतिवर्ष की भान्ति इस वर्ष भी आर्य समाज धूरी के महाविद्यालय एव विद्यालयो के छात्र-छात्राओ की धर्म शिक्षा की परीक्षा 17 2-87 को हुई जिस मे जो भी प्रथम, द्वितीय रहे उन को पुरस्कार भी दिए गए। इसका विवरण निम्नलिखित प्रकार से है।

—कालेज का—

प्रथम पुरस्कार 75 रुपये मजू सुपुत्री श्री मदनलाल जी।

द्वितीय पुरस्कार 50 रुपये राजविन्द्र कौर सु श्री सुरेन्द्र सिंह जी।

तृतीय पुरस्कार 30 रुपये स्नेहलता सु श्री इन्द्र सैन गुप्ता जी।

आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल

प्रथम पुरस्कार 75 रुपये नीलम रानी सुपुत्री श्री कौर सैन जी गोयल।

द्वितीय पुरस्कार 50 रुपये नरेन्द्र कौर सुपुत्री श्री साधुसिंह जी।

तृतीय पुरस्कार 30 रुपये मजूषा मोहिल सुपुत्री श्री राधे श्याम जी मोहिल

तृतीय—पुरस्कार 30 रु इन्द्रजीत कौर सुपुत्री श्री गुरदेव सिंह जी।

मिडल श्रेणी के बच्चों मे

प्रथम पुरस्कार 50 रुपये नन्दनी मेहता सुपुत्री श्री दीनानाथ जी।

द्वितीय पुरस्कार 30 रुपये वाणी सुपुत्री श्री मदनमोहन जी।

तृतीय पुरस्कार 20 रुपये सगीता जिंदल सुपुत्री श्री अशोक जी।

प्राईमरी के बच्चे

प्रथम पुरस्कार 30 रुपये सीना टडन सुपुत्री श्री विजय कुमार जी।

द्वितीय पुरस्कार 20 रु कुलदीप कुमार सुपुत्र श्री पैवन कुमार जी।

तृतीय पुरस्कार 10 रु पिकी रानी सुपुत्री श्री राजकुमार जी।

इन सभी पुरस्कारियो ने इनाम लेकर अपने नाम को ही ऊचा नही किया बल्कि अपने माता पिता और समाज के नाम को भी ऊचा किया है। आशा करते हैं कि बाकी के छात्र छात्रायें भी आगे से पुरस्कार लेने के लिए अनथक प्रयास करगे।

—सूय प्रकाश शास्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत ग्रन्थों के क्रय का सुनहरा अवसर

श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा प्रकाशित एव महर्षि द्वारा रचित अमूल्य ग्रन्थो को अपने पुस्तकालय एव व्यक्तिगत लाइब्रेरी हेतु खरीदें तथा आर्य समाज सांताक्रुज बम्बई द्वारा दी जा रही विशेष छूट का लाभ उठाए— जो सस्था या व्यक्ति श्रीमती परोपकारिणी सभा द्वारा सचालित वैदिक पुस्तकालय से 2000 रुपये या उससे अधिक राशि का साहित्य खरीदेगा उसे सभा के नियमानुसार दिए जाने वाले कमीशन के अतिरिक्त शेष देय मूल्य पर 10 प्रतिशत का विशेष अनुदान। आर्य समाज सांताक्रुज के उप प्रधान व परोपकारिणी सभा के वरिष्ठ सदस्य माननीय श्री ओकारनाथ जी आर्य बम्बई के सौजन्य से दिया जायेगा। तथा

भारत के किसी भी क्षेत्र मे अपनी निकटतम शाखा तक यह साहित्य नि-शुल्क पहुचाने की व्यवस्था भारत की सुप्रसिद्ध परिवहन कम्पनी इकानोमिक ट्रांस्पोर्ट आर्गेनाइजेशन द्वारा परोपकारिणी सभा के मन्त्री—श्री गजानन्द जी आर्य के सौजन्य से की जाएगी।

वैदिक पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित एव स्टाक में उपलब्ध साहित्य पर यह योजना 15 अप्रैल 87 तक प्राप्त आदेशो पर लागू रहेगी। अपना आदेश 25 प्रतिशत राशि के बैंक ड्राफ्ट सहित शीघ्र भेजें। महर्षि कृत ग्रन्थो के प्रचार व प्रसार मे अपना योगदान दें।

—वैदिक पुस्तकालय—
दयानन्द आश्रम, केसरगज
अजमेर—305001

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250

रजि. नं. N.W/JL.35

वर्ष 18 अंक 52, 23 चैत्र सम्वत् 2044 तदनुसार 5 अप्रैल 1987 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 60 पैसे (वार्षिक शुल्क 30 रुपये)

आओ आर्य समाज का स्थापना दिवस मनाते हुए कुछ चिन्तन करें

30 मार्च से पांच अप्रैल तक यह एक सप्ताह हमारे लिए एक चिन्तनीय सप्ताह है। इस दिन आर्य समाज को बने पूरे एक सौ ग्यारह वर्ष हो जाते हैं। हम एक शताब्दी से दूसरी शताब्दी मे प्रवेश कर चुके हैं। आर्य समाज के पिछले एक सौ वर्ष के कार्यकाल को यदि दो भागो में बांटा जाए तो पहले पच्चास वर्ष का काल अपना बहुत अधिक महत्व रखता है। महर्षि को आर्य समाज की स्थापना के बाद केवल 8 वर्ष कार्य करने का अवसर मिला। सन् 1883 में वह हमें छोड कर चले गए। परन्तु उनके इन आठ वर्षों के कार्यकाल और उसके बाद के 37 वर्ष के कार्यकाल में आर्य समाज निरन्तर उन्नति की ओर बढता रहा। आर्य समाज ने जहां, दलितो, अछूतो, अनाथो, विधवाओ और असहायो के उद्धार का बीडा उठाया वहा अन्धविश्वासो और कुरीतियो को दूर करने के लिए शिक्षा का बीडा भी उठाया और सर्व प्रथम लाहौर मे डी.ए.वी स्कूल, फिर डी ए. वी कालेज और उसके बाद अन्य नगरो में शिक्षा सस्थाओ का जाल बिछने लगा। महात्मा हसराज जी डी ए वी आन्दोलन के जन्मदाताओ में से एक महान् विभूति थे। जिनके तप और त्याग से यह सस्थाए बढने-फलने-फूलने लगी। लाला लाजपत-राय व प गुरुदत्त विद्यार्थी जी ने भी आर्य सस्थाओ को अपना महान योगदान दिया।

आर्य समाज केवल स्कूल, कालेजो तक ही सीमित नही रहा। 1902मे इस ने गुरुकुल की स्थापना भी कर दी। गुरुकुल कागडी की स्थापना के पश्चात् धीरे-धीरे स्थान पर गुरुकुल खुलने लगे और इनके जन्मदाता थे महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) कन्याओ के लिए भी स्कूल और महाविद्यालय खुलने लगे।

इस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र मे आर्य समाज आगे बढा और उसकी सारे देश मे धूम मच गई आज भी आर्य समाज की शिक्षा सस्थाए आगे बढती आ रही है और स्थान पर फैलती जा रही हैं।

पहले पच्चास वर्ष मे आर्य समाज ने जो शिक्षा सस्थाए खोली थी उनका उद्देश्य विद्यार्थियो को धार्मिक शिक्षा देना था। सरकारी स्कूल के प्रभाव को कम करके विदेशी सभ्यता से छुटकारा दिला कर भारतीय सभ्यताऔर सस्कृति के ढाचे मे विद्यार्थियो को ढाला जाता था। लोग अपने बच्चो को सरकारी स्कूलो के स्थान पर आर्य समाज की शिक्षा सस्थाओ में प्रवेश कराने लगे। इन्ही सस्थाओ ने देश को अनेको देश भक्त दिए। इस काल मे आर्य समाज की महान् उन्नति हुई आर्य समाज हर क्षेत्र मे आगे ही आगे बढता रहा। परन्तु भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् 1947 के बाद इन सस्थाओ का वह उद्देश्य नही रहा जो पहले था। उस का एक कारण यह भी था कि देश आजाद हो गया था और अपना राज्य स्थापित हो गया था। अब सरकार भी अपनी थी और स्कूल भी अपने थे,शायद इसी उद्देश्य से सरकार से स्कूल कालेजो के लिए अनुदान भी लिया जाने लगा जबकि इससे पहले यह स्कूल कालेज केवल दानी महानुभावो के दान पर ही चलते थे।

इसके बाद पच्चास वर्ष के इस काल मे आर्य समाज की उन्नति धीमी पड गई। यह बात नही कि इन पच्चास वर्षों मे आर्य समाज की शिक्षा सस्थाए नही बढी और आर्य समाजो की सख्या भी नही बढी। वह तो बढी और पहले से भी अधिक परन्तु प्रचार पहले से बहुत कम होता गया।

आर्य समाज के कर्णधारो ने कई बार इस पर विचार किया परन्तु अभी तक इसके निदान को ढू ढा न जा सका। आर्य समाज की प्रगति क्यो ढीली पडी? शिक्षा सस्थाओ मे धार्मिक शिक्षा क्यो बन्द हो गई? पहले जैसे प्रचारक आज आर्य समाज को क्यो नही मिल रहे? यह कुछ प्रश्न है जो आज हमे झकझोर रहे हैं।

आओ आर्य समाज का स्थापना दिवस मनाते हुए इन सभी बातो पर विचार करें और निश्चय करें कि महर्षि दयानन्द ने जो जिम्मेदारी हमें दी है हम उसे कैसे निभा सकते हैं और आर्य समाज का वह पुराना युग किस प्रकार से फिर ला सकते हैं और आज की शिक्षा सस्थाए आर्य समाज के प्रचार मे कैसे सहयोग दे सकती हैं?

आर्य समाज ही आज देश को प्रत्येक संकट से बचा सकता है

आज से 53 वर्ष पूर्व प्रथम अप्रैल सन् 1934 को श्री महाशय कृष्ण जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने पहली अप्रैल की रात को गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार मे सात हजार के जन-समूह मे निम्नलिखित अति प्रभावशाली प्रवचन दिया था ।

(स्व महाशय कृष्ण जी भू पू मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब)

मैं यहा एक प्रश्न का उत्तर देने आया हू। मेरे आर्य भाई यह प्रश्न करते हैं कि अब आर्य समाज की क्या आवश्यकता है? कुछ गैर आय समाजी भाई भी यही पूछते हैं कि अब जब कि महात्मा गाधी का युग आ गया है तो अब दयानन्द के युग की क्या आवश्यकता है? इन भाईयो से यह पूछता हू कि ऋषि दयानन्द ने जिस उद्देश्य को लेकर समाज की स्थापना की थी, वह पूर्ण हो गया है? क्या अब कही भी पाखण्ड अन्याय या अत्याचार नहीं रहा है? यदि है, तो फिर यह प्रश्न सर्वथा निर्मूल है कि आय समाज की जरूरत नही रही ।

दयानन्द की छाप

इस समय भारत वष मे जितनी उथल पुथल हो रही है, वह सब ऋषि दयानन्द के प्रताप से ही हो रही है। ऋषि ने सबमे पहले भारत को 'स्वदेशी' का सन्देश दिया। हिन्दी को मातृ भाषा बतलाया और अछूतोद्धार अपनाया। अब सारा सभ्य भारत उनको अपना रहा है जबकि कांग्रेस मे चोटी के नेता उस समय सिर्फ अधिकारा क भखे थे। आर्य समाज के प्रवर्तक ने अपने ग्रन्थ मे आदर्श स्वराज्य का वर्णन किया? काग्रस के नेताओ मे सबसे पहले तिलक जी ने स्वराज्य का सन्देश सुनाया। ऋषि दयानन्द ने स्वराज्य का जो आदर्श हमारे सामने रखा है, वह कई साल हुए इगलैंड के प्रधानमन्त्री सर हेनरीकेम्बल ने उसी रूप मे पेश किया था। स्वराज्य के अर्थों पर भी विवाद है। लेकिन ऋषि ने जिस स्वराज्य को हमारे सामने पेश किया, वह अबाध्य स्वतन्त्र स्वच्छन्द और निर्भय स्वराज्य है। मेरा यह दावा है, कि आज कल भारतवर्ष मे जो इस समय हलचल पाई जा रही है, उसका वास्तविक जन्मदाता ऋषि दयानन्द था। मथुरा जन्म शताब्दी से पूर्व मेरा यह विचार था कि खद्दर का प्रचार केवल महात्मा गाधी ने किया है। परन्तु जब मैंने मथुरा मे शताब्दी के अवसर पर वह कोट और पायजामा देखा, जो कि ऋषि दयानन्द ने शाहपुराधीश को दिया था। तो मैंने देखा कि वह शुद्ध खद्दर का था। उसे देख कर मेरा यह विचार हुआ कि शुद्ध खादी का पहला सन्देश वाहक भी ऋषि दयानन्द था।

अनुपम उदारता

यद्यपि ऋषि दयानन्द ने हमे देश सेवा और राष्ट्रभाषा का सन्देश दिया। फिर भी उन्होने संसार के उपकार को मुख्य स्थान दिया। और उसे ही आर्य समाज की स्थापना का उद्देश्य बताया। जैसे कि आर्य समाज का छठा नियम है। "ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना" मैं अपने आर्य भाईयो से यह कहना चाहता हू कि अभी भारत मे भी ऐसे बहुत से स्थान पाए जाते हैं, जहा ऋषि दयानन्द का सन्देश नही पहुचा। क्या ऐसी अवस्था मे कोई आर्य भाई यह कह सकता है कि अब आर्य समाज की आवश्यकता नही? गैर आर्य समाजियो से यह निवेदन करना चाहता हू कि आर्य समाज की इसलिए आवश्यकता है कि वही महात्मा गाधी के महा व्रत को पूरा कर सकता है। महात्मा जी ने जो हरिजन आन्दोलन शुरू किया है, उसे केवल आर्य समाज ही पूर्णता तक पहुचा सकता है। समाचार पत्रो मे यह बात आई है कि मास अगस्त मे महात्मा गाधी फिर जेल मे जा कर हरिजन सेवा के लिए ऐसा व्रत शुरू करेंगे, जो उनके जीवन मे समाप्त न होगा। यदि भारत वर्ष मे महात्मा गाधी को जीवित रखना है, तो उसके लिए आर्य समाज की आवश्यकता यथापूर्व बनी रहेगी। गत सत्याग्रह आन्दोलन मे महात्मा गाधी के पदचिन्हो पर चलते हुए अस्सी हजार स्त्री पुरुष जेलों में चले गए। परन्तु ऐसा होने पर भी महात्मा गांधी ने कभी स्वराज्य के सवाल पर व्रत नहीं लिया। उन्होंने यदि व्रत लिया है, तो केवल हरिजनों की सेवा के प्रश्न पर।

हरिजन सेवा :—

इस समय अछूतोद्धार और हरिजन सेवा का प्रश्न जनता में सबसे प्रबल है। माना कि हरिजन सेवा सघ का काम भी प्रशंसनीय है परन्तु वह सीमा से बाहर नहीं जा सकता। इस सघ का काम केवल हरिजनो की राजनीतिक समस्याओ को दूर कराना है। परन्तु हरिजनो की सामाजिक समस्याओ को दूर करने के लिए जन्म की जातपात को उठाने की जरूरत है और यह तब ही हो सकता है जब वर्ण व्यवस्था को जन्म के स्थान पर गुण, कर्म व स्वभाव पर रखा जाए। कभी समय था कि महात्मा जी जातपात को जन्म पर आधारित समझते थे। जब यरवदा जेल मे महात्मा जी के सहायक शास्त्रियों का सनातन धर्मी पण्डितो से वादविवाद हुआ, तो हमारे गुरुकुल के स्नातक प धर्मदेव जी के विशेष प्रयास से महात्मा जी के विचारो मे परिवर्तन आ गया और अब वे आर्य समाज के गुण कर्म स्वभाव के सिद्धान्त को मानने लग गए हैं। स्मरण रखो कि जन्ममूलक जातपात का छुआछूत से गहरा सम्बन्ध है। रोलट कमेटी की रिपोर्ट से एक घटना का पता लगता है जिससे ज्ञात होता है कि जातपात कितनी विनाशकारी है। तीन उग्रवादियो को जिनका पीछा पुलिस कर रही थी, एक नायक ने उन्हे सरक्षण दिया। परन्तु अपने बर्तन भात बनाने के लिए न दिए। अन्त मे उग्रवादियो का नेता जब प्यास से बिलबिला रहा था, तो पुलिस कमिश्नर ने अपनी टोपी में पानी डाल कर उसे पिलाया। उसने अपने कर्त्तव्य का पालन करके यह जता दिया कि इन्ही विशेष गुणो के कारण थोड़े से विदेशी अग्रेज भारत पर राज्य कर रहे हैं। दक्षिण अफ्रीका मे महात्मा गाधी जेल में बिमार हो गए। उनके आप्रेशन के प्रश्न पर अग्रेज सिविल सर्जन मौन साधे रहे। जब आप्रशन हुआ, तो वह सफल रहा। इस पर उक्त डाक्टर महोदय महात्मा जी के शिष्य बन गए। जब महात्मा जी इगलैंड मे गोलमेज कान्फ्रेन्स मे शामिल होने के लिए गए तो वही अग्रेज सर्जन उनके दर्शनो के लिए आया। जन्ममूलक जातपात का ख्याल मनुष्य को अन्धा बना देता है, छुआछूत का विचार हमे पतित कर रहा है। समाचार पत्र 'यग इडिया' मे यह समाचार प्रकाशित हुआ कि एक ब्राह्मण डाक्टर एक हरिजन देवी के इलाज से पीछे हटता रहा। अन्त मे उस डाक्टर ने थर्मामीटर भी मुसलमान को सौंपा कि वह इस स्त्री के मुह मे लगाए।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय—

आर्य समाज क्या करे ?

गत अंक में सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने घोषणा की थी कि पांच अप्रैल रविवार को सभी आर्य समाजों में आर्य समाज का स्थापना दिवस मनाया जाए और आर्य समाज के अधिकारी अपनी वर्तमान स्थिति पर विचार करें। जहा पिछले एक सौ ग्यारह वर्ष के कार्य पर दृष्टिपात करें, वहां आगे के लिए भी कुछ करने का निश्चय करें। आर्य समाज स्थापना दिवस का मतलब है आर्य समाज का जन्म दिन । जन्म दिन चाहे कोई अपना मनाए या अपने बच्चो का उसे मनाते हुए गत वर्षों का लेखा-जोखा करके आगे कुछ करने का निश्चय करता है। इसलिए हम आर्य समाज का जन्म दिन (स्थापना दिवस) मनाते हुए जहा बीते हुए काल (भूत काल) पर विचार करें, उसे याद करें, वहा वर्तमान और भविष्यत काल की एक रूप रेखा भी बना लें, जिस पर आगे सारा आर्य जगत् चलता रहे। जिस समय आर्य समाज की स्थापना हुई थी उस काल की परिस्थितियो, मध्यकाल की परिस्थितियो और वर्तमान काल की परिस्थितियों में बहुत अन्तर आ गया है । आज देश के सामने छुआ-छूत की समस्या नही है। दलितोद्धार की समस्या नही है। विधवा उद्धार की समस्या नही है। देश को स्वतन्त्र कराने की समस्या नही है। शिक्षा के प्रचार और प्रसार की समस्या नही है। स्त्री जाति का उद्धार और शिक्षा की समस्या नही है। इन में से कुछ कार्य हो चुके हैं, कुछ हो रहे हैं। आर्य समाज के बहुत से कार्य जनता ने और सरकार ने अपना लिए हैं। आर्य समाज के जन्म के समय जो समस्याएं उसके सामने थी उनके लिए आर्य समाज ने कार्य किया और उसमें उसने सफलता प्राप्त की। परन्तु आज फिर नई-2 समस्याएं देश जाति और समाज के सामने आ खड़ी हुई हैं । आज आर्य समाज उन्हे दूर करने का बीड़ा उठाए। यह अति आवश्यक कार्य है। वह समस्याएं क्या हैं। आओ उन पर विचार करें।

स्त्री जाति का उद्धार करके आर्य समाज ने एक महान् कार्य किया था। आज महिलाएं जो पहले घर की चार दीवारी में बन्द थी। जिन्हें कोई पैरों की जूति कहता था। कोई नरक का द्वार कहता था। आज वह हर क्षेत्र मे पुरुषों के बराबर खड़ी हो गई हैं। सरकारी, गैर सरकारी, उद्योगिक तथा राजनैतिक सभी क्षेत्रों में वह आगे बढ़ रही हैं। एक क्षेत्र ऐसा समझा जाता था जहां शायद महिलाएं न पहुंच सकें वह क्षेत्र था सेना। अभी-अभी टेलीविजन पर 30-3-87 को महिलाओं की बटालियनों का प्रदर्शन करके बता दिया गया है कि देवियां इस क्षेत्र में भी अब आगे बढ़ रही हैं। परन्तु क्या यह सब कुछ होने से महिलाओं की समस्याएं समाप्त हो गई हैं ? बिल्कुल नही। आज उन्हें दहेज के नाम पर मिट्टी का तेल डाल कर जलाया जा रहा है, कहीं तिमंजले मकानों से धक्का देकर मारा जा रहा है। कही उनको कत्ल किया जा रहा है।

आज आर्य समाज इस देश में फैले हुए दहेज दानव को समाप्त करने के लिए शीघ्र मैदान में आए, इसकी अति आवश्यकता है।

आज फिर जाति और धर्म के नाम पर देश में बड़े-बड़े अत्याचार होने लगे हैं। हिन्दू आज फिर फिरकों में बंटने लगे हैं। मुसलमान और ईसाई तो पहले ही हिन्दू धर्म के शत्रु थे, परन्तु अब तो अपने भी अपनों से शत्रुता करने लगे हैं। विघटनकारी शक्तियां देश के फिर टुकड़े करने का स्वप्न ले रही हैं। फूट डाल कर अपनों को अपनों से अलग किया जा रहा है। कुछ स्वार्थी और गद्दार लोग जातिवाद और धर्म के नाम पर फसाद करवा रहे हैं। कहीं पंजाब में हिन्दुओं और सिखों को लड़ाना, कहीं बाबरी मस्जिद के नाम पर मुसलमानों को भड़काना, कहीं गोरखालैण्ड आदि की समस्याएं खड़ी करना, कहीं भाषावाद को भड़काना यह सब देश में प्रतिदिन हो रहा है।

आज भारत तो आजाद है। भारत में हिन्दुओं का, राम के मानने वालों का अपना राज्य है। परन्तु राम की जन्म भूमि आज भी आजाद नही है कैसी विडम्बना है। ऐसा लगता है कि आज भी भारत पूर्ण रूप से स्वतन्त्र नहीं है।

ऐसे में आर्य समाज चुपी साधे बैठा है। आवश्यकता है आर्य समाज, जाति और धर्म के नाम पर होने वाले अत्याचारो के विरुद्ध छाती ठोक कर खड़ा हो जाए और जन-जन में क्रान्ति पैदा करके इस अत्याचार और अनाचार को भस्मसात कर दे। देश के कर्णधारो के कर्णों अर्थात् कानो को खोल दे कि यदि उन्होंने आजाद भारत में भी आज राम की जन्म भूमि का उद्धार न किया तो आने वाली पीढिया उन पर थूकेंगी कि हमारे पूर्वज कितने स्वार्थी थे कि चन्द एक मुसलमानों की वोट प्राप्त करने के लिए, उन्हे खुश करने के लिए जिस राम की जन्म भूमि को बाबर ने जब भारत मुसलमानो के अधीन था मस्जिद का रूप देने का यत्न किया था, उसका उद्धार स्वतन्त्र भारत में भी हमारे पूर्वज नही करा सके।

स गच्छध्वम् सं वदध्वम् का पाठ पढाने वाला आर्य समाज क्या मौन हो कर यह सब कुछ यूं ही देखता रहेगा। आज फिर हिन्दुओं मे एक क्रान्ति पैदा करने की आवश्यकता है वह केवल आर्य समाज ही पैदा कर सकता है। क्योंकि आर्य समाज ने किसी से वोट नही मांगने, जिससे कि वोटों के लिए उसे किन्हीं देश द्रोही शक्तियो के आगे भी झुकना पड़े। आज देश प्रेम और राष्ट्रीयता का प्रचार करने की आवश्यकता है और यह कार्य केवल आर्य समाज ही कर सकता है। जितना दर्द आर्य समाज को देश, जाति और समाज का है उतना किसी और को नही है।

धर्म के नाम पर फिर पूर्व की भान्ति आडम्बर होने लगे हैं कत्ल किए जाने लगे हैं। आज लोग समझते ही नही कि धर्म किस चिड़िया का नाम है इसी लिए वह अपने रास्ते से भटक रहे हैं। धर्म का सच्चा स्वरूप केवल आर्य समाज ही जनता के सामने रख सकता है। धर्म वास्तव में क्या है ? आर्य समाज इसका स्थान-2 पर प्रचार करे ताकि धर्म के स्वरूप को समझ कर लोग सीधे मार्ग पर आ जाएं।

मूर्ति पूजा के साथ-2 अब कबर पूजा बढ़ती चली जा रही है। जहां देखो नई-नई कबरें बनाई जा रही हैं। खाली स्थान पर रात-रात में कबर बन जाती है। किसी सोची समझी स्कीम के अनुसार कबरों पर दीवा बत्ती भी की जा रही है और चादरें भी चढ़ाई जा रही हैं। आज से 20वर्ष पूर्व यह कबरें इतनी नहीं थी जितनी आज हो गई है। अन्ध-विश्वासी लोग वहां जाकर मत्थे रगड़ रहे हैं। मुर्दों से मन्नतें मांगी जा रही हैं। यह आर्य समाज के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। कबर पूजा मूर्ति पूजा से भी अधिक खतरनाक है। इस से मुसलमानों को अपने प्रचार का एक अच्छा साधन मिल रहा है। हिन्दुओं के बेशुमार देवी-देवता हैं। परन्तु आज हिन्दू उनसे कुछ न मांग कर मुसलमानों के मुर्दों से मन्नतें मांगने लग गए हैं। कितना अन्धकार का युग आ गया है।

आर्य समाज को कबर पूजा के विरुद्ध डट कर खड़ा हो जाना चाहिए। अपने भूले भटके भाईयों को जीवात्मा का सच्चा स्वरूप बता कर उन्हे समझाना चाहिए। यदि उस पीर में कोई ताकत होती तो उसे कबर में पड़ा रहने की क्या आवश्यकता थी। हड्डी, पिंजर, अवशेष ये तो सब जड़ हैं। वह किसी को बेटे कैसे दे सकते हैं। वह तुम्हारी मुसीबतों और कष्टों को कैसे हटा सकते हैं। वह तो अपने ऊपर पड़ी थोड़ी सी मिट्टी को भी नहीं हटा पाते। उनके हड्डी, पिंजर मिट्टी में दबे हुए ही पड़े रहते हैं।

आज आर्य समाज की पहले से अधिक आवश्यकता है। इस लिए हम वर्तमान परिस्थितियों में क्या करें ? इस पर हमें निरन्तर चिन्तन करते रहना चाहिए।

—सह-सम्पादक

आर्य समाज तब, अब और आगे

लेखक—श्री स्वामी सुबोधानन्द जी दयानन्द मठ दीनानगर

मेरे पिता 1905 मे आर्य समाज के सम्पर्क मे आए जब कांगड़ा मे बड़ा भूकम्प आया और लाहौर से आर्य समाजी सेवा के लिए पठानकोट से आगे 54 मील पैदल या टांगो पर पहुंचे। 1875 से 1925 तक आर्य समाज का सुनहरा युग रहा सैकड़ो हजारो अवैतनिक साधु-सन्यासी, वकील, प्रोफैसर—व्यापारी, उपदेशक मैदान मे कूद पड़े। अंग्रेज सरकार भी डर गई। 1907 मे प्रतिबन्ध लगा दिया। लार्ड मैकाले की विषैली शिक्षा प्रणाली के मुकाबला डी ए वी. स्कूलो कालिजो का जाल बिछ गया। महात्मा हंसराज जैसे तपस्वी त्यागी अवैतनिक प्राचार्य मिल गए राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाने वाले अध्यापक मिल गए—महर्षि दयानन्द जी की गुरुकुल प्रणाली शिक्षा पद्धति को चालू करने के लिए मिल गए, तन-मन-धन अर्पण करने वाले सैकड़ो मिल गए। आर्य स्कूलो ने धार्मिक शिक्षा को प्राथमिकता दी मैं भी 1920 24 तक गुरुदत्त एगलो वैदिक स्कूल कांगड़ा का विद्यार्थी रहा। 1923-24-25 मे लाहौर मे दोनो सभाओ के वार्षिक उत्सव अनारकली आर्य समाज व बच्छोवाली समाज के उत्सव देखे। पांच-2 लाख अपील पर जलसा मे हां हो जाता था। महात्मा हंसराज, लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, पं बुद्धदेव मीरपुरी, पं बुद्ध देव विद्यालंकार, अमरनाथ विद्यालंकार, पं राम गोपाल, पं ठाकुर दत्त, लाला देवी चन्द, कुंवर सुखलाल आदि 2 के भाषण मुरदा दिलो में जान डाल देते थे। यही समय था जब 1877 से लेकर 1925 तक बेशुमार क्रान्तिकारी आर्य वीर पैदा हुए। चापीकर बन्धु, मदन लाल ढींगरा—भाई बालमुकन्द, बीरेन्द्र जी, रास बिहारी बोस, अमीर चन्द, भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव, यशपाल, चन्द्रशेखर, बिस्मिल, अशफाक उल्ला, लाहरी, उधमसिंह आदि सब आर्य समाज की देन हैं। आर्य समाज ने पहले 50 साल मे नारी शिक्षा अछूत उद्धार, शिक्षा, धार्मिक क्षेत्र, शुद्धि, अन्धविश्वास निवारण, मूर्ति पूजा निषेध, मृतक श्राद्ध निषेध, मद्य मास निषेध, एक ईश्वर पूजा और शास्त्रार्थों द्वारा वेद प्रचार किया, स्वभिमान जगाया। कांग्रेस 1920 तक अमीरो की संस्था रही स्वामी श्रद्धानन्द ने जलियांवाला बाग कांड के बाद अमृतसर कांग्रेस सम्मेलन मे जान डाली और कोकनाडा कांग्रेस मे मुहमद अली शौकत अली की स्कीम हरिजनो को आधे-2 बांटने पर कांग्रेस की घुन्ने टेक पालीसी पर कांग्रेस छोड़ दी और शुद्धि संघर्ष मे जुट कर वह शहीद हुए कांग्रेस को शक्तिशाली बनाने के लिए राष्ट्रहित सब आर्य नेता कांग्रेस मे कूद पड़े लाला लाजपतराय शहीद हुए। 1939 मे हैदराबाद सत्याग्रह चला। दस हजार से ऊपर जेल गए निजाम को झुका दिया चली 80% जेलो मे आर्य लोग गए। सुभाष का बाहर से जंग करना, फौजो का बिगड़ना, कांग्रेस का जनता लैहर बन जाना और अंग्रेज का एक बूंद खून बहाए बिना इंगलैंड चले जाना सबका सांझा मोर्चा था। अंग्रेज 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम मे ही हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई विषैले बीज बो गया था जो 1947 तक बीच ही बीच पकते रहे और दो कौमो की थ्यूरी बना कर दो पाकिस्तान बन गए और 1907 से ही लार्ड मकालफ सिंह सिखो को भड़काता गया और 1947 मे कह गया कि मुसलमानो को मिला पाकिस्तान, हिन्दू को हिन्दुस्तान, सिखो को क्या मिला, बस तब से ही राष्ट्र विघटन की नींव पड़ी। देखा देखी तेलगू देशम्, गोरखालैंड, ईसाईस्यान और पाकिस्तान बनाने की बाते चल पड़ी।

अंग्रेज की पालीसी फूट डालो व राज करो सब जगह चल रही है। 1925 से आर्य समाज मे स्वार्थता आनी आरम्भ हो गई। 1947 मे स्वराज्य मिलने पर गद्दियो के लालच में आर्य नेता राजनीति मे फस गए। अपना कोई राजनीतिक गुट न बना, कांग्रेस कैम्प मे चले गए और आर्य समाज की राज्य सरकार मे कोई कीमत न रही, न गौ रक्षा हो सकी न मद्य निषेध न हिन्दी राष्ट्र भाषा बनी न अंग्रेजी गई न संस्कृत आई। कांग्रेस सरकार ने आर्य समाज का बहुत सा प्रोग्राम विधान मे रख दिया। परन्तु उस पर अमल नाम मात्र। अतः 1925 से 1975 तक आर्य समाज का अब का युग चांदी का युग कहा जा सकता है।

अब 1975 से 2000 तक का अंदाजा लगा लें, पांच साल से पंजाब जल रहा है। आर्य समाज सबसे बड़ी शक्तिशाली संस्था थी जिसकी 5000 समाजें संसार मे हैं। करोड़ो अरबो की सम्पत्ति है शिक्षा संस्थाओ का जाल है। 2 करोड़ के लगभग आर्य समाजी हैं। 25 प्रांतीय सभाएं हैं। आर्य समाज एक बुद्धिजीवी संस्था है, दिल्ली सभा ने दो सम्मेलन किए अभी अम्बाला, लुधियाना सम्मेलन हुए। हम ग्रामो मे नहीं पहुंचे देश ग्रामो मे बसता है। सरकार पर आर्य समाज का कोई प्रभाव नही पड़ा आर्य समाज मन्दिरों मे बन्द हो कर रह गया है। प्राणीमात्र की सेवा अपना धर्म छोड़ बैठा है। पद लोलुप्ता आ गई है सारे विश्व का या भारत का एक नेता या अगुआ नहीं नाम मात्र आर्य दीखते हैं। मायावादी हो गए हैं। मौत से भय खाते हैं। कुर्सी की कामना नही छोड़ते, स्कूल-भवन बनाने पर जोर है, मानव बनाने की फैक्ट्रिया हमारे स्कूल नहीं रहे। शिक्षा हमारे पेट

जातिवाद, प्रान्तवाद, भाषावाद नही मिटा सके। छूत-छात नही मिटा सके, अन्तर जातीय विवाह प्रचलित नही कर सके। हम 15 करोड़ हरिजनो को न पचा सके तभी इमाम् बुखारी गीदड़ भव किया दे रहे हैं। आर्य समाज जागे वरना मिटने मे देर नही है।

पंजाब समस्या का एकमात्र हल विशाल पंजाब

1947 मे जब भारत स्वतन्त्र हुआ तो सिख डैपूटेशन भी पाकिस्तान की देखा देखी खालिस्तान चाहता था। सन् 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम मे सिख रियासतो ने अंग्रेज की मदद की थी तब अंग्रेज सिखो को उकसाने लग पड़ा था 1907 मे लार्ड मैकालफ सिंह ने और आग फूंकी 1947 के बाद मांग बढ़ती गई कभी रीजनल फार्मूला बना कभी पंजाबी भाषा का प्रश्न खड़ा हुआ कभी पंजाबी सूबा का आखिर 1966 मे पंजाब के 3 टुकड़े कर दिए गए। जिससे 70 प्रतिशत आबादी हिन्दू 43 प्रतिशत रह गई। हरियाणा-हिमाचल निकाल दिए गए फिर चण्डीगढ़ राजधानी का बटवारा चला फाजिल्का अबोहर देने पड़े झगड़ा उठ खड़ा हुआ फिर पानी का झगड़ा चल पड़ा सारे दरिया जम्मू कश्मीर से निकलते है अंग्रेज जाते-जाते देश के दो टुकड़े पाकिस्तान बना कर चला गया। दोनो पाकिस्तानो मे अमन नही। बटवारा के जख्म हिन्दू-मुस्लिम-सिख आज तक नही मिट सके, अब पांच साल से पंजाब जल रहा है एक हजार से ऊपर निर्दोष मारे जा चुके हैं, व्यापार ठप है कोई भी सुरक्षित नही, पुलिस चीफ व प्रधानमन्त्री बाल-बाल बचे। इन्दिरा गांधी का कत्ल बड़ा भारी धब्बा है। कांग्रेस ने खुद अकाली सरकार बना कर पंजाब के हिन्दू को मौत के सुपुर्द कर दिया है। पलायन हो रहा है मगर पंजाब सरकार व सैंन्टर सरकार को फिकर कहां है। उग्रवाद बढ़ रहा है। शान्ति सम्मेलन कोई हल नही पंजाब मजबूत सरकार चाहता है। वैसे 1947 से 1984 तक की पंजाब की बांट ने हिन्दुओ को बली का बकरा बना दिया है। सैंन्टर सरकार ने खुद हरियाणा व हिमाचल 1966 मे बनाया। जिसके परिणाम आज निकल रहे हैं। पंजाब की आग सारे देश को ले लेगी। अमरीका, चीन, पाकिस्तान हवा दे रहे हैं। कांग्रेस सरकार की हाथो से दी गई गांठें अब दान्तो से खोलनी पड़ रही हैं अभी समय है सैन्टर सरकार देश की अखण्डता के लिए हरियाणा सरकार व हिमाचल सरकार से पूछे कि फिर से 1966 की पोजिशन बहाल, करने, पंजाब व देश बचाने बारे उन का क्या ख्याल है? दोनो प्रदेशो की राय ली जावे और जो पग ठीक हो उठाए जावें पंजाब बचाने का व देश बचाने का एक मात्र यही हल नजर आता है। पंजाब सरकार हालात पर काबू पाने मे 3-4 साल से बुरी तरह फेल हो रही है और सैन्टर बे बस है।

रायकोट में ऋषि-बोधोत्सव सम्पन्न

गत दिनो आर्य समाज रायकोट मे आर्य युवक सभा के कार्यकर्ताओ द्वारा शिवरात्रि का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। यज्ञ श्री पं सूर्यपाल जी शास्त्री ने करवाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री महात्मा प्रेम प्रकाश जी ने की। ध्वजारोहण श्री भीमसेन जी प्रधान आर्य समाज रायकोट ने किया। श्री रोशन लाल जी शर्मा लुधियाना, श्री मोहन लाल जी तलवाड़ा श्री सतीश सिन्धवानी तथा श्री रामशरण दास जी बरनाला, श्री मुहेल जी धूरी, श्री महात्मा प्रेम भिक्षु जी और महात्मा प्रेम प्रकाश जी ने महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला। दयानन्द माडल स्कूल रायकोट, स्वामी गंगागिरि विद्या मन्दिर के बच्चो तथा पब्लिक माडल स्कूल के बच्चो ने अपना कार्यक्रम रखा। इस उत्सव मे आर्य समाज बरनाला तथा धूरी के आर्य भाईयो ने भी भाग लिया। अन्त मे श्री भीमसेन प्रधान, श्री अशोक कुमार शर्मा, श्री धर्म प्रकाश जी आर्य ने आए हुए बन्धुओं का धन्यवाद किया। ऋषिलंगर का कार्य श्री राजेन्द्र कुमार जी और अशोक कुमार की देख-रेख मे हुआ।

—मन्त्री

महर्षि के बाद आर्य समाज के दो चमकते हुए सितारे

स्वामी श्रद्धानन्द तथा पण्डित लेखराम

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी ।

अमर शहीद पण्डित लेखराम जी ।

महर्षि दयानन्द ने चैत्र सुदी प्रतिपदा सम्वत् 1932 तदानुसार 7 अप्रैल 1875 में बम्बई मे आर्य समाज की स्थापना की । इसके बाद महर्षि ने बम्बई से प्रस्थान करके स्थान पर आर्य समाज की स्थापना करनी आरम्भ कर दी जब वह पजाब में आए तो उनका मुख्य वह रूप से अधिक समय तक लाहौर मे ठहरे क्योकि उस समय लाहौर धार्मिक व राजनैतिक गतिविधियो का केन्द्र था । स्वामी जी के व्याख्यानो का लाहौर की जनता पर बहुत प्रभाव पडा । इसके बाद केवल लाहौर मे ही नही सारे पजाब में धीरे-2 अन्य शहरो मे आर्य समाजो की स्थापना होने लगी । पढे लिखे लोग तथा बुद्धिजीवी आर्य समाज मे आने लगे । विचारशील लोगो पर महर्षि के विचारो का बहुत प्रभाव पड़ा । पजाब के पढे लिखे लोगो ने शीघ्र ही आर्य समाज की विचारधारा को अपना लिया । इस विचारधारा का गहरा प्रभाव नौजवान मुन्शीराम जी जब वकालत पास करके लाहौर पहुंचे थे और दूसरे नौजवान लेखराम जी जो उस समय पुलिस मे भर्ती हो गए थे पर पडा सम्वत् 1936,37 मे मुन्शीराम जी लाहौर मे वकालत करने के लिए पहुंचे थे वह वहा ब्रह्म समाज और आर्य समाज के अधिवेशनो मे सम्मलित होने लगे । पुनर्जन्म के मामले पर उनका ब्रह्म समाज से मत-भेद हो गया और इस सम्बन्ध मे उन्होने आर्य समाज का मत जानना चाहा । उन्हे इस सम्बन्ध मे सत्यार्थ प्रकाश पढने के लिए दिया गया जिसे पढ कर मुन्शीराम धीरे धीरे एक कट्टर आर्य समाजी बन गए नियमित आर्य समाज मे जाने लगे । महर्षि के दर्शन वह बरेली मे कर चुके थे । लाहौर से जालन्धर मे आकर वकालत शुरू की परन्तु यहा भी आर्य समाज के कार्यक्रमो मे बढ-चढ कर भाग लेने लगे । महर्षि दयानन्द के देहावसान के बाद जब उनका कोई स्मारक बनाने का निश्चय हुआ तो लाहौर मे डी ए वी. स्कूल की स्थापना की गई परन्तु मुन्शीराम जी स्कूल के स्थान पर गुरुकुल खोलने के पक्ष मे थे और कुछ दिन के बाद उन्होंने हरिद्वार के समीप कागडी ग्राम के पास गुरुकुल की स्थापना कर दी परन्तु अब मुन्शीराम महात्मा मुन्शीराम बन गए थे, इन्होंने अपना सभी कुछ गुरुकुल के अर्पण कर दिया और वह सन्यास लेकर स्वामी श्रद्धानन्द जी के नाम से प्रसिद्ध हो गए ।

महर्षि दयानन्द के पद् चिन्हों पर चलते हुए इन्होने जो कार्य देश जाति और समाज के लिए किया वह स्वर्णाक्षरो मे लिखने योग्य है ।

— — —

पण्डित लेखराम का समय भी आय समाज मे प्रवेश करने का वही है जो स्वामी श्रद्धानन्द जी का था । 21 वर्ष की अवस्था मे सम्वत् 1937 मे ही जब वह पुलिस मे सर्विस करते थे । मुन्शी कन्हैया लाल अलखधारी के ग्रन्थो को पढ कर आर्य समाज की ओर आकृष्ट हुए । यह उन दिनो पेशावर मे रहते थे वही माईरजी की धर्मशाला मे वहा पण्डित जी रहते थे उन्होने आर्य समाज की स्थापना कर दी । यह एक माह की छुट्टी लेकर 11 मई 1880 को अजमेर महर्षि के दर्शनो को गए । अजमेर से लौट कर दिन-रात धर्म प्रचार की धुन रहने लगी । यह उर्दू और फारसी के प्रसिद्ध विद्वान थे साथ इन्होने सस्कृत का भी अध्ययन किया । अब इन्होने पुलिस की नौकरी छोड दी और आय समाज के प्रचार मे जुट गए । महर्षि के दर्शनो का ऐसा जादू हुआ कि लेखराम आय समाज का दीवाना बन गया । इनके व्याख्यानो की स्थान पर धूम मचने लगी ।

स्वामी श्रद्धानन्द तथा पण्डित लेखराम जी महर्षि दयानन्द से ज्ञान का प्रकाश लेकर उसी प्रकार सारे देश मे चमक उठे जिस प्रकार चन्द्रमा, सूर्य से प्रकाश लेकर अपनी चमक से सभी पदार्थों को चमका देता है । चन्द्रमा भी सूर्य से प्रकाश लेता है और इन दोनो सितारो ने भी महर्षि दयानन्द रूपी सूय से प्रकाश लेकर अपने आपको भी चमकाया और इसके साथ अनेको भूले भटके को भी ज्ञान का प्रकाश देकर रास्ता दिखाया । अन्त मे दोनो ही देश जाति और समाज के लिए शहीद हो गए ।

रामनवमी एक प्रेरणादायक-पर्व

मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म दिन

लेखक—श्री प. धर्मदेव जी आर्य सभा कार्यालयध्यक्ष

हम अपना तथा अपने बच्चो का जन्म दिन अक्सर मनाते रहते हैं। उनको मनाते समय अपने पिछले कार्य का स्मरण तथा आगामी कार्य का निर्धारण करते हैं। यह एक लेखा-जोखा होता है। जैसे किसी फर्म या फैक्ट्री आदि का वर्ष के बाद लेखा-जोखा किया जाता है। घाटा-मुनाफा देख कर आगामी वर्ष की योजना तैयार की जाती है। परन्तु इसके साथ ही हम अपने महापुरुषो के भी जन्म दिन मनाते हैं। भगवान कृष्ण और भगवान राम का जन्मदिन विशेष उत्साह से मनाया जाता है। अगस्त माह मे कृष्ण जन्माष्टमी और अप्रैल माह मे रामनवमी (राम का जन्म दिन) मनाया जाता है।

इस बार राम नवमी का पर्व 7अप्रैल मगलवार को आ रहा है। इस दिन सारे भारत मे तथा भारत से बाहिर भी जहा-जहा भारतीय बैठे हैं भगवान राम का जन्म दिन मनाया जाएगा। यह पर्व हमारे लिए महान् प्रेरणाओ को लेकर आता है परन्तु ऐसा लगता है कि महने आज तक इससे कोई प्रेरणा नही ली। केवल शोभा यात्रा (जलूस) जलसे पूजा-पाठ करके ही समझ लेते हैं हमने पर्व मना लिया। परन्तु क्या कभी हमने इस दिन भगवान राम के जीवन को अपने जीवन मे ढालने का यत्न किया है ? क्या हमने उनके जीवन से कोई प्रेरणा ली है। यदि कोई प्रेरणा नहीं ली तो फिर जन्म दिन मनाने का क्या लाभ हुआ ? आओ उनके जीवन पर विचार करें वह क्या थे।

भगवान राम पिता के आज्ञाकारी पुत्र थे। पिता की आज्ञा से 14 वर्ष बन मे कष्ट सहते रहे क्या हम आज अपने पिता की आज्ञाओ का पालन कर रहे ? वह एक सच्चे भाई थे जिन्होंने भरत के लिए राज्य का त्याग कर दिया। क्या आज हम भी अपने भाईयो के लिए कोई त्याग करने के लिए तैयार हैं ? वह एक सच्चे सखा थे। अपने सखा सुग्रीव और विभीषण को उन्होंने सहायता करके एक सच्चे मित्र का परिचय दिया था। क्या हम भी अपने मित्रो की कोई सहायता करते हैं ? वह एक पत्निव्रति थे। सीता की रक्षा के लिए उन्होंने अपनी जान की बाजी लगा दी और शत्रु के घर मे महीनो रही पत्नि को स्वीकार करके पति-पत्नी के स्नेह का एक महान् परिचय दिया था। क्या आज हम मे पति-पत्नि मे ऐसा स्नेह और आदर मान है ?

वह एक यज्ञ प्रेमी थे यज्ञ की रक्षा के लिए राज्य के सुखो को छोड कर ऋषि विश्वामित्र के साथ वह जगल मे चले गए। किशोर अवस्था होते हुए भी जरा नही घबराए। यज्ञ मे विघ्न डालने वाले राक्षसो का नाश करके क्षत्रिय मर्यादा का पालन किया। क्या हमारी भी आज यज्ञ के प्रति उसी प्रकार की श्रद्धा है जैसी भगवान राम की थी।

वह एक महान् राजनीतिज्ञ थे। उन्हे जब पता चला की लका का शक्तिशाली राजा रावण सीता को उठाकर लका मे ले गया है तो वह चाहते तो आयोध्या से सेना को बुला सकते थे। दूसरे राजाओ से भी सहायता ले सकते थे। परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया छोटे से वानर राज्य के सैनिको को लेकर लका पर चढाई कर दी।

राम चाहते थे यह लडाई भारत की भूमि पर नही शत्रु की भूमि पर हो और यदि मैं बहुत बडी सेना लेकर लका पर चढाई करूगा तो रावण भी अपने सहयोगी राजाओ को बुला लेगा। यह राम की एक महान् नीति थी। रावण के गुप्तचरो ने जब उसे बताया कि वानर सेना को लेकर राम लका पर चढाई कर रहा है। तो रावण ने कहा उसे आने दो कोई तैयारी करने की आवश्यकता नही। उसे लका मे आ जाने दो यहा से वह वापिस नही जा सकेगा। राम ने शत्रु का बल जानने के लिए हनुमान और फिर अगद को लका मे भेजा और उसकी की शक्ति का अनुमान लगाया। राम ने कितनी बुद्धिमत्ता से काम लिया कि शत्रु को युद्ध की तैयारी करने का मौका ही नही दिया और उसकी शक्ति तो जान ली परन्तु अपनी शक्ति का उसे पता तक न लगने दिया। शत्रु के घर के अन्दर जाकर उसके ही एक भाई को अपने साथ मिला कर एक महान् शक्तिशाली राजा रावण को समाप्त कर दिया। यह राम की राजनीति और बुद्धिमत्ता का एक महान् उदाहरण है क्या आज के राजनैतिक भारतीय लोग भगवान राम का जन्म दिन मनाते हुए देश के शत्रुओं को समाप्त करने के लिए राम से कोई प्रेरणा ले सकेंगे।

भगवान राम मर्यादा पुरुषोत्तम थे और उन्होंने जीवन मे सभी मर्यादाओ का पालन किया था और उन्हे अच्छी प्रकार से निभाया था। परन्तु आज हम उनका जन्म दिन मनाने वाले इस दिन बैठ कर विचार तो करें कि जो मर्यादाए हमारे महापुरुषो ने बाधी थी हम उन्हे कही तोडते तो नही जा रहे।

आज राम के भारत में बेटो द्वारा पिता की आज्ञा तो माननी एक तरफ रही उसका अपमान किया जा रहा है। भाई-भाई का शत्रु बना बैठा है। मित्र दूसरे मित्र के साथ दगा कर रहा है। पति-पत्नी का सम्बन्ध इतना बिगड गया कि छोटी-2 बातो पर तलाक हो जाते हैं। दहेज कम लाने के कारण पत्नी को जला दिया जाता है, मौत के घाट उतार दिया जाता है। आज राजनैतिक दृष्टि से भी हम विफल होते जा रहे हैं। राम के भारत मे ऐसा क्यो ? अब तो स्वतन्त्र हैं फिर भी हम राम राज्य की स्थापना नही कर सके जिसका स्वप्न कभी महर्षि दयानन्द जी और गाधी जी ने भी लिया था। वह राम राज्य अभी तक क्यो स्थापित नही हो सका। आओ 'राम नवमी' राम के जन्म दिन पर इस विषय मे गम्भीरता से विचार करें।

———

(2 पृष्ठ का शेष)

इसी तरह सहारनपुर मे हिन्दू मुस्लिम दगे हुए और प्रधान आर्य समाज ने 1500 शुद्धी शुदा आर्य भाईयो की सहायता से हिन्दुओ को मार से बचाना चाहा। परन्तु इन जन्म अभिमानी चौधरियो ने उन लोगो से सहायता लेना भी स्वीकार न किया। जो इनके लिए प्राण देना चाहते थे। इन बुद्धिमानो ने गैर हिन्दुओ से पीटा जाना और अपमानित होना स्वीकार कर लिया। याद रखो जब तक हम छूआछूत को न उडाएंगे, और जन्म की जातपात की बहती नदी मे न बहाएंगे, तब तक हमारी जाति बच न सकेगी। यह केवल आर्य समाज ही है जो दयानन्द के प्रकाश से प्रकाशित हुआ इस बीमारी को जड से काटेगा।

शुद्धि का सुदर्शन चक्र :—

अछूत तो भला अछूते ही रहें, आर्य समाज ने तो अपना दरवाजा मनुष्य मात्र के लिए खोल रखा है। हमारे सनातनधर्मी भाई पतित हिन्दुओ को तो शुद्ध करने का साहस कर लेते हैं, लेकिन वे विधर्मियो की शुद्धि का काम आर्य समाज पर ही छोडते हैं।

उद्धार की एक मात्र जिम्मेवारी :—

भारत से छुआछूत को मिटाने वाली तीन श्रेणिया हैं—1. कांग्रेस, दूसरे सनातनधर्मी और तीसरे आर्य समाजी। जिस स्थान पर पहली दो श्रेणिया सफल नही होती, वहा आर्य समाजी कामयाब हो सकते हैं। गैर हिन्दू कांग्रेसियो ने तो दलित हिन्दुओ के धर्म और ईमान पर छापा मारने से भी परहेज नहीं किया। जैसा कि मौलाना मुहम्मद अली ने कोकनाडा कांग्रेस के अपने प्रधान पद के भाषण मे यह शोशा छोडा था। इसी तरह गोरखपुर मे एक मुस्लिम कांग्रेसी हिन्दू हरिजनो को अधर्मी बनाने पर उद्धार खाये बैठे हैं और मुसलमान उन्हे ईमामुल मेहतरीन(मेहतर जाति का नेता) का खिताब देते हैं। सनातनधर्मी भाई खुद इस उद्धार के सवाल पर बट चुके हैं। इसलिए यह रोग उनके बस का नहीं। पंडित मालवीय जी चाहे बडे उदार हैं, परन्तु कालीकट में जाकर उन्होंने भी सहभोज में शामिल होने से किनारा किया। हालाकि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस निर्बलता को पास तक नहीं फटकने दिया। गुरुकुल क्रियात्मक रूप में इस समस्या को हल कर चुका है। आर्य समाज ने रहतियो मेघो, बटवालों और अन्य हरिजनो को साथ मिला कर ही दम लिया। और म रामचन्द्र ने इस पवित्र कार्य मे अपने हिन्दू भाईयो के हाथ से शहीद होकर अमर पद को प्राप्त किया।

जम्मू स्टेट में कुछ जन्म अभिमानी राजपूतो ने एक बूढे शुद्ध हुए आर्य सज्जन को जो पहले विशिष्ट जाति में था। यज्ञोपवीत के स्थान पर प्राप्ति को गर्म करके बडी निर्दयता के साथ उसे खूनी यज्ञोपवीत पहनाया। इसलिए मैं कहता हू कि केवल आर्य समाज ही आज देश को प्रत्येक सकट से बचा सकता है। कहिए अब आर्य समाज की जरूरत है या नहीं ?

(8 अप्रैल 1934 के "प्रकाश" (लाहौर) से साभार)

———

जिला आर्य सभा लुधियाना द्वारा

ऋषिबोधोत्सव (शिवरात्रि) के अवसर पर लिए गए चित्रों का विवरण

लुधियाना मे ऋषिबोधोत्सव पर पण्डाल मे प्रवेश करते हुए सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी, उनके आगे-आगे चलते हुए श्री आशानन्द जी, तथा श्री दीवान राजेन्द्र कुमार जी।

आचार्य जैमिनी जी यज्ञ के बाद आशीर्वाद होते हुए। सामने खड़े हैं। श्री आशानन्द जी आर्य महामन्त्री जिला सभा, बहन कमला आर्या साथ बैठ हुए महेन्द्रपाल वर्मा दिखाई दे रहे हैं।

ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर मच पर बैठ हुए जिला आय सभा लुधियाना के अधिकारी, श्री कुलवन्तराय जी सूद, श्री दीवान राजेन्द्र कुमार जी, श्री आयोध्या प्रसाद जी मलहोत्रा, श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा।

ऋषिबोधोत्सव पर लुधियाना मे प्रीति भोज करते हुए, सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी और श्री अश्विनी कुमार जी एडवोकेट, साथ मे खड़े हैं। ओम प्रकाश जी पासी, ओम प्रकाश टण्डन।

पुस्तक समीक्षा

नाम पुस्तक———कल्प पुरुष दयानन्द

लेखक का नाम———स्वामी विद्यानन्द विदेह

प्रकाशक———वेद सस्थान सी 22 राजौरी गार्डन नई दिल्ली-110027

प्रकाशन तिथि———नवम्बर 1986।

मुद्रक———अर्चना प्रकाशन, अजमेर (राजस्थान)

आकार एव मूल्य———20×30। 16—1 रुपया 50 पैसे

पुस्तक के नाम से ही विदित होता है कि पुस्तक के लेखक स्वामी विद्यानन्द जी विदेह ने अपने चरित्र नायक आय समाज के सस्थापक दयानन्द को युग पुरुष श्री कृष्ण जी की तुलना मे कल्प पुरुष लिखा है और अपनी इस कृति का प्रारम्भ करते हुए दयानन्द को विशेषणातीत कहा है। स्वय उन्होने दयानन्द के लिए अपने अक्षय शब्द कोष मे से अगणित विशेषणो का प्रयोग करके मानो झड़ी सी लगा दी है। अपना दयानन्द के प्रति पूर्णतया समपण का आभास कराते हुए और ऐसी भावना की पराकाष्ठा की पुष्टि के रूप मे दयानन्दी बनने तक की कामना कर उस महान विभूति के प्रति अपनी अटूट भक्ति अगाध श्रद्धा एव सतत् निष्ठा का पावन परिचय दिया है।

स्वामी विदेह जी ने पुस्तक के पृष्ठ 7 एव 8 पर दयानन्द की कतिपय विफलताओ का उल्लेख किया है। पर फिर भी उनकी दयानन्द के प्रति परायणता अक्षुण रही है।

दयानन्द का कोई भक्त यदि दयानन्द के जीवन एव कार्य सम्बन्धी विशेषताए सग्रह करने की कामना कर रहा हो, तो उसे अन्य अध्ययन की आवश्यकता नही है। यह लघु पुस्तिका कल्प परुष दयानन्द ही उसकी इस साध का पूण और दयानन्द का चित्रण करने मे पर्याप्त समथ है।

पुस्तक की छपाई कागज आदि अति उत्तम है और सबसे अधिक सराहनीय बात यह है कि सारी पुस्तिका मे अशुद्धि नाम मात्र की भी नही है।

मुझ आशा है कि जो कोई भी महर्षि दयानन्द के विराट रूप को स्वामी विद्यानन्द जी जैसे तत्वत परम भक्त की दृष्टि से देखना चाहता है, वह इस पुस्तिका को अवश्य पढ़ेगे।

ब्रह्मदत्त शर्मा
सभा महामन्त्री

फिरोजपुर में शहीदी दिवस मनाया गया

आर्य युवक सभा फिरोजपुर के सांस्कृतिक कार्यक्रम में अमर शहीद भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव जी का बलिदान समारोह मनाया गया व उसमें युवकों द्वारा शहीदों को श्रद्धांजलि भेंट की गई। विजय जी के देश भक्ति के भजन भी हुए। आदरणीय द्वारकानाथ वर्मा जो कि भगतसिंह के सहपाठी रहे थे, ने उनके जीवन के उन छिपे हुए पहलुओं को उजागर किया जो कि आमतौर पर जनता के सामने नहीं आ पाए। समाज के मन्त्री श्री देवराज दत्त जी ने अपनी श्रद्धांजलि भेंट करते हुए कहा कि आज का युवा वर्ग जो कि मार्ग निर्देशन के अभाव में भटक रहा है उसे फिर से संगठित कर के सही रास्ते पर लाने की आवश्यकता है और शहीदों के बलिदान दिवस व उनके जीवन चरित्र ही हमारे सही मार्गदर्शक हैं।

—राकेश कुमार
मन्त्री

—

आर्य समाज माडल टाऊन पठानकोट

आर्य समाज माडल टाऊन पठानकोट में 26-2-87 को महर्षि बोधोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस उपलक्ष्य में 21-2-87 से प. वेद व्रत जी शास्त्री ने प्रतिदिन महर्षि दयानन्द जी महाराज के जीवन चरित्र की कथा की तथा ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न कराया। स्थानीय एस डी एम महोदय ने ओ३म् ध्वज लहराया तथा दोआबा कालेज जालन्धर के माननीय प्रधानाचार्य श्री सुरेशनन्दा जी ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। भाषणकर्ता छात्र-छात्राओं को पुरस्कार बांटे गए। नगर तथा क्षेत्र के गण मान्य व्यक्तियों ने ऋषि दयानन्द, आर्य समाज एवं वैदिक धर्म का सन्देश लोगों को सुनाया सैकड़ों स्त्री-पुरुषों तथा छात्र छात्राओं ने भाग लिया। यज्ञ शेष बांटा गया तथा प्रीति भोज किया गया।

—बलदेव राज यदुवंशी
मन्त्री

आर्य समाज सुलतानपुर लोधी का चुनाव

आर्य समाज सुलतानपुर लोधी का वार्षिक चुनाव 25-1-87 को हुआ। सर्वसम्मति से श्री [illegible] जी सेठी को प्रधान चुना गया और शेष अधिकारी चुनने का उन्हें अधिकार दिया गया। उन्होंने निम्न घोषणा की है।

उप-प्रधान—श्री सुरेन्द्र सेठी, महामन्त्री—श्री सत्यपाल जी नक्ला, मन्त्री—श्री मुरारीलाल जी अरोड़ा, कोषाध्यक्ष—श्री चमनलाल जी सेठी, प्रतिनिधि श्री लालचन्द जी पसरीचा, तथा श्री सदानन्द जी सेठी।

प्रतिष्ठित सदस्य—श्री द्वारकादास चावला, श्री गोपी चन्द सेठी, डा लाल चन्द पसरीचा,

अन्तरंग सदस्य—श्री आनन्दकिशोर पसरीचा, श्री अविनाश चन्द्र चावला।

ए एम स्कूल के मैनेजर—
श्री आनन्द किशोर जी पसरीचा

—सत्यपाल जी नक्ला
महामन्त्री

— —

शोक प्रस्ताव

आज तिथि 18-3-87 को [illegible] समाज मन्दिर रायकोट में [illegible] ईश्वरदास जी (संस्थापक आर्य [illegible] मन्दिर अहमदगढ़) के निधन पर [illegible] सभा की गई। जिसमें उपस्थित [illegible] आर्य जनों ने 2 मिनट का मौन [illegible] किया तथा सर्व सच्चिदानन्द [illegible] परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की [illegible] उस दिवंगत आत्मा को शान्ति [illegible] उनके परिवार को इस वज्रपात [illegible] करने की समर्थता प्रदान करे। [illegible] प्रार्थना की गई कि भगवान श्री [illegible] कुमार जी 'हिन्द' को उनके पद [illegible] पर चलने के लिए उनका मार्ग [illegible] करें।

—[illegible]
[illegible]

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।